तमिळ

कम्ब रामायण

बालकाण्ड

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ ३.

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान
पुस्तकालय
[illegible]
शान्तिकुंज, हरिद्वार

८१/१६४.I

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान
पुस्तकालय
विभाग
शान्ति कुंज हरिद्वार

२१/९६४.I

(तमिल)

कम्ब रामायण

बालकाण्ड

(नागरी लिप्यन्तरण, अन्वय एवं हिन्दी अनुवाद)

रचयिता
महर्षि कम्बर्

लिप्यन्तरण एवं अनुवाद
आचार्य ति० शेषाद्रि, एम० ए०

प्रकाशक
भुवन वाणी ट्रस्ट
मौसम बाग (सीतापुर रोड), लखनऊ-२२६०२०

भुवनग्रन्थ-गाथा
भुवनसन्त-वाणी

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥

प्रथम संस्करण --१९८० ई०

आकार - १८×२२÷८

पृष्ठसंख्या—८+६५२=६६०

मूल्य - १५०.०० रुपया

मुद्रक

वाणी प्रेस

मौसम बाग़ (सीतापुर रोड), लखनऊ-२२६ ०२०

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान
पुस्तकालय
विभाग
शान्ति कुंज, हरिद्वार

उपहार

८१/२९६.७

....

....

....

....

....

Swami Chinmayananda

Bombay Yagnasala
14-11-79.

Sri Seshadri.
Madurai.

Blessed One,

Hariom Hariom. Hariom.
Salutations.

Congratulations that you found in you the "faith" to serve the Lord with this stupendous work of translating and commenting, in Hindi, the entire 10,000 and odd verses of Kambar Ramayana. May Sri Ramchandra shower His grace upon you. Let Sitha give the required heart and let Hanumanji supply the mental and physical strength to accomplish it.

Love Love Love,
Chinmaya

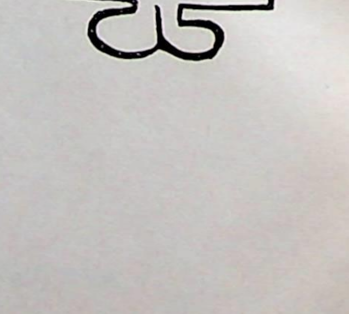

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान
पुस्तकालय विभाग
शान्ति कुंज, हरिद्वार

श्री स्वामी चिन्मयानन्द

बाम्बे यज्ञशाला
१४-११-७६

श्री शेषाद्रि
मदुरै
धन्य ॐ

हरिः ओम्, हरिः ओम्, हरिः ओम्, प्रणाम ।

कम्बर रामायण के पूरे दस हज़ार से अधिक पद्यों के टीका सहित अनुवाद के अत्यद्भुत कार्य द्वारा श्री 'प्रभु' की सेवा करने के लिए जो तुमने अपने में 'विश्वास' पा लिया है उसके लिए मेरी बधाइयाँ ।

श्रीराम तुम पर अपनी कृपा बरसाएँ, श्री सीताजी आवश्यक "मनोबल" दें; और हनुमानजी उसे पूरा करने के लिए आवश्यक शारीरिक व मानसिक बल दें ।

प्रेम प्रेम प्रेम
(प्रेमसहित)
ॐ चिन्मयानन्द

कम्बन-मणिमण्डपम्

कारैक्कुडी (तमिळ्नाडु) में महर्षि कम्बन के समाधिस्थल
पर, उनके अनन्य भक्त कम्बन अडिप्पॊडि
(कम्बन की चरणरेणु) श्री सा० गणेशन
द्वारा स्थापित—

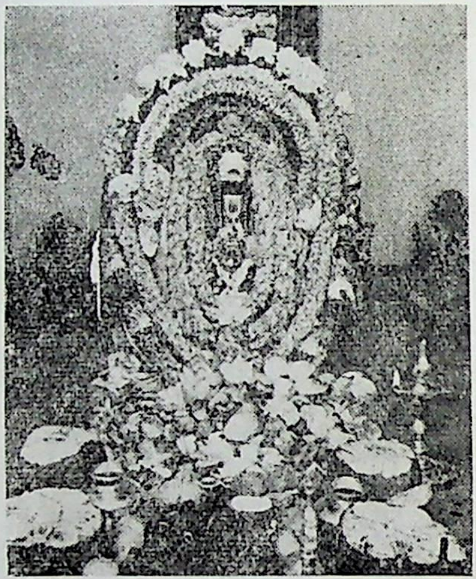

उपर्युक्त पवित्र 'कम्बन-मणिमण्डप' में स्थायी निवास करते हुए, परमभक्त श्री सा० गणेशन, वार्षिक जयन्ती, उत्सव, पूजा की व्यवस्था रखते हैं। वे स्वयं 'कम्बन का प्रचार करके, कन्या (नितयौवना) तमिळ् की श्री-वृद्धि करने के' अपने स्तुत्य प्रयत्नों में 'कम्बन-मण्डपम्' की रचना, कम्बन के नाम पर एक विद्यालय आदि स्थापित करके अपने को 'कम्बन अडिप्पॊडि' अर्थात् 'कम्बन-चरणरेणु', ऐसा नाम देकर कम्बन-ज्योति को जगाये हुए हैं।

K. SANTHANAM
PHONE : 74231

58, Esst Abhiramapuram Street
MYLAPORE, MADRAS-4

To enable the millions of people whose Mother Tongue is Hindi to read, understand and appreciate Tamil classical literature like Kamba-Ramayana is certainly a worthy effort.

There can be differences of opinion as to how this should be done. To transliterate the Tamil verses into Hindi script and thereby enable the Hindi people to read Kamban in the original is one method.

To teach Hindi people the Tamil script and thereby enable them to read the Tamil original is another.

In this volume the first method has been adopted. The amount of effort involved is tremendous as the volume containing only the Balakandam with transliteration, meaning of words and Hindi translation is a volume of 652 pages.

I wish the effort all suceess.

1 - 9 - 79 Sd/ K. SANTHANAM.

अनुवाद

लाखों हिन्दी भाषियों को कम्बरामायण सरीखे तमिऴ के उत्कृष्ट ग्रन्थों के पढ़ने, समझने और रसास्वादन के विषय में सहायता देना अवश्य एक अच्छा प्रयास है।

यह कैसे किया जाय, उस पर मत भिन्न हो सकते हैं। तमिऴ पदों का लिप्यन्तरण करना एक उपाय है और उनको तमिऴ का अक्षर सिखाकर स्वयं पढ़ लेने देना दूसरा उपाय है।

इसमें पहला मार्ग अपनाया गया है। प्रयास बहुत बड़ा है। बालकाण्ड ही ६५२ पृष्ठ तक में व्याप्त हो गया है।

परिश्रम की सफलता की कामना करता हूँ।

58, ईस्ट अभिरामपुरम् स्ट्रीट
मइलापुरम्, मद्रास-4

(हस्ताक्षर) के० सन्तानम्
भूतपूर्व (संविधान सदस्य, केन्द्रमंत्री, उपराज्यपाल,
विन्ध्य प्रदेश···)

Dr. S. Shankar Raju Naidu
M.A., Ph.D., F.R.A.S. (London).
PROFESSOR & HEAD OF THE DEPARTMENT OF HINDI
UNIVERSITY OF MADRAS—5

विश्व-महाकाव्यों में आदि संस्कृत कवि वाल्मीकि-रचित रामायण का एक विशिष्ट स्थान है। अन्य किसी महाकाव्य का रामायण के समान पुनःपुनः पुनर्जन्म नहीं हुआ है— न मूल ग्रन्थ की ही भाषा में और न अन्यान्य भाषाओं में। रामायण ही एक ऐसा महाकाव्य है जिस पर संस्कृत में ही नहीं अपितु अन्य सभी सम्पन्न भारतीय भाषाओं में काल एवं स्थान की परिवर्तित संस्कृति के अनुकूल सर्वथा मौलिक रूप में ग्रन्थ-रत्नों की रचना हुई है। इनके अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व एशिया की भाषाओं में भी अनेकानेक आश्चर्यजनक रामायणों को श्रेष्ठ कवियों ने जन्म दिया है। इन सब पर यदि—

(i) 'वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्'
(ii) 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'
(iii) 'भूषण बिनु न बिराजयी, कविता बनिता मित्र'

आदि सार्थक साहित्यिक सूक्तियों के आधार पर पुंखानुपुंख रूप से विचार किया जाय तो किसी भी सहृदय निष्पक्ष विद्वान को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि तमिऴ में रचित कम्बरामायण का उनमें अद्वितीय स्थान है। कम्बर का काल बारह्वीं शताब्दी माना जाता है। इस रचना में कथा-वस्तु, पात्र-परिकलपना व उद्देश्य में मूल वाल्मीकि की रचना से अनेकानेक स्थानों में अपूर्व परन्तु आवश्यक अन्तर देख सकते हैं, जो तमिऴ संस्कृति की विशिष्टता के परिचायक हैं।

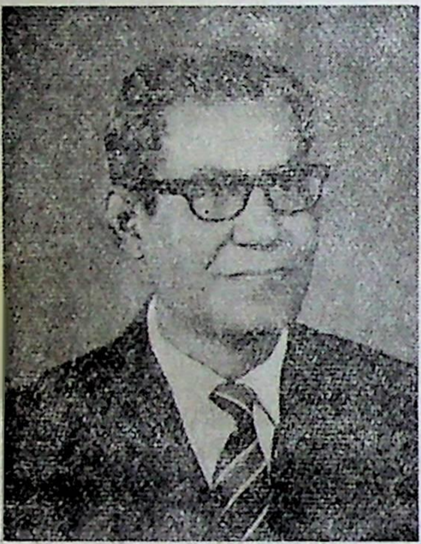

डॉ० सु० शंकर राजू नायडू

इस अनुपम तमिऴ महाकाव्य का हिन्दी (अर्थात् खड़ी बोली) में रूपान्तरण करके प्रो० ति० शेषाद्रि ने एक राष्ट्रीय महत्त्व का अत्युत्तम साहित्यिक कार्य सम्पन्न किया है। उन्होंने अपने अनुवाद में मूल कम्बरामायण के एक-एक शब्द का ही नहीं अपितु उनमें निहित व्यंजना व ध्वनि का भी विशेष ध्यान रखा है। प्रो० शेषाद्रि ने इस प्रकाशन के द्वारा तमिऴ-हिन्दी के बीच एक ऐसे सुदृढ़ साहित्यिक पुल का निर्माण किया है, जिससे राष्ट्रीय एकता को समझने में विशेष सहायता प्राप्त होगी और साथ ही हिन्दी के विद्वान संसार की प्राचीनतम जीवित भाषा तमिऴ के साहित्यिक सौन्दर्य का कुछ अनुमान कर सकेंगे।

प्रो० शेषाद्रि इस सफल प्रयत्न के लिए बधाई एवं धन्यवाद के पात्र हैं।

मद्रास, ९ सितम्बर, १९७९

(ह०) सु० शंकर राजू

FOREWORD

Kamban is the greatest poet produced by Tamil Nadu and his Ramayana is a strikingly original recreation and not a translation. He has made significant departures from the frame-work of the original story and has introduced dramatic situations and dialogues which are not to be found in the original. His characterisation of the main characters in the Epic are radically different from, and a great improvement upon the original. He neutralizes the stiffness of the Epic with the suppleness of Drama and suffuses both with the glow of his lyrical intensities. Whatever he does, he manages to sustain in the reader a feeling of passionate intimacy with things that count. He drives the reader to dip himself again and again in the cleansing waters of his Ramayana and to emerge with a warmer idealism, with a sense of keener personal partricipation in the upholding of virtue, with a sharper sensitivity to what is beautiful, good or true, with a greater courage to put the ultimate questions and an easier confidence to tackle them.

जस्टिस् (न्यायमूर्ति) एस० महाराजन्

And all this he achieves through his supreme gift of poetry. Kamban's rhythm has an unrivalled fullness, variety and sufficiency. He manipulates his vowel and consonantal sounds with such dexterity and magic that they bring out the astral form of any mood or emotion. And his rhythmic inventions have the effect of hushing the chattering mind of the reader and keeping it receptive to the message of the Poet, undistracted by the pressures of the private will. All this manipulation bears the imprimatur of unlaboured spontaneity and does not betray the pre-verbal agony of poetic creation. While describing some deep inexorable purpose behind the Cosmos or while conveying some glimpse of the inner chambers of existence, his rhythm effectively prolongs the moment of contemplation. Such indeed is the *attar* of Kamban's poetry that by common consent of the Tamils, Kamban has been rightly acclaimed as Kavi Chakravarti or the Emperor of Poesy.

Edward Leuders, a distinguished American Poet, has after going through the English translation of some of the poems of Kamban, said: "The characteristic reach of the Poet Kamban for cosmic personification in his poetry clearly ties these high and abstract' matters to very human letail. It is the world of human experience he deals with, and it is hrough the exaltation of poetic song that he achieves what all the world's reat poetry attempts to achieve...a marriage of the divine and timeless vith the earthly and experiential".

V.V.S. Iyer, who was a great scholar in Latin, Greek, Sanskrit, French and English has remarked that Kamban is entitled to a preeminent place in an assembly of the greatest poets of the world.

Prof. T. Seshadri has, by translating this great classic into Hindi, built a bridge of literary and intellectual understanding between the great Hindi-speaking world and the greatest poet of the Tamils. That Mr. Seshadri is a distinguished scholar in Hindi, Tamil and English and that his trilingual competence and his great expertise in the field of translation peculiarly fit him for the translation of Kamban into Hindi, is beyond question. By his translation, he has thrown open new avenues for comparative literary research. I am specially grateful to him for indicating with star marks the songs of Kamban, which alone were accepted as genuine by the great and distinguished aesthete, Rasikamani T.K. Chidambaranatha Mudaliar, so that distortions may be avoided by Hindi men of letters and critics in the true evaluation of Kamban's genius. I admire Mr. Seshadri for having achieved the stupendous task of translating Kamban and thereby putting the Tamils under a deep debt of gratitude to him.

Shri Nandkumar Avasthi, Mukhya Nyasi Sabhapati, Bhuvan Vani Trust, has done pioneering work in India by causing the translation into Hindi the best in the literatures of the world. More than any other single individual in India, he has dedicatea his life to the sacred work of effecting through literature not only national integration but also world integration. May God bless his laudable venture with all success.

(Sd.) Justice S. Maharajan,
Chairman, Tamil Nadu State Expert Committee
for Translation of Classics &
Chairman, Tamil Nadu State Official
Language (Leg.) Commission, Madras-2.

अनुवाद

कम्बन तमिळनाडु (देश)-प्रसूत महानतम कवि हैं और उनकी रचित रामायण प्रभावकारी मौलिक पुनर्रचना है। उन्होंने केवल अनुवाद नहीं किया है। उन्होंने मौलिक कहानी के ढाँचे में अनेक स्थलों में साभिप्राय परिवर्तन किये हैं और ऐसी नाटकीय घटनाओं और कथोपकथनों का विधान किया है जो मूल में प्राप्त नहीं। इस महान काव्य के प्रधान पात्रों का चरित्र-चित्रण जो कवि ने किया है, वह मूल से तत्त्वत: भिन्न है और असल में वह मूल का संशोधन है। उन्होंने काव्य की 'रुक्षता' को 'नाटक' की कोमलता से लचकदार बनाया है और दोनों को अपनी गीति की तीव्रता की ज्योति से आलोकित कर दिया है। उन्होंने जो भी किया है वहाँ उन्होंने इतना कौशल दिखाया है कि मुख्य घटनाओं से पाठक की रागात्मक आत्मीयता हो जाती है। वे पाठक को अपनी रामायण के पवित्रकारी प्रवाह में फिर-फिर गोता लगाने को मजबूर कर देते हैं और पाठक बाहर आते समय हर बार पहले से अधिक उत्साहवर्धक आदर्शवादिता, नैतिकता के संस्थापन में व्यक्तिगत योगदान की तीव्रतर दायित्व भावना, सत्यं, शिवं, सुन्दरम के प्रति अधिक संवेदनशीलता, परममुख्य प्रश्नों को उठाने का और अधिक साहस और उनका समाधान निकाल लेने का अधिक सुलभ-आत्मविश्वास —इनको लिये हुए निकलता है।

यह सब कवि सम्पादन करते हैं अपनी सर्वोत्कृष्ट कविता के वरदान द्वारा। कम्बन के (छन्दरचना) लय में एक अद्वितीय पूर्णता है, विविधता है और पर्याप्तता है। वे अपने स्वरों और व्यंजनों का इस दक्षता और जादू के साथ ताना-बाना बुनते हैं कि किसी भी मन-स्थिति या भाव को 'नक्षत्रलौकिक' (दिव्य) रूप प्राप्त हो जाता है। उनके आविष्कृत नये छन्दों में पाठक के बकवादी मन को चुप कराने का सामर्थ्य है; और स्वतन्त्र संकल्प के दबावों से दूर रहकर कवि के सन्देश को ग्रहण करने के लिए उन्मुख बनाने की अनूठी शक्ति है। इन सब कवि-कर्मों पर कवि की अनायास स्वतः प्राप्ति की छाप है; और किंचित भी काव्य-सृष्टि में सम्भाव्य शब्द-चयन-पूर्व परिश्रम की छटपटाहट की आहट नहीं मिलती। कवि चाहे प्रपंच के पीछे क्रियाशील गम्भीर और अवार्य हेतु का वर्णन करते हों या जीवन महल के अन्तरतम कक्षाओं की झाँकी दिखा रहे हों, उनके छन्दों का लय पाठक के अवधान की अवधि को बढ़ाने में सफल रहता है। कम्बन के काव्य की 'इत्र' (सुगन्ध) ऐसी है कि तमिळ देशवासियों की सर्वसम्मति से वे कवि-चक्रवर्ती या काव्य-(साम्राज्य के) सम्राट् घोषित हो गये हैं।

एडवर्ड लूडर्स एक विख्यात अमरीकी कवि हैं। उन्होंने कम्बन के कुछ पदों का अनुवाद पढ़ा और बताया कि अपने काव्य में विश्वव्यापी रूपक रचना की कला में उनकी अनूठी पहुँच है और वह साफ रूप से उन उच्च और सूक्ष्म पदार्थों को शुद्ध मानवीय तत्त्वों से बाँध देती है। वे मानवीय अनुभवों के संसार में ही व्यवहार करते हैं। तो भी काव्यगान के उदात्तीकरण के द्वारा उन्हें वह साफल्य मिल जाता है जिसकी प्राप्ति के हेतु विश्व का सर्वश्रेष्ठ काव्य प्रयत्न करता है— और वह है कालातीत दिव्य (तत्त्व) का लौकिक और अनुभवगम्य के साथ परिणय।

श्री वी० वी० एस० अय्यर ने, जो लेटिन, ग्रीक, संस्कृत, फ्रेंच और अंग्रेज़ी के श्रेष्ठ विद्वान हैं, यों कहा है कि संसार के सबसे बड़े कवियों के संघ में कम्बन अति मुख्य स्थान के हकदार हैं।

आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस समुन्नत काव्य का हिन्दी में अनुवाद करके विशाल हिन्दी भाषी जगत और तमिऴ के सर्वश्रेष्ठ कवि के मध्य एक साहित्यिक और बौद्धिक सेतु का निर्माण किया है। श्री शेषाद्रि हिन्दी के जानेमाने विद्वान हैं और अपनी त्रिभाषाई योग्यता और अनुवाद क्षेत्र में अपनी निपुणता के कारण वे कम्बन के हिन्दी अनुवाद के कार्य के लिए योग्य हो गये हैं। उनके इस अनुवाद द्वारा तुलनात्मक साहित्यिक खोजों के लिए नये क्षेत्र खुल गये हैं। उन्होंने उन पद्यों को नक्षत्रचिह्न से चिह्नित किया है, जिनको ही उत्तम काव्यमर्मज्ञ और कलाविद 'रसिकमणि' टी० के० चिदम्बरनाथ मुदलियार ने प्रामाणिक माना था। इसके लिए हम शेषाद्रि के विशेष रूप से आभारी हैं। इस कार्य से हिन्दी के विद्वान कम्बन की प्रतिभा और मेधा के मूल्यांकन में अप्रामाणिकता और अशुद्धियों से बच सकेंगे। श्री शेषाद्रि ने कम्बन के अनुवाद का परम कष्ट-साध्य कार्य सम्पन्न किया है, और एतद्द्वारा तमिऴ लोगों पर बड़ा एहसान लाद दिया है। तदर्थ मैं उनकी प्रशंसा करता हूँ।

भुवन वाणी ट्रस्ट के मुख्यन्यासी सभापति श्री नन्दकुमार अवस्थी ने संसार के अन्यतम ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत कर भारत में युगप्रवर्तक काम किया है। कोई भी अकेले व्यक्ति जो कर सकते हैं, उससे कहीं अधिक उन्होंने साहित्य द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण के लिए ही नहीं बल्कि विश्वैक्यकरण के पवित्र कार्य के लिए अपना तन-मन-धन लगा लिया है। भगवान उनके इस स्तुत्य कार्य में सभी सफलताएँ प्रदान करें।

(ह०) जस्टिस् एस० महाराजन्

अध्यक्ष, तमिऴ सरकारी ग्रन्थ अनुवाद विशेषज्ञ-समिति

व

अध्यक्ष, राज्य शासकीय भाषा (वैधानिक) कमीशन

मद्रास–600002

FOREWORD

I am asked to write a foreword to this translation of Kamba Ramayana in Hindi with transliteration of the original verses in Nagari script. I do so with pleasure.

Kamban has been an eternal and unfailing source of joy and elation to very many who know Tamil and who love literature. His beautiful language, brilliant delineation of the nature, captivating characterisation, amazing understanding of human feelings and sentiments, high moral purpose which runs through the entire work, his unique contribution to the concept of Godhood and the universal appeal which his philosophy makes, all combined together to make a unique impression on me. Reading of Kamban had always provided a rejuvenating relief from the routine of my work. Hence when I learnt that his work has been translated into Hindi, I felt delighted at the thought that a larger number of people whose mother tongue is not Tamil and who do not know Tamil can now enjoy and benefit by the study of Kamban.

I learn that this translation is being published by Bhuvan Vani Trust, Lucknow, and the individual behind the effort is Shri Nandakumar Avasthee, its founder-President. Thanks to his untiring zeal and enthusiasm in the cause of emotional and national integration which he desires to bring about by making available translation and transliteration of classics in various languages into Hindi and Nagari script, 30 books including the Holy Quran from the Arabic and Bible from English and Thirukkural from Tamil have come in Hindi. Many more works are said to be in the offing. The Trust is also making transliteration and translation of good literature in Hindi into other languages.

चीफ् जस्टिस् एम० एम० इस्माइल

The present translation work is being done by Shri T. Seshadri, Retired Professor of Hindi, who has to his credit a rich experience of translation work in three languages English, Hindi and Tamil. The scheme of the present work is to give Kamban's verses in Hindi script and below the same to give the meanings for the Tamil words in Hindi in the prose order and thereafter to give a running meaning of each stanza in Hindi. Of course it is impossible to bring out completely the inherent beauty of a literature in one language by translating the same into any other language, whatever the efforts that may be taken in that behalf, since from the very nature of the case each language has got its own peculiarities acquired by centuries of use of its words in a particular sense and in a sense the words may even epitomize the entire culture and civilisation of the concerned people. However, Shri Seshadri has done all that is humanly possible within the limitations inherent in the task and his work deserves encouragement and praise.

I commend the work of the Trust and I wish the Trust all success in this noble endeavour of its.

(Sd.) M. M. Ismail.
Chief Justice, Tamil Nadu

Madras, 11th Jan. 1980

अनुवाद

मुझसे निवेदन किया गया कि कम्बन के इस लिप्यन्तरण-भाषान्तरण की भूमिका लिखूं और मैं सहर्ष यह भूमिका लिख रहा हूँ ।

अनेकानेक तमिऴ ज्ञाता साहित्यप्रेमियों के लिए 'कम्बन' (का अध्ययन) आनन्द और चित्तोल्लास का अचूक और निरन्तर स्रोत रहता आया है । उसकी सुन्दर भाषा, प्रकृति का उज्ज्वल वर्णन, चित्तापहारी चरित्र-चित्रण, मानवीय भावों और भावनाओं के क्षेत्र में उसका विस्मयकारी संवेदन, उसकी सारी रचना में अंतर्निहित रहनेवाला नैतिक उद्देश्य, ईश्वर सम्बन्धी धारणा के क्षेत्र में उसके दर्शन का अनूठा योगदान, उसके दार्शनिक सिद्धान्त जिनका आकर्षण सार्वभौमिक है —इन सबने मिलकर मेरे मन पर अप्रतिम प्रभाव अंकित किया है । कम्बन का अध्ययन मुझे अपने दैनिक कार्य-भार के दबाव से यौवनोल्लासकारी मुक्ति दिलाता आया है । अतः जब मुझे मालूम हुआ कि इस काव्य का हिन्दी में अनुवाद हुआ है तो मुझे इस विचार को लेकर अति आनन्द हुआ कि अब अधिक संख्या में लोग, जिनकी मातृभाषा तमिऴ नहीं है और जो तमिऴ नहीं जानते, कम्बन का रस-भोग कर सकेंगे और लाभ प्राप्त कर सकेंगे ।

मुझे मालूम होता है कि यह अनुवाद लखनऊ के 'भुवन वाणी ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित हो रहा है और इस प्रयास के प्राण श्री नन्दकुमार अवस्थी हैं जो उस ट्रस्ट के संस्थापक-अध्यक्ष हैं । वे विभिन्न भाषाओं के उत्कृष्ट ग्रन्थों के हिन्दी में लिप्यन्तरण-भाषान्तरण द्वारा राष्ट्रीय एकता और भावात्मक ऐकीकरण लाना चाहते हैं और इस दिशा में उनका अथक उत्साह और ज्वलन्त जोश धन्य है कि आज लगभग तीस अत्युत्तम ग्रन्थ हिन्दी में उपलब्ध हैं जिनमें अरबी का क़ुरान शरीफ़, अंग्रेजी से इंजील और तमिऴ से तिरुक्कुऱळ्

शामिल हैं। और भी अनेक ग्रन्थ तैयार हो रहे हैं। ट्रस्ट हिन्दी के अच्छे ग्रन्थों का भी अन्य भाषाओं में लिप्यन्तरण-भाषान्तरण प्रस्तुत कर रहा है।

प्रस्तुत अनुवाद श्री ति० शेषाद्रि द्वारा किया जा रहा है। वे अवकाश-प्राप्त आचार्य हैं और उनका अंग्रेजी, तमिऴ और हिन्दी में अनुवाद कार्य का समृद्ध अनुभव है। इस कृति की रचनाविधि यों है— पहले नागरी लिपि में कम्बन का मूल पद देना; बाद तमिऴ के शब्दों का, अन्वय के क्रम से हिन्दी अर्थ देना, और उसके बाद धारावाही भावार्थ देना है। यह सिलसिला सभी पदों का रहेगा। यह तो सर्वविदित है कि एक भाषा के साहित्य के दूसरी भाषा में अनुवाद में सारी अन्तर्निहित खूबियाँ लाना-दरसाना असम्भव है; चाहे प्रयास कितने ही किये जाते हों! क्योंकि मामला ही कुछ ऐसा है कि हर भाषा की अपनी-अपनी विशिष्टताएँ हैं, जो उसे उसके शब्दों के सदियों के विशेष अर्थों में प्रयोग के दौरान मिल जाती हैं। एक तरह से शब्द सम्बन्धित लोगों की सारी सभ्यता व संस्कृति के सार-संक्षेप ही हो गये रहते। तो भी श्री शेषाद्रि ने कार्य की स्वाभाविक परिसीमाओं के अन्दर रहकर सारे प्रयत्न किये हैं जो मानवसाध्य हैं। और उन्हें प्रोत्साहन और प्रशंसा मिलनी चाहिए।

ट्रस्ट के सत्कार्य की मैं तहेदिल से ताईद करता हूँ और उसे इस सदिच्छापूर्ण कार्य में सफलता मिले —इसकी हार्दिक कामना करता हूँ।

(हस्ताक्षर) एम० एम० इस्माइल
मद्रास, ११ जनवरी, १९८०
प्रधान न्यायमूर्ति, तमिऴ नाडु

प्रस्तावना

कम्बऩ् ऑरु कविञऩ्; महा कवि; कविच् चक्करवर्त्ति; ऍल्लावऱ्ऱिऱ्कुम् मेलाह अवऩ् कल्वियिऱ् चिऱन्दवऩ्. अवऩ् कल्लाद कलैयुम् वेदक्कडलुम् उलहिल् इल्लादत्त. आम्; अवऩ् कालत्तिल् इरुन्द वेदम्, उबनिडदम्, पुराणङ्गळ्, इदिहासङ्गळ्, तर्म शास्तिरङ्गळ्, पल् वेऱु कलै नूल्हळ् आहियवऱ्ऱै आर्वमुडऩ् कऱ्ऱुत् तेर्न्दिरुक्किऱाऩ्. तमिऴ् शमस्किरुदम् इरण्डिलुम् पेराऱ्ऱल् पॅरुम् बुलवनाय् इरुन्दिरुक्किऱाऩ्. वेऱु शिल पिरान्दिय मॉऴिहळुम् अवऩुक्कुत् तॅरिन्दिरुक्क वेण्डुम्.

इन्दिया ऑरु अकण्डमान तेयम्; इमयम् मुदल् कुमरि वरै इरु कडल् किऴक्कुम् मेऱ्कुम् करै तॉट्टु निऱ्क, विळङ्गुम् ऑरु पऴम् पॅरुम् देयम्! मॉऴियाल्, नागरिगत्ताल्, शीतोष्ण निलैयाल्, उणवुडैहळाल् वेऱु पट्ट निलैहळ् काणप् पट्टालुम्, अऱिवाल्, उणर्वाल्, नम्बिक्कैयाल् माऱु पडाद मक्कळैक् कॉण्ड ऑरे देयमाह विळङ्गुवदु नमदु बारद देयम्. वेद कालत्तिलिरुन्दु जम्बुत् तीवम् बारद वर्षम्, बरद कण्डम् विळङ्गि वरुहिऩ्ऱदु. अन्द ऐक्किय मनप् पाऩ्मै तमिऴ् नाट्टिल् आयिरम् पल्लायिरम् आण्डुहळाह — वरलाऱ्ऱुक् कालत्तिलिरुन्दे — निलवि वन्दुळ्ळदु. पण्डैत् तमिऴ् नूल्हळुम्, पाडल्हळुम्, अहण्ड इन्दियावै अप्पडिये शोऱ्चित्तिरमाहप् पडम् पिडित्तुक् काट्टुहिऩ्ऱत.

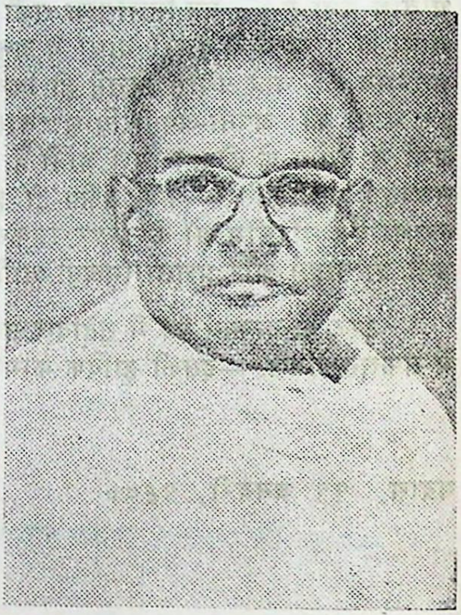

कम्बन् अडिप्पॉडि सा॰ गणेशन्

अन्दप् परम्बरैयिल् उदित्तवऩ् कविच् चक्करवर्त्ति; दॅय्वम् तॅळिन्दवऩ्; कल्वि, अऱिवु, ऑऴुक्कम्, बक्ति, कवित्तुवम् निऱैन्दवऩ्. वान्मीहि, बोदायणऩ्, वशिट्टऩ् आहियोर् इयऱ्ऱिय इराम कादैहळै ईडुपट्टुक् कऱ्ऱिरुक्किऱाऩ्. मूवरिलुम् मुऩ्ऩवराऩ वान्मीहियिऩ् इरामायणत्तिल् नॅञ्जैप् पऱि हॉडुत्तिरुक्किऱाऩ्. अक् कदैयुम्, अक्कदैयिऩ् तलैमैप् पात्तिरमाहिय इरामऩुम् कम्बऩ् उळ्ळत्तैप् पॅरिदुम् कवर्न्दवर्हळ्. इरामऩुडैय कल्याण गुणङ्गळैक् कऱ्कक् कऱ्क इरामऩुक्के कम्बन् आळाय् विट्टाऩ्. इरामऩे कम्बऩिऩ् मुऴुमुदऱ् कडवुळाहवुम् आहि विट्टाऩ्.

पल्वेऱु वहैयाऩ परन्दु पट्ट कल्वियुम्, इराम बक्तियुम्, कविदा सन्नदमुम्, वळमाऩ उलह अनुबवमुम्, "इरामावदारम्" ऍऩ्ऩुम् पारकावियत्तै अऱ्पुदमाहप् पडैक्कक् कम्बऩ् ऍऩ्ऱ कविच् चक्करवर्त्तिक्कुक् कै कॉडुत्तु उदवियिरुक्किऩ्ऱत. तिरुक्कुऱळ् पोऩ्ऱ ऑप्पऱ्ऱ अऱ नूल्हळिल् विदित्तुळ्ळ नॅऱि मुऱैहळुक्कु एऱ्प इरामकदैक् कट्टुक् कोप्पुम्, इरामऩ्, शीदै, इलक्कुवऩ्, बरदऩ्, अऩुमऩ् मुदलिय पात्तिरङ्गळुम् अमैन्दिरुन्दमै कम्बऩुक्कु इराम कादैयैप् पाडुवदऱ्कुप् पॅरिदुम् ऊक्कत्तैयुम् उऱ्चाहत्तैयुम् अळित्तिरुक्किऱदु.

कम्बन् सत्तियत्तै आशिरयित्तवऩ्, 'सत्तियमे इरामऩ्' ऎऩ नम्बुबवऩ्. "अऱत्तिऩ् मूर्त्ति" ऎऩ्ऱु इरामऩैप् परवुवाऩ्. इरामऩ् ऎऩ्ऱुम् तनदु वऴि पडु कडवुळुक्कुच् चमैत्त शोऱ्कोयिलाहवे करुदि 'इरामावदारम' ऎऩ्ऱुम् पार कावियत्तैप् पक्ति शिरत्तैयोडु पडैत्तुळ्ळाऩ्. ताऩ् पडैत्त अन्द महा कावियत्तै शकाब्दम् ८०७ (ऎण्णूत्तु एऴि) ल्– अदावदु कि० पि० ८८६ (ऎण्णूत्तु ऎण्बत् ताऱु) पॆब्रुवरि, २३ (इरुपत्तु मूऩ्ऱु) आऩ् देदि पुदऩ् किऴमै तुदियै तिदि अस्त नट्चत्तिरत्तिल् वॆण्णॆय्नल्लूरिल् अरङ्गेऱ्ऱिऩाऩ्. अदऩ् अरुमै पॆरुमैहळै मदित्तु अऱिवोर्हळुम्, अऱिञर्हळुम् शेर्न्दु मुदऩ् मुदलाहक् "कविच् चक्करवर्त्ति" ऎऩ्ऱुम् पट्टत्तैक् कम्बऩुक्कुच् चूट्टि महिऴ्न्दऩर्.

वाऩ्मीह बगवाऩ् अरुळिय इरामायणत्तिऩ् कट्टुक् कोप्पैयुम् कदैयैयुम् कम्बऩ् अप्पडिये एऱ्ऱुक् कॊण्डिरुक्किऱाऩ्. ऎऩ्ऱालुम्, आङ्गाङ्गे कालत्तिऱ्कुम्, इडत्तिऱ्कुम् नागरिहप् पण्बाट्टिऱ्कुम् एऱ्ऱ शिऱ्चिल माऱ्ऱङ्गळैयुम् शॆय्दिरुक्किऩ्ऱ अरुमैप्पाट्टैक् काणलाम्. वाऩ्मीहत्तिल् इल्लाद इरण्य वदैप्पडलत्तैक् कम्बत्तिल् काणलाम्. अदिल् कम्बऩुडैय उबनिडद ञाऩम् ऒळिविडुवदैक् काणलाम्. वाऩ्मीहि पडैत्त माया रामप्पडलत्तै नीक्कि विट्टु माया जनहप् पडलत्तैप् पुहुत्तिय कम्बऩिऩ् मऩत्तत्तुव (Psychological) अऱिवु पॆरिदुम् पाराट्टत् तहुम्. अप्पडिये वालि मोट्चम् ऎय्दि पिऩ् तारैयैच् चुक्किरीवऩिऩ् मऩैवियाक्कामल् विदवैयाहवे वाऴवैत्त नेर्त्तियुम् पॆरिदुम् महिऴत् तक्क माऱ्ऱमाहुम्. इङ्ङऩम् तमिऴ् इलक्कणम् वहुक्कुम् "पिऩ्ऩोर् वेण्डुम् विहऱ्पङ्गळै" ऎल्लाम् आङ्गाङ्गे पुहुत्तिय कम्बऩिऩ् पडैप्पाऱ्ऱलै ऎत्तुणैप् पुहऴिऩुम् तहुम्.

काळिदासऩै, बवबूदियै, हर्षऩै, बासऩै, इऩ्ऩुम् षेक्स्पियर्, मिल्टऩ्, बैरऩ्, षॆल्लि, कीत् पोऩ्ऱ वॆळिनाट्टुप् पुलवर् पॆरुमक्कळैयुम्, तुळसिदासर्, टाकुर् पोऩ्ऱ पिऱ्कालप् पुलवर्हळैयुम् तमिऴ् अऩ्बर्हळ् तम् मॊऴियिल् पॆयर्त्तुक् कऱ्ऱु महिऴ्हिऩ्ऱऩर्. अङ्ङऩमे तमिऴ् मॊऴियिल् उळ्ळ कम्बऩै, वळ्ळुवऩै, इळङ्गोवै, बारदियै ऎल्लाम् इन्दियप् पॊदु मॊऴियाहिय हिन्दियिल् मॊऴि पॆयर्त्तुप् पयऩ् तुय्क्क वेण्डुम्. अप्पॊऴुदु ताऩ् नाट्टिऩ् ऒरुमैप्पाडुम् परन्दडर्न्द पल् वेऱु कलै निलैहळुम् पुलप्पडुत्तप्पट्टु नलम् बयक्कुम्.

अन्द वहैयिल् वळ्ळुवप् पेराशाऩ् वऴङ्गिय तिरुक्कुऱळ् एऱ्कऩवे हिन्दियिल् मॊऴि पॆयर्क्कप्पट्टु विट्टदु. वेऱु शिल शिऱ्ऱिलक्कियङ्गळ्, शिऱु कदैहळ्, तऩिप्पाडल्हळ् हिन्दियिल् मॊऴि पॆयर्क्कप्पट्टुळ्ळऩ. कविच् चक्करवर्त्तियिऩ् इरामावदारम् इप्पॊऴुदु मॊऴि पॆयर्क्कप्पट्टु वॆळि वरुहिऱदु. इदै मिक्क बक्ति शिरत्तैयुडऩ् वॆळिवरच् चॆय्बवर् श्रीजत् नन्दकुमार अवस्ति अवर्हळ् आवार्. अवर्हळिऩ् इराम बक्तियैयुम् इरामायण ईडुपाट्टैयुम् पॆरिदुम् पाराट्टि वाऴ्त्तुहिऱेऩ्; वणङ्गुहिऱेऩ्.

इन्दप् पॆरुङ्गाप्पियत्तैच् चॆम्मैयाहवुम्, शिऱप्पाहवुम् मॊऴि पॆयर्त्तवर् मदुरै हिन्दिप् पेराशिरियर् ति० शेषात्तिरि अवर्हळ्. मूल नूल् मॊऴियाहिय तमिऴिलुम् मॊऴि पॆयर्क्कप्पॆऱुम् मॊऴियाहिय हिन्दियिलुम् शिऱन्द पयिऱ्चियुम् पुलमैयुम् कॊण्डवर्; मॊऴि पॆयर्प्पाऱ्ऱल् मिक्कवर्; इरामकादैयिल् ईडुपाडु निरम्बियवर्; ऎल्लावऱ्ऱिऱ्कुम् मेलाह महा कविहळै मदित्तुप् पोऱ्ऱुम् पण्बाट्टाळर्. ऎऩवे मॊऴि पॆयर्प्पु मूल नूलिऩ् पॆरुमैयैक् कऱ्पोर् नऩ्गुणरप् पॆरिदुम् तुणै पुरियुम्.

इङ्ङऩम् इम् मॊऴि पॆयर्प्पुक्कुक् कारणर्हळायिरुन्द इरुवरैयुम् पल्हालुम्

वाऴ्त्ति वणङ्गुहिऱेऩ्. इरुवर्क्कुम् ऍल्ला नलऩ्गळैयुम् अरुळवेण्डुमॆऩ्ऱु ऍऩ्तैपिराऩ कम्बतैयुम् अवऩ् पाडिप् परवुम् परम् बॊरुळाम् श्री रामच्चन्दिर मूर्त्तियैयुम् पिरार्त्तित्तु अमैहिऱेऩ्.

वाऴ्ह इरामावदारम् !
वळर्ह कम्बन् पुहऴ् ।।

कम्बन् कऴहम्
कारैक्कुडि.
१५-१०-१९७९

अऩ्बऩ्
कम्बन् अडिप् पॊडि.

अनुवाद

कम्बन एक कवि है; महाकवि; कविचक्रवर्ती; सबसे बढ़कर वह विद्या का सागर है। संसार में ऐसा "वेदसागर" या ऐसी "कला" (शास्त्र) नहीं हैं, जिनको उसने नहीं जाना था। हाँ ! उसके समय में वेद, उपनिषद, पुराण, इतिहास, धर्मशास्त्र और अनेक विज्ञान (शास्त्र) के ग्रन्थ, जो भी प्रचार में थे, इन सबका उसने बहुत ही आतुरता के साथ अध्ययन कर लिया था। वह तमिऴ और संस्कृत दोनों का बड़ा ही विदग्ध और उद्भट विद्वान रहा है। अन्य कुछ देशी भाषाओं से भी उसका परिचय अवश्य रहा होगा।

भारत एक विशाल और अखण्ड देश है। हिमालय से कन्याकुमारी तक पूरब और पश्चिम में रहनेवाले समुद्रों के तीरों के छूते रहते, फैला रहनेवाला बड़ा प्राचीन देश है। भाषा, सभ्यता, शीतोष्ण स्थिति, भोजन, पोशाक आदि अनेक बातों में विभिन्नता के होते हुए भी वह ऐसे लोगों का राष्ट्र है जो बुद्धि, अनुभूति और विश्वासों के क्षेत्र में अविभाज्य एक हैं। वेदकाल से यह जम्बूद्वीप, भारतवर्ष या भरतखण्ड ऐसे ही रहता आया है। यह ऐक्यभाव अनेक सहस्र वर्षों से विद्यमान है। प्राचीन तमिऴ ग्रन्थ और तमिऴ के मुक्तक गीत इसी अखण्डित भारत का शब्दचित्र उपस्थित करते हैं।

उसी भाव-परम्परा में उत्पन्न था कविचक्रवर्ती— ईश्वर-विश्वासी, विद्या, बुद्धि, सदाचार, भक्ति और कवित्व से भरपूर कम्बन। उसने "वाल्मीकी बोधायन और वसिष्ठ" के द्वारा रचित रामगाथाओं को श्रद्धा के साथ सीखा है। उन तीनों में प्रथम मुनि वाल्मीकि के द्वारा रचित रामायण में उसने अपने मन को खो दिया है। वह चरित्र और चरितनायक दोनों ने उसके मन को एक दम लूट लिया है। श्रीराम के कल्याण-गुणों को पढ़ते-पढ़ते वह श्रीराम का दास बन गया और श्रीराम उसके आदि परमेश्वर बन गये।

विविध और विशाल ग्रन्थाध्ययन, श्रीराम-भक्ति, काव्य 'सन्नद्धता' (प्रतिभा), समृद्ध सांसारिक अनुभव आदि ने "इरामावदारम" नामक इस "पारकाव्य" (परकाव्य) की अद्भुत रचना में कवि को अपना हाथ बँटाया है। "तिरुक्कुऱळ्" आदि नीति ग्रन्थों में विहित नीतिमार्ग के अनुकूल रामचरित का प्रबन्ध और श्रीराम, सीतादेवी, लक्ष्मण, भरत, हनुमान आदि पात्र वने हैं। यह बात कम्बन को श्रीरामचरित्र-गान करने में अधिक उत्साह और उमंग दे सकी है।

कम्बन सत्याश्रयी है। "सत्य ही श्रीराम है" —इस पर विश्वास करनेवाला है। "कम्बन श्रीराम को धर्म-मूर्ति" (विग्रहवान धर्मः) —कहकर प्रशंसा करता है। अपने आराध्यदेव श्रीराम के लिए रचित काव्य-मन्दिर मानकर ही उसने "इरामावदारम" को भक्ति और श्रद्धा के साथ रचा है। स्वरचित महाकाव्य का उसने शकाब्द ८०७

में यानी सन् ८८६ ईसवी, फरवरी २३ तारीख, बुधवार द्वितीया, हस्त नक्षत्र में तिरुवेण्णेय्नललूर में विद्वन्-मण्डली के सामने 'अरङ्गेऱ्ऱम" (प्रकाशन) किया। उस ग्रन्थ की श्रेष्ठता, महानता आदि से प्रभावित होकर साधु पुरुषों और विद्वानों ने पहले-पहल कविचक्रवर्ती की उपाधि से उसको भूषित किया और स्वयं आनन्द पाया।

कम्बन ने भगवान वाल्मीकी की रामायण के कथा-प्रबन्ध और चरित्र-प्रवाह को वैसे ही अपना लिया है। तो भी यत्र-तत्र काल, देश और सभ्यता-संस्कृति के अनुकूल आवश्यक परिवर्तन किये हैं। उनकी अपूर्व सुन्दरता को देखकर हम मुदित हो जाते हैं। वाल्मीकी में हिरण्यवध का चरित्र नहीं है। लेकिन कम्बन में है और उसमें उपनिषद ज्ञान अपनी छटा दिखा रहा है। वाल्मीकी में मायाराम का पटल है। कम्बन ने उसको हटाकर मायाजनक-पटल समाविष्ट किया है। उसमें कम्बन का मनोवैज्ञानिक ज्ञान खूब परिलक्षित होता है। वैसे ही वाली की मोक्ष-प्राप्ति के बाद तारा को सुग्रीव की पत्नी न बनाकर कम्बन ने उसको विधवा ही रहने दिया है। यह बहुत ही श्लाघनीय और मन को प्रसन्न करनेवाला परिवर्तन है। इस तरह तमिऴ के व्याकरण के नियमों के अनुकूल "आवश्यक विकल्प (परिवर्तन)" यत्र-तत्र करके काव्य-रचना करने की उसकी रचना-शक्ति की कितनी ही प्रशंसा क्यों न करो, वह उचित ही होगी।

तमिऴप्रेमी विद्वान कालिदास को, भवभूति, हर्ष, भास और शेक्सपीयर, मिल्टन, बाइरन, शेल्ली, कीट्स, प्रभृति, विदेशी लेखकों और तुलसीदास, टैगोर आदि परवर्ती कवियों को अपनी भाषा में अनूदित कर रसास्वादन का मोद उठा रहे हैं। उसी तरह तमिऴ भाषा से कम्बन, वळळुवन, इळंगो, भारती आदि की कृतियों का भी भारत की आम भाषा हिन्दी में अनुवाद कर उनके काव्य-रस का भोग करना चाहिए। तभी देश की एकता स्थिर होगी। पूर्णसम्पन्न और विविध कला-कृतियों की स्थिति का समाचार फैलेगा और मंगल होगा।

इस धारा में श्रेष्ठ आचार्य वळळुवर का तिरुक्कुऱळ् पहले ही हिन्दी में अनूदित हो गया है। अन्य लघु ग्रन्थ, गल्प और मुक्तक गीत भी हिन्दी में अनूदित हो गये हैं। कविचक्रवर्ती का रामावतार अब अनूदित होकर आ रहा है। इसके भक्ति, श्रद्धा के साथ प्रकाशन में लगे रहनेवाले श्रीयुत नन्दकुमार अवस्थी हैं। उनकी श्रीराम-भक्ति और रामायण में उनकी श्रद्धा की मैं खूब प्रशंसा करता हूँ और उनको नमस्कार करता हूँ।

इस महाकाव्य के श्रेष्ठ और सफल अनुवादक मदुरा के हिन्दी-आचार्य श्री ति० शेषाद्रि हैं। मूल ग्रन्थ की भाषा तमिऴ में और अनुवाद की भाषा हिन्दी में उनका अच्छा ज्ञान और उचित अभ्यास और विद्वत्ता है। अनुवाद-कला में उन्हें अच्छी दक्षता प्राप्त है। वे श्रीरामचरित्र पर विश्वास रखनेवाले हैं। इन सबके ऊपर वे महाकवियों का आदर करनेवाले सुसभ्य सज्जन हैं। इसलिए अनुवाद मूल ग्रन्थ की विशिष्टता को जानने में पाठकों को अवश्यमेव अच्छी सहायता देगा।

इस अनुवाद के कारणभूत दोनों सज्जनों को विविध प्रकार से बधाई देता हूँ और उनको नमन करता हूँ। दोनों को सभी सौभाग्य प्राप्त हों —इसकी अपने 'धातादेव' कम्बन से और उसके काव्य-विषय परवस्तु श्रीरामचन्द्रमूर्त्ति से प्रार्थना के साथ मैं विराम लेता हूँ।

जिए 'रामावतार'
पले 'श्रीरामकीर्ति'

कम्बन कऴहम,
कारैक्कुडि
१५-१०-७६

प्रिय,
कम्बन अडिप्पोडि
(कम्बन चरणरेणु)

प्रकाशकीय प्रस्तावना

अमरभारती सलिल-मञ्जु की 'तमिऴ' सुपावन धारा ।
पहन नागरी-पट उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा ।।

विषय-प्रवेश

भगवति वाणी देवि नमस्ते ! लिपि के माध्यम से भाषाई सेतुबन्धन का महत् कार्य, अकिञ्चन ने १९४७ ई० में अपनाया था। उल्लेखनीय उपलब्धि और प्रशस्ति प्राप्त होने पर, १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना की; और तब से भारतीय और भारत में स्थायित्व-प्राप्त सभी प्रमुख भाषाओं के श्रेष्ठ और सदाचार-ग्रन्थों के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरणों से राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि का शृंगार हो रहा है। विविध भाषाओं के विशाल ग्रन्थों के लिप्यन्तरित रत्नाभरणों से वाणी भगवति की साज-सज्जा हुई। अलौकिक रूप से शृङ्गारित और समलङ्कृत उसी 'अमरभारती' के मुकुटबन्धन का शुभ अवसर आज प्राप्त हुआ है।

भारत की अञ्चलीय भाषाओं में तमिऴ को अति प्राचीन और सम्पन्न होने का गौरव प्राप्त है। तमिऴ की लिपि तो और भी विचित्र है। उसमें थोड़े से व्यञ्जन, वे भी स्थानभेद से भिन्न-भिन्न ध्वनि प्रकट करते हैं ! इस स्वल्प किन्तु जटिल वर्णाक्षरी की गागर में अपार तमिऴ साहित्य-सागर ! और उसका शीर्षस्थ ग्रन्थ 'कम्ब रामायण' का नागरी रूपान्तर मुकुटस्वरूप प्रस्तुत करते हुए हम आत्मविभोर हैं, कृतकृत्य हैं।

ग्रन्थोदय

इस अहोभाग्य के लिए परोक्षरूप नारायण को सराहा जाय अथवा प्रत्यक्ष नरनारायण को? विश्व-वाङ्मय के मूल स्रोत 'नारायण' की कृपा बिना यह प्रेरणा, यह साधन, यह सामर्थ्य, सुलभ कहाँ ? अतः कण-कण को गति देनेवाले अनन्तनारायण को नमन है। किन्तु अलक्ष्य नारायण पर कितने क्षण अकिञ्चन की दृष्टि टिकी रहेगी ? पार्थिव जगत् में ही नारायण की दिव्य ज्योति 'नरनारायण' को तलाश करना है। किनके आशीर्वाद से, किनके सहयोग से, किनके अथक श्रम से, और किनकी संस्तुति के बल पर कम्बर् के इस अद्भुत ग्रन्थ का नागरी-जगत् में उदय हुआ ?

ध्यान करने पर सर्वप्रथम हृदय नत होता है अनन्तश्रीविभूषित स्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज पर। उनकी ही प्रेरणा और आशीर्वाद से इस अद्‌भुत और अतिकष्टसाध्य कार्य को पूर्ण करने की क्षमता और उत्साह, नागरी और हिन्दी रूपान्तरकार श्री ति० शेषाद्रि महोदय को प्राप्त हुआ। हम नारायण की ज्योति परमवैष्णव स्वामीचिन्मयानन्दजी को प्रणाम करते हैं।

श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०, ९९, भारती रोड, मदुरै (तमिळ्नाडु), तमिळ् एवं हिन्दी के लेखक, अनुवादक, प्रवक्ता, लगभग चार दशाब्दियों, यों कहिये कि आजीवन राष्ट्रभाषा के दक्षिण में प्रचारक, मदुरै कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक, गांधी-दर्शन के तत्त्वज्ञ शिक्षक, समाज-सेवादल के निदेशक, गुरुवर श्री चिन्मयानन्दजी के उपनिषद-वचनों के तमिळ् में अनुवादक, और सम्प्रति, मदुरै में हिन्दी प्रचारक विद्यालय के प्राचार्य हैं।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के प्रमुख अधिकारी विद्वान् श्री रा० शौरिराजन हमारे अतिशय धन्यवाद के पात्र हैं। तमिळ्-कम्बन के नागरी में प्रस्तुतीकरण की हमारी वर्षानुवर्ष की पिपासा, एक दिन उनके ही पत्र से शान्त हुई। श्री शेषाद्रि का परिचय उनसे ही प्राप्त होने पर हमारा अभीष्ट सिद्ध हुआ। कम्ब रामायण का अधिकांश कार्य श्री शेषाद्रि, न केवल पूरा कर चुके हैं, वरन् अब भुवन वाणी ट्रस्ट के वे आजीवन न्यासी भी हैं। वे ही इस महान् कार्य के यजमान हैं, पौरोहित्य भी उनका है, और ट्रस्ट के वाणीयज्ञ में 'कम्ब रामायण' रूपी साकल्य के आहुति-प्रदाता भी वे ही हैं। अकिञ्चन और सारा राष्ट्र उनका ऋणी रहेगा।

ग्रन्थ के प्रणेता महर्षि कम्बन का जीवनकाल, विद्वज्जन ९वीं शताब्दी वि० तक ले जाते हैं। उनकी जीवनी और उनका यह अपौरुषेय-जैसा भक्तिमहाकाव्य, तमिळ् भाषा का विचित्र वर्ण-विन्यास और व्याकरण आदि पर शेषाद्रिजी की अवतरणिका पृ० १८ से ३६ पर अवलोकनीय है। पृष्ठ ३७-४० में विषय-सूची भी सविस्तार दी गई है।

तमिळ्—राष्ट्रभाषा के संदर्भ में

जहाँ तक दक्षिणी, और विशेष रूप से तमिळ् भाषा का सम्बन्ध है, लोगों में यह भ्रान्ति-सी हो गयी है कि वे भिन्न कुल की हैं। यह सही है कि अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में दक्षिणी भाषाओं में प्रवेश अपेक्षाकृत कुछ कठिन है। उनका उत्तर की भाषाओं से सम्बन्ध कुछ दूर का है। संसार की सभी भाषाओं में कुछ क्षेत्रीय उपज-विशेष होती है। इसके प्रभाव से 'तमिळ्' भी मुक्त नहीं है। अन्यथा जिस प्रकार विश्व के मानव-समूह के पीछे एक वृत्ति, सामर्थ्य, दुर्बलता, भावात्मकता, परिलक्षित होती है, उसी प्रकार आप 'भाषा' को कितने ही कुलों में बाँट लें, उनमें समीपियों में वैभिन्य और दूरस्थ में समता के दर्शन होंगे।

तमिऴ् में व्यञ्जन २०-२२ मात्र हैं। वे भी स्थान-भेद से अलग-अलग ध्वनियों में बोले जाते हैं। इससे वे शब्द संस्कृत अथवा हिन्दी के तद्वत् होते हुए भी पहचान में नहीं आते और मूलतः भिन्न प्रतीत होते हैं। कुछ तमिऴ् शब्दों के लेखन, कोष्ठकों में उच्चारण, और उनके राष्ट्रभाषाई रूपों में समानता का अवलोकन करें:—

मैन्ऩ्तरुम् (मैन्दरुम्)–तरुण मानव; मऩ्ऩमुम् चॅल्ल (मऩ्ऩमुञ्जॅल्ल)–मन को चलाते हुए; कुयम्कऩ् (कुयम्हऩ्)–कुम्भकार (कुम्हार); तयिर् उऴु मत्तिऩ् (तयिरुऴु मत्तिड़्)–दही में मथानी के समान; नॅट्टु कण् (नॅडुङ्गण्)–नेत्र कज्जल वाले; आरमुम्–हार (माला); इ–यह; उम्परो (उम्बरो)–उनके ऊपर भी; अङ्कुचम् (अङ्गुशम्)–अंकुश; चुन्तर (सुन्दर)–सुन्दर; वाचम् (वासम्)–वास (सुगन्ध); तण्टम् (ड़ण्डम्)–दण्डम्; चेऩै (शेऩै)–सेनाएँ; पकवन् (पहवन्)–भगवन् आदि।

इस प्रकार हज़ारों शब्द हैं, जिनमें तमिऴ् के अक्षरों और उनके स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझ लेने के बाद, वे विराने से अपने अर्थात् सारे राष्ट्र की सम्पत्ति बन जाते हैं। मैं यह नहीं कहता कि तमिऴ् में मौलिक भिन्न शब्द नहीं हैं। यह तो एक से अनेकत्व को प्राप्त सृष्टि में आपको सर्वत्र दिखाई देगा। किन्तु प्रत्येक स्थान पर विभेद ही पर निगाह जाना घातक है; साम्य की तलाश में रहना श्रेयस्कर है। तमिऴ् के अक्षर भी ब्राह्मी लिपि की देन हैं। भोजपत्र और ताळपत्र में लिखने की भिन्न परिस्थिति के कारण उत्तर भारत के अक्षर नुकीले पाईदार और दक्षिण भारत के गोलाकार हैं। शब्दों के साम्य की चर्चा ऊपर की जा चुकी है। वैषम्य की भावना को त्यागकर, और बिल्कुल 'अपना' समझकर तमिऴ् के अलौकिक राष्ट्रभाषा-भण्डार का आनन्द लीजिये।

विद्वानों की संस्तुतियाँ

(१) हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान् डॉ० एस० शंकर राजू नायडू, एम० ए०, पीएच्० डी०, एफ़० आर० ए० एस० (लन्दन), हिन्दी विभागाध्यक्ष, मद्रास विश्वविद्यालय की विद्वत्तापूर्ण भूमिका; (२) कम्बन अडिप्पॉडि (कम्बन-चरण-रेणु) श्री सा० गणेशन (परिचय, पृष्ठ ३५) की ग्रन्थ पर शुभकामना; (३) तमिऴ्नाडु के जस्टिस श्री महाराजन तथा (४) चीफ़् जस्टिस श्री एम० ए० स्माइल —इन महानुभावों के प्रस्तुत नागरी संस्करण पर विस्तृत उद्‌गार, हमारे कार्य को गुरुत्व प्रदान करने के साथ ही, भाषा, धर्म, वर्ग और अञ्चलीय भेदभाव को चुनौती देते हुए, मानव को सन्तों की वाणी के माध्यम से विश्वबन्धुत्व की ओर उन्मुख करते हैं। हम इन महानुभावों के नितान्त आभारी हैं। हम उनके मूल पत्र (अंग्रेज़ी अथवा तमिऴ् में), हिन्दी अनुवाद सहित, ग्रन्थ के आरम्भ में प्रस्तुत कर रहे हैं।

लोकप्रख्यात समाजसेवी, श्री के० सन्तानम् ने भी 'तमिऴ् कम्ब रामायण' के नागरी रूपान्तर पर १-९-७९ को एक संस्तुति-पत्र भेजने

की कृपा की थी। उनके संस्तुति-पत्र को ग्रन्थारम्भ में प्रकाशित करने का एक ओर हमें सौभाग्य है, तो दूसरी ओर ग्रन्थ के प्रकाश में आने से कुछ दिवस ही पूर्व, ८५ वर्ष की आयु में, २८ फरवरी, १९८० को, उनके दिवंगत होने के समाचार से हम बिक्षुब्ध हो उठे हैं। हमें वेदना है कि ग्रन्थ पूरा होने पर उनके सम्मुख प्रस्तुत नहीं कर सके। १९२० ई० से अनवरत स्वतन्त्रता-सेनानी, संविधान सभा के सदस्य, अनेक केन्द्रीय मंत्रिपदों पर आसीन, अनेक पुस्तकों के लेखक, श्रीराजाजी के अभिन्न मित्र, अनेक प्रतिष्ठित पत्रों के सम्पादक, तमिऴ और संस्कृत के समान रूपेण उद्भट विद्वान, वियुक्त श्री सन्तानम की पुण्यस्मृति में हम यह पावन रामायण-ग्रन्थ नागरी-जगत् के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए, पुण्यप्रवर श्री के० सन्तानम के परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हैं।

इस प्रकार अलक्ष्य और लक्ष्य, 'नारायण' और 'नरनारायण' सभी को नमन करते हुए, हम प्रार्थना करते हैं कि भाषा और लिपि के सेतुबन्धन द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण एवं विश्वबन्धुत्व का हमारा उद्देश्य और उपलब्धि उत्तरोत्तर फूलती-फलती रहे। ॐ नमो नारायण ! नमो नरनारायण !

आभार-प्रदर्शन

विशाल ग्रन्थ कम्ब रामायण का सानुवाद नागरी रूपान्तर, पाँच अथवा सात जिल्दों में प्रकाशित होकर सन् १९८१ ई० के अन्तर्गत विश्वनागरी-जगत् के सम्मुख प्रस्तुत हो जायगा, ऐसी हम आशा रखते हैं। भुवन वाणी ट्रस्ट के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान् और शासन —सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत सानुवाद लिप्यन्तरण के प्रकाशन में शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की विशेष सहायता निहित है। पिछले वर्षानुवर्ष से ट्रस्ट के इन कार्यों में केन्द्रीय शासन से प्राप्त उल्लेखनीय सहायता के फलस्वरूप नाना-भाषाई अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। हम प्रतिदान में यह आश्वासन देते हैं कि ट्रस्ट निरन्तर भाषा-सेतुबन्धन के पुनीत कार्य में रत रहेगा।

रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु, युगों के बीत जाने पर भी, आज अलक्ष्य होकर भी, राष्ट्र के सांस्कृतिक सेतु को बनाये हुए है। भुवन वाणी ट्रस्ट का विश्वनागरी सेतु, राष्ट्र क्या विश्व को एक सांस्कृतिक और भावात्मक स्नेह-बन्धन में उत्तरोत्तर आबद्ध करता रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त
(तमिऴ) वर्णमाला का देवनागरी रूपान्तर

तमिऴ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने २३-६-६६ में, प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ष़' रूप निर्धारित किया था। मैंने उस पर आपत्ति करके 'ऴ' का सुझाव दिया था। तब से संभवतः और भी आपत्तियाँ 'निदेशालय' अवश्य पहुँची होंगी।

विदित हो कि ५-६ फरवरी, १६८० की निदेशालय की बैठक में, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, यह निर्णय किया गया कि अब 'ष़' के स्थान पर 'ऴ' ही प्रयुक्त किया जाय। आशा है लिप्यन्तरणकार इसका ध्यान रखेंगे।

तमिऴ - देवनागरी वर्णमाला

அ अ	ஆ आ	இ इ	ஈ ई
क	का	कि	की
உ उ	ஊ ऊ	எ ऎ	ஏ ए
कु	कू	कॆ	के
ஐ ऐ	ஒ ऒ	ஓ ओ	ஔ औ
कै	कॊ	को	कौ
	ஃ अक्		
க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ळ̱,ऴ	ள ळ
ற र̱,ऱ	ன न̱,ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

☞ तमिऴ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं।

नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

सानुवाद लिप्यन्तरणकार—

आचार्य श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान
पुस्तकालय
विन. ।
शान्तिकुंज, हरिद्वार

८१९६४.D

अनुवादक की अवतरणिका

१ प्राक्कथन

आत्मविश्वास साधना-सागर-तरण की परमावश्यक तरी है। उसके बिना सिद्धि दुर्लभ है।

श्रीरामानुजाचार्य के भक्तिमार्ग के विशिष्टाद्वैत मत के प्रसिद्ध आचार्य, श्रीनिगमांतमहादेशिक वेंकटनाथार्य द्वारा प्रतिपादित, प्रवर्तित और विशदीकृत शरणागति या प्रपत्तिमार्ग के अनुयायियों के लिए यह आत्मविश्वास एक विशेष अर्थ रखता है; और वह है सर्वांगीण समर्पणमति और कैंकर्यवृत्ति। इसका साधारण शब्दों में अर्थ है— अनपायी दिव्य-दंपति श्रीलक्ष्मी-नारायण या सीता समेत प्रभु श्रीराम, एक मात्र जग-शरण्य का अनन्य शेष, नियंत्रित सेवक और दास रहना। अर्थात उनकी आज्ञा और उनकी प्रेरणा लेकर, उनकी कृपा को पुरस्सर करके, उनके मनोरंजन को ध्येय मानकर कार्यरत रहना और फल को उनको समर्पित करना —यही शरणागति की दासवृत्ति है।

अस्तु ! तमिऴ के कवि सार्वभौम कम्बन की बृहत् काव्यकृति रामायण का सानुवाद लिप्यंतरण अति असाधारण काम है। मेरे हिन्दी-गुरु के शब्दों में 'विचार ही भय उत्पन्न करनेवाला है'। फिर यह ज्यादती करने का साहस क्यों कर हुआ ? इसके पीछे एक रहस्य है।

गत लगभग पच्चीस सालों से मैं स्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज का शिष्य, उनके ग्रंथों का अनुवादक और उनके मिशन का एक सेवक रहता हूँ। स्वामी जी उत्तरकाशी के स्वामी तपोवनम के प्रमुख शिष्य, विश्वविख्यात गीता के प्रचारक, हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान में लगे रहनेवाले महान योगी और तपस्वी हैं। सन् १९७६, जुलाई-मध्य में उन्होंने एक पत्र, मेरे नाम, उत्तरकाशी से लिखा जिसका सार था— अब तुम्हारा संसार के प्रति कोई कर्तव्य शेष नहीं रह गया। सब कुछ छोड़कर यहाँ भाग आओ।

यह पत्र तब पहुँचा जब मैं मरण देवता के मुख से अभी-अभी छूटा था। मृत्यु ने मुझे अपने हाथ में लेकर भी क्यों छोड़ दिया ? —यह मेरे विस्मय का विषय रहा। मृत्यु-भय टल गया फिर भी मैं निर्बल और शय्याग्रस्त ही रहा। मैंने उन्हें अपनी हालत लिखी और कहा कि दो तीन साल मैं नहीं आ पाऊँगा। उत्तर तुरन्त आया कि ठीक है। पर जल्दी स्वस्थ हो जाओ। रोगी रहने का हमारा अधिकार नहीं है। क्योंकि हमें अभी कितनी ही सेवाएँ करनी बाकी हैं !

यह 'हम' देखकर मैं चकरा गया। उनकी बात ठीक है। वे तो हिन्दूद्धार में रात-दिन अपनी शक्ति खपा रहे हैं। पर मेरी क्या बिसात है ? मेरे सामने क्या कार्य है ? मैं वह अलौकिक शक्ति कहाँ से लाऊँ ?

पर प्रभु की आज्ञा देखिए। लखनऊ के विख्यात राष्ट्रलिपि-सेवी श्रीनंदकुमार जी अवस्थी का आदेश आया कि कम्बरामायण का सानुवाद लिप्यंतरण करो। सच मानिए। तब तक मुझे मालूम हीं नहीं था कि 'भुवन वाणी ट्रस्ट' नाम की एक संस्था है और उसके द्वारा भाषाई सेतुकरण का ध्येय लेकर इतना सारा अतुल महत्व का कार्य हो रहा है। इसे प्रभु का संकेत मानने के सिवा, उस स्थिति में, मेरे सामने और कोई चारा नहीं रह गया। यह मनोभाव दृढ़ रहे; मानवीय दुर्बलताएँ, जैसे अहंकार, प्रमाद, संशय, विस्मरण, अज्ञान, रोग आदि, मध्य में रोड़ा न बनें —इसकी सतत प्रार्थना के साथ इस शुभ कार्य को भगवत-कैंकर्य के रूप में मैंने आरम्भ किया।

२ संस्करण का चुनाव

तमिऴनाडु में अब कम्बन के तीन सटीक संस्करणों की चर्चा है। टीकाएँ, टीकाकार विद्वानों के विभिन्न मतों के आधार पर परस्पर विभिन्न भावों के संकलन हो रहती हैं। तो भी टीका के बिना कम्बन को पूर्ण रूप से समझना कठिन है। इस क्षेत्र में वै० मु० गोपाल कृष्णमाचार्य की (लगभग पचास साल पहले कृत) टीका सबका पथप्रदर्शक रही है। आठ जिल्दों में (भागों में) निकला यह संस्करण वैष्णवों के लिए अत्यन्त मान्य और उपादेय है। पीछे के अन्य संकलन-सम्पादनकर्ता उनका आभार मानते हैं। फिर अण्णामलै विश्वविद्यालय ने विद्वानों की एक गोष्ठी नियुक्त की और उनका प्रथम विचार था कि 'उ-वे-सु नूल् निलयम्' वालों के सहयोग के साथ कम्बन-संस्करण निकाला जाय। सुन्दरकाण्ड परस्पर सहयोग के साथ प्रकाश में आया भी। पीछे विश्वविद्यालय ने अपना संस्करण अलग ही निकालने का फैसला कर लिया। विश्वविद्यालय का वह संस्करण प्रकाशित हुआ। महामहोपाध्याय श्री उ-वे-स्वामीनाथय्यर (अब दिवंगत) के पवित्र नाम पर चलनेवाले नूल निलयम् वालों ने दस जिल्दों में एक संस्करण निकाला। इसमें श्रीअय्यर के जन्म-व्यापी अन्वेषणों का फल समाहित है।

इनमें गोपालकृष्णमाचार्य का संस्करण भक्ति की दृष्टि से साम्प्रदायिक तथ्यों के ज्ञान का कोष रहता है। उ-वे-सु नूल् निलयम् वालों का संस्करण शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। अण्णामलै-संस्करण खोज की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

इनके अलावा मद्रास के कम्बन कऴगम वालों ने एक मूल संस्करण निकाला है। एक ही जिल्द में कम्बरामायण के सारे पदों का (प्रामाणिकता की मुद्राप्राप्त और अतिरिक्त पदों के साथ) संकलन हुआ है। पर यह हमारे काम के लिए उपयोगी नहीं रहा, क्योंकि इसमें टीका नहीं है और दूसरा— संधि-विग्रह करके अलग-अलग शब्द दिये गये हैं, जिससे कविता का रूप बना नहीं रहा है।

खैर; सटीक संस्करणों में पूर्ण ग्रंथ न तो 'वै-मु-गो' का प्राप्य है, न अण्णामलै विश्वविद्यालय का। केवल उ-वे-सु का प्राप्य लगा और उसमें भी हमें एक ही सेट— पूर्ण रूप में —मिला। दूसरे सेट में अरण्यकाण्ड की प्रति बहुत बाद में मिली।

और एक महत्वपूर्ण संकलन है। वह भी अप्राप्य ही है तो भी उसकी चर्चा आवश्यक है। टी-के-चिदंबरनाथ मुदलियार ने कम्बर् तरुम् रामायणम् के नाम से तीन जिल्दों का एक संस्करण निकाला। उनमें सिर्फ १५१० पद संकलित हैं। उनकी चर्चा यथास्थान पीछे होनेवाली है। अब इतना कहकर यह अध्याय समाप्त करूँगा कि वह संकलन उपयोगी नहीं रहा। हम उ-वे-सु नूल निलयम् वालों के संस्करण के आधार पर ही यह लिप्यंतरित, अनूदित रामायण प्रकाशित कर रहे हैं।

३ संस्करणों में प्राप्त विभिन्नताएँ

कम्बरामायण की आज की हालत यह है कि उसका प्रामाणिक, व्यवस्थित और एक-सा रूप पाना दुर्लभ हो गया है। क्षेपक की बात सब मानते हैं पर प्रामाणिक पद और पाठ निर्धारित करने में सब अपनी-अपनी सूझ-बूझ के आधार पर कार्य करते हैं। हर संस्करण दूसरे से अनेक बातों में भिन्न बना रहता है। पटलों की संख्या, पटलों का नामकरण, पटल का आरम्भ और अन्त, कुल पदों की संख्या, और प्रामाणिक मानकर चुने गये पद और पंक्तियों का क्रम, पदों का क्रम —हर बात में विभिन्नता है। अलावा इनके पाठभेद लाखों की संख्या में हैं। कभी-कभी ये भेद आकाश-पाताल का अंतर ला देते हैं। अगर हिन्दीभाषी श्री न-वी-राजगोपाल द्वारा कृत और बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा प्रकाशित कम्बरामायण का अनुवाद और हमारे इस अनुवाद की तुलना करेंगे तो इस बात की एक रूपरेखा मिल जायगी। किन्तु एक बात सामान्य रूप से हर संस्करण में यह पायी जाती है कि प्राप्य सभी पद हर संस्करण में मिल जाते हैं। जिनको संकलनकर्ता अप्रामाणिक मानते हैं, उनको वे अतिरिक्त पदों के तौर पर प्रस्तुत कर देते हैं। (टी-के-सी के संकलन में यह बात नहीं है।) वैसे ही पाठांतर भी दिये जाते हैं। कम्बन कऴगम के मूल रामायण के संग्रह

में १०३६८ पद और १२९३ अतिरिक्त पद दिये गये हैं। वै-मु-गो० के संस्करण में १०४९५ पद, अण्णामलै संस्करण में १०५०० से अधिक कुछ पद दिये गये हैं। उ-वे-सु के इस संस्करण में १०४१८ पद हैं। इन दोनों में अतिरिक्त पद भी दिये गये हैं।

४ इस संस्करण की विशेषताएँ

इस संस्करण की सारी सामग्री महामहोपाध्याय डॉ० उ-वे-सु (स्वामीनाथय्यर, तमिऴ में सुवामिनातय्यर लिखा जाता है; अतः उ-वे-सु कहा जाता है।) के द्वारा संग्रहीत थी। पर वे रामायण का संस्करण निकाल नहीं सके। तमिऴ के व्यास के रूप में मान्य इनके सामने और अन्य पुष्कल काम पड़े थे। इतना कहना काफी होगा कि वे तमिऴ के सर्वश्रेष्ठ, सर्वमान्य, सर्वप्रमुख महान विद्वान माने जाते हैं। उनकी संग्रहीत सामग्री का उपयोग करके, उनके सुपुत्र ने उनके पुनीत नाम पर स्थापित इस 'नूल निलयम्' द्वारा रामायण का यह उपादेय संस्करण निकाला।

इसमें कुल १०४१८ 'प्रामाणिक' पदों के अलावा अनेक अतिरिक्त पद भी दिये हैं। (उनमें कुछ पदों का सार यत्र-तत्र इस ग्रंथ में दिया जा रहा है।) बालकाण्ड में १३८९, अयोध्याकाण्ड में १२१०, अरण्यकाण्ड में ११९६, किष्किन्धाकाण्ड में १००४, सुन्दरकाण्ड में १०९६ और युद्ध में ४३२३ पद पाये जाते हैं। सारा संकलन दस जिल्दों में समाप्त हुआ है।

पहले पद दिया गया है। पद के चरणांशों के मध्य स्थान छोड़कर चरणांश (शीर्) अलग दिये गये हैं। पर शब्द संधियुक्त ही रखे गये हैं। उसके बाद शब्दों या वाक्यांशों के अर्थ के साथ अन्वय दिये गये हैं। अन्त में टीकाएँ दी गयी हैं, जिनमें साहित्यिक, पौराणिक और ऐतिहासिक विवरण सविस्तार दिये गये हैं। उनसे शब्दों की व्याकरणगत विशेषताओं, विषयों के सम्बन्ध में तुलनात्मक समीक्षाओं का पुष्कल ज्ञान मिल जाता है। हर भाग के आरम्भ में पीठिका है जिसमें संकलन, संग्रह और संस्करण-सम्बन्धी सारे आवश्यक विवरण मिलते हैं। पुस्तक के अन्त में पदों की अकारादि सूची के साथ 'कठिन शब्दार्थ' भी दिये गये हैं। 'कठिन शब्दार्थ' में शब्दों के अर्थ मात्र नहीं दिये गये हैं। उदाहरणों से इसकी रीति साफ़ विदित होगी। उपमा शब्द के अधीन दिया गया विवरण यों है— खाँई की सेना के साथ तुलना (पदसंख्या ३१२); सन्ध्या-गगन की सर्प से उपमा (६२)……। उण्मैहळ् (तथ्य) के अधीन अविद्यानाश में ज्ञान का स्थान (१२३२); ……………। इरामन —यह शब्द ४, १६९, …………। पदों में आया है; उनके अन्य नाम— अंजन वर्ण— ४६१,५५४ …………।

इस, हमारे सानुवाद लिप्यंतरण ग्रंथ में तमिऴ पद मूल रूप में नागरी

अक्षर में दिये गये हैं। उनके आगे शब्दार्थ सहित अन्वय आये हैं। अंत में भावार्थ सरल भाषा में दिये गये हैं। उनके ही अन्तर्गत कुछ आवश्यक टीकाएँ, विवरण आदि निहित कर दिये गये हैं।

लिप्यंतरण को और तमिऴ भाषागत और विषयगत कुछ विशिष्ट बातों को जानने में सहायता देने के लिए तमिऴ व्याकरण के भागों की कुछ मोटी-मोटी बातें नीचे दी जाती हैं। पाठक इन पर थोड़ा ध्यान दें।

५ तमिऴ व्याकरण—कुछ तत्व

१ ध्वनि-समूह—स्वर (तमिऴ में इनको प्राणाक्षर कहते हैं।) मूल १२ है।

लब्धलिपि	ह्रस्व:— अ इ उ अॅ (ए का ह्रस्व) ऑ (ओ का ह्रस्व)	—	1 मात्रा
	दीर्घ:— आ ई ऊ ए ऐ ओ औ	—	2 मात्राएँ
	"आय्दम" (उपस्वर)— .·.	—	½ मात्रा
अलब्धलिपि	ह्रस्व— ऐ और औ	—	1 मात्रा
	ह्रस्व— उ, ह्रस्व इ	—	½ मात्रा
	ह्रस्व— 'आय्दम'	—	¼ मात्रा

नोट:— आय्दम या उपस्वर संस्कृत के विसर्ग (:) से द्योतित हो सकता है। उसका उच्चारण 'अहृक्' है। इस लिप्यंतरण में दोनों संकेतों (.·. और :) का प्रयोग पाया जायगा। पाठक .·. पाने पर विसर्गवत पढ़ लें और : पाने पर .·. लिख लें।

ह्रस्व ऐ (अय् या अ) का उच्चारण कविता में आवश्यक है। इस लिप्यंतरण में बालकाण्ड भर में और अयोध्याकाण्ड के पाँच सौ पद तक मूल पदों में अ या अय् लिखा गया है। इसमें एक त्रुटि रह जाती है कि तमिऴ का सही अक्षर-प्रयोग जानने के लिए अन्वय का सहारा लेना पड़ेगा। पर कहीं-कहीं संधि-विग्रह के कारण मूल की कुछ ध्वनियों के लुप्त होने की संभावना रह जाती है। अतः बाद के पदों में ऐ कै···आदि ही लिखा जाता है। पाठक पद को ठीक तरह से पढ़ेंगे तो ध्वनि से ही समझ जायँगे कि ऐ ह्रस्व है या दीर्घ। शब्द के आरंभ में आनेवाला ऐ दीर्घ ही रहता है। अन्य ह्रस्व-ध्वनियों के सम्बन्ध में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होगी।

व्यंजन (शरीराक्षरः) मूल १८ हैं

लब्धलिपि	वल्लॅऴुत्तु (परुष वर्ग)	क च ट त प ऱ
	मॅल्लॅऴुत्तु —कोमल या अनुनासिक वर्ग }	ङ ञ ण न म ऩ
	इडैयॅऴुत्तु (मद्धिम) वर्ग	य र ल व ऴ ळ

अलब्धलिपिः ह, ग, ज, ड, द, ब, । ह और ग की ध्वनि 'क' द्वारा प्राप्त की जाती है। वैसे ही ज की च द्वारा; ड, ट द्वारा; द, त द्वारा और ब की प द्वारा मिल जाती है। स्थान-भेद से यह ध्वनि-योजना सिद्ध हो जाती है। बोलते समय ही ये ध्वनियाँ निकलती हैं। लेखन में ये मूल रूप में लिखी जाती हैं।

नोट— तमिऴ में महाप्राण और संयुक्ताक्षर नहीं हैं। हलन्त के बाद पूरा व्यंजन लिखने की व्यवस्था है। हलंत व्यंजन से शब्द आरंभ नहीं होता।

अब अलग-अलग इन वर्णों का प्रयोग देखें:—

क— शब्दारंभ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद क ही रह जाता है— जैसे पाक्कु, उङ्गट्कु, कऱ्क।
दो स्वरों के बीच वह 'ह' हो जाता है— जैसे काहम्।
ङ् के बाद 'ग' बन जाता है। उदा : चङ्कम् —शङ्गम्।

च— द्वित्व में और ऱ्, ट् के बाद च ही रहता है। उदाहरण : अच्चु, शॉऱ्कुवै वॅट्चि। अन्यत्र और शब्द के आरम्भ में भी श है। जैसे पा शम्, शदम् आदि। (अपवाद— संस्कृत के शब्दों में कभी-कभी 'स' का उच्चारण पाया जाता है, जैसे कोसलै।
ञ्— के बाद उसे ज की ध्वनि दी जाती है; उदाहरण : मञ्चम —मञ्जम् पढ़ा या बोला जाता है।

ट— शब्द के आरम्भ में नहीं आता। द्वित्व में ट का उच्चारण है, अन्यत्र ड; उदाहरण : पडम्, पण्डम्।

त— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और क् के बाद वह त रहता है जैसे : तयरदन, शत्तम्, शक्ति। अन्यत्र वह 'द' की ध्वनि लेता है — शन्दम्, परदन्, मोदल्।

प— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद यह 'प' ही है। उदा : पडम्, कप्पल्, पॅट्पु, पॉऱ्पु, अन्यत्र यह 'ब' के समान ध्वनित है।

विशेषः न् आदि के बाद यह कभी-कभी प ब दोनों से पृथक, कुछ उनके बीच की ध्वनि निकालता है। भेद नगण्य है। बोलते-बोलते कोई अभ्यस्त हो जाता है।

न— इसका हिन्दी के दन्त्य न का ही उच्चारण है।

ऩ— यह भी दन्त्य है। पर न के स्थान से कुछ ऊपर दाँत के घर्षण से यह ध्वनि उत्पन्न होती है। इन दोनों में उच्चारण भेद नहीं के

बराबर है। पर शब्द के आरम्भ में ऩ नहीं आता। न शब्द के मध्य में नहीं आता पर संस्कृत के तद्भव शब्दों में न के स्थान पर, शब्द-मध्य ही सही प्रयुक्त होता है। कभी-कभी संधियुक्त शब्द में आता है।

र— यह साधु रेफ़ है। हिन्दी के रेफ़ के समान है। यह शब्दारंभ में नहीं आता। तमिऴ में अ, इ या उ मिलाकर कहते हैं, जैसे अरङ्गन्, इरासन् उरुत्तिरन्।

र̱— यह शकट या घर्षणयुक्त रेफ़ है। यह भी शब्दारंभ में नहीं आता। जब इसका द्वित्व होता है तब उच्चारण कुछ ट्र के समान हो जाता है। दोनों र और र̱ मूर्धन्य ही हैं पर एक की जगह पर दूसरा लिखा नहीं जा सकता। अर्थ-भेद हो जायगा। उदाहरण: अरस्-रेती; अर̱स्-धर्म।

ळ— मराठी ळ के समान है।

ऴ— यह र̱ और न के समान तमिऴ की विशिष्ट ध्वनि है। ष और ळ के उच्चारण स्थानों के मध्य लुंठित जीभ जाए पर स्पर्श न करे। तब यह ध्वनि निकाली जा सकती है। यह थोड़ा अभ्यास करने पर ही आ सकता है। संस्कृत के श ष स ह के लिए ग्रंथाक्षर का ईजाद हुआ है। पर वे ठेठ संस्कृत शब्दों के तत्सम प्रयोग में ही आते हैं।

विशेष ध्यानयोग्य— कहीं-कहीं इन नियमों के प्रतिकूल उदाहरण मूल पदों में मिलेंगे जैसे निन्पॅरुञ् को निन्बॅरुञ् पढ़ना चाहिए पर निन्पॅरुञ् पाया जायगा तो समझना चाहिए कि यति के कारण या अर्थ पर जोर देने के लिए अक्षर मूल रूप में उच्चरित हैं।

आखिर यह ध्वनि-विपर्यय प्रयास-लाघव का फल है और प्रयास-सुगमता के कारण ही बना है। अन्यथा कोई निर्धारित नियम नहीं है। अतः इसमें कोई बड़ी गल्ती हो जाने की संभावना नहीं। हाँ, अभ्यस्त कानों के लिए कुछ अटपटा लगेगा। शङ्गम्, शङ्कम् से अधिक उच्चारण-सुलभ है।

कभी-कभी चरणांश या पदखंड (आगे देखें) शब्द नहीं रहते। दो शब्दों के (पहले पीछे के) दो अंश मिलकर चरणांश बन जाते हैं। यह तमिऴ में छंद-रचना की विशेषता है। तमिऴ में संधि के कारण दो शब्द एक हो जाते हैं और छंद-रचना उसे कहीं भी खण्डित कर देती है। तब पदखण्ड को ही उच्चारण के लिए शब्दवत मानना पड़ेगा। तब 'का' आदि का मूल उच्चारण हो जाता है।

यह सब नियम पढ़ते वक्त जटिल लगेगा। अभ्यास से ज्ञात हो जायगा।

२ संधि— संधि की अनेक विधियाँ हैं। उनका ज्ञान अब आवश्यक नहीं है। अन्वय पढ़ने से शब्दों के मूल रूप मिल जायँगे। मूल पढ़ने से संधि की रीतियाँ ज्ञात हो जायँगी। हाँ, पदखण्ड या चरणांश जानने के लिए छंद-रचना की रीति की दो एक मुख्य बात के बारे में जानकारी लाभकारी रहेगी।

३ छंद-रचना (याप्पु)— कम्बन के छंद विरुत्तम् कहे जाते हैं। (शायद वृत्त का तमिऴ रूप हो, विशेष, बदले हुए अर्थ में) इसके चार चरण होते हैं और हर चरण के चरणखण्डों की संख्या समान है। यह चरणखण्ड तमिऴ में 'शीर' कहा जाता है। शीर के अंग (अशै) होते हैं। चरण-खण्ड के एक, दो, तीन या चार अशै तक हो सकते हैं। (अशै को 'गण' कह सकते हैं। पर तमिऴ का गण निश्चित संख्या के अक्षरों का नहीं होता।) अशै दो होते हैं— नेर् और निरै।

नेर् की व्याख्या— अकेला दीर्घ अक्षर— उदाहरणः आ, मा, ना···।
या ह्रस्व अक्षर— उदाहरणः ऴि, म, ळ···।
ह्रस्व अक्षर हलन्त सहित— उदाहरणः वॆळ्
दीर्घ अक्षर हलंत सहित– उदाहरणः तेर्, पेर्···।

निरै की व्याख्या—दो ह्रस्व— वॆऱि
ह्रस्व दीर्घ— उदाहरणः कुरा (दीर्घ और ह्रस्व मिल नहीं सकते —तब वे दो नेर् बन जायँगे।)
दो ह्रस्व हलन्त— कडल्
ह्रस्व दीर्घ हलन्त— विळाम्

विरुत्त-भेद इन 'अशै' यों की संख्या पर बने शीरों की एक चरण में संख्या, उन शीरों के अंतिम और प्रथम ध्वनियों की संधि का क्रम आदि पर निर्भर है। एक चरण के दो से लेकर अनेक शीर हो सकते हैं। उदा०—

कम्बन का पहला पदः—

उल हम् या वयुम् ता मुळ वाक् कलुम्
निरै नेर् नेर् निरै नेर् निरै नेर् निरै—
निल पॆ रुत् तलु नीङ् गलु नीङ् गला
निरै नेर् नेर् निरै नेर् निरै नेर् निरै—

यही क्रम शेष दो चरणों में भी पाया जायगा।

नेर् निरै के अलावा एक से अधिक 'अशै' यों के बने शीरों के सम्बन्ध में छंद का नाम जानने के लिए उन्हें मा, विळम, काय्, कनि आदि के संकेतिक

नाम भी दिये गये हैं। अस्तु ! अब तक लिप्यंतरण के सम्बन्ध में ज्ञातव्य बातों की चर्चा की गयी।

४ अन्वय के सम्बन्ध में इतना कहना है कि अन्वय के शब्द तमिळ की लेखन-शैली के अनुसार ही लिखे गये हैं (कहीं अभ्यास-दोष के कारण 'ग' 'ह' आदि लिखे गये हों तो स्मरण कर लें कि इनका अलग लिपि-संकेत तमिळ में नहीं है।) और तमिळ शब्द अधिकांश अपने संयुक्त, रूपांतरित, यौगिक या समस्त रूप में ही लिखे गये हैं।

अनेक पदों के अन्वयों में अऩ्ऱु, मऱ्ऱु, ओ, आल आदि ध्वनियाँ नहीं पायी जायँगी जो मूल में रहेंगी। वे सब पूरक ध्वनियाँ हैं जो छन्द के व्याकरण के अनुसार मिलायी गयी हैं। वे अर्थयुक्त शब्द भी हों तो भी जहाँ वे पूरक ध्वनियों के ही रूप में प्रयुक्त हुए हैं, वहाँ उनको मैंने अन्वय में नहीं दिया है। कहीं-कहीं उल्लेख के साथ या उल्लेख-बिना कोष्ठकों के अन्दर मिलेंगी। पर वह स्थल कम ही होंगे।

अब काव्य के रूप में कम्बन की कृति को समझने के लिए आवश्यक बातों की चर्चा करूँगा।

५ पॉरुळ् (विषय)— तमिळ में काव्य-विषय पर भी व्याकरण बना हुआ है। साहित्य जीवन का प्रतिबिम्ब ही नहीं जीवन का पथप्रदर्शक और उन्नायक होता है। तमिळ लोगों का जीवन प्रकृति से अभिन्न रूप से सम्बद्ध था। भूमि के पाँच प्राकृतिक विभाग होते हैं— (१) पर्वत तथा पार्वत्य प्रदेश; (२) वन और वन्य प्रदेश; (३) खेत और खेतों व बागों का प्रदेश; (४) समुद्रतट और उसके आस-पास का प्रदेश और (५) मरु प्रदेश। उनके क्रमश. तमिळ नाम कुऱिञ्जि, मुल्लै, मरुदम, नॅय्दल और पालै हैं। पालै को कभी-कभी अलग भूभाग नहीं माना गया क्योंकि जलविहीन होने से मुल्लै और मरुदम प्रदेश पालै बन सकते हैं। अत: भूमि की चर्चा, इन चारों प्राकृतिक भागों की बनी रहने के कारण चतुर्विधा भूमि कहकर की है। इस रामायण में भी 'नाऩिलम' का शब्द बार-बार आया है।

तिणै— प्रकृति के साथ इस अभिन्न जीव-चर्या के कारण तमिळ लोगों के साहित्य की चर्चा भी प्रतीकात्मक रूप में प्रकृति-सम्बन्धी नामों के अधीन करने की परिपाटी चली है। तिणै का शाब्दिक अर्थ भूमि है और लाक्षणिक अर्थ प्रवाह, प्रकरण या जीवन-चरित है।

काव्य-विषय को मोटे तौर से दो भागों में विभक्त किया जाता है। एक, अहम जिसका अर्थ आंतरिक या आत्मीय होता है। इस अहम साहित्य के अन्दर पूर्व-प्रेम का शृंगार तथा विवाहोत्तर प्रणय-वर्णन दोनों आ जाते हैं। यह पूर्व-प्रेम तमिळों के जीवन और साहित्य की विशिष्ट

रीति है, जिसमें उत्तरदायित्वपूर्ण युवक और युवती नायक और नायिका के रूप में विवाह के पहले मिलते थे और प्रेम बढ़ाते थे। जब प्रेम परिपक्वता को पहुँच जाता तब समाज उनका विवाह करा देता था।

इस 'अहम' साहित्य का प्रधान रूप से पाँच 'तिणै' यों में विभाजन है। यहाँ और एक बात: साहित्य को नदी से उपमित करना सर्वविदित बात ही है। नदी इन पाँचों भूभागों से होकर बहती है। वैसे ही साहित्य भी विविध प्रसंगों का वर्णन करता जाता है। अब देखिए। अनमेल प्रेम और एकदेशीय प्रेम ये दोनों असाधारण हैं। उनके अलग नामकरण हुए हैं— कैक्किळै और पॅरुन्तिणै, बाकी पाँच 'तिणै' यों के विषय विभाजन निम्न प्रकार हैं :—

कुऱिञ्चि— (पर्वत-प्रदेश)— मिलन और मिलन-निमित्त।
मरुदम— (खेत-प्रदेश)— रूठन और रूठन-निमित्त।
मुल्लै— (वन-प्रदेश)— गृहस्थी और उसका निमित्त।
नॅय्दल— (समुद्रतट-प्रदेश)— विरह-विलाप और उसका निमित्त।
पालै— (जंगल मरु-प्रदेश)—विछोह और विछोह का निमित्त।

इसके अलावा हर 'तिणै' के वर्णन के सम्बन्ध में ये जीव और पदार्थ भी आवश्यक और योग्य अंग माने गये हैं: देव, उच्च लोग, नीच लोग, पक्षी, पशु, बस्तियाँ, जलाशय, फूल, पेड़, भोजन-पदार्थ, ढोल के प्रकार, याऴ (वीणा का-सा वाद्य), राग और काम-धंधे सब अलग-अलग हैं। इनकी सूची विस्तार-भय से नहीं दी जाती। तिणै के वर्णन में मिश्रित-वर्णन भी साहित्य का अंग माना गया।

तुऱै— हर तिणै के विविध तुऱै होते हैं। तुऱै का अर्थ घाट भी है। घाट ही जल में पान या स्नान के लिए मनुष्य के सहायक होते हैं। साहित्य में तुऱै को उपप्रकरण या निहित उपांग मान सकते हैं।

ऐसे ही 'बाह्य साहित्य' (पुऱम) के भी तिणै और तुऱै निर्धारित हैं। वहाँ तिणै के नामकरण फूलों के नामों पर हुए हैं। 'अहम्' साहित्य के समान भूभागों के नामों पर नहीं हुए हैं। बाह्य साहित्य का प्रधान विषय युद्ध था। बाह्य (युद्ध-) साहित्य के अंगों के नामकरण देखिए—

फूलों के नाम	**युद्ध के अंग**
१ वॅट्चि—	गायों का हरना।
२ करन्दै—	गायों का छुड़ाना।
३ वञ्जि—	चढ़ाई।

४ काञ्जि—	युद्ध ।
५ नॉच्चि—	परकोटे के अन्दर से युद्ध करना ।
६ उळिञै—	घेराव डालना ।
७ तुम्बै—	घमासान युद्ध ।
८ वाहै—	विजय ।

वीर लोग युद्ध के प्रकारों के या अंगों के अनुकूल फूल (असली या स्वर्ण के बने) पहनकर युद्ध करते थे ।

कविगण (जिनको 'पुलवर' कहा जाता है) अभिभावकों की प्रशंसा में कविता या गीत बनाते थे । वे नीतिविषयक पर भी बनाते थे । ऐसे साहित्य पुऱम् के ही अंतर्गत लिये जाते हैं । उनमें प्रशंसा का 'तिणै' 'पाडाण्' कहा जाता है । इन सभी तिणैयों के भी 'तुऱै' होते हैं ।

इस विषय-विचार का ज्ञान तमिऴ-काव्य को समझने में सहायक होगा, यद्यपि अब यह परिपाटी कम्बन की रामायण में भी पूर्ण रूप से निबाही नहीं गयी है क्योंकि आधार संस्कृत का काव्य है और लोगों की जीवन-रीतियों में परिवर्तन आ गये थे ।

इतना जानने के बाद अब चलिए कम्बन व उसकी रचना पर एक विहंगम-दृष्टि डालें ।

६ कम्बन का चरित्र

कम्बन के चरित्र में अत्यधिक परिमाण में दन्तकथाएँ मिल गयी हैं । वे कब पैदा हुए ? कहाँ पैदा हुए ? उनके पिता कौन थे ? वे किस वंश के थे, किस जाति के ? उनकी मृत्यु कहाँ हुई ? आदि आवश्यक समाचार भी अनुमान और कल्पना के घने कुहरे में छिपे पड़े हैं । उन पर ऐतिहासिक और वैज्ञानिक रीति से विश्वास करना बड़ा कठिन लगता है ।

संक्षेप में निम्नलिखित विषयों का प्रचार है । वे मायवरम के पास तिरुवऴुऩ्दूर नामक गाँव में उवच्च (पुजारी) जाति के किसी व्यक्ति के घर में जन्मे थे या पले थे । (कथा कही जाती है कि किसी ब्राह्मणी द्वारा जनन के बाद त्यक्त होकर कोई शिशु उवच्चन के हाथ लगा । वही कम्बन हैं !)

फिर वे तिरुवॆण्णॅय नल्लूर के दानी ज़मीनदार शडैयप्पन् के यहाँ रहे । शडैयप्पन की ही प्रेरणा से उन्होंने कम्बरामायण रची । रामायण में उन्होंने अपनी कृतज्ञता के प्रदर्शन में दस बारह स्थलों में शडैयप्पन का नाम अंकित कर उनकी प्रशंसा की है। अतः यह बात स्वतः प्रमाणित है ।

वे कुलोत्तुंग राजा के दरबारी कवि थे । कभी-कभी मनमुटाव हो

जाता था क्योंकि दोनों का अपने-अपने पद का अहंभाव था। ऐसे एक संदर्भ में कम्बन यह कहकर चले गये कि मैं तुम्हारे दरबार में वापस आऊँगा नहीं। अगर आऊँगा तो तुमसे किसी बड़े राजा को अपना ताम्बूलपात्र-वाहक (पनबट्टा-वाहक) बना लेकर आऊँगा। वे पांडिय राजा के यहाँ गये। अपना असली नाम छिपाकर वे वहाँ रहे और अपनी विद्वत्ता के बल पर राजा के प्रिय मित्र बन गये। जब राजा को सच्चाई का पता लगा तो वे पछताने लगे। तब उन्हें अपना ताम्बूल-वाहक बना लेने का आश्वासन देकर कम्बन ने उनको सान्त्वना दी। इतने में चोऴन ने उन्हें बुला भेजा। वे आये और पांडिय राजा पनबट्टा-वाहक का वेष धरकर उनके साथ आया। बाद भी कम्बन का दरबारी जीवन सुख से नहीं बीता। कम्बन का पुत्र अंबिकापति ने राजकन्या से प्रेम किया। यह बात खुलने पर राजा ने उसे प्राणदण्ड दे दिया। उधर राजा के पुत्र ने कम्बन की पुत्री पर कटाक्ष चलायी तो वह कोदों के ढेर में बैठ गयी और अन्दर धँसने से मर गयी। फिर कम्बन ने अपनी लोहे की लेखनी से राजपुत्र का वध कर दिया। इसके बदले में राजा ने कम्बन को मार दिया।

चमत्कारों की कमी भी नहीं। उन्होंने सरस्वती के मुख से 'तुमि' नामक शब्द को ठीक साबित कराया। (यह शब्द युद्धकाण्ड में ६५७वें पद में पाया जाता है। ऑट्टक्कूत्तर नामक अन्य दरबारी कवि ने उसे तमिऴ का शब्द नहीं माना था।) पांडिय राजदरबार में सरस्वती देवी के नूपुर को माँग लेकर फिर उन्हें समर्पित कर दिया। एक कविता के द्वारा उन्होंने ब्रह्मराक्षस को भगाया। फिर अपनी रामायण के नागपाश पटल से एक पद सुनाकर गरुड़ को बुलाया और उनके द्वारा विष हटाकर तिल्लै (चिदंबरम्) के एक मृत ब्राह्मण-बालक को जिलाया। एक पद सुनाकर एक अश्व को मरवाया और दूसरा पद सुनाकर उसको जिला दिया। ऐसी अनेक बातें हैं।

उनकी जाति के सम्बन्ध में वे ब्राह्मण, पुजारी और राजा भी कहे जाते हैं। उनकी अन्य रचनाओं के नाम भी गिनाये जाते हैं जिन पर बहुत विद्वान विश्वास नहीं करते। उनका आन्ध्र देश के राजा प्रतापरुद्र के दरबार में जा रहने की कथा भी प्रचलित है। चोऴ राजा कुलोत्तुंग के स्थान पर वे आदित्य नामक चोऴ राजा के मित्र भी बताये जाते हैं।

जो हो, शक्ति पदिप्पगम वालों के कथनानुसार निम्नलिखित बातें निर्विवाद हैं—

कम्बन तिरुवऴुन्दूर में जन्मे थे।

तिरुवॆण्णॆय्नल्लर् (कदिरामंगलम) के ज़मीनदार शडैयप्पन उनके अभिभावक मित्र थे।

कम्बन ने रामायण लिखी।

उनके काव्य का प्रकाशन (तमिऴ वालों की रीति से 'अरङ्गेऱ्ऱम्' यानी विद्वत्-सभा में सुनाना और स्वीकृति की मुहर पा लेना) श्रीरंगनाथ के मंदिर में हुआ। वह मंदिर विख्यात श्रीरंगम क्षेत्र में स्थित महिमायुक्त और प्रसिद्ध मंदिर है या कदिरामंगलम में कोई मंदिर था जो अब नष्ट हो गया है? इस बात में सन्देह है। उनकी समाधि नाट्टरशन कोट्टै नामक गाँव में है—यह माना जाता है।

७ कम्बन का काल

कम्बन के चरित्र की जो स्थिति है वही उनके काल की भी है। नवीं सदी, ग्यारहवीं सदी, बारहवीं सदी, चौदहवीं सदी और पन्द्रहवीं सदी—इनमें हर एक के पक्षपाती पाये जाते हैं। यह पुस्तक खोज का ग्रन्थ नहीं है। अतः विस्तार के साथ इन पर जाना नहीं चाहता। पर आज के तीन प्रमुख विद्वान और कऴगम (संघ) वाले ९वीं सदी के पक्ष में हैं। उनकी चर्चा यथास्थान होगी। इधर इतना कहना काफी होगा कि ९वीं सदी के समर्थकों का पक्ष प्रबल दिखता है।

आजकल मदुरै विश्वविद्यालय में अनेक विद्याव्यसनी जो खोज के कार्य में लगे हुए हैं, कम्बन-सम्बन्धी विषयों में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। आशा है उनकी खोजों के फलस्वरूप कुछ निर्धारण यथासमय मिल जायगा।

हाँ इन असंदिग्ध खोज के विषयों को एक ओर रखकर उस विषय की चर्चा करें जो ठोस रूप में हमारे सामने उपलब्ध हैं।

८ कम्बन का काव्य

वाग्देवी के पुष्कल प्रसाद के पात्र ये कवि सार्वभौम (कविचक्रवर्ती) विश्वकवियों में अग्रगण्य माने जाते हैं। इनके कारण तमिऴ भाषा की देवी का सिर गर्वोन्नत है। विद्वानों का खेदयुक्त विचार है कि अभी विश्व इनका महत्व पूर्ण रूप से जान नहीं पाया है।

कम्बन मेधावी और प्रतिभासंपन्न कवि थे। भाषा पर अधिकार और काव्य-कला की दक्षता उनकी अपूर्व थी और अलौकिक। मद्रास के कम्बन कऴगम द्वारा प्रकाशित रामायण-मूल ग्रन्थ के प्राक्कथन में यों कहा गया है—

विश्वमान्य काव्यकारों में कम्बन अग्रगण्य हैं। कम्बन ने अपने काव्य में अपने पूर्व के सभी कवियों की विशेषताओं का समावेश कर लिया है। वह इतना सर्वांगीण हो गया है कि पीछे के कवि उनसे आगे बढ़ नहीं पाये, वरन उनके सफल अनुकरण में ही अपना भाग्य मान लेते हैं।

कम्बन तत्वज्ञ, गणितशास्त्र-विद्, ज्योतिष-विज्ञान के ज्ञानी, शिल्प-शास्त्री सब कुछ हैं। उनमें संगीत, नाटक, नृत्य आदि कलाओं का प्रथम श्रेणी का ज्ञान था। इनका संस्कृत और तमिऴ भाषा —दोनों पर अपार अधिकार था। छन्द, अलंकार आदि के प्रयोग में और रस के आयोजन में उनको अलौकिक दक्षता प्राप्त थी। काव्य, शास्त्र के इन परम पण्डित ने तमिऴ के ही नहीं संस्कृत के भी ग्रन्थों के विषयों का ज्ञान अर्जित कर लिया था।

इसलिए शकाब्द ८०७ से (सन् ८८६ ई० से) लेकर कम्बन की रामायण उत्तरोत्तर अपनी लोकप्रियता में बढ़ रही है। विद्वानों के लिए 'कम्बनाडन' की कविता के समान मनोरंजन का साधन और कोई नहीं है, जो उनके मन को इतना आह्लादित करे!

यह रामचरित का ही काव्य है। वह वृहत्काव्य के आवश्यक लक्षणों से पूर्ण है। ऐसे काव्य में इन विषयों का होना आवश्यक माना गया है— नांदी (ईश्वर-स्तुति या विषय-कथन) अलौकिक या अप्रमेय किसी नायक का चरित्र, पर्वत, सागर, राज्य, राजधानी, नगर, ऋतुएँ, चन्द्र व सूर्योदय और उनका अस्त आदि के वर्णन हों। विवाह, मुकुट-धारण, पुत्र-जन्म आदि घटनाओं का समावेश हो। शृंगार में मिलन-वर्णन और रूठन आदि की चर्चा हो। विद्या-विनोद, आचरण के उपदेश, मंत्रणा, दौत्य, युद्ध, विजय आदि प्रकरण हों। संधि-सर्ग, उपसर्ग, परिच्छेद आदि की व्यवस्था पायी जाय। भावों और तत्वों का समावेश हो। कुल मिलाकर ग्रन्थ रस-भरा होने के साथ-साथ चारों पुरुषार्थों का प्रतिपादक और दायक हो। कम्बन सभी दृष्टियों से सर्वांगीण हैं।

कम्बन ने अपनी रामायण का नाम 'इरामावतारम्' ही रखा। पर अब वह कम्बरामायण के ही नाम से विख्यात है। इसका मूल वाल्मीकीय रामायण है, यद्यपि अध्यात्म रामायण और अन्य श्रीराम-सम्बन्धी कथाओं का प्रभाव यत्र-तत्र पाया जाता है। कम्बन के इस स्तुत्य कार्य से भारत में भावात्मक एकीकरण का और विश्व में भारतीय संस्कृति की उन्नति के प्रकाशन का अपूर्व कार्य सध गया। भारत के मनीषी कवि समन्वय तथा सामंजस्य के प्रबल समर्थक रहते आये हैं। कम्बन को उनमें अग्रश्रेणी में मानना चाहिए। शैव-वैष्णव, उत्तर-दक्षिण, संस्कृत-तमिऴ, आर्य-द्रविड़, बड़े-छोटे, विद्वान-पामर, धार्मिक-धर्मनिरपेक्ष, भक्त-नास्तिक, पूँजीपति-साम्यवादी, प्रदेशभक्ति-देशप्रेम, देशप्रेम-विश्वनागरिकता आदि कितने ही प्रकारों के समन्वय उनके काव्य द्वारा प्राप्य हो गये हैं!

यह वाल्मीकी का शब्दशः अनुवाद नहीं है। उपमाएँ आदि तो इनकी अपनी ही हैं। तमिऴ जनों की संस्कृति के परिचायक अनेक परिवर्तन

इसमें हो गये हैं। सीता-राम का विवाह-पूर्व 'कन्यामाडम्[1]' के पास परस्पर देख लेना उनका विरह-वर्णन, सीताजी को रावण का भूखण्ड, आश्रम के साथ उठा ले जाना आदि के अलावा चरित्र-चित्रण में भी उचित परिवर्तन हैं। कम्बन के इस महान प्रयत्न से रचित महत् काव्य के कारण वाल्मीकी और कम्बन दोनों का गौरव बढ़ा और इन दोनों के कारण भारत का गौरव साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उज्ज्वल हुआ।

कम्बन की अपनी तमिऴ-देशभक्ति, अपने अभिभावक शडैयप्पन के प्रति कृतज्ञता आदि बातें इस काव्य में परिलक्षित होती हैं।

कम्बन ने स्वयं अपनी कृति में काव्य का लक्षण और काव्य में प्रयुक्त शब्दों का लक्षण निम्न प्रकार से बताये हैं :—

नदी और काव्य में श्लेष के साथ बने इस पद में (अरण्यकाण्ड-शूर्पणखा पटल-पहला पद) कवि कहते हैं—

काव्य (और नदी) पृथ्वी का भूषण हो; बहुमूल्य और अत्युत्तम अर्थ दे; बुद्धि (भूमि) का पोषक हो; तापहारी 'तुरै' यों (घाटों या भाव-प्रसंगों) से युक्त हो; पाँचों 'तिणै' यों (भूभागों से या जीवन-व्यापारों) से होकर बहे; प्रकाशमय और स्वच्छ हो; और शीतल व प्रवहमान हो।

शब्दों के सम्बन्ध में उनका कथन है—

शब्द प्रसादगुणपूर्ण, मधुरतायुक्त, श्रेष्ठ अर्थबोधक, उत्तम श्रेणी के और तीक्ष्ण (सूक्ष्म) हों।

कहना नहीं है कि कवि ने अपने आदर्श खूब निबाहे हैं।

किं बहुना—वर्णन, प्रवाहमयता, रसभरितता, काव्यांग-निर्वाह, अलंकार-योजना, तथ्यों का निरूपण, धर्मों का उपदेश —सभी दृष्टियों से यह कांता-संहिता श्रीराम-काव्य सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोपयोगी कृति है। विद्वान लोग अनावश्यक तौर पर या झूठ-मूठ कम्बन को विश्वकवि नहीं मानते।

खैर, अब उन महानुभावों के प्रति हम अपनी कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि डालें, जिनकी वजह से हम आज कम्बन का काव्य-रसास्वादन कर पा रहे हैं।

९ कम्बन के भक्त, विद्वान, प्रचारक आदि

तमिऴनाडु में 'कम्बरामायण-विद्वानों' का बड़ा आदर रहा है। यद्यपि यह सत्य मानना पड़ेगा कि संस्कृतज्ञ वैष्णव भक्त ब्राह्मण लोग कम्बन को वाल्मीकी के समकक्ष मानने के पक्ष में नहीं हैं तो भी देश की

---

[1] विवाह योग्य कन्याओं को अलग एक भवन में रखा जाता था। विवाह निश्चित होने के बाद विवाह के अवसर पर उन्हें राजमहल में लाया जाता था। उस भवन को कन्यामाडम् (प्रासाद) कहा जाता है।

अधिकांश जनता कम्बन के प्रति अधिक श्रद्धा रखती है। कहा जाता है— सप्रमाण कहा जाता है कि सन् १३७६ ई० से ही तमिऴनाडु में कम्बरामायणम् पर व्याख्यान देनेवालों के स्थान-स्थान पर जाकर भाषण देने की प्रथा है। सोलहवीं सदी के अंत में कुमर गुरुपरर् नामक मेधावी पुरुष काशी में दाक्षिणात्य मठ में रहकर कम्ब रामायण पर प्रवचन देते रहे। उनके व्याख्यान हिन्दी और संस्कृत में होते थे। ये संगीतज्ञ भी होते हैं और गंभीर विद्वान। अब हाल के और समकालीन कुछ विद्वानों की चर्चा करेंगे।

व-वे-सु अय्यर—ये तिलक के अनुयायी उग्र देशभक्त थे। इनके स्वतंत्रता-आन्दोलन में साहसपूर्ण कृत्यों से लोग मुग्ध हैं; उतने ही उनके अन्य साहित्यिक और समाजिक कार्य-कलापों से देश प्रभावित है। उन्होंने तिरुक्कुरळ् का अंग्रेजी में अनुवाद किया। कम्बन के कतिपय पदों का भी अनुवाद किया है। उस अनुवाद-संग्रह का प्राक्कथन अति महत्व का माना जाता है। उसमें विश्वकवियों से तुलना करके कम्बन को उन्होंने सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया है। अब वे दिवंगत हैं।

पि-श्री-आचार्य—ये वयोवृद्ध हैं और अपने गाँव में (सुदूर दक्षिण में) अस्वस्थ रहते हैं। उन्होंने प्रसिद्ध, लोकप्रिय साप्ताहिक 'आनंद विकटन' द्वारा कम्बन पर एक लेखमाला (बरसों निकलती रही) प्रकाशित कर तमिऴ-भाषियों में कम्बन के प्रति रुचि बढ़ायी।

वै-मु-गोपालकृष्णमाचार्य—इन्होंने पहले-पहल सटीक कम्बरामायण का आठ भागों में संकलन निकाला। वही सबका पथप्रदर्शक रहा; अब भी वह वैष्णव भक्तों के मध्य प्रामाणिक माना जाता है।

महामहोपाध्याय उ-वे-स्वामीनाथय्यर—ये तमिऴ के जाने-माने विद्वान हैं। उन्हीं के कारण तमिऴ भाषा का इतिहास जीवंत हुआ। अगर उन्होंने सारे देश में घूमकर ग्रंथों का, ताळपत्र-पांडुलिपियों का चयन और संग्रह न किया होता तो तमिऴ का सिलसिलेवार साहित्येतिहास के प्रमाण न मिलते। जीवन भर में वे कम्बरामायण पढ़ते, टीका-टिप्पणियों और अन्य सामग्रियों का संग्रह करते रहे। उन्हीं लेखों के आधार पर जो संस्करण छपा उसी का आधार लेकर यह प्रस्तुत ग्रंथ तैयार हुआ है।

टी-के-चिदम्बरनाथ मुदलियार—(टी-के-सी) ये राजाजी के परम मित्र थे। (राजाजी विख्यात देश-सेवक, गाँधीजी के समधी, मद्रास के भूतपूर्व मुख्यमंत्री, और आखिरी गवर्नर जॅनरल् थे।) ये तमिऴ-काव्य के प्रधानतया कम्बन के 'रसिक' थे। इनकी काव्य-मर्मज्ञता अद्वितीय थी। इनको ऐसा भाग्य प्राप्त था कि उन्होंने गाँधीजी को कम्बरामायण के अयोध्याकाण्ड के ५६१-५६२, ये दो पद सुनाये। यह वह प्रसंग है जिसमें श्रीराम सुमंत्र से

पूछते हैं कि क्या धर्म का पालन तभी हो जब उससे सुख मिलता है ? दुख हुआ तो धर्म त्याज्य हो जायगा ? 'रसिकमणि' उपाधिधारी, टी-के-सी के संगीतमय तर्ज में पद्य सुनाने के और अर्थ बताने के अतीव मनोहारी ढंग से गाँधीजी प्रभावित हुए और पूछा कि तमिऴ के काव्य को मूल में ही पढ़कर रस का स्वादन करने के लिए कौन सा उपाय है ? झट उत्तर मिला—तमिऴभाषी का जन्म लें ! सत्यवादी गाँधीजी उनकी स्पष्टवादिता से खुश हुए ।

पूज्य विनोबा जी ने भी अपने एक पत्र में इन टी-के-सी महोदय को 'रसज्ञ-मर्मज्ञ' कहकर सराहा था ।

टी-के-सी का अपनी काव्य-मर्मज्ञता पर अपार विश्वास था । एक तरह से अभिमान था । उन्होंने यह साहसपूर्ण काम किया कि १५१० पद को छोड़कर कम्बन के अन्य सारे पदों को अप्रामाणिक घोषित किया । तीन जिल्दों में उन्होंने रामायण का, 'कम्बन तरुम् रामायणम्' के नाम से जो संस्करण निकाला था (वह भी अब अप्राप्य है) उसमें उन्होंने वे ही १५१० पद संग्रह किये हैं । उसमें दी गयी टीकाएँ संक्षिप्त हैं पर सुमधुर, सुग्राह्य और आह्लादकारी हैं । मरते दम तक वे अपने मित्रों से याचना करते रहे कि कम्बन का नाम प्रशस्त करते रहो । इस ग्रंथ में तारे के चिह्न से जो पद चिह्नित हैं, वे उनके द्वारा प्रामाणिक और असंदिग्ध माने गये कम्बन के लिखे पद हैं ।

टी-पी-मीनाक्षी सुन्दरम्—(टी-पी-एम) ये प्रख्यात भाषाविद्, आलोचक, काव्य-मर्मज्ञ और अनेक गंभीर ग्रंथों के प्रणेता, मदुरै विश्वविद्यालय के (भूतपूर्व) प्रथम उपकुलपति (वाइसचान्सलर) थे । अब अपनी अतिवृद्ध अवस्था में महर्षि महेश योगी के ध्यान के प्रचार में लगे हैं । अब भी अति परिश्रमी साहित्य-स्रष्टा बने हुए हैं । उन्हीं की अध्यक्षता में मद्रास के कम्बन कऴगम वालों ने पूर्वोक्त कम्ब रामायण मूल का संस्करण संपादित कर प्रकाशित कराया ।

जस्टिस महाराजन—ये बहुत ही प्रसिद्ध तमिऴ-भाषणकर्ता अनुवाद-कला-कुशल, साहित्य-मर्मज्ञ और मिलनसार सज्जन हैं । ये टी-के-सी के शिष्य हैं और इनके काव्य-प्रतिपादक भाषणों में टी-के-सी की रीति की झलक पायी जा सकती है । अब वे कम्बन के चुने हुए पदों का अंग्रेजी में नयी कविता की शैली पर अनुवाद कर रहे हैं । ये अवकाश प्राप्त जस्टिस हैं और संप्रति तमिऴनाडु सरकारी अनुवाद विभाग के अध्यक्ष हैं ।

जस्टिस इस्माइल—ये मद्रास हाईकोर्ट के सीनियर जस्टिस हैं । (अब प्रधान जस्टिस बननेवाले हैं ।) उनका कम्बन-प्रेम इतना तीव्र था कि

उन्होंने कळगम की स्थापना मद्रास में की। ये स्वयं उसके अध्यक्ष हैं। सालाना उत्सव-सा मनाया जाता है, जब कम्बन पर भाषण, कविता-वाचन, विवाद-मंच (पट्टि मंडपम) पुरस्कार योजना आदि की विराट व्यवस्था रहती हैं। इनकी भी कम्बरामायण पर एक लेखमाला आनंदविकटन (साप्ताहिक) में निकली और वह बहुत लोकप्रिय रही और महत्वपूर्ण भी।

कम्बन अडिप् पॉडि—(कम्बन-चरण-रेणु—कारैक्कुडी शा० गणेशन जी) इन कम्बनभक्त-शिरोमणि का सचित्र परिचय आरंभ में दिया गया है। उनका कारैक्कुडी (रामनादपुरम जिले में एक मुख्य नगर) में स्थापित कम्बन कळगम सभी ऐसी संस्थाओं का मातृकळगम है। इकतालीस-बयालीस साल पहले बने इस संघ के चालन के अलावा ये और तीन बहुमूल्य कामों पर लगे हैं (१) कम्बन मणि मण्डपम का निर्माण (२) कम्बन के नाम पर एक उत्तर माध्यमिक (हायर सेकेंडरी) विद्यालय और (३) नाट्टरशन कोट्टाइ (एक बस्ती) में कम्बन-समाधि पर वार्षिक उत्सव का प्रबन्ध। उनकी ही प्रेरणा से तमिळनाडु भर में और मलाया में भी कम्बन पर व्याख्यानों की व्यवस्था के अलावा जयन्ती आदि उत्सव मनाये जा रहे हैं।

उनका इस ग्रंथ के लेखक के प्रति अगाध प्रेम और सद्भावना है।

वी-एस-मुदलियार— इनकी पुस्तक Kamba Ramayanam–A Condensed Version in English Verse and Prose कम्बरामायणम् अंग्रेजी पद्य और गद्य में सार-संग्रह भारत सरकार की आर्थिक सहायता लेकर सन् १९७० में प्रकाशित हुई। उसमें लगभग एक हज़ार चुने हुए सुन्दर पदों का अतुकांत नई कविता में अनुवाद है। कहानी की अविच्छिन्नता और प्रवाह गद्य-पद्य दोनों द्वारा रक्षित है।

डा० एस० रामकृष्णन— ये साम्यवादी लेखक, नेता और आचार्य हैं। मार्क्सवादी सिद्धांतों के वे गण्यमान्य तत्ववेत्ता हैं। उन्होंने अपने डाक्टर की उपाधि के लिए एक खोज-निबंध कम्बन और मिल्टन नाम से प्रस्तुत किया। वह अंग्रेजी में है। हाल में 'कम्बनुम् मिल्टनुम् ऑरु पुदिय पार्वै' (कम्बन और मिल्टन —एक नया अवलोकन) नाम से उन्होंने एक ग्रंथ लिखा है। उसमें उन्होंने कम्बन की कृति और मिल्टन की कृति (स्वर्ग-खोया हुआ) दोनों की तुलनात्मक समीक्षा की है। इनके ग्रंथ प्रामाणिक और मूल्यवान माने जाते हैं।

कितने ही अन्य विद्वान हैं! उनकी चर्चा विस्तारभय से अब हम छोड़ रहे हैं।

१० संस्थाएँ

आज कलकत्ता और मलाक्का (मलेशिया) के कम्बन कळगमों के अलावा तमिळनाडु में ३१ (इकतीस) स्थानों में कम्बन कळगम (कम्बन संघ) क्रियाशील हैं। उनका काम कम्बन की रामायण के वर्ग चलाना, भाषण, उत्सव आदि द्वारा उनका प्रचार करना आदि है।

उनमें प्रमुख कळगम मद्रास और कारैक्कुडी के हैं। ये दोनों बड़ी धूम-धाम से सालाना जयन्ती उत्सव मनाते हैं। कळगम के स्थापक और अध्यक्ष श्री कम्बन अडिप्पॉडि और जस्टिस इस्माइल प्रभृति महानुभाव इधर-उधर जाकर संघों के मध्य संपर्क चालू रखते हैं और उत्सवों में भाग लेकर कम्बन का नाम प्रशस्त कराते हैं।

११ उपसंहार

यह ग्रंथ बहुत परिश्रम और लगन के साथ किया जा रहा है। श्रीनंदकुमार जी को तो परिश्रम के साथ समुचित धनसंचय की भी कठिनाई का सामना पड़ता है। अतः आशा करता हूँ कि हिन्दीज्ञाता और प्रेमी विज्ञ पाठक इस ग्रंथ का समुचित स्वागत करेंगे और पठन से अपने को लाभान्वित कर लेंगे; हमें कृतार्थ बनायेंगे और श्री सीताराम की कृपा के पात्र बनेंगे।

इसके अध्ययन से श्रीराम के चरितामृत के स्वादन के साथ काव्यानंद-भोग का भी लाभ होगा। साथ-साथ तमिळ भाषा, भाषी, उनकी काव्य-प्रणाली, संस्कृति आदि की उत्कृष्टता का भी बोध मिलेगा। हाँ, एक शंका अवश्य है: मेरी हिन्दी शायद इन बातों की उपलब्धि कराने में पूर्ण रूप से सहायता न दे सके! तो भी विश्वास है कि विद्वान पाठक को कम्बन के भावों को समझने में कठिनाई नहीं होगी।

जो है वह बहुत ही है। इसका सारा श्रेय उन कर्मण्य, भाषाप्रेमी, भावैक्य के सबल समर्थक, भाषाई-सेतुकरण के अथक सेवाव्रती, उदात्तगुण-पूर्ण और उदारचेता श्रीनंदकुमार अवस्थी (पद्मश्री) जी को और उनके निदेश व मार्गदर्शन में सतत क्रियाशील रहनेवाले 'भुवन वाणी ट्रस्ट' और प्रेस के समर्थ और लगनशील कार्यकर्ताओं को है। प्रधानतया श्री विनयकुमार अवस्थी हमारी प्रशंसा के पात्र हैं। श्रीनन्दकुमार अवस्थी के चरणों में मेरा मस्तक विनत है! उन कार्यकर्ताओं के प्रति हमारा हार्दिक धन्यवाद है।

श्री सीताराम की जय हो।

६६, भारती रोड, मदुरै
६२५०११

ति० शेषाद्रि, एम० ए०

२९।९५४

विषय-सूची

तुदिप्पाडल्हळ्   40-45

प्रशस्तिपद   46-57

1 नदी पटल   58-67

मेघों का कर्म; सरयू का प्रवाह-वर्णन; सरयू की महिमा; कुरिञ्चि (पर्वत-प्रदेश) की समृद्धि; पालै—मरु का वर्णन; मुल्लै—वन-प्रदेश की बात; मरुदम—खेतों और बागों के प्रदेश का वर्णन; प्रदेशमिश्रण; उपनदियाँ ।

2 देश पटल   67-92

देश की समृद्धि; स्त्रियों की बहुलता; तरुणों का स्नान; मरुदम प्रदेश में देशवासियों के नित्य-कर्म मनोरंजन; समुद्रतटीय प्रदेशवासियों के कार्य; चारों भूप्रदेशों का मिश्रित वर्णन; देशवासियों के गुणविशेष; देश की विशालता की प्रशंसा ।

3 नगर पटल   93-124

नगर-महिमा; प्राचीरों का वर्णन; खाई का वर्णन; खाई का तट; खाई के चारों ओर के उपवन; नगरद्वार; तोरण; नगर के प्रासाद; विविध गीत-नाद; अन्य विशेषताएँ; विविध मण्डप; नगरवासियों के मनोरंजन; अयोध्या पवित्र भोग-फल-दायी विद्या-बीज से उत्पन्न धर्मतरु था ।

4 शासन पटल   124-129

चक्रवर्ती दशरथ के गुणों का वर्णन; दशरथ-शरीर था और प्रजा-प्राण ।

5 श्री अवतार पटल   129-179

दशरथ का वसिष्ठजी से अपनी पुत्रहीनता की चिन्ता की बात कहना; वसिष्ठजी का पुरानी घटना का स्मरण करना; देवों का ब्रह्मा के पास जाना; रुद्रमूर्ति के पास जाना; सबका विष्णु-स्मरण; भगवान विष्णु का दर्शन, अभय देना; देवों को वानरों के रूप में भूमि पर जाकर रहने की आज्ञा; अपने अवतार की बात कहना; देवों का संतोष; ब्रह्मा, शिव आदि का अपने-अपने अवतारों का समाचार देना; वसिष्ठजी से दशरथ की प्रार्थना; वसिष्ठजी का ऋष्यश्रृंग का समाचार कहना; ऋष्यश्रृंग का चरित्र; रोमपाद का उन्हें लाने का प्रयत्न; गणिकाओं का ऋष्यश्रृंग को बहका ले आना; बारिश का होना; ऋष्यश्रृंग-शांता का विवाह; दशरथ का ऋष्यश्रृंग को लाने के लिए अंगदेश जाना; रोमपाद का वादा; ऋष्यश्रृंग का शांता के साथ अयोध्या जाना; देवों का आनन्द; दशरथ का अगवानी करना; ऋषि का नगर में आगमन; अश्वमेध यज्ञ; पुत्रेष्टि यज्ञ; भूत का प्रकट होना; स्वर्णथाली में सुधासम अन्नपिंड का देना; अन्नपिंड की रानियों में बँटाई; ऋष्यश्रृंग का विदा लेना; देवियों का गर्भधारण; श्रीराम आदि चारों के अवतार का वर्णन; राजा दशरथ का पुत्रजन्म जानना और जन्मपत्री का शोधन; दानकर्म और ढिंढोरा पिटवाना; नगर में कोलाहल; नाम-करण का उत्सव; चौल आदि संस्कारों का संपन्न किया जाना; श्रीराम-लक्ष्मण का और भरत शत्रुघ्न का सहवास; श्रीराम का नगरवासियों के साथ मनोरम व्यवहार; उनसे कुशल-प्रश्न करना; उनका उत्तर ।

6 हस्तधरन पटल   179-189

दशरथ की राजसभा में शोभा; कौशिक का आगमन; दशरथ का मुनि को नमस्कार

और उपचार; ऋषि का दशरथ को बधाई देना; राजा का प्रश्न; विश्वामित्र का लक्ष्मण-सहित श्रीराम को माँगना; दशरथ की स्थिति और उत्तर; विश्वामित्र का कोप करना; वसिष्ठजी का दशरथ को समझाना; दशरथ का श्रीराम-लक्ष्मण को ऋषि को सौंपना; प्रस्थान; सरयू के किनारे विश्राम और उसका तरण; श्रीराम का प्रश्न।

7 ताडका-वध पटल 190-218

कामाश्रम का चरित्र; अनंगाश्रम में ठहरना; मरु प्रदेश का जीता-जागता वर्णन; मन्त्रोपदेश; श्रीराम का विश्वामित्र से उस प्रदेश के सम्बन्ध में प्रश्न करना; ताडका का वृत्तान्त; सुकेतु की तपस्या; ताडका का जन्म और उसका सुन्द के साथ ब्याह; मारीच, सुबाहु का जन्म; सुन्द का अगस्त्याश्रम में अत्याचार और शाप से जल जाना; ताडका, मारीच और सुबाहु का अगस्त्य पर आक्रमण; अगस्त्य का शाप और तीनों का राक्षस बन जाना; तीनों का पाताल में छिपा रहना; तीनों का इस प्रदेश में अत्याचार; ताडका का आना; ताडका का काम; श्रीराम का संकोच और विश्वामित्र का तर्क; श्रीराम का विनय-वचन; ताडका का शूल फेंकना; ताडका-वध।

8 याग पटल 218-241

विश्वामित्र का श्रीराम को अस्त्र दान करना; सरयू और गोमती के संगम का स्वर; कौशिकी नदी का वृत्तान्त; कुशनाभ की सौ कन्याओं से वायु का प्रेम करना; और शाप देना; ब्रह्मदत्त और उन कन्याओं का विवाह; कुशनाभ के पुत्र गाधि का जन्म; कौशिकी और कौशिक का जन्म; ऋचीक-कौशिकी का विवाह; ऋचीक का ब्रह्मलोक-गमन; कौशिकी को भूमि पर नदी के रूप में रह जाने को कहना; सिद्धाश्रम का वृत्तान्त; महाबली का यज्ञ; वामन का आना; तीन चरणों के माप की भूमि का माँगना; महाबली का दान करना; शुक्राचार्य का रोकना; महाबली का शुक्र को उपदेश; त्रिविक्रमावतार; विश्वामित्र का यज्ञ करना; सुबाहु को मारना; मारीच को दूर फिंकवा देना; मिथिला के प्रति तीनों का प्रस्थान करना।

9 अहल्या पटल 242-282

शोण नदी पर आना; काश्यप-पत्नी दिति की तपस्या; दुर्वासा का देवेन्द्र पर कोप और शाप देना; देवनिधियों का समुद्र में छिपना; क्षीरसागर-मथन; असुरों का मरना; दिति का तपस्या करना; इन्द्र का गर्भ में प्रवेश और खण्डित करना; सप्तमरुत का जन्म; शरवण में कार्तिक की उत्पत्ति; गंगाजी का चरित्र; सगरपुत्रों की यात्रा; अश्व को इन्द्र का छिपाना; कपिल द्वारा सगरपुत्रों का भस्म हो जाना; भगीरथ की तपस्या; गंगावतरण; जह्नु मुनि का गंगा को पी जाना और उनके कान द्वारा निकलकर जाह्नवी का नाम धरना; विदेह देश की महिमा का वर्णन; अहल्या का प्रस्तर-रूप देखना; अहल्या का शापमोचन; अहल्या का वृत्तान्त-कथन; इन्द्र और अहल्या को गौतम द्वारा शाप; गौतम के आश्रम पर जाना और अहल्या का समर्पण।

10 मिथिला दृश्य-दर्शन पटल 282-350

मिथिला-प्रवेश; वीथियों का वर्णन; अनेक दृश्य—नाट्यमंच; झूले; स्त्रियों के कार्य; पुरुषों के कार्य; खाई का वर्णन; कन्या-माढ़ा में देवी सीता के दर्शन; देवी का सौन्दर्य-वर्णन; सीता-राम-परस्पर-दर्शन; देवी की प्रेम-जनित दशा का वर्णन; सूर्यास्त होना; देवी का प्रेम-प्रलाप; चन्द्रोदय; देवी का उपालम्भ; उधर श्रीराम आदि का एक सौध में ठहराया जाना; शतानन्द का आगमन; विश्वामित्र का वृत्तान्त; वसिष्ठजी के आश्रम में कौशिक; अतिथि-सत्कार का सुरभी द्वारा आयोजन; विश्वामित्र का गाय माँगना; युद्ध; विश्वामित्र के पुत्रों का मरण; विश्वामित्र की हार; तपस्या; तिलोत्तमा

द्वारा तप का नाश; त्रिशंकु का स्वर्गारोहण; अम्बरीष का नरमेध; शुनःशेप की विश्वामित्र से प्रार्थना; शुनःशेप का बच जाना; फिर से विश्वामित्र की तपस्या; तपोसिद्धि; शतानन्द का प्रस्थान; श्रीराम का सीता की स्मृति में व्यग्र होना; सूर्योदय में श्रीराम का थकावट दूर करके जागना; जनक के यज्ञ-मण्डप में जाना।

11 वंशक्रम-परिचय पटल 350-366

जनक का सभामण्डप में आना; विश्वामित्र से श्रीराम और लक्ष्मण का परिचय पूछना; विश्वामित्र का कुल का परिचय देना; दशरथ का यज्ञ करना; श्रीराम आदि का जन्म; श्रीराम का पराक्रम-वर्णन।

12 कार्मुक पटल 366-395

जनक का अपनी चिन्ता बताना; दाँव के कार्मुक का लाया जाना; सभा में एकत्रित लोगों के विविध कथन; शतानन्द का कार्मुक-वृत्तान्त का कहना; सीताजी के जन्म का वृत्तान्त; राजाओं की विवाहेच्छा; उनका राजा जनक से लड़ना; देवों की सहायता से जनक का विजय पाना; श्रीराम का धनुष उठाना; धनुर्भंजन; सबका आनन्द और परस्पर संभाषण; सीता की दयनीय दशा; नीलमाला का सन्देश; सीताजी का आनन्द; जनक का अयोध्या को दूत भेजना।

13 प्रस्थान पटल 395-430

मिथिला के दूतों का दशरथ-सभा में आगमन; पत्र पढ़कर दशरथ का विवाह-समाचार जानना; प्रस्थान का ढिंढोरा पिटवाना; सेना का प्रस्थान; पुरुष, स्त्रियाँ आदि का वर्णन; प्रेमी-प्रेमिकाओं के रसीले कार्य कलापों का वर्णन; विविध लोगों का वर्णन; विविध नादों का वर्णन; महिषियों का प्रस्थान; वसिष्ठजी का वर्णन; चक्रवर्ती का प्रस्थान; चन्द्रशैल पर्वत की तराई में आकर ठहरना।

14 शैलदर्शन पटल 431-466

चन्द्रशैल का वर्णन; गजों का वर्णन; रथों का वर्णन; जंगली मयूरों का वर्णन; स्त्रियों के कार्य; अश्व की पंक्तियाँ; पटमंडपों में राजाओं का प्रवेश; पड़ाव का वर्णन; वहाँ ठहरे हुए लोगों ने क्या-क्या किये, क्या-क्या देखे —इसका वर्णन; शैल की विशेषताएँ; यमकालंकार के कुछ अनोखे छन्द; संध्या का वर्णन; दीये जलाना; नृत्य आदि का वर्णन; रात में स्त्री-पुरुषों के कार्य।

15 पुष्प-चयन पटल 466-486

सूर्य का उदय होना; सबका शोण नदी के तट पर एकत्रित होना; स्त्रियों का उद्यानों में पुष्प चयन करना; अनेक प्रणय-व्यापारों का वर्णन।

16 जलक्रीड़ा पटल 486-499

पुष्प चयन करके सबका जलाशयों पर आ जाना; स्त्रियों की जलक्रीड़ा का वर्णन; जलाशयों की स्थिति; कमल के फूलों पर हंसों का वर्णन; पुरुषों का स्नान-क्रिया-रत स्त्रियों को देखकर तप्त होना; प्रिय का संकेत करना; संकेत समझना; सबका तट पर आकर वस्त्र पहनना; सुर्यास्तमन और चन्द्रोदय का होना।

17 पान-क्रीड़ा पटल 500-528

चाँदनी का वर्णन; प्रेमिका स्त्रियों के कार्यों का वर्णन; पिये हुए पुरुषों के कार्यों का वर्णन; प्रणयाकांक्षिणी स्त्रियों के कार्य; दूती भेजना आदि; विविध नायिकाओं का वर्णन; संगम का वर्णन; रात का अन्त होना।

18 अगवानी पटल 529-543

चक्रवर्ती दशरथ का परिवारों के साथ गंगा-तीर पर आना; मिथिला के पास आगमन; जनक का अगवानी के लिए चलना; दोनों की सेना के सागरों का मिलना; जनक का आगे-आगे आना; दशरथ का उनको अपने रथ में बिठा लेना; श्रीराम और लक्ष्मण का आना; श्रीराम का दशरथ को नमस्कार करना; भाइयों का मिलन; श्रीराम का रथ पर चढ़कर मिथिला के प्रति चलना; श्रीराम के दर्शनार्थ मिथिला की वीथियों में नारियों का एकत्रित होना।

19 वीथि-भ्रमण पटल 544-566

भक्ति-प्रेरित स्त्रियों की स्थिति का वर्णन; श्रीराम क्यों 'नेत्राधार' (कण्णन्) कहाते हैं, कवि का इसका कारण बताना; श्रीराम का वर्णन; स्त्रियों की स्थिति का पृथक-पृथक वर्णन; श्रीराम का सभामंडप में पधारना; दशरथ-आगमन; मंडप में आगत राजाओं का वर्णन; सारे नगर का कोलाहल; जनक का सब पर प्रेम-प्रदर्शन।

20 शृंगार-सज्जा पटल 566-586

वसिष्ठजी का सीताजी को लिवा लाने को कहना; देवी का शृंगार करना; सिर से लेकर पैर तक अलंकार; उनका मंडप में पधारना; देवी को देखकर श्रीराम का प्रफुल्लित होना; वसिष्ठ, दशरथ आदि का आनन्द; सीताजी का संशय त्यागना; जनक का विवाह-दिन पूछना; कौशिक का बताना; सबका सभामंडप से जाना।

21 शुभ-विवाह पटल 587-628

सब अतिथियों का संतोष; देवी सीताजी की स्थिति; रात से शिकायत करना; मन से रूठना; क्रौंच पक्षी को, चाँदनी को उपालम्भ देना; श्रीराम का मिथ्या दर्शन पाना; समुद्र से शिकायत; श्रीराम का भी रात के लम्बा होने पर उपालम्भ; नगर में विवाह का ढिंढोरा पीटा जाना; नगर का अलंकार; मुदित और उत्साही स्त्री-पुरुषों के कार्य; विवाह-दर्शनार्थ आनेवालों का वर्णन; सबका विवाह-मंडप में आना; श्रीराम का मंगल-स्नान करना; श्रीराम का दान करना और श्रीरंगनाथ की पूजा करना; श्रीराम का अलंकार; श्रीराम का रथ पर आरूढ़ होकर मंडप-आगमन; देवी का आगमन; विवाह की होम आदि क्रियाएँ; कन्यादान का रस्म; भाँवरें, पाणिग्रहण आदि का वर्णन; श्रीराम का माताओं को नमस्कार करना; सीताजी का सासों को नमस्कार करना; सासों का पुत्रवधू को भेंट देना; भरत आदि का विवाह; दशरथ का कुछ दिन परिवारों के साथ मिथिला में ठहरना।

22 परशुराम पटल 629-652

कौशिक का हिमालय की ओर प्रस्थान; चक्रवर्ती का परिवारों के साथ प्रत्यावर्तन के लिए प्रस्थान; दोनों तरह के शकुनों का होना; परशुराम का वर्णन और आगमन; दशरथ का सहम जाना; परशुराम का श्रीराम से ललकारना; दशरथ की परशुराम से प्रार्थना; दो धनुषों का वृत्तान्त; श्रीराम का धनुष लेना और तीर संधान कर निशान माँगना; परशुराम का श्रीराम की स्तुति करना और अपना सारा तप दान कर देना; परशुराम का विदा लेना; श्रीराम का पिता को जगाकर आश्वस्त करना; दशरथ का आनन्द; अयोध्या में आना और भरत का पिता की आज्ञा मानकर केकय देश जाना।

८९।९६४।

कम्ब रामायणम्

तुदिप् पाडल्हळ् (स्तुति छंद)

ऑऩ्ऱा थिरण्डु शुडरायॊरु मूऩ्ऱु माहिप्
पॊऩ्ऱाद वेद मॊरुनाऩ्गॊडैम् बूद माहि
अऩ्ऱाहि यण्डत् तहत्ताहियप् पुऱत्तु माहि
निऩ्ऱा ऩॊरुव ऩवनीळ्कऴल् ऩॆञ्जिल् वैप्पाम् 1

ऑऩ्ऱु आय्, इरण्टु चुटराय्, ऑरु मूऩ्ऱुम् आकि, पॊऩ्ऱात वेतम् ऑरु नाऩ्कॊटु ऐम् पूतम् आकि अऩ्ऱाकि अण्टत्तु अकत्ताकि, अप्पुऱत्तुमाकि निऩ्ऱाऩ् ऑरुवऩ्; अवऩ् नीळ् कऴल् ऩॆञ्चिल् वैप्पाम् । १

जो एक बना, दो ज्योतियाँ बना, त्रिमूर्ति बना, अक्षय वेद चतुष्टय बना, पाँच भूत बना; इन सबका भी जो न बन, अण्ड के अन्दर का, अण्ड के बाहर का भी बना, (वह एक) रहता है। उस परमपुरुष के दीर्घ चरणों को हम अपने चित्त में धरें। १

ऑऩ्ऱाय्प् पलवा युळऩायिल ऩायु रैप्पोऱ्क्
कऩ्ऱाय्प् परमा यरुवायुरु वाहि मॆऩ्मै
कुऩ्ऱाद ञाऩक् कॊऴुन्दाय्क्कुण मूऩ्ऱुऩ् दऩ्दु
निऩ्ऱा ऩियाव ऩवनीळ्कऴल् चॆऩ्ऩि वैप्पाम् 2

उरैप्पोऱ्क्कु ऑऩ्ऱु आय्, पल आय् उळऩ् आय् इलऩ् आय्, अऩ्ऱु आय्, परम् आय्, अरु आय् उरु आकि मॆऩ्मै कुऩ्ऱात ञाऩ कॊऴुन्तु आय् कुणम् मूऩ्ऱुम् तऩ्तु निऩ्ऱाऩ् इयावऩ् अवऩ् नीळ् कऴल् चॆऩ्ऩि वैप्पाम् । २

कहने वालों के लिए (कठिन रूप से) एक है; कई हैं; उनका भाव है; अभाव भी; वर्तमान हैं, परे भी; अरूपी हैं, रूपवान हैं; अनुत्तम ज्ञान के किसलय (शिखर) हैं। (सत्व, रज और तम) तीन गुणदायी जो हैं उनके दीर्घ चरण सिर पर धरेंगे। २

तिरुमाल् (श्रीविष्णु की स्तुति)

नील माङ्गडल् नेमियन् दडक्कै, मालै मालहॆंड वणङ्गुदु महिऴ्न्दे 3

नीलम् आम् कटल् नेमि अम् तटक्कै मालै माल् कॆट मकिऴ्न्तु वणङ्कुतुम् । ३

नीले रंग को प्राप्त क्षीर सागर (-शायी), चक्रधारी, सुन्दर विशाल हस्त, श्री विष्णु की, भ्रम निवारण के लिए आनन्द के साथ वन्दना करेंगे। ३

कायुम्वॆण् पिऱैनिहर् कडुवॊ डुङ्गॆयिऱ्, ऱायिरम् पणामुडि यऩन्दऩ् मीमिशै
मेयनाऩ् मऱैतॊऴ विऴित्तु ऱङ्गिय, मायऩ्मा मलरडि वणङ्गि येत्तुवाम् 4

कायुम् वॆण् पिऱै निकर्, कटु ऒटुङ्कु ऎयिऱ्ऱु, आयिरम् पणा मुटि अनन्तऩ्
मीमिचै मेय नाल् मऱै तॊऴ विऴित्तु उऱङ्किय मायऩ् मा मलर् अटि वणङ्कि
एत्तुवाम् । ४

(चाँदनी) फैलाने वाले श्वेत चंद्र के सदृश, और विष से भरे दांतों और एक सहस्र फन वाले अनन्त (नाग) पर, श्लाघ्य चारों वेदों के स्तुति करते रहते, जागते हुए सोनेवाले (ज्ञान-निद्रा-रत) मायावी (विष्णु) के (कमल) फूल से चरणों की स्तुति करें । ४

इलक्कुमि (लक्ष्मी)

मादुळङ् गऩियैच् चोदि वयङ्गिरु निदियै वाशत्
तादुहु नऱुमॆऩ् शॆय्य तामरैत् तुणैमॆऩ् पोदै
मोदुपाऱ् कडलिऩ् मुऩ्ऩाण् मुलैत्तुनाऱ् करत्ति लेन्दुम्
पोदुता याहत् तोऩ्ऱुम् पॊऩ्ऩडि पोऱ्ऱि शॆय्वाम् 5

मातुळम् कऩि ऐ चोति वयङ्कु इरु नितियै वाच तातु उकु नऱु मॆऩ् चॆय्य तामरै तुणै मॆऩ् पोत, मोतु पाऱ् कटलिऩ्, मुऩ्ऩाळ् मुळैत्तु नाल् करत्तिल् एन्तुम् पोतु तायाक तोऩ्ऱुम् पॊऩ् अटि पोऱ्ऱुवाम् । ५

अनार की कली को, ज्योतिर्मय बड़ी श्री को, सुगंधयुक्त पराग चूने वाले मृदु, और लाल कमल की साथिन कमल-कली को, तरंगाकुल सागर में उदित हो (विष्णु के) चार हाथों पर धृत होते समय जो (जगन्मयी) माता बनीं उन लक्ष्मी के चरणों की स्तुति करें । ५

इराम पिराऩ् (प्रभु श्रीराम)

परावरु मऱैपयिल् परमऩ् पङ्गयक्, करादल निऱैपयिल् करुणैक् कण्णिऩाऩ्
अरावणैत् तुयिऱुऱन् दयोत्ति मेविय, इरागवऩ् मलरडि यिरैञ्जि येत्तुवाम् 6

परावु अरु मऱै पयिल् परमऩ्, पङ्कयम् करातलम् निऱै पयिल् करुणै कण्णिऩाऩ् अरा अणै तुयिल् तुऱन्तु अयोत्ति मेविय इराकवऩ् मलर् अटि इरैञ्चि एत्तुवाम् । ६

स्तुत्य श्रेष्ठ वेदों से घोषित परब्रह्म, कमल से करतल वाले, करुणाक्ष शेषशय्या की निद्रा त्याग अयोध्या जो आये उन राघव के चरण कमल की, विनय कर, स्तुति करेंगे । ६

कलङ्गा मदियुङ् गदिरोऩ् बुरविप्, पॊलऩ्काऩ् मणित्तेरुम् पोहा—इलङ्गा
परत्ताऩै वाऩोर् पुरत्तेऱ विटट, शरत्ताऩै नॆञ्जे तरि 7

नॆञ्चे ! कलङ्का मतियुम् कतिरोऩ् पॊलऩ् का मणि तेरुम् पोका, इलङ्का पुरत्ताऩै वाऩोर् पुरत्तु एऱ विट्ट चरत्ताऩै तरि । ७

रे मन ! नियम न तोड़नेवाला चंद्र, और सूर्य का अश्वयुक्त स्वर्णमय रथ जिसके बीच में नहीं जा सकते, उस लंकापुरी के राजा को आकाश पर चढ़ाते (मारते हुए जिन्होंने) शर छोड़ा उनका स्मरण कर। ७

नाराय णाय नमवॅऩ्ऩु नऩ्ऩॅञ्जर्, पाराळुम् बादम् बणिऩ्देत्तु माऱ्ऱियेऩ्
काराऱु मेनिक् करुणा हरमूर्त्तिक्, कारा दऩैयॅऩ् ऩऱि यामै योऩ्ऱुमे 8

नारायणाय नम ऍऩ्ऩुम् नल् नॅञ्चर् पार् आळुम् पातम् पणिऩ्तु एत्तुम् आऱु अऱियेऩ्। कार् आरुम् मेति करुणाकर मूर्त्तिक्कु आरातऩै ऍऩ् अऱियामै ऒऩ्ऱुमे। ८

नारायणाय नमः (यह मंत्र) जपने वाले सच्चित्तवालों के लोक के शासक चरणों की स्तुति करने की रीति नहीं जानता। अतः मेघ श्यामल देह के और करुणाकर देव की आराधना (का द्रव्य) मेरी अज्ञता मात्र ही है। ८

नम्माऴ्वार् (प्रसिद्ध वैष्णव संत)

तरुहै नीण्ड तयरदऩ् ऱाऩ्ऱरुम्, इरुहै वेऴत् तिरागवऩ् ऱऩ्गदै
तिरुहै वेलैत् तरैमिशैच् चॅप्पिडक्, कुरुहै नादऩ् कुरैहऴल् काप्पते 9

तरु कै नीण्ट तयरतऩ् ताऩ् तरुम् इरु कै वेऴत्तु इराकवऩ् तऩ् कतै तिरुकु ऐ वेलै तरै मिचै चॅप्पिट कुरुकै नातऩ् कुरै कऴल् काप्पतु ए। ९

दानशील दशरथ के पुत्र, दो हाथों के हाथी (के समान रहनेवाले) श्रीराम का चरित, विविध तरह के सागरों से वलयित भूभाग में गाने के लिए कुरुकै (नामक क्षेत्र) के नायक शठकोप[1] के वीरतासूचक पायल से अलंकृत चरण रक्षक हैं। ९

आञ्जनेयर् (आंजनेय हनुमान)

अञ्जिले यॉऩ्ऱु पॅऱ्ऱा ऩञ्जिले यॉऩ्ऱैत् तावि
अञ्जिले यॉऩ्ऱा ऱाह वारियर् काह वेहि
अञ्जिले यॉऩ्ऱु पॅऱ्ऱ वणङ्गैक्कण् डयला रूरिल्
अञ्जिले यॉऩ्ऱु वैत्ता ऩवऩॅम्मै यळित्तुक् काप्पाऩ् 10

अञ्चिले ऑऩ्ऱु पॅऱ्ऱाऩ् अञ्चिले ऑऩ्ऱैत् तावि अञ्चिले ऑऩ्ऱु आऱु आक, आरियऱ्कु आक एकि अञ्चिले ऑऩ्ऱु पॅऱ्ऱ अणङ्कै, अयलार् ऊरिल् कण्टु, अञ्चिले ऑऩ्ऱु वैत्ताऩ्; अवऩ् ऍम्मै अळित्तु काप्पाऩ्। १०

पांच (भूतों) में एक (वायु) का जना (हनुमान जो), पांच में एक (आकाश) के द्वारा आर्य श्री राम कार्य के हेतु जाते हुए पांच में एक (जल) को पार कर, पांच में एक (पृथ्वी) की सुता को अन्यों के देश में पाकर, उसमें पांच में एक (अग्नि) लगा दी (जिसने), वह हम पर कृपा कर हमारी रक्षा करेगा। १०

---

[1] **शठकोप-नम्माळ्वार** जो वैष्णव भक्त **आळ्वारों** में प्रसिद्ध एक हैं।

ऍव्वि डत्तु मिरामऩ् शरिदयाम्, अव्वि डत्तिऩु मञ्जलि यत्तऩाय्प्
पव्व मिक्क पुहऴ्त्तिरुप् पाऱ्कडल्, दॆय्वत् तासऩैच् चिऩ्दैशॆय् वामरो 11

एव्विटत्तुम् इरामन् चरितैयाम् अव्विटत्तिनुम् अञ्चलि अत्तनाय् पव्व मिक्क पुकऴ् तिरु पाऱ् कटल् तॆय्व ताचनै चिन्तै चॆय्वाम् । अरो । ११

यत्र-यत्र रघुनाथ-कीर्तनम्, तत्र-तत्र अंजलि-हस्त हो (जो रहता है उस) पय-बहुल और प्रशंसित क्षीर-सागर-शायी देव के दास का (हनुमान का) स्मरण करेंगे । ११

कलैमहल् (सरस्वती)

पॊत्तहम् बडिह मालै कुण्डिहै पॊरुळ्शेर् ञाऩ
वित्तहऩ् दरित्त शॆङ्गै विमलैयै यमलै तऩ्ऩै
मॊय्त्तकॊऩ् दळह पार मुहिऴ्मुलैत् तवळ मेऩि
मैत्तहु करुङ्गट् चॆव्वा यणङ्गिऩै वणङ्गल् शॆय्वाम् 12

पॊत्तकम्, पटिक मालै कुण्टिकै, पॊरुळ् चेर् ञान वित्तकम् तरित्त चॆङ्कै, विमलैयै, अमलै तन्नै मॊय्त्त कॊन्तु अळक पारम् मुकिऴ् मुलै, तवळ मेनि, मै तकु करुङ्कण्, चॆव्वाय् अणङ्किनै वणङ्कल् चॆय्वाम् । १२

पुस्तक, स्फटिक माला, कमण्डल, अर्थ-भरी ज्ञान मुद्रा, इनको रखने वाले लाल करतलों की स्वामिनी, बिमल गुणों और अमल कृत्यों वाली, घने सुमन-गुच्छों से अलंकृत केशवाली, कमलकलियों के समान स्तनों वाली, धवल शरीर, अंजन लगी काली आंखों वाली, (और) लाल अधरों वाली (सरस्वती) देवी की वंदना करेंगे । १२

वित्तायकर् (विनायक)

तऴैशॆविच् चिरुहट् टाऴ्हैत् तऩ्दशिऩ् ड़ुरमुऩ् दारै
मऴैमदत् तऱुहट् चित्र वारण मुहत्तु वाऴ्वै
इऴैयिडैक् कलशक् कॊङ्गै यिमगिरि मडऩ्दै यीऩ्ऱ
कुऴवियैत् तॊऴुव ऩऩ्बाऱ् कुऱैवऱ निऱैह वॆऩ्ऱे 13

तऴै चॆवि, चिऱु कण्, ताऴ्कै तन्त चित्तुरमुभ्, तारै मऴै मत, तऱुकण् चित्र, वारण मुकत्तु वाऴ्वै, इऴै इटै, कलश कॊङ्कै, इमकिरि ईन्ऱ कुऴवियै अन्पाल् कुऱै वऱ निऱैक ऍन्ऱे तॊऴुवन् । १३

बड़े कान, छोटी आँखें, लंबी सूंड, लाल दांत, बहनेवाला मद जल, बल आदि से युक्त, विचित्र हाथी-मुख (विनायक), हमारे जीवनाधार को, पतली कमर, और कलश (सम स्तन) वाली हिमगिरि संभूता के शिशु को प्यार से, "अभाव दूर हों और (सुख) भरते रहें" यह प्रार्थना करते हुए नमस्कार करूँगा । १३

ऍक्क णक्कु मिऱऩ्द पॅरुमयऩ्, पॉक्क णत्तऩ् पुलियद ळाडयऩ्
मुक्क णत्तऩ् वरम्बॅऱ्ऱ मूप्पऩै, अक्क णत्ति ऩवऩडि ताऴ्न्दऩम् 14

ऍ कणक्कुम् इऱन्त पॅरुमैयऩ्; पॉक्कणत्तऩ्; पुलि अतळ् आटैयऩ्; मुक्कणत्तऩ् वरम् पॅऱ्ऱ मूप्पऩ् ऐ अक्कणत्तिऩ् अवऩ् अटि ताऴ्न्तऩम् । १४

किसी भी गणना के परे रहनेवाले यश का स्वामी, (भव रोग के लिए) उत्तम औषध; बाघ के चर्म का अंबरधारी, त्रि-नेत्र (शिव जी) के वर-प्राप्त (प्यारे) ज्येष्ठ पुत्र (हैं विनायक;) तत्क्षण उनके चरणों पर विनत होते हैं। १४

वाऴ्त्तु (स्वस्ति)

वाऩ्वळञ् जुरक्क नीदि मनुनॅऱि मुऱैयॅऩ् नाळुम्
ताऩ्वळर्ऩ् दिडुह नल्लोर् तङ्गिळै तऴैत्तु वाऴ्ह
तेऩ्वळर्ऩ् दऱाद मालैत् तॅशरद रामऩ् शॅय्है
याऩळऩ् दऱिन्द पाड लिडयऱा दॉलिर्ह वॅङ्गुम् 15

वाऩ् वळम् चुरक्क; नीति मनु नॅऱि मुऱै ऍ(ऩ्) नाळुम् ताऩ् वळर्न्तिटुक; नल्लोर् तम् किळै तऴैत्तु वाऴ्क; तेऩ् वळर्न्तु अऱात मालै तॅचरत रामऩ् चॅय्कै याऩ् अळन्तु अऱिन्त पाटल् इटै अऱातु ऍङ्कुम् ऑळिर्क । १५

आकाश की समृद्धता (वर्षा) बढ़े! नीति, मनु-धर्म-मार्ग पर सब दिन वर्धित हो; साधुओं का कुल वर्धित हो, जिए; मधुधारा जिसमें अटूट है उस माला के धारण करने वाले दशरथ (के पुत्र) श्रीराम का चरित्र (जो मैं अपनी बुद्धि के अनुसार) मापकर (समझकर) गाता हूँ, वह गीत निरंतर सर्वत्र प्रकाशमान रहे। १५

एह विरुत्त रामायणम् (एक वृत्त में रामायण)

परावरु मिरामऩ् मादो डिळवल्बिऩ् पडरक् काऩ्पोय्
विरादऩैक् करऩै माऩैक् कवन्दऩै वॅऩ्ऱि कॉण्डु
मरामरम् वालि मार्बु तुळैत्तणै वहुत्तुप् पिऩ्ऩर्
इरावणऩ् कुलमुम् पॉऩ्ऱ वॅय्दुड ऩयोत्ति वन्दाऩ् 16

पराव अरु (या-परावरुम्) इरामऩ् मातु ओटु इळवल् पिऩ् पटर काऩ् पोय् विरातऩै, करऩै, माऩै, कवन्तऩै वॅऩ्ऱि कॉण्टु, मरामरम् वालि मार्पु तुळैत्तु, अणै वकुत्तु पिऩ्ऩर् इरावणऩ् कुलमुम् पॉऩ्ऱ ऍय्तु उटऩ् अयोत्ति मीणटाऩ् । १६

प्रशंसा करने के लिए असाध्य (या प्रशंसित) श्रीराम, देवी (सीता जी) के साथ, अनुज के उनका पीछा करते, जंगल गये; विराध, खर, मृग (मारीच) और कबंध को मारकर साल वृक्ष और वाली के वक्ष को बेधकर, सेतु बांधकर, फिर रावण के कुल का नाश करते हुए शर चलाकर शीघ्र अयोध्या आ गये। १६

पायिरम् (प्रशस्ति-पद)

तऩियऩ्कळ् (मुक्तक)

कम्बनाडर् पॆरुमै (कम्बन की महिमा)

❀ नारणऩ् विळैयाट् टॆल्ला नारद मुऩिवऩ् कूऱ
आरणक् कविदै शॆय्दा ऩऱिन्दवाऩ् मीकि यॆऩ्बाऩ्
शीरणि शोऴ नाट्टुत् तिरुवऴुन् दूरुळ् वाऴ्वोऩ्
कारणि कॊडयाऩ् कम्बऩ् ऱमिऴिऩाऱ् कविदै शॆय्दाऩ् 17

नारणऩ् विळैयाट्टु ऍल्लाम् नारत मुऩिवऩ् कूऱ अऱिन्त वाऩ्मीकि ऍऩ्पाऩ् आरण कवितै चॆय्ताऩ्। चीर् अणि चोऴ नाट्टु तिरु वऴुन्तूरुळ् वाऴ्वोऩ् कार् अणि कॊटैयाऩ् कम्पऩ् तमिऴिऩाल् कवितै चॆय्ताऩ्। १७

श्रीमन् नारायण की लीलायें सब नारद के वर्णित करते (उसे ग्रहण कर), जानकर वाल्मीकी नाम के ऋषि ने वेद सम पदों में काव्य रचा। श्री-संपन्न चोळ देश के तिरुअऴुन्तूर के वासी, मेघ सम दानशील कम्बन ने तमिऴ् में (उसका) काव्य रचा। १७

❀ अम्बिले शिलैयै नाट्टि यमरर्क् कऩ् ऱमुद मीन्द
तम्बिरा ऩॆऩ्ऩत् ताऩुन् दमिऴिले तालै नाट्टिक्
कम्बना डुडैय वळ्ळल् कविच्चक्र वर्त्ति पार्मेल्
नम्बुपा मालै याले नरर्क्कुमिऩ् ऩमुद मीन्दाऩ् 18

अम्पिले चिलैयै नाट्टि अमरर्क्कु अऩ्ऱु अमुतम् ईन्त तम्पिराऩ् ऍऩ्ऩ, कम्प नाटु उटैय वळ्ळल् कवि चक्करवर्त्ति ताऩुम् तमिऴिले तालै नाट्टि पार् मेल् नम्पु पा मालैयाले नरर्क्कुम् इऩ् अमुतम् ईन्ताऩ्। १८

जल (सागर) में (मंदर) पर्वत गाड़कर (मथकर) देवों को जिन्होंने अमृत दिलाया उन विष्णुदेव के समान कम्ब देश के प्रभु कवि-चक्रवर्ती ने भी तमिऴ (सागर) में जिह्वा रूपी पर्वत खड़ा कर प्रिय पद्य-माला द्वारा इस पृथ्वी पर के नरों को (श्री रामकाव्य का) मधुर अमृत दिलाया। १८

आदवऩ् पुदल्वऩ् मुत्ति यऱिविऩै यलिक्कु मैयऩ्
पोदव ऩिराम कादै पुहऩ्ऱरुळ् पुनिदऩ् मण्मेल्
कोदवञ् जऱ्ऱु मिल्लाऩ् कॊण्डऩ्मा ऱऩ्ऩै यॊप्पाऩ्
मादवऩ् कम्बऩ् शॆम्बॊऩ् मलरडि तॊऴुदु वाऴ्वाम् 19

आतवऩ् पुतल्वऩ्, मुत्ति अऱिविऩै अळिक्कुम् ऐयऩ्, पोतवऩ् इराम कातै पुकऩ्ऱु अरुळ् पुऩितऩ्, मण्मेल् कोतु अवम् चऱ्ऱुम् इल्लाऩ्, कॊण्टल् माल् तऩ्ऩै ऒप्पाऩ्, मातवऩ् कम्पऩ् चॆम्पॊऩ् मलर् अटि तॊऴुतु वाऴ्वाम्। १९

सूर्य वंशी, मुक्ति-(देनेवाले) ज्ञान को देनेवाले प्रभु, (सबके) हृदय-कमलवासी श्रीराम का चरित्र कहने की कृपा करनेवाला पवित्र पुरुष,

अपने पार्थिव जीवन में दोष हीन और अपकृति रहित, मेघ श्याम-समान, महान तपस्वी कंबन के सुन्दर और उज्ज्वल कमल-चरण की वन्दना करके जियें। १९

अम्बरा वणिशडै यरऩ यऩ्मुदल्, उम्बराऩ् मुऩिवराल् योग रालुयर्
इम्बराऱ् पिणिक्करु मिराम वेऴञ्जेर, कम्बराम् बुलवरैक् करुत्ति रुत्तुवाम् 20

अम्पु अरा अणि चटै अरऩ् अयऩ् मुतल् उम्पराल्, मुऩिवराल्, योकराल्, उयर् इम्पराल्, पिणिक्करुम् इराम वेऴम् चेर् कम्पराम् पुलवरै करुत्तु इरुत्तुवाम् । २०

गंगा जी और सर्प से अलंकृत जटाधारी, अज आदि देवों से, मुनियों से, योगियों द्वारा और उत्तम इहलोक वासियों से बंधन-अशक्य (जिनका ध्यान में धारण कठिन है वह) श्रीराम (रूपी) गज स्वयं जिसके पास जाता है उस (खंभे रूपी) कंब नाम के विद्वान का स्मरण धारण करेंगे। २०

शम्ब नाड ऩुमैशॅवि शाऱ्ऱुपूङ्, कॉम्ब नाडऩ् कॉऴुनऩि रामप्पेर्
पम्ब नाडऴैक् कुङ्गदै पाच्चॅय्द, कम्ब नाडऩ् कऴऱलै यिऱ्कॉळ्वाम् 21

चम्पु अ नाळ् तन् उमै चॅवि चाऱ्ऱु, पू कॉम्पु अनाळ् तन् कॉऴुनऩ् इराम पेर् पम्प नाळ् तऴैक्कुम् कतै पा चॅय्त कम्प नाटऩ् कऴल् तलैयिल् कॉळ्वाम् । २१

शंभु ने उस दिन अपनी उमा के कान में जो (नाम) कहा, और पुष्पलता सी देवी (सीता) के पति का श्रीराम जो नाम है उस नाम के व्यापने से नित नवीन रहनेवाले चरित्र को पद्यों में रचनेवाले कंब नाडन के चरण सिर पर धारण करेंगे। २१

इम्बरु मुम्बर् तामु मेत्तिय विराम कादै
तम्बमा मुत्ति शेर्दल् शत्तियम् शत्तियम्मे
अम्बरऩ् दऩ्ऩिऩ् मेवु मादित्तऩ् पुदल्वऩ् ञाऩक्
कम्बऩ् शॅङ्गमल पादङ् गरुत्तुऱ विरुत्तु वामे 22

इम्परुम् उम्पर् तामुम् एत्तिय इरामकातै तम्पमा मुत्ति चेर्तल् चत्तियम् चत्तियम्मे । अम्परम् तऩ्निल् मेवुम् आतित्तऩ् पुतल्वऩ् ञाऩक् कम्पऩ् चॅम् कमल पातम् करूत्तु उऱ इरत्तुवाम् । ए । २२

इहलोकवासी और सुरलोकवासी इनका, स्तुत्य रामकथा का आधार ले, मुक्ति प्राप्त करना ध्रुव है, सत्य है। आकाश संचारी सूर्य के वंशस्थ श्रीराम का ज्ञान रखनेवाले कंबन के सुन्दर कमल-चरणों को चित्त में धारण करें। २२

वाऴ्वार् तरुवॅण्णॅय् नल्लर्च् चडैयप्पऩ् वाऴ्त्तुप्पंऱत्
ताऴ्वा रुयरप् पुलवो रहविरु डाऩहलप्

पोऴ्वार् कदिरि ऩुदित्तदॆय् वप्पुल मैक्कम्बनाट्
टाऴ्वार् पदत्तैच्चिऩ् दिप्पवर्क् कियादु मरियदऩ्ऱे 23

वाऴ्वु आर् तिरुवॆण्णॆय्नल्लूर चटैयप्पऩ् वाऴ्त्तु पॆऱ, ताऴ्वार् उयर, पुलवोर् अक इरुळ् ताऩ् अकल पोऴ् वार् कतिरिऩ् उतित्त तॆय्व पुलमै कम्प नाट्टाऴ्वार् पतत्तै चिन्तिप्पवर्क्कु यातुम् अरियतु अऩ्ऱे । २३

सुसंपन्न तिरुवॆण्णॆय् नल्लूर् के वासी शडैयप्पन् को कृतज्ञता भरा साधुवाद मिले; निम्नश्रेणी के लोग उन्नत हों; विद्वानों का मन का तम दूर हो; (यह साध्य करने) सर्वत्र बंधन कर फैलनेवाली किरणों के देव (सूर्य) के समान जनमे, दिव्य-विद्वत्ता प्राप्त कंब नाट्टाळ्वार् (कंब देश के साधू भक्त) के चरण-स्मरण करनेवालों के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। २३

नूल् पाटिय कालम् (ग्रंथ रचनाकाल तथा स्थान)

❀ ऒण्णिय शहात्त मॆण्णूऱ् ऱॆऴिऩ्मेऱ् चडैयऩ् वाऴ्वु
नण्णिय वॆण्णॆय् नल्लूर् तऩ्ऩिले कम्ब नाडऩ्
पण्णिय विराम कादै पङ्गुऩि यत्त नाळिऱ्
कण्णिय वरङ्गर् मुऩ्ऩे कवियरङ् गेऱ्ऱि ऩाऩे 24

कम्प नाटऩ्, चटैयऩ् वाऴ्वु नण्णिय वॆण्णॆय् नल्लूर् तऩ्ऩिले, पण्णिय इरामकातै ऒण्णिय चकात्तम् ऒण्णूऱ्ऱु एऴिऩ् मेल् पङ्कुऩि अत्त नाळिल् कण्णिय अरङ्कर् मुऩ्ऩे कवि अरङ्कु एऱ्ऱिऩाऩ् । २४

कंब नाडन ने, शडैयन का जीवन जहाँ चलता था उस (तिरु) वॆण्णॆय्नल्लूर में, स्वरचित रामगाथा की, (गणित) (काल-गणना के लिए) निमित शकाब्द आठ सौ सात में होनेवाले फालगुन के हस्त नक्षत्र के दिन आदरणीय श्री रंगनाथ के सामने कवि-सम्मेलन (में) 'सही' प्राप्त कर ली। २४

कवि वळम् (कवि की [प्रतिभा] संपन्नता)

कऴुन्द रायुऩ कऴल्पणि यादवर कदिर्मणि मुडिमीदे
अऴुन्द वाळिह डॊडुशिलै रागव वबिनव कविनादऩ्
विऴुन्द ञायिऱ् दॆऴुवदऩ् मुऩ्मऱै वेदिय रुडऩारायऩ्
दॆऴुन्द ञायिऱु विऴुवदऩ् मुऩ्कवि पाडिय दॆऴुनूऱे 25

कऴुन्तराय् उऩ् कऴल् पणियातवर् कतिर् मणि मुटि मीते अऴुन्त वाळिकळ् तॊटु चिलै इराकव अपिनव कवि नातऩ् विऴुन्त नायिऱु अतु ऎऴुवतऩ् मुऩ् मऱै वेतियरुटऩ् आरायन्तु ऎऴुन्त नायिऱु विऴुवतऩ् मुऩ् कवि पाटिऩतु ऎऴुनूऱे । २५

जड़मति और श्रीराम के चरणों पर विनत न होनेवाले राक्षसों के उज्ज्वल रत्न-खचित किरीटधारी सिरों पर चुभाते हुए शरों को चलानेवाले

धनु के धारी श्रीराघव के नये काव्य के रचयिता, कविनाथ कम्बन के, अस्तंगत सूर्य के उदय के पहले (रात में) वेद-विप्रों के साथ रहते (ग्रंथों का) गुनन कर, उदित सूर्य के अस्त होने के पहले गाये गये पद, सात सौ हैं।२५

करैशॆऱि काण्ड मेऴु[1] कदैहळा यिरत्तॆण् णूऱु
परवुऱु शमरम् बत्तुप् पडलनूऱ् ऱिरुवत् तॆट्टे
उरैशॆयुम् विरुत्तम् पऩ्नी रायिरत् तॊरुपत् ताऱु
वरमिहु कम्बन् शॊऩ्ऩ वण्णमुन् दॊण्णूऱ् ऱाऱे 25a

करै शॆऱि काण्टम् एऴु, कतैकळ् आयिरत्तु ऎण्णूऱु, परवु उऱु चमरम् पत्तु, पटलम् नूऱ्ऱु इरुपत्तु ऎट्टे; उरै चॆयुम् विरुत्तम् पऩ्नीरायिरत्तु ऒरु पत्तु आऱु; वरम् मिकु कम्पऩ् चॊऩ्ऩ वण्णमुम् तॊण्णूऱ्ऱु आऱु । २५ अ

सीमा निर्धारित काण्ड सात; गाथाएं एक हज़ार आठ सौ; विवरण सहित समर दस; पटल एक सौ अठाईस; काव्यवस्तु कहनेवाले वृत्त बारह हज़ार सोलह; (छंद) प्रकार छियानबे हैं। २५ अ

कावियप् पॆरुमै (कव्य-महिमा)

तरादलत्ति लुळ्ळ तमिऴ्क्कुऱ्ऱ मॆल्लाम्
अरावु मरमायिऱ् ऱऩ्ऱे - इरावणऩ्मेल्
अम्बुनाट् टाऴ्वा ऩडिपणियु मादित्तन्
कम्बनाट् टाऴ्वान् कवि 26

इरावणऩ् मेल् अम्पु नाट्टु आऴ्वाऩ् अटि पणियुम् आतित्तऩ् कम्प नाट्टाऴ्वाऩ् कवि, तरातलत्तिल् उळ्ळ तमिऴ् कुऱ्ऱम् ऎल्लाम् अरावुम् अरम् आयिऱ्ऱु अऩ्ऱु ए । २६

रावण पर शर चलानेवाले दिवाकर (श्रीराम) के चरणों की वन्दना करनेवाले आदित्य-पुत्र कम्ब नाट्टाळवान् का काव्य धरातल पर तमिऴ भाषा की अशुद्धियों को रगड़ने (दूर करने) वाली रेती बना है। २६

---

[1] इधर 'सात कांड' कहा गया है। पर उत्तर काण्ड का लेखक कम्बन नहीं था। ओट्टक्कूत्तर था—ऐसा कहा जाता है। ओट्टक्कूत्तर ने ईर्ष्यावश कम्बन-से प्रयुक्त एक शब्द को गलत कह दिया [वह "तुमि" (बूंद) नामक शब्द है।] कम्बन ने कहा यह ग्वालिनों के यहां प्रचलित है। इसकी सत्यता जानने के लिए राजा और दोनों कवि ग्वालों की वीथी में गये। तब किसी घर में, जो एक ग्वालिन दही मथ रही थी, उसने अपने बच्चों को यह कहकर हटाया कि 'तुमि' (बूंदें) पड़ेंगी। हटो। ओट्टक्कूत्तर को मानना पड़ा। पीछे मालूम हुआ कि वह ग्वालिन साक्षात् सरस्वती देवी हैं। तब उसे दुगुना दुख हुआ। अतः वे अपनी लिखी रामायण को अग्नि को अर्पित करने लगे। छ कांड जल गये। सातवें काण्ड को भी जलानेवाले ही थे कि कम्बन आ गये। उन्होंने ओट्टक्कूत्तर से बहुत मिन्नत कर उसे बचा लिया और वादा किया कि रामायण का उत्तरकाण्ड मैं नहीं लिखूँगा। आपका ही चलेगा।

❀ इम्बर् नाट्टिऱ् चॅल्वमॅला मॅय्दि यरशाण् डिरुन्दालुम्
उम्बर् नाट्टिऱ् कऱ्पहक्का वोङ्गु नीऴ लिरुन्दालुम्
शॅम्बॊऩ् मेरु वऩैय पुयत् तिऱल्शे रिरामऩ् ऱिरुक्कदै
कम्ब नाडऩ् कविदयिऱ्पोऱ् कऱ्ऱोर्क् किदयङ् गळियादे 27

इम्पर् नाट्टिल् चॅल्वम् ॲल्लाम् ॲय्ति अरचु आण्टु इरुन्तालुम्, उम्पर् नाट्टिल् कऱ्पक का ओङ्कुम् नीऴल् इरुन्तालुम्, चॅम्पॉन् मेरु अऩैय पुय तिऱल् चेर् इरामऩ् तिरु कतैयिल् कम्प नाटऩ् कवितैयिऱ् पोल् कऱ्ऱोर्क्कु इतयम् कळियाते । २७

इह लोक में सारे धन प्राप्त कर राज करते रहें, चाहे स्वर्ग-भूमि पर उन्नत कल्पक तरु की छाया में रहें, तो भी लाल स्वर्णमय मेरु सम कंधों के, शक्तिशाली श्रीराम की गाथा संबंधी कंबनाडन की कविता में जैसा (मुदित होता है) विद्वानों का हृदय (वैसा) उल्लसित नहीं होता । २७

नारदऩ् करुप्पञ् जाऱाय् नल्लवाऩ् मीहऩ् पाहाय्च्
चीरणि बोदन् वट्टाय्च् चॅय्तऩऩ् काळि दासऩ्
पारमु दरुन्दप् पञ्ज दारैयाय्च् चॅय्दाऩ् कम्बऩ्
वारमा मिराम कादै वळमुऱै तिरुत्ति ऩाऩे 28

इराम कातै, पार् अमुतु अरुन्त नारतन् करुप्पम् चाऱाय्; नल्ल वाऩ्मीकऩ् पाकाय्, चीर् अणि पोतऩ् वट्टाय्, काळिताचऩ् पञ्च तारैयाय् चॅय्ताऩ् । कम्पन् वारम् आम् वळ मुऱै तिरुत्तिऩाऩ् । २८

श्रीरामचरित का, संसार अमृत की तरह पान करे, इस हेतु नारद ने इक्षुरस; साधु वालमीकी ने चाशनी; श्रेष्ठतायुक्त बोधायन ने खोआ, कालिदास ने गुड़ बनाया । कंबन ने क्षीरान्न, योग्य रीति से अति मधुर बनाया । २८

इराम नामत्तिऩ् पॅरुमै (श्रीराम नाम महिमा)

नऩ्मयुञ् जॅल्वमु नाळु नल्हुमे, तिऩ्मयुम् बावमुञ् जिदैन्दु तेयुमे
शॅऩ्ममु मरणमु मिऩ्ऱित् तीरुमे, इम्मये यिरामवॅऩ् ऱिरण्डॅ ऴुत्तिऩाल् 29

इ 'रा म' ॲऩ्ऱु इरण्टु ॲऴुत्तिऩाल् इम्मैये नऩ्मैयुम् चॅल्वमुम् नाळुम् नल्कुम् तिऩ्मैयुम् पावमुम् चितैन्तु तेयुम्; चॅऩ्ममुम् मरणमुम् इऩ्ऱि तीरुम् । २९

रा और म दो अक्षरों (के जाप) से, इस जन्म में ही हित और धन दिनोंदिन बढ़ेंगे । अहित और पाप क्षीण हो मिट जायेंगे । जन्म और मरण का अभाव हो जायगा । २९

ओरायिर मकम्पुरि पयऩै युय्क्कुमे, नरादिबर् शैल्वमुम् बुहऴु नल्हुमे
विरायॅणुम् बवङ्गळै वेर ऱुक्कुमे, इरामवॅऩ् ऱोरुमॉऴि यियम्बुङ् गालैये 30

इराम ॲऩ्ऱु ऑरु मॉऴि इयम्पुम् कालैये ओरायिरम् मकम् पुरि पयऩै उय्क्कुम् । नरातिपर् चॅल्वमुम् पुकऴुम् नल्कुम् । विरायॅणुम् पवङ्कळै वेर् अऱुक्कुम् । ए । ३०

(राम) का एक शब्द कहते ही, सहस्र यज्ञ करने का फल मिल जायगा। नराधिपों का धन (बढ़ेगा) और कीर्ति बढ़ेगी। संख्या में बढ़नेवाले जन्मों (या पापों) की जड़ कट जायगी। ३०

इऱुव रम्बि लिरामवॅऩ् ऱारुम्बर्, निऱुव रॅऩ्बदु निच्चय मादलाल्
मऱुविऩ् माक्कदै केट्पवर् वैहुन्दम्, बॅऱुव रॅऩ्बदु पेशवुम् वेण्डुमो 31

इऱु वरम्पिल् इराम ॲऩ्ऱोर् उम्पर् निऱुवर् ॲऩ्पतु निच्चयम् आतलाल् मऱु इल् मा कतै केट्पवर् वैकुन्तम् पॅऱुवर् ऐऩ्पतु पेचवुम् वेण्टुमो ? ३१

अंतकाल में 'राम' कहनेवाले स्वर्ग में स्थायी रहेंगे—यह कहना ध्रुव (सत्य) है। अतः निर्दोष यह महान चरित्र सुननेवाले श्री बैकुंठ (परमपद) को प्राप्त होंगे—यह कहना भी चाहिए क्या ? ३१

इराम कादैयिऩ् पॅरुमैयुम् पयऩुम् (रामकथा की महिमा और फल)

वडहलै तॅऩ्गलै वडुहु कऩ्ऩडम्, इडमुळ पाडैया दॊऩ्ऱिऩ् ऩायिऩुम्
तिडमुळ रगुकुलत् तिरामऩ् ऱऩ्कदै, अडैवुडऩ् केट्पव रमर रावरे 32

वटकलै तॅऩ्कलै वटुकु कऩ्ऩटम्, इटम् उळ पाटै यातु ऒऩ्ऱिऩ् आयिऩुम् तिटम् उळ रकु कुलत्तु इरामऩ् तऩ् कतै अटै वुटऩ् केट्पवर् अमरर् आवर् । ए । ३२

उत्तरी भाषा (संस्कृत) दाक्षिणात्य भाषा (तमिऴ), तेलुगु, कन्नड या किसी भी सशक्त भाषा में (रचित) स्थिर-कीर्ति, रघुकुलोत्पन्न श्रीराम की कथा को यथाक्रम श्रवण करनेवाले अमर बनेंगे। ३२

इत्त लत्ति लिरामाव तारमे, पत्ति शॅय्दु परिवुडऩ् केट्परेल्
पुत्ति रर्त्तरुम् पुण्णिय मुन्दरुम्, अत्त लत्ति लवऩ्पद मॅय्दुमे 33

इरामावतारमे पत्ति चॅय्तु परिवु उटऩ् केट्परेल् इत्तलत्तिल् पुत्तिरर् तरुम्, पुण्णियमुम् तरुम्; अत्तलत्तिल् अवऩ् पतम् ॲय्तुम् । ३३

श्री रामावतार चरित्र का भक्ति करके और चाहना के साथ श्रवण करेंगे तो वह इह लोक में पुत्र दिलायेगा। पुण्य भी दिलायेगा। उस (पर) लोक में उनके (श्रीराम के) चरण (या स्थान को) दिलायेगा। ३३

अऩ्ऩ दाऩ महिलऩर् ऱाऩङ्गळ्, कऩ्ऩि दाऩङ् गबिलयिऩ् ऱाऩमे
शॊऩ्ऩ दाऩप् पलऩॅऩच् चॊल्लुवार्, मऩ्ऩि राम कदैमऱ वार्क्करो 34

मऩ् इरामऩ् कतै मऱवार्क्कु अऩ्ऩ ताऩम्, नल् अकिल ताऩङ्कळ्, कऩ्ऩि ताऩम्, कपिलैयिऩ् ताऩम् चॊऩ्ऩ ताऩम् पलऩ् ॲऩ चॊल्लुवार् । ३४

(श्रेष्ठ) नायक श्रीराम चरित्र जो नहीं भूलते उन्हें, अन्नदान, अच्छा भूदान, कन्यादान, गोदान, स्वर्णदान सबका फल (प्राप्त होगा—यह लोग) कहते हैं। ३४

मऱ्ऱॊरु तवमुम् वेण्डा मणिमदि लिलङ्गै मूदूर्
शॆऱ्ऱवऩ् विशयप् पाडल् तॊलिन्ददि लॊन्ऱु तऩ्ऩैक्
कऱ्ऱवर् केट्पोर् नॆञ्जिऱ् करुदुवो रिवर्हळ् पार्मेल्
उऱ्ऱर शाळ्वर् पिऩ्ऩु मुम्बराय् वीटटिऱ् चेर्वार् 35

मणि मतिल् इलङ्कै मूतूर् चॆऱ्ऱवऩ् विचयप् पाटल् तॊळिन्तु अतिल् ऒऩ्ऱु तऩ्ऩै कऱ्ऱवर्, केट्पोर् नॆञ्चिऱ् करुतुवोर् इवर्कळ् पार् मेल् उऱ्ऱु अरचु आळ्वर्; पिऩ्ऩुम् उम्पराय् वीट्टिऱ् चेर्वार्। मऱ्ऱु ऒरु तवमुम् वेण्टा। ३५

सुन्दर परकोटों वाली लंका के प्राचीन नगर को मिटाने वाले (श्रीराम) की विजय-गाथा को खूब समझकर, उसके पदों में एक को ही सही सीखनेवाले, सुननेवाले और चित्त में धारण करनेवाले—ये भूमि पर (राज) पाकर राज करेंगे; फिर स्वर्गगत हो मोक्ष पा लेंगे। (इसके लिये) और कोई तपस्या नहीं चाहिए। ३५

वॆऩ्ऱिशे रिलङ्गै याऩै वॆऩ्ऱमाल् वीर मोद
निऩ्ऱरा माय णत्ति ऩिहऴ्न्दिडु कदैह डम्मिल्
ऒऩ्ऱिऩैप पडित्तोर् तामु मुरैत्तिडक् केट्टोर् तामुम्
नऩ्ऱिदु वॆऩ्ऱोर् तामु नरहम दॆय्दि डारे 36

वॆऩ्ऱि चेर् इलङ्कै याऩ वॆऩ्ऱ माल् वीरम् ओत निऩ्ऱ रामायणत्तिल् निकऴ्न्तिटु कतैकळ् तम्मिल् ऒऩ्ऱिऩै पटित्तोर् तामुम्, उरैत्तिट केट्टोर् तामुम्, नऩ्ऱु इतु ऎऩ्ऱोर् तामुम् नरकम् अतु ऎय्तिटार् ए। ३६

विजयी लंकेश्वर को जीतनेवाले श्रीराम की वीरता के बखानने से जीवंत (हुई) रामायण में वर्तमान कथाओं में एक को पढ़नेवाले, सुनाते वक्त सुननेवाले, (और) 'यह अच्छा है।' यह कहनेवाले नरक (नामक स्थान) नहीं जायँगे। ३६

आदियरि योनम नरायणर् तिरुक्कदै यऱिन्दऩुदि ऩम्ब रवुवोर्
नीदियऩु बोहनॆऱि निऩ्ऱुनॆडु नाळदि ऩिऱन्दुशॆह दण्ड मुऴुदुक्
कादिबर्ह ळायरशु शॆय्दुळ निऩैत्तदु किडैत्तरुळ् पॊरुत्तु मुडिविल्
शोदिवडि वायऴिविल् मुत्तिपॆऱु वारॆऩ उरैत्तशुरु दित्तो हैहळे 37

आति अरि ओ नम नारायणर् तिरु कतै अऱिन्तु अऩुतिऩम् परवुवोर्, नॆटुनाळ् नीति अनुपोक नॆऱि निऩ्ऱु अतिऩ् इऱन्तु चकतण्टम् मुऴुतुक्कु अतिपर्कळाय् अरचु चॆय्तु उळ निऩैत्ततु किटैत्तु, अरुळ् पॊरुत्तु, मुटिविल् चोति वटिवाय् अऴिविल् मुक्ति पॆऱुवार् ऎऩ चुरुतित् तॊकैकळ् उरैत्त। ए। ३७

आरंभ में 'अरि (ओं) नमो' के साथ वन्द्य श्रीमन् नारायण की दिव्य कथा को जानकर दिने दिने गाने वाले, अनेक काल धर्म सम्मत भोग-मार्ग में रहने के बाद उससे छूटकर, जगदण्ड भर के शासक बनकर

राज्य करते; अपनी कामनायें प्राप्त करते; भगवान की कृपा का पात्र बनते और अन्त में अपार-ज्योति के रूप में अक्षर मोक्ष को पा जाते हैं। यह श्रुति-समूह घोषित करते हैं। ३७

इरागवऩ् कदैयि लॉरुकवि तऩ्ऩि लेहपा दत्तिऩै युरैप्पोर्
परावरु मलरो ऩुलहिऩि लवऩुम् बऩ्मुऱै वऴुत्तवीऱ् ऱिरुन्दु
पुरादऩ मऱैयु मण्डर् पॉऱ् पदमुम् पॉऩ्ऱुना ऴदऩिऩुम् बॉऩ्ऱा
अरावणै यमल ऩुलहॅऩुम् बरम पदत्तिऩै यडैहुव रऩ्ऱे 38

इराकवऩ् कतैयिल् ऑरु कवि तऩ्ऩिल् एक पातत्तिऩै उऱैप्पोर् परावु अरुम् मलरोऩ् उलकिऩिल् अवऩुम् पऩ्मुऱै वऴुत्त वीऱ्ऱू इरुन्तु, पुरातऩम् अऱैयुम् अण्टर् पॉऩ् पतमुम् पॉऩ्ऱु नाऴ् अतऩिऩुम् पॉऩ्ऱा अरा अणै अमलऩ् उलकु ऍऩुम् परम पतत्तिऩै अटैकुवर् अऩ्ऱु ए। ३८

श्रीराघव के चरित्र में एक पद्य के एक चरण को कहने वाले भी प्रशंसनीय ब्रह्मा के लोक में, उनके भी विविध रीति से स्तुति करते, (स्तुति के पात्र हो) कीर्ति के साथ रहने के बाद, प्राचीन कहलाने वाले देवों के सुन्दर लोकों के नाश होते समय भी (जो) नाश नहीं होता (और) शेषशायी विमल देव का लोक (जो) कहा जाता है उस परमपद में पहुँचेंगे। ३८

इऩैयनऱ् कादै मुऱ्ऱु मॅऴुदिऩोर् वियन्दोर् कऱ्ऱोर्
अऩैयदु तऩ्ऩैच् चॉल्वोर्क् करुम्बॉरुळ् कॉडुत्तुक् केट्पोर्
कऩैहडऱ् पुडवि मीदु कावलर्क् करशाय् वाऴ्न्दु
विऩैयम दऱुत्तु मेलाम् विण्णवर् पदत्तिऱ् चेर्वार् 39

इऩैय नऱ्कातै मुऱ्ऱुम् ऍऴुतिऩोर्, वियन्तोर्, कऱ्ऱोर्, अऩैयतु तऩ्ऩैच् चॉल्वोर्क्कु अरुम् पॉरुळ् कॉटुत्तु केट्टोर्, कऩै कटल् पुटवि मीतु कावलर्क्कु अरचाय् वाऴ्न्तु विऩैयम् अतु अऱुत्तु मेलाम् विण्णवऩ् पतत्तिल् चेर्वार्। ३९

इतना हितकारी चरित्र, सारा, लिखनेवाले, (उसके) प्रशंसक, उसके कहनेवालों को श्रेष्ठ धन देकर सुननेवाले—ये सब घोषपूर्ण समुद्र-वलयित पृथ्वी पर राजाधिराज बनकर रहेंगे; बाद कर्म-बंधन काटकर उच्चदेव (श्री विष्णु) का (परम) पद प्राप्त करेंगे। ३९

नोट—चालीस पद्यों का यह अंश तमिऴ् में **'शिऱप्पुप् पायिरम्'** कहा जाता है पायिरम का अर्थ भूमिका है और **'शिऱप्पु'** का विशेष। तब विशेष भूमिका या प्रस्तावना या प्राक्कथन हुआ। यह प्रस्तावना दो प्रकार की होती है—एक रचयिता जो स्वयं कहता है वह और योग्य विद्वान रचना, रचयिता आदि के संबंध में जो विवरण के साथ परिचय देकर रचना की खूबी बतलाते हैं—वह। इस भाग में इतर योग्य विद्वानों का वक्तव्य दिया गया है। दो एक कम्बन के से लगने वाले हैं।

इन पद्यों के क्रम बनाने में पृथक-पृथक संग्रहकर्ता अपनी अपनी रुचि का सहारा लेते हैं।

तऱ्चिऱप्युप् पायिरम् (स्व-परिचयामुख)

परम्बॊरुळ् वणक्कम् (पर-तत्व की वन्दना)

❀ उलहम् यावयुन् दामुल वाक्कलुम्, निलैपॆ ऱुत्तलु नीक्कलु नींगला
अलहि लाविळै याट्टुडै यारवर्, तलैव रऩ्ऩवर्क् केशर णाङ्गळे[1] 1

उलकम् यावैयुम् तामुळ आक्कलुम् निलै पॆऱुत्तलुम् नीक्कलुम् नींकला, अलकु इला विळैयाट्टु उटैयार् अवर् तलैवर् अऩ्ऩवर्क्कु ए नाङ्कळ् चरण् ए । १

लोक समुच्चय को स्वयं उत्पन्न करना और स्थिति दिलाना और मिटाना—इस अविच्छिन्न (व) अनंत लीला के स्वामी (जो हैं) वे आदि देव हैं। उन्हीं की हम शरण हैं। १

शिऱ्कु णत्तर् तॆरिवरु नऩ्ऩिलै, ऎऱ्कु णर्त्तरि दॆण्णिय मूऩ्ऱऩुळ्
मुऱ्कु णत्तव रेमुद लोरवर्, नऱ्कु णक्कड लाडुद ऩऩ्ऱरो २

ऎण्णिय मूऩ्ऱऩ् उळ् मुऩ् कुणत्तवरे मुतलोर्; चिऱ् कुणत्तर् तॆरि अरु नल् निलै ऎऱ्कु उणर्त्तरितु । अवर् नल् कुणम् कटल् आट्टुतल् नऩ्ऱु (अरो) । २

गिने हुए तीन (सत्व, रज, तम) में प्रथम गुण के हैं वह आदिदेव। श्रेष्ठ ज्ञानी के लिए भी जानने में अशक्य (उनकी) उत्कृष्ट महिमा, मेरे लिए समझना कठिन है। उनके कल्याण-गुणों के अर्णव में अवगाहन शुभ है। २

आदि यन्द मरियॆऩ यावयुम्, ओदि ऩारल हिल्लऩ वुळ्ळऩ
वेद मॆऩ्बऩ मॆय्न्नॆऱि नोऩ्मयऩ्, पाद मल्लदु पऱ्ऱिलर् पऱ्ऱिलार् 3

आति अन्तम् अरि ऎऩ, अलकु इल्लऩ, उळ्ळऩ वेतम् ऎऩ्पऩ यावैयुम्, ओतिऩार्, पऱ्ऱु इलार्, मॆय् नॆऱि नोऩ्मैयऩ् पातम् अल्लतु पऱ्ऱिलर् । ३

आदि और अंत में "हरि (ओं)' का उच्चारण कर अनंत तथा अमर वेदाख्यात सभी के पाठकर चुकनेवाले संग-रहित (विप्र) सन्मार्गव्रती (श्रीराम) के चरणों को छोड़ (और किसी में) मन नहीं लगाते। ३

अवैयडक्कम् (नम्रता निवेदन)

❀ ओशै पॆऱ्ऱुयर् पार्कड लुऱ्ऱॊरु, पूशै मुऱ्ऱवु नक्कुबु पुक्कॆऩ
आशै पऱ्ऱि यऱैयलुऱ् ऱेऩ्मऱ्ऱिक्, काशिल् कॊऱ्ऱत् तिरामऩ् कदैयरो 4

---

[1] चरणंगळे ही ठीक हो सकता है–व्याकरण सम्मत विचार से–यह एक धारणा है।

ओशै पॅऱ्ऱु उयर् पाल् कटल् उऱ्ऱु, ऑरु पूशै, मुऱ्ऱवुम् नक्कुपु पुक्कु ॲऩ्ऩ काशु इल् कॉऱ्ऱत्तु इरामऩ् इ कतै, आशै पऱ्ऱि अऱैयल् उऱ्ऱेऩ् मऱ्ऱु[1] अरो[2] । ४

शोर कर उठनेवाले (उठनेवाली तरंगों के) क्षीर सागर (पर) पहुँच, एक बिल्ली सारा (पय) चाट लेने को उद्यत हो जैसे, कलंकहीन विजयी श्रीराम की कथा कामना प्रेरित हो (मैं) कहने लगा । ४

नॉय्दि ऩॉय्यशॉ ऩूऱ्कलुऱ् रेऩॆऩै, वैद ववित् मरामर मेऴ्तॉळ
ॲय्द वॅय्दवऱ् कॅय्दिय माक्कदै, शॅय्द शॅय्तवऩ् शॊऩ्निऩ्ऱ् तेयत्ते 5

वैत वैविऩ् मरा मरम् एऴु तॉळै ॲय्त ॲय्तवर्क्कु ॲय्तिय माक्कतै चॅय्त चॅय्तवऩ् चॉल् निऩ्ऱ तेयत्तु, नॉय्तिऩ् नॉय्य चॉल् नूऱ्कल् उऱ्ऱेऩ्, ॲऩ्ऩै ? ५

दी गयी गाली[3] में ही, साल वृक्ष सातों को बेधते हुए शर चलाने वाले (श्रीराम जी) पर (जो) आगत (लागू) हुई (वह) कथा रचनेवाले तपस्वी (वाल्मीकि महर्षि) की वाणी जिस देश में स्थापित रहती है उस देश में अल्प से अल्प शब्द ले (मैं) ग्रंथ रचने चला—यह क्या (जड़ता) है ? ५

❀ वैय मॅऩ्ऩै यिहऴवु माशॆऩक्, कॅय्द वुम्मि दियम्बुव दियादॆऩिल्
पॉय्यिल् केऴ्विप् पुलैमैयि ऩॊऩ्पुहल्, दॅय्व माक्कदै माट्चि तॅरिक्कवे 6

वैयम् ॲऩ्ऩै इकऴवुम् माचु ॲऩक्कु ॲय्तवुम् इतु इयम्पुवतु यातु ॲऩिल् पॉय् इल् केऴ्वि पुलैमैयिऩोऩ् पुकल् तेय्व माक्कतै माट्चि तॅरिक्क ए । ६

दुनिया मेरी निन्दा करेगी; और कलंक मुझ पर लगेगा । (तिसपर भी) यह कहता क्यों ? क्योंकि—शाश्वत श्रुति (वेद) के ज्ञानी (वाल्मीकि महर्षि द्वारा) रचित दिव्य महान चरित्र की महिमा का प्रचार हो। ६

❀ तुऱैय डुत्त विरुत्तत् तॉहैक्कविक्, कुऱैय डुत्त शॅविहऴुक् कोदिल्याऴ्
नऱैय डुत्त वशुणनऩ् माच्चॅविप्, पऱैय डुत्तदु पोलुमॆऩ् पावरो 7

ओतिल् तुऱै अटुत्त विरुत्तम् तॉकै कविक्कु उऱै अटुत्त चॅविकळुक्कु ॲऩ् पा याऴ्[4] नऱै अटुत्त अचुणम्[5] नल् मा[6] चॅवि, पऱै अटुत्ततु पॉलुम् (अरो) । ७

1,2 छंद की पूरक ध्वनियां । उनके विशेष अर्थ नहीं होते । उन्हें 'अशै' कहते हैं ।

3 बहुश्रुत विषय है : वाल्मीकी महर्षि ने क्रौंच मिथुन में एक को मारनेवाले निषाद से खीझकर एक श्लोक बनाया जिसका आशय श्रीराम की कथा का आधार बना । 4 **याऴ**—वीणा सा पुराना वाद्य विशेष । 5 अ**चुणम्**—कल्पित पशु या पक्षी जो याऴ की ध्वनि सुन आह्लादित होता है और ढोल का शोर सुनकर मूर्च्छित हो गिर (मर भी) जाता कहा जाता है; 6 "मा" का अर्थ जानवर है । उस अर्थ में **अचुणम् नल मा चॅवि**—अचुणम् के अच्छे जानवर के कान; अचुणम् का अर्थ पक्षी हो तो अच्छा श्रेष्ठ कान होगा । तब, "मा" श्रेष्ठ या बड़ा है ।

अरे! (सच) कहा जाय तो, विविध अंगों सहित वृत्तों से भरे काव्य के आश्रय जो कान हैं उन कर्णों को, मेरी कविताएं याऴ् (की ध्वनिरूपी) मधु पड़े अशुण के अच्छे श्रेष्ठ कानों में परै (ढोल) के (नाद के) लगने के समान लगेंगी। ७

❀ मुत्त मिऴ्त्तुऱै यिऩ्मुऱै पोहिय, उत्त मक्कवि ञर्क्कोऩ् ऱुणर्त्तुवॅऩ्
पित्तर् शॊऩ्ऩवुम् पेदैयर् शॊऩ्ऩवुम्, पत्तर् शॊऩ्ऩवुम् पऩ्ऩप् पॅऱुबवो 8

मुत् तमिऴ् तुऱैयिल् मुऱै पोकिय उत्तमम् कविञर्क्कु ऑऩ्ऱु उणर्त्तुवॅऩ्।
पित्तर् चॊऩ्ऩवुम् पेतैयर् चॊऩ्ऩवुम् पत्तर् चॊऩ्ऩवुम् पऩ्ऩप् पॅरुपवो ? ८

(गद्य, संगीत, नाटक की) त्रयी तमिष के अंगों में क्रमेण निपुणता प्राप्त उत्तम कवियों से एक बात निवेदन करूँगा। पागलों का कहा, अज्ञों का कहा और भक्तों का कहा (क्या) आलोच्य है ? ८

❀ अऱैयु माडरङ् गुम्बडप् पिळ्ळैहळ्, तऱैयिऱ् कीऱिडिऱ् ऱच्चरुङ् गाय्वरो
इऱैयुङ् गेळ्वि यिलादवॅऩ् पुऩ्गवि, मुऱैयि ऩूलुणर्ऩ् दारु मुऩिवरो ? 9

अऱैयुम् आटु अरङ्कुम् पट पिळ्ळैकळ् तरैयिल् कीऱिटिल् तच्चरुम् काय्वरो ?
इऱैयुम् केळ्वि इलात ॲऩ् पुऩ् कवि मुऱैयिऩ् नूल् उणर्ऩ् तारुम् मुनिवरो। ९

कमरे और रंगमंच दिखाते हुए बालक ज़मीन पर (लकीरें) खींचते हैं तो शिल्पी दुतकारेंगे ? कुछ भी (सुना) ज्ञान न रखनेवाले मेरी तुच्छ कविता पर (उचित) क्रम से ग्रंथ पढ़े लोग गुस्सा करेंगे ? (नहीं)। ९

नूल्वऴि (ग्रंथ-मूल)

देव पाडैयि ऩिक्कदै शय्दवर्, मूव राऩवर् तम्मुळ्ळु मुऩ्दिय
नावि ऩारुरै यिऩ्बडि नाऩ्ऱमिऴ्प्, पावि ऩालि ढुणर्त्तिय पण्बरो 10

इ कतै तेव पाटैयिल् चॅय्तवर् मूवर्; आऩबर् तम्मुळुम् मुन्तिय नाविऩार् उरैयिऩ् पटि नाऩ् तमिऴ् पाविऩाल् इतु उणर्त्तिय पण्पु अरो। १०

इस कथा के देवभाषा (संस्कृत) में रचयिता (वाल्मीकि, वशिष्ठ और बोधायन) तीन हैं उनमें आदि (वाल्मीकि) कवि के कथन का अनुसरण मेरा तमिऴ छंदों में समझाने का क्रम है। १०

नूल् शॅय्द इडम् (ग्रंथ रचना स्थल)

नडैयि ऩिऩ्ऱुयर् नायकऩ् ऱोऱ्ऱत्तिऩ्, इडैनि हऴ्न्द विरामाव तारप्पेर्त्
तॊडैनि रंम्बिय तोमऱु माक्कदै, शडैयऩ् वॅण्णॅय्नल् लूर्वयिऱ् ऱन्ददे 11

नायकऩ् तोऱ्ऱत्तिऩ् इटै निकऴ्न्त, नटैयिल् निऩ्ऱु उयर् इरामावतारम् पेर् तॊडै निरम्पिय तोम् अऱु मा कतै चटैयऩ्[1] वॅण्णॅय् नल्लूर वयिऩ् तऩ्ततु ए। ११

---

[1] **चटैयऩ् या** शडैयप्प वळ्ळल् (वळ्ळल = दाता) **तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर** के रहनेवाले थे। उन्होंने अनाथ बालक कम्बन को पाला था। कम्बन ने अपनी कृतज्ञता ग्रंथ में ही उनके नाम का उल्लेख कर जतायी है।

नाथ (श्री विष्णु) के अवतारों के मध्य हुए, सदाचारनिष्ट हो उन्नति को प्राप्त श्रीराम के अवतार की उत्कृष्ट पदावली भरी, दोषहीन महान कथा (श्रीमान्) शडैयप्पन् के तिरुवॆण्णॆय् नल्लूर (ग्राम) में दी (रची) गयी। ११

नूऱ् पयऩ् (ग्रंथ फल)

नाडिय पॊरुळ्कै कूडु ञाऩमुम् बुहऴु मुण्डाम्
वीडियल् वऴिय दाक्कुम् वेरियङ् गमलै नोक्कुम्
नीडिय वरक्कर् शेऩै नीऱुपट् टॊऴिय वाहै
शूडिय शिलैयि रामऩ् ऱोळ्वलि कूऱु वोर्क्के 12

नीटिय अरक्कर् चेऩै नीऱु पट्टु ऒऴिय वाकै[1] चूटिय चिलै इरामऩ् तोळ् वलि कूऱुवार्क्के नाटिय पॊरुळ् कै कूटुम्; ञाऩमुम् पुकऴुम् उण्टाम्; अतु वीटु इयल् वऴि आक्कुम्। वेरि अम् कमलै नोक्कुम्। १२

विशाल राक्षस-सेना को राख बनाते हुए, नाशकर जयमाला पहने कोदण्ड-पाणि श्रीराम के भुजबल की स्तुति करनेवाले को ईप्सित वस्तुएँ प्राप्त हो जायँगी। ज्ञान और कीर्ति मिलेगी। वह (स्तुति) मोक्ष के रास्ते पर पहुँचायगी। (स्तोता पर) मधुमय सुन्दर कमल की देवी (कमला = लक्ष्मी) कृपादृष्टि फेरेंगी। १२

---

[1] वाहै (वाकै)—एक पेड़ है; उसके फूल विजय के चिह्न के रूप में विजेताओं द्वारा पहने जाते हैं।

❀ श्री राम जयम् ❀

बाल काण्डम्

1. आऱ्ऱुप् पडलम् (नदी पटल)

आश लम्बुरि यैम्बॉऱि वाळियुम्, काश लम्बु मुलैयवर् कण्णॅऩुम्
पूश लम्बु नॅऱियिऩ् पुऱञ्जॅलाक्, कोश लम्बुऩै याऱ्ऱणि कूऱुवाम् 13

आचु अलम् पुरि–अपराध अधिक करनेवाले; ऐन्तु पॉऱि वाळियुम्–पाँच इंद्रियाँ रूपी शर, (और); काचु अलम्पु मुलैयवर्–स्वर्णहार (हमेल) (जिन पर) लहराते हैं (उन) स्तनों वालियों (के); कण् ऍऩुम् पूचल् अम्पुम्–आँखें रूपी चोट करनेवाले अस्त्र; नॅऱियिऩ् पुऱम् चॅल्ला–(जहाँ) (सऩ्-) मार्ग से हटकर नहीं चलते (या चल नहीं सकते); कोचलम् पुऩै आऱु अणि–कोशल (देश) को अलंकृत करनेवाली नदी की महिमा (यें); कूऱुवाम्–कहेंगे (हम)। १३

हम (कवि) अब सरयू नदी की महिमा बखानेंगे। सरयू कोशल देश को, जो स्वयं महान है, अलंकृत करती है। वहाँ न पुरुषों की पंचेंद्रिय कुमार्ग पर चलती हैं न स्त्रियों की आँखें; यद्यपि साधारण रूप से ये इंद्रियाँ भटकानेवाली होती हैं। १३

नीऱ णिन्द कडवु णिऱत्तवाऩ्, आऱ णिन्दुशॅऩ् ऱार्कलि मेय्न्दहिल्
शेऱ णिन्द मुलैत्तिरु मङ्गैतऩ्, वीऱ णिन्दवऩ् मेऩियिऩ् मीण्डवे 14

नीऱु अणिन्त–भभूत (जिन्होंने) धारण किया है; कटवुळ् निऱत्त वाऩ्–(उन) देव के रंग वाले मेघ; आऱु अणिन्तु चॅऩ्ऱु–(आकाश) मार्ग को अलंकृत करते हुये जाकर; आर् कलि मेय्न्तु–शब्द करनेवाले समुद्र (के जल) को पीकर; अकिल् चेऱु–अगरु का लेप; अणिन्त मुलै तिरु मङ्कै–धारण करनेवाले स्तनों की श्री-देवी (को); तऩ् वीऱु अणिन्तवऩ्–अपने वक्ष में धारण करनेवाले (के); मेऩियिऩ्–शरीर के समान; मीण्टतु–लौट आये। १४

(पहले मेघों की चर्चा है।) जल-हीन मेघ जो सफ़ेद होते हैं वे समुद्र में जाकर जल पीते हैं, तब काले हो जाते हैं। पहले उनका रंग भस्मधारी शिव का सा था और बाद में श्री-निवास विष्णुदेव का सा हो गया। वे लौट आते हैं। १४

पम्बु मेहम् परन्ददु बानुवाल्, नम्बऩ् मादुलऩ् वॅम्मयै नण्णिऩाऩ्
अम्बि नाऱुऱुदु मॅऩ्ऱहऩ् कुऩ्ऱिऩ्मेल्, इम्बर् वारि यॅळुन्ददु पॉऩ्ऱदे 15

पम्पु मेकम्–घने रूप से फैले मेघों का; परऩ्ततु–फैलना; नम्पऩ् मातुलऩ्–श्री शिवजी के ससुर; पाऩुवाल् वॆम्मैयै नण्णिऩाऩ्–सूर्य से गर्मी को प्राप्त कर लिया; अम्पिऩ् आऱ्ऱुतुम् ऎऩ्ऱु–(अपने) जल से शांत करेंगे, यह सोचकर; इम्पर वारि–यहाँ का समुद्र; कुऩ्ऱिऩ् मेल् ऎऴुन्ततु पोऩ्ऱतु–पर्वत की तरफ चढ़ आया, ऐसा था। १५

वे मेघ उठकर आकाश में सर्वत्र फैलते हैं। तब ऐसा लगता है मानों यहाँ का समुद्र ही, इस विचार से कि श्रीशिव जी के ससुर हिमवान सूर्य से संतप्त हैं और हम उनको अपने जल से तापहीन कर दें, एकदम उठकर (हिम-) पर्वत की ओर उड़ता जाता है। १५

पुऴ्ऴि माल्वरै पॊऩ्ऩॆऩ ऩोक्किवाऩ्, वॆऴ्ऴि वीऴिडै वीऴ्त्तॆऩत् तारैहळ्
उऴ्ऴि युळ्ळवॆल् लामुवन् दीयुमव्, वळ्ळि योरिऩ् वऴङ्गिऩ मेहमे 16

मेकम्–मेघ; पुऴ्ऴि–लक्ष्य; माल् वरै–श्रेष्ठ पर्वत; पॊऩ् ऎऩल् नोक्कि–स्वर्ण-रूप है–यह देखकर; वाऩ् वॆऴ्ऴि वीऴ्–श्रेष्ठ चांदी की तारें; इटै वीऴ्त्त ऎऩ–(उस के) मध्य लटकायीं, ऐसा; उऴ्ऴि–सोचकर; उळ्ळ ऐल्लाम्–पास रहे सब को; उवन्तु ईयुम्–प्रसन्न होकर देनेवाले; अव्वळ्ळियोरिऩ्–उन (ऐसे) दाताओं के समाऩ्; तारैकळ्–धारें (बूँदों की तारें); वऴङ्गिऩ–बरसाये या बरसायीं। १६

मेघ बड़ी-बड़ी मोटी धारें गिराते हैं। वे धारें मानों चाँदी की तारें हैं जिनको मेघ स्वर्णमय हिमाचल पर लटकाकर उसे बाँधने का प्रयास करते हैं— शायद अपनी ओर खींचने के लिये। १६

माऩ नेर्न्दऱ नोक्कि मऩुनॆऱि, पोऩ तण्कुडै वेन्दऩ् पुहऴॆऩ
ञाऩ मुऩ्ऩिय नाऩ्मऱै याळर्कैत्, ताऩ मॆऩ्ऩत् तऴैत्तदु नीत्तमे 17

माऩम् नेर्न्तु–मान(से) युक्त होकर; अऱम् नोक्कि–धर्म देखकर; मऩु नॆऱि पोऩ–मनुनीति पर चला (चलने वाला); तण् कुडै वेन्तऩ्–शीतल छत्र (धारी) राजा (का); पुकऴ् ऎऩ–यश जैसा; नाऩ्कु मऱै आळर् कै–चारों वेदों के अधिकारियों के हाथों में; ताऩम् ऎऩ्ऩ–दान जैसा; नीत्तम् तऴैत्ततु–बाढ़ बढ़ी। १७

अब सरयू का प्रवाह देखिये। वह प्रतिष्ठित धर्मावलम्बी और मनु-नीति-शास्त्र-परख राजा (स्वयं दशरथ) के यश के समान फैलती है; और चतुर्वेदी ब्राह्मण को दान देने पर दाता को मिलनेवाले शुभफल के समान बढ़ती है। १७

तलैयु माहमुन् दाऴुन् दऴीइयदिल्, निलैनि लादिऱै निऩ्ऱदु पॊलवे
मलैयि ऩुळ्ळवॆ लाङ्गॊण्डु मण्डलाल्, विलैयिऩ् मादरै यॊत्तदव् वॆळ्ळमे 18

तलैयुम्–सिर को (और); आकमुम्–मध्य भाग (भागों) को; ताऴुम्–पैरों (तलों) को; तऴीइ–लग कर; अतिल्–उसमें; निलै निलातु–स्थिर-रूप से न रुक कर; इऱै निऩ्ऱतु पोल–थोड़ा ठहरा, ऐसा (दिखाई देकर); मलैयिऩ् उळ्ळ ऎलाम्–पर्वत पर रहे सब को; कॊण्टु मण्टलाल्–लेकर सवेग जाने से; अ वॆळ्ळम्–वह बाढ़; विलैयिऩ् मातरै–बिकाऊ स्त्रियों (को) (वेश्यायों को); ऒत्ततु–की समानता की। १८

वह बाढ़ वारांगना सा वरताव करती है। वेश्या पुरुष के सिर का, शरीर का, आलिंगन करती है; पैरों तले भी लगती है। एक क्षण के लिए उसका प्रेम स्थिर-प्रेम सा दिखता है। पर वह चंचल है और धोखा देकर उसका सारा धन लूट लेती है। उस पुरुष जैसा ही हाल पर्वत का भी है। (वेश्या-सदृश) धारा पर्वत की सभी वस्तुएँ बहा ले जाती है। १८

मणियुम् पॊऩ्ऩुम् मयिऱ्ऱळैप् पीलियुम्, अणियु माऩैवॆण् कोडु महिलुऩ्दण्
इणैयि लारमु मिऩ्ऩ कॊण् डेहलाऩ्, वणिह माक्कळै यॊत्तदव् वारिये 19

मणियुम्–रत्नों को (और); पॊऩ्ऩुम्–स्वर्ण को; मयिल् तळै पीलियुम्–मोर के पंख-कलापों को; अणियुम् आऩै वॆण् कोटुम्–सुन्दर, हाथियों के सफ़ेद दाँतों को; अकिलुम्–अगरु को; तण्–शीतल; इणै इल् आरमुम्–बेजोड़ चंदन (की लकड़ियों) को; इऩ्ऩ–ऐसे और; कॊण्टु–लेकर; एकलाऩ्–जाने से; अ वारि–वह प्रवाह; वणिक माक्कळै ऒत्ततु–वणिक लोगों से तुलता (मेल खाता) था। १९

वह प्रवाह रत्न, मयूर-पंख, हाथी दाँत, अगरु और चन्दन की लकड़ियाँ आदि बहुमूल्य वस्तुएँ बहा ले आता है। वह वणिकों के समान लगता है जो बहुत सामानों का क्रय-विक्रय करते हैं। १९

पूनि रैत्तुमॆऩ् ऱादु पॊरुऩ्दियुम्, तेऩ ळावियुञ् जॆम्बॊऩ् विरावियुम्
आऩै मामद वाऱ्ऱॊ डळावियुम्, वाऩ विल्लै निहर्त्तदव् वारिये 20

पू निरैत्तुम्–फूल, पंक्तियों में धारण करके; मॆऩ् तातु पॊरुन्तियुम्–कोमल पराग से मिलित; तेऩ् अळावियुम्–शहद से घुलकर और; चॆम् पॊऩ् विरावियुम्–लाल (चोखे) स्वर्ण से मिश्रित हो कर; आऩै मा मत–हाथी के बहुत मद की; आऱ्ऱॊटु अळावियुम्–नदी से सम्मिलित होकर, और; अ वारि–वह बाढ़; वाऩविल्लै निकर्त्ततु–इंद्रधनुष की समानता करती थी। २०

उस प्रवाह में फूल तैरते हैं; पराग, शहद, चोखे स्वर्ण, गजों का मद-जल आदि मिले आते हैं। उनके विविध रंगों के कारण वह प्रवाह इन्द्र-धनुष के समान दिखाई देता है। २०

मलैयॆ डुत्तु मरङ्गळ् परित्तुमा, डिलैमु दऱ्पॊरुळ् यावैयु मेन्दलाल्
अलैह डऱ्ऱलै यऩ्ऱणै वेण्डिय, निलैयु डैक्कवि नीत्तमन् नीत्तमे 21

मलै ऎटुत्तु–पर्वत (खोद) लेकर; मरङ्कळ् परित्तु–पेड उखाड़ कर; माटु–पास के; इलै मुतल् पॊरुळ्–पत्ते आदि वस्तुएँ; यावैयुम्–सभी को; एन्तलाल्–उठाने से; अलै कटल तलै–लहरानेवाले समुद्र-तल (पर); अऩ्ऱु–उस दिन; अणै वेण्टिय–सेतु(-बन्धन) में लगे हुए; निलै उटै–स्थिति वाली; कवि नीत्तम् ए–वानर सेना ही। २१

वह प्रवाह चट्टानों को और तरुओं को उखाड़ लाता है; उस पर पत्ते वगैरह बहते आते हैं। उसको देखकर श्रीराम की वानर सेना की याद आती है जो समुद्र-तरण के लिये सेतु-बन्धन में लगी हुई थी। २१

ईक्कळ् वण्डोडु मॉय्प्प वरम्बिहन्, दूक्क मेमिहुन् दुट्टॅळि विऩ्ड़िये
तेक्कॅ ड़िन्दु वरुदलिर् ड़ीम्बुऩल्, वाक्कु तेऩुहर् माक्कळै माऩुमे 22

तीम् पुऩल्–मधुर जल (प्रवाह); ईक्कळ् वण्टॉटु मॉय्प्प–मक्खियों के भ्रमरों के साथ मंडराते; वरम्पु इकन्तु–सीमा लाँघ कर; ऊक्कमे मिकुन्तु–बल विक्रम में बढ़कर; तेक्कु–सागौन का पेड या डकार; ऍऱिन्तु–फेंकता हुआ (या फेंक कर); वरुतलिन्–आने से; वाक्कु–ढली हुई; तेऩ्–शहद या मधु; नुकर् माक्कळै माऩुम्–पीने वाले लोगों की समता करता। २२

उस प्रवाह का जल मधुर है; अतः उस पर मक्खियाँ, भ्रमर आदि मँडराते हैं। प्रवाह की धारा प्रबल है; नयी बाढ़ है अतः जलमैला है (साफ़ नहीं है)। सागौन के पेड़ों को उछालता आता है। तब इसकी उपमा पियक्कड़ से हो जाती है। पियक्कड़ के मुख पर मक्खियाँ और भ्रमर मँडराते हैं; उसकी शक्ति बढ़ी हुई होती है। उसका अन्तःकरण (मन) साफ़ नहीं है। डकार लेता आता है। इसलिए दोनों में साम्य है। (डकार का अर्थ मद्यप के पक्ष में तेक्कु के अर्थ-श्लेष से सधता है।) २२

पणैमु हक्कळि याऩैपन् माक्कळो, डणिव हुत्तॅऩ वीर्त्तिरैत् तार्त्तलिऩ्
मणियु डैक्कॉडि तोऩ्ड़वन् दूऩ्ड़लाल्, पुणरि मेऱ्पॉरप् पोवदुम् बोऩ्रदे 23

पणै मुकम्–पीन मुख का; कळि याऩै–मत्त हाथी; पल् माक्कळोटु–अनेक जानवरों को; अणि वकुत्तु–व्यूहों में बाँटकर मानों; ईर्त्तु–खींच लाकर; इरैत्तु आर्त्तलिऩ्–जोर से शोर मचाने से; मणि उटै–मणि (या सुन्दरता से) युक्त; कॉटि तोऩ्ऱ–ध्वजाओं (लताओं) के प्रकट होते; वन्तु ऊऩ्ऱलाल्–आकर डटने से, धकेलने से; पुणरि मेल्–समुद्र पर; पॉर–युद्ध करने के लिए; पोवतुम् पोऩ्ऱतु–जाता भी हो, ऐसा लगता है। २३

उस प्रवाह की सज-धज देखकर यह भाव मन में आता है कि वह समुद्र से लड़ने जानेवाली सेना हो। सेना में गज-दल हैं, अश्व-दल हैं। सेना चलती है तो बड़ा शोर होता है। उसमें सुन्दर ध्वजाएँ फहरती हैं। वह आकर शत्रु-दल के सामने डट जाती है। वैसे ही इस प्रवाह के साथ गज, और अन्य जानवर खिचकर आते हैं। शोर है, और लताएँ हैं जो ध्वजाओं का स्थान लेती हैं। (इस कॉडि शब्द में अर्थ-श्लेष है। कॉडि ध्वजा भी है, लता भी।) २३

❀इरवि तऩ्कुलत् तॅण्णिल्पल् वेन्दर्लम्, बुरवु नल्लॉऴुक् किऩ्पडि पूण्डदु
सरयु वॅऩ्बदु ताय्मुलै यऩ्ऩदिव्, उरवु नीर्निलत् तोङ्गु मुयिर्क्कॅलाम् 24

चरयु ॲऩ्पतु–सरयू नाम की वह; इरवि तऩ् कुलत्तु–रवि-कुल के; ऍण्इल्–संख्या-हीन; पल् वेन्तर् तम्–अनेक राजाओं के; पुरवु–पालित; नल् ऑऴुक्किऩ्–सदाचरण की; पटि पूण्टतु–अनुरूपता रखनेवाली है; अऩ्ऩतु–वह; इ उरवु नीर्

निलत्तु–इस समुद्र (वलयित) भूमि के; ओङ्कुम् उयिर्क्कु ऍलाम्–बढनेवाले जीव, सबों के लिए; ताय् मुलै अऩ्ऩतु–मातृ-स्तन के बराबर है । २४

सरयू का जल-तल विशाल है; उसकी धारा अविच्छिन्न है और पवित्र है। इन बातों में सरयू नदी रवि-कुल के राजाओं के सदाचरण की समता करती है। और वह जन-समाज के लिए मातृ-स्तन के समान जीवन-दायिनी और जीव-वर्धक है । २४

कॉडिच्चिय रिडित्त शुण्णङ् गुङ्गुमङ् गोट्ट मेलम्
नडुक्कुरु शान्दञ् जिन्दू रत्तॊडु नरन्द नाहम्
कडुक्कयार् वेङ्गै कोड्गु पच्चिलै कण्डिल् वॆण्णॆय्
अडुक्कलि ऩडुत्त तीन्दे ऩहिलॊडु नारु मऩ्ऱे 25

कॉटिच्चियर्–पर्वत प्रदेश की स्त्रियों का; इटित्त–कूटा; चुण्णम्–चूर्ण; कुङ्कुमम्–केसर; कोट्टम्–एक सुगन्धित द्रव्य; एलम्–इलायची; नटुक्कु उरु चान्तम्–कंपन देनेवाला चंदन; चिन्तूरत्तॊटु–सिंदूर के साथ; नरन्तम्–नरन्द (नामक घास); नाकम्–पुन्नाग; कटुक्कै–अमलतास; आर्–अगस्त्य; वेङ्कै–फूलदार वृक्ष-विशेष; कोङ्कु–सेमर; पच्चिलै–तमाल; कण्टिल् वॆण्णॆय्–कोई द्रव्य; अटुक्कलिऩ् अटुत्त–पर्वत के ढालों में मिलनेवाला; तीम् तेऩ्–मधुर शहद; नारुम्–सुगन्ध देंगे (या देगा) । २५

सरयू के प्रवाह में अनेक पर्वत-प्रदेशीय वस्तुएँ मिल गयी हैं; जैसे—कूटा चूर्ण, केसर, कोष्ट, चन्दन, सिन्दूर, नरन्द घास; पुन्नाग, अमलतास, अगस्त्य, वेंगै, सेमर आदि के फूल; और तमाल आदि। अतः उसमें से उनका सम्मिलित सुवास आता है। (यह कुरिंचि§ प्रदेश सम्बन्धी वर्णन है।) २५

ऍयिऩर्वाऴ् शीरू रप्पु मारियि ऩिरियल् पोक्कि
वयिऩ्वयि ऩॆयिऱ्ऱि मादर् वयिऱलैत् तोड वोट्टि
अयिऩ्मुहक् कणैयुम् विल्लुम् वारिक्कोण् डलैक्कु नीराल्
शॆयिर्दरुङ् गॊऱ्ऱ मऩ्ऩर् शेऩैये मानु मऩ्ऱे 26

ऍयित्तर् वाऴ्—(जहाँ) ऍयित्तर् जाति के लोग रहते हैं (उन); चीऱूर्—छोटी बस्तियों (के वासियों) को; अप्पु मारियिऩ्—जल के प्रवाह से; इरियल् पोक्कि—डरा, भगाकर; वयिऩ्-वयिऩ्—स्थान-स्थान पर; ऍयिऱ्ऱि मातर्–ऍयित्तर् की स्त्रियाँ; वयिऱु अलैत्तु ओट—पेट पीटते भागते; ओट्टि—भगाकर; अयिल् मुकम् कणैयुम्—तीक्ष्णमुखी-शरों को; विल्लुम्—धनुषों को; वारि कॊण्टु—समेट लेकर; अलैक्कुम् नीराल्—सताने के प्रकार से; चॆयिर् तरुम्–युद्ध करनेवाले; कॊऱ्ऱम् मऩ्ऩर्—विजयी राजाओं की; चेऩैयै मानुम्—सेना की उपमा बनेगा । २६

---

§ तमिऴ् काव्य-लक्षण-शास्त्र के अनुसार विविध प्रदेशों से सम्बन्धित वर्णन-परिपाटी आदि की किञ्चित् विशेष जानकारी के लिए अवतरणिका में देखें ।

यह प्रवाह मानों विजयी राजाओं की प्रबल सेना के समान है। उससे डरकर व्याध लोग अपनी बस्तियाँ छोड़ भाग जाते हैं। यत्र-तत्र व्याध-स्त्रियाँ, अपनी सम्पत्ति के नष्ट होने के कारण पेट पीटकर रोती हैं; व्याधों के अस्त्रों और धनुष प्रवाह में बहते हुए आते हैं। अतः इसके पास धनुष और शर हैं। और यह लोगों को त्रास देता है। सेना का वैसा ही काम है। (इसमें "पालै" यानी रेतीले, मरु प्रदेश से सम्बन्धित वर्णन है।) २६

शॅऱिनऱुन् दयिरुम् बालुम् वॅण्णॅयुञ् जेन्द नॅय्युम्
उऱियॉडु वारि युण्डु कुरुन्दॉडु मरुद मुन्दि
मऱिविऴि यायर् मादर् वळैतुहिल् कवरु नीराल्
पॉऱिवरि यरवि ऩाडुम् बुऩिदऩुम् बोऩ्ऱ दऩ्ऱे 27

चॅऱि–गाढा; नऱु तयिरुम्–सुगन्धित दही को और; पालुम्—दूध को और; चेन्त—लाल; नॅय्युम्—घी को और; उऱि योटु—छीकों के साथ; वारि उण्टु—उठाकर खाकर; कुरुन्तॉट्टु—'कुरुन्द' (वृक्ष-विशेष) के साथ; मरुतम् उन्ति—अर्जुन तरु को उखाड़ फेंक कर; मऱि विऴि—मृग-नयनी; आयर् मातर्—गोपांगनाओं के; वळै तुकिल्—कंकण और वस्त्र (को); कवरुम् नीराल्—हर लेने के गुण से; पॉऱि, वरि अरविऩ्—बिन्दियों और धारियों वाले सर्प पर; आटुम्—नाचनेवाले; पुऩिततुम् पोऩ्ऱतु—पवित्र (पुरुष) के समान भी था। २७

इस पद्य में सरयू नदी और कालिय-दमन श्रीकृष्णचन्द्र का श्लेष है। दही, दूध, मक्खन आदि छीकों के साथ हर लेना; तरुओं को उखाड़ना, गोपांगनाओं के कंकणों और चीरों का हरण —ये काम सरयू नदी भी करती है और श्रीकृष्ण भी। (इसमें अरण्य प्रदेश सम्बन्धी वर्णन है।) २७

कदविऩै मुट्टि मळ्ळर् कैयॅडुत् तार्प्प वोडि
नुदलणि योडै पॉङ्ग नुहर्वरि वण्डु किण्डत्
तदैमणि शिन्द वुन्दित् तऱियिऱ्त् तडक्कै शाय्त्तु
मदमऴै याऩै यॅऩ्ऩ मरुदञ्जॅऩ् ऱडैन्द दऩ्ऱे 28

कतविऩै मुट्टि—कपाटों को ठेल कर; मळ्ळर्—कृषक लोग या वीर; कै ॲटुत्तु आर्प्प—हाथ उठाकर शोर करें-ऐसा; नुतल् अणि ओटै पॉङ्क—(१) सामने रहनेवाले तालाबों को भरते, (२) माथे पर पहने मुख-पट्ट के शोभायमान होते; नुकर् वरिवण्टु—(शहद या मदनीर) चूसने आये भौंरों के कुरेदते; ततै मणि, चिन्त—श्लिष्ट रहनेवाले रत्नों को छितराते हुए; उन्ति—फेंक कर; तऱि इऱ—खूँटों को या करि-पोत को तुड़ाते हुए; तट कै चाय्त्तु—विशाल लहरों या हाथों से गिराकर; मतम् मऴै याऩै ॲऩ्ऩ—मद-नीर को वारिश के समान बहानेवाले गज के समान; मरुतम्—खेतों और बागों के देश में; अटैऩ्ततु—जा पहुँचा। २८

यह नदी बाँधों में लगे कपाटों को ठेलती है; कृषक लोग हाथ उठाकर आनन्द-रव करते हैं। नदी के मार्ग में उसके सामने आनेवाले

तालाब आदि भर जाते हैं। उस पर बहते आनेवाले फूलों को भौंरे कुरेदते हैं। नदी अपनी तरंगें जब उछालती है तब रत्न आदि बिखर जाते हैं; और किनारे पर गड़े खूँटे उखड़ जाते हैं। ठीक उसी प्रकार मत्त गज भी अपने कठघरे के कपाट को तोड़ देता और भागने लगता है तो वीर हाथ उठाकर (लोगों को सावधान करने के लिए) शोर करते हैं; हाथी के मुख-पट्ट हैं जो दीप्तिमान हैं; मद-नीर के लिए भौंरे उनके कपोलों को कुरेदते हैं। वे अपने शरीर पर पहनाये गये, झूल आदि से रत्नों आदि को छितरा देते हैं और अपने बाँधने के खूँटों को उखाड़ देते हैं। (नदी के सम्बन्ध में जो तालाब सूचक शब्द आया है उसका मुख पट्ट दूसरा अर्थ है। इस अर्थ को लेकर यह श्लेष सधा है।) २८

मुल्लयैक् कुऱिञ्जि याक्कि मरुदत्तै मुल्लै याक्किप्
पुल्लिय नॅय्द ऱन्नैप् पॉरुवरु मरुद माक्कि
ॲल्लयिल् पॉरुळ्ह ळॅल्ला मिडैतडु माऱु नीराल्
शॅल्लुऱु कदियिऱ् चॅल्लुम् विनैयॅनच् चेन्ऱ दन्ऱे 29

मुल्लैयै—अरण्य प्रदेश को; कुऱिञ्चि आक्कि—पर्वत-प्रदेश बनाकर; मरुतत्तै—खेतों और बागों के प्रदेश को; मुल्लै आक्कि—वन-प्रदेश बनाकर; पुल्लिय—अल्प (अनुर्वर); नॅय्तल् तन्नै—समुद्र-तटीय प्रदेश को; पॉरु अरु—उपमा रहित; मरुतम् आक्कि—खेतों का प्रदेश बनाकर; ॲल्लै इल् पॉरुळ्कळ्—सीमा रहित (असंख्य) वस्तुएँ; ॲल्लाम्—सब; इटै तटुमाऱुम् नीराल्—स्थानांतरित हो जाने के धर्म से; चॅल् उऱु कतियिल् चॅल्लुम्—जाकर जन्म लेने की कर्मगति में साथ चलनेवाले; विनै ॲन—(पाप और पुण्य के) कर्मों के समान; चॅन्ऱतु—गया। (अन्ऱु ए—पूरक ध्वनियाँ)। २९

नदी अपनी गति में एक प्रदेश की वस्तुओं को दूसरे प्रदेश में लाकर छोड़ती हैं। तब प्रदेशों की प्रकृति बदल गयी हो ऐसा लगता है। वस्तुओं का स्थानान्तरण करती हुई जानेवाली नदी की गति कर्म-गति के समान है जिसके कारण जीव विविध योनियों में अटूट क्रम से जन्म लेते हैं और वहाँ भी कर्म के अनुसार ही पाप या पुण्य करते हैं। ये योनियाँ चार प्रकार की हैं— उद्भिज, स्वेदज, अण्डज और पिण्डज— चतुर्विध हैं। भूभाग के सम्बन्ध में भी चार तरह की भूमि की ही गणना है। २९

कोत्तकाऩ् मळ्ळर् वॅळ्ळक् कलिप्पऱै करड्गक् कैपोय्च्
चेत्तनीर्त् तिवलै पॉन्नु मुत्तमुन् दिरैयिऩ् वीशि
नीत्तमाऩ् ऱलैय वाहि निमिर्न्दुपार् किऴिय नीण्डु
कोत्तका लॉन्ऱि नॉन्ऱु कुलमॅनप् पिरिन्द् मादो 30

कोत्त काल्—(सरयू से) मिले नहर-नाले; नीत्तम् मिक्कु—जल बढ़कर; अलैय आकि—तरंगशील बनकर; पार् किऴिय—भूमि का तल चिर जाय-ऐसा;

निमिर्न्तु नीण्टु—फैलकर, (बढ़कर); काल् कात्त मळ्ळर्—नाले की रखवाली करनेवाले कृषकों के; वॅळ्ळम् कलि पऱै करङ्क—बाढ़ (-सूचक और उच्चनादवाले) पऱै (एक तरह का ढोल) के बजते; कै पोय्—नालियों को पार कर जाकर; चेत्त नीर् तिवलै—लाल (मिट्टी के रंग की) जल (बिन्दुओं) को; पॉऩ्ऩुम् मुत्तमुम्—स्वर्ण और मोतियों को; तिरॅयिऩ् वीचि कुलम् ॲऩ—(मानव-) कुलों के समान; ऑऩ्ऱिऩ् ओऩ्ऱु पिरिन्त—एक से एक-(ऐसा) निकल कर विभक्त हुए। ३०

सरयू नदी से निकलनेवाले नहर-नालों में भी जल अधिक बढ़ जाता है। उनमें तरंगें उठने लगती हैं। जल ऐसा सवेग मानों भूमि को चीरकर बहता है। नालों की रखवाली करनेवाले कृषक ढोल पीटकर सूचना देते हैं कि नयी बाढ़ आ गयी। तरंगों से जल-कण ही नहीं, स्वर्ण और मोती भी बिखरते हैं। फिर सरयू नदी का सैकड़ों नहर-नालों में विभक्त होना एक मानव-कुल के हज़ारों (उप) कुलों में बँट जाने के समान है। ३०

**कल्लिडैप् पिऱन्दु पोन्दु कडलिडैक् कलन्द नीत्तम्
ॲल्लयिऩ् मऱैह ळालु मियंबरुम् बॉरुळि दॅऩ्ऩत्
तॉल्लयि ऩॉऩ्ऱे याहित् तुऱैतॉऱुम् बरन्द शूऴ्च्चिप्
पल्पॅरुञ् जमयञ् जॉल्लुम् बॉरुळुम्पोऱ् परन्द दऩ्ऱे 31**

कल् इटै—पत्थर के मध्य; पिऱन्तु—पैदा होकर; पोऩ्तु—जाकर, बहकर; कटल् इटै—समुद्र मध्य; कलन्त नीत्तम्—[जो जा] मिला वह प्रवाह; ॲल्लै इल् मऱैकळालुम्—अंत रहित वेदों द्वारा भी; इयम्प अरु पॉरुळ् इतु ॲऩ्ऩ—कहने के लिए कठिन वस्तु (अप्रतिपाद्य तत्व) यह ऐसा कहने योग्य; तॉल्लैयिल्—आदि में; ऑऩ्ऱे आकि—एक मात्र रहकर; तुऱै तॉऱुम्—अनेक घाटों में; परन्त चूऴ्च्चि—विशाल खोज (कर चुके जो); पल्पॅरु चमयम्—विविध धर्म (जो) बतलाते हैं; पॉरुळ् पोल्—(उस) तत्व के समान; परन्ततु—(विभक्त हो) फैल गया। ३१

यह नदी पर्वत में उद्भव पाती है; समुद्र में जाकर लय होनेवाली यह उपनदियों, नहरों नालों में बँट जाती है। वह ईश्वर-तत्व के समान है जो पहले एक ही है पर बाद में विविध धर्मों के देवताओं के रूप में अनेक हो गया। ३१

**तादुहु शोलै तोऱुञ् जण्बहक् काडु तोऱुम्
पोदविऴ् पॉय्है तोऱुम् पुदुमणऱ् ऱडङ्ग डोऱुम्
मादवि वेलिप् पूह वऩन्दॉऱुम् वयल्ह डोऱुम्
ओदिय वुडम्बु तोऱु मुयिरॅऩ वुलाय दऩ्ऱे 32**

ओतिय—(शास्त्र) उक्त; उटम्पु तोऱुम्—शरीर-शरीर में; उयिर् ॲऩ—जीव के समान; तातु उकु चोलै तोऱुम्—पराग चनेवाले बाग-बाग में; चण्पकम् काट तोऱुम्—(सभी) चंपा वनों में; पोतु—कलियाँ; अविऴ्—(जहाँ) खिलती

हैं; पॉय्कै तोऱुम्—जलाशयों में; पुतु मणल् तटङ्कळ तोऱुम्—नये (रूप से) बालू भरे पोखरों में; मातवि वेलि—माधवी लता से घिरे; पूकम् वऩम् तोऱुम्—सुपारी के वनों में; वयल्कळ् तोऱुम्—खेतों में; उलायतु—व्याप्त हुआ। ३२

सरयू-जल शास्त्र-निर्दिष्ट चारों प्रकार के शरीर-शरीर में व्याप्त जीव के समान सब जगह फैलकर प्रवेश करता है और व्याप्त रहता है। क्या उपवन, जहाँ पराग छूते हैं; क्या जलाशय जहाँ कलियाँ खिलती हैं; सुपारी के वन हैं जिसकी चहारदीवारी मालती-लतायें हैं। सब जगह वह जल अन्तर्व्याप्त है। ३२

आऱ्ऱुप् पडलम् मुऱ्ऱुम् (नदी पटल समाप्त)

2 नाट्टुप् पडलम् (देश पटल)

वाङ्गरुम् बाद नाऩ्गुम् वहुत्तवाऩ् मीकि ऑऩ्बाऩ्
तीङ्गवि शॅविह ळारत् तवरुम् बरुहच् चेय्दाऩ्
आङ्गवऩ् पुहऴ्न्द नाट्टै यऩ्बॅऩु नऱव मान्दि
मूङ्गैयाऩ् पेश लुऱ्ऱा ऩॅऩ्ऩयाऩ् मॉऴिय लुऱ्ऱेऩ् 33

वाङ्कु—प्राप्त; अरु—अपूर्व; पातम्—चरण; नाऩ्कुम् वकुत्त—चार-चार के विविध वृत्त (छंद) जिन्होंने आविष्कार किये; वाऩ्मीकि ॲऩ्पाऩ्—वाल्मीकी नाम के (मुनि); तेवरुम् चॅविकळ् आर परुक—देव भी कान भर सुनें—यह साध्य करते हुए; तीम् कवि चॅय्ताऩ्—मधुर काव्य बनाया; आङ्कु—उसमें; अवऩ् पुकऴ्न्त नाट्टै—जिसकी प्रशंसा की उस देश को; याऩ्—मैं; अऩ्पु ॲऩुम् नऱवम् मान्ति—प्रेम नाम की सुरा पान कर; मूङ्कैयाऩ् पेचल् उऱ्ऱाऩ् ॲऩ्ऩ—गूँगा बोलने लगा ऐसा; मॉऴियऩ् उऱ्ऱेऩ्—कहना आरम्भ किया (है)। ३३

कवि अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। यह बड़ों की विनयशीलता है। भगवान वाल्मीकि ने ही पहले पहल चार-चार चरण के श्लोकों का चलन चलाया। उन्हें रामायण की कथा स्वयं ब्रह्मा जी के मुख से मिली थी। उनका काव्य स्वयं देवों के लिए भी आस्वाद्य बना। उनके द्वारा प्रशंसित कोसल देश का वर्णन करने का बीड़ा दीन-हीन मैंने उठाया है। यह दुस्तर प्रयास ऐसा है जैसा कि एक गूंगा अपने भावों को दूसरे को बोली द्वारा समझाने लगे; तो भी, प्रेम की मैंने सुरा पी है। नशे के आलम में कोई कुछ भी कर बैठता है! । ३३

वरम्बॅला मुत्तन् दत्तु मडैयॅलाम् बणिल मानीर्क्
कुरम्बॅलाञ् जॅम्बॊऩ् मेदिक् कुऴियॅलाङ् गळुनीर्क् कॊळ्ळै
परम्बॅलाम् पवळञ् जालिप् परप्पॅला मऩ्ऩम् पाङ्गर्क्
करम्बॅलाञ् जॅन्देऩ् शन्दक् कावॅलाङ् गळिवण् डीट्टम् 34

तऱ्‌तु—(जल जहाँ) उछलता आता है; मटै—नालियाँ; अॅल्लाम्—सभी (में); पणिलम्—शंख; वरम्पु—मेड़; अॅल्लाम्—सभी में; मुत्‌तम्—मुक्ता; मा नीर् कुरम्पु अॅल्लाम्—बहुत जल (रोकने-) वाले बांधों में; चॅम्पॊऩ्—चोखा सोना; मेति—भैंसों के; कुऴि अॅल्लाम्—गड्ढों में; कऴुनीर् कॊऴ्ळै—कुमुदों की (लूट) भरमार; परम्पु अॅल्लाम्—(खेत के) पटे तल में सब; पवळम्—प्रवाल; चालि परप्पु अॅलाम्—धान के विस्तार-सब-में; पाङ्कर्—पास के; करम्पु—खाली स्थानों; अॅल्लाम्—सब (में); चॅम् तेऩ्—अच्छा शहद; चन्‌तम् का—सुन्दर बाग; अॅल्लाम्-सब में; कळि वण्टु ईट्टम्—मुदित भौंरों का जमघट । ३४

कोसल देश के खेती-प्रदेशों की समृद्धता देखिये— नालियों में शंख; मेड़ों पर मोती; बाँधों में सोने के ढेले; भैंसे जहाँ पैठती हैं उन पंकिल गड्ढों में कुमुद के फूलों की भरमार; खेतों में पाटा चलता है, वहाँ प्रवाल निकलते हैं; धान के खेतों में पौधों के बीच हंस ठहरे हैं; खेतों के पास भीटों पर शहद मिलता है। बागों में फूल अपार हैं और भौंरे शहद पीकर मत्त रहते हैं। ३४

आऱुपा यरव मळ्ळ रालैपा यमलै यालैच्
चाऱुपा योशै वेलैच् चङ्गिऩ्वाय्प् पॊङ्गु मोदै
एऱुपाय् दमर नीरि लॅरुमैपाय् तुऴऩि यिऩ्ऩ
माऱुमा ऱाहित् तम्मिऩ् मयङ्गुमा मरुद वेलि 35

मा मरुतम् वेलि—विशाल खेत, प्रदेश की सीमाओं पर; आऱु पाय् अरवम्—नदी के बहने का रव; मळ्ळर्—कृषक; आलै पाय् अमलै—(इक्षु-रस निकालनेवाले) कोल्हू चलने का शोर; आलै चाऱु पाय् अमलै—कोल्हू से रस के बहने की ध्वनि; वेलै—किनारों पर; चङ्किऩ् वाय् पॊङ्कुम् ओतै—शंख-कीटों से बहती आनेवाली ध्वनि; एऱु पाय् तमरम्—बैलों के भिड़ने से उठता नाद; नीरिल्—जल में; अॅरुमै पाय् तुऴऩि—भैंसें पैठने की आवाज़; इऩ्ऩ—ऐसे अन्य; माऱु माऱु आकि—अलग और विपरीत होकर; तम्मिल् मयङ्कुम्—आपस में लय होते हैं। ३५

वहाँ उस प्रदेश की सीमाओं पर कितनी तरह के समृद्धि-सूचक शोर पाये जाते हैं ! ऐसे शोर का 'धूम' का अर्थ भी निकल सकता है ! नदी बहती है— उसका; कृषक गन्ने जिससे पेरते हैं—उन यन्त्रों का; गन्ने का रस नदी के समान बहता है— उसका; खेतों, और जलाशयों के किनारों पर शंख-कीट जो पड़े रहते हैं—उनका; बैल आपस में जो लड़ते हैं— उसका; पानी में भैंसें सवेग जो घुसती हैं —उसका और कितने ही अन्य नाद आपस में मिल जाते हैं। इस पद्य में ६ शब्द हैं जो 'शोर' के पर्यायवाची हैं। ३५

तण्डलै मयिल्ह ळाडत् तामरै विळक्कन् दाङ्गक्
कॊण्डल्हण् मुऴवि ऩेङ्गक् कुवळैकण् विऴित्तु नोक्कत्
तॆण्डिरै एऴिऩि काट्टत् तेम्बिऴि महर याऴिऩ्
वण्डुह ळिऩिदु पाड मरुदम् वीऱ् ऱिरुक्कु मादो 36

तण्टलै—बागों में; मयिल्कळ् आट—मोर नाचते; तामरै—कमल; विळक्कम् ताङ्क—(पुष्परूपी) दीपक उठाते; कॉण्टल्कळ्—मेघ; मुऴविन् एङ्क—मृदंग के समान ध्वनि करते; कुवळै—नीलोत्पल; कण् विऴित्तु नोक्क—आँखें खोलकर देखते; तॅण् तिरै—साफ जल की तरंगें; ऍऴित्ति काट्ट—पर्दे का दृश्य उपस्थित करते; वण्टुकळ्—भौंरें; तेम् पिऴि मकर याऴिन्—मधुर शहद सम मकर-याऴ्—(नाम की वीणा का सा) गीत सुनाते; मरुतम्—खेतों का भूभाग; वीऱ्ऱु इरुक्कुम्—(राजा) विराज रहा होता है। ३६

खेतों का प्रदेश मानों राजा है जो दरबार में विराजमान है। उस सभा में मोर नाचते हैं; कमल के दीप रहते हैं; मेघ मृदंग बजाते हैं; नीलोत्पल दर्शक हैं— अपनी आँखें खोल देख रहे हैं; जलाशय की तरंगें यवनिका का काम दे रही हैं; भौंरे संगीत सुना रहे हैं। कितना सुहावना दृश्य है जो आँखों, श्रवणों और मन को लुभा रहा है। ३६

तामरैप् पडुव वण्डुन् दहैवरु तिरुवुन् दण्डार्क्
कामुहर्प् पडुव मादर् कण्गळुङ् गाम ऩम्बुम्
मामुहिऱ्प् पडुव वारिप् पवळमुम् वयङ्गु मुत्तुम्
नामुदऱ् पडुव मॅय्यु नामनूऱ् पॉरुळु मऩ्ऩो 37

तामरै—कमलों (के पुष्पों) पर; पटुव—वास करते हैं; वण्टुम्—भौंरे (और); तकै वरु तिरुवुम्—श्रीमती लक्ष्मी देवी; तण् तार् कामुकर्—शीतल माला (पहने हुए) कामुकों पर; पटुव—लगने (चुभने) वाले हैं; मातर् कण्कळुम् कामऩ् अम्पुम्—स्त्रियों की आँखें और मन्मथ के शर; मा मुकिल् पटुव—अधिक मेघों से (वारिश से) पैदा होनेवाले हैं; वारि पवळमुम् वयङ्कुम् मुत्तुम्—समुद्र के प्रवाल और बहुमूल्य मोती; ना मुतल् पटुव—(मनुष्यों की) जीभों पर बैठे हैं; मॅय्युम्—सत्य (वाणी) और; नामम् नूऱ् पॉरुळुम्—श्रेष्ट ग्रंथों के विषय। (मन् ओ—पूरक ध्वनियाँ।) ३७

कोसल देश मनोरम है और सर्व-समृद्ध थी। कमल-पुष्प श्रीलक्ष्मीदेवी का वासस्थान है। वे दौलत की देवी हैं। कोशल देश में कमल-पुष्पों की भरमार है। उन पर स्थूल-आँखों से भौंरे देखे जाते हैं। सूक्ष्म रूप से विचार करने पर सम्पत्ति की देवी का वास समझा जा सकता है। अतः कहा गया कि कमल-पुष्पों पर भौंरे और श्री दोनों पाये जाते हैं। यों तो इस छन्द में 'पटुव' शब्द के प्रयोग-वैविध्य का चमत्कार है। अतः कामुकों की बात उठायी गयी है। कामुकों ही पर (वेश्या) स्त्रियों की दृष्टि और कामदेव के शर लगते हैं। प्रचुर वर्षा के कारण समुद्र में से मूँगे और मोती खूब मिलते हैं। वहाँ के निवासी बोलते हैं तो सत्य और ग्रन्थ के विषय ही। ३७

नीरिडै युऱङ्गुञ् जङ्ग निऴलिडै युऱङ्गु मेदि
तारिडै युऱङ्गुम् वण्डु तामरै युऱङ्गुञ् जॅय्याळ

तूरिडै युऱङ्गु मामै तुऱैयिडै युऱङ्गु मिप्पि
पोरिडै युऱङ्गु मऩ्ऩम् पॉऴिलिडै युऱङ्गुन् दोहै 38

चङ्कम्—शंख-कीट; नीर् इटै उऱङ्कुम्—जलाशयों में आराम से रहते हैं; मेति—भैंसें; निऴल् इटै उऱङ्कुम्—छाँहों पर सोती हैं; वण्टु तार् इटै उऱङ्कुम्—भौंरे (फूलों के) गुच्छों पर; उऱङ्कुम्—ठहरे रहते हैं; चॆय्याळ्—श्री लक्ष्मी देवी; तामरै उऱङ्कुम्—कमल पर विराजमान रहती हैं; आमै—कछुए; तूऱ् इटै—तलौंछ-मध्य टिके रहते हैं; इप्पि तुऱै इटै उऱङ्कुम्—सीपियाँ घाटों पर पड़ी रहती हैं; अऩ्ऩम्—हंस; पोर् इटै—(खरहियों) धान के ढेरों पर; उऱङ्कुम्—विश्राम करते हैं; तोकै पॊऴिल् इटै उऱङ्कुम्—कलापी (मोर) उपवनों में आराम करते हैं। ३८

जलाशयों में शंख; छाँहों में भैंसें; फूलों के गुच्छों में भौंरे; कमल पर समृद्धि की देवी श्री लक्ष्मी; तलौंछ या कीचड़ में कछुए; घाटों पर सीपियाँ; धान के ढेरों पर हंस, बागों पर ढोर देखे जाते हैं। इसमें 'उरङ्कुम' शब्द का यह सामर्थ्य है कि इतना सब बताने के बाद वह समृद्धि की भी सूचना देता है। ३८

पडैयुऴ वॆऴुन्द पॊऩ्ऩुम् पणिलङ्ग ळुयिर्त्त मुत्तुम्
इडऱिय परम्बिऩ् कान्दु मिऩ्मणित् तॊहैयु नॆल्लिऩ्
मिडैपशुङ् गदिरु मीऩु मॆऩ्ऱऴैक करुम्बुम् वण्डुम्
कडैशियर् मुहमुम् बोदुङ् गण्मलर्न् दॊळिरु मादो 39

पटै उऴ—हल (के फाल) के जोतने से; ऍऴुन्त—निकला; पॊऩ्ऩुम्—स्वर्ण; पणिलङ्कळ्—शंख; उयिर्त्त—जो पैदा किया वह; मुत्तु—मोती; उम्—और; परम्पिऩ् इटऱिय—पाटे द्वारा फेंके गये; कान्तुम्—उज्ज्वल; इऩम् मणि—विविध रत्नों की; तॊकैयुम्—राशि और; नॆल्लिऩ् मिटै पचुमै कतिरुम्—धान (के दानों) की भरी सुनहली बालें; मॆल् तऴै करुम्पुम्—कोमल पत्तों वाले गन्ने; मीऩुम्—मछलियाँ और; वण्टुकळुम्—भ्रमर और; पोतुम्—फूल और; कटैचियर् मुकमुम्—(कृषि)-श्रमिक स्त्रियों के मुख; कण् मलर्न्तु ऑळिरुम्—(प्रसंगानुसार) शोभायमान हैं, आँखों को आकृष्ट करते हैं, आँखों के समान सुन्दर हैं, या आँखें सुन्दर रूप से खोले रहते हैं। ३९

किसान हल जोतते हैं तो सोना प्रकट हो आता है; शंख मोती देते हैं; पाटे के मार्ग से उज्ज्वल रत्न निकलते हैं; धान की बालें; कोमल पत्तों के ईख; मछलियाँ, भौंरे, फूल और खेत की मज़दूरिनों के मुख— ये सब मनोरम हैं। ('आँखें खोलकर शोभा देते हैं' इस वाक्यांश के शब्दों की अर्थ-विशेषता द्वारा यह एक वाक्यांश सभी वस्तुओं के लिए प्रयुक्त हो सका है।) ३९

तॆऴ्विळिच् चिऱियाऴ्प् पाणर् तेम्बिऴि नऱव मान्दि
वळ्विशि करुवि पम्ब वयिऩ्वयिऩ् वऴङ्गु पाडल्

वॅळ्ळिवॅण् माडत् तुम्बर् वॅयिल्विरि पशुम्पॊऩ् पळ्ळि
ॲळ्ळरुङ् गरुङ्कट् टोहै यिऩ्ऱुयि लॅळुप्पु मऩ्ऱे 40

तॅळ् विळि—स्पष्ट स्वरित; चिऱि याळ् पाणर्—छोटी वीणा के रखनेवाले (पाण जाति के) गवैये; तेम् पिळि नऱवम् माऩ्ति—शहद से मिश्रित ताड़ी (सुरा) पीकर; वळ् विचि करुवि पम्प—फीतों से कसे बाजे के (यानी मृदंग के) बजते; वयिऩ् वयिऩ्—स्थान-स्थान पर; वळङ्कु पाटल्—गाये जानेवाले गाने; वॅळ्ळि वॅण् माटत्तु—चाँदी (सम) श्वेत सौधों के; उम्पर्—ऊपरी भागों पर; वॅयिल् विरि—कांति बिखेरनेवाले; पचुम् पॊऩ् पळ्ळि—चोखे स्वर्ण से बने पलंग (पर); ॲळ् अरु—अनिन्द्य; करुमै कण्—काली आँख (वाली); तोकै—कलापिनियों (मोर सम स्त्रियों) को; इऩ् तुयिल् ॲळुप्पुम्—मीठी नींद से जगा देते हैं। ४०

पाणर् (भाट की तरह एक जाति के गवैये) याळ् (वीणा) बजाते हुए गाते हैं। वे शहद मिली सुरा पी चुके हैं— अतः मस्त हो गाते हैं। उनके साथ मृदंग बजानेवाले हैं। वे स्थान-स्थान पर जाकर गाते हैं। उनका गाना सौधों के ऊपर, स्वर्णमय पलंग पर सोनेवाली सुन्दर, (संभ्रांत) स्त्रियों को जगा देता है। ४०

आलैवाय्क् करुम्बिऩ् ऱेऩु मरिदलैप् पाळैत् तेऩुम्
शोलैवाय्क् कऩियिऩ् ऱेऩुन् दॊंडैयिऴि यिऱालिऩ् ऱेऩुम्
मालैवा युहुत्त तेऩुम् वरम्बिहऩ् दोडि वङ्ग
वेलैवाय् मडुप्प वुण्डु मीऩॅलाङ् गळिक्कु मादो 41

आलै वाय्–(गन्ने के) कोल्हुओं के स्थानों में (मिलनेवाले); करुम्पिऩ् तेऩुम्–रसरूपी शहद; अरि तलै पाळै तेऩुम्–(नारियल, ताड़ आदि पेड़ों के) कटे डंठलों से निकलनेवाले ताड़ीरूपी शहद; चौलै वाय्–बागों में (प्राप्त होनेवाले); कऩियिऩ् तेऩुम्–फल-रस रूपी शहद; तॊंटै इऴि इरालिऩ् तेऩुम्–छत्तों से बहनेवाला शहद; मालै वाय्–(स्त्री-पुरुषों की पहनी हुई) मालाओं से चूनेवाला शहद; वरम्पु इकन्तु ओटि–सीमा तोड़ कर (अत्यधिक परिमाण में) बहकर; वङ्कम् वेलै वाय्–पोतोंवाले समुद्र में; मटुप्प–जा पहुँचता है (तब); मीऩ् ॲल्लाम्–मछलियाँ सब; उण्टु कळिक्कुम्—पीकर (खाकर) मस्त होते हैं। (तेऩ् शब्द का 'मधुर रस' अर्थ लिया गया है और वह सब जगह प्रयुक्त हुआ है।) ४१

कोल्हुओं से निकलनेवाला इक्षु-रस; ताड आदि पेड़ों के कटे डंठलों से बहनेवाला वृक्ष-रस; बागों में पेड़ों के फलों से निकलनेवाला फल-रस; मधु-छत्तों से बहनेवाला मधु-रस; स्त्री-पुरुषों की पहनी पुष्प-मालाओं से टपकनेवाला पुष्प-रस, ये सब मिलकर बड़ी धार बन जाते हैं। वह धार बहकर समुद्र में मिल जाती है। समुद्र में अनेक पोत आते-जाते रहते हैं। समुद्र में रहनेवाली मछलियाँ उस रस को पीकर मस्त रहती हैं। ४१

पण्गळ्वाय् मिऴऱ्ऱु मिऩ्शॊऱ् कडैशियर् परन्दु नीण्ड
कण्कैकाल् मुहम्वा यॊक्कुङ् गळैयलाऱ् कलैयि लामै

उण्कळ्वार् कडैवाय् मळ्ळर् कळैहला दुलोवि निऱ्पार्
पॅण्कळ्पाल् वैत्त नेयम् बिऴैप्परो शिऱियोर् पॅऱ्ऱाल् 42

वाय्–मुख से; **पण्कळ् मिऴऱ्ऱुम्**–धुन गुनगुनाती; **इऩ् चॉल्**–मधुर वाणी; **कटैचियर्**–कृषक स्त्रियों की; **परऩ्तु नीण्ट कण्**–विशाल, आयत आँखें,; **कै काल् मुकम् वाय्**–हाथ, पैर, आनन, और मुख; **ऑक्कुम्**–के समान रहनेवाले; **कळै अलाल्**–व्यर्थ-पौधों के सिवा; **कळै इलामै**–दूसरे व्यर्थ पौधों के न रहने से (यानीः हर पौधा स्त्रियों के किसी न किसी अंग की याद दिलाता है); **उण्**–पी हुई; **कळ् वार्**–ताड़ी (जिससे) बाहर स्रवती है वैसे; **कटै वाय् मळ्ळर**–मुख (के कोने) वाले कृषक; **कळै कलातु**–निराने का (उन पौधों को हटाने का) काम दंद कर; **उलोवि निऱ्पर्**–(उन पर) आसक्त हो खड़े रहते हैं; **पॅणकळ् पाल् वैत्त नेयम्**–स्त्रियों पर रक्खे प्रेम को; **पॅऱ्ऱाल्**–(स्मरण में) प्राप्त करने पर; **पिऴैप्परो**–छूट सकते हैं क्या ? ४२

कृषक लोग खेत निराने जाते हैं। उनके मुख के कोने से ताड़ी स्रवती है; मतलब यह है कि खूब पिये हुए हैं। खेत में जल-पौधे हैं और फूल आदि। ये भ्रांत कृषक उनमें मधुरवाणी अपनी प्रियाओं की विशाल और दीर्घ आँखें, हाथ, पैर, आनन और मुख को देखते हैं, तो उनका मन नहीं होता कि इनको अलग कर दें। वे अपना काम नहीं करते क्योंकि उनका मन स्त्री-प्रेम के स्मरण में अटक गया है। नीच जाती के लोग हैं, अनपढ़ हैं। अतः स्त्री के स्मरण से उद्दीप्त प्रेम के मोह से छूट नहीं पाते ! । ४२

पुदुप्पुऩल् कुडैयु मादर् पूवॉडु नावि पूत्त
कदुप्पुऱु वॅऱिये नाऱुङ् गरुङ्गडऱ् ऱरङ्ग मॅऩ्ऱाल्
मदुप्पॉदि मऴलैच् चॅव्वाय् वाट्कडैक् कण्णिऩ् मैन्दर्
विदुप्पुऱ् नोक्कु मिऩ्ऩार् मिहुदियै विळम्ब लामो 43

करु कटल् तरङ्कम्–नीले समुद्र की तरंगें; **पुतु पुऩल् कुटैयुम् मातर्**–नयी बाढ़ (के जल में) स्नान करनेवाली स्त्रियों के; **पूवॉटु नावि पूत्त**–फूलों के साथ कस्तूरी-लेप-मिली; **कतुप्पु उऱु**–(और) केशों में लगी; **वॅऱिये नाऱुम्**–सुगंधि देती हैं; **ॲऩ्ऱाल्**–यह कहा जाय तो; **वाळ् कटै कण्णिऩ्**–तलवार के समान तीक्ष्ण आँखों के कोर से; **मैन्तर् वितुप्पु उऱ**–जवान प्रेमासक्त हों ऐसा; **नोक्कुम्**–देखनेवाली; **मतु पॉति मऴलै**–शहद के समान मधुर अस्पष्टता के साथ बोलनेवाली; **चॅव्वाय्**–लाल अधरोंवाली; **मिऩ्ऩार्**–विद्युल्लता सी स्त्रियों की; **मिकुतियै विळम्पल् आमो**–अधिकता कहना हो सकता है क्या ? ४३

सरयू की नयी बाढ़ के जल में स्त्रियाँ स्नान करती हैं। उनके केशों में लगे फूलों और कस्तूरी के लेप की सुगन्धि को नदी का जल ले जाकर समुद्र में पहुँचा देता है और समुद्र की लहरें तक सम्पूर्ण रूप से इस बास से सुवासित हो जाती हैं। तब कोशल देश की स्त्रियों की संख्या की गणना क्या हो सकती है ! यही नहीं; उनकी सुन्दरता भी कितनी ! आँखें तलवार के समान तीक्ष्ण हैं। अपनी आँखों के कोर से भी देखती हैं तो पुरुष

निहाल हो जाता है। उनके अधर लाल हैं और उनकी तोतली बोली भी मधु-सम मीठी है। ४३

वॆण्डळक् कलवैच् चेऱुङ् गुङ्गुम विरैमॆऩ् शाऩ्दुम्
कुण्डलक् कोल मैन्दर् कुडैन्दनीर्क् कोळ्ळै शाऱ्ऱिल्
तण्डलैप् परप्पुञ् जालि वेलियुन् दळीइय वैप्पुम्
वण्डलिट् टोड मण्णु मदुहर मॊय्क्कु मादो 44

चाऱ्ऱिल्–कहें तो; कुण्टलम् कोलम् मैन्तर्–(कर्ण-) कुंडल पहने हुए सुन्दर तरुण लोग; कुटैन्त–जहाँ गोते लगाकर स्नान किये (वहाँ के); नीर् कॊळ्ळै–जल का प्रवाह; वॆण्मै तळम् कलवै चेऱुम्–सफेद चंदन के लेप को और; कुङ्कुमम् विरै मॆल् चान्तुम्–केसर के गंध-मिले लाल चंदन-लेप को (घोल कर ले जाते हुए); तण्टलै परप्पुम्–बागों के विस्तार (विस्तृत भूतल) में; चालि वेलियुम्–धान के खेतों में; तळीइय वैप्पुम्–पास के ऊँचे स्थलों में; वण्टल् इट्टु ओट–तलौंछ छोड़ता हुआ बहता है-अतः; मण्णुम्–मट्टी पर; मतुकरम् मॊय्क्कुम्–मधुकर मंडराते हैं। ४४

कुण्डलधारी तरुण लोग खूब मज्जन करते हैं तो उनके शरीरों में लिप्त चन्दन आदि जल में घुल-मिल जाते हैं। नदी उसको बहा ले जाती है और वह बागों में, खेतों में और कुछ ऊँची भूमि पर, सब जगह तलौंछ रूप में जम जाती है। उसकी गन्ध से आकृष्ट हो भौंरे सभी जगह मिट्टी पर मँडराते हैं। ४४

शेलुण्ड वॊण्ग णारिऱ् ऱिरिहिऩ्र शङ्गा लऩ्ऩम्
मालुण्ड नळिऩप् पळ्ळि वळर्त्तिय मऴलैप् पिळ्ळै
कालुण्ड शेऱ्ऱु मेदि कऩ्ऱुळ्ळिक् कऩैप्पच् चोर्न्द
पालुण्डु तुयिलप् पच्चैत् तेरैता लाट्टुम् पण्णै 45

पण्णै–खेतों में; चेल् उण्ट–चेल् (नामक मछलियों) के समान रहनेवाली; ऑळ् कण्णारिऩ्–कांति भरी आँखोंवालियों के समान; तिरिकिऩ्ऱ्–चलने-फिरनेवाले; चॆम् काल् अऩ्ऩम्–लाल पैरोंवाले हंस; माल् उण्ट–गौरवयुक्त; नळिऩम् पळ्ळि–कमल-पुष्प की शय्या पर; वळर्त्तिय–जिनको सुला चुके हैं उन्; मऴलै पिळ्ळै–बाल हंस; काल् उण्ट–पैरों पर लिप्त; चेऱु मेति–पंकवाली भैंस; कऩ्ऱु उळ्ळि–बछड़े का स्मरण कर; कऩैप्प–जब आवाज़ लगाती है (डींकती है); चोर्न्त–जो स्रवता; पाल्–दूध; उण्टु–पीकर; तुयिल–सुलाते हुए; पच्चै तेरै–हरे (रंग के) दादुर; तालाट्टुम्–लोरी गाते हैं। ४५

खेतों में मीनाक्षी स्त्रियों के समान हंस संचार कर रहे हैं। वे अपने बच्चों को कमल-पत्र या पुष्पों पर सोने के लिए छोड़ गये हैं। वहाँ भैंसें अपने सावकों को याद करती हैं और आवाज़ देती हैं, तब उनके थन से खुद-ब-खुद दूध बहने लगता है। उस दूध को ये बाल-हंस पीते हैं। तब हरे रंग के दादुर बोलते हैं और ये हंस सो जाते हैं। दादुर का बोलना इनके लिए लोरी का काम देता है! । ४५

कुयिलिऩम् वदुवै शॅय्यक् कॊम्बिडैक् कुऩिक्कु मञ्ञै
अयिल्विऴि महळि राडु मरंगिऩुक् कऴहु शॅय्यप्
पयिल्शिऱै यरश वऩ्ऩम् पऩ्मलर्प् पळ्ळि निऩ्ऱुम्
तुयिलॅऴत् तुम्बि कालैच् शॅव्वऴि मुरल्व शॊलै 46

चोलै–बागों में; कुयिलिऩम्–पिक के जोड़े; वतुवै चेय्य–विवाह करते (तब); कॊम्पु इटै–डालियों पर; कुऩिक्कुम् मञ्ञै–(रहकर) नाचनेवाले मोर; अयिल् विऴि मकळिर्–तीक्ष्ण बर्छी सम आँखवाली नर्त्तकियों के; आटुम् अरङ्किऩुक्कु–नृत्य-मंच से भी बढ़कर; अऴकु तर–शोभा दिलाते; पयिल् चिऱै–घने पंखोंवाला; अरच अऩ्ऩम्–राज-हंस को; पऩ् मलर् पळ्ळि तुयिल् निऩ्ऱु ऍऴ–(श्रेष्ठ-)कथित कमल-पुष्प-शय्या पर नींद से जगाते हुए; तुम्पि–भ्रमर; कालै चेव्वऴि मुरल्व–प्रातःकालीन राग गाते हैं। ४६

दो विनोदपूर्ण दृश्य देखिये। कोकिल और कोकिला विवाह-क्रिया में संलग्न हैं। उधर डालियों पर मोरों का नाच हो रहा है। मोरों का यह नृत्य-मंच और मोरों का यह नाच, सुन्दर बर्छी सी आँखवाली नर्तकियों का नाट्य-मंच, और उनका नाच, इनसे भी बढ़कर आकर्षक हैं— यहाँ तक मोर और डालियाँ नर्तकियों और नृत्य-मंच का भी शृंगार बन सकती हैं। दूसरी तरफ़, कमल-शय्या पर सुप्त राज-हंस को भौंरे प्रातः जागरण-गीत गाकर जगाते हैं। ४६

पॊरुन्दिय महळि रोडु वदुवैयिऱ् पॊरुन्दु वारुम्
परुन्दॊडु निऴल्शॆऩ् ऱऩ्ऩ वियलिशैप् पयऩ्ऱुय्प् पारुम्
मरुन्दिऩु मिऩिय केळ्वि शॆवियुऱ मान्दु वारुम्
विरुन्दिऩर् मुहङ्गण् डऩ्ऩ विऴावणि विरुम्बु वारुम् 47

पॊरुन्तिय–अपने योग्य; मकळिरोटु–स्त्रियों के साथ; वतुवैयिल् पॊरुन्तुवारुम्–विवाह में लगे रहनेवाले; परुन्तॊटु निऴल् चेऩ्ऱु अऩ्ऩ–(उड़नेवाले) चील के साथ उड़नेवाली छाया की तरह; इयल् इचै पयऩ् तुय्प्पारुम्–साहित्य और संगीत का मिला आनंद भोगनेवाले; मरुन्तिऩुम् इऩिय केळ्वि–अमृत से भी मधुर (सुखकारी) ग्रंथ-श्रवण का; चॆवि उऱ मान्तुवोरुम्–कर्ण-लाभ उठानेवाले; विरुन्तिऩर् मुकम् कण्टु–अतिथियों का प्रसन्न मुख देखकर; अऩ्ऩम् विऴा अणि विरुम्पुवारुम्–भोज देने का उत्सव (उचित उपचार के साथ करना) चाहनेवाले(-करने में लगे हुए)। ४७

कोसल देशवासियों के कार्य-कलाप देखिये। सब तरह से अपने योग्य वधुओं से विवाह-क्रिया में संलग्न हैं कुछ लोग; चील जब उड़ती है तब उसकी छाया भी नीचे-नीचे उसी का अनुकरण करती हुई चलती है। वैसे ही साहित्य (यानी गीत में वर्णित विषय) और संगीत (स्वर) दोनों में गहरा सम्बन्ध है। दोनों का सम्मिलित आनन्द उठा रहे हैं कुछ लोग; ग्रन्थ-श्रवण अमृताशन से भी लाभकारी है— उसका लाभ उठा रहे हैं कुछ

लोग; और कुछ लोग अतिथियों के तृप्त-मुख भाव को देखकर भोज के प्रबन्ध में लीन हैं। ४७

कऱुप्पुऱु मऩमुङ् गण्णिऱ् चिवप्पुऱु शूट्टुङ् गाट्टि
उऱुप्पुऱु पडैयिऱ् ऱाक्कि युऱुपहै यिऩ्ऱिच् चीऱि
वॆऱुप्पिल कळिप्पिऩ् वॅम्बोर् मदुहय वीर वाऴ्क्कै
मऱुप्पड वावि पेणा वारणम् बॉरुत्तु वारुम् 48

उऱु पकै इऩ्ऱि–पूर्व वैर के बिना; चीऱि—कोप कर; कऱुप्पु उऱुम् मऩमुम्–क्रोध-युक्त मन, और; कण्णिऩ् चिवप्पु उऱु चूट्टुम् काट्टि–आँखों से लाल अपनी कलंगी को दिखाते हुए; उऱुप्पु उऱु पटैयिऩ्–(पैर के) अंग में बद्ध (छुरे) हथियार से; ताक्कि,–आक्रमण कर; वॅऱुप्पु इल–(जिनमें) घृणा या उचाट नहीं; कळिप्पिऩ्–मस्ती के साथ; वॅम् पोर् मतुकैय–भयंकर युद्ध करने का साहस रखनेवाले; वीर वाऴ्क्कै–वीरता का जीवन; मऱु पट–लांछित हो जाय तो; आवि पेणा–जीवन रखना न चाहनेवाले; वारणम्–मुर्गों को; पॉरुत्तुवारुम्–लड़ानेवाले। ४८

कुछ लोग मुर्गे लड़ाने में दिलचस्पी लेते हैं। वे मुर्गे बिना पूर्व-वैर के भी आपस में रोष दिखाते हैं। उनका मन काला (कोपाक्रांत) है। आँखें लाल हो गयी हैं। इस कोप और आँखों के ही समान लाल कलगी को प्रकट दिखाते हुए वे एक दूसरे पर झपटते हैं और अपने पैरों में बँधी छुरी से चोट कर देते हैं। वे थकते ही नहीं और उनका उत्साह बढ़ता जाता है। वे बड़े साहसी हैं और वीरता पर धब्बा लगा तो मरने को तैयार! ४८

ऍरुमैना हीऩ्ऱ शॅङ्ग णेऱ्ऱयो डेऱ्ऱै शीऱ्ऱत्
तुरुमिवै यॅऩ्ऩत् ताक्कि यूऴुऱ नॅरुक्कि यॉऩ्ऱाय्
विरियिरु ळिरण्डु कूऱाय् वॅहुण्डऩ वऩैय नोक्कि
अरियिनङ् गुञ्जि यार्प्प मञ्जुऱ वार्क्किऩ् ऱारुम् 49

ऍरुमै नाकु ईऩ्ऱ–भैंस के जनाये; चॅम् कण्–लाल आँखोंवाले; एऱ्ऱैयोटु एऱ्ऱै–एक पाठे के विरुद्ध दूसरा पाठा; इवै चीऱ्ऱत्तु उरुम् ऍऩ्ऩ–ये नाराज़ वज्र (गाज) हैं-ऐसा कहने योग्य रीति से; ताक्कि–टकराकर-(सींग मारकर); ऊऴ् उऱ नॅरुक्कि–बारी-बारी से दबोचकर; ऑऩ्ऱु आय् विरि इरुळ्–एकाकार फैला अंधकार; इरण्टु कूऱु आय् वॅकुण्टऩ–दो भागों में बंटकर (वे आपस में) रोष दिखाते हों; अऩैय–ऐसे (उनको); नोक्कि–देखकर; कुञ्चि अरि इऩम् आर्प्प–केशों पर बैठे भौंरों के कल्लोल के साथ उठते; मञ्चु उऱ–मेघमंडल तक (शब्द) पहुँचाते हुए; आर्क्किऩ्ऱारुम्–शोर मचानेवाले। ४९

कहीं भैंस के पाठों को लड़ाया जाता है और लोग देख रहे हैं। एक ठापा दूसरे पर क्रुद्ध वज्र के समान झपटता है; जोर से सींग चलाता है; बारी-बारी से एक दूसरे पर हावी हो जाता है। उनको देखते समय ऐसा

लगता है मानों विशाल अंधकार के दो भाग हो गये और वे भाग आपस में गुथ रहे हैं। इसको देख लोग ऐसे उछलते और शोर करते हैं कि उनके सिर पर रहनेवाले पुष्प में बैठे भौंरों को उठकर उड़ जाना पड़ता है और उनका शोर मेघ-मण्डल तक पहुँच जाता है। ४९

मुळ्ळरै मुळरि वॅळ्ळि मुळैयिऱ् मुत्तुम् पॊऩ्ऩुम्
तळ्ळुऱ् मणिहळ् शिन्दच् चलंजलम् पुलम्बच् चालिल्
तुळ्ळिमीऩ् ऱुडिप्प वामै तलैपुडै शुरिप्पत् तूम्बिऩ्
उळ्वरा लॊळिप्प मळ्ळ रुळ्ळुपह डुरप्पु वारुम् 50

मुळ् अरै मुळरि–कांटेनुमा (गाँठों से भरे) नालवाले कमलों को; वेळ्ळि मुळ इऱ्–श्वेत अंकुर तोड़ते हुए; मुत्तुम् पॊऩ्ऩुम्–मोती और स्वर्ण; तळ्ळुऱ्–हटाये जायँ ऐसा; मणिकळ् चिन्त–रत्न छितर जायँ ऐसा (या रत्न छितराते हुए); चलञ्चलम् पुलम्प–चलंजल नामक शंख के चिल्लाते; चालिल् मीऩ् तुळ्ळि तुटिप्प–हल के कूणों में मछलियाँ तड़पें ऐसा; आमै–कछुए; तलै पुटै–सिर और पार्श्व के अंगों को; चुरिप्प–छिपा लें ऐसा; वराल्–'वराल' नामक मछलियों के; तूम्पिऩ् ऑळिप्प–नालियों के अंदर छिप जाते; मळ्ळर् उळ्ळु पकटु उऱप्पुवार् उम्–कृषक जो जोतनेवाले बैलों को हांकते हैं-और। ५०

कृषक लोग हल चलाने की क्रिया में रत हैं। हल जब चलता है तब कमल के अंकुर टूट जाते हैं; मोती और स्वर्ण दोनों ओर हटाये जाते हैं; शंख ध्वनि करते हैं; हल के कूणों पर, मछलियाँ, फाल के लगने से तड़पती हैं; कछुए अपने सिर, पैर छुपा लेते हैं। वराल नाम की मछलियाँ नालियों में छिप जाती हैं। कृषक जोर से बैल हाँकते हैं। ५०

ऑऱिदरु मरियिऩ शुम्मै यॅडुत्तुवा ऩिट्ट पोर्हळ्
कुऱिकॊळुम् पोत्तिऱ् कॊल्वार् कॊऩ्ऱ नॅऱ्कुवैहळ् शॅय्वार्
वऱियवर्क् कुदवि मिक्क विरुन्दुण मऩैयि ऩुय्प्पाऩ्
नॅऱिहळुम् बुदैयप् पण्डि निऱैत्तुमण् णॊळिय वूर्वार् 51

ऑऱि तरुम्–पीटे हुए; अरियिऩ् चुम्मै ऑटुत्तु–धान के पौधों के मुट्ठों को लेकर; वाऩ् इट्ट पोर्कळ्–आकाश को छूते हुए लगाये गये ढेर; कुऱि कॉळुम् पोत्तिऩ्–इंगित जानकर चलनेवाले बैलों से; कॉल्वार्–रौंदवाते हैं; कोऩ्ऱ नॅल्–मांड़ने से मिले धान के; कुवैकळ् चॅय्वार्–ढेर लगाते हैं; वऱियवरक्कु उतवि–दरिद्रों को दान कर; मिक्क–(जो) बचा उसको; विरुन्तु उण–अतिथियों को खिलाने; मऩैयिऩ् उय्प्पाऩ्–घर पहुँचाने के लिये; नॅऱिकळुम् पुतैय–सड़कें छिप जायँ (इतनी बड़ी संख्या में); पण्टि निऱैत्तु–छकड़ों में भर कर; मण् नॅळिय–धर्ती को धंसाते हुए; ऊर्वार्–चलाते हैं। ५१

कृषक लोग धान की फसल काटते हैं; क्रम से, पहले मुट्ठे बनाकर जमीन पर पीटकर धान अलग करते हैं; फिर बालें-सहित पौधों के ढेर

लगाकर मवेशी द्वारा माँडते हैं। तब जो धान मिल जाते हैं उनके ढेर लगाते हैं। बाद में वहाँ आनेवाले दरिद्र भिखमंगों को दान देकर बाकी को गाड़ियों में भरकर ले जाते हैं। गाड़ियों की संख्या इतनी है कि मार्ग छिप जाते हैं और उनके भार से मानों धरती लचक जाती है। ५१

कदिर्पडु वयलि ऩुळ्ळ कडिकमऴ् पॉऴिलि ऩुळ्ळ
मुदिर्पयऩ् मरत्ति ऩुळ्ळ मुदिरैहळ् पुऱवि ऩुळ्ळ
पदिपडु कॉडियि ऩुळ्ळ पडिवळर् कुऴियि ऩुळ्ळ
मदुवळ मलरिऱ् कॉळ्ळुम् वण्डॆऩ मळ्ळर् कॉळ्वार् 52

मळ्ळर्–कृषक; कतिर् पटु वयलिऩ् उळ्ळ–धान की बालों से भरे खेतों में मिलनेवाली (फसल की वस्तुएँ); कटि कमऴ् पॉऴिलिऩ् उळ्ळ–खुशबूदार बागों से प्राप्त होनेवाली (वस्तुएँ); मुतिर् पयऩ् मरत्तिऩ् उळ्ळ–वृद्ध (और) फलदायी वृक्षों से पायी जानेवाली; मुतिरैकळ् पुऱविऩ् उळ्ळ–दालें जहाँ पैदा होती हैं उन स्थलों से प्राप्त होनेवाली (वस्तुएँ); पति पटु कॉटियिऩ् उळ्ळ–कलम गाड़कर उगायी जानेवाली लताओं से प्राप्य (वस्तुएँ); पटि वळर् कुऴियिऩ् उळ्ळ–फैलकर धरती के अंदर फलनेवाली वस्तुएँ (-ये सब विविध प्रकार की फसलें); वळम् मलरिल् मतु कॉळ्ळुम् वण्टु अॆऩ–पुष्ट फूलों से मधु ग्रहण करनेवाले भ्रमरों के समान; कॉळ्वार–संग्रह करते हैं। ५२

किसान लोग क्या-क्या फसलें संग्रह करते हैं? —इसकी सूची दी जाती है। खेतों की, बागों की, वृक्षों की, दालों के खेतों की; लताओं की; धरती के अन्दर होनेवाली— कन्द-मूल आदि सभी वस्तुएँ इस तरह स्थान-स्थान से संग्रह करते हैं, जैसे भौंरे फूल-फूल से मधु संग्रह करते हैं। ५२

मुऩ्दुमुक् कऩियि ऩाऩा मुदिरैयिऩ् मुऴुत्त नॅय्यिल्
शॅऩ्दयिर्क् कण्डङ् गण्ड मिडैयिडै शॅऱिऩ्द शोऱ्ऱिल्
तऩ्दमि लिरुऩ्दु तामुम् विरुऩ्दोडुऩ् दमरि ऩोडुम्
अऩ्दणर् मुदलो रुण्डि ययिल्वुरु ममलैत् तॅङ्गुम् 53

ॲङ्कुम्–सर्वत्र; अऩ्तणर् मुतलोर्–ब्राह्मण आदि; तम् तम् इल् इरुऩ्तु–अपने अपने घरों में रहकर; मुऩ्तुम् मुक्कऩियिऩ्–प्रथम (गणनीय कटहल, आम और केले के) फलों के साथ; नाऩा मुतिरैयिऩ्–नानाविध दालों के साथ; मुऴुत्त नॅय्यिऩ्–भात को ढंकनेवाले (परिमाण में) घी के साथ; चॅम् तयिर् कण्टम्–लाल (पक्व) दही खण्डों के साथ; कण्टम्–खाण्ड; इटै इटै चॅऱिऩ्त चोऱ्ऱिऩ्–(इनके) बीच बीच में मिले हुए भात को; विरुऩ्तॉटुम्, तमरिऩॊटुम्–अतिथियों और अपनों के साथ; तामुम् इरुऩ्तु–खुद रहकर (बैठे); अयिल्वुऱुम्–खाते हैं-ऐसे; अमलैत्तु–संभ्रम का (है वह देश)। ५३

ब्राह्मण आदि चारों वर्णों के लोगों के यहाँ भोजन की व्यवस्था बड़ी समृद्ध है। कटहल, आम और केले के, प्रधान रूप से मान्य, फलों को खाया जाता है। नाना विध दालें, और भात ऐसा कि उसके साथ प्रचुर परिणाम में घी, श्रेष्ठ दही, खाण्ड आदि मिले हुए हैं। वे लोग अकेले नहीं

खाते; सब बन्धु-बान्धवों और अतिथियों के साथ बैठकर जीमते हैं। उस कोशल देश में इस बात की बड़ी धूम है। ५३

मुऱैयऱिन् दवावै नीक्कि मुऩिवुऴि मुऩिन्दु वॆ.·.हुम्
इऱैयऱिन् दुयिर्क्कु नल्हु मिशैक्कॊऴु वेन्दऩ् काक्कप्
पॊऱैतविर्न् दुयिर्क्कुन् दॆय्वप् पूदल मदऩिऱ् पॊऩ्ऩिऩ्
निऱैपरञ् चॊरिन्दु वंग नॆडुमुदु हाऱ्ऱु नॆय्दल् 54

मुऱै अऱिन्तु–नीति-रीति अच्छी तरह जान-समझकर; अवावै नीक्कि–इच्छाओं को दूरकर; मुऩि उऴि मुऩिन्तु–कोप करने के (उचित) स्थान पर कोप दिखाकर; वॆ.·.कुम् इऱै अऱिन्तु–स्वयं चाह के साथ प्रजा दे दे-वह कर (का परिमाण) जानकर (वसूली कर); उयिर्क्कु नल्कुम्–प्रजा का पालन करनेवाले; इचै कॊऴु–यशस्वी; वेन्तऩ्–राजा (दशरथ) के; काक्क–शासन करते; पॊऱै तविर्न्तु–भार-निवृत्त हो; उयिर्क्कुम्–आश्वास की साँसें छोड़नेवाले (जहाँ हैं) उस; तॆय्वम् पूतलम् अतऩिल्–दिव्य भूभाग में (कोशल देश में); नॆय्तल्–समुद्र तट पर; वङ्कम्–नावें; निऱै परम् चॊरिन्तु–अपना भरा भार उतरवाकर; नॆट्टु मुतुकु–बड़े पीठ के दर्द को; आऱ्ऱुम्–दूर कर रही हैं। ५४

राजा दशरथ श्रेष्ठ प्रजा-पालक थे; वे मनु-नीति से खूब अवगत थे। कामना-हीन (स्वार्थ-हीन) थे। आवश्यक होता था तभी दण्ड देते थे; कर का परिमाण ऐसा रखा कि प्रजा स्वयं अपनी इच्छा से दे देती थी; और प्रजा की रक्षा खूब करते थे। इसलिए उस दिव्य देश में सभी निश्चिन्तता की साँसें लेते थे; यहाँ तक नावें भी अपने भार उतारने के बाद अपनी पीठें ऊपर कर पड़ी रहती थीं, मानों आराम कर रही हों। (यहाँ प्रथा है कि नावें औंधी छोड़ी जाती हैं, जब मल्लाह घर में रहते हैं)। ५४

परुव मङ्गयर् पंगय वाण्मुहत्, तुरुव वुण्गणै यॊण्पॆडै यामॆऩ्ऩक्
करुदि यऩ्बॊडु कामुऱ्ऱु वैहलुम्, मरुद वेलियिऩ् वैहिऩ वण्डरो 55

मरुतम् वेलियिऩ्–खेतों और बागों के भूभाग में; वण्टु–भौंरे; परुव मङ्कैयर्–सयानी हुई स्त्रियों के; पङ्कयम् वाण् मुकत्तु–पंकज-सम कांतियुक्त मुख की; उरुवम् उण् कण्णै–सुन्दर काजल-लगी आँखों को; पॆटैयाम् ऎऩ्ऩ करुति–अपनी भौंरियाँ समझ कर; अऩ्पॊटु कामुऱ्ऱु–प्रेम के साथ आसक्त होकर; वैकलुम् वैकिऩ–हमेशा ठहर गये। अरो–पूरक ध्वनि। ५५

खेतों और बागों वाले प्रदेश में भौंरे हमेशा के लिए ठहर गये इसलिए कि स्त्रियों के मुखों को उन्होंने कमल समझ लिया और काजल-लगी आँखों को भौंरियाँ। बस, उनके पास रहना चाहते हुए वहीं सदा के लिए बस गये। ५५

वेळै वॆऩ्ऱ विऴिच्चियर् वॆम्मुलै, आळै निऩ्ऱु मुऩिन्दिडु मङ्गॊर्बाल्
पाळै तऩ्द मदुप्परु हिप्परु, वाळै निऩ्ऱु मदर्क्कु मरुङ्गॆलाम् 56

अङ्कु–उस भाग के; ऑरु पाल्–एक ओर; वेळै–कामदेव को; वॅन्ऱ विऴिच्चियर्–जीतनेवाली आँखों की स्त्रियों के; वॅम् मुलै–मन को अधीर करनेवाले स्तन; निन्ऱु–(अपने स्थान पर तन कर) खड़े होकर; आळै मुनिन्तिटुम्–कार्य-रत मनुष्य को डांटते हैं (अपने वश में कर लेते हैं); मरुङ्कु ॲलाम्–आस-पास सब जगह; परु वाळै–मोटे "वाळै" नाम के मीन; पाळै तन्त मतु–(ताड़ आदि के) कटे डंठलों के दिये रस को पीकर; निन्ऱु मतर्क्कुम्–अकड़कर मस्ती के साथ चलते-फिरते हैं। ५६

उस कृषि-योग्य प्रदेश में तरुण स्त्रियों की आँखें इतनी आकर्षक हैं कि जिस पुरुष पर मन्मथ का कुछ वश नहीं चल सकता वहाँ उनकी आँखें उसे आकृष्ट कर लेती हैं और रहा सहा काम उनके मनोरम स्तन (गुस्सा दिखा) कर लेते हैं और उन कठिन स्तनों के सामने आदमी झुक ही जाता है। आदमी को झुका देना या उसे अपने वश में कर लेना —यह भाव जताने के लिए स्तन गुस्सा दिखाते हैं या डाँटते हैं, ऐसा कहना कुछ विचित्र पर मन रमानेवाली कल्पना है। और पीन मीन नारियल के डंठलों से झरनेवाले रस को पीकर अकड़ जाते हैं। ५६

❀ ईर नीर्पडिन् दिन्निलत् तेशिल, कार्क ळॅन्ऩ वरुङ्गरु मॅदिहळ्
ऊरि ऩिन्ऱहन् ऱुळ्ळिड वुण्मुलै, तारै कॉळ्ळत् तऴैप्पऩ शालिये 57

ईरम् नीर् पटिन्तु–ठंडे जल में पैठी रहकर; इ निलत्ते–इस भूमि पर; चिल कार्कळ् ॲन्ऩ वरुम्–कुछ मेघों के समान आनेवाली; करु मेतिकळ्–काली भैंसें; ऊरिल् निन्ऱ कन्ऱु उळ्ळिट–बस्ती में जो रह गये (उन) बछड़ों का स्मरण करने से; उण् मुलै तारै कॉळ्ळ–उन बछड़ों के पेय थन के दूध के भर कर बाहर निकल बहने से; चालि तऴैप्पऩ–धान के पौधे पनपते हैं। ५७

ठंढे पानी में पैठी रहने के बाद भैंसें चली आती हैं— वे मानों काले मेघ हैं। वे जब अपने बछड़ों की याद करती हैं तब वे बोलने लगती हैं मानों उन्हें पुकार रही हों या उन्हें कुछ सुना रही हों। तब उनके थन से दूध स्वयं बहने लगता है और उस दूध की धारा खेतों में जाती है जहाँ धान के पौधे इससे पुष्ट हो जाते हैं। ५७

मुट्टि लट्टिऩ् मुऴङ्गुऱ वाक्किय, नॅट्डु लैक्कऴु नीर्नॅडु नीत्तन्दाऩ्
पट्ट मॅन्ऩगमु कोङ्गु पडप्पपोय्, नट्ट शॅन्नॅलि ऩाऱु वळर्क्कुमे 58

मुट्टु इल् अट्टिऩ्–सु संपन्न पाकशालाओं में; मुऴङ्कु उऱ–संभ्रम के साथ; आक्किय–पके; नॅटु उलै–विपुल पाक-कार्य के लिये; कऴु नीर्–चावल जिससे धोये गये उस जल का; नॅटु नीत्तम्–बड़ा प्रवाह; पट्टम् मॅल् कमुकु–उचित पर्व में उगाये गये कोमल सुपारी के छोटे वृक्ष; ओङ्कु पटप्पै पोय्–जहाँ बढ़ते हैं उस विस्तृत बाग से होकर; नट्ट–रोपे गये; चॅन् नॅलिऩ्–लाल धान के; नाऱु–बेढ़ों को; वळर्क्कुम्–बढ़ाता है। ५८

कोशल देश के घर समृद्ध हैं और लोग अतिथि-सत्कार में उत्साह रखते हैं। इसलिए उनकी पाक-शालायें हमेशा क्रिया-शील हैं। चावल

इतने पकते हैं कि पकाने से पहले जो जिस जल से इनको धोया जाता है वह जल नदी के समान बह चलता है; और क्रमुक-वन से होकर खेतों में बहता है और बेढों को बढ़ाता है। ५८

शूट्टु-डैत्तलैत् तूनिऱ वारणम्, ताट्टु णैक्कुडै यत्तहै शाऩ्मणि
मेट्टि मैप्पऩ मिऩ्मिऩि यामॅऩक्, कूट्टि लुय्क्कुङ् गुरुविक् कुऴामरो 59

चूट्टु उटै तलै–कलगीवाले सिर; तू निऱ वारणम्–शुद्ध (सफेद) रंग के मुर्गे; ताऴ् तुणै कुटै–चरणद्वय से (कड़े) कुरेदते (तब बाहर निकलते); अ तकै चाल् मणि–वे श्रेष्ठ रत्न; मेट्टु इमैप्पऩ–(कूड़ों के) ढेरों पर चमकते हैं (उनको); मिऩ् मिऩि आम् ऍऩ–जुगुनू हैं-समझकर; कुरुवि कुऴाम्–चिड़ियों के दल; कूट्टिल् उय्क्कुम्–घोंसलों में पहुँचाते हैं। (अरो)। ५९

सफ़ेद रंग के और लाल कलगी वाले मुर्गे अपने पैर के नखों से घूर कुरेदते हैं तो उससे रत्न निकलते हैं। उन चमकदार रत्नों को चिड़ियाँ देखती हैं और अपने घोंसलों में, अपने बच्चों के मनोरंजनार्थ या खाने के लिए, उन रत्नों को उठा ले जाकर, रख लेती हैं। ५९

❀ तोयुम् वॅण्डयिर् मत्तोलि तुळ्ळल्पोय्, माय वॅळ्वळै वाय्विट् टऱऱ्ऱवुम्
तेयु नुण्णिडै शॅऩ्ऱु वणङ्गवुम्, आयर् मङ्गय रङ्गै वरुऩ्दुवार् 60

तोयुम् वॅण् तयिर्–(गाढ़ा) जमा सफ़ेद दही; मत्तु ऑलि तुळ्ळल्–(मथने की) मथानी का रह-रहकर उठता नाद; माय–छिपाते हुए; वॅळ् वळै–सफ़ेद (शंख-)कंकण; वाय् विट्टु अरऱ्ऱ उम्–मुख खोलकर चिल्लाते हैं, और; तेयुम् नुण् इटै–क्षीण होती (पतली) कमरें; चॅऩ्ऱु वणङ्कवुम्–आगे बढ़कर झुक (लचक) जाती हैं, ऐसा; आयर् मङ्कैयर्–अहीर स्त्रियाँ; अम् कै वरुऩ्तुवार्–सुन्दर हाथों से सायास(मथती) हैं। ६०

अहीर-रमणियाँ दही मथती हैं; तब उनके हाथों के शंख के बने सफ़ेद कंकण बोल उठते हैं। वह ध्वनि मथनी की ध्वनि को अपने में लीन कर लेती है। कंकणों का बोलना ऐसा लगता है मानों वे इन स्त्रियों की कमरों का .झुकना और हाथों का दुखना देख, उनकी सहानुभूति में रोती-बिलखती हों। ६०

कुऱ्ऱ पाहु कॉऴिप्पऩ कोणॅऱि, कऱ्ऱि लाद करुङ्ग णुळैच्चियर्
मुऱ्ऱि लार मुहऩ्दुत मुऩ्ऱिलिल्, शिऱ्ऱिल् कोलिच् चिदऱिय मुत्तमे 61

कोळ् नॅऱि–बुरा आचरण; कऱ्ऱिलात–जो नहीं जानतीं; करु कण्–काली आँखोंवाली; नुळैच्चियर्–धीवर स्त्रियाँ (बालायें); मुऱ्ऱिल् आर–सूप भर कर; मुकऩ्तु–लेकर; तम् मुऩ्ऱिलिल्–अपने आंगनों में; चिऱ्ऱिल् कोलि–घरौंदे बनाते (वक्त); चितऱिय–(जो) बिखर जाते हैं; कुऱ्ऱ पाकु कॉऴिप्पऩ–छिलके निकाले गये सुपारी-फलों से पछोरे जानेवाले हैं। ६१

चालाकी से दूर (गुण से सुन्दर) और काली आँखों वाली (रूप में भी सुन्दर) धीवर-बालायें अपने घरौंदे मोतियों के बनाती हैं, जिन्हें वे सूपों

में भर लाती हैं; और वे फिर उन्हें फेंक देती हैं। यह समुद्र-तट के प्रदेश की बात है। ये ही मोती नीचे जंगल-प्रदेश में पहुँच जाते हैं। वहाँ उनका मूल्य क्या है? सुपारी के फलों के साथ ये मिल जाते हैं और वहाँ की स्त्रियाँ उन्हें पछोर देती हैं। ६१

तुरुवै मॆऩ्पिणै यीऩ्ऱ तुळक्किला, वरिम रुप्पिणै वऩ्ऱलै येऱ्ऱैवाऩ्
उरुमि-डित्तॆऩत् ताक्कुरु मॊल्लॊलि, वॆरुवि माल्वरैच् चूऩ्मऴै मिऩ्ऩुमे 62

मॆऩ् तुरुवै पिणै–मृदु स्वभाव की भेड़ों के; ईऩ्ऱ–जनाये; तुळक्कु इला–निडर; वरि मरुप्पु इणै–धारी-दार सींगों के जोड़े; वल् तलै–(जिन पर हैं उन) बलवान सिरों के; एऱ्ऱै–भेड़े; वाऩ् उरुम् इटित्ततु ऎऩ–आकाश में वज्र ने घोष किया-ऐसा; ताक्कु उरुम्–भिड़ते हैं वह; ऒल ऒलि–उच्च नाद; वॆरुवि–डरकर; माल् वरै–बड़े पर्वत (पर के); चूल् मऴै–(जल-) गर्भित मेघ; मिऩ्ऩुम्–चमकते हैं। ६२

जंगल-प्रदेश के आगे खेतों का प्रदेश है। वहाँ भेड़े आपस में भिड़ते हैं। वे निडर हैं; उनके सींग और सिर कठोर हैं। वे जब टकराते हैं तब वज्र-ध्वनि-सी ध्वनि निकलती है। इस ध्वनि के कारण पर्वतों पर रहनेवाले मेघ डरते हैं। और तब बिजली जो चमक जाती है, वह ऐसा लगता है मानो मेघ नें डर से अपना मुख खोला हो। ६२

तिऩैच्चि लम्बुव तीञ्जॊ लिळङ्गिळि, ननैच्चि लम्बुव नाहिळ वण्डुपूम्
पुऩैच्चि लम्बुव पुळ्ळिऩम् वळ्ळियोर्, मनैच्चि लम्बुव मङ्गल वळ्ळये 63

तिऩै चिलम्पुव–कोदों के बागों में बोलते हैं; तीम् चॊल्–मधुर बोलीवाले; इळम् किळि–बाल तोते; ननै चिलम्पुव–कलियों पर (बैठ) स्वर देते हैं; नाकु इळ वण्टु–बहुत छोटे भौंरे; पू पुऩै–फूलों सहित जलाशयों में; चिलम्पुव पुळ् इऩम्–बोलते हैं पक्षी समूह; वळ्ळियोर् मनै चिलम्पुव–उदार दाताओं के घरों में स्वरित होते हैं; मङ्कलम् वळ्ळै–मंगल सूचक विशिष्ट गाने (मूसल-गीत) जो धान कूटते वक्त गृहस्वामी की प्रशंसा में गाये जाते हैं। ६३

कोदों के बागों से तोतों का स्वर, कलियों से भौंरों का स्वर, फूलों सहित रहनेवाले जलाशयों से चिड़ियों का स्वर, दाता गृहस्थों के घरों से धान कूटते वक्त के विशिष्ट गीतों का स्वर— सब अपने-अपने स्थान की समृद्धि सूचित करते हैं। ६३

कऩ्ऱु डैप्पिडि नीक्किक् कळिऱ्ऱिऩम्, वऩ्ऱो डर्प्पडुक् कुम्वऩ वारिशूऴ्
कुऩ्ऱु डैक्कुल मळ्ळर् कुऴूउक्कुरल्, इऩ्ऱु णैक्कळि यऩ्ऩ मिरिक्कुमे 64

कऩ्ऱु उटै पिटि–कलभों सहित (रहनेवाली) हथिनियों को; नीक्कि–अलग कर के; कळिऱु इऩम्–हाथियों के समूहों को; वल् तॊटर् पटुक्कुम् वऩम्–कठोर बंधन के अंदर (जहाँ) लाया जाता है उस वन में; वारि चूऴ्–गड्ढों से घिरे; कुऩ्ऱु उटै–पर्वत-वासी; कुलम् मळ्ळर्–व्याध-वीरों का; कुऴु कुरल्–उठाया गया शोर; इऩ् तुणै कळि

अऩ्ऩम्–(नीचे के जंगल-प्रदेश में) अपनी प्रिय हंसिनी के साथ आनंदित रहनेवाले हंसों को; इरिक्कुम्–अलग कर भगा देता। ६४

पर्वत-प्रदेश की सीमाओं में व्याध लोग हाथी पकड़ते हैं। पहले वे हाथी को, उसकी हथिनियों और कलभों से अलग करते हैं। फिर उसे उन गड्ढों की ओर भगाते हैं, जो यहाँ-वहाँ बनाये गये हैं। तब वे बहुत शोर मचाते हैं। यह शोर नीचे जंगल-प्रदेश में आता है, जिसे सुनकर हंस डर जाते हैं और अपनी संगिनी हंसिनी को, जिसके साथ वह केलि में मग्न था, छोड़कर भाग जाता है। ६४

वळ्ळि कॊळ्बवर् कॊळ्वऩ मामणि, तुळ्ळि कॊळ्वऩ तूङ्गिय माङ्गऩि
पुळ्ळि कॊळ्वऩ पॊऩ्विरि पुऩ्ऩैहळ्, पळ्ळि कॊळ्वऩ पङ्गयत् तऩ्ऩमे 65

वळ्ळि–शकरकन्द; कॊळ्पवर्–लेने (के लिए खोदने) वाले; कॊळ्वऩ–जो (साथ साथ) प्राप्त करते हैं; मा मणि–श्रेष्ठ मणियाँ; तुळ्ळि–कछुए; कॊळ्वऩ–जो प्राप्त करते हैं; तूङ्किय माङ्कऩि–(नीचे) लटकनेवाले आम के फल; पुळ्ळि कॊळ्वऩ–गोल आकार वाले; पॊऩ् विरि–स्वर्ण-रंग (मकरंद) के साथ छिटके; पुऩ्ऩैकळ्–(फूलवाले) "पुन्नै" नाम के वृक्षों में; पळ्ळि कॊळ्वऩ–शयन करनेवाले हैं; पङ्कयत्तु अऩ्ऩम्–कमल पर सोने के आदी हंस। ६५

लोग कन्द-मूल के लिए खोदते हैं, तो उन्हें साथ-साथ रत्न भी मिल जाते हैं। आम की डालियाँ इतनी झुकी हुई हैं कि कछुए भी आम के फल पा लेते हैं। समुद्र-तटीय प्रदेश के विशेष तरु हैं— "पुन्नै"। उनके फूल गोल-गोल होते हैं और स्वर्ण रंग के केसर। उन पर आकर हंस, जो कमल पर सोने के आदी हैं, सो जाते हैं। (इसमें पर्वत, जंगल, समुद्र-तट) —तीनों प्रदेशों का मिश्रित वर्णन है। ६५

कॊऩ्ऱै यङ्गुऴऱ् कोवलर् मुऩ्ऱिलिल्, कऩ्ऱु रप्पुङ् गुरवै कडैशियर्
पुऩ्र लैप्पुऩङ् गाप्पिडै पोदरच्, चॆऩ्ऱि शैक्कु नुऴैच्चियर शॆव्वऴि 66

कटैचियर् कुरवै–कृषक स्त्रियों के 'कुरवै' नाम के नाच के गीत; कॊऩ्ऱै अम् कुऴल्–अमलतास के फलों के बने, वंशी के समान के वाद्य बजानेवाले; कोवलर् मुऩ्ऱिलिल् कऩ्ऱु–ग्वालों के आँगनों में (बँधे) बछड़ों को; उरप्पुम्–डराते हैं; नुळैच्चियर्–धीवर स्त्रियों के; चेव्वऴि–संध्या गीत; पुऩ् तलै पुऩम् काप्पु–कम हरे बागों की रखवाली के काम में; इटै पोतर–बाधा डालते हुए; चॆऩ्ऱु इचैक्कुम्–जा सुनाई देते हैं। ६६

कृषक स्त्रियाँ नाचती-गाती हैं। उनके गाने के स्वर खेतों के प्रदेश के ग्वालों के आँगन में पड़े रहनेवाले बछड़ों को डराते हैं और उकसाते हैं। ये ग्वाल अमलतास के फलों की नली से बाँसुरी जैसा बाजा बना लेते हैं और बजाते हैं। उधर समुद्र-तटीय प्रदेश की धीवर-तरुणियाँ संध्या-गीत गाती

हैं और वह स्वर कोदों के बागों की रखवाली करनेवालों का ध्यान आकृष्ट कर लेता है और उनके काम में बाधा पड़ जाती है। ६६

शेम्बु कालिऱच् चॅङ्गऴु नीर्क्कुळत्, तूम्बु कालच् चुरिवळै मेय्वऩ
काम्बु काल्पॉरक् कण्णहऩ् मालवरैप्, पाम्बु नाऩ्ऱॅऩप् पाय्पशुन् देऱले 67

कण् अकल् माल् वरै–विशाल काले पर्वत पर; काम्पु काल् पॉर–वंशी-वृक्षों के हवा के झोंकों के कारण, टकराने से; पाम्पु नाऩ्ऱतु अॅऩ–साँप लटकता हो ऐसा; पाय् पचुमै तेऱल–बहनेवाले ताज़े शहद को; चॅङ्कऴु नीर् कुळम् तूम्पु–लाल कमल वाले तालाब की (पानी भरने के लिये बनी) नाली का मुहाना; चेम्पु काल् इऱ–जंगली अरवी के तनों को तुड़ाते हुए; काल–निकाल देता है, तब; चुरि वळै–आवर्तवाले शंख; मेय्वन–पीते हैं। ६७

नीले पर्वतों पर हवा खूब बहती है और बाँस के पेड़ हिलकर मधु के छत्तों को बेध देते हैं। तब मधु की धारा गिरने लगती है, जिसे देखने पर लगता है कि साँप लटक रहा है। वह मधु बहता आता है। वह प्रवाह नालियों द्वारा इतने जोर से कमल-तालाबों में बहता है कि बीच में रहनेवाले अरवीनुमा पौधों के तने टूट जाते हैं। उस मधु को वहाँ, तालाब के पास रहनेवाले शंख पी लेते हैं। ६७

❀ पॅरुन्द डङ्गट् पिऱैनुद लार्क्कॅलाम्, पॉरुन्दु शॅल्वमुङ् गल्वियुम् बूत्तलाल्
वरुन्दि वन्दवर्क् कीदलुम् वैहलुम्, विरुन्दु मऩ्ऱि विऴैवऩ यावये 68

पॅरु तट कण्–विशाल और आयत आँखें; पिऱै नुतलार्क्कु–(बाल) चंद्र सम भाल वालियों को; अॅल्लाम्–सब को; पॉरुन्तु चॅल्वमुम्–स्थायी संपत्ति और; कल्वियुम्–शिक्षा; पूत्तलाल्–खूब प्राप्त रहने से; वैकलुम्–दिनों दिन; वरुन्ति वन्तवर्क्कु–आयास के साथ आये हुओं को; ईतलुम्–दान देना; विरुन्तुम्–अतिथि (सत्कार); अऩ्ऱि–इनके सिवा; विऴैवऩ–(उनके) चाहे; यावै ? –(विषय) क्या हैं ? ६८

कोशल देश की स्त्रियाँ, जो सुन्दर विशाल आँखों वाली और अर्द्ध-चन्द्र सम भाल वाली हैं, अचल धनी भी हैं और शिक्षित भी। अतः वे दीन-हीन आगतों को उनकी चाही वस्तुएँ देना और अतिथियों का भोजन करवाना —इनके सिवा कुछ नहीं चाहतीं। ६८

पिऱैमु हत्तलैप् पॅट्पि ऩिरुम्बुपोऴ्, कुऱैक ऱित्तिरळ् कुप्पैप् परुप्पॉडु
निरैवॅण् मुत्ति ऩिऱत्तरि शिक्कुवै, उऱैव कॉट्टिऩ वूट्टिडन् दोऱुमे 69

ऊट्टु इटम् तॉऱुम्–अऩ्ऩ–सत्रों में; पिऱै मुकम् तलै–अर्द्धचन्द्र के समान धार वाले; पॅट्पिऩ् इरुम्पु–(अच्छा रहने के कारण) प्रिय, तरकारी काटनेवाले लोहे के उपकरणों से; पोऴ् कुऱै–काटकर टुकड़े बनाये गये; करि तिऱळ्–तरकारियों के ढेर; कुप्पै परुप्पॉटु–ढेरों दालों के साथ; निऱै वॅण् मुत्तिऩ् निऱत्तु–खूब सफ़ेद मोती के-से रंग के; अरिचि कुवै–चावलों के ढेर; कॉट्टिऩ उऱैव–उँड़ेल कर पड़े हैं। ६९

उस देश के अन्न-सत्रों में जाकर देखिये। वहाँ पकाने के लिए, लोहे के उपकरण (पीठिका पर स्थिर खड़ी की गई दराँती) तरकारियाँ काटकर जो टुकड़े बने हैं, वे ढेरों हैं; वैसे ही दालों के ढेर और श्वेत मोती के रंग के श्रेष्ठ चावलों के ढेर अपार रूप से लगे मिलते हैं। ६९

❀कलञ्जु रक्कु निदियङ् गणक्किला, निलञ्जु रक्कु निरैवळ नन्मणि
पिलञ्जु रक्कुम् पॅरुदऱ् करियदम्, कुलञ्जु रक्कु सॊळुक्कङ् गुडिक्कॅलाम् 70

कुटिक्कु–प्रजा-जनों को; ऍल्लाम्–सब(को); कलम्–पोत (या नावें); कणक्कु इला–गणना-हीन यानी अत्यधिक; नितियम् चुरक्कुम्–निधियाँ दिलाती है; निलम्–ज़मीन; निऱै वळम् चुरक्कुम्–अधिक (धानों की) समृद्धि दिलाती हैं; पिलम्–खानें; नल् मणि चुरक्कुम्–अच्छे रत्न दिलाती हैं; तम् कुलम्–उन उन के कुल; पॅऱुतऱ्कु अरिय–पाने में कठिन या दुष्प्राप्य; ऑळुक्कम् चुरक्कुम्–सदाचरण (सिखा) देंगे। ७०

कोशल देश-वासियों को नावों द्वारा विविध सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं; ज़मीन से धान प्रचुर परिमाण में मिल जाते हैं; खानों से रत्न आदि मिल जाते हैं। अपने-अपने कुलों द्वारा सदाचरण की शिक्षा मिल जाती है। ७०

कूऱ्ऱ मिल्लयोर कुऱ्ऱमि लामयाल्, शीऱ्ऱ मिल्लैतञ् जिन्दयिन् शॅम्मयाल्
आऱ्ऱ नल्लऱ मल्लदि लामयाल्, एऱ्ऱ मल्ल दिऴितह विल्लये 71

ओर् कुऱ्ऱम् इलामैयाल्–(देशवासियों के पास) कोई दोष (अपराध) नहीं है, अतः; कूऱ्ऱम् इल्लै–अकाल-मृत्यु (की चिंता) नहीं रहती; तम् चिन्तैयिन् चॅम्मैयाल्–अपने अपने मन की नेकी के कारण; चीऱ्ऱम् इल्लै–क्रोध (प्रदर्शन का मौका) नहीं होता; आऱ्ऱल्–पालन (उनका); नल्लऱम् अल्लतु–सद्धर्मेतर का; इलामैयाल्–नहीं है अतः; एऱ्ऱम् अल्लतु–उन्नति के सिवा; इऴितकवु–अवनति; इल्लै–नहीं। (ए–पद्यांत में आनेवाली पूरक ध्वनि।) ७१

उस देश में कोई दुष्कृत्य नहीं करता; इसलिए अकाल मृत्यु का डर नहीं है। सभी अच्छे स्वभाव वाले हैं; अतः क्रोध के लिए स्थान नहीं रहता। सद्धर्म ही करते रहते हैं सब; अतः उन्नति ही होती है; अवनति की बात नहीं होती। कवि का चमत्कार है कि भावों (प्राप्त वस्तुओं) की बात कहने के बाद अभावों की भी सूची देता है। इन अभावों से श्रेय ही होता है, न कि हानि या दुख। ७१

नॅऱिक डन्ड़ु परन्दन नीत्तमे, कुऱिय ऴिन्दन कुङ्कुमत् तोळ्हळे
शिऱिय मङ्गैयर् तेयु मरुङ्गुले, वॅऱिय वुम्मवर मॅन्मलर्क् कून्दले 72

नॅऱि कटन्तु–मार्ग (सीमा) लाँघकर; परन्तन–फैल चले; वॅळ्ळमे–प्रवाह ही; कुऱि अऴिन्तन–चिह्न मिटे; कुङ्कुमम् तोळ्कळे–(स्त्रियों की) कुंकुम के चित्र

आदि से चित्रित भुजाओं के ही; चिऱिय–अल्प या छोटे; मङ्कैयर् तेयुम् मरुङ्कुले–स्त्रियों की (उत्तरोत्तर) क्षीण होती (सी लगनेवाली) कमर ही; वॆऱियवुम्–सुगंधित या नशाग्रस्त हैं; अवर् मलर् मॆऩ् कूऩ्तले–उनके पुष्पालंकृत कोमल केश ही । ७२

देखिए, उस देश में सीमा का या मार्ग का उल्लंघन होता था तो प्रवाह वह काम करते थे, न कि मनुष्य। स्त्रियों के अंगों पर कुंकुम के लेप से चित्रकारी बनती है। धान के ढेरों पर पहचान के लिए निशान लगाये जाते हैं। चित्रकारी का निशान मिट जाता है, प्रेमियों के आलिंगन से; और धान वाले वे निशान नहीं मिटते, अपहारी के न होने के कारण। अल्प या क्षीण वहाँ और कोई चीजें नहीं थीं सिवाय स्त्रियों की कटियों के। गन्धयुक्त था स्त्रियों का केश ही ! गन्धयुक्त के तमिऴ शब्द का श्लेष-अर्थ है नशाबाज या विक्षिप्त। अतः वहाँ नशाबाज या विक्षिप्त कोई दूसरा नहीं था। ७२

अहिलि डुम्बुहै यट्टिलि डुम्बुहै, नहलि ऩालै नऱुम्बुहै नाऩ्मऱै
पुहलुम् वेळ्वियिऱ् पूम्बुहै योडळाय्, मुहिलिऩ् विम्मि मुयङ्गिऩ वॆङ्गणुम् 73

इटुम् अकिल् पुकै–प्रज्वलित अगरु का धुआँ; अट्टिल् इटुम् पुकै–रसोई-घरों में उठनेवाला धुआँ; नकल् इऩ् आलै नऱु पुकै–विशिष्ठ दिखनेवाले मधुर (गुड़ बनानेवाले) स्थानों में उठनेवाला धुआँ, और; नाऩ्कु मऱै पुकलुम्–चार वेदों में विहित; वेळ्वियिल् पू पुकैयॊटु–यज्ञों में उठनेवाले पवित्र धुएँ के साथ; अळाय्–मिलकर; मुकिलिऩ् ऎङ्कणुम् विम्मि–मेघों के समान सब जगह फैलकर; मुयङ्किऩ–व्याप्त हुए। ७३

उस देश में घरों में पूजा के समय पर, या स्त्रियों के केशों को सुखाकर सुगन्धित करने के लिए अगरु का धुआँ लगाया जाता था। रसोईघरों से चूल्हों का धुआँ उठता था। गुड़ जहाँ बनाया जा रहा था वहाँ भट्ठियों से धूम्र उठता था। वेदविहित यज्ञ जहाँ हो रहे थे वहाँ होम-कुण्डों से धूम्र आ रहा था। सब धुआँ मिलकर मेघों के समान उठकर आकाश भर में व्याप्त हो गया। ७३

इयल्बुडै पॆयर्वऩ मयिऩ्मणि यिऴैयिऩ्
वॆयिलपुडै पॆयर्वऩ मिळिर्मुलै कुऴलिऩ्
पुयल्पुडै पॆयर्वऩ पॊऴिलवर् विऴियिऩ्
कयल्पुडै पॆयर्वऩ कडिकमऴ् कऴनि 74

अवर्–उन (उस देश की स्त्रियों) की; इयल–छटा (के सामने); पुटै पॆयर्वऩ–हारकर एक ओर हटनेवाले; मयिल्–मोर; मिळिऱ् मुलै–सुन्दर दिखनेवाले स्तन (स्तनों पर के); मणि इऴै–रत्नाभरण (के सामने); वॆयिल् पुटै पॆयर्वऩ–धूप हारकर एक ओर हट जाती है; कुऴलिऩ्–केश के सामने; पुयल्–मेघ; पॊऴिल् पुटै पॆयर्वऩ–बागों में (हार मानकर) जा छिपते हैं; अवर् विऴियिऩ्–उनकी आँखों के

सामने; कयल्—मछलियाँ; कटि कमऴ् कऴत्ति—सुगंध बिखेरनेवाले खेतों में; पुटै पॅयर्वत्त—छिप जाती हैं। ७४

कोशल देश की स्त्रियों की शरीर-छवि के सामने मोर की छवि टिक नहीं पाती। उनके स्तनों पर आरूढ़ रत्नाभरणों के सामने (अचलारूढ़) सूर्य की रश्मि हार मान लेती है। उनके काले घने केशों के सामने मेघ हार ही नहीं मानते बल्कि जाकर उपवनों में छिप जाते हैं। ठीक उसी तरह मछलियाँ उनकी आँखों से हारकर खेतों में जाकर छिप जाती हैं। ७४

इडैयिऱ् महळिर्ह ळॅऱिपुऩऩ् मरुहक्, कुडैपवर् तुवरिद ऴलर्वऩ कुमुदम्
मडैपॅय रऩमवर् मडनडै पयिलुम्, कडैशियर् मुहमॅऩ मलर्वऩ कमलम् 75

इटै इऱ—कमर टूट जाय, ऐसा; ऍऱि पुऩल् मरुक—तरंग फेंकते हुए पानी विलोड़ित हो ऐसा; कुटैपवर्—स्नान करनेवाली; कटैचियर् मकळिर्—कृषक-रमणियों के; तुवर् इतऴ्—लाल अधरों की तरह; अलर्वऩ—खिलते हैं; कुमुतम्—कुमुद; मटै पॅयर् अऩम्—नालियों में संचार करनेवाले हंस; अवर् मट नटै पयिलुम्—उनकी मृदु चाल का अनुकरण और अभ्यास करते; मुकम् ऍऩ—मुखों के समान; मलर्वऩ—खिलनेवाले; कमलम्—कमल हैं। ७५

स्त्रियों के अन्य अंग भी सुन्दर हैं। नदी में वे कमर मटकाती, जल को विलोडती स्नान करती हैं। तब कुमुद उनके लाल अधर देखते हैं और उन्हीं की नकल में खिलते हैं। नालियों में संचार करनेवाले हंस उनसे चाल सीखते हैं। कमल उनके मुखों को देखकर खिलते हैं। ७५

विदियिऩै नहुवऩ वयिल्विऴि पिडियिऩ्, गदियिऩै नहुवऩ ववर्नडै कमलप्
पॉदियिऩै नहुवऩ पुणर्मुलै कलैवाऩ्, मदियिऩै नहुवऩ वऩिदयर वदऩम् 76

वऩितैयर्—(वहाँ की) स्त्रियों की; अयिल् विऴि—तीक्ष्ण आंखें; वितियिऩै नकुवऩ—विधाता का परिहास करनेवाली हैं; अवर् नटै—उनकी चाल; पिटियिऩ् कतियिऩै—हथिनी की चाल का; नकुवऩ—परिहास करनेवाली है; पुणर्मुलै—सटे रहनेवाले स्तन; कमलम् पॉतियिऩै—कमल-कलियों का; नकुवऩ—परिहास करनेवाले हैं; वतऩम्—उनके वदन; कलै वाऩ् मतियिऩै नकुवऩ—कलापूर्ण श्वेत (राका) चंद्र का परिहास करनेवाले होते हैं। ७६

और; उनकी तीक्ष्ण आँखें ऐसी कि वे ब्रह्मा का भी उपहास कर सकती हैं। क्योंकि वह उनके उपमान-योग्य और कोई वस्तु सृजित नहीं कर सकते। उनकी चाल हथिनी की चाल को, उनके स्तन कमल-कलियों को, और उनका वदन राका को उपहसित कर देते हैं। ७६

पहलिऩॊ डिहलुव पडुर्मणि मडवार्, नहिलिऩॊ डिहलुव नळिवळ रिळनीर्
तुहिलिऩॊ डिहलुव शुदैपुरै नुरैकार्, मुहिलिऩॊ डिहलुव कडिमण मुरशम् 77

पटर् मणि—विविध मणियाँ; पकलिऩॊटु इकलुव—सूर्य से प्रतिद्वन्द्विता करती हैं; नळि वळर् इळ नीर्—खूब समृद्ध डाभ; मटवार नकिलिऩॊट इकलुव—तरुणियों के

स्तनों से प्रतिद्वन्द्विता करते हैं। चुतै पुरै नुरै–अमृत-सम जल पर उठनेवाले फेन; तुकिलिन्नॊट्टु इकलुव–उन स्त्रियों के वस्त्रों से प्रतियोगिता करते हैं। कटि मण मुरचङ्कळ्–श्रेष्ठ (और) विवाह के समय बजनेवाले ढोल; कार् मुकिलिन्नॊट्टु इकलुव–जल गर्भित मेघों से प्रतियोगिता करते हैं। ७७

(वर्णन में तुलना का बड़ा मूल्य रहता है। तुलना के प्रकार भी अनेक हैं। यहाँ दो वस्तुओं में प्रतियोगिता दिखायी जाती है और प्रस्तुत वस्तुएँ उस देश के वर्णन में शोभा की वृद्धि करनेवाली हैं।) उस देश के लोगों के आभूषणों में जड़े रत्नों (की कांति) और सूर्य (की ज्योति) में; पुष्ट डाभों और रमणियों के स्तनों में; अमृत सदृश जल के झाग और लोगों के वस्त्रों में; विवाह के अवसर में बजनेवाले मृदंग या ढोल और मेघों में प्रतियोगिता है। ७७

कारॊडु निहर्वऩ कटिपॊऴिल् कऴऩिप्, पोरॊडु निहर्वऩ पॊलऩ्वरै यणैशूऴ्
नीरॊडु निहर्वऩ निऱैकड ऩिदिशाल्, ऊरॊडु निहर्वऩ विमैयव रुलहम् 78

कार्–मेघ; कटि पॊऴिलॊट्टु निकर्वऩ–(उस देश के) उपवनों के समान हैं; पॊलऩ् वरै–स्वर्णमय (पर्वत) शिखर; कऴऩि पोर् ऒट्टु–खेतों के पास लगी खरहियों के साथ; निकर्वऩ–तुलना करते हैं। निऱै कटल्–(जल) भरा समुद्र; अणै चूऴ् नीरॊट्टु निकर्वऩ–बांध से बंधकर पड़े जल-विस्तार के साथ तुलना करता है; इमैयवर् उलकम्–देवों के लोक; निति चाल् ऊरॊट्टु–निधियों से पूर्ण बस्तियों की; निकर्वऩ–समता कर सकते हैं। ७८

(इस पद्य में समानता बतायी जाती है।) मेघों और घने अन्धकार-पूर्ण उपवनों में; स्वर्ण (पीले) रंग के पर्वत शिखरों और खेतों के पास लगी खरहियों या ढेरों में; समुद्र और बाँध के जल-विस्तार में; देव-लोक और समृद्ध नगरों या गाँवों में समानता पायी जाती है। ७८

नॆऩ्मलै यल्लऩ निरैवरु तरळम्, शॊऩ्मलै यल्लऩ तॊडुकड लमिर्दम्
नऩ्मलै यल्लऩ नदितरु निदियम्, पॊऩ्मलै यल्लऩ मणिपडु पुळिऩम् 79

नॆल् मलै अल्लऩ–धानों के पर्वत (सम ढेर) नहीं हैं यदि; निरै वरु तरळम्–पंक्तियों में लगे मोतियों के ढेर; चॊल् मलै अल्लऩ–वाणी-गिरियाँ (शब्द-समूह) जो नहीं हैं वे; तॊट्टु कटल् अमिर्तम्–गहरे (क्षीर-) सागर का अमृत है; नल् मलै अल्लऩ–अच्छे पर्वत (जो) नहीं हैं वे; नति तरु नितियम्–नदियों से लायी गयी निधियाँ हैं; पॊऩ् मलै अल्लऩ–स्वर्ण-गिरियाँ जो नहीं हैं वे; मणि पटु पुळिऩम्–मणियों से मिश्रित बालू के ढेर हैं। ७९

वहाँ ढेर जो लगे हैं वे या तो धान के अम्बार हैं; या वे नहीं हैं तो मोतियों के ढेर हैं। वैसे ही रमणियों की मधुर बोली नहीं है; वह अमृत है। मामूली पर्वत यदि नहीं हैं, तो वे, समझिये, नदियों द्वारा लायी गयी निधियों के ढेर हैं; अगर ये ढेर नहीं है तो वे विविधि रत्नों से मिश्रित बालू के ढेर हैं। ७९

पऩ्दिऩै यिळैयवर् पयिलिड मयिलूर्, कऩ्दऩै यऩैयवर् कलैतॆरि कऴहम्
शऩ्दऩ वऩमल शण्पक वऩमाम्, नन्दऩ वऩमल नऱैविरि पुऱवम् 80

इळैयवर् पऩ्तिऩै पयिल् इटम्–कन्याओं के गेंद खेलनेवाले स्थान; चऩ्तऩ वऩम् अल–चंदन-वन नहीं; चण्पक वऩम्–चंपा के वन (बन जाते) हैं; मयिल् ऊर्–मयूर-वाहन; कऩ्तऩै अऩैयवर्–स्कंददेव के समान रहनेवाले; कलै तॆरि कऴकम्–कलाओं का अभ्यास करने के स्थान; नऩ्तऩ वऩम् अल–पुष्प वन नहीं; नऱै विरि पुऱवम्–सुवासपूर्ण चमेली की वाटिकायें हैं । ८०

उस देश में युवतियों के गेंद खेलने के स्थान, और स्कन्ददेव के समान सुन्दर और बलवान तरुणों के धनुर्विद्या आदि का अभ्यास करने के स्थान क्रमशः चन्दन वन नहीं, चम्पा वन हैं; और नन्दन वन नहीं, चमेली की वाटिकायें हैं। भाव यह कि स्त्रियों के शरीरों की गन्ध चम्पा की सी है और पुरुषों के शरीर की चमेली की सी। उन उद्यानों में इनके शरीरों की गन्ध उन उद्यानों के पुष्पों की गन्ध पर हावी आ जाती है। (इस पद्य की विशिष्टता उपर्युक्त उपमानों और उपमेयों को क्रमशः रखने में है)। ८०

कोकिल नविल्वऩ विळैयवर् कुदलैप्, पाहियल् किळविक ळवर्पयि ऩडमे
केकय नविल्वऩ किळरिळ वळैयिऩ्, नाहुह ळुमिऴ्वऩ नहैपुरै तरळम् 81

कोकिलम् नविल्वऩ–कोकिल अभ्यास करते हैं; इळैयवर्–तरुणियों की; कुतलै पाकु इयल् किळविकळ्–तोतली, चाशनी-सी बोलियों का; केकयम् नविल्वऩ–मोर अभ्यास करते हैं; अवर् पयिल् नटमे–उनसे अभ्यस्त नाच ही; किळर् इळ वळैयिऩ् नाकुकळ्–दर्शन-रम्य शंख की तरुणियां (सीपियां); उमिऴ्वऩ–प्रकट करती हैं; नकै पुरै तरळम्–(उनके) दांतों सदृश मोती । ८१

उस देश के कोकिल, स्त्रियों की तोतली, चाशनी सी मधुर बोली का अभ्यास करते हैं; मोर उनके विविधि नृत्यों का अभ्यास करते हैं। सीपियाँ जो मोती निकालती हैं वे उन स्त्रियों के दाँतों के समान हैं। ८१

पऴैयर्द मऩैयऩ पऴनऱै नुहरुम्, उऴवर्द मऩैयऩ वुऴुतॊऴिल् पुरियुम्
मऴवर्द मऩैयऩ मणवॊलि यिशैयिऩ्, किऴवर्द मऩैयऩ किळैपयिल् वळैयाऴ् 82

पऴैयर् तम् मऩैयऩ–मद्य-विक्रेताओं के घरों में मिलनेवाली हैं; नुकरुम् पऴ नऱै–पेय विविध तरह की ताड़ियां; उऴवर् तम् मऩैयऩ–कृषकों के घरों में मिलनेवाले हैं; उऴु तॊऴिल्–कृषि कर्म संबंधी सामान; मऴवर् तम् मऩैयऩ–तरुण पुरुषों के घरों में प्राप्य हैं; मण ऒलि–विवाहोचित मंगल स्वर; इचैयिऩ् किऴवर् तम् मऩैयऩ–गवैयों के घरों में प्राप्य हैं; किळै पयिल्–राग-उपरागों के अभ्यास-योग्य; वळै याऴ्–झुके दण्डवाली वीणा । ८२

ताड़ी बेचनेवालों के यहाँ पीने के लिए प्रचुर रूप से ताड़ी के कई प्रकार प्राप्य रहते हैं। कृषकों के घर में कृषि के सारे उपकरण और

सामान; विवाह करनेवाले तरुणों के यहाँ सब तरह के मंगल-वाद्यों का स्वर; गवैयों के यहाँ सुन्दर वीणा-वाद्य पाए जाते हैं। ८२

❀ **कोदैहळ् शॉरिवऩ कुळिरिळ नऱवम्, पादैहळ् शॉरिवऩ परुमणि कऩहम्**
ऊदैहळ् शॉरिवऩ उयिरुरु ममुदम्, कादैहळ् शॉरिवऩ शॅविनुहर् कऩिहळ् 83

कोतैकळ्–मालायें; चॊरिवऩ–जो चूती हैं (बरसाती) हैं (वे); कुळिर् इळ नऱवम्–शीतल नव मधु (शहद) है; पातैकळ् चॊरिवऩ–मार्ग बरसाते हैं; परुमणि कऩकम्–बड़े-बड़े रत्न और स्वर्ण; ऊतैकळ् चॊरिवऩ–ठंडी हवायें बरसाती (ला देती) हैं; उयिर् उरु अमुतम्–प्राणदायिनी जल (-बूँदें); कातैकळ्–गाथाएँ; चॊरिवऩ–बरसाती हैं; चॅवि नुकर् कऩिकळ्–कानों से आस्वाद्य रसों का आनन्द। ८३

लोगों की पहनी पुष्प-मालाएँ शीतल नव मधु तथा जल और थल-मार्ग रत्न और स्वर्ण बरसाते हैं। दोनों प्रकार के मार्गों से सम्पत्ति खिचकर उस देश में आती है। शीतल पवन सीकर बरसाते हैं और गाथाएँ रस बरसाती हैं। ८३

❀ **इडङ्गॉळ शायल्कण् डिळैञर् शिऩ्दैबोल्**
तडङ्गॉळ् शोलैवाय् मलर्कॉय् ताळ्हुळल्
वडङ्गॉळ् पूण्मुलै मडऩ्दै मारॉडुम्
तॉडर्ऩ्दु पोवऩ तोहै मञ्ञैये 84

इटम् कॊळ्–(स्त्रियों को) आश्रय बनाकर रही; चायल् कण्टु–छवि देखकर; इळैञर् चिऩ्तै पोल्–(जो पीछे-पीछे चलता है उस) तरुणों के मन के समान; तटम् कॊळ् चोलै वाय्–विस्तृत उपवन में; मलर् कॊय्–फूल चुननेवाली; ताळ् कुळल्–लंबी लटकनेवाली वेणी; वटम् कॊळ् पूण् मुलै–कई लड़ियों वाले हारों से शोभायमान स्तनोंवाली; मटऩ्तै मारॊटुम्–स्त्रियों के (साथ); तोकै मञ्ञै–कलापी मोर; तॊटर्ऩ्तु पोवऩ–पीछे-पीछे चलते हैं। ८४

वहाँ की सुन्दरियों की सुन्दरता से खिचकर तरुणों का मन उनके पीछे-पीछे जाता है; और मोर भी उनके पीछे-पीछे, उनको मोरनियाँ समझकर चलते हैं, जब वे लम्बे लटकनेवाले केश, और आभरण-भूषित स्तन-वालियाँ उपवन में फूल चुनने जाती हैं। ८४

❀ **वण्मै यिल्लयोर् वऱुमै यिऩ्मयाल्, तिण्मै यिल्लनेर् शॅरुन रिऩ्मयाल्**
उण्मै यिल्लपॉय् युरयि लामयाल्, ऑण्मै यिल्लपल् केळ्वि योङ्गलाल् 85

ओर वऱुमै इऩ्मैयाल्–कोई दरिद्रता नहीं रहने से; वण्मै इल्लै–दानशीलता (देखने में आती) नहीं; नेर् चॅरुनर् इऩ्मैयाल्–समक्ष समर करनेवाले नहीं, इसलिए; तिण्मै इल्लै–बल नहीं; पॊय् उरै इलामैयाल्–असत्य-कथन नहीं है, इसलिए; उण्मै इल्लै–सत्य (का विशेष महत्व) नहीं; पल् केळ्वि ओङ्कलाल्–अनेक (तरह के) श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञान के (होने के) कारण; ऑण्मै इल्लै–ज्ञान का प्रकाश नहीं है। ८५

वहाँ कोई दरिद्र नहीं; इसलिए दानशीलता भी नहीं रहती। लड़नेवाले ही नहीं, तो वीरता (का प्रदर्शन) कैसे हो ? असत्य का कहीं नामोनिशान नहीं और इसलिए सत्य कथन की बात ही नहीं उठती । सब सुन-सुनकर अच्छे ज्ञानी हो रहते हैं; इसलिए ज्ञान की कोई महिमा चर्चित नहीं होती । ८५

ऍळ्ळु मेऩ्लु मिऱुङ्गुज् जामयुम्, कॉळ्ळुङ् कॉळ्ळयिऱ् कॉणरुम् बण्डियुम्
अळ्ळ लोङ्गळत् तमुदिऩ् पण्डियुम्, तळ्ळु नीर्मयिऱ् ड्लैम यङ्गुमे 86

ऍळ्ळुम्–तिल; एऩ्लुम्–लाल कोदों और; इऱुङ्कुम्–ज्वार; चामैयुम्–मडुआ (और); कॉळ्ळुम्–कुलथी; कॉळ्लैयिल्–अधिक परिमाण में; कॉणरुम् पण्टियुम्–(लाद) लानेवाली गाड़ियाँ और; अळ्ळल् ओङ्कु अळऩ्तु–बटोर लेने (के काम) अधिक जहाँ होते हैं उन लोनारों से; अमुतिऩ् पण्टियुम्–नमक (-लदी) गाड़ियाँ; तळ्ळुम् नीर्मैयिऩ्–ठेलने के सिलसिले में; तलै मयङ्कुम्–आपस में मिश्रित हो सट जाती हैं । ८६

उस देश के मार्गों में तिल, कोदों, ज्वार, मडुआ और कुलथी इन चीज़ों की भरी गाड़ियाँ, और नमक के उत्पत्ति-स्थानों से नमक लादे आनेवाली गाड़ियाँ इतनी संख्या में चलती हैं कि वे मिश्रित हो जाती हैं । ८६

उयरुज् जार्विला वुयिर्हळ् शॅय्विऩैप्, पॅयरुम् वल्कदिप् पिऱक्कु माऱुपोल्
अयिरुन् देनुमिऩ् पाहु मायरूर्त्, तयिरुम् वेरियुन् दलैम यङ्गुमे 87

उयरुम् चार्वु इला उयिर्कळ्–उद्गति पाने के साधन न रखनेवाले जीव; चॅय् विऩै–अपने कृतकर्मों (के अनुसार); पॅयरुम् पल् कति–बदल बदलकर आनेवाले विविध शरीरों में; पिऱक्कुम्–जन्म लेने के; आऱु पोल्–प्रकार के समान; अयिरुम्–खाण्ड; तेऩुम्–शहद और; इऩ पाकुम्–मधुर चाशनी और; आयर् ऊर् तयिरुम्–गोप-ग्रामों के दही; वेरियुम्–ताडी सब; तलै मयङ्कुम्–आपस में घुल-मिल जाते हैं । ८७

मोक्ष पाने का साधन जुटा न सकनेवाले जीव अपने कर्मों के बन्धन में पड़कर वारी-वारी से विविध शरीरों में जन्म लेते हैं । वैसे ही खाण्ड, शहद, चाशनी और दही स्थानांतरित हो जाते हैं यानी खाण्ड और चाशनी वन प्रदेश के हैं; शहद पर्वत प्रदेश का और दही खेती के प्रदेश का । वे सब अपने-अपने जन्म के प्रदेश से अन्य प्रदेशों में ले जाकर बेचे जाते हैं । ८७

कूऱु पाडलुङ् गुऴलिऩ् पाडलुम्, वेऱु वेऱुनिऩ् ऱिशैक्कुम् वीदिवाय्
आऱु माऱुम्वन् दॅदिर्न्द दामॆऩ्ऩच्, चाऱुम् वेळ्वियुन् दलै मयङ्गुमे 88

कूऱु पाटलुम्–मौखिक गीत; कुऴल् इऩ् पाटलुम्–बाँसुरी से बजाये जानेवाले गीत; वेऱु वेऱु निऩ्ऱु इचैक्किऩ्ऱ–अलग-अलग रहकर (जिन में) स्वरित होते हैं उन; वीतिवाय्–वीथियों में; आऱुम् आऱुम् वन्तु ऍतिर्न्ततु आम् ऍऩ्–(दो) अलग-अलग नदियाँ आमने-सामने आ गयीं, ऐसे; चाऱुम्–देवोत्सव देखने आए लोगों की भीड़;

और; वॅळ्वियुम्–विवाहोत्सव में शरीक होने आए हुओं की भीड़; तलै मयङ्कुम्–आपस में मिश्रित हो जाती हैं। ८८

वीथियों में भी यह विनोद चलता है। वीथियों में मौखिक गीत और वाद्य-संगीत का अलग-अलग प्रबन्ध है। उन वीथियों में एक ओर से देवता के उत्सव देखनेवाले लोगों की भीड़ आती है। दूसरी ओर से विवाहोत्सव में भाग लेने आनेवालों की भीड़ आती है। दोनों, दो नदियों के समान आकर मिल जाती हैं। तब विवाहोत्सव वाला देवता के उत्सव की भीड़ में मिल गया और उसका इसमें। इस तरह मिश्रण हो जाता है। ८८

मूक्किऱ् ऱाक्कुऱु मूरि नऩ्दुनेर्, ताक्किऱ् ऱाक्कुऱु पऱैयुऩ् दण्णुमै
वीक्किऱ् ऱाक्कुऱुम् विळियुमळ्ळर्तम्, वाक्किऱ् ऱाक्कुऱु मॊलियिऩ् मायुमे 89

मूक्किल् ताक्कु उऱुम्–'नाक' में फूँककर; मूरि नऩ्तुम्–गंभीर, शंख-नाद; नेर् ताक्किल्–चोब से; ताक्कुऱु पऱैयुम्–प्रहारित डंके का नाद; तण्णुमै–मर्दल का; वीक्किल् ताक्कु उऱुम् विळियुम्–डोरों से कसे होने के कारण स्पंदन के साथ उठनेवाला नाद; मळ्ळर् तम्–वीरों (सैनिकों) के; वाक्किल ताक्कु उऱुम् ऒलियिऩ्–मुख से उठनेवाले नारों के नाद में; मायुम्–लीन हो जायँगे। ८९

उस देश में सभी तरह की ध्वनियाँ उठती हैं— शंख बजाने की ध्वनि, डंका बजाने की ध्वनि; मर्दल बजाने की ध्वनि और वीरों के नारे (या कृषकों के बैलों को हाँकने का शोर)। पर वीरों के नारों का शोर ही सबसे बलवान है और अन्य ध्वनियाँ उसमें लय हो जाती हैं। ८९

तालि यैम्बडै तऴुवु मार्बिडै, मालै वायमु दॊऴुहु मक्कळैप्
पालि नूट्टुवार् शॆङ्गै पङ्गयम्, वाऩि लावुऱक् कुविदऩ् माऩुमे 90

ऐम्पटै तालि तऴुवुम् मार्पिटै–(श्रीविष्णु के) पंचायुध-(की नकल में बने स्वर्ण-चिह्न) बँधा मंगल-सूत्र जिस पर है उस वक्ष पर; मालै वाय् अमुतु ऒऴुकुम् मक्कळै–माला की तरह (मुख से) लार टपकाने वाले नन्हे बच्चों को; पालिऩ् ऊट्टुवार् चॆङ्कै–दूध पिलानेवाली माताओं के लाल हाथ; वाल् निला उऱ–उज्ज्वल चाँदनी के लगने से; पङ्कयम् कुवितल् माऩुम्–कमल के निमीलन की समता करता है। ९०

वहाँ की माताएँ अपने बच्चों को छाती पर लगाये, हाथ में दूध-भरा शंख ले उसके द्वारा उनको दूध पिला रही हैं। बच्चे की छाती पर हार है जिसमें श्रीविष्णु के पंचायुध की शकल में बने स्वर्ण-पदक आदि हैं। यह दोष-निवारक समझा जाता है। उनके मुख से लार टपकती है जो हार की तरह उनके वक्ष पर बहती है। माता का निमीलित लाल हाथ देख कमल का स्मरण होता है, जो चन्द्र को देख बन्द होता है। यहाँ शंख, चन्द्र है। ९०

पॊऱ्पि ऩिऩ्ऱऩ पॊलिवु पॊय्यिला, निऱ्पि ऩिऩ्ऱऩ नीदि मादरार्
अऱ्पि ऩिऩ्ऱऩ वऱङ्ग ळऩ्ऩवर्, कऱ्पि ऩिऩ्ऱऩ काल मारियै 91

पॊऱ्पिऩ्–आन्तरिक सुन्दरता (श्रेष्ठ गुण-पूर्णता) की ही तरह; पॊलिवु–बाहरी (शारीरिक) सुन्दरता भी; निऩ्ऱऩ–रही; पॊय्इला निऱ्पिऩ्–असत्य-रहित भाव के आधार पर; नीति निऩ्ऱऩ–नैतिकता खड़ी रही; अऱङ्कळ्–धार्मिक आचरण; मातरार् अऱ्पिऩ् निऩ्ऱऩ–स्त्रियों के प्रेम के कारण टिके रहे; अऩ्ऩवर्–उनके; कऱ्पिऩ्–सतीत्व के कारण; काल मारि–मौसमी वारिशें; निऩ्ऱऩ–(बराबर) होती रहीं । ए । ९१

उस देश के लोग शीलवान हैं; तभी उनके सौन्दर्य का महत्व है। असत्याचरण नहीं करते; इसलिए नैतिक व्यवहार स्थिर हैं; स्त्रियों के प्रेम के कारण धर्म-पालन उचित रूप से होता है। स्त्रियाँ सतीत्व का पालन करनेवाली होती हैं, इसलिए वक्त की वारिश होती है । ९१

शोलै मानिलन् दुरुवि यावरे, वेलै कण्डुता मीळ वल्लवर्
शालुम् वार्पुऩऱ् चरयु वुम्बल, कालि ऩोडियुङ् गण्ड दिल्लयै 92

चोलै मा निलम्–बाग, बगीचों से भरे उस देश को; तुरुवि–खोजता जाकर; वेलै कण्टु मीळ वल्लवर्–सीमा देखकर लौट आ सकनेवाले; यावर्–कौन हैं; चालुम् वार् पुऩल् चरयुवुम्–बहु प्रवतहमान जल वाली सरयू ने भी; पल कालिऩ् ओटि–अनेक नालों (पैरों) में दौड़कर भी; कण्टतु इल्लै–देखा नहीं है; ए–ताम् । ९२

उस देश का सारा विस्तार देख आना कठिन है। बागों और उद्यानों से भरा वह देश इतना विशाल है कि कोई यह दावा नहीं कर सकता कि हम अन्वेक्षणार्थ गये और सीमायें देख आये। स्वयं सरयू भी अपने सैंकड़ों नालों में (जो उसके पैर कहे जा सकते हैं) चलकर सीमा देख नहीं सकी है । ९२

वीडु शेरुनीर् वेलै काऩ्मडुत्, तूडु पेरिनु मुलैवि लानलम्
कूडु कोशल मॅऩ्ऩुङ् गोदिला, नाडु कूऱिऩा नहरङ् गूऱुवाम् 93

काल् मटुत्तु–(प्रलय-कालीन) पवन के झोंके खाकर; वीटु चेरुम् नीर् वेलै–तीर (मर्यादा) लांघकर आनेवाला समुद्र; ऊटु पेरिऩुम्–(उस देश के) ऊपर आ जाय तो भी; उलैवु इला नलम् कूटु–नष्ट न होने का स्वभाव-विशेष रखनेवाले; कोचलम् अॅऩ्ऩुम्–कोशल नाम के; कोतु इला–दोषहीन; नाटु कूऱिऩोम्–देश की बात कही; नकरम् कूऱुवाम्–नगर (अयोध्या) (की बात) कहेंगे । ९३

वह ऐसा विशिष्ट देश है जिसको प्रलयकाल में मर्यादा पार कर फैलने वाला समुद्र भी नष्ट नहीं कर सकता। उस देश का हमने वर्णन किया। अब अयोध्या के महानगर का वर्णन करेंगे । ९३

3 नहरप्पडलम् (नगर की महिमा)

शॅव्विय मदुरञ् जेर्न्दनऱ् पॉरुळिऱ् चीरिय कूरिय तीञ्जॉल्
वव्विय कविञ रऩ्नैवरुम् वडनूऩ् मुऩिवरुम् बुहऴ्न्ददु वरम्बिल्
ॲव्वुल हत्तो रियावरुन् दवञ्जॅय् देऱुवा ऩादरिक् किऩ्ऱ
अव्वुल हत्तो रिऴिवदऱ् करुत्ति पुरिहिऩ्ऱ दयोत्तिमा नहरम् 94

अयोत्ति मा नकरम्–अयोध्या का महानगर; चॅव्विय–श्रेष्ठ; मतुरम् चेर्न्त–रसात्मक; नल् पॉरुळिल् चीरिय–अच्छे अर्थ देने में विदग्ध; कूरिय–सूक्ष्मता-क्षम; तीम् चॉल्–मधुर शब्दों पर; वव्विय–अधिकार रखनेवाले; कविञर् अऩैवरुम्–कवि सब; वट नूल् मुऩिवरुम्–उत्तरी भाषा (संस्कृत) के मुनिगण (द्वारा); पुकऴ्न्ततु–प्रशंसित है; वरम्पु इल्–अपार; ॲव्वुलकत्तोर् यावरुम्–किसी भी लोक के सब; तवम् चॅय्तु–तपस्या करके; एऱुवाऩ् आतरिक्किऩ्ऱ–(जहाँ) चढ़कर प्रवेश करने की कामना करते हैं; अ उलकत्तोर्–उस लोक के वासी; इऴिवतऱ्कु–उतर नीचे आने की; अरुत्ति पुरिकिऩ्ऱतु–कामना करने का लक्ष्य-स्थान रहता है। ९४

अयोध्यानगर की यह महिमा है कि, प्रसादगुण-पूर्ण, रससिक्त, अर्थ-गर्भित और सूक्ष्म भावों के द्योतक शब्दों को अपने वश में रखनेवाले सभी भाषाओं के कवियों ने उसकी प्रशंसा की है; संस्कृत के मुनियों ने उसको सराहा है। और स्वयं श्रीवैकुंठलोक के, जहाँ किसी भी लोक के लोग आरोहण करके प्रवेश पाने की कामना करते हैं, वासी भी अयोध्या में उतर आना चाहते हैं। ९४

निलमहण् मुहमो तिलहमो कण्णो निऱैनॅडु मङ्गल नाणो
इलहुपूण् मुलैमे लारमो वुयिरि ऩिरुक्कयो तिरुमहट् किऩिय
मलर्हॉलो मायोऩ् मारबिऩन् मणिहल् वैत्तपॉऱ् पॅट्टियो वाऩोर्
उलहिऩ्मे लुलहो वूऴियि ऩिऱुदि युऱैयुळो यादॅऩ वुरैप्पाम् 95

निलमकळ् मुकमो–क्या भूदेवी का मुख है; तिलकमो–तिलक; कण्णो–आँखें; पूण् इलकुम्–आभरण-विभूषित; मुलै मेल् आरमो–स्तनों पर (के) मुक्ताहार; निऱै–उत्तम; नॅटु–महिमामय; मङ्कल नाणो–मंगल-सूत्र; उयिरिऩ् इरुक्कैयो–प्राणों का वासस्थान; तिरु मकट्कु इऩिय मलर् कॉल् ओ–श्री लक्ष्मीदेवी का प्रिय (कमल-)पुष्प; मायोऩ् मार्पिल्–मायावी (विष्णु देव) के वक्ष के; नल् मणिकळ् वैत्त पॉऩ् पॅट्टियो–श्रेष्ठ कौस्तुभ मणि आदि आभरण रखने का स्वर्ण-निर्मित सन्दूक; वाऩॉर् उलकिऩ् मेल् उलको–देवलोक से बढ़कर श्रेष्ठ (वैकुंठ) लोक; ऊऴियिऩ् इऱुति उऱैयुळो–युगांत में सभी जीवों का आश्रय-स्थान (श्री विष्णु का उदर); यातु ॲऩ–कौन सा है, यह; उरैप्पाम्–कहें। ९५

क्या यह अयोध्या भूदेवी (श्रीमन्नारायण की दो देवियों में एक) का मुख है? उनके मुख का तिलक है? मुख की आँखें हैं? वक्ष पर रहनेवाले आभरणों में मुख्य मुक्ताहार है? या अन्य आभरणों को महिमा प्रदान करनेवाला मंगलसूत्र है? या उनका जीव-स्थान है?

या श्री लक्ष्मीदेवी (श्रीविष्णु की देवियों में दूसरी) का आसन, कमल है? या वह स्वर्ण-मंजूषा है जिसमें श्रीविष्णु के कौस्तुभमणि आदि आभूषण रक्षित किये गये हैं ? या स्वर्ग से ऊँचा या श्रेष्ठ श्रीवैकुंठलोक है ? या प्रलयकाल में, जहाँ सभी जीव समा लिये जाते हैं वह श्रीविष्णु का दिव्य उदर है ? क्या कहा जाय ? । ९५

उमैक्कोरु पाहत् तोरुवनु मिरुवरक् कोरुतनिक् कोऴुननु मलर्मेल्
कमैप्पेरुञ् जॅल्वक् कडवुळु मुवमै कण्डिल रङ्गदु काण्बान्
अमैप्परुङ् गाद लदुपिडित् तुन्द वन्दरञ् जन्दिरा दित्तर्
इमैप्पिलर् तिरिव रदुवला लिदनुक् कियम्बला मेदुमऱ् ऱियादो 96

उमैक्कु ऑरु पाकत्तु ऑरुवनुम्–उमा को (शरीर) का एक भाग देनेवाले एक देव; इरुवर्क्कु ऑरु तनि कोऴुननुम्–दो (भूदेवी, श्रीदेवी) का एक पति और; अलर् मेल्–(श्री विष्णु के) नाभिकमल पर उद्भूत; कमै पॅरुम् चॅल्वम् कटवुळुम्–क्षमा-निधि (ब्रह्मा) देवता; उवमै कण्टिलर्–उस नगर की उपमा नहीं जानी है; अतु काण्पान्–उसको देखने के लिए; अमैप्पु अरु–अदम्य; कातल् अतु पिटित्तु उन्त–चाह की प्रेरणा से; चन्तिर आतित्तर्–चन्द्र और सूर्य; अन्तरम्–आकाश में; इमैप्पु इलर्–पलक मारे विना; तिरिवर्–घूमते हैं; इतनुक्कु इयम्पल् आम् एतु–इसका जो कहा जाय वह हेतु; अतु अल्लाल्–वह नहीं तो; मऱ्ऱु यातो–दूसरा है क्या ? । ९६

अयोध्या से उपमेय और कोई नगर कहीं नहीं है। स्वयं शिवजी, जिनका आधा अंग पार्वतीदेवी का हो गया, विष्णु जिनके दो देवियाँ हैं, और ब्रह्मा जो क्षमाशील हैं इसके सदृश किसी नगर को नहीं जानते। चन्द्र और सूर्य भी निद्रा त्याग कर उपमेय नगर ढूँढ निकालने के विचार से ही बराबर घूम रहे हैं। फिर क्या हेतु माना जाय उनके इस अटूट भ्रमण का ? । ९६

अयिन्मुहक् कुलिशत् तमरर्को नहरु मळहयु मॅन्ऱिवै ययनार्
पयिलुऱ वुऱ्ऱ पडिपॅरुम् पान्मै पहर्तिरु नहरिदु पडैप्पान्
मयन्मुदर् ऱॅय्वत् तच्चरुन् दत्त मनत्तोऴि नाणिनर् मऱन्दार्
पुयऱॊडु कुडुमि नॅडुनिलै माडत् तिन्नहर् पुहलु माऱॆवनो 97

अयिल् मुक कुलिचत्तु–तीक्ष्ण-मुखी कुलिश (वज्र) के; अमरर् कोन् नकरुम्–देवेन्द्र का नगर, और; अळकैयुम्–अलकापुरी, और; ऎन्ऱ इवै–ये विख्यात नगर; अयनार्–अजदेव; पॅरुम् पान्मै पकर्–बहुत ही प्रशंसा (जिसकी) सब करते हैं; तिरुनकर् इतु–उस श्री सम्पन्न नगर इसको; पटैप्पान्–सृष्टि करने के लिए; पयिलुऱवु उऱ्ऱपटि–पूर्वाभ्यास के प्रयत्न थे; मयन् मुतल् तॅय्व तच्चरुम्–मय आदि देव-शिल्पी भी; नाणिनर्–लज्जायुक्त हुए; तम् तम् मनम् तोऴिल् मऱन्तार्–और अपनी-अपनी संकल्प-मात्र से निर्माण करने की शक्ति भूल गये; पुयल् तोटु कुटुमि–

मेघ-स्पर्शी शिखरों के साथ; नॅटु निलै माटत्तु--ऊँचे सौधों से पूर्ण; इ नकर्–इस नगर की महिमा; पुकलुम् आरु ॲवन्–कहना किस प्रकार होगा ? । ९७

वज्र-पाणी इन्द्र की अमरावती, और कुबेर की अलकापुरी की सृष्टि, ब्रह्माजी ने इस अयोध्या नगरी के निर्माणार्थ अनुभव प्राप्त करने के लिए पूर्वाभ्यास के रूप में ही की थी; मय आदि देवशिल्पियों ने इसको देखा तो वे अवाक् रह गये। उन्हें लज्जा का अनुभव हुआ और वे संकल्पमात्र से नगर-निर्माण की विद्या-शक्ति भूल गये। ऐसी बात है तो उस अयोध्या की महिमा का बखान कैसे हो ? उसके अन्दर निर्मित भवन की चोटियाँ मेघमण्डल को छूती हैं। ९७

पुण्णियम् बुरिन्दोर् पुहुवदु तुरक्क मॅन्नुमी दरुमरैप् पॉरुळे
मण्णिडै याव रिराहव नन्रि मादव मरत्तॊडु वळर्त्तार्
ॲण्णरुङ् गुणत्ति नवनिनि दिरुन्दिव् वेळुल हाळिड मॅन्राल्
ऑण्णुमो वदनिन् वेरॊरु पोह वुरैविड मुण्डॆन वुरैत्तल् 98

पुण्णियम् पुरिन्तोर्–पुण्य-कर्म करनेवाले; पुकुवतु–पहुँचते हैं; तुरक्कम्–स्वर्गलोक; ॲन्नुम् ईतु–कथन यह; अरु मरै पॉरुळे–अपूर्व वेदो में कथित तथ्य है, अवश्य; मण्णिटै--भूतल में; इराकवन् अन्रि–श्री राघव के सिवा; यावर् ताम्–और किसने; अरत्तॊटु मा तवम् वळर्त्तार्–धर्म के साथ तपस्या का भी पालन किया; ॲण्ण अरु–गिनने (के लिए) अशक्य; कुणत्तिन् अवन्–गुणों के स्वामी वे; इनितु इरुन्तु--सुख से रहकर; इव् एळ् उलकु–इस सप्त-द्वीप वाले भू-लोक का; आळ् इटम्–जहाँ से शासन करते थे वह (राजधानी) स्थान है; ॲन्राल्–ऐसा है तो; पोकम् उरैवु वेरु ऑरु इटम्--भोग-स्थान और कोई लोक; उण्टु ॲन उरैत्तल्–है, ऐसा कहना; ऑण्णुमो–साध्य है क्या ? । ९८

यह अनोखी बात देखिए— पुण्यकर्म करनेवालों के लिए भोग-भूमि स्वर्ग माना जाता है। यह वेदों का कथन हैं अतः सत्य हो सकता है, पर स्वयं श्रीराम से बढ़कर धर्म और तप के पोषक कौन थे ? अनन्त कल्याण-गुण-पूर्ण वे स्वयं इसी नगर में रहकर तो, सहस्रों वर्ष सप्त-द्वीप-रूपी भूलोक का शासन करते रहे। फिर किसी दूसरे स्थान को स्वर्ग कहना कहाँ तक युक्तिसंगत है ? । ९८

तङ्गुपे ररुळुन् दरुममुन् दुणैयात् तम्बहैप् पुलन्गळैन् दविक्कुम्
पॉङ्गुमा दवमु ञानमुम् बुणर्न्दोर् यावर्क्कुम् बुहलिड मान
शॆङ्गण्माल् पिरन्दाण् डळप्परुङ् गालन् दिरुविन्वीर् रिरुन्दन नॆन्राल्
अङ्गण्मा ञालत् तन्नह रॊक्कुम् पॊन्नह रमरर्नाट् टियादो 99

तङ्कु पेर् अरुळुम्–जन्म-सिद्ध करुणा और; तरुममुम्–धर्म को; तुणै आक–साधन बनाकर; तम् पकै पुलन्कळ्--अपने शत्रु, इन्द्रिय; ऐन्तु अविक्कुम्–पाँचों का दमन करके; पॊङ्कुम् मातवमुम्--बढ़ती जानेवाली तपस्या; ञानमुम्–और प्राप्त होनेवाला) तत्व ज्ञान; पुणर्न्तोर् यावर्क्कुम्–(इनमें) जो सिद्ध हो गये हैं,

(चाहे गृहस्थ हों या संन्यासी) उन सब के लिए; पुकलिटम् आऩ–आश्रय स्थान जो हैं; चॅम्मै कण् माल्–ताम्राक्ष श्री विष्णु; पिऱन्तु–जन्म ले, (अवतार कर); आण्टु–शासन कर; अळप्पु अऱु कालम्–अगणित काल तक; तिरुविऩ्–श्री लक्ष्मीदेवी (सीताजी) के साथ; वीऱ्ऱिरुन्तऩऩ्–विराजते थे तो; अम् कण् मा ञालत्तु–सुन्दर और विशाल भूलोक के; इ नकर् ऑक्कुम्–इस नगर की समानता करनेवाला; पॊऩ् नकर्–श्रेष्ठ नगर; अमरर् नाट्टु यातु–देवों के लोक में कौन सा है ? (ओ–नकारात्मक अर्थ देनेवाली ध्वनि) । ९९

ये श्रीराम सब के शरण्य हैं। दया और धर्म का सहारा लेकर अपनी, शत्रुरूपिणी पंचेंद्रिय का दमन कर, तपस्या और तत्वज्ञान में बढ़नेवालों के लिए, चाहे वे गृहस्थ हों, चाहें संन्यासी, ये ही पुण्डरीकाक्ष श्रीनारायण (जिनके अवतार श्रीराम हैं) प्राप्य स्थान हैं। वे स्वयं, श्रीलक्ष्मी-सीतादेवी के साथ अनन्तकाल तक यहीं अपना मंगलमय जीवन बिताते थे तो विशाल और सुन्दर, इस भूलोक के इस नगर अयोध्या की समता देवलोक में कौन सा नगर कर सकेगा ? । ९९

अरशॅला मवण वणियॅला मवण वरुम्बॅऱऩ् मणियॅला मवण
पुरशैमाल् कळिऱुम् पुरवियुम् देरुम् बूदलत् तियावयु मवण
विरशुवार् मुऩिवर् विण्णव रियक्कर् विञ्जयर् मुदलिऩो रॅवरुम्
उरैशॅय्वा राऩा राऩपो दिदऩुक् कुवमैदा ऩऱिदर वुळदो 100

अरचु ॲलाम् अवण–राजा सब वहाँ; अणि ॲलाम् अवण–आभरण सब वहाँ; पॅऱल् अरु मणि ॲलाम् अवण–दुष्प्राप्य रत्न सब वहीं; पुरचै माल् कळिऱुम्–गले में रस्सी-बँधे बड़े हाथी; कुतिरैकळुम्–अश्व; तेरुम्–रथ (और); पूतलत्तु यावैयुम्–भूतल के अन्य सभी; अवण–वहाँ (प्राप्य); विरचुवार्–वहाँ आकर ठहरे हुए; मुऩिवर्–मुनिगण; विण्णवर्–स्वर्गवासी देव; इयक्करुम्–यक्ष और; विञ्चैयर्–विद्याधर; मुतलिऩोर् ॲवरुम्–आदि सभी; उरै चॅय्वाराऩार्–प्रशंसाकारी हुए; आऩ पोतु–जब ऐसा हुआ; इतऩुक्कु उवमै अऱितर उळतो ? – इसकी उपमा बोधगम्य है ? (ताऩ्–पूरक ध्वनि) । १००

उसी नगर में सभी देशों के राजा रहते हैं। जितने आभरण हो सकते हैं वे सब यहीं आ गये; अपूर्व मणियाँ सभी यहीं; बड़े-बड़े हाथी, श्रेष्ठ अश्व, अनेक रथ; और अन्य कितनी ही वस्तुएँ यहाँ आ चुकी हैं। वहाँ आकर ठहरे हुए मुनि, सुर, यक्ष, विद्याधर, आदि सभी उसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं तो उसकी उपमा, हमारी समझ में अन्यत्र कहाँ हो सकती है ? । १००

नाल्वहैच् चदुरम् विदिमुऱै नाट्टि नऩिदव वुयर्न्दऩ पऩितोय्
माल्वरैक् कुलत्तिल् यावयु मिल्लै यादला लुवमैमऱ् ऱिल्लै
नूल्वरैत् तॊडर्न्दु बयत्तॊडु पऴहि नुणङ्गिय नूलव रुणर्वे
पोल्वहैत् तल्ला लुयर्विऩो डुयर्न्द दॅऩ्ऩलाम् पॊऩ्मदि ऩिलैये 101

पऩ्ऩि तोय् माल् वरै कुलत्तिल्–हिमाच्छादित बड़े-बड़े पर्वतों की श्रेणियों में; **नाल् चतुरम् वकै**–चौकोर; **वितिमुऱै नाट्टि**–(वास्तु-विद्या-) विधिवत् निर्मित; **नत्तिव उयर्न्तऩ**–बहुत ऊँचे बने (पर्वत); **यावैयुम् इल्लै**–कोई नहीं हैं; **आतलाल्**–इसलिए; **पॊऩ् मतिल् निलै**–स्वर्णमय प्राचीरों के रूप की; **उवमै मऱ्ऱु इल्लै**–उपमा दूसरी नहीं है; **नूल् वरै तॊटर्न्तु**–अनेक शास्त्र-पारंगत हो; **पयत्तॊटु पऴकि**–शास्त्राध्ययन के फलों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के अधिकारी बनकर, और; **नुणङ्किय नूलवर्**–सूक्ष्म ग्रन्थ-श्रवण से प्राप्त ज्ञान रखनेवाले विद्वज्जनों के; **उणर्वे पोल् वकैत्तु**–ज्ञान की श्रेणी के हैं; **अल्लाल्**–इसके अलावा; **उयर्न्ततु एवऱ्ऱिलुम् उयर्न्ततु**–उच्च सभी में सर्वोच्च है; **ऎऩ्ऩलाम्**–यह कहा जा सकता है। १०१

अब प्राचीरों की बात लीजिए। क्या कोई पर्वत है जो इतना ऊँचा चौकोर, और वास्तु-शास्त्र-सम्मत रीति से बना मिलता है? चाहे हिमाच्छादित पर्वत-श्रेणियों में ही ढूँढ क्यों न लें? इसलिए उसकी उपमा और कुछ नहीं है। उनकी ऊँचाई की बात लें तो उन लोगों का ज्ञान, जो सर्वशास्त्र-पारंगत हैं, जिनका श्रवण से प्राप्त ज्ञान गम्भीर है और जो अध्ययन के चारों (धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष) पुरुषार्थों के भोक्ता हो गए हैं, उनकी ऊँचाई की समता शायद कर सकता है तो कर सकता है। और कहना ही हो तो सर्वोच्च जितने भी हैं उनमें सबसे ऊँचे हैं ये प्राचीर। १०१

मेवरु मुणर्वु मुडिविला मैयिऩाल् वेदमु मॊक्कुम्विण् पुहलाल्
तेवरु मॊक्कु मुऩिवरु मॊक्कुऩ् दिण्बॊऱि यडक्किय शॆयलाल्
कावलिऱ् कलैयूर् कऩ्ऩियै यॊक्कुञ् जूलत्ताऱ् काळियै यॊक्कुम्
यावरुन् दऩ्ऩै यॆय्दुदऱ् करिय तऩ्मैया लीशऩै यॊक्कुम् 102

मेवु अरुम् उणर्वुम्–किसी भी विषय में प्रविष्ट होकर उसको ग्रहण करनेवाली मति द्वारा भी; **मुटिवु इलामैयाल्**–पार पाना साध्य नहीं है, अतः; **वेतमुम् ऒक्कुम्**–वेदों की समानता करते हैं; **विण् पुकलाल्**–आकाश तक पहुँचने से; **तेवरुम् ऒक्कुम्**–देवों से तुलते हैं; **तिण् पॊऱि अटक्किय चॆयलाल्**–सशक्त इंद्रिय (घातक यन्त्र) वश में रखने के कृत्य से; **मुऩिवरुम् ऒक्कुम्**–मुनियों की समता करेंगे; **कावलिल्**–रक्षा में; **कलै ऊर् कऩ्ऩियै**–हरिण-वाहना, कन्या देवता, दुर्गा के समान है; **चूलत्ताल्**–शूल (धारण) से; **काळियै**–कालिका के; **ऒत्तिरुक्कुम्**–समान बनाये हुए हैं; **यारुम्**–कोई भी; **तऩ्ऩै ऎय्तुतऱ्कु अरिय तऩ्मैयाल्**–अपने पास पहुँच जाय–यह कठिन है, इस धर्म से; **ईचऩै ऒक्कुम्**–सर्वेश्वर के समान हैं। १०२

ये एक तरह से वेदों के समान कहे जा सकते हैं। प्राचीर, और वेद, दोनों का अन्त सूक्ष्म से सूक्ष्म मति भी नहीं पा सकती। आकाश में पहुँच गए हैं, अतः ये प्राचीर देवों के समान हैं; ये मुनियों के समान हैं क्योंकि मुनि अपनी बलवान इन्द्रियों को अपने वश में रखते हैं और प्राचीरों के वश में शत्रुघातक यन्त्र रखे रहते हैं। नगर की रक्षा करने के कारण प्राचीर और हरिणवाहना दुर्गा में साम्य है। लोहे के शूल प्राचीरों पर, गाज से रक्षा के लिए लगाये गये हैं और कालिकादेवी का आयुध त्रिशूल

है। इन दोनों में इसीसे साम्य माना जाता है। सर्वेश्वर और प्राचीर में यह साधर्म्य है कि इन दोनों के पास जाना सुलभ नहीं। १०२

पञ्जिवाऩ् मदियै यूट्टिय वऩैय पडरुहिर्प् पङ्गयच् चॆङ्गाल्
वञ्जिपोऩ् मरुङ्गुऱ् कुरुम्बैपोऱ् कॊङ्गै वयङ्गुवेय् वैत्तमॆऩ् पणैत्तोळ्
अञ्जॊलार् पयिलु मयोत्तिमा नहरि ऩऴहुडैत् तोवॆऩ वऱिवाऩ्
इञ्जिवा ऩोङ्गि यिमैयव रुलहङ् गाणिय वॆऴुन्ददॊत् तुळदे 103

इञ्चि–प्राचीर; वाऩ् मतियै–आकाश के चन्द्रों को; पञ्चि ऊट्टिय अऩैय–महावर लगाकर लाल किया गया हो ऐसा; पटर् उकिर्–उज्ज्वल नखों वाले; पङ्कयम् चॆम् काल्–कमल जैसे लाल चरण; वञ्चि पोल् मरुङ्कुल्–लता के समान (महीन) कमर; कुरुम्पै पोल् कॊङ्कै–डाभ के समान स्तन; वयङ्कु वेय् वैत्त–छविमान बांस-सदृश रहनेवाली; मॆऩ् पणै तोळ्–मृदुल सुडौल भुजाएँ; अम् चॊल्–सुन्दर वाणी; आर्–(इन से) युक्त स्त्रियों से; पयिलुम्–भरे रहनेवाले; अयोत्ति मा नकरिऩ्–अयोध्या-महानगर के समान; इमैयवर् उलकम्–देवों का लोक; अऴकु उटैत्तो ऎऩ अऱिवाऩ्–सुन्दरता रखता है क्या, यह जानने के लिए; वाऩ् ओङ्कि–आकाश में ऊँचा उठकर; काणिय–देखने के लिए; ऎऴुन्तत्तु ऒत्तु उळतु–उठे से रहते हैं। १०३

प्राचीर की ऊँचाई देखकर कवि कल्पना करता है कि प्राचीर, "देवलोक अयोध्या की समानता करनेवाला है क्या?" यह देखने के लिए बहुत-बहुत ऊपर उठे हुए हैं। अयोध्या में सुन्दर स्त्रियाँ बहुत हैं। उनके पैरों के नख लाली लगे चन्द्रों के समान हैं; पैर कमल के समान हैं; कमर वल्ली के समान पतली; डाभ के समान स्तन; बाँस के समान भुजाएँ हैं। वे सुन्दर और मधुर बोलनेवालियाँ हैं। इनके कारण अयोध्या सुन्दर बना है। प्राचीर यह जानने को उत्सुक हैं कि क्या देवलोकों की स्त्रियाँ ऐसी सुन्दर हैं और देवलोक अयोध्या के समान सुन्दर हैं? १०३

कोलिडै युलह मळत्तलिऱ् पहैञर् मुडित्तलै कोडलिऩ् मऩुविऩ्
नूलिडै नडक्कुञ् जॆव्वयिऩ् यार्क्कु नोक्करुङ् गावलिऩ् वलियिऩ्
वेलॊडु वाळ्विऱ् पयिऱ्ऱलिऩ् वॆय्य शूऴ्च्चियिऩ् वॆलऱ्करु नलत्तिऩ्
शालुडै युयर्विऱ् चक्कर नडत्तुन् दऩ्मैयिऱ् ऱलैवरॊत् तुळदे 104

उलकम्–देश को; कोल् इटै अळत्तलिऩ्–(राज) दण्ड से मापने में (शासित करने में); पकैञर्–शत्रुओं के; मुटि तलै–किरीटधारी सिरों को; कोटलिऩ्–वश में कर लेने में; मऩुविऩ् नूल् इटै नटक्कुम् चॆव्वैयिऩ–मनु-धर्म-शास्त्र के अनुसार चलने के आर्जव में; यार्क्कु नोक्करुम् कावलिऩ्–किसी को भी देखने न देनेवाली रक्षा (के प्रबन्ध) से; वलियिऩ्–बल में; वेलॊटु, वाळ्, विल् पयिऱ्ऱलिऩ्–बर्छियाँ, तलवारें, धनुष आदि के व्यवहार करने में; वॆय्य चूऴ्च्चियिऩ्–भयंकर (राज) तन्त्र में; वॆलऱ्कु अरु नलत्तिऩ्–अजेय बल-विक्रम में; चाल् उटै उयर्विऩ्–शीलवान बड़प्पन में; चक्करम् नटत्तुम् तऩ्मैयिऩ्–(आज्ञा) चक्र चलाने के धर्म में; तलैवर ऒत्तु उळतु–(अपने) स्वामियों (रविकुल के राजाओं) के समान थे। १०४

ये प्राचीर अपने ही मालिक रवि-कुल-राजाओं के समान हैं। कवि, शब्द-प्रयोग-चातुर्य से इसको सिद्ध करते हैं। राजा दण्ड द्वारा शासन का काम करते हैं; प्राचीर माप-दण्ड द्वारा नापे जाते हैं। राजा अपनी सेना के बल से और प्राचीर अपने रक्षकों द्वारा शत्रुओं के सिर गिरा देते हैं या झुका देते हैं। राजा, मनु के शास्त्र के अनुसार चलते हैं और प्राचीर भी मनु नामक देव-शिल्पी के लिखे शास्त्र के अनुसार बने हैं। राजा और प्राचीर दोनों को कोई आँख उठाकर नहीं देख सकता, दोनों के रक्षा के प्रबन्ध प्रबल हैं। दोनों बलवान हैं। दोनों के पास बर्छे, तलवारें और धनुष आदि आयुध प्रयोग में हैं। राजाओं के पास राज-तन्त्र है और प्राचीरों के अन्दर गूढ़-यन्त्र हैं। दोनों अजेय हैं। राजा के पास श्रेष्ठ गुण है; प्राचीरों में गुप्त-मार्ग आदि विशेषतायें हैं। राजा आज्ञा-चक्र चलाते हैं; प्राचीरों से चक्रायुध चलते हैं। १०४

शिऩत्तयिल् कॉलैवाळ् शिलैमऴुत् तण्डु शक्करन् दोमर मुलक्कै
कऩत्तिडै युरुमिऩ् वॅरुवरुङ् गवण्ग लॅऩ्ऱिवै कणिप्पिल कॉडुहिऩ्
इऩत्तयु मुवणत् तिऱैयैयु मियङ्गु कालैयु मिदमल निऩैवार्
मनत्तयु मॅऱियुम् बॊऱियुळ वॅन्ऱाऩ् मऱ्ऱिऩि युणर्त्तुव दॅवऩो 105

कॊतुकिऩ् इऩत्तैयुम्–मच्छड़-कुल को; उवणत्तु इऱैयैयुम्–खग-पति (गरुड़) को और; इयङ्कु कालैयुम्–चंचल पवन को; इतम् अल निऩैवार् मऩत्तैयुम्–हितेतर (अहित) सोचनेवालों के मन को; ऍऱियुम्–प्रहारित करनेवाले; चिऩत्तु अयिल्–कोपिष्ठ बर्छे; कॊलै वाळ्–घातिनी तलवारें; चिलै–धनुष; मऴु–परशु; तण्टु दण्डायुध; चक्करम्–चक्रायुध; तोमरम्–तोमर और; उलक्कै–मूसल और; कऩत्तु इटै उरुमिऩ्–मेघ-मध्य वज्र के समान; वॅरु वरुम् कवण्कल्–भयोत्पादक ढेले बाँस; ऍऩ्ऱ इवै–ऐसे और अन्य; कणिप्पु इल पॊऱि–गणनाहीन आयुध; उळ ऍऩ्ऱाल्–रहते हैं–(कह दिया) तो; मऱ्ऱु इऩि उणर्त्तुवतु ऍवऩ–और कहने के लिए क्या है? । १०५

उस परकोटे के अन्दर ऐसे आयुध हैं जो छोटे से छोटे मच्छड़ों को भी मार सकते हैं; और बड़े पक्षी गरुड़ को भी। सूक्ष्म और चंचल पवन को भी आहत कर सकती हैं; अहित सोचनेवाले मन को भी। उनके अन्दर बर्छे, तलवारें, धनुष, परशु, दण्ड, चक्र, तोमर, मूसल, वज्र-सम ढेलाबाँस; ऐसे अगणित हथियार हैं। इतना कह दिया गया तो फिर कहने को क्या बचा है? । १०५

पूणिऩुम् बुहऴे यमैयुमॅऩ् ऱिऩैय पॊऱ्पिऩिऩ् ऱुयिर्नऩि पुरक्कुम्
याणरॅण् डिशैक्कु मिरुळऱ विमैक्कु मिरवितऩ् कुलमुद ऩिरुबर्
शेणैयुङ् गडन्दु दिशैयैयुङ् गडन्द तिहिरियुञ् जॅन्दऩिक् कोलुम्
आणैयुङ् गाक्कु मायिऩु नहरुक कणियॅऩ वियऱ्ऱिय दऩ्ऱे 106

पूणित्तुम् पुकऴे अमैयुम्—आभरण से बढ़कर यश ही श्लाघ्य है; ऎऩ्ऱु इत्तैय पॊऱ्पिल् निऩ्ऱु—ऐसे इस सुन्दर सिद्धान्त पर स्थित होकर; उयिर् नऩि पुरक्कुम्—(प्रजा-जनों) जीवों का परिपालन करनेवाले; याणर् ऎण् तिचैक्कुम्—सुन्दर आठों दिशाओं में; इरुळ् अऱ—अन्धकार हटाते हुए; इमैक्कुम्—प्रकाश देनेवाले; इरवि तऩ् कुलम्—रवि के कुल के; मुतल् निरुपर्—(राजाओं में) प्रथम गणनीय राजाओं के; चेणैयुम् कटन्त—आकाश-लोक को भी पार करके; तिचैयैयुम् कटन्त—दिशाओं को भी पार करनेवाले; तिकिरियुम्—(आज्ञा-) चक्र और; तऩि चॆङ्कोलुम्—अनुपम राजदण्ड; आणैयुम्—आज्ञायें; काक्कुम् आयिऩुम्—रक्षा कर सकते हैं तो भी; नकरुक्कु अणि—नगर का श्रृंगार; ऎऩ—समझकर; इयऱ्ऱियतु—निर्मित हैं (वे प्राचीर)। (अऩ्ऱु—ए—पूरक ध्वनियाँ।)। १०६

ऐसे परकोटे के कारण ही वह अयोध्या सुरक्षित रही सो बात नहीं। स्वयं राजाओं का आज्ञाचक्र (जो शासन का प्रतीक है), राज-दण्ड (जो दण्ड-विधान का प्रतीक है) और उनकी आज्ञाओं के मौखिक वचन ही काफी थे। क्योंकि वे राजा, यश को ही अलंकार मानकर चलनेवाले थे। प्रजा-पालन में दक्ष थे। वे उस रवि के कुल के थे जिसका प्रकाश सर्वत्र और सभी दिशाओं का सारा अन्धकार दूर करता है। इसलिए उनकी आज्ञा सभी दिशाओं में मानी जाती थी। तो भी नगर के श्रृंगार को आवश्यक समझ, अलंकार के रूप में ये परकोटे बनाये गये थे। १०६

अऩ्ऩमा मदिलुक् काऴिमाल् वरैयै यलैहडल् शूऴ्ऩ्दऩ वहऴि
पॊऩ्विलै महळिर् मऩमॆऩक् कीऴ्पोय्प् पुऩ्कवि यॆऩत्तॆळि विऩ्ऱिक्
कऩ्ऩिय रल्हुऱ् ऱडमॆऩ यार्क्कुम् बडिवरुङ् गाप्पिऩ दाहि
नऩ्ऩॆऱि विलक्कुम् बॊऱियॆऩ वॆऱियुङ् गरात्तदु नविललुऱ् ऱदुनाम् 107

आऴि माल् वरैयै—विपुल चक्रवाल गिरि को; अलै कटल् चूऴ्न्त अऩ्ऩ—लहरानेवाले समुद्र ने घेर लिया, ऐसा; अऩ्ऩ मा मतिलुक्कु अकऴि—उस परकोटे की परिघा; पॊऩ् विलै मकळिर् मऩम् ऎऩ—वेश्या के मन के समान; कीऴ् पोय्—नीचे जाकर (गहरी बनी); पुऩ् कवि ऎऩ—(प्रतिभा-हीन कवि की) हीन कविता के समान; तॆळिवु इऩ्ऱि—प्रसाद-गुण से रहित; कऩ्ऩियर्—कन्याओं के; अल्कुल् तटम् ऎऩ—जघन प्रदेश के समान; यार्क्कुम् पटिवु अरु—किसी के लिए भी अथाह; काप्पिऩतु आकि—सुरक्षित हो; नल् नॆऱि विलक्कुम् पॊऱि ऎऩ—सन्मार्ग छोड़नेवाली इंद्रिय के समान; ऎऱियुम्—हानि पहुँचानेवाले; करात्ततु—मगरों से भरी है; नाम् नविलल् उऱ्ऱतु—हम (जिसका) वर्णन करने चले। १०७

अब खाई का वर्णन है। पुराण बताते हैं कि सारी पृथ्वी को चारों ओर से चक्रवालगिरि घेरे रहती है और उस गिरि को एक 'बाह्य-महासागर' घेरे रहता है। अयोध्यानगर का परकोटा उस चक्रवाल के समान है और उसकी खाई उस महासागर के समान। वह गहरी है—वेश्या के मन के समान गहरी; क्षुद्र-कविकृत कविता के समान अस्पष्ट (मैली); कुलीन कन्या के अंगों के समान अथाह रूप से सुरक्षित; और

विभाग
शान्तिकुंज हरिद्वार
29|१९८४.

कुमार्गगामी इन्द्रियों के समान हिंस्र मगरों से युक्त है। उसी का कवि आगे भी वर्णन करता है। १०७

एहु हिऩ्ऱ दङ्ग णङ्ग ळोडु मॆल्लै काण्गिला
नाह मॊऩ्ऱ हन्कि डङ्गै नाम वेलै यामॆऩा
मेह मॊण्डु कॊण्डॆ ळुन्दु विण्डॊ डऱ्ऩ्द कुऩ्ऱमॆऩ्
ऱाह नॊन्दु निऩ्ऱु तारै यम्म दिऱ्कण् वीशुमे 108

मेकम्, ऍल्लै काण्किला–मेघ, (विस्तार) सीमा अदृश्य हो; नाकम् ऑऩ्ऱु–पाताल तक जाकर, रही; अकऩ् किटङ्कै–विस्तृत उस खाई को; नामम् वेलै आम् ऍऩा–डरावना समुद्र मानकर; एकुकिऩ्ऱ तम् कणङ्कळोटुम्–जानेवाले अपने समूहों के साथ (जाकर); मॊण्टु कॊण्टु–(जल) भर लेकर; अ मतिल् कण्–उस प्राचीर पर; आकम् नॊन्तु निऩ्ऱु–शरीर के थक जाने से, ठहर कर; विण् तॊटऱ्ऩ्त कुऩ्ऱम् ऍऩ्ऱु–गगन-व्यापी पर्वत समझकर; तारै वीचुम्–धारें बरसा देते हैं। १०८

मेघ आते हैं। उस पाताल तक गहरी खाई को समुद्र ही समझ लेते हैं। बस, वहीं जल भर लेते हैं। ऊपर उठते हैं तो प्राचीर इतने ऊँचे हैं कि वे उन्हें पार कर नहीं पाते। थक जाते हैं और वहीं पानी गिरा देते हैं। यहाँ खाई का विस्तार, उसकी गहराई और प्राचीर की ऊँचाई—इनकी ओर संकेत है। १०८

अन्द माम दिऱ्पु ऱत्त हत्तॆ ळुन्द लऱ्न्दुनीळ्
कन्द नाऱु पङ्ग यत्त काऩ माऩ मादरार्
मुन्दु वाण्मु हङ्ग ळुक्कु डैन्दु पोऩ मॊय्म्बॆलाम्
वन्दु पोर्वि ळैक्क माम दिल्व ळैन्द दॊक्कुमे 109

अन्त मा मतिल् पुऱत्तु–उस महान प्राचीरों के पार्श्व में; अकत्तु ऍळुन्तु–खाई के अन्दर से उगकर; अलर्न्तु–खिलकर; नीळ् कन्तम् नाऱु–खूब महकनेवाले; पङ्कयत्त काऩम्–(जो) पंकज-कानन (रहा वह); माऩम् मातरार् वाळ्मुकङ्कळुक्कु–(उस नगर के) मान्य स्त्रियों के उज्ज्वल मुखों के सामने; उटैन्तु–हारकर; मुन्तु पोऩ मॊय्म्पु ऍल्लाम्–पहले (जो) खोयी (वह) शक्ति सारी; वन्तु–अब प्राप्त कर; पोर् विळैक्क–(उनसे फिर) युद्ध करने के लिए; मा मतिल् वळैन्तु–प्राचीरों को घेर लिया; ऑक्कुम्–इसके समान है। १०९

उस खाई में सुगन्ध-पूर्ण कमल के फूल खिले हैं। कमलों का कहिए, कानन ही है। उनको देख ऐसा लगता है कि उन्होंने आकर किले के बाहर घेराव डाला है। कवि-कल्पना है कि वे अयोध्यानगर की सुन्दरियों के उज्ज्वल चेहरों के सामने हार मानकर चले गए थे। अब नया बल पाकर, आकर ललकार रहे हैं। १०९

शूळ्न्द नाञ्जिल् शूळ्न्द वारै शुऱ्ऱु मुऱ्ऱु पारॆलाम्
पोळ्न्द माहि डङ्गि डैक्कि डन्दु पॊङ्गि डङ्गर्मात्

ताऴ्न्द वङ्ग वारि यिऱ्ऱ डुक्कों णाम दत्तिऩ्वीऴ्न्
दाऴ्न्द याऩै मीदॅ ऴुन्द ऴुन्दु हिऩ्ऱ पॉलुमे 110

चूऴ्न्त नाऴ्चिल्–खूब सोचकर बनाये गये भागों के साथ; चूऴ्न्त–(नगर को) घेरकर रहनेवाले; आरै चुऱ्ऱुम् मुऱ्ऱु पार् अॅल्लाम्–परकोटे के (चारों) ओर रही, घनी भूमि, सब खोदकर बनायी गयी; मा किटङ्कु इटै किटन्तु–बड़ी खाईं में पड़े रहे; इटङ्कर् मा–मगर; ताऴ्न्त वङ्क वारियिल्–प्रचुरता से नावें (जहाँ) रहती हैं उस समुद्र में; तटुक्क ऑणा मतत्तिऩ्–दुर्दम्य मत्तता के कारण; विऴुन्तु मुऴुकित्त–घुसकर पैठे रहे; याऩैकळ्–हाथी; मीतु अॅऴुन्तु अऴुन्तुकिऩ्ऱ पोलुम्–ऊपर उठते; फिर नीचे जाते (उन हाथियों) के समान (दिखते) हैं। ११०

उस खाईं में बड़े-बड़े मगर हैं। वह खाईं परकोटे के चारों ओर की भूमि को खोदकर बनायी गयी है। उसमें दिखाई देनेवाले मगर उन्मत्त हाथियों के समान हैं जो अपनी अदम्य मस्ती के कारण समुद्र में घुसकर तैर रहे हों— कभी नीचे पैठते, कभी ऊपर आते हैं। ११०

ईरुम् वाळिऩ् वाल्वि दिरत्तॅ यिऱ्ऱि ळम्बि ऱैक्कुलम्
पेर मिऩ्ऩ वाय्वि रित्तॅ रिन्द कट्पि ऱङ्गुदीच्
चोर वॉऩ्ऱै यॉऩ्ऱु मुऩ्ऱॉ डरन्दु शीऱि डङ्गर्मा
पोरु हन्दु शीऱु हिऩ्ऱ पोर रक्कर् पोलुमे 111

ईरुम् वाळिऩ्–आरे के समान रहनेवाली; वाल् वितिर्त्तु–पूँछ हिलाते हुए; अॅयिऱु इळम् पिऱै कुलम्–दाँत-रूपी बाल-चन्द्र-गण को; पेर मिऩ्ऩ–रह-रहकर चमकाते; वाय् विरित्तु–मुख खोलकर; अॅरिन्त कण् पिऱङ्कु ती चोर–जलती सी आँखों से प्रकाशमान कोपाग्नि प्रकट करते हुए; ऑऩ्ऱै ऑऩ्ऱु मुऩ् तॉटर्न्तु–एक के मुख के सामने दूसरे का मुख रहे ऐसा जाते हुए; चीऱु–नाराज़; इटङ्कर् मा–मगर; पोर् उकन्तु–युद्धकामना से; चीऱुकिऩ्ऱ–आपस में क्रोध दिखानेवाले; अरक्कर् पोलुम्–राक्षस के समान थे। १११

वे मगर अपने आरे के समान पूँछों को हिलाते हुए चलते हैं। बार-बार मुख खोलते हैं तो उनके दाँत, जो वक्र बाल-चन्द्र के समान हैं, रह-रहकर चमकते हैं। आँखों से चिनगारियाँ निकलती हैं। वे एक के सामने एक आपस में क्रोध दिखाते हुए चलते हैं तब वे राक्षसों के समान लगते हैं। १११

आळु मऩ्ऩम् वॅण्कु डैक्कु लङ्ग ळाव रुङ्गराक्
कोळॅ लामु लावु हिऩ्ऱ कुऩ्ऱ मऩ्ऩ याऩयात्
ताळु लावु पङ्ग यत्त रङ्ग मेदु रङ्गमा
वाळुम् वेलु मीऩ माह मऩ्ऩर् शेऩै माऩुमे 112

आळुम् अऩ्ऩम्–वहाँ (मानों) राज करनेवाले हंस; वॅण् कुटै कुलङ्कळ् आ(क)–श्वेत छत्र हुए; अरु करा–अपूर्व मगर; कोळ् अॅलाम् उलावुकिऩ्ऱ–ग्रह जिसकी परिक्रमा करते हैं; कुऩ्ऱम् अऩ्ऩ–(उस) मेरु के सदृश; याऩै आ(क)–हाथी बने; ताळ्

उलावु–नालों पर हिलनेवाले; पङ्कयम् तरङ्कमे–कमल को झकझोरनेवाली तरंगें; तुरङ्कम् आ(क)–अश्व बनीं; मीऩम् वाळुम् वेलुम् आक–मछलियाँ, तलवारें और बर्छियाँ बनीं, (ऐसी सजकर); मऩ्ऩर् चेऩै माऩुम्–राजा की सेना की समानता करती है। ११२

वह खाईं राजाओं की सेना से उपमेय बनी है। इस सेना के उसमें पाए जानेवाले हंस श्वेत छत्र हैं; अपूर्व मगर हाथी हैं जो मेरु पर्वत के, जिसकी ग्रह परिक्रमा करते हैं, समान हैं। कमल-पुष्पों को झकझोरनेवाली तरंगें अश्व हैं; मछलियाँ तलवारें और शक्तियाँ हैं। ११२

विळिम्बु शुऱ्ऱु मुऱ्ऱु वित्तु वॆळ्ळि कट्टि युळ्ळुऱप्
पळिङ्गु पॊऱ्ऱ हट्टि ऩोड डुत्तु ऱप्प डुत्तलिऩ्
तळिऩ्द कऱ्ऱ लत्तॊ डच्च लत्ति ऩैत्त ऩित्तुऱत्
तॆळिऩ्दु णर्त्तु हिऱ्ऱु मॆऩ्ऱ ऱेव रालु मावदे 113

चुऱ्ऱु–चारों ओर; विळिम्पु–किनारे को; वॆळ्ळि कट्टि–चाँदी से मढके; मुऱ्ऱुवित्तु–बना चुक कर; उळ्ळुऱ–अन्दर; पळिङ्कु पॊऩ् तकट्टिऩोटुअटुत्तु उऱ पटुत्तलिऩ्–स्फटिक शिलाएँ, स्वर्ण-फलकों के साथ, पास-पास बिछायी गयी हैं, इसलिए; तळिन्त कल् तलत्तॊटु अ चलत्तिऩै–स्फटिक शिला की फर्श वाली उस ज़मीन को और जल को; तऩित्तु उऱ तॆळिन्तु उणर्त्तुकिऱ्ऱुम् ऍऩ्ऱल्–अलग-अलग पहचनवा सकते हैं, यह कहना; तेवरालुम् आवते–क्या देवों के लिए भी शक्य है; (ए–नकारात्मक ध्वनि)। ११३

उस खाईं के किनारे चाँदी से मढ़े हैं। अन्दर स्फटिक की ईंटों और स्वर्ण के फलकों को पास-पास रखकर तल बनाया गया है। तब पानी कहाँ है, तल कहाँ है ? यह पहचानना देवों के लिए भी कठिन हो जाता है। ११३

अऩ्ऩ नीर हऩ्गि डङ्गु शूऴ्हि डऩ्द वाऴियैत्
तुऩ्ऩि वेऱु शूऴ्हि डऩ्द तूङ्गु वीङ्गि रुट्पिऴम्
बॆऩ्ऩ लामि ऱुम्बु शूऴ्हि डऩ्द शोलै यॆण्णिलप्
पॊऩ्ऩिऩ् माम दिट्कु डुत्त नील वाडै पोलुमे 114

अऩ्ऩ नीर्–इस प्रकार की; अकऩ् किटङ्कु–विशाल खाईं (रूपी); चूऴ् किटन्त आऴियै तुऩ्ऩि–चक्रवाल को घेरकर पड़े महासागर के एक तरफ़; वेऱु चुऴ् किटन्त–अलग-अलग पुंजीभूत रहे; तङ्कु वीङ्कु इरुळ् पिऴम्पु ऍऩ्ऩल् आम्–अचल और विपुल अन्धकारघन, ऐसे मान्य; इऱुम्पु चूऴ् किटन्त–छोटे-छोटे वनों से पूर्ण; चोलै ऍण्णिल्–उद्यानों को सोचें तो; अ पॊऩ्ऩिऩ् मा मतिट्कु उटुत्त–उस स्वर्णमय प्राचीर पर वेष्टित; नील आटै पोलुम्–काले वस्त्र के समान थे। ११४

परकोटे हैं; उनके चारों ओर खाईं है और उसको घेरकर उपवन बने हैं। यह ऐसा है जैसे भूमि को घेरकर चक्रवाल; उसको घेरकर महासमुद्र और उससे सटकर अन्धकार पुंजीभूत होकर घेर रहा हो। ये उपवन

ऐसे भी लगते हैं मानों स्वर्णमय प्राचीरों को कुदृष्टि से बचाने के लिए उन पर नीला वस्त्र लपेट दिया गया हो। ११४

ॲल्लै निऩ्ऱ वॅऩ्ऱि याऩै यॅऩ्ऩ निऩ्ऱ मुऩ्ऩैमाल्
ऑल्लै युम्बर् नाड ळऩ्द ताळिऩ् मीदु यर्न्दुपोय्
मल्लऩ् ञालम् यावु नीदि माऱु ऱाव ऴक्किऩाल्
नल्ल वाऱु शॉल्लुम् वेद नाऩ्गु मऩ्ऩ वायिले **115**

मल्लल् ञालम् यावुम्–समृद्ध संसार के जीव सब; नीति माऱु उऱा वऴक्किऩाल्–न्याय मार्ग से परे न जायँ, इस प्रकार; नल्ल आऱु चॉल्लुम्–अच्छे मार्ग बतानेवाले; वेतम्–वेद; नालुम् अऩ्ऩ–चारों के समान; वायिल्–गोपुर, (चारों); मुऩ्ऩै–पहले कभी; माल्–श्रीविष्णु के; उम्पर नाटु ऑल्लै अळऩ्त–(त्रिविक्रम बनकर) देवलोक को भी शीघ्र नापनेवाले; ताळिऩ्–चरणों से; मीतु उयर्न्तु–बढ़कर ऊँचे जाकर; ॲल्लै निऩ्ऱ–सीमाओं पर स्थित; वॅऩ्ऱि याऩै ॲऩ्ऩ–विजय-स्मारक गजों के समान; निऩ्ऱ–(शान के साथ) खड़े रहे। ११५

प्राचीरों में चारों दिशाओं में चार गोपुर बने हैं। गोपुर से मतलब नगर-द्वार या तोरण हैं। उन तोरणों पर शिल्पकारी के साथ पत्थर या ईंटों के बने, चौकोर और कुछ (सात) तल्लों के ऊँचे मेहराब से होते हैं। इन प्राचीरों के ये चारों द्वार चार वेदों के समान हैं जो सन्मार्ग के फाटक हैं। एक बार श्रीविष्णु ने जब सारे लोकों को दो ही श्रीचरणों के अन्दर नाप दिया तब उनका चरण देवलोक मापने ऊपर गया। वह जितना ऊँचा गया उससे बढ़कर ये गोपुर ऊँचे गए हैं। ये विजय-स्मारक राजगजों के समान शान के साथ खड़े हैं। ११५

ताविल् पॉऱ्ऱ लत्ति ऩऱ्ऱ वत्ति ऩोर्ह डङ्गुताऴ्
पूवु यिर्त्त कऱ्प हप्पॉ दुम्बर् पुक्कॉ दुङ्गुमाल्
आवि यॉत्त शेवल् कूव वऩ्बिऩ् वन्द णैन्दिडा
दोवि यप्पु ऱाविऩ् माडि रुक्क वूडु पेडैये **116**

आवि ऑत्त चेवल्–प्राण सम प्यारे अपने (पुरुष) कबूतर को; ताऩ् अऴैक्क–अपने बुलाने पर; अऩ्पिऩ् वन्तु अणैन्तिटातु–प्यार के साथ आकर आलिंगन न करके; ओवियम् पुऱाविऩ् माटु इरुक्क–चित्र या प्रतिमा की कबूतरी के पास खड़ा रहता है (यह देख); ऊटु पेटै–रूठनेवाली कबूतरी; ता इल् पॉऩ् तलत्तिल्–निर्दोष स्वर्गलोक में; नल् तवत्तित्तोर्कळ् तङ्कु ताऴ्–(जिनके पास) तपस्वी ठहरते हैं ऐसे तनों वाले, और; पू उयिर्त्त–(जो) फूल गिराते हैं; कऱ्पकम् पॉतुम्पर् पुक्कु–(उन) कल्पक-तरुओं के उपवनों में पहुँचकर; ऑतुङ्कुम्–छिप जाते हैं। (आल्)। ११६

इन गोपुरों की भित्तियों पर कबूतरों की प्रतिमाएँ या चित्र बने हैं। कबूतरी अपने प्रिय कबूतर को बुलाती है। वह नहीं आता पर चित्रार्पित कबूतरी के पास खड़ा रहता है। कबूतरी रूठती है और यों ही कलपक

वन में जाकर छिप जाती है। वह कलपक वन नन्दन वन है जहाँ तरु-तले ऋषि-मुनि हैं और फूल गिरे पड़े हैं। गोपुर की ऊँचाई की ओर और अयोध्या में प्राप्त चित्र-प्रतिमा और वास्तुकला की श्रेष्ठता की ओर संकेत है— इसमें। ११६

कल्ल डित्त डुक्कि वाय्प ळिङ्ग रिन्दु कट्टिमी
दॆल्लि डप्प शुम्बॊन् वैत्ति लङ्गु पन्म णिक्कुलम्
विल्लि डक्कु यिऱ्ऱि वाळ्वि रिक्कुम् वॆळ्ळि मामरम्
पुल्लि डक्कि डत्ति वच्चि रत्त काल्बॊ रुत्तिये 117

पळिङ्कु कल् अटित्तु अटुक्कि–स्फटिक के, कटे पत्थर चुनकर; वाय् मीतु–सन्धि स्थलों में; ऍल् इट पचुम् पॊन् अरिन्तु वैत्तु–चमकदार चोखे स्वर्ण के पत्र रखकर; कट्टि–(भित्तियाँ) बनाकर; इलङ्कु–कांतियुत रहनेवाले; पल् मणि कुलम्–विविध मणि-समूहों को; ऍल् इट कुयिऱ्ऱि–वे चमकते रहें ऐसा जड़कर; वच्चिरत्त काल् पॊरुत्ति–हीरों के खम्भे खड़ाकर; वाळ् विरिक्कुम्–चमकनेवाले; वॆळ्ळि मा मरम्–चाँदी के धरन आदि; पुल्लिट किटत्ति–ठीक से लगाकर। ११७

११६ से ११८ तक तल्लै कैसे बने हैं और सबसे ऊपर कलश कैसे लगा दिए गए हैं, इसका विस्तृत वर्णन है। दीवारें स्फटिक-पत्थरों की चुनी हुई हैं। पत्थरों के सन्धि-स्थलों में सोने के खण्डित पत्र ठूँस दिए गए हैं और पंक्तियों के मध्य भी सोने के पत्र हैं। खम्भे हीरक के हैं और उन पर विविध रत्न जड़े हैं और वे चमकते हैं। बल्ले, धरन, शहतीर आदि चाँदी के हैं। ११७

मरक तत्ति लङ्गु पोति कैत्त लत्तु वच्चिरम्
पुरैत पुत्त डुक्कि मीतु पॊन्कु यिऱ्ऱि मिन्कुलाम्
निरैम णिक्कु लत्ति नाळि नीळ्व हुत्त वोळिमेल्
विरवु कैत्त लत्ति नुय्त्त मेद हत्तिन् मीदरो 118

मरकतत्तु इलङ्कु पोतिकै तलत्तु–मरकत के साथ चमकनेवाले स्तम्भ-शीर्ष के ऊपर; वच्चिरम् पुरै तपुत्तु अटुक्कि–हीरक खण्ड काट-छाँटकर एक के ऊपर एक रखकर; मीतु पॊन् कुयिऱ्ऱि–उस पर स्वर्ण धँसाकर; मिन् कुलाम्–बिजली के समान चमकनेवाले; निरै मणि कुलत्तिन् वकुत्त–पंक्ति-बद्ध अनेक रत्नों की बनी; आळि–सिंह की मूर्तियों के साथ; नीळ् ओळि मेल् विरवु–लम्बी श्रेणियों पर लगे; कैतलत्तिन् उय्त्त–शहतीरों के रूप में रहे; मेतकत्तिन् मीतु–गोमेद के बल्लों के ऊपर; (अरो)। ११८

खम्भे के ऊपर बल्ले के नीचे जो खम्भ-शिखर (कमलाकार के) लकड़ी के रखे जाते हैं उनकी जगह पर मरकत के बने स्तम्भ-शीर्ष हैं। छत को धारण करनेवाले आर-पार के बल्ले हीरक, स्वर्ण आदि के हैं और उनमें रत्नों से निर्मित सिंह आदि की प्रतिमाएँ हैं। बाद उनके ऊपर गोमेद के बल्लों की पंक्तियाँ हैं। ११८

एऴ्पॉ ऴिऱ्कु मेऴ्नि लैत्त लञ्ज मैत्त दॅऩ्ऩनूल्
ऊऴु ऱक्कु ऱित्त मैत्त वुम्बर् शॅम्बॊऩ् वेय्न्दुमीच्
चूऴ्शु डरच्चि रत्तु नऩ्म णित्त शुम्बु तोऩ्ऱलाल्
वाऴ्नि लक्कु लक्कॊ ऴुन्दै मौलि शूट्टि यऩ्ऩवे 119

एऴ् पॉऴिऱ्कुम्–सप्त लोकों में रहनेवाले सब लोगों के लिए; एऴ् निलै तलम् चमैत्ततु अॅऩ्ऩ–सात तल्ले बना लिए गए हों—ऐसा; नूल् ऊऴ् उऱ–शास्त्र-विहित प्रकार से; कुऱित्तु अमैत्त–खूब सोचकर बनाये गये (वे गोपुर); उम्पर् चॅम्पॊऩ् बेय्न्तु–सबके ऊपर चोखे स्वर्ण-पत्र छाकर; मी–उस पर; चूऴ् चुटर् चिरत्तु–चमकीले शिरो-भाग पर; नल् मणि तचुम्पु तोऩ्ऱलाल्–अच्छे रत्नमय कलश दिखते हैं, इसलिए; वाऴ् निलम् कुलम् कॊऴुन्तै–जीवन्त भूमि के कुल-किसलय को (भूमि की उत्कृष्ट सन्तान--अयोध्या नगर को); मौलि चूट्टिय अऩ्ऩ–किरीट पहनाया गया हो, ऐसा है। (ए)। ११९

ऐसी दीवारों, खम्भों और छतों के सात तल्ले हैं, मानों ऊपर के सप्त लोकों में एक-एक के रहनेवालों के लिए एक-एक रचा गया हो। ये गोपुर शास्त्रविहित रीति से बने हैं। सबके ऊपर स्वर्ण की मेहराब की रचना है जिसपर रत्न-कलश पाए जाते हैं। इनको देखने पर ऐसा लगता है मानों भूदेवी के कुल-दीपक (संतान) अयोध्या के मुकुट हैं। ११९

❀ तिङ्गळुङ् गरिदॅऩ वॅण्मै तीऱ्ऱिय, शङ्गवॅण् शुदैयुडैत् तवळ माळिहै
वॅङ्गडुङ् गाल्पॊर मेक्कु नोक्किय, पॊङ्गिरुम् बाऱ्कडऱ् ऱरङ्गम् बोलुमे 120

तिङ्कळुम् करितु अॅऩ–चन्द्र मण्डल भी (इनके सामने) काला है—ऐसा कहने की स्थिति पैदा करते हुए; वॅण् चङ्कम् चुतै उटै–सफ़ेद शंख के बने चूने से; वॅण्मै तीऱ्ऱिय–सफेदी जिनपर पुती हो; तवळम् माळिकै–धवल सौध; वॅम् कटुकाल् पॊर–बलवान और वेगयुक्त पवन के झोंके से; मेक्कु नोक्किय पॊङ्कु–ऊपर की ओर उमड़ आये; इरुपाल् कटल् तरङ्कम् पोलुम्–विपुल क्षीरसागर की तरंगों के समान थे। ए। १२०

वे सौध सफ़ेद थे; इतने सफ़ेद कि स्वयं चन्द्र भी उनके सामने काला लगता था। उनपर सफ़ेदी भी पुती थी। उनको देखने पर ऐसा लगता था मानों प्रवल प्रभंजन के झोंकों से क्षीरसागर की उत्तुंग तरंगें उठी हुई हों। १२०

❀ पुळ्ळियम् बुऱविऱै पॊरुन्दु माळिहै, तळ्ळरुन् दमऩियत् तहडु वेय्न्दऩ
अॅळ्ळरुङ् गदिरव ऩिळवॅ यिऱ्कुऴाम्, वॅळ्ळिवॅण् गिरियिडै विरिन्द पोलुमे 121

तळ्ळ अरु–अपृथक्करणीय; तमऩियम् तकटु वेय्न्तऩ–स्वर्ण के पत्र मढ़े हुए; पुळ्ळि अम् पुऱवु पॊरुन्तुम्–बिन्दियों वाले सुन्दर कबूतरों के रहने के दरबे जिनमें रहते हैं; माळिकै–वे प्रासाद; अॅळ्ळ उरु–अनिन्द्य; इळ वॅयिल् कुऴाम्–सूर्य की बाल-किरणों के जाल; वॅळ्ळि वॅण् किरियिऩ् इटै–सफेद धवल-गिरि पर; विरिन्त पोलुम्–फैल गये ऐसा लगता है। १२१

उस नगर के सफेद सौधों में विधिवत् कबूतरों के ठहरने के दर्बे बने हैं, जिन पर स्वर्ण-पत्र मढ़े हैं। यह धवल प्रासाद सूर्य की पीत किरणों से मण्डित श्वेत-गिरियों के समान दिखाई देते हैं। १२१

वयिरनऱ् कान्मिशै मरह दत्तुलाम्
शॅयिरऱु पोदिहै किडत्तिच् चित्तिरम्
उयिर्पॅऱक् कुयिऱ्ऱिय वुम्बर् नाट्टवर्
अयिर्वुऱ् विमैप्पन वळविल् कोडिए 122

वयिरम् नल् काल् मिचै–हीरों से बने सुन्दर खम्भों पर; **मरकतम् तुलाम्**–मरकत के धरन; **चॅयिर् अऱ पोतिकै**–दोषहीन (कमलाकार के) खम्भ-शिखर; **किटत्ति**–रखकर; **चित्तिरम् उयिर् पॅऱ कुयिऱ्ऱिय**–मानों जीवित हो आये हों, ऐसे चित्रों (-प्रतिमाओं) से युक्त बनाकर; **उम्पर् नाट्टवर्**–देवलोकवासी; **अयिर्वु उऱ**–भ्रमित हो जायँ, ऐसे; **इमैप्पन**–दीप्तिमान हैं जो; **अळवु इल् कोटि**–असंख्य करोड़ हैं। ए। १२२

प्रासादों के खम्भे हीरक-मय हैं। खम्भों के ऊपर औंधेकमल के आकार के स्तम्भ-सिर होते हैं। उन पर मरकत के धरन रखे गए हैं। उन प्रासादों में अनेक सजीव दिखनेवाले चित्र बने हैं। इन प्रासादों को देख, देव भ्रम में पड़ जाते हैं कि क्या ये हमारे विमान तो नहीं। ऐसे प्रासाद असंख्य करोड़ हैं। १२२

चन्दिर कान्दत्तिन् ऱलत्त शन्दनप्, पन्दिशॅय् तूणिन्मेऱ् पवळप् पोदिहैच्
चॅन्दम नियत्तुलाज् जॅऱित्त तिण्शुवर्, इन्दिर नीलत्त वॅण्णिल् कोडिए 123

चन्तिर कान्तत्तिन् तळत्त–चन्द्र-कान्त पत्थर की फर्श वाले; **पन्ति चॅय् चन्तनत् तूणिन् मेल्**–पंक्तियों में खड़े किए खम्भों के ऊपर; **पवळम् पोतिकै**–मूंगोंवाले खम्भ-शीर्षों पर; **चॅम् तमनियम् तुलाम् चॅऱित्त**–लाल सोने के बने धरन जिनपर लगे हैं, और; **तिण् चुवर् इन्तिर नीलत्त**–(जिनकी) भित्तियाँ इन्द्रनीलमणियों वाली हैं, (ऐसे प्रासाद); **ऍण् इल् कोटि**–असंख्यक करोड़ हैं। १२३

अन्य प्रासाद हैं, जिनकी फर्श चन्द्रकान्त पत्थरों की है। पंक्ति में स्थित खम्भे चन्दन के हैं। स्तम्भ-शीर्ष प्रवाल के हैं। धरन लाल स्वर्ण के; और दीवारें इन्द्र-नीलम की बनी हैं। ऐसे असंख्य करोड़ हैं। १२३

पाडहक् कालडि पदुमत् तेय्प्पन, शेडरैत् तऴुइन शॅय्य वायिन
नाडहत् तॊऴिलिन नडुवु तुय्यन, आडहत् तोऱ्ऱत्त वळवि लादन 124

पाटकम् काल् अटि–घुँघरू पहने पैरों के निचले भाग; **पतुमम् एय्प्पन**–पद्म के समान हैं; **चॅय्य वायिन**–लाल-मुखी हैं; **नटुवु तुय्यन**–मध्यभाग रुई के अग्र के समान सूक्ष्म हैं; **आटकम् तोऱ्ऱत्त**–स्वर्णमय दृश्यवाले हैं, जो (वे चित्र); **अळवु इलातन**–असंख्यक हैं; **चेटरै तऴुइयिन**–(कुछ) अपने पतियों का आलिंगन करने की मुद्रा में बने; **नाटकम् तॊऴिलिन**–(कुछ) नर्तन-कर्म-रत दिखाये गये हैं। १२४

अनेक प्रासादों में अनेक स्त्रियों के चित्र अंकित हैं। उनके घुंघरू वाले पैर पद्म के समान हैं। अधर लाल हैं। कटि भाग अति सूक्ष्म हैं। सोने के रंग के हैं। ऐसे वे असंख्यक हैं। उनमें कुछ अपने पतियों का आलिंगन करती दिखायी गयी हैं और कुछ नृत्यलीन। (इस पद्य में प्रासाद और नारियों में श्लेष का अर्थ निकालने का प्रयास भी किया जाता है; पर उसके लिए पाठ परिवर्तन की आवश्यकता पड़ जाती है। १२४

पुक्कवर् कण्णिमै पॉरुन्दु ऱादॉळि
तॊक्कुडऩ् ऱयङ्गविण् णवरिऱ् ऱोऩ्ऱलाल्
तिक्कुऱ निऩैप्पिऩिऱ् चॆल्लुन् दॆय्ववी
डोक्कनिऩ् ऱिमैप्पऩ वुम्बर् नाट्टिऩुम् 125

पुक्कवर्–प्रविष्ट (हुए) लोग; कण्णिमै पॉरुन्तु उऱातु–पलक बन्द किये बिना ही; ऑळि तॊक्कु उटऩ् तयङ्क–उन (प्रासादों) की कान्ति के इनकी कान्ति के साथ मिलकर (फलस्वरूप); विण्णवरिऩ् तोऩ्ऱलाल्–देवों के समान दिखने से; निऩैप्पिऩिल्–संकल्प करते ही; तिक्कु उऱ चॆल्लुम्–सभी दिशाओं में जा सकनेवाले; तॆय्व वीटु ऑक्क निऩ्ऱु–देव-यानों के समान स्थित रहकर; उम्पर् नाट्टिऩुम्–देव-लोक में भी; इमैप्पऩ–शोभा दिखानेवाले हैं। १२५

उनमें जो प्रवेश करते हैं वे विस्मय-विमूढ़ हो पलक नहीं गिराते। उन पर भवन की छवि पड़ती है अतः वे देवों के सदृश लगते हैं। तब वे प्रासाद इन देवनुमा लोगों के साथ, और अपनी ऊँचाई की वजह से भी देवयानों के समान, जो संकल्प मात्र से कहीं भी जा सकते हैं— लगते हैं। १२५

अणियिऴै महळिरु मलङ्गल् वीररुम्, तणिवऩ वऱनॆऱि तणिवि लादऩ
मणियिऩुम् पॊऩ्ऩिऩुम् वऩैन्द वल्लदु, पणिपिऱि दियऩ्ऱिल पहलै वॆऩ्ऱऩ 126

अणि इऴै मकळिरुम्–सुन्दर आभरण वाली रमणियों; अलङ्कल् वीररुम्–माला-धारी तरुणों; तणिवऩ–के आवास हैं; अऱनॆऱि तणिवु अलातऩ–धर्माचरण में कम नहीं होनेवाले; मणियिऩुम् पॊऩ्ऩिऩुम्–रत्न और स्वर्ण से; वऩैन्त अल्लतु–बनने के सिवा; पिऱितु पणि इयऩ्ऱिल–अन्य वस्तुओं से बननेवाले नहीं; पकलै वॆऩ्ऱऩ–सूर्य को हरा चुके हैं। १२६

इनमें तरुणियाँ और तरुण रहते हैं। वे सब धर्मचारी हैं। इन पर स्वर्ण और रत्नों का ही अलंकार है; और किसी वस्तु का नहीं। वे सूर्य से भी बढ़कर उज्ज्वल हैं। (इस पद्य में 'तणिवऩ, तणिवलादऩ' दो शब्दों का प्रयोग है जिनमें परस्पर विरोध का आभास-सा लगता है। पर दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं। पहले का— बसे हुए; दूसरे का— कम नहीं होनेवाले)। १२६

वाऩुऱ निवन्दऩ वरम्बिल् शॅल्वत्त, ताऩुयर् पुहऴॅऩत् तयङ्गु शोदिय
ऊऩमि लऱनॅऱि युऱ्ऱ वॅण्णिलाक्, कोऩिहर् कुडिहडङ् कॉऴ्है शाऩ्ऱऩ 127

वाऩ् उऱ निवन्तऩ–आकाश तक ऊँचे गये हैं; वरम्पु इल् चॅल्वत्त–अपार सम्पत्तिवाले; उयर् पुकऴ् अॅऩ–बढ़ते यश के समान; तयङ्कु चोतिय–दीप्तिमान ज्योतिवाले हैं; ऊऩम् इल् अऱम् नॅऱि उऱ्ऱ–कमी-हीन धर्म-मार्ग पर चलनेवाले; कोऩ् निकर्–राजा के समान; अॅण् इला कुटिकऴ्–असंख्य (प्रजा-) जनों को; तम् कॉऴ्कै चाऩ्ऱऩ–अपने (अधीन) में लेकर श्रेष्ठ बने हुए हैं। १२७

गगनोच्च, अपार धन भरे, उन्नत यश के समान शुभ्र, ये प्रासाद, निर्दोष, धर्म-पथ-चारी राजा के समान जिसके पालन के अधीन अनेक प्रजाजन हैं, अपने रक्षण में अनेक मनुष्यों को लिए रहते हैं। (यानी इन प्रासादों में असंख्यक लोग रहते हैं।)। १२७

अरुवियिऱ् ऱाऴ्न्दुमुल् तलङ्गु तामत्त, विरिमुहिऱ् कुलमॅऩक कॉडिवि राविऩ
परुमणिक् कुवैयिऩ पशुम्बॉऩ् कोडिय, वरुमयिऱ् कणत्तऩ मलैयुम् पोऩ्ऱऩ 128

अरुवियिऩ् ताऴ्न्तु–सरिता के समान लटकते; अलङ्कु–हिलते; तामत्त–हारों के हैं (से अलंकृत हैं); विरिमुकिल् कुलम् अॅऩ–फैले श्वेत मेघ-समूहों के समान; कॉटि विराविऩ–ध्वजाओं से व्याप्त; परु मणि कुवैयिऩ–बड़े रत्न-राशियों के हैं (से सज्जित); पचुम् पॉऩ् कोटिय–चोखे स्वर्ण से भरे; वरुम् मयिल् कणत्तऩ–पालित मयूर-समूह-युक्त; मलैयुम् पोऩ्ऱऩ–(इनके कारण) पर्वत-सम भी रहनेवाले, (प्रासाद)। १२८

अनेक सौध पर्वतों से साधर्म्य रखते हैं। पर्वतों में सरिताएँ ऊपर से नीचे बहती हैं; उन पर मेघ जमे हैं; रत्नों की राशियाँ हैं; स्वर्ण मिलता है; और मोर पलते हैं। उसी तरह इन प्रासादों में मोती-मालाएँ लटकायी गयी हैं, जो सरिताओं के समान हैं। मेघ के समान ध्वजायें फहरती हैं; रत्न और स्वर्ण की बात तो प्रसिद्ध ही है। और मोर पाले जाते हैं। १२८

अहिलिडु कॉऴुम्बुहै यळाय्म यङ्गिऩ, मुहिलॉडु वेऱ्ऱुमै तॅरिह लामुऴुत्
तुहिलुडै नॅडुङ्गॉडिच् चूल मिऩ्ऩुव, पहलिडु मिऩ्ऩणिप् परप्पुप् पोऩ्ऱवे 129

अकिल् इटु कॉऴु पुकै–अगर से निकला घना धुआँ; अळाय् मयङ्किऩ–फैलकर जमा है, ऐसे धूम जमे; मुकिलॉटु वेऱ्ऱुमै तॅरिकला–मेघों से पृथकत्व (जिनका) मालूम नहीं हो पाता; मुऴु तुकिल् उटै नॅटु कॉटि–महीन चीर की (बनी) लम्बी ध्वजाओं के मध्य; चूलम् मिऩ्ऩुव–शूल जो चमकते हैं वे; पकल् इटु–चमकनेवाले; मिऩ् अणि परप्पु पोऩ्ऱऩ–विद्युत के सुन्दर विस्तार के समान रहते हैं। १२९

उन प्रासादों पर जो महीन कपड़े की बनी पताकाएँ फहरती हैं उन पर अगरु धूम जमता है। इसलिए वे बिल्कुल मेघों के समान लगती हैं। उनके बीच वज्र के सीधे आघात से मकान को बचाने के लिए लोहे

के शूल रखे गये हैं और वे चमकदार हैं। वे मेघों के मध्य कौंधनेवाली बिजलियों के समान हैं। १२९

तुडियिडैप् पणैमुलैत् तोहै यऩ्ऩवर्, अडियिणैच् चिलम्बुपूण् डरऱ्ऱु माळिहैक्
कॊडियिडैत् तरळवॆण् कोवै शूऴ्वऩ, कडियुडैक् कऱ्पहक् कावैप् पोऩ्ऱवे 130

तुटि इटै–डमरू (के सामन पतली) कमर; पणै मुलै–पीन स्तन; तोकै अऩ्ऩवर्–कलापियों सदृश (छटावाली स्त्रियाँ); अटि इणै–चरण द्वय (को); चिलम्पु पूण्टु अरऱ्ऱुम् माळिकै–नूपुर पकड़कर (जहाँ) क्वणन करते हैं उन प्रासादों में; कॊटि इटै–अनेक ध्वजाओं के मध्य; तरळम् वॆण् कोवै चूऴ्वऩ–सफ़ेद मुक्ताहारों के लटकने के दृश्य; कटि उटै–श्रेष्ठ; कऱ्पकम् कावै पोऩ्ऱ–कल्पक वन के समान थे। १३०

वे प्रासाद जिनमें क्षीण-कटि, पीन-स्तन और कलापी-समाना रमणियाँ रहती हैं— ध्वजाएँ, मुक्ता-हार आदि के कारण कल्पक-वन के समान लगते हैं। १३०

काण्वरु नॆडुवरैक् कदलिक् काऩम्बोल्, ताणिमिर् पदाहैयिऩ् कुऴान्द ळैत्तऩ
वाणऩि मऴुङ्गिड मडङ्गि वैहलुम्, शेण्मदि तेय्वदक् कॊडिह डेय्क्कवे 131

काण् वरु–सुन्दर रूपवाले; नॆटु वरै–विशाल पर्वत पर के; कतलि काऩम् पोल्–कदली वन के समान; ताळ् निमिर्–डाँडों पर फहरनेवाली; पताकैयिऩ् कुऴाम्–पताकाओं का समूह; तळैत्तऩ–(प्रासादों पर) भर-पूर रहा; चेण् मति–आकाश-चारी चन्द्र; मटङ्कि–बाधा पाकर; वाळ् नऩि मऴुङ्किट–प्रकाश में अधिक मन्द पड़ते हुए; वैकलुम् तेय्वतु–दिने-दिने क्षीण होना; अक् कॊटिकळ् तेय्क्कवे–उन ध्वजाओं के घर्षण के ही कारण। १३१

वे अपनी ध्वजाओं के कारण पर्वतों पर मिलनेवाले कदलीवन से मेल खाते हैं। ये ध्वजाएँ चन्द्र को रोकती ही नहीं पर उसे रगड़-रगड़कर धीरे-धीरे कांतिहीन भी बना लेती हैं। १३१

पॊऩ्ऱिणि मण्डप मल्ल पूत्तॊडर्, मऩ्ऱुह ळल्लऩ माड माळिहै
कुऩ्ऱुह ळल्लन मणिशॆय् कुट्टिमम्, मुऩ्ऱिलह ळल्लऩ मुत्तिऩ् पन्दरे 132

पॊऩ् तिणि मण्टपम्–स्वर्ण-कृतियों से भूषित मण्डप; अल्ल–जो नहीं हैं वे; पू तॊटर्–फूलों की छाजनवाले लता-कुंज हैं; मऩ्ऱुकळ्–आम सभा-मण्डप जो नहीं; माटम् माळिकै–माढोंवाले सौध हैं; कुऩ्ऱुकळ् अल्लऩ–छोटे पर्वत जो नहीं; मणि चॆय् कुट्टिमम्–रत्नों की बनी कृत्रिम गिरियाँ हैं; मुऩ्ऱिल्कळ्–रिक्त स्थान नहीं; मुत्तिऩ् पन्तरे–मोती-वितान हैं। १३२

उस नगर में या तो स्वर्ण-रचनाओं से भरे मण्डपों को, आम सभा-भवनों को, प्राकृतिक शैलों को देखते हैं या लताकुंज, माढोंवाले सौध, या कृत्रिम-क्रीड़ा-शैल। खाली मैदान के ऊपर भी मोती का वितान छाया मिलेगा। अर्थात् नगर किसी न किसी भवन से या रचना से पूर्ण है। १३२

❀ मिऩ्ऩॆऩ विळक्कॆऩ वॆयिऱ्पि ऴम्बॆऩत्, तुऩ्ऩिय तमऩियत् तॊऴिऱ् ऴैत्तवक्
कऩ्ऩिनऩ् ऩहर्निऴल् कदुव लालरो, पॊऩ्ऩुल हायदु पुलवर् वाऩमे 133

मिऩ् ॲऩ–बिजली के समान और; विळक्कु ॲऩ–दीप के समान, और; वॆयिल् पिऴम्पु ॲऩ–सूर्य-किरण-पुंज के समान; तुऩ्ऩिय–अधिक कांतियुक्त; तमऩियम् तॊऴिल् तऴैत्त–स्वर्ण की कारीगरी जहाँ अधिक है; अ कऩ्ऩि नल् नकर् निऴल्–उस अक्षय नगर का प्रकाश; कतुवलाल्–जा लपेट लेता है, अतः; पुलवर् वाऩम्–देवों का स्वर्ग-लोक; पॊऩ् उलकु आयतु–स्वर्ण-लोक बना, (अरो)। १३३

देवलोक स्वर्णलोक कैसे बना ? कवि की कल्पना है कि अयोध्या की कांति उस पर फैली इसलिए वह वैसा बना। उस अक्षय नगर में स्वर्ण-कृतियों की भरमार है जिससे बिजलियों या सूर्य-किरणों का सा प्रकाश छिटकता है और वह देव-लोक पर फैल जाता है। १३३

ॲऴमिडत् तहऩ्ऱिडै यॊऩ्ऱि ॲऱ्पडु, पॊऴुदिडैप् पोदलिऱ् पुरिशैप् पॊऩ्ऩहर्
अऴऩ्मणि तिरुत्तिय वयोत्ति याळुडै, निऴलॆऩप् पॊलियुमा ऩेमि वाऩ्शुडर् 134

नेमि वाऩ् चुटर्–सूर्य-मण्डल की किरणें; ॲऴुम् इटत्तु–उगने के समय पर; अकऩ्ऱु–लम्बी होकर; इटै ऒऩ्ऱि–मध्याह्न में, घटकर; ॲल् पटु पॊऴुतु–अस्त के समय; पोतलिऩ्–छिप जाती हैं, इसलिए; अऴल् मणि–अग्नि के समान दीप्त रत्नों से अलंकृत; पुरिचै–प्राचीरोंवाली; पॊऩ्नकर्–स्वर्ण (सम) उज्ज्वल नगरी; अयोत्तियाळ् उटै–अयोध्या (देवी) के; निऴल् ॲऩ–प्रतिबिंब (या छाया) के समान; पॊलियुम्–सुन्दर दिखाई देता है (वह सूर्य-बिंब) (आल्)। १३४

सूर्य को अयोध्या नगर के प्रतिबिंब के रूप में देखते हैं कवि। उदय के समय पर उसकी किरणें दीर्घ, मध्याह्न में घटी हुई और अस्त के समय में ओझल हो जाती हैं। मणि-मणिक्यों के साथ निर्मित प्राचीरों वाली अयोध्या की परछाईं भी वैसे ही लम्बी, घटी और ओझल हो जाती है। यह तो सूर्य के कारण अयोध्या की परछाईं की यह हालत होती है। कवि इसका उल्टा बताकर अपनी चातुरी दिखाता है। १३४

आय्न्दमे हलैयव रम्बॊऩ् माळिहै, वॆय्न्दका रहिऱ्पुहै युण्ड मेहम्बोय्त्
तोय्न्दमा कडऩ्ऱुन् दूब नाऱुमेल्, पाय्न्दता रैयिऩिलै पहर वेण्डुमो 135

आय्न्त मेकलै अवर्–ध्यान देकर बनायी गयी मेखला-धारिणी स्त्रियों के द्वारा; अम् पॊऩ् माळिकै–सुन्दर प्रासादों में; वेय्न्त–(प्रज्वलित अगरु से निकलकर) फैले; कार् अकिल् पुकै उण्ट मेकम्–काले अगरु-धूम से मिश्रित मेघ; पोय् तोय्न्त मा कटल्–जिसपर जाकर (जल पीने के लिए) छाते हैं, वह विशाल सागर भी; नऱु तूपम् नाऱुमेल्–(अगरु-धूम की) सुगन्ध देता है तो; पाय्न्त तारैयिऩ् निलै–गिरती (वारिश-) धारों की स्थिति; पकर वेण्टुमो–कहना चाहिए क्या ? । १३५

प्रासादों में श्रेष्ठ मेखला-धारिणी स्त्रियाँ अगरु-धूम लगाती हैं। घने रूप से फैलनेवाला वह धुआँ मेघों में भी व्याप्त हो जाता है और मेघ

इतने सुवासित होते हैं कि वे समुद्र को भी, जल पीते वक्त, सुवासित कर देते हैं। फिर वे जो धारें बरसाते हैं वे भी सुवासित ही होंगी— यह भी कहना है क्या ? । १३५

कुऴलिशै मडन्दयर् कुदलै कोदयर्, मऴलयङ् गुऴलिशै महर याऴिशै
ॲऴिलिशै मडन्दय रिऩ्शॊ लिऩ्ऩिशै, पऴयर्तञ् जेरियिऱ् पॊरुनर् पाट्टिशै 136

कुऴल् इचै मटन्तैयर्–(जिनके बाल अभी बढ़कर सम हुए जाते हैं उन) अलकाओं की; कुतलै–तोतली बोली का मधुर स्वर; कोतैयर्–घने केशवाली तरुणियों का; अम् कुऴल् इचै मऴलै–मीठी बाँसुरी (-स्वर सा) वाणी का स्वर; मकर याऴ् इचै–मकर वीणा का मनोरम स्वर; ॲऴिल् इचै–रम्यता-युक्त; मटन्तैयर् इऩ् चॊल् इऩ् इचै–उन्नीस-बीस वर्ष की युवतियों के मधुर वचनों का मीठा स्वर; पऴैयर् तम् चेरियिल्–मद्य-विक्रेताओं की गली में; पॊरुनर् पाट्टु इचै–नाचने-गानेवालों के गाने का स्वर। १३६

उस नगर के सब नाद संगीतमय हैं और सुरीले। अलकाओं (आठ-दस बरस की लड़कियों) की बोली; घने केशवाली बालाओं की बोली; वीणा की ध्वनि, तरुणियों की बोली, मद्य-विक्रय के स्थानों में नाचने-गानेवालों के गाने—सब तरह के मनोरम स्वर पाए जाते हैं। १३६

कण्णिडैक् कऩल्शॊरि कळिऱु काल्कॊडु, मण्णिडै वॆट्टुव वाट्कै मैन्दर्तम्
पण्णैहळ् पयिलिडम् कुऴिप डैप्पऩ, शुण्णमक् कुऴिहळैत् तॊडर्न्दु तूर्प्पऩ 137

वाळ् कै मैन्तर् तम् पण्णैकळ्–करवीर-हस्त युवकों के दल; पयिल् इटम्–(जहाँ तलवार चलाने आदि का) अभ्यास करते हैं उन स्थलों पर; कण् इटै कऩल् चॊरि कळिऱु–आँखों से अंगारे उगलनेवाले हाथी; काल् कॊटु मण् इटै वॆट्टुव–पैरों से ज़मीन काटते; कुऴि पटैप्पऩ–गड्ढे बना देते हैं; अ कुऴिकळै–उन गड्ढों को; चुण्णम्–युवकों (पट्ठों) के वक्षों और भुजाओं पर लगे चूर्ण, तॊटर्न्तु–लगातार गिरते और; तूर्प्पऩ–पाट देते हैं। १३७

अभ्यास-स्थलों में हाथियों के सामने नौजवान लोग तलवार चलाने का अभ्यास करते हैं। तब हाथी अपने पैरों से जमीन खरोंचते हैं जिससे गड्ढे पड़ जाते हैं। उनमें नौजवानों के अंगों से लिप्त लेप के चूर्ण गिरते हैं और उससे गड्ढे पट जाते हैं। १३७

पन्दुहण् मडन्दयर् पयिऱ्ऱु वारिडैच्, चिन्दिऩ मुत्तिऩ मवैति रट्टुवार्
अन्दमिल् शिलदिय राऱ्ऱु कुप्पैहळ्, चन्दिर ऩॊळिकॆडत् तऴैप्प तण्णिला 138

पन्तुकळ् पयिऱ्ऱुवार्–गेंद खेलनेवाली; मटन्तैयर इटै–युवतियों के बीच; चिन्तिऩ मुत्तु इऩम् अवै–छितरे मोतियों की राशियों को; तिरट्टुवार्–बटोर लेनेवाले; अन्तम् इल् चिलतियर्–अनन्त दासियाँ; चॆय्युम् कुवियल्कळ्–(जो) लगाती हैं वे ढेर; चन्तिरऩ् ऒळि कॆट–चन्द्र के प्रकाश को मन्द बनाते हुए; तण्निला तऴैप्प–शीतल चाँदनी (सा प्रकाश) उगलते हैं। १३८

चाँदनी में युवतियाँ गेंद खेलती हैं। तब उनके शरीरों से मोती चू पड़ते हैं। उन मोतियों को बुहारकर दासियाँ उनके ढेर लगा देती हैं। वे ढेर इतना प्रकाश देते हैं कि चाँदनी मन्द पड़ जाती है। १३८

अरङ्गिडै मडन्दय राडु वारवर्, करुङ्गडैक् कण्णयिल् कामर् नॅञ्जिनै
उरुङ्गुव मऱ्ऱव रुयिर्ह ळन्नवर्, मरुङ्गुल्पोऱ् ऱेय्वन वळर्व दाशये 139

अरङ्कु इटै–नाट्य मंचों पर; मटन्तैयर्–नर्तकियाँ; आटुवार्–नाचती हैं; अवर्–उनके; करु कटै कण् अयिल्–काली आँखों की तिरछी चितवनरूपी बर्छियाँ; कामर् नॅञ्चिनै–कामियों के मनों को; उरुङ्कुव–खा लेती हैं; मऱ्ऱु–और (उससे); अवर् उयिर्कल्–उनके प्राण; अन्नवर् मरुङ्कुल् पोल्–उनकी कमरों के समान; तेय्वन–घटते जाते हैं; वळर्वतु–बढ़ता है; आचैये–उनका मोह ही। १३९

नाट्य-मंचों पर नर्त्तकियाँ नाचती हैं। उनकी तिरछी चितवन कामी दर्शकों के साथ बर्छी का काम करती है। कामियों के दिल उन स्त्रियों की कमरों के समान छीजते रहते हैं। जो वहाँ बढ़ता है वह बस उनका मोह ही। १३९

पॉऴिवन शोलैहळ् पुदिय तेन्शिल, विऴैवन तॅन्ऱलु मिञिऱु मॅल्लॅन
नुऴैवन वन्नवै नुऴैय नोवॊडु, कुऴैवन तणन्दवर् कॊदिक्कुङ् गॊङ्गये 140

चोलैकळ् पुतिय तेन् पॉऴिवन–उपवन नये फूलों का शहद बरसाते हैं; विऴैवन चिल–उसको चाहनेवालों में कुछ; तॅन्ऱलुम्–दक्षिणी (मलय) पवन; मिञिऱुम्–और भ्रमर; मॅल्लॅन नुऴैवन–धीरे-धीरे घुसते हैं; अन्नवै नुऴैय–उनके प्रवेश से; तणन्तवर्–पति-वियुक्त स्त्रियों के; कॊतिक्कुम्–तपनेवाले; कॊङ्कै–स्तन; नोवॊटु–वेदना के साथ; कुऴैवन–ढीले पड़ जाते हैं। १४०

उस नगर के उद्यानों में शहद चूता है। शहद और उसकी सुगन्धि से बड़ा प्रेम रखते हैं (एक जाति के) भौंरे, वे उनमें घुस आते हैं। साथ-साथ दक्षिणी पवन भी प्रवेश करता है। ये दोनों ही— भौंरे और मलय-पवन-कामवर्धक हैं। इसलिए वियोगिनी स्त्रियों को बहुत वेदना होती है जिससे उनके मनोरम सुघड़ स्तन तप्त और ढीले हो जाते हैं। १४०

इऱङ्गुव महरया ऴॅडुत्त विन्निशै, निऱङ्गिळर् पाडला निमिर्व वव्वऴिक्
कऱङ्गुव वळ्विशि करुवि कण्मुहिऴ्त्, तुऱङ्गुव महळिरो डोदुङ् गिळ्ळये 141

इऱङ्कुव–धीमे स्वर में; मकर याऴ् ॲटुत्त इन् इचै–मकर-वीणा से उठे मधुर संगीत; निऱम् किळर् पाटलाल्–सुस्वरित गीतों के कारण; निमिर्व–और श्रेष्ठ बन जाते हैं; अव्वऴि–वहाँ; वळ्विचि करुवि–डोरे-बँधे (मृदंग आदि) वाद्य; कऱङ्कुव–अनुरूप बजते हैं; मकळिरॊटु ओतुम् किळ्ळै–स्त्रियों के साथ बोलते रहनेवाले शुक; कण् मुकिऴ्त्तु उऱङ्कुव–आँखें बन्द कर सोते हैं। १४१

किन्हीं भवनों में वीणा के साथ स्त्रियाँ गाती हैं। मृदंग भी बजता

है, समाँ बँध जाता है। इससे प्रभावित होकर, वहाँ उनसे पालित शुक सो जाते हैं। १४१

कुदैवरिच् चिलैनुदऱ् कॊव्वै वाय्च्चियर्, पदवुकैत् तॊऴिल्कोडु पऴिप्पि लादऩ
तदैमलर्त् तामरै यऩ्ऩ ताळिऩाल्, उदैपडच् चिवप्पऩ वुरवुत् तोळ्हळै 142

कुतै वरि चिलै नुतल्–(डोरे बाँधने के) चिह्नों और बन्धनों से युक्त धनुष के आकार के भालों और; कॊव्वै वाय्च्चियर्–बिंब (-सम लाल) अधरोंवालियाँ; पतवु कैतॊऴिल् कॊटु–श्रेष्ठ चित्रकारी की सजावट के साथ; पऴिप्पु इलातऩ–दोष-हीन; ततै मलर् तामरै अऩ्ऩ–दल-संकुल कमलों के समान; ताळिऩाल्–पैरों की; उतैपट–लातें खाने से; उरवु तोळ्कळ्–(पुरुषों के) बलिष्ठ कन्धे; चिवप्पऩ–लाल हो जाते हैं। १४२

कहीं स्त्रियों को अपने प्रेमियों पर गुस्सा हो जाता है। (प्रेमी पति माफी माँगते हैं, पर वे नहीं मानतीं।) उनके कंधों पर लात मार देती हैं। वे स्त्रियाँ ऐसी जिनके भाल धनुष के समान मनोरम और अधर बिंब-फलों के समान लाल हैं। अब पुरुषों के कंधे लाल हो जाते हैं। वह इस ताड़न के प्रभाव से नहीं; क्योंकि उनके पैर कमल के समान कोमल हैं। पर उनके पैरों में महावर लगी है और उसके कारण लाल निशान पड़ जाते हैं। १४२

पॊऴुदुणर् वरियवप् पॊरुविऩ् मानहर्त्, तॊऴुदकै मडन्दयर् शुडर्वि ळक्कॆऩप्
पऴुदऱु मेऩियैप् पार्क्कु माशैकॊल्, ऎऴुदुचित् तिरङ्गळु मिमैप्पि लादवे 143

पॊऴुतु उणर् अरिय–समय (दिन और रात) का भेद समझना जहाँ कठिन था; अ पॊरु इल् मा नकर्–उस उपमाहीन नगर (में रहनेवाली); तॊऴु तकै मटन्तैयर्–नमस्कृत होने योग्य (आदरणीय) स्त्रियों के; चुटर् विळक्कु अॆऩ–ज्योतिर्मय दीप के समान; पऴुतु अऱु मेऩियै–जो कलंकहीन थे उन शरीरों को; पार्क्कुम् आचै कॊल्–(लगातार) देखते रहने की इच्छा ही से तो; ऎऴुतु चित्तिरङ्कळुम्–अंकित चित्र भी; इमैप्पु इलात–निर्निमेष हैं। १४३

उस नगर का ठाट कुछ ऐसा है कि वहाँ रात और दिन का भेद नहीं जाना जाता। उस अनुपम नगर में घर-घर में चित्र अंकित हैं जिनकी मूर्तियाँ अपलक देखती सी हैं। वे शायद उन स्त्रियों को देखते ही रहना चाहती हैं जो अनिन्द्य-सुन्दरियाँ हैं और जिनके शरीरों की छवि दीप की ज्योति के समान है। १४३

तणिमलर्त् तिरुमह डयङ्गु माळिहै, इणरॊळि परप्पिनिऩ् ऱिरुडु रप्पऩ
तिणिचुडर् नॆय्युडैत् तीवि ळक्कमो, मणिविळक् कल्लऩ महळिर् मेऩिये 144

तणि मलर् तिरुमकळ् तयङ्कुम्–शीतल कमल की (निवासिनी) श्री लक्ष्मी जहाँ सदा रहती थीं; माळिकै–(उन) प्रासादों में; इणर् ऒळि परप्पि निऩ्ऱु–किरण-जाल फैलाते हुए रहकर; इरुळ् तुरप्पऩ–अन्धकार को दूर करनेवाले हैं; नॆय् उटै–

घृत-युक्त; तिणि चुटर्–घने प्रकाशवाले; ती विळक्कमो–जलते दीप हैं; मणि विळक्को–रत्नों की चमक है; अल्लन–नहीं, वे; मकळिर् मेऩियये–स्त्रियों के पवित्र शरीर ही हैं। १४४

इस छन्द में कवि एक अपूर्व संशय उठाते हैं। उन प्रासादों में जो श्रीलक्ष्मी के वास-स्थान हैं, प्रकाश जो पाया जाता है क्या वह जलते दियों का प्रकाश है या रत्नों की कांति है? वह उत्तर देते हैं; नहीं तो, वह सुन्दरियों के शरीर की छवि है। १४४

पदङ्गळिऱ् ऱण्णुमै पाणि पण्णुऱ, विदङ्गळिऩ् विदिमुऱै शदिमि दिप्पवर्
मदङ्गिय रच्चदि वहुत्तुक् काट्टुव, शदङ्गह ळल्लऩ पुरवित् ताळ्हळे 145

तण्णुमै–मर्दल; पाणि–हाथ की ताली; पण्–गाने; उऱ–सबके समाँ बँधते; चति वितङ्कळिऩ् विति मुऱै–पाद-मुद्राओं के शास्त्र के अनुसार; पतङ्कळ मितिप्पवर्–पैर रखकर नर्तन करनेवाली; मतङ्कियर्–नर्तकी स्त्रियाँ; अ चति वकुत्तु काट्टुव–उन चरण-मुद्राओं का प्रदर्शन करती हैं; चतङ्कै–उनकी झाँझें; अल्लन–या, वे नहीं तो; पुरवि ताळ्कळ्–अश्वों के पैर हैं (जो नाचने में निपुण हैं)। १४५

वहाँ नृत्य की पाद-मुद्राएँ उन नर्तकियों के घुंघरू पहचनवा देंगे, जो (नर्तकियाँ) मृदंग-नाद, तालियों, और गाने के अनुरूप नृत्य करती है; नहीं तो आप अश्वों के पैरों से भी जान सकते हैं। १४५

मुळैप्पऩ मुऱुवलम् मुऱुवल् वॅन्दुयर्, विळैप्पऩ वॅऩ्ऱियये मॅलिन्दु नाडोऱुम्
इळैप्पऩ नुण्णिडै यिळैप्प मॅऩ्मुलै, तिळैप्पऩ मुत्तॊडु शॅम्बॊ ऩारमे 146

मुऱुवल् मुळैप्पऩ–(उन नर्तकियों की कभी-कभी) मुस्कुराहट होती है; अ मुऱुवल्–वह मुस्कुराहट; वॅम् तुयर् विळैप्पऩ–(कामुकों को) भयंकर पीड़ा देनेवाली होती है और यह; वॅऩ्ऱियये–(मुस्कुराहट की) जीत है; नुण् इटै–(उनकी) पतली कमरें; नाळ् तॊऱुम् मॅलिन्तु इळैप्पऩ–दिन-ब-दिन घटनेवाली है; इळैप्प–उनके क्षीण होते-होते; मॅल् मुलै–उनके कोमल स्तन; मुत्तॊटु चॅम्पॊऩ् आरम्–मुक्ताहारों और स्वर्णहारों को पहने हुए; तिळैप्पऩ–फूलते हैं। १४६

नर्तकियाँ मुस्कुराती हैं। उनका मन्दहास कामुक दर्शकों के मन में काम-वेदना पैदा कर देता है; और वे क्षीण होते जाते हैं। इसमें नर्त्तकियों के मन्दहास को गर्व है। वैसे ही उन नर्तकियों की कटियाँ क्षीण हैं; उस क्षीणता को देखकर उनके स्तन आभरणों से सजकर इतराते हैं। १४६

इडैयिडै यॅङ्गणुङ् गळिय ऱादऩ, नडैयिळ वऩ्ऩङ्ग णळिऩ नीर्क्कयल्
पॅडैयिऩ वण्डुहळ् पिरश माऩ्दिडुम्, कडहरि यल्लऩ महळिर् कण्गळे 147

इटै इटै–अपने-अपने स्थान पर; ऍङ्कणुम्–हमेशा; कळि अऱातऩ–जो मोद-रहित नहीं; नटै इळ अऩ्ऩङ्कळ्–सुन्दर चाल वाले तरुण हंस; नळिऩम्–नलिन पुष्प;

नीर् कयल्–जलचर मीन; पॅटैयिऩ वण्टुकळ्–भौंरियों के साथ रहनेवाले भौंरे; पिरचम् मान्तिटुम् कटकरि–सुरा पीनेवाले मत्तगज; अल्लातऩ–ये जो नहीं है तो (इनके सिवा); मकळिर् कण्कळे–तरुणियों की आँखें हैं । १४७

वहाँ सब सदा मुदित रहते हैं— सुन्दर चालवाले हंस, कमल, जलचर मछलियाँ, भौंरी-भौंरे और सुरापायी मत्तगज; उनके अलावा तरुणियों की आँखें भी । १४७

तऴल्विऴि याळियुन् दुणैयुन् दाळ्वरै
मुऴैविऴै गिरिनिहर् कळिऱ्ऱिऩ् मुम्मदम्
मऴैविऴुम् विऴुन्दॊरु मण्णुङ् गीऴुऱक्
कुऴैविऴु मदिल्विऴुङ् गॊडित्तिण् डेर्हळे 148

तऴल् विऴि याळियुम्–आग सी आँखों वाले शरभ (एक बलवान जानवर जो अब कहीं नहीं मिलता); तुणैयुम्–और उसकी स्त्री; ताळ् वरै मुऴै विऴै–जिस पर्वत-तल में रहनेवाली गुफ़ा को चाहते हैं (और जाकर ठहरते हैं); किरि निकर् कळिऱ्ऱिऩ्–ऐसे पर्वत-सदृश गजों के; मुम् मतम् मऴै पॊऴियुम्–(दोनों कपोलों से दो और 'बीज' एक) तीन (स्थानों का) मद जल वर्षा के समान बहता है; विऴुम् तॊऱुम्–जहाँ-जहाँ वह गिरता है; मण्णुम् कीऴ् उऱ–गड्ढे बनते हैं और; कुऴै विऴुम्–पंक भर जाता है; अतिल्–उनमें; कॊटि तिण् तेर्कळ् विऴुम्–ध्वजा सहित तगड़े (अनेक) रथ गिरते हैं । १४८

वहाँ के हाथी, उन पर्वतों के समान हैं जिनकी गुफा में शरभ के जोड़े प्यार के साथ रहते हैं; उन हाथियों के कपोलों से और बीज-कोष से मद-नीर निकलता है । वह दान-जल भूमि पर इतना गिरता है कि जगह-जगह पर गड्ढे बन जाते हैं और कीचड़ भर जाती है । फिर उनमें ध्वजा सहित रथ भी फिसलकर गिर जाते हैं । १४८

**आडुवार् पुरवियिऩ् कुरत्तै याप्पऩ, शूडुवा रिहऴ्न्दवत् तॊङ्गऩ् मालहळ्
ऒडुवा रिऴुक्कुव वूड लूडुऱक्, कूडुवार् वऩमुलै कॊऴित्त शान्दमे 149**

आटु–संचरणशील; वार् पुरवियिऩ् कुरत्तै–ऊँचे अश्वों के खुरों को; याप्पऩ–उलझकर रोकनेवाले; चूटुवार्–पहननेवालों द्वारा; इकऴ्न्त–त्यक्त; तॊङ्कल् मालैकळ्–लटकनेवाले छोरों के हार और छोर-बन्द हार हैं; ओटुवार इऴुक्कुव–दौड़नेवालों को फिसलाते हैं; ऊटल् ऊटु उऱ–रूठन छोड़ देने पर; कूटुवार्–(पतियों से) मिलनेवाली (स्त्रियों द्वारा); वऩम् मुलै कॊऴित्त चान्तम्–मनोरम स्तनों पर से पोंछकर फेंका गया चन्दन लेप । १४९

अयोध्या की वीथियों पर चलनेवाले अश्वों के पैरों से, लोगों द्वारा फेंकी गयी मालाएँ उलझ जाती हैं और चलनेवाले लोगों को, प्रणय कलह के शांत होने पर, स्त्रियाँ जो चन्दन आदि का लेप पोंछकर फेंक देती हैं उससे बना कीचड़ फिसला देता है । १४९

इळैप्परुङ् कुरङ्गळा लिवुळि पारिऩैक्
किळैप्पऩ वव्वळिक् किळर्न्द तूळियिऩ्
ऑॅळिप्पऩ मणियवै यॉळिर मीदुतेऩ्
तुळिप्पऩ कुमरर्तन् दोळिऩ् मालये 150

इवुळि-कुतिरैकळ्, इळैप्पु अरु कुरङ्कळाल्–अथक खुरों से; पारिऩै–भूमि को; किळैप्पऩ–खरोंचते हैं; अव् वळि किळर्न्त–तब छिटक उठी; तूळियिऩ्–धूल से; मणि–रत्न; ऑॅळिप्पऩ–छिपाये जाते हैं; अवै ऑॅळिर–उनको धौत करते हुए; कुमरर् तम् तोळिऩ् मालै–(उन अश्वों पर सवार) नौजवानों की, कन्धों पर पहनी मालायें; मीतु तेऩ् तुळिप्पऩ–उनपर शहद टपकाती हैं। १५०

अश्वों के अपने खुरों के कुरेदने से उठी धूलिराशि, उन पर सवार नौजवानों के आभरणों की मणियों को छिपा लेती है। फिर उन जवानों की मालाओं से चूनेवाला शहद मणियों पर गिरकर उन्हें धौत कर देता है। १५०

विलक्करुङ् गरिमदम् वेङ्गै नाऱुव, कुलक्कॉडि मादर्वाय् कुमुद नाऱुव
कलक्कडैक् कणिप्परुङ् गदिर्ह णाऱुव, मलर्क्कडि नाऱुव महळिर् कून्दले 151

विलक्क अरु करि मतम्–दुर्निवार गज-मद; वेङ्कै नाऱुव–'वेंगै' वृक्ष के फूल के समान महकता है; कुलम् कॉटि मातर् वाय्–कुलीन, लता (सदृश) स्त्रियों के मुख; कुमुतम् नाऱुव–कुमुद पुष्पों की तरह महकते हैं; कलम् कटै–आभरण; कणिप्पु अरु कतिर्कळ्–अगणित किरणें; नाऱुव–छिटकाती हैं; मकळिर् कून्तल्–नारियों के केशों में; मलर् कटि नाऱुव–पुष्पों की सुगन्धि (महकती) है। १५१

गज-मद एक पुष्प-विशेष की सी गन्ध छिटकाता है; कुलीन स्त्रियों के मुख कुमुद की सी गन्ध छिटकाते हैं; लोगों के आभरण अपार कांति छिटकाते हैं; और स्त्रियों के केश पुष्पों की सी गन्ध छिटकाते हैं। १५१

कोवयि ऩिदऩॉडॅण् कुऱिक्कि लादवत्, तेवर्तऩ् ऩहरियैच् चॅप्पु हिऩ्ऱदॆऩ्
यावयुम् विळङ्गिडत् तिहलि यिऩ्ऩहर्, आवणङ् गण्डपि नळहै तोऱ्ऱदे 152

अळकै–अलकापुरी; यावैयुम् विळङ्कु इटत्तु–सब तरह की समृद्धि शोभाओं में; इकलि–(अमरावती से) तुलना में बढ़कर; इ नकर् आवणम् कण्ट पिऩ्–इस नगर के वाणिज्य-स्थलों को देखने के बाद; तोऱ्ऱतु–हार मान बैठी; कोवैयिऩ्–(श्रेष्ठ नगरों की) शृंखला में; इतऩॉटु ऍण् कुऱिक्क इलात–इस (अयोध्या) के साथ रखकर जिसका नाम नहीं गिना जा सकता; अ तेवर् तम् नकरियै–उस देवेन्द्रलोक का; चॅप्पुकिऩ्ऱतु ऍऩ्–कहना क्या है ? । १५२

अमरावती (देवेन्द्रलोक) से अलकापुरी (कुबेर-लोक) अधिक समृद्ध और सुन्दर मानी जाती है। वह अलकापुरी भी, अयोध्या की दूकानों को देखते हुए हीन बन जाती है। तो अयोध्या के साथ रखकर भी जिसको गिना नहीं जा सकता, उस अमरावती का क्या कहना है ? । १५२

अदिर्कऴ लॉलिप्पऩ वयिलि मैप्पऩ, कदिर्मणि यणिवॅयिल् काल्व माऩ्मदम्
मुदिर्वुऱक् कमऴ्वऩ मुत्त मिऩ्ऩुव, मदुकर मिशैप्पऩ मैन्द रीट्टमे 153

मैन्तर् तम् ईट्टम्–नौजवानों की भीड़ जहाँ होती है वहाँ; अतिर् कऴल् ऑलिप्पऩ–कँपानेवाले पायल बजते हैं; अयिल् इमैप्पऩ–शक्तियाँ चमकती हैं; कतिर् मणि–(उनके आभरणों के) उज्ज्वल-रत्न; अणि वॅयिल् काल्व–सुखद कांति छिटकाते हैं; माऩ् मतम्–कस्तूरी; मुतिर्वु उऱ–अधिकता के साथ; कमऴ्वऩ–महकती है; मुत्तम् मिऩ्ऩुव–मोती कौंधते हैं; मतुकरम् इचैप्पऩ–भौंरे गूँजते हैं। १५३

वहाँ के संभ्रांत वीर नौजवानों के पैरों पर पायल थर्राते हुए बजते हैं। उनके हाथों में शक्तियाँ चमकती हैं; अंगों में आभरणों के उज्ज्वल रत्न सुखद धूप के समान कांति बिखेरते हैं; वक्ष और भुजाओं में कस्तूरी आदि का लेप खूब महकता है; हार के मोती विद्युत का-सा प्रकाश देते हैं। उनकी मालाओं पर भौंरे गूँजते हैं। १५३

वळैयॉलि वयिरॉलि मकर वीणयिऩ्
किळैयॉलि मुऴवॉलि किऩ्ऩ रत्तॉलि
तुळैयॉलि पल्लियन् दुवैक्कुञ् जुम्मयिऩ्
विळैयॉलि कडलॉलि मॅलिय विम्मुमे 154

वळै ऑलि–शंख-नाद; वयिर् ऑलि–शृंग-नाद; मकर वीणैयिऩ् किळै ऑलि–मकराकार की वीणा का स्वर; मुऴवु ऑलि–मर्दल-नाद; किऩ्ऩरत्तु ऑचैयुम्–किन्नर नाम के वाद्य की ध्वनि और; तुळै ऑलि–रंध्रवाले वाद्यों का स्वर; चुम्मैयिऩ् तुवैक्कुम्–एक साथ बजनेवाले; पल इयम् विळै ऑलि–चमड़े के बने, विविध बाजों का सम्मिलित स्वर; कटल ऑलि मॅलिय–समुद्र-ध्वनि दबाते हुए; विम्मुम्–विवृद्ध होते हैं। १५४

अयोध्या में विविध नादों का जमघट है; —शंखनाद, शृंगों द्वारा उत्पन्न स्वर; मकराकार की वीणा का स्वर; मर्दल का स्वर; किन्नर नाम के बाजे की ध्वनि; बाँसुरी आदि बाजों का नाद; और चमड़े के बने अनेक वाद्यों का सम्मिलित नाद। इनके सामने समुद्रघोष मन्द पड़ जाता है। १५४

मऩ्ऩवर् तरुतिऱै यळक्कु मण्डबम्, अऩ्ऩमॅऩ् ऩडैयव राडु मण्डबम्
उऩ्ऩरु मरुमऱै योदु मण्डबम्, पऩ्ऩरुङ् गलैतॅरि पट्टि मण्डबम् 155

मऩ्ऩवर् तरु तिऱै–राजाओं द्वारा लाया गया कर; अळक्कु मण्टपम्–मापनेवाले भवन; अऩ्ऩम् मॅल् नटै यवर् आटुम् मण्टपम्–हंसों की सी चालवालियों के नृत्य-भवन; उऩ्ऩ अरु–अनन्त; मरु मऱै–पाठ-योग्य वेदों का; ओतुम् मण्टपम्–पारायण-भवन; पऩ् अरु कलै–बहुमानित अपूर्व शास्त्रों या कलाओं की; तॅरि–खोज के लिए बने; पट्टि मण्टपम्–विवाद-सभाएँ। १५५

उस नगर में अनेक मण्डप हैं। अधीन राजा लोग कर देते हैं;

उनको नापने के लिए बने भवन हैं। नृत्य-शालाओं के भवन हैं; वेद-पारायण के मण्डप हैं; और ऐसे सभा-भवन हैं जहाँ विद्वान बैठकर शास्त्रों (विद्याओं) की चर्चा करते हैं। १५५

इरवियिऱ् चुडर्मणि यिमैक्कुन् दोरणत्
तॆरुविऩिऱ् चिऱियऩ तिशैहळ् शेण्विळङ्
गरुवियिऱ् पॆरियऩ वाऩैत् ताऩङ्गळ्
परवयिऱ् पॆरियऩ पुरविप् पन्दिये 156

इरवियिऩ् चुटर् मणि–सूर्य के समान उज्ज्वल रत्न; इमैक्कुम्–चमकनेवाले; तोरणम्–गोपुरवाली; तॆरुविऩिल्–वीथियों (से); तिचैकळ् चिऱियऩ–दिशाएँ छोटी हैं; आऩै तानङ्कळ्–गजमद; चेण् विळङ्कु–दूर पर दिखनेवाले; अरुवियिल्–झरनों से; पॆरियऩ–अधिक है; पुरवि पन्ति–अश्वों की पंक्तियाँ; परवैयिल् पॆरियऩ–समुद्र से भी विशाल हैं (ए)। १५६

अयोध्या नगर की वीथियाँ दिशाओं से अधिक लम्बी हैं। गज-मद-प्रवाह बहुत दूर तक दिखनेवाले झरनों से भी बड़े हैं। पंक्तिबद्ध अश्वों का समूह समुद्र से भी विशाल है। १५६

शूळिहै मऴैमुहि ऱॊडक्कुन् दोरणम्
माळिहै मलर्वऩ महळिर् वाण्मुहम्
वाळिह ळऩ्ऩवै मलर्व मऱ्ऱवै
आळिह ळऩ्ऩवर् निऱत्ति लाऴ्बवे 157

चूळिकै–सौधों के ऊपर बने मण्डप; मऴै मुकिल् तॊटक्कुम्–जल-गर्भित मेघों को रोकनेवाले हैं और; तोरणम्–बन्दनवारों से सजे हैं, (ऐसे मण्डपोंवाले); माळिकै–प्रासादों में; मकळिर् वाळ् मुकम् मलर्वऩ–स्त्रियों के सुशोभित मुख-कमल खिले हैं; अऩ्ऩवै–उनमें; वाळिकळ् मलर्व–आँखेंरूपी शर खिलते हैं; अवै–वे (नेत्रशर); आळिकळ् अऩ्ऩवर्–शरभों के समान पुरुषों के; निऱत्तिल्–वक्षों में; आऴ्प–घुस जाते हैं, (ए–मऱ्ऱु)। १५७

उस नगर के प्रासाद अतिसम्पन्न हैं। उनके ऊपरी भागों में तोरणों से अलंकृत और मेघों को भी रोकनेवाले मण्डप बने हैं। उन प्रासादों में, सिंह-सदृश पुरुषों के वक्षों पर शर के समान चुभनेवाली आँखों, और उन आँखों के आश्रय, कमल-वदनोंवाली सुन्दरियाँ रहती हैं। १५७

मऩ्ऩवर् कऴलॊडु माऱु कॊळ्वऩ, पॊऩ्ऩणि तेरॊलि पुरवित् तारॊलि
इऩ्ऩहै यवर्शिलम् बेङ्ग वेङ्गुव, कऩ्ऩियर् कुडैतुऱैक् कमल वऩ्ऩमे 158

मऩ्ऩवर् कऴलॊटु–राजाओं के पायलों की ध्वनि के; माऱु कॊळ्वऩ–मुकाबले में स्वरित होती हैं; पॊऩ् अणि तेर् ऒलि–स्वर्ण से अलंकृत रथों की (घंटियों की) ध्वनि, और; पुरवि तार् ऒलि–अश्वों के गले के हारों की ध्वनि; कऩ्ऩियर् कुटै तुऱै–

स्त्रियाँ जहाँ स्नान करती हैं, उन घाटों पर; इऩ् नकैयवर् चिलम्पु एङ्क–मधुर हँसी वाली उनके नूपुर क्वणित होते हैं, (उसके मुकाबले में); कमलम् अऩ्ऩम् एङ्कुव–कमलों पर रहनेवाले हंस बोलते हैं। १५८

वहाँ राजाओं के पायलों की ध्वनि उठती है। अश्वों की किंकणी-ध्वनि और रथों की घंटिकाओं की ध्वनि उसका मुकाबला करती है। स्नानघाटों पर हंस-मुखी रमणियों के नूपुर की ध्वनि का मुकाबला कमल पर रहनेवाले हंस अपनी बोली से करते हैं। १५८

ऊडवुङ् गूडवु मुयिरि ऩिऩ्ऩिशै, पाडवुम् विऱलियर् पाडल् केट्कवुम्
आडवु महऩ्पुऩ लाडि याय्मलर्, शूडवुम् पॊऴुदुपोज़् जिलर्क्कत् तॊऩ्ऩहर् 159

अ तॊल् नकर्–उस प्राचीन नगर में; चिलर्क्कु–कुछ रमणियों का; ऊटवुम्–पतियों के साथ रूठने; कूटवुम्–मिलने; उयिरिऩ्–बहुत प्रिय; इऩ् इचै पाटवुम्–मधुर गीत गाने; विऱलियर् पाटल् केट्कवुम्–गायकियों का गाना सुनने में; अकऩ् पुऩल् आटवुम्–विशाल जलाशयों में स्नान करने; आटि–स्नान करके; आय्मलर् चूटवुम्–श्रेष्ठ फूलों से सजा लेने में; पॊऴुतु पोम्–समय कटता है। १५९

आगे वहाँ संभ्रांत घरों के स्त्री-पुरुषों के कार्यकलाप का वर्णन है। कुछ स्त्रियाँ हैं जिनका सारा समय, प्रणय-कलह, संभोग, मधुर गायन, गायकियों का संगीत स्वादन, स्नान, पुष्पालंकार, इत्यादि कामों में व्यय हो जाता है। १५९

मुऴङ्गुतिण् कडहरि मॊय्म्बि ऩूरवुम्
ऍऴुङ्गुरत् तिवुळियॊ डिरद मेऱवुम्
पऴङ्गणॊ डिरऩ्दवर् परिवु तीर्दर
वऴङ्गवुम् पॊऴुदुपोज़् जिलर्क्कम् माणहर् 160

अ माण् नकर्–उस महान नगर में; चिलर्क्कु–कुछ पुरुषों का; मुऴङ्कु तिण् कटम् करि–चिंघाड़नेवाले, बलिष्ठ, मत्त गजों पर; मॊय्म्पिऩ् ऊरवुम्–साहस के साथ सवार होने (व उन्हें चलाने) में; ऍऴुम् कुरत्तु इवुळियॊटु–ऊपर को उठाये खुरोंवाले अश्वों के साथ; इरतम् एऱवुम्–रथों पर सवारी करने में; पऴङ्कणॊटु इरन्तवर्–दीन-दुखी हो आकर मांगनेवालों को; परिवु तीर् तर वऴङ्कवुम्–चिन्ता दूर करते हुए दान देने में; पॊऴुतु पोम्–समय व्यतीत होता है। १६०

उस महान नगर के कुछ पुरुष लोग अपना समय मत्त गजों की सवारी में, तीव्रगति वाले अश्वों और रथों के चलाने में और दीन-दुखी याचकों को मुँहमाँगा दान देने में बिताते हैं। १६०

करियॊडु करियॆदिर् पॊरुत्तिक् कैप्पडै
वरिशिलै मुदलिय वऴङ्गि वाऌुऴैप्

पुरवियिऱ् पॊरुविल्शॆण् डाडिप् पोर्क्कलै
तॆरिदलिऱ् पॊऴुदुपोऴ् जिलर्क्कच् चेणहर् 161

अ चेण् नकर्–उस विशाल नगर में; चिलर्क्कु–कुछ पुरुषों का; करियॊटु करि ऎतिर् पॊरुत्तुति–हाथी से हाथी लड़ाने में; कै पटै–(कुछ का) हाथ के शस्त्र; वरि चिलैमुतलिय–बन्धनयुक्त धनुष आदि चलाने में; वाल् उळै पुरवि–(कुछ का) शुभ्र अयालवाले अश्वों पर बैठकर; पॊरु इल् चॆण्टु आटि–अपूर्व रूप से नचाने में; पोर् कलै तॆरितलिल्–(कुछ का) युद्ध-विद्या सीखने में; पॊऴुतु पोम्–समय-यापन होता है। १६१

उस विशाल नगर के कुछ पुरुष हाथी लड़ाते हैं; कुछ अस्त्र-शस्त्र का अभ्यास करते हैं; कुछ अश्वों पर बैठकर उन्हें नचाते हैं। १६१

नन्दऩ वऩत्तलर् कॊय्दु नव्विपोल्
वन्दिळै यवरॊडु वावि याडिवाय्च्
चॆन्दुव रऴिदरत् तेऱऩ् माऩ्दिच्चू
दुऩ्दलिऱ् पॊऴुदुपोऴ् चिलर्क्कव् वॊण्णहर् 162

अ ऒळ् नकर्–उस ज्योतिर्मय नगर में; चिलर्क्कु–कुछ स्त्रियों का; नव्वि पॊल् वन्तु–हरिणों के समान आकर; नन्तऩ वऩत्तु अलर् कॊय्तु–सुन्दर उद्यानों में फूल चुनकर; इळैयवरॊटु वावि आटि–नौजवान, अपने पतियों के साथ वापियों में स्नान कर; वाय् चॆम्मै तुवर् अऴितर–अधरों की लालिमा को मिटाते हुए; तेऱल् माऩ्ति–ताडी पीकर; चूतु उऩ्तलिल्–जुआ खेलने में; पॊऴुतु पोम्–समय बीतता है। १६२

उस प्रकाशमय नगर में कुछ युवती स्त्रियों के पास हरिणियों के समान उछलती कूदती पुष्पोद्यानों में जाकर, पुष्प-चयन करने, तरुण पतियों के साथ तड़ागों में स्नान करने, अपने लाल अधरों को विवर्ण बनाते हुए सुरापान करने और जुआ खेलने के लिए ही समय है। १६२

नाऩा विदमा नऴिमादिर वीदियोडि
मीऩाऱु वेलैप् पुऩल्वॆण्मुहि लुण्णु मापोल्
आऩाद माडत् तिडैयाडु कॊडिहण् मीप्पोय्
वाऩाऱु नण्णिप् पुऩल्वऱ्ऱिड नक्कु मऩ्ऱे 163

नाऩा वितम् आम् वॆण् मुकिल्–नाना आकार के श्वेत मेघ; नऴि मातिरम् वीति ओटि–विशाल आकाश-मार्ग पर जाकर; मीऩ् नाऱु वेलै पुऩल् उण्णुमाऱु पोल्–मत्स्य-संकुल समुद्र का जल पीते हैं—जैसे; आऩात माटत्तु इटै आटु कॊटिकळ्–अक्षुण्ण प्रासादों के ऊपर फहरनेवाली ध्वजाएँ; मी पोय्--ऊपर जाकर; वाऩ् आऱु नण्णि–आकाशगंगा पहुँचकर; पुऩल् वऱ्ऱिट–जल को सोखते हुए; नक्कुम्–चाट लेती हैं। (अऩ्ऱु–ए)। १६३

वहाँ के नितनवीन प्रासादों की ध्वजाएँ मेघों के समान हैं। रंग

के वे दोनों सफ़ेद हैं। उनमें साधर्म्य भी है। मेघ आकाश मार्ग से जाकर समुद्र का जल पीते हैं। ध्वजाएँ भी आकाश में ऊँचे जाकर आकाशगंगा का जल पीती हैं। मेघों से वे ध्वजाएँ इस बात में आगे हैं कि उनके पीने के बाद आकाशगंगा सूख जाती है। १६३

वऩ्ऱो रणङ्गळ् पुणर्वायिलुम् वाऩि ऩ्ऱु
शॅऩ्ऱोङ्गु मेलो रिडमिऩ्ऱॅऩ्ऩच् चॅम्बॉ ऩिञ्जि
कुऩ्रोङ्गु तोळार् कुणङ्गूट्टिशैक् कुप्पै यॅऩ्ऩ
ऑऩ्ऱो डिरण्डु मुयर्न्दोङ्गिय वुम्बर् नाण 164

वल् तोरणङ्कळ् पुणर् वायिलुम्–सुदृढ़ तोरणों से युक्त गोपुर (और); **चॅम्पॉऩ् इञ्चि ऑऩ्ऱोटु इरण्टुम्**–लाल स्वर्ण से विभूषित प्राचीर, (बाहरी) एक और अन्दर दो, (तीनों); **कुऩ्ऱु ओङ्कु तोळार्**–पर्वतोच्च कंधोंवालों के; **कुणम् कूट्टु**–अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण संग्रहीत; **इचै कुप्पै ऍऩ्ऩ**–यश-राशि के समान; **वाऩिऩ् ऊटु चॅऩ्ऱु**–आकाश में ऊँचे जाकर; **मेल् ओङ्कु ओर् इटम् इऩ्ऱु ऍऩ्ऩ**–ऊपर जाने के लिए कुछ स्थान नहीं है—ऐसा; **उम्पर् नाण**–देवों को लज्जित करते हुए; **उयर्न्तु ओङ्किय**–ऊँचे उठे रहे। १६४

अयोध्या नगर के तीन प्राकार होते हैं; एक सब के बाहर और दो एक के बाद एक, अन्दर। उनके, चार-चार के हिसाब से तोरण से अलंकृत गोपुर भी हैं। वे आकाश में इतने ऊँचे उठे हैं कि आकाश में और ऊपर जाने के लिए स्थान नहीं है और देवगण उनको देख अपनी हीनता को लेकर लज्जित हैं। उनकी ऊँचाई की उपमा पर्वत सदृश कन्धों-वाले सूर्यकुल के राजाओं के, श्रेष्ठ गुणों के कारण प्राप्त, यश से दी गयी है। १६४

काडुम् बुऩमुङ् गडलऩ्ऩ किडङ्गु मादर्
आडुङ् गुळमु मरुविच्चुऩैक् कुऩ्ऱु मुम्बर्
वीडुम् विरवु मणिप्पऩ्दरुम् वीणै वण्डु
पाडुम् बॉऴिलु मलर्प्पल्लवप् पळ्ळि मऩ्ऩो 165

काटुम्–वनों (में); **पुऩमुम्**–बागों में; **कटल् अऩ्ऩ किटङ्कुम्**–समुद्र के समान रही खाईं के किनारों पर; **मातर् आटुम् कुळमुम्**,–स्त्रियों के स्नान करने के तड़ागों में; **अरुवि चुऩै कुऩ्ऱुम्**–सरिताओं और झरनों से भरे पर्वतों में; **उम्पर् वीटुम्**–सौधों के ऊपरी गृहों में; **मणि विरवु पऩ्तरुम्**–मुक्ता और मणि-मिश्रित अलंकारवाले वितानों में; **वण्टु वीणै पाटुम् पॉऴिलुम्**–(जहाँ) भ्रमर, वीणा का सा नाद करते हैं उन उद्यानों में; **मलर् पल्लवम् पळ्ळि**–पुष्पों और पल्लवों की बनी शय्यायें; **मऩ्**–अधिक हैं। १६५

नगर के बाहर, भीतर सभी स्थानों पर पुष्प-पल्लव-बिछी शय्यायें बनी हैं। नगर की सुरक्षा के अर्थ बने वन, उपवन, खाईं, स्नान करने के

जलाशय, सरिता सहित पर्वत, सौधों की छतें, मुक्ता-मणि-मण्डित वितान, भ्रमर-गुंजरित-बगीचे, सब जगह पलंगों की व्यवस्था है। १६५

तॅळ्वार् मऴैयुन् दिरैयाऴियु मुट्क नाळुम्
वळ्वार् मुरशम् मदिर्वार्नहर् वाऴु माक्कळ्
कळ्वा रिलामैप् पॊरुळ्कावलु मिल्लै यादुम्
कॊळ्वा रिलामैक् कॊडुप्पार्हळु मिल्लै मादो 166

तॅळ्वार् मऴैयुम्–शुद्ध जल बरसानेवाले मेघ; तिरै आऴियुम्–तरंगवाला समुद्र और; उट्क–भीत हो जाएँ ऐसा; नाळुम्–हर दिन; वळ् वार् मुरचम्–चमड़े की डोरी से सुबद्ध नगाड़े; अतिर् मा नकर्–(जिस नगर में) जोर से बजते हैं उस नगर के; वाऴुम् माक्कळ्–रहनेवाले लोगों में; कळ्वार् इलामै–चोरी करनेवाले कोई नहीं हैं, इसलिए; पॊरुळ् कावलुम् इल्लै–वस्तुओं की रक्षा (का प्रश्न) भी नहीं है; यातुम् कॊळ्वार् इलामै–किसी वस्तु को दान में लेनेवाले नहीं हैं, इसलिए; कॊटुप्पार्कळुम् इल्लै–दाता भी (कोई) नहीं है। १६६

राजधानी होने के नाते उस नगर में नगाड़े नियमानुसार बजाये जाते हैं। उसका तुमुल नाद सुनकर मेघ और समुद्र मानों डर जाते हैं। वहाँ न चोर हैं न याचक। अतः उस नगर में रक्षा की व्यवस्था नहीं है; न दान देनेवाले ही पाये जाते हैं। १६६

कल्लादु निऱ्पार् पिऱरिन्मैयिऱ् कल्वि मुऱ्ऱ
वल्लारु मिल्लै यवैवल्लरल् लारु मिल्लै
ऍल्लारु मॅल्लाप् पॅरुञ्जॅल्वमु मॅय्द लाले
इल्लारु मिल्लै युडैयार्हळु मिल्लै मादो 167

कल्लातु निऱ्पार् पिऱर्–अनपढ़ रहनेवाले ऐसे पृथक; इऩ्मैयिल्–न रहने के कारण; कल्वि मुऱ्ऱ वल्लारुम् इल्लै–शिक्षा में पूर्ण रूप से दक्ष–ऐसे कोई नहीं हैं; अवै वल्लवर् अल्लारुम् इल्लै–उसमें अनिपुण भी कोई नहीं; ऍल्लारुम्–सभी के पास; पॅरुम् चॅल्वम् ऍल्लामुम् ऍय्तलाले–बड़ी सम्पदाएँ सभी रहीं, इसलिए; इल्लारुम् इल्लै–निर्धन भी नहीं हैं; उटैयार्कळुम् इल्लै–धनी भी नहीं हैं। १६७

उस नगर के लोग पूर्णरूप से शिक्षित थे; अनपढ़ कोई नहीं था। इसलिए अशिक्षित-शिक्षित का कोई विभाजन नहीं होता था। उसी तरह वे इतने सर्वसम्पन्न थे कि धनिक, निर्धन में कोई पृथक्करण नहीं हो सकता था। १६७

एहम्मुदऱ् कल्वि मुळैत्तॅऴुन् दॅण्णिल् केळ्वि
आहम्मुदऱ् ऱिण्पणै पोक्कि यरुन्द वत्तिऩ्
शाहन्दऴैत् तऩ्बरुम् बित्तरु मम्म लर्न्दु
पॊहङ्गऩि यॊऩ्ऱु पऴुत्तदु पोलुमऩ्ऱे 168

कल्वि एकम् मुतल्–शिक्षारूपी एक बीज; मुळैत्तु ॲऴुन्तु–अंकुरित हो बढ़ा; अ मुतल्–उस तने से; ॲण् इल्–असंख्यक; केळ्वि आकुतिण् पणै पोक्कि–श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञानरूपी सुदृढ़ शाखाएँ फैलाकर; अरु तवत्तिऩ् चाकम् तऴैत्तु–कठिन तपरूपी पत्ते निकालकर; अऩ्पु अरुम्पि–प्रेम की कलियाँ प्रकट करके; तरुमम् मलर्न्तु–धर्मरूपी फूलों का विकास कर; पोकम् कऩि ऒऩ्रु पऴुत्ततु–भोग-(सुख-) रूपी एक फल पाक, ऐसा था वह नगर। (अऩ्ऱु ए)। १६८

उस अयोध्या नगर में विद्या और उससे प्राप्य सभी शुभ फल प्राप्त थे। एक सुन्दर सांगरूपक के द्वारा कवि विद्या को बीज बनाकर आनन्द को फल बताते हैं। विद्या बीज से उगे वृक्ष की, विविध श्रौत ज्ञान शाखाएँ थीं; तपरूपी पत्र बहुत हुए। प्रेम की कलियाँ खिलीं। वह धर्मरूपी पुष्पों से शोभायमान हुआ; उस पर भोग या आनन्द का फल फलित हुआ। १६८

4. अरशियर् पडलम् (राज्य शासन पटल)

अम्मा णहरुक् करशऩ्ऩर शर्क्क रशऩ्
शॅम्माण् डऩिक्को लुलहेऴिनुञ् जॅल्ल निऩ्ऱाऩ्
इम्माण् कदैक्को रिऱैयाय विराम ऩॅऩ्ऩुम्
मॉय्म्माण् कऴलोऱ् ऱरुनल्लऱ मूर्त्ति यऩ्ऩाऩ् 169

अ माण् नकरुक्कु–उस महान नगर के; अरचऩ्–राजा; अरचर्क्कु-अरैचऩ्–राजाओं के राजा हैं; उलकु एऴिऩुम्–लोक, जो सप्त-द्वीप-समूह हैं, इस पर; चॅम्मै माण् तऩि कोल् चॅल्ल निऩ्ऱाऩ्–ऋजु और महान अपना अनुपम राज-दण्ड (शासन) चलाते रहे; इ माण् कतैक्कु–इस महान इतिहास के; ओर् इऱै आय–श्रेष्ठ नायक; इरामऩ् ॲऩ्ऩुम्–श्रीराम नाम के; मॉय् माण् कऴलोऩ्–गौरवपूर्ण पायलधारी महापुरुष को; तरु–दिलानेवाले; नल् अऱम् मूर्त्ति अऩ्ऩाऩ्–श्रेष्ठ धर्म के (मानव) रूप के समान थे। १६९

उस महान नगर के राजा, दशरथ, राजाधिराज, सब तरह से योग्य, सीधे और भाग्यवान थे। सप्त-द्वीपीय इस भूलोक भर में उनका श्रेष्ठ शासन चलता रहा। वे इस काव्य के अनुपम नायक, वीरता के शृंगार, पायलों के धारक, श्रीराम को जन्म देनेवाले धर्मरूप थे। १६९

आदिम् मदियुम् मरुळुम्मऱ नुम्म मैवुम्
ऐदिऩ् मिडल्वी रमुमीहयु मॅण्णिल् यावुम्
नीदिन् निलैयु मिवैनेमियि ऩोर्क्कु निऩ्ऱ
पादिम् मुऴुदु मिवर्केपणि केट्प मऩ्ऩो 170

आति–प्रथम श्रेणी की; मतियुम्–मति और; अरुळुम्–दया और; अमैवुम्–सन्तोष; एतु इल्–कमी हीन; मिटल् वीरमुम्–साहस के साथ वीरता और;

ईकैयुम्–दानशीलता और; नीति निलैयुम्–न्याय में स्थिति; इवै यावुम्–ये सब; अॅण्णिल्–सोचने पर; नेमियिऩोर्क्कु–(अन्य) राजाओं के पास; पाति निऩ्ऱ–आधा-आधा रहे; मुळ्ळुतुम्–पूर्णरूप से; इवर्‌के पणि केट्प–इन (दशरथ) के ही आज्ञाकारी में थे। १७०

उनकी प्रज्ञा, दया, धर्म, संतोष, अकलंक धैर्य वीरता, दानशीलता; नीतिपरायणता, ये सब गुण, अन्य राजाओं के पास भी रहे; पर उनमें आधे-आधे थे। इनके पास परिपूर्ण थे। १७०

मॉय्यार् कलिशूळ् मुदुपारिऩ् मुहन्द दाऩक्
कैयार् पुऩला नऩैयादऩ कैयु मिल्लै
मॅय्याय वेदत् तुऱैवेन्दरुक् केय्न्द यारुम्
शॅय्याद याह मिवऩ् शॅय्दु मुडित्त मादो 171

मॉय् आर् कलि चूळ्–शक्ति-युत समुद्र से घिरि; मुतु पारिल्–प्राचीन इस भूमि पर; मुकऩ्त ताऩम् कै आर् पुऩलाल्–अतिशय दान के साथ, (दान लेनेवाले के) हाथ में डाले गये जल से; नऩैयातऩ–जो भीगे नहीं; कैयुम् इल्लै–वे हाथ नहीं थे; मॅय् आय–सच्चे; वेतम् तुऱै–वेद-मार्गी; वेन्तरुक्कु–राजाओं के लिए; एय्न्त–विहित; यारुम् चॅय्यात याकम्–(पर) (अन्य) किसी से न कृत यज्ञ; इवऩ् चॅय्तु मुटित्त–इनके द्वारा किये जा चुके। (मातो)। १७१

वे दान-धर्म और यज्ञ आदि खूब करते थे। उस नगर में कोई ब्राह्मण ऐसा नहीं था जिसका हाथ महाराज से दान नहीं ले चुका हो और जिसका हाथ दान देते वक्त विसर्जित जल से सिक्त नहीं हुआ हो। उसी प्रकार कोई यज्ञ ऐसा नहीं था, जो विहित था पर नहीं किया गया हो। उन्होंने ऐसे-ऐसे यज्ञ किये जिन्हें कोई दूसरा राजा कर नहीं पाया। १७१

तायॊक्कु मऩ्बिऱ् ऱवमॊक्कु नलम्ब यप्पिल्
शेयॊक्कु मुऩ्ऩिऩ् ऱॊरुशॅल्हदि युय्क्कु नीराल्
नोयुऱ्ऱ ऱॅऩ्ऩिऩ् मरुन्दॊक्कु नुणङ्गु केळ्वि
आयप् पुहुङ्गा लऱिवॊक्कु मॅवर्क्कु मऩ्ऩाऩ् 172

अऩ्ऩाऩ्–वे; ॲवर्क्कुम्–सब किसी के लिए; अऩ्पिल्–प्रेम में; ताय् ऑक्कुम्–माता के समान थे; नलम् पयप्पिल्–हित करने में; तवम् ऑक्कुम्–तप के समान थे; मुऩ् निऩ्ऱु–अग्रगामी रहकर; ऑरु चॅल् कति उय्क्कुम् नीराल्–गम्य मार्ग पर चलाने की वृत्ति के कारण; चेय् ऑक्कुम्–पुत्र के समान थे; नोय् उऱ्ऱतु ॲऩ्ऩिल्–कोई रोग हुआ तो; मरुन्तु ऑक्कुम्–औषध के समान थे; आय पुकुम् काल्–अन्वेषण करने जायँ तब; नुणङ्कु केळ्वि–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान और; अऱिवु ऑक्कुम्–प्रज्ञा के समान थे। १७२

वे माता के समान सबसे प्रेम करते थे; सभी की इच्छाओं की पूर्ति करने में तपस्या के समान थे; अच्छे मार्ग पर लोगों को वे स्वयं उदाहरण

रूप में रहकर, चलाते थे। इस प्रवृत्ति में वे पुत्र के समान थे जो अपने धर्माचरण से पितृलोगों को सद्गति में पहुँचा देते हैं। वे रोग की औषधि के समान थे। खूब सोचकर देखें तो वे स्वयं प्रज्ञा और (श्रौत-) ज्ञान-रूप थे। १७२

ईन्दे कडन्दा ऩिरप्पोर्कड लॅण्णि ऩऩ्ऩूल्
आय्न्दे कडन्दा ऩऱिवॆंऩ्ऩु मळक्कर् वाळाल्
काय्न्दे कडन्दाऩ् पहैवेलै करुत्तु मुऱ्ऱत्
तोय्न्दे कडन्दाऩ् ऱिरुविऱ्ऱॊंडर् पोह पौवम् 173

इरप्पोर् कटल्–याचकरूपी समुद्र; ईन्ते कटन्ताऩ्–दान देकर ही पार किया; अऱिवु ऍऩ्ऩुम् अळक्कर्–ज्ञानरूपी सागर; ऍण् इल् नल् नूल्–असंख्यक उच्च शास्त्र-ग्रन्थ; आय्न्ते कटन्ताऩ्–अन्वेषण करके ही पार किया; पकै वेलै–शत्रुरूपी उदधि को; वाळाल् काय्न्ते–तलवार से दमन करके ही; कटन्ताऩ्–पार किया; तिरुविल् तॊंटर्–ऐश्वर्य से प्राप्य; पोक पौवम्–भोग का पयोधि; करुत्तु मुऱ्ऱ–जी भर; तोय्न्ते कटन्ताऩ्–भोग करके ही पार किया। १७३

अयोध्या में याचक नहीं थे। महाराज स्वयं विद्या पारंगत, शत्रुहीन और निस्पृह रहे। (कवि इसकी चर्चा कुछ अनोखी रीति से करते हैं।) याचकों का सागर उन्होंने दान द्वारा; ज्ञान-समुद्र शास्त्राध्ययन-गुनन द्वारा; शत्रु-सिन्धु को तलवार द्वारा और ऐश्वर्य-सुख-भोग के पयोधि को भोगकर ही पार किया। १७३

वॆळ्ळमुम् पऱवैयुम् विलङ्गुम् वेशैयर्
उळ्ळमु मॊरुवऴि योड निऩ्ऱवऩ्
तळ्ळरुम् पॆरुम्पुहऴ्त् तयर तप्पॆयर्
वळ्ळल्वळ् ळुऱैययिऩ् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩे 174

वळ् उऱै–चमड़े की बनी म्यान में रहनेवाली; अयिल् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩ्–तेज तलवार के धारी चक्रवर्ती; तळ्ळ अरु पॆरु पुकऴ्–अक्षय और विपुल यश के; तयरतऩ् पॆयर् वळ्ळल्–दशरथ नाम के वे नामी दानी; वॆळ्ळमुम्–नदी का प्रवाह और; पऱवैयुम्–पक्षी और; विलङ्कुम्–जानवर और; वेचैयर् उळ्ळमुम्–वेश्याओं का मन (और); ऒरु वऴि ओट–एक ही मार्ग पर चलें; निऩ्ऱवऩ्–ऐसा शासन करनेवाले (रहे)। १७४

चक्रवर्ती दशरथ वीर थे; यशस्वी थे और नामी दानी भी। उनके शासन की यह खूबी थी कि नदी का प्रवाह, पक्षी, जानवर और वेश्याओं का मन अपने-अपने एक ही मार्ग पर जाते थे। यानी कोई उच्छृंखल नहीं रहे। १७४

❀ नेमिमाल् वरैमदि लाह नीऴ्पुऱप्, पाममा कडल्किडङ् गाहप् पऩ्मणि
वाममा ळिहैमलै याह मऩ्ऩर्कुप्, पूमियु मयोत्तिमा नहरम् पोऩ्ऱदे 175

मन्नृत्तर्कु–महाराज के लिये; नेमि माल् वरै–चक्रवाल गिरि; मतिल् आक–परकोटा बनी; नीळ् पामम् मा पुऱम् कटल्–विशाल बाह्य-सागर ही; किटङ्कु आक–खाईं बना; मलै–अन्य पर्वत; पल् मणि वामम् माळिकै आक–विविध रत्नों से अलंकृत सुन्दर महल बने; पूमियुम्–भूलोक सारा; अयोत्तित मा नकरम् पोन्ऱतु–अयोध्या के विशाल नगर के समान बना। १७५

उनके लिए जैसी अयोध्या वैसी ही, चक्रवाल पर्वत रूपी प्राचीर, बाह्य-महासागर की खाईं और कुल गिरियों के उन्नत सौधों से युक्त सारी पृथ्वी ही शासनाधीन भूमि थी। १७५

❀ यावरुम् वन्मैने रॆऱिन्दु तीट्टलाल्, मेवरुङ् गैयडै वेलुन् देयुमाल्
कोवुडै नॆडुमणि महुड कोडियाल्, शेवडि यडैन्दपॊऱ् कऴलुन् देयुमाल् 176

यावर् वन्मैयुम्–किसी के भी पराक्रम को; नेर् ऎऱिन्तु–सामने जाकर (भाले को) फेंककर, दलित कर; तीट्टलाल्–बार-बार उस (कुंठित हुए) भाले को पैनाने से; कै अटै वेलुम् तेयुम्–हाथ में रहनेवाला भाला घिस जाता है; को उटै–(अधीनता स्वीकार कर विनत हुए) राजाओं के; नॆट्टु मणि मकुटम्–दीर्घ रत्नमय किरीट; कोटियाल्–असंख्यकों के (रगड़ने के) कारण; चेवटि अटैन्त–लाल चरणों में पहने हुए; पॊन् कऴलुम्–स्वर्ण पायल भी; तेयुम्–घिस जाते हैं। १७६

उनका भाला शत्रुओं पर प्रयोग करने से कुंठित हो जाता था और बार-बार उसे पैना करना पड़ता था; इसलिए वह घिसता गया। उसी प्रकार असंख्य राजाओं के मुकुट उनके स्वर्ण-पायल से घर्षण करते थे, उन राजाओं के, दशरथ के पैरों पड़ने से। तब उनका पायल घिस जाता था। १७६

❀ मण्णिडै युयिर्तॊरुम् वळर्न्दु तेय्विन्ऱित्
तण्णिऴल् परप्पवु मिरुळैत् तळ्ळवुम्
अण्णऱन् कुडैमदि यमैयु मादलाल्
विण्णिडै मदियिनै मिहैयि दॆन्बवे 177

मण् इटै–(इस) भूलोक में; तेय्वु इन्ऱि वळर्न्तु–विना घटे, बढ़कर; उयिर् तॊरुम्–जीव-जीव पर; तण् निऴल् परप्पवुम्–शीतल छाया फैलाने; इरुळै तळ्ळवुम्–अन्धकार दूर करने; अण्णल् तन्–महिमामय (दशरथ) का; कुटै मति अमैयुम्–छत्र-रूपी चन्द्र पर्याप्त था; आतलाल्–इसलिए; इटै विण् मतियितै–(इसके सामने निरर्थक हुए) हारे, आकाश (-स्थित) चन्द्र को; इतु मिकै ऎन्प–यह फालतू है, कहते हैं (लोग)। १७७

लोग राजाधिराज दशरथ के श्वेत छत्र के सामने चन्द्र को फालतू समझने लगे हैं। छत्र, चन्द्र के समान बिना घटे ही, बढ़ा हुआ रहता है। वह शीतल छाया यानी रक्षा प्रदान करता है; (दुःख के) अन्धकार को दूर कर देता है। फिर उस आकाश के चन्द्र की आवश्यकता क्या रही ? १७७

✾ वयिरवाऩ् पूणणि मडङ्गऩ् मॊय्म्बिऩाऩ्
उयिरॆलाऩ् दऩ्ऩुयि रॊप्प वोम्बलाल्
शॆयिरिला वुलहिऩिऱ् चॆऩ्ऱु निऩ्ऱुवाऴ्
उयिरॆला मुऱैवदो रुडम्बु मायिऩाऩ् 178

वयिरम् वाऩ् पूण् अणि–हीरे जड़े श्रेष्ठ आभरणों से अलंकृत; मटङ्कल् मॊयम्पिऩाऩ्–सिंह सदृश बलशाली; उयिर् ऎलाम्–जीव सबको; तऩ् उयिर् ऒप्प–अपने प्राणों के समान; ओम्पलाल्–पालित करने से; चॆयिर् इला उलकिऩिल्–अपराध-हीन अपने राज्य में; चेऩ्ऱु निऩ्ऱु वाऴ् उयिर् ऎलाम्–चर और अचर जीव-राशि सभी; उऱैवतु–जिसके अन्दर विद्यमान रही; ओर् उटम्पुम् आयिऩाऩ्–वह एक शरीर बने। १७८

कोई किसी वस्तु की सावधानी के साथ रक्षा करे तो कहा जाता है कि वह उसको अपने प्राण-सम रखता है। इधर कवि कहते हैं कि हीरे-जड़ित आभरणवाले वीर दशरथ शरीर हैं और उनके राज्य के चर और अचर, सब जीव प्राण हैं। (यह कवि का चमत्कार है)। १७८

**कुऩ्ऱॆऩ वुयरिय कुववुत् तोळिऩाऩ्, वॆऩ्ऱियऩ् दिहिरिवॆम् बरुदि यामॆऩ
ऒऩ्ऱॆऩ वुलहिडै युलावि मीमिशै, निऩ्ऱुनिऩ् ऱुयिर्तॊऱु नॆडिदु काक्कुमे 179**

कुऩ्ऱु ऎऩ उयरिय–पर्वत के समान उन्नत; कुववु तोळिऩाऩ्–पुष्ट कन्धोंवाले के; वॆऩ्ऱि अम् तिकिरि–विजयशील सुन्दर (आज्ञा) चक्र; वॆम् परुति आम् ऎऩ–उष्ण-किरण सूर्य (रूप) मान्य हो; मीमिचै निऩ्ऱु निऩ्ऱु–सबके ऊपर स्थित हो; उलकु इटै–भूमि पर; ऒऩ्ऱु ऎऩ उलावि–अद्वितीय चलकर; उयिर् तॊऱुम्–जीव जीव की; नॆटितु काक्कुम्–सब तरह से रक्षा करता था। १७९

पर्वत सम कन्धोंवाले राजाधिराज का आज्ञा-चक्र उष्ण किरण सूर्य के समान सबके चक्रों (शासनों) से ऊपर रहता है; सारे भूलोक में अकेला है। हर जीव उसके संरक्षण में आ जाता है। १७९

**ऎय्यॆऩ वॆऴुपहै यॆङ्गु मिऩ्मैयाल्, मॊय्पॆऱात् तिऩवुऱु मुऴवुत् तोळिऩाऩ्
वैयह मुऴुवदुम् वऱिज ऩोम्बुमोर्, शॆय्यॆऩक् कात्तिऩि दरशु शॆय्हिऩ्ऱाऩ् 180**

ऎय् ऎऩ–शर के समान; ऎऴु पकै–(अपने ऊपर) उठ आनेवाले शत्रु; ऎङ्कुम् इऩ्मैयाऩ्–कहीं नहीं (हैं, इसलिए) रहने से; मोय् पॆऱा तिऩवु उऱु–युद्ध के विना, युद्ध के लिए खुजलानेवाली (आतुर रहनेवाली); मुऴवु तोळिऩाऩ्–मर्दल के समान भुजाओं वाले; वैयकम् मुऴुवतुम्–यह सारी पृथ्वी; वऱिजऩ् ओम्पुम् ओर् चेय् ऎऩ–गरीब मनुष्य द्वारा पालित एक छोटे खेत के समान; इऩितु कात्तु–सावधानी से पालन कर; अरचु चॆय्किऩ्ऱाऩ्–शासन कर रहे हैं। १८०

शर के समान उनपर आक्रमण करने आनेवाला कोई शत्रु नहीं है। इसलिए युद्ध-प्रेमी उनकी भुजाओं में खुजली सी उठती है। मर्दल समान कन्धोंवाले वे, दरिद्र जितनी तत्परता और प्रयास के साथ अपने छोटे खेत

का पालन करेगा उसी तत्परता और लगन के साथ, भूमि का पालन करते हैं। १८०

5. तिरु अवदारप् पडलम् (श्री अवतार पटल)

आयव ऩॊरुपह लयऩै येऩिहर्, तूयमा मुऩिवरऱ् ऱॊऴुदु तॊल्हुलत्
तायरुन् दन्दैयुन् दवमु मऩ्बिऩाल्, मेयवाऩ् कडवुळुम् पिऱवुम् वेऱुनी 181

आयवऩ्–वे; ऑरु पकल्–एक दिन; अयऩैये निकर्–अज ही के समान विद्यमान; तूय मा मुऩिवरऩ्–पवित्र और उत्तम मुनिवर को; तॊऴुतु–नमस्कृत कर; तॊल् कुलम्–(इस) प्राचीन कुल की; तायरुम्–मातायें (और); तन्तैयुम्–मेरे पिता; तवमुम्–तपस्या; अऩ्पिऩाल् मेय–भक्ति द्वारा प्राप्य; वाऩ् कटवुळुम्–श्रेष्ठ ईश्वर; पिऱवुम्–और अन्य सब; वेऱु नी–(मेरे लिए) (उनसे) पृथक (उनके अलावा) आप ही हैं। १८१

उन्होंने (दशरथ ने) एक दिन ब्रह्माजी के ही समान रहनेवाले पवित्र और श्रेष्ठ मुनिवर का नमस्कार कर उनसे यह निवेदन किया। "मेरे लिए आप ही मेरे कुल में उत्पन्न माताएँ, पिता, तपस्या, भजनीय भगवान सबकुछ हैं। १८१

ऎङ्गुलत् तलैवर्ह ळिरवि तऩ्ऩितुम्
तङ्गुलम् विळङ्गिडत् तरणि ताङ्गिऩार्
मङ्गुन रिलरॆऩ वरम्बिल् वैयहम्
इङ्गुनिऩ् ऩरुळिऩा लिऩिदि ऩोम्बिऩेऩ् 182

निऩ् अरुळिऩाल्–आपके आशीर्वाद से; ऎम् कुलम् तलैवर्कळ्–मेरे कुल के राजा लोग; तम् कुलम्–अपना कुल; इरवि तऩ्ऩितुम् विळङ्किट–सूर्य से भी बढ़कर प्रकाशमान रहे, ऐसा; तरणि ताङ्किऩार्–धरणी का पालन किया; इङ्कुम्–अब भी; निऩ् अरुळिऩाल्–आपकी कृपा से; मङ्कुनर् इलर् ऎऩ–मन्द (प्रकाश) कोई नहीं, इस ख्याति के साथ; वरम्पु इल् वैयकम्–सीमा-हीन पृथ्वी को; इऩितिऩ् ओम्पिऩेऩ–सुखपूर्वक रक्षित करता आ रहा हूँ। १८२

"मेरे कुल के राजाओं ने अपने यश में सूर्य से भी बढ़कर प्रकाशमय बनकर भूमि का पालन किया। यह आपकी कृपा का फल था। आज भी आप ही की कृपा से, मैं उनके यश में कमी न लाते हुए इस निस्सीम धरणी का पालन करता हूँ। १८२

अऱुपदि ऩायिर माण्डु माण्डुऱ, उऱुपहै यॊडुक्कियिव् वुलह मोम्बिऩेऩ्
पिऱिदॊरु कुऱैयिलै यॆऱ्पिऩ् वैयहम्, मऱुहुऱु मॆऩ्पदोर् मऱुक्क मुण्डरो 183

अऱुपतिऩायिरम् आण्टु–साठ सहस्र वर्ष; माण्टु उऱ–पूरा करते हुए; उऱु पकै ऑटुक्कि–आक्रामक सभी शत्रुओं को दूरकर; इ उलकम् ओम्पिऩेऩ्–यह पृथ्वी

(मैंने) पाली; पिऱितु ऑरु कुऱै इलै–और कोई अपूरित इच्छा नहीं है; ॲऩ पिऩ्–मेरे बाद; वैयकम् मऱुकु उऱुम्–यह भूमि (शासक के न होने के कारण) संकट-ग्रस्त होगी; ओर् मऱुक्कम् उण्टु–यह एक मेरी चिन्ता बनी है। अरो। १८३

"मेरे शासन के साठ सहस्र वर्ष पूरे हो गये। सभी तरह के शत्रुओं का दमन किया; सुशासन करता आ रहा हूँ। मेरे मन में और कोई चिन्ता नहीं है सिवाय इसके कि, मेरे पश्चात संसार राजा के न रहने से दुखी होगा। यह दुख मुझे हो रहा है। १८३

अरुन्दव मुऩिवरु मन्द णाळरुम्, वरुन्दुद लिऩ्ऱिये वाऴ्विऩ् वैहिऩार्
इरुन्दुय रुऴक्कुव रॅऱ्पि ऩॅऩ्बदोर्, अरुन्दुयर् वरुत्तुमॅऩ् ऩहत्तै यॅऩ्ऱऩऩ् 184

वरुन्तुतल् इऩ्ऱिये–दुख के विना ही; वाऴ्विऩ् वैकिऩार्–जीवन जो भोगते रहे (वे); अरु तव मुऩिवरुम्–कठिन तपस्वी मुनिगण; अन्तणाळरुम्–व ब्राह्मण; ॲऩ् पिऩ्–मेरे बाद; इरु तुयर् उऴक्कुवर् ॲऩ्पतु–बड़ा कष्ट उठयँगे; ओर् अरु तुयर्–यह एक कठोर चिन्ता; ॲऩ् अकत्तै वरुत्तुम्–मेरे मन को त्रस्त करती है; ॲऩ्ऱऩऩ्–कहा। १८४

"अब तक ऋषि, मुनि, ब्राह्मण सब सुखपूर्वक अपना तपोनिरत जीवन सुख से चलाते रहे। मेरे मरण के पश्चात उनको बहुत कष्ट सहना पड़ेगा—यह चिन्ता मेरे मन को व्यथित कर रही है।" १८४

मुरशॅऱि शॅऴुङ्गडै मुत्त मामुडि, अरशर्तङ् गोमह ऩऩैय कूऱलुम्
विरैशॅऱि कमलमॅऩ् पॉहुट्टु मेविय, वरशरो रुहऩ्महऩ् मऩत्ति ऩॅण्णिऩाऩ् 185

मुरचु ॲऱि–नगाड़े बजनेवाले; चेऴु कटै–समृद्ध गोद्वार वाले; मुत्तम् मा मुटि–मुक्ता-सज्जित उन्नत किरीटधारी; अरचर् तम् कोमकऩ्–राजाधिराज (के); अऩैय कूऱलुम्–यों कहते ही; विरै चेऱि–सुगन्धिपूर्ण; मॅल् कमलम् पॉकुट्टु–कोमल कमल के बीज में; मेविय–जाकर (जो) रहे; वरम चरोरुकऩ् मकऩ्–श्रेष्ठ सरोरुहासन (ब्रह्मा) के पुत्र (वसिष्ठ) ने; मऩत्तिऩ्–अपने मन में; ॲण्णिऩाऩ्–सोचा। १८५

अयोध्या नगर के नगर द्वारों में नगाड़े बजते थे। ऐसे समृद्ध नगर के, मुक्ता-जड़ित किरीटधारी राजाधिराज ने यह निवेदन किया। तब कमल के बीज में रहनेवाले ब्रह्मा के पुत्र वसिष्ठजी ने अपने मन में सोचकर देखा। १८५

अलैकड ऩडुवणो रऩन्दऩ् मीमिशै, मलैयॅऩ वऱितुयिल् वळरु मामुहिल्
कॉलैतॉऴि लरक्कर्तङ् गॉडुमै तीर्प्पॅऩॅऩ्, ऱुलैवुरु ममररुक् कुरैत्त वाय्मैयै 186

अलै कटल् नटवण्–लहरानेवाले समुद्र के मध्य; ओर् अऩन्तऩ् मी मिचै–अनुपम अनन्तनाग पर; मलै ॲऩ–(नीले) पर्वत के समान; अऱितुयिल् वळरुम्–योग-निद्रा में रत रहनेवाले; मा मुकिल्–श्रेष्ठ मेघ (मेघ श्याम श्रीविष्णु) ने; कॉलै तॉऴिल् अरक्कर्तम्–हत्याकारी राक्षसों के; कॉटुमै–अत्याचारों का; तीर्प्पॅऩ् ॲऩ्ऱु–निवारण करूँगा––यह; उलैवु उऱुम् अमररुक्कु–दुख उठानेवाले सुरों के पास; उरैत्त वाय्मैयै–जो कहा उस प्रतिज्ञा के वचन को, (स्मरण किया)। १८६

तब उन्हें क्षीरसागर की तरंगों के मध्य, शेषनाग पर योग-निद्रा-रत रहनेवाले और नीले पर्वत के समान शोभायमान श्रीविष्णु का स्मरण हो आया। और उनकी यह प्रतिज्ञा याद आयी कि मैं राक्षसों के त्रास से पीड़ित देवों का कष्ट निवारण करूँगा। १८६

शुडुतॊळि लरक्कराऱ् ऱॊलैन्दु वानुळोर्, कडुवमर् कळत्तडि कलन्दु कूऱलुम्
पडुपॊरु ळुणर्न्दवप् परमन् यामिनि, अडुहिल मॆन्नमऱुत् तवरॊ डेहिनान् 187

वान् उळोर्–स्वर्ग-वासी (सुर लोग); **चुटु तॊळिल् अरक्कराल्**–क्रूर-कर्मी राक्षसों से; **तॊलैन्तु**–त्रस्त होकर; **कटु अमर् कळत्**–विष-कण्ठ (श्रीशिव जी) की; **अटि कलन्तु**–शरण में जाकर; **कूऱलुम्**–कहने पर; **पटु पॊरुळ् उणर्न्त**–आगामी विषय जाननेवाले; **अ परमन्**–वे रुद्र देव; **याम् इनि अटुकिलम् ॲन्न मऱुत्तु**–हम अब नहीं मारेंगे, ऐसा नकार कर; **अवरॊटु एकिनान्**–उनके साथ गये। १८७

आगे मन पटल पर, उस समय के सारे चित्र अंकित हुए। देवता सब रावणादि राक्षसों के क्रूरतापूर्ण अत्याचारों से पीड़ित होकर श्रीनीलकंठ देव के पास गये और उनसे अपने कष्टों का निवेदन किया। शिवजी ने भावी को जाना था। उनसे बोले कि उन्हें अब मार नहीं सकेंगे। फिर उनको लेकर वे चले। १८७

वडवरैक् कुडुमियि नडुवण् माशऱु, शुडर्मणि मण्डपन् दुन्नि नान्मुहक्
कडवुळै यडितॊऴु दमरर् कण्डहर्, इडिनिहर् कॊडुमैय दियम्बि नाररो 188

अमरर्–देवगण; **वटवरै कुटुमियिन् नटुवण्**–उत्तर में स्थित (मेरु) पर्वत के शिखर पर रहनेवाले; **माचु अऱु चुटर् मणि मण्टपम्**–कलंकहीन, प्रकाशमान रत्न-(खचित) मण्डप; **तुन्नि**–पहुँचकर; **नान् मुकम् कटवुळै**–चतुर्मुख देव की; **अटि तॊऴुतु**–चरण-वन्दना करके; **कण्टकर्**–निर्मम राक्षसों के; **इटि निकर् कॊटुमै**–वज्रपात समान क्रूर कार्यों को; **इयम्पिनार्**–बोले। १८८

वे सब उत्तर में स्थित मेरुपर्वत के एक शिखर पर, निर्दोष रत्नों से निर्मित एक मण्डप में आये। उन्होंने चतुर्मुख ब्रह्मा का नमस्कार कर लोक-कंटकों के वज्राघातों के समान पड़नेवाले अत्याचार बताये। १८८

पाहशा दनन्ऱनैप् पाशत् तार्त्तडल्, मेहना दन्पुहुन् दिलङ्गै मेयनाळ्
पोहमा मलरुऱै पुनिदन् मीट्टमै, तोहैपा हऱ्कुऱच् चॊल्लि नाननरो 189

अटल् मेकनातन्–अति बली मेघनाद; **पाकचातनन् तनै**–पाकशासन (देवेन्द्र) को; **पाचत्तु आर्त्तु**–पाश द्वारा बाँधकर; **इलङ्कै पुकुन्तु मेय नाळ्**–लंका में ले गया, (और इन्द्र वहाँ रहा) तब; **मीट्टमै**–उसको मुक्त कर लाने की बात; **पोकम् मा मलर् उऱै**–मनोरम कमल-पुष्प पर आसीन ब्रह्मा ने; **तोकै पाकऱ्कु**–अर्धनारीश्वर को; **उऱ**–खूब समझाकर; **चॊल्लिनान्**–सुनाई। १८९

तब ब्रह्मा ने अर्धनारीश्वर शिवजी से पाकशासन (इन्द्र) की बात

कही। वह मेघनाद द्वारा पाश-बद्ध होकर लंका में ले जाया गया। फिर स्वयं ब्रह्माजी किसी तरह मुक्त कराके उसे लाये थे। अब वे कुछ नहीं कर सकेंगे। १८९

इरुपदु करन्दलै यीरैन् दॆऩ्ऩुमत्
तिरुविलि तऩैत् तॊऱुञ् जॆयलिऩ् ऱॆङ्गळाल्
करुमुहि लॆऩ्ऩवळर् करुणै यङ्गडल्
पॊरुतिडर् तणिक्किलुण् डॆऩुम्बु णर्प्पिऩार् 190

करम् इरुपतु–हाथ बीस; ईरैन्तु तलै ऎऩ्ऩुम्–दस सिर––इस ख्याति के; अ तिरु इलि तऩै–उस श्री-हीन को; तॊऱुम् चॆयल्–मारने का काम; ऎङ्कळाल् इऩ्ऱु–हम (दोनों) के वश का नहीं; करु मुकिल् ऎऩ–श्यामल मेघ की तरह; वळर्–योग-निद्रा-रत; करुणै कटल्–कृपा-सागर; पॊरुतु–युद्ध कर; इटर् तणिक्किल्–दुख दूर करेंगे, तभी; उण्टु–हो सकता है; ऎऩुम् पुणर्प्पिऩार्–इस विचार में एकमत होकर। १९०

"दस सिर और बीस हाथ वाले, दया-श्री से हीन रावण को मारना हमारे वश का नहीं। श्यामल मेघ के समान, क्षीरसागर पर योग-निद्रा में रहनेवाले दयासागर, श्रीविष्णु ही इसका उपाय कर सकते हैं।" ऐसा निश्चय कर; । १९०

तिरैतवऴ् पाऱ्कडऱ् ऱुयिलुन् देवऩै, मरहद मलैयिऩै वऴुत्ति नॆञ्जिऩाल्
करकम लङ्गुवित् तिरुन्द कालैयिल्, परगति युणर्न्दवर्क् कुदवुम् बण्णवऩ्191

तिरै तवऴ्–लहरें जिस पर मन्द चलती हैं; पाल् कटल् तुयिलुम् तेवऩै–उस क्षीरसागर पर योग-निद्रा करनेवाले; मरकत मलैयिऩै–मरकत पर्वत को, (अर्थात् श्रीविष्णुदेव को); नॆञ्चिऩाल् वऴुत्ति–मन से चिन्तन करके; कर कमलम् कुवित्तु–करकमल जोड़कर; इरुन्त कालैयिल्–रहते समय; उणर्न्तवर्क्कु–तत्वज्ञों को; परकति उतवुम् पण्णवऩ्–उत्कृष्ट परगति (मुक्ति) दिलानेवाले श्रीविष्णु भगवान। १९१

वे हाथ जोड़ क्षीरसागर की तरंगों के मध्य योग-निद्रा-रत मरकतपर्वत-सम विष्णुदेव का ध्यान करने लगे। तब तत्वज्ञों को मुक्तिपद अर्थात् अपना श्रीवैकुंठलोकवास, प्रदान करनेवाले विष्णुदेव, । १९१

करुमुहि ऱामरैक् काडु पूत्तुनी
डिरुशुड रिरुपुऱत् तेन्दि येन्दलर्त्
तिरुवॊडुम् बॊलियवोर् शॆम्बॊऱ् कुऩ्ऱिऩ्मेल्
वरुवपोऱ् कलुऴऩ्मेल् वन्दु तोऩ्ऱिऩाऩ् 192

करु मुकिल्–काला मेघ; तामरै काटु पूत्तु–कमल-कानन विकसित कर; नीटु इरु चुटर्–दीर्घ दो प्रकाशपुंज; इरु पुऱत्तु एन्ति–दोनों पार्श्वों में धारण किये; अलर् ऎऩ्ऩु तिरुवॊटुम् पॊलिय–कमलासना श्रीलक्ष्मी के साथ शोभायमान होकर;

ओर् चॅम् पॊन् कुन्ऱिन् मेल्–एक लाल स्वर्णगिरि पर; **वरुव पोल्**–(विराजे) आये ऐसा; **कलुळन् मेल् वन्तु**–गरुड़ पर (आरूढ़ हो) आकर; **तोन्ऱिनान्**–प्रगट हुए। १९२

शंख और चक्र धारण कर, कमला, श्रीलक्ष्मीदेवी, के साथ गरुड़ारूढ़ आकर प्रकट हुए। यह ऐसा लगा मानों एक कमल-काननयुक्त नीला पर्वत, चन्द्र, सूर्य और श्रीलक्ष्मी के साथ स्वर्ण-पर्वत पर चढ़कर आया हो। १९२

अॅऴुन्दनर् कडवुळर्क् किऱैयुन् दामरैच्
चॅऴुन्दवि शुहन्दवत् तेवुम् जॅन्ऱॅदिर्
विऴुन्दन रडिमिशै विण्णु ळोरॊडुम्
तॊऴुन्दॊरुन् दॊऴुन्दॊरुङ् गळितु ळङ्गुवार् 193

कटवुळर्क्कु इऱैयुम्–देवेन्द्र और; **चॅऴु तामरै तविचु उकन्त**–प्रफुल्लित कमल के आसन पर विराजमान; **अ तेवुम्**–वे देवता (ब्रह्मा) भी; **अॅऴुन्तनर्**–उठे; **विण् उळोरॊटुम्**–अन्य देवताओं के साथ; **अॅतिर् चॅन्ऱु**–सामने जाकर; **अटि मिचै विऴुन्तनर्**–चरण तल पर विनत हुए; **तॊऴुन्तॊऱुम् तॊऴुन्तॊऱुम्**–ज्यों-ज्यों नमस्कार करते; **कळि तुळङ्कुवार्**–त्यों-त्यों आनन्दानुभव में बढ़ते हैं (उनका आनन्द वर्धित होता है)। १९३

उनको देखकर देवेन्द्र और कमलासन ब्रह्मा दोनों उठे और अन्य देवताओं को साथ ले उनके चरणों पर विनत हुए। अनेक बार उन्होंने नमस्कार किया। हर बार उनका आनन्द बढ़ा। १९३

आडिनर् पाडिन रङ्गु मिङ्गुमाय्
ओडिन रुवहैमा नऱवुण् डोर्हिलार्
वीडिन ररक्करॅन् ऱुवक्कुम् विम्मलाल्
शूडिनर् मुऱैमुऱै तुळवत् ताण्मलर् 194

उवकै मा नऱवु उण्टु–आनन्दरूपी अधिक सुरा पीकर; **ओर्किलार्**–किंकर्तव्य-मूढ़ होकर; **आटिनर्**–नाचे; **पाटिनर्**–गाये; **अङ्कुम् इङ्कुमाय् ओटिनर्**–इधर-उधर भागे; **अरक्कर् वीटिनर् अॅन्ऱु**–राक्षस मरे––यह निश्चय करके; **उवक्कुम् विम्मलाल्**–आनन्दवर्धन (वर्धित आनन्द) के साथ; **तुळवम् ताळ्**–तुलसी-दल-गन्ध-भूयिष्ट चरणों पर; **मुऱै मुऱै**–यथाक्रम; **मलर् चूटिनर्**–पुष्पार्चना की। १९४

उनको आनन्द का नशा सा हो गया। वे नाचे, गाये और इधर-उधर दौड़े। उनको निश्चय हो गया कि अब राक्षस मिट गये। इस विचार से उत्पन्न आदर और श्रद्धा के कारण उन्होंने विष्णुदेव के चरणों पर पुष्पार्चन किया। (देवता के एक-एक नाम उच्चारण करते हुए पुष्प अर्पण करना अर्चन कहा जाता है।)। १९४

पॉऩ्वरै यिऴिवदोर् पुयलिऱ् पॉऱ्पुऱ
ऍऩ्ऩैया ऴुडैयवऩ् ऱोणिऩ् ऱॅम्बिराऩ्
शॅऩ्ऩिवाऩ् तडवुमण् डपत्तिऱ् चेर्न्दरि
तुऩ्ऩुपॉऱ् पीडमेऱ् पॉलिन्दु तोऩ्ऱिऩाऩ् 195

ऍम्पिराऩ्–मेरे भगवान; पॉऩ् वरै इऴिवतु ओर् पुयलिऩ्–स्वर्ण-पर्वत से उतरनेवाले एक मेघ के समान; पॉऱ्पु उऱ–शान के साथ; ऍऩ्ऩै आळुटैयवऩ् तॉळ् निऩ्ऱु–मेरे शरण्य (भक्त गरुड़) के कन्धों पर से उतरकर; चॆऩ्ऩि वाऩ् तटवु–जिसकी चोटी आकाश को स्पर्श करती रही उस; मण्टपत्तिल् चेर्न्तु–मण्डप के अन्दर जाकर; अरि तुऩ्ऩु पॉऩ् पीटम् मेल्–स्वर्ण सिंहासन पर; पॉलिन्तु तॉऩ्ऱिऩाऩ्–ज्योतिस्वरूप विराजे । १९५

तब श्रीविष्णु, मेरे भगवान, स्वर्ण-पर्वत से उतरनेवाले एक मेघ के समान मेरे शरण्य गरुड से भव्य रूप से उतरे; और उस गगनस्पर्शी मण्डप के अन्दर श्रेष्ठ सिंहासन पर विराजे । (भक्तों के लिए भगवान से बढ़कर भगवान के सेवक अधिक श्रद्धेय हैं । अतः कम्बन गरुड़देव का नाम अधिक आदर से लेते हैं । १९५

विदियॉडु मुऩिवरुम् विण्णु ळोर्हळुम्
मदिवळर् शडैमुडि मऴुव लाळऩुम्
अदिशय मुडऩुवऩ् दयलि रुन्दुऴिक्
कॉदिकॉळ्वे लरक्कर्दङ् गॉडुमै कूऱुवार् 196

वितियॉटु मुऩिवरुम्–विधाता के साथ मुनिगण; विण् उळोर्कळुम्–और, स्वर्गवासी देवता; मति वळर्–शुक्ल-पक्ष के चन्द्र का निलय; चटै मुटि–जटाधारी (चन्द्रशेखर); मऴु वल् आळऩुम्–तप्त लोहे का अस्त्र रखनेवाले; अतिचयमुटऩ् उवन्तु–अतिशय मुग्ध होकर; अयल् इरुन्तुऴि–समीप रहते समय; कॉति कॉळ् वेल्–तापक शक्ति के; अरक्कर् तम् कॉटुमै–(धारक) राक्षसों के क्रूर कार्यों को; कूऱुवार्–कहने लगे । १९६

उनके पास विधाता, ऋषिगण, आकाशलोकवासी, जटा में चन्द्र और हाथ में तप्त लोहे का हथियार धारण करनेवाले शिवजी इत्यादि बैठकर संतापक भालोंवाले राक्षसों द्वारा होनेवाले अत्याचारों का वर्णन करने लगे । १९६

ऐयिरु तलैयिऩो ऩऩुश ऩादियाम्
मॅय्वलि यरक्कराल् व्विण्णु मण्णुमे
शॅय्दव मिऴन्दऩ तिरुवि ऩायह
उय्तिऱ मिल्लैयॅऩ् ऱुयिर्प्पु वीङ्गिऩार् 197

तिरुविऩ् नायक–लक्ष्मीपति; ऐयिरु तलैयिऩोऩ्–पाँच के दो (दस) सिर वाले; अनुचऩ् आतियाम्–उसका अनुज आदि; मॅय्वलि अरक्कराल्–शरीर-बल रखनेवाले

राक्षसों द्वारा; विण्णुम्–देवलोक (वासी); मण्णुमे–भूलोक (वासी) भी; चॆय् तवम् इऴन्तऩ–कर्तव्य तप आदि कर्म छोड़ बैठे; उय् तिऱम् इल्लै–बचने का उपाय नहीं है; ऍऩ्ऱु–कहकर; उयिर्प्पु वीङ्किऩार्–दीर्घ निश्वास छोड़ा। १९७

"हे श्रीलक्ष्मीपति! दशग्रीव के अनुज आदि, अपार शरीर-बल से युक्त, राक्षसों के कारण, आकाशलोक और भूलोक तपस्या आदि सत्कर्मों से हीन हो गये। अब बचने का उपाय नहीं दिखता।" यह कहकर वे दीर्घ निश्वास छोड़ने लगे। १९७

ऍङ्गणीळ् वरङ्गळा लरक्क रॆऩ्ऱुळार्
पॊङ्गुमू वुलहैयुम् बुडैत्त ऴित्तऩर्
शॆङ्गणा यहविऩित् तीर्त्त लिल्लैयेल्
नुङ्गुव रुलहैयोर् नॊडियि ऩॆऩ्ऱऩर् 198

चॆम् कण् नायक–लाल आँखों वाले नायक; ऍङ्कळ् नीळ् वरङ्कळाल्–हमारे प्रदत्त बड़े वरों के कारण; अरक्कर् ऍऩ्ऱु उळ्ळार्–राक्षस नामधारी सब; पॊङ्कुम् मू उलकैयुम्–संवर्धनशील तीनों लोकों को; पुटैत्तु अऴित्तऩर्–आहत कर मिटाते हैं; इऩि–अब; तीर्त्तल् इल्लैयेल्–संहार नहीं हुआ तो; उलकै–सारे लोकों को; ओर् नोटियिऩ्–एक क्षण में; नुङ्कुवर्–उदरस्थ कर लेंगे; ऍऩ्ऱऩर्–ऐसा कहा। १९८

उन्होंने आगे कहा कि ताम्राक्ष! हमसे प्राप्त वरों के दीर्घ प्रभाव के कारण, वे राक्षस संवर्धनशील तीनों भुवनों का नाश कर रहे हैं। अब उनका संहार नहीं होगा तो सारे लोकों को एक पल में खा जाएँगे। १९८

ऍऩ्ऱऩ रिडरुऴन् दिरैञ्जि येत्तलुम्
मऩ्ऱलन् दुळविऩान् वरुन्दल् वञ्जहऩ्
तऩ्ऱलै यरुत्तिडर् तणिप्पॆऩ् ऱारणिक्
कॊऩ्ऱुनीर् केण्मेऩ वुरैत्तऩ् मेयिऩान् 199

ऍऩ्ऱऩर्–ऐसा कहनेवाले हो; इटर् उऴन्तु–दुखतप्त होकर; इरैञ्चि एत्तलुम्–विनत हो स्तुति करने पर; मऩ्ऱल् अम् तुळविऩाऩ्–सुगन्धित तुलसीमाला से अलंकृत (श्रीविष्णु) ने; वरुन्तल्–दुखी मत हों; वञ्चकऩ् तऩ् तलै अऱुत्तु–वंचक का सिर काटकर; तारणिक्कु इटर् तणिप्पॆऩ्–धरणी का संकट हरण करूँगा; नीर् ऒऩ्ऱु केण्म् ऍऩ–आप लोग एक बात सुनें––यह बात कहकर; उरैत्तल् मेयिऩाऩ्–आगे कहने लगे। १९९

यह कहकर दुःख से पीड़ित उन्होंने भगवान की बहुप्रकार से विनय की। तब तुलसी-मालाधारी देव ने कहा कि आपलोग दुःख न करें। उस वंचक का सिर काटकर धरणी का दुःख दूर कर दूँगा। आप एक बात सुनिए। १९९

वाऩुळो रऩैवरुम् वाऩ रङ्गळाक्, काऩिऩुम् वरैयिऩुङ् गडिकॉळ् काविऩुम्
शेऩैयो डवदरित् तिडुमिऩ् शॅऩ्ऱॅऩ, आऩऩ मलर्न्दऩ ऩरुळि ऩाऴियाऩ् 200

वाऩ् उळोर् अऩैवरुम्–सुरलोकवासी आप सब; वाऩरङ्कळ् आ–वानर बनें; काऩिऩुम्–वनों और; वरैयिऩुम्–पर्वतों; कटि कॉळ्–सुवासपूर्ण; काविऩुम्–बागों में; चेऩैयॉटु चॅऩ्ऱु अवतरित्तिटुमिऩ्–सेना के साथ जाकर अवतार लीजिए; ॲऩ–यह कहकर; अरुऴिऩ् आऴियाऩ्–दयासागर ने; आऩऩम् मलर्न्तऩऩ्–श्रीमुख से शुभ उच्चारण किया। २००

आकाशलोकवासी आप सब बानर बनकर, जंगलों, पर्वतों और सुवासपूर्ण बागों में जाकर रहें। ऐसा उन्होंने अपने श्रीमुख से शुभ उच्चारण किया। २००

मशरद मऩैयवर् वरमुम् वाऴ्वुमोर्, निशरद कणैहळा ऩीऱु शॅय्ययाम्
कशरद तुरहवाट् कडल्हॉळ् कावलऩ्, दशरदऩ् मदलैयाय् वरुदुन् दारणि 201

अऩैयवर्–उनके; वरमुम्–वरों को; मचरतम् वाऴ्वुम्–'भूतरथ' के समान (माया-मय) जीवन को; ओर्–अनुपम; निचम् रतम् कणैकळाल्–अचूक और रक्त-पिपासू शरों से; नीऱु चेय्य–राख बनाने हेतु; याम्–हम; कचम्, रतम्, तुरकम्, आळ् कटल् कॉळ्–गज, रथ, तुरग पदाति, चतुरंग सेना-सागर के पति; कावलऩ् तचरतऩ्–चक्रवर्ती दशरथ के; मतलैयाय्–पुत्र के रूप में; तारणि वरुतुम्–पृथ्वी पर जन्म लूँगा। २०१

उन्होंने आगे कहा कि राक्षसों के वरों और उनके मायामय जीवन को हम अपने अमोघ और रक्तपिपासू शरों द्वारा खाक में मिलाने के लिए चतुरंगिनी सेना के स्वामी, राजा दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार लेंगे। २०१

वळैयॉडु तिहिरियुम् वडवै तीदर, विळैदरु कडुवुडै विरिहॉळ् पायलुम्
इळैयव रॅऩवडि परव वेहिनाम्, वळैमदि लयोत्तियिल् वरुदु मॅऩ्ऱऩऩ् 202

वळैयॉटु तिकिरियुम्–शंख के साथ चक्र (और); वटवै ती तर–बड़वाग्नि को भी जलाते हुए; विळै तरु कटु–उत्पन्न होनेवाला विष जिसमें है; विरिकॉळ् पायलुम्–वह विशाल शय्या (शेषनाग); इळैयवर् ॲऩ अटि परव–अनुज बनकर मेरी सेवा करें, ऐसा; नाम् एकि–हम आकर; वळै मतिल् अयोत्तियिल्–बड़े प्राचीरों से घिरे अयोध्या नगर में; वरुतुम्–जन्म लेंगे। २०२

मेरे शंख, चक्र और शय्या का काम देनेवाले कठोर विषधर शेषनाग मेरे अनुजों के रूप में आकर मेरी सेवा करेंगे। हम अयोध्या में आकर प्रकट होंगे। २०२

ॲऩ्ऱव ऩुरैत्तपो दॅऴुन्तु तुळ्ळिऩार्, नऩ्ऱिकॉण् मङ्गल नादम् बाडिऩार्
मऩ्ऱलञ् जॅऴुन्दुळ वणियु मायऩार्, इऩ्ऱॅमै यळित्तऩ रॅऩ्ऩु सेस्बलाल् 203

ॲऩ्ऱु अवऩ् उरैत्तपोतु–ऐसा उन्होंने कहा, तब (देव लोग सब); मऩ्ऱल् अम् चॅऴु तुळवु अणियुम् मायऩार्–सुवासित, सुन्दर और प्रफुल्ल तुलसी-मालाधारी मायावी

(लीलाधर) देव; इऩ्ऱु ऍमै अळित्तऩर्–आज हमको बचा चुके; ऍऩ्ऩुम् एम्पलाल्–इस आनन्द से; ऍऴुन्तु तुळ्ळिऩार्–उठे और उछले; नऩ्ऱि कॊळ्–कृतज्ञता-पूरित; मङ्कल नातम् पाटिऩार्–मंगलाशासन के (मंगल चाहनेवाले) गीत गाये। २०३

जब उन्होंने यह कहा तब वे देवता सब उठे और उछले। तुलसी-मालाधारी देव ने हमारा उद्धार किया—इस विचार से उत्पन्न कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनका मंगल-सूचक कीर्तन किया। २०३

पोयदॆम् बॊरुम लॆऩ्ऩा विन्दिर ऩुवहै पूत्ताऩ्
तूयमा मलरु ळोऩुञ् जुडर्मदि शूडि ऩाऩुम्
शेयुयर् विशुम्बु ळोरुन् दीर्न्ददॆञ् जिऱुमै यॆऩ्ऱार्
मायिरु ञाल मुण्डोऩ् कलुऴऩ्मेऱ् चरणम् वैत्ताऩ् 204

इन्तिरऩ्–देवेन्द्र; ऍम् पॊरुमल् पोयतु–हमारा भय दूर हुआ; ऍऩ्ऩा–कहकर; उवकै पूत्ताऩ्–मुदित हुआ; तूय मा मलर् उळोऩुम्–पवित्र, श्रेष्ठ पुष्प (कमल) पर आसीन ब्रह्माजी भी; चुटर् मति चूटिऩाऩुम्–द्युतिमान चन्द्र के धारक भी; चेय् उयर् विचुम्पु उळोरुम्–अत्युन्नत आकाश-लोक के वासी भी; ऍम् चिऱुमै तीर्न्ततु–हमारी अवनति दूर हुई; ऍऩ्ऱार्–कहा; मा इरु ञालम् उण्टोऩ्–बहुत बड़ा यह भूलोक उदरस्थ करनेवाले (श्रीविष्णुदेव) ने; कलुऴऩ् मेल्–गरुड़ पर; चरणम् वैत्ताऩ्–अपना श्रीचरण रखा। २०४

देवेन्द्र यह सोचकर कि हमारा भय अब दूर हुआ बहुत उल्लसित हुये। ब्रह्मा, चन्द्रशेखर शिवजी और अन्य देवता—सबों ने यह मान लिया कि अब हमारी अवनति दूर हो गयी। तब भूगर्भ (विष्णु) गरुड़ पर चढ़े, (गमन के विचार से)। २०४

ऍऩ्ऩैया ळुडैय वैयऩ् कलुऴऩ्मे लॆऴुन्दु पोय
पिऩ्ऩर्वा ऩवरै नोक्किप् पिदामहऩ् पेशु हिऩ्ऱाऩ्
मुऩ्ऩरे यॆण्किऩ् वेन्तऩ् याऩॆऩ मुडुहि ऩेऩ्मऱ्
ऱऩ्ऩवा ऱॆवरु नीर्पो यवदरित् तिडुमि ऩॆऩ्ऱाऩ् 205

ऍऩ्ऩै आळुटैय ऍयऩ्–मेरे नियामक देव (के); कलुऴऩ् मेल् ऍऴुन्तु पोय पिऩ्ऩर्–गरुड़ पर विराजकर जाने के पश्चात्; वाऩवरै नोक्कि–देवों को देख; पेचुकिऩ्ऱाऩ् पिता मकऩ्–बोलनेवाले पितामह ने; मुऩ्ऩरे–पूर्व ही; याऩ्–मैं; ऍण्किऩ् वेन्तऩ् ऍऩ–रीछों के राजा के रूप में; मुटुकिऩेऩ्–जन्म ले चुका हूँ; अऩ्ऩवाऱु–उसी प्रकार; नीर् ऍवरुम्–तुम सब लोग; पोय् अवतरित्तिटुमिऩ्–जन्म ले लो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा; (मऱ्ऱु)। २०५

मेरे (कम्बन के) नियामक श्रीमन्नारायण गरुड़ पर विराजे चले गये। उसके बाद ब्रह्मा ने देवताओं से कहा कि मैं पहले ही रीछों के राजा जाम्बवान के रूप में जन्म ले चुका हूँ। उसी प्रकार आपलोग भी बानर बनकर अवतरित हो जाइए। (वैष्णव सम्प्रदाय में शेष-शेषी भाव का

मुख्यत्व है—अर्थात् श्रीलक्ष्मीनारायण को सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र स्वामी, नियामक और सर्वशेषी मानना। भक्त अपने को पूर्णरूप से उनके अधीन मान लेता है।)। २०५

तरुवुडैक् कडवुळ् वेन्दऩ् शाऱ्ऱुवा ऩॆऩ्दुकूऱु
मरुवलर्क् कशऩि यऩ्ऩ वालियु महऩु मॆऩ्ऩ
इरविमऱ् ऱॆऩ्दु कूऱङ् गवऱ्किळै यवऩॆऩ् ऱोद
अरियुमऱ् ऱॆऩ्दु कूऱु नीलऩॆऩ् ऱऱैन्दिट् टाऩाल् 206

तरु उटै कटवुळ् वेन्तऩ्–(कल्पक) तरुओं के (स्वामी) देवेन्द्र; चाऱ्ऱुवाऩ्–कहते हैं (कहनेवाले बनकर); ऎऩतु कूऱु–मेरा अंश; मरुवलर्क्कु–शत्रुओं को; अचऩि अऩ्ऩ–वज्र-सम; वालियुम्–वाली और; मकऩुम् ऎऩ्ऩ–उसका पुत्र है, यह कहने पर; इरवि–सूर्य; ऎऩतु कूऱु–मेरा अंश; अङ्कु अवऱ्कु इळैयवऩ्–कथित (उस) वाली का अनुज; ऎऩ्ऱु ओत–यह कहते; अरियुम्–अग्नि (ने) भी; ऎऩतु कूऱु नीलऩ् ऎऩ्ऱु अऱैन्तिट्टाऩ्–मेरा अंश नील है––यह कहा। २०६

नन्दन वन के स्वामी देवेन्द्र ने कहा कि, शत्रुओं के लिए वज्रतुल्य बाली और उसके पुत्र अंगद में मेरा अंश है। सूर्य ने कहा कि बाली का अनुज सुग्रीव मेरा अंश है। अग्निदेव ने बताया कि नील नामक बानर मेरा अंश है। २०६

वायुमऱ् ऱॆऩ्दु कूऱु मारुदि यॆऩ्ऩ मऱ्ऱोर्
कायुमऱ् कडङ्ग ळाहिक् काशिऩि यदऩिऩ्मीदु
पोयिडत् तुणिन्दो मॆऩ्ऱार् पुरारिमऱ् ऱियाऩुङ् गाऱ्ऱिऩ्
शेयॆऩप् पुहऩ्ऱाऩ् मऱ्ऱैत् तिशैयुळोर्क् कवदि युण्डो 207

वायु–पवनदेव (के); ऎऩतु कूऱु मारुति ऎऩ्ऩ–मेरा अंश मारुति है, यह कहने पर; मऱ्ऱोर्–अन्य (देवता लोग); कायुम् मऱ्कटङ्कळ् आकि–क्रोधी मर्कट बनकर; काचिऩि अतऩिऩ् मीतु–भूमि पर; पोयिट तुणिन्तोम्–जन्म लेने का निश्चय किया है (हमने); ऎऩ्ऱार्–बोले; पुरारि–त्रिपुरारि ने; याऩुम्–मैं भी; काऱ्ऱिऩ् चेय्–वायुपुत्र (में मिला) रहूँगा; ऎऩ पुकऩ्ऱाऩ्–ऐसा कहा; मऱ्ऱै–और दूसरे; तिचै उळ्ळोर्क्कु–नाना दिशाओं के रहनेवालों की; अवधि उण्टो–कोई सीमा है। २०७

वायुदेव ने मारुति को अपना अंश कहा। अन्य देवताओं ने भी कहा कि हम सब क्रोधी बानरों के रूप में भूमि पर जाकर अवतरित होंगे। तब त्रिपुरारी ने बताया कि मारुति में मेरा अंश भी मिला रहेगा। कितने ही देवों का किस-किस दिशा में जन्म हुआ, इसका विवरण नहीं हो सकता। २०७

अरुडरु कमलक् कण्ण ऩरुण्मुऱै यलरु ळोऩुम्
इरुडरु मिडऱ्ऱि ऩोऩु ममररु मिऩैय राहि

मरुडरु वऩत्तिऩ् मण्णिल् वाऩर राहि वन्दार्
पोरुडरु मिरुवर् तन्द मुऱैविडञ् जॆऩ्ऱु पुक्कार् 208

अरुळ् तरु–कृपालू; कमलम् क़ण्णऩ्–कमलाक्ष श्रीविष्णु के; अरुळ् मुऱै–आज्ञानुसार; अलर् उळोऩुम्–पुष्पासन; इरुळ् तरु मिटऱ्ऱिऩोऩुम्–अन्धकारमय (नील) कण्ठवाले भी; अमररुम्–और अन्य देवता लोग; इत्तैयर् आकि–ऐसे संकल्पवाले बनकर; मरुळ् तरु वऩत्तिल्–भयावने जंगलों में; मण्णिल्–अन्य स्थलों पर; वाऩरर् आकि वन्तार्–वानर बनकर पैदा हुए; पॊरुळ् तरुम् इरुवर्–वरद दोनों (ब्रह्मा और रुद्र); तम् तम् उऱैविटम् चॆऩ्ऱु पुक्कार्–अपने-अपने निवासस्थान जा पहुँचे। २०८

वरदायी कमलाक्ष श्रीविष्णु भगवान की अनुज्ञा के अनुसार कमलासन, श्रीनीलकण्ठ और अन्य देवता, अंश में, बानर बनकर भयंकर काननों और पर्वतों पर जाकर रहे। वर-प्रदाता (ब्रह्मा और शिवजी) दोनों अपने-अपने निवास-स्थान सिधारे। २०८

ईदुमुऩ् ऩिहऴ्न्द वण्ण मॆऩ्मुऩि यिदयत् तॆण्णि
मादिरम् बॊरुद तिण्डोण् मऩ्ऩऩी वरुन्द लेऴेऴ्
बूदल मुऴुदुन् दाङ्गुम् बुदल्वरै यळिक्कुम् वेळ्वि
तीदऱ मुयलि ऩैय शिन्दनोय् तीरु मॆऩ्राऩ् 209

ईतु–यह (वृत्तान्त); मुऩ् निकऴ्न्त वण्णम् ॲऩ–पहले घटित हुआ वृत्तान्त है––यह; मुऩि–मुनिवर (वसिष्ठ) ने; इतयत्तु ॲण्णि–मन में सोचकर; मातिरम् पॊरुत–पर्वत का मुकाबला करनेवाले; तिण् तोळ् मऩ्ऩ–सुदृढ़ कन्धोंवाले महाराज; नी वरुन्तल्–आप दुख न करें; एऴ् एऴ् पूतलम् मुऴुतुम् ताङ्कुम्–सात और सात लोकों का पालन करनेवाले; पुतल्वरै–पुत्रों को; अळिक्कुम् वेळ्वि–दिलानेवाला यज्ञ; तीतु अऱ मुयलिऩ्–अपराध-हीन रीति से कर चुकेंगे तो; ऐय–महिमावान; चिन्तै नोय्–चिन्ता का रोग; तीरुम्–मिट जायगा; ॲऩ्ऱाऩ्–ऐसा कहा। २०९

वसिष्ठ ने पूर्व-घटित यह वृत्तान्त अपने मन में सोचा। फिर उन्होंने दशरथ से कहा कि हे सशक्त कन्धोंवाले महाराज! आप चिन्ता मत कीजिए। सर्वलोक-शासन-समर्थ पुत्रों को दिलानेवाला एक यज्ञ है। उसको आप सफल रूप से कर चुकेंगे तो आपकी चिन्ता दूर हो जायगी। २०९

ॲऩ्ऩमा मुऩिवऩ् कूऱ वॆऴुन्दुपे रुवहै पॊङ्ग
मऩ्ऩवर् मऩ्ऩ ऩन्द मामुऩि शरणञ् जूडि
उऩ्ऩैये पुहल्पुक् केऩुक् कुऱुहण्वन् दुऱुव दुण्डो
अऩ्ऩदऱ् कडियेऩ् शॆय्युम् बणियिऩै यरुळु हॆऩ्ऱाऩ् 210

ॲऩ्ऩ–ऐसा; मा मुऩिवऩ् कूऱ–महान मुनि के कहने पर; मऩ्ऩवर् मऩ्ऩऩ्–राजाधिराज; पेर् उवकै–बड़ा ही आनन्द; पॊङ्क–उमड़ते; अन्त–उन; मा मुऩि चरणम् चूटि–महान मुनि के चरणों की वन्दना करके; उऩ्ऩैये पुकल् पुक्केऩुक्कु–आप ही की शरण में आये हुए मुझे; उऱुकण् वन्तु उऱुवतु उण्टो–दुख मिलेगा क्या;

अऩ्ऩतऱ्कु–उस यज्ञ के लिये; अटियेऩ् चेय्युम् पणियित्तै–मुझसे करणीय काम को; अरुळुक–आज्ञा करने की कृपा कीजिए। २१०

महर्षि वसिष्ठ ने यह बात कही तो महाराज के आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। वे उठे और मुनिश्रेष्ठ के पैरों पर नमस्कार करके बोले कि मैं आपकी शरण में हूँ; मुझे दुःख ही नहीं हो सकता। आप कृपा कर बताइये कि उस यज्ञ को सुसम्पन्न करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए। २१०

माशऱु शुरर्ह ळोडु मऱ्ऱुळोर् तमैयु मीऩ्ऱ
काशिब ऩरुळु मैन्दऩ् विबाण्डहऩ् गङ्गै शूडुम्
ईशऩुम् बुहऴ्दऱ् कॊत्तो ऩिरुङ्गलै पिऱवु मॆण्णिऩ्
तेशुडैत् तन्दै यॊप्पाऩ् ऱिरुवरुळ् पुत्तिन्द मैन्दऩ् 211

माचऱु–कलंकहीन; चुरर्कळोटु–देवों को और; मऱ्ऱु उळोर् तम्मैयुम्–अन्य (दैत्य, मनुष्य, पक्षी, जानवर आदि) जीवों को; ईऩ्ऱ–जिन्होंने सृजित किया; काचिपऩ् अरुळुम् मैन्तऩ्–(उन) कश्यप (प्रजापति) जनित पुत्र; कङ्कै चूटुम् ईचऩुम् पुकऴ्तऱ्कु ओत्तोऩ्–गंगाधर श्रीशिव जी के लिए भी स्तुति करने योग्य; इरु कलै पिऱवुम्–गम्भीर शास्त्र-ज्ञान और विद्याओं में; ऍण्णिल्–सोचने पर; तेचु उटैय तन्तै ऑप्पाऩ्–तेजस्वी अपने पिता की समानता करनेवाले; विपाण्टकन्–विभाण्डक मुनि के; तिरु अरुळ् पुत्तिन्त मैन्तऩ्–लोक-दया से जनित पुत्र। २११

वसिष्ठजी बोले। कश्यप प्रजापति के पुत्र विभाण्डक थे जो गंगाधर शिवजी के लिए भी स्तुत्य थे; सर्वशास्त्रज्ञ थे; विद्वान थे और अपने पिता के ही समान तेजोमय। उनके, कृपा-प्रदत्त पुत्र,। २११

वरुहलै यऱिवु नीदि मऩुनॆऱि वरम्बु वाय्मै
तरुहलै मऱैयु मॆण्णिऱ् चतुमुकऱ् कुवमै शाऩ्ऱोऩ्
तिरुहलै युडैय विऩ्दच् चॆहत्तुळोर् तऩ्मै तेरा
ऑरुहलै मुहच्चि रुङ्ग वुयर्दवऩ् वरुदल् वेण्डुम् 212

वरु कलै अऱिवु–विविध कलाओं के (विधाओं के) ज्ञान में; नीति मऩु नॆऱि वरम्पु–नीतिशास्त्र, मनु-धर्म के विधि-विधानों में; वाय्मै तरु–तत्वबोधक; कलै मऱैयुम्–शाखा-विभक्त वेदों में; ऍण्णिल्–विचार करने पर; चतुमुकऩ्कु उवमै चाऩ्ऱोऩ्–चतुर्मुख से उपमेय हैं; तिरुकलै उटैय–(स्त्री पुरुषादि) भेदयुक्त; इन्त चॆकत्तु उळोर् तऩ्मै–इस लोक के वासियों के रहस्यों को; तेरा–न जाननेवाले; ऑरु कलै चिरुङ्कम् मुकम्–अकेला शृंगवाला मुख जिनका है; उयर् तवऩ्–उन्नत तपस्वी; वरुतल् वेण्टुम्–(उनको) इधर आना चाहिए। २१२

ऋष्यशृंग हैं। वे सारी विद्याओं में पारंगत, मनु-धर्म-शास्त्र में निष्णात और अनन्त शाखाओं वाले वेदों के ज्ञान में, कहिए, स्वयं चतुर्मुख के समान हैं। वे स्त्री-पुरुष का भेद नहीं जानते और उनके सिर पर एक शृंग है। वे महान तपस्वी हैं। उनको इधर लिवा लाना होगा। २१२

पान्दळिऩ् मकुड कोडि परित्तपा रिदऩिल् वैहुम्
मान्दरै विलङ्गॆऩ् ऱुऩ्ऩु मऩत्तऩ्मा तवत्त ऩॆण्णिऱ्
पून्दवि शुहन्दु ळोऩुम् पुरारियुम् बुहऴ्दऱ् कोत्त
शान्दऩाल् वेळ्वि मुऱ्ऱिऱ् ऱऩैयरह ळुळरा मॆऩ्ऱाऩ् 213

पान्तळिऩ् मकुटम् कोटि–शेषनाग के अनेक (करोड़) फणों पर; परित्त–धृत; पार् इतऩिल् वैकुम्–इस धरती पर बसनेवाले; मान्तरै–मनुष्यों को; विलङ्कु ऍऩ्ऱु उऩ्ऩुम् मऩत्तऩ्–पशु समझनेवाले मन के; मा तवत्तऩ्–महान तपस्वी; ऍण्णिल्–विचार करने पर; पू तविचु उकन्तु उळ्ळोऩुम्–(कमल) पुष्पासन-प्रिय ब्रह्मा; पुर अरियुम्–त्रिपुरांतक और; पुकऴ्तऱ्कु ओत्त–(उनके लिए) स्तुति करने योग्य; चान्तऩाल्–शांत स्वभाव के उन महर्षि (ऋष्यश्रृंग) द्वारा; वॆळ्वि मुऱ्ऱिऩ्–यज्ञ सम्पन्न किया जाय तो; तऩैयर्कळ् उळर् आम्–पुत्र होंगे; ऍऩ्ऱाऩ्–(वसिष्ठजी ने) कहा। २१३

आदिशेष के अनेक फणों पर धृत इस भूमि पर रहनेवाले मनुष्यों को वे जानवर ही समझते हैं लेकिन बड़े तपस्वी हैं। मानिये तो वे कमलासन ब्रह्मा और त्रिपुरान्तक शिव द्वारा भी स्तोतव्य हैं। उन शान्त मुनि द्वारा यज्ञ-साधन होगा तो आप पुत्रवान बन जायँगे। २१३

आङ्गुरै यिऩैय कूऱु मरुन्दवर्क् करशऩ् शॆय्य
पूङ्गऴ ऱॊऴुदु वाऴ्त्तिप् पूदल मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩ्
तीङ्गऱु कुणत्तिऩ् मिक्क शॆऴुन्दवऩ् याण्डै युळ्ळाऩ्
ईङ्गियाऩ् कॊणरुन् दऩ्मै यियम्बुदि यिऱैव वॆऩ्ऱाऩ् 214

आङ्कु–तब; पूतलम् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩ्–भूलोक के राजाओं के राजा; इऩैय उरै कूऱुम्–ये बातें जिन्होंने बतायीं उन; अरु तवर्क्कु अरचऩ्–तपोधनों में (राजा) श्रेष्ठ (महर्षि) के; चॆय्य पू कऴल्–लाल कमल-सम चरणों की; तॊऴुतु–वन्दना करके; तुतित्तु–स्तुति करके; इऱैव–देव; तीङ्कु अऱु–(कामादि) दोष-रहित; कुणत्तिल् मिक्क–सद्गुणों में श्रेष्ठ; चॆऴु तवऩ्–महान तपस्वी; याण्टु उळ्ळाऩ्–कहाँ हैं; ईङ्कु याऩ् कॊणरुम् तऩ्मै–इधर उनको मेरे लिवा लाने का मार्ग; इयम्पुति–बताइयेगा; ऍऩ्ऱाऩ्–यह विनय की। २१४

यह सुनकर राजाधिराज दशरथ ने मुनिवर का प्रणमन करके पूछा कि पवित्र गुणवाले महान तपस्वी कहाँ रहते हैं, उनको मैं कैसे लिवा लाऊँ, इसका उपाय बताइये। २१४

पुत्ताऩ कॊडुविऩैयो डरुन्दुयरम् बोयॊऴिप्पप् पुवऩन् दाङ्गुम्
सत्ताऩ कुणमुडैयोऩ् ऱयैयोडुन् दण्णळियिऩ् शालै पोल्वाऩ्
ऍत्ताऩुम् वॆलऱ्करियाऩ् मऩुकुलत्ते वन्दुदित्तो ऩिलङ्गु मौलि
उत्ताऩ पादऩ्ऱु ळुरोमपद ऩॆऩ्ऩुळऩिव् वुलहै याळ्वोऩ् 215

पुत् आऩ कॊटु विऩैयोटु–पुत् आदि नरक पहुँचानेवाले भयंकर पाप; अरु तुयरम्–

और असहनीय दुख, ये; पोय् ऑऴिप्प–जाकर छिप जायँ, ऐसा; पुवऩम् ताङ्कुम्–भूमि का पालन करनेवाले; चत्तु आऩ कुणम् उटैयोऩ्–श्रेष्ठ (सत्व) गुणशील; तयैयोटुम् तण्णळियिऩ् चालै पोल्वाऩ्–दया और करुणा के निलय के समान रहनेवाले; ऍत्तालुम्–किसी भी उपाय से; वॆलऱ्कु अरियाऩ्–अजेय; मऩुकुलत्ते वन्तु उतित्तोऩ्–(स्वयंभुव) मनुकुल में उत्पन्न; इलङ्कु मौलि–द्युतिमान किरीटधारी; उत्ताऩपातऩ् अरुळ्–उत्तानपाद के पुत्र; उरोमपतऩ् ऍऩ्ऱु–रोमपाद नाम के; इ उलकै आळ्वोऩ्–इस भूमि में (अपने देश का) शासन करनेवाले; उळऩ्–हैं। २१५

वसिष्ठजी ने कहा कि स्वायंभुव मनु के वंश में उत्तानपाद नामक एक राजा हुए। उनके शासन में नरक में पहुँचानेवाले पाप नहीं होते थे और इसलिए किसी को कोई दुःख भी नहीं होता था। वे स्वयं गुणशील, दया आदि के आश्रय, और अजेय थे। उनके एक पुत्र हुए जो रोमपाद के नाम से अब राज्य कर रहे हैं। २१५

अऩ्ऩवऩ्ऱाऩ् पुरन्दळिक्कुन् दिरुनाट्टु ऍडुङ्गाल मळव दाह
मिऩ्ऩियॆऴु मुहिलिऩ्ऱि वॆन्दुयरम् पॆरुहुदलुम् वेद नऩ्नूल्
मऩ्ऩुमुऩि वरैयऴैत्तु मादाऩङ् गॊडुक्कवुम्वाऩ् वऴङ्गा दाहप्
पिऩ्ऩुमऱै यवर्क्केट्पक् कलैक्कोट्टु मुऩिवरिऩ्वाऩ् पिलिऱ्ऱु मॆऩ्ऱार् 216

अऩ्ऩवऩ् पुरन्तु अळिक्कुम्–उनके द्वारा सुरक्षित; तिरुनाट्टुळ्–(अंग) देश में; नॆट्टु कालम् अळवु अतु आक–दीर्घकाल तक; मिऩ्ऩि ऍऴुम् मुकिल् इऩ्ऱि–बिजली के साथ उठनेवाले मेघों के बिना; वॆम् तुयरम् पॆरुकुतलुम्–भयंकर कष्ट फैल गया, तब; वेतम् नल् नूल् मऩ्ऩुम्–वेद-शास्त्रज्ञ; मुनिवरै अऴैत्तु–विप्रों को बुलाकर; मा ताऩम् कॊटुक्कवुम्–(राजा ने) बहुत दान दिये, तब भी; वाऩ् वऴङ्काताक–मेघ नहीं बरसे; पिऩ्ऩुम्–फिर भी; मऱैयवर् केट्प–वेदपाठियों से पूछने पर; कलैक्कोट्टु मुऩि वरिऩ्–ऋष्यशृंग आएँगे तो; वाऩ् पिलिऱ्ऱुम् ऍऩ्ऱार्–मेघ बरसेगा—कहा। २१६

उनके शासित राज्य में दीर्घकाल से वर्षा नहीं हुई। लोग दुखी हो रहे। राजा ने ब्राह्मणों को बुलाकर बहुत दान दिया। तो भी पानी नहीं गिरा। फिर विप्रों को बुलाकर पूछा तो उन्होंने कहा कि ऋष्यशृंग आवें तो वारिश होगी। २१६

ओदनॆडुङ् गडलाडै युलहिऩिल्वाऴ् मऩिदर्विलङ् गॆऩवे युऩ्ऩुम्
कोदिल्कुणत् तरुन्दवऩैक् कॊणरुम्वहै यावदॆऩक् कुणिक्कुम् वेलै
शोदिनुदऱ् करुनॆडुङ्गट् टुवरिदऴ्वायत् तरळ नहैत् तुणैमॆऩ् कॊङ्गै
मादरॆऴुन् दियामेहि यरुन्दवऩैक् कॊणर्दुमॆऩ वणक्कञ् जॆय्दार् 217

ओतम् नॆट्टु कटलाटै–तरंगायित समुद्र से वेष्टित; उलकिऩिल्–भूलोक में; वाऴ् मऩितर्–वास करनेवाले मनुष्यों को; विलङ्कु ऍऩवे उऩ्ऩुम्–पशु ही समझनेवाले; कोतु इल् कुणत्तु अरु तवऩै–अकलंक गुणी और श्रेष्ठ तपस्वी को; कॊणरुम् वकै यावतु ऍऩ–लिवा लाने का मार्ग क्या है, यह; कुणिक्कुम् वेलै–विचार करते समय; चोति नुतल्–उज्ज्वल ललाट; करु नॆट्टु कण्–काली लम्बी आँखें; तुवर् इतऴ् वाय्–प्रवाल

(लाल) अधर और मुँह; तरळम् नकै–मुक्ता से दाँत; मॅल् तुणै कॉङ्कै–कोमल द्वय स्तन; मातर् ॲळुन्तु–(बार-) वनितायें उठकर; याम् एकि–हम गमन कर; अरु तवत्तै कॉणर्तुम्–अपूर्व तपस्वी को ले आयँगी; ॲन्न–कहकर; वणक्कम् चॅय्तार्–नमस्कार किया। २१७

राजा को यह चिन्ता हुई कि समुद्र-वसना पृथ्वी के वासी, सब नर-नारियों को पशु समझनेवाले इन श्रेष्ठ तपस्वी को कैसे आमंत्रित किया जाय? तब उनकी सभा में रही कुछ अति सुन्दर वारवनिताओं ने नमस्कार करके कहा कि हम जायँगी और उनको ले आयँगी। २१७

आङ्गवरम् मॉऴियुरैप्प वरशऩ्महिऴ्न् दवर्क्कणितू शादि याय
पाङ्गुळमऱ् ऱवैयरुळिप् पऩिप्पिऱैयैप् पऴित्तनुदऱ् पणैत्त वेय्त्तोळ्
ॲङ्गुमिडै तडिक्कुमुलै यिरुण्डकुऴऩ् मरुण्डविऴि यिलवच् चॅव्वाय्प्
पूङ्गॉडियी रेहुमॅऩ्ऩत् तॉऴुदिऱैञ्जि यिरदमिशैप् पोयि ऩारे 218

आङ्कु–वहाँ; अवर् अ मॉऴि उरैप्प–उनके वह वचन कहते; अरचऩ्–राजा; मकिऴ्न्तु–मुदित होकर; अवर्क्कु–उन्हें; अणि तूचु आति आय–आभरण वस्त्र इत्यादि; पाङ्कु उळ मऱ्ऱवै–उचित अन्य द्रव्य; अरुळि–देकर; पनि पिऱैयै पऴित्त नुतल्–शीतल अर्द्धचन्द्र का उपहास करनेवाली भौंहों; पणैत्त वेय् तोळ्–पुष्ट बांस सम कन्धों; एङ्कुम् इटै–क्षीण कमर; तटिक्कुम् मुलै–पीन स्तनों; इरुण्ट कुऴल्–अन्धकार-सम (काले) केश; इलवम् चॅम्मै वाय्–सेमर-पुष्प-सम लाल अधरोंवाली; पू कॉटियीर्–पुष्पलताओ; एकुम्–जाओ; ॲन्न–आज्ञा देने पर; तॉऴुतु इऱैञ्चि–नमन और स्तुति करके; इरतम् मिचै–रथ पर; पोयिऩार्–चलने लगीं। (ए)। २१८

यह सुनकर राजा ने बहुत सन्तुष्ट होकर उनको आभरण, वस्त्र और अन्य वस्तुएँ दीं; उनके अंग-लावण्य की सराहना की। और "शीतलचंद्र से भी अधिक सुन्दर ललाट, पुष्ट बांस के समान कंधे, क्षीण कमर; पीन उरोज, काला केशजाल, चकित आँखें, सेमर-सम लाल अधर-वाली पुष्पलताओ, जाओ" जाने की अनुमति दी। वे भी राजा का नमस्कार और स्तुति करके रथ पर बैठकर चल पड़ीं। २१८

ओशऩै पलकडन् दिऩियॊ रोशऩै, एशऱु तवनुऱै यिडम ॲऩ्ऱुऴिप्
पाशिऴै मडन्तैयर् पऩ्ऩ शालैशॅय्, दाशऱु मरुन्दवत् तवरिऩ् वैहिऩार् 219

पचुमै इऴै–हरे (चोखे स्वर्ण के) आभरणों से अलंकृत (वे); मटन्तैयर्–नारियाँ; ओचऩै पल कटन्तु–अनेक योजन पार कर; एचु अऱु तवऩ् उऱै इटम् अतु–अनिंद्य तपस्वी का आश्रम; इति ओर् ओचऩै ॲऩ्ऱ उऴि–(जहाँ से) आगे एक योजन पर था (वहाँ); पऩ्ऩचालै चॅय्तु–एक पर्णशाला बनाकर; आचु अऱुम् अरु तवत्तवरिऩ्–निर्दोष श्रेष्ठ तपस्वियों के समान; वैकिऩार्–रहने लगीं। २१९

अनेक योजनों की दूरी पार कर वे उस स्थान पर पहुँचीं जहाँ से

विभांडक का आश्रम एक योजन दूर था। वहाँ उन्होंने एक पर्णशाला बना ली और वे तपस्विनियों की भाँति रहने लगीं। २१९

अरुन्दवन् ऱन्दयै यऱ्ऱ नोक्किये, करुन्दडङ् गण्णियर् कलैव लाळत्तिल्
पॊरुन्दिनर् पॊरुन्दुऴि विलङ्गॆ ऩाप्पुरिन्, दिरुन्दव रिवरॆन विन्नैय शॆय्दनऩ् 220

करु तट कण्णियर्–काली विशाल आँखों वालियाँ; अरुतवन् तन्तैयै–श्रेष्ठ तपस्वी के पिता की; अऱ्ऱम नोक्किये–अनुपस्थिति जानकर; कलै वल् आळत्तिल् पॊरुन्तित्तर्–वेद-विद्या-विशिष्ट ऋषि के पास आयीं; पॊरुन्तुऴि–मिलने पर; विलङ्कु ॲन्ता–पशु न समझकर; पुरिन्त इरु तवर् ॲन्त–की हुई बड़ी तपस्यावाले हैं ये, मानकर; इन्नैय चॆय्ततन्–यों व्यवहार किया। २२०

फिर एक दिन, ऋष्यश्रृंग के पिता जब कहीं चले गये थे बत ऋष्यश्रृंग को अकेले में पाकर वे उनके आश्रम में पहुँचीं। उनको देखकर ऋषि ने पशु नहीं समझा, वरन तपस्वी समझ लिया। इसलिए यथोचित सत्कार करने लगे। २२०

अरुक्किय मुदलिन्नो डाश ऩङ्गॊडुत्
तिरुक्कॆन विरुन्दपि न्निय कूऱलुम्
मुरुक्किदऴ् मडन्दयर् मुनिव नैत्तॊऴाप्
पॊरुक्कॆन वॆऴुन्दुपोय्प् पुरैयुट् पुक्कनर् 221

अरुक्कियम् मुतलिन्नोटु–अर्घ्य आदि के साथ; आचनम् कॊटुत्तु–आसन देकर; इरुक्क ॲन्त–विराजिए––कहने पर; इरुन्त पिन्–बैठने के बाद; इन्निय कूऱलुम्–मधुर उपचार-वचन कहते ही; मुरुक्कु इतऴ् मटन्तैयर्–पलाशपुष्प सदृश अधरवाली नारियाँ; मुनिवनै तॊऴा–मुनिवर्य का नमस्कार करके; पॊरुक्कु ॲन्त–झटित; ॲऴुन्तु पोय्–उठकर गयीं और; पुरै उळ् पुक्कनर्–अपने आश्रम में घुस गयीं। २२१

ऋषि ने उन्हें अर्घ्य आदि दिया, आसन दिये, बिठाया और मधुर अभ्यर्थना के वचन कहे। वनिताओं ने इतना ही किया कि वे नमस्कार करके तुरन्त उठकर अपने आश्रम में चली आयीं। २२१

तिरुन्दिऴै यवर्शिल दिन्नङ्ग डीर्न्दुऴि
मरुन्दिनु मिन्नियन वरुक्कै वाऴैमात्
तरुङ्गनि पलवॊडु ताऴै . यिन्कनि
अरुन्तव वरुन्दॆन वरुत्ति ऩाररो 222

चिल तिन्नङ्कळ् तीर्न्तुऴि–कुछ दिनों के बीतने के पश्चात्; तिरुन्तु इऴैयवर्–सुघड़ आभरण-शोभिताओं ने; मरुन्तिनुम् इन्नियन–अमृत से भी मधुर; वरुक्कै–कटहल; वाऴै–केले; मा–आम; तरुम् कनि पलवॊटु–से मिलनेवाले अनेक फलों को; ताऴै इन् कनि–मधुर नारियल को (ला देकर); अरु तव–श्रेष्ठ तपस्वी; अरुन्तु–भुगतिये; ॲन्त–कहकर; अरुत्तिन्नार्–खिलाया (फलों के साथ वे भक्ष्य मिठाइयाँ आदि बना लायीं––यह भाव भी बताया जा सकता है)। २२२

कुछ दिन बीते, फिर वे श्रेष्ठ आभरणों से भूषित होकर, कटहल, आम, केले आदि के फल और नारियल लेकर वहाँ पहुँचीं और उनको खिलाया। (वे मधुर भक्ष्य भी साथ लायीं।)। २२२

इऩ्ऩऩ पलपह लिऱऩ्द पिऩ्ऱिरु
नऩ्ऩुदऩ् मडऩ्दयर् नवैयिऩ् मादवऩ्
तऩ्ऩयॅम् मिडत्तिऩुञ् जार्दल् वेण्डुमॅऩ्
ऱऩ्ऩवर् तॊऴुदलु मवरॊ डेहिऩाऩ् 223

इऩ्ऩऩ पल पकल्–ऐसे अनेक दिन; इऱन्त पिऩ्–बीत जाने के पश्चात्; अऩ्ऩवर्–उन (के); तिरु नल् नुतल मटन्तैयर्–सुन्दर, अच्छे भालवालियों के; नवै इल् मातवऩ् तऩ्ऩै–आनिन्द्य और महान तपस्वी को; ऍम् इटत्तिलुम् चार्तल् वेण्टुम्–हमारे यहाँ भी पधारने की कृपा हो; ऍऩ्ऱु–कहकर; तॊऴुतलुम्–नमस्कार करने पर (वे); अवरॊटु एकिऩाऩ्–उनके साथ सिधारे। २२३

ऐसे अनेक दिन व्यतीत हुए। एक दिन सुन्दर भालवाली उन योषिताओं ने उन निष्कपट तपस्वी से, विनय की कि महात्मन्! आप भी हमारे आश्रम को अपने पदार्पण से पवित्र कीजिए। महर्षि भी उनके साथ जाने को तैयार हो गये। २२३

विम्मुऱु मुवहयर् वियऩ्द नॆञ्जिऩर्, अम्मविव् विदुवॆऩ वहलु नीणॆऱिच्
चॆम्मशेर् मुऩिवरऩ् ऱॊडरच् चॆऩ्ऱऩर्, तम्मऩ मॆऩमरुट् टैय लार्हळे 224

तम् मऩम् ऍऩ–अपने मन के समान; मरुळ्–भ्रमित; तैयलार्कळ्–वे नारियाँ; विम्मुऱुम् उवकैयर्–प्रफुल्ल उल्लास के साथ; वियन्त नॆञ्चिऩर्–चकित मन; अम्म–इधर देखिये; इव्वितु–यह, यही (हमारा आश्रम है); ऍऩ–ऐसा कहते हुए; अकलुम्–(अंग देश की ओर) जानेवाले; नीळ् नॆऱि–दीर्घ मार्ग में; चॆम्मै चेर् मुऩिवरऩ्–भोले महर्षि के; तॊटर–उनका अनुसरण करते; चॆऩ्ऱऩर्–गयीं। (ए)। २२४

यह देखकर उनका मन भ्रमित हुआ। उनकी आँखों में भी भय-विस्मय का भाव प्रकटित हुआ। एक ओर संतोष दूसरी ओर विस्मय के साथ वे उनको, इधर-उधर का निर्देश करती हुई, अंग देश के मार्ग में बहुत दूर ले आ गयीं। २२४

वळनहर् मुऩिवरऩ् वरुमुऩ् वाऩवऩ्, कळऩमर् कडुवॆऩक् करुहि वाऩ्मुहिल्
शळशळ वॆऩमऴैत् तारै काऩ्ऱऩ, कुळत्तॊडु नदिकडङ् गुऱैह डीरवे 225

मुऩिवरऩ्–मुनिश्रेष्ठ (के); वळम् नकर् वरुमुऩ्–समृद्ध नगर आने के पहले; वाऩ् मुकिल्–आकाश के मेघ (मेघों ने); वाऩवऩ् कळऩ् अमर्–शंकर देव के गले में रहनेवाले; कटु ऍऩ–विष के समान; करुकि–काले बनकर; कुळत्तॊटु नतिकळ्–तड़ागों और नदियों को; तम् कुऱैकळ् तीर–उनकी रिक्तता को दूर करते हुए,

(भरते हुए); चळ चळ ॲऩ–‘गुऴ् गुऴ्’ का शब्द करते हुए; मऴै तारै–वर्षा की धारायें; काऩ्ऱऩ–बरसायीं। (ए)। २२५

नगर अभी दूर था। तो भी महर्षि के उस देश की सीमा में प्रवेश करते ही नीलकण्ठ के विष के समान काले मेघ उमड़-घुमड़ आये। वर्षा खूब हुई। तालाब, नदियाँ आदि भर गयीं। २२५

पॆरुम्बुऩ ऩदिहळुङ् गुळऩुम् बॆट्पुऱक्
करुम्बॊडु शॆन्नॆलुङ् गविऩ्कॊण् डोङ्गिड
इरुम्बुयल् कहऩमी दिडैवि डादॆऴुन्
दरुम्बुऩल् शॊरिन्तपो दरशु णर्न्दऩऩ् 226

पॆरुम् पुऩल् नतिकळुम् कुळऩुम्–बहुत विशाल जलाशय, नदियाँ और तालाब; पॆट्पुउऱ–(जल से भरकर) सुशोभित हों; करुम्पु ओटु चॆम् नॆलुम्–ईख के साथ श्रेष्ठ धान के पौधे; कविऩ् कॊण्टु–चिकने बने बढ़ें, ऐसा; ककऩम् मीतु–गगन पर; इरु पुयल् इटै विटातु एऴुन्तु–घने मेघ निरन्तर उठे और फैले; अरुमै पुऩल् चॊरिन्त पोतु–जब अपूर्व-प्राप्त जल बरसाया तब; अरचु–राजा रोमपाद ने; उणर्न्तऩऩ्–(बात) समझ ली। २२६

विशाल जलाशय, नदी और तालाब सब भर गये; ईख, धान आदि खूब पनपने लगे। आकाश में मेघ लगातार फैले रहे और वर्षा होती रही। यह देखकर राजा रोमपाद समझ गये। २२६

काममुम् वॆहुळियुङ् गळिप्पुङ् गैत्तॆऴु
कोमुऩि यिवणडैन् दऩऩ्कॊल कॊव्वैवाय्त्
तामरै मलर्मुहत् तरळवाणहैत्
तूममॆऩ् कुऴलियर् पुणर्त्त शूऴ्च्चियाल् 227

कॊव्वै वाय्–बिंबफल (सम लाल) मुख; तामरै मलर् मुकम्–लाल कमल सदृश आनन; तरळम् वाळ् नकै–मोती के समान धवल दाँत (वाली); तूमम् मॆल् कुऴलियर्–धूम्र लगे केश की गणिकाओं के; पुणर्त्त चूऴ्च्चियाल्–किये तन्त्र से; काममुम् वॆकुळियुम्–काम और क्रोध; कळिप्पुम्–और मोह; कैत्तु ऎऴु–त्याग कर श्रेष्ठ हुए; को मुऩि–वरिष्ठ मुनि; इवण् अटैन्तऩऩ् कॊल्–यहाँ पहुँच गये–शायद। २२७

रोमपाद ने सोचा—आश्चर्य है! काम, क्रोध और मोह को जीतकर जो महान हुए हैं क्या वे आ ही गये! बिंबाधर, कमलानन, मुक्ता-दाँत और अगरु-धूम लगे केश—इनसे युक्त ये नारियाँ किसी उपाय से उन्हें ला ही चुकी हैं तो!। २२७

ॲऩ्ऱॆऴुन् दरुमै मुऩिवर् यारॊडुम्
शॆऩ्ऱिरण् डोशऩै शॆऩै शूऴ्तर

मऩ्ऱलङ् गुऴलियर् नडुवण् मादवक्
कुऩ्ऱिऩै यॅदिर्न्दऩऩ् कुववुत् तोळिऩाऩ् 228

ऍऩ्ऱु–यह सोचकर; कुववु तोळिऩाऩ्–सुडौल कंधोंवाले (रोमपाद); अरु मऱै मुऩिवर् यारॉट्टुम् ऍऴुन्तु–उत्तम वेदज्ञ, सब ब्राह्मणों के साथ उठकर; चेऩै चूऴ्तर–सेना से घिरे हुए होकर; इरणुटु ओचऩै चॅऩ्ऱु–दो योजन दूर चलकर; मऩ्ऱल् अम् कुऴलियर् नट्टुवण्–सुवासित सुन्दर केश-वालियों के बीच; मातवम् कुऩ्ऱिऩै–बड़े तपस्या के पर्वत (के समान तेजोमय महर्षि) के; ऍतिर्न्तऩऩ्–सम्मुख पहुँचे। २२८

ऐसा सोचकर सुडौल भुजावाले रोमपाद उठे और उनकी अगवानी करने के लिए जाने लगे। उनके साथ वेदपाठी विप्रगण गये और सेना भी उनको घेरते हुए गयी। वे दो योजन चले और उन गणिकाओं के मध्य तप के पर्वत के समान आनेवाले ऋष्यश्रृंग से मिले। २२८

वीऴ्न्दऩ ऩडिमिशै विऴिह णीर्दर
वाऴ्न्दऩॅ ऩिऩियॅऩ महिऴुज् जिन्दयाऩ्
ताऴ्न्दॅऴु मादरार् तम्मै नोक्किनीर्
पोऴ्न्दऩि रॅऩतिडर् पुणर्प्पि ऩालॅऩ्ऱाऩ् 229

इति वाऴ्न्तऩॅऩ् ऍऩ–अब तर गया––यह कहकर; मकिऴुम् चिन्तैयाऩ्–प्रफुल्लचित्त होकर; विऴिकळ् नीर् तर–आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुए; अटि मिचै वीऴ्न्तऩऩ्–चरणों पर गिरकर नमस्कार किया; ताऴ्न्तु ऍऴुम्–नमन कर उठनेवाली; मातरार् तम्मै–(गणिका) स्त्रियों को; नोक्कि–देखकर; नीर्, पुणर्प्पिऩाल्–तुमने उपाय करके; ऍऩतु इटर्–मेरा संकट; पोऴ्न्तऩिर्–मिटा दिया; ऍऩ्ऱाऩ्–(प्रशंसा में) कहा। २२९

'अब मेरा उद्धार हो गया', यह कहते हुए, प्रसन्नचित्त राजा रोमपाद आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुए महर्षि के चरणों पर नतमस्तक हुए। फिर उन नारियों को देखा जो उनके पैरों तले नमस्कार कर उठीं, और उनसे कहा कि तुम लोगों ने अपने प्रयास से मेरा संकट दूर कर दिया है। २२९

अरशऩु मुऩिवरु मडैन्द वायिडै, वरमुऩि वञ्जमॅऩ् ऱुणर्न्द मालैवाय्
वॅरुविऩर् विण्णवर् वेन्दऩ् वेण्डलाल्, करैयॅऱि यादलै कडलुम् पोऩ्ऱऩऩ् 230

अरचऩुम् मुऩिवरुम्–राजा और ब्राह्मण लोग; अटैन्त आयिटै–जब आये तब; वञ्चम् ऍऩ्ऱु उणर्न्त मालै वाय्–कपट-व्यवहार समझ गये, उस स्थिति में; विण्णवर्–देवता लोग; वेरुविऩर्–भयभीत हुए; वेन्तऩ् वेण्टलाल्–राजा की विनत प्रार्थना से; करै ऍऱियातु–सीमा को लाँघकर न जानेवाले; अलै कटल् पोऩ्ऱऩऩ्–तरंगायित समुद्र के समान (रुके हुए क्रोधवाले) हो गये। २३०

यह सब महर्षि ने देखा। राजा रोमपाद आये हैं, उनके साथ विप्रगण हैं और सेना भी। उन्हें ज्ञात हुआ कि यह कोई कपट-व्यवहार हो

गया है। तब देवता भी डरने लगे कि इनको क्रोध हुआ तो अनर्थ हो जायगा। लेकिन राजा रोमपाद की विनय-याचना से, महर्षि का क्रोध मर्यादा-बद्ध तरंगाकीर्ण समुद्र के समान थमा रह गया। २३०

वळ्ळुरु वयिरवाण् मऩ्ऩऩ् पऩ्मुऱै, अॅळ्ळरु मुऩिवऩै यिऱैञ्जि यारिऩुम्
तळ्ळरुन् दुयरमुञ् जमैवुञ् जाऱ्ऱलुम्, उळ्ळुरु वॅहुळिपो यॉळित्त तामरो 231

वळ् उरु–धारदार; वयिरम् वाळ्–वज्र-सम खड्गधारी; मऩ्ऩऩ्–राजा के; अॅळ् अरु मुत्तिवत्तै–अनिन्द्य मुनि को; पल मुऱै इऱैञ्चि–अनेकबार नमस्कृत करके; यारित्तुम तळ्ळ अरु तुयरमुम्–किसी से भी अनिवार्य दुख; चुमैदुम्–और उसका निवारण; चाऱ्ऱलुम्–बताने पर; उळ् उरु वॅकुळि–अन्तर्गत कोप; पोय् ओळित्ततु–जाकर अदृश्य हो गया (बिल्कुल नहीं रहा); (आम् अरो)। २३१

वज्र-सम खड्गधारी रोमपाद ने अनिन्द्य महर्षि से बार-बार नमस्कार करके विनय की कि हमारे देश की घोर विपदा ऐसी थी कि कोई भी उसका निवारण नहीं कर सकता था। महर्षि, आपके आने से वह दूर हो सकी। यह सुनकर दयालू महर्षि ने अपना कोप त्याग दिया। २३१

अरुळ्शुरन् दरशऩुक् काशि युङ्गॉडुत्
तुरुळुरु तेरिऩ्मी दॉल्लै येऱिनल्
पॉरुडरु मुऩिवरुन् दॉडरप् पोयिऩऩ्
मरुळॊळि युणर्वुडै वरद मादवऩ् 232

मरुळ् ऑळि उणर्वु–संशयहीन ज्ञानी; वरतऩ् मातवऩ्–वरदायी, श्रेष्ठ तपोधन; अरुळ् चुरन्तु–करुणा से भरकर; अरचऩुक्कु–राजा रोमपाद को; आचियुम् कॉटुत्तु–आशीर्वाद भी प्रदान करके; उरुळ् उरु तेरिऩ् मीतु–त्वरितगामी रथ पर; ऑल्लै एऱि–सत्वर आरूढ़ होकर; नल् पॉरुळ् तरुम्–अच्छे उपदेष्टा; मुत्तिवरुम् तॉटर–मुनियों के अनुगमन करते; पोयिऩऩ्–(नगर की तरफ) गये। २३२

अप्रमत्त ज्ञानी और वरप्रदायी तपोधन महर्षि ने करुणा-भूयिष्ट होकर राजा को आशीर्वाद दिया। फिर वे द्रुतगामी रथ पर आरूढ़ हो नगर की ओर जाने लगे। सदुपदेष्टा विप्रों ने भी उनका अनुगमन किया। २३२

अडैन्दऩऩ् वळनह रलङ्ग रित्तॅदिर्
मिडैन्दिड मुऩियॉडुम् वेन्दऩ् कोयिल्पुक्
कॉडुङ्गलिल् पॊऱ्कुळात् तुऱैयु ळॅय्दियोर्
मडङ्गला दऩत्तिऩ्मेल् मुऩियै वैत्तऩऩ् 233

वेन्तऩ्–राजा रोमपाद; बळम् नकर्–भरे-पूरे नगर को; अलङ्करित्तु–सुसज्जित कर; अॅतिर् मिटैन्तिट–(लोग) सामने आये, तब; मुत्तियॉटुम् अटैन्तऩऩ्–महर्षि के साथ पहुँचे; कोयिल् पुक्कु–राजमन्दिर में प्रवेश करके; पॊऩ् कुळात्तु–स्वर्ण की समृद्ध कारीगरी से युक्त; ऑटुङ्कल् इल् उऱैयुल् अॅय्ति–असंकीर्ण (विशाल)

भवन में आकर; मुऩियै–महर्षि को; ओर् मटङ्कल् आतऩत्तिऩ् मेल् वैत्ताऩ्–एक सिंहासन पर आसीन कराया । २३३

नगर के लोगों ने नगर को खूब सजाया और वे उनके स्वागत के लिए आए । राजा ऋष्यश्रृंग के साथ नगर में आए और राजमहल में पहुँचे । उन्होंने एक विशाल भवन में, जो स्वर्ण की कारीगरी से जगमगा रहा था, एक उन्नत सिंहासन पर महर्षि को आसनस्थ कराया । २३३

अरुक्किय मुदलिय कडऩ्ग ळाऱ्ऱिवे, ऱुरैक्कुव दिलदॆऩ वुवन्दु ताऩरुळ्
मुरुक्किदऴ्च् चान्दया मुहन लाडऩै, इरुक्कॊडु विदिमुऱै यिऩ्ऩिदि ऩीन्दऩऩ् 234

वेऱु उरैक्कुवतु इलतु–और कुछ कहने के लिए (प्रार्थनीय) नहीं है, ऐसा; उवन्तु–उत्साह के साथ; अरुक्कियम् मुतलिय कटऩ्कळ् आऱ्ऱि–अर्घ्य आदि उपचार करके; ताऩ् अरुळ्–अपनी पुत्री; चान्तै आम्–शांता नाम की; मुरुक्कु इतऴ् मुकम् नल्लाळ् तऩै–पलाशपुष्प-सदृश अधर और सुन्दर मुखवाली को; वितिमुऱै–विधिवत्; इरुक्कॊटु–वेद-मन्त्रों के साथ; इऩ्ऩितिऩ्–आनन्दपूर्वक; ईन्ताऩ्–(कन्या-) दान किया । २३४

प्रसन्नचित्त राजा ने उनका अर्घ्यपाद्यादि उपचार बड़ी सावधानी से किया । फिर, उन्होंने, पलाशपुष्प सदृश अधरोंवाली और सुघड़ मुखवाली अपनी कन्या को, विवाहोचित, वेदविहित मन्त्रोच्चारण के साथ, उनको (कन्या) दान में दे दिया । २३४

वऱुमनोय् तणितर वाऩ्व ऴङ्गवे
उऱुदुयर् तविर्न्ददव् वुलहम् वेन्दरुळ्
शॆऱिकुऴल् पोऱ्ऱिडत् तिरुन्दु मादवत्
तऱिञऩाण् डिरुक्कुन ऩरश वॆऩ्ऱऩऩ् 235

वऱुमै नोय् तणितर–(अकालजनित) दरिद्रता और रोगों को दूर करते हुए; वाऩ् वऴङ्कवे–मेघ बरसे, इसलिए; अ उलकम्–वह देश; उऱु तुयर् तविर्न्ततु–बड़ी विपन्नता से छूटा; वेन्तु अरुळ्–राजा रोमपाद प्रदत्त; चॆऱि कुऴल्–घने केशवाली के; पोऱ्ऱिट–सेवा करते; तिरुन्तु मातवत्तु अऱिञऩ्–उत्कृष्ट महान तपस्वी और ज्ञानी (महर्षि); आण्टु–वहाँ; इरुक्कुनऩ्–रहते हैं; अरच–राजन; ऎऩ्ऱऩऩ्–(वसिष्ठजी ने) कहा । २३५

विपन्नता और रोग, जो उस देश में फैला हुआ था वह सब वर्षा के खूब होने से दूर हो गया । अब वह देश दुःख-निवृत्त होकर सन्तुष्ट है । महर्षि शान्तादेवी की परिचर्या स्वीकार करते हुए वहीं रहते हैं । यह महर्षि वसिष्ठ ने राजा दशरथ से कहा । २३५

ऎऩ्ऱलुमे मुऩिवरऩ्ऱ ऩडियिऱैञ्जि यीण्डेहिक् कॊणर्वॆ ऩॆऩ्ऩात्
तुऩ्ऱुकऴऩ् मुडिवेन्द रडिपोऱ्ऱच् चुमन्दिरऩे मुदला वुळ्ळ

वऩ्ड़िऱल्शे रमैच्चर्तॊऴ़ मामणित्ते रेऱुदलुम् वाऩोर् वाऴ्त्ति
इऩ्ऱॆमदु विऩैमुडिन्द दॆऩ्ऩच्चॊरिन्दार् मलर्मारि यिडैवि डामल् 236

ऍऩ्ऱलुमे–ऐसा कहते ही, (दशरथ); **मुऩिवरऩ् तऩ् अटि इऱैञ्चि**–मुनिवर (वसिष्ठजी) के पैरों पर नमन कर; **ईण्टु एकि**–अभी जाकर; **कॊणर्वॆऩ् ऍऩ्ऩा**–लिवा लाऊँगा, कहकर; **तुऩ्ऱु कऴल् मुटि वेन्तर्**–(पैरों पर) सुगठित पायल और (सिरों पर) किरीट धारण करनेवाले राजाओं के; **अटि पोऱ्ऱ**–उनके पैरों पर (पड़कर) वन्दना करते; **चुमन्तिरऩ् मुतला उऴ़ळ**–सुमंत्र आदि; **वल् तिऱल् चेर् अमैच्चर्**–अतिशय शक्ति-सम्पन्न मेधावाले मन्त्रियों के; **तॊऴ़**–स्तुति करते; **मा मणि तेर्**–श्रेष्ठ मणियों से अलंकृत रथ पर; **एऱुतलुम्**–आरूढ़ होते ही; **वाऩोर्**–आकाश-लोकवासी (देवताओं ने); **इऩ्ऱु ऍमतु विऩै मुटिन्ततु**–आज हमारा पाप शांत हो गया; **ऍऩ्ऩ**–यह मानकर; **वाऴ्त्ति**–(दशरथ को) आशीर्वाद देकर; **मलर् मारि**–कल्पक पुष्पों की वर्षा; **इटैविटामल्**–निरन्तर; **चॊरिन्तार्**–बरसायी (वर्षा की)। २३६

वसिष्ठजी के यह कहते ही, राजा दशरथ झट उनके पैरों पर गिरे, और "उनको आमंत्रित कर लाऊँगा", यह कहकर तुरन्त जाकर रथ पर चढ़े। तब पायल और किरीटधारी राजा लोगों ने उनकी चरण-वन्दना की। सुमन्त्र आदि अति समर्थ मन्त्रियों ने अंजलिवद्ध होकर स्तुति की। देव लोगों ने निश्चय कर लिया कि अब हमारा दुर्भाग्य दूर हो गया; दशरथ की मंगल-कामना की और उनपर लगातार फूल बरसाये। २३६

काकळमुम् पल्लियमुङ् गऩैहडलिऩ् मिहमुऴ़ङ्गक् काऩम् बाड
मागदर्ह ळरुमऱैनूल् वेदियर्हळ् वाऴ्त्तॆडुप्प मदुरच् चॆव्वायत्
तोहयर्पल् लाण्डिशैप्पक् कडऱ्ऱाऩै पुडैशूऴच् चुडरो ऩॆऩ्ऩ
ऐहियरु नॆऱिनीङ्गि युरोमपदऩ् ऱिरुनाट्टै यॆदिर्न्दा ऩऩ्ऱे 237

काकळमुम्–काहल (बड़ा ढोल) और; **पल् इयमुम्**–अनेक बाजे; **कऩै कटलिऩ्**–गरजनेवाले समुद्र से भी अधिक; **मिक मुऴ़ङ्क**–शोर से बजते हैं; **माकतर्हळ्**–मागध (वंदी) लोग; **काऩम् पाटवुम्**–गान करते हैं और; **अरुमऱै नूल् वेतियर्हळ्**–उत्तम वेदपाठी; **वाऴ्त्तु ऍटुप्प**–मंगलाशासन करते हैं; **मतुरम् चॆव्वाय्**–मधुर-भाषिणी, लाल अधरोंवाली; **तोकैयर्**–कलापिनियाँ (मयूर सी स्त्रियाँ); **पल्लाण्टु इचैप्प**–'जुग-जुग जियो' वाले गीत गाती हैं; **कटल् ताऩै पुटै चूऴ्**–सेना सागर घेरे रहती है, (इस साज-सज्जा के साथ); **चुटरोऩ् ऍऩ्ऩ**–अंशुमाली के समान; **एकि**–जाकर; **अरु नॆऱि नीङ्कि**–कठिन मार्ग पार कर; **उरोमपतऩ् तिरु नाट्टै ऍतिर्न्तात्**–रोमपाद के श्रीसम्पन्न देश पहुँचे। २३७

राजा का रथ चलने लगा। काहल (बड़े ढोल) और अन्य बाजे समुद्र-घोष से भी अधिक शब्द करते हुए बजे। मागध जाति के वन्दी लोग मंगल-गीत गाते हुए चले। वेदपाठी ब्राह्मण लोगों ने वेद-मन्त्रों द्वारा राजा का मंगलाशासन किया। मधुर भाषिणी, बिंबाधरा, मयूराभा सुन्दर स्त्रियाँ, "अनेक वर्ष जियें", यह भाव-द्योतक गीत गाती हुई चलीं। और चतुरंगिणी सेना भी उन्हें घेरकर चली। इस राजकीय ठाट के साथ राजा

दशरथ सूर्य के समान अनेक योजन पार कर राजा रोमपाद के देश पहुँचे । २३७

कॉऴुन्दोडिप् पडर्कीर्त्तिक् कोवेन्द ऩडैन्दमैशॉऩ् ऱॉऱ्ऱर् कूऱक्
कऴुन्दोडुम् वरिशिलैक्कैक् कडऱ्ऱाऩै पुडैशूऴक् कऴऱ्काल् वेन्दऩ्
शॅऴुन्दोडुम् पल्कलऩुम् वॅयिल्वीश मागदर्हळ् तिरण्डु वाऴ्त्त
ॲऴुन्दोडु मुवहैयॉडु मोशऩैशॅऩ् ऱऩऩरशै यॅदिर्को ळॅण्णि 238

कॉऴुन्तु ओटि पटर्–शाखा-प्रशाखाओं के साथ फैले हुए; कीर्त्ति–यशस्वी; को वेन्तऩ्–राजाधिराज का; अटैन्तमै–अपने नगर में आगमन; ऑऱ्ऱर् चॅऩ्ऱु कूऱ–गुप्तचरों (ने जाकर कहा), कहने पर; कऴल् काल् वेन्तऩ्–पायल पहने चरणवाले राजा (रोमपाद); ॲतिर् कोळ् ॲण्णि–अगवानी करने का विचार करके; कऴुन्तु ओटुम्–सुगठित; वरि चिलै कै–बन्धनयुक्त धनुष के धारण करनेवाले हाथों के; कटल् ताऩै–सागर के समान सेना के सैनिकों के; पुटै चूऴ–पार्श्व में आते; चॅऴुमै तोटुम्–प्रकाशबहुल कर्णाभरणों और; पल कलऩुम्–अन्य अनेक आभूषणों के; वॅयिल् वीच–कांति छिटकाते; साकतर्हळ् तिरण्टु वाऴ्त्त–मागधों के, एकत्र होकर, स्तुति करते; ॲऴुन्तु ओटुम् उवकैयॊटुम्–उमड़कर बहनेवाले आनन्दप्रवाह के साथ; ओचऩै चॅऩ्ऱऩऩ्–एक योजन दूर चले । २३८

'राजाधिराज दशरथ, जिनकी कीर्तिलता शाखा-प्रशाखाओं के साथ बहुत बड़ी फैली थी, हमारे देश में पधारे हैं' —यह बात चरों ने आकर रोमपाद से कही । पायलधारी रोमपाद ने सामने जाकर उनकी अगवानी करने का निश्चय किया । इसलिए वे अपनी सेना, वन्दी मागध आदि के साथ, आभरण आदि से खूब अलंकृत होकर एक योजन तक चले । २३८

ॲदिर्हॉळ्वाऩ् वरुहिऩ्ऱ वयवेन्दऩ् ऱऩैक्कण्णुऱ् ऱॅऴिलि नाण
अदिर्हिऩ्ऱ पॉलन्देर्निऩ् ऱरशर्पिरा ऩिऴिन्दुऴिच्चॅऩ् ऱडियिऩ् वीऴ
मुदिर्हिऩ्ऱ पॅरुङ्गाद ऱळैत्तोङ्ग वॅडुत्तिऱुह मुयङ्ग लोडुम्
कदिर्हॉण्ड शुडर्वेलाऩ् ऱऩैनोक्कि यिवैयुरैत्ताऩ् कळिप्पिऩ् मिक्काऩ् 239

ॲतिर् कॉळ्वाऩ् वरुकिऩ्ऱ–अगवानी के लिए आनेवाले; वयम् वेन्तऩ् तऩै विजयक (सदा जीतनेवाले) राजा को; अरचर पिराऩ् कण्णुऱ्ऱु–चक्रवर्ती (दशरथ) देखकर; ॲऴिलि नाण अतिर्किऩ्ऱ–मेघों को भी लजाते हुए (मेघों से अधिक) शोर करनेवाले; पॉलम् तेर् निऩ्ऱु इऴिन्तुऴि–स्वर्णमय (अपने) रथ से ज्योंही उतरे त्योंही; चॅऩ्ऱु अटियिऩ् वीऴ–रोमपाद जाकर पैरों पर गिरे (गिरने पर); मुतिर्किऩ्ऱ पॅरु कातल्–बढ़ते गम्भीर प्रेम के; तळैत्तु ओङ्क–अधिक उमड़ते; ॲटुत्तु–उठाकर; इऱुक मुयङ्कलोटुम्–कसकर आलिंगन करते ही; कळिप्पिल् मिक्काऩ्–अत्यानंदित (रोमपाद) ने; कतिर् कॉण्ट चुटर्–अंशुमाली सदृश; वेलोऩ् तऩै–भालेवाले को; नोक्कि–देखकर; इवै उरैत्ताऩ्–ये बातें कहीं । २३९

राजा दशरथ ने स्वागतार्थ आनेवाले रोमपाद को देखा तो वे स्वयं

रथ से उतर गये। राजा रोमपाद ने आकर दशरथ के चरणों पर नमस्कार किया। उमड़ते प्रेम के साथ उनको उठाकर जब दशरथ ने आलिंगन कर लिया, तब इनके प्रेम से प्रभावित राजा रोमपाद ने भालाधारी चक्रवर्ती से ये (निम्नलिखित) बातें कहीं। २३९

याऩ्शॆय्द मादवमो विव्वुलहॄ्ऱ् जॆय्दवमो यादो विङ्गण्
वाऩ्शॆय्द शुडर्वेलो यडैन्ददॆऩ्ऩ मिहमहिऴ्ऴा मणित्ते रेऱ्ऱित्
तेऩ्शॆय्द तार्मौलित् तेर्वेन्दैच् चॆऴुनहरिऱ् कॊणर्न्दाऩ् ऱॆव्वर्
ऊऩ्शॆय्द शुडर्वडिवे लुरोमपद ऩॆऩ्ऩवुरैक्कु मुरवुत् तोळाऩ् 240

तॆव्वर् ऊऩ् चॆय्त–(शत्रु-शरीर के) मांसयुक्त; चुटर् वटि वेल्–चमकीले और तीक्ष्ण भालेवाले; उरोमपतऩ् ऎऩ्ऩ उरैक्कुम्–रोमपाद कहलानेवाले; उरवु तोळाऩ्–बलिष्ठ कन्धोंवाले; तेऩ् चॆय्त तार् मौलि–शहद टपकनेवाली पुष्पमाला से अलंकृत किरीट (धारी) और; तेर्–रथ के (स्वामी); वेन्तै–राजा को (देख); वाऩ् चॆय्त–देवलोक को बनाये (नाश से बचाकर) रखनेवाले; चुटर् वेलोय्–सूर्य-सम दीप्त भालेवाले; इङ्कण् अटैन्ततु–इधर (आपका) आगमन; याऩ् चॆय्त मातवमो–हमारी की हुई महान तपस्या (का फल) है; इ उलकम् चॆय् तवमो–इस भूलोक का किया हुआ तप है; यातो–क्या है; ऎऩ्ऩ–ऐसा कहकर; मिक मकिऴ्ऴा–अधिक प्रसन्न होकर; मणि तेर् एऱ्ऱि–रत्न-रथ पर आरूढ़ कराकर; चॆऴु नकरिल् कॊणर्न्ताऩ्–अपने सुसम्पन्न नगर में लिवा ले आये। २४०

शत्रु-शरीरों के मांस से युक्त भालाधारी, बलिष्ठ भुजाओंवाले रोमपाद (नामक) उन राजा ने, पुष्पमालाओं से अलंकृत किरीट को धारण कर रथ पर आये हुए चक्रवर्ती दशरथ को देखकर उचित अभ्यर्थना के ये वचन कहे कि देवों के लिए देवलोक की रक्षा करने में समर्थ और उज्ज्वल वेल् (भाला) के धारण करनेवाले महाराज! श्रीमान का इधर आगमन मेरी तपस्या का फल है? या इस देश ने उचित तपस्या की थी? बाद में उन्होंने चक्रवर्ती को रत्न-जड़ित रथ पर आसीन कराया और वे उनको अपने सुसमृद्ध नगर में लिवा लाये। २४०

आडहप्पॊऩ् चुडरिमैक्कु मणिमाडत् तिडैयॊरुमण् डबत्तै यण्मिप्
पाडहच्चॆम् बदुममलर्प् पावैयर्पल् लाण्डिशैप्पप् पैम्बॊऩ् पीडत्
तेडुतुऱ्ऱ वडिवेलाऩ् ऱनैयिरुत्तिक् कडऩ्मुऱैहळ् यावुम् जॆय्दु
तोडुतुऱ्ऱ मलर्त्ताराऩ् विरुन्दळित्प विऩ्दुहन्दाऩ् सुरर्ना डीन्दाऩ् 241

तोटु तुऱ्ऱ मलर् ताराऩ्–दल-संकुल पुष्पों की (बनी) माला के धारी; आटकम् पॊऩ् चुटर्–"हाटक" -स्वर्ण की आभा से; इमैक्कुम्–दमकनेवाले; अणि माटत्तु इटै–सुन्दर सौध के अन्दर; ओरु मण्टपत्तै अण्मि–एक मण्डप में जाकर; पाटकम्–पाटक नामक पैंजनी पहनी हुई; चॆम् पतुमम् मलर्–लाल कमल के समान पैरोंवाली; पावैयर्–रमणियों के; पल्लाण्टु इचैप्प–'अनेक वर्ष जिएँ' वाला शुभगीत गाते; एटु तुऱ्ऱ–पुष्पमाला से अलंकृत; वटि वेलाऩ् तऩ्ऩै–तीक्ष्ण शक्ति (बर्छी) के धारक दशरथ

को; पचुमै पॊऩ् पीटत्तु इरुत्ति–हरे (सुभग) स्वर्ण के आसन पर विराजित कराके; कटऩ् मुऱैकळ् यावुम् चॆय्तु–यथाक्रम उपचार के काम पूरा करके; विरुन्तु अळिप्प–भोजन कराने पर; चुरर् नाटु ईन्ताऩ्–सुरों को जिन्होंने उनका राज्य दिलाया था, उन्होंने; इऩितु उकन्ताऩ्–आनन्द के साथ स्वीकार किया। २४१

घने रूप से पंखुड़ियों से युक्त पुष्प-माला के धारण करनेवाले राजा रोमपाद हाटक (-हाटक, जंबूनद, शुकपक्ष और जातरूप इन स्वर्ण के चार प्रकारों में एक) प्रकार के स्वर्ण की कारीगरी के साथ निर्मित एक मण्डप में राजा दशरथ को ले आये। तब पैंजनी-विभूषित लाल चरणोंवालियाँ 'अनेक वर्ष जिओ' आदि मंगलभाव-द्योतक गीत गाये। चक्रवर्ती स्वच्छ-स्वर्ण के पीठ पर आसनस्थ कर दिये गये। रोमपाद ने यथाक्रम उनका सभी तरह से सम्मान किया और भोजन कराया। देव-लोक-रक्षक चक्रवर्ती दशरथ ने उनके आतिथ्य को प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया। २४१

शॆव्विनऱुञ् जान्दळित्तुत् तेर्वेन्दऩ् ऱऩै नोक्कि यिवणी शेऱ्न्द
कौवैयुरैत् तरुळुहॆऩ निहऴ्न्दवॆला मरशर्पिराऩ् कळऱ लोडुम्
अव्वियनीत् तुयर्न्दमऩत् तरुन्दवऩैक् कॊणर्न्दाङ्गण् विडुप्पॆऩ् ऱाऩ्ऱ
शॆव्विमुडि योयॆऩलुन् देरेऱिच् चेऩैयॊडु मयोत्ति शेर्न्दाऩ् 242

चॆव्वि नऱु चान्तु अळित्तु–नवीन, सुवासपूर्ण चन्दन (लेप) देकर; तेर् वेन्तऩ् तऩै–(दशों दिशाओं पर चलनेवाले) रथी (दशरथ) चक्रवर्ती को देखकर; नी इवण् चेर्न्त कौवै–श्रीमान के इधर पधारने का उद्देश्य; उरैत्तरुळुक–बताने की कृपा करें; ऎऩ–कहने पर; अरचर् पिराऩ्–चक्रवर्ती ने; निकऴ्न्त ऎलाम्–जो घटा वह सब; कळऱलोटुम्–(कहा–) कहते ही; आऩ्ऱ चॆव्वि मुटियोय्–श्रेष्ठ, सुघड़ मुकुटधारी; अव्वियम् नीत्तु–मात्सर्य त्याग करके; उयर्न्त मतत्तु–उत्कृष्ट मन हुए; अरु तवऩै–महान तपस्वी (ऋष्य शृंग) को; कॊणर्न्तु आङ्कण् विटुप्पॆऩ्–ले आकर वहाँ छोड़ूँगा; ऎऩलुम्–यह कहने पर; तेर् एऱि–रथ पर सवार होकर; चेऩैयुटऩ्–सेना के साथ; अयोत्ति चेर्न्ताऩ्–अयोध्या पहुँचे। २४२

भोजन के बाद चन्दन आदि, सेवा में प्रस्तुत कर रोमपाद ने, (दशों दिशाओं में जा सकनेवाले रथ के अधीश) दशरथ से प्रार्थना की कि श्रीमान इधर आगमन का हेतु बताने की कृपा करें। तब दशरथ ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। तब रोमपाद ने वादा किया कि सुन्दर और श्रेष्ठ किरीटधारी! मात्सर्यहीन उत्कृष्ट-मन उन महर्षि को मैं स्वयं वहाँ ले आऊँगा। राजा दशरथ अयोध्या लौट आये। २४२

मऩ्ऩर्पिरा ऩहऩ्ऱदऱ्पिऩ् वयवेन्द ऩरुमऱैनूल् वडिवु कॊण्ड
दऩ्ऩमुऩि वरनुऱैयु डऩैयणुहि यिणैयडित्ता मरैह ळम्बॊऩ्
मऩ्नुमणि मुडियणिन्दु वरऩ्मुऱैशॆय् दिडविवणी वरुदऱ् केय्न्द
तॆऩ्ऩैयॆऩ वडियेऱ्कोर् वरमरुळु मडिहळॆऩ याव दॆऩ्ऱाऩ् 243

मऩ्ऩर् पिराऩ्–चक्रवर्ती के; अकऩ्ऱतऩ् पिऩ्–हटने के बाद; वयम् वेन्तऩ्–विजयक राजा (रोमपाद); अरु मऱै नूल् वटिवु कॊण्टतु अऩ्ऩ–श्रेष्ठ वेद-शास्त्र ने रूप धर लिया, ऐसा दिखनेवाले; मुऩिवरऩ्–महर्षि के; उऱैयुळ् तऩै अणुकि–निवास-स्थान में जाकर; इणै अटि तामरैकळ्–द्वय चरण-कमल; अम् पॊऩ्मऩ्ऩुम्–सुन्दर स्वर्ण-निर्मित; मणि मुटि–रत्न-जड़ित मुकुट; अणिन्तु–धारण कर; वरऩ् मुऱै–क्रमबद्ध उपचार; चॆय्तिट–करने पर; नी–आप (के); इवण् वरुतऱ्कु–यहाँ आने का; एय्न्ततु–जो कारण बना वह; ऎऩ्ऩै–क्या; ऎऩ्ऩ–पूछने पर; अटिकळ्–स्वामी महाराज; अटियेऱ्कु ओर् वरम् अरुळुम्–मुझ दास को एक वर प्रदान करें; ऎऩ्ऩ–प्रार्थना करने पर; यावतु–कौन सा; ऎऩ्ऱाऩ्–पूछा । २४३

राजाधिराज के गमन के बाद, विजयी रोमपाद, वेद-स्वरूप मुनिवर के वासस्थान पर आये। चरणों पर अपना किरीट-शोभित सिर रखकर, नमस्कार करके यथोचित उपचार-कृत्य सम्पन्न किये। तब ऋषि ने प्रश्न किया कि क्या उद्देश्य लेकर आये हैं। राजा ने निवेदन किया कि एक वर माँगने आया हूँ। ऋषि ने कहा कहिये, कौन सा वर है ? । २४३

पुरवॊऩ्ऱिऩ् पॊरुट्टाहत् तुलैपुक्क पॆरुन्दहैतऩ् पुहऴिऱ् पूत्त
अऱऩॊऩ्ऱुन् दिरुमऩत्ता ऩमरर्हळुक् किडर्विळैक्कु मवुण रायोर्
तिऱलुण्ड वडिवेलाऩ् ऱशरदऩॆऩ् ऱुयर्कीर्त्तिच् चॆङ्गोल् वेन्दऩ्
विऱल्कॊण्ड मणिमाड वयोत्तिनह रडैन्दिवणी मीड लॆऩ्ऱाऩ् 244

पुऱवु ऒऩ्ऱिऩ् पॊरुट्टाक–एक कपोत (की रक्षा) के लिए; तुलै पुक्क–तुला पर बैठे; पॆरु तकै तऩ्–महान (चक्रवर्ती) के; पुकऴ् इल् पूत्त–प्रशंसित कुल में जनित; अऱऩ् ऒऩ्ऱुम् तिरु मऩत्ताऩ्–धर्मभृत मनवाले; अमरर्कळुक्कु–देवों को; इटर् विळैक्कुम्–कष्ट देनेवाले; अवुणर् आयोर्–दानवों का; तिऱळ् उण्ट–बल को हरनेवाले; वटिवेलाऩ्–तीक्ष्ण भालावाले; तचरतऩ् ऎऩ्ऱ–दशरथ नाम के; उयर्कीर्त्ति–उन्नत कीर्ति के; चॆङ्कोल् वेन्तऩ्–अविचलित दण्डधर शासक के; विऱल् कॊण्ट–महिमायुक्त; मणिमाटम्–सुन्दर प्रासादों से पूर्ण; अयोत्ति नकर्–अयोध्या नगर; नी अटैन्तु–आप पहुँचकर; इवण् मीळ्तल्–फिर इधर लौट आना; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा । २४४

राजा ने कहा कि दशरथ नाम के चक्रवर्ती हैं। कपोत को बाज का ग्रास बनने से रक्षित करने के हेतु अपने शरीर को तोलकर चील के पास समर्पित करने के लिए तुला पर शिबि नामक राजा चढ़े थे। ये दशरथ उन उदार शिबि के प्रख्यात कुल में उत्पन्न, धर्मशील राजा हैं। उनके हाथ के भाले ने देवों का कष्ट और राक्षसों का पराक्रम दोनों का नाश किया था। वे स्वयं महान यशस्वी हैं और उनका राजदण्ड (शासन) कुटिल कभी नहीं हुआ। उनकी राजधानी, अत्यन्त शोभायुक्त प्रासादों से भरी अयोध्या है। वहाँ तक, महर्षि, आपको एक बार हो आने की कृपा करनी चाहिए। यही वर हम आपसे माँगते हैं। २४४

अव्वरन्दन् दऩ्मिऩित्तेर् कॉणर्दियॅऩ्ऩ वरुन्दवत्तो ऩरुळ लोडुम्
वॅव्वरन्दिऩ् ऱयिल्पडैक्कुञ् जुडर्वेला ऩडियिऱैञ्जि वेन्दर् वेन्दऩ्
कव्वयॉऴिन् दुयर्न्दऩ्ऩॅऩ् ऱदिर्कुरऱ्ऱेर् कॉणर्न्दिदऩिऱ् कलैव लाळऩ्
शॅव्विनुदऱ् ऱिरुविनॊडुम् पोन्देऱु हॅऩ्वेऱिच् चिऱन्दाऩ् मऩ्ऩो 245

अ वरम् तन्तऩम्–वह वर दिया हमने; इऩि तेर् कॉणर्ति–अब रथ लाइये; ऍऩ्ऩ–ऐसा; अरु तवत्तोऩ्–उत्तम तपस्वी (के); अरुळलोटुम्–वर-वचन कहते ही; वॅव् अरम् तिऩ्ऱु–भयंकर (रेती की) रगड़ खाकर; अयिल् पटैक्कुम्–तीक्ष्ण हुए; चुटर् वेलाऩ्–उज्ज्वल भाला के धारी; अटि इऱैञ्चि–चरण-स्तुति करके; वेन्तर् वेन्तऩ्–राजाधिराज; कव्वै ऑऴिन्तु–दुख निवृत्त होकर; उयर्न्तऩऩ्–उन्नत हुए; ऍऩ्ऱु–यह सोचकर; अतिर् कुरल् तेर्–घर्षण-शब्द करनेवाले रथ को; कॉणर्न्तु–लाकर; कलै वल् आळऩ्–विद्या-सम्पन्न; चॅव्वि नुतल् तिरुविऩॊटुम् पोन्तु–सुन्दर ललाटवाली श्रीमती (शान्ता) के साथ आकर; इतऩिल्–इस पर; एऱुक ऍऩ्ऩ–आरूढ़ होइये, यह कहने पर; एऱि–सवार होकर; चिऱन्ताऩ्–शोभायमान रहे। २४५

महर्षि कह उठे कि ठीक है ! वह वर दे दिया हमने। जाइये, रथ लाइये। अपूर्व तपस्वी के ऐसा कहते ही, बार-बार रेती से रगड़ खाकर तीक्ष्ण हुई बर्छीवाले राजा रोमपाद ने उनका कृतज्ञता के साथ प्रणमन किया। 'अच्छा, राजा दशरथ की चिन्ता मिटी; और वे सब तरह से सम्पन्न हो गये'। इस विचार से प्रसन्न होकर, वे घर्षण का शोर करते हुए जानेवाले रथ को लाये और ऋषि से बोले कि विद्यापूर्ण मुनिवर ! सुन्दर ललाटवाली शान्ता को साथ लेकर आप इस रथ पर आरूढ़ हो जाने की कृपा करें। तब महर्षि भी उनकी प्रार्थना मानकर सुन्दरी शान्ता के साथ आकर रथ पर सुशोभित हुए। २४५

कुऩिशिलै वयवऩुङ् गरङ्गळ् कूप्पिडत्, तुऩियऱु मुऩिवरर् तॉडर्न्दु शूऴ्वर
वऩिदयु मरुमऱै वडिवु पोऩ्ऱॊऴिर्, मुऩिवऩुम् बॊऱिमिशै नॅऱियै मुऩ्ऩिऩार् 246

कुऩि चिलै वयवऩ्–झुके धनुष के विजयक के; करङ्कळ् कूप्पिट–हाथ जोड़ते; तुऩि अऱु मुऩिवरर्–क्रोध-गुण-विमुक्त ऋषिगण; तॊटर्न्तु चूऴ्वर–पीछे लगे आये; अरु मऱै वटिवु पोऩ्ऱु–उत्तम वेदस्वरूप (मूर्तवेद) सम; ऑळिर् मुऩिवऩुम्–तेजोमय महर्षि और; वऩितैयुम्–देवी; पॊऱिमिचै–रथ पर; नॅऱियै मुऩ्ऩिऩार्–मार्ग पर बढ़े। २४६

विजयी वीर रोमपाद ने अंजलिबद्ध हो उनको विदा किया। क्रोध-जयी ऋषिगण भी ऋष्यश्रृंग के साथ निकले। वेद-स्वरूप (विद्यमान) ऋषि ने और शान्तादेवी ने अयोध्या की ओर प्रस्थान किया। २४६

अन्दर तुन्दुमि मुऴक्कि याय्मलर्, शिन्दिऩर् कळित्तऩ ऱऱमुन् देवरुम्
वॅन्दॅऴु कॊडुविऩै वीऴ्क्कु मॅय्म्मुदल्, वन्दॅऴ वरुडरु वाऩॆऩ् ऱॆण्णिये 247

अऱमुम् तेवरुम्–धर्मदेवता और अन्य देवता; वॅन्तु ऍऴु कॊटु विऩै–जल कर

बढ़नेवाले क्रूर पापों के; वीऴ्क्कुम्--नाशक; मॅय् मुतल्–सत्य, आदि हेतु (कारण, परब्रह्म, श्रीराम); वन्तु ॲऴ–अवतरित हो आने के लिए; अरुळ् तरुवाऩ्–कृपा करेंगे; ॲऩ्ऱु ॲण्णि–ऐसा सोचकर; कळित्तऩर्–मुदित हुए; अन्तर तुन्तुमि–देव दुन्दुभी; मुऴक्कि–वादन कर; आय्मलर्–चुने हुए (सर्वश्रेष्ठ) पुष्प; चिन्तिऩर्–बरसाये; (ए)। २४७

तब धर्मदेवता और अन्य देवता ने समझ लिया कि संतप्त कर उठनेवाले पापों का नाश करने के लिये आदि परब्रह्म (श्रीराम के रूप में) अवतरित होंगे; और ये ऋषि उसको साध्य बनाने की कृपा करेंगे। इसलिए उन्होंने बहुत आनन्द के साथ दुंदुभी बजायी और उत्तम कल्पक तरु के पुष्प बरसाये। २४७

तूदुव रव्वऴि ययोत्ति तुऩ्ऩिऩार्, मादिरम् बॊरुदतोण् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩ्मुऩ्
ओदिऩर् मुऩिवर वोद वेन्दऩुम्, कादलॆऩ् ऱळवऱु कडलु ळाऴ्न्दऩऩ् 248

अव्वऴि–तब; तूतुवर्–दूत; अयोत्ति तुऩ्ऩिऩार्–अयोध्या आये; मातिरम् पॊरुत तोळ्–सभी दिशाओं में जाकर जो विजेता बन आये, उन कन्धोंवाले; मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩ् मुऩ्–चक्रवर्ती के सामने; मुऩि वरवु–महर्षि का आगमन; ओतिऩर्–किया; ओत–उनके समाचार देने पर; वेन्तऩुम्–राजा भी; कातल् ॲऩ्ऱ–स्नेह के; अळवु अऱु कटलुळ्–निस्सीम सागर में; आऴ्न्तऩऩ्–मग्न हुए। २४८

तब कुछ दूतों ने अयोध्या आकर दिग्विजयी भुजाओंवाले चक्रवर्ती से महर्षि के आगमन का समाचार निवेदन किया। उनके कहते ही राजा अथाह प्रेम-सागर में मग्न हो गये (बहुत प्रसन्न हुए)। २४८

ॲऴुन्दऩऩ् पॊरुक्कॆऩ विरद मेऱिऩऩ्, पॊऴिन्दऩ मलर्मऴै याशि पूत्तऩ
मॊऴिन्दऩ पल्लिय मुरश मार्त्तऩ, विऴुन्दऩ तीविऩै वेरि ऩोडुमे 249

पॊरुक्कॆऩ ॲऴुन्तऩऩ्–झट उठे; इरतम्–रथ पर; ॲऱिऩऩ्–सवार हुए; मलर् मऴै पॊऴिन्तऩ–पुष्प वर्षा हुई; आचि पूत्तऩ–आशीर्वचन उच्चरित हुए; पल् इयम् मॊऴिन्तऩ–अनेक वाद्य बजे; मुरचम् आर्त्तऩ–ढोल बोल उठे; तीविऩै–पाप; वेरिऩोटुम् विऴुन्तऩ–जड़ों के साथ; विऴुन्तऩ–गिरे। २४९

वे झट उठे, अपने रथ पर सवार हुए। तब देवों ने पुष्प-वर्षा की। ब्राह्मणों ने आशीर्वाद के वचन कहे। अनेक वाद्य बज उठे। नगाड़े निनादित हुए। पाप सब उखड़ी जड़ों के साथ पतित हुए। २४९

पिदिर्न्ददॆऩ् मऩत्तुयर्प् पिऱङ्ग लॆऩ्ऱुकॊण्
डदिर्न्दॆऴु मुरशुडै यरशर् कोमहऩ्
मुदिर्न्दमा दवमुडै मुऩियै यऩ्बिऩो
डॆदिर्न्दऩऩ् योशऩै यिरण्डॊ डॆऩ्ऱिऩे 250

अतिर्न्तु ॲऴु मुरचु उटै (य) अरचर् कोमकऩ्–गूँजनेवाले नगाड़ों के चक्रवर्ती;

ॲन् मत्तम् तुयर् पिऱङ्कल्–मेरे मन की चिन्ता-पर्वत; पितिर्न्ततु–चूर्ण हो गया; अॅन्ऱु कॉण्टु–ऐसा बूझकर; मुतिर्न्त मा तवम् उटैय–तपोवृद्ध; मुऩियै–मुनिवर को; अऩ्पिऩोटु–प्रेम के साथ; योचऩै इरण्टॉटु ऑऩ्ऱिऩ्–योजन, दो जमा एक, (यानी, तीन) की दूरी में; ॲतिर्न्तऩऩ्–जा मिले। २५०

ताड़न पाकर गूँजते हुए नर्दन करनेवाले नगाड़ोंवाले अधिपति दशरथ ने अपने मन में धारणा कर ली कि महर्षि के आगमन से मेरी पर्वत के समान बढ़ी व्यथा ढह गयी। मैं सुखी हो जाऊँगा। फिर उन्होंने तीन योजन आगे जाकर उनसे भेंट की। २५०

नऱ्ऱव मऩैत्तुमोर् नवैयि लावुरुप्, पॅऱ्ऱिव णडैन्दॅऩप् पिऱङ्गु वाऩ्ऱऩैच्
चुऱ्ऱिय शीरैयु मुळैयिऩ् ऱोऱ्ऱमु, मुऱ्ऱुऱप् पॉलिदरु मूर्त्ति याऩ्ऱऩै 251

नल् तवम् अऩैत्तुम्–श्रेष्ठ तप सब; नवै इला–दोषहीन; ओर् उरु पॅऱ्ऱु–एक रूप लेकर; इवण् अटैन्ततु ॲऩ–इधर आ गया, ऐसा; पिऱङ्कुवाऩ तऩै–शोभनेवाले उनको; चुऱ्ऱिय चीरैयुम्–वेष्टित वलकल; उळैयिऩ् तोऱ्ऱमुम्–हिरण का रूप भी; मुऱ्ऱुऱ पॉलि तरु–पूर्णरूप से प्रकट करनेवाले; मूर्त्तियाऩ् तऩै–आकार के उनको (मिले)। २५१

वे महर्षि ऐसे दर्शन देते थे मानों सभी श्रेष्ठ तप मिलकर साकार हो आये हों। वे वल्कलावृत्त थे और उनके सिर को हरिण का सा सींग सुशोभित कर रहा था। वे सौम्यमूर्ति थे। २५१

अण्डर्ह् डुयरमु मरक्क राऱ्ऱलुम्, विण्डिडप् पॉलिदरु विऩैव लाळऩैक्
कुण्डिहै कुडैयॉडुङ् गुलवु नूऩ्मुऱैत्, तण्डॉडुम् बॉलितरु तडक्कै याऩ्ऱऩै 252

अण्टर्कळ् तुयरमुम्–देवों का दुख व; अरक्कर् आऱ्ऱलुम्–राक्षसों का शौर्य; विण्टिट–नाश करते हुए; पॉलि तरु विऩै–प्रभाव दिखानेवाले (यज्ञ-) कार्य में; वल्लाळऩै–निपुण को; नूल् मुऱै कुलवु–शास्त्रों में विहित रीति से; कुण्टिकै कुटै ऑटु–कमण्डल और छत्र के साथ; तण्टु ऑटुम्–दण्ड के साथ; पॉलि तरु–शोभायमान; तट कैयाऩ् तऩै–विशाल हाथवाले को (मिले)। २५२

देवों का दु:ख और राक्षसों का शौर्य दोनों का एक साथ नाश करनेवाले यज्ञ की विद्या में वे दक्ष थे। शास्त्रोक्त रीति से वे अपने सुन्दर हाथों में कमण्डल और छत्र धारण किये हुए थे। राजा ने उनके, ऐसे रूप में दर्शन किये। २५२

इळिन्दुपो यिरदमाण् डिणैकॉ डाण्मलर्
विळुन्दऩऩ् वेन्दरतम् वेन्दऩ् मेऩ्मयाल्
मॉळिन्दऩ नाशिहण् मुदिय नाऩ्मऱैक्
कॉळुन्दुमेऱ् पडर्तरक् कॉळुकॉम् बायिऩाऩ् 253

वेन्तर् तम् वेन्तऩ्–राजाओं के राजा; आण्टु–तब; इरतम् इळिन्तु पोय्–

रथ से उतरकर जाकर; इणै कॉऴ् ताऴ् मलर्–द्वय-चरण-कमलों पर; विऴुन्तऩ्ऩ्-गिरे (नमस्कार किया); मुतिय–प्राचीन; नाल् मऱै–चारों वेद; कॉऴुन्तु–लता की शाखा; मेल् पटर् तर–अपने ऊपर चढ़कर फैले; कॉऴुकॉम्पु–अवलम्ब-तरु; आयित्ताऩ्–जो बने, (उन्होंने); मेऩ्मैयाल्–विशेष रूप से; आचिकळ् मॉऴिन्तऩ्ऩ्-आशीर्वचन कहे। २५३

तब राजा दशरथ अपने रथ पर से उतरकर पैदल चले और महर्षि के चरणद्वय छूते हुए नमस्कार किया। महर्षि ने भी जो विवर्धित वेद-लता के अवलम्बतरु के समान थे (वेदों के अपार ज्ञाता थे) विशेष रूप से राजा का आशीर्वाद किया। २५३

अयल्वरु मुऩिवरु माशि कूऱिडप्, पुयल्पॉरु तडक्कैयार् ऱॉऴुदु पॉङ्गुनीर्क्
कयल्पॉरु विऴियॉडुङ् गलैव लाळऩै, इयल्बॉडु कॉणर्न्दऩ ऩिरद मेऱ्ऱिये 254

अयल् वरु मुऩिवरुम्–पास आनेवाले ऋषियों ने भी; आचि कूऱिट–आशीर्वाद दिया, तब; पुयल् पोरु–(दानशीलता में) मेघों से मुकाबला करनेवाले; तट कैयाल्–विशाल हाथों से; तॉऴुतु–विनय समर्पित कर; पोङ्कुम् नीर्–उमड़ते आनन्दाश्रु-भरी; कयल् पॉरु विऴियॉटुम्–मछली-समान आँखोंवाली (शान्तादेवी) के साथ; इरतम् एऱ्ऱि–रथ पर आरूढ़ कराकर; कलै वलाळऩै–विद्या-सम्पन्न (मुनि) को; इयल्पॉटु–(यथोचित) प्रकार से; कॉणर्न्तऩाऩ्–लिवा लाये। २५४

उनके साथ आनेवाले ऋषियों ने भी राजा को आशीर्वाद दिया। राजा दशरथ ने अपने हाथ जोड़े। उनके हाथ दान करने में जलगर्भित मेघों का मुकाबला करते थे। फिर वे विद्याविदग्ध ऋषि को, और आनन्दाश्रु-भरी, मछली सी आँखोंवाली शान्ता को रथ पर आरूढ़ कराकर यथोचित रीति से अपने नगर में लिवा लाये। (शान्ता दशरथ महाराज की ही पुत्री थीं जिनको रोमपाद ने गोद लिया था। उनका अयोध्या में आते हुए, और अपने पति की महिमा को व्यक्त देखकर, आनन्द का आँसू बहाना स्वाभाविक ही था)। २५४

अडिकुरऩ् मुरशदि रयोत्ति मानहर्, मुडियुडै वेन्दऩम् मुऩिव ऩोडुमोर्
कडिहयि ऩडैन्दऩऩ् कमल वाण्मुह, वडिवुडै मडन्दयर् वाऴ्त्तॉ डुप्पवे 255

मुटि उटै वेन्तऩ्–किरीटधारी चक्रवर्ती; अ मुऩिवऩोटुम्–उन मुनि के साथ; कमलम् वाळ् मुकम्–कमल-सम उज्ज्वल मुखोंवाली; वटिवु उटै–सुभग रूपवाली; मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; वाऴ्त्तु ऑटुप्प–मंगलगान करते; अटि कुरल् मुरचु–ताडन से निनादित होनेवाले ढोल; अतिर्–बजनेवाले; अयोत्ति मा नकर्–अयोध्या के महान नगर में; ओर् कटिकैयिऩ्–एक घटिका के अन्दर; अटैन्तऩ्ऩ्–पहुँचे। २५५

मुकुटधारी महाराज मुनि के साथ एक घटिका के अन्दर नगर पहुँच गये। तब कमल के समान मुखों से शोभित सुन्दरी स्त्रियों ने मंगलमय अभ्यर्थना के गीत गाये। ज़ोर के साथ नगाड़े बज उठे। २५५

कशट्टुऱु विऩैत्तॊळिऱ् कळ्व रायुळ्ळ्, अशट्टर्ह ळैवरै यऱुव राक्किय
वशिट्टऩु मरुमऱै वऴक्कु नीङ्गला, विशिट्टरुम् वेत्तवै पॊलिय मेविऩार् 256

कचटु उऱु विऩै तॊळिल्–कलंकित पाप कर्मों के प्रेरक; कळ्वराय् उळ्ळ्–चोर के समान क्रियमाण रहनेवाली; अचट्टर्कळ् ऐवरै–बुद्धिहीन पाँचों (पंचेंद्रिय) को; अऱुवर् आक्किय–निष्क्रिय जिन्होंने बनाया वे; वचिट्टऩुम्–वसिष्ठ और ; अरु मऱै वऴक्कु–श्रेष्ठ वेद-मार्ग (से); नीङ्कला–न हटनेवाले; विचिट्टरुम्–विशिष्ट (ब्राह्मण) लोग; वेन्तु अवै पॊलिय–राज-सभा को शोभायुक्त बनाते हुए; मेविऩार्–आ विराजे । २५६

फिर महर्षि वसिष्ठजी और अनेक वेदमार्गानुयायी ब्राह्मण लोगों ने आकर राज-सभा को सुशोभित किया। वसिष्ठजी इन्द्रिय-निग्रही थे। (कम्बन इस बात की अपने अनोखे ढंग से चर्चा करते हैं। इन्द्रियों को चोर कहते हैं जो संख्या में पाँच हैं। तमिळ भाषा में छ का द्योतक शब्द अऱुवर् है। पर "अऱुवर्" का अर्थ 'निष्क्रिय हुए' भी है। अतः 'पाँचों को छहों' बना दिया कहकर इन्द्रिय-निग्रही का अर्थ निकाला गया है)। २५६

मामणि मण्डप मऩ्ऩि माशऱु, तूमणित् तविशिडैच् चुरुदि येनिहर्
कोमुऩिक् करशऩै यिरुत्तिक् कॊळ्कटऩ्, ऐमुऱत् तिरुत्तिवे ऱिऩैय शॆप्पिऩाऩ् 257

मा मणि मण्टपम् मऩ्ऩि–श्रेष्ठ रत्न-शोभित सभा-भवन आकर; चुरुतिये निकर्–वेदों के ही समान रहनेवाले; को मुऩिक्कु अरचऩै–श्रेष्ठ मुनियों के राजा (सर्वश्रेष्ठ महर्षि ऋष्य शृंग) को; माचु अऱु–निर्दोष; तू मणि–स्वच्छ रत्न-खचित; तविचु इटै–आसन पर; इरुत्ति–आसीन कराकर; कॊळ्कटऩ्–स्वीकार्य उपचार-कृत्य; एम् उऱ तिरुत्ति–सन्तोषदायक प्रकार से करके; वेऱु–फिर; इऩैय–यों; चॆप्पिऩाऩ्–कहा । २५७

चक्रवर्ती मूर्तिमान वेद के समान रहे महर्षि ऋष्यशृंग को मणिमय सभा-भवन में लिवा लाए। दोषहीन रत्नों से छविमान एक आसन पर विराजित कराया। फिर यथोचित अभ्यर्थना के रस्म अदा किये। आगे यों निवेदन किया। २५७

शाऩ्ऱवर् शाऩ्ऱव तरुम मादवम्, पोऩ्ऱॊळिर् पुऩितनिऩ् ऩरुळिऱ् पूत्तवॆऩ्
आऩ्ऱतॊल् कुलमिऩि यरशिऩ् वैहुमाल्, याऩ्ऱव मुडैमैयु मिऴप्पिऩ् ऱामरो 258

चाऩ्ऱवर् चाऩ्ऱव–श्रेष्ठ से श्रेष्ठ; तरुमम् मातवम् पोऩ्ऱु ऒळिर् पुऩित–धर्म और महान तप के ही समान दर्शन देनेवाले पवित्र पुरुष; निऩ् अरुळिऩ् पूत्त–आपकी कृपा से उत्फुल्ल; ऎऩ् आऩ्ऱ तॊल् कुलम्–मेरा श्रेष्ठ प्राचीन वंश; इऩि अरचिऩ् वैकुम्–अब राजा-सहित हो जायगा; याऩ् तवम् उटैमैयुम्–मेरा पूर्व-कृत तप भी; इऴप्पु इऩ्ऱु आम्–खोया हुआ नहीं रहेगा; (आल् अरो) । २५८

सर्वश्रेष्ठ साधु महर्षे ! धर्म और तप के मूर्तिमान तेजस्वी ! आपकी कृपा से अब मेरा प्राचीन श्रेष्ठकुल राजकुल बना रहेगा। यह भी सिद्ध हो जायगा कि मैंने तपस्या की है और वह तपस्या विफल नहीं होगी। २५८

ऍऩ्ऩलु मुऩिवर ऩिऩिदु नोक्कुऱा, मऩ्ऩवर् मऩ्ऩकेळ् वशिट्ट ऩॆऩ्ऩुमोर्
नऩ्ऩॆडुन् दवऩ्ऱुणै नवैयिल् शॆय्हय, निऩ्ऩैयिव् वुलहिऩि ऩिरुबर् नेर्वरे 259

ऍऩ्ऩलुम्–कहते ही; मुऩिवरऩ्–मुनिवर; इऩितु नोक्कुऱा–स्निग्ध दृष्टि से देखकर; मऩ्ऩर् मऩ्ऩ–राजाधिराज; केळ्–सुनिये; वचिट्टऩ् ऍऩ्ऩुम्–वसिष्ठ नाम के; ओर् नल् नॆट्टु तवऩ् तुणै–अनुपम, श्रेष्ठ, दीर्घकाल के तपस्वी के संग (पथ-प्रदर्शन) में; नवै इल् चॆय्कय निऩ्ऩै–दोष-हीन कर्मों, आपकी; इ उलकिल्, निरुपर् नेर्वरो–इस संसार में, कोई राजा समानता कर सकेंगे, (नहीं)। २५६

महर्षि ने चक्रवर्ती की बातें सुनकर उनपर स्निग्ध दृष्टि फेरी और कहा कि महाराज ! वसिष्ठजी एक महान और दीर्घकाल के तपस्वी हैं। उनकी सहायता लेकर आप श्लाघनीय और पवित्र कार्य करते रहते हैं; आपकी, इस संसार में कौन राजा समता कर सकता है ? । २५९

ऍऩ्ऱऩ पऱ्पल विऩिय कूऱिनल्, कुऩ्ऱुऱळ् वरिशिलैक् कुववुत् तोळिऩाय्
नऩ्ऱिकॊ ळरिमह नडत्त वॆण्णियो, इऩ्ऱॆऩै यळैत्तदिङ् गियम्बु वायॆऩ्ऱाऩ् 260

ऍऩ्ऱ अऩ–ऐसा और; पऱ्पल इऩिय कूऱि–विविध मधुर बातें कहकर; वरि चिलै–बन्धन- (गाँठों से) युक्त धनुर्धर; नल् कुऩ्ऱु उऱळ्–अच्छे पर्वत-समान; कुववु तोळिऩाय्–सुडौल भुजाओंवाले; इऩ्ऱु ऍऩै इङ्कु अळैत्ततु–आज, मुझे, यहाँ आमंत्रित करना; नऩ्ऱि कॊळ्–मंगलदायक; अरि मकम्–अश्वमेध यज्ञ; नटत्त ऍण्णियो–करने के विचार से; इयम्पुवाय्–कहिये; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (प्रश्न किया)। २६०

ऐसी मधुर बातें कहने के बाद महर्षि ने राजा से पूछा कि पर्वत समान सुडौल भुजावाले ! क्या आप अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न करने की इच्छा से हमको इधर लाए हैं ?"। २६०

उलप्पिल्पल्   लाण्डॆला   मुरुह   णिऩ्ऱिये
तलप्पॊऱै   याऱ्ऱिऩेऩ्   ऱऩयर्   वन्दिलर्
अलप्पुनी   रुडुत्तपा   रळिक्कु   मैन्दरै
नलप्पुहळ्   पॆऱविऩि   नल्ह   वेण्डुमाल् 261

उलप्पु इल् पल् आण्टु ऍलाम्–अन्त-हीन (लगनेवाले) अनेक वर्ष भर; उरुकण् इऩ्ऱि–(किसी) कष्ट के बिना; तलम् पॊऱै आऱ्ऱिऩेऩ्–भू-भार वहन किया है; तऩयर् वन्तिलर्–पुत्र नहीं जनमे; नलम् पुकळ् पॆऱ–श्रेष्ठ यश मिले, इसके निमित्त; अलम्पु नीर् उटुत्त पार्–तरंगायित समुद्र से वेष्टित इस भूमि का; अळिक्कुम्–पालन कर सकनेवाले; मैन्तरै–वीर पुत्रों को; इऩि नल्क वेण्टुम्–अब प्राप्त कराने की कृपा (आपको) करनी चाहिए; (ए, आल्)। २६१

इसके उत्तर में महाराज ने कहा कि अनेक वर्षों से मैं, बिना किसी कष्ट के, इस भू-भार का सम्यक् रूप से वहन करता आ रहा हूँ। मेरे पुत्र कोई पैदा नहीं हुए। मैं ऐसे पुत्र प्राप्त करूँ जो इस तरंगायमान

सागर से घिरी भूमि का परिपालन करने में समर्थ हों; आप इसका उपाय करने की कृपा कीजिए। २६१

ॲऩ्ऱलु मरशनी यिरङ्ग लिव्वुल
हॉऩ्ऱुमो वुलहमी रेऴु मॉम्बिडुम्
वऩ्ऱिऱऩ् मैन्दरै यळिक्कु मामहम्
इऩ्ऱुनी यियऱ्ऱुदऱ् कॅऴुह वीण्डॅऩ्ऱाऩ् 262

ॲऩ्ऱलुम्–कहते ही; अरऌ–राजन्; नी इरङ्कल्–आप दुखी मत हों; इ उलकम् ऑऩ्ऱुमो–यह एक लोक ही क्या; उलकम्–भुवन; ईरेऴुम्–दो के सातों (चौदहों) का; ओम्पिटुम्–परिपालन करनेवाले; वल् तिऱल् मैन्तरै–बहुत समर्थ वीर पुत्रों को; अळिक्कुम्–दिलानेवाले; मा मकम्–महान (अश्वमेध) यज्ञ को; इऩ्ऱु नी इयऱ्ऱुतऱ्कु–आज ही आप, करने के लिये; ईण्टु ॲऴुक–अभी (तुरत) उपक्रम कीजिये; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। २६२

उनके ऐसा कहने पर, ऋष्यश्रृंग ने कहा कि महाराज ! चिन्ता मत कीजिए; यह एक भुवन क्या चौदहों भुवनों का परिपालन करने में समर्थ पुत्र जिसके फलस्वरूप पैदा होंगे वैसा यज्ञ करेंगे। आप अभी प्रस्तुत हो जाइए। २६२

आयदऱ् कुरियऩ कलप्पै यावैयुम्
एयॅऩक् कॊणर्न्दऩर् निरुबर्क् केन्दलुम्
तूयनऱ् पुऩल्पडीइच् चुरुदि नूऩ्मुऱै
शाय्वऱत् तिरुत्तिय शालै पुक्कऩऩ् 263

आयतऱ्कु उरियऩ–उसके लिए आवश्यक; कलप्पै यावैयुम्–सामग्रियाँ सब; एयॅऩ कॊणर्न्तऩर्–आज्ञा मिलते ही (सेवक) लाये; निरुपर्क्कु एन्तलुम्–राजाओं के राजा भी; तूय नल् पुऩल्–पवित्र और श्रेष्ठ (सरयू) जल में; पटीइ–स्नान करके; चुरुति नूल् मुऱै–श्रुति-विहित क्रम से; चाय्वु अऱ तिरुत्तिय–दोष-रहित, समुचित रीति से बने; चालै–यज्ञमण्डप में; पुक्कऩऩ्–पहुँचे। २६३

राजा ने आज्ञा दी और सभी उपकरण और सामग्रियाँ आ गयीं। महाराज भी पवित्र सरयू-जल में स्नान करके, श्रुति-विधियों के अनुसार निर्मित यज्ञ-शाला में प्रविष्ट हुए। २६३

मुऴङ्गऴऩ् मुम्मैयु मुडुहि याहुदि
वऴङ्गिये यीरऱु तिङ्गळ् वाय्त्तपिऩ्
तऴङ्गिऩ तुन्दुमि ताविल् वाऩहम्
विऴुङ्गिऩर् त्रिण्णवर् वॅळियिऩ् ऱॅऩ्ऩवे 264

मुऴङ्कु अऴल् मुम्मैयुम्–शब्दायमान त्रिरग्नि; मुटुकि–प्रज्वलित करके; आकुति वऴङ्कि–आहुतियाँ देकर; ईर् अऱु तिङ्कळ्–दो के छः (बारह) मास;

वाय्त्त पिऩ्–पूरा होने के बाद; तुऩ्तुमि–देव दुंदुभियाँ; तऴङ्किऩ–बज उठीं; विण्णवर्–देवता लोग; ता इल् वाऩ्–निर्मल आकाश में; वॅळि इऩ्ऱु ॲऩ्ऩ–रिक्त स्थान नहीं हो, ऐसा; विऴुङ्किऩर्–खचाखच भर गये । २६४

(आहवनीय, गार्हपत्य, दक्षिणा की) त्रिरग्नि प्रज्वलित की गयी। उसमें उचित रीति से आहुतियाँ दी गयीं। ऐसे बारह महीने बीते। देवदुंदुभियाँ बज उठीं और देवता लोक आकाश को लीलते हुए (छिपाते हुए) आकर खचाखच भीड़ लगाकर खड़े हो गये । २६४

मुहमल रॉळिर्दर मॉय्त्तु वाऩुळोर्, तॉहैविरै नऱुमलर् तूवि यार्त्तॅऴत्
तहवुडै मुऩियुमत् तऴलि ऩाप्पणे, महवरु ळाहुदि वऴङ्गि ऩाऩरो 265

वाऩ् उळोर्–सुरलोकवासी; मुकम् मलर् ऑळि तर–मुख-कमलों को उज्ज्वल रखते हुए (प्रफुल्ल चित्त); मॉय्त्तु–भीड़ लगाकर; तॉकै विरै नऱुमलर् तूवि–गुच्छों में, लगातार, सुवासित पुष्प बरसाकर; आर्त्तु ॲऴ–आनन्दरव करते उछले; तकवु उटै मुऩियुम्–सर्व-योग्यता-सम्पन्न ऋषि भी; अ तऴलिऩ् नाप्पण्–उस यागाग्नि के मध्य; मकवु अरुळ् आकुति–पुत्र-दायक आहुति; वऴङ्किऩाऩ्–प्रदान की । २६५

देवताओं के मुख-कमल प्रफुल्लित थे। वे सुगन्ध-पूर्ण कल्पकवन के पुष्प बरसाने लगे। सन्तोष के साथ उछले-कूदे। तब सर्व-योग्यता-सिद्ध महर्षि ने अग्नि में पुत्रेच्छा की पूर्ति करनेवाली आहुति छोड़ी । २६५

आयिडैक् कऩलिऩिऩ् ऱम्बॉऩ् ऱट्टमीत्, तूयनऱ् चुदैनिहर् पिण्ड मॉऩ्ऱुशूऴ्
तीयॅरि पङ्गियुञ् जिवन्द कण्णुमाय्, एयॅऩप् पूदमॉऩ् ऱॅऴुन्द देऩ्दिये 266

अ इटै–तब; कऩलिऩ् निऩ्ऱु–उस अग्नि से; चूऴ् ॲरि ती पङ्कियुम्–चारों ओर जलनेवाली आग के समान केश (और); चिवन्त कण्णुम् आय्–लाल आँखोंवाला बनकर; पूतम् ऑऩ्ऱु–एक भूत; अम् पॉऩ् तट्टम् मी–सुन्दर स्वर्ण-थाली पर; तूय नल् चुतै निकर्–पवित्र, श्रेष्ठ सुधा-सम; पिण्टम् ऑऩ्ऱु एन्ति–अन्न पिण्ड उठाते हुए; एय ॲऩ्ऩ ॲऴुन्ततु–सहसा उठ आया । २६६

तब उस अग्नि से एक भूत निकल आया। उसके केश जलती अग्नि के समान थे। आँखें लाल थीं। उसके हाथ में एक सोने की थाली थी और उस पर अमृत-सम अन्न का एक पिंड था । २६६

वैत्ततु तरैमिशै मऱित्तु मव्वऴित्
तैत्तदु पूदमत् तवऩुम् वेऩ्दऩै
उय्त्तनल् लमिर्दिऩै युरिय मादर्हट्
कत्तहु मरबिऩि लळित्ति यालॅऩ्ऱाऩ् 276

पूतम्–भूत (ने); तरै मिचै वैत्ततु–(थाली को) स्थल पर रखा; मऱित्तुम्–फिर; अ वऴि तैत्ततु–उसी रास्ते (अग्नि में) प्रविष्ट (अन्तर्धान) हुआ; अ तवऩुम्–उन तपोधन ने भी; वेऩ्तऩै–राजा को; उय्त्त नल् अमिर्तिऩै–भूत-दत्त श्रेष्ठ

अमृत (-सम अन्न) पिण्ड को; उरिय मातर्कट्कु–अपनी पत्नियों को; अ तकु मरपिन्रिल्–उनके उचित क्रम के अनुसार; अळित्ति–दीजिये; ॲन्ऱान्–आज्ञा की। २६७

उस भूत ने उस थाली को भूमि पर रखा और वह जैसे आया था उसी तरह अग्नि में घुसकर अदृश्य हो गया। महर्षि ने महाराज को आज्ञा दी कि आप इसको यथाक्रम अपनी रानियों में बाँट दीजिये। २६७

मामुनि यरुळ्वऴि मन्नर् मन्नवन्, तूममॅन् शुरिकुऴर् ऱॊण्डैत् तूयवाय्क्
कामरॉण् कौचलै करत्ति नोर्पहिर्, तामुऱ वळित्तनन् शङ्ग मार्त्तॅऴ 268

मा मुनि अरुळ् वऴि–महामुनि की आज्ञा के अनुसार; मन्नर्मन्नवन्–चक्रवर्ती; चङ्कम् आर्त्तु ॲऴ–शंख बज उठे; तूमम् मॅल् चुरि कुऴल्–धूम्र वासित, कोमल, काले घुँघराले केश और; तॊण्टै तूय वाय्–बिम्ब-सम लाल और पवित्र मुख (अधरों) और; कामर् ऑण्–मनोरम छटावाली; कौचलै करत्तिन्–कौशिल्यादेवी के हाथों में; ओर् पकिर्–एक अंश को; तामम् उऱ–(भूलोक को) प्रकाशमयता दिलाते हुए; अळित्तनन्–दिया। २६८

महर्षि की आज्ञा पाकर महाराज ने उसका एक भाग, धूपवासित कोमल केश, बिंबाधर, पवित्र मुख और मनोरम छटा—इनसे युक्त कौसल्यादेवी के हाथ में दिया। तब शंख बजाये गये। कौसल्यादेवी के इसे भक्षण कर लेने से संसार नया प्रकाश पानेवाला था। २६८

कैकयन् ऱनयैतन् करत्तु मम्मुऱैच्, चॅय्हयि नळित्तनन् ऱेव रार्त्तॅऴप्
पॊय्हयु नदिहळुम् पॊऴिलु मोदिमम्, वैहुरु कोसल मन्नर् मन्नने 269

पॊय्कैयुम्–तालाबों में; नतिकळुम्–नदियों में; पॊऴिलुम्–उद्यानों में; ओतिमम् वैकु उऱु–हंस (जिस देश में) वास करते हैं उस; कोचलम्–कोशल देश के; मन्नर् मन्नन्–(शासक) चक्रवर्ती (ने); तेवर् आर्त्तु ॲऴ–देवों के आनन्दरव कर उठते; कैकयन् तनयै तन् करत्तुम्–केकय-पुत्री के हाथ में; अ मुऱै चॅय्कैयिन्–उसी क्रम से; अळित्तनन्–दिया। २६९

तब कोसलाधीश ने केकयपुत्री कैकेयी के हाथ में उसी प्रकार एक भाग दिया। राजा से परिपालित वह देश ऐसा था कि तालाबों, नदियों और बागों में हंस वास करते थे। (कवि इस देश की समृद्धता का स्मरण शायद इसलिए करते हैं कि कैकेयी के तनय इसके राजा बनेंगे)। २६९

नमित्तिरर् नडुक्कुऱु नलङ्गॊण् मॊय्म्बुडै
निमित्तिरु मरबुळान् मुन्नर् नीर्मयिन्
सुमित्तिरैक् कळित्तनन् सुरर्क्कु वेन्दिन्च्
चमित्तदॅन् पहैयॅनत् तमरॊ डार्प्पवे 270

न मित्तिरर्–अमित्र; नटुक्कु उऱु–काँप जायँ, इसका हेतु जो है उस; नलम्

कोॅळ् मोॅय्म्पु उटै–श्रेष्ठ बल से युक्त; **निमि तरु मरपु उळ्ळाऩ्**–राजा निमि के वंश में उदित (दशरथ); **चुरर्क्कु वेन्तु**–सुरेन्द्र; **ऍऩ् पकै इऩि चमित्ततु ऍऩ**–मेरा शत्रु अब मिट गया, यह निश्चय कर; **तमरॊटु आर्प्प**–अपनों के साथ कोलाहल मचा उठे––(यह साध्य करते हुए); **मुऩ्ऩर् नीर्मैयिऩ्**–पहले के क्रम के अनुसार; **चुमित्तिरैक्कु**–सुमित्रादेवी को; **अळित्तऩऩ्**–दिया । २७०

शत्रु को भयभीत करनेवाले वली निमि के वंशस्थ राजा दशरथ ने सुमित्रादेवी के हाथ में उसी प्रकार, जैसे कौसल्या और कैकेयी के सम्वन्ध में किया था, पिण्ड का एक भाग दिया । तब देवेन्द्र यह कहकर कि मेरा शत्रु अब मिटा, अपने साथियों के साथ हल्ला मचाकर उछल उठे । २७०

पिऩ्ऩरप् पॅरुन्दहै पिदिर्न्दु वीऴ्न्ददु
तऩ्ऩयुञ् जुमित्तिरै तऩक्कु नल्हिऩाऩ्
ऑऩ्ऩलर्क् किडमुम्वे ऱुलहि ऩोङ्गिय
मऩ्ऩुयिर् तमक्कुनीळ् वलमुन् दुळ्ळवे 271

पिऩ्ऩर्–उसके बाद; **अ पॅरु तकै**–उन उदारचेता दशरथ ने; **ऑऩ्ऩलर्क्कु**–शत्रुओं के; **इटमुम्**–वाम अंग और; **वेऱु**–उनसे परे; **उलकिऩ् ओङ्किय**–संसार में जीवन्त; **मऩ् उयिर् तमक्कु**–जीवों के; **नीळ् वलमुम्**–श्रेष्ठ दक्षिण अंग के; **तुळ्ळ**–फड़कते; **पितिर्न्तु वीऴ्न्ततु तऩ्ऩैयुम्**–जो छितरकर बचा रहा, उसको भी; **चुमित्तिरं तऩक्कु**–सुमित्रा को; **नल्किऩाऩ्**–(प्रेम के साथ) दिया । २७१

फिर, उन उदारचेता ने जो भाग करते वक्त बचकर रह गये उन कणों को एकत्र करके उसे सुमित्रा को दे दिया । तब शत्रु लोगों के वाम अंग फड़क उठे और अन्य जीवों के दाहिने अंग । (पुरुषों के लिए वाम अंगों का फड़कना अहित का सूचक है ।) । २७१

वाम्बरि वेळ्वियु मकारै नल्हुव, ताम्बुरै याहुदि पिऱवु मन्दणऩ्
ओम्बिड मुडिन्दपि ऩुलहु कावलऩ्, एम्बलॊ ऍऴुन्दऩऩ् यारु मेत्तवे 272

वाम् परि वॅळ्वियुम्–लपकते चलनेवाले अश्व को लेकर किया जानेवाला यज्ञ; **मकारै नल्कुवतु आम्**–पुत्रोत्पादक (पुत्रकामेष्टि यज्ञ के); **पुरै आकुति पिऱवुम्**–योग्य आहुति आदि अन्य होम कार्य; **अन्तणऩ् ओम्पिट**–महर्षि ने सावधानी के साथ करके; **मुटिन्त पिऩ्**–सम्पूर्ण किया, करने के बाद; **उलकु कावलऩ्**–भूपति; **यारुम् एत्त**–सबके स्तुति करते; **एम्पलॊटु**–सन्तोष के साथ; **ऍऴुन्तऩऩ्**–उठ चले । २७२

अश्वमेध यज्ञ सफल रूप से सम्पन्न हो गया और पुत्रकामेष्टि के लिये उपयुक्त आहुतियाँ दी गयीं । यह सब महर्षि ने सावधानी से सम्पन्न किया । फिर दशरथ यज्ञशाला से बाहर आये ! तब वे बड़े सन्तुष्ट थे और सबों ने उनकी, सम्मान के साथ स्तुति की । २७२

मुरुडरुम् बल्लिय मुऴङ्गि यार्त्तऩ, इरुडरु मुलहमु मिडरि ऩीङ्गिऩ
तॅरुडरु वेळ्वियिऩ् कडऩ्ग डीर्न्दुऴि, अरुडरु मवैयिऩ्वन् दरश ऩॅय्दिऩाऩ् 273

तॆरुळ् तरु–(वेद) प्रकाशित; वेळ्वियिऩ् कटऩ्कळ्–यज्ञ-कर्म; तीर्न्तुऴि–पूरा होने के बाद; मुरुटु–मर्दल; अरु पल् इयम्–और अपूर्व अन्य (मंगल) वाद्य; मुऴङ्कि आर्त्तऩ–निनादित हुए; इरुळ् तरुम् उलकमुम्–दुख के अँधेरे में पड़े लोक भी; इटरिऩ् नीङ्किऩ–कष्ट-निवृत्त हुए; अरचऩ्–महाराज भी; अरुळ् तरुम् अवैयिऩ्–दया-धर्म जहाँ से किया जाता है, उस सभा भवन में; वन्तु ऍय्तिऩाऩ्–आ विराजे। २७३

वेदोक्त यज्ञ के कर्म जब पूरे हुए, तब मर्दल और अन्य बाजे मंगल-नाद कर उठे। लोक सब दुखरूपी अँधेरे से विमुक्त हुए। महाराज सब को उपहार देने के लिए सभा-मण्डप में आये। २७३

शॅय्म्मुऱैक् कडऩवै तिऱम्ब लिऩ्ऱिये
मॅय्म्मुऱैक् कडवुळर्क् कीन्दु विण्णुळोर्क्
कम्मुऱै यऴित्तुनी डन्द णाळर्क्कुम्
कैम्मुऱै पॊऴिन्दऩऩ् कऩह मारिये 274

चॅय्मुऱै कटऩ् अवै–यज्ञोत्तर (करणीय) हविदान आदि को; तिऱम्पल् इऩ्ऱि–अपचार के विना; मेय् मुऱै–यथोचित क्रम से; कटवुळर्क्कु ईन्तु–कुलदेवता विष्णुदेव आदि को देकर; विण् उळोर्क्कु–आकाशलोक वासियों को भी; अम्मुऱै अऴित्तु–यथाक्रम समर्पित कर; नीटु अन्तणाळर्क्कुम्–श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भी; कऩकम् मारि–स्वर्णदान-वर्षा; कै मुऱै पॊऴिन्तऩऩ्–अपने हाथों से बारी-बारी से बरसायी (प्रचुर परिमाण में स्वर्णदान किया)। २७४

यज्ञोतर कुछ कर्म थे। उनमें कुलदेवताओं और अन्य देवताओं की पूजा करना, भोग चढ़ाना आदि था। वह सब पूरा करके महाराज ने ब्राह्मणों पर अपने हाथ से, बारी-बारी से, मानों स्वर्ण की वारिश कर दी। २७४

वेन्दर्हट् करशोडु वॆरुक्कै तेर्परि
वाय्न्दनर् ऱुहिलॊडु वरिशैक् केऱ्पऩ
ईन्दऩऩ् पल्लियन् दुवैप्प वेहिनीर्
तोय्न्दऩऩ् शरयुनर् ऱुऱैक्क णॆय्दिये 275

वेन्तर्कट्कु–राजाओं को; वरिचैक्कु एऱ्पऩ–उनके पदों के योग्य; अरचॊटु–शासन की भूमि के साथ; वॆरुक्कै–अर्थ; तेर्–रथ; परि–अश्व; वाय्न्त नल् तुकिलॊटु–उपयुक्त श्रेष्ठ वस्त्रों के साथ; ईन्तऩऩ्–प्रदान किया; पल् इयम् तुवैप्प–विविध वाद्यों के वादन के साथ; एकि–जाकर; चरयुनल् तुऱैक्कण् ऍय्ति–सरयू नदी के श्रेष्ठ घाट पर जाकर; नीर् तोय्न्तऩऩ्–स्नानरत हुआ। २७५

फिर राजाओं की बारी आयी। उनको ज़मीन दी; धन दिया। रथ, अश्व, वस्त्र आदि भी प्रदान किये गये। उसके बाद मंगलवाद्यों के वादन के साथ वे सरयू के श्रेष्ठ घाट पर गये और नहाये। २७५

मुरशिऩङ् गऱङ्गिड मुत्त वॆण्कुडै, विरशिमे निऴऱ्ऱिड वेन्दर शूऴ्तर्
अरशवै यडैन्दुऴि ययऩु नाणुऱ, उरैशॆऱि मुऩिवऩ्ऱा ळिऱैञ्जि योङ्गिऩाऩ् 276

मुरचु इऩम्–विविध नगाड़े जैसे बाजों के; कऱङ्किट–बजते; मुत्तम् वॆण्कुटै–मोतियों से अलंकृत श्वेत-छत्रों के; मेल् विरचि निऴऱ्ऱिट–ऊपर फैलकर छाया करते; वेन्तर् चूऴ् तर–राजाओं के घेरकर आते; अरचु अवै अटैन्तुऴि–राजसभा में पहुँचने पर; अयऩ् नाण् उऱ–ब्रह्मा को भी लजाते हुए, (ब्रह्मा से भी अधिक); उरै चॆऱि–प्रकीर्तित; मुऩिवऩ् ताऴ्–वसिष्ठ महर्षि के चरणों की; इऱैञ्चि–स्तुति करके; ओङ्किऩाऩ्–उन्नत हुए । २७६

बाद वे दरबार-भवन की ओर गये। तब ढोल, नगाड़े आदि निनादित हुए। श्वेत छत्र छाया देने लगे। राजा लोग भी घेरे हुए उनके साथ आए। सभा-भवन में, वसिष्ठजी विराजमान थे जिनकी ख्याति स्वयं ब्रह्माजी को भी लज्जायुक्त करती थी। राजा ने उनके चरणों पर नमस्कार किया और उनकी स्तुति की। २७६

अरियनऱ् ऱवमुडै वशिट्ट ऩाणैयाल्
इरलनऱ् चिरुङ्गमा मुऩिवऩ् ऱाडॊऴा
उरियनऱ् पलवुरै पयिऱ्ऱि युयन्दऩॆऩ्
पॆरियनऱ् ऱवमिऩिप् पॆऱुव दियादॆऩ्ऱाऩ् 277

अरिय नल् तवम् उटै–उत्तम और अच्छे तपस्वी; वचिट्टऩ् आणैयाल्–वसिष्ठ की आज्ञा से; इरलै नल् चिरुङ्कम्–हरिण के से सुन्दर सींग से शोभित; मा मुऩिवऩ्–बड़े मुनि के; ताऴ् तॊऴा–चरण-वन्दना करके; उरिय पल नल् उरै–उचित अनेक अच्छे वचन; पयिऱ्ऱि–कहकर; उय्न्तऩॆऩ्–तर गया; पॆरिय नल् तवम्–ऊँचे, तप के फल के रूप में; इऩि पॆऱुवतु यातु–इससे बढ़कर प्राप्य क्या है ? । २७७

तपस्वी वसिष्ठजी से संकेत पाकर महाराज ने ऋष्यश्रृंग को नमस्कार किया और प्रशस्ति के वचन निवेदन किये। कहा कि आपकी कृपा से मैं तर गया। इससे बढ़कर कौन सा तपस्या का फल है जो मैं पाना चाहूँगा ? । २७७

ऎन्दैनिऩ् ऩरुळिऩा लिडरि ऩीङ्गिये
उय्न्दऩॆ ऩडियऩे ऩॆऩ्ऩ वॊण्डवऩ्
शिन्दयुण् महिऴ्च्चियाल् वाऴ्त्तित् तेर्मिशै
वन्दमा दवरॊडुम् वऴिक्कॊण् डेहिऩाऩ् 278

ऎन्तै–श्रेष्ठ; निऩ् अरुळिऩाल्–आपकी कृपा से; अटियऩेऩ्–आपके इस दास ने; इटरिऩ् नीङ्कि–कष्ट से मुक्त होकर; उय्न्तऩॆऩ्–उत्थित हुआ; ऎऩ्ऩ–यह कहने पर; ऒळ् तवऩ्–श्रेष्ठ तपस्वी; चिन्तै उळ् मकिऴ्च्चियाल्–मन के भरे आनन्द के साथ; वाऴ्त्ति–आशीर्वाद देकर; तेर् मिचै–रथ पर चढ़कर; वन्त मा तवरॊटुम्–अपने साथ आए हुए श्रेष्ठ मुनियों सह; वऴि कॊण्टु–मार्ग ग्रहण कर; एकिऩाऩ्–चले । २७८

"भगवन् ! आपकी कृपा से संकट दूर हो गया; जीवन उत्कृष्ट हो गया।" दशरथ का यह कथन सुनकर ऋषि ऋष्यश्रृंग को हार्दिक आनन्द हुआ। वे उन्हें आशीर्वाद देकर, रथ पर चढ़कर मार्ग पर अग्रसर हुए। उनके साथ आये हुए मुनि भी उनके साथ गये। २७८

वाङ्गिय तुयरुडै मन्नन् पिन्नरुम्, पाङ्गुरु मुनिवर्ताळ् परवि येत्तलुम्
ओङ्गिय वुवहैय राशि योडॅळा, नीङ्गिन रिरुन्दन नेमि वेन्दने 279

वाङ्किय तुयर् उटै मन्नन्–निवृत्त-दुख महाराज ने; पिन्नरुम्–फिर भी; पाङ्कु उरु मुनिवर् ताळ्–वन्दनीय अन्य अनेक मुनियों के चरणों पर; परवि एत्तलुम्–विनत हो स्तुति करते ही; ओङ्किय उवकैयर्–उमड़ते हुए आनन्द से पूरित वे; आचियोटु–(राजा को) आशीर्वाद (देने) के साथ; ॲळा-उठकर; नीङ्किनर्–निकल पड़े; नेमि वेन्तन्–चक्रवर्ती; इरुन्तनन्–सुख से रहे। २७९

हृत-दुख राजा ने अन्य ऋषियों की भी स्तुति कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त किये। वे भी विदा हुए। तदनन्तर राजा सुख से रहने लगे। २७९

तॅरिवयर् मूवरुञ् जिऱिदु नाट्चॅलीइ, मरुविय वयावॊडु वरुत्तन् दुय्त्तवर्
पॊरुवरुन् दिरुमुह मन्ऱिप् पॊऱ्पुनी, डुरुवमु मदियमो डॊप्पत् तोन्ऱिनार् 280

तॅरिवैयर्–देवियाँ; मूवरुम्–तीनों भी; चिऱितु नाळ् चॅलीइ–कुछ दिन बीतने के बाद; मरुविय वयावॊटु–(गर्भ धारण) सम्बन्धित क्लेश के साथ; वरुत्तम्–कष्ट; तुय्त्तवर्–सहती हुई; पॊरु अरुम् तिरु मुकम् अन्ऱि–अनुपम शोभाशाली मुखों से ही नहीं, बल्कि; पॊऱ्पु नीटु उरुवमुम्–छविपूर्ण शरीरों से भी; मतियमोटु ऒप्प–चन्द्र के समान; तोन्ऱिनार्–(श्वेत-वर्ण लिये हुए) दिखीं। २८०

तीनों महिषियों को गर्भधारण-सुलभ आयास होने लगा। उनके मुख और शरीर चन्द्र के समान श्वेत हो गये। २८०

आयिडैप् परुवम्वन् दडैन्द वॅल्लैयिन्
मायिरुम् बुविमहण् महिऴ्वि नोङ्गिड
वेय्पुनर् पूशमुम् विण्णु ळोर्पुहऴ्
तूयहर्क् कडहमु मॆऴुन्दु तुळ्ळवे 281

अ इटै–इस बीच; परुवम् वन्तु अटैन्त ऍल्लैयिल्–(पुत्र-जन्म का) समय जब आया तब; मा इरु पुवि मकळ्–श्रेष्ठ और विशाल भूमि की देवी; मकिऴ्विन् ओङ्किट–आनन्द में बढ़ी; वेय् पुनर्पूचमुम्–बाँस नाम का पुनर्वसु नक्षत्र; विण् उळोर् पुकऴ्–देवों से प्रशंसित; तूय कर्क्कटकमुम्–पवित्र कर्क राशि; ऍऴुन्तु तुळ्ळ–उठकर उछल पड़ी—तब। २८१

फिर शिशु-जन्म का समय आया। विशाल भूमि की (अधिष्ठात्री) देवी उल्लसित हुईं। बांस या पुनर्वसु नक्षत्र और सुर-प्रशंसित पवित्र कर्क राशि उदीयमान हुई। (तमिऴ में बांस पुनर्वसु का पर्यायवाची समझा जाता है।)। २८१

शित्तरु मियक्करुन् दॆरिवै मार्हळुम्, वित्तह मुऩिवरुम् विण्णु ळोर्हळुम्
नित्तरु मुऱैमुऱै नॆरुङ्गि यार्प्पुऱत्, तत्तुऱ लॊऴिन्दुनी डरुम मोङ्गवे 282

चित्तरुम्–सिद्ध और; इयक्करुम्–यक्ष और; तॆरिवै मार्कळुम्–यक्ष-स्त्रियाँ; वित्तक मुऩिवरुम्–ज्ञानी मुनि लोग; विण् उळोर्कळुम्–सुरलोक वासी; नित्तरुम्–(श्रीमन्नारायण के वैकुंठलोक में नित्य उनके साथ रहनेवाले चरण-सेवी) गरुड़, विश्वक्सेन आदि नित्यसूरि; मुऱै मुऱै नॆरुङ्कि–पंक्तियों में इकट्ठा होकर; आर्प्पुऱ–आनन्द-घोष करते तब; नीळ् तरुमम्–प्राचीन धर्म; तत्तु उऱल्–लड़खड़ाना; ऒऴित्तु–छोड़कर; ओङ्क–बढ़ा जब । २८२

सिद्ध, यक्ष, यक्षिणियाँ, ज्ञानी मुनि, देवता लोग, नित्यसूरि, गरुड़, विश्वक्सेन, आदि (जो श्रीवैकुंठलोक के श्रीमन्नारायण के अमर चरण-सेवी हैं) पंक्तियों में जुटकर आनन्द का कोलाहल मचाने लगे। धर्म भी अपनी शिथिलता छोड़कर बढ़ने लग गया । २८२

ऒरुपह लुलहॆला मुदरत् तुट्पॊदिन्
दरुमऱैक् कुणर्वरु मवऩै यञ्जऩक्
करुमुहिऱ् कॊऴुन्दॆऴिल् काट्टुञ् जोदियैत्
दिरुवुऱप् पयन्दऩ डिऱङ्गॊळ् कोसलै 283

तिऱम् कॊळ् कोचलै–उत्तम गुणशीला कौसल्या (ने); ऒरु पकल्–(पहले, प्रलय के) एक दिन; उलकु–लोक; ऎलाम्–सभी को; उतरत्तु उळ् पॊतित्तु–उदरस्थ कर लिया, (जिन्होंने) उनको; अरुमऱैक्कु उणर्वु अरुम्–समर्थ वेदों के लिये भी अग्राह्य; अवऩै–उन देव को; अञ्चऩम्–अंजन; करुमुकिल् कॊऴुन्तु–काले मेघों की छटा; ऎऴिल काट्टुम्–इनकी सुन्दरता को अपने शरीर में दिखानेवाले; चोतियै–ज्योतिस्वरूप को; तिरु उऱ–(लोक-) कल्याण साध्य करते हुए; पयन्तऩळ्–जन्म दिया । २८३

उस शुभ-लग्न में बड़ी भाग्यवती, और समर्थ देवी कौशल्या ने उनको, जिन्होंने सारे लोकों को एक दिन (प्रलय के अवसर पर) अपने उदर में छिपा रखा था; जिनको वेद भी प्राप्त नहीं कर पाते; और जो अंजन और काले मेघों की छटावाले हैं, उन ज्योतिर्मय देव को पुत्र के रूप में जन्म दिया । २८३

आशयुम् विशुम्बुनिऩ् ऱमर रार्त्तॆऴ
वाशवऩ् मुदलिऩर् वणङ्गि वाऴ्त्तुऱप्
पूशमु मीऩमुम् पॊलिय नल्हिनाळ्
माशऱु केहयऩ् मादु मैन्दऩै 284

माचु अऱु–अकलंक; केकयऩ्मातु–केकयतनया ने; अमरर्–देवगण; आचैयुम् विचुम्पुम् निऩ्ऱु–दिशाओं में और आकाश में खड़ा होकर; आर्त्तु ऎऴ–शोर कर उठे; वाचवऩ् मुतलिऩर्–वासव आदि; वणङ्कि वाऴ्त्तुऱ–विनत हो स्तुति करें;

पूचमुम् मीऩमुम्–पुष्य नक्षत्र और मीन राशि; पॊलिय–प्रकाशमान हों (ऐसा); मैन्तऩै–पुत्र को; नल्किऩाळ्–जन्म दिया। २८४

बाद में पुष्य नक्षत्र और मीन राशि के सुलग्न में अकलंक केकय-पुत्री कैकेयी ने एक बालक को जन्म दिया। तब देवगणों ने दिशा-दिशा में और आकाशभर में खड़े होकर आनन्दरव किया। वासव (इन्द्र) ने सिर नवाकर स्तोत्र पढ़ा। २८४

तळैयविऴ् तरुवुडैच् चैल कोपऩुम्, किळैयुमन् दरमिशैक् कॊऴुमि आर्त्तॊऴ
अळैपुहु मरविऩो डलवऩ् वाऴ्वुऱ, इळैयवऩ् पयन्दऩ ळिळैय मॆऩ्गॊडि 285

तळै अविऴ्–पंखुड़ियाँ खिले; तरु उटै–(पुष्पवाले) कलपक-तरुओं (के वन के) स्वामी; चैलकोपऩुम्–शैलकोप (इन्द्र); किळैयुम्–उनके बन्धु; अन्तरम् मिचै कॊऴुमि–आकाश में एकत्र होकर; आर्त्तु ऍऴ–शोर कर उठे; अळै पुकुम् अरविऩोटु–बिल में घुसनेवाले सर्प (आश्लेषा नक्षत्र) के साथ; अलवऩ्–कर्क (राशि) भी; वाऴ्वुऱ–(उत्कृष्ट) जीवन पा जाये ऐसा; इळैय मॆऩ् कॊटि–छोटी और कोमल लता (समाना देवी) ने; इळैयवऩ्–अनुज (लक्ष्मण) को; पयन्तऩळ्–जन्म दिया। २८५

छोटी रानी, सुन्दर लता-समान सुमित्रा ने एक शिशु को जनाया। तब नन्दनवन के स्वामी, शैलकोप इन्द्र और उसके साथी आकाश में एकत्र होकर आनन्द-घोष कर उठे। सर्पाकार के आश्लेषा नक्षत्र और कर्क राशि का भाग्य जागा क्योंकि उसी सुलग्न में सुमित्रादेवी के पहले पुत्र (लक्ष्मण) ने जन्म लिया था। २८५

पडङ्गिळर् प.ःऱलैप् पान्दळॆन्दु पार्
नडङ्गिळर् तरमऱै नविल नाडहम्
मडङ्गलु महमुमे वाऴ्वि ऩोङ्गिड
विडङ्गिळर् विऴियिऩाण् मीट्टु मीऩ्ऱऩळ् 286

पटम् किळर्–फन-फैलाये; पल् तलै–अनेक (सहस्र) सिरों के; पान्तळ्एन्तु–शेषनाग से धृत; पार्–भूमि के; नटम् किळर्तर–(आनन्द का) नर्तन कर उठते; नाटु अकम्–देश भर में; मऱै नविल–वेद पारायण होते; मटङ्कलुम्–सिंह (राशि) और; मकमुम्–मघा (नक्षत्र); वाऴ्विऩ् ओङ्किट–जीवन में उत्थित हुए; विटम् किळर् विऴियिऩाळ्–विष-सम काले नेत्रवाली (सुमित्रा) ने; मीट्टुम्–फिर एक (बार); ईऩ्ऱऩळ्–(एक पुत्र को) जन्म दिया। २८६

सहस्र-फणी आदिशेषनाग से धृत यह भूमि आनन्द से नर्तन करने लगी; देश भर में वेद पारायण हुआ। सिंह राशि और मघा नक्षत्र के भाग्य को जगाते हुए सुमित्रा देवी ने और एक पुत्र को जन्म दिया। २८६

आडिन ररम्बय रमुद वेळ्िशै, पाडिऩर् किऩ्ऩरर् तुवैत्त पल्लियम्
वीडिऩ ररक्करॆऩ् ऱुवक्कुम् विम्मलाल्, ओडिऩ रुलाविऩ रुम्बर् मुऱ्ऱुमे 287

अरक्कर् वीटिऩर् ऎऩ्ऱु–राक्षस मर गये—यह निश्चय कर; उवक्कुम् विम्मलाल्–आनन्द की बढ़ती से; अरम्पैयर् आटिऩर्–अप्सराएँ नाचीं; किऩ्ऩरर्–किन्नर जाति के लोग; अमुतम् एळ् इचै–अमृत समान सप्तस्वरोंवाले मधुर गान; पाटिऩर्–गाये; पल इयम् तुवैत्त–अनेक वाद्य बज उठे; उम्पर् मुऱ्ऱुम्–देवता सब; ओटिऩर्–इधर-उधर दौड़े; उलाविऩर्–घूमे । २८७

इनके जन्म से सर्वत्र अपार आनन्द फैल गया । राक्षस अब अवश्य मिट जायेंगे—इस विश्वास से अप्सराएँ नाचने गाने लगीं । किन्नर सप्तस्वर वाले अनेक गीत गाये । अनेक वाद्य बजाये । आकाश भर में देवों का कोलाहल और उनकी उछल-कूद मची रही । २८७

ओडिऩ ररशऩ्माट् टुवहै कूऱिनिऩ्, ऱाडिऩर् शिलदिय रऩ्द णाळर्हळ्
कूडिऩर् नाळॊडु कोळु निऩ्ऱमै, नाडिऩ रुलहिऩि नवैयिऩ् ऱॆऩ्ऱऩर् 288

चिलतियर्–दासियाँ; अरचऩ् माट्टु–महाराज के पास; ओटिऩर्–दौड़ीं; उवकै कूऱि निऩ्ऱु–(अपना) सन्तोष बताकर, खड़ी हो; आटिऩर्–नाचीं; अन्तणाळर्कळ्–(पुरोहित आदि) ब्राह्मण; कूटिऩर्–एकत्र हुए; नाळॊटु कोळुम् निऩ्ऱमै–नक्षत्रों और ग्रहों की स्थिति; नाटिऩर्–शोध की; उलकु इऩि नवै इऩ्ऱु–संसार का अब कोई दुख नहीं; ऎऩ्ऱऩर्–कहा । २८८

तब दासियाँ महाराज के पास दौड़ीं । संतोष-समाचार कहते-कहते वे स्वयं अपने को भूलकर नाचने लग गयीं । पुरोहितों ने मिलकर जन्म-नक्षत्र, लग्न आदि का शोध किया और उनको विदित हुआ कि अब संसार को कोई दुख नहीं होगा । २८८

(इसके बाद दो अतिरिक्त पद हैं जिनका सार यों है— श्रीरामजन्म का मास मेष था; तिथि नवमी थी; नक्षत्र पुनर्वसु; लग्न मर्कट था; ग्यारहवें गृह में चार ग्रह उच्च थे । फिर जन्मपत्रियाँ तैयार हुईं । तमिळ्नाडु में क्रमशः मेष, ऋषभ, मिथुन आदि (राशियों के ही नाम) चैत्र आदि बारह मासों के स्थान पर प्रचलित हैं । ये संकल्प-मास कहे जाते हैं और सौर गणना के आधार पर हैं ।)

मामुऩि तऩ्ऩॊडु मऩ्ऩर् मऩ्ऩवऩ्, एमुऱु पुऩल्पडीई वित्तॊ डिऩ्पॊरुळ्
तामुऱ वळङ्गिवॆण् शङ्ग मार्प्पुऱक्, कोमहार् तिरुमुहङ् गुरुहि नोक्किऩाऩ् 289

मऩ्ऩर् मऩ्ऩवऩ्–राजाओं के राजा ने; एम् उऱु पुऩल् पटीइ–आनन्द-दायक (सरयू-) जल में स्नान करके; वित्तॊटु–बीज के साथ; इऩ् पॊरुळ् ताम्–सन्तोषप्रद वस्तुएँ; उऱ वळङ्कि–खूब दान देकर; वॆण् चङ्कम् आर्प्पुऱ–श्वेत शंखों के मंगलनाद करते; मा मुऩि तऩ्ऩॊटु–महान मुनि के साथ; कुऱुकि–जाकर; कोमकार् तिरु मुकम्–राजपुत्रों के श्रीमुख; नोक्किऩाऩ्–निहारे । २८९

महाराज ने यह अत्यन्त आनन्ददायक समाचार सुना । वे जाकर सरयू के सुखावह जल में स्नान कर आये । फिर बीज (धान का) और

धन का दान दिया। शंख आदि मंगल वाद्यों के बजते राजा ने वसिष्ठ महर्षि को साथ ले जाकर राजकुमारों का मुख देखने का रस्म अदा किया। २८९

इऱैतविर्न् दिडुहपार् याण्डॉ रेऴ्निदि, निऱैदरु शालैता णीक्कि यावैयुम्
मुऱैहॅड वऱियवर् मुहन्दु कॉळ्हॅना, अऱैपऱै यॅऩ्ऱऩ ऩरशर् कोमहऩ् 290

अरचर् कोमकऩ्–राजाधिराज; याण्टु ओर् एऴ्–सात सालों तक; पार्–राज्य भर में; इऱै तविर्न्तिटुक–राजकीय कर वसूले न जायँ; निति निऱै तरु चालै–निधियों से पूर्ण हमारे कोष; ताऴ् नीक्कि–ताला हटाकर; वऱियवर्–गरीब लोग; यावैयुम्–सब (धन) को; मुऱै कॅट–नियम तोड़कर; मुकन्तु कॉळ्क–उठा लें; ॲऩा–ऐसा; पऱै अऱै–ढिंढोरा पिटवा दो; ॲऩ्ऱऩऩ्–(ढिंढोरा पीटनेवालों को) यह आज्ञा दिलायी। २९०

चक्रवर्ती ने जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में यह घोषणा करवा दी कि सात साल तक लगान की माफ़ी होगी। कोषों के ताले खोल दिये जायंगे; गरीब लोग नियमों का उल्लंघन करके जितना चाहे ले लें। २९०

पडैयॉऴिन् दिडुहदम् बदिह ळेयिऩि, विडैपॅऱु हुहमुडि वेन्दर् वेदियर्
नडैयुऱु नियममु नवैयिऩ् ऱाहुह, पुडैहॅऴु विऴावॊडु पॊलिह वॅङ्गणुम् 291

पटै ऑऴिन्तिटुक–अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग बन्द हो; मुटि वेन्तर्–(बन्दी बनाये गये) राजा लोग; इऩि–अब; तम् पतिकळे विटै पॅऱुकुक–अपने-अपने देश (गमन) के लिए विदा ले लें; वेतियर्–वेदविप्रों के; नटै उऱु नियममुम्–आचरणों के नियम; नवै इऩ्ऱु आकुक–विना दोष के चलें; पुटै ॲङ्कणुम्–सभी ओर; कॅऴु विऴावॊटु–कोलाहलमय उत्सवों के साथ; पॊलिक–चमके। २९१

दशरथ ने और भी घोषणा करा दी कि हथियार (अस्त्र-शस्त्र) का व्यवहार बन्द रहे। बन्दी बने हुए राजा लोग मुक्त हो अपने राज्य में चले जायँ। वेदपाठी ब्राह्मणों के अनुष्ठान में कोई बाधा न पड़े। सब ओर उत्सव की चमक हो। २९१

आलयम् पुदुक्कुह वन्द णाळर्दम्, शालैयुम् चतुक्कमुञ् जमैक्क शन्दियुम्
कालयु मालैयुङ् गडवु ळोर्क्कणि, मालयुन् दूबमुम् वऴङ्ग वॅऩ्ऱऩऩ् 292

आलयम्–मन्दिरों को; पुतुक्कुक–नवीन बनाओ; अन्तणाळर् तम् चालैयुम्–अग्रहारों (ब्राह्मणों की वीथियों) को; चतुक्कमुम्–चौकों को; चमैक्क–बनाओ; चन्तियुम्–संध्या समय; कालैयुम् मालैयुम्–प्रातः और शाम; कटवुळोर्क्कु–देवताओं के; अणि–अलंकार के लिये; मालैयुम्–पुष्प मालाओं को (और); तूपमुम्–धूप की सामग्रियों को; वऴङ्क–दो; ॲऩ्ऱऩऩ्–कहा। २९२

देवालयों का सुधार-संस्कार हो; अग्रहारों की सड़कें दुरुस्त की जायं। प्रातः और सायं संध्याओं में देवताओं के अलंकार के लिये पुष्पमालाओं का और पूजा के धूप आदि का प्रबन्ध हो। २९२

अॅऩ्बुऴि वळ्ळुवर् याऩै मीमिशै
नऩ्बऱै यऱैतर नहर मैन्दरुम्
मिऩ्बिऱऴ् नुशुप्पिऩार् तामुम् विम्मलाल्
इऩ्बमॅऩ् ऩळक्करु मळक्क ऍय्दिऩार् 293

अॅऩ्पुऴि–(यह आज्ञा) कहते ही; वळ्ळुवर्–ढिंढोरा पीटनेवालों ने; याऩै मीमिचै–हाथियों पर रख; नऩ् पऱै अऱैतर–खूब ढिंढोरा पीटा; नकर मैन्तरुम्–नगर के पुरुष, और; मिऩ् पिऱऴ् नुचुप्पिऩार् तामुम्–विद्युल्लता सी कमरवाली स्त्रियाँ; विम्मलाल्–आनन्दातिरेक से; इऩ्पम् अॅऩ्ऩ्–सुख नाम के; अळक्क अरुम्–अथाह; अळक्कर्–समुद्र में; अॅय्तिऩार्–मग्न हुए। २९३

ढिंढोरा पीटने वालों ने हाथी पर बैठ ढोल बजाबर यह मुनादी सुनायी तो नगर के पुरुष और स्त्रियाँ सब आनन्द-सागर-मग्न हुए। २९३

आर्त्तऩर् मुऱैमुऱै यऩ्बि ऩालुडल्
पोर्त्तऩ पुळहम्वेर् पॉडित्ल नीणिदि
तूर्त्तऩ ऍदिरॅदिर् शॊल्लि ऩार्क्कॅलाम्
तीर्त्तऩॅऩ् ऱऱिन्ददो ववर्तञ् जिन्दैये 294

मुऱै मुऱै–दल बाँधकर; अऩ्पिऩाल्–प्रेम से; आर्त्तऩर्–शोरगुल मचाया; उटल्–उनके शरीर; पुळकम् पोर्त्तऩ–पुलक से ढँक गये; वेर्वै पॉटित्त–स्वेद कण उठे; अॅतिर् अॅतिर् चॊल्लिऩार्क्कु अॅलाम्–सामने आकर जिन किन्हींने समाचार सुनाया उन सब को; नीळ् निति तूर्त्तनर्–अधिक धन लुटाया; अवर् तम् चिन्तै–उनके मन ने; तीर्त्तऩ् अॅऩ्ऱु–स्वयं तीर्थंकर (विष्णु) हैं, यह; अऱिन्ततो–जान लिया क्या शायद। २९४

वे प्रेम के कारण शोरगुल मचाने लगे। उनके शरीर पुलकित हुए। उनकी देह स्वेद-कण-भरी हो गयी। सामने आकर जिस किसी ने यह संतोष-समाचार सुनाया, उसे लोगों ने अत्यधिक दान दिया। (उन्होंने पहले ही यह समाचार जाना था लेकिन इससे उनका हाथ नहीं रुका)। २९४

पण्णयु मायमुन् दिरळुम् बाङ्गरुम्, कण्णहऩ् ऱिरुनगर् कळिप्पुक् कैमिहुन्
दॅण्णॅयुङ् गळबमु मिऴुदु नाऩमुम्, शुण्णमुन् दूविऩर् वीदि तोऱुमे 295

कण् अकल् तिरुनकर्–विशाल, श्री-समृद्ध नगर में; कळिप्पु कैमिकुन्तु–आनन्द का ठिकाना नहीं रहा, इसलिए; पण्णैयुम्–नायिकाएँ (श्रेष्ठ स्त्रियाँ); आयमुम्–सखियाँ; तिरळ्–नायक (उच्चकुल के पुरुष); पाङ्करुम्–उनके सखा; अॅण्णॅयुम्–सुगन्धित तेल; कळपमुम्–चन्दन; इऴुतुम्–घी और; नाऩमुम्–कस्तूरी; चुण्णमुम्–(सुगन्धित) चूर्ण को भी; वीति तोऱुम्–सड़क-सड़क पर; तूविऩर्–छिड़का। २९५

उस विशाल नगर में, गली-गली में, लोगों ने मंगल द्रव्य छिड़के। समाज के नेता लोग और उनके सखा, नायिकाएँ और उनकी सखियाँ—सबों ने उमड़ते आनन्द के साथ जहाँ-तहाँ सुगन्धित तेल, चन्दन, कस्तूरी और गन्धचूर्ण छिड़के। २९५

इत्तहै माऩह रीरऱु नाळुम्, शित्तमु ऱुङ्गळि योडुशि ऱन्दे
तत्तमै यॉऩ्ऱु मुणर्न्दिलर् ताविऩ्, मॅय्त्तव ऩामम् विदिप्प मदित्ताऩ् 296

मा नकर–महान नगर (के लोग); इ तकै–इस रीति से; ईर् अऱु नाळुम्–दो के छः दिन; चित्तम् उऱु–मन में हुये; कळियोटु–आनन्द के साथ; चिऱन्तु–उत्कृष्ट बनकर; तम् तमै–अपनी-अपनी; ऑऩ्ऱुम् उणर्न्तिलर्–कुछ सुध नहीं रक्खी; ता इल्–अकलंक; मॅय तवऩ्–सत्यवान तपस्वी (वसिष्ठ) ने; नामम् वितिप्प–नामकरण करने की बात; मतित्ताऩ्–सोची। २९६

उस नगर में बारह दिन तक ऐसे आनन्द का बोलबाला था कि लोग अपने को एकदम भूल गये। तब कर्तव्य-निष्ठ और सत्यवान वसिष्ठ जी ने निश्चय किया कि अब नामकरण का कर्म होना चाहिए। २९६

करामलै यत्तळर् कैक्किरि यॅय्त्ते, अरावणै यिऱ्ऱुयिल् वोयॅऩ वन्नाळ्
विरावि यळित्तरुण् मॅय्प्पॉरु ळुक्के, इराम ऩॅऩप्पॅय रीन्दऩ ऩऩ्ऱे 297

करा मलैय–मगर के लड़ने से; तळर्–शिथिल हुए; कै क्रिरि–गिरि सम गज; ऍय्त्तु–समझ-बूझकर; अरा अणै तुयिल्वोय् ऍऩ–शेष-शय्या पर सोनेवाले, ऐसा पुकारने पर; अ नाळ्–उस दिन; विरावि–आकर; अळित्तरुळ–बचाया जिन्होंने उनको; एय्–योग्य रहनेवाले; इरामऩ् ऍऩ् अ पॅयर् ईन्तऩ्–श्रीराम का वह नाम रखा। २९७

‘शेष-शायी!’ पुकारने पर जिन्होंने आकर, मगर-ग्रस्त और निर्बल हुए गजेन्द्र की रक्षा की थी उन्हीं के अवतार हैं—यह समझकर उन्होंने कौशल्या के पुत्र को श्रीराम का नाम धरा। २९७

करदल मुऱ्ऱॉळिर् नॅल्लि कडुप्प, विरद मऱैप्पॉरुण् मॅय्न्नॅऱि कण्ड
वरद ऩुदित्तिडु मऱ्ऱैय वॉळियैप्, परद ऩॅऩप्पॅयर् पऩ्ऩिऩ ऩऩ्ऱे 298

विरतम् मऱै पॉरुळ्–यज्ञ-बोधक वेदों का अर्थ; करतलम् उऱ्ऱु ऑळिर्–करतल में साफ दिखनेवाले; नॅल्लि कटुप्प–आमलक के समान; कण्ट–(जिन्होंने) जाना था, उन; वरतऩ्–वरदायी ने; उतित्तिटुम्–उदित; मऱ्ऱैय–दूसरे; ऑळियै–प्रकाश-पुंज को; परतऩ् ऍऩ–भरत का; पॅयर् पऩ्ऩिऩऩ्–नाम दिया। (अऩ्ऱु, ए, निरर्थक ध्वनियाँ)। २९८

वसिष्ठ जी यज्ञादि कर्मों के विधायक वेदों के अर्थ को करतलामलकवत जानते थे। अतः उन्होंने श्रीराम के जन्म के बाद पैदा हुए कैकेयी देवी के पुत्र को भरत नाम दिया। २९८

उलक्कुनर् वञ्जह रुम्ब रुयर्न्दार्, निलक्कॉडि युन्दुयर् नीत्तऩ ळिन्द
विलक्करु मॊय्म्बिऩ् विळङ्गॉळि नामम्, इलक्कुव ऩॅन्ऩ विशैत्तऩ ऩऩ्ऱे 299

वञ्चकर् उलक्कुऩर्–वंचक (राक्षस) मरनेवाले हो गये; उम्पर् उयर्न्तार्–देव उठे हुए (चिन्ताहीन) हो गये; निलम् कॉटियुम्–भूदेवी ने भी; तुयर् तीर्त्तऩळ्–दुख त्याग दिया; विलक्क अरु–दुद्धर्ष; मॉय्म्पिऩ्–बली; इन्त विळङ्कु ऑळि–

इस प्रकाशमान ज्योति-पुंज का; नामम्–नाम; इलक्कुवन्–लक्ष्मण है; ॲन्ऩ–ऐसा; इचैत्ततन्–बतलाया (महर्षि ने)। २९९

राक्षसों का नाश निकट आ गया। अब देवगणों के दिन फिर गये। भूमिदेवी भी दुख-विमुक्त हुई। ऐसी स्थिति के लिये हेतु बनने वाले थे सुमित्रादेवी के पहले पुत्र, वसिष्ठ जी ने उन ज्योति-स्वरूप सुन्दर पुत्र को लक्ष्मण कहकर पुकारा। २९९

मुत्तुरुक् कॉण्डुशॅम् मुळरि यलर्न्दाल्
ऑत्तिरुक् कुम्मॅळि लुडैयविव् वॉळियाल्
ॲत्तिरुक् कुड्गॅडु मॅन्बदै यॅण्णाच्
चत्तुरुक् कन्ऩॅन्च् चार्रिन नामम् 300

मुत्तु उरु कॉण्टु–मोती ने एक रूप धरा; चॅम्मुळरि–लाल कमल; अलर्न्ताल्–उस पर खिले; ऑत्तु इरुक्कुम्–वैसा रहनेवाली; ॲळिल्–सुन्दरता से युक्त; इ ऑळियाल्–इस ज्योति से; ॲ तिरुक्कुम् कॅटुम्–कोई भी शत्रु मिट जायगा; ऍन्पतै–इसको; ॲण्णा–मन में सोचकर; चत्तुरुक्कन् ॲन्न–शत्रुघ्न का; नामम् चार्रितन्–नामकरण किया। ३००

उनके भाई भी बड़े सुन्दर ही नहीं, पराक्रमी भी दिखते थे। समझिये कि एक मोती ने सुन्दर शिशु का रूप लिया और उस पर लाल कमल के फूल खिले हैं। उस मोती के समान थे वह तेजोमय पुत्र। लक्षण ऐसे थे कि कोई भी शत्रु बच नहीं सकता था। इसलिए महर्षि ने उनका नामकरण ‘शत्रुघ्न’ किया। ३००

पॉय्वळि यिन्मुनि पुहऴ्रु मऱैयाल्, इव्वळि पॅयर्ह ळिशैत्तुळि यिरैवन्
कैवळि निदियॅनु नदिहलै मरैयोर्, मॅय्वळि युवरिनि ऱैत्तन मेन्मेल् 301

पॉय्वळि–असन्मार्ग; इल् मुनि–(जिनका कभी) नहीं, वे मुनि; पुकल् तरु मऱैयाल्–सुप्रकीर्तित, वेद-मन्त्रोच्चारण के साथ; इ वळि पॅयर्कळ्–ऐसे नाम; इचैत्तुळि–जब रखे; इऱैवन्–चक्रवर्ती के; कैवळि निति ॲन्नुम् नति–हाथों द्वारा दान की हुई निधिरूपी नदियाँ; कलै मऱैयोर्–शास्त्रज्ञ वेदपाठियों के; मॅय् वळि उवरि–तत्वार्थ भरे (उनके) मनरूपी सागर को; मेल् मेल् निरैत्तन–उत्तरोत्तर भरने लगीं। ३०१

महर्षि वसिष्ठ ने, जो भूलकर भी असत्याचरण नहीं करते थे, वेदोच्चारण के साथ (या वेद-विहित रीति से) राजकुमारों का नामकरण-संस्कार किया। तब राजा ने वेदशास्त्रियों को अर्थ (धन) दान दिया। अर्थ-दान क्या था, वह तो नदी थी जो ब्राह्मणों के हाथों से होकर बही और उसने उनके सच्चे अर्थों (तात्विक ज्ञान) से भरे मन को और भी पूरा किया। ३०१

कावियु मॊळिर्तरु कमलमु मॆऩ्ऩवे, ओविय वॆऴिलुडै यॊरुवऩै यलदोर्
आवियु मुडलमु मिलदॆऩ वरुळिऩ्, मेविऩ ऩुलहुडै वेऩ्दर्तम् वेऩ्दऩ् 302

उलकु उटैय–संसार को अपने अधीन रखनेवाले; वेन्तर्तम् वेन्तऩ्–राजाओं के राजा (ने); कावियुम्–कुवलय और; ऒळितरुम् कमलमुम् ऎऩ्ऩ–(उनके मध्य) शोभायमान कमल हैं, ऐसे सुदर्शन; ओवियम् ऎऴिल् उटैय–चित्र की सी सुन्दरता से युक्त; ऒरुवऩै अलतु–अनुपम उनको (श्रीराम को) छोड़; ओर आवियुम् उटलमुम् इलतु–कोई प्राण नहीं, शरीर नहीं, ऐसा; अरुळिऩ् मेविऩऩ्–प्रेम के साथ रहे । ३०२

नीलोत्पल और कमल पुष्पों के जमघट के समान और सुन्दर चित्र-सम रहे श्रीराम पर राजा दशरथ इतना प्रेम रखते थे मानों श्रीराम को छोड़ उनके अपने अलग प्राण या शरीर नहीं हों । ३०२

अमिर्दुहु कुदलैयॊ डणिनडै पयिलात्, तिमिरम तऱवरु तिऩकर ऩॆऩ्ऩवुम्
तमरम दुडऩ्वळर् चतुमऱै यॆऩ्ऩवुम्, कुमरर्ह णिलमहळ् कुऱैवऱ वळर्नाळ् 303

कुमरर्कळ्–कुमार; अमिर्तु उकु–अमृत उड़ेलनेवाली; कुतलैयॊटु–तुतली बोलियों के साथ; अणि नटै पयिला–सुन्दर लड़खड़ाती चाल (में चलने) का अभ्यास करते हुए; तिमिरम् अतु अऱ वरु–अन्धकार दूर करते आनेवाले; तिऩकरऩ् ऎऩ्ऩवुम्–दिनकर के समान और; तमरम् अतु वळर्–(मौखिक रूप से) ध्वनि द्वारा ही बढ़नेवाले; चतुमऱै ऎऩ्ऩवुम्–चार वेदों के समान; निलमकळ् कुऱैवऱ–भूदेवी की चिन्ताएँ दूर करते हुए; वळर् नाळ्–जब बढ़ रहे थे उन दिनों । ३०३

वे राजकुमार अमृत-सम तोतली बोलियाँ बोलते हुए और सुन्दर अस्थिर चाल से चलना सीखते हुए, तिमिर-नाशक सूर्य के समान और "स्वरों" के साथ (श्रवण द्वारा) बढ़नेवाले चतुर्वेद के समान बढ़ने लगे । ३०३

चवुळमॊ डुपनय ऩमुमुऱै तरुहुऱ्, ऱिवळव दॆऩ्ऩवॊरु करैपिऱि दिलवाय्
उवळरु मऱैयिऩॊ डॊऴिवरु कलैयुम्, तवण्मदि पुऩैयऱ ऩिहर्मुऩि तरवे 304

तवळ् मति पुऩै–धवलचन्द्र-धर; अरऩ् निकर् मुऩि–हर देव के सदृश; मुऩि–मुनि (वसिष्ठ) ने; चवुळमॊटु–चुड़ाकरण के साथ; उपनयऩमुम्–उपनयन संस्कार भी; मुऱै तरुकुऱ्ऱु–क्रम से कराकर; ऒरु करै पिऱितु इल आय्–सीमा रहित हो; उवळ्–विस्तृत; अरु मऱैयिऩॊटु–उत्तम वेदों के साथ; ऒऴिवु अऱ कलैयुम्–हितकारिणी अन्य विद्याएँ भी । ३०४

धवल-चन्द्र के धारण करनेवाले हरदेव-सदृश वसिष्ठ जी ने राजकुमारों के चूड़ाकरण, यज्ञोपवीत आदि संस्कार कराये । बाद अनन्त-विस्तृत वेदों का अभ्यास कराया । और अन्य आवश्यक विद्यायें भी सिखायीं । ३०४

याऩैयु मिरदमु मिवुळियु मुदला, एऩैय पिऱवुमव् वियल्विऩि ऩडैवुऱ्
ऱुऩुरु पडैपल शिलैयॊडु पयिला, वाऩवर् तनिमुदल् किळैयॊडु वळर 305

याऩैयुम्–गज सवारी; इरतमुम्–रथ सारथ्य; इवुळियुम्–अश्वारोहण; मुतला एऩैय–आदि, और ऐसी; पिऱवुम्–अन्य विद्याओं में; अ इयल्पिऩिऩ् अटैवु उऱ्ऱु–यथाक्रम सिद्धहस्त होकर; ऊऩ् उरु पटै–शत्रु-शरीर पर चुभनेवाले हथियार; पल–अनेक; चिलैयॊटु–धनुर्विद्या के साथ; पयिऩ्ऱु–अभ्यास कर; वाऩवर तऩिमुतल्–देवों के आदि हेतु (परम पुरुष); किळैयॊटु वळर–अपने भाइयों के साथ बढ़ते रहे। ३०५

आदिदेव (के अवतार) श्रीराम ने गज, रथ, अश्व (आरोहण) और अन्य विद्याओं में यथा-विधि दक्षता प्राप्त कर ली। शत्रु-मांस-भक्षी अनेक हथियारों को चलाने की विद्या और धनुर्विद्या का भी अभ्यास करते हुए वे अपने भ्राताओं के साथ बढ़ रहे थे। ३०५

अरुमऱै मुऩिवरु ममररु मवऩित्, तिरुवुम नहरुऱै शॅऩमुन मिडरो
डिरुविऩै तुणितरु मिवर्हळि ऩिवणिऩ्, ड्रॊरुपॊऴ्ु दहल्हिल मुऱैयॅऩ वुऱुवार् 306

अरु मऱै मुऩिवरुम्–उत्तम वेदों के ज्ञाता मुनि और; अमररुम्–देव (और); अवऩि तिरुवुम्–भूदेवी; इ नकर् उऱै चॆऩमुम्–इस नगर में रहनेवाले जन भी; नम् इटरोटु–हमारे दुखों के साथ; इरु विऩै–दोनों कर्म; इवर्कळिऩ् तुणि तरुम्–इनके द्वारा काटे जायँगे; इवण् निऩ्ऱु–यहाँ से; ऒरु पॊऴुतु–कभी भी; उऱै अकल्किलम्–रहना छोड़ेंगे नहीं; ऎऩ–ऐसा (निश्चय कर); उऱुवार्–(वहीं) रहते हैं। ३०६

वेदज्ञ मुनि, अमर, भूदेवी और नगर के प्रजाजन सब यह विचार कर कि इन राजकुमारों के सान्निध्य से हमारे दुख और दुखों के कारणभूत कर्म कट जायेंगे; हम यहाँ से नहीं हटेंगे! निश्चिन्त रह गये। ३०६

ऐयनु मिळवलु मणिनिल महडऩ्, शॅय्दव मुडैमैह डॆरिदर नदियुम्
मैदवऴ् पॊऴिल्हळुम् वावियु मरुवि, नॅय्हुऴ लुऱुमिऴै यॆऩनिलै तिरिवार् 307

ऐयऩुम्–प्रभु और; इळवलुम्–अनुज; अणि निल मकळ् तऩ्–सुन्दर भूदेवी की; चॆय् तवम् उटैमैकळ्–की हुई तपस्या का अस्तित्व; तॆरि तर–सब पर प्रकट करते हुए; नतियुम्–नदियों पर; मै तवऴ् पॊऴिल्कळुम्–मेघ-संचरित उपवनों में; वावियुम्–तालाबों में; मरुवि–मिले-जुले; नॅय् कुऴल् उऱुम्–बुनने की ढरकी में पड़े; इऴै ऎऩ–सूत के समान; निलै–पृथ्वी पर; तिरिवार्–घूमते रहे। ३०७

प्रभु श्रीराम और उनके लघुभ्राता लक्ष्मण नदियों के तटों पर, मेघ-संचरित उपवनों में और तालाबों के पास, ढरकी के तागे के समान, साथ-साथ घूमते दिखाई देते थे। उस दृश्य से यह प्रमाणित और प्रकट होता था कि पृथ्वी देवी ने बहुत अधिक तपस्या की थी। ३०७

परदनु मिळवलु मॊरुनॊडि पहिरा, तिरदमु मिवुळियु मिवरिनु मऱैनूल्
उरैतरु पॊऴुदिनु मॊऴिहिल रॆऩैयाळ्, वरदनु मिळवलु मॆऩमरु विऩरे 308

परतऩुम् इळवलुम्–भरत और उनके लघु भाई (शत्रुघ्न); ऒरु नॊटि पकिरातु–एक क्षण भी, अलग न होकर; इरतमुम् इवुळियुम्–रथ और अश्व (पर);

इवरित्तुम्–सवारी करते समय भी; मऱ्ऱै नूल् उरै तरु पॊऴुतिलुम्–वेद शास्त्रार्थ सीखते समय भी; ऒऴिकिलर्–अपृथक; ऎऩ्ऩै आळ् वरतऩुम्–मेरे स्वामी वरद (प्रभु श्रीराम) और; इळवलुम्–लघु भ्राता; ऎऩ्ऩ–समान; मरुविऩर्–संयुक्त रहे। ३०८

उधर भरत और शत्रुघ्न भी इन्हीं भाइयों के समान सदा अपृथक (साथ-साथ) रहते थे। चाहे रथ या अश्व चालन का समय हो, या वेदशास्त्राध्ययन का; एक क्षण भी वियुक्त नहीं होते थे। ३०८

वीरऩु मिळैञरुम् वॆऱिपॊऴिल् कळिऩ्वाय्
ईरमॊ डुऱैदरु मुऩिवर रिडैपोय्च्
चीर्पॊऴु दणिनहर् तुऱुहुव रॆदिर्वार्
कार्वर वलर्पयिर् पॊरुवुवर् कळियाल् 309

वीरऩुम्–वीर (श्रीराम) और; इळैञरुम्–उनके छोटे भाई; वॆऱि पॊऴिल् कळिऩ् वाय्–सुगन्धपूर्ण उपवनों में; ईरमॊटु उरै तरु–स्नेह के साथ ठहरनेवाले; मुऩिवरर् इटै पोय्–मुनियों के पास जाकर; चोर् पॊऴुतु–(वहाँ रहकर) सूर्यास्त के समय; अणिनकर् तुऱुकुवर्–सुन्दर नगर लौट आ जाते; ऎतिर्वार्–समक्ष मिलनेवाले; कळियाल्–आनन्द से; कार् वर–मेघ के आगमन से; अलर् पयिर्–पनपनेवाले पौधों की; पोरुवुवार्–समानता करते। ३०९

ये पराक्रमी श्रीराम और उनके भाई सवेरे उन दयापूर्ण ऋषियों के पास जाते जो सुगन्धपूर्ण उपवनों (आश्रमों) में रहते थे और उनके सत्संग का लाभ उठाकर सूर्यास्त के समय लौट आते थे। रास्ते में जो भी उनके समक्ष मिलते वे मेघों को देखकर प्रफुल्लित होनेवाले पौधों के समान (आनन्दित हो) जाते थे। ३०९

एऴैय रऩैवरु मिवर्तड मुलैतोय्, कॆऴ्हिळर् मदुहयर् किळैहळु मिळैयार्
वाऴिय रॆऩववर् मऩ्ऩुऱु कडवुळ्, ताऴ्हुवर् कवुशलै तयरद ऩॆऩ्ऩवे 310

एऴैयर् अऩैवरुम्–स्त्रियाँ, सभी; इवर् तट मुलै तोय्–इनके पीन स्तनों के भोगी; कॆऴ् किळर्–खूब प्रवृद्ध; मतुकैयर् किळैकळुम्–बलशाली पुरुषों के समूह भी; कवुचलै तयरतऩ् ऎऩ्ऩ–कौसल्या और दशरथ के समान; इळैयार् वाऴियर् ऎऩ्ऩ–ये कुमार चिरजीव हों, ऐसा; अवर् मऩ्ऩ् उऱु कटवुळ्–अपने इष्टदेवों से; ताऴ्कुवर्–नमस्कार कर (प्रार्थना करते)। ३१०

नगर की सभी स्त्रियाँ और उनके सुडौल स्तनों के भोगी पुरुष कौशिल्या और दशरथ के ही समान अपने इष्टदेवता से यह प्रार्थना करते कि ये राजकुमार चिरंजीव हों। ३१०

कडल्करु मुहिलॊऴिर् कमलम दलरा, वडवरै युडऩ्वरु शॆयलॆऩ मऱ्ऱैयुम्
तडवुद लऱिवरु तऩिमुद लवऩुम्, पुडैवरु मिळवलु मॆऩ्ऩिहर् पुहल्वार् 311

मऱ्ऱैयुम्–वेदों के लिए; तटवुतल् अऱिवु अरु–स्पर्श (प्रत्यक्ष) ज्ञान-अगम्य (अगोचर); तऩि मुतल्वऩुम्–अकेले (अद्वितीय) नायक और; पुटै वरुम् इळवलुम्–

पार्श्व में आनेवाले छोटे भाई; कटल्–समुद्र; करुमुकिल्–काले मेघ; ऑळिर् कमलम् अतु–सुन्दर कमल; अलरा–खिले फूलों के साथ; वट वरै उटऩ् वरु चॅयल्–उत्तरी पर्वत मेरु के साथ आने का काम; ॲऩ्ऩ–ऐसा; निकर् पुकल्वार्–समानता बतलाते। ३११

वेदों के लिये भी अग्राह्य श्रीराम और लक्ष्मण को साथ-साथ आते हुए देखनेवाले लोग उपमा ढूँढ़ते और कहते कि विकसित कमलों से भरकर नीला सागर और श्यामल मेघ उत्तर के (मेरु) पर्वत के साथ मिलकर आ रहे हैं। ३११

ऍदिर्वरु मवर्हळै यॅम्मैयुडै यिऱैवऩ्, मुदिर्तरु करुणैयिऩ् मुहमल रॊळिर
ऍदुविऩै यिडरिलै यिऩिदुनु मऩैयुम्, मदितरु कुमररुम् वलियर्कॊ लॅऩवे 312

ऍम्मै उटै इऱैवऩ्–(मुझे अपना किंकर रखनेवाले) मेरे नायक; ऍतिर् वरुम् अवर्कळै–सामने आनेवाले उनको; मुतिर् तरु करुणैयिऩ्–अत्यन्त करुणा के साथ; मुकम् मलर् ऑळिर–मुख-कमल छिटकाते हुए; ऍतु विऩै–क्या सेवायोग्य काम है; इटर् इलै–कोई कष्ट तो नहीं; नुम् मऩैयुम्–आपकी पत्नियाँ और; मति तरु कुमररुम्–बुद्धिमान पुत्र; इऩितु वलियर् कॊल्–दृढ़-स्वस्थ रहते हैं न; ऍऩ–यह पूछने पर। ३१२

हमारे नाथ श्रीराम अपने समक्ष मिलनेवालों से, बड़ी ही कृपा के साथ प्रफुल्ल-वदन होकर पूछते कि क्या कोई सेवा है जो मैं कर सकूँ? कोई कष्ट तो नहीं है? आपकी पत्नी और होनहार (बुद्धिमान) पुत्र सुदृढ़ स्वस्थ हैं? तब; । ३१२

अ.:.दैय निऩैयॅम दरशॅऩ वुडैयेम्, इ.:.दॊरु पॊरुळल वॅमदुयि रुडनेऴ्
महिदल मुऴुदैयु मुरुहवि मलरोऩ्, उहुबह लळवॅऩ वुरैनऩि पुहल्वार् 313

ऐय–प्रभु; अ.:.तु–वह वैसा ही; निऩै ऍमतु अरचु ऍऩ उटैयोम्–आपको हमने राजा के रूप में पाया है; इ.:.तु–यह (कष्ट रहित रहना); ऑरु पॊरुळ् अल–कोई बात नहीं; ऍमतु उयिरुटऩ्–हमारे प्राणों के साथ; एऴ् मकितलम् मुऴुतैयुम्–सप्तद्विपीय भूलोक को; इ मलरोऩ् उकु पकल् अळवु–इन कमलासन (ब्रह्मा) के नाश होते दिन तक; उरुक–शासित करते रहें; ऍऩ–ऐसा; नऩि उरै–अच्छा उत्तर; पुकल्वार–कहते। ३१३

वे समुचित उत्तर देते कि नाथ! वैसे ही हैं। आपको शासक के रूप में पाने का हमारा भाग्य रहा। फिर इसका (कष्टभागी होने का) कोई प्रश्न ही नहीं (उठता)! आप हमारे प्राणों और सप्तद्वीपीय इस महीतल पर व्रह्मा के आयुकाल तक शासन करते रहें। ३१३

इप्परि शणिऩह रुऱैयुम् यावरुम्, मॅय्प्हऴ् पुऩैदर विळैय वीररुम्
तप्पऱ वडिमलर् तऴुवि येत्तुऱ, मुप्परम् बॊरुळिऩु मुदल्वऩ वैहुऱुम् 314

मूऩ्ऱु परम् पॊरुळितम्–तीनों परम देवों में; मुतल्वऩ्–प्रथम; इ परिचु–

इस प्रकार; अणि नकर्–सुन्दर नगर में; उऱैयुम्–वास करनेवाले; यावरुम्–सभी; मॆय् पुकऴ्–सच्चा यश; पुऩै तर–बखानते; इळैय वीररुम्–छोटे (भाई) वीर; अटि मलर्–चरण कमल; तऴुवि एत्तुऱ–लगकर स्तुति करते; वैकु उऱुम्–वास करते थे । ३१४

इस प्रकार, सुन्दर अयोध्या नगर के सब वासियों द्वारा यथार्थ-स्तुति के पात्र बने, और अपने प्रतापी अनुजों की अपनी चरण-कमल वन्दना स्वीकार करते हुए तीनों आदिदेवों के आदि, परब्रह्म (के अवतार) श्रीराम सुख से जीवनचर्या चला रहे थे । ३१४

6. कैयडैप् पडलम् (हस्त घरन पटल)

अरशर्तम् बॆरुमह ऩहिलम् यावैयुम्, विरशुऱु तऩिक्कुडै विळङ्ग वॆऩ्ऱिशेर्
मुरशॊलि करङ्गिड मुऩिव रेत्तुऱक्, करैशॆय वरियदोर् कळिप्पिऩ् वैहुनाळ् 315

अरचर् तम् पॆरु मकऩ्–राजाधिराज; अकिलम् यावैयुम्–भूलोक सब में; विरचु उऱु–व्याप्त; तऩि कुटै–अकेला छत्र; विळङ्क–शोभायमान होते; वॆऩ्ऱि चेर्–विजयवाहक; मुरचु–नगाड़े के; ऒलि करङ्किट–स्वर के उठ फैलते; मुऩिवर् एत्तु उऱ–मुनियों के प्रशंसा करते; क़रै चॆय अरियतु–अपार; ओर् कळिप्पिऩ्–अकथ आनन्द में; वैकुम् नाळ्–जब रहते थे तब । ३१५

राजाधिराज दशरथ समस्त विश्व को अपने सुयोग्य श्वेत-छत्र की छाया में सुरक्षित रखते हुए, विजयशील नगाड़ों के समुचित वादन के साथ, मुनियों द्वारा अपनी स्तुति सुनाते जाते हुए (साधुवाद के पात्र बनकर) अपार आनन्दमय स्थिति में रहते थे । तब एक दिन; । ३१५

❀ नऩैवरु कऱ्पह नाट्टु नऩ्ऩहर्, वऩैतॊऴिऩ् मदिमिहु मयऱ्कुञ् जिन्तैयाल्
निऩैयवु मरियदु विशुम्बि ऩीण्डदोर्, पुऩैमणि मण्डबम् बॊलिय वॆय्दिऩाऩ् 316

नऩैवरु–कलियों से पूर्ण; कऱ्पकम् नाटु नल् नकर्–कल्पतरुओं से शोभायमान श्रेष्ठ नगर (अमरावती) के; वऩै तॊऴिल् मति मिकु–वास्तु-विद्या-विदग्ध; मयऱ्कुम्–मय के लिये भी; चिन्तैयाल् निऩैयवुम् अरियतु–अचिन्त्य (रीति से सुन्दर); विचुम्पिऩ्–आकाश से बढ़कर; नीण्टतु–ऊँचा; ओर् मणि पुऩै मण्टपम्–एक रत्न-शोभित सभा भवन को; पॊलिय ऎय्तिऩाऩ्–सुशोभित करते हुए पधारे । ३१६

वे अपने सभा-भवन में उसको सुशोभित करते हुए आये । वह सभा-भवन आकाश से भी ऊँचा और रत्नों की सजावट से युक्त था । उसका निर्माण इतने कलाकौशल के साथ हुआ था कि स्वयं मय भी, जो नन्दनवन से युक्त अमरावती नगर के नगर, भवन आदि के निर्माण के कार्य में कुशल थे, अपने मन में इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे । ३१६

❀ तूयमॅल् लरियणैप् पॉलिन्दु तोऩ्रिऩाऩ्
शेयिरु विशुम्बिडैत् तिरियुञ् जारणर्
नायह ऩिवऩ्कॉलॅऩ् ऱयिर्त्तु नाट्टमोर्
आयिर मिल्लैयॅऩ् ऱैय नीङ्गिऩार् 317

तूय मॅल् अरि अणै–पवित्र, कोमल, सिंहासन पर; पॉलिन्तु तोऩ्ऱिऩाऩ्–शोभित हुए; चेय् इरु–ऊँचे और विशाल, विचुम्पु इटै–आकाश में; तिरियुम् चारणर्–संचार करनेवाले देव-चारण (देवों के वर्गों में एक वर्ग के); इवऩ् नायकऩ् कॉल्–ये क्या हमारे अधिपति हैं; ऍऩ्ऱु–ऐसा; अयिर्त्तु–संशय करके; नाट्टम् ओर् आयिरम् इल्लै–आँखें, एक सहस्र नहीं हैं; ऍऩ्ऱु–यह देख; ऐयम् नीङ्किऩार्–सन्देह-विमुक्त हुए। ३१७

राजा दशरथ पवित्र और कोमल (गद्देदार) सिंहासन पर सुशोभित हुए। तब आकाशचारी देव-चारणों को यह संशय होने लगा कि क्या ये हमारे स्वामी देवेन्द्र तो नहीं हैं? पर बाद देखा कि उनके सहस्र नयन नहीं हैं। तब उनका संदेह दूर हुआ। ३१७

❀ मडङ्गल्पोऩ् मॉय्म्बिऩाऩ् मुऩ्ऩर् मऩ्ऩुयिर्
अडङ्गलु मुलहुम्वे ऱमैत्तुत् तेवरो
डिडङ्गॉणाऩ् मुहऩैयुम् पडैप्पॅ ऩीण्डॅऩात्
तॉडङ्गिय तुऩियुरु मुऩिवऩ् ऱोऩ्ऱिऩाऩ् 318

मटङ्कल् पोल् मॉय्म्पिऩाऩ्–सिंह सदृश बलिष्ठ; मुऩ्ऩर्–के समक्ष; मऩ् उयिर् अटङ्कलुम्–जीवराशियाँ सभी; उलकुम्–लोक; वेऱु अमैत्तु–अलग सृष्ट कर; इटम् कॉळ् नाऩ्मुकऩैयुम्–(उन्नत गौरव के) आश्रय चतुर्मुख की भी; पटैप्पॅऩ्–सृष्टि कर दूँगा; ईण्टु ऍऩा–अब, यह कहकर; तॉटङ्किय–जिन्होंने आरम्भ किया वे; तुऩि उऱु मुऩिवऩ्–क्रोधी मुनि (विश्वामित्र); तोऩ्ऱिऩाऩ्–आ प्रकट हुए। ३१८

सिंह-बली उनके सामने क्रोधी स्वभाव के विश्वामित्र आकर प्रकट हुए। इन्हीं विश्वामित्र ने पहले कभी सभी जीवराशियों की और उनसे भरे लोक की अलग से सृष्टि करके, 'देवों की भी और चतुर्मुख की भी अब सृष्टि कर दूँगा—' यह कहकर उसका उपक्रम भी किया था। ३१८

❀ वन्दुमुऩि यॅय्दुदलु मार्बिलणि यारम्
अन्दरत लत्तिरवि यञ्जवॉळि विञ्जक्
कन्दमल रिर्कडवु डऩ्वरवु काणुम्
इन्दिरऩॅ ऩक्कडितॅ ऴुन्दडिप णिन्दाऩ् 319

मुऩि वन्तु ऍय्तलुम्–मुनि के आ पहुँचते ही; मार्पिल् अणि आरम्–वक्ष पर पहने हुए हारों के; अन्तर तलत्तु इरवि अञ्च–गगन प्रदेश के रवि को डराते हुए (रवि के प्रकाश से बढ़कर); ऑळि विञ्च–प्रकाश छिटकाते; कन्तम् मलरिल् कटवुळ्तऩ्–सुवासपूर्ण (कमल) पुष्प पर उदित देव का; वरवु काणुम्–आगमन

देखकर; इन्तिरन् ॲन्न–इन्द्र जैसा; कटितु ॲऴुन्तु–सवेग उठकर; अटि पणिन्तान्–चरणों में नमस्कार किया। ३१८

विश्वामित्र के आते ही राजा कमलासन को देख इन्द्र जैसे तुरन्त उठे। उनके वक्षस्थल-भूषी हार सूर्य को भी डराते हुए (प्रकाश को मन्द करते हुए) हिलकर चमक उठे। वे विश्वामित्र के पैरों पर नत हुए। ३१९

❀ पणिन्दुमणि शॅऱ्ऱुबु कुयिऱ्ऱियविर् पैम्बॊन्
अणिन्ददवि शिट्टिनि दरुत्तियॊ डिरुत्ति
इणैन्दहम लच्चरण रुच्चनैशॆय् दिन्ऱे
तुणिन्ददॆन् विनैत्तॊड रॆन्नत्तॊऴुदु शॊल्लुम् 320

पणिन्तु–नमस्कार करके; मणि चॅऱ्ऱुपु कुयिऱ्ऱु–रत्नों को घने रूप से जड़कर; अविर् पैम्पॊन् अणिन्त–चोखे स्वर्ण (की कारीगरी) से युक्त तविचु इट्टु–आसन लगवाकर; इनितु अरुत्तियॊटु इरुत्ति–सुखपूर्वक, प्रेम के साथ आसीन कराकर; इणैन्त–जोड़े के; कमलम् चरण्–कमल चरणों की; अरुच्चनै–पूजा; चॅय्तु–करके; ॲन् विनै तॊटर्–मेरी कर्म परम्परा; इन्ऱे तुणिन्ततु–आज ही टूट गया; ॲन्न–ऐसा; तॊऴुतु–अंजलिबद्ध होकर; चॊल्लुम्–कहा। ३२०

नमस्कार करके, राजा ने खूब रत्नों से सज्जित एक स्वर्णमयी आसन लगाया और उस पर उनको सुख के साथ आसीन कराया। फिर उनके चरणद्वय में फूल-पूजा की। 'मेरा कर्म-बन्धन आज ही टूट गया' —यह कहते हुए अंजलिबद्ध हो आगे बोले। ३२०

❀ निलञ्जॆय्दव मॆन्ऱुणरि नन्ऱुनॆडि योयॆन्
नलञ्जॆय्विनै युण्डॆनिनु मन्ऱुनहर् नीयान्
वलञ्जॆय्दु वणङ्गवॆऴि वन्दविदु मुन्दॆन्
कुलञ्जॆय्दव मॆन्ऱिनिदु कूऱमुनि कूऱुम् 321

नॆटियोय्–महात्मन्; नी–आप; यान् वलम् चॅय्तु वणङ्क–मैं परिक्रमा करके नमस्कार करूँ, ऐसा (यह सौभाग्य देते हुए); नकर्–इस नगर में; ॲऴिवन्त इतु–सुगम रूप से पधारे, यह; निलम् चॅय्–देश का किया; तवम् ॲन्ऱु–तप है, यह; उणरिन्–मानें तो; अन्ऱु–ऐसा नहीं; ॲन् नलम् चॅय् विनै–मेरा हितकारी कृत्य; उण्टु ॲनिनुम्–है, तो भी; अन्ऱु–वह भी नहीं, (फिर); मुन्तु ॲन् कुलम्–प्राचीन मेरे कुल के; चॅय् तवम्–कृत तप हैं; ॲन्ऱु–ऐसा; इनितु कूऱ–मीठे ढंग से कहने पर; मुनि कूऱुम्–मुनि ने कहा। ३२१

महात्मन्! आप स्वयं, मेरे लिये आपकी परिक्रमा और प्रणमन सुलभ बनाते हुए अनायास पधारे हैं। इस भाग्य का हेतु, मेरे देश का किया तप है—यह कहूँ तो वह नहीं है। मेरा किया हितकारी पुण्य है? वह भी नहीं। पर मेरे प्राचीन कुल के पूर्वजों के किये सुकृत्यों का ही यह फल है! ये मधुर शिष्टता के वचन सुनकर मुनि ने यों कहा। ३२१

❀ ऍऩ्ऩऩैय मुऩिवर्हळु मिमैयवरु मिडैयूऱॊऩ् ऱुडैय राऩाल्
पऩ्ऩहमु नहुवॆळ्ळिप् पऩिवरैयुम् पाऱ्कडलुम् पदुम् पीडत्
तऩ्ऩहरुङ् गऱ्पहनाट् टणिनहरु मणिमाड वयोत्ति ऍऩ्ऩुम्
पॊऩ्ऩहरु मल्लादु पुहलुण्डो विहल्हडन्द पुलवु वेलोय् 322

इकल् कटन्त–शत्रु संहारक; पुलवु वेलोय्–मांस-लिप्त भालेवाले; ऍऩ् अऩैय मुऩिवर्कळुम्–मेरे समान मुनि और; इमैयवर्कळुम्–देव भी; इटैयूऱु–बाधा; ऑऩ्ऱु–कोई एक; उटैयर आऩाल्–पा जावें तो; पल्नकमुम् नकु–अनेक पर्वतों का उपहास करनेवाले; पऩि वॆळ्ळि वरैयुम्–हिम-श्वेत (कैलाश) पर्वत; पाल् कटलुम्–क्षीरसागर; पतुमम् पीटत्तिऩ्–पद्मासन का; नकरुम्–नगर व; कऱ्पकम् नाट्टु अणि नकरुम्–कल्प-तरुओं से शोभायमान (अमरावती) नगर; मणि माटम् अयोत्ति–रत्न-जड़ित प्रासादोंवाला; अयोत्ति ऍऩ्ऩुम् पॊऩ् नकरुम्–अयोध्या नाम का स्वर्ण-नगर; अल्लातु–के सिवाए; पुकल् उण्टो–शरण पाने का स्थान (दूसरा) है क्या ? । ३२२

शत्रु-संहारक मांस-वासित भालावाले ! मेरे समान ऋषियों पर और अमरों पर कोई संकट आवे तो, उनका दूसरा आश्रय कहाँ, सिवाय पर्वतों में श्रेष्ठ कैलाश, क्षीरसागर, ब्रह्मा का नगर, नन्दनवनवाली अमरावती और रत्नसज्जित सौधोंवाली अयोध्या—इनके ? । ३२२

❀ इऩ्ऱळिर्क्कऱ् पहनऱुन्दे ऩिडैतुळिक्कु निऴलिरुक्कै यिऴन्दु पोन्दु
निऩ्ऱळिक्कुन् दऩिक्कुडैयि निऴलॊदुङ्गिक् कुऱैयिरन्दु निऱ्प नोक्किक्
कुऩ्ऱळिक्कुङ् गुलमणित्तोट् चम्परऩैक् कुलत्तोडुन् दॊलैत्तु नीकॊण्
डऩ्ऱळित्त वरशऩ्ऱो पुरन्दरऩिऩ् ऱाळ्हिऩ्ऱ दरश वॆऩ्ऱाऩ् 323

अरच–चक्रवर्ती; पुरन्तरऩ्–इन्द्र; इऩ् तळिर् कऱ्पकम्–मधुर पल्लवों से युक्त कल्पक तरुओं का; नऱु तेऩ्–सुगन्धपूर्ण शहद; इटै तुळिक्कुम्–जिसके ऊपर यत्र-तत्र टपकता है उस; निऴल्–छाया में; इरुक्कै इऴन्तु–वास खोकर; पोन्तु–आकर; निऩ्ऱु अळिक्कुम्–एकरस रहकर लोक-पालन करनेवाले; तऩि कुटै निऴल्–अकेले आपके छत्र की छाया में; ऑतुङ्कि–त्राण पाकर; कुऱै इरन्तु निऱ्प–अपनी प्रार्थना करते हुए खड़े रहने पर; नी आप; नोक्कि–देखकर; कुऩ्ऱु अळिक्कुम्–पर्वत-सम; कुलम् मणि तोळ्–श्रेष्ठ रत्नाभरणालंकृत कन्धोंवाले; चम्परऩै–शंबरासुर को; कुलत्तॊटुम् तॊलैत्तु–कुल के साथ नाश कर; कॊण्टु–इन्द्रलोक लौटा ले; अऩ्ऱु अळित्त–उस दिन (इन्द्र को) जो दिया; अरचु अऩ्ऱो–वह राज्य ही न; इऩ्ऱु–आज; आळ्किऩ्ऱतु–(इन्द्र) शासन कर रहा है; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा । ३२३

चक्रवर्ती ! पुरन्दर को जब पल्लवित कलपक तरुओं की शीतल छाया को, जिस पर उन तरुओं के फूलों का शहद टपकता था, छोड़कर, आपके पास आकर आपकी विश्वरक्षक छत्र-छाया में आश्रय लेना पड़ा और उन्होंने आपसे मिन्नत की, तब आपने ही पर्वत-सम और रत्नमंडित भुजा-वाले शंबरासुर को उसके कुल सहित मारकर इन्द्र का राज्य जीता और पुनः देवेन्द्र को दिया; वही राज तो आज इन्द्र पाल (भोग) रहे हैं । ३२३

❀ उरैशॅय्द वळविलवऩ् मुहनोक्कि युळ्ळत्ति ऩॊरुव रालुम्
करैशॅय्य वरियदॊरु पेरुवहैक् कडल्पॅरुहक् करङ्गळ् कूप्पि
अरशॅय्दि यिरुन्दबय ऩॆय्दिऩॆऩ्मऱ् ऱिऩिच्चॅय्व दरुळु हॆऩ्ऱु
मुरशॅय्दु कडैत्तलैयाऩ् मुऩ्मॊऴियप् पिऩ्मॊऴियु मुऩिव ऩाङ्गे 324

उरै चॅय्त अळविल्–यह कथन करते ही; मुरचु ऍय्तु–तीन नगाड़े जहाँ बजते हैं; कटै तलैयाऩ्–वैसे नगरद्वार वाले; उळ्ळत्तिल्–अपने मन में; ऑरुवरालुम्–किसी के द्वारा भी; करै चॅय्य–ठीक वर्णन करने; अरियतु–अनर्ह; ऑरु पेर् उवकै–एक अतिशय आनन्द के; कटल् पॅरुक–सागर के उमड़ते; अवऩ् मुकम् नोक्कि–उनका मुख देखकर; करङ्कळ् कूप्पि–हाथ जोड़कर; अरचु ऍय्ति इरुन्त पयऩ्–राजपदस्थ हो रहने का फल; ऍय्तिऩॆऩ्–(आज) प्राप्त किया; इऩि–अब; चॅय्वतु अरुळुक–(जो) करना (चाहिये) उसकी आज्ञा कीजिये; ऍऩ्ऱु मुऩ् मॊऴिय–ऐसा उनके पहले कहने पर; आङ्कु–तब; मुऩिवऩ् पिऩ् मॊऴियुम्–पीछे (उत्तर में) मुनि कहने लगे। ३२४

उनके यह कहते ही, दशरथ के, जिनके गढ़ के द्वार पर (दान, मंगल और विजय के सूचक) तीनों प्रकारों के ढोल बजते थे, मन में अपार आनन्द का सागर उमड़ आया। उन्होंने महर्षि से अंजलिबद्ध होकर निवेदन किया कि मुझे अपने शासन-भाग्य का सच्चा फल आज ही प्राप्त हुआ। अब मैं आपकी क्या सेवा करूँ? आज्ञा कीजिये। जब उन्होंने यह उत्तरापेक्षी कथन किया तो ऋषि उत्तर में कहने लगे। ३२४

❀ तरुवऩत्तुळ् याऩियऱ्ऱुम् दहैवेळ्विक् किडैयूऱात् तवञ्जॅय् वोर्हळ्
वॅरुवरच्चॅऩ् ऱडैहाम वॅहुळियॆऩ निरुदरिडै विलक्का वण्णम्
शॅरुमुहत्तुक् कात्तियॆऩ निऩ्शिऱुवर् नाल्वरिऩुङ् गरिय शॆम्मल्
ऑरुवऩैत्तन् दिडुदियॆऩ वुयिरिरक्कुङ् गॊडुङ्गूऱ्ऱि ऩुळैयच् चॊऩ्ऩाऩ् 325

तरु–(साधना का फल) देनेवाले; वऩत्तुळ्–(सिद्ध) वन में; याऩ् इयऱ्ऱुम्–जो मैं करनेवाला हूँ; तकै वेळ्विक्कु–श्रेष्ठ यज्ञ की; इटैयूऱा (क)–बाधा बनकर; तवम् चॅय्वोर् कळ् वॅरुवर–तप करनेवालों को दहलाते हुए; चॆऩ्ऱु अटै–जाकर, अभिभूत करनेवाले; कामम् वॅकुळि ऍऩ–काम और क्रोध के समान; निरुतर्–राक्षस; इटै विलक्का वण्णम्–बीच में आकर न रोकें, इस प्रकार; चॅरु मुकत्तु कात्ति ऍऩ–समरांगण में सामने रहकर बचाओ, यह आज्ञा देकर; निऩ् चिऱुवर् नाल्वरिऩुम्–आपके पुत्र, चार में; करिय चॅम्मल् ऑरुवऩै–श्यामल प्रभु उन अद्वितीय को; तन्तिटुति ऍऩ–मेरे साथ भेजिये यह; उयिर इरक्कुम्–जान की याचना करनेवाले; कॊटुम् कूऱ्ऱिऩ्–क्रूर यम के समान; उळैय–मन को उद्वेलित करते हुए; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। ३२५

सिद्धवन में मैं एक यज्ञ करने जा रहा हूँ। तपस्वियों को भयभीत करनेवाले काम और क्रोध के समान राक्षस आकर उसमें बाधा डालेंगे। उनसे युद्ध करके यज्ञ की रक्षा करने की आज्ञा देकर, आप अपने चार

पुत्रों में श्यामरंग के प्रभु श्रीराम को मेरे साथ भेजिये। महर्षि ने यह बात कही तो ऐसा लगा कि मानों स्वयं यमराज दशरथ से प्राणों की मांग कर रहे हों। राजा का दिल दहल उठा। (सिद्ध वन को कवि ने 'तरु' वन कहा है। तरु का अर्थ तप, यज्ञ आदि का फल देनेवाला है और वृक्ष भी)। ३२५

✻ ऍण्णिला वरुन्दवत्तो ऩियम्बियशॊऩ् मरुमत्ति ऩॅऱिवेल् पाय्न्द
पुण्णिलाम् पॅरुम्पुऴैयिऱ् कऩऩुऴैन्दा लॅऩच्चॅवियिऱ् पुहुद लोडुम्
उण्णिला वियतुयरम् पिडित्तुन्द वारुयिर्निऩ् ऱूश लाडक्
कण्णिलाऩ् पॅऱ्ऱिऴन्दा ऩॅऩवुऴन्दाऩ् कडुन्दुयरङ् गाल वेलाऩ् 326

ऍण् इला—जिनकी गणना नहीं; **अरु तवत्तोऩ्**—कठिन तपस्वी; **इयम्पिय चॉल्**—कहे वचन; **मरुमत्तिऩ्**—मर्मस्थान (वक्षस्थल) में; **ऍऱि वेल् पाय्न्त पुण्णिल्**—फेंके भाले के द्वारा लगे घाव के कारण; **आम्**—बने; **पॅरु पुऴैयिल्**—बड़े गड्ढे में; **कऩल् नुऴैन्ताल् ऍऩ**—जलती हुई लकड़ी घुसी हो जैसे; **चॅवियिल्**—कानों में; **पुकुतलोटुम्**—घुसते ही; **कालऩ् वेलाऩ्**—मृत्यु (सम) भालावाले; **उळ् निलाविय**—अन्तर्व्याप्त; **तुयरम्**—दुख के; **पिटित्तु उन्त**—पकड़कर बाहर ढकेलने से; **आर् उयिर्**—प्यारे प्राणों के; **निऩ्ऱु ऊचल् आट**—आते-जाते (झूलते) रहते; **कण् इलाऩ्**—दृष्टि से हीन; **पॅऱ्ऱु**—प्राप्त कर; **इऴन्ताऩ् ऍऩ**—फिर खो दी, जैसे; **कटु तुयरम्**—कठोर दुख (से); **उऴन्ताऩ्**—पीड़ित हुआ। ३२६

अनन्त और कठिन तपस्वी महर्षि की यह बात राजा के कानों में ऐसी घुसी मानों मर्मस्थान में लगे भाले के बने गहरे घाव में जलती लकड़ी घुसी हो। उनके प्राण मानों उस दुख के द्वारा बाहर निकाले जाने लगे। सुध खोते, फिर पाते ऐसी स्थिति में बहुत दुख उठाने लगे। उनकी स्थिति उस जन्मांध की सी हुई जिसने एक बार दृष्टि पाकर फिर खो दी हो। ३२६

(मूल में 'ऍण्णिला' है जिसका विग्रह 'ऍण् इला' करके अर्थ किया गया है। पर ऍण् इला के स्थान पर 'ऍण् निलावु' भी किया जा सकता सकता है जिसका अर्थ होगा— 'स्मरण जिन में रहा'। तब ऍण् निलावु काल वेलाऩ् होगा। यम सम भालावाले जिनमें इस बात का स्मरण रहा। 'पुत्रवियोग से आपकी मृत्यु होगी'—यह ऋषिशाप था। इसकी कहानी अयोध्याकाण्ड में आती है। वह शाप राजा को स्मरण रहा। इसलिए राजा दशरथ को यह डर हो गया कि तनय राम अलग हो जायँगे तो मेरा मरण निश्चित है। अतः उनका दुख अपार बढ़ गया।)

✻ तॊडैयूऱ्ऱिऱ् ऱेऩ्ऱुळिक्कु नऱुन्दारा ऩॊरुवण्णऩ् दुयर नीङ्गिप्
पडैयूऱ्ऱ मिलऩ्शिऱिय ऩिवऩ्पॅरियॊय पणियिदुवेल् पऩिनीर्क् कङ्गै

पुडैयूऱ्ऱुञ् जडैयानु नान्मुहनुम् बुरन्दरनुम् बुहुन्दु शॅय्युम्
इडैयूऱ्ऱुक् किडैयूऱा यान्काप्पॅन् पॅरुवेळ्विक् कॅऴुह वॅन्ऱान् 327

तॉटैयूऱ्ऱिन्—(माला में) पिरोये जाने के कारण; तेन् तुळिक्कुम्—शहद बाहर करनेवाली; नऱु तारान्—सुवासित माला से अलंकृत; ऑरु वण्णम्—एक प्रकार से; तुयरम् नीङ्कि—दुख से छूटकर; पॅरियोय्—महात्मा; पणि इतुवेल्—काम यही है तो; इवन् चिऱियन्—यह छोटा है; पटै ऊऱ्ऱम् इलन्—अस्त्र-शस्त्र का अभ्यस्त नहीं; पनि नीर् कङ्कै—शीतल जलवाली गंगा जी को; पुटै ऊऱ्ऱुम्—एक पार्श्व में बहानेवाले; चटैयानुम्—जटाधारी व; नान्मुकनुम्—ब्रह्मा व; पुरन्तरनुम्—इन्द्र भी; पुकुन्तु—आकर; पॅरु वेळ्विक्कु—बड़े यज्ञ की; चय्युम् इटैयूऱ्ऱुक्कुम्—जो करेंगे उस बाधा की भी; इटैयूऱु आक—बाधा करते हुए; यान् काप्पॅन्—मैं रक्षा करूँगा; ऍऴुक—उठिये; ऍन्ऱान्—कहा। ३२७

मधु-युक्त, सुगन्धित पुष्प-माला के धारी राजा एक तरह से अपने दुख को दबाकर बोले। महात्मन्! यही सेवा है तो, देखिये, राम छोटा है। उसको अस्त्र-शस्त्र का अभ्यास भी उतना अधिक नहीं है। मैं आऊँगा। चाहे शिवजी ही क्यों न आयें; चाहे ब्रह्माजी या इन्द्र; कोई भी आकर बाधा डालेंगे तो मैं उस बाधा की बाधा बनूँगा और आपके यज्ञ की रक्षा करूँगा। आप निश्चिन्त होकर प्रस्तुत हो जायँ। ३२७

ऍन्ऱननॆन् ऱलुमुनिवो डॅऴुन्दनन्मण् पडैत्तमुनि यिरुदिक् कालम्
अन्ऱॅनवा मॅनविमैयो रचिर्त्तनर्मेल् वॅयिल्हरन्द दङ्गु मिङ्गुम्
निन्ऱनवुन् दिरिन्दनमे निवन्दकॊऴुङ् गडैप्पुरुव नॅऱ्ऱि मुऱ्ऱच्
चॅन्ऱनवन् दननहैयुञ् जिवन्दनकण् णिरुण्डनपोय्त् तिशैह ळॅल्लाम् 328

ऍन्ऱनन्—ऐसा (दशरथ ने) कहा; ऍन्ऱलुम्—ज्योंही कहा त्योंही; मण् पटैत्त मुनि—पृथ्वी की सृष्टि करना जिन्होंने आरम्भ किया वे; मुनिवोटु—कोप के साथ; ऍऴुन्तनन्—उठे; मेल् निवन्त—ऊपर उठी; कॊऴु कटै पुरुवम्—घने कोनों की भौंहें; नॅऱ्ऱि मुऱ्ऱ—ललाट भर में; चॅन्ऱन—बिछ गयीं; नकैयुम् वन्तन—(अट्ट-) हास भी उठे; कण् चिवन्तन—आँखें लाल हुईं; तिचैकळ् ऍल्लाम्—दिशायें सारी; पोय् इरुण्टन—बहुत अँधेरी हो गयीं; मेल् वॅयिल् करन्ततु—आकाश का सूर्य भी छिप गया; अङ्कुम् इङ्कुम्—इधर-उधर की; निन्ऱनवुम्—स्थावर वस्तुएँ भी; तिरिन्तन—चंचल हुईं; इमैयोर्—देवता लोग; इऱुतिकालम्—संसार का अन्तिम काल; अन्ऱु आम्—आज ही हो जायगा; ऍन—ऐसा; अयिर्त्तनर्—संशयित हुए। ३२८

ज्योंही राजा के मुख से यह वचन निकला त्योंही महर्षि, जो कभी अलग लोकसृष्टि ही करने निकले थे, क्रोध के साथ उठे। उनकी घनी भौंहें तनकर ऊपर उठीं और ललाट ही उनके पीछे छिप गया। वे अट्टहास कर उठे; और उनकी आँखें लाल हुईं। उनकी क्रोधाग्नि से उठा धुआँ सारी दिशाओं में व्याप्त हुआ और सब जगह अन्धेरा छा गया। सूर्य भी छिप गया। स्थिर वस्तुएँ भी चंचल होकर घूमने लगीं। यह देखकर देवता लोग डर गये कि क्या युगांत आ गया है। ३२८

कऱुत्त मामुऩि करुत्तै युऩ्ऩिऩी, पॉऱुत्ति यॅऩ्ऱवर् पुहऩ्ऱु निऩ्महऱ्
कुऱुत्त लाहला वुऱुदि यॅय्दुनाळ्, मऱुत्ति योवॅऩा वशिट्टऩ् कूऱुवाऩ् 329

वचिट्टऩ्–वसिष्ठ; कऱुत्त मा मुऩि–कोपाक्रांत हुए महामुनि का; करुत्तै उऩ्ऩि–(आंतरिक) भाव सोचकर; अवऩ्–उनको; नी पॉऱुत्ति–आप क्षमा करें; ॲऩ्ऱु पुकऩ्ऱु–यह कहकर; निऩ् मकऱ्कु–आपके सुपुत्र के लिए; उऱुत्तल् आक अल्ला–(सुगम रूप से) जो प्राप्य हो नहीं सकता; उऱुति ॲय्तुम् नाळ्–हित के प्राप्त होने का दिन; मऱुत्तियो–इनकार करेंगे; ॲऩा–यह कहकर; कूऱुवाऩ्–कहने लगे। ३२९

तब वसिष्ठ जी ने क्रुद्ध विश्वामित्र जी के मन का भाव ताड़ लिया। उन्होंने महर्षि से, थोड़ा सब्र कीजिये—कहकर राजा से कहा कि महाराज! आपके पुत्र को दुष्प्राप्य हित मिलनेवाला समय आ गया है। उसको क्या आप रोक देंगे ? । ३२९

❀ पॅय्यु मारियाऱ् पॅरुहु वॅळ्ळम्बॉय्, मॉय्कॉळ् वेलैवाय् मुडुहु माऱुपोल्
ऐय निऩ्महऱ् कळविल् विञ्जैवऩ्, दॅय्दु कालमिऩ् ऱेदिर्न्द दॅऩ्ऩवे 330

ऐय–राजन्; पॅय्युम् मारियाल्–बरसनेवाली वर्षा से; पॅरुकु वॅळ्ळम्–बहनेवाली धारें; पोय्–जाकर; मॉय्कॉळ् वेलै वाय्–सशक्त समुद्र में; मुटुकुम् आऱु पोल्–तेज बहकर पहुँच जातीं जैसे; निऩ् मकऱ्कु–आपके सुपुत्र को; अळवु इल् विञ्चै–अगणित विधाओं के; वन्तु ॲय्तु कालम्–आकर मिलने का समय; इऩ्ऱु–आज; ॲतिर्न्ततु–आ साक्षात हुआ है; ॲऩ्ऩ–यह कहने पर। ३३०

देखिये; ऐसी शुभ वेला आ गयी है जब वर्षा से उत्पन्न छोटी-छोटी धाराएँ मिलकर बड़ी नदी के रूप में सागर पहुँच जाती हैं—ऐसा आपके पुत्र को अनन्त विद्याएँ आकर प्राप्त होंगी। ३३०

कुरुविऩ् वाशहङ् गॉण्डु कॉऱ्ऱवऩ्, तिरुविऩ् केळ्वऩैक् कॉणर्मिऩ् शॅऩ्ऱॅऩ
वरुह वॅऩ्ऱऩ ऩॅऩ्ऩ लोडुम्वऩ्, दरुहु शार्न्दऩ ऩऱिवि ऩुम्बराऩ् 331

कॉऱ्ऱवऩ्–विजयी; कुरुविऩ् वाचकम् कॉण्टु–गुरु का कथन मानकर; चॅऩ्ऱु–जाकर; तिरुविऩ् केळ्वऩै–लक्ष्मीपति को; कॉणर्मिऩ् ॲऩ–लिवा लाओ, कहने पर; वरुक–आइये; ॲऩ्ऱऩऩ्–कहा है; ॲऩ्ऩलोटुम्–कहने पर; अऱिविऩ् उम्पराऩ्–ज्ञान के परे रहनेवाले; वन्तु–उनके साथ आकर; अरुकु चार्न्तऩऩ्–समीप में पहुँचे। ३३१

अपने गुरु का उपदेश मानकर विजयी महाराज ने सेवक को आज्ञा दी कि जाओ लक्ष्मीपति को लिवा लाओ। सेवक ने जाकर श्रीराम जी से कहा कि आप पधारें। तब श्रीराम, जो ज्ञानातीत हैं, तुरन्त अपने पिता के पास पहुँच गये। (लक्ष्मण भी साथ आये यह कहने की आवश्यकता नहीं।) । ३३१

वन्द नम्बियैत् तम्बि तऩ्ऩॊडुम्, मुऩ्दै नाऩ्मऱै मुऩिक्कुक् काट्टिनल्
तन्दै नीतऩित् तायु नीयिवर्क्, कॆन्दै तन्दऩॆ नियैन्द शॆय्हॆऩ्ऱाऩ् 332

तम्पि तऩ्ऩॊटुम्–अपने छोटे भाई के साथ; वन्त नम्पियै–आये नायक (श्रीराम) को; मुन्तै नाल्मऱै–प्राचीन चारों वेदों के ज्ञाता; मुऩिक्कु काट्टि–महर्षि को दिखाकर; ऍन्तै–तात; इवर्क्कु–इन बालकों को; नल् तन्तै नी–अच्छे पिता भी आप हैं; तऩि तायुम् नी–अप्रतिम माता आप हैं; तन्तऩॆऩ्–(आपके पास) दिया है; इचैन्त चॆय्क–जो उचित हो वह करने की कृपा कीजिये; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ३३२

महाराज ने भाई सहित श्रीराम को विश्वामित्र के हाथ में सौंप दिया और कहा कि महर्षे ! आप ही इनके पिता हैं; और अनुपम माता भी आप ही हैं। आपके पास इन्हें सौंप दिया है। जो उचित हो वह कीजियेगा। ३३२

कॊडुत्त मैन्दरैक् कॊण्डु चिन्दैमुन्
दॆडुत्त शीऱ्ऱम्विट् टिऩिदु वाऴ्त्ति मेल्
अडुत्त वॆळ्विपोय् मुडित्तु नामॆऩा
नडत्तऩ् मेयिऩा ऩवैक्क णीङ्गिऩाऩ् 333

चिन्तै मुन्तु ऍटुत्त चीऱ्ऱम् विट्टु–मन में पहले उठे क्रोध को छोड़कर; कॊटुत्त मैन्तरै–सौंपे गये कुमारों को; कॊण्टु–स्वीकार कर; नवै कण्–(क्रोध-संभवनीय) अपराध से बचे; इऩितु वाऴ्त्ति–सुख से आशीर्वाद देकर; मेल्–उसके बाद; नाम् पोय्–हम जाकर; अटुत्त वेळ्वि मुटित्तुम्–निर्णीत यज्ञ सम्पन्न करें; ऍऩा–कहकर; नटत्तल् मेयिऩाऩ्–चलने लगे। ३३३

विश्वामित्र ने अपने सिपुर्द किये गये पुत्रों को अपने पास कर लिया। उनका क्रोध दूर हुआ और अच्छा हुआ; नहीं तो उनके क्रोध के कारण न जाने क्या-क्या अनर्थ हो गये होते। उन्होंने दशरथ को आशीर्वाद दिया और श्रीराम से कहा कि चलिये हम अपना यज्ञ करने चलें। फिर वे चले गये। ३३३

❋ वॆऩ्ऱि वाळ्पुडै विशित्तु मॆय्म्मैपोल्, अऩ्ऱुन् देय्वुऱात् तूणि यात्तिरु
कुऩ्ऱम् पोऩ्ऱुयर् तोळिऱ् कॊऱ्ऱविल्, ऒऩ्ऱु ताङ्गिऩा नुलहन् दाङ्गिऩाऩ् 334

उलकम् ताङ्किऩाऩ्–विश्वम्भर (विष्णु के अवतार); वॆऩ्ऱि–विजयशील; वाळ्–तलवार; पुटै विचित्तु–पार्श्व में बाँधकर; इरु कुऩ्ऱम् पोऩ्ऱु–दो पर्वतों के समान; उयर् तोळिल्–उन्नत स्कन्धों में; मॆय्म्मै पोल्–सत्य-सम; तेय्वुऱा–अक्षय; तूणि यात्तु–तूणीर लगाकर; कॊऱ्ऱम् विल् ऒऩ्ऱु–विजयदायी चाप धारण करनेवाले बने। ३३४

विश्वंभर के अवतार श्रीराम वीरोचित वेष में थे। विजयिनी तलवार पार्श्व में बंधी थी। दोनों पर्वत-सम उन्नत कंधों पर अक्षय तूणीर कसे थे। बायें हाथ में विजय-कोदण्ड था। ३३४

❀ अऩ्ऩ तम्बियुऩ् दाऩु मैयऩाम्, मऩ्ऩ ऩिऩ्ऩुयिर् वऴिक्कॊण् डाऩॆऩच्
चॊऩ्ऩ मादवऱ् ऱॊडर्न्दु शायैपोल्, पॊऩ्ऩिऩ् मानहर्प् पुरिशै नीङ्गिऩार् 335

अऩ्ऩ तम्पियुम्–वैसे ही (सज्जित) भाई; ताऩुम्–और आप; ऐयऩ् आम् मऩ्ऩऩ्–पिता (दशरथ) महाराज के; इऩ् उयिर्–प्यारे प्राण; वऴि कॊण्टाल् अऩ्ऩ–मानों मार्ग तय कर रहे हों; चॊऩ्ऩ मातवऩ्–(यज्ञ करने की बात) कह कर आनेवाले महान तपस्वी का; चायै पोल् तॊटर्न्तु–छाया के समान पीछा करते हुए; मा नकर्–बड़े नगर के; पॊऩ्ऩिऩ् पुरिचै–स्वर्ण के प्राचीर (के द्वार) को; नीङ्किऩार्–पार किया। ३३५

लक्ष्मण भी वैसे ही लैस थे। महर्षि ने कहा— चलो हम अब यज्ञ करने के लिए चलें। दोनों ने जैसे दशरथ के प्राण ही जा रहे हों ऐसा महर्षि का, उनकी छाया की तरह अनुगमन करते हुए नगर के स्वर्णमय प्राचीर को पार किया। ३३५

❀ वरङ्गण्   माशऱ्ऱ्   तवञ्जॆय्   दोर्हळ्वाऴ्
पुरङ्ग   णेरिला   नहर   नीङ्गिप्पोय्
अरङ्गि   ऩाडुवार्   शिलम्बि   ऩऩ्ऩऩिऩ्
ऱिरङ्गु   वार्पुऩऱ्   चरयु   वॆय्दिऩार् 336

वरङ्कळ् माचु अऱ–वर दोषहीन (श्रेष्ठ) हों, इतनी; तवम् चॆय्तोर्कळ्–तपस्या करनेवाले; वाऴ्–(जहाँ) निवास करते हैं; पुरङ्कळ्–(अमरावती आदि) नगर; नेर् इला–(जिसकी) समता नहीं कर सकते; नकरम्–(उस) नगर (अयोध्या) को; नीङ्कि पोय्–छोड़कर जाकर; अरङ्किऩ्–नृत्य मंच पर; आटुवार्–नाचनेवालियों की; चिलम्पिऩ्–पैंजनी के समान; अऩ्ऩम् निऩ्ऱु इरङ्कु–हंस खड़े होकर (जहाँ) बोलते हैं; वार्पुऩल्–प्रवहमान जलवाली; चरयु ऎय्तिऩार्–सरयू नदी (तट) पर पहुँचे। ३३६

अमरावती आदि नगर हैं जिनमें जाकर वास करने का भाग्य उन्हीं को प्राप्त होता है जो कठिन तपस्या करके श्रेष्ठ वर प्राप्त कर चुके हों। वे नगर भी अयोध्या की बराबरी नहीं कर सकते। ऐसे अयोध्या नगर को छोड़कर वे तीनों सरयू नदी के, जिसमें जल खूब बहता था और जिस पर हंस रहकर नृत्य-मंच पर नाचनेवाली नर्तकियों के नूपुर-की-सी ध्वनि करते हुए बोल रहे थे, तट पर आये। ३३६

करुम्बु काल्पॊरक् कमुहिऩ् वार्न्दतेऩ्, वरम्बु मीदिडु मरुद वेलिवाय्
अरुम्बु कॊङ्गैया रम्मॆ लोदिपोल्, शुरुम्बु शूऴ्वदोर् शोलै वैहिऩार् 337

करुम्पु–ईखों के; काल् पॊर–हवा के कारण से टकराने से; कमुकिऩ् वार्न्त तेऩ्–सुपारी के पेड़ों पर (छत्तों) से बहनेवाला शहद; वरम्पु मीतिटु–मेड़ों को पार कर (जिस प्रदेश में) बहता है; मरुत वेलि वाय्–(उस) खेतों और बागों वाले भू भाग में; अरुम्पु–कली जैसे; कॊङ्कैयार्–स्तनोंवालियों के; अम् मॆल् ओति पोल्–

सुन्दर कोमल केश के समान; चुरुम्पु चूऴ्वतु–जहाँ भ्रमर मँडराते हैं; ओर् चोलै–एक उपवन में; वैकिऩार्–ठहरे। ३३७

वे खेतोंवाले भूभाग के एक उपवन में आये। वह भूभाग ऐसा था जहाँ कमुक-तरुओं पर बने मधु के छत्तों से, तरुओं के, पवन में हिलाये जाकर, उकसाने से शहद बड़ी धारों में बहने लगता और वह प्रवाह खेतों की मेडों के ऊपर से भी बहता। उस उपवन में भ्रमर ऐसे मंडराते रहते थे मानों वे कमल-कलियों के समान स्तनवाली तरुणियों के मनोरम और कोमल केश पर मंडरातें हों। (मूल पद्य का यह भी अर्थ निकल सकता है कि वे भ्रमर स्त्रियों के काले घुँघराले केश के समान थे।) वे रात में वहीं ठहरे। ३३७

ताऴु मामऴै तऴुवु नॆऱ्ऱियाल्, शूऴि यानैपोऱ् ऱोऩ्ऱु माल्वरैप्
पाऴि मामुहट् टुच्चिप् पच्चैमा, एऴु मेऱप्पो याऱु मेऱिऩार् 338

ताऴुम् मा मऴै–नीचे उतरकर आनेवाले बड़े-बड़े मेघों से; तऴुवुम् नॆऱ्ऱियाल्–आवृत्त चोटियों के कारण; चूऴि यानै पोल्–मुख-पट्ट पहने हुए गजों के समान; तोऩ्ऱुम्–दिखनेवाले; माल् वरै–गरिमायुक्त (उदय-) गिरि की; पाऴि मा मुकटु उच्चि–दृढ़, ऊँची, चोटियों पर; पच्चै मा एऴुम् एऱ–हरे रंग के सातों अश्वों के चढ़ते; पोय्–जाकर; आऱुम् एऱिऩार्–सरयू (पार करने के लिए नाव) पर चढ़े। ३३८

सवेरा हुआ। उदय-पर्वत अपने ऊपर घने फैले मेघों के साथ, मुखपट्ट के साथ दिखनेवाले हाथी के समान, दृश्य उपस्थित करता था। सूरज के रथ के (गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप, बृहती, पंक्ति दृष्टुप, जगती इत्यादि) छन्दरूपी सात हरे रंग के अश्व उस उदयाचल पर चढ़े। तब ये नाव पर चढ़कर नदी पार कर इस पार आये। ३३८

तेवु मादवऱ् ऱॊऴुदु देवर्तम्, नावु ळावुदि नयक्कुम् वेळ्विवाय्त्
तावु मापुहै तऴुवु शोलैकण्, डियाव दीदॆऩ्ऱा ऩॆवर्क्कु मेनिऩ्ऱाऩ् 339

ऎवर्क्कुम् मेल् निऩ्ऱाऩ्–परात्पर (श्रीराम); तेवर्–देवता; तम् ना उळ्–अपनी जिह्वाओं में; आवुति नयक्कुम्–आहुति का स्वाद भोगनेवाले; वेळ्वि वाय्–यज्ञ से; तावुम्–उठनेवाला; मा पुकै–घना (बहुत) धुआँ; तऴुवु चोलै–पूरित उपवन; कण्टु–देखकर; तेवु मा तवऩ्–दिव्य उत्तम तपस्वी को; तॊऴुतु–विनय करके; ईतु यावतु–यह कौन सा है; ऎऩ्ऱाऩ्–ऐसा पूछा। ३३९

वहाँ परात्पर भगवान (के अवतार) श्रीराम ने एक आश्रम को देखा। उसमें देवताओं को तृप्त करते हुए आहुतियाँ देनेवाले यज्ञ हो रहे थे। उनमें से अधिक धुआँ उठ रहा था। श्रीराम ने महान तपस्वी विश्वामित्र से, नमस्कार करके, पूछा कि यह कौन सा स्थान है? । ३३९

7. ताडहै वदैप्पडलम् (ताडका-वध पटल)

तिङ्गण्मे वुञ्जडैत् तेवऩ्मेऩ् मारवेळ्
इङ्गुनिऩ् ऱॆय्यवु मॆरिदरु नुदल्विऴिप्
पॊङ्गुको पञ्जुडप् पूळैवी यऩ्ऩदऩ्
अङ्गम्वॆन् दऩ्ऱुतॊट् टऩङ्गऩे यायिऩाऩ् 340

मार वेळ्–मार (मन्मथ) देव (के); इङ्कु निऩ्ऱु–यहाँ से; तिङ्कळ् मेवुम्–चन्द्राधार; चटै तेवऩ् मेल्–जटा-धारक (शिव) देव पर; ऍय्यवुम्–(पुष्प-बाण) चलाने पर; ऍरि तरु नुतल् विऴि–आग उगलनेवाले भाल-नेत्र से; पॊङ्कु–निकलनेवाली; कोपम् चुट–कोपाग्नि के जलाने से; पूळै वी अऩ्ऩ–सेमर के फूलों के समान; तऩ् अङ्कम् वॆन्तु–अपने अंगों को (भस्म कराकर); अऩ्ऱु तॊट्टु–उसी दिन से; अनङ्कऩे आयिऩाऩ्–अनंग ही बन गया। ३४०

महर्षि ने उत्तर में कहा कि एकबार मारदेव ने चन्द्र-जटा-धारी शिवजी पर पुष्प-सायक चलाया। शिवजी कुपित हुए और उनके भालनेत्र से अग्नि-ज्वाला उठी। उसमें मन्मथ का शरीर सेमर के फूल के समान जल गया। तब से वह अनंग (अंग जिसके न हों) हो गया। ३४०

वारणत् तुरिवैयाऩ् मदऩऩैच् चिऩवुनाळ्
ईरमऱ् ऱङ्गमिङ् गुहुदला लिवणॆलाम्
आरणत् तुऱैयुळा यङ्गना डिदुवुमक्
कारणक् कुऱियुडैक् कामऩाच् चिरममे 341

आरणम् उऱैयुळाय्–हे वेदावास (वेद है आवास जिनका —परब्रह्म); वारणम् उरिवैयाऩ्—गज-चर्म वस्त्रवेष्टित (श्रीशिव); मतऩऩै चिऩवुम् नाळ्–मदन को कोप से जलाया, उस दिन; अङ्कम्–अंग; ईरम् अऱ्ऱु–सूखकर; इङ्कु उकुतलाल्–यहाँ गिरने से; इवण् ऍलाम्–इधर सर्वत्र; अङ्क नाटु–अंगदेश (बना); इतुवुम्–इधर पास यह भी; अ कारणम् कुऱि उटैय–उसी कारण पर बना नाम वाला; कामऩ् आच्चिरममे–कामाश्रम ही है। ३४१

"वेदाश्रय भगवान! गजचर्माम्बर शिवजी ने जिस दिन मन्मथ पर कोप दिखाया उस दिन उसका शरीर सूख कर (चूर होकर) इसी प्रदेश में इधर-उधर गिरा। इसलिये यह अंग देश बना। उसी काम-दहन के संकेत में यह कामाश्रम कहलाता है। (दारुकावन के मुनियों ने एक दुष्ट गज को पैदाकर, शिवजी को मारने भेजा था। शिवजी ने उसे मारा और उसकी खाल उधेड़ कर ओढ़ लिया। इसलिये वे गजचर्मांबरधारी कहलाते हैं।)। ३४१

पऱ्ऱवा वेरॊडुम् बशैयऱप् पिऱविपोय्, मुऱ्ऱवा लुणर्वुमेऩ् मुडुहिऩा रऱिवुशॊऩ्
ऱुऱ्ऱवा ऩवऩिरुन् दियोगुशॆय् दऩऩॆऩिल्, शॊऱ्ऱवा भळवदो मऱ्ऱिदऩ् ऱूय्मैये 342

पऱ्ऱु अवा–(बाहरी) आकर्षण और (भीतरी) कामना; **वेरॊटुम् पचै अऱ**–आमूल नाश कराने; **पिऱवि पोय् मुऱ्ऱ**–जन्म (चक्र) अन्त करानेवाले; **वाल् उणर्वु**–तत्वज्ञान में; **मेल् मुटुकिऩार्**–बढ़े हुओं की; **अऱिवु**–भावना; **चॆऩ्ऱु उऱ्ऱ वाऩवऩ्**–जिनके पास जा पहुँचती है वे देव; **इरुन्तु योकु चॆय्तऩऩ्**–यहाँ रहकर योग-साधना की; **ऎऩिल्**–तो; **इतऩ् तूय्मै**–इसकी पवित्रता; **चॊऱ्ऱ आम् अळवतो**–कहने योग्य परिमाण का है क्या। ३४२

स्वयं शिवजी ने यहाँ रहकर योग साधना की थी। शिव देव तो ऐसे ईश्वर हैं जिनकी प्राप्ति उन्हीं लोगों को सुलभ होती है जो कामना और आकर्षण त्याग कर, मुक्ति की इच्छा के साथ तत्व-ज्ञान में उच्च स्थिति को प्राप्त कर चुके हैं। फिर इस आश्रम की पवित्रता का क्या पूछना ? । ३४२

ऎऩ्ऱवऩ् दणऩियम् बलुम्वियऩ् दव्वयिऩ्
शॆऩ्ऱुवऩ् दॆदिर्कॊळुञ् जॆन्नॆऱिच चॆल्वरो
डऩ्ऱुऱैन् दलर्हदिर्प् परुदिमण् डिलमहऩ्
कुऩ्ऱिऩ्वन् दिवरवोर् शुडुशुरङ् गुरुहिऩार् 343

ऎऩ्रु–ऐसा; **अ अन्तणऩ्**–उन ऋषि (के); **इयम्पलुम्**–कहते ही; **वियन्तु**–विस्मित हुए; **अव्वयिऩ् चॆऩ्ऱु**–उस ओर जाकर; **उवन्तु ऎतिर् कॊळुम्**–चाह के साथ स्वागत करने आये हुए; **चॆम्मै नॆऱि चॆल्वरोटु**–सन्मार्ग-धनियों के साथ; **अऩ्ऱु उऱैन्तु**–उस दिन रहकर; **अलर् कतिर् परुति मण्टिलम्**–फैलती किरणोंवाले सूर्य-बिम्ब के; **अकल् कुऩ्ऱिऩ् वन्तु इवर**–विशाल (उदय-) गिरि पर आकर चढ़ते समय; **ओर् चुटु चरम् कुरुकिऩार्**–एक गरम मरु प्रदेश में पहुँचे। ३४३

यह सुनकर दोनों भाई विस्मित हुए। वे तीनों वहीं गये। वहाँ के तपस्वी ऋषि-मुनियों ने उनका प्रेम व उत्साह के साथ स्वागत किया। रात उन्होंने वहीं काटी। दूसरे दिन सवेरे सूर्य के उदयाचल पर आते ही वे चले और एक अति-तप्त वालुका-प्रदेश में आये। उसका वर्णन सुनिये। ३४३

परुदिवा ऩवऩिलम् पशैयऱप् परुहुवाऩ्
विरुदुमेऱ् कॊण्डुलाम् वेऩिले यल्लदोर्
इरुदुवे ऱिऩ्मैया लॆरिशुडर्क् कडवुळुम्
करुदिऩ्ने मुळ्ळमुङ् गाणिऩ्वे नयऩमुम् 344

परुति वाऩवऩ्–सूर्य देव; **निलम् पचै अऱ**–भूमि पर नमी कुछ न हो ऐसा; **परुकुवाऩ्**–पीने (सोखने) के लिये; **विरुतु मेऱ्कॊण्टु**–विजय-चिह्न प्रदर्शित करते हुए; **उलाम्**–(जिस पर्व में) घूमता है; **वेऩिले अल्लतु**–उस ग्रीष्म के सिवा; **वेऱु ओर् इरुतु इऩ्मैयाल्**–कोई अन्य ऋतु के न होने से; **ऎरि चुटर् कटवुळुम्**–जलानेवाली ज्वाला के (अग्नि-) देव भी; **करुतिऩ्**–स्मरण करे; **उळ्ळमुम् वेम्**–(उसका) मन भी जल जाय; **काणिऩ्**–देखे तो; **नयऩमुम्** नेत्र भी; **वेम्**–झुलस जायँ। ३४४

वहाँ उस प्रदेश में ग्रीष्म के अलावा कोई ऋतु ही नहीं होती थी। ग्रीष्म सूर्य की विजय ध्वजा है जो इस बात का निशान है कि उसकी गर्मी से भूमि बिलकुल सूख जाती है। इसलिये वहाँ की स्थिति कुछ ऐसी है कि स्वयं अग्निदेव भी सोचे तो उसका मन जल जाय। आँख उठाकर देखे तो नेत्र जल जायं। ३४४

पडियिऩ्मेल् वॆम्मैयैप् पहरिऩुम् पहरुना
मुडियवे मुडियमू डिरुळुम्वाऩ् मुहडुम्वेम्
विडियुमेल् वॆयिलुम्वे मऴैयुम्वे मिऩ्ऩिऩो
डिडियुम्वे मॆऩ्ऩिल्वे ऱियावैवे वादवे 345

पटियिऩ् मेल्–भूमि पर की; वॆम्मैयै–गर्मी को; पकरिऩुम्–कहा जाय तो भी; पकरुम् ना–बोलनेवाली जिह्वा; मुटिय वेम्–पूरी जल जायगी; मुटिय मूटु इरुळुम्–पूर्ण रूप से (लोक भर को) ढकनेवाला अन्धकार भी; वाऩ् मुकटुम्–आकाश की चोटी भी; वेम्—जल-भुन जायँ; विटियुमेल्–दिन हो जाय तो; वॆयिलुम् वेम्–दिनकर भी जल जाय; मऴैयुम् वेम्–मेघ भी जल जायँ; मिऩ्ऩिऩोटु–विद्युत के साथ; इटियुम् वेम्–वज्र भी जल जाय; ऍऩ्ऩिल्–वैसी स्थिति रही तो; वेवात–जो न जलें; वेऱु यावै–कौन अन्य (होंगे)। ३४५

उस प्रदेश की बात कोई कहने लगे तो जीभ जल जाय! रात में अण्ड भर में छानेवाला अंधकार और आकाश की चोटी भी जल जाय; सूर्योदय हुआ तो सूर्य जल जाय। मेघ, बिजली की चमक, वज्र-सब जल जायँगे, तो कौन सी वस्तु होगी जो न जले?। ३४५

विञ्जुवाऩ् मऴैयिऩ्मे लम्बुम्वे लुम्बडच्
चॆञ्जॆवे शॆरुमुहत् तऩ्ऱिये तिऱऩिला
वञ्जर्ती विऩैहळाऩ् माऩमा मणियिऴन्
दॆञ्जिऩार् नॆञ्जुपो लॆऩ्ऱुमा ऱादरो 346

विञ्चु वाऩ्–अधिक मेघों से; मऴैयिऩ्–गिरनेवाली धारों के समान; अम्पुम् वेलुम्–शरों और बर्छियों के; मेल् पट–शरीर पर लगने से; चॆरु मुकत्तु–युद्धस्थल पर; चॆञ्चॆवे–सीधे; अऩ्ऱि–(लड़े) बगैर; तिऱऩ् इला–असमर्थ; वञ्चर्–कपटियों के; ती विऩैकळाल्–धूर्त कार्यों से; माऩम् आम्–मान-रूपी; अणि–श्रृंगार (धन); इऴन्तु–खोकर; ऍञ्चिऩार्–(जो जीवित) बच जाते हैं; नॆञ्चु पोल्–मन की तरह; ऍऩ्ऱुम्–सदा; आऱातु—ताप-हीन नहीं होता (कभी ठण्डा नहीं होता)। ३४६

यह मरुस्थल उन वीरों के चित्त के समान विदीर्ण और संतप्त है जिन पर युद्ध में प्रत्यक्ष रूप से, वर्षा के समान भाले व शर नहीं चलाये गये पर जिनको नीच, असमर्थ, धूर्तों के कपट के कारण मान खोना पड़ा और फिर भी जीवित रहना पड़ गया। ३४६

पेय्पिळन् दौक्कनिन् ऱुलर्पॆरुङ् गळ्ळियिऩ्
ताय्पिळन् दुक्कहा रकिल्हळुऩ् दऴैयिला
वेय्पिळन् दुक्कवॆण् डरळमुम् विडवरा
वाय्पिळन् दुक्कशॆम् मणियुमे वऩ्ऩॆलाम् 347

वऩम् ऍलाम्–वन भर में; पेय् पिळन्ततु ऒक्क–पिशाचों के चिरे शरीरों के समान; निऩ्ऱु–(चिर कर) खड़े होकर; उलर्–सूखनेवाले; पॆरु कळ्ळियिऩ्–बड़े सेंहुड के; ताय्–तने; पिळन्तु–फटे हैं, इसलिए; उक्क–छितरे; कार् अकिल् कळुम्–काले अगरु की लकड़ियाँ; तऴै इला–पत्तों से रहित; वेय्–बाँसों के; पिळन्तु–फटने से; उक्क–छितरे; वॆण् तरळमुम्–सफ़ेद मोती; विटम् अरा–विषैले सर्पों के; वाय् पिळन्तु–मुखों के (फटने से) खुलने से; उक्क–बाहर उगले; चॆम्मै मणियुमे–लाल नग (माणिक्य) ही (थे)। ३४७

वहाँ सेंहुड़ पिशाचों के चिरे शरीरों के समान सूखे खड़े हैं। उनके तनों के फटने से अगरु के टुकड़े बिखरे पड़े हैं। बाँस सूख गये हैं और उनसे वंश-मुक्तायें निकलकर छितरी पड़ी हैं। विषैले सर्पों ने नागरत्न उगले हैं। वे छितरे पड़े हैं। ३४७

पारुमो डादुनी डाऍऩ्ऩुम् बालदे, शूरुमो डादुकू डादरो शूरियऩ्
तेरुमो डादुमा माहमी देऱिऩ्ऩेर्, कारुमो डादुनीळ् कालुमो डादरो 348

पारुम् ओटातु–भूमि (के जीव) भी नहीं जा सकते; नीटातु ऍऩ्ऩुम्–रह नहीं सकते इस; पालते–कारण से; चूरुम् ओटातु कूटातु–(मरुदेश की) कालिकादेवी भी नहीं भागे, यह नहीं हो सकता; चूरियऩ् तेरुम्–सूर्य का रथ भी; मा माकम् मीतु–विशाल आकाश के उच्च भाग पर; एऱिऩ्–चढ़े तो भी; नेर् ओटातु–सीधे ऊपर नहीं दौड़ सकता; कारुम्–मेघ भी; ओटातु–(सीधे ऊपर) नहीं दौड़ (चल) सकते; नीळ् कालुम्–संचारशील हवा भी; ओटातु–नहीं चल सकती। ३४८

वहाँ संसार की वस्तुएँ जायं तो जल जायं। उस भूभाग की अधिष्ठात्री देवी काली को भी वहाँ से गये बगैर निस्तार नहीं। सूर्य का रथ आकाश पर चढ़कर उसके ठीक ऊपर नहीं चल सकता; मेघ उनके ऊपर से जा नहीं पाते; संचरणशील पवन भी वहाँ नहीं चल सकता। ३४८

कण्किऴित् तुमिऴ्विडक् कऩ्ऩलरा वरशुहाल्
विण्किऴित् तॊळिरुमिऩ् ऩऩैयपऩ् मणिवॆयिल्
मण्किऴित् तिडवॆळ्ळुम् जुडर्कण्मण् महळुडर्
पुण्किऴित् तिडवॆळ्ळुङ् गुरुदिये पोलुमे 349

कण् किऴित्तु–(दर्शक की) आँखों को निस्तेज करनेवाला; उमिऴ् विटम् कऩल्–उगली विषरूपी अग्नि; अरा अरचु–नागों के राजा (नायक); काल्–जो उगले; विण् किऴित्तु–आकाश चीरते हुए; ऒळिरुम् मिऩ्–चमकनेवाली बिजली; अऩैय–समान; पल मणि–अनेक (नाग-) रत्नों से; वॆयिल् मण् किऴित्तिट–धूप के

भूमि को चीर देने से; ॲळुम् चुटर्कळ्-(उन दरारों द्वारा) बाहर निकलनेवाली किरणें; मण् मकळ्-भूदेवी के; उटल् पुण्-शरीर के घावों के; किळित्तिट-(घावों के) खुलने से; ॲळुम्-बाहर निकलनेवाले; कुरुतिये पोलुम्-रक्त के समान ही हैं। (ए)। ३४९

तेज धूप से भूमि में गहरी और विशाल दरारें पड़ गयी हैं और भूमि के गर्भ में रहनेवाले विषैले सर्पों के उगले रत्नों से उन दरारों द्वारा प्रकाश छूट रहा है। उसको देखकर ऐसा लगता है कि भूमि के शरीर पर गहरे घाव पड़ गये हैं और उनसे रक्त बह रहा है। ३४९

पुळुङ्गुवॅम् बशियॊडुम् पुरळुम् पेररा
विळुङ्गवन् दॅळुन्दॅदिर् विरित्त वायिन्वाय्
मुळङ्गुतिण् करिपुहु मुडुहि मीमिशै
वळङ्गुवॆङ् गदिर्शुड मरैवु तेडिये 350

मुळङ्कु तिण् करि-चिंघाड़नेवाला, ताकतवर हाथी; मीमिचै-आकाश से; वळङ्कु वॆम् कतिर्-आनेवाली संतापक धूप (के); चुट-जलाने से; मरैवु तेटि-साया खोजकर; पुळुङ्कु वॆम् पचियॊटु-कचोटनेवाली भयंकर भूख के साथ; पुरळुम्-लोटनेवाले; पेर् अरा-बड़े साँप के; विळुङ्क-निगलने के लिए; वन्तु-आकर; ॲळुन्तु-सिर उठाकर; ॲतिर् विरित्त-सामने खुले; वायिन् वाय्-मुख के अन्दर; मुटुकि पुकुम्-सवेग घुस जाता है। ३५०

वहाँ हाथी कड़ी धूप की वजह से चिंघाड़ता हुआ भागता है। वह कहीं जाकर छिप जाने को, छाया पाने को लालायित है। तब वह देखता है कि अदम्य भुभुक्षा से तड़पनेवाले एक सर्प ने, किसी भी वस्तु को निगलने के इरादे से अपना मुख खोल रखा है। वह उसी के अन्दर बेतहाशा घुस जाता है। ३५०

ऐहवॆङ् गऩलर शिरुन्द काट्टिडैक्, काहमुङ् गरिहळुङ् गरिन्दु शाम्बिऩ
माहवॆङ् गदिरॆऩुम् वडवैत् तीच्चुड, मेहमुङ् गरिन्दिडै विळुन्द पोलुमे 351

एकम् वॆम् कऩल्-अद्वितीय संतापी अग्निदेव; अरचु इरुन्त-(जहाँ) राज करते थे; काट्टिटै-(उस बालुकामय) जंगल में; करिन्तु चाम्पिऩ-झुलसे (काले हो) पड़े रहे; काकमुम् करिकळुम्-कौए और हाथी; माकम् वॆम् कतिर् ॲऩुम्-आकाश (-स्थित) सूर्य-रूपी; वटवै ती चुट-वड़वाग्नि के जलाने से; मेकमुम्-मेघ भी; करिन्तु इटै विळुन्त पोलुम्-काले होकर उस भूमि पर गिरे (पड़े) से हैं। ३५१

उस जंगल में (जल-शून्य रेगिस्तान में), जिस पर अत्युष्ण अग्निदेव का एकछत्र राज था, कौए और हाथी झुलस कर गिरे थे। वे, छोटे बड़े मेघों के समान लगते थे, जो आकाश के अत्यन्त गरम सूर्य-रूपी वड़वाग्नि के जलाने से झुलसकर यत्र-तत्र गिरे पड़े हों। ३५१

काऩहत् तियङ्गिय कऴुदिऩ् ऱेर्क्कुलम्
ताऩहङ् गरिदलिऱ् ऱलैक्कॊण् डोडिप्पोय्
मेऩ्ऩिमिर्न् दॆऴुन्दिडिऩ् विशुम्बुम् वेमॆऩ्ऩा
वाऩवर्क् किरङ्गिनीर् वळैत्त दॊत्तदे 352

कानकत्तु इयङ्किय–(उस) वन में संचरणशील रहे; कऴुतिऩ् तेर् कुलम्–पिशाच-रथ-समूह; ताऩ् अकम् करितलिऩ्–उसके मध्य प्रदेश के झुलसने से; मेल् निमिर्न्तु–ऊपर मुख कर; ऍऴुन्तिटिऩ्–उठे तो; विचुम्पुम्–आकाश भी; वेम् ऍऩ्ऩा–जल जायगा, इसलिए; वाऩवर्क्कु इरङ्कि–देवताओं के प्रति सहानुभूति करके; नीर्–वरुणदेवता; ओटि पोय्–भाग जाकर; तलै कॊण्टु–उसको व्याप्त कर; वळैत्तनु ऑत्ततु–घेर लिया जा रहा। ३५२

उस जंगल में मरीचिकायें दिखायी देती हैं जो चंचल भी दिखती हैं। (मरीचिकाओं को तमिऴ में भूत-रथ कहते हैं।) उनको देखने पर ऐसा लगता है कि जल के अधिपति वरुण देव ने, इस डर से कि यह गर्मी जंगल को राख बनाकर ऊपर उठेगी तो देवलोक भी जल जायगा; और देवताओं पर दया करके उस जंगल पर छाकर गर्मी को रोकते हुए जंगल को घेर लिया हो। ३५२

एय्न्दवक् कऩलिडै यॆऴुन्द काऩऱ्ऱेर्
काय्न्दवक् कडुवऩङ् गाक्कुम् वेऩ्ऩिलिऩ्
वेन्दऩुक् करशुवीऱ् ऱिरुक्कच् चॆय्ददोर्
पाय्न्दपॊऩ् कालुडैप् पळिक्कुप् पीडमे 353

एय्न्त–(सदा) लगी रही; अ कऩल् इटै–उस अग्नि में; ऍऴुन्त–उत्पन्न; काऩल् तेर्–मरीचिका; काय्न्त अ कटु वऩम् काक्कुम्–तप्त उस भयंकर (मरु) वन का पालन करनेवाले; वेऩ्ऩिलिऩ् वेन्तऩुक्कु–ग्रीष्म के राजा को; अरचु वीऱ्ऱिरुक्क–(उसके) राज-सभा में विराजने के लिए; चॆय्ततु–निर्मित; पाय्न्त पॊऩ्काल् उटै–ढले स्वर्ण से रचे पैरोंवाले; ओर् पळिङ्कु पीटमे–एक स्फटिक आसन ही है। ३५३

उन मृग-मरीचिकाओं को देखने पर, भ्रम में जल-विस्तार और प्रत्यक्ष किरणों की राशियाँ दिखायी देती हैं। दोनों मिलकर यह भ्रम पैदा करते हैं कि ढले स्वर्ण के पादोंवाले स्फटिक-सिंहासन डलवाये गये हों। कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि ये सिंहासन उस जंगल का शासन करनेवाले ग्रीष्म-राज के दरबार में उनके लिये डाले गये सिंहासन हैं। ३५३

❀ तावरु मिरुविऩै शॆऱ्ऱुत् तळ्ळरु, मूवहैप् पहैयरण् कडन्दु मुत्तियिल्
पोवदु पुरिबवर् मऩ्ऩुम् पॊऩ्विलैप्, पावैयर् मऩ्ऩुम्बोऱ् पशैयुमऱ्ऱदे 354

ता वरुम्–दुखदायी; इरुविऩै–दो (पाप व पुण्य) कर्म; चॆऱ्ऱु–नष्ट करके; तळ्ळ अरु–दुर्निवार; मूवकै–त्रिविध (काम, क्रोध, मोह); पकै–शत्रुरूपी; अरण्

कटन्तु–प्राचीर लाँघकर; मुत्तियिल् पोवतु वुरिपवर्–मुक्ति-प्राप्ति के मार्ग में अग्रसर; मन्नमुम्–(ज्ञानियों का) मन; पॉन् बिलै पावैयर्–(और) स्वर्ण-दाम लेनेवाली (वेश्या-) स्त्रियों के; मन्नमुम् पोल्–मन की भी तरह; पच्चैयुम् अऱ्ऱतु–नमी (आर्द्रता) से हीन था। ३५४

वह जंगल आर्द्रता से निपट शून्य था। उसकी शुष्कता की तुलना उन ज्ञानियों के, जो विषम पाप-पुण्य का कर्म काटकर, (काम क्रोध, मोह रूपी) तीनों प्रकार के अन्तः शत्रुरूपी प्राचीरों को लाँघकर मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हों, मन से ही हो सकती है; या उन वेश्याओं के, जो स्वर्ण (दाम) लेकर अपना सुख देती हैं, मन से। ३५४

पॉरिपरऱ् पडर्निलम् पॉडिन्दु कीऴुऱ
विरिदलिऱ् पॅरुवऴि विळङ्गित् तोन्ऱलाल्
अरिमणिप् पणत्तरा वरशर् नाट्टिनुम्
ऍरिकदिर्क् किन्नदुपुक् कियङ्ग लायदे 355

पॉरि परल्–भुननेवाले कंकड़; पटर् निलम्–बिखरे (जहाँ थे वह) भूमि; पॉटिन्तु–चूर होकर; कीऴ् उऱ–नीचे (पाताल) तक; विरितलिन्–फटी रहने से; ऍरि कतिर्क्कु–जलानेवाली (सूर्य) किरणों के लिए; अरि मणि पणत्तु अराअरचर्–लाल माणिक्य-युक्त फनोंवाले नागराज के; नाट्टिन्नुम्–देश में भी; इन्नितु पुक्कु–सुख से घुसकर; इयङ्कल् आयतु–संचार करना हो सका। ३५५

भुने कंकड़ों से भरे उस जंगल पर पड़नेवाली सूर्य किरणें अब नागराज के फनों के माणिक्य से प्रकाशित पाताल में भी निर्विघ्न पहुँच सकीं क्योंकि उसमें बड़ी-बड़ी और गहरी दरारें पड़ी हुई थीं जो पाताल तक गयीं थीं। ३५५

अरिन्देऴ कॉडुञ्जुर मिन्नैय दॅय्दलुम्
अरुन्दव न्निवर्पॅरि दळवि लाऱ्ऱलैप्
पॉरुन्दिन्न रायिनुम् पूविन् मॅल्लियर्
वरुन्दुवर् शिऱिदॅन्न मन्नत्ति नोक्किन्नान् 356

इन्नैयतु–ऐसे; ऍरिन्तु ऍऴु–जल उठनेवाले; कॉटु चुरम्–भयंकर मरु प्रदेश में; ऍय्तलुम्–पहुँचते ही; अरु तवन्–अतुल्य तपस्वी; इवर्–ये; अळविल् आऱ्ऱलै–अपार शक्ति को; पॅरितु पॉरुन्तिन्नर्–बहुत रखते हैं; आयिन्नुम्–तो भी; पूविन् मॅल्लियर्–फूल की तरह कोमल हैं; चिऱितु वरुन्तुवर्–थोड़ा दुखेंगे; ॲन्न–ऐसा; मन्नत्तिन् नोक्किन्नान्–चित्त में देखा (सोचा)। ३५६

ऐसे भयंकर रूप से तपनेवाले जंगल में जब तीनों आ पहुँचे तब महर्षि ने सोचा कि ये कुँवर बड़े शक्तिमान हैं सही। तो भी सुकुमार हैं; अतः इनको किंचित आयास होगा। ३५६

नोक्किऩ ऩवर्मुह नोक्क नोक्कुडैक्, कोक्कुम ररुमडि कुऱुह नाऩ्मुहऩ्
आक्किऩ विऩ्जैह ळिरण्डु मव्वयिऩ्, ऊक्किऩ ऩवैयव रुळ्ळत् तुळ्ळिऩार् 357

नोक्किऩऩ्–सोचकर; अवर् मुकम् नोक्क–उनके मुख देखने पर; नोक्कु उटै(य)–इंगितज्ञ; को कुमररुम्–राजकुमार भी; अटि कुऱुक–चरणों के पास आते (नमस्कार करते); अव् वयिऩ्–तब; नाऩ्मुकऩ्–चतुर्मुख से; आक्किऩ–की गयी; विऩ्चैकल् इरण्टुम्–विद्याओं को, दोनों; ऊक्किऩऩ्–सिखायीं; अवै–उनको; अवर्–उन (कुमारों) ने; उळ्ळत्तु उऩ्ऩिऩार्–मन में मनन (स्मरण) कर लिया। ३५७

इस विचार के साथ मुनि ने उनकी ओर दृष्टि फेरी। राजकुमार ताड़ गये और तुरन्त उनके चरणों के समीप आये। महर्षि ने चतुर्मुख-विरचित दो विद्याओं (बला, अतिबला) का उपदेश किया। श्रीराम और लक्ष्मण ने उनका मनन किया। ३५७

उळ्ळिय कालैयि लूऴित् तीयिऩै, ऍळ्ळुऱु कॉऴुङ्गऩ लॅऩ्जुम् वॅऩ्जुरम्
तॅळ्ळुतण् पुऩलिडैच् चेऱ लॉत्ततु, वळ्ळलु मुऩिवऩै वणङ्गिच् चॉल्लुवाऩ् 358

उळ्ळिय कालैयिल्–मनन करते ही; ऊऴि तीयिऩै–युगांतकालीन अग्नि को; ऍळ्ळुऱु–उपहास करनेवाले; कॉऴु कऩल्–अत्यधिक अनल से; ऍऩ्चुम्–युक्त; वॅम् चुरम्–भीषण मरु प्रदेश (में जाना); तॅळ्ळु तण् पुऩल्–स्वच्छ शीतल जल; इटै–मध्य; चेऱल् ऑत्ततु–चलना जैसा बन गया; वळ्ळलुम्–कृपालु भी; मुऩिवऩै वणङ्कि–मुनि का नमस्कार करके; चॉल्लुवाऩ्–बोलने लगे। ३५८

उनके मनन करते ही प्रलयाग्नि से बढ़कर भयंकर आग से तप्त उस जंगल में चलना स्वस्थ शीतल जल में चलने के समान हो गया। तब उदार प्रभु श्रीराम ने मुनि का नमस्कार कर पूछा। ३५८

शुऴिपडु गङ्गैयन् दोङ्गऩ् मोलियाऩ्, विऴिपड वॅन्ददो वेऱु ताऩुण्डो
पऴिपडर् मऩ्ऩवऩ् परित्त नाट्टिऩी, दऴिवदॅऩ् कारण मऱिज कूऱॅऩ्ऱाऩ् 359

अऱिज–ज्ञानी; ईतु–यह स्थान; चुऴि पदुम कङ्कै–भँवरों सहित गंगा और; अम् तॉङ्कळ–सुन्दर मालाओं के; मेलियाऩ्–जटाधारी (की); विऴि पट–दृष्टि लगने पर; वॅन्ततो–जला (क्या); वेऱु ताऩ् उण्टो–अन्य भी है; पऴि पटर् मऩ्ऩऩ्–कुयशपूर्ण (अत्याचारी) राजा (के); परित्त नाट्टिऩ्–पालित देश के समान; अऴिवतु–उजड़ना; ऍऩ्ऩ कारणम्–क्या कारण है; कूऱुक–बताइयेगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ३५९

ज्ञानवृद्ध ! यह प्रदेश क्यों ऐसा है ? कुयश आततायी राजा से पालित देश के समान उजड़ा पड़ा है। क्या यह आवर्त्त-भरी गंगा और सुन्दर मालाओं के धारण करनेवाले जटाधारी शिवजी के भाल-नेत्र (की अग्नि) के लगने से ऐसा जल गया ? या दूसरा कोई कारण है। ३५९

अॅऩ्ऱलु मिरामऩै नोक्कि यिऩ्ऩुयिर्
कॉऩ्ऱुऴल् वाऴ्क्कैयळ् कूऱ्ऱिऩ् ऱोऱ्ऱत्तळ्
अऩ्ऱियु मैयिरु नूऱु मैयऩ्मा
ऑऩ्ऱिय वलियिऩा ळुऱुदि केळॅऩ्ऩा 360

अॅऩ्ऱलुम्–ऐसा कहते ही; इरामऩै नोक्कि–श्रीराम को देखकर; इऩ् उयिर्-कॉऩ्ऱु–प्रिय जीवों को मारकर; उऴल् वाऴ्क्कैयळ्–फिरनेवाली जीविकावाली; कूऱ्ऱिऩ् तोऱ्ऱत्तळ्–यम के समान आकारवाली; अऩ्ऱियुम्–और भी; ऐ इरु नूऱु–पाँच, दो, सौ (सहस्र); मैयल् मा–मत्त गजों (की); ऑऩ्ऱिय–मिली; वलियिऩाळ्–शक्तिवाली; उऱुति केळ्–चरित्र सुनिये; अॅऩ्ऩा–ऐसा । ३६०

उनके ऐसा पूछते ही, महर्षि ने राम से कहा कि सुनिये, एक स्त्री है जिसकी जीविका अच्छे अनेक जीवों को मारते फिरना है; जिसका यमदेव का-सा (भयंकर) रूप है; और जिसका सहस्र मद-मत्त-गजों के सम्मिलित बल से तुल्य बल है। उसका वृत्तांत सुनिये। ३६०

इयक्कर्तङ् गुलत्तुळा ऩुलह मॅङ्गणुम्
वियक्कुऱु मॉय्म्बिऩा ऩॅरियिऩ् वॅम्मैयाऩ्
मयक्किल्शऱ् चरऩॅऩुम् वलत्ति ऩाऩरुळ्
तुयक्किलऩ् शुकेतुवॅऩ् ऱुळऩोर् तूय्मैयाऩ् 361

इयक्कर् तम्–यक्ष के; कुलत्तु उळाऩ्–कुल में उदित; उलकम् अॅङ्कणुम्–संसार भर को; वियक्कुऱुम् मॉय्म्पिऩाऩ्–विस्मय में डालनेवाली शक्ति से युक्त; अॅरियिऩ् वॅम्मैयाऩ्–अग्नि-सम भयंकर; मयक्कु इल्–अभ्रांत; चऱ्चरऩ् अॅऩ्ऩुम्–चर्चर नाम के; वलत्तिऩाऩ्–प्रतापी; अरुळ्–जनाया; तुयक्कु इलऩ्–(अकंपन) स्थिर; चुकेतु अॅऩ्ऱु–सुकेतु नाम का; ओर् तूय्मैयाऩ्–एक पवित्र; उळऩ्–रहा । ३६१

सुकेतु नाम का एक यक्ष था जो अथक वीर था और पवित्र स्वभाववाला था। और जो यक्षकुल जात, विस्मयकारी बली, अग्नि के समान संतापी, अभ्रांत चर्चर (झर्झ ?) का पुत्र था। ३६१

अऩ्ऩवऩ् महविला दयरुञ् जिऩ्दैयाऩ्, मऩ्ऩॅडुन् दामरै मलरिऩ् वैहुरुम्
नऩ्ऩॅडु मुदल्वऩै वऴुत्ति नऱ्ऱवम्, पऩ्ऩॅडुम् बहलॅलाम् बयिऩ्ऱ पाऩ्मैयाऩ् 362

अऩ्ऩवऩ्–वह (सुकेतु); मक इलातु–पुत्र के विना; अयरुम् चिन्तैयाऩ्–आकुलित चित्तवाला; मऩ् नॅटु तामरै–स्थायी गौरव-युक्त कमल; मलरिऩ् वैकु उरुम्–पुष्प पर रहनेवाले; नल् नॅटु मुतल्वऩै–दीर्घ यशस्वी आदिपुरुष की; वऴुत्ति–आराधना करके; पल् नॅटु पकल् अॅलाम्–बहुत अनेक दिनों; नल् तवम्–श्रेष्ठ तप; पयिऩ्ऱ–करने का; पाऩ्मैयाऩ्–गुणवान । ३६२

सुकेतु के संतान नहीं हुई। अतः उसने बहुत काल तक चतुर्मुख की पूजा करते हुए तपस्या की। ३६२

मुऩ्दिऩ ऩरुमऱैक् किऴवऩ् मुऱ्ऱुनिऩ्, चिऩ्दऩै यॆऩ्ऩॆऩच् चिऱुव रिऩ्मैयाल्
नॊन्दऩॆ ऩरुळ्हॆऩ नुणङ्गु केळ्वियाय्, मैन्दर्ह ळिलैयॊरु महळुण् डामॆऩ्ऱाऩ् 363

अरु मऱै किऴवऩ्–श्रेष्ठ वेद-पति; मुऩ्तिऩऩ्–सामने आये; मुऱ्ऱुम् निऩ् चिन्तऩै–पूरने योग्य तुम्हारी इच्छा; ॲऩ्–क्या है; ॲऩ–पूछने पर; चिऱुवर् इऩ्मैयाल्–पुत्रों के न होने से; नॊन्तऩॆऩ्–दुखी हूँ; अरुळ्क–कृपा करें; ॲऩ–(यह) प्रार्थना करने पर; नुणङ्कु केळ्वियाय्–सूक्ष्म श्रवण (प्राप्त) ज्ञानी; मैन्तर्कळ् इलै–पुत्र नहीं; ऑरु मकळ्–एक पुत्री; उण्टाम्–पैदा होगी; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ३६३

अनमोल वेदों के आश्रय ब्रह्मा जी ने उसके सामने प्रकट होकर पूछा कि तुम्हारा अभीष्ट क्या है ? सुकेतु ने उत्तर दिया कि मेरे पुत्र नहीं हुए और एतदर्थ मैं दुःखी हूँ। कृपा करके पुत्र-प्राप्ति का वर दीजिये। ब्रह्मा ने कहा—सूक्ष्म (श्रौत-) ज्ञानी ! तुम्हारे पुत्र नहीं होंगे। किन्तु एक पुत्री होगी। ३६३

पूमड मयिलिऩैप् पॊलिवुम् पॊऱ्पॊडुम्, एमुऱु मदमलै यीरैञ् ञूऱुडैत्
तामुऱु वलियॊडुन् दऩयै तोऩ्ऱुनी, पोमदि यॆऩवयऩ् पुहऩ्ऱु पोयिऩाऩ् 364

पू–कमलासना (सम); मटम् मयिलिऩै पॊलिवुम्–नित्य यौवना मोर की सी छटावाली के समान; पॊऱ्पॊटुम्–सुन्दरता के साथ; एम् उऱु–आनन्दयुत; मतम् मलै–मत्त (पर्वत) गज; ईर् ऐञ्ञूऱु–पाँच सौ के दो; उटैय–के वश के; उऱु वलियॊटुम्–अधिक बल के साथ; तऩयै तोऩ्ऱुम्–पुत्री पैदा होगी; नी पोमति–तुम जाओ; ॲऩ–कहकर; अयऩ्–अज; पुकऩ्ऱु–कहकर; पोयिऩाऩ्–गये। ३६४

और वह कमलासना के समान नित्य यौवना और कलापी-सी छटावाली होगी। सहस्र मत्त गजों की सम्मिलित बलवाली ऐसी एक तनया होगी; चलो। यह वर देकर अजदेव अन्तर्द्धान हो गये। ३६४

आयव ऩरुळ्वऴिप् पिऱन्द वायिऴै, शॆयव ळऩवळर् शॆव्वि कण्डिवट्
कायवऩ् यार्कॊलॆऩ् ऱायन्दु तऩ्किळै, नायहऩ् सुऩ्दऩॆऩ् बवर्कु नल्हिऩाऩ् 365

आयवऩ्–उनके; अरुळ् वऴि–आशिष से; पिऱन्त–जनित; आय् इऴै–चुने भूषणवाली (लड़की) (के); चॆयवळ् ॲऩ–लक्ष्मी के समान; वळर् चॆव्वि–बढ़ने की रम्यता; कण्टु–देखकर; इवट्कु आयवऩ्–इसका पति; आर् कॊल्–कौन हो; ॲऩ्ऱु आय्न्तु–ऐसा खोजकर; तऩ्किळै नायकऩ्–अपने वर्ग के नायक; चुन्तन् ॲऩ्पवर्कु–सुन्द नामधारी को; नल्किऩाऩ्–विवाह में दिया। ३६५

उनके वर के फलस्वरूप सुकेतु के एक लड़की पैदा हुई। वह आभरण-भूषिता होकर लक्ष्मीदेवी के समान बढ़ने लगी। उसकी सुन्दर तरुणाई देखकर सुकेतु उसके सुयोग्य पति खोजने लगा और अपने कुल के नायक सुन्द के साथ उसका विवाह कर दिया। (सुन्द को झर्झपुत्र कहते हैं महर्षि वाल्मीकि।)। ३६५

कामऩु मिरदियुङ् गलन्द काट्चियी
दामॆऩ वियक्कऩु मणङ्ग ऩाळुम्वे
ऱियाममुम् पहलुमो रीऱिऩ् ऱॆऩ्ऩलाय्त्
तामुऱु पॆरुङ्गळिच् चलदि मूऴ्हिऩार् 366

इयक्कऩुम्–यक्ष (सुन्द) और; अणङ्कु अऩ्ऩाळुम्–देवी सी वह; ईतु–यह (मिलन); कामऩुम् इरतियुम्–कामदेव और रति; कलन्त काट्चि–मिलाप का दृश्य; आम् ऎऩ–है, ऐसा मान्य (रीति से); वेऱु यामक्षुम् पकलुम्–परस्पर भिन्न रातों और दिनों में; ओर् ईऱु इऩ्ऱु–एक अन्त नहीं; ऎऩ्ऩल् आय्–ऐसा लोग कहें, उस रीति से; उऱु पॆरु–बहुत अधिक; कळि चलति–आनन्द-सागर में; मूऴ्किऩार्–डूबे। ३६६

यक्ष सुन्द और वह सुन्दरी इस तरह संयोग के साथ रहे कि देखने वाले कहते कि यह मन्मथ और रति का मेल है। वे रात और दिन को एक करते हुए आनन्द-सागर में मग्न रहे। ३६६

पऱ्पल नाट्चॆलीइप् पदुमै पोऩ्ऱॊळिर्
पॊऱ्पिऩाळ् वयिऱ्ऱिडैप् पुवऩ मेङ्गिड
वॆऱ्पणि पुयत्तुमा रीच ऩुम्विऱल्
मऱ्पॊरु सुवाहुवुम् वन्दु तोऩ्ऱिऩार् 367

पल् पल नाळ् चॆलीइ–अनेक दिनों के बीतते; पतुमै पोऩ्ऱु–लक्ष्मी-सम; ऒळिर् पॊऱ्पिऩाळ्–भासमान सुन्दरी के; वयिऱु इटै–पेट में; पुवऩम् एङ्किट–भुवनों को त्रस्त करते हुए; वॆऱ्पु अणि–पर्वत-सम; पुयत्तु–भुजावाले; मारीचऩुम्–मारीच और; विऱल् मल् पॊरु–सशक्त मल्ल-युद्ध करनेवाले; चुवाकुवुम्–सुबाहु; वन्तु तोऩ्ऱिऩार्–आ जनमे। ३६७

इस तरह अनेक दिन बीते। उस लक्ष्मी-सी सुन्दरी के गर्भ से पर्वत-सम कंधों वाले मारीच और मल्ल-युद्ध चतुर सुबाहु पैदा हुए। बस, सारा ससार इनको देखते ही भावी को सोचकर कांप उठे। ३६७

मायमुम् वञ्जमुम् वरम्बि लाऱ्ऱलुम्
तायिऩुम् पऴहिऩार् तमक्कुन् देर्वॊणा
दायवर् वळर्वुऴि यवरै यीऩ्ऱवक्
काय्शिऩ वियक्कऩुङ् गळिप्पिऩ् मॆऩ्मैयाऩ् 368

आयवर्–वे (दोनों पुत्र); मायक्षुम्–माया और; वञ्चमुम्–वंचना में; वरम्पु इल्–सीमाहीन; आऱ्ऱलुम्–शक्ति में; तायिऩुम् पऴकिऩार् तमक्कुम्–माता से भी अधिक परिचितों के लिये भी; तेर्वु ऒण्णातु–जानना कठिन हो ऐसा; वळर्वुऴि–बढ़ते समय; अवरै ईऩ्ऱ–उनको जन्म देनेवाले; काय् चिऩम्–जला सकनेवाले क्रोध के; अ इयक्कऩुम्–वह यक्ष भी; कळिप्पिऩ् मेऩ्मैयाऩ्–मद में बढ़ा होकर। ३६८

वे दोनों माया में, प्रवंचना में और अपार बाहु-बल में आगे इतने

बढ़े कि माता के समान हेल-मेल रखनेवाले भी विस्मय-विमूढ रहे। तब उनका जनक दाहक क्रोध-शील सुन्द मस्ती में आकर—। ३६८

तीदुरु मवुणर्हळ् तीमै तीर्दर, मोदुरु कडलॅला मॊरुहै मॊण्डुणुम्
मादव नुऱैविड मदनिल् वन्दुनीळ्, पादव मनैत्तैयुम् पऱित्तु वीशिनान् 369

तीतु उरुम्–दुराचारी; अवुणर्कळ्–असुरों से; तीमै तीर् तर–(की हुई) हानि दूर करने; मोतुरु–(तीर से) टकरानेवाले; कटल् ॲलाम्–समुद्र, सबको; ऑरु कै मॊण्टु–एक चुल्लू में भर ले; उणुम्–(जिन्होंने) पी लिया (उन); मातवन् उऱैवु इटम्–महान तपस्वी के वासस्थान; अतनिल् वन्तु–में आकर; नीळ् पातवम्–दीर्घ पादप; अनैत्तैयुम्–सभी को; पऱित्तु वीचिनान्–उखाड़कर फेंका। ३६६ ।

अगस्त्य के, जिन्होंने असुरों के अत्याचारों को मिटाने के लिये तीर से टकराने वाले सागर को एकदम अपने एक चुल्लू में भर कर पी लिया था, आश्रम में पहुँचा और उसने वहाँ रहे ऊँचे पादपों को जड़ से उखाड़कर फेंक दिया।

(अगस्त्य का समुद्र-जल पीने का वृत्तांत—वृत्रासुर अपने सगे असुरों के साथ समुद्र के अन्दर जाकर छिप गया। इन्द्र उसको मारने का उपाय न पाकर क्षुब्ध रहा। तब अगस्त्य ने अपने तपोबल से सारे सागर को अपने एक चुल्लू में भर लिया और आचमन के रूप में पी लिया। फिर इन्द्र ने वृत्रादि असुरों को मार दिया। इसी वृत्र को मारने के लिए प्राणत्यागी दधीचि की रीढ़ का वज्र बना)। ३६९

विळैवुरु मादवम् वॆ:.कि नोर्विरुम्, बुळैकलै इरलैयै युयिरुण् डोङ्गिय
वळैमुदन् मरनॅला मडिप्प मादवन्, तळलॅळ विळित्तनन् शाम्ब रायिनान् 370

विळैवु उरु–अभीष्ट फलदायी; मा तवम्–महान तप; वॆ:.कितोर्–चाह के साथ करनेवाले; विरुम्पु–(जिनको) चाहते हैं; उळै–हरिणों; कलै–हरिणियों; इरलैयै–मृगों को और; उयिर् उण्टु–मारकर; ओङ्किय–उन्नत बढ़े; वळै मुतल्–'वळै' (नामक) तरु आदि; मरन्–वृक्ष; ॲल्लाम्–सबको; मटिप्प–नाश करने पर; मा तवन्–महान तपस्वी ने; तळल् ॲळ–अंगारे उगलते हुए; विळित्तनन्–तरेरा; चाम्पर् आयिनान्–(यक्ष) राख बना। ३७०

सुन्द ने और भी अभीष्ट फल-दायी तपस्या को मन लगाकर करने वाले ऋषि-मुनियों के प्रिय, विविध हरिणों को भी मारा। अलावा उसने "सुरपुन्नै" आदि तरुओं को भी तोड़ डाला। यह देख महान तपस्वी अगस्त्य ने उस पर आग्नेय दृष्टि फेरी और वह वहीं राख हो गया। ३७०

मऱ्ऱवन् विळिन्दमै मैन्दर् तम्मॊडुम्, पॊऱ्ऱॊडि केट्टुवॆङ् गनलिऱ् पॊङ्गुऱा
मुऱ्ऱुर मुडिक्कुवॆन् मुनियै यॆन्ऱॆळा, नऱ्ऱव नुऱैविड मदनै नण्णिनाळ् 371

मऱ्ऱु–फिर; अवऩ् विळिऩ्तमै–उस (सुन्द) का मरना; पॊऩ् तॊटि–स्वर्ण-कंकणधारिणी; केट्टु–सुनकर; वॆम् कऩलिऩ्–भयंकर अग्नि के समान; पॊङ्कुरा–कोप करके; मुऩियै–मुनि को; मुऱ्ऱुऱ–पूर्णरूप से; मुटिक्कुवॆऩ्–नाश करूँगी; ऎऩ्ऱु–यह कहकर; मैन्तर् तम्मॊटुम् ऎऴा–(दोनों) पुत्रों के साथ निकलकर; नल्तवऩ्–श्रेष्ठ तपस्वी के; उऱैविटम् अतऩै–वासस्थान (को); नण्णिताऴ्–पहुँची। ३७१

उसकी मृत्यु की बात उस स्वर्ण-कंकणधारिणी ने अपने दोनों पुत्रों के साथ सुनी; भयंकर आग के समान बिफर उठी। मुनि का काम तमाम कर दूँगी—यह कहती हुई वह अपने दोनों पुत्रों को साथ ले, तपोधन अगस्त्य के आश्रम में आयी। ३७१

इडियॊडु मडङ्गलुम् वळियु मॆङ्गिडक्
कडिकॆड वमरर्हळ् कदिरु मुट्किडत्
तडियुडै मुहिऱ्कुलञ् जलिप्प वण्डमुम्
वॆडिपड वदिर्त्तॆदिर् विळित्तु मण्डवे 372

इटियॊटु–वज्र के साथ; मटङ्कलुम्–बड़वाग्नि; वळियुम्–युगांत पवन भी; एङ्किट–दहल जायँ, ऐसा; अमरर्कळ्–देवता लोग; कटि कॆट–निष्प्रभ हो जायँ, ऐसा; कतिरुम्–तेज पुंज (सूर्य व चन्द्र); उट्किट–डर जायँ; तटि उटै (य)–विद्युत सहित; मुकिल् कुलम्–मेघ-कुल (के); चलिप्प–चंचल होते; अण्टमुम्–अंड-गोल (के) भी; वॆटि पट–विदीर्ण होते; अतिर्त्तु–हा हू मचाते हुए; ऎतिर् विळित्तु–(मुनि को) उद्दिष्ट कर पुकारते हुए; मण्टवे–पास आये, तब। ३७२

वह भीषण ध्वनि में ललकारती हुई आयी। उसकी ध्वनि सुनकर वज्र, बड़वाग्नि और प्रलय-पवन भी डर गये। देवता लोग निष्प्रभ हो गये। सूर्य और चन्द्र भी भयभीत हुए और तडितावास मेघ भी थरथरा गये। अंडगोल फट गया। ३७२

तमिऴॆऩु मळप्परुञ् जलदि तन्दवऩ्
उमिऴ्कऩल् विऴिवऴि यॊऴुह वुङ्करित्
तऴिवऩ शॆय्दला लरक्क राहियॆ
इऴिहॆऩ वुरैत्तऩ ऩशऩि यॆञ्जवे 373

तमिऴ् ऎऩुम्–तमिऴ् कहलानेवाली; अळप्पु अरु–अकूत; चलति तन्तवऩ्–जलधि दिलानेवाले (की); उमिऴ् कऩल–उगली आग (के); विऴि वऴि–आँखों द्वारा; ऒऴुक–निकलते; अचऩि ऎञ्च–अशनि को निर्बल बनाते हुए; उङ्करित्तु–हुंकार कर; अऴिवऩ चॆय्तलाल्–मारक काम करने से; अरक्कर् आकि–राक्षस बनकर; इऴिक–पतित हो जाओ; ऎऩ उरैत्तऩऩ्–ऐसा (शाप-वचन) कहा। ३७३

तमिऴ के अगाध सागर के देनेवाले अगस्त्य ने आँखों से अंगारे उगलते हुए वज्र-घोष से भी अधिक ऊँचे स्वर में हुंकार किया। और

श्राप दिया कि जीव-घातक काम करते हो, अतः राक्षस बनकर पतित हो जाओ। (अगस्त्य को 'तमिऴ के देनेवाले' कहना औपचारिक कथन है। अगस्त्य ने तमिऴ भाषा को व्याकरण आदि रचकर, सुवद्ध बनाया और उसका प्रचार किया। पाणिनी ने संस्कृत का प्रचार किया। अतः पौराणिक वृत्तांत है कि शिवजी ने पाणिनी को संस्कृत और अगस्त्य को तमिऴ भाषा सिखाकर उनके द्वारा उन भाषाओं का प्रचार कराया। —मूल टीकाकार)। ३७३

वॆरुक्कॊळ वुलहैयुम् विण्णु ळोरैयुम्
मुरुक्कियॆव् वुयिरुमुण् डुऴलु मूऱ्क्कराम्
अरक्कर्ह ळायिऩ रक्क णत्तिऩिल्
उरुक्किय शॆम्बॆऩ वुमिऴ्हट् टीयिऩर् 374

अ कणत्तिऩिल्—उसी क्षण; उरुक्किय चॆम्पु ऎऩ्ऩ—पिघले ताँबे के समान; कण् उमिऴ्—आँखों से निकली; तीयिऩर्—आगवाले; उलकैयुम् इस लोक को (और); विण् उळोरैयुम्—आकाश-लोक-वासियों को; वॆरु कॊळ—भयभीत करते हुए; मुरुक्कि—मारकर; ऎव् उयिरुम्—किसी भी जीव को; उण्टु उऴलुम्—खाते हुए फिरनेवाले; मूऱ्क्कराम्—मूर्ख; अरक्कर्कळ् आयिऩर्—राक्षस बने। ३७४

ज्योंही शाप कहा गया त्योंही वे तीनों मूर्ख राक्षस बन गये। पिघले ताँबे के समान उनकी आँखों से कोपाग्नि निकलने लगी। वे पृथ्वी, और आकाश के लोकवासियों को डराते हुए किसी भी प्राणी को मार कर खाते हुए फिरने लगे। ३७४

आङ्गवऩ् वॆहुळियु मऱैन्द शाबमुम्
ताङ्गिऩ रॆदिर्शॆयुऩ् दरुक्कि लामैयिऩ्
नीङ्गिऩर् सुमालियै नेऱ्ऩ्दु निऱ्कियाम्
ओङ्गिय पुदल्वरॆऩ् ऱुऱवु कूर्ऩ्दऩर् 375

आङ्कु—वैसा; अवऩ् वॆकुळियुम्—उन (अगस्त्य) का क्रोध और; अऱैन्त चापमुम्—कहे शाप; ताङ्किऩर्—पात्र (बने) वे; ऎतिर् चॆयुम् तरुक्कु—प्रति (हिंसा) करने की शक्ति; इलामैयिऩ्—न रहने के कारण; नीङ्किऩर्—हटे; चुमालियै नेर्ऩ्तु—सुमाली के पास जाकर; निऱ्कु—आपके; याम्—हम; ओङ्किय—उत्कृष्ट; पुतल्वर्—पुत्र हैं; ऎऩ्ऱु—ऐसा कहकर; उऱवु कूर्ऩ्तऩर्—रिश्ता जोड़ा। ३७५

अगस्त्य के कोप और शाप के पात्र बने वे उनका कोई प्रतिकार करने में असमर्थ रहे। अतः वे (पुत्र) वहाँ से हटकर पाताल में सुमाली के पास पहुँचे और उससे हम आपके उत्कृष्ट संतान हैं कहकर नाता जोड़ लिया। (सुमाली रावण की माँ—केकशी का पिता था। माली और माल्यवान इसके सगे भाई थे। वे पहले लंका में रहे। उनके अत्याचारों से तंग

आकर श्रीविष्णु ने माली को मारा और बाकी दोनों भाई डरकर पाताल भाग गये। बहुत दिन बाद जब रावण राजा हुआ वे लंका में आ गये)। ३७५

अवऩॊडुम् पादलत् तनेह नाट्चॅलीइत्
तवऩुरु दशमुहऩ् ऱऩक्कु मादुलर्
इवरॆऩप् पुडैत्तऴित् तुलह मॆङ्गणुम्
पवऩॆऩिऱ् ऱिरिहुवर् पदहि मैन्दर्हळ् 376

पतकि मैन्तर्कळ्—पातकी-पुत्र; पातलत्तु—पाताल में; अवऩॊटुम्—उस (सुमाली) के साथ; अऩेकम् नाळ्—अनेक दिन; चॆलीइ—बिताकर; तवऩ् उरु—तपोबली; तचमुकऩ्—दशमुख; इवर् तऩक्कु मातुलर्—ये मेरे मामा हैं; ऎऩ—ऐसा कहते; पुटैत्तु अऴित्तु—मारकर, मिटाकर; पवऩत्तिल्—(प्रलय) पवन के समान; उलकम्—लोक; ऎङ्कणुम्—सर्वत्र; तिरिकुवर्—घूमने लगे। ३७६

उस पातकी ताडका के पुत्र अनेक दिन पाताल में छिपे-लुके रहे। फिर वे तपोबली रावण के पास गये। रावण ने इनको मातुल कहकर अपनाया। उसकी प्रेरणा और उसका बल पाकर ये सारे संसार में प्रलयकालीन प्रभंजन के समान सबको मारकर खाते हुए विचर रहे हैं। ३७६

मिहुन्दिऱऩ् मैन्दरै वेऱु नीङ्गुऱात्
तहुन्दॊऴिऩ् मुऩिवरऩ् चलत्तै युऩ्ऩिये
वहुन्दुऱ वशुवरि वदिन्द दिव्वऩम्
पुहुन्दऩ ळऴलॆऩप् पुळुङ्गु नॆञ्जिऩाळ् 377

तकुम् तॊऴिल्—सुयोग्य (तपो-) कर्मी; मुऩिवरऩ् चलत्तै—मुनिवर के कोप को; उऩ्ऩिये—स्मरण करते हुए; अऴल् ऎऩ—अग्नि के समान; पुऴुङ्कुम् नॆञ्चिऩाळ्—घुलनेवाले मन की; तिऱल् मिकु—शक्ति में अधिक; मैन्तरै—पुत्रों (से); वेऱु नीङ्कुऱा—अलग हटकर; वकुन्तु उऱ—(रहने का) रास्ता अपनाने के कारण; वच अरि वतिन्ततु—ज्वालायुत अग्नि से व्याप्त; इ वऩम्—इस वन में; पुकुन्तऩळ्—प्रविष्ट हुयी। ३७७

तपस्या के श्रेष्ठ सुयोग्य कार्य में लगे रहे अगस्त्य के कोप का सदा स्मरण करके आग के समान कुढ़ती रही ताड़का को अपने पराक्रमी पुत्र से अलग होकर रहना पड़ा। अतः वह लपटों के साथ जलनेवाली अग्नि के निलय, इस जंगल में आकर वास करने लग गयी। ३७७

❀ मण्णुरुत् तेडुप्पिऩुम् कडलै वारिऩुम्
विण्णुरुत् तिडिप्पिऩुम् वेण्डिऱ् चॅय्हिऱ्पाळ्
ऎण्णुरुत् तॆरिवरुम् पाव मीण्डियोर्
पॆण्णुरुक् कॊण्डॆऩत् तिरियुम् पॆऱ्ऱियाळ् 378

ऍण् उरु—विस्तार (और) आकार; तॅरिवु अरु—जानने में अशक्य; पावम् ईण्टि—पाप मिलकर; ओर् पॅण् उरु—एक स्त्री का रूप; कॉण्टु—धरा; ऍन्न—ऐसा; तिरियुम् पॅऱ्ऱियाळ्—घूमने की स्वभाववाली; मण् उरुत्तु ऍटुप्पिनुम्—भूमि खोदकर निकालना हो; कटलै वारिनुम्—समुद्र को उठाकर पीना हो; विण् उरुत्तु इटिप्पिनुम्—आकाश को, कोप कर, ढहाना हो; वेण्टिऩ्—चाहेगी तो; चॅय्किऱ्पाळ्—कर चुकनेवाली है। ३७८

जिनकी संख्या जानी नहीं जा सकती और जिनके प्रकार भी कल्पना में नहीं आ सकते वे सब पाप एक स्त्री का रूप धरकर आ जावें तो कैसी रहेगी ? वैसी ही है वह। भूमि को खोद निकालना हो, या समुद्र को पी जाना हो या आकाश को तोड़कर गिराना हो—चाहेगी तो अनायास कर देगी। ३७८

पॅरुवरै यिरण्डॉडुम् बिऱन्द नञ्जॉडुम्
उरुमुऱऴ् मुऴक्कॉडु सूऴित् तीयॉडुम्
इरुपिऱै शॅऱिन्दॅऴु कडलुण् डामॅनिऩ्
वॅरुवरु तोऱ्ऱत्तळ् मेऩि मानुमे 379

पॅरु वरै—बड़े पर्वत; इरण्टॉटुम्—दो के साथ और; पिऱन्त नञ्चॉटुम्—सहजात विष के साथ; उरुम् उऱऴ्—वज्र से टक्कर लेनेवाले; मुऴक्कॉटुम्—गर्जन के साथ; ऊऴि तीयॉटुम्—युगांत (कालीन) आग के साथ; इरु पिऱै—दो अर्ध-चन्द्र; चॅऱिन्तु—सहित होकर; ऍऴु—उठ आनेवाला; कटल् उण्टु आम्—एक समुद्र है; ऍन्निऩ्—तो; वॅरुवरु तोऱ्ऱत्तळ्—डरावनी सूरतवाली (उसके); मेऩि मानुम्—आकार की तुलना करेगा। ३७९

उस डरावनी सूरत की राक्षसी की देह की उपमा भयंकर समुद्र ही से हो सकती है जो दो पर्वतों (स्तनों की जगह में), सहजात विष (आँखों के स्थान में) वज्रसम घोष (जोर का शोर), प्रलयकालीन अग्नि (केशराशि की जगह पर), और दो अर्ध-चन्द्रों (मुख के कोनों से निकले लम्बे और वक्र दांतों के स्थान में) के साथ चलता आ रहा हो। ३७९

❁ शूडह वरवुऱऴ् शूलक् कैयिऩळ्
काडुऱै वाऴ्क्कैयळ् कण्णिऱ् काण्बरेल्
आडवर् पॅण्मैयै यवावुन् दोळिन्नाय्
ताडहै ऍन्पदच् चऴक्कि नाममे 380

कण्णिऩ्—आँखों से; काण्परेल्—देखें तो; आटवर्—पुरुष भी; पॅण्मैयै—स्त्रीत्व को; अवावुम्—चाहने लगें ऐसी; तोळिन्नाय्—भुजाओंवाले; चूटकम् अरवु—कंकणरूपी नाग; चूलम् उऱऴ्—(और) शूल धरनेवाले; कैयिन्नळ्—हाथोंवाली; काटु उऱै—वन में वास करने के; वाऴ्क्कैयळ्—जीवनवाली; अ चऴक्कि—उस दुराचारिणी (का); नामम्—नाम; ताटकै ऍन्पतु—ताटका है। ३८०

हे सुन्दर-बाहु, जिसकी भुजाओं को देखकर पुरुष लोग भी स्त्रीत्व की इच्छा करेंगे ! वह अपने सर्प-कंकणधारी हाथ में त्रिशूल रखती है। वन-वासिनी है ! उस दुष्टा का नाम ताड़का है । ३८०

उळप्पॅरुम् पिणिप्पऱा वुलोब मीऩ्ऱुमे
अळप्परुङ् गुणङ्गळै यऴिक्कु माऱुपोल्
किळप्परुङ् गॉडुमैय वरक्कि केडिला
वळप्पॅरु मरुदवैप् पऴित्तु माऱ्ऱिऩाळ् 381

उळम् पॅरुम् पिणिप्पु—चित्त को अधिक बाँधने से; अऱा—न चूकनेवाला; उलोपम् ऑऩ्ऱुमे—लोभ एक ही; अळप्प अरु—आँकने के लिये अशक्य; कुणङ्कळै—(अच्छे) गुणों का; अऴिक्कुम् आऱु पोल्—नाश कर देगा, उसी तरह; किळप्पु अरु—अकथनीय; कॉटुमैय अरक्कि—अत्याचारिणी राक्षसी; केटु इला—अक्षय; वळम् पॅरु—समृद्ध; मरुतम् वैप्पु—खेत और बागों के भूभाग को; अऴित्तु—मिटाकर; माऱ्ऱिऩाळ्—(ताड़का ने) परिवर्तित कर दिया । ३८१

यह सुन्दर खेतों और बागों का उर्वर प्रदेश था । (तमिऴ में इसे मरुतम् कहते हैं ।) इस सारी भूमि को अकेली उसने दारुण और दाहक जंगल में वैसे बदल दिया जैसे अकाट्य लोभ का दुर्गुण अकेला ही अपरिमेय सद्गुणों का नाश कर डालता है । ३८१

इलङ्गैयर शऩ्पणिय मैन्दॉरिडै यूऱाय्
विलङ्गल्वलि कॉण्डॅऩदु वेळ्विनलि हिऩ्ऱाळ्
अलङ्गऩ्मुहि लेयवळिव् वङ्गनिल मॅङ्गुम्
कुलङ्गळॊ डडङ्गनऩि कॊऩ्ऱुतिरि हिऩ्ऱाळ् 382

अलङ्कल्—माला (युक्त); मुकिले—मेघ; अवळ्—वह; विलङ्कल् वलि—पर्वत की शक्ति; कॉण्टु—लेकर; इलङ्कै अरचऩ्—लंकाधिपति (की); पणि अमैन्तु—आज्ञा मानकर; ओर् इटैयूऱु आय्—(बड़ी) एक बाधा बनकर; ऍऩतु वेळ्वि नलिकिऩ्ऱाळ्—मेरा यज्ञ बिगाड़ती है; इव् अङ्क निलम् ऍङ्कुम्—इस अंग भूमि भर में (सर्वत्र); कुलङ्कळॊटु अटङ्क—कुल सहित नाश करते हुए; नऩि कॊऩ्ऱु—खूब मारती हुई; तिरिकिऩ्ऱाळ्—घूमती है । ३८२

माला-धारी, मेघ-सदृश, हे श्रीराम ! वह पर्वत का-सा भुज-बल रखती है । लंकाधिप की आज्ञाकारिणी है । बाधा बनकर मेरा यज्ञ रोकती है । और इस अंग देश भर में सबको सकुल मारकर खाती फिरती है । ३८२

✿ मुऩ्ऩुल हॢळित्तमुऩि तऩ्दवुयि रॅल्लाम्
तऩ्ऩुण वॆऩक्करुदु तऩ्मैयिऩण् मैन्द

ॲऩ्ऩिऩि युणर्त्तुव दिऩिच्चिऱिदु नाळिल्
मऩ्ऩुयि रऩैत्तैयुम् वयिऱ्ऱिलिडु मॅऩ्ऱाऩ् 383

मैन्त–(चक्रवर्ती-) पुत्र; मुऩ् उलकु अळित्त मुऩि–प्राचीन लोकों को सृजित करनेवाले ऋषि (ब्रह्मा) (के); तन्त उयिर् ॲलाम्–सृष्ट जीव सबों को; तऩ् उणवु–अपना भोजन; ॲऩ करुतु–ऐसा समझने का; तऩ्मैयिऩळ्–स्वभाववाली; इऩि चिऱितु नाळिल्–अब थोड़े दिनों में; मऩ् उयिर्–स्थायी जीव; अऩैत्तैयुम्–सबों को; वयिऱ्ऱिल् इटुम्–अपने उदर में डाल लेगी; इऩि ॲऩ् उणर्त्तुवतु–आगे क्या समझना है; ॲऩ्ऱाऩ्—बोले । ३८३

चक्रवर्ती-कुमार ! प्राचीन सभी लोकों के सृष्टा (चतुर्मुख) के दिये सभी जीवों को वह अपना भोजन-पदार्थ समझती है ! अतः (अब मारी नहीं गयी तो) कुछ ही दिनों में लोकस्थ सभी जीवों को अपने उदरस्थ कर लेगी । आगे क्या कहा जाय ? । ३८३

❁ इङ्गुरुव ऩिप्परि शुरैप्पवदु केळाक्
कॉङ्गुऱै नऱैक्कुल मलर्च्चॆऩि तुळक्का
ॲङ्गुऱैव दित्तॊऴि लियऱ्ऱुबव ळॆऩ्ऱाऩ्
शङ्गुऱै करत्तॊरु तऩिच्चिलै तरित्ताऩ् 384

चङ्कु उऱै करत्तु–शंखधारी हस्त में; ऑरु तऩि चिलै तरित्ताऩ्–अद्वितीय और श्रेष्ठ धनु (कोदण्ड) धरनेवाले; इङ्कु–इधर; उरुवऩ् इ परिचु उरैप्प–महर्षि के ऐसा कहने पर; अतु केळा–वह सुनकर; कॉङ्कु उऱै–सुवासित; नऱै कुलम् मलर्–शहद-पूर्ण पुष्प (अलंकृत); चॆ(ऩ्)ऩि–सिर को; तुळक्का–हिलाकर; इ तॊऴिल्–यह कृत्य; इयऱ्ऱुपवळ्–करनेवाली; उऱैवतु ॲङ्कु–रहती कहाँ; ॲऩ्ऱाऩ्–पूछा । ३८४

श्रीराम ने, जो पांचजन्य शंख धारण करनेवाले अपने हाथ में अब कोदण्ड लिये हुए थे, विश्वामित्र जी की ये बातें सुनकर, सुगन्धित और शहद भरे पुष्पों से अलंकृत अपने सिर को हिलाकर पूछा कि यह (भयंकर) कार्य करनेवाली रहती कहाँ है ? । ३८४

❁ कैवरै यॆऩत्तहैय काळैयुरै केळा, ऐवरै यहत्तिडै यडैत्तमुऩि यैय
इव्वरै यिरुप्पदव ळॆऩ्बदऩिऩ् मुऩ्बोर्, मैवरै नॆरुप्पॆरिय वन्ददॆऩ वन्दाळ् 385

कैवरै ॲऩ्ऩ तकैय–गज ही वर्ण्य; काळै उरै केळा–ऋषभ का कथन सुनकर; ऐवरै अकत्तिटै अटैत्त मुऩि–पाँच (इंद्रियों) को अन्दर ही दबाये रखनेवाले मुनि; ऐय–सुन्दर; अवळ् इरुप्पतु–उसका वासस्थान; इ वरै–यह पर्वत है; ॲऩ्पतऩिऩ् मुऩ्पु–यह कहने से पूर्व; ओर् मै वरै–एक काला पर्वत; नॆरुप्पु ॲरिय–आग के जलते (जलती आग के साथ); वन्ततु–(चलता) आया; ॲऩ्ऩ–ऐसा; वन्ताळ्–आयी । ३८५

गज सन्निभ और ऋषभ-सम श्रीराम का वचन सुनकर इंद्रियजित

मुनि ने कहा कि प्रभु ! उसका वासस्थान यही पर्वत है। यह कह चुकने से पूर्व ही ताड़का उनके सामने, काला पर्वत जलता आ गया—ऐसा प्रकट होकर आने लगी। ३८५

शिलम्बुकॉऴ् शिलम्बिडै शॅऱित्तकऴ लोडुम्
निलम्बुह मिदित्तिड नॅऴित्तकुऴि वेलैच्
चलम्बुह वऩऱ्ऱुह णऩ्दहऩु मञ्जिप्
पिलम्बुह निलैक्किरिहळ् पिऩ्ऱॉडर वऩ्दाळ् 386

इटै चॅऱित्त–(यथा-) स्थान पहने; चिलम्पु कॉऴ्–गिरियों से (कंकड़ों के स्थान में) भरे; चिलम्पु–नूपुर; कऴलोटुम्–(पर्वत-निर्मित) कड़ों के साथ; निलम् पुक–धरती धँसाते हुए; मितित्तिट–डग भरने से; नॅऴित्त कुऴि–बने गड्ढों में; वेलै चलम् पुक–समुद्र जल आ भरा; अऩल्–प्रज्वलित कोपवाले; तऱुकण्–निडर; अऩ्तकऩुम्–यम (को) भी; अञ्चि–डरकर; पिलम् पुक–पाताल में पहुँचाते हुए; निलै किरिकळ्–अचल पर्वत भी; पिऩ् तॉटर–अनुगमन करते; वऩ्ताळ्–आयी। ३८६

वह अपने पैरों को जिनके नूपुरों के अंदर पर्वत ही कंकड़ों के रूप में भरे थे, इस तरह रखती आ रही थी कि भूमि में गड्ढे बन गये और उनमें समुद्रजल आकर भर गया। कोपाग्नि से युक्त निडर अंतक भी उससे डरकर पाताल में आकर छिप गया। स्थावर गिरियाँ भी चलायमान होकर इसके पीछे आ रही थीं। ३८६

❀ इऱैक्कडै तुडित्तपुरु वत्तळॅयि ऱॅऩ्ऩुम्
पिऱैक्कडै पिऱक्किड मडित्तपिल वायळ्
कऱैक्कडै यऱ्क्किवड वैक्कऩलि रण्डाय्
निऱैक्कडऩ् मुळैत्तॅऩ नॅरुप्पॅऴ विऴित्ताळ् 387

कऱै कटै अरक्कि–(संसार का) कलंक, नीच राक्षसी; कटै—कोनों में; इऱै तुटित्त–थोड़ा फड़कती; पुरुवत्तळ्–भौंहोंवाली; ऍयिऱु ऍऩ्ऩुम्–(वक्र-) दाँतरूपी; पिऱै–अर्धचन्द्रों को; कटै पिऱक्किट–(मुख के) कोनों से प्रकट करते हुए; मटित्त–बन्द किये हुए; पिलम् वायळ्–गुफ़ा सम मुखवाली; वटवै कऩल्–बड़वाग्नि; इरण्टाय्–दो बनकर; निऱै कटल्–मर्यादाबद्ध समुद्र में; मुळैत्तत्तु–प्रकट हुई; ऍऩ–ऐसा; नॅरुप्पु ऍऴ–अंगारे निकालती हुयी; विऴित्ताळ्–घूरकर देखा। ३८७

लोक-कलंक, नीच, उस राक्षसी की भौहों के कोने किंचित कांपे। उसका मुख पर्वतगह्वर के समान था जिसको उसने बन्द किया था और जिसके कोनों से दो वक्र-दांत बाहर निकले हुए थे। उसने आँखों से बड़वानल दो भागों में मर्यादाबद्ध सागर मध्य निकल रहा हो ऐसा आग उगलती हुई तरेरा। ३८७

❀ कडङ्गलुऴ् तडङ्गळिऱु कैयॊडुहै तॅऱ्ऱा
वडङ्गॉळ तुडङ्गुमुलै याण्मऱुहि वाऩोर्

इडङ्गळु नॆडुन्दिशैयु मेऴुलहु मॆङ्गुम्
अडङ्गलु नडुङ्गवुरु मञ्जनन्ति यार्त्ताळ् 388

कटम् कलुऴ्–मद जलस्रावी; तट कळिरु–बड़े गजों को; कै ऒॅटु कै तॆर्ऱा–सूँड से सूँड बाँधकर; वटम् कॊळ–हार के समान पहने रहने से; नुटङ्कुम्–डोलनेवाले; मुलैयाळ्–स्तनोंवाली; वान्नोर इटङ्कळुम्–देवों के स्थानों को; नॆटु तिचैयुम्–लम्बी दिशाओं को; एऴ् उलकुम्–सातों लोकों को; ऎङ्कुम्–और सब स्थानों को; अटङ्कलुम्–(उनके) सभी (जीवों) को; मरुकि नटुङ्क–डराते हुए; उरुम् अञ्च–वज्र डर जाय ऐसा; नन्ति आर्त्ताळ्–उच्च नर्दन किया । ३८८

उसने वक्ष पर मद-नीरस्रावी मत्त गजों की सूँड़ों को बटकर हार के रूप में पहन रखा था। इसलिए उसके स्तन दोलायमान थे। उसने ऐसा भीषण गर्जन किया कि गगन-लोक, लम्बी दिशाओं, भू आदि सातों लोकों में, सर्वत्र रहनेवाले सभी जीव थर्रा उठे और अशनि भी भयभीत हुआ । ३८८

आर्त्तवरै नोक्किनहै शॆय्दॆवरु मञ्जक्
कूर्त्तनुदि मुत्तलै ययिर्कॊडिय कूऱ्ऱैप्
पार्त्तॆयिऱु तिन्ऱुपहु वाय्मुऴै तिऱन्दोर्
वार्त्तैयुरै शॆय्दन्न ळिडिक्कुमऴै यन्नाळ् 389

इटिक्कुम् मऴै अन्नाळ्–गरजते मेघ समाना; आर्त्तु–दहाड़कर; अवरै–उनको; नोक्कि–देखकर; नकै चॆय्तु–ठठाकर; ऎवरुम्–कोई भी; अञ्च–डरे, ऐसा; कूर्त्त नुति–तीक्ष्ण नोकवाले; मुत्तलै अयिल्–त्रिशिरा शूल (रूपी); कॊटिय कूऱ्ऱै–भयंकर यम को; पार्त्तु–देखकर; ऎयिऱु तिन्ऱु–दाँत पीसकर; पकु वाय् मुऴै तिऱन्तु–मुख-गह्वर खोलकर; ओर् वार्त्तै–एक वार्त्ता; उरै चॆय्तनळ्–कही । ३८९

वज्र-नाद-युक्त मेघ के समान उसने गर्जन करके, तीनों को देखा; ठठाकर हंसी। सबको डरानेवाले तीक्ष्ण फलों के त्रिशूलरूपी भयंकर यम को देखते (दिखाते) हुए, दाँत पीसकर, मुख-गह्वर को खोलकर उसने एक बात कही । ३८९

❀ कडक्करुम् वलत्तॆन्नदु कावलिदिल् यावुम्
कॊडक्करु वऱुत्तनॆ न्निनिच्चुवै किडक्कुम्
विडक्करिदॆ नक्करुदि योविदिकॊ डुन्दप्
पडक्करुदि योपहर्मिन् वन्दपरि शॆन्ऱाळ् 390

कटक्क अरु वलत्तु–अलंघ्य, क्षमता युक्त; ऎन्नतु कावल् इतिल्–मेरी रक्षा की इस भूमि में; यावुम् कॊट–सबका नाश करते हुए; करु अऱुत्तनॆन्–निर्मूल किया; इनि–अब; वन्त परिचु–आने का हेतु; चुवै किटक्कुम्–स्वादिष्ट; विटक्कु अरितु–मांस (मिलना मेरे लिए) कठिन है; ऎन्न करुतियो–यह समझकर क्या;

विति कॉट्टु उन्त--विधि के प्रेरित करते; पट करुतियो–मरना चाहकर क्या; पकर्मिऩ्–कहो; ऍऩ्ऱाळ्–कहा (पूछा)। ३९०

अलंघ्य है मेरी शक्ति। मेरे शासनाधीन है यह स्थान। मैं यहाँ के सभी जीवों को निर्मूल कर चुकी। अब तुम आ गये हो! क्या यह खुद समझकर आये हो कि इसे अब स्वादिष्ट मांस मिलना असंभव हो गया है? या अपने प्रारब्ध की प्रेरणा से मेरे हाथों मरण का वरण करने आये हो? कौन सा कारण है? बताओ। ३९०

❀ मेहमवै यिऱ्ऱुह विऴित्तऩळ् पुळुङ्गा
माहवरै यिऱ्ऱुह वुदैत्तऩण् मदित्तिण्
पाहमॅऩ्ऩु मुऱ्ऱॅयि ऱदुक्किययिल् पऱ्ऱा
आहमुऱ वुय्त्तॅऱिवॅ ऩॅऩ्ऱॅदि रळऩ्ऱाळ् 391

मेकम् अवै–मेघ समूह; इऱ्ऱु उक–चूर होकर गिरे, ऐसा; विऴित्तऩळ्-(आँखें फाड़कर) देखा; पुळुङ्का–क्रोध कर; माकम् वरै–आकाश-स्पर्शी पर्वत को; इऱ्ऱु उक–चूरकर छितराते हुए; उतैत्तऩळ्–लात मारी; मति तिण् पाकम्-चन्द्र के कठोर भाग; ऍऩ्ऩुम्–मान्य; मुऱ्ऱु ऍयिऱु–पूरे बढ़े (वक्र-) दाँतों को; अतुक्कि–पीसकर; अयिल् पऱ्ऱा–शूल पकड़कर; आकम् उऱ–वक्ष पर लगे ऐसा; उय्त्तु ऍऱिवॅऩ्–निशाना लगाकर फेंकूँगी; ऍऩ्ऱु–यह कहकर; ऍतिर्–सामने (आकर); अळऩ्ऱाळ्–दहाड़ा। ३९१

उसने तरेरा-मेघ चूर होकर गिर गये। लात मारी-गगनचुम्बी पर्वत चूर हुआ। फिर पूरे बढ़े अपने अर्धचन्द्र-सम वक्र दाँतों को पीसते हुए हाथ में शूल संधाना। (इनकी) छाती पर लगे, ऐसा फेंकूँगी—यह कहते हुए उसने सामने खड़ी हो गुस्सा दिखाया। ३९१

❀ अण्णऩ्मुऩि वऱ्कदु करुत्तॅऩिऩु मावि
उण्णॅऩ वडिक्कणै तॊडुक्किल ऩुयिर्क्के
तुण्णॅऩुम् विऩैत्तॊऴि ऱॊडङ्गियुळ ळेऩुम्
पॅण्णॅऩ मऩत्तिऱै पॅरुन्दहै निऩैन्दाऩ् 392

मुऩिवऱ्कु अतु करुत्तु–मुनि का वही विचार है; ऍऩिऩुम्–तो भी; उयिर्क्के-प्राणों के लिए; तुण् ऍऩुम्–खतरे का; विऩै तॊऴिल्–कार्य करने का; तॊटङ्कि उळळ् एऩुम्–आरम्भ कर चुकी, तो भी; अण्णल्–प्रभु (ने); आवि उण् ऍऩ-प्राण हर लो, यह कहकर; वटि कणै–तीक्ष्ण शर; तॊटुक्किलऩ्–नहीं संधाना; पॅण् ऍऩ–स्त्री है यह; पॅरुन्तकै मऩत्तु–उदार मन में; इऱै निऩैन्ताऩ्–जरा विचारा। ३९२

महर्षि विश्वामित्र की (उसके वध में) सम्मति थी और वह इनके प्राणों को खतरे में डालनेवाला काम भी करने लगी थी। तो भी प्रभु ने उसके प्राणों को हरने के अभिप्राय से शर संधान नहीं किया। वह स्त्री है यह किंचित संकोच उनके मन में उठा। ३९२

❀ वॆऱिन्द शॆम्मयिर् वॆळ्ळॆयिऱ् ऱाळयिल्
ऎऱिन्दु कॊल्वॆऩ्ऩॆऩ्ऩ् ऱॆऱ्कवुम् पार्क्किलाच्
चॆऱिन्द तारवऩ् शिन्दैक् करुत्तॆलाम्
अऱिन्द नाऩ्मऱै यन्दणऩ् कूऱुवाऩ् 393

वॆऱिन्त–बिखरे; चॆम्मयिर्–अरुण केश; वॆळ् ऎयिऱ्ऱाळ्–सफेद (वक्र-) दाँतोंवाली (के); अयिल् ऎऱिन्तु–शूल फेंककर; कॊल्वॆऩ्–मारूँगी; ऎऩ्ऱु–ऐसा कहकर; एऱ्कवुम्–सामने आने पर; पार्क्किला–उसकी परवाह नहीं करते; चॆऱिन्त तारवऩ्–धनी माला के धारण करनेवाले (का); चिन्तै करुत्तु ऎलाम्–मनोभाव सब; अऱिन्त–जाननेवाले; नाऩ् मऱै अन्तणऩ्–चतुर्वेद के ज्ञाता मुनि; कूऱुवाऩ्–बोलने लगे । ३९३

बिखरे और लाल रंग के केश और श्वेत वक्र-दाँतोंवाली वह शूल फेंककर मार दूँगी—यह कहते हुए सामने आ रही थी; पर उसकी कोई परवाह न करते थे, घने रूप से गुंथी पुष्पमाला के धारण करनेवाले श्रीराम। ऋषि उनका अभिप्राय ताड़ गये। तब चारों वेदों के निष्णात ऋषि ने यों कहा— । ३९३

❀ तीदॆऩ् ऱुळ्ळवै यावैयुञ् जॆय्दॆमैक्, कोदॆऩ् ऱुण्डिल ळित्तऩै येकुऱै
यादॆऩ् ऱॆण्णुव दिक्कॊडि याळैयुम्, मादॆऩ् ऱॆण्णुदि योमणिप् पूणिऩाय् 394

मणि पूणिऩाय्–रत्नाभरण भूषित; ऎमै–हमें; तीतु ऎऩ्ऱु उळ्ळवै–हानि कहलानेवाली; यावैयुम् चॆय्तु–सभी पहुँचाकर; कोतु ऎऩ्ऱु–थोथा मानकर; उण्टिलळ्–नहीं खाया है; इत्तऩैये कुऱै–यही, बस, बाकी है; यातु ऎऩ्ऱु ऎण्णुवतु–क्या समझा जाय; इ कॊटियाळैयुम्–इस अत्याचारिणी को भी; मातु ऎऩ्ऱु ऎण्णुतियो–स्त्री (कहके) समझोगे । ३९४

रत्नाभरणधारी हे राम ! इसने हमें सब तरह का संकट दिया है; सिर्फ थोथा (या सीठी) समझकर नहीं खाया है। यही बाकी है। इसको क्या समझा जाय ? इस दुष्टा को भी स्त्री मानेंगे ? । ३९४

नाण्मै येयुडै यार्प्पिऴैत् ताऩहै, वाण्मै येयुडै वऩ्ऱिऱ लाडवर्
तोण्मै येयिवळ् पेर्शॊलत् तोऱ्कुमेल्, आण्मै ऎऩ्ऩुम दारिडै वैहुमे 395

नाण्मैये–लज्जाशीलता को ही; उटैयार्–श्रेष्ठ समझकर पालनेवाली (को); पिऴैत्ताल्–मार डाला जाय तो; नकै–निन्द्य है; वाण्मैये उटैय–तलवार-कार्य अपनाये हुए; वऩ् तिऱल्–बहुत पराक्रमी; आटवर्–पुरुषों का; तोण्मैये–भुज-बल भी; इवळ् पेर् चॊल–इसका नाम कहते ही (सुनकर); तोऱ्कुमेल्–हार जायगा तो; आण्मै ऎऩ्ऩुम् अतु–पौरुष नाम की वह वस्तु; आर् इटै वैकुम्–किसके पास ठौर पायेगी । ३९५

स्त्री का श्रृंगार लाज है। लज्जाशील स्त्री को मारोगे तो वह परिहास का विषय होगा। तलवार चलानेवाले अति बलिष्ट वीर पुरुषों

का भुजबल भी इसका नाम सुनकर हार जायगा ! तो पुंसत्व किसके पास है ? । ३९५

इन्दि रऩ्ऩिडैन् दाऩुडैन् दोडिऩार्, तन्दि रम्बडत् ताऩवर् वाऩवर्
मन्द रम्मिव डोळॅऩिऩ् मैन्दरो, डन्द रम्मिऩि यादुकॉ लाण्मैये 396

इन्तिरऩ् इटैन्ताऩ्–इन्द्र हारा; ताऩवर्–दानव; वाऩवर्–सुर; तन्तिरम् पट–सेना के नष्ट होते; उटैन्तु ओटिऩार्–हारकर भागे; इवळ् तोळ्–इसके कंधे; मन्तरम्–मन्दर पर्वत हैं; ऍऩिऩ्–तो; इऩि–फिर; आण्मैयिल्–पुंसत्व में; मैन्तरोटु–वीर पुरुषों से; अन्तरम् यातु–अन्तर क्या है ? (ए) (चॊल्) । ३९६

इन्द्र इसके सामने हारा; दानवों और देवों की सेना मिटी और वे भाग गये। इसके कंधे मंदर पर्वत (सम कठोर) हैं। तो पुरुषों से इसमें अन्तर क्या है ? । ३९६

करङ्ग डऱ्ऱिहि रिप्पडि कात्तवर्
पिऱङ्ग डैप्पॅरि योय्पॅरि योरॊडुम्
मऱङ्गॊ डित्तरै मऩ्ऩुयिर् माय्त्तुनल्
अऱङ्गॅ डुत्तवट् काण्मैयुम् वेण्डुमो 397

करङ्कु–घूमनेवाले; अटल् तिकिरि–सक्षम (आज्ञा-) चक्र द्वारा; पटि कात्तवर्–भूमि का पालन करनेवालों (के); पिऱङ्कटै–(सूर्यवंश के) वंशज; पॅरियोय्–महानुभाव; पॅरियोरॊटुम्–महात्माओं से; मऱम् कॊटु–वैर करके; इ तरै–इस भूमि के; मऩ् उयिर् माय्त्तु–रहनेवाले जीवों को मारकर; नल् अऱम्–सद्धर्म (का); कॅटुत्तवट्कु–नाश करनेवाली (इस) के लिए; आण्मैयुम् वेण्टुमो–पुरुषत्व (पुरुषाकार) भी चाहिये क्या ? । ३९७

घूमने वाले अपने प्रतापी आज्ञा-चक्र से भूमि का पालन करनेवाले सूर्य-वंशी राजाओं के कुल में उत्पन्न हे राम ! साधुओं से वैर करके, इस पृथ्वी के रहनेवाले जीवों को मारकर इसने सद्धर्म को बिगाड़ दिया है। तब क्या इसके वध के लिये इसका पुरुष-शरीरी होना भी आवश्यक है ? । ३९७

शाऱ्ऱु नाळऱ्ऱ तॅण्णित् तरुमम्बाऱ्त्
तेऱ्ऱुम् विण्णॅऩ्ब दल्ल दिवळैप्पोल्
नाऱ्ऱङ् गाण्डलुन् दिऩ्ऩ नयप्पदोर्
कूऱ्ऱु मुण्डुकॊल् कूऱ्ऱुऱऴ् वेलिऩाय् 398

कूऱ्ऱु उऱऴ्–यम की समता करनेवाला; वेलिऩाय्–भालावाले; चाऱ्ऱुम् नाळ्–विधि-निर्णीत आयु; अऱ्ऱतु ऍण्णि–पूर्ण हुई जानकर; तरुमम् पाऱ्त्तु–धर्म (या अधर्म कृत्य) देखकर; विण् एऱ्ऱुम्–स्वर्ग चढ़ायेगा; ऍऩ्पतु अल्लतु–इस बात के सिवा; इवळैप् पोल्–इसकी तरह; नाऱ्ऱम् काण्टलुम्–बू पाते ही; तिऩ्ऩ

नयप्पतु–खाना चाहनेवाली;   ओर् कूऱ्ऱुम्–एक मृत्यु भी;   उण्टु कॊल्–रहती है क्या ? । ३९८

मृत्यु (देव) के समान रहनेवाले भाले के धारक ! यम भी आयु का अन्त जानकर जीव के धर्म-अधर्म का हिसाब लगाकर ऊपर ले जाता है। इसके समान गंध पाते ही जीवों को मारकर खाना चाहनेवाला यम भी कहीं है ? ३९८

[इसके बाद चार अतिरिक्त पद कुछ प्राचीन संस्करणों में पाये जाते हैं। किसी-किसी में ये ३९६ वें पद के तुरन्त बाद भी पाये जाते हैं। उनका सार यों है—और भी एक बात है, सुनिये। इन्द्र ने सुमति (या कुमति) नाम की स्त्री को मार दिया क्योंकि वह सभी लोकों के वासियों को अपना आहार मानकर भक्षण कर लेती थी। भृगु की पत्नी ख्याति थी जो मीन के सदृश आँखोंवाली सुन्दरी थी। वह असुरों पर दया करके उनकी सहायता करती थी। चक्रपाणि विष्णु ने उसको मारा था। (वाल्मीकी उसको शुक्र माता और सुमति को विरोचन-सुता मंथरा कहते हैं।) इन हत्याओं से आखंडल और हरि की सुकीर्ति हुई या अपकीर्ति ? आप ही कहिये।]

❀ मऩ्ऩुम् पल्लुयिर् वारित्तऩ् वाय्प्पॅय्दु, तिऩ्ऩुम् पुऩ्मैयिऱ् ऱीमैय तेतैय
पिऩ्ऩुऩ् ताऴ्हुऴऱ् पेदैमैप् पॅण्णिवळ्, ऍऩ्ऩुऩ् दऩ्मै यॅऴिमैयिऩ् पालदे 399

मऩ्ऩुम् पल् उयिर्—(संसार में) रहनेवाले अनेक जीवों को;   वारि—समेटकर; तऩ् वाय् पॅय्तु–अपने मुख में भरकर;   तिऩ्ऩुम् पुऩ्मैयिऩ्–खाने की नीचता से बढ़कर; तीमैयतु एतु—भयंकर काम कौन सा है;   ऐय—प्रभु;   इवळ्—यह;   पिऩ्ऩुम् ताऴ् कुऴल्—गुंथी लम्बी वेणी की;   पेतैमै पॅण्—अबोध स्त्री;   ऍऩ्ऩुम् तऩ्मै—यह कहने का विषय;   ऍऴिमैयिऩ् पालते—अज्ञता के पक्ष का ही होगा । ३९९

जीवित अनेक प्राणियों को समेटकर अपने मुख में डालकर खाने की नीचता से बढ़कर अधम क्रूरता क्या हो सकती है ? प्रभो ! इस दुष्टा को देखकर गुंथी हुई, नीचे लटकती मेढ़ीवाली, एक निश्छल स्त्री के रूप में मानना निपट नादानी होगी। ३९९

❀ ईऱि ऩल्लऱम् पार्त्तिशैत् तेऩिवट्, चीऱि निऩ्ऱिदु चॅप्पुहिऩ् ऱेऩलेऩ्
आऱि निऩ्ऱ दऱऩ् ऱरक्कियैक्, कोऱि यॅऩ्ऱेदि रन्दणऩ् कूऱिऩाऩ् 400

ईऱु इल्—शाश्वत;   नल् अऱम्—अच्छे धर्म को;   पार्त्तु—देखकर;   इचैत्तेऩ्—यह बताया;   इवळ्—इसके प्रति;   चीऱि निऩ्ऱु—क्रोधी रह करके;   इतु—यह; चॅप्पुकिऩ्ऱेऩ् अलेऩ्—कहता नहीं हूँ;   आऱि निऩ्ऱतु—शांत हो रहना;   अऱऩ् अऩ्ऱु—धर्म नहीं है;   अरक्कियै कोऱि—राक्षसी को मारो;   ऍऩ्ऱु—ऐसा;   ऍतिर्—(श्रीराम के) सामने;   अन्तणऩ्—महर्षि (ने);   कूऱिऩाऩ्—कहा । ४००

मैं जो कह रहा हूँ वह शाश्वत धर्म का विचार करके ही कह रहा हूँ। इस पर कोप करके नहीं। इसके सम्बन्ध में शांत होकर रहना धर्म नहीं होगा। इस राक्षसी का अभी वध कर दीजिए। महर्षि ने ऐसा श्रीरामके सामने कहा। ४००

ऐय ऩङ्गवै केट्टऱ ऩल्लदुम्, ॲय्दि ऩालदु शॅय्हवॆऩ् ऱेविऩाल्
मॆय्य निऩ्ऩुरै वेद मॆऩ्ऩक्कॊडु, शॅय्है यऩ्ऱो वऱज्जॆयु माऱॆऩ्ऱाऩ् 401

ऐयऩ्—प्रभु; अङ्कु—तब; अवै केट्टु—वे (बातें) सुनकर; मॆय्य—सत्य-स्वरूप; अऱऩ् अल्लतुम्—धर्म जो नहीं हो; ॲय्तिऩाल्—(वह भी आवश्यक) हो जाय; अतु चॆय्क—वह करो; ॲऩ्ऱु एविऩाल्—ऐसा आज्ञा करें तो; निऩ् उरै—आपका वचन; वेतम् ॲऩ्ऩ कॊंटु—वेद है मानकर; चॆय्कै अऩ्ऱो—करना ही तो; अऱम् चॆय्युम् आऱु—धर्म-कृत्य का मार्ग है; ॲऩ्ऱाऩ्—कहा। ४०१

महिमामय श्रीराम ने महर्षि का कथन सुनकर निवेदन किया कि हे सत्यस्वरूप ! धर्मेतर कार्य भी करना पड़ जाय तो आपकी आज्ञा पाने पर, आपकी बात को वेदवाक्य मानकर, करना ही न धर्म-पालन की रीति होगी ! । ४०१

❀ गङ्गैत् तीम्बुऩ ऩाडऩ् करुत्तैयम्, मङ्गैत् तीयऩै याळु मऩक्कॊळाच्
चॆङ्गैच् चूलवॆऩ् दीयिऩैत् तीयदऩ्, वॆङ्गट् टीयॊडु मेऱ्चॆल वीशिऩाळ् 402

कङ्कै तीम् पुऩल्—गंगा का मधुर जल (से); नाटऩ्—(सिंचित) देश के; करुत्तै—अभिप्राय को; अ मङ्कै—उस स्त्री (के रूप में); ती अऩैयाळुम्—अग्नि के समान रही वह भी; मऩम् कॊळा—मन में ले करके; चॆम्मै कै—लाल हाथ में रहे; चूलम् वॆम् तीयिऩै—शूलरूपी भयंकर आग को; तीय—बुरी; तऩ् वॆम् कण् तीयॊटु—अपनी कठोर आँखों की अग्नि के साथ; मेल् चॆल—(श्रीराम) पर जाने के लिए; वीचिऩाळ्—फेंका। ४०२

श्रीरामचन्द्र का, जिनके देश को पवित्र गंगा नदी उर्वर बना रही थीं, मनोभाव ताड़का को मालूम हो गया। तुरन्त उस स्त्रीरूपी अग्नि ने आँखों से दृष्टिरूपी अनल को और हाथ से त्रिशूलरूपी अग्नि को श्रीराम पर चलाया। उसने ही पहला प्रहार किया। क्रुद्ध-दृष्टि के साथ उसने त्रिशूल को फेंका। ४०२

पुदिय कूऱ्ऱऩै याळ्पुहैन् दॆविय, कदिरकॊण् मूविलैक् कालवॆऩ् दीमुऩि
विदियै मेऱ्कॊण्डु निऩ्ऱवऩ् मेलुवा, मदियिऩ् मेलवरुङ् गोळॆऩ वन्ददे 403

पुतिय कूऱ्ऱु अऩैयाळ्—नवीन यम-तुल्य (उससे); पुकैन्तु एविय—कोप के साथ प्रेषित; कतिर् कॊळ्—देदीप्यमान; मूविलै—त्रिपत्रवाली शूलरूपी; कालम् वॆम् ती—प्रलयाग्नि; मुऩि वितियै—मुनि की आज्ञा को; मेल् कॊण्टु—धारण कर; निऩ्ऱवऩ् मेल्—स्थित (श्रीराम) पर; उवा मतियिऩ् मेल्—पूर्ण चन्द्र पर; वरुम् कोळ् अऩ—आनेवाले ग्रह के समान; वन्ततु—आया। ४०३

श्रीराम मुनिवर की आज्ञा मानकर ताड़का को मारने के लिये उद्यत खड़े रहे। उन पर नवीन-यम के समान ताड़का ने क्रोधोद्विग्न मन के साथ दीप्यमान त्रिशूल फेंका। वह त्रिशूल क्या था, प्रलय काल की भयंकर अग्नि थी। वह पूर्णचन्द्र को ग्रसने के लिये आनेवाले राहु ग्रह के समान आ रहा था। ४०३

❀मालु मक्कणम् वाळियैत् तॊट्टदुम्, कोल विऱ्काल् कुऩित्तदुङ् गण्डिलर्
काल ऩैप्पऱित् तक्कडि याळ्विट्ट, शूल मिऱ्ऱदऩ् तुण्डङ्गळ् कण्डऩर् 404

मालुम्–श्रीविष्णु भी; अ कणम्–उसी क्षण; कोलम् विल्–सुन्दर धनुष के; काल् कुऩित्ततुम्–बाजुओं को झुकाना और; वाळियै–शर को; तॊट्टतुम्–छोड़ना; कण्टिलर्–(किसी ने) न देखा; अ कटियाळ्–उस दुराचारिणी के; कालऩै पऱित्तु–यम से छीनकर; विट्ट–फेंके गये; चूलम्–त्रिशूल (के); इऱ्ऱतऩ् तुण्टङ्कळ्–टूटे टुकड़े; कण्टऩर्–देखे। ४०४

श्रीविष्णु के अवतार राम ने उसको एक शर से खण्डित कर दिया। वह इतनी तेजी से सम्पन्न हुआ कि किसी ने न उनका धनुष झुकाना देखा न शर संधानकर खींचना; पर सब ने शूल के टुकड़ों को नीचे भूमि पर पड़े हुए देखा। ४०४

❀अल्लिऩ् मारि यऩैय निऱत्तवळ्, शॊल्लु मात्तिरै यिऱ्कड ऱूर्प्पदोर्
कल्लिऩ् मारियैक् कैवहुत् ताळदु, विल्लिऩ् मारियिऩ् वीरऩ् विलक्किऩाऩ् 405

अल्लिल्–रात के; मारि अऩैय–मेघ के समान; निऱत्तवळ्–रंगवाली; चॊल्लुम् मात्तिरैयिल्–एक शब्दोच्चारण की देरी में; कटल् तूर्प्पतु–समुद्र को भी पाट (सकने) वाली; ओर् कल्लिऩ् मारियै–एक प्रस्तर वर्षा को; कै वकुत्ताळ्–अपने हाथों से गिराया; अतु–उस (वर्षा) को; वीरऩ्–(रघु-) वीर ने; विल्लिऩ् मारियिऩ्–धनुष की शर वर्षा द्वारा; विलक्किऩाऩ्–हटाया। ४०५

रात के मेघ के समान काले रंग की ताड़का तब पत्थर उठाकर बहुत तेजी से फेंकने लगी। एक ही पल में वह इतने पत्थर बरसा चुकी कि समुद्र भी उनसे पट सकता था। श्रीराम ने अपने धनुष से शर वर्षा कर उनको रोका और अपने को बचा लिया। ४०५

❀शॊल्लॊक्कुङ् गडिय वेहच् चुडुशरङ् गरिय शॆम्मल्
अल्लॊक्कु निऱत्ति ऩाण्मेल् विडुदलुम् वयिरक् कुऩ्ऱक्
कल्लॊक्कु नॆञ्जिऱ् ऱङ्गा दप्पुऱङ् गऴऩ्ऱु कल्लाप्
पुल्लर्क्कु नल्लोर् शॊऩ्ऩ पॊरुळॆऩप् पोय दऩ्ऱे 406

करिय चॆम्मल्–श्यामल देव (के); चॊल् ऒक्कुम्–(महात्माओं के शाप के) वचन सम; कटिय वेकम्–अत्यन्त वेगवान और; चुटु–संतापी; चरम्–एक शर को; अल् ऒक्कुम्–अंधकार की समानता करनेवाले; निऱत्तिऩाळ् मेल्–रंगवाली

पर; विट्टुतलुम्–चलाने पर; वयिरम् कुऩ्ऱम् कल्–वज्र-पर्वत-प्रस्तर; ऑक्कुम् नॅञ्चिल्–समान छाती में; तङ्कातु–न ठहरकर; अ पुऱम् कऴऩ्ऱु–उस तरफ से निकलकर; कल्ला पुल्लर्क्कु–अपढ़ अल्पज्ञों को; नल्लोर् चॉऩ्ऩ–साधुओं के कहे; पॉरुळ ॲऩ्ऩ–उपदेश के समान; पोयतु–चला गया; (अऩ्ऱु, ए)। ४०६

फिर श्यामल भगवान ने एक शर छोड़ा। वह महात्माओं के शाप के समान सद्य प्रभावकारी शर था। अंधेरी रात के रंग की उस ताड़का पर छोड़ा वह शर वज्र-पर्वत के प्रस्तर-खण्ड के समान कठोर रही उसकी छाती में प्रवेश कर वहाँ न रुका; पर पीछे पीठ पर से निकलकर, इस प्रकार उड़ गया जिस प्रकार साधुजनों के अनपढ़ मूढ़ों को दिये उपदेश उनके मन में न ठहर कर निकल (लुप्त हो) जाते हैं। ४०६

पॉऩ्ऩॅडुङ् गुऩ्ऱ मऩ्ऩाऩ् पुहऱ्मुहप् पहऴि यॅऩ्ऩुम्
मऩ्ऩॅडुङ् गाल वऩ्काऱ् ऱडित्तलु मिडित्तु वाऩिल्
कऩ्ऩॅडु मारि पॅय्यक् कडैयुहत् तॅऴुन्द मेहम्
मिऩ्ऩॊडु मशऩियोडुम् वीऴ्वदे पोल वीऴ्न्दाळ् 407

पॉऩ्–स्वर्ण के; नॅटु कुऩ्ऱम्–उन्नत पर्वत (मेरु); अऩ्ऩाऩ्–सम रहनेवाले (के); पुकर् मुकम्–तीक्ष्ण-मुखी; पकऴि ॲऩ्ऩुम्–शररूपी; मऩ्–दीर्घ; नॅटु कालम्–प्रलयकाल के; वल् काऱ्ऱु–प्रबल पवन (के); अटित्तलुम्–झोंके से; कटै युकत्तु–युगांत में; वाऩिल्–आकाश में; इटित्तु–वज्र कड़क कर; कल्–पत्थर की; नॅटु मारि पॅय्य–अधिक वर्षा करने; ॲऴुन्त–ऊपर उठे; मेकम्–मेघ; मिऩ्ऩॊटुम् अचऩियोटुम्–विद्युत और अशनि के साथ; वीऴ्वते पोल–गिरे ऐसे; वीऴ्न्ताळ्–गिरी। ४०७

उन्नत और स्वर्णमय मेरु पर्वत के समान थे श्रीराम; उनके धनुष से निकला तीक्ष्ण अनीवाला शर युगांत का प्रभंजन था। उससे आहत होकर ताड़का का घोर आकार के दांतों और भयंकर गर्जन के साथ उछल कर भूमि पर गिरना उस मेघ के गिरने के समान था जो युगांत में प्रस्तर-वर्षा करने के लिए कड़कते हुए ऊपर उठे, पर विद्युत प्रकाश और वज्र की कड़क के साथ भूमि पर गिर जाय। ४०७

पॉडियुडैक् काऩ मॅङ्गुङ् गुरुदिनीर् पॉङ्ग वीऴ्न्द
तडियुडै यॅयिऱ्ऱुप् पेऴ्वाय्त् ताडहै तलैह डोऱुम्
मुडियुडै यरक्कऱ् कऩ्नाळ् मुऩ्दियुऱ् पाद माहप्
पडियिडै यऱ्ऱु वीऴ्न्द वॅऱ्ऱियम् बदाहै यॉत्ताळ् 408

पॉटि उटै–धूल सहित; काऩम् ॲङ्कुम्–जंगल भर में; कुरुति नीर् पॉङ्क–रक्त की बाढ़ के बढ़ते; वीऴ्न्त–गिरी हुई; तटि उटै ॲयिऱु–मांस युक्त दाँतों; पेऴ्वाय्–खुले मुख (वाली); ताटकै–ताड़का; तलैकळ् तोऱुम्–हर सिर पर; मुटि उटै–(या) किरीट पहने; अरक्कऱ्कु–राक्षस (रावण) को; मुऩ्ति–पहले

के; उऱ्पातम् आक—उत्पात (दुःशकुन) बनकर; अ नाळ्—उस दिन; अऱ्‌ऱु—कटकर; पटि इटै—भूमि पर; वीऴ्न्त—गिरे; वॆऱ्ऱि पताकै ऒत्ताळ्—विजयी झण्डे की समानता करती थी। ४०८

ताड़का भूमि पर मरकर गिरी। उसके शरीर का रक्त उस जंगल में सर्वत्र फैल गया। उसके दाँतों के बीच मांस-खण्ड फँसे हुए थे। वह, उस विजय पताका के समान लगती थी जो मुकुटधारी दस सिर वाले रावण पर आनेवाले उत्पात की पूर्व-सूचना का दुःशकुन देते हुए कटकर गिरी हो। ४०८

❀ कान्ऱिरिन् दाऴि याहत् ताडहै कडिऩ मार्वत्
तूऩ्ऱिय पहऴि वायू डॊऴुहिय कुरुदि वॆळ्ळम्
आऩ्ऱवक् काऩ मॆल्ला मायिऩ दन्दि मालैत्
तोऩ्ऱिय शॆक्कर् वाऩन् दॊडक्कऱ्ऱु वीऴ्न्द दॊत्ते 409

ताटकै—ताड़का की; कटिऩम् मार्पत्तु—कठोर छाती में; ऊऩ्ऱिय—चुभे; पकऴि वाय् ऊटु—शर के बने घाव द्वारा; ऒऴु किय—बहनेवाली; कुरुति वॆळ्ळम्—रक्तधारा; अन्ति मालै—संध्या (सायं) काल में; तोऩ्ऱिय—प्रकट; चॆक्कर् वाऩम्—लाल आकाश; तॊटक्कु अऱ्ऱु—ग्रहण (आधार) खोकर; वीऴ्न्तातु ऒत्तु—गिरा हो ऐसा गिरकर; काऩ् तिरिन्तु—जंगल (प्रकृति) बदलकर; आऴि आक—समुद्र बन जाय, ऐसा; आऩ्ऱ—विशाल; अ काऩम् ऎल्लाम्—उस जंगल भर में; आयित्तु—फैला। ४०९

ताड़का के वक्ष-स्थल के शर-विद्ध व्रण-मुख से जो रक्त बहा उसका फैलाव निराधार हो नीचे गिरे लाल गगन के समान लगा। वह रेतीले जंगल की प्रकृति को ही बदल कर रक्त-समुद्र बनाता हुआ सर्वत्र फैला। ४०९

❀ वाशनाण् मलरोऩ्ऩ मामुऩि पणिम ऱाद
काशलाङ् गऩहप् पैम्बूण् काहुत्तऩ् कऩ्ऩिप् पोरिल्
कूशुवा ळरक्कर् तङ्गळ् कुलत्तुयिर् कुडिक्क वञ्जि
आशया लुळ्लुङ् गूऱ्ऱुञ् जुवैशिऱि दऱिन्द दऩ्ऱे 410

वाचम्—सुगन्धपूर्ण; नाळ् मलरोऩ्—सद्य-विकसित कमलासन; अऩ्ऩ मा मुऩि—सम महर्षि के; पणि मऱात—आज्ञा माननेवाले; काचु उलाम्—रत्न-जड़ित; कऩकम् पचुमै पूण्—चोखे स्वर्णाभरणवाले; काकुत्तऩ्—काकुत्स्थ (श्रीराम) के; कऩ्ऩि पोरिल्—सर्वप्रथम युद्ध में; कूचु वाळ् अरक्कर् तङ्कळ्—डरानेवाली तलवार रखनेवाले राक्षसों के; कुलत्तु—वर्गों के; उयिर् कुटिक्क—जीवों के प्राण पीने से; अञ्चि—डरकर; आचैयाल्—लोभ के साथ; उळ्लुम्—(मौके की ताक में) फिरनेवाले; कूऱ्ऱुम्—यम (ने) भी; चुवै चिऱितु अऱिन्ततु—स्वाद थोड़ा जाना; (अऩ्ऱु—ए)। ४१०

रावण के शासन काल में यम को न राक्षस-रक्त का पान मिला,

न राक्षस-मांस का खान; क्योंकि वह राक्षसों के तलवार आदि हथियारों से डरता था। फिर भी वह पिपासा लिये घूम रहा था। अब कमलासन ब्रह्मा के समान विश्वामित्र के आज्ञाकारी और रत्नजड़ित और स्वर्ण-निर्मित आभूषण-धारी श्री काकुत्स्थ (राम) ने अपने सर्वप्रथम युद्ध में उसे कुछ चखाया और उसे मांस का किंचित स्वाद मिला। ४१०

❀ यामुमॅम् मिरुक्कै पॅऱ्ऱे मुऩक्किडै यूरु मिल्लैक्
कोमहऱ् किऩिय दॅय्वप् पडैक्कलङ् गॉडुत्ति यॅऩ्ऩा
मामुऩिक् कुरैत्तुप् पिऩ्ऩर् विऱ्कॉण्ड मऴैयऩ् ऩाऩ्मेऱ्
पूमऴै पॉऴिन्दु वाऴ्त्ति विण्णवर् पोयिऩारे 411

विण्णवर्–देवता लोग; यामुम्–हमने भी; ॲम् इरुक्कै पॅऱ्ऱेम्–अपना पद पाया; उऩक्कुम् इटैयूरु इल्लै–आपको भी कोई बाधा नहीं (रहेगी); कोमकऱ्कु–चक्रवर्ती तनुज को; इऩिय तॅय्वम् पटै कलम्–श्रेष्ठ दिव्य अस्त्र-शस्त्र; कॉटुत्ति–दिलायें; ॲऩ्ऩा–ऐसा; मा मुऩिक्कु उरैत्तु–महान मुनि को कहकर; पिऩ्ऩर्–पश्चात; विल् कॉण्ट–धनुर्धर (या इन्द्र-धनुषवाले); मऴै अऩ्ऩाऩ् मेल्–मेघ सदृश (श्रीराम) पर; पू मऴै पॉऴिन्तु–पुष्प-बारिश (बरसा) कर; वाऴ्त्ति–बधाई देकर; पोयिऩार्–चले। ४११

स्वर्गवासी देवतागण इस घटना से मुदित हुए। उन्होंने महर्षि से कहा कि हमें अपने पद फिर से मिल गये। आपको भी रुकावटें अब नहीं रहेंगी। आप चक्रवर्ती-सुतों को अस्त्रोपदेश दिला दें। पश्चात् वे धनुर्धर (या इंन्द्रधनुष सहित) मेघ-सदृश श्रीराम को बधाई देकर, कल्पक-सुमनों की वर्षा करके लौट गये। ४११

8. वेऴ्विप् पडलम् (यज्ञ पटल)

विण्णवर् पोय पिऩ्ऱै विरिन्दपू मऴैयि ऩाले
तण्णॅऩुङ् गाऩ नीङ्गित् ताङ्गरुन् दवत्तिऩ् मिक्कोऩ्
मण्णवर् वऱुमै नोय्क्कु मरुन्दऩ शडैयऩ् वॅण्णॅय्
अण्णऱऩ् शॊल्ले यऩ्ऩ पडैक्कल मरुळिऩाऩे 412

विण्णवर्–स्वर्गवासियों (के); विरिन्त पू मऴैयिऩाले–पुष्कल पुष्प-वर्षा से; तण् ॲऩुम्–शीतल बने; काऩम् नीङ्कि–जंगल को छोड़कर; पोय पिऩ्ऱै–जाने के बाद; ताङ्कु–सहनशील; अरु तवत्तिऩ् मिक्कोऩ्–तपस्या में उत्कृष्ट; मण्णवर्–पृथ्वी के वासियों के; वऱुमै नोय्क्कु–दरिद्रता-रोग के लिए; मरुन्तु अ(ऩ्)ऩ–दवा के समान रहनेवाले और; वॆण्णॅय् अण्णल्–तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर के महिमायुक्त; चटैयऩ् तऩ्–शडैयप्पन के; चॊल्ले अऩ्ऩ–वचन के ही सम, (अमोघ); पटैक्कलम्–(अनेक) अस्त्र; अरुळिऩाऩ्–(मन्त्र सहित) प्रदान किया। ४१२

देवों की पुष्प-वर्षा से वह जंगल शीतल बन गया। देव उस जंगल को छोड़कर चले गये। उनके जाने के बाद, अपार कष्ट सहकर की हुई बड़ी तपस्या से उत्कृष्ट (हुए) महर्षि ने श्रीराम को अनेक अस्त्र प्रदान किये। वे अस्त्र कवि के अभिभावक, वॆण्णॆय्नल्लूर के वासी, दरिद्रता के रोग की दवा के समान उदार दानी शडैयप्प वळ्ळल् के शब्द के समान अमोघ थे। (कवि ने अपने पोषक शडैयप्पन की कृतज्ञता के प्रदर्शन हेतु रामायण में अनेक स्थानों पर उनका नाम लेकर महिमा कही है।) ४१२

आऱिय वऱिवन् कूऱि यळित्तलु मण्ण ऱन्बाल्
ऊऱिय वुवहै योडु मुम्बर्तम् पडैह ळॆल्लाम्
तेऱिय मनत्तान् शॆय्द नल्विनैप् पयन्ग ळॆल्लाम्
माऱिय पिऱप्पिऱ् ऱेडि वरुवपोल् वन्द वन्ऱे 413

आऱिय अऱिवन्–दाँत (संयमी) ज्ञानी; उम्पर्तम्–देवताओं के; पटैकळ् ऎल्लाम्–अस्त्र सब; कूऱि–(विस्तार से) विवरण कर; अळित्तलुम्–देने पर; तेऱिय मनत्तान्–सुसंस्कृत विचारवाले के; चॆय्त–कृत; नल् विनै पयन्कळ्–सत्कर्मों के फल; ऎल्लाम्–सभी; माऱिय पिऱप्पिल्–अन्य जन्म में; तेटि वरुव पोल्–खोजकर (पहचानकर) आते हैं जैसे; अण्णल् तन् पाल्–सम्मान्य (श्रीराम) के पास; ऊऱिय उवकैयोटुम्–(उत्तरोत्तर) रसनेवाले (बढ़नेवाले) उमंग के साथ; वन्त–आ पहुँचे। ४१३

दाँत (संयमी) ऋषि विश्वामित्र ने अस्त्रों के साथ उनसे संबंधित मन्त्र, उनको चलाने और लौटाने के उपाय आदि के भी उपदेश दिये। वे अस्त्र भी किसी के पूर्वकृत सत्कर्म के फल जैसे दूसरे जन्म में उसके पास स्वयं जाकर मिलते हैं, वैसे ही श्रीराम के पास आ गये। ४१३

मेविनॊम् बिरिद लाऱ्ऱेम् वीरनी विदियि नॆम्मै
येविन शॆय्दु निऱ्ऱु मिळैयवन् पोल वॆन्ऱु
देवर्तम् बडैकळ् शॆप्पच् चॆव्विदॆन् ऱवनु नेरप्
पूवैपो निऱत्ति नाऱ्कुप् पुऱत्तॊऴिल् पुरिन्द वन्ऱे 414

तेवर् तम् पटैकळ्–दिव्यास्त्र; मेविनॊम्–(आपके पास) आ गये; पिरितल् आऱ्ऱेम्–छोड़ना न सहेंगे; वीर–रघुवीर; नी–आप; वितियिन्–विधिवत्; ऎम्मै एवित–हमें जो सेवा बतलाते हैं वे; इळैयवन् पोल–आपके अनुज के समान; चॆय्तु निऱ्ऱुम्–करते रहेंगे; ऎन्ऱु–ऐसा; चॆप्प–कहने पर; अवनुम्–वे (श्रीराम) भी; चॆव्वितु–श्रेष्ठ हैं; ऎन्ऱु नेर–कहकर स्वीकारने पर; पूवै पोल् निऱत्तितान्कु–(अतसी ?) नील पुष्प से वर्णवाले की; अन्ऱे–तभी; पुऱम् तॊऴिल्–बाहरी, छोटी-मोटी सेवायें; पुरिन्त–करने लगे। ४१४

उन देवास्त्रों ने श्रीराम के पास निवेदन किया कि हम आपके पास आ गये हैं। अलग होना हमें सह्य नहीं होगा। हे रघुवीर! विधिवत्

आप जो भी सेवा चाहेंगे वह सहर्ष, आपके अनुज के समान करते हुए आपके पास रहेंगे। यह सुनकर श्रीराम ने तथाऽस्तु कहकर स्वीकार कर लिया। तभी से वे अस्त्र अतसी पुष्प के रंगवाले श्रीराम की बहिरंग सेवा में लग गये। ४१४

इऩैयऩ निहऴ्न्द पिऩ्ऩर्क् कावद मिरण्डु शॅऩ्ऱार्
अऩैयवर् केट्क वाण्डो ररवम्वन् दणुहित् तोऩ्ऱ
मुऩैववी दियाव दॆऩ्ऱु मुऩ्ऩवन् विऩवप् पिऩ्ऩर्
विऩैयऱ नोऱ्ऱु निऩ्ऱ मेलवऩ् विळम्ब लुऱ्ऱाऩ् 415

इऩैयऩ–ये सब; निकऴ्न्त पिऩ्ऩर्–घटने के बाद; कावतम्–(दस मील का) कोस; इरण्टु–दो; चॆऩ्ऱार्–गये; अऩैयवर् केट्क–उनके कर्ण-गोचर होते हुए; आण्टु–वहाँ; ओर् अरवम्–एक ध्वनि; अणुकि वन्तु–पास आकर; तोऩ्ऱ–सुनायी देने पर; मुऩ्ऩवऩ्–ज्येष्ठ ने; मुऩैव–श्रेष्ठ महानुभाव; ईतु यावतु ऎऩ्ऱु–यह क्या है ऐसा; विऩव–पूछने पर; पिऩ्ऩर्–फिर; विऩै अऱ–कर्मबन्धन काटकर; नोऱ्ऱु निऩ्ऱ–जो तप करके रहे; मेलवऩ्–उत्तम ऋषि; विळम्पल् उऱ्ऱाऩ्–कहने लगे। ४१५

यह सब होने के बाद वे तीनों आगे दो कोस दूर गये। तब उनके कानों में एक ध्वनि पड़ी। ज्येष्ठ श्रीराम ने महर्षि से पूछा कि हे महानुभाव! यह ध्वनि कौन सी है? उस पर कर्म-बंधन काटते हुए तपस्या करके उन्नत हुए विश्वामित्र यों कहने लगे। ४१५

माऩस मडुविऩ् ऱोऩ्ऱि वरुदलाऱ् चरयु वॆऩ्ऱे
मेऩ्मुऱै यमरर् पोऱ्ऱुम् विऴुनदि यदऩि ऩोडुम्
आऩको मदिवन् दॆय्दु मरवम दॆऩ्ऩ वप्पाल्
पोऩपिऩ् पवङ्ग डीर्क्कुम् पुऩिदनीर् नदियै युऱ्ऱार् 416

माऩच मटुविल्–मानस सरोवर से; तोऩ्ऱि वरुतलाल्–उत्पन्न होकर आने से; चरयु ऎऩ्ऱु–सरयू कहलाकर; मेल् मुऱै–उत्तम रीति से; अमरर् पोऱ्ऱुम्–देवताओं से प्रशंसित; विऴु नति–श्रेष्ठ नदी; अतऩिऩोटुम्–उसके साथ; आऩ–मिलनेवाली; कोमति वन्तु–गोमती (के) आकर; ऎय्तुम्–मिलने (गिरने) का; अरवम् अतु–ध्वनि, वह; ऎऩ्ऩ–कहने पर; अप्पाल् पोऩ पिऩ्–आगे (कुछ दूर) जाने के बाद; पवङ्कळ् तीर्क्कुम्–भव-निवारक; पुऩितम् नीर्–पवित्र जल वाली; नतियै–नदी पर; उऱ्ऱार्–आ पहुँचे। ४१६

मानस सरोवर से निकलकर आने से सरयू का नाम प्राप्त इस श्रेष्ठ नदी में, जिसकी देवता भी उत्तम रीति से प्रशसा करते हैं, गोमती नदी आकर मिलती है। वह उसी मिलन की ध्वनि है। फिर वे आगे बढ़े और भव-नाशक एक नदी के तीर पर आ पहुँचे। (यह नदी कौशिकी थी।)। ४१६

सुरर्दॊऴु दिड़ैञ्जड़् कॊत्त तूनदि याव दॆऩ्ड़ु
वरमुऩि तऩ्ऩै यण्णल् विऩवुड़ मलरुळ् वैहुम्
पिरमऩऩ् ड़ळित्त वॆऩ्ड़िप् पॆरुन्दहै कुशऩॆऩ् ड़ोदुम्
अरशर्को ऩळित्त मैन्द ररुमड़ै यऩैय नाल्वर् 417

अण्णल्–सम्मानित (श्रीराम); चुरर्–सुरों के; तॊऴुतु–विनय कर; इड़ैञ्चड़्कु ऒत्त–स्तुति करने योग्य; तू नति–पुनीत नदी; यावतु–कौन सी; ऎऩ्ड़ु–ऐसा; वर मुऩि तऩ्ऩै–मुनिवर को; विऩवुड़–पूछने पर; मलर् उळ्–(कमल-) पुष्प के अन्दर; वैकुम्–रहनेवाले; पिरमऩ्–ब्रह्मा (से); अऩ्ड़ु अळित्त–उस दिन दत्त; वॆऩ्ड़ि–विजय; पॆरु तकै–उत्तम गुणवाले; कुचऩ् ऎऩ्ड़ु ओतुम्–कुश कहलानेवाले; अरचर् कोऩ्–राजाधिराज; अळित्त मैन्तर्–जनित पुत्र; अरु मड़ै अऩैय–श्रेष्ठ वेदों के समान; नाल्वर्–चार (थे)। ४१७

सम्माननीय श्रीराम ने मुनिवर से प्रश्न किया कि सुर-स्तुत्य यह पवित्र नदी कैसी है ? तब उन्होंने विस्तार से निम्नलिखित वृत्तांत बखाना। कमलपुष्पवासी ब्रह्माजी ने कुश नामक राजाधिराज को जन्म दिया। वे विजयशील और उत्तम गुणवाले थे। कुश के (वैदर्भी नाम की पत्नी द्वारा) चार पुत्र पैदा हुए। ४१७

कुशऩ्कुश नाबऩ् कोदिल् गुणत्तिऩा दूर्त्तऩ् कॊड़्ड़त्
तिशैकॆऴु वशुवॆऩ् ड़ोदु मिवर्पॆय रिवर्ह डम्मुळ्
कुशऩ्कवु शाम्बि नाबऩ् कुळिर्महो दयमा दूर्त्तऩ्
वशैयिड़ऩ् मवऩ मड़्ड़ै वशुगिरि विरशम् वाऴ्न्दार् 418

इवर् पॆयर्–इनके नाम (थे); कुचन, कुचनापऩ् कोतु इल् कुणत्तिऩ् आतूर्त्तऩ्–कुश, कुशनाभ, अकलंक गुणों के आधूर्त; कॊड़्ड़त्तु–विजयों के कारण; इचै कॆऴु–कीर्ति में बढ़े; वचु ऎऩ्ड़ु–वसु नाम से; ओतुम्–कहलानेवाले; इवर्कळ् तम्मुळ्–इनमें; कुचऩ्–कुश; कवुचाम्पि–कौशाम्बी (में); नापऩ्–(कुश-) नाभ; कुळिर् महोतयम्–शीतल महोदय (में); आतूर्त्तऩ्–आधूर्त; वचै इल्–आनिन्द्य; तऩ्म वऩम्–धर्म-वन में; मड़्ड़ै–अन्य; वचु–वसु; किरि विरचम्–गिरिव्रज (में); वाऴ्न्तार्–रहे। ४१८

ये, कुश, कुशनाभ, अकलंक गुणवाले आधूर्त और विजयी और कीर्तिमान वसु, चार थे। उनमें कुश कौशाम्बी नगर में, कुशनाभ शीतल महोदय नामक नगर में, आधूर्त अनिन्द्य धर्मवन में और अन्य वसु गिरिव्रज नामक नगर में (राजधानी बनाकर) रहते थे। ४१८

अवर्हळिड़् कुशना बड़्के यैयिरु पदिऩ्म रञ्जॊल्
तुवरिदऴ्त् तॆरिवै नल्लार् तोऩ्ड़िऩर् वळरु नाळिल्
इवर्पॊऴिड़् ड़लैक्क णायत् तॆय्दुऴि वायु वॆय्दिक्
कवर्मऩत् तिऩऩा यन्दक् कऩ्ऩियर् तम्मै नोक्कि 419

अवर्कळिल्–उनमें; कुचनापऱ्के–कुशनाभ के ही; अम् चॊल्–मधुर बोली; तुवर् इतऴ्–प्रवाल (सम लाल) अधरोंवाली; तॆरिवै नल्लार्–सुन्दर कन्यायें; ऐइरु पतिऩ्मर्–पाँच दो दस, एक सौ; तोऩ्ऱिऩर्–पैदा होकर; वळरुम् नाळिल्–बढ़ती रहीं—तब; इवर्–ये; आयत्तु–सखियों के साथ; पॊऴिल् तलै कण्–एक उपवन में; ऍय्तुऴि–(जब) जा पहुँचीं तब; वायु ऍय्ति–वायुदेव आकर; अऩ्त कऩ्ऩियर् तम्मै नोक्कि–उन कुमारियों को देखकर; कवर् मऩत्तिऩऩ् आय्–आकृष्ट-मन होकर। ४१८

उनमें कुशनाभ के ही एक सौ मधुर-भाषिणी, प्रवालाधरा कन्यायें पैदा हुईं। वे जब बढ़ रही थीं तब एक दिन वे सखियों के साथ एक उपवन में क्रीडार्थ गयीं। वहाँ वायु देव ने उन्हें देखा और वे उनके प्रेम में पड़ गये। तब उनसे वे यों बोले। ४१९

कॊडित्तलै महरङ् गॊण्डोऩ् कुऩिशिलैच् चरत्ता ऩॊन्देऩ्
वडित्तडङ् गण्णी रॆऩ्ऩै मणत्तिरॆऩ् ऱुरैप्प वॆन्दै
अडित्तलत् तुरैत्तु नीरो डळित्तिडि नणैदु मॆऩ्ऩ
ऒडित्तऩऩ् वॆरिनै वीऴ्न्दा रॊळिवळै महळि रॆल्लाम् 420

वटि तट कण्णीर्–तीक्ष्ण विशाल आँखोंवालियो!; कॊटि तलै मकरम् कॊण्टोऩ्–मकरध्वज (मन्मथ) के; कुऩि चिलै चरत्ताल्–झुके धनुष के शरों से; नॊन्तेऩ्–संतप्त हूँ; ऍऩ्ऩै मणत्तिर्–मेरे साथ विवाह कर लो; ऍऩ्ऱु उरैप्प–ऐसा कहते समय; ऒळि वळै–कांतियुक्त कंकण (धारिणी); मकळिर् ऍल्लाम्–कन्यायें सब; ऍन्तै अटि तलत्तु उरैत्तुम्–अपने पिता के चरणों में विनय करेंगी; नीरोटु अळित्तिटिऩ्–जल के साथ दान दे देंगे तो; अणैत्तुम्–(आप से) मिलेंगी; ऍऩ्ऩ–ऐसा कहते समय; वॆरिनै–पीठ को; ऒटित्तऩऩ्–तोड़ दिया; वीऴ्न्तार्–(वे) गिर पड़ीं। ४२०

तीक्ष्ण और विशाल आँखवालियो! मकरध्वज मन्मथ ने मुझ पर अपना इक्षु-धनुष झुकाकर पुष्प-शर मारे हैं। मैं वेदना से तड़प रहा हूँ। तुम लोग मेरे साथ विवाह कर लो। यह सुनकर उज्ज्वल कंकणधारिणी कन्याओं ने एक साथ कहा कि हम अपने पितृ-चरण में यह निवेदन करेंगे। कन्यादान में आपको दे देंगे तो हम आप से विवाह कर लेंगी। वे, अगर, दान-कर्म की विधि के अनुसार आपके हाथ में जल के साथ हमें समर्पित कर देंगे तो हम आपसे विवाह कर लेंगी। यह सुनकर वायु देव क्रुद्ध हुए। उन्होंने उनकी पीठ की रीढ़ को तोड़ दिया। वे भी बल खाकर गिर पड़ीं। (दाता दान लेनेवाले के दाहिने हाथ में जल देता है, वह अर्पण का निशान है)। ४२०

शमिरण ऩहऩ्ऱ दऱ्पिऩ् ऱैयलार् तवऴ्न्तु शॆऩ्ऱे
अमिऱ्दुहु कुदलै माऴ्हि यरशऩ्माट् टुरैप्प वऩ्ऩाऩ्

निमिर्हुऴऩ् मादर्त् तेऱ्ऱि निऱैतवऩ् शूऴि नल्हुम्
तिमिरऱु पिरम दत्तऱ् कऴित्तऩऩ् ऱिरुव ऩारै 421

चमिरणऩ्–समीरण के; अकऩ्ऱतऩ् पिऩ्–छोड़ जाने के बाद; तैयलार्–कन्याएँ; माऴ्कि–घुलकर; तवऴ्न्तु चॅऩ्ऱु–रेंगती जाकर; अरचऩ् माट्टु–राजा (कुशनाभ) के पास; अमिर्तु उकु कुतलै–अमृत चूनेवाली अस्पष्ट वाणी में, (तुतलाकर); उरैप्प–कहते वक्त; अऩ्ऩाऩ्–उन्होंने; निमिर् कुऴल्–लम्बे केश की; मातर्–कन्याओं को; तेऱ्ऱि–ढाढस देकर; तिरु अऩ्ऩारै–श्रीलक्ष्मी-सम उनको; निऱैतवऩ्–पूर्ण तपस्वी; चूऴि नल्कुम्–चूली-जनित; तिमिर् अऱु–(अज्ञानरूपी) तिमिर के नाशक; पिरमतत्तऱ्कु–ब्रह्मदत्त को; अऴित्ततऩऩ्–विवाह में दान कर दिया। ४२१

समीरण चले गये। फिर वे लड़कियाँ किसी तरह रेंगती हुई अपने पिता के पास गयीं और अपनी करुणार्द्र तुतली बोली में जो हुआ सो बोलीं। कुशनाभ एक ओर खुश हुए कि मेरी कन्यायें अपनी मर्यादा और उचित व्यवहार जानती हैं तो दूसरी ओर उनकी स्थिति देखकर दुख हुआ। उन्होंने उनका ब्रह्मदत्त के साथ विवाह कर दिया। ये ब्रह्मदत्त अज्ञान काट चुके ज्ञानी थे और पूर्ण तपस्वी चूली के पुत्र थे। ४२१

अवऩ्मलर्क् करङ्ग डीण्डक् कूऩिमिर्ऩ् दऴ्हु वाय्त्तार्
पुवऩमुऱ् ऱुडैय कोवुम् पुतल्वरिल् लामै वॅऴ्वि
तवऩऩिऱ् पुरित लोडुम् दहवुरत् तऴलि ऩाप्पण्
कवऩवे हत्तु रङ्गक् कादिवऩ् दुदयञ् जॅय्दाऩ् 422

अवऩ्–उनके; मलर् करङ्कळ् तीण्ट–कमल-हस्त-स्पर्श से (पाणिग्रहण करने पर); कूऩ् निमिर्न्तु–ऐंठन (के) दूर होते; अऴकु वाय्त्तार्–सुन्दरता पा गयीं; पुवऩम् मुऱ्ऱु उटैय–भुवन भर के; कोवुम–स्वामी राजा भी; पुतल्वर् इल्लामै–पुत्र के अभाव के कारण; तवऩऩिल्–अग्नि में; वेऴ्वि पुरितलोटुम्–याग करने पर; तऴलिऩ् नाप्पण–अग्नि-मध्य से; तकवु उऱ–योग्यता के साथ; कवऩम् वेकम्–गमन-गति में तीव्र; तुरङ्कम्–अश्वों की सेना (के स्वामी); काति–गाधि; वन्तु–आकर; उतयम् चॅय्ताऩ्–उदित (प्रकट) हुए। ४२२

ब्रह्मदत्त के, पाणिग्रहण के अवसर पर, कर-कमल-स्पर्श से वे कन्यायें स्वस्थ सुन्दरियाँ बन गयीं। राजा ने पुत्र की कामना से पुत्रकामेष्टि का यज्ञ किया। तो होम के अग्नि-मध्य से गाधि नाम के तेजस्वी पुत्र (उदय-सूर्य के समान) प्रकट हुए। उनकी तीव्रगामी अश्वसेना प्रसिद्ध थी। ४२२

अऩ्ऩवऩ् ऱऩक्कु वेन्द ऩरशॉडु मुडियु मीन्दु
पॉऩ्ऩह रडैन्द पिऩ्ऩर्प् पुहऴ्महो दयत्तिल् वाऴुम्
मऩ्ऩवऩ् कादिक् कियाऩुङ् गौशिकि यॅऩ्ऩु माडुम्
मुऩ्ऩर्वऩ् दुदिप्प वन्द मुडियुडै वेन्दर् वेन्दऩ् 423

अऩ्ऩवऩ् तऩक्कु–उन (गाधि) को; वेऩ्तऩ्–राजा (कुशनाभ); अरचॊटु–राज्य के साथ; मुटियुम्–मुकुट भी; ईन्तु–देकर; पॊऩ् नकर्–स्वर्गपुरी; अटैन्त पिऩ्ऩर्–पहुँचने के बाद; पुकऴ् मकोतयत्तिल्–यश-प्राप्त महोदय में; मऩ्ऩवऩ् कातिक्कु–राजा गाधि के; यातुम्–मैं और; मुऩ्ऩर्–(उसके) पहले; कौचिकि ऎऩ्ऩुम् मातुम्–कौशिकी नाम की स्त्री; वन्तु उतिप्प–आकर जनमने पर; अन्त मुटि उटै (य)–वे किरीटधारी; वेन्तर् वेन्तऩ्–राजाधिराज। ४२३

कुशनाभ ने गाधि को मुकुट पहनाकर राजा बनाया। फिर वे स्वर्ग सिधारे। महोदय के राजा गाधि के दो संतानें हुयीं। एक मेरी वहन कौशिकी थी। दूसरा मैं हूँ (विश्वामित्र)। ४२३

पिरुहुविऩ् मदलै याय पेरुन्तहै पितावु मॊव्वा
इरुशिह ऩॆऩ्ब वऱ्कव् वेन्दिऴै याऴै यीन्दाऩ्
अरुमऱै यवऩुञ् जिऩ्ऩा ळऱम्बॊरु ळिऩ्ब मुऱ्ऱि
विरिमलर्त् तविशोऩ् ऱऩ्पाल् विऴुत्तवम् पुरिन्दु मीण्डाऩ् 424

पिरुकुविऩ् मतलै आय–भृगु के पुत्र; पॆरु तकै–श्रेष्ठ; पितावुम् ऒव्वा–पिता से भी तुलना में बढ़े; इरुचिकऩ् ऎऩ्पवऱ्कु–ऋचीक नाम के (मुनि) को; अ एन्तु इऴैयाऴै–उस आभरण-भूषिता को; ईन्ताऩ्–विवाह में दिया; अरु मऱै अवऩुम्–अमूल्य वेदों के (ज्ञाता) वे भी; चिल नाऴ्–कुछ समय; अऱम् पॊरुळ् इऩ्पम् मुऱ्ऱि–धर्मार्थकाम का साधन कर; विऴु तवम् पुरिन्तु–श्रेष्ठ तपस्या करके; विरि मलर् तवचोऩ् तऩ् पाल्–विकसित कमल पर आसीन के पास; मीण्टाऩ्–जा पहुँचे। ४२४

गाधी ने भृगु के पुत्र ऋचीक नामक ऋषि के साथ आभरण-भूषिता कौशिकी का विवाह कर दिया। ऋचीक बड़े योग्य वर थे और सदाचरण में उनके पिता भी उनकी समता नहीं कर सकते थे। ऋचीक ने कुछ काल गृहस्थ धर्म का, धमार्थकाम के संपादन में, उचित पालन किया। बाद बड़ी तपस्या करके ब्रह्म-लोक लौट गये। ४२४

कादलऩ् शेणि नीङ्गक् कौशिहि तरिक्क लाऱ्ऱाळ्
मीदुऱप् पडर्द लुऱ्ऱाळ् विऴुनदि वडिव माहि
मादवर्क् करश ऩोक्कि मानिलत् तुऱुह णीक्कप्
पोदुह नदिया यॆऩ्ऩाप् पूमह ऩुलहम् बुक्काऩ् 425

कातलऩ्–(प्रिय) पति (के); चेणिल् नीङ्क–आकाश (स्वर्ग) में जाने पर; कौचिकी–कौशिकी; तरिक्कल् आऱ्ऱाळ्–न सह सकी हो; विऴु नति वटिवम् आकि–बड़ी एक नदी का रूप लेकर; मीतु उऱ–आकाश में बढ़कर; पटर्तल् उऱ्ऱाळ्–जाने लगीं; मा तवर्क्कु अरचऩ्–महान तपस्वियों में श्रेष्ठ; नोक्कि–देखकर; मा निलत्तु–विशाल पृथ्वी का; उऱुकण्–दुख; नीक्क–दूर करने; नति आय्–(यही) नदी बनकर; पोतुक–जाओ; ऎऩ्ऩा–ऐसा कहकर; पूमकऩ् उलकम्–ब्रह्मा के लोक में; पूक्काऩ्–प्रवेश किया। ४२५

कौशिकी ने पतिदेव को आकाश-मार्ग पर जाते हुए देखा। वह पति-वियोग सह न सकीं। अतः अपने सती-धर्म के पालनरूपी तपस्या से प्राप्त शक्ति के आधार पर नदी का रूप ले उनका पीछा करने लगीं। उन तपोधन ने अपनी पत्नी को देखकर यह उपदेश दिया कि तुम इसी नदी के रूप में रहकर भूलोक वासियों का ताप हरती रहो। बाद वे ब्रह्मा के लोक को चले गये। ४२५

ऍम्मुना णङ्गै यिन्द विरुनदि यायि नाळॅऩ्
ऱम्मुऩि पुहलक् केळा वद्रिशय मिहवुन् दोऩ्ऱच्
चॅम्मलु मिळैय कोवुञ् जिऱिदिडन् दीर्न्द पिऩ्ऩर्
मैम्मलि पॊऴिल्या दॅऩ्ऩ मादवऩ् कूऱ लुऱ्ऱाऩ् 426

ऍम् मुऩ्ऩाळ्–मेरी पूर्वज ; नङ्कै–देवी; इन्त इरु नति आयिऩाळ्–यह महा नदी बनीं; ऍऩ्ऱु–ऐसा; अ मुऩि पुकल–उस मुनि के कहते; केळा–सुनकर; चॅम्मलुम् इळैय कोवुम्–पुरुषोत्तम और उनके भाई लघुराज; अतिचयम् मिकवुम् तोऩ्ऱ–विस्मय के अधिक होते; चिऱितु इटम्–थोड़ी दूर; तीर्न्त पिऩ्ऩर्–छूट जाने के बाद; मै मलि–अन्धकारमय; पॊऴिल् यातु–उपवन कौन सा; ऍऩ्ऩ–पूछने पर; मा तवऩ्–महान तपस्वी; कूऱल् उऱ्ऱाऩ्–कहने लगे। ४२६

मेरी पूर्वजा भगिनी यह महानदी बनीं। विश्वामित्र से यह सुनकर प्रभु श्रीराम और उनके अनुज लक्ष्मण विस्मित हुए। वे कुछ दूर आगे गये। तब एक घने रूप में अन्धकार से भरा उपवन आया। श्रीराम ने पूछा कि वह कौन सा आश्रम है। विश्वामित्र उत्तर में यों कहने लगे। ४२६

तङ्गणा यहरिऱ् ऱॅय्वन् दाऩ्पिऱि दिऩ्ऱॆऩ् ऱॆण्णुम्
मङ्गैमार् शिन्दै पोलत् तूयदु मऱ्ऱुङ् गेळाय्
ऍङ्गणाऩ् मऱैक्कुन् देव रऱिविऱ्कुम् पिऱर्क्कु मॆट्टाच्
चॅङ्गण्मा लिरुन्दु मेऩाट् चॅय्दवञ् जॅय्द दऩ्ऱे 427

तङ्कळ् नायकरिऩ्–अपने पतियों के अलावा; तॅय्वम् ताऩ्–दैव ही; पिऱितु इऩ्ऱु–अन्य नहीं हैं; ऍऩ्ऱु ऍण्णुम्–ऐसा सोचनेवाली; मङ्कैमार् चिन्तै पोल–स्त्रियों के मन के समान; तूयतु–पवित्र है; मऱ्ऱुम्–और भी; केळाय्–सुनिये; ऍङ्कळ् नाल् मऱैक्कुम्–हमारे चारों वेदों; तेवर् अऱिविऱ्कुम्–देवों की बुद्धि; पिऱर्क्कुम्–और अन्य किसी के लिए भी; ऍट्टा–अगम्य; चॅम्कण् माल्–राजीव-लोचन विष्णु; मेल् नाळ्–प्राचीनकाल में एक समय; इरुन्तु–यहाँ रहकर; चॅय् तवम्–उद्दिष्ट तप; चॅय्ततु–(जहाँ पर) किया, यह है। ४२७

यह आश्रम सती-साध्वी के, जो अपने पति-देव को छोड़ किसी अन्य देव को मानती ही नहीं, मन के समान पवित्र स्थान है। और भी इसकी

यह महिमा है कि वेद, देवों का ज्ञान, और अन्य किसी के लिये भी अगम्य राजीवलोचन श्रीविष्णु यहाँ रहकर कभी तपस्या कर चुके हैं। ४२७

पारिऩ्पाल् विशुम्बिऩ् पालुम् पऱ्ऱऱप् पडिप्प दऩ्ऩाऩ्
पेरॆऩ्बा ऩवऩ्शॆय् मायप् पॆरुम्बिणक् कॊरुङ्गु तेऱ्वार्
आरॆऩ्बा ऩमल मूर्त्ति करुदिय दऱिद ऱेऱ्ऱाम्
ईरैम्बा नूऴिक् काल मिरुन्दव मियऱ्ऱि यिट्टाऩ् 428

पारिऩ् पाल्–भूमि पर; विचुम्पिऩ् पालुम्–आकाश में भी; पऱ्ऱु अऱ–ईषना काटने के लिए; पटिप्पतु–जप करना; अऩ्ऩाऩ् पेर्–उनका नाम; ऍऩ्पाऩ्–ऐसा निर्दिष्ट; अवऩ् चॆय्–उनसे किये जानेवाले; मायम् पॆरु पिणक्कु–माया के विषम जाल; ऑरुङ्कु–पूर्ण रूपेण; तेर्वार् आर्–समझते कौन हैं; ऍऩ्पाऩ्–ऐसा कहलानेवाले; अमलम् मूर्त्ति–अमल देव; करुतियतु–संकल्प क्या किया यह; अऱितल् तेऱ्ऱाम्–हम जान-बूझ नहीं सकते; ईर् ऍम्पाऩ्–दो पचास (सौ); ऊऴि कालम्–कल्प काल; इरु तवम्–महान तपस्या; इयऱ्ऱियिट्टाऩ्–कर चुके। ४२८

इह लोक और परलोक-दोनों के वासी अपना कर्म बंधन काटने के लिए जिनका नाम जपते हैं; और जिनके सम्बन्ध में यह विस्मय किया जाता है कि कौन इनकी माया-लीलाओं की विचित्रताएँ जान सकते हैं वे अमल देव, न जाने क्या उद्देश्य लेकर, इधर सौ कल्प-काल तक तपोलीन रहे। ४२८

❀ आऩव ऩिङ्गुऱै हिऩ्ऱवन् नाऴ्वाय्, ऊऩमिऩ् ञाल मॊडुङ्गु मॆयिऱ्ऱोर्
एऩमॆ ऩुन्दिऱऩ् मावलि यॆऩ्बाऩ्, वाऩमुम् वैयमुम् वौवुदल् चॆय्ताऩ् 429

आऩवऩ्–वे; इङ्कु उऱैकिऩ्ऱ–यहाँ रहते; अ नाऴ् वाय्–उन दिनों; ऊऩम् इल्–अखण्ड; ञालम्–लोक; ऑटुङ्कुम् ऍयिऱु–जिनके अन्दर समाये रहा ऐसे दाँतोंवाले; ओर् एऩम् ऍऩुम्–अनुपम वराह (अवतार) है, ऐसा मान्य; तिऱल्–पराक्रमी; मा वलि ऍऩ्पाऩ्–महाबलि नामधारी; वैयमुम्–भूलोक को और; वाऩमुम्–आकाश-(स्वर्ग) लोक को; वौवुतल् चॆय्ताऩ्–अधीन कर लिया। ४२९

वे जब यहाँ तपस्या करते रहे तब महाबलि ने उन वराह मूर्ति के समान, जिन्होंने अपने लम्बे और वक्र दाँतों के बीच भूमि को उठा ले अपने वश में रखा था, भू-लोक और स्वर्ग लोक दोनों को अपने वश में कर लिया। यहाँ विष्णु-देव के बराहावतार की घटना की ओर संकेत है। हिरण्याक्ष भूमि को चटाई के समान लपेट कर उसके साथ समुद्र में जा छिपा। श्रीमन्नारायण ने वराह बनकर हिरण्याक्ष को मारा और भूमि को अपने दाँतों के ऊपर धर कर बाहर लाकर पूर्ववत स्थिर किया। उस वराह के समान महाबलि बलशाली था। ४२९

❀ शॆय्दवऩ् वाऩव रुञ्जॆय लाऱ्ऱा, नॆय्तवऴ् वॆऴ्वियै मुऱ्ऱिड निऩ्ऱाऩ्
ऐयमिल् शिन्दैय नन्दणर् तम्बाल्, वैयमुम् यावुम् वऴङ्ग वलित्ताऩ् 430

चॆय्तवऩ्–ऐसा किया, वह; ऐयम् इल् चिन्तैयऩ्–दृढ़चित्त होकर; वाऩवरुम् चॆयल् आऱ्ऱा–देवताओं के लिए भी अशक्य; नॆय् तवऴ्–घृत हवनवाले; वेऴ्वियै–यज्ञ को; मुऱ्ऱिट निऩ्ऱाऩ्–सम्पन्न करने को उद्यत; वैयमुम्–धरणी को; यावुम्–और सबको; अन्तणर् तम् पाल्–ब्राह्मणों के पास; वऴङ्क–दान में देने को; वलित्ताऩ्–ठाना। ४३०

महाबलि को दोनों लोकों को वश में करने के बाद अपनी शक्ति पर दृढ़ विश्वास हो गया। उसने संकल्प किया कि मैं घृत-होम का बड़ा यज्ञ करूँगा। और उसके अन्त में ब्राह्मणों को भूदान आदि दान करूँगा। ४३०

❀ आयद ऱिन्दऩर् वाऩव रन्नाऴ्, मायऩै वन्दु वणङ्गि यिरन्दार्
तीयवऩ् वॆन्दॊऴि ऱीरॆऩ निऩ्ऱार्, नायह ऩुम्मदु शॆय्य नयन्दाऩ् 431

आयतु–वह बात; वाऩवर्–देवता लोग; अऱिन्तऩर्–जान गये; अन्नाऴ्–तब; वन्तु–यहाँ आकर; मायऩै वणङ्कि–मायावी का नमस्कार कर; तीयवऩ्–दुर्जन; वॆम् तॊऴिल्–बुरे प्रयत्न को; तीर् ॲऩ–विफल बनाइये; ॲऩ इरन्तार् निऩ्ऱार्–ऐसा याचना करते हुए खड़े रहे; नायकऩुम्–नायक भी; अतु चॆय्य–वह करने का; नयन्ताऩ्–कृत-निश्चय हुआ। ४३१

इसका संकल्प देवों पर प्रकट हो गया। वे इधर आये। उन्होंने श्रीविष्णु से विनय की कि दुराचारी असुर, महाबलि का संकल्प चूर कर दें। जगन्नायक ने भी बात मान ली। ४३१

❀ काल नुऩित्तुणर् काशिब ऩॆऩ्ऩुम्, वालऱि वऱ्कदि दिक्कॊरु महवाय्
नील निऱत्तु नॆडुन्दहै वन्दोर्, आलमर् वित्तिऩ् अरुङ्गुऱ ळाऩाऩ् 432

नील निऱत्तु–श्याम रंग के; नॆटु तकै–महिमायुक्त विष्णु; कालम् नुऩित्तु–कालगति को सूक्ष्म रूप से देखकर; उणर्–जाननेवाले; काचिपऩ् ॲऩ्ऩुम्–काश्यप नाम के; वाल् अऱिवऱ्कुम्–आत्मज्ञानी को; अतितिक्कुम्–अदिति को; ऒरु मकवु आय्–एक पुत्र के रूप में; वन्तु–आकर; ओर् आल् अमर्–विशाल वटवृक्ष का आश्रय; वित्तिऩ्–बीज के समान; अरु कुऱळ्–बहुत ही छोटे रूप के; आऩाऩ्–हुए। ४३२

ऊँचे और श्याम रंग के श्रीविष्णु, जो सर्व-कल्याणगुण-संपन्न थे, त्रिकाल ज्ञानी काश्यप और उनकी पत्नी अदिति के पुत्र के रूप में अवतरित हुए। वट-वृक्ष के बीज के समान, जो बड़े वृक्ष को अन्दर छिपाये रखता है, वे बहुत ही छोटे वामन (बौने) थे। ४३२

❀ मुप्पुरि नूलिऩऩ् मुञ्जियऩ् विञ्जै, कऱ्पदोर् नाविऩऩ् पुऱ्पडु कैयऩ्
अऱ्पुद ऩऱ्पुद रेयऱि युन्दऩ्, शिऱ्पद मॊप्पदोर् मॆय्क्कॊडु शॆऩ्ऱाऩ् 433

अऱ्पुतऩ्–अद्‌भुत; मुप्पुरि नूलिऩऩ्–यज्ञोपवीतधारी; मुञ्चियऩ्–मूँज की करधनीवाले; विञ्चै कऱ्पतु–वेदमन्त्र उच्चारण करनेवाली; ओर् नाविऩऩ्–अद्वितीय जीभवाले; पुल् पटु कैयऩ्–कुश लिये हाथवाले; अऱ्पुतरे अऱियुम्–अद्‌भुत

ज्ञानी से ही जानने योग्य; चित् पतम् ऑप्पतु—ज्ञान-स्वरूप-सम; ओर् मॅय् कॉट्ट–एक शरीर लेकर; चॅऩ्ऱाऩ्–(महाबलि की) यज्ञशाला में गये । ४३३

वे अद्भुत देव, यज्ञोपवीत, और मूँज की करधनी पहने, मुख (जीभ) से वेद मन्त्र उच्चारण करते हुए, हाथ में कुश लिये अपने ज्ञानियों द्वारा ही ज्ञेय चिन्मय वामन रूप में महाबलि की यज्ञशाला में गये । ४३३

❀ अऩ्ऱवऩ् वन्द दऱिन्दुल हॅल्लाम्, वॅऩ्ऱवऩ् मुन्दि वियन्दॅदिर् कॉण्डाऩ्
निऩ्ऱुणै यन्दणरिल्लै निऱैन्दोय्, ॲऩ्ऱऩि तुय्न्दवर् यारुळ रॅऩ्ऱाऩ् 434

उलकु ॲलाम् वॅऩ्ऱवऩ्–भुवन सब जीतनेवाले; अऩ्ऱु अवऩ् वन्ततु अऱिन्तु–तब उनका आना जानकर; मुन्ति–आगे जाकर; वियन्तु–विस्मय करके; ॲतिर् कॉण्टाऩ्–स्वागत किया; निऱैन्तोय्–(गुण-) पूर्ण; निऩ् तुणै अन्तणर् इल्लै–आपके समान ब्राह्मण नहीं हैं; ॲऩ् तऩिऩ्–मुझ से बढ़कर; उय्न्तवर्–उज्जीवित; यार् उळर्–कौन हैं; ॲऩ्ऱाऩ्–(शिष्टाचार के) ये वचन कहे । ४३४

सभी लोकों को जीतनेवाले महाबलि ने वामन देव का आगमन जाना तो विस्मय किया और उनके सामने जाकर उनका स्वागत किया। उसने शिष्टतापूर्ण निवेदन किया कि (सर्वगुण-) सम्पूर्ण विप्र ! आपके समान कोई और ब्राह्मण इस विशाल विश्व में नहीं हैं। आप मेरे यहाँ आये हैं। अतः मुझसे बढ़कर भाग्यवान कृतकृत्य कौन होगा ? (सर्वगुण-संपूर्ण का अर्थ देनेवाले तमिऴ शब्द का 'सर्वव्यापी' अर्थ भी हो सकता है) । ४३४

❀ आण्डहै यव्वुरै कूऱ वऱिन्दोऩ्, वेण्डिनर् वेट्कैयिऩ् मेऱ्पड वीशि
नीण्डकै यायिऩि निऩ्नुळै वन्दोर्, माण्डव रल्लवर् माण्बिल रॅऩ्ऱाऩ् 435

आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; अ उरै कूऱ–वह वचन कहते समय; अऱिन्तोऩ्–सर्वज्ञ; वेण्टिऩर्–याचकों को; वेट्कैयिऩ् मेल् पट–माँगे से अधिक; वीचि–विना हिचक देकर; नीण्ट–(दान में) बड़े (बने); कैयाय्–हाथोंवाले; इऩि–अब; निऩ् उळै–आपके पास; वन्तोर्–आगत; माण्टवर्—यश-प्राप्त हैं; अल्लवर्–(जो) न आये, वे; माण्पु इलर्—गौरव-वंचित हैं; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा । ४३५

महाबलि श्रेष्ठ पुरुष था। उसने जब यह शिष्ट वचन कहा तब सर्वज्ञ वामनदेव ने उत्तर में कहा कि आप के हाथ याचकों को अभीष्ट से भी अधिक, निस्संकोच देकर दीर्घ-यश हो गये हैं। आपके पास कुछ मांगते हुए आनेवाले को गौरव मिलता है। न आनेवाले गौरव से वंचित रह जाते हैं । ४३५

❀ शिन्दै युवन्दॅदि रॅऩ्शॅय वॅऩ्ऱाऩ्, अन्दणऩ् मूवडि मण्णरु ळुण्डेल्
वॅन्दिऱ लोय्दर वॅण्डु मॅऩामुऩ्, तन्दऩॆ नॆऩ्ऱऩऩ् वॅळ्ळि तडुत्ताऩ् 436

चिन्तै उवन्तु–मन-मुग्ध होकर; ॲतिर्–उत्तर में; ॲऩ् चॅय–क्या करना

(है); ऎऩ्ऱाऩ्–पूछा; अन्तणन्–ब्राह्मण; वॆम् तिऱलोय्–तापक शक्तिशाली; अरुळ् उण्टेल्–दया हो तो; मू अटि–तीन पादों की; मण् तर वेण्टुम्–भूमि देने की कृपा हो; ऎऩ्ऩा मुऩ्–कहने से पहले; तन्तॆऩ्–दिया; ऎऩ्ऱतऩ्–कहा; वॆळ्ळि–शुक्र (ने); तटुत्ताऩ्–रोका । ४३६

महाबलि यह सुनकर मुदित हुआ। और पूछा कि अब क्या करना है? विप्र-वेषधारी वामन ने कहा कि परंतप बलवान! दया हो तो "पादत्रयाक्रांत" भूमि दे दीजिये। उनके कह चुकने के पहले ही महाबलि ने 'दे दिया' कह दिया। शुक्राचार्य ने उनको रोका और कहा—। ४३६

❀ कण्ड तिऱत्तिदु कैतव मैय, कॊण्ड निऱक्कुऱ ळॆऩ्बदु कॊळ्ळेल्
अण्डमु मऱ्ऱै यहण्डमु मेऩाळ्, उण्डव ऩामिदु णऱ्न्तुहॊ ळॆऩ्ऱाऩ् 437

ऐय–नृप; कण्ट तिऱत्तु–प्रत्यक्ष; इतु–यह रूप; कैतवम्–कैतव है; कॊण्टल् निऱम्–मेघ-वर्ण; कुऱळ् ऎऩ्पतु–छोटे हैं, यह; कॊळ्ळेल्–मत समझिये; अण्टमुम्–यह अण्ड; मऱ्ऱै अकण्टमुम्–अन्य अखण्ड प्रपंच को; मेल नाळ्–पहले कभी; उण्टवन् आम्–(जिन्होंने) निगल लिया वे ही हैं; इतु–उणऱ्न्तु कॊळ्–यह समझ लीजिये; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा । ४३७

प्रभु! आप इनके हमारी आँखों के सामने रहनेवाले रूप को सच समझ रहे हैं। यह धोखा है। मेघ-श्याम के इस बौने रूप को सत्य न मानिये। ये वही हैं जिन्होंने कभी सारे अण्ड-पराण्डों को अपने उदरस्थ कर लिया था। ये स्वयं भगवान विष्णु हैं। जानिये। ४३७

❀ निऩैक्किलै यॆऩकै निमिऱ्न्दिड वन्दु, तऩक्किय लावहै ताऴ्वदु ताविल्
कऩक्करि याऩदु कैत्तल मॆऩ्ऩिऩ्, ऎऩक्किदऩ् मेऩल मियादुकॊ लॆऩ्ऱाऩ् 438

तऩक्कु इयला वकै–अपने लिए अप्राकृत रूप से; वन्तु–आकर; ऎऩ् कै–मेरे हाथ; निमिऱ्न्तिट–ऊपर करके; ताऴ्वतु–नीचा रहनेवाला; ता इल्–निर्मल; कऩम् करियाऩतु–मेघ-श्याम का; कै तलम्–हस्त-तल है; ऎऩ्ऩिऩ्–तो; ऎऩक्कु–मेरा; इतऩ् मेल्–इससे बढ़कर; नलम् यातु–हित क्या है; निऩैक्किलै–आपने ध्यान नहीं दिया; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा । ४३८

महाबलि ने उत्तर दिया—वैसा है तो यह उनके लिए असाधारण है। अगर ये जो मेरे हाथ को ऊपर और अपने हाथ को नीचे रखकर दान लेने आये हैं, स्वयं मेघवर्ण श्रीमन्नारायण हैं तो इससे बढ़कर मेरा सौभाग्य क्या होगा? आपने यह बात नहीं सोची! । ४३८

तुऩ्ऩिऩर् तुऩ्ऩल रॆऩ्बदु शॊल्लार्, मुऩ्ऩिय नऩ्ऩॆऱि नूलवर् मुऩ्वन्
दुऩ्ऩिय दाऩ मुयऱ्न्दवर् कॊळ्ह, ऎऩ्ऩि इलिवऩ्ऱुणै याव रुयऱ्न्दार् 439

मुऩ्ऩिय–सम्मान्य; नल् नॆऱि–सन्मार्ग के; नूलवर्–शास्त्रज्ञ; मुऩ् वन्तु–आगे आकर; उऩ्ऩिय–उद्दिष्ट; ताऩम्–दान को; उयऱ्न्तवर्–(योग्य) श्रेष्ठ;

कॊळ्क–ले लें; ॲन्ऩ्तिल्–यह कहकर करेंगे तो; तुन्ऩ्तिऩर्–अपने; तुन्ऩ्तलर्–पराये; ॲन्ऩ्पतु–हैं, यह; चॊल्लार्–नहीं बोलते; इवऩ् तुणै उयर्न्तार्–इनके समान उन्नत; यावर्–कौन हैं। ४३८

सम्मान्य धर्मशास्त्रज्ञ, जब यह देखते हैं कि दान देने को उद्यत होकर, कोई योग्य श्रेष्ठ व्यक्ति आकर ले लें—यह घोषणा करके दान देने लगते हैं तब अपना-पराया यह बात नहीं करते। और भी इनके समान योग्य और उत्कृष्ट याचक कौन होंगे ? इनको आप देव (सुर-शत्रु) मानकर ऐसी बात न कहें। ४३९

वॆळ्ळियै यादल् विळम्बिऩै मेलोर्, वळ्ळिय राह वळङ्गुव दल्लाल्
ॲळ्ळुव वॆन्ऩ्शिल विन्ऩुयि रेनुम्, कॊळ्ळुदल् तीदु कॊडुप्पदु नन्ऩ्ऱाल् 440

दॆळ्ळियै आतल्–अल्प-बुद्धि हैं, इसलिए; विळम्पिऩै–आपने ऐसा कहा; वळ्ळियर् आक–दाता बनना हो तो; वळङ्कुवतु अल्लाल्–देते रहने के सिवाय; ॲळ्ळुव चिल–रोकने योग्य कुछ; ॲन्ऩ्–क्या होंगे; इऩिय उयिरे आयिनुम्–प्यारा प्राण भी हो तो; कॊळ्ळुतल्–माँग लेना; तीतु–बुरा है; कॊटुप्पतु–देना; नन्ऩ्ऱु–अच्छा है; (आल्)। ४४०

आप शुक्र हैं—यानी निपट कोरे हैं। (असुर-गुरु हैं, हमारे पक्षपाती हैं।) इसलिए आपने ऐसा कहा। दानी बनना हो तो याचित सभी वस्तुओं को देने के सिवा, बचाये रखने योग्य कुछ हैं क्या ? प्राण भी हों—मांगना बुरा है; पर मांगने पर देना श्लाध्य और भला है। ४४०

※ माय्न्दवर् माय्न्दव रल्लर्हण् माया, देन्दिय कैहॊ डिरन्दव रॆन्दाय्
वीन्दव रॆन्बवर् वीन्दव रेनुम्, ईन्दव रन्ऩ्ऱि यिरुन्दवर् यारे 441

ॲन्ताय्–(मेरे) तात; माय्न्तवर्–(जो) मरे वे सब; माय्न्तवर् अल्लर्–मृतक नहीं हैं; मायातु–प्राण न त्यागकर; एन्तिय कै कॊटु–याचना के लिए बढ़े हाथ के साथ; इरन्तवर्–याचना करनेवाले ही; वीन्तवर्–मृतक (कहलाने योग्य) हैं; वीन्तवरेनुम्–मृतक भी; ईन्तवर् अन्ऩ्ऱि–(याचित वस्तु) देनेवाले के सिवा; इरुन्तवर् यार्–(अमर) रहे कौन ? । ४४१

पितृतुल्य ! जो मरे हैं वे सचमुच मृतक नहीं हैं। पर जो विना प्राण त्यागे दूसरों के सामने याचना करते हुए हाथ बढ़ाते फिरते हैं उनको मृतक कहना चाहिए। जो मर गये हैं वे भी अगर दानी रहे हों तो अमर (नाम) हो जाते हैं। उनको छोड़कर स्थायी रहनेवाले कौन हैं ? ४४१

अडुप्प वरुम्बऴि शॆय्ञ्ञरु मल्लर्, कॊडुप्पवर् मुन्ऩ्बु कॊडेलॆऩ निन्ऩ्ऱु
तडुप्पव रेपहै तम्मैयु मन्ऩार्, कॆडुप्पव रन्ऩदोर् केडिलै यॆन्ऩ्ऱान् 442

अरु पऴि अटुप्प–अमिट निंदा प्राप्त हो ऐसा; चॆय्ञ्ञरुम्–बुराई करनेवाले भी; अल्लर्–(शत्रु) नहीं; कॊटुप्पवर् मुन्ऩ्पु निन्ऩ्ऱु–दान देनेवाले के सामने खड़े होकर;

कॉटेल् ॲत्त–मत दो यह कहकर; तट्टुप्पवरे–रोकनेवाले ही; पकै–शत्रु हैं; अऩ्ऩार्–वे; तम्मैयुम्–अपने को भी; कॅट्टुप्पवर्–बिगाड़नेवाले होते हैं; अऩ्ऩतु–उसके समान; ओर् केट्टु इलै–कोई बुराई नहीं है; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा । ४४२

अमिट कलंक लेकर जो किसी की खुले रूप से हानि करते हैं, वे शत्रु नहीं हैं। पर दान देनेवालों के आड़े आकर 'मत दो', कहनेवाले ही उसके शत्रु हैं। ऐसा रोकनेवाले अपनी भी हानि करा लेते हैं। इससे बढ़कर अन्य कोई बुरा काम नहीं है। ४४२

कट्टुरै युत्तमर् कैत्तुळ पॊऴ्दे, इट्टिशै कॊण्डऱ ऩॆय्द मुयऩ्ऱोर्क्
कुट्टॆऱु वॆम्बहै याव दुलोबम्, विट्टिड लॆऩ्ऱु विलक्किऩर् मादो 443

कट्टुरै उत्तमर्–धर्मोपदेशक उत्तम लोग; कैत्तु उळ पॊऴ्ते–अपने वश में सम्पत्ति के रहते समय ही; इट्टु–देकर; इचै कॊण्टु–यश पाकर; अऱऩ् ॲय्त–पुण्य प्राप्त करने का; मुयऩ्ऱोर्क्कु–प्रयत्न करनेवालों को; उळ् तॆऱु–अन्दर से बिगाड़नेवाला; वॆम् पकै–भयंकर शत्रु; आवतु–जो बनता है वह; उलोपम्–लोभ है; विट्टिटल्–दूर करो; ॲऩ्ऱु–कहकर; विलक्किऩर्–त्याज्य किया। ४४३

धर्म के उपदेशक उत्तम लोगों ने लोभ को त्याज्य कहा है। उनका कहना है कि अपने वश में संपत्ति के रहते समय में ही दान करो; यश कमाओ और पुण्य भी बना लो। इसका प्रयत्न करनेवालों को उसके ही अन्दर से रोकनेवाला शत्रु लोभ है। उसको त्याग दो। ४४३

ॲडुत्तॊरुव रुक्कॊरुव रीवदऩिऩ् मुऩ्ऩम्
तडुप्पदु निऩक्कऴहि दोतहविल् वॆळ्ळि
कॊडुप्पदु विलक्कुकॊडि योर्तमदु शुऱ्ऱम्
उडुप्पदुवु मुण्बदुवु मिऩ्ऱियॊऴि युङ्गाण् 444

ऑरुवरुक्कु–किसी को; ऑरुवर–कोई; ॲटुत्तु ईवतऩ् मुऩ्ऩम्–(याचित वस्तु) लेकर देने से पहले; तटुप्पतु–रोकना; निऩक्कु अऴकितो–आपको शोभा देता है क्या; तकवु इल् वॆळ्ळि–श्रेष्ठता शून्य शुक्र; कॊटुप्पतु–दान को; विलक्कु–रोकनेवाले; कॊटियोर् तमतु चुऱ्ऱम्–बुरे लोगों के परिवार भी; उटुप्पतुवुम् उण्पतुवुम् इऩ्ऱि–भोजन और वस्त्र के बिना; ऑऴियुम्–बिगड़ जायँगे; काण्–देखिये। ४४४

किसी को किसी दूसरे की याचित वस्तु लेकर देने के पहले ही उसको रोकना क्या आपके लिए शोभनीय है? श्रेष्ठता-शून्य शुक्राचार्य! दान को रोकनेवाले दुर्जनों के बंधु-बांधव भी भोजन और वस्त्र को तरसेंगे और नष्ट हो जायँगे। यह आप सोच लें। ४४४

❀ मुडियविम् मॊऴियॆला मॊऴिन्दु मन्दिरि
कॊडियऩॆऩ् ऱुरैत्तशॊ लॊऩ्ऱुङ् गॊण्डिलऩ्

अडियॊरु मून्ऱुनी यळन्दु कॊळ्हॆन्न
नॆडियवन् कुऱियहै नीरै नीट्टिन्नान् 445

इ मॊऴि ऎल्लाम्–यह कथन सब; मुटिय–पूर्ण रूप से (जी भरकर); मॊऴिन्तु–कहकर; मन्तिरि–मन्त्री (का); कॊटियन् ऎन्ऱु–'वंचक', ऐसा; उरैत्त चॊल्–कहा वचन; ऒन्ऱुम् कॊण्टिलन्–कोई परवाह न करके; अटि ऒरु मून्ऱुम्–पाद तीन; नी अळन्तु कॊळ्क–आप माप लें; ऎन्न–ऐसा कहकर; नॆटियवन्–उन्नत देव के; कुऱिय कै–छोटे हाथ में; नीरै–दानोदक को; नीट्टिनान्–बढ़ाया (डाला)। ४४५

महाबलि ने यह सब तृप्ति-भर कहा; शुक्राचार्य ने वामन के सम्बन्ध में जो मायावी, वंचक कहा उसको कोई मूल्य नहीं दिया। उसने वामन से कह दिया कि आपही तीन पाद-मापों की भूमि नाप लें। दान को स्थिर करने के लिए उसने उनके हाथ में उदक भी डाल दिया। ४४५

❀ कयन्दरु नऱुम्बुन्नल् कैयिऱ् ऱीण्डलुम्
पयन्दवर् हळुमिहळ् कुऱळन् पाऱ्त्तॆदिर्
वियन्दवर् वॆरुक्कॊळ विशुम्बि नॊङ्गिन्नान्
उयर्न्दवर्क् कुदविय वुदवि यॊप्पवे 446

कयम् तरु–सरोवर से प्राप्त; नऱुम् पुन्नल्–श्रेष्ठ (दान-) जल के; कैयिल् तीण्टलुम्–हाथ में लगते ही; पयन्तवर्कलुम्–जनकों (माँ-बाप) द्वारा भी परिहास्य; कुऱळन्—वामन-रूपधारी; ऎतिर्–सामने देख; वियन्तवर–विस्मयाभिभूतों (के); वॆरु कॊळ–भयभीत होते; उयर्न्तवर्क्कु उतविय–उत्तम पात्र को दी गयी; उतवि ऒप्प–सहायता के समान; विचुम्पिन् ओङ्कित्तान्–आकाश में उन्नत हो गये। ४४६

उस स्वच्छ सरोवर के उदक को वामनदेव के हाथ में पड़ना ही था कि वामनदेव, जिनका रूप देखकर स्वयं माता-पिता को भी हँसी आ सकती थी, देखनेवालों को पहले विस्मय में, बाद में, भय में डालते हुए आकाश में ऊँचे बढ़े और त्रिविक्रम बन गये। उनका बढ़ना, उत्तम लोगों के प्रति की हुई सहायता का फल जैसा उन्नति को प्राप्त करती है, वैसा था। ४४६

❀ निन्ऱकान् मण्णॆला निरम्बि यप्पुऱम्, शॆन्ऱुपा वियदिलै शिऱिदु पारॆन्ना
ऒन्ऱवा नुलहॆला मॊडुक्कि युम्बरै, वॆन्ऱकान् मीण्डदु वॆळिपॆ ऱामैये 447

निन्ऱ काल्–भूमि पर रहा श्रीपाद; मण् ऎलाम् निरम्पि–भूतल भर में फैलकर; पार् चिऱितु ऎन्ना–धरती को छोटी मान कर; अप्पुरम्–परे; चॆन्ऱु पावियतु इलै–जाकर फैला नहीं; वानुलकु ऎलाम्–ऊपर के लोकों, सभी को; ऒन्ऱ ऒटुक्कि–अपने में अन्तरित कर; उम्परै वॆन्ऱ काल्–सुरलोक को अन्तरित करनेवाला श्रीचरण; वॆळि पॆऱामै–स्थल न पाने से; मीण्टतु–लौट आया। ४४७

भूमि पर रहा श्रीचरण भूलोक को नाप आया। भूमि छोटी रह

गयी; इसलिए ही वह लौट गया। वैसे ही सुरलोकों को पूर्णरूप से एक श्रीचरण ने. अन्तरित कर नाप लिया। आगे वहाँ भी स्थान नहीं रहा। ४४७

✽उलहॅला मुळ्ळडि यडक्कि योरडिक्, कलहिला दव्वडिक् कन्बन् मॅय्यदेल्
इलैहुलान् दुळाय्मुडि येह नायहन्, शिलैकुलान् दोळिन्नाय् शिऱियन् शालवे 448

उलकु ॲलाम्–लोक, सारे; उळ् अटि–अपने (दोनों) चरणों के अन्दर; अटक्कि–नापकर; ओर् अटिक्कु–(बाकी) एक पग के लिए; अलकु इलातु–लोकों में स्थान न मिलने से; अ अटिक्कु–उस पग के लिए; अन्पन् मॅय् अतु–भक्त का शरीर (लक्ष्य) बना; एल्–तो; चिलै कुलावुम्–धनुष-शोभित; तोळिन्नाय्–भुजावाले; इलै कुलावुम्–पत्रों सहित; तुळाय् मुटि–तुलसी की माला से शोभायमान किरीटधारी; एक नायकन्–अद्वितीय जगन्नाथ; चाल चिरियन्–बहुत ही छोटे हैं। ४४८

सारे लोकों को श्री त्रिविक्रमदेव ने दो पगों में नाप लिया। तीसरे चरण के लिये स्थान नहीं रहा। इसलिए उन्हें भक्त के शरीर को ही उसका स्थान बनाना पड़ा। यह बात है तो, हे धनुष से शोभित भुजावाले श्रीराम ! श्री तुलसी-पत्र की माला से शोभित किरीटधारी श्रीविष्णु बहुत छोटे हैं न ? उनकी महिमा का कैसे वर्णन हो ? । ४४८

✽ उरियदिन् दिरऱ्किदॅन् ऱुलह मीन्दुपोय्
विरिदिरैप् पाऱ्कडऱ् पळ्ळि मेविन्नान्
करियव नुलहॅलाङ् गडन्द ताळिणै
तिरुमहळ् करन्दॉडच् चिवन्दु काट्टवे 449

करियवन्–श्यामल; इतु इन्तिरऱ्कु उरियतु–यह देवेन्द्र का स्वत्व है; ॲन्ऱु–यह कहकर; उलकम् ईन्तु–लोकों को देकर; विरि तिरै–विशाल तरंगोंवाले; पाल् कटल् पोय्–क्षीरसागर पर जाकर; उलकु ॲलाम् कटन्त–सारे लोकों को नापकर जो पार हुए; ताळ् इणै–उन चरण-द्वय के; तिरुमकळ् करम् तॉट–श्रीलक्ष्मी के हस्तों के स्पर्श से; चिवन्तु काट्ट–लाल हो दिखते; पळ्ळि–(नाग) शय्या पर; मेविन्नान्–चढ़े (योग-निद्रा में रत हुए)। ४४९

बाद श्याममूर्ति ने सारे लोकों को इन्द्र की संपत्ति मानकर उनके अधीन कर दिया। फिर वे क्षीरसागर पर जाकर शेषशायी बन गये। तब श्रीलक्ष्मीदेवी उनके पैर दबाने लगीं। आश्चर्य है कि सारे लोकों को नाप आनेवाले पैर श्रीलक्ष्मीदेवी के मृदुल कर-स्पर्श को भी सह नहीं सके। वे लाल हो गये। ऐसे कोमल पैर ही लोकों के ऊबड़-खाबड़, ऊँच-नीच प्रदेशों पर फैले थे। कितना कष्ट हुआ होगा उन्हें ? । ४४९

आदला लरुविन्नै यऱुक्कु मारिय, कादलाऱ् कण्डवर् पिऱवि काण्गुऱार्
वेदनून् मुऱैमैयाल् वॅळ्वि मुऱ्ऱुवेऱ्, कीदला दिल्लैवे ऱिरुक्कऱ् पालदे 450

आतलाल्–इन (कारणों) से; कातलाल् कण्टवर्–प्रेम से दर्शन करनेवालों का अरुविऩै अऱुक्कुम्–कठोर कर्म-बन्धन काट देगा; पिऱवि काण्कुऱार्–फिर जन्म न देखेंगे (लेंगे); आरिय–पूज्य; वेतम् नूल्–वेद-शास्त्र (विहित); मुऱैमैयाल्–रीति से; वेळ्वि मुऱ्ऱुवेऱ्कु–याग करनेवाले मुझे; इरुक्कल् पालतु–रहने योग्य स्थान; ईतु अलातु–इसके सिवा; वेऱु इल्लै–कोई दूसरा नहीं है । ४५०

इन सबसे आप जानते होंगे कि यह कितना पवित्र आश्रम है। इसके दर्शन करनेवालों का कर्मबंधन कट जायगा। फिर वे जन्म नहीं लेंगे। हे पूज्य श्रीराम ! मैं वेद और वेदसम्मत शास्त्रों की विधियों के अनुसार यज्ञ करना चाहता हूँ। मेरे लिए यही उत्तम स्थान है जहाँ रहकर यज्ञ करूँ। कोई दूसरा स्थान, इसके सिवा मान्य नहीं हो सकता । ४५०

ईण्डिरुन् दियऱ्ऱुवॆन् याहम् याऩॆऩा, नीण्डपूम् बळुवल्तै नॆऱियि ऩॆय्दिप्पिऩ्
वेण्डुव कॊण्डुदन् वॆळ्वि मेविऩाऩ्, काण्डहु कुमररैक् काव लेवियॆ 451

ईण्टु इरुन्तु–यहाँ रहकर; याऩ्–मैं; याकम् इयऱ्ऱुवेऩ्–यज्ञ करूँगा; ऎऩा–कहकर; नीण्ट–बड़े; पू पळुवत्तै–फूलों के (तरुओं से भरे) उद्यान में; नॆऱियिऩ् ऎय्ति–मार्ग से जा पहुँचकर; पिऩ्–बाद; वॆण्टुव कॊण्टु–आवश्यक (सामग्री) जुटाकर; काण् तकु कुमररै–दर्शनीय राजकुमारों को; कावल् एवि–रक्षा के लिए नियत कर; तऩ् वेळ्वि मेविऩाऩ्–अपने यज्ञ-कर्म में प्रवृत्त हुए । ४५१

महर्षि, यहीं रहकर यज्ञ करूँगा, —यह कहकर सही मार्ग पकड़कर फूलों के तरुओं से पूर्ण एक उद्यान में गये; यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्रियाँ जुटायीं और उन सुन्दर राजकुमारों को संरक्षण-कार्य में नियत किया। फिर वे यज्ञ-कार्य में प्रवृत्त हुए । ४५१

एण्णुदऱ् काक्करि दिरण्डु मून्ऱुनाळ्
विण्णवर्क् काक्किय मुऩिवन् वेळ्वियै
मण्णिऩैक् काक्किऩ्ऱ मऩ्ऩऩ् मैन्दर्हळ्
कण्णिऩैक् काक्किऩ्ऱ विमैयिऩ् कात्तऩर् 452

ऎण्णुतऱ्कु–सोचने के लिए; आक्क अरितु–करने के लिए दुस्तर; इरण्टु मून्ऱु नाळ्–दो के तीन (छः) दिन; मुऩिवऩ्–मुनि; विण्णवर्क्कु आक्किय–देवों के निमित्त किये; वेळ्वियै–यज्ञ (की); मऩ्ऩऩ् मैन्तर्कळ्–राजा के पुत्रों ने; कण्णिणै–आँखों के जोड़े की; काक्किऩ्ऱ–रक्षा करनेवाले; इमैयिऩ्–पलक-सम; कात्तऩर्–रक्षा की । ४५२

वह यज्ञ इतना कष्ट-साध्य था कि करने की कौन कहे—सोचना भी कठिन था। मुनिवर ने देवताओं को तृप्त करते हुए छः दिन का वह यज्ञ किया। राजकुमारों ने भी उसका इस प्रकार संरक्षण किया जिस प्रकार पलकें नेत्रों की रक्षा करती हैं। पलकों के आँखों के संरक्षण करने का

यह अपमान बड़ा अर्थ-पुष्ट है। एक टीका यह है जो प्रसिद्ध है—श्रीराम यज्ञ-शाला के चारों ओर घूमते आ रहे थे। लक्ष्मण द्वार पर सतर्क खड़े थे। श्रीराम जब द्वार के पास आते तो लक्ष्मण को सचेत करते। श्रीराम ऊपर की पलक के समान हैं। वह पलक गिरती उठती है। जब वह गिरती है तब नीचे की पलक को, जो अचल है, स्पर्श करती है। वैसे ही श्रीराम लक्ष्मण को स्पर्श करके सचेत करते थे। और भी पलक-आँख का उदाहरण बिलकुल अचूक सचेतता का भी द्योतक है। ४५२

कात्तऩर् तिरिहिऩ्ऱ काळै वीररिल्, मूत्तवऩ् मुऴुदुणर् मुऩियै मुऩ्ऩिनी
तीत्तॊऴि लियऱ्ऱुव रॆऩ्ऱ तीयवर्, एत्तरुङ् गुणत्तिऩाय् वरुव दॆऩ्ऱॆऩ्ऱाऩ् 453

कात्तऩर्–रक्षा करते हुए; तिरिकिऩ्ऱ–घूमनेवाले; काळै वीररिल्–ऋषभ-सम वीरों में; मूत्तवऩ्–ज्येष्ठ; मुऴुतु उणर् मुऩियै–सर्वज्ञ मुनि के; मुऩ्ऩि–समीप जाकर; एत्तु–स्तुत्य; अरु–श्रेष्ठ; कुणत्तिऩाय्–गुणवाले; नी–आप (के); ती तॊऴिल् इयऱ्ऱुवर्–दुष्कर्म करेंगे; ऎऩ्ऱ तीयवर्–ऐसे निर्दिष्ट अत्याचारी; वरुवतु ऎऩ्ऱु–आयेंगे कब; ऎऩ्ऱाऩ्–यह पूछा। ४५३

जब ऋषभ-सम वे राजकुमार यज्ञ के संरक्षण में लगे घूमते थे तब ज्येष्ठ श्रीराम ने सर्वज्ञ मुनिवर के समीप जाकर संबोधन किया और पूछा कि हे स्तुत्य गुण-धन! आपने दुष्कृत्य करनेवाले कहकर जिनका संकेत किया था वे दुराचारी राक्षस कब आवेंगे?। ४५३

वार्त्तैमा ऱुरैत्तिलऩ् मुऩिवऩ् मौऩियाय्प्
पोर्त्तॊऴिऱ् कुमरऩुम् तॊऴुदु पोन्दपिऩ्
पार्त्तऩऩ् विशुम्बिऩैप् परुव मेहम्बोल्
आर्त्तऩ रिडित्तऩ रशऩि यञ्जवे 454

मुऩिवऩ्–महर्षि ने; मौऩि आय्–मौनव्रती थे, (अतः); वार्त्तै–वचन; माऱु–उत्तर में; उरैत्तिलऩ्–नहीं कहा; पोर् तॊऴिल् कुमरऩुम्–युद्ध सन्नद्ध कुमार भी; तॊऴुतु–नमस्कार करके; पोन्त पिऩ्–बाहर आये, बाद; विचुम्पिऩै–आकाश की ओर; पार्त्तऩऩ्–देखा; अचऩि अञ्च–अशनि को भयभीत करते हुए; परुव मेकम् पोल्–मौसमी मेघों के समान; आर्त्तऩर्–शोर मचाते हुए; इटित्तऩर्–गर्जन किया। ४५४

विश्वामित्र ने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि वे यज्ञ-दीक्षित हो चुके थे इसलिए मौन-व्रती थे। बात समझकर युद्ध-सन्नद्ध श्रीराम ने बाहर आकर ऊपर देखा। तभी राक्षसों ने आकर अशनि के गर्जन को भी मन्द करते हुए हल्ला मचाया। ४५४

ऎय्दऩ रॆऱिन्दऩ रॆरियु नीरुमाप्, पॆय्दऩर् पॆरुवरै पिडुङ्गि वीशिऩर्
वैदऩर् तॆऴित्तऩर् मऴुक्क ळोच्चिऩर्, शॆय्दऩ रीऩ्ऱल तीय मायमे 455

ऍय्तत्तर्–(शर) चलाये; ऍऱिन्तत्तर्–(भाले आदि) फेंके; ऍरियुम् नीरुम् आक–आग और जल को; पॅय्तत्तर्–उँडेला; पॅरु वरै–बड़े पर्वतों को; पिट्टुङ्कि–उखाड़कर; वीचित्तर्–फेंका; वैतत्तर्–गालियाँ दीं; तॅऴित्तत्तर्–डाँटे; मऴुक्कळ्–ओच्चित्तर्–परशुओं को फेंका; ऑऩ्ऱु अल–एक नहीं, (अनेक); तीय मायम्–बुरे माया-कार्य; चॅय्तत्तर्–किये। ४५५

वही नहीं, वे शर, भाले, आग, जल, बड़े-बड़े पर्वत, और परशु आदि फेंकने लगे। साथ-साथ दुर्वचन कहकर डाँटते। उन्होंने अनेक माया-कृत्य किये। ४५५

ऊऩहु पडैक्कल मुरुत्तु वीशिऩ, काऩह मऱैत्तऩ काल मारिपोल्
मीऩहु तिरैक्कडल् विशुम्बु पोर्न्तॅऩ, वाऩह मऱैत्तऩ वळैन्द शेऩैये 456

कालम् मारि पोल्–पर्व-कालीन मेघों के समान; उरुत्तु वीचिऩ–कोप के साथ प्रेषित; ऊऩ् नकु पटैकलम्—मांस-लिप्त हथियार; काऩकम् मऱैत्तऩ–वन को ढँक गये; वळैन्त चेऩै–घेरनेवाली सेना; मीऩ् नकु तिरै कटल्–मछलियों से भरा और लहरें मारनेवाला बड़ा सागर; विचुम्पु पोर्त्ततु–आकाश को छा गया, ऐसा; वाऩ् अकम् मऱैत्तऩ–गगनमण्डल को ढाँप दिया। ४५६

क्रोध के साथ उन्होंने जो मांस-लगे हथियार, मेघ के समान बरसाये, उनसे वन ही ढँक गया। मन्त्र के बल के कारण वे नीचे आ नहीं सके। इसलिए वे आकाश में मछलियों और तरंगों से भरे समुद्र के समान छाये रहे। अतः आकाश भी ढँक गया। ४५६

विल्लॊडु मिऩ्नुवाण् मिडैन्दु लाविडप्
पल्लियङ् गडिप्पिऩि लिडिक्कुम् पल्पडै
ऑल्लॅऩ वुरऱिय वूऴिप् पेर्च्चियिऩ्
वल्लैवन् दॅऴुन्ददोर् मऴैयुम् बोऩ्ऱवे 457

विल्लॊटु–चमक के साथ; मिऩ्ऩुम् वाळ्–कौंधनेवाली तलवारें; मिटैन्तु उलाविट–घने रूप से मिलकर दिखाई देती हैं, इसलिए; पल् इयम्–कई (ढोल आदि) बाजे; कटिप्पिऩाल्–चोब (के प्रहार) से; इटिक्कुम्–बज उठे; पल् पटै–अनेक हथियार; ऊऴि पेर्च्चियिऩ्–युग के अन्त होते समय जैसे; ऑल् ऍऩ–ऊँचे घोष के साथ; उरऱिय–शब्द उत्पन्न किया; वल्लै वन्तु ऍऴुन्ततु–सहसा आ उमड़े; ओर् मऴैयुम् पोऩ्ऱ–अनुपम मेघजाल के समान भी लगे। ४५७

तलवारें बिजली की-सी चमक, और मारू बाजे और हथियार बिजली की-सी कड़क उत्पन्न कर रहे थे। अतः सेना मेघ की समानता करती थी। ४५७

कवरुडै यॅयिऱ्ऱिऩर् कडित्त वायिऩर्
तुवर्निऱप् पङ्गियर् शुऴल्हट् टीयिऩर्

पवर्शडै यऩ्दणऩ् पणित्त तीयवर्
इवरॅऩ विलक्कुवऱ् किरामऩ् काट्टिऩाऩ् 458

कवर् उटै–दो नोकवाले; ऍयिऱ्ऱिऩर्–(मुँह के कोरों के) दाँत वाले; कटित्त वायिऩर्–अधर मोड़कर दाँतों से दबाते रहे मुख वाले; तुवर् निऱ पङ्कियर्–लाल रंग के बालवाले; चुऴल् कण् तीयिऩर्–घूमनेवाली पुतली की आँखों से अग्नि प्रकट करनेवाले; इवर्–ये; पवर् चटै अन्तणऩ्–घने जटाधारी महर्षि; पणित्त–जिनके सम्बन्ध में कह चुके; तीयवर् ऍऩ–वे दुष्ट हैं, कहकर; इलक्कु वऱ्कु–लक्ष्मण को; इरामऩ्–श्रीराम ने; काट्टिऩाऩ्–दिखाया। ४५८

उन राक्षसों के मुख के कोरों के दाँत वक्र और दो नोक वाले थे। उन्होंने अपना अधर दाँतों से दबा रखा था। उनके बाल लाल थे। आँखें घूमती थीं और उनसे अंगारे से निकल रहे थे। उनको दिखाकर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा देखो ये ही वे दुष्ट हैं जिनके संबंध में महर्षि ने हमें सावधान किया था। ४५८

कण्डवक् कुमरऩुङ् गडैक्कण् डीयुह
विण्डऩै नोक्कित्तऩ् विल्लै नोक्कुऱा
अण्डर्ना यहकविऩिक् काण्डि यीण्डिवर्
तुण्डम्वीऴ् वऩवॅऩत् तॊऴुदु शॊल्लिऩाऩ् 459

कण्ट अ कुमरऩुम्–देखते हुए वह कुमार (ने) भी; कटै कण् ती उक–आँखों के कोनों से आग बरसाते हुए; विण् तऩै नोक्कि–आकाश को देखकर; तऩ् विल्लै नोक्कुऱा–अपने चाप को भी देखकर; अण्टर् नायक–अण्डों के नायक; इऩि–अब; ईण्टु–इधर; इवर् तुण्टम्–इनके टुकड़े; वीऴ्वऩ–गिरते हैं; काण्टि–देखो; ऍऩ–ऐसा; तॊऴुतु–नमस्कार करके; चॊल्लिऩाऩ्–कहा। ४५९

लक्ष्मण ने उनको देखा। उन्हें अपार क्रोध हुआ; आँखों के कोनों से आग-सी प्रकट हुई। राक्षसों को देखकर उन्होंने अपने धनुष को एक बार देखा। फिर उन्होंने श्रीराम का नमस्कार किया और कहा कि अब देखिये इनके शरीर के टुकड़े बनेंगे और वे टुकड़े भूमि पर गिरेंगे। ४५९

तूमवे लरक्कर्द निणमुञ् जोरियुम्, ओमवॅङ् गऩलिडै युहुमॅऩ् ऱुऩ्ऩियत्
तामरैक् कण्णऩुञ् जरङ्ग ळेकॊंडु, कोमुऩि यिरुक्कयोर् कूड माक्किऩाऩ् 460

अ तामरै कण्णऩुम्–उन कमलाक्ष (ने) भी; तूमम् वेल् अरक्कर तम्–धुआँ छोड़नेवाले भालेवाले राक्षसों के; निणमुम् चोरियुम्–मांस और रक्त; ओमम् वॅम् कऩल् इटै–होम के जलते अनल में; उकुम्–गिरेगा; ऍऩ्ऱु उऩ्ऩि–ऐसा सोचकर; कोमुऩि इरुक्कै–मुऩिश्रेष्ठ के स्थान के ऊपर; चरङ्कळे कॊटु–शरों से ही; ओर् कूटम् आक्किऩाऩ्–एक वितान बनाया। ४६०

राजीवलोचन श्रीराम ने सोचा कि धुआँ उगलने वाले भालों के धारक राक्षसों का मांस और रक्त होमाग्नि पर गिरेगा तो अनर्थ हो

जायगा। इसलिए उन्होंने जहाँ कौशिक बैठे यज्ञ कर रहे थे उस स्थान के ऊपर, वेदी आदि सभी की रक्षा में, शरों का एक वितान बना दिया। ४६०

नञ्जड वॆळ्ुदलु नडुङ्गि नाण्मदिच्, चॆञ्जडैक् कडवुळै यडैयुन् देवर् पोल्
वञ्जनै यरक्करै वॆरुवि मादवर्, अञ्जन वण्णनिन् नबयम् यामॆन्ऱार् 461

नञ्चु–विष (के); अट ऎळ्ुतलुम्–मारने के लिए निकला; नटुङ्कि–काँपते हुए; नाळ् मति–(प्रथमातिथि की) एक कलावाला चन्द्र; चॆम् चटै–(और) लाल जटा के; कटवुळै अटैयुम–ईश्वर की शरण में गये; तेवर् पोल–देवों की तरह; मातवर–श्रेष्ठ तपस्वी लोग; वञ्चनै अरक्करै–वंचक राक्षसों से; वॆरुवि–डरकर; अञ्चन वण्ण–अंजनवर्ण; याम् निन् अपयम्–हम आपके उभयदान के प्रार्थी हैं; ऎन्ऱार्–कहा। ४६१

जब क्षीर-सागर-मन्थन हुआ तब पहले विष निकल आया। ‘वह हमको जला देगा’ —इस डर से देवगण प्रथमा की कला का चन्द्र और जटा धारण करनेवाले शिवजी की शरण में गये। उन्ही देवों के समान अब तपस्वी लोगों ने श्रीराम के पास आकर कहा— अंजनवर्ण। हम अभय चाहते हैं। ४६१

कवित्दनन् कैत्तलङ् गलङ्ग लीरॆन्ऩच्
चॆवित्तल निऱुत्तिनल् शिलैयिन् ऱॆय्वनाण्
पुवित्तलङ् गुरुदियिन् पुणरि याक्किनन्
कुवित्तन ऩरक्कर्तञ् जिरत्तिन् कुन्ऱमे 462

कलङ्कलीर्–व्याकुल मत हों; ऎन्ऩ–कहकर; कै तलम् कवित्तनन्–हाथ की अभय-मुद्रा बनायी; चिलैयिन् तॆय्वम् नाण्–धनुष का दैवी डोरा; चॆवि तलम् निऱुत्तिनन्–कर्ण तक खींचकर; पुवि तलम्–भूतल को; कुरुतियिन् पुणरि आक्किनन्–रक्त का प्रवाह बना दिया; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; चिरत्तिन् कुन्ऱम्–सिरों के ढेर; कुवित्तनन्–लगा दिये। ४६२

श्रीराम ने अभय-मुद्रा में हस्त उठाया और उनको आश्वासन दिया कि चिन्ताकुल मत होइये। फिर उन्होंने धनुष का दिव्य डोरा कानों तक खींचकर अस्त्र चलाये। उसके फलस्वरूप राक्षसों के शरीरों के रक्त से वहाँ प्रवाह बन गया; और कटे सिरों के ढेर बन गये। ४६२

तिरुमह णायहन् ऱॆय्व वाळितान्, वॆरुवरु ताडहै पयन्त वीरर्हळ्
इरुवरि लॊरुवनैक् कडलि लिट्टदव्, ऒरुवनै यन्दहन् पुरत्ति लुय्त्तदे 463

तिरुमकळ् नायकन्–श्रीलक्ष्मीपति के; तॆय्व वाळि–दिव्यास्त्र ने; वॆरु वरु–भयंकर; ताटकै पयन्त–ताडका-दत्त; वीरर्कळ् इरुवरिल्–वीर, दो में; ऒरुवनै–एक को; कटलिल् इट्टतु–समुद्र में डाल दिया; अ ऒरुवनै–उस दूसरे को; अन्तकन् पुरत्तिल्–यमलोक में; उय्त्ततु–पहुँचा दिया। ४६३

श्रीलक्ष्मीपति के एक अस्त्र से भयंकर ताड़का का एक पुत्र मारीच समुद्र में फेंक दिया गया। दूसरे अस्त्र ने सुबाहु को यमपुर पहुँचा दिया। ४६३

तुणर्त्तपून् दॉडैयिऩान् पहऴि तूविऩान्
कण्त्तिडै विशुम्बिऩैक् कवित्तुत् तूर्त्तलाल्
पिणत्तिडै नडन्दिवर् पिडिप्प रीण्डॅऩा
उणर्त्तिऩ रॉरुवर्मुऩ् ऩॉरुव रोडिऩार् 464

तुणर्त्त पू–गुच्छों में रहे फूलों की; तॊटैयिऩाऩ्–मालाधारी (श्रीराम) ने; पकऴि–शर; तूविऩाऩ्–बरसाये (और); कणत्तिटै–एक क्षण में; विचुम्पिऩै–आकाश को; कवित्तु–घेरकर; तूर्त्तलाल्–ढँक दिया, इसलिए; इवर्–ये; ईण्टु–अब; पिणत्तिटै–लाशों पर से भी; नटन्तु–चलते आकर; पिटिप्पर्–पकड़ लेंगे; ऍऩ्ऩा–सोचकर; उणर्त्तिऩर्–(आपस में) समझाते हुए; ऑरुवर मुऩ् ऑरुवर्–एक दूसरे के पहले; ओटिऩार्–भागे। ४६४

पुष्पमाला-धारी श्रीराम ने इतने शर छोड़े कि एक क्षण में सारा अन्तरिक्ष शरों से भर गया। राक्षसों ने सोचा कि वीर, लाशों के ढेरों पर चढ़कर आयेंगे और हमको पकड़ लेंगे; इसलिए आकाश में जाने पर भी बचाव नहीं होगा। इस डर से वे अपना-अपना बचाव करते हुए एक के पहले एक भागे। ४६४

ओडिऩ वरक्करै युरुमिऩ् वॅङ्गणै, कूडिऩ कुऱैत्तलै मिऱैत्तुक् कूत्तुनिऩ्
ऱाडिऩ वलहैयु मैयऩ् कीर्त्तियैप्, पाडिऩ परन्दऩ पऱवैप् पन्दरे 465

ओटिऩ अरक्करै–भागते राक्षसों को; उरुमिऩ् वॅम् कणै–वज्र-सम भयंकर शर; कूटिऩ–पीछा करते चले; कुऱै तलै–सिरहीन (कवंध); मिऱैत्तु निऩ्ऱु–तनकर खड़े होकर; कूत्तु आटिऩ–नाचे; अलकैयुम्–भूतों ने भी; ऐयऩ् कीर्त्तियै–प्रभु की कीर्ति; पाटिऩ–गायी; पऱवै पन्तर्–पक्षियों का (बना) वितान; परन्तऩ–तना। ४६५

वज्र से भी भयंकर शरों ने उनको नहीं छोड़ा। राम-वाण अमोघ होते हैं। युद्धभूमि में कबंध नाचे; भूतों ने प्रभु की कीर्ति गायी; दावत मिली थी, इसलिए। चील आदि पक्षियों का वितान सा तन गया। ४६५

पन्दरैक् किऴित्तऩ परन्द पूमऴै, अन्दरत् तुन्दुबि मुहिलि ऩार्त्तऩ
इन्दिरन् मुदलिय वमर रीण्डिऩार्, सुन्दर विल्लियैत् तॊऴुदु वाऴ्त्तिऩार् 466

परन्त पू मऴै–अधिक गिरी पुष्पवर्षा (ने); पन्तरै–वितान को; किऴित्तऩ–चीर दिया; अन्तर तुन्तुपि—देव-दुंदुभी; मुकिलिऩ्–मेघों के समान; आर्त्तऩ–निनादित हुए; इन्तिरऩ् मुतलिय–इन्द्र आदि; अमरर्–देव; ईण्टिऩार्–एकत्र हुए; चुन्तर् विल्लियै–सुन्दर कोदण्ड-पाणि को; तॊऴुतु–नमन कर; वाऴ्त्तिऩार्–बधाई दी। ४६६

तब मुदित देवों ने भी पुष्पवर्षा की। वे पुष्प पक्षियों के बने विस्तृत वितान को चीरते हुए यज्ञशाला में गिरे। देव दुंदुभियाँ मेघ-गर्जन के समान नाद कर उठीं। इन्द्र आदि देवों ने आकर श्रीराम का नमस्कार कर स्तोत्र किया। ४६६

पुऩिद मादव राशियम् बूमऴै पॊऴिन्दार्
अऩैय काऩत्तु मरङ्गळु मलर्मऴै शॊरिन्द
मुऩियु मव्वऴि वॆळ्वियै मुऱैमैयिन् मुऱ्ऱि
इऩिय शिन्दय निरामऩुक् किऩैयऩ विशैत्तान् 467

पुऩितम् मा तवर्–पवित्र महातपस्वी; आचि–आशीर्वाद की; अम्पूमऴै–सुन्दर फूलों की वर्षा; पॊऴिन्ताऱ्–की; अऩैय काऩत्तु–उस वन के; मरङ्कळुम्–तरुओं ने भी; अलर् मऴै–पुष्पवर्षा; चॊरिन्त–गिरायी; अव् वऴि–तब; मुऩियुम्–महर्षि ने भी; वेळ्वियै–यज्ञ को; मुऱैमैयिऩ् मुऱ्ऱि–यथाविधि पूर्ण कर; इऩिय चिन्तैयऩ्–सन्तुष्ट-मन हो; इरामऩुक्कु–श्रीराम से; इऩैयऩ–यों; इचैत्ताऩ्–बताया। ४६७

फिर वे चले गये। पवित्र आचरण वाले महान तपस्वियों ने श्रीराम को पुष्कल आशीर्वाद दिया। वहाँ के तरुओं ने भी उन पर फूल बरसाये। इस वातावरण में महर्षि ने यज्ञ पूरा किया और उनका मन कृतकृत्यता के संतोष से भर उठा। तब उन्होंने श्रीराम की प्रशंसा यों की। ४६७

पाक्कि यम्मॆऩक् कुळदॆऩ निऩैवुऱुम् पाऩ्मै
पोक्कि निऱ्किदु पॊरुळॆऩ वुणर्हिलॆऩ् बुवऩम्
आक्कि मऱ्ऱवै यऩैत्तयु मणिवयिऱ् ऱडक्किक्
काक्कु नीयॊरु वेळ्विहात् तऩैयॆऩुङ् गरुत्ते 468

पुवऩम् आक्कि–सब भुवन (ब्रह्मा के रूप में) सृजन कर; मऱ्ऱु–फिर; अवै अऩैत्तैयुम्–उन सब को; अणि वयिऱु अटक्कि–सुन्दर उदर में अन्तर्हित कर; काक्कुम्–रक्षा करनेवाले; नी ऒरु वेळ्वि कात्तऩै–आपने एक यज्ञ पालन किया; ऎऩुम् करुत्तु–यह बात; पाक्कियम् ऎऩक्कु उळतु–भाग्य मेरा रहा; ऎऩ–ऐसा; निऩैवु उऱुम्–मानने का; पाऩ्मै पोक्कि–(एक सन्दर्भ देती है—) इस विचार को छोड़कर; निऱ्कु इतु पॊरुळॆऩ–आपके लिए यह (गौरव की) बात है; उणर्किलॆऩ्–नहीं मानता। ४६८

हे श्रीराम! आप ही सृष्टि-विधाता ब्रह्मा हैं। उस रूप में आप ही कल्पारंभ में सारे लोकों की सृष्टि करते हैं। फिर कल्पांत में आप सारी सृष्टि को अपने उदर के अन्दर रखकर उसकी रक्षा करते हैं। फिर आपने एक यज्ञ का संरक्षण किया —यह कहना आपकी कीर्ति को क्या बढ़ायेगा? हाँ, एक बात है। मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि लोग

यह कहेंगे कि श्रीराम ने विश्वामित्र के यज्ञ का संरक्षण किया। इसको छोड़ मैं यह मानता नहीं कि यह आपके गौरव को किंचित अंश भी बढ़ाता है। ४६८

ऎऩ्ऱु कूऱिय पिऩ्ऩरव् वॆऴिऩ्मलर्क् काऩत्
तऩ्ऱु तानुवन् दरुन्दव मुऩिवरो डिरुन्द
कुऩ्ऱु पोऱ्कुणत् ताऩॆदिर् कोसलै कुरुशिल्
इऩ्ऱु याऩ्शॆयुम् पणियॆऩ्कॊल् पणियॆऩ विशैत्ताऩ् 469

ऎऩ्ऱु कूऱिय पिऩ्ऩर्–ऐसा कहने के बाद; **ऎऴिल् मलर्**–मनोरम सुमनों से भरे; **अ काऩत्तु**–उस (आश्रम-) वन में; **अरु तव मुऩिवरोटु**–श्रेष्ठ तपस्वी मुनियों के साथ; **उवन्तु इरुन्त**–आनन्द के साथ रहे; **कुऩ्ऱु पोल् कुणत्ताऩ्**–पर्वत के समान उन्नत (अचल) गुण वाले; **ऎतिर्**–के सामने; **कोचलै कुरुचिल्**–कौसिल्या के पुत्र; **इऩ्ऱु**–आज; **याऩ् चॆय्युम् पणि**–मेरी करणीय सेवा; **ऎऩ् कॊल्**–क्या है; **पणि ऎऩ**–आज्ञा दें, ऐसा कहने पर; **इचैत्ताऩ्**–कहा। ४६९

इसके बाद श्रीराम ने ऋषि-मुनियों के साथ उसी पुष्प-तरुओं से भरे आश्रम में रात बितायी। सबेरे पर्वत के समान उन्नत और अचल गुणों से युक्त 'गुण-गिरि' महर्षि विश्वामित्र के सम्मुख जाकर श्रीराम ने पूछा कि आज मैं आपकी क्या सेवा करूँ? कृपया आज्ञा दीजिये। तब मुनिवर कहने लगे। ४६९

अरिय याऩ्शॊलि ऩैयनिऱ् करियदॊऩ् ऱिल्लै
पॆरिय कारिय मुळववै मुडिप्पदु पिऩ्ऩर्
विरियुम् वार्पुनल् मरुडञ्जूऴ् मिदिलयर् कोमाऩ्
पुरियुम् वॆळ्वियुङ् गाण्डुना मॆऴुहॆऩप् पोऩार् 470

अरिय–कठिन काम (समझ); **याऩ् चॊलिऩ्**–मैं कहूँ तो; **ऐय**–प्रभु; **निऩ्कु**–आपके लिए; **अरियतु ऒऩ्ऱु**–कठिन कोई; **इल्लै**–नहीं है; **पॆरिय कारियम् उळ**–बड़े कार्य हैं; **अवै मुटिप्पतु**–उनको पूरा करना; **पिऩ्ऩर्**–बाद को; **विरियुम् वार् पुऩल्**–विस्तृत जल-समृद्ध; **मरुतम् चूऴ्**–खेतों और बागों से घिरा; **मितिलैयर् कोमाऩ्**–मिथिला के राजा से; **पुरियुम्**–किया जानेवाला; **वेळ्वियुम्**–यज्ञ भी; **काण्टुम् नाम्**–देखेंगे हम; **ऎऴुक ऎऩ**–उठें, कहने पर; **पोऩार्**–(तीनों) चले। ४७०

प्रभु! कौन-सा कठिन काम है जो मैं कहूँ, जिसे आप कर नहीं सकते? तो भी बड़े और लोकहितकारी काम कतिपय हैं। उन्हें बाद को करेंगे। अब हम उर्वर खेतों और बागों से भरे मिथिला देश चलें और मिथिलेश जनक एक यज्ञ कर रहे हैं, उसे भी देखें। चलिये। फिर वे तीनों रवाना हुये। ४७०

9. अहलिहैप् पडलम् (अहल्या पटल)

अलम्बु मामणि यारत्तो डहिलणि पुळिनम्
नलम्बॅय् पूण्मुलै नाहिळ वञ्जिया मरुङ्गुल्
पुलम्बु मेहलैप् पुदुमलर्प् पुऩैयऱऱ् कून्दल्
शिलम्बु शूळुङ्गाऱ् शोणयान् दॅरिवयैच् चेर्न्दार् 471

अलम्पु–धुले हुए; मा मणि–श्रेष्ठ रत्न; आरत्तोटु–चन्दन के साथ; अकिल्–अगरु; अणि–(इन से) अलंकृत; पुळिऩम्–पुलिन; नलम् पॅय्–सुखावह; पूण् मुलै—आभरण-युक्त उरोज; नाकु इळ वञ्चि आम्–बहुत अल्प-वयस्क वल्लरी रूपी; मरुङ्कुल्–कमर; पुलम्पु–गुंजनशील; पुतु मलर् मेकलै–नये पुष्पों की पंक्ति की मेखला; पुऩै अऱल्–(पुष्प-) पहने हुए काले बाल रूपी; कून्तल्–केश; चिलम्पु चूळुम् काल्–नूपुर वलयित पैर (या पर्वत के चारों ओर बहनेवाले नाले) इनसे युक्त; चोणै आम्–शोण नामक; तॅरिवैयै–नारी के पास; चेर्न्तार्–गये । ४७१

वे शोण नदी के तट पर आये । कवि काव्य-परम्परा-प्रणाली के अनुसार नदी को रमणी के रूप में वर्णित करते हैं । नदी के तल में पुलिन बने हैं । उन पर धुले हुए मणि, चंदन और अगरु की लकड़ियाँ आदि बहते आकर जमे रहते हैं । वे रत्नहार-भूषित अगरु-सुगन्ध-युक्त मनोरम उरोज हैं । अल्पवयस्क कोमल जल-लता कटि है । ताज़े फूल आकर पंक्तियों में पड़े हैं; वे मेखला हैं । काले बाल केश-जाल का स्थान लेते हैं । पर्वत के चारों ओर बहनेवाले उस नदी के नाले नूपुर-वलयित पैर है । ऐसी शोण-तरुणी के पास वे आये । इसमें अर्थश्लेष और शब्दश्लेष दोनों का प्रयोग चित्तहारी है । 'आरम' चन्दन भी है, हार भी; "चिलम्पु" पर्वत भी, नूपुर भी; और "काल्" नाले भी, पैर भी । ४७१

नदिक्कु वन्दब रॅय्दलु मरुणऩ्ऱ ऩयऩक्
कदिक्कु मुन्दुरु कलिऩमाऩ् ऱॅरोडुङ् गदिरोऩ्
उदिक्कुङ् गालयिऱ् ऱण्मैशॅय् वाऩ्ऱऩ दुरुविल्
कोदिक्कुम् वॅम्मयै याऱ्ऱुवाऩ् पोऱ्कडऱ् कुळित्ताऩ् 472

अवर्–वे; नतिक्कु वन्तु अॅय्तलुम्–नदी पर आ पहुँचे, तभी; कतिरोऩ्–अंशुमाली; उतिक्कुम् कालैयिल्–उदय के समय; तण्मै चॅय्वाऩ्–शीतलता प्रदान करने के निमित्त; तऩतु उरुविल्–अपने स्वभाव के; कॉतिक्कुम् वॅम्मैयै–तापक उष्ण को; आऱ्ऱुवाऩ् पोल्–शान्त करनेवाला हो ऐसा; अरुणऩ् तऩ्–अरुण के; नयऩम् कतिक्कुम्–दृष्टि की गति से भी बढ़कर; मुऩ्तु उऱु–आगे जानेवाले; कलिऩम् माऩ् तेरोटुम्–अश्वों के जुते रथ के साथ; कटल् कुळित्ताऩ्–(पश्चिमी-) सागर में डूबे । ४७२

जब वे नदी पार आये तब सूर्यास्त हुआ । कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि अंशुमाली दूसरे दिन उदय के समय उनको शीतलता प्रदान करनेवाले

रहना चाहते थे। तदर्थ अपनी स्वाभाविक उष्णता को दूर करने के लिए पश्चिमी सागर में डूब गये। तब उनके सारथी अरुण भी, और रथ के अश्व भी जो नयनों की दृष्टि-गति से भी अधिक शीघ्र चलनेवाले थे, उनके साथ सागर में मग्न हुए। हाँ श्रीराम और लक्ष्मण सूर्यदेव के कुल के थे, इसलिए सूर्य का उन पर इतना प्रेम रखना स्वाभाविक ही था। ४७२

कऱङ्गु तण्पुऩऱ् कडिनॅडुन् दाळुडैक् कमलत्
तऱङ्गॉ णाण्मलर्क् कोयिल्ह ळिदऴ्क्कद वडैप्पप्
पिऱङ्गु तामरै वनम्विट्टुप् पॅडैयॉडुङ् गळिवण्
डुऱङ्गु हिऩ्ऱदोर् नऱुमलर्च् चोलैपुक् कुऱैन्दार् 473

कऱङ्कु–कलकल वाले; तण् पुऩल्–शीतल जल के; नॅटु ताळ् उटै–लम्बे नालों के; कमलत्तु–कमल के; नाळ् कटि मलर्–उसी दिन विकसित, सुवासित पुष्परूपी; अऱम् कॊळ् कोयिल्कळ्–धर्म के मन्दिर; इतऴ् कतवु अटैप्प–दलरूपी किवाड़ बन्द कर देते हैं, तब; पॅटैयॊटुम्–भ्रमरियों के साथ; कळि वण्टु–क्रीड़ा मुदित भ्रमर; पिऱङ्कु–शोभामय; तामरै वऩम् विट्टु–कमल-कानन छोड़ जाकर; उऱङ्कुकिऩ्ऱतु–जहाँ सोते हैं उस; ओर् नऱु मलर् चोलै–एक सुगन्धित फूलों के बाग में; पुक्कु–प्रवेश कर; उऱैन्तार्–विश्राम किया। ४७३

वे रात को एक उद्यान में ठहरे। उस उद्यान में भ्रमर भी आकर ठहरे। भ्रमर क्यों आये? उनको, कमल के द्वार बन्द हो गये थे अतः, इधर आकर ठहरना पड़ा। कमल को कवि (पक्षियों के कारण या लहरों के कारण) कलरव-युक्त शीतल जल में लम्बे नालों पर रहनेवाले कमल को धर्माश्रय मन्दिर कहते हैं क्योंकि वे भौरों के खाने और ठहरने के स्थान बनते हैं। इससे उन यात्रियों की ओर संकेत है जो दिन में अन्नसत्रों में भोजन करके रात में यात्रा करते हुए उद्यानों में ठहरते हैं। ४७३

इऩैय शोलैमऱ् ऱियादॅऩ विराहवऩ् विऩव
विऩैयॅ लामऱ नोऱ्ऱवऩ् विळम्बुवाऩ् मेऩाळ्
तऩैय राऩवर्क् किरङ्गिये काशिबऩ् ऱऩ्दु
मऩैयु ळाडवम् बुरिन्दऩ ळिवणॅऩ वलित्ताऩ् 474

इऩैय चोलै यातु–यह उद्यान कौन सा है; ऍऩ–ऐसा; इराकवऩ् विऩव–श्रीराघव के पूछने पर; विऩै ऍलाम्–कर्म, सब; अऱ नोऱ्ऱवऩ्–काटते हुए तपस्या कर चुकनेवाले (ने); विळम्पुवाऩ्–कहना आरम्भ किया; मेल् नाळ्–पहले किसी समय; काचिपऩ् तऩ् मऩै उळाळ्–काश्यप की गृहिणी (दिति ने); तऩैयर् आऩवर्क्कु इरङ्कि–अपने पुत्रों के कारण दुखी हो करके; इवण्–इधर; तवम् पुरिन्तऩळ्–तपस्या की; ऍऩ वलित्ताऩ्–यह समझाया। ४७४

वहाँ पहुँचकर रघुकुलतिलक श्री राघव ने प्रश्न किया कि यह उद्यान कौन-सा है? महर्षि ने, जिन्होंने अपनी तपस्या से कर्मबंधन काट दिया

था, यह उत्तर दिया। पहले कभी यहाँ काश्यप की पत्नी दिति ने अपने पुत्रों के संबंध में उत्पन्न मानसिक क्लेश के कारण तय किया था। वह वृत्तांत आगे बताया जाता है। ४७४

अण्ड कोळहैक् कप्पुऱत् तॆऩ्ऩैया ऴुडैय
कॊण्ड ऩीळ्पदत् तॆय्दियोर् विज़्जयर कोदै
पुण्ड रीहमॆऩ् बदत्तियैप् पुहऴ्न्दऩळ् पुहऴ
वण्ड ऱामदु मालिहै कॊडुत्तऩण् महिऴ्न्दु 475

अण्ट कोळकैक्कु—अण्ड-गोलों के; अ पुऱत्तु–उस पार; ऍऩ्ऩै आळ् उटैय–मुझ से कैंकर्य लेनेवाले (मेरे ईश्वर); कॊण्टल्–मेघवर्ण (के); नीळ् पतत्तु–श्रेष्ठ स्थान श्री वैकुण्ठ को; ओर् विज़्चैयर् कोतै ऍय्ति–एक विद्याधर स्त्री (जाकर); पुण्टरीकम् मॅल् पतत्तियै—कमलकोमल-चरणा की; पुकऴ्न्तऩळ्–स्तुति करने पर; मकिऴ्न्तु–सन्तुष्ट होकर; वण्टु अऱा–भ्रमरों से अविमुक्त; मतु मालिकै–शहद चूनेवाली माला; कॊटुत्तऩळ्–प्रदान की। ४७५

इन अण्डों के परे रहनेवाले परमपद मेघवर्ण श्रीमन्नारायण, मेरे नाथ, का लोक है। वहाँ एक विद्याधरी गयी। उसने कोमल कमलासना श्रीलक्ष्मी का यशोगान गाया। श्रीदेवी संतुष्ट हुईं और उन्होंने एक नयी पुष्पमाला प्रदान की। उससे शहद चूता था और उस पर भ्रमर मंडराते रहे। ४७५

अऩ्ऩ मालैयै याऴिडैप् पिणित्तय ऩुलहम्
कऩ्ऩि मीडलुङ् गशट्टुडै मुऩियॆदिर् काणा
ऍऩ्ऩै याळुडै नायहिक् किशैयॆडुप् पवळॆऩ्
ऱऩ्ऩ डाळिणै वणङ्गिनिऩ् ऱेत्तुऱ वऩैयाळ् 476

कऩ्ऩि–वह विद्याधर महिला; अऩ्ऩ मालैयै–उस माला को; याऴ् इटै पिणित्तु याऴ्–(वीणा) से बाँधकर; अयऩ् उलकम्–ब्रह्मा के लोक को; मीटलुम्–लौट आते समय; कचटु उटै मुऩि—मैले-कुचैले वस्त्र पहने (या दुर्गुणी) मुनि (दुर्वासा); ऍतिर् काणा–सामने देखकर; ऍऩ्ऩै आळ् उटै(य)–मेरा कैंकर्य लेनेवाली (मेरी ईश्वरी); नायकिक्कु–स्वामिनी श्रीलक्ष्मीदेवी को; इचै ऍटुप्पवळ् ऍऩ्ऱु–स्तुति गानेवाली (वंदिनी) जानकर; अऩ्ऩळ् ताळ् इणै–उसके चरण-द्वय पर; वणङ्कि निऩ्ऱु–नमस्कार करके स्थित होकर; एत्तुऱ–स्तोत्र करते समय; अऩैयाळ–उसने। ४७६

उस विद्याधरी ने माला से अपनी वीणा को अलंकृत करके उसका सम्मान किया। फिर वह ब्रह्मलोक गयी। मार्ग में दुर्वासा ऋषि मिले। दुर्वासा अपने नाम के अनुसार कोप-रूपी दुर्गुण और मैले वस्त्र धारण करते थे। दुर्वासा ने देखा कि यह विद्याधरी श्रीलक्ष्मीदेवी की वंदिनी है। वे स्वयं वैष्णवभक्त थे अतः जैसे वैष्णवों में नियम हैं वैसे ही उन्होंने विष्णु-भक्ता विद्याधरी के पैर छुए और स्तुति की। ४७६

उलहम् यावैयुम् पडैत्तळित् तुण्डुमि ऴ़ोरुवऩ्
इलहु मार्बहत् तिरुन्दुयिर् यावैयु मीऩ्ऱ
तिलह वाणुदल् शॅऩ्ऩियिऱ् चूडिय तॅरियल्
अलहिऩ् मामुऩि पॅऱुहॅऩ वळित्तऩ ळळियाल् 477

उलकम्–लोक; यावैयुम्–सभी को; पटैत्तु–पैदा करके; अळित्तु–पालकर; उण्टु–उदरस्थ करके; उमिऴ्–(कल्पारम्भ में उगलने) प्रकट करानेवाले; ऑरुवऩ्–अप्रमेय श्रीविष्णु के; इलकुम् मार्पकत्तु इरुन्तु–शोभायमान वक्षस्थल में रहते हुए; उयिर्–जीव (सचराचर); यावैयुम्–सबको; ईऩ्ऱ–(जिन्होंने) जन्म दिया; तिलकम् वाळ् नुतल्–(वे) तिलक-शोभित उज्ज्वल ललाटवाली श्रीलक्ष्मीदेवी के; चॅऩ्ऩियिल् चूटिय–सिर पर पहनी; तॅरियल्–माला को; अलकु इल् मा मुऩि–अनन्त महिमा-पूर्ण मुनिवर; पॅऱुक ऍऩ–लीजिये कहकर; अळियाल्–प्रेम से; अळित्तऩळ्–भेंट किया। ४७७

तब विद्याधरी ने सोचा कि यह श्रीनारायण की, जो प्रपंच की सृष्टि करते हैं, स्थिति दिलाते हैं और कल्पांत में अपने उदर में रखकर संरक्षण करके नये कलपारंभ में उनको फिर से प्रकट करनेवाले हैं, वक्षस्थल-वासिनी, जगज्जननी कमलादेवी की दी हुई माला है। यह ऋषि को अत्यन्त आदरणीय और प्रिय होगी। अतः उसने, 'ऋषि ! आप इसको लें' —यह कहते हुए उन्हें दे दिया। ४७७

दॅय्व नायहि शॅऩ्ऩियिऱ् चूडिय तॅरियल्
ऐय याऩ्पॅऱप् पुरिन्ददॅत् तवमॅऩ वाडि
वॅय्य मामुऩि शॅऩ्ऩियिऱ् चूडिये विऩैपोय्
उय्यु माऱॅऩ्ऩ् ऱुवन्दुवन् दुम्बर्ना डुऱ्ऱाऩ् 478

वॅय्य मा मुऩि–चाहते हुए महामुनि; तॅय्व नायकि–दिव्य नायिका; चॅऩ्ऩियिल्–सिर पर; चूटिय तॅरियल्–पहनी माला; पॅऱ–प्राप्त करने; याऩ् पुरिन्ततु–मैंने जो किया; ऐय ऍ तवम्–ओह, कितना बड़ा तप; ऍऩ–कहकर; आटि–नाचकर; चॅऩ्ऩियिल् चूटि–(अपने) सिर पर धारण कर; विऩै पोय्—कर्म-बन्धन से मुक्त हो; उय्युम् आऱु–तरने का मार्ग यह; ऍऩ्ऱु–समझकर; उवन्तु उवन्तु—बार-बार मुदित होकर; उम्पर् नाटु–देवताओं के लोक; उऱ्ऱाऩ्–पहुँचे। ४७८

वहुत उत्कंठा के साथ ऋषि ने वह माला स्वीकार की। दिव्य नायिका कमलादेवी के सिर पर रही यह माला; मुझे यह मिली तो मैं कितना भाग्यवान हूँ ! मैंने कैसा तप किया है ? ऐसा सोचकर ऋषि ने उसे अपने सिर पर धारण किया। संतोष से वे नाच उठे। मेरा कर्म-बन्धन कट गया —ऐसा विश्वास करते हुए उन्हें अपार हर्ष हुआ। वे बढ़ते आनन्द के साथ देवलोक गये। ४७८

पॅय्यु मासुहिल् वॅळ्ळियम् पिऱङ्गऩ्मीप् पिऱळुम्
शॅय्य तामरै यायिर मलर्न्दुशॅङ् गदिरिऩ्

मॉय्हॉळ् शोदियै मिलैच्चिय मुऱैमैपोऩ् ऱौळिरुम्
मॅय्यि ऩोडयि रावदक् कळिऱ्ऱिऩ्मेल् विळङ्ग 479

पॅय्युम् मा मुकिल्–बरसनेवाली घटा; **वॅळ्ळि पिऱङ्कल् मी**–चाँदी के पर्वत पर; **पिऱऴुम्**–शोभायमान; **चॅयय तामरै**–लाल कमल; **आयिरम्**–सहस्र; **मलर्न्तु**–खिलकर; **मॉय्कॉऴ**–घने रूप से संकुलित; **चॅम्मै कतिरिऩ्**–लाल किरणों की; **चोतियै**–ज्योति को; **मिलैच्चिय मुऱैमै पोऩ्ऱु**–धारण कर रहा है, ऐसे; **ऑळिरुम्**–शोभनेवाले; **मॅय्यिऩोटु**–शरीर की कान्ति के साथ; **अयिरावतम् कळिऱ्ऱिऩ् मेल्**–ऐरावत (नाम) के गज पर; **विळङ्क**–दर्शन देते हुए। ४७९

तब देवेन्द्र धूम की यात्रा पर आ रहे थे। वे ऐरावत पर आरोह कर आ रहे थे। वे नीले जलगर्भित मेघ के समान लगते थे, जो एक चाँदी के पर्वत पर बैठा था; और जिस पर उनकी सहस्र आँखें हज़ार खिले कमलों के समान लगती थीं। उनके शरीर से तेज छूट रहा था, जो सूर्य की लाल किरणों के पुंज के समान था। ४७९

अरम्बै मेऩहै तिलोत्तमै युरुप्पशि यऩङ्गऩ्
शरम्बॅय् तूणियिऱ् ऱळिरडि नूपुरन् दऴैप्पक्
करुम्बै युञ्जुवै कैप्पित्त शॉल्लियर् विळरि
निरम्बु पाडलो डाडिऩर् वीदिह णॅरुङ्ग 480

करुम्पैयुम्–इक्षु को भी; **कैप्पित्त**–कड़आ बनानेवाले; **चुवै चॉल्लियर्**–मधुर-भाषिणी; **अरम्पै, मेनकै, तिलोत्तमै, उरुप्पचि**–रम्भा, मेनका, तिलोत्तमा और उर्वशी; **अनङ्कऩ् चरम् पॅय्**–अनंग के शर-पात्र; **तूणियिऩ्**–तूणीर के समान; **तळिर् अटि**–पल्लव-कोमल चरणों में; **नूपुरम् तऴैप्प**–नूपुरों के मधुर नाद करते; **विळरि निरम्पु पाटलोटु**–विळरी राग के गानों के साथ; **आटिऩर्**–नाचते हुए; **वीतिकळ्**–वीथियों में; **नॅरुङ्क**–सटकर आती हैं, ऐसे। ४८०

उनके निकट पार्श्व में रम्भा, मेनका, तिलोत्तमा और उर्वशी नाम की अप्सराएँ जिनकी बोली इक्षु रस से भी मीठी थी, नाचती आ रही थीं। उनके पैर अनंग के तूणीर के समान थे। उनके पैरों में नूपुर झनझना रहे थे। वे "विळरि" राग के गीतों के साथ नाच रही थीं। ४८०

नील माल्वरैत् तवऴ्दरु निऱैमदिक् कऱ्ऱै
पोल वेयिरु पुडैयिऩुञ् जामरै पुरळक्
कोल मामदि कुऱैवऱ निऱैन्दॊळि कुलावि
मेलु यर्न्दॅऩ वॅळ्ळियन् दऩिक्कुडै विळङ्ग 481

नीलम् माल् वरै–नीले रंग के पर्वत पर; **तवऴ्तरु**–धीरे रेंगते चलनेवाली; **निऱैमति कऱ्ऱै पोल**–पूर्णचन्द्र की किरणराशि के समान लगनेवाले; **चामरै**–चँवर; **एय् इरु पुटैयिऩुम्**–शोभायमान दोनों पार्श्वों में; **पुरळ**–डोलते; **कोलम् आम् मति**–सुन्दरतायुक्त चन्द्र; **कुऱैवु अऱ**–पूर्णरूप से; **निऱैन्तु**–खिलकर; **ऑळि कुलावि**–

प्रकाश से भर कर; मेल् उयर्न्ततु अँत्–ऊपर चढ़ा रहा, ऐसा; वॅळ्ळि तऩि कुटै–चांदी का उत्तम छत्र; विळङ्क–दर्शनीय बना रहा, ऐसा। ४८१

दोनों ओर चामर डुल रहे थे। वे काले पर्वत पर रेंगनेवाली चाँदनी का भ्रम पैदा कर रहे थे। ऊपर चाँदी का अनुपम छत्र शोभित था, जिसको देखकर सुन्दर राकापति और अधिक उज्ज्वल होकर उनके ऊपर रहकर छटा बिखेर रहे थे। ४८१

तऴ्ङ्गु पेरियुङ् गुऱट्टॊडु पाण्डिलुञ् जङ्गुम्
वऴङ्गु कम्बलै मङ्गल गीदत्तै मऱैप्प
मुऴङ्गु नाऩ्मऱै मूरिनीर् मुऴक्कॆऩ वुलहै
विऴुङ्ग माल्वरुम् विऴावणि कण्डुळम् वियन्दाऩ् 482

तऴ्ङ्कु–बजनेवाली; पेरियुम्–भेरी; कुऱट्टॊटु–'कुऱडु' नामक ढोल; पाण्टिलुम्–झाँझ; चङ्कुम्–शंख, और; वऴङ्कु कम्पलै–देनेवाला नाद; मङ्कल कीतत्तै मऱैप्प–मंगलगीतों को अपने में डुबाते हुए; मुऴङ्कु–उठनेवाला; नाल् मऱै–चारों वेदों (के पारायण) की ध्वनि; मूरि नीर् मुऴक्कु अॆऩ–प्रबल समुद्र-गर्जन के समान; उलकै विऴुङ्क–विश्व भर में व्याप्त हो; माल् वरुम्–इन्द्र के आने का; विऴा अणि कण्टु–(धूम की यात्रा के) उत्सव का वैभव देखकर; उळम् वियन्ताऩ्–मन में विस्मय किया। ४८२

भेरी, ढोल, करताल, शंख आदि वाद्य बज रहे थे। साथ-साथ मंगलगीत भी गाये जा रहे थे। अनर्थ होनेवाला था, इसलिए शायद मंगलगीत को सुनाई देने से रोककर वाद्यों का नाद गीत के स्वर को लील गया। वेदों का पाठ हो रहा था। वह समुद्र-गर्जन के समान विश्व भर में व्याप रहा था। ४८२

तऩैयॊव् वादवऩ् महिऴ्च्चियाल् वासवऩ् ऱऩ्कै
वऩैयु मालैये नीट्टलुन् दोट्टियाल् वाङ्गित्
तुऩैव लत्तयि रावदत् तॆरुत्तिडैत् तॊडुत्ताऩ्
पऩैशॆय् कैयिऩाऱ् पऱित्तडिप् पडुत्तदप् पहडु 483

तऩै ऒव्वातवऩ्–अपनी बराबरी न रखनेवाले महर्षि; मकिऴ्च्चियाल्–सन्तोष से; वऩैयुम् मालैयै–भूषक माला को; वाचवऩ् तऩ् कै–वासव के हाथ में; नीट्टलुम्–बढ़ाते ही; तोट्टियाल्–अंकुश से; वाङ्कि–ग्रहण कर; तुऩै वलत्तु–तीव्रगति और बल से युक्त; अयिरावतत्तु अॆरुत्तिटै–ऐरावत के गले पर; तॊटुत्ताऩ्–पहनाया; अ पकटु–उस गज ने; पऩै चॆय् कैयिऩाल्–ताड़-सम अपनी सूँड़ से; पऱित्तु–छीनकर; अटि पटुत्ततु–पैरों के नीच डालकर रौंद दिया। ४८३

इस संभ्रम के साथ इन्द्र की यात्रा को देख विचित्र गुण में अपना समान न रखनेवाले दुर्वासा ने आनन्द से भरकर अपने पास रही भूषित करनेवाली माला को देवेन्द्र के हाथ में देने के विचार से बढ़ाया। देवेन्द्र

ने उसे अंकुश से ग्रहण कर हाथी के गले पर डाल दिया। ऐरावत ने उसे छीना और अपने पैरों के नीचे डाल कर रौंद दिया। ४८३

कण्ड मामुऩि विऴिवऴि यॊऴुहुवॆङ् गऩलाल्
अण्ड कूडमुञ् जाम्बरा यॊऴियुमॆऩ् ऱञ्जि
विण्डु नीङ्गिऩऱ् विण्णव रिरुशुडऱ् विळङ्गा
दॆण्डि शामुह मिरुण्डऩ शुऴऩ्ऱदॆव् वुलहुम् 484

कण्ट–देखते रहे; **मा मुऩि**–महर्षि (की); **विऴि वऴि ऑऴुकु**–(कोप के कारण) आँखों द्वारा निकलनेवाली; **वॆम् कऩलाल्**–भयंकर आग से; **अण्ट कूटमुम्**–अण्ड के ऊपर भी; **चाम्पर् आय् ऑऴियुम्**–राख बनकर मिट जायगा; **ॲऩ्ऱु**–समझकर; **अञ्चि**–भीत होकर; **विण्णवर्**–सुरलोक-वासी; **विण्टु नीङ्किऩर्**–अलग हट गये; **इरु चुटर्**–दोनों प्रकाश-गोल (सूर्य और चन्द्र) भी; **विळङ्कातु**–मन्द पड़ गये, इसलिए; **ॲण् तिचा मुकम्**–आठों दिशाएँ; **इरुण्टऩ**–अँधेरे में पड़ गयीं; **ॲ अलकुम्**–सभी लोक; **चुऴऩ्ऱतु**–घूमे। ४८४

इन्द्र और ऐरावत के कृत्य देखकर दुर्वासा अति क्रुद्ध हुए। देवों को उनकी आँखों से निकलनेवाली आग की ज्वाला से "हमारे अण्ड के ऊपर तक जलकर राख हो जायगा"—ऐसा लगा। इसलिए देवगण डर से अलग भाग गये। सूर्य और चन्द्र भी तेजहीन हो गये और दिशाएँ अन्धकारमय हो गयीं। सारे भुवन घूमने लगे। ४८४

पुहैयॆ ऴुन्दऩ वुयिर्त्तॊऱु मॆयिल्पॊडित् तवऩिऩ्
नहैयॆ ऴुन्दऩ निवन्दऩ पुरुवनऩ् ऩुदलिल्
शिहैयॆ ऴुञ्जुडर् विऴियिऩ ऩशऩियुन् दिहैप्प
मिहैयॆ ऴुन्दिडु शदमह केळॆऩ वॆहुण्डाऩ् 485

उयिर्त्तॊऱुम्–हर श्वास के साथ; **पुकै**–धुएँ; **ॲऴुन्तऩ**–उठे; **ॲयिल् पॊटित्तवऩिऩ्**–त्रिपुरांतक शिवजी के समान; **नकै ॲऴुन्तऩ**–अट्टहास कर उठे; **पुरुवम् नल् नुतलिल् निवन्तऩ**–भौंहें सुन्दर भाल पर चढ़ीं; **चिकै ॲऴुम् चुटर्**–शिखायुक्त अग्नि के समान; **विऴियिऩऩ्**–आँखोंवाले बनकर; **मिकै ॲऴुन्तिटु**–अपराधकारी; **चतमक**–शतमख (इन्द्र); **केळ्**–सुनो; **ॲऩ**–कहकर; **अचऩियुम् तिकैप्प**–अशनि को भी भ्रमित करते हुए; **वॆकुण्टाऩ्**–कोप के साथ बोले। ४८५

महर्षि के श्वास के साथ धुँआ निकला; वे त्रिपुर जलानेवाले शिवजी के समान ठटाकर हँसे; उनकी त्यौरियाँ चढ़ गयीं। आँखों से ज्वालामयी आग सी निकालते हुए महर्षि ने गरजकर कहा—हे शतमख! तुमने गम्भीर अपराध किया है, सुनो। उनके स्वर के सामने वज्रनाद भी भय से ठहर नहीं सका। ४८५

पूद नायहऩ् पुविमह णायहऩ् पॊरुविल्
वेद नायहऩ् मार्बहत् तिऩिदुवीऱ् ऱिरुक्कुम्

आदि नायहि विरुप्पुऱु तॉडैयल्हॉण् डणैन्द
माद राळ्वयिऱ् पॅऱ्ऱॅऩ् मुयऩ्ऱमा दवत्ताल् 486

पूतम् नायकऩ्–सर्व-भूत-नाथ; पुवि मकळ् नायकऩ्–भूदेवी के पति; पॊरु इल्–अप्रतिम; वेतम् नायकऩ्–वेदनायक; मार्पकत्तु–(के) वक्षस्थल में; इऩितु वीऱ्ऱिरुक्कुम्–सुख से आसीन; आति नायकि–आद्या देवी की; विरुप्पु उऱु–प्रिय; तॉटैयल्–माला को; कॉण्टु अणैन्त–लेकर जो आयी थी; मातराळ् वयिऩ्–(उस) विद्याधरी स्त्री से; मुयऩ्ऱ मा तवत्ताल्–पूर्वकृत बड़े तप (के बल) से; पॅऱ्ऱॅऩ्–प्राप्त किया । ४८६

आक्रोश के साथ दुर्वासा जी ने कहा—जगन्नाथ, श्रीनाथ, वेदनाथ श्रीमन्नारायण की वक्षस्थलवासिनी, आदिनायिका श्रीलक्ष्मीदेवी की प्रिय माला थी यह। उसे उनकी भक्ता एक विद्याधरी प्राप्त कर लायी थी। उस विद्याधरी से मुझे यह प्राप्त हुई। यह मेरी तपस्या का फल था। ४८६

इऩ्ऱु निऩ्पॅरुञ् जॅव्विकण् डुवहयि ऩीन्द
मऩ्ऱ लन्दॉडै यिहऴ्न्दऩै युऩदुमा निदियुम्
ऑऩ्ऱ लादपल् वळङ्गळु मुवरिपुक् कॊळिप्पक्
कुऩ्ऱि नीतुय रुऱुहॅऩ वुरैत्तऩऩ् कॊदित्ते 487

इऩ्ऱु–अब; निऩ् पॅरु चॅव्वि कण्टु–तुम्हारा बड़ा वैभव देखकर; उवकैयिऩ्–आनन्द से; ईन्त–दिये; मऩ्ऱल् अम् तॉटै–सुवासित श्रेष्ठ हार को; इकऴ्न्तऩै–अनादर किया; उऩतु मा नितियुम्–तुम्हारी बड़ी निधि; ऑऩ्ऱु अलात–(दूसरों के लिए) असुलभ; पल् वळङ्कळुम्–अनेक समृद्ध सम्पदाएँ; उवरि पुक्कु–समुद्र में प्रवेश कर; ऑळिप्प–छिप जायँ, तब; नी कुऩ्ऱि–तुम निर्धन बनकर; तुयर् उऱुक–दुख भोगो; ऍऩ–ऐसा; कॊतित्तु–खौलकर; उरैत्तऩऩ्–(शाप) कहे । ४८७

अब मैंने तुम्हारा वैभव देखा; बड़ा आनन्दित हुआ। उसी आनन्द की प्रेरणा से मैंने यह सोचकर कि तुम इसके योग्य हो तुम्हें भेंट की। तुमने उसका घोर अनादर किया है। अब तुम्हारी निधियाँ, सारे सत्व और सारी संपदाएँ तुमसे छूटकर सागर में छिप जाएँगी। तुम अभावग्रस्त होकर दुख उठाओगे। ४८७

अरम डऩ्दैयर् कऱ्पह नवनिदि यमिऱ्दच्
चुरबि वाम्बरि मदमलै मुदलिय तॊडक्कर्
ऱॊरुपॅ रुम्बॊरु ळिऩ्ऱिये युवरिपुक् कॊळिप्प
वॅरुवि योडिऩ वॅण्णॅय्वाऴ् कण्णऩ्मे वारिऩ् 488

अर मटन्तैयर—सुर-स्त्रियाँ; कऱ्पकम्–कल्पक आदि वृक्ष; नव निति–नवनिधियाँ; अमिर्तम् चुरपि–अमृत (सा दूध देनेवाली) कामधेनु; वाम् परि–लपकनेवाला (उच्चैःश्रवा नाम का) अश्व; मतम् मलै–मत्त पर्वत (सम गज);

मुतलिय–आदि सभी; तॉटक्कु अऱ्ऱु–(इन्द्र से) सम्बन्ध विच्छेद करके; ऑरु पॅरु पॉरुळ् इऩ्ऱि–एक भी श्रेष्ठ वस्तु न बचाकर; उवरि पुक्कु–समुद्र में घुसकर; ऑळिप्प–छिपने के लिए; वॅण्णॅय् वाळ्–तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर में रहनेवाले; कण्णऩ्–'कण्णऩ्' जिनका उपनाम है; मेवारिऩ्–उन (दाता) के शत्रुओं के समान; वॅरुवि ओटिऩ–डरकर भागे । ४८८

उस शाप के फलस्वरूप देवांगनाएँ; संतान, हरिचन्दन, मंदार, पारिजात, कलपक इत्यादि पाँच देवतरु-विशेष, शंख, पद्म, महापद्म, मकर कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, वर इत्यादि नवनिधियाँ, अमृत-सम दूध देनेवाली कामधेनु, तीव्रगामी उच्चैश्रवा नामक अश्व, पर्वताकार और मत्त गज, ऐरावत, इत्यादि सभी, विना एक अपवाद के इन्द्र का संबंध-विच्छेद करके भागे और समुद्र में ओझल हो गये । कवि अपने संकल्प के अनुसार अपने अभिभावक की कृतज्ञतापूर्ण स्मृति में इनके भागने की उपमा तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर के वासी, परमोदार, कण्णऩ् का उपनामवाले शडैयप्पन के शत्रुओं के भागने से देते हैं । वे शत्रु कहीं त्राण का स्थान न पाकर भागकर अदृश्य हो गये । ४८८

वॅय्य मामुऩि वॅहुळियाल् विण्णह मुदलाम्
वैयम् यावयुम् वऱुमैनॉय् नलियवा ऩोरुम्
शैय मीऱ्ऩ्दिडुङ् गुलिशऩुञ् जदुमुहत् तवऩुम्
शॅय्य तामरैत् तिरुमऱु माऱ्वऩैच् चेऱ्ऩ्दाऱ् 489

वॅय्य मा मुऩि वॅकुळियाल्–क्रोधी महामुनि के कोप (के प्रभाव) से; विण्णकम् मुतल् आम्–सुरलोक आदि; वैयम् यावैयुम्–सभी लोकों को; वऱुमै नोय्–अभाव के रोग के; नलिय–त्रस्त करते; वाऩोरुम्–देवगण और; चैयम् ईऱ्ऩ्तिटुम्–पर्वत (-पंख) काटनेवाले; कुलिचऩुम्–कुलिशधारी; चतुमुकत्तवऩुम्–चतुर्मख और; चॅय्य तामरै तिरु–लाल कमल की श्रीलक्ष्मी और; मऱु–श्रीवत्स से मिलित; माऱ्पऩै–वक्षवाले के; चेर्ऩ्तार्–पास गये । ४८९

क्रोधी स्वभाव के दुर्वासा महर्षि के कोप के प्रभाव से देवादि सभी लोकों में दरिद्रता छा गयी । क्योंकि इन्द्र त्रिलोकाधिपति थे, सब संकट ग्रस्त हो गये । तब देवता लोग, पर्वत-पंख-हर कुलिशपाणि इन्द्र और चतुर्मुख ब्रह्मा मिलकर, कमला और श्रीवत्स जिनके वक्ष को अलंकृत करते हैं, उन श्रीमन्नारायण के पास गये । ४८९

वॅञ्जोऩ् मामुऩि वॅहुळियाल् विळैन्दमै विळम्बिक्
कञ्ज नाण्मलर्क् किळ्वऩुङ् गडवुळर् पिऱरुम्
तञ्ज मिल्लैनिऩ् शरणमे शरणॅऩच् चलिया
दञ्ज लञ्जलॅऩ् ऱुरैत्तऩ ऩुलहॆला मळन्दोऩ् 490

कञ्चम् नाळ् मलर्–कंज के नवीन पुष्प के; किळ्वऩुम्–वासी ब्रह्मा और;

कटवुळर् पिऱरुम्–अन्य देवता; वॅम् चॉल् मा मुऩि–परुष वचनवाले महर्षि के; वॅकुळियाल्–क्रोध से; विळैन्तमै–हुई बातों को; विळम्पि–वर्णन करके; तञ्चम् इल्लै–कोई शरण्य नहीं है; निन् चरणमे–आपके चरण ही; चरण् ॲऩ–शरण्य कहने पर; उलकु ॲलाम् अळन्तोऩ्–सारे लोकों के मापक; चलियातु–बिना खीजे; अञ्चल् अञ्चल्–मत डरो, मत डरो; ॲऩ्ऱु–कहकर; उरैत्तऩऩ्–आगे बताया। ४८०

नवीन कमल-सुमन पर रहनेवाले ब्रह्मा जी और अन्य देवताओं ने भगवान विष्णु से आक्रोश-वचन दुर्वासा के शाप से घटित सारी बातों का विवरण दिया। उन्होंने विनय की कि अब हमारा कोई आश्रय नहीं। आपके ही दिव्य चरणों की शरण है। तब त्रिविक्रम के अवतार में जिन्होंने तीनों लोकों को नापा था वे भगवान विना अन्यमनस्कता दिखाये यानी मन लगाकर बोले, तुम लोग चिन्ता मत करो। उन्होंने तीनों लोकों की सृष्टि की थी। फिर बलि से लेकर इन्द्र को दिया था। अतः उन्होंने सभी निधियों को प्राप्त करने का उपाय बताया। ४९०

मत्तु मन्दरम् वासुहि कडैहयि ऱडैतूण्
मॅत्तु चन्दिरऩ् शुराशुरर् वेऱुवे ऱुळ्ळ
कॉत्ति रण्डुपाल् वलिप्पव रोडदि कॉडुत्तुक्
कत्तु वारिदि मऱुहुऱ वमिऴ्दॅऴक् कडैमिऩ् 491

मन्तरम् मत्तु–मन्दर (पर्वत) मथानी; वाचुकि कटै कयिऱु–वासुकि नेती; मॅत्तु चन्तिरऩ्–कलापूर्ण चन्द्र; अटै तूण्–स्थिर-थम्भ; वेऱु वेऱु उळ्ळ–अलग-अलग रहते; चर अचरर्–सुर और असुर; कॉत्तु–समूह; इरण्टु पाल्–दोनों तरफ़; वलिप्पवर्–खींचनेवाले; ओटति कॉटुत्तु–औषधि डालकर; कत्तु वारिति–गरजनेवाले (क्षीर) सागर को; मऱुकु उऱ–क्षुब्ध करते हुए; अमिऴ्तु ॲऴ–अमृत निकालते (तक); कटैमिऩ्–मथो। ४८१

देखो। मन्दर पर्वत को मथानी बनाओ, वासुकी नाग को नेती बनाओ; पूर्णचन्द्र को थिर-थंभ के रूप में खड़ा करो। सुर एक तरफ़ और असुर एक तरफ़ रहकर रस्सी खींचो और मथानी को घुमाओ। समुद्र में औषधियाँ डालकर ऐसा मथो कि क्षीरसागर एकदम गम्भीर रूप से विलोडित हो जाय और अमृत निकल आवे। ४९१

यामु मव्वयिऩ् वरुदुनीर् कदुमॅऩ वॅऴुन्दु
पोमि ऩॅऩ्ऱरुळ् पुरिदलु मिऱैञ्जिऩर् पुहऴ्न्दु
नाम मिऩ्ऱॅऩक् कुऩित्तऩर् नल्हुर वॉऴिन्द
दामॅ नुम्बॅरुङ् गळितुळक् कुरुत्तला लमरर् 492

अ वयिऩ्–उस तरफ़; यामुम् वरुतुम्–हम भी आयँगे; नीर्–तुम लोग; कतुमॅऩ–झट; ॲऴुन्तु पोमिऩ्–उठकर जाओ; ॲऩ्ऱु–ऐसा; अरुळ् पुरितलुम्–कृपा-वचन कहते ही; अमरर्–अमरों ने; इऱैञ्चिऩर्–प्रणमन किया; पुकऴ्न्तु–

पूजा करके; नामक्ष् इन्ऱु-डर नहीं; ॲन्न-यह सोचकर; नल्कुरवु-दरिद्रता; ऑळिन्ततु आम्-भाग गयी; ॲन्नुम्-ऐसा; पॅरु कळि-बड़े आनन्द के; तुळक्कु उऱुत्तलाल्-नचाने से; कुन्तित्तनर्-नाच उठे । ४६२

हम भी वहाँ आएँगे । तुम लोग सत्वर चलो । —यह वर-वचन सुनकर देवों ने भगवान का नमस्कार किया और स्तुति की । 'अब हमारी चिन्ता मिटी; भय भागा । दरिद्रता दूर हुई' —यह भाव उनके मन में उदित हुआ और उससे उत्पन्न आनन्द से प्रेरित होकर वे नाचे । ४९२

मलैपि डुङ्गिन्ऱर् वासुहि पिणित्तनर् मदियम्
निलैपॅ ऱुम्बडि नट्टन रोडदि निऱैत्तार्
अलैपॅ ऱुम्पडि पयोददि कडैन्दन रवन्ि
निलैत ळर्न्दिड वनन्दनुङ् गीळुऱ नॅळिन्दान् 493

मलै पिटुङ्कित्तर्-(मन्दर-) पर्वत उखाड़ा; वाचुकि पिणित्तनर्-वासुकि को (उसपर) लपेटा; मतियम्-चन्द्र को; निलै पॅऱुम्पटि-स्थिर खड़ाकर; नट्टत्तर्-गाड़ा; ओटति-अमृतवल्ली नाम की ओषधि; निऱैत्तार्-भरपूर डाली; पयोतति-पयोदधि को; अलै पॅऱुम्पटि-खूब आकुलित कर; कटैन्तनर्-मथा; अवन्ि निलै तळर्न्तिट-भूमण्डल की स्थिति डोलायमान हुई; अनन्तनुम्-(भूभारधारी) अनन्त नाग भी; कीळ् उऱ-भूमि के नीचे दबकर; नॅळिन्तान्-मरोड़ खाने लगा । ४६३

सुरों और असुरों ने मंदर-गिरि को उखाड़कर क्षीरसागर में मथानी के रूप में रखा । वासुकी नाग को नेती (रस्सी) के रूप में लपेटा; फिर चंद्र को स्थिर-थंभ के रूप में गाड़ा; (अमृतवल्ली नाम की) ओषधियाँ डालीं । फिर पयोदधि को खूब मथने लगे । तब मंदर पर्वत के घूमने से अवनि डोलने लगी और उसके नीचे अनन्तनाग बल खाकर छटपटाने लगा । ४९३

तिऱल्कॉ ळामैयाय् मुदुहिन्िन् मन्दरन् दिरिय
विऱल्कॉ ळायिरन् दडक्कहळ् परप्पि मीवलिप्प
मऱमु लामुन्ि वॅहुळियान् मऱैन्दन वरवे
अऱन्ि लार्मनत् तडैहला नॅडुन्दहै यमैन्दान् 494

अऱन् इलार् मनत्तु-धर्मविरुद्ध लोगों के मन में; अटैकला नॅटु तकै-जिनकी महिमा नहीं आ सकती (यानी मन जान नहीं सकता) ऐसे महिमामय भगवान; तिऱल् कॊळ् आमै आय्-सशक्त कूर्म बनकर; मन्तरम् मुतुकिन्िल् तिरिय-मन्दरपर्वत को अपनी पीठ पर घूमने देकर; विऱल् कॊळ्—बल-युक्त; आयिरम् तट कैकळ्-सहस्र विशाल हाथों को; मी परप्पि-ऊपर फैलाकर; वलिप्प-मथने के लिए रस्सी खींचते हुए; मऱम् उलाम् मुन्ि-क्रोधी स्वभाव के ऋषि के; वॅकुळियाल्-कोप के (शाप के) प्रभाव से; मऱैन्तन-अदृश्य हुए सबको; वर अमैन्तान्-लौटा लेने का संकल्प किया । ४६४

तब महिमामय विष्णुदेव, जिनका ध्यान धर्म-रहित मनवाले नहीं धर पाते, बलवान कूर्म बने। वे अपनी पीठ पर घूमते मंदर पर्वत को धारण करते हुए अपने सहस्र हाथों से मंदर को घुमानेवाली वासुकी-रस्सी को खींचने भी लगे। यह अद्भुत कार्य भक्त लोग या धर्ममार्ग पर चलनेवालों का मन ही समझ सकता है। उन्होंने समुद्र से उन सारी वस्तुओं को, जो मुनि-शाप से अदृश्य हो गयी थीं, निकाल देने का निश्चय किया। ४९४

इऱन्दु नीङ्गिऩ यावयु मम्बिरा ऩरुळाल्
पिऱन्द वव्वयिऱ् चुराशुरर् तङ्गळिऱ् पिणङ्गच्
चिऱन्द मोहिऩि मडन्दैया लवुणर्तम् जॅय्है
तुऱन्दु माण्डऩ रारमिर् दमरर्ह डुय्त्तार् 495

इऱन्तु नीङकित्त यावैयुम्–इन्द्र से छूटकर अलग हुए सब; ऍम्पिराऩ् अरुळाल्–मेरे आराध्य ईश्वर की कृपा से; पिऱन्त अ वयिऩ्–प्रगट हुए, उस समय; चुर अचुरर्–सुर और असुर; तङ्कळिल् पिणङ्क–आपस में लड़े, तब; चिऱन्त मोकिनि मटन्तैयाल्–उत्कृष्ट मोहनी स्त्री द्वारा; अवुणर्–दानव; तम् चॅय्कै तुऱन्तु–अपना काम छोड़कर; माण्टऩर्–मरे; आर् अमिर्तु–इच्छित अमृत को; अमरर्कळ् तुय्त्तार्–देवों ने खा लिया। ४६५

उन्हीं के संकल्प के प्रताप से, वे सारी वस्तुएँ, जो इन्द्र से संबंध छोड़कर अदृश्य हो गयी थीं, फिर से प्रकट हो गयीं। तब सुर और असुरों में अमृत-पान के प्रश्न को लेकर भारी झगड़ा हो गया। श्रीविष्णु ने मोहनी स्त्री का रूप धरा और उस पर मोहित होकर असुरों ने अपना कार्य भुला दिया। वे देवों द्वारा मारे गये और देवों ने अमृत का अशन कर लिया। ४९५

अन्द वॅलैयिऱ् ऱिदिपॅरुन् दुयरुऴन् दऴिवाऴ्
वन्दु काशिबऩ् मलरडि वणङ्गियॅऩ् मैन्दर्
इन्दि रादियर् पुणर्प्पिऩा लिऱन्दऩ रॅऩ्क्कोर्
मैन्द ऩीयरु ळवर्तमै मडित्तलुक् कॅऩ्ऱाऴ् 496

अन्त वेलैयिल्–उस समय; तिति–(दैत्यों की माता) दिति; पॅरु तुयर् उऴन्तु–बड़े दुख में कुढ़कर; अऴिवाऴ्–मुरझानेवाली बनकर; वन्तु–आकर; काचिपऩ्–काश्यप के; मलर् अटि–कमलचरणों पर; वणङ्कि–नमस्कार करके; ऍऩ मैन्तर्–मेरे पुत्र; इन्तिरऩ् आतियर्–इन्द्र आदि के; पुणर्प्पित्ताल्–षड्यन्त्र से; इऱन्तऩर्–हत हो गये; अवर् तमै–उनको; मटित्तलुक्कु–मारने के लिए; ऍऩक्कु–मुझे; ओर् मैन्तऩ्–एक पुत्र; नी अरुळ्–आप प्रदान करें; ऍऩ्ऱाऴ्–कहा। ४६६

उस समय दैत्यों की माता दिति को अपने पुत्रों की मृत्यु से अगाध

शोक हुआ। मनमारे वह काश्यप ऋषि के पास गयी। उनका नमस्कार करके उसने निवेदन किया कि देवों के षड्यन्त्र से मेरे सभी सुत मारे गये। अब देवों से बदला लेकर उनको मारना है। ऐसा कर सकनेवाला एक पुत्र मेरा पैदा हो। आप कृपा करें। ४९६

ॲऩ्ऱु कूऱलु महवुऩक् कळित्तऩ मिऩिनी
शॅऩ्ऱु पारिडैप् परुवमो रायिरन् दीर
निऩ्ऱु मादवम् पुरिदिये ऩिऩैवुमुऱ् ऱुदियॅऩ्
ऱऩ्ऱु कूऱिडप् पुरिन्दऩ ळरुन्दव मऩैयाळ् 497

ॲऩ्ऱु कूऱलुम्–यह कहते ही; अऩ्ऱु–तब; मकवु–पुत्र; उऩक्कु–तुम्हें; अळित्तऩम्–दिलाया; इऩि–अब; नी पार् इटै चॅऩ्ऱु–तुम भूमि में जाकर; परुवम् ओर् आयिरम् तीर–वर्ष, एक सहस्र, के बीतने तक; निऩ्ऱु–स्थिर रहकर; मा तवम्–दीर्घ तप; पुरितियेल्–करेगी तो; निऩैवु मुऱ्ऱुति–इच्छा पूर्ण होगी; ॲऩ्ऱु कूऱिट–यह कहने पर; अऩैयाळ्–उसने; अरु तवम्–कठिन तपस्या; पुरिन्तत्तळ्–(आरम्भ) की। ४९७

यह सुनकर मुनिवर ने कहा कि ठीक है। तुम्हें मैंने एक पुत्र दिया। अब तुम भूलोक पर जाओ और पूरे एक सहस्र वर्ष तपस्या करो। स्थिर-मति होकर कठोर तपस्या करो। तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। उनकी आज्ञा के अनुसार वह तपस्या करने लगी। ४९७

केट्ट वासव ऩऩ्ऩवट् कडिमयिऱ् किडैत्तु
वाट्ट मादवत् तुणऱ्न्दवळ् वयिऱ्ऱुऱु महवै
वीट्टि येयॅळु कूऱुशॅय् दिडुदलुम् विम्मि
नाट्ट नीर्दर मरुत्तॅनु नाममु नविऩ्ऱाऩ् 498

केट्ट वाचवऩ्–इसको सुनकर, इन्द्र; अऩ्ऩवट्कु–उसको; अटिमैयिऩ् किटैत्तु–दास के रूप में प्राप्त होकर; मा तवत्तु–कठोर तपस्या के बीच; वाट्टम्–मूर्छित रहने का समय; उणर्न्तु–जानकर; अवळ् वयिऱु उऱु–उसके गर्भ में रहे; मकवै–शिशु को; वीट्टि–खण्डित कर; ॲळु कूऱु–सात भाग; चॅय्तिटलुम्–करते ही; विम्मि–सिसककर; नाट्टम् नीर् तर–आँखों से आँसू बहाने पर; मरुत् ॲऩुम्–मरुत के; नाममुम्–नाम भी; नविऩ्ऱाऩ्–कहे। ४९८

वासव (इन्द्र) ने यह बात चरों द्वारा सुनी। वह दिति के पास आये और उसके आज्ञाकारी और विश्वस्त सेवक बने और मौके की ताक में रहे। एक बार दिति तपस्या की विधियों के प्रतिकूल, तपस्या की कठोरता के प्रभाव से, दिन में थककर सो गयी। मौके की ताक में रहे इन्द्र ने सूक्ष्म रूप से उसके गर्भ में प्रवेश करके शिशु के सात टुकड़े कर दिये। जब दिति की मूर्छा छूटी तब उसे बड़ा दुख हुआ। इन्द्र ने उस

पर दया करके उन अंशों को जिलाया और उनका सप्त मरुद्गण नाम रखा। ४९८

आय दिव्विड मव्विड मविर्मदि यणिन्द
तूय वऩ्ऱऩक् कुमैवयिऱ् ऱोऩ्ऱिय तॊल्लै
वायु वुम्बुऩऱ् कङ्गैयुम् पॊऱुक्कला वलत्त
शेय्व ळर्न्दरुळ् शरवण मॆऩ्बदुन् दॆरित्ताऩ् 499

आयतु इ इटम्–ऐसा है यह स्थान; अ इटम्–वह स्थान; अविर् मति अणिन्त–फैलानेवाली चाँदनी के चन्द्र को पहने हुए; तूयवऩ् तऩक्कु–पवित्र ईश्वर शिवजी के; उमै वयिऩ् तोऩ्ऱिय–उमा से उत्पन्न; तॊल्लै वायुवुम्–प्राचीन वायु और; पुऩल् कङ्कैयुम्—जल-रूपिणी गंगा से भी; पॊऱुक्क अला वलत्त–अधार्य बलशाली; चेय्–कार्तिककुमार; वळर्न्तरुळ्–जहाँ पले; चरवणम्–वह शरवण (सरकण्डों का वन) है; ॲऩ्पतुम्–यह वृत्तांत भी; तॆरित्ताऩ्–बतलाया। ४९९

"यही वह पवित्र स्थान है। वही" —कहकर महर्षि ने और एक वृत्तांत कहा। चन्द्रशेखर ने, देवों की प्रार्थना मानकर, देव-सेनापति बनने योग्य एक पुत्र को देवी हैमवती उमा द्वारा जन्म दिया। उस तेज को वायु और गंगा दोनों धारण नहीं कर सके। उसके पहले अग्नि भी असमर्थ रहा। अग्नि ने वायु के पास रखा; वायु ने गंगा में छोड़ा। गंगा अधीर हुई और उसने उस तेज को शरवण में (सरकंडों के वन में) छोड़ दिया। (फिर कृत्तिकाओं ने उस तेज से उत्पन्न कार्तिकेय [स्कंद] को पाला।) यही वह 'शरवण' है जहाँ स्कंद कृत्तिकाओं द्वारा पालित हुए। (हिमवान की, उमा और गंगा, दोनों पुत्रियों का वृत्तांत, स्कंदोत्पत्ति का विवरण इत्यादि बातें इधर संक्षेप में बतायी गयी हैं। वालमीकी में किंचित अधिक विस्तार पाया जाता है। शर और वन, दो शब्दों का जब समास बनता है तब 'वन, वण' हो जाता है। अतः शरवण कहा गया है)। ४९९

कालऩ् मेऩियिऱ् करुहिरुळ् कडिन्दुल हळिप्पाऩ्
नील वार्हलित् तेरॊडु निऱैकदिर्क् कडवुळ्
मालिऩ् मामणि युन्दियिऩ् वळऩॊडु वन्द
मूल तामरै मुऴुमुदऩ् मुळैत्तॆऩ मुळैत्ताऩ् 500

कालऩ् मेऩियिऩ्–कालदेव की देह के समान; करुकु इरुळ्–काले अँधेरे को; कटिन्तु–दूरकर; उलकु अळिप्पाऩ्–लोक रक्षा करनेवाले; निऱै कतिर् कटवुळ्–पुष्कल किरणों के देवता (सूर्य); मालिऩ् मा मणि उन्तियिऩ्–विष्णु की उत्तम और सुन्दर नाभी में; वळऩॊटु वन्त–बहुत चिकने रूप से प्रकट हुए; मूल तामरै–(सृष्टि के आदि) हेतु कमल पर; मुऴु मुतल्–सृष्टि के आदि कारण भूत; मुळैत्ततु ॲऩ–(ब्रह्मा) उत्पन्न हुए, ऐसे; नीलम् आर् कलि–नीले रंग के और गर्जनशील समुद्र-मध्य; तेरॊटु मुळैत्ताऩ्–अपने रथ के साथ उदित हुए। ५००

अब सूर्योदय का समय आ गया। सूर्य नीले समुद्र-मध्य से अपने रथ के साथ ऊपर उठ आया। कवि उसकी उपमा श्रीविष्णु के नाभी-कमल से ब्रह्मा जी के प्रकट होने के दृश्य से देते हैं। समुद्र विष्णु से, रथ कमल से, और सूर्य ब्रह्मा से उपमित है। सूर्य उदित होकर यम-सम काले रंग के अंधकार को भगाकर लोक-संरक्षण में लग गया। ५००

अङ्गु निऩ्ऱॆऴुन् दयऩ्मुदऩ् मूवरु मऩैयार्
शॆङ्ग णॆऱ्ऱवऩ् शॆऱिशडैप् पऴुवत्तु निऱैतेऩ्
पॊङ्गु कॊऩ्ऱैयीर्त् तॊऴुहलाऱ् पॊऩ्ऩियैप् पॊरुवुम्
गङ्गै यॆऩ्ऩुमक् करैपॊरु तिरुनदि कण्डार् 501

अयऩ् मुतल् मूवरुम् अऩैयार्–अज आदि आदिदेव, तीनों के समान रहे वे; अङ्कु निऩ्ऱु–वहाँ से; ऎऴुन्तु–उठ चलकर; चॆम् कण् एऱु अवऩ्–लाल आँखवाले ऋषभ वाहन; चॆऱि चटै पवऴत्तु–जटा-जूटरूपी कानन से; निऱै तेऩ् पॊङ्कु–अधिक शहद भरे; कॊऩ्ऱै ईर्त्तु–अमलतास फूलों को खींचते हुए; ऒऴुकलाल्–बहने से; पॊऩ्ऩियै पॊरुवुम्–पॊऩ्ऩि नामधारिणी कावेरी की समानता करनेवाली; कङ्कै ऎऩ्ऩुम्–गंगा संज्ञित; अ–उस; करै पॊरु–तीरों पर लहरें मारनेवाली; तिरु नति–श्रेष्ठ नदी को; कण्टार्–देखा। ५०१

दूसरे दिन सबेरे वे तीनों, जो ब्रह्मा, विष्णु और शंकर, त्रिदेव के समान थे, वहाँ से चलकर गंगा के तट पर आये। कौशिक की उपमा श्री ब्रह्मा जी से की गयी है दोनों ब्रह्मवित् हैं। श्रीराम तो विष्णु हैं ही। लक्ष्मण अपने क्रोधी स्वभाव में रुद्र की समानता करते हैं। गंगा नदी में शिव जी के जटा-जूट रूपी कानन से अमलतास के फूल बहते आते हैं। उस कारण वह पॊऩ्ऩि नाम की कावेरी नदी के समान, जो तमिऴनाडु में बहती है, है। (इधर ये बातें स्मरणीय हैं। कम्बन वैष्णव भक्त थे और तमिऴ देश पर उनका प्रेम अद्वितीय था। और दक्षिण के वैष्णवों में कावेरी को गंगा जी से अधिक श्रेष्ठ मानने का गुण है। कावेरी श्रीरंगम के वैष्णव-क्षेत्र के दोनों तरफ़ माला के समान दो भागों में विभक्त होकर बहती है। श्रीरंगम भूलोक में श्रीवैकुण्ठ तुल्य हैं। परमपद यानी श्रीवैकुण्ठ के मुक्तिलोक जाने से पहले मुक्त को विरजा नदी में स्नान करने की आवश्यकता पड़ती है। यह कावेरी विरजा नदी के स्थान में मानी जाती है। कावेरी का नाम इसलिए पॊऩ्ऩि पड़ा कि उसके जल में स्वर्ण-कण पाये जाते हैं। पॊऩ् का अर्थ स्वर्ण है। इसलिए भी वह पॊऩ्ऩि है कि उसका जल रंग में सुनहला है।)। ५०१

इऩ्द मानदिक् कुऱ्ऱुळ तहैमय यावुम्
ऎऩ्दै कूऱुहॆऩ् ऱिराहवऩ् विऩवुऱ वऩैयाऩ्

मैन्द निऩ्ऱिरु मरबुळा ऩयोत्तिमा नहर्वाऴ्
विऩ्दै शॅर्पुयऩ् सगरऩिम् मेदिऩि पुरन्दाऩ् 502

ऍन्तै–तात (पितृ-तुल्य); इन्त मा नतिक्कु–इस महानदी की; उऱ्ऱु उळ–प्राप्त रही; तकैमैय यावुम्–विशेषताएँ सब; कूऱुक–बताइये; ऍऩ्ऱु–ऐसा; इराकवऩ् वितवु उऱ–श्रीराघव के पूछते समय; अऩैयाऩ्–उन्होंने; मैन्त–वीरकुमार; निऩ् तिरु मरपु उळाऩ्–आपके वंश में उदित; अयोत्ति मा नकर् वाऴ्–अयोध्या महानगर के वासी; विन्तै चेर् पुयऩ्–वीर्यलक्ष्मी-युक्त भुजोंवाले; चकरऩ्–सगर (ने); इ मेतिऩि–यह भूमि; पुरन्ताऩ्–पाली। ५०२

तब श्रीराघव ने मुनिवर से प्रार्थना की कि इस गंगा की सारी महिमा बताइये। महर्षि ने सगर-वृत्तांत से आरम्भ किया। उन्होंने राम से कहा कि हे वीर-कुमार! आपके कुल में पहले सगर नाम के राजा हुए जो अयोध्या में रहकर राज करते थे। उनकी भुजाएँ वीर्य-लक्ष्मी की आश्रय थीं। वे अतुलित वीर थे। ५०२

विऱल्कॊळ् वेन्दऩुक् कुरियव रिरुवरिल् विदर्प्पै
पॊऱैयि ऩल्हिय वशमञ्जऱ् कञ्जुमाऩ पुदल्वऩ्
पऱवै वेन्दऩुक् किळैयमॆऩ् शुमदिमुऩ् पयन्द
अऱनिऩ् मैन्दर्ह ळऱुपदि ऩायिरर् वलत्तार् 503

विऱल् कॊळ् वेन्तऩुक्कु–विजयेश राजा की; उरियवर् इरुवरिल्–अपनी दो पत्नियों में; वितर्प्पै–विदर्भनरेश-कुमारी से; पॊऱैयिऩ् नल्किय–गर्भ-धारणकर जनित; अचमञ्चऱ्कु–असमञ्जस का; अञ्चुमाऩ्–अंशुमान; पुतल्वऩ्–पुत्र था; पऱवै वेन्तऩुक्कु–खगराज गरुड़ की; इळैय–छोटी बहन; मॆऩ् सुमति–कोमल सुमति के; मुऩ् पयन्त–पहले जनाये; अऱऩ् निल् मैन्तर्कळ्–धर्म-रत पुत्र; अऱुपतिऩायिरर्–साठ सहस्र; वलत्तार्–अतिबली थे। ५०३

विजय-निलय राजा सगर के दो रानियाँ थीं। पहली वैदर्भ-दुहिता (केशिनी) थीं। उनके गर्भ से असमञ्जस नाम का पुत्र हुआ। उसका पुत्र अंशुमान था। खगपति गरुड़ की अनुजा सुमति दूसरी पत्नी थी और उसके गर्भ से साठ हज़ार धर्मपरायण और बलशाली पुत्र पैदा हुए। ५०३

(बालमीकी में ये बातें हैं। सुमति काश्यप और विनता की पुत्री थी। हिमालय-तट में राजा सगर ने अपनी दोनों पत्नियों के साथ पुत्र-कामना से भृगुदेव की आराधना की। उनकी तपस्या से संतुष्ट होकर भृगु ने एक के द्वारा एक पुत्र और दूसरी के द्वारा साठ सहस्र पुत्रों की उत्पत्ति का वर देकर उसको चुनने में उनको स्वतंत्रता दे दी। केशिनी ने एक पुत्र से तृप्त रहने की बात मानी क्योंकि उसके द्वारा वंशवृद्धि की संभावना थी। सुमति ने बलवान पुत्र चाहे। केशिनी के गर्भ से असमंजस पैदा हुआ। लेकिन वह बड़ा क्रूर निकला। वह निरीह

बच्चों को पकड़कर जल में डुबो देता और उनका मरण के समय छटपटाना देखने में रस लेता था। राजा ने उसको निर्वासित कर दिया। सुमति के गर्भ से एक पिंड बाहर आया जो साठ सहस्र अंशों में फटा और हर अंश से एक पुत्र पैदा हुआ। कहा जाता है कि असमंजस ने जंगल में जाकर कठिन तपस्या की जिससे प्राप्त योग-बल से सभी मरे हुए बच्चे जीवित हो उठे।)

तिण्डि ऱऱ्पुत्तै शगरत्तुऩ् दऩयर्शे वहङ्गळ्
कण्डु मुऱ्ऱिय वयमहम् बुरिदलुङ् गऩऩ्ऱु
वण्डु तुऱ्ऱुतार् वाशवर् कुणर्त्तिऩर् वाऩोर्
ऑण्डि ऱऱ्परि कपिलऩ् दिडैयिऩि लॊळित्ताऩ् 504

तिण् तिऱल् पुत्तै–अधिक बल से युक्त; चकरत्तुम्–सगर भी; तऩयर् चेवकङ्कळ् कण्टु–पुत्रों के साहस-कृत्य देखकर; मुऱ्ऱिय अयम् मकम् पुरितलुम्—विधि-सम्मत हय-यज्ञ करते समय; वाऩोर्–देवगण; कऩऩ्ऱु–कुपित होकर; वण्टु तूऱ्ऱु तार्–भ्रमर-गुंजरित मालाधारी; वाचवऱ्कु उरैत्तऩर्–वासव को बोले; ऑण् तिऱल्–आकर्षक और बलवान; परि–यज्ञाश्व को; कपिलऩतु इटैयिल्–कपिल के स्थान में; ऑळित्ताऩ्–छिपा दिया। ५०४

सगर स्वयं अत्यन्त बलवान थे; उन्होंने देखा कि उनके पुत्र भी साहसपूर्ण थे। इसलिए उन्होंने अश्वमेधयज्ञ करने की बात सोची और उसका आरम्भ किया। देव लोग इसे देखकर कुपित हुए और भ्रमर-गुंजित माला से अलंकृत देवेन्द्र को समाचार दिया। इन्द्र ने अपनी माया से उस सुन्दर, तीव्रगामी, और शक्तिशाली अश्व को हर कर पाताल में कपिल (मुनि) के पीछे, जो तपोलीन थे, छिपा दिया। ५०४

वावु वाशिपिऩ् शॅऩ्ऱऩ ऩञ्जुमाऩ् मऱुहिप्
पूवि लोरिड मिऩ्ऱिये नाडिऩऩ् पहुन्दु
देवर् कोमहऩ् करन्दमै यऱिन्दिलऩ् ऱिहैत्तु
मॅवु तादैतऩ् ऱादैपा लुरैत्तऩऩ् मीण्डु 505

वावु–लपकते चलनेवाले; वाचि पिऩ्–वाजी (अश्व) के पीछे; चॅऩ्ऱऩऩ्–जो गया वह; अञ्चुमाऩ्–अंशुमान; मऱुकि–व्यथित होकर; तेवर कोऩ्–देवेन्द्र का; करन्तमै–छिपाना; अऱिन्तिलऩ्–न जान पाया; पूविल्–भूतल में; ओर् इटम् इऩ्ऱि–कहीं (एक स्थान) न छोड़कर; पुकुन्तु नाटिऩऩ्–जाकर खोजा; तिकैत्तु–किंकर्तव्यविमूढ़ होकर; मीण्टु–लौट आकर; मेवु तातै तऩ् तातै पाल्–यागदीक्षित अपने पिता के पिता के पास; उरैत्तऩऩ्–बताया। ५०५

यज्ञाश्व के पीछे अंशुमान जा रहा था। अकस्मात् उसे मालूम हुआ कि अश्व अदृश्य है। वह भौचक्का रह गया। उसे इन्द्र की माया मालूम नहीं थी। वह सब स्थानों में खोजने लगा। अश्व दिखायी नहीं दिया।

किंकर्तव्यविमूढ़ होकर वह अपने पितामह के पास लौट आया और समाचार कहा। ५०५

केट्ट वेऩ्दऩु मदलैयर्क् कम्मॉऴि किळत्ति
वाट्ट मीक्कॉळच् चकरर्कळ् वडवैयिऩ् मऱुहि
नाट्टम् वॅङ्गऩल् पॉऴिदर नाऩिलन् दडवित्
तोट्टु नुङ्गिऩर् पुवियिऩैप् पादलन् दोऩ्ऱ 506

केट्ट वेन्तऩुम्–जिन्होंने सुना वे राजा भी; अ मॉऴि–वह समाचार; मतलैयर्क्कु–अपने पुत्रों को; किळत्ति–देकर; वाट्टम् मी कॉळ–अधिक दुखी हुए, तब; चकरर्कळ्–सगर-पुत्र; वटवैयिऩ् मऱुकि–बड़वाग्नि के समान जलकर; नाट्टम्–आँखों से; वॅम् कऩल्–कोपाग्नि को; पॉऴि तर–बरसाते हुए; नाल् निलम् तटवि–चतुर्विधा भूमि टटोलकर; पुवियिऩै–भूमि को; पातलम् तोऩ्ऱ–पाताल तक; तोट्टु नुङ्किऩर्–खोदकर गहरा बनाया। ५०६

राजा सगर ने यह सुना तो वे क्लांत हुए। उन्होंने अपने पुत्रों से यह बात कही तो वे बड़वाग्नि के समान क्रोध से जलने लगे। फिर वे आँखों से क्रोधाग्नि प्रकट करते हुए निकल पड़े। सारा भूमंडल बीन डाला। फिर भूमि को खोदकर पाताल का मार्ग बना दिया। (भूमि को नाऩिलम् यानी चतुर्विधा भूमि कहते हैं। कारण; भूमि के पर्वत प्रदेश, जंगल प्रदेश, खेतों व बागों का प्रदेश और समुद्र-तटीय प्रदेश इत्यादि चार प्राकृत भेद हैं। पालै यानी रेतीले जंगल को अलग नहीं गिना जाता क्योंकि यह माना जाता है कि कोई भी भूप्रदेश वर्षा के न होते समय जंगल बन जाता है और वह बीहड़ भूमि पालै या मरुप्रदेश कही जाती है।)। ५०६

नूऱि योशऩै यहलमु माऴमु नुडङ्गक्
कूऱु शॅय्दऩ ऱॅऩ्बराल् वडगुण दिशैयिऩ्
एऱु मादवक् कबिलऩ्बि ऩिवुळिकण् डॅरियिऩ्
शीऱि वैदऩर् शॅरुक्किऩर् नॅरुक्किऩर् शॅऱुत्तार् 507

वट कुण तिचैयिऩ्–उत्तर-पूर्व दिशा में; नूऱु योचऩै अकलमुम् आऴमुम् नुटङ्क–शत योजन चौड़ा और उतना गहरा गड्ढा बने, ऐसा; कूऱु चॅय्तऩर्–खोद दिया; अॅऩ्पर्–(लोग) कहते हैं; एऱु–उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; मातवम्–महान तप में लगे; कपिलऩ् पिऩ्–कपिलदेव के पीछे; इवुळि कण्टु–अश्व को देखकर; अॅरियिऩ् चीऱि–आग के समान जलकर; चॅरुक्किऩर्–गर्वीले; वैतऩर्–डाँटते; नॅरुक्किऩर्–घेरकर; चॅऱुत्तार्–संकट देने लगे। ५०७

कहा गया है (बालमीकी द्वारा) कि वे उत्तर-पूर्व दिशा में गये। वहाँ उन्होंने चौड़ाई में शतयोजन और गहराई में शतयोजन भूमि को खोदा। वहाँ पाताल में उन्होंने तपोमग्न कपिल को और उनके पीछे

यज्ञाश्व को देखा। उन्होंने कपिल देव को चोर समझा और वे आग के समान विफर कर उन्हें डाँटने और घेरकर सताने लगे। ५०७

मूऴुम् वॆञ्जिऩत् तरुऩ्दवऩ् मुऩिऩ्ऎरि विऴिप्पप्
पूऴै शूडिद नहैयिऩि लॆयिल्पॊडिऩ् दनपोल्
आळु मैन्दरा ऱयुदरुञ् जाम्बरा यविन्दार्
वॆळ्वि कॊण्डनल् वेन्दऩुक् कुरैत्तऩर् वेय्हळ् 508

मूऴुम् वॆम् चिऩत्तु–उमड़ते हुए कठोर कोपवाले; अरु तवऩ्–उत्तम तपस्वी (के); मुऩिन्तु–क्रोध करके; ऎरि विऴिप्प–अग्नि उगलते हुए तरेरते समय; पूऴै चूटि–पूऴै नामक फूलों के धारक; तऩ् नकैयिऩिल्–(शिव) के हास से; ऎयिल् पॊटिन्तत पोल्–त्रिपुर जल गये, ऐसा; आळुम् मैन्तर्–राजकुमार; आऱु अयुतरुम्–छः दस सहस्र सब; चाम्पर् आय्–भस्म बनकर; अविन्तार्–मिट गये; वेय्कळ्–गुप्तचरों ने; वेळ्वि कॊण्ट–याग दीक्षित; नल् वेन्तऩुक्कु–अच्छे सगरराज से; उरैत्तऩर्–यह बात कही। ५०८

तपस्वी महर्षि के मन में क्रोध उठा और बढ़ने लगा। उन्होंने आग्नेय आँखों से उनको तरेरा। बस, उनकी दृष्टि पड़ते ही वे वैसे ही भस्म होकर ढेर बन गये जैसे त्रिपुर फूलधर शिवजी के हाथ से जलकर भस्म हो गये थे। गुप्तचरों ने जाकर यह समाचार जान लिया और राजा को विदित किया। ५०८

उऴैत्तु वॆन्दुयर्क कीऱुकाण् किलऩुणर् वऴिया
अऴैत्तु मैन्दऩ्ऱऩ् मैन्दऩै यवर्कऴिऩ् दऩरेल्
इऴैत्त वॆळ्वियिऩ् रिऴप्पदो वॆऩवव नॆऴुन्दु
तऴैत्त मादवक् कबिलऩ्वाऴ् पादलञ् जार्न्दाऩ् 509

उऴैत्तु–दुखी होकर; वॆम् तुयर्क्कु–कठोर दुख का; ईऱु काण्किलऩ्–अन्त न पाकर; उणर्वु अऴिया–सुध-बुध खोकर; मैन्तऩ् तऩ् मैन्तऩै–पुत्र के पुत्र को; अऴैत्तु–बुलाकर; अवर् कऴिन्तऩरेल्–वे मर गये, इस कारण; इऴैत्त वेळ्वि–आरंभित यज्ञ को; इऩ्ऱु इऴप्पतो–अब छोड़ना है क्या; ऎऩ्ऩ–यह कहने पर; अवऩ् ऎऴुन्तु–वह उठकर; तऴैत्त मा तवम्–उत्कृष्ट महान तपोधन; कपिलऩ् वाऴ्–कपिल के रहने के स्थान; पातलम् चार्न्ताऩ्–पाताल पहुँचा। ५०९

राजा यह सुनकर असीम दुख में पड़ गये। सुध-बुध जाती रही। फिर उन्होंने अंशुमान को बुलाया और कहा कि पुत्र-मरण के कारण, आरंभित यज्ञ को रोकना उचित नहीं होगा। तब अंशुमान पाताल में कपिल के पास पहुँचा। ५०९

विण्डु नीङ्गिऩ रुडलुहु पिऱङ्गल्वॆण् णीऱ्ऱैक्
कण्डु तुण्णॆऩु मऩत्तिऩऩ् कपिलमा मुऩितऩ्

पुण्ड रीहनऱ् ऱाडोऴु दॆऴुन्दनन् पुहऴ्क्
कॊण्डु पोहनिऩ् निवुळियॆऩ् ऱुऱ्ऱदुङ् गुऱित्ताऩ् 510

विण्टु नीङ्कितऩर्–मर कर गये हुए; उटल् उकु–शरीरों के गिरे; पिऱङ्कल–पर्वत-सम; वॆण् नीऱ्ऱै–श्वेत भस्म (राशि) को; कण्टु–देखकर; तुण् ऍऩुम् मतत्तिऩन्–चौंकते मन का होकर; कपिल मा मुऩि तऩ्–कपिल महामुनि के; पुण्टरीकम् नल् ताळ्–कमल-सम श्रेष्ठ चरणों पर; तॊऴुतु–नमस्कार कर; ऍऴुन्ततऩन्–उठा; पुकऴ्–स्तुति की; निऩ् इवुळि–अपना अश्व; कॊण्टु पोक–ले जाओ; ऍऩ्ऱु–कहकर; उऱ्ऱतुम्–घटित हुआ सब; कुऱित्ताऩ्–बताया। ५१०

अंशुमान ने अपने पिता के सौतेले भाइयों के शरीरों के बने भस्म-ढेर को देखा जो श्वेतपर्वत के समान था, वह दलक गया। फिर उसने कपिल के पैरों पर पड़कर स्तुति की। कपिल ने करुणा के साथ उससे कहा कि तुम अपना अश्व ले जाओ। उन्होंने उसे घटित समाचार भी कह सुनाया। ५१०

पऴुदि लादव ऩुरैत्तशॊऱ् केट्टलुम् परिवाल्
तॊऴुदु वाम्बरि कॊणर्न्दवि शुरर्हळुक् कीया
मुऴुदुम् वॆळ्वियै मुऱ्ऱुवित् तरशऩु मुडिन्दान्
ऍऴुदु कीर्त्तियाय् मैन्दऩुक् करशिय लीन्दु 511

ऍऴुतु कीर्त्तियाय्–(कवि द्वारा) उल्लेखनीय कीर्तिवाले हे राम; पऴुतु इलातवऩ्–दोषहीन (के); उरैत्त–कहे; चॊल् केट्टलुम्–वचन सुनते ही; परिवाल् तॊऴुतु–आदर के साथ प्रणमन करके; वाम् परि कॊण्र्न्तु–लपक चलनेवाले अश्व को लाकर; अरचऩुम्–राजा (सगर) भी; अवि–हवि; चुरर्कळुक्कु ईया–सुरों को देकर; वॆळ्वियै मुऴुतुम् मुऱ्ऱुवित्तु–यज्ञ को निःशेष पूर्ण करके; मैन्तऩुक्कु–पुत्र को; अरचियल् ईन्तु–शासनभार देकर; मुटिन्ताऩ्–(अपनी इह-यात्रा) समाप्त की। ५११

कवियों द्वारा लिखने योग्य यशस्वी, हे राम ! जिनका कोई कामादि दोष नहीं था (अतः इस काम में भी अपराध नहीं था) उन कपिलदेव का वचन सुनकर अंशुमान ने आदर के साथ उनकी वन्दना की। वह तीव्रगामी अश्व को यज्ञशाला में लाया। सगर ने देवों को हविर्भाग देकर यज्ञ को यथाविधि पूर्ण किया। फिर अंशुमान के पास राज्य का भार देकर उन्होंने अपनी इह-लीला सँवार ली। वे परमपद को प्राप्त हो गये। ५११

सगरर् तॊट्टलाऱ् चाहर मनप्पॆयर् तऴैप्प
महर वारिदि शिऱन्ददु महिदल मुऴुदुम्
निहरिऩ् मैन्दऩे पुरन्दऩ ऩवनॆडु मरबिल्
पहिर दऩ्ऩॆऩुम् बार्त्तिबन् परुदियॊत् तुदित्ताऩ् 512

चकरर् तॉट्टलाल्–सगर (-पुत्रों) द्वारा खुदे होने से; चाकरम् ॲन्न पॅयर् तऴैप्प–सागर नाम के प्रथित होते; मकरम् वारिति—मकर-निलय वारिधि; चिऱन्ततु–उत्कृष्ट हुई; मकितलम् मुऴुतुम्–महीतल सब को; निकर् इल् मैन्तत्ते–उपमाहीन कुमार (अंशुमान) ने ही; पुरन्तनऩ्–पालित किया; अवऩ् नॅटु मरपिल्–उसके बड़े वंश में; पकिरतऩ्–भगीरथ; ॲनुम्–संज्ञित; पार्त्तिपऩ्–पृथ्वीपति; परुति ऑत्तु–सूर्य के समान; उतित्ताऩ्–पैदा हुए। ५१२

सगर-पुत्रों द्वारा खोदे जाने के कारण मकर-संकुल-वारिधि सागर कहलायी और प्रशंसित हो गयी। अंशुमान ने राज्य-संचालन किया। उसके प्रशंसित वंश में भगीरथ नाम के राजा सूर्य के समान तेजस्वी और यशस्वी पैदा हुए। (अंशुमान, दिलीप, भगीरथ यह क्रम है)। ५१२

उलहम् यावैयुम् पॉदुवऱत् तिहिरियै युरुट्टि
इलहु मऩ्ऩव ऩिरुन्दुऴि यिऱन्दवर् शरिदम्
अलहि रॉऩ्मुऩि याङ्गवर् कुरैत्तिड वरशऩ्
तिलह मण्णुऱ वणङ्गिनिऩ् ऱॊरुमॊऴि शॆप्पुम् 513

इलकुम् अऩ्ऩवऩ्–यश के साथ रहनेवाले वे; उलकम् यावैयुम्–सभी लोकों को; पॊतु अऱ–अविभक्त अधिकार का; तिकिरियै उरुट्टि–आज्ञाचक्र चलाते हुए; इरुन्तुऴि–जब रहे तब; आङ्कु अवर्कु–वैसे उनको; इऱन्तवर् चरितम्–मृत पितरों का वृत्तान्त; अलकु इल् तॊल् मुऩि–अत्यन्त प्राचीन (वयोवृद्ध) मुनिवर, वसिष्ठजी के; उरैत्तिट–कहते समय; अरचऩ्–राजा; तिलकम् मण् उऱ–भाल को भूमि पर टेकते; वणङ्कि–दण्डवत् करके; निऩ्ऱु–खड़े होकर; ऑरु मॊऴि चॆप्पुम्–एक बात कही। ५१३

यशस्वी भगीरथ एक-छत्र राज करते थे। एक दिन अत्यन्त वयोवृद्ध महर्षि वसिष्ठ ने उनसे सगर-पुत्रों की मृत्यु का वृत्तान्त कहा। वह सुनकर राजा भगीरथ ने वसिष्ठ जी के सामने ललाट को भूमि पर लगाकर दण्डवत् किया और यों कहा। ५१३

कॊडिय मामुऩि वॆहुळियिऩ् मडिन्दवॆङ् गुरवर्
मुडिय नीणिर यत्तिऩि लऴुन्दुऱु मुऱैमै
कडियु मारॆऩक् करुन्दव समैहुऱु करुमम्
अडिहळ् शाऱ्ऱुह वॆऩ्ऱलु मन्दण नऱैवाऩ् 514

मा मुऩि–महर्षि (कपिल) के; कॊटिय वॆकुळियिऩ्–भयंकर क्रोध से; मटिन्त–मरे हुए; ॲम् कुरवर्–मेरे पूर्व-पुरुष; नीळ् निरयत्तिल्–बड़े नरक में; मुटिय अऴुन्तुरुम् मुऱैमै–सदा मग्न रहने के व्यवहार को; कटियुम् आऱु–काटने के उपाय में; अरु तवम्–कठिन तपस्या; अमैकुऱु करुमम्–साध्य बनानेवाले कार्य को; ॲऩक्कु–मुझे; अटिकळ्–महात्मन् आप; चाऱ्ऱुक–बता दें; ॲऩ्ऱलुम्–प्रार्थना करते ही; अन्तणऩ् अऱैवाऩ्–महर्षि ने कहा। ५१४

आपके वचन से विदित होता है कि कपिल महर्षि के कठोर शाप के कारण मेरे पूर्वजों को नित्य-निरय-वास मिल गया है। उसको बदल देना चाहता हूँ। उनको उद्गति दिलानी है। उसके निमित्त तपस्या करनी है। उसके लिए क्या करना चाहिए। कृपा करके आप बताइये। तब महर्षि ने कहा। ५१४

वैय माळुडै मऩ्ऩवर् मऩ्ऩव मडिऩ्दोर्
उय्य नीडव मॊऴिवऱु पहलॆला मॊरुङ्गे
शॆय्य नाण्मलर्क् किऴवऩै नोक्किनी शॆय्दि
नैय लॆऩ्ऱिऩि दुरैत्तऩ ऩवैयऱु मुऩिवऩ् 515

वैयम् आळुटै–लोकपालक; मऩ्ऩवर् मऩ्ऩव–राजाधिराज; मटिन्तोर् उय्य–मृतों का उद्धार करने; ऑऴिवु अऱु–निरन्तर; पकल् ऍलाम्–अनेक काल तक; ऑरुङ्के–एक साथ; चॆय्य नाळ् मलर्–लाल, नवीन कमल के; किऴवऩै–स्वामी (ब्रह्मा) को; नोक्कि–उद्दिश्य करके; नीळ् तवम् नी चॆय्ति–दीर्घ तपस्या आप कीजिये; नैयल्–क्लांत मत हो; ऍऩ्ऱु–ऐसा; नवै अऱु मुऩिवऩ्–निर्मल मुनि ने; इऩितु उरैत्तऩऩ्–मधुर वचन कहा। ५१५

हे पृथ्वीपति राजाधिराज! भगीरथ! शाप-हत सगर-पुत्रों को उद्गति में पहुँचाने के लिए दीर्घकाल तक निरन्तर कठोर तप करना है। ब्रह्मा को उद्दिश्य करके वह तपस्या कीजिये। चिन्ता में घुलने की आवश्यकता नहीं है। —यह निर्मल मुनिवर ने उपाय बताया। ५१५

ञालम् यावैयुञ् जुमन्दिरऩ् ऱऩ्वयि ऩल्हिक्
कोलु मादवत् तिमगिरि मरुङ्गिऩिऱ् कुरुहिक्
काल मोर्पदि ऩायिर मरुन्दवङ् गऴिप्प
मूल तामरै मुऴुमुदऱ् किऴवऩ् मुऩ्दिऩऩे 516

ञालम् यावैयुम्–भू (शासन) सब को; चुमन्तिरऩ् तऩ् वयिऩ्–सुमन्त्र के पास; नल्कि–सिपुर्द कर; कोलुम्–श्रेष्ठ; मातवत्तु–तपस्या के योग्य; इमकिरि मरुङ्किऩिल्–हिमगिरि के पार्श्व में; कुरुकि–जाकर; ओर् पतिऩायिरम् कालम्–दस सहस्र वर्ष तक; अरु तवम् कऴिप्प–कठोर तपस्या करने पर; मूलम् तामरै–सृष्टि के मूल, (विष्णु के नाभी-) कमल पर उदित; मुऴु मुतल् किऴवऩ्–सृष्टि के आदि पुरुष; मुऩ्तिऩऩ्–प्रकट हुए। ५१६

राजा भगीरथ यह सुनकर तत्पर हो गये। उन्होंने सुमंत के पास राज्य सौंपा। वे तपोनुकूल हिमालय की तलहटी में पहुँचे। दस सहस्र वर्ष तक उन्होंने कठोर तप किया। तब सृष्टि के आदिकर्ता, ब्रह्माजी ने, जो विष्णु के सुन्दर नाभी-कमल पर पहले प्रकट हुए थे, भगीरथ को दर्शन दिये। ५१६

निऩ्पॅ रुन्दव महिऴ्न्दऩ निऩदुनीळ् कुरवर्
मुऩ्बि ऱन्दऩ ररुन्दवऩ् मुऩिविऩा दलिऩाल्
मऩ्बॅ रुम्बुवि यदऩिल्वा ऩदिकडि दणुहि
ऍऩ्बु तॉयुमे लिरुङ्गदि पॅऱुवरॅऩ् ऱिशैत्ताऩ् 517

निऩ् पॅरु तवम्–तुम्हारी बड़ी तपस्या से; मकिऴ्न्तऩऩ्–हम बड़े सन्तुष्ट हुए। निऩतु नीळ् कुरवर्–तुम्हारे अनेक पूर्वपुरुष; मुऩ्पु–पहले; अरु तवऩ् मुऩिविऩ्–श्रेष्ठ तपस्वी के कोप से; इऱन्तऩर्–मरे; आतलिऩाल्–इसलिए; वाऩ् नति–आकाश की गंगा; मऩ् पॅरु पुवि अतऩिल्–बहुत विशाल इस भूतल पर; कटितु अणुकि–बहती हुई आकर; ऍऩ्पु तोयुमेल्–अस्थि पर जमेगी तो; इरु कति पॅऱुवर्–उद्‌गति को प्राप्त होंगे; ऍऩ्ऱु इचैत्ताऩ्–यह कहा। ५१७

उन्होंने भगीरथ को आश्वासन देते हुए कहा कि तुम्हारी कठोर और दीर्घ तपस्या से हम संतुष्ट हुए। तुम्हारे अधिक संख्या के पूर्वपुरुष कपिलदेव के कोप के शाप से मरे हैं। इसलिए सलिल-क्रिया सुरलोक की गंगा नदी के जल से ही करनी चाहिये। वह जल हड्डियों पर बहेगा तभी वे श्रेष्ठ गति को प्राप्त होंगे। ५१७

माह मानदि पुवियिडै नडक्किऩ्मऱ ऱवडऩ्
वेह माऱ्ऱुदल् विडैयवऱ् कऩ्ऱिवे ऱरिदाल्
तोहै पाहऩै नोक्किनी यरुन्दवन् दॉडङ्गॅऩ्
ऱेहि ऩाऩुल हऩैत्तुमॅव् वुयिर्हळु सीऩ्ऱाऩ् 518

उलकु अऩैत्तुम्–सारे लोकों को; ऍव् उयिर्कळुम्–सारे प्राणधारी जीवों को; ईऩ्ऱाऩ्–सृष्ट करनेवाले; माकम् मा नति–आकाश की महानदी; पुवि इटै नटक्किऩ्–भूमि पर आयेगी तो; अवळ् तऩ्–उसका; वेकम्–वेग को; आऱ्ऱुतल्–धारण करना; विटैयवऱ्कु अऩ्ऱि–ऋषभवाहन शिव के सिवा; वेऱु अरितु आल्–अन्यों के लिए दुस्तर है इसलिए; नी–तुम; तोकैपाकऩै नोक्कि–कलापी सी छटावाली पार्वती जिनका एक भाग है उनको उद्दिश्य करके; अरु तवम् तॊटङ्कु–कठिन तपस्या आरम्भ करो; ऍऩ्ऱु–यह कहकर; एकिऩाऩ्–चले गये (अदृश्य हो गये)। ५१८

सर्वलोक-पितामह, ब्रह्मा ने आगे कहा— महिमामयी आकाश-गंगा भूमि पर उतर आयेगी तो उसका वेग धारण करना सबके लिए असम्भव है। केवल ऋषभ-वाहन शिवजी उसको रोके रख सकते हैं। इसलिए कलापी-सी छटावाली सुन्दरी पार्वतीदेवी को अपने शरीर का आधा भाग देकर जो रखते हैं, उनका ध्यान करते हुए कठिन तपस्या करो। यह उपदेश देकर ब्रह्माजी तिरोभूत हो गये। ५१८

मङ्गै पाहऩै नोक्किमुऩ् मॉऴिन्दऩ वरुडम्
तङ्गु मादवम् बुरिदलुऩ् दऴऩिऱक् कडवुळ्

अङ्गु वऩ्दुनिऩ् करुत्तिऩै मुडित्तुमॆऩ् ऱहऩ्ऱाऩ्
गङ्गै यॆत्तॊऴुक् कालमै यायिरङ् गऴित्ताऩ् 519

मङ्कै पाकऩै नोक्कि–देवी (पार्वती) जिनका एक भाग है उनको चिन्त्य बनाकर; मुऩ् मॊऴिन्तऩ वरुटम्–पूर्वोक्त (दस सहस्र) वर्ष; तङ्कुम्–अचंचल; मातवम्–घोर तपस्या करने पर; तऴल् निऱम् कटवुळ्–अग्निवर्ण ईश्वर शिव; अङ्कु वन्तु–उधर आकर; निऩ् करुत्तिऩै मुटित्तुम्–तुम्हारी इच्छा पूरी करेंगे; ऎऩ्ऱु–कहकर; अकऩ्ऱाऩ्–तिरोभूत हुए; कङ्कैयै तॊऴ–गंगा के दर्शनार्थ; कालम् ऐयायिरम्–काल पांच सहस्र वर्प; कऴित्ताऩ्–(तपस्या में) व्यतीत किये। ५१६

अर्धनारीदेव का ध्यान कर, भगीरथ ने, फिर से दस सहस्र वर्ष तपस्या की। अग्नि-प्रभ ईश्वर ने भगीरथ को दर्शन दिये और, 'हम तुम्हारी इच्छा पूरी करेंगे', यह कहकर चले गये। फिर से भगीरथ ने गंगा के ध्यान में पाँच सहस्र वर्ष तपस्या की। ५१९

ऒरुम डक्कॊडि याहिवऩ् दुनदुमा दवमॆऩ्
पॊरुपु नऱ्कॊडि वरिऩवळ् वेहमाऱ् पॊऱुप्पाऱ्
अरऩु रैत्तशॊल् विनोदमऱ् ऱिऩ्ऱुनी यऱिन्दु
पॆरुहु नऱ्ऱवम् बुरिहॆऩ वरनदि पॆयर्न्दाळ् 520

वरम् नति–वर नदी; ऒरु मट कॊटि आकि वन्तु–एक बाल-लता सी कन्या बन के आकर; उनतु मा तवम् ऎऩ्–तुम्हारी बड़ी तपस्या काहे के लिए; पॊरु पुऩल् कॊटि वरिऩ्–तरंगपूर्ण जल-धार आवे; अवळ् वेकम्–उसका वेग; पॊऱुप्पार् आर्–(रोकनेवाले) धारण करनेवाले कौन हैं; अरऩ् उरैत्त चॊल्–हर का कथन; विनोतम्–परिहास है; इऩ्ऱु नी अऱिन्तु–अब तुम समझो, और; पॆरुकु नल् नवम्–और भी अच्छा तप; पुरिक–करो; ऎऩ–कहकर; पॆयर्न्ताळ्–अदृश्य हो गयी। ५२०

वर नदी गंगा इनके तप से संतुष्ट होकर एक बाल-लता-सी सुन्दरी कन्या के रूप में प्रकट हुई और बोलीं— तुम्हारी कड़ी और बड़ी तपस्या का क्या अर्थ है ? गंगा का सवेग प्रवाह आयेगा तो उसको रोक सकेगा कौन ? हर ने जो कहा वह परिहास था। तुम यह समझो और अधिक तपस्या करो। यह कहकर वह अदृश्य हो गयीं। ५२०

करन्दै मत्तमो डॆरुक्कलर् कूविळङ् गडुक्कै
निरन्द पॊऱ्चडै निऩ्मलक् कॊऴुन्दिऩै निऩैया
अरन्दै युऱ्ऱव ऩिरण्डरै यायिर माण्डु
पुरिन्दु नऱ्ऱवम् पॊलिदर वरैमहळ् पुऩिदऩ् 521

अरन्तै उऱ्ऱवऩ्–दुखी हुए; करन्तै–(शिव-) तुलसी (पत्र); मत्तमोटु–धतूरे (फूलों) के साथ; ऎरुक्कु अलर्–अर्क के फूल; कूविळम्–विल्वपत्र; कटुक्कै–अमलतास के फूल; निरन्त–भरे; पॊऩ् चटै–सुनहली जटा वाले; निऩ्मलम्–निर्मल; कॊऴुन्तिऩै–(अग्नि-) ज्वाला-सम (शिवजी) को; निऩैया–ध्यान कर; इरण्टरै

आयिरम् आण्टु–ढाई सहस्र वर्ष; नल् तवम् पुरिन्तु–अच्छी तपस्या करके; पॊलि तर–शोभायमान रहते (समय); वरै मकळ् पुऩितऩ्––पर्वतकुमारी-पति, पवित्र ईश्वर। ५२१

भगीरथ यह सुनकर बहुत खिन्न हो गये। फिर उन्होंने ईश्वर शंकरजी के, जिनकी जटाएँ, (शिव-) तुलसी और विल्व के पत्र, और धतूरे, अर्क और अमलतास के फूलों से अलंकृत और सुनहली रहती हैं और जो निर्मल अग्नि-ज्वाला के समान कांतियुक्त हैं, ध्यान में ढाई सहस्र वर्ष तप किया। तप से तेजोवान हुए उनके सामने पार्वती-पति प्रकट हुए। ५२१

ऍदिर्न्दु निऩ्ऩिऩै वॆऩ्ऩॆऩ विऱैञ्जियॆस् बॆरुम
अदिर्न्दु गङ्गैयी दऱैन्दऩ ळॆऩ्ऱलु मञ्जल्
पिदिर्न्दि डावहै कात्तुमॆऩ् ऱेहिय पिऩ्ऩै
मुदिर्न्द मादव मिरण्डरै यायिर मुडित्ताऩ् 522

ऍतिर्न्तु–सामने आकर; निऩ् निऩैवु ऍऩ् ऍऩ–तुम्हारी क्या इच्छा है, पूछते समय; इऱैञ्चि–विनय करके; ऍम् पॆरुम–मेरे देव; कङ्कै–गंगाजी ने; अतिर्न्तु–(दिल) दहलाते हुए; ईतु अऱैन्तऩळ्–यह कहा; ऍऩ्ऱलुम्–कहते ही; अञ्चल्–मत डरो; पितिर्न्तिटा वकै–न छलके ऐसा; कात्तुम्–रोक लूँगा; ऍऩ्ऱु–कहकर; एकिय पिऩ्ऩै–जाने के पश्चात्; मुतिर्न्त–गम्भीर; मा तवम्–कठोर तपस्या; इरण्टरै आयिरम्–ढाई सहस्र (वर्ष); मुटित्ताऩ्–कर चुके। ५२२

(भगीरथ के सामने प्रकट होकर) उन्होंने पूछा कि अब तुम क्या चाहते हो? भगीरथ ने विनय की कि मेरे देव! गंगाजी ने मेरा दिल तोड़ते हुए यह कह दिया कि आपका वचन परिहास में कहा वचन है। तब ईश्वर ने धैर्य दिलाते हुए कहा कि मत डरो। सचमुच हम रोकेंगे। वह थोड़ा भी छलक ही नहीं पायेगी। यह कहकर वे चले गये। पश्चात् भगीरथ ने और ढाई सहस्र वर्ष गंगाजी के प्रति तपस्या की। ५२२

पॆरुहु नीरॊडु पूदियुम् वायुवुम् बिऱङ्गु
शरुहुम् वॆङ्गदि रॊळियैयुन् दुय्त्तदु तऩ्ऩैयुम्
परुह लिऩ्ऱियु मुप्पदि ऩायिरम् परुवम्
मुरुहु कादलिऩ् मऩ्ऩव ऩरुन्दव मुयऩ्ऱाऩ् 523

मऩ्ऩवऩ्–राजा भगीरथ; पिऱङ्कु चरुकुम्–(हरीतिमा) बदलकर शुष्क बने पत्ते; पूतियुम्–भूति; पॆरुकुम् नीरॊटु–बहते जल के साथ; वायुवुम्–वायु को; वॆम् कतिर्–गरम सूर्य की; ऒळियैयुम्–किरणों को; तुय्त्तु–अशन कर; अतु तऩ्ऩैयुम् परुकल् इऩ्ऱियुम्–उसको भी खाये बिना; मुप्पतिऩायिरम् परुवम्–तीस सहस्र संवत्सर; मुरुकु कातलिऩ्–वर्धनशील श्रद्धा के साथ; अरु तवम् मुयऩ्ऱाऩ्–कठिन तपस्या पूरी की। ५२३

इस तरह भगीरथ ने कुल मिलाकर तीस सहस्र वर्ष तक तपस्या

की। ब्रह्मा, शिव, गंगा, फिर शिव, फिर गंगा को उद्देश्य बनाकर पाँच बारियों में तपस्या की। उनमें चार में क्रमशः सूखे पत्ते, धूलि और जल, वायु और सूर्य-किरणों का आश्रय लिया। पाँचवीं में कुछ भी नहीं लिया। यह कठोर तपस्या थी और उन्होंने श्रद्धा और चाह के साथ उसे पूरा किया। ५२३

उन्दि यम्बुयत् तुदित्तव नुरैदरु मुलहुम्
इन्दि रादिय रुलहमुम् वॆरुवुऱ् विरैत्दु
वन्दु तोऩ्ऱिऩळ् वरनदि मलैमहळ् कोॖऩऩ्
शिन्दि डादोरु शडैयिऩिऱ् करन्दऩऩ् शेर 524

वर नति–श्रेष्ठ नदी; उन्ति अम्पुयत्तु उतित्तवऩ्–श्रीविष्णु के नाभी-कमल पर उदित (ब्रह्माजी); उऱै तरुम् उलकुम्–जहाँ रहते हैं, उस लोक को (और); इन्तिर आतियर् उलकमुम्–इन्द्रादि देवों के लोकों को; वॆरुवु उऱ–डराते हुए; इरैत्तु–गर्जन करती हुई; वन्तु तोऩ्ऱिऩळ्–आ अवतरित हुई; मलै मकळ् कोॖत्तऩ्–गिरिजापति (ने); चेर चिन्तिटातु–बिल्कुल छलकने न देकर; ऒरु चटैयितिल्–एक जटा के अन्दर; करन्तऩऩ्–छिपा लिया। ५२४

गंगाजी अवतरित हुईं। वह अहंकार-पूर्ण होकर इतने वेग और नर्दन के साथ उतरीं कि ब्रह्मा और अन्य सुरों के लोक डर गये। तब गिरिजापति ने उन्हें अपनी एक जटा के अन्दर निहित कर दिया। ५२४

पुन्नु नित्तरु पऩियॆऩ वाऩदि पुऩिदन्
शॆन्नि यिऱ्करन् दॊळित्तलुम् वणङ्गिऩऩ् ऱिहैत्तु
मऩ्ऩ निऱ्रलुम् वरुन्दऩऱ् जडैयळ्वा ऩदियिऩ्
रॆऩ्ऩ विट्टऩ ऩोरुशिऱि दवनिपोऩ् दिऴिन्दाळ् 525

वाऩ् नति–आकाशगंगा के; पुल् नुऩि तरु पऩि ऎऩ–घास की नोक पर पड़ी हुई ओस-बूंद के समान; पुऩितऩ् चॆऩ्ऩियिल्–पवित्र ईश्वर की जटा में; करन्तु ऒळित्तलुम्–छिप जाते ही; मऩ्ऩऩ्–राजा; वणङ्कितऩ्–नत हुए; तिकैत्तु–भ्रमित; निऱ्ऱलुम्–खड़े होने पर; वरुन्तल्–दुखो मत; वाऩ् नति–सुरनदी; इऩ्ऱु–अब; नम् चटैयळ्–हमारी जटा की अन्तर्वासिनी है; ऎऩ्ऩ–ऐसा कहकर; ऒरु चिऱितु विट्टऩऩ्–थोड़ा बाहर छोड़ा; अवऩि इऴिन्तु पोऩ्ताळ्–भूमि पर उतरकर आयीं। ५२५

गंगाजी केवल घास की नोंक पर की ओस-विंदु के समान रह गयीं। शिवजी की जटा से बाहर दिखाई नहीं दीं। यह देख भगीरथ चित्त-भ्रमित हो गये। शिवजी का नमस्कार करके वे अचल खड़े रहे। तब शंकर जी ने अभय दिया। चिन्ता मत करो। देवनदी हमारी जटा-वासिनी हो गयी है, यह कहकर उन्होंने एक छोटा अंश बाहर निकाला, वह भूमि पर उतर आयीं। ५२५

इऴिन्द गङ्गैमुन् मन्नवन् विरैवोडु मेहक्
कऴिन्द मन्नवर् गतिपॅऱ मुडुहिय कदियाल्
अऴुन्दु मादवच् चन्तुविन् वेळ्वियै यऴिप्पक्
कॉळुन्दु विट्टॅरि वॅहुळियन् कुडङ्गयिऱ् कॉळ्ळा 526

इऴिन्त कङ्कै मुन्–निसृत गंगा के सामने; मन्नवन्–राजा; विरैवॊटुम् एक–सवेग जाते थे तब; कऴिन्त मन्नवर् कति पॅऱ–मरे राजाओं के सद्‌गति पाने के लिए; मुटुकिय कतियाल्–द्रुत गति के कारण; अऴुन्तुम् मा तवम्–(याग-) चिन्तनमग्न, महान तपस्वी; चन्तुविन् वेळ्वियै–जह्नु के यज्ञ को; अऴिप्प–बिगाड़ते समय; कॉळुन्तु विट्टु–ज्वाला देकर; ऍरि–जलनेवाली अग्नि सम; वॅकुळियन्–क्रोधवाले बनकर; कुटङ्कैयिल् कॉळ्ळा–चुल्लू में भरकर। ५२६

नीचे उतरकर गंगाजी भगीरथ के पीछे-पीछे चलने लगीं। भगीरथ अपने पितरों को सद्‌गति दिलाने की त्वरा में जा रहे थे। पीछे आती रही गर्वीली गंगा ने मार्ग में तपोमय जह्नु जो यज्ञ कर रहे थे उसको बिगाड़ दिया। महर्षि को अपने यज्ञ की स्थिति देखकर अपार क्रोध हुआ। उन्होंने गंगाजी को अपने चुल्लू में भरकर लिया। ५२६

उण्डु वन्दनन् मऱैमुनिक् कणङ्गळ्कण् डुवप्पक्
कण्डु वेन्दनुम् वणङ्गिमुन् निहऴ्न्दन कऴऱक्
कॉण्डु पोहॅन्च् चॅविवऴिक् कॊडुत्तनन् कुदित्तु
विण्डु नीङ्गिन रुडलुहु पॊडियिन्मे विन्नळे 527

मऱै मुनि कणङ्कळ्–वेदविद्वान ऋषियों को आनन्द देते हुए; उण्टु उवन्तनन्–पीकर तृप्त हुए; वेन्तनुम् कण्टु–राजा भी देखकर; वणङ्कि–नमस्कार करके; मुन् निकऴ्न्तन कऴऱ–पहले घटित (समाचार) कहने पर; कॊण्टु पोक–ले जाओ; अॅन–कहकर; चॅवि वऴि–कर्ण द्वारा; कॊटुत्तनन्–जाने दिया; कुतित्तु–उछलकर; विण्टु नीङ्कितर्–प्राणों से अलग हो मरे हुओं के; उटल् उकु–शरीरों के बने; पॊटियिल्–भस्म पर (से); मेविन्नळ्–होती हुई बह चलीं। ५२७

उनके तप की महिमा से गंगाजी उतनी छोटी हो गयीं। महर्षि ने उसे आचमन कर लिया। वेदज्ञ ऋषि सब विस्मित खड़े रह गये। महर्षि भी शान्त और तृप्त हो गये। तब भगीरथ को अपनी चिन्ता थी। उन्होंने महर्षि का नमस्कार कर उनसे सारी बातें कहीं। महर्षि आर्द्र हुए। उन्होंने अपने कर्ण से गंगाजी को बाहर छोड़ा और कहा कि ले जाओ। बाद, गंगा बह चलीं और सगर-पुत्रों के शरीरों के बने भस्म पर से होती हुई आगे बहीं। (इससे गंगाजी जाह्नवी कहलाती हैं)। ५२७

निरैय मुऱ्ऱुळल् शहरऱ्ह णॅडुङ्गदि शॅल्ल
विरैम लर्पॊऴिन् दार्त्तन विण्णवर् कुऴाङ्गळ्

मुरश मुऱ्ऱिय पल्लिय मुऱैमुऱै तुवैप्प
अरश ऩप्पॊऴु दणिमदि लयोत्तिमीण् टडैन्ताऩ् 528

निरैयम् उऱ्ऱु उऴल्–नरक में पड़कर संकट उठाते रहे; चकरर्कळ्–सगर-पुत्र; नॆट्टु कति चॆल्ल–अमर सद्गति में पहुँचे, तब; विण्णवर् कुऴाङ्कळ्–देवगणों ने; विरै मलर्–सुवासपूर्ण पुष्प; पॊऴिन्तु–बरसाकर; आर्त्तऩ–आनन्द-रव किया; अप्पॊऴुतु–तब; अरचऩ्–राजा भगीरथ; मुरचम्–भेरी; मुऱ्ऱिय पल् इयम्–पूर्ण रीति से विविध वाद्य; मुऱै मुऱै तुवैप्प—बारी-बारी से बजे, तब; मीण्टु–लौट आकर; अणि मतिल्–सुन्दर प्राचीरवाले; अयोत्ति अटैन्ताऩ्–अयोध्यानगर पहुँचे। ५२८

भगीरथ के प्रयत्न से गंगाजी भूमि पर अवतरित हुईं और सगर-पुत्र भयंकर नरक-वास छोड़कर अमर सद्गति को पहुँच गये। इसको देखकर देवगण ने सुमन-वर्षा करायी और वाहवाही मचायी। भेरी और अन्य समूचे वाद्यों के नाद के साथ भगीरथ सुन्दर प्राचीर वाले अयोध्या नगर आये। (प्राचीरों की महिमा के कारण अयोध्या तब तक सुरक्षित रही।)। ५२८

अण्ड कोळहैक् कप्पुऱत् तादियऩ् ऱळन्द
पुण्ड रीहमॆऩ् मलरिडैप् पिऱन्दुपू महनार्
कॊण्ड तीर्त्तमायप् पहिरदऩ् ऱवत्तिऩाऱ् कॊणर
मण्ड लत्तिऩ्वन् दडैन्ददिम् मानदि मैन्द 529

मैन्त–राजकुमार; इ मा नति–यह महानदी; अण्टम् कोळकैक्कु–अण्डगोल के; अप्पुऱत्तु–उस तरफ़; आति–आदि पुरुषोत्तम (ने); अऩ्ऱु अळन्त–उस दिन (जिनसे) नापा; मॆल् पुण्टरीकम् मलर् इटै–(उन) कोमल कमल चरणों में; पिऱन्तु–उत्पन्न होकर; पू मकऩार्—कमल-पुत्र, ब्रह्मा के; कॊण्ट–गृहीत; तीर्त्तम् आय्–तीर्थ बनकर; पकिरतऩ् तवत्तिऩाल् कॊणर–भगीरथ के तपोबल से लाने के कारण; मण् तलत्तिऩ्–भूतल में; वन्तु–आकर; अटैन्ततु–पहुँचीं। ५२९

हे चक्रवर्ती-तनय! श्रीराम! यह महानदी विष्णु के त्रिविक्रमावतार के समय के उन चरणों से निकलती है, जिनसे भगवान ने लोकों को नापा था। इस अंडगोल के उस पार्श्व में इस नदी का जन्मस्थान है। फिर वह ब्रह्मा द्वारा अपने कमण्डल में गृहीत होकर पुण्य-सलिला बनीं। बाद, भगीरथ की तपस्या से वह भूतल में पहुँचीं। ५२९

सगरर् तम्बॊरुट् टरुन्दव नॆडुम्बह ऱळ्ळिप्
पहिर दऩ्कॊणर्ऩ् दिडुदलाऱ् पहिरदि याहि
महित लत्तिडैच् चऩ्ऩुविऩ् शॆविवऴि वरलाल्
निहरिल् शाऩवि यॆऩप्पॆयर् पडैत्तदिऩ् नीत्तम् 530

पकिरतऩ्–भगीरथ; चकरर् तम् पॊरुट्टु–सगरपुत्रों के वास्ते; नॆटु पकल्–अधिक लम्बे काल को; अरु तवम्–कठोर तपस्या में; तळ्ळि–व्यतीत करके;

मकितलत्तु इटै कॊणर्न्तिट्टुतलाल्–महीतल में लाये, इसलिए; इ नीत्तम्–यह धारा; पकिरति आकि–भागीरथी बनकर; चन्नुविन्–जह्नु के; चॆवि वऴि वरलाल्–कर्ण द्वारा आने से; निकर् इल् चानवी–अनुपम जाह्नवी; ॲन्न पॆयर्–इस नाम की; पटैत्ततु–धारिणी बनीं। ५३०

भगीरथ ने सगर-पुत्रों के उद्धारार्थ अनेक सहस्र वर्षों का समय तपस्या में व्यतीत किया; तब जाकर गंगाजी को वे महीतल पर ला सके। इस कारण वह भागीरथी बनीं। फिर जह्नु के कर्ण से बाहर आने के कारण उनका नाम जाह्नवी पड़ा। यह अनुपम जाह्नवी हैं। ५३०

ॲन्ऱु कूऱलुम् वियप्पिन्नॊ डुवन्दन्न रिऱैञ्जिच्
चॆन्ऱु तीऱ्न्दन्नर् गङ्गैयै विशालैवाऴ् शिहरक्
कुन्ऱु पॊऱ्पुयत् तरशन्वन् दिणैयडि कुऱुह
निन्ऱु नल्लुरै विळम्बिमऱ् ऱव्वयि न्नीङ्गा 531

ॲन्ऱु कूऱलुम्–ऐसा वृत्तान्त कहने पर; वियप्पित्तॊटु–विस्मय के साथ; उवन्तन्नर्–आनन्दित हुए; कङ्कैयै इऱैञ्चि–गंगाजी की वन्दना करके; चॆन्ऱु–जाकर; तीर्न्तन्नर्–दूसरे पार गये; विचालै वाऴ्–विशालानगर में वास करनेवाले; चिकरम् कुन्ऱु पॊऱ् पुयत्तु–शिखर सह पर्वत-समान भुजावाले; अरचन् वन्तु–राजा (के) आकर; इणैयटि कुऱुक--चरण-द्वय पर नमस्कार करते समय; निन्ऱु–ठहरकर; नल् उरै विळम्पि–उपदेश के शब्द कहकर; मऱ्ऱु–बाद; अ वयिन्–उधर से; नीङ्का–चलकर। ५३१

महर्षि ने यह वृत्तान्त सुनाया तो श्रीराम और लक्ष्मण विस्मय और आनन्द से भर गये। उन्होंने गंगाजी की वन्दना की। फिर वे गंगा जी को पार कर विशाला नगर में आये। वहाँ उस नगर के पर्वत-सम भुजावाले राजा ने आकर मुनिवर के पैरों में नमस्कार किया। महर्षि रुके और उपदेश देकर राजकुमारों के साथ आगे बढ़े (इस पद में गंगा को दुबारा पार करने का उल्लेख आया है। पद्य ३३८ में सिर्फ़ नदी का ही उल्लेख है; नाम नहीं दिया गया है। बालमीकी सरयू-गंगा संगम पर गंगा को पार करने की बात कहते हैं। बालकाण्ड २४वाँ सर्ग श्लोक ५-१०। विशाला नगर के राजा का नाम सुमति था। इसका वंश बालमीकी में पूर्णतः वर्णित है)। ५३१

पऴ्ऴि नीङ्गिय पङ्गयप् पऴन्ननन् न्नारै
वॆळ्ळ वान्कळै कळैवुरु कडैशियर् मिळिर्न्द
कळ्ळ वाणॆडुङ् गण्णिऴल् कयलॆन्नक् करुदा
अळ्ळि नाणुरु महन्न्पणै विदेहना डणैन्दार् 532

पऴन्नम्–खेतों में; पङ्कयम् पळ्ळि नीङ्किय--कमल-शय्या छोड़ जो उठे थे; नल् नारै–अच्छे सारस; वॆळ्ळम्–जल में; वान् कळै–दृढ़ निराने योग्य पौधों को;

कळैवु उऱु–निराती रही; कटैचियर्–कृषक स्त्रियों की; मिळिर्न्त–चंचल; कळ्ळम् वाळ्–चातुर्य भरी और तलवार-सम; नॆटुकण् निऴल्–आयत आँखों की परछाईं को; कयल् ऍऩ करुता–कयल् नाम की मछली समझकर; अळ्ळि–चोंच मारकर; नाण् उऱुम्–(असफल होकर) शरम खाते हैं, (ऐसे खेतों वाले); वितेक नाटु अणैन्तार्–विदेह देश गये। ५३२

वे अब विदेह, जनक के देश में आ गये। पहले कवित्वपूर्ण मनोरंजक रीति से कवि, देश की सीमा पर रहनेवाले खेतों का वर्णन करते हैं। खेतों में कमल-शय्या पर से जाग उठे सारस पक्षी भूख मिटाने के लिए मछलियों की खोज में विचर रहे हैं। तब वहाँ खेत निराने के लिए कृषक-रमणियाँ आयी हैं। झुकी हुई उनकी तलवार सम आयत, वंचना- (चातुर्य-) भरी और सुन्दर आँखों की परछाईं खेत के जल में पड़ती हैं। उनको सारस पक्षी भ्रम से कयल नाम की मछलियाँ समझ लेते हैं और उनको पकड़ने के लिये चोंच मारते हैं। पर चोंच में कुछ नहीं आता। अतः वे अपनी नासमझी और असफलता से लजा जाते हैं। ५३२

वरम्बिल् वाऩ्शिऱै मदहुहण् मुळवॊलि वळङ्ग
अरुम्बु नाण्मल रशोहुह ळलर्विळक् कॆडुप्प
नरम्बि नाऩ्ऱतेऩ् ऱारैही णऱुमलर् याऴिऩ्
शुरुम्बु पाण्शॆयत् तोहैनिऩ् ऱाडुव शोलै 533

चोलै–उद्यानों में; वरम्पु इल्–निस्सीम; वाऩ् चिऱै मतकुकळ्–विशाल जलाशयों की नालियाँ; मुळवु ऑलि वळङ्क–मर्दल नाद के समान स्वर करते हैं; अरुम्पु नाळ् मलर्–तभी हुए नवीन फूलों वाले; अचोकुकळ–अशोकवृक्ष; अलर् विळक्कु ऍटुप्प–(ज्योति) छिटकनेवाले (फूलों के) दीप धारण करते हैं; नरम्पिऩ् नाऩ्ऱ–तन्त्री के समान चूनेवाले; तेऩ् तारै कॊळ्–शहद की धारा से युक्त; नऱु मलर् याऴिऩ्–सुवासपूर्ण फूलरूपी याळ् (वीणा) पर; चुरुम्पु पाण् चॆय–अमर गीत गाते हैं; तोकै–कलापी (मोर); निऩ्ऱु–खड़े होकर; आटुव–नाचते हैं। ५३३

वहाँ के उद्यान अनोखे नाट्य-मंच बने हैं। जलाशयों से नालियों द्वारा जब जल बहता है तब नाद उठता है। वह मर्दल-स्वर के समान है। अशोक वृक्ष अपने सद्य विकसित फूलों के दीप धरते हैं। फूलों के गुच्छे वीणा हैं और उनसे टपकनेवाले शहद की धारें तंत्रियों के समान हैं। भ्रमर उन पर बैठकर गुंजार करते हैं। उनको देखने पर ऐसा लगता है कि भ्रमर वीणावादन कर रहे हों। इतने वैभवों के साथ मोर नाचते हैं। ५३३

पट्ट वाणुदऩ् मडऩ्दैयर् पार्प्पॆत्तुऩ् दूदाल्
ऍट्ट वादरित् तुळल्बव रिदयङ्गळ वॆऱुप्प
वट्ट नाण्मरै मलरिऩ्मेल् वयलिडै मळ्ळर्
कट्ट कावियङ् गट्किडै काट्टुव कळऩि 534

पट्टम्–पटट पहने; वाळ् नुतल्–उज्ज्वल ललाटवाली; मटन्तैयर्–स्त्रियों की; पार्प्पु–दृष्टि; ॲन्तुम् तूताल्–रूपी दैत्य से; ॲट्ट आतरित्तु–(खिचकर) पास आना चाहते हुए; उळल्पवर्–फिरनेवाले (कामी) पुरुषों के; इतयङ्कळ् वॆरुप्प–मनों को खिझाते हुए; कळत्ति–खेतों के प्रदेश में; वयल् इटै मळ्ळर्–खेतों में काम करनेवाले कृषक (द्वारा); कट्ट कावि–निराये गये नीलोत्पल पुष्प; वट्टम् नाळ् मरै मलरिऩ् मेल्–गोल नवीन कमल-पुष्पों पर; अम् कण् किटै काट्टुव–सुन्दर आँखों का भ्रम देते हैं। ५३४

कामुक लोग शिरोभूषणधारिणी स्त्रियों की दृष्टि के दौत्य से खिचकर उनके पास जाना चाहते हैं। खेतों से कृषकों ने नीलोत्पल के पौधों को उखाड़कर पास के तडागों में फेंक रखे हैं। वे नीलोत्पल के फूल कमल पुष्पों पर पड़े रहते हैं। उन दोनों को देखकर ये लोग रमणी के मुखों और उनकी आँखों के भ्रम में पड़ जाते हैं और समझ लेते हैं कि स्त्रियाँ अपनी आँखों से इशारा कर रही हैं। वे उत्साह के साथ पास आते हैं तब सत्य प्रकट हो जाता है। उनका मन घृणा और क्रोध से भर जाता है। ५३४

तूवि यऩ्ऩन्द मिऩमॆऩ्ऱु नडैकण्डु तॊडरक्
कूवु मॆऩ्कुयिऱ् कुदलैयर् कुडैन्ददण् पुऩल्वाय्
ओविल् कुङ्गुमच् चुवडुऱ वॊऩ्ऱॊडॊऩ् ऱूडिप्
पूवु ऱङ्गिऩुम् पुळ्ळुऱङ् गादऩ पॊय्है 535

कूवुम् मॆऩ् कुयिल्–कूकनेवाली मृदुल कोकिला की सी; कुतलैयर्–(अस्पष्ट मधुर) तोतली बोली वाली स्त्रियों की; नटै कण्टु–चाल देखकर; तूवि अऩ्ऩम्–सुन्दर परों वाले हंस; तम् इऩम्–'हमारा वर्ग'; ॲऩ्ऱु–समझकर; तॊटर–अनुगमन करते; कुटैन्त–गोता लगानेवाले; पुऩल् वाय्–जल में; पुळ्–पक्षीगण; ओवु इल्–न पोंछ सकने की रीति से; कुङ्कुमम् चुवटु उऱ–कुंकुम-चिह्नों के लग जाने से; ऒऩ्ऱॊटु ऒऩ्ऱु उटि–एक दूसरे के साथ झगड़कर; पू उऱङ्कितुम्–पुष्पों के निमीलित होने के बाद भी; उऱङ्कातऩ–नहीं सोते हैं (जिनमें); पॊय्कै–(ऐसे) जलाशय हैं। ५३५

कोकिलकंठी, तुतली बोलीवाली स्त्रियों की चाल देखकर हंस समझ लेते हैं कि ये हमारे ही वर्ग की हैं। वे स्त्रियाँ सरोवरों में स्नान करने जाती हैं तो ये हंस भी उनके पीछे-पीछे जाकर गोता लगा लेते हैं। तब स्त्रियों के शरीर का कुंकुम-लेप हंसों पर खूब लग जाता है और नहीं छूटता। इससे हंसों में आपसी कलह हो जाता है। हर पक्षी दूसरे पर लगा चिन्ह देखता है और समझता है कि वह अजनवी है। कलह मच जाता है, और हंसिनी और हंस में भी रार मच जाती है। इसलिए फूलों के बन्द हो जाने के बाद भी ये हंस विना सोये आपस में झगड़ा करते रहते हैं। वहाँ के जलाशयों की स्थिति यह है। ५३५

**मुऱैयि निऩ्मुदु मेदियिऩ् मुलैवऴि पालुम्
तुऱैयि निऩ्ऱुयर् माङ्गऩि तूङ्गिय शाऱुम्
अऱैयु मॆऩ्करुम् बाट्टिय वमुदमु मऴिदेम्
नऱैयु मल्लदु नळिर्पुऩल् पॆरुहल नदिहळ् 536**

नतिकळ्–नदियों में; मुतु मेतियिऩ् मुलै वऴि पालुम्–वयस्क भैंसों के थन से स्रवनेवाला दूध; तुऱैयिल् निऩ्ऱु–घाटों पर खड़े; उयर् मा कनि–ऊँचे आम्र तरुओं के फलों से; तूङ्किय चाऱुम्–टपकता रस; अऱैयुम्–टुकड़ों में कटे; मॆऩ् करुम्पु–कोमल ईख को; आट्टिय अमुतमुम्–पीसने से निकला सुधासम रस; अऴि–(छतों के) टूटने से बहनेवाला; तेम् नऱैयुम्–मीठा शहद; मुऱैयिऩिल्–एक के बाद एक के क्रम से; अल्लतु–इनके बहने के सिवा; नळिर् पुऩल्–शीतल जल; पॆरुकल–प्रवाहित हो नहीं आता। ५३६

वहाँ की नदियों की बात विचित्र है। उसमें पैठनेवाली भैंसों का दूध, घाट पर खड़े आम्रवृक्षों के फलों का रस, इक्षु का रस और शहद, यह सब अधिकता से बहता है। कवि कहते हैं कि इसमें जल का प्रवाह नहीं है, इन्हीं का बारी-बारी से प्रवाह आता है। ५३६

**इऴैक्कु नुण्णिडै यिडैतर मुहडुयर् कॊङ्गै
मऴैक्कण् मङ्गैय ररङ्गिऩिल् वयिरियर् मुऴवम्
मुऴक्कु मिऩ्ऩिशै वॆरुविय मोट्टिळ मेदि
उऴक्क वाळैहळ् पाळैयिर् कुदिप्पऩ वोडै 537**

ओटै–नालों में; इऴैक्कुम्–तागे से भी; नुण्–पतली; इटै–कटि (को); इटैतर–दुखानेवाले; मुकटु उयर्–-पर्वत-सम उन्नत; कॊङ्कै–उरोजों; मऴै कण्–मोहक नेत्रोंवाली; मङ्कैयर–रमणियों के; अरङ्किऩिल्–नाट्य मंच पर; वयिरियर्–वादक लोगों के; मुऴवम् मुऴक्कुम्–मृदंग बजाने से (उठे); इऩ् इचै–मधुर संगीत से; वॆरुविय–भयभीत; मोटु इळ मेति–तगड़ी और छोटी आयु की भैंसें; उऴक्क–(घुसकर) क्षुब्ध करती हैं, (तब); वाळैकळ्–वाळै जाति की मछलियाँ; पाळैयिल्–नारियल, सुपाड़ी आदि पेड़ों की डंठलों पर; कुतिप्पऩ–उछल जाती हैं। ५३७

उस देश के नालों में ये दृश्य देखने को मिलते हैं। नाट्य-मंच पर मनोहारिणी अंगनाएँ अपनी सूत-सी पतली कटियों; पर्वत-सम उन्नत उरोजों जो उन कटियों को लचका देते हैं; और शीतल (स्नेहपूर्ण) नेत्रों के साथ नृत्य कर रही हैं। वहाँ मृदंग बजाया जाता है। उस शब्द से डरकर भैंसें भागती हैं और नालों में घुसकर जल को क्षुब्ध करती हैं। तब वाळै मछलियाँ उछलती हैं और किनारे पर उगे नारियल, सुपाड़ी आदि के पेड़ों के डंठलों पर जा बैठती हैं। वहाँ के मधु को पीकर मत्त बनती हैं। यह बात कोसल-देश-वर्णन में भी आयी है। सब जगह मत्तता है, समृद्धि है, यही इस पद का तात्पर्य है। ५३७

पडैनॅ डुङ्गण्वा ळुरैपुहप् पडर्पुन्नन् मूळ्हिक्
कडैय मुन्कडर् चॅळुन्दिरु वॅळुम्बडि काट्टि
मिडैयुम् वॅळ्वळै पुळ्ळॊडु मॊलिप्पमॅल् लियलार्
कुडैय वण्डिनङ् गडिमलर् कुडैवन कुळङ्गळ् 538

कुळङ्कळ्–तालाबों में; मॅल् इयलार्–सुकुमारियाँ; मिटैयुम् वॅळ् वळै–पहनी हुई शंख की चड़ियों के; पुळ्ळॊटुम् ऑलिप्प–पक्षियों के साथ कलनाद करते; नॅटु कण् वाळ् पटै–दीर्घ नेत्ररूपी तलवारों के अस्त्रों के; उरै पुक–(पलकों के) म्यान में घुसते; पटर् पुत्तल् मूळ्कि–विशाल तल के जल में डूबकर; मुन् कटल् कटैय–प्राचीन समय में सागर मंथन करते समय; चॅळु तिरु–मनोहारिणी श्रीदेवी के; ॲळुम् पटि काट्टि–उठ आने के प्रकार से; कुटैय–घुसकर तैरती उतराती हुई स्नान करती है, तब; वण्टु इनम्–मधुमक्खियाँ; कटि मलर् कुटैवन–सुगन्धित फूलों में घुसकर कुरेदती हैं। ५३८

तालाबों की बात देखिये। कोमलांगी स्त्रियाँ उनमें स्नान करती हैं। तब उनके हाथ की श्वेत चूड़ियाँ खनखना उठती हैं। वह खनक पक्षियों की कल-कल ध्वनि के समान है। वे गोता लगाते समय आंखें मूंद लेती हैं। उसको देखकर कवि कल्पना करते हैं कि वे अपनी आयत आँखोंरूपी तलवारों को पलकरूपी म्यानों के अन्दर रख लेती हैं। जब वे स्नान करके ऊपर उठती हैं तब वे श्रीलक्ष्मीदेवी के समान लगती हैं जो क्षीरसागर-मंथन के अवसर पर प्रकट हुई थीं। वे जब जल में पैठती हैं और जल को खूब हिला देती हैं तब मधुमक्खियाँ फूलों में घुसकर शहद के लिए खूब कुरेद देती हैं। ५३८

इन्नैय नाट्टिडै यिन्तिदुशॆन्न् रिञ्जिशूळ् मिदिलैप्
पुन्नैयु नीळ्कॊडिप् पुरिशैयिन् पुऱत्तुवन् दिरुत्तार्
मनैयिन् माट्चियै यळित्तुयर् मादवन् पन्नि
कनैयु मोट्टुयर् करुङ्गलोर वॅळ्ळिडैक् कण्डार् 539

इन्नैय नाटु इटै–ऐसे देश में; इन्तितु चॅन्ऱु–रमते हुए जाकर; इञ्चि चूळ्–प्राचीर-वलयित; मितिलै–मिथिला की; पुन्नैयुम् नीळ् कॊटि–अलंकृत उच्च पताकाओं वाले; पुरिचैयिन् पुऱत्तु–प्राचीर के इस पार; वन्तु इरुत्तार्–आकर ठहरे; ओर् वॅळ् इटै–एक मैदान में; मन्नैयिन् माट्चियै अळित्तु–गृहस्थी की गरिमा मिटाकर; उयर् मातवन् पन्ति–श्रेष्ठ महातपस्वी की पत्नी (अहल्या) के; कन्नैयुम् मोटु उयर्–कठोर और उन्नत; करुङ्कल्–काले प्रस्तर-रूप को; कण्टार्–देखा। ५३९

इस देश से होकर वे तीनों प्राचीरों से घिरी हुई मिथिला नगरी के पास पहुँच गये। उनको यात्रा बड़ा सुख दे रही थी। वे प्राचीर के इस तरफ़ ठहरे। तब वहाँ खुले मैदान में उन्होंने एक उन्नत कठोर प्रस्तर की मूर्ति पड़ी देखी। वह श्रेष्ठ तपोधन गौतम की पत्नी का शाप-प्राप्त

रूप था, क्योंकि अहल्यादेवी ने गृहस्थी की गरिमा को बिगाड़ते हुए अपना चरित्र खोया था। ५३९

कण्ड कऩ्मिशैक् काहुत्तऩ् कऴऱ्ऱुहळ् कदुव
उण्ड पेदैमै मयक्कऱ वेऱुपट् टुरुवम्
कॉण्डु मॅय्युणर् बवऩ्कऴल् कूडिय दॉप्पप्
पण्डै वण्णमाय् निऩ्ऱऩण् मामुऩि पणिप्पाऩ् 540

कण्ट कल् मिचै–दृष्ट प्रस्तर पर; काकुत्तऩ् कऴल् तुकळ्–काकुत्स्थ की चरण-धूलि के; कतुव–लगने पर; मॅय् उणर्पवऩ्–सत्यद्रष्टा; उण्ट पेतैमै मयक्कु–सहज अविद्या के भ्रम के; अऱ–दूर होने पर; वेऱु पट्ट उरुवम् कॉणटु–अविद्या-प्राप्त रूप से विभिन्न अपना सच्चा रूप लेकर; कऴल् कूटियतु ऑप्प–ईश्वरचरण प्राप्त हुआ जैसा; पण्टै वण्णम् आय्–पुराना रूप बनकर; निऩ्ऱऩळ्–खड़ी हुई; मा मुऩि–महिमावान ऋषि; पणिप्पाऩ्–बोलने लगे। ५४०

उस प्रस्तर पर काकुत्स्थ की चरण-धूली लगी। लगते ही अहल्या अपने पूर्व-रूप में आकर खड़ी हो गयीं। उनकी वह स्वरूप-प्राप्ति ऐसी थी जैसे अविद्या-प्राप्त मिथ्या-रूप को छोड़कर ज्ञानी आत्म-रूप पा गये हों और अपने भगवान के चरणारविन्दों पर आये हों। तब कौशिक श्रीराम से कहने लगे। ५४०

मायिरु विशुम्बिऱ् कङ्गै मण्मिशै यिऴित्तोऩ् मैन्द
मेयिऩ वुवहैयोडु मिऩ्ऩॅऩ वॉडुङ्गि निऩ्ऱाळ्
तीविऩै नयन्दु शॅय्द तेवर्को माऱ्कुच् चॅङ्गण्
आयिर मळित्तोऩ् पऩ्ऩि यहलिहै याहु मॅऩ्ऱाऩ् 541

मा इरु विचुम्पिल्–बहुत बड़े आकाशलोक में रही; कङ्कै–गंगा को; मण् मिचै–भूतल पर; इऴित्तोऩ्–उतारनेवाले (भगीरथ) के; मैन्त–वंशज कुमार; मेयिऩ उवकैयोटुम्–उत्पन्न आनन्द के साथ; मिऩ् अॅऩ–विद्युल्लता के समान; ऑटुङ्कि निऩ्ऱाळ्–विनत होकर खड़ी रहनेवाली (ये); तीविऩै नयन्तु चॅय्त–दूषित काम चाहकर जिन्होंने किया; तेवर् कोमाऱ्कु–उन देवराज को; आयिरम् चॅम् कण्–सहस्र सुन्दर नेत्र; अऴित्तोऩ्–दिलानेवाले की; पऩ्ऩि–पत्नी; अकलिकै–अहल्या; आकुम्–हैं। ५४१

आकाशगंगा को भूमि पर उतार लानेवाले राजा भगीरथ के वंशज, हे श्रीराम! ये जो आनन्द के साथ विनत होकर आपके सामने खड़ी हैं गौतम ऋषि की पत्नी हैं। इन्द्र ने जानबूझकर अपराध किया था जिसके फलस्वरूप गौतम ने उन्हें सहस्र सुन्दर नेत्र प्रदान किये थे। (कौशिक जी के इस कथन में कवि का चातुर्य देखने की वस्तु है। सचमुच अहल्या और देवेन्द्र का कार्य गर्ह्य था। तो भी कवि विश्वामित्र के मुख से अशिष्ट बातें नहीं करवाते।)। ५४१

पॊऩ्ऩैयेय् शडैयाऩ् कूऱक् केट्टलुम् बूमिकेळ्वऩ्
अॅऩ्ऩैये यॅऩ्ऩै येयिव् वुलहिय लिरुन्द वण्णम्
मुऩ्ऩैयूऴ् विऩैयिऩालो नडुवॊऩ्ऱु मुडिन्त दुण्डो
अऩ्ऩैये यऩैयाट् किव्वा ऱडुत्तवा ऱरुळुहॅऩ्ऱाऩ् 542

पॊऩ्ऩैये एय्–स्वर्ण की ही समता (रंग में) करनेवाली; चटैयाऩ्–जटा-भूषित (ऋषि) के; कूऱ–कहते; केट्टलुम्–सुनने पर; पूमि केळ्वऩ्–महीपति (श्रीराम) ने; ई उलकु इयल्–इस लोक की प्रकृति; इरुन्त वण्णम्–रहने का रंग-ढंग भी; अॅऩ्ऩै अॅऩ्ऩै–कैसा है, कैसा; अऩ्ऩैये अऩैयाट्कु–(लोक-) माता-सी इनकी; इव्वाऱु अटुत्त आऱु–यह स्थिति होने का कार्य; मुऩ्ऩै ऊऴ् विऩैयिऩालो–पूर्वकृत प्रारब्ध कर्म से; नटु ऒऩ्ऱु–मध्य में कोई; मुटिन्ततु उण्टो–घटा कुछ है; अरुळुक–कहने की कृपा करें; अॅऩ्ऱाऩ्–पूछा। ५४२

सुनहली जटा से शोभित मुनि का यह कथन सुनकर महीपति श्रीराम को अपार आश्चर्य हो गया! उन्होंने कहा— संसार की गति भी कितनी विचित्र है! इसका रंग-ढंग कितना अनोखा है! ये तो लोकमाता-सदृश हैं। इनकी क्यों ऐसी स्थिति हुई? यह इनके प्रारब्ध का फल है या इस जन्म में कोई ऐसा अपराध हो गया? कृपा कर बताइये। ५४२

अव्वुरै यिरामऩ् कूऱ वऱिञ्ञनु मवऩै नोक्किच्
चॅव्वियोय केट्टि मेऩाट् चॅऱिशुडर्क् कुलिशत्तण्णल्
अव्विय मवित्त शिन्दै मुऩिवऩै यऱ्ऱ नोक्कि
नव्विपोल् विऴियि ऩाडऩ् वनमुलै नयत्त लुऱ्ऱाऩ् 543

इरामऩ् अ उरै कूऱ–श्रीराम (के) वह वचन कहने पर; अऱिञ्ञनुम्–त्रिकालज्ञ (कौशिक) ने; अवऩै नोक्कि–उनको देखकर; चॅव्वियोय्–सद्‌गुण सम्पन्न; केट्टि–सुनिये; मेल् नाळ्–पुराने समय में; चॅऱि चुटर्–अधिक प्रकाशमय; कुलिचत्तु अण्णल्–कुलिश के धारक (ने); अव्वियम् अवित्त चिन्तै–(कामादि) दुर्गुण-विमुक्त-चित्त; मुऩिवऩ्–महर्षि की; अऱ्ऱम् नोक्कि–अनुपस्थिति जानकर; नव्वि पोल्–मृग की सी; विऴियिऩाळ् तऩ्–आँखोंवाली इनकी; वनम् मुलै–मनोरम् उरोजों के; नयत्तल्—संस्पर्श-सुख की चाह; उऱ्ऱाऩ्–की। ५४३

श्रीराम के इस प्रश्न के उत्तर में त्रिकालज्ञ मुनि विश्वामित्र ने कहा— हे सद्‌गुणपूर्ण! (संकेत है कि श्रीराम अपराधों से अनभिज्ञ हैं क्योंकि अच्छे गुणों को ही जानते हैं।) पुराने समय में एक बात हुई— उज्ज्वल कुलिशपाणि इन्द्र ने दुर्गुण-विमुक्त व संयम-चित गौतम की मृगनयनी पत्नी का, उनकी अनुपस्थिति के समय, स्तन-संस्पर्श-सुख भोग करना चाहा। ५४३

तैयला णयऩ वेलुन् दऩिमदऩ् शरमुम् बाय
उय्यला मुरुदि नाडि युळल्बव ऩॊरुना ळुऱ्ऱ
मैयला लऱिवु नोङ्गि मामुऩिक् कऱ्ऱञ् जॅय्दु
पॊय्यिला वुळ्ळत् ताऩ्ऱ नुरुवमे कॊण्डु पुक्काऩ् 544

तैयलाळ्–स्त्री के; नयऩम् वेलुम्–नयनरूपी भाले; तऩि–अनुपम; मतऩ् चरमुम्–मन्मथ के शर (के); पाय–लगकर अशान्त करने से; उय्यल् आम्–छूटने का; उऱुति नाटि–उपाय ढूँढते; उऴल्पवऩ्–फिरनेवाले; ऑरु नाळ्–एक दिन; उऱ्ऱ मैयलाल्–उत्पन्न काम-मोह से; अऱिवु नीङ्कि–बुद्धि खोकर; मा मुऩिक्कु–महामुनि की; अऱ्ऱम् चॅय्तु–अनुपस्थिति कराके; पॉय् इला––असत्य-रहित; उळ्ळत्ताऩ् तऩ्–मन के मुनि का; उरुवमे कॉण्टु–वेष धरकर; पुक्काऩ्–(आश्रम में) प्रविष्ट हुए। ५४४

सुन्दरी स्त्री के नयनों के भाले और अद्वितीय अनर्थकारी मन्मथ के शर से आहत वे, उस पीड़ा से छूटने का उपाय ढूँढ़ते फिरे। काम-मोहित उनकी बुद्धि भ्रष्ट हुई। उन्होंने गौतम को आश्रम से हटाने का उपाय किया। (अबेर में मुर्गे के समान बांग दी और ऋषि स्नान-वेला समझकर नदी पर चले गये।) उनकी अनुपस्थिति में देवेन्द्र अनिन्द्य गौतम मुनि का वेष धरकर आश्रम में प्रविष्ट हो गये। ५४४

पुक्कव ळोडुङ् गामप् पुदुमण मदुविऩ् ऱेऱल्
ऑक्कवुण् डिरुत्त लोडु मुणर्न्दऩ ळुणर्न्द पिऩ्ऩुम्
तक्कदऩ् ऱॅऩ्ऩत् तेऱा डाऴ्न्दऩ ळिरुप्पत् ताऴा
मुक्कण ऩऩैय वाऱ्ऱऩ् मुऩिवऩु मुडुहि वन्दाऩ् 545

पुक्कु–प्रवेश करके; अवळोटुम्–उन (अहल्या) के साथ; कामम् पुतु मणम्–काम-वासना-प्रेरित अपूर्व संगमरूपी; मतु इऩ् तेऱल्–मधुर छनी हुई शराब; ऑक्क–एकसम; उण्टु इरुत्तलोटुम्–भोगते रहते समय; उणर्न्तऩळ्–समझ गयीं; उणर्न्त पिऩ्ऩुम्–समझने के बाद भी; तक्कतु अऩ्ऱु–उचित नहीं; ऍऩ्ऩ–ऐसा; तेऱाळ्–नहीं सोचा (सँभली नहीं); ताऴ्न्तऩळ्–मग्न; इरुप्प–रह गयीं, तब; मुक्कणऩ् अऩैय––त्रिलोचन-सम; आऱ्ऱल् मुऩिवऩुम्–शक्तियुत मुनि भी; ताऴा–बिना दूरी किये; मुट्टुकि–सवेग; वन्ताऩ्–आये। ५४५

दोनों, देवेन्द्र और अहल्या, संभोग में लग गये। कामोद्दीप्त यह संगम अपूर्व था और उसने मधुर सुरा के समान उनको नशे में चूर कर दिया। दोनों समान रूप से आनन्दानुभव कर रहे थे। तब अहल्या देवी सत्य जान गयीं; तो भी संभल नहीं पायीं और मग्न रह गयीं। उसी समय त्रिलोचन शिवजी के समान शक्ति रखनेवाले महर्षि गौतम त्वरित गति से लौटकर आ गये। ५४५

शरन्दरु शाप मल्लाऱ् ऱडुप्परुञ् शाबम् वल्ल
वरन्दरु मुऩिव ऩॆय्द वरुदलुम् वॅरुवि माया
निरन्दर मुलहि ऩिऱ्कु नॅडुम्बऴि पूण्डा णिऩ्ऱाळ्
पुरन्दर नडुङ्गि याङ्गोर् पूशैयाय्प् पोह लुऱ्ऱाऩ् 546

चरम् तरु चापम्––शर-प्रेरक चाप; अल्लाल्–के सिवा; तटुप्पु अरु–दुर्निवार; चापम् वल्ल–शाप दिला सकनेवाले; वरम् तरु–वरदायी; मुऩिवऩ्–महर्षि;

ऍय्त वरुतलुम्–पास आये, तब; माया–अमर; निरन्तरम्–स्थिर; उलकिल् निऱ्कुम्–संसार में टिकनेवाली; नॅट्टु पऴि–दीर्घ निन्दा; पूण्टाळ्–प्राप्त करनेवाली (अहल्या); वॅरुवि–भीत होकर; निऩ्ऱाळ्–खड़ी रहीं; पुरन्तरऩ्–पुरन्दर; नटुङ्कि–थर्राकर; आङ्कु–तब; ओर् पूचै आय्–एक बिल्ली का रूप लेकर; पोकल् उऱ्ऱाऩ्–जाने लगे। ५४६

गौतम मुनि के वचन, वर हो या शाप, दोनों तरह के, अचूक होते थे। शर-प्रेरक चाप का निवारण संभव था; लेकिन इनका शाप रोकना असम्भव था। वैसे ही उनके दिये वर भी सफल होते थे। गौतम को देखकर अमर स्थायी निन्दा का पात्र बनी अहल्या भयभीत हो एक ओर खड़ी रहीं। देवेन्द्र भी डर गये और एक बिल्ली का रूप लेकर भागने लगे। (तमिऴ में चाप, शाप दोनों एक ही तरह चापम् लिखा जाता है। यहाँ इस शब्द के तमिऴ और संस्कृत दोनों अर्थों में प्रयुक्त कर कवि ने चातुर्य दिखाया है)। ५४६

तीविऴि शिन्द नोक्किच् चॅय्ददै युणर्न्दु शॅय्य
तूयव ऩवऩै निऩ्कैच् चुडुशर मऩैय शॉल्लाल्
आयिर मादर्क् कुळ्ळ वऱिहुऱि युऩक्कुण् डाहॅऩ्
ऱेयिऩ ऩवैयॅ लाम्वन् दियैन्दऩ विमैप्पिऩ् मुऩ्ऩर् 547

चॅय्य–आर्जवयुक्त; तूयवऩ्–पवित्र स्वभाववाले (ने); चॅय्ततै उणर्न्तु–(इन्द्र का) कृत्य जानकर; अवऩै–उनको; विऴि ती चिन्त–आँखों से आग निकालते हुए; नोक्कि–देखकर; निऩ् कै–आपके हाथ के; चटुचरम् अऩैय–संतापी शर के समान; चॉल्लाल्–(अमोघ) शब्दों में; मातर्क्कु उळ्ळ–स्त्रियों के शरीर में रहनेवाले; अऱि कुऱि–लिंग-चिह्न; आयिरम्–एक सहस्र; उऩक्कु उण्टाक–तुम्हें लग जायँ; ॲऩ्ऱु–ऐसा; एयिऩऩ्–आज्ञा सुनायी; इमैप्पिऩ् मुऩ्ऩर्–पलक मारने से पहले; अवै ॲलाम्–वे सब (अवयव); वन्तु इयैन्तऩ–आकर लग गये। ५४७

गौतम पवित्र और न्यायी ऋषि थे। उन्होंने इन्द्र का अपराध जान लिया। कुपित आँखों से देखकर, हे राम! आपके शर के समान, अमोघ शाप दिया कि तुम्हारे शरीर पर सहस्र योनियाँ उत्पन्न हो जायँ। पलक मारती देर के अन्दर उनका शरीर उनसे युक्त हो गया। ५४७

ॲल्लैयि नाण मॅय्दि यावर्क्कु नहैवन् दॅय्दप्
पुल्लिय पऴियि ऩोडुम् पुरन्दरऩ् पोय पिऩ्ऩै
मॅल्लिय लाळै नोक्कि विलैमह ळऩैय नीयुम्
कल्लिय लादि यॅऩ्ऱाऩ् करुङ्गलाय् मरुङ्गु वीऴ्वाळ् 548

पूरन्तरऩ्–पुरन्दर; ॲल्लै इल् नाणम् ॲय्ति–निस्सीम लज्जा प्राप्त कर; यावर्क्कुम्–किसी को भी; नकै वन्तु ॲय्त–(इनकी निन्दा में) हँसी करने का मौका देते हुए; पुल्लिय पऴियिऩोटुम्–निम्न अपयश के साथ भी; पोय पिऩ्ऩै–जाने के

पश्चात; मॅल् इयलाळै नोक्कि–कोमल स्वभाव वाली को देख; विलै मकळ् अन्नैय–वेश्या-समान; नीयुम्–तू भी; कल् इयल् आति–प्रस्तर की प्रकृति को प्राप्त हो; ॲऩ्ऱाऩ्–(शाप) कहा; करुङ्कल् आय्–कठोर प्रस्तर बनकर; मरुङ्कु वीऴ्वाळ्–नीचे गिरनेवाली (गिरते-गिरते)। ५४८

पुरन्दर अपार शरम से भर गये। कोई भी उनको देखनेवाले हँसते थे और उनको बहुत ही घृणित निन्दा लग गयी। इसके साथ वे चले गये। तब मुनि ने मृदुल स्वभाववाली अहल्या को देखकर कहा— वेश्या के समान बरताव कर चुकी तू पत्थर की बन जा। वे पत्थर बनकर गिर रही थीं कि उन्होंने कहा—। ५४८

पिऴैत्तदु पॊऱुत्त लॆऩ्ऱुम् बॆरियवर् कडऩे यॆऩ्बर्
अऴऱ्ऱु कडवु ळऩ्ऩाय् मुडिवॆऩ्ऩक् करुळु हॆऩ्ऩत्
तऴैत्तुवण् डिम्मिरुन् दण्डाऱ्त् तयरद राम ऩॆऩ्बाऩ्
कऴऱ्ऱुहळ् कदुव विन्दक् कल्लुरुत् तविरु मॆऩ्ऱाऩ् 549

अऴल् तरु कटवुळ् अऩ्ऩाय्–अग्नि निकालनेवाले (शिव) देव सम (मुनिवर); पिऴैत्ततु–अपराध को; पॊऱुत्तल्–क्षमा करना; ॲऩ्ऱुम्–सदा; पॆरियवर् कटऩे–बड़ों का कर्तव्य है; ॲऩ्पर्–कहते हैं; अऩक्कु मुटिवु अरुळुक–मेरा (शाप-) मोचन बतलाइये; ॲऩ्ऩ–कहने पर; वण्टु तऴैत्तु इम्मिरुम् तण्—भ्रमर-गुंजरित शीतल; तार्–मालाधारी; तयरत रामऩ् ॲऩ्पाऩ्–दशरथ के पुत्र श्रीराम नामी; कऴल् तुकळ कतुव—पाद-धूलि लगते समय; इन्त कल् उरु तविरुम्–यह प्रस्तर-शरीर छूट जायगा; ॲऩ्ऱाऩ्–बोले। ५४६

आग्नेय नेत्रवाले शिव-सम महर्षि! लोगों का कहना है कि अपराध क्षमा करना बड़ों का कर्तव्य है! आप मुझे शाप-मोचन का उपाय बताइये। मुनि शांत हो रहे थे। उन्होंने अहल्या से कहा— भ्रमर-गुंजरित शीतल माला से अलंकृत, चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र श्रीराम की पाद-धूलि तुझ पर लगेगी, तब तू पत्थर के रूप से छूटकर अपना रूप ले लेगी। ५४९

अन्दविन् दिरऩैक् कण्ड वमरर्हळ् पिरमऩ् मुऩ्ऩा
वन्दुको दमनै वेण्ड मऱ्ऱवै तविर्त्तु माऱाच्
चिन्दैयिऩ् मुऩिवु तीर्न्दु शिऱन्दवा यिरङ्ग णाक्कत्
तन्दम दुलहु पुक्कार् तैयलुङ् गिडन्दाळ् कल्लाय् 550

अन्त इन्तिरनै कण्ट–उन इन्द्र को देखकर; अमरर्कळ्–देव सब; पिरमऩ् मुऩ् आक–ब्रह्मा को पुरस्सर कर; वन्तु–आकर; कोतमनै–गौतम को; वेण्ट–याचना करने पर; चिन्तैयिल् मुऩिवु तीर्न्तु–मन के कोप-रहित होकर; अवै तविर्त्तु–उन (अवयवों) को हटाकर; माऱा–उनके बदले में; चिर्न्त आयिरम् कण् आक्क–सुन्दर सहस्र नेत्र बनाये, तब; तम् तमतु उलकु—अपने-अपने लोक;

पुक्कार्–चले गये; तैयलुम्–देवी (अहल्या) भी; कल्लाय्–पत्थर बन; किटन्ताळ्–पड़ी रहीं। ५५०

वहाँ देवलोक में शाप-प्रभावित इन्द्र को देखकर देवता लोग चुप नहीं रह सके। वे ब्रह्माजी को आगे करके गौतम जी के पास आये। उन्होंने मुनि से प्रार्थना की कि इनका शाप दूर किया जाय। तब तक मुनि शांत हो गये थे। इसलिए उन्होंने उन अवयवों को सुन्दर सहस्र नेत्रों में बदल दिया। देवी अहल्या पत्थर की मूर्ति बनी पड़ी रहीं। ५५०

इव्वण्ण निहऴ्न्द वण्ण मिऩियिन्द वुलहुक् कॅल्लाम्
उय्वण्ण मऩ्ऱि मऱ्ऱोर् तुयर्वण्ण मुरुव दुण्डो
मैवण्णत् तरक्कि पोरिऩ् मऴैवण्णत् तण्ण लेयुऩ्
कैवण्ण मङ्गुक् कण्डेन् काल्वण्ण मिङ्गुक् कण्डेन् 551

निकऴ्न्त वण्णम्–(पूर्व-) घटित घटना; इ वण्णम्–इस प्रकार की है; मऴै वण्णत्तु–-मेघ-वर्ण के; अण्णले–प्रभु; मै वण्णत्तु–-अंजन-वर्ण की; अरक्कि पोरिल्–राक्षसी के युद्ध में; अङ्कु–वहाँ; उऩ् कै वण्णम् कण्टेऩ्–आपके हाथ की महिमा देखी; इङ्कु–यहाँ; काल् वण्णम्–-चरण-महिमा; कण्टेऩ्–देखी; इऩि–आगे; इन्त उलकुक्कु ॲल्लाम्–इन सभी लोकों के लिए; उय् वण्णम्–तरने का उपाय (हो गया); अऩ्ऱि–इसके सिवा; तुयर् वण्णम्–दुख का व्यवहार; उरुवतु उण्टो–होगा क्या। ५५१

अहल्या देवी का पूर्व वृत्तांत यही है। मेघ-वर्ण प्रभु श्रीराम! अंजन-वर्ण (काले रंग) की ताडका से आपने जो युद्ध किया उसमें मैंने आपका हस्तकौशल देखा। यहाँ आपके श्रीचरणों की तारक-शक्ति की महिमा देखी। (इनसे आपके दुष्ट-निग्रह और शिष्ट-परिपालन की महिमा मालूम हो गयी है।) अब आपकी उपस्थिति से सारे लोक सुखी हो जायँगे; दुख का कोई मौका नहीं आयगा। (इस पद में प्रयुक्त वण्णम् शब्द के अनेक अर्थ होते हैं जैसे, रंग, प्रकार, कौशल, शक्ति, व्यवहार, व्यापार, मौका इत्यादि)। ५५१

तीदिला वुदवि शॅय्द शेवडिक् करिय शॅम्मल्
कोदिलाक् कुणत्ताऩ् शॊऩ्ऩ पॊरुळॅला मऩत्तुट् कॊण्डु
मादव ऩरुळुण् डाह् वऴिपडु पडरु ऱादे
पोदुऩी यऩ्ऩै यॅऩ्ऩप् पॊऩ्ऩडि वणङ्गप् पोऩाळ् 552

तीतु इला—अहित-रहित; उतवि चॅय्त–हित करनेवाले; चॅम्मै अटि–श्रेष्ठ चरणों के; करिय चॅम्मल्–श्यामल प्रभु; कोतु इला कुणत्ताऩ्–दोष से अमिश्रित (निर्मल) गुणवाले से; चॊऩ्ऩ पॊरुळ् ॲलाम्–कथित बातें सब; मऩत्तुळ् कॊण्टु–ध्यान में रखकर; अऩ्ऩै–माताजी; मा तवऩ्–महा तपस्वी; अरुळ् उण्टाक–-कृपा-पात्र बनने के लिए; वऴि पटु–सेवा कीजिए; पटर् उऱाते–बीती बातों की

चिन्ता मत कीजिए; नी पोतु–(हमारे साथ) आप आइए; ऍऩ्ऩ–कहकर; पॊऩ् अटि–स्वर्ण-सम चरणों पर; वणङ्क–नमस्कार किया और; पोऩाळ्–(वे भी) गयीं। ५५२

अहल्या-हित-कारी श्रीराम के हित-कार्य से सबका हित हुआ; किसी का अहित नहीं। उन श्यामल प्रभु ने साधु विश्वामित्र के कहे समाचारों को ध्यान से सुना। फिर अहल्या देवी को देखकर उनसे कहा— माता जी ! श्रेष्ठ तपस्वी गौतम की परिचर्या करके उनकी कृपा का पात्र बनिये। बीती बातों की चिन्ता मत कीजिये। आप हमारे साथ आयें। यह कहकर उन्होंने देवी का नमस्कार किया। फिर वह उनके साथ गयीं। ५५२

अरुन्दव नुरैयु डऩ्ऩै यऩैयव रणुह लोडुम्
विरुन्दिऩर् तम्मैक् काणा विम्मलाल् वियत्त नॅञ्जऩ्
परिन्दॆदिर् कॊण्डु पुक्कुक् कडऩ्मुऱै पऴुदु ऱामल्
पुरिन्दपिऩ् कादि शॆम्मल् पुऩिदमा दवऩै नोक्कि 553

अऩैयवर्–उनके; अरु तवऩ् उऱैयुळ् तऩ्ऩै–श्रेष्ठ तपस्वी (गौतम) के आश्रम में; अणुकलोटुम्–आते ही; विरुन्तिऩर् तम्मै–अतिथियों को; काणा–देखकर; विम्मलाल् वियन्त नॅञ्चऩ्–आनन्द और विस्मय से भरे मन वाले हो; परिन्तु ऍतिर् कॊण्टु पुक्कु–स्नेह के साथ स्वागत करके ले जाकर; कटऩ् मुऱै–कर्तव्य आतिथ्य-क्रम; पऴुतुऱामल्–भंग न करके; पुरिन्त पिऩ्–(उपचार) करने के बाद; काति चॅम्मल्–गाधी के श्रेष्ठ पुत्र ने; पुऩितम् मा तवऩै नोक्कि–पवित्र महर्षि को देखकर। ५५३

वे श्रेष्ठ तपस्वी गौतम के आश्रम गये। महर्षि ने उनको दूर से देख लिया। वे स्वागतार्थ आये और अच्छे अतिथियों को पाकर विस्मित और मुदित हुए। यथाक्रम अर्घ्य-पाद्यादि से सत्कार किया। तब गाधी-पुत्र विश्वामित्र ने यों कहा। ५५३

अञ्जऩ वण्णऩ् ताऩ्ऱ ऩडित्तुहळ् कदुवा मुऩ्ऩम्
वञ्जिपो लिडैयाळ् पण्डै वण्णत्त ळाहि निऩ्ऱाळ्
नॅञ्जिऩाऱ् पिऴैप्पि लाळै नीयळित् तिडुदि यॆऩ्ऩक्
कञ्जमा मलरोऩ् ऩऩ्ऩ मुऩिवऩुङ् करुत्तुट् कॊण्डाऩ् 554

अञ्चऩ वण्णत्ताऩ्तऩ्–अंजनवर्ण श्रीराम (की); अटि तुकळ् कतुवा मुऩ्ऩम्–चरणधूली के लगते ही; वञ्चिपोल् इटैयाळ्–वल्लरी सम कमर वाली; पण्टै वण्णत्तळ्–पूर्व-रूप-धारिणी हो; आकि निऩ्ऱाळ्–उठ खड़ी हो गयीं; नॅञ्चिऩाल् पिऴैप्पु इलाळै–मन से अपराध न करनेवाली इन पर; नी अळित्तिटुति–आप कृपा करें; ऍऩ्ऩ–कहने पर; कञ्चम् मा मलरोऩ्–कमल के श्रेष्ठ पुष्प पर आसीन; अऩ्ऩ–(ब्रह्मा के) समान; मुऩिवऩुम्–ऋषि भी; करुत्तु–(उनके) अभिप्राय को; उळ् कॊण्टाऩ्–सकारा। ५५४

महर्षि ! अंजनवर्ण श्रीरामचन्द्र प्रभु के श्रीचरणों की धूलि लगने ही वाली थी कि इसके पहले ये देवीस्वरूप में आ गयीं । अतः साफ़ है कि वह पवित्र और निर्दोष मन वाली थीं । इसलिए आप इन्हें स्वीकार करने की कृपा कीजिये । कमलासन ब्रह्माजी के समान गौतम ने भी विश्वामित्र की बात मन से मान ली । ५५४

कुणङ्गळा लुयर्न्द वळ्ळल् कोदमऩ् कमल पादम्
वणङ्गिऩऩ् वलङ्गॊण् डेत्ति माशऱु कऱ्पिऩ् मिक्क
अणङ्गिऩै अवऩ्कै यीन्दाण् डरुन्दव ऩोडुन् दूय
मणङ्गिळर् शोलै नीङ्गि मणिमदिऩ् मिदिलै कण्डार् 555

कुणङ्कळाल्–अपने (श्रेष्ठ) गुणों से; उयर्न्त वळ्ळल्–उत्तम बने हुए प्रभु; कोतमऩ् कमलम् पातम्–गौतम के कमल-चरण; वणङ्किऩऩ्–नमन कर; वलम् कॊण्टु–परिक्रमा करके; एत्ति–स्तुति करके; माचु अऱु कऱ्पिल् मिक्क–निर्दोष पतिपरायणता के कारण श्रेष्ठ बनी हुई; अणङ्किऩै–देवी को; अवऩ् कै ईन्तु–उनके हाथ में प्रदान कर; आण्टु–तब; अरु तवनोटुम्–उत्तम तपस्वी के साथ; तूय–पवित्र; मणम् किळर् चोलै–सुवास-पूरित आश्रम को; नीङ्कि–छोड़कर; मणि मतिल्–सुन्दर प्राचीरवाले; मितिलै कण्टार्–मिथिला नगर को; कण्टार्–देखा। ५५५

गुण-पूर्ण और उत्तम श्रीराम ने गौतम के पैरों में दण्डवत किया; उनकी परिक्रमा करके स्तुति की । फिर अकलंक पतिपरायणा अहल्या को उनके हाथ में सौंपा । उसके बाद वे तपोधन विश्वामित्र के साथ, उस सुगन्धपूर्ण आश्रम को छोड़कर सुन्दर प्राचीरवाले मिथिला नगर की ओर गये । (कवि अहल्या को अकलंक पतिव्रता कहते हैं । उससे मानना पड़ेगा कि अहल्या अचल पतिपरायणा थीं । देवेन्द्र सम्बन्धी कार्य में देवेन्द्र का और स्त्री-सुलभ चापल्य का दोष है । अपने चापल्य का प्रायश्चित्त उन्होंने अनेक साल पत्थर रहकर किया । यह उनका पति का शाप मानकर प्रायश्चित करना इस बात का प्रमाण है कि वे अपने पति पर श्रद्धा रखती थीं । अहल्या का यह नया 'जन्म' श्रीराम का प्रसाद था । इसलिए वे पितृतुल्य हो गये । अतः उचित ही है कि कवि ईन्त-शब्द का प्रयोग करते हैं, जिसका प्रयोग बड़ों के छोटे के हाथ में दान देते समय किया जाता है) । ५५५

10. मितिलैक् काट्चिप् पडलम् (मिथिलादृश्य-दर्शन पटल)

मैयऱु मलरि नीङ्गि यान्शॆय्मा दवत्तिऩ् वन्दु
शॆय्यव ळिरुन्दा ळॆऩ्ऱु शॆऴुमणिक् कॊडिहळ् ळॆऩ्ऩुम्
कैहळै नीट्टि यन्दक् कडिनहर् कमलच् चॆङ्गण्
ऐयऩै यॊल्लै वावॆऩ् ऱऴैप्पदु पोऩ्ऱ दऩ्ऱे 556

अन्त कटि नकर्–वह श्रेष्ठ नगर; याऩ् चॅय् मा तवत्तिऩ्–मेरे किये हुए बड़े तप के फलस्वरूप; चॅय्यवळ्–श्री लक्ष्मीदेवी; मै अऱु–निर्मल; मलरिऩ् नीङ्कि–(कमल) पुष्प से अलग होकर; वन्तु इरुन्ताळ्–आ ठहरी हैं; अॅऩ्ऱु–यह कहते हुए; कमलम् चॅम् कण् ऐयऩै–कमलदल-सम लाल आँख वाले को; चॅऴुमणि–सुस्वर वाली घंटियाँ-बँधी; कॉटिकळ् अॅऩ्ऩुम्–ध्वजाएँ रूपी; कैकळै नीट्टि–हाथों को बढ़ाकर; ऑल्लै वा–शीघ्र आइये; अॅऩ्ऱु–कहकर; अऴैप्पतु पोऩ्ऱतु–बुलाता-सा है। ५५६

इस पद में मिथिला नगर के प्रासादों पर फहरनेवाली ध्वजाओं का वर्णन है। वे ध्वजाएँ उस नगर के हाथों के समान हैं। ये ध्वजाएँ जब फहरती हैं और उनमें बंधी घण्टियाँ बजती हैं तब ऐसा लगता है कि वह नगर अपने हाथों से कमलाक्ष श्रीराम को यह कहते हुए बुला रहा है कि मेरे तपोबल के कारण श्रीलक्ष्मीदेवी, निर्मल कमल-पुष्प को छोड़कर यहीं आकर बस रही हैं। आप शीघ्र आ जायँ। ध्वजाएँ ऊपर फहर रही हैं, अतः वे ही पहले दृश्यमान हैं। ५५६

निरम्बिय माडत् तुम्बर् निरैमणिक् कॉडिह ळॅल्लाम्
तरम्बिऱ रिऩ्मै युऩ्ऩित् तरुममे तूदु शॅल्ल
वरम्बिल्पे रऴहिऩाळै मणञ्शॅय्वाऩ् वरुहिऩ् ऱाऩॅऩ्
ऱरम्बयर् विशुम्बि ऩाडु माडलि ऩाडक् कण्डार् 557

निरम्पिय माटत्तु उम्पर–(सुन्दरता और श्रेष्ठता-) पूर्ण प्रासादों के ऊपर; निरै मणि कॉटिकळ् अॅल्लाम्–पंक्तिबद्ध सुन्दर ध्वजाएँ सब; तरम् पिऱर् इऩ्मै उऩ्ऩि–योग्य कोई दूसरा नहीं, यह सोचकर; तरुममे तूतु चॅल्ल–धर्म ही दूत होकर गया, उस पर; वरम्पु इल्—सीमा-हीन; पेर् अऴकिऩाळै–बहुत सुन्दरतावाली को; मणम् चॅय्वाऩ्–विवाहने के लिए; वरुकिऩ्ऱाऩ्–आते हैं; अॅऩ्ऱु–यह सोचकर (आनन्द से); अरम्पैयर्–देवांगनाओं के; विचुम्पिऩ् आटुम् आटलिऩ्–आकाश में किये हुये नृत्य के समान; आट–फहरती थीं, यह; कण्टार्–देखा। ५५७

और भी उन ध्वजाओं का हिलना देवांगनाओं के अत्यन्त संतोष के साथ नाचने के समान था। शोभा और समृद्धि से भरे उन प्रासादों के ऊपर फहरनेवाली ध्वजाओं को देवांगनाओं के समान यह आनन्द था कि सीताजी के योग्य वर श्रीराम के सिवा दूसरे नहीं हैं; मानों धर्म स्वयं दूत के रूप में जाकर अत्यन्त सुन्दरी सीतादेवी को विवाहित करने के लिए उनको बुला ला रहा है। (प्रेमी-प्रेमिका मिलन में दौत्य का स्थान मुख्य और उत्कृष्ट है। इधर धर्म के हाथ में कवि वह काम सौंप देते हैं। इस मिलन का शुभ फल देवताओं के लिए हितकारी है। अतः देवांगनाएँ नाचती हैं। ध्वजाओं पर उनके नृत्य की साम्यता आरोपित है)। ५५७

पहऱ्कदिर् मऱैय वाऩप् पाऱ्कडल् कडुप्प नीण्ड
तुहिऱ्कॉडि मिदिलै माडत् तुम्बरिऱ् ऱुवऩ्ऱि निऩ्ऱ

मुहिऱ्कुलन् दडवुन् दोऱु नऩैवऩ मुहिलिऩ् चूऴ्न्द
अहिऱ्पुहै कदुवुन् दोऱु मुलर्वऩ वाहक् कण्डार् 558

पकल्कतिर् मऱैय–दिन की किरणें छिप गयीं, तब; वाऩम्–आकाश; पाल् कटल् कटुप्प–क्षीरसागर के समान दिखायी दे; मितिलै माटत्तु उम्परिल्–मिथिला के सौधों के ऊपर; तुवऩ्ऱि निऩ्ऱ–संकुलित रही; नीण्ट तुकिल् कॉटि–ऊँची चीर की ध्वजाएँ; मुकिल् कुलम्–मेघ-कुल को; तटवुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों सहलाती हैं; नऩैवऩ–भीग जानेवाले और; मुकिलिऩ् चूऴ्न्त–मेघों के समान फैले हुए; अकिल् पुकै–अगरु-धुआँ; कतुवुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों जम जाता है; उलरवऩ–सूखनेवाले; आक–बने; कण्टार्–यह देखा। ५५८

इसमें भी ध्वजाओं का वर्णन है। सूर्य छिप गये। इन ध्वजाओं ने आकाश को क्षीरसागर के समान श्वेत बना दिया। वे ध्वजाएँ मेघ-कुल से सम्बन्ध पाकर भीग जाती हैं। पर मेघों के समान प्रासादों के अन्दर से उठ आनेवाले अगरु-धुएँ के लगने पर सूख जाती हैं। इस विनोद को विश्वामित्र, श्रीराम और लक्ष्मण तीनों ने देखा। ५५८

आदरित् तमुदिऱ् कोऱोय्त् तवयव अमैक्कुन् दऩ्मै
यादॅऩत् तिहैप्प दल्लाऩ् मदऩऱ्कु मॅऴुद लाहाच्
चीदैयैत् तरुद लाले तिरुमह ळिरुन्द शॅय्य
पोदॅऩप् पॉलिन्दु तोऩ्ऱुम् पॉऩ्मदिऩ् मिदिलै पुक्कार् 559

मतऩऱ्कुम्–मदन के लिए भी; आतरित्तु–मन से चाहते हुए; कोल्–तूलिका को; अमुतिल् तोयत्तु–अमृत में डुबोकर, (चित्र बनाते समय); अबयवम् अमैक्कुम् तऩ्मै–अवयव बनाने का प्रकार; यातु ऍऩ–कैसा, सोचते हुए; तिकैप्पतु अल्लाल्–चकित खड़ा रहने के सिवाय; ऍऴुतल् आका–नहीं अंकित कर सकता है ऐसी; चीतैयै–सीतादेवी को; तरुतलाले–दिलाने से; तिरुमकळ् इरुन्त–श्रीलक्ष्मीदेवी-बसित; चॅय्य पोतु ऍऩ–लाल (कमल-) फूल के समान; पॉलिन्तु तोऩ्ऱुम्–शोभायमान दिखनेवाले; पॉऩ् मतिल्–स्वर्ण के प्राचीरवाले; मितिलै पुक्कार्–मिथिला में (तीनों ने) प्रवेश किया। ५५९

स्वयं मदन भी बड़ी लगन के साथ तूलिका में अमृत लेकर सीताजी का चित्र बनाने का प्रयत्न करे तो भी सीताजी के दैवी-सुन्दरता-युक्त अवयवों को अंकित नहीं कर पायेगा और निष्क्रिय होकर चकित रह जायगा। ऐसी अप्रतिम और अनिन्द्य सुन्दरी देवी सीता इस मिथिला में आकर वास कर रही हैं। इसलिए यह नगर स्वर्णमय प्राचीरों के साथ श्रीलक्ष्मीदेवी का पीठ, दलयुक्त कमल के समान शोभायमान है। उस नगर में उन तीनों ने प्रवेश किया। ५५९

शॊऱ्कलै मुऩिव ऩुण्ड शुडर्मणिक् कडलुन् दुऩ्ऩि
अऱ्कलन् दिलङ्गु पऩ्मी ऩ्ऱुम्बिय वाऩुम् बोल

विऱ्कलै नुदलि ऩारु मैन्दरुम् वॆऱुत्तु नीत्त
पॊऱ्कलऩ् किडन्द माड नॆडुन्दॆरु वरिदिऱ् पोऩार् 560

चॊल् कलै मुऩिवऩ् उण्ट–(तमिऴ-) भाषा के व्याकरण शास्त्र के निर्माता (अगस्त्य) से पिया हुआ; चुटर् मणि कटलुम्–उज्ज्वल रत्नों से भरे सागर (के समान) और; अल्–रात में; तुऩ्ऩि–घने रूप से; कलन्तु इलङ्कु–मिले हुए चमकनेवाले; पल्मीऩ् अरुम्पिय–अनेक नक्षत्रों से पूरित; वाऩुम् पोल–आकाश के समान; किटन्त–पड़े हुए; विल् कलै नुतलिऩारुम्–धनुष और चन्द्रकला-सदृश भालवालियाँ और; मैऩ्तरुम्–तरुण पुरुष; वॆऱुत्तु नीत्त--उपेक्षित कर जिनको फेंक चुके हैं; पॊऩ् कलऩ् किटन्त–वे स्वर्णाभरण जिन पर पड़े हैं, और; माटम्--बड़े-बड़े प्रासादों वाले; नॆटु तॆरु–लम्बे (राज-) मार्ग से होकर; अरितिऩ्–सपरिश्रम; पोऩार्–चले। ५६०

वे वीथियों से होकर चले। एक लम्बी वीथी, जिसमें बड़े-बड़े प्रासाद हैं, अनेक रत्नों से भरे समुद्र के समान है, उस रत्नाकर के समान जो शब्द-शास्त्र- (व्याकरण-) कार अगस्त्य के जल को पी जाने से सारे प्रकाशमय रत्नादि को प्रकट करता हुआ सूखा पड़ा था। वह रात में अन्धकार के समय के आकाश के समान भी है जिसमें अनेक नक्षत्र चमकते हैं। वीथी-समुद्र में या वीथी-रूपी आकाश में रत्नों या नक्षत्रों के स्थान में वे स्वर्णाभरण पड़े हैं, जिनको प्रणय-व्यापार में लगे तरुण और तरुणियों ने, रूठन के अवसर पर उतार फेंक दिया था। चलते हुए इस बात की सावधानी रखनी पड़ती थी कि वे आभरण उनके पैरों में चुभ न जायँ। इसलिए वे सश्रम जाते थे। ५६०

ताऱुमाय् तऱुहट् कुऩ्ऱऩ् दडमद वरुवि ताऴ्प्प
आऱुमायक् कलिऩ मावि लाऴियु मिऴिन्दो राऱाय्च्
चेऱुमाय्त् तेर्ह ळोडत् तुहळुमा यॊऩ्ऱो डॊऩ्ऱु
माऱुमा ऱाहि वाळा किडक्किला मरुहिऱ् चॆऩ्ऱार् 561

ताऱु माय्–अंकुश तोड़नेवाले; तऱुकण् कुऩ्ऱम्–निडर पर्वत (-सम गज); तटमत अरुवि ताऴ्प्प–अधिक मद नीर बहाते हैं, तब; आऱुम् आय्–नदी बनकर; कलिऩम् मा–लगामवाले घोड़ों का; विलाऴि इऴिन्तु–झाग गिरकर; ओर् आऱु आय् उम्–(दूसरी) एक नदी बनकर; तेर्कळ् ओट–रथ दौड़ते हैं, तब; चेऱुम् आय्–पंक बनकर; तुकळुम् आय्–धूलि बनकर; ऑऩ्ऱॊटु ऑऩ्ऱु माऱु माऱु आकि–एक दूसरे से विपरीत बनकर; वाळा किटक्क इला–चुप (एक रस) न रह सकनेवाले; मऱुकिल् चॆऩ्ऱार्–बड़े मार्ग पर चले। ५६१

और दूसरी वीथी देखिये। अंकुश तोड़नेवाले मद-मत्त गज मद-नीर बहाते हैं उससे वह वीथी नदी (के समान) बन जाती है। लगाम-युक्त अश्वों के मुख से इतना झाग बहता है कि दूसरी नदी बन जाती है। रथ चलते हैं और कीचड़ भी बन जाती है। फिर वह सूखकर धूलि बन जाती है। इस तरह वीथी, नदी में, पंक में और धूलि में बदलती रहती है और कभी भी एक सी नहीं रहती। ५६१

तण्डुद लिऩ्ऱि यॊऩ्ऱित् तलैत्तलै शिऱन्द कादल्
उण्डपिऩ् कलविप् पोरि लॊशिन्दमॆऩ् महळि रेपोल्
पण्डरु किळवि यार्तम् पुलवियिऱ् परिन्द कोदै
वण्डॊडु किडन्दु तेऩ्शोर् मणिनॆडुन् दॆरुविऱ् चॆऩ्ऱार् 562

तलै तलै चिऱन्त कातल्–परस्पर बढ़नेवाले प्रेम में; तण्टुतल् इऩ्ऱि ऑऩ्ऱि–बिना बाधा के संगम कर; उण्ट पिऩ्–भोग चुकने के बाद; कलवि पोरिल्--प्रणय-समर में; ऑचिन्त–थकी हुई; मॆल् मकळिरे पोल्–सुकुमारियों की ही तरह; पण् तरुम् किळवियार्–संगीत के समान बोलीवालियों से; तम् पुलवियिल्–अपनी रूठन के अवसर पर; परिन्त कोतै–उतारकर फेंकी गयी मालाएँ; वण्टोटु किटन्त–भ्रमरों के साथ पड़ी रहीं; तेऩ् चोर्–और शहद बहाती रहीं (जिन पर); मणि नॆटु तॆरुविल्–उन मनोरम दीर्घ मार्ग पर; चॆऩ्ऱार्–चले। ५६२

वे तीसरी वीथी पर से चलते हैं। उसमें वे पुष्पमालाएँ पड़ी हैं जिनको प्रासादों के अन्दर से सुमधुर-संगीत के समान बोली वाली स्त्रियों ने उतार कर फेंक दिया था। उन पर शहद की बूँदें पायी जाती हैं और भ्रमर मँडराते रहते हैं। ये मालाएँ उन्हीं स्त्रियों के समान हैं जिन्होंने अपने प्रियतमों के साथ अन्योन्यसम बढ़ते उत्साह के साथ अबाध संगम किया था और प्रणय-समर में शक्ति खोकर निर्बल हो पड़ी थीं। (उनके माला के समान सुकुमार शरीरों के ऊपर के स्वेदकण शहद की बूँदें हैं और उन पर पतियों की दृष्टि भ्रमरों के समान मँडरा रही है)। ५६२

नॆय्दिर णरम्बिऱ् ऱन्द मऴलयि ऩियऩ्ऱ पाडल्
तैवरु महर वीणै तण्णुमै तऴुवित् तूङ्गक्
कैवऴि नयऩम् जॆल्लक् कण्वऴि मऩमुम् जॆल्ल
ऐयनुण् णिडैया राडु माडह वरङ्गु हण्डार् 563

नॆय् तिरळ् नरम्पिऩ् तन्त--घी-लगी तन्त्री से उत्पन्न; मऴलैयिऩ् इयऩ्ऱ पाटल्–मधुर, तोतली बोली के समान गीत; तैवरुम्–गाने योग्य; मकर वीणै–मकर वीणा और; तण्णुमै–मृदंग; तऴुवि तूङ्क–लय के साथ स्वर देते; कै वऴि–हस्तमुद्रा के मार्ग पर; नयऩम् चॆल्ल–दृष्टि भेजती हुयी; कण् वऴि–आँखों के अनुगमन में; मऩमुम् चॆल्ल–मन को चलाते हुए; ऐयम् नुण् इटैयार्–अस्तित्व के सम्बन्ध में संशय पैदा करनेवाली पतली कमरों की नर्त्तकियों के; आटकम् अरङ्कु–स्वर्णमय नृत्यमंच; कण्टार्–(तीनों ने) देखे। ५६३

उन्होंने एक नाट्यमंच देखा। वहाँ मकर-वीणा का वादन हो रहा था। उस वीणा की तंत्रियाँ घी आदि के लगे रहने से बहुत ही मनोरम सुस्वर निकाल रही थीं। मर्दल बज रहा था। दोनों में लय था। तब हाथों पर नयन चलाते हुए और उन नयनों के पीछे अपना मन लगाते हुए, अस्तित्व के सम्बन्ध में संशय पैदा करनेवाली बहुत पतली कमरवाली नर्त्तकियाँ नाच रही थीं। (मकर के आकार की होने से यह मकर-वीणा

कहलायी। हाथों पर दृष्टि रखना और दृष्टि के पीछे मन का लगा रहना— इसका अर्थ है कि नर्त्तकी की हस्तादि मुद्राएँ उसके मनोभावों को पूर्णरूप से परिलक्षित करती थी। मर्दल = मृदंग सा एक बाजा)। ५६३

पूशलि नॆळ्ुन्द वण्डु मरुङ्गिनुक् किरङ्गिप् पॊङ्ग
माशुरु पिऱवि पोल वरुवतु पोव दाहिक्
काशरु पवळच् चॆङ्गाय् मरकतक् कमुहिऱ् पूण्ड
ऊशलिऩ् महळिर् मैन्दर् शिन्दैयो डुलवक् कण्डार् 564

माचु उरु पिऱवि पोल—वासना (दोष) के कारण होनेवाले जन्मों के समान; वरुवतु पोवतु आकि—(पेंग मारनेवाले) आने-जानेवाले होकर; काचु अरु—निर्दोष; पवळम् चॆम् काय्—प्रवाल-सम लाल फलों के साथ; मरकतम्—मरकत-रंग के; कमुकिल् पूण्ट—गुवाक वृक्षों पर बँधे हुए; ऊचलिऩ्—झूलों में; मकळिर्—रमणियाँ; पूचलिऩ् अॆळुन्त वण्टु—कलरव के साथ उठे भ्रमर; मरुङ्कितुक्कु—उनकी कमर की सहानुभूति में; इरङ्कि पॊङ्क—द्रवित होकर शोर मचावें, ऐसा; मैन्तर् चिन्तैयोटु—तरुण पुरुषों के मनों के साथ; उलव—झूलते; कण्टार्—देखा। ५६४

उनके मार्ग पर ऐसा स्थान आया जहाँ तरुणी रमणियाँ झूले झूल रही थीं। झूले सुपारी के वृक्षों पर बँधे झूलते थे। वे वृक्ष मरकत-रंग के थे और उनके फल सुडौल और प्रवाल सम लाल थे। (या प्रवालों के बने फलों से युक्त मरकत-निर्मित तरु के समान बने खम्भे थे।) वे झूले ऊपर-नीचे पाप-पुण्य कर्मानुसार होनेवाले जीव-जन्म के समान नीचे-ऊपर आ-जा रहे थे। जब वे स्त्रियाँ पेंग भर रही थीं तब उनके ऊपर से (धरी मालाओं से) भ्रमर उठते और ऊँचे स्वर करते मानों वे उन स्त्रियों की कमर का बल खाना देखकर सहानुभूति-जनित पीड़ा से कुछ कह रहे हों। उन स्त्रियों का झूलना जो तरुण देख रहे थे उनके मन भी झूल रहे थे। (यानी विविध भावाकुल मन के साथ उनको देख रहे थे)। ५६४

वरप्परु मणियुम् बॊऩ्नु मारमुङ् गवरि वालुम्
शुरप्पुडै यहिलु मञ्जैत् तोहैयुन् दुम्बिक् कॊम्बुम्
कुरप्पणै निरप्पु मळ्ळर् कुविप्पुऱक् करैह डोरुम्
परप्पिय पॊऩ्ऩि यन्न वावणम् बलवुङ् गण्डार् 565

वरम्पु अरु—मापहीन; मणियुम्—रत्न; पॊऩ्नुम्—स्वर्ण; आरमुम्—चन्दन-काष्ठ; कवरिवालुम्—चामर; चुरम् पुटै अकिलुम्—जंगल के भागों से प्राप्त अगरु; मञ्ञै तोकैयुम्—मयूरपंख, (और); तुम्पि कॊम्पुम्—गजदन्त (इनके); कुरम्पु अणै निरप्पुम्—खेतों के मेड़ बनानेवाले; मळ्ळर्—कृषक (द्वारा); कुविप्पु उऱ—ढेर लगाये जाते हैं, (ऐसा खेतों की भूमि में) और; करैकळ् तोरुम् परप्पिय—तीरों पर बिखेरती छोड़ चलनेवाली; पॊऩ्ऩि अऩ्ऩ—कावेरी के समान; आवणम् पलवुम्—दूकानों की अनेक वीथियाँ; कण्टार्—देखीं। ५६५

अब वे बाज़ार में आ गये। वहाँ रत्न, स्वर्ण, चन्दन व अगरु के काष्ठ-खण्ड, चामर, मोर के पंख, हाथी-दाँत द्रव्यादि बहुमूल्य वस्तुएँ ढेरों में भी पड़ी रहीं और यत्र-तत्र भी पड़ी मिलीं। दोनों किनारों की दूकानों के साथ वह वीथी कावेरी (पॊन्ऩि-स्वर्णमयी) नदी के समान लगी जो मणि, स्वर्ण आदि वस्तुएँ बहा ले आती हैं; जो किनारों पर ही नहीं, पास के खेतों की भूमि में भी पहुँचकर पड़ी रहती हैं। जब कृषक खेत में काम करते हैं तब मेड़ बनाते वक्त इनको उठाकर उनके ढेर लगा देते हैं। (व्यापारी और कृषक में तुलना है; कावेरी और वीथी में तुलना है। सामान दोनों के लिए साधारण है)। ५६५

कॊट्पुरु कलिऩप् पाय्माक् कुयमहऩ् मुडुक्कि विट्ट
मट्कलत् तिहिरि पोल वाळियिऩ् वरुव मेलोर्
नट्पिऩि लिडैय ऱाद ञाऩिह ळुणर्वि ऩॊऩ्राय्क्
कट्पुलत् तिऩैय वॆऩ्ऱु तॆरिविल तिरियक् कण्डार् 566

कॊट्पु उरु--दत्त-चित्तता के साथ; कलिऩम् पाय् मा–लगाम में दौड़नेवाले अश्व; कुयम्कऩ् मुट्कुकु विट्ट–कुम्हार से घुमाये गये; मण्कलम् तिकिरि पोल–घड़े बनानेवाले चाक के समान; वाळियिऩ् वरुव–गोल पथ पर जो दौड़ते हैं; मेलोर् नट्पिऩिल्–बड़े मनुष्यों की मित्रता के समान; ञाऩिकळ् इटै अऱात–ज्ञानियों के अबाध; उणर्विऩ्–मनोभाव समान; ऒऩ्ऱु आय्–एकरस होकर; कण् पुलत्तु–दृक् इन्द्रिय के लिए; इऩैय ऎऩ्ऱु–क्या है, यह; तॆरिवु इल–ज्ञात नहीं होकर; तिरिय–घूमते हैं, यह; कण्टार्–देखा। ५६६

एक स्थान में घुड़दौड़ का दृश्य है। अश्व-गोल मार्ग में दौड़ाये जाते हैं। वे अश्व कुलाल (कुम्हार) के चक्र के समान बहुत तेज़ी से, मानों निराधार, घूमते हैं, उनकी गति बड़ों की मित्रता या ज्ञानियों के मनोभाव के समान समरस है। वे इतनी तीव्र गति से दौड़ते हैं कि आँखों को यह भ्रम हो जाता है कि ये कौन सी चीज़ है? । ५६६

तयिरुरु मत्तिऱ् काम शरम्पडत् तलैप्पट् टूडुम्
उयिरुरु काद लारि ऩॊऩ्ऱैयॊऩ् ऱोरुव हिल्ला
शॆयिरुरु मऩत्त वाहित् तीत्तिरळ् शॆङ्गण् शिऩ्द
वयिरवाऩ् मरुप्पि याऩै मलैयॆऩ मलैव कण्डार् 567

तयिर् उरु मत्तिऩ्–दही में मथानी के समान; काम चरम्–मन्मथ शर; पट–लगे, तब; तलैप्पट्टु–(संगम में) उतारू होकर; ऊटुम्–(सुख-वर्धन के लिए) रूठनेवाले; उयिर् उरु कातलारिऩ्–प्राणप्यारे प्रणयी-प्रणयिनियों के समान; वयिरम् वाल् मरुप्पु याऩै–वज्रकठोर, सफेद दाँतवाले गज; ऒऩ्ऱै ऒऩ्ऱु उरुवकिल्ला–एक दूसरे से बचकर अलग न हो पाकर; चॆयिर् उरु मऩत्तु आकि–कोपाक्रांत मन होकर; चॆम् कण्–लाल आँखों द्वारा; ती तिरळ् चिऩ्त--अग्नि-राशि निकालते हुए; मलै ऎऩ–पर्वतों के समान; मलैव–भिड़ते हैं; कण्टार्–(उनको) देखा। ५६७

उन्होंने एक स्थान पर हाथियों की लड़ाई देखी। दो हाथी आपस में गुँथ रहे हैं। वे प्रणय-व्यापार-रत, परस्पर अत्यन्त प्राण-सम प्रिय पुरुष-स्त्री के जोड़े के समान भिड़ते हैं जो मदन-शर का लक्ष्य बनकर संगम में लग जायँ और बीच-बीच में सुख-संवर्धनकारी रूठन से किंचित अलग हो जायँ। वे हाथी पर्वत के समान हैं और उनके दाँत वज्र-सम कठोर और श्वेत रंग के हैं। वे वैर के साथ आँख से अंगारों की झड़ी-सी निकालते हुए टकरा रहे हैं। वे चाहते हुए भी अलग हो नहीं पाते। ५६७

वाळरम् बॉरुद वेलु मऩ्मदऩ् शिलैयुम् वण्डिऩ्
केळॉडु किळैत्त नीलच् चुरुळुञ्जॅङ् गिडैयुङ् गॉण्डु
नीळिरुङ् गळङ्ग नीक्कि निरैमणि माड नॅऱ्ऱिच्
चाळरन् दोऱुन् दोऩ्ऱुञ् जन्दिर वुदयङ् गण्डार् 568

वाळ् अरम् पॉरुत वेलुम्–तीक्ष्ण रेती से रगड़कर सान-धरे भाले; मऩ्मतऩ् चिलैयुम्–मदन का चाप; वण्टिऩ् केळॉटु--भ्रमर-कुलों के साथ; किळैत्त–ऊपर छिटके; नीलम् चुरुळुम्--नीले छल्लों; चॅम् किटैयुम्–लाल खुखड़ी-खण्ड; कॉण्टु–साथ लेकर; नीळ् इरु कळङ्कम् नीक्कि–दीर्घकाल का कलंक दूरकर; निरै मणि माटम् नॅऱ्ऱि--पंक्ति-बद्ध रत्नमय सौधों के ऊपर; चाळरम् तोऱुम् तोऩ्ऱुम्–हर झरोखे पर दिखनेवाले; चन्तिर् उतयम्–चन्द्रों के उदय; कण्टार्–देखे। ५६८

किसी वीथी में जाते समय उनको मणिमय प्रासादों के ऊपर झरोखों से स्त्रियों के सुन्दर मुख दिखाई दिये। रेती से सान-चढ़े दो भाले, मन्मथ-चाप, भ्रमर, नीले छल्ले, लाल खुखड़ी (एक जल-पौधा जिसका तना काग के समान मृदु है) के खण्ड— इनके साथ, अपना दीर्घकालीन कलंक को धुलाकर चन्द्र उदित हुआ, ऐसा लगनेवाले मुख थे वे। भाले (नोक की तीक्ष्णता के कारण) आँखों के उपमान बने; भ्रमर और नीले छल्ले, घुँघराले बालों के; धनुष भाल का; और खुखरी-खण्ड अधर के उपमान हैं। ५६८

पळिक्कुवळ् ळत्तु वाक्कुम् पशुनऱुन् देऱऩ् मान्दि
वॅळिप्पडु नहैयवाहि वॅऱियऩ मिऴऱ्ऱु हिऩ्ऱ
ऑळिप्पिऩु मॉळिक्क वॉट्टा वूडलै युणर्त्तु मापोल्
कळिप्पिऩै युणर्त्तुञ् जॅव्विक् कमलङ्गळ् पलवुङ् गण्डार् 569

पळिङ्कु वळ्ळत्तु–स्फटिक के कटोरों में; वाक्कुम्–भरी गयी; पचु नऱु तेऱल् मान्ति–ताजी और सुगन्धित ताड़ी पीकर; वॅळिप्पटु नकैय आकि–प्रकटित हासवाले होकर; वॅऱियऩ मिऴऱ्ऱ किऩ्ऱ–नशे में अर्थहीन शब्दों को तुतलानेवाले बन; ऊटलै–रूठन को; ऑळिप्पिऩुम्–छिपाना चाहने पर भी; ऑळिक्क ऑट्टा–न छिपा सक कर; उणर्त्तुम् आ(ऱु) पोल्–वह प्रकट हो ही जाती है ऐसा; कळिप्पिऩै–

(सुरापान-जनित) मोद को; उणर्त्तुम्–प्रकटित कर देनेवाले; चॆव्वि कमलङ्कळ् पलवुम्–सुन्दर कमल (-मुख) अनेक; कण्टार्–देखे (तीनों ने)। ५६९

स्त्रियाँ स्फटिक चषकों में ताड़ी ढालकर पी चुकी थीं। अतः उनके मुखों पर उल्लास के हास प्रकट हो रहे थे और मुखों से अनर्गल शब्द तुतली बोली में निकल रहे थे। इनके द्वारा उनको पीने से जो आनन्द प्राप्त हुआ वह प्रकट ही हो रहा था, यद्यपि वे उसको छिपाना चाहती थीं। यह वैसा ही था जैसे रूठन के अवसर पर हुई बातों को गोप्य रखने के प्रयास करने पर भी वे प्रकट हो ही जाती हैं। ऐसे उल्लसित कमल (मुख) उनमें अनेक के थे। (ये उच्चकुलवालियों की बातें नहीं हैं)। ५६९

वळ्ळुहिर्त् तळिर्क्कै नोव माडहम् पऱ्ऱि वार्न्द
कळ्ळॆन्न नरम्बु वीक्किक् कैयॊडु मन्नमुङ् गूट्टि
वॆळ्ळिय मुरुव ऱोऩ्ऱ विरुन्देन्न महळि रीन्द
तॆळ्विळिप् पाणित् तीन्देन् शॆविमडुत् तिन्िदु शॆऩ्ऱार् 570

मकळिर्–तरुणियाँ; वळ् उकिर्–नुकीले नखों और; तळिर् कै–पल्लव-कोमल हाथों को; नोव–दुखाते हुए; माटकम् पऱ्ऱि–कील घुमाकर; वार्न्त कळ् अॆन्न–धार के रूप में गिरनेवाले शहद के समान; नरम्पु वीक्कि–तन्त्री को सहलाकर; कैयॊटु मऩमुम् कूट्टि–हाथ के साथ मन को भी लगाकर; वॆळ्ळिय मुरुवल् तोऩ्ऱ–सफेद (दाँतों के) प्रकाश छिटकाकर मुस्कुराती हुई; विरुन्तु अॆन्न–दावत के समान; ईन्त–दी गयी; तॆळ् विळिपाणि–साफ़ सुन्दर मौखिक गीतरूपी; तीम् तेन्–मधुर शहद को; चॆवि मटुत्तु–कानों से सुनते हुए; इऩितु चॆऩ्ऱार्–सुख से चले। ५७०

उन्हें श्रवणों का आनन्द भी प्राप्त हुआ। कुछ स्त्रियाँ अपनी उँगलियों से, जो इतनी सुकुमार थीं कि कील को घुमाने में भी दुख होता था, मधु-धारा सम वीणा-तंत्रियों को सहलाकर, हाथ की गति पर मन का ध्यान लगाकर स्वर उठाते हुए वीणा वादन कर रही थीं और उसके साथ मंदहास छिटकाते हुए गा भी रही थीं। उस श्रुति-मधुर संगीत का आस्वादन करते हुए वे तीनों आगे बढ़े। (यहाँ, इस पद में, जैसे अन्य स्थलों में भी, याऴ् शब्द आया है जिसका अर्थ वीणा दिया गया है। याऴ् वीणा की ही तरह का एक वाद्य है जो अब प्रचलन में नहीं है। कहा जाता है कि याऴ् चार तरह के थे)। ५७०

मॆय्वरुम् बोह मॊक्क वुडऩुण्डु विलैयुङ् गॊळ्ळुम्
पैयर वल्हु लार्त मुळ्ळमुम् बळिङ्गुम् बोल
मैयरि नॆडुङ्ग णोक्कम् बडुदलुङ् गरुहि वन्दु
कैपुहच् चिवन्दु काट्टुङ् गन्दुहम् बलवुङ् गण्डार् 571

मॆय् वरुम् पोकम्–शारीरिक सुख-भोग; ऒक्क–(पुरुष के ही) समान; उटऩ् ऩुट–साथ-साथ प्राप्त करके; विलैयुम् कॊळ्ळुम्–उसका दाम भी लेनेवाली; पै अरव

मै–सर्प के फन के समान; अल्कुलार् उळ्ळमुम्–जघनप्रदेश की (वेश्या) के मन और; पळिङ्कुम् पोल–और स्फटिक के समान; मै, अरि, नॆट्टु कण्–अंजनवाली, डोरे सहित, आयत आँखें; पट्टुतलुम्–पड़ने पर; करुकि–काले रंग के बने; वन्तु; पुक–उनके हाथ में आ जाते ही; चिवन्तु–लाल बने; काट्टुम्–दिखनेवाले कन्तुकम् पलवुम् कण्टार्–अनेक कंदुक भी देखे। ५७१

उन्होंने कंदुक-क्रीड़ारत नारियों को देखा। वे कंदुक उन वेश्याओं के मन के समान, जो पुरुष के साथ-साथ, पुरुष का शारीरिक सुख जितना प्राप्त करती हैं, फिर भी दाम भी ले लेती हैं, और स्फटिक के समान रंग बदलते थे। वे स्त्रियों के हाथ में रहते वक्त लाल लग रहे थे; उनके हाथों से ऊपर जाते वक्त उनकी डोरे सहित आयत आँखों के काजल का रंग प्रतिबिंबित करते हुए काले हो जाते थे। (कम्बन वेश्याओं की उपमा अनेक जगह पर देते हैं। इधर उनका और एक तरह का व्यवहार बताया गया है। वे अपने पास आये पुरुष के अनुरूप अपने भाव बदल लेती हैं पर उनका मन निर्लिप्त है। स्फटिक भी पारदर्शी है और पास की वस्तुओं का रंग उसमें प्रतिलक्षित होता है)। ५७१

पङ्गयङ् गुवळै याम्बल् पडर्कॊडि वळ्ळै नीलम्
शॆङ्गिडै तरङ्गङ् गॊण्डै शिन्नैवरा लिन्नैय तेम्बत्
तङ्गळो डुवमै यिल्ला ववयवत् तहैमै शालुम्
मङ्गयर् विरुम्बि याडुम् वाविहळ् पलवुङ् गण्डार् 572

पङ्कयम्—कमल-पुष्प; कुवळै–कुवलय; आम्पल–लाल कुमुद; पटर कॊटि वळ्ळै–फैलनेवाली लता वळ्ळै के पत्र; नीलम्–नीलोत्पल; चॆम् किटै–लाल खुखड़ी (एक जल-बेल); तरङ्कम्–तरंगें; कॊण्टै–कॊण्टै मछलियाँ; चिन्नै वराल्–गाभिन वराल नाम की मछलियाँ; इन्नैय–और ऐसे; तेम्प–व्याकुल हों; तङ्कळोटु–अपने; उवमै इल्ला–उपमान-हीन; अवयवम् तकैमै चालुम्–अवयव-सौष्ठव में श्रेष्ठ; मङकैयर्–स्त्रियाँ; विरुम्पि आटुम्–उत्कण्ठित हो स्नान करनेवाली; वाविकळ् पलवुम्–वापियाँ, अनेक भी; कण्टार्–देखीं। ५७२

विश्वामित्र और श्रीराम और लक्ष्मण ने अनेक वापियाँ देखीं। उनमें सुन्दरी स्त्रियाँ स्नान कर रही थीं। उनके आनन, आँखें, मुख, कान, केश, अधर, त्रिबलियाँ और पिंडलियाँ आदि अवयव इतने सुडौल और सुघड़ थे कि उनको देखकर क्रमशः कमल, नील कुमुद, लाल कुमुद पुष्प; फैलकर बढ़नेवाली "वळ्ळै" के पत्ते; नीलोत्पल, व मछलियाँ, लाल खुखड़ी और गाभिन "वराल" मीन आदि इस बात को लेकर रोते थे कि हम उन अवयवों के समान सुन्दर नहीं बने हैं। ५७२

कडहमुङ् गुळैयुम् बूणुम् मारमुङ् गलिङ्ग नुण्णूल्
वडहमु महर याळुम् वट्टिन्ति कॊडुत्तु वाशत्

तॊडैयलङ् गोदै शोरप् पळिक्कुनाय् शिवप्पत् तॊट्टुप्
पडैनॆडुङ् गण्णार् वट्टाट् टाडिडम् बलवुङ् गण्डार् 573

कटकमुम्–कंकण; कुऴै–कुंडल; पूणुम्–और अन्य आभरण; आरमुम्–रत्नहार; नुण् नूल कलिङ्कम्–पतले सूत के बने वस्त्र; (नुण् नूल्) वटकमुम्–(महीन सूत के) उत्तरीय; मकर याऴुम्–मकर वीणा; वट्टिऩ्ऩि कॊटुत्तु–दाँव पर चढ़ाकर; वाचम् तॊटैयल्–सुवासित माला से अलंकृत; अम् कोतै–सुन्दर केश के; चोर–खुलकर लटकते; पळिङ्कु नाय् चिवप्प–स्फटिक की गोटी के लाल होते; तॊट्टु–(उसको) हाथ में लेकर; पटै नॆटु कण्णार्–हथियार सम आयत आँखों की स्त्रियाँ; वट्टु आट्टु–जुआ खेल के; आटु इटम् पलवुम्–खेलनेवाले अनेक स्थानों को; कण्टार्–देखा। ५७३

कहीं-कहीं स्त्रियाँ जुआ खेल रही थीं। वे अपने कंकण, कर्ण-कुंडल, अन्य आभूषण, रत्नहार, वस्त्र, उत्तरीय और मकर वीणा तक को दाँव पर चढ़ा देती थीं और इतनी तत्परता के साथ खेलती थीं कि उनके पुष्पालंकृत केश खुलकर लटकने लगे। गोटियाँ स्फटिक की थीं और उनको वे स्त्रियाँ इस तरह कसकर पकड़ती थीं कि उनकी हथेली लाल हो जाती और गोटी भी लाल रंग की लगने लगतीं। ५७३

इयङ्गुऱु पुलऩ्ग ळङ्गु मिङ्गुङ्गॊण् डेह वेहि
मयङ्गुपु तिरिन्तु निऩ्ऱु मऱुहुऱु मुणर्वि दॆऩ्ऩप्
पुयङ्गळिऱ् कलवैच् चानदुम् बुणर्मुलैच् चुवडु नीङ्गा
वयङ्गॊऴिऱ् कुमरर् वाळाट् टाडिडम् पलवुङ् गण्डार् 574

इयङ्कु उऱु पुलऩ्कळ्–सदा चलन-शील इन्द्रिय; अङ्कुम् इङ्कुम् कॊण्टु एक–इधर-उधर खींच ले जाने से; एकि–जाकर; मयङ्कुपु–भ्रमित होकर; तिरिन्तुम् निऩ्ऱुम्––घूमते-फिरते या खड़े रहकर; मऱुकु उऱुम् उणर्वु इतु–आकुलित रहनेवाली बुद्धि की स्थिति, यह; ऎऩ्ऩ–ऐसा मानने योग्य; वयङ्कु ऒऴिल्–शोभायमान सुन्दरता के; कुमरर्–पट्ठे; पुयङ्कळिल्–अपनी भुजाओं में; कलवै चाऩ्तुम्–सुगन्धित द्रव्य-मिश्रित चन्दन का लेप; पुणर् मुलै चुवटुम्––अन्तर-हीन रीति से सटे हुए स्तनों के (आलिंगन से प्राप्त) चिह्न; नीङ्का–बिना पोंछे; वाळ् आट्टु––खड्ग-अभ्यास; आटु इटम् पलवुम्–करनेवाले अनेक स्थान; कण्टार्–देखे। ५७४

पट्ठे कहीं-कहीं खड्ग का अभ्यास कर रहे थे। वे उस बुद्धि के समान पैंतरे बदलते रहते थे जो चंचल इन्द्रियों के पीछे जाकर भ्रम में पड़कर कहीं इधर जाती, कहीं उधर; और कहीं धक्का खाकर खड़ी रहती और आकुल हो जाती। उन युवकों के शरीर पर चन्दन के लेप के साथ आलिंगन के अवसर पर लगे प्रियाओं के मांसल स्तनों से अंकित चिह्न भी हैं। ५७४

वञ्जुड रुऱुवुऱ् ऱऩ्ऩ मॆऩ्ऩियर् वॆण्डिऱ् ऱीयुम्
नॆञ्जिऩ रीशऩ् कण्णि नॆऱुप्पुऱा वऩङ्ग ऩऩ्ऩार्

शॆञ्जिलैक् करत्तर् मादर् पुलविह डिरुत्तिच् चेन्द
कुञ्जियर् शुऴला निऩ्ऱ मैन्दर्दङ् कुऴाङ्गळ् कण्डार् 575

वॆम् चुटर् उरु उऱ्ऱतु अऩ्ऩ–गरम सूर्य ने रूप लिया, ऐसे; मेऩियर्–शरीरवाले; वेण्टिऱ्ऱु–माँगी गयी वस्तु को; ईयुम् नॆञ्चित्तर्–देनेवाले स्वभाव के; ईचऩ् कण्णिऩ् नॆरुप्पु उऱा–परमेश्वर की भाल की आँख की अग्नि से जो न जला; अऩङ्कऩ् अऩ्ऩार्–अनंग-सम; चॆम् चिलै करत्तर्–सुघटित धनुषवाले हस्तों के; मातर् पुलविकळ् तिरुत्ति–प्रेमिकाओं की रूठन शांत करके, (उस प्रयत्न में उनके महावर लगे पैरों की लात खाकर, उस कारण); चेन्त कुञ्चियर्–लाल (रंजित) हुए केश वाले; चुऴला निऩ्ऱ–घूम फिरनेवाले; मैन्तर् तम् कुऴाङ्कळ्–पट्ठों के समूहों को; कण्टार्–देखा। ५७५

उन्होंने अनेक सुन्दर युवकों के समूह देखे। वे सूर्य के रूपों के समान तेजोमय थे। वे याचक के प्रति दयालू थे। वे उन अनंगों के समान लगते थे जिनको परमेश्वर के भाल-नेत्र की अग्नि नहीं जला पायी है। उनके हाथ में धनुष थे, उनके केश लाल थे, क्योंकि उन पर उनकी प्रियतमाओं की लातें पड़ी थीं जब वे उनकी रूठन को दूर करने के प्रयास में लगे थे, और पैरों में लगा महावर केश को लाली दे गया। ५७५

पाक्कॊक् कुञ्जॊऱ् पैङ्गिळि यॊडुम् बलपेशि
माहत् तुम्बर मङ्गयर् नाण मलर्कॊय्युम्
तोहैक् कॊम्बिऩ् ऩऩ्ऩवर्क् कऩ्ऩ नडैतोऱ्ऱुप्
पोहक् कण्डे वण्डिऩ मार्क्कुम् पॊऴिल् कण्डार् 576

पचुमै किळियोटुम्–हरे (रंग के) शुकों के साथ; पाकु ऒक्कुम् चॊल्–चाशनी के समान मधुर बातें; पल–अनेक; पेचि–बोलती (करती) हुई; माकत्तु–स्वर्ग की; उम्पर मङ्कैयर्–देवांगनाएँ; नाण–लजा जायँ, ऐसे; मलर् कॊय्युम्–पुष्प चयन करनेवाली; तोकै, कॊम्पु, अऩ्ऩवर्क्कु–मयूर व पुष्पलता के समान (छविमय और कोमल और सुन्दर) रहनेवाली स्त्रियों से; अऩ्ऩम्–हंसों (को); नटै तोऱ्ऱु–चाल में हारकर; पोक कण्टु–(उनके) पीछे जाते हुए देखकर; वण्टु इऩम्–भ्रमर-कुल; आर्क्कुम्–जहाँ गुंजार करते थे; पॊऴिल्–उस फुलवारी को; कण्टार्–देखा। ५७६

वे राजमहल के पास आ गये। महल को घेरती हुयी खाई पड़ी है। उसके पास एक फुलवारी रही। उसमें कुछ रमणियाँ फूल चुन रही हैं। वे शुकों के साथ चाशनी के समान बोली में बोल रही हैं। उनको देखकर देवांगनाएँ भी लजा जाती हैं। वे मोरों के समान छविमय हैं और पुष्पलताओं के समान कोमल और मनोहर। उनकी चाल के सामने हंस हार मानकर उनके पीछे-पीछे चलते हैं। स्त्रियों की जीत पर भ्रमर वाहवाही करते गुंजार करते हैं। ५७६

उम्बर्क् केयुम् माळिहै योळि निळल्पाय
इम्बर्त् तोऩ्ऱुम् नाहर्द नाट्टिऩ् ऩॆळिल्काट्टिप्
पम्बिप् पॊङ्गुङ् गङ्गैयि ऩाळ्न्दु पडैमऩ्ऩऩ्
अम्बॊऱ् कोयिऱ् पॊऩ्मदिल् शुऱ्ऱुम् महळ्कण्डार् 577

उम्पर्क्कु एयुम्–देवों के लिए भी योग्य; माळिकै ओळि–प्रासादों की पंक्तियों की; निळल् पाय–परछाईं के पड़ने से; इम्पर् तोऩ्ऱुम्–इस लोक में आकर दिखनेवाले; नाकर् तम् नाट्टु–देवलोक की; इऩ् ऍळिल् काट्टि–रमणीय सुन्दरता प्रदर्शित कर; पम्पि पॊङ्कुम्–तरंगित होकर उमड़ती आनेवाली; कङ्कैयिऩ् आळ्न्तु–गंगा के समान गहरी बनकर; पटै मऩ्ऩऩ्–सेना-बहुल राजा (जनक) के; अम् पॊऩ् कोयिल्–सुन्दर स्वर्णमय राजमहल के; पॊऩ् मतिल् चुऱ्ऱुम्–स्वर्णमय प्राचीरों को घेरनेवाली; अकळ् कण्टार्–खाईं देखी। ५७७

(अब खाईं का वर्णन है) खाईं में देवों के लिए भी रहने योग्य मिथिला के प्रासादों की परछाईं पड़ती हैं। इससे यह खाईं ऐसा भ्रम पैदा करती है कि देवलोक इधर आ गया है। तरंगों के साथ उमंग भर कर बहनेवाली गंगा के समान वह गहरी है। वह महाराज जनक के स्वर्णमय महल के स्वर्णमय प्राचीरों को घेरकर पड़ी है। उस खाईं को उन्होंने देखा। ५७७

पॊऩ्ऩिऩ् शोदि पोदिऩि ऩाऱ्ऱम् पॊलिवेपोल्
तॆऩ्ऩुण् डेऩिऱ् ऱीम्जुवै शॆम्जॊऱ् कवियिऩ्बम्
कऩ्ऩिम् माडत् तुम्बरिन् माडे कळिपेडो
डऩ्ऩम् माडुम् मुऩ्ऱुऱै कण्डङ् गयनिऩ्ऱार् 578

पॊऩ्तिऩ् चोति–(श्रेष्ठ) स्वर्ण की आभा; पोतिऩ् इऩ् नाऱ्ऱम्–फूल की सुगन्ध; तॆऩ् उण् तेऩिल्–मधुमक्खियों से खाद्य शहद का; तीम् चुवै–मीठा स्वाद (जिसमें रहता, उस); चॆम् चॊल् कवि इऩ्पम्–सुस्पष्ट शब्दों की बनी कविता का आनन्द, (इन सबकी); पॊलिवे पोल्–उज्ज्वल व्याख्या के समान; कऩ्ऩि–कन्या सीतादेवी के; माटत्तु उम्परिऩ् माट्टु–प्रासाद के ऊपरी भाग में एक ओर; अऩ्ऩम्–हंसों के; कळि पेटॊटु आटम्–अपनी प्यारी हंसिनियों के साथ क्रीड़ा करने के लिए बने; मुन् तुऱै कण्टु–जलकुण्ड के साथ रहे सहन को देखकर; अङ्कु–वहाँ; अयल्–उस प्रासाद के पास; निऩ्ऱार्–खड़े रहे। ५७८

वे उस प्रासाद के पास आये जहाँ सीताजी रहती थीं। (विवाह होते तक कन्याओं को अलग भवन में रखने की प्रचलित प्रथा के अनुसार उस प्रासाद में वास कर रही थीं। उसको कन्या-सौध या कन्या-माढा कहा जाता है।) राजकुमारी, सीताजी स्वर्ण की आभा, पुष्प की सुगन्ध, मधुर-मधु सम शब्दों की बनी कविता का काव्यानन्द आदि की साक्षात् जीवित व्याख्या के समान छविमयी, सुगन्धित शरीरवाली और कविता के समान बोलनेवाली थीं। उनके प्रासाद की ऊपरी छत पर एक जलकुंड

बना था जिसमें हंस अपनी प्रिय हंसिनियों के साथ केलि करते थे। उस कुंड के पास खुला सहन भी था। उन सबको देखकर वे तीनों यात्री खड़े हो गये। ५७८

शॅप्पुङ् गालैच् चॅङ्गम लत्तोऩ् मुदल्यारुम्
ऑप्पॅण् पालुङ् कॉण्डुव मिप्पो रुवमिक्कुम्
अप्पॅण् डाऩे यायिऩ पोदिङ् गयऩ्मऱ्ऱोर्
ऑप्पॅङ् गेकॉण् डॅव्वहै नाडि युरैशॅय्हेऩ् 579

चॅम्मै कमलत्तोऩ् मुतल्–लाल कमल पर आसीन (ब्रह्मा) आदि; **यारुम्**–सभी; **चॅप्पुम् कालै**–चर्चा करते समय; **उवमिप्पोर्**–उपमा-कथन के समय; **ऑप्पु ऑण् पालुम् कॉण्टु**–उपमा-योग्य वस्तु को आठों दिशाओं में ढूँढकर; **उवमिक्कुम्**–अन्त में उपमित (जिनसे) करते हैं; **अ पॅण् ताऩे**–वह देवी स्वयं; **इङ्कु आयिऩपोतु**–यहाँ सीता बनी आ रहीं, तब; **अयल्**–अलग; **ओर् ऑप्पु**–एक उपमा; **ऍङ्के**–कहाँ; **ऍव्वकै**–कैसे; **नाटि**–परखकर; **कॉण्टु**–लेकर; **उरै चॅय्केऩ्**–कहूँगा। ५७९

सीता के वर्णन में किसकी उपमा दी जाय? ब्रह्मा से लेकर सभी लोग स्त्रियों की उपमा आठों दिशाओं में ढूँढकर आखिर श्रीलक्ष्मी को ही लेते हैं। वही श्रीलक्ष्मी तो सीताजी हैं। कवि पूछते हैं कि इनकी उपमा कहाँ, कैसे ढूँढ़ लाऊँ? । ५७९

पॊऩ्शेर् मॆऩ्काऱ् किण्किणि मार्बम् बुऩैयारम्
कॊऩ्शे रल्हुल् मेहलै ताङ्गुङ् गॊडियऩ्ऩार्
तऩ्शॆर् कोलत् तिऩ्ऩॆऴिल् काणच् चदकोडि
मिऩ्शे विक्क मिऩ्ऩर शॆऩ्ऩुम् बडिनिऩ्ऱाळ् 580

पॊऩ् चेर्–सौष्ठव-युक्त; **मॆऩ्काल्**–कोमल पैरों में पहना हुआ; **किण्किणि**–पैर का आभरण (घुँघरू); **मार्पम् पुऩै आरम्**–वक्ष पर पहना हुआ हार आदि; **कॊऩ् चेर्**–सुडौल; **अल्कुल्**–कटिप्रदेश में पहनी; **मेकलै**–मेखला; **ताङ्कुम्**–इनको धारण करनेवाली; **कॊटि अऩ्ऩार्**–पुष्पलता-समान सखियों को; **तऩ् चेर् कोलत्तु**–अपने स्वाभाविक रूप की; **इऩ् ऍऴिल् काण**–मनोरम सुन्दरता दिखाती हुई; **चतम् कोटि मिऩ् चेविक्क**–शत कोटि बिजलियों से सेवित; **मिऩ् अरचु**–विद्युतों में राजा (रानी); **ऍऩ्ऩुम् पटि**–है, ऐसा वर्णनीय रीति से; **निऩ्ऱाळ्**–(प्रासादों के ऊपर (हंसों के जलकुंड के पास) खड़ी रहीं। ५८०

सीताजी आकर उस खुली छत पर खड़ी हो गयीं। उनके साथ चेरियाँ खड़ी थीं जो पैरों में घुँघरू, वक्षों में हार आदि और कमरों में मेखला पहने हुए थीं। इन आभरणों से सज्जित, लताओं के समान रही वे भी इनकी स्वाभाविक सुन्दरता से मुग्ध होकर सीताजी को निहार रही थीं। तब सीताजी विद्युतों के समूहों से सेवित विद्युत्राज के समान शोभायमान खड़ी रहीं। ५८०

उमैया ळॊक्कुम् मङ्गय रुच्चिक् करम्वैक्कुम्
कमैयाण् मेऩि कण्डवर् काट्चिक् करैकाणार्
इमैया नाट्टम् बॆऱ्ऱिल मॆऩ्ऱा रिरुकण्णाल्
अमैया दॆऩ्ऱा रऩ्दर वाऩत् तवरॆल्लाम् 581

उमैयाळ् ऒक्कुम्–उमादेवी सदृश; मङ्कैयर्–देवियों से भी; करम् उच्चि वैक्कुम्–हाथ सिर पर रखकर (सम्माननीय); कमैयाळ्–क्षमाशीला; मेऩि–रूप-सौंदर्य; कण्टवर्–देखनेवालों ने; काट्चि करै काणार्–दर्शन, पूर्णरूप से कर, पार न पानेवाले (तृप्त न) होकर; इमैया नाट्टम्—पलक-हीन आँखें; पॆऱ्ऱिलम्–प्राप्त नहीं की हैं; ऎऩ्ऱार्–कहा; अऩ्तरम् वाऩत्तवर् ऎल्लाम्–आकाश के सुर लोग सब; इरु कण्णाल् अमैयातु–दो आँखों से नहीं बन सकता; ऎऩ्ऱार्–बोले। ५८१

उमादेवी की समानता करनेवाली श्रेष्ठ देवियाँ भी सीताजी को देखकर इनका महत्व मानती हैं और सम्मान में अपने सिरों पर हाथ जोड़े रख लेती हैं। सीताजी क्षमा आदि उत्तम गुणों से भी भूषित हैं। इनका रूप-सौन्दर्य देखकर आँखें नहीं अघातीं। मानव की आँखें पार नहीं पातीं और अतृप्त होकर मानव कहते हैं कि हमारा भाग्य नहीं रहा और हमें ऐसी आँखें मिली हैं जिनको पलकें झपककर बन्द कर देती हैं और हम लगातार देख नहीं पाते। निर्निमेष आँखोंवाले देवता लोग भी अतृप्त हैं कि हमारे तो दो ही आँखें हैं और इनका सौन्दर्य पूर्णरूप से देखने के लिए दो आँखें यथेष्ट नहीं हैं। ५८१

वॆऩ्ऱम् माऩैक् काययिल् वेलुङ् गॊलैवाळुम्
पिऩ्ऱम् माऩप् पेऱ्कय लञ्जप् पिऱळ्कण्णाळ्
कुऩ्ऱम् माडक् कोवि ऩळिक्कुङ् गडलऩ्ऱि
अऩ्ऱम् माडत् तुम्ब रळिक्कुम् समुदऩ्ऩाळ् 582

अ माऩै वॆऩ्ऱु–उस (उपमान की) हरिणी को जीतकर; काय् अयिल् वेलुम्–संहारक तीक्ष्ण भाले; कॊलै वाळुम्–और घातिनी तलवार को; पिऩ्ऱ–(स्पर्धा में) पीछे छोड़कर; माऩम् पेर् कयल् अञ्च–मान और चंचलता से युक्त कयल् मछलियाँ डरें, ऐसा; पिऱळ् कण्णाळ्–चंचल आँखों वाली; कुऩ्ऱम् आट–मन्दर पर्वत के घूमने से; कोविऩ् अळिक्कुम्–श्रीविष्णु द्वारा दत्त; कटल् अऩ्ऱि–क्षीरसागर के अतिरिक्त; अ माटत्तु उम्पर–उस प्रासाद की छत (के); अऩ्ऱु अळिक्कुम्–तभी दिये हुए; अमुतु अऩ्ऩाळ्–अमृत के समान थीं। ५८२

सीताजी की आँखें अति सुन्दर हैं। उनके सामने अधीरता, तीक्ष्णता, आयतता आदि के कारण उपमित मृग, भाला, तलवार आदि वस्तुएँ टिक नहीं सकतीं। सौन्दर्य-स्पर्द्धा में देवी की आँखें इनको बहुत पीछे छोड़ आयी हैं। ऐसी सीताजी को छत पर देखकर यह भ्रम होता है कि ये अमृत हैं; लेकिन वह अमृत नहीं जिसको मंदर पर्वत को घुमाकर

बहुत परिश्रम के बाद पाया गया। यह अमृत कन्या-सौध ने अपनी छत पर अनायास अभी प्रकट किया है। ५८२

पॆरुन्दे ऩिऩ्शॊऱ् पॆण्णिव ळॊप्पा ळॊरुपॆण्णैत्
तरुन्दा ऩॆऩ्ऱा ऩाऩ्मुह ऩिऩ्ऩुन् दरलामो
अरुन्दा वन्दत् तेव रिरन्दा लमुदॆऩ्ऩुम्
मरुन्दे यल्ला दॆऩ्ऩिऩि नल्हुम् मणियाऴि 583

मणि आऴि–रत्नाकर (समुद्र); अरुन्ता अन्त तेवर्–(अमृत छोड़) किसी वस्तु को जिन्होंने नहीं खाया था, वे देव; पॆरु तेऩ् इऩ् चॊल्–बहुप्रशंसित शहद सम मधुर-वाणी की; पॆण् इवळ्–देवी, इनकी; ऑप्पाळ् ऑरु पॆण्णै–समानता करनेवाली एक स्त्री की; इरन्ताल्–याचना करें तो; तरलामो–दे सकता है क्या; अमुतु ऍऩ्ऩुम् मरुन्ते अल्लातु–अमृत नामक (अमरता-प्रदायी) औषध के सिवा; इऩि ऍऩ् नल्कुम्–और क्या दे सकता है; इऩ्ऩुम्–और भी; नाऩ्मुकऩ् ताऩ् तरुम्–ब्रह्मा भी देना (चाहें) तो भी; तरल् आमो–दे सकते हैं क्या। ५८३

ऐसी देवी को अब न तो ब्रह्मा सृष्ट कर सकते हैं, न रत्नों का आगर क्षीरसागर ही दे सकता है। चाहें तो सागर अमृत के सिवा अन्य कुछ न रखनेवाले देवों के माँगने पर फिर से अमृत उत्पन्न कर सकता है; पर ऐसी सुन्दरी कन्या को नहीं दे सकता। (ब्रह्मा शायद अमृत भी नहीं दिला सकते।) सीतादेवी स्वयंभूता हैं। ५८३

अऩैयाण् मेऩि कण्डपि ऩण्डत् तरशाळुम्
विऩैयोर् मेवुम् मेऩकै यादिम् मिळिर्वेऱ्कण्
इऩैयो रुळ्ळत् तिऩ्ऩलि ऩोऱ्तम् मुहमॆऩ्ऩुम्
पऩितोय् वाऩिऩ् वॆण्मदिक् कॆऩ्ऱुम् पहलॆऩ्ऱे 584

अण्टत्तु अरचु आळुम् विऩैयोर्–देवलोक के शासनकर्ता (इन्द्र आदि) से; मेवुम्–आदृत; मिळिर् वेल् कण्–प्रकाशमय, शक्ति-सम आँखोंवाली; मेऩकै आति इऩैयोर्–मेनका आदि ऐसी अप्सराएँ; अऩैयाळ् मेऩि कण्टपिऩ्–इनका रूप (-सौंदर्य) देखने के बाद; तम् मुकम् ऍऩ्ऩुम्–अपने मुखरूपी; पऩि तोय्–शीतल (मनोरम); वाऩ् इऩ् वॆण् मतिक्कु–छबिमान, सुखद श्वेत चन्द्र के लिए; ऍऩ्ऱुम्–हमेशा; पकले ऍऩ्ऱु–दिन हो है, समझकर; इऩ्ऩलिऩोर्–उदास हैं। ५८४

मेनका आदि ऐसी स्त्रियाँ हैं जिनका देवेन्द्र आदि भी, उनके सौन्दर्य के कारण आदर करते हैं। बर्छी-सम आँखोंवाली वे भी सीताजी को देखकर इस बात से उदास हैं कि हमारे मुख-चन्द्र के लिए सदा के लिए दिन ही दिन हो गया है, यानी हमारे मुखों की आकर्षकता कम हो गयी है। ५८४

मलर्मे ऩिऩ्ऱिम् मङ्गैयि वैयत् तिडैवैहप्
पलहा लुन्दम् मॆय्न्नऩि वाडुम् बडिनोऱ्ऱार्

अलहो विल्ला वन्दण रोनल् लऱमेयो
उलहो वाऩो उम्बर्कॉं लोवी दुणरेमाल् 585

इ मङ्कै–यह देवी; मलर्मेल् निऩ्ऱु–कमलपुष्प पर से; इ वैयत्तु इटै वैक–इस धरणी में (आकर) ठहरीं, इसके लिए; तम् मॅय्–अपना शरीर; नऩि वाटुम्पटि–शरीर को खूब क्लेश देते हुए; पल कालुम् नोऱ्ऱार्–दीर्घकाल तक तपस्या करनेवाले; अलकु ओवु इल्ला अन्तणरो–(क्या) अगणित ब्राह्मण हैं; नल् अऱमेयो–श्रेष्ठ धर्मदेवता ही; उलको–यह पृथ्वी; वाऩो–देवलोक; उम्परो–उनके भी ऊपर के लोक; ईतु उणरेम्–यह नहीं जानते । ५८५

यह देवी कमल का वास छोड़कर इस भूमि में वास करने पधारी हैं तो यह किसकी तपस्या का अनुग्रह है ? क्या अगणित ब्राह्मणों ने अपने शरीर को क्लेश देते हुए लम्बे काल तक तपस्या की थी ? या स्वयं धर्म देवता ने व्रत रखा था ? या इस लोक ने; या देवलोक ने; या उनके ही ऊपर के लोकों के वासियों ने तप किया ? यह हम नहीं जानते । ५८५

तन्ने रिल्ला मङ्गयर् शॅङ्गैत् तळिर्माऩे
अऩ्ऩै तेऩे यारमु देयॅऩ् ऱडि पोऱ्ऱ्
मुऩ्ऩे मुऩ्ने मॉय्म्मलर् तूवि मुऱैशारप्
पॉऩ्ऩे शूऴुम् बूवि नॉदुङ्गिप् पॉलिहिऩ्ऱाळ् 586

तम् नेर् इल्ला–अपनी सानी न रखनेवाली; मङ्कैयर्–सखियाँ; चॅम् कै तळिर् अरुण—पल्लव-सम हाथ वाली; माऩे–मृगी; अऩ्ऩे–माता; तेऩे–शहद; आर् अमुते–अपूर्व अमृत; ऍऩ्ऱु–कहकर; अटि पोऱ्ऱ–चरणों की रक्षा में; मुऩ्ऩे मुऩ्ऩे–(पग धरने के) पूर्व, पूर्व ही; मॉय् मलर् तूवि–घने रूप से पुष्पजाल बिछाती; मुऱैचार–क्रम से पास-पास आती हैं, ऐसा; पॉऩ् चूऴुम् पूविऩ्–स्वर्णरंग के मकरंद-भरे फूलों पर; ऑतुङ्कि–चलती हुई; पॉलिकिऩ्ऱाळ्–कांतिमय दर्शन देती हैं । ५८६

सीताजी के साथ उनकी चरण-सेवा-रत, सुन्दरी सखियाँ रहती हैं। जब सीताजी चलने लगती हैं तब उनके पैर को कठोर भूमि पर लगने से पीड़ा न हो, इस वास्ते सखियाँ आगे-आगे पुष्प-राशि बिखराती जाती हैं। सीताजी मकरन्द-भरे पुष्प-समूहों पर पर रखती चलती हैं। सखियाँ उनको पल्लव-कोमल-हस्ते, मृगनयनी, माते, मधुतुल्ये, अपूर्व अमृतोपमे आदि शब्दों से सम्बोधित करती हैं। ५८६

कॉल्लुम् वेलुङ् गूऱ्ऱमु मॅऩ्ऩुम् मिवैयॅल्लाम्
वॅल्लुम् वल्लुम् मॅऩ्ऩ मदर्क्कुम् विऴिकॉण्डाळ्
शॉल्लुन् दऩ्मैत् तऩ्ऱदु कुऩ्ऱुञ् जुवरुन्दिण्
कल्लुम् बुल्लुङ् कण्डुरु हप्पॅण् कऩिनिऩ्ऱाळ् 587

कॉल्लुम्–मारक; वेलुम् कूऱ्ऱमुम्–भाला, यम; ऍऩ्ऩुम् इवै ऍल्लाम्–संज्ञित इन सब को; वॅल्लुम् वॅल्लुम् ऍऩ्ऩ–जीतेगा, जीतेगा अवश्य, यह मानना पड़े ऐसा;

मतर्क्कुम् विऴि कॉण्टाळ्—विजय-गर्व-शालिनी आँखों वाली; **पॅण् कऩि**—स्त्रीत्व जिनमें पूर्णता को प्राप्त है उनको; **कुऩ्ऱुम्**—पर्वत और; **चुवरुम्**—दीवारें; **तिण् कल्लुम्**—कठोर प्रस्तर और; **पुल्लुम्**—(कोमल) घास; **कण्टु**—देखकर; **उरुक**—पसीज जाते हैं, ऐसा; **निऩ्ऱाळ**—आ स्थित हुई; **अतु**—वह (सुन्दरता); **चॉल्लुम् तन्मैत्तु अऩ्ऱु**—कहने योग्य नहीं (मुझ में सामर्थ्य नहीं है)। ५८७

"मारक भाला और कालदेव —इनको भी हम मात दे देंगी। वे चलकर पीड़ा देते हैं। हम अपनी जगह पर रहकर पुरुषों को विह्वल करा देंगी।" ऐसा गर्व करती सी दिखनेवाली आँखें लेकर और स्त्रीत्व के सारे (रूप-गुण) ऐश्वर्य से पूरित सीताजी खड़ी थीं। उनका रूप देखकर अचेतन वस्तुएँ भी जैसे दूर के गिरि, पास की दीवार, कठोर प्रस्तर और कोमल तृण भी द्रवीभूत हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में खड़े होने की मुद्रा की सुन्दरता वर्णनीय नहीं रही, यानी हमारी वर्णनशक्ति के बाहर की है। ५८७

वॅङ्गळि विऴिक्कॉरु विऴवु मायवर्, कण्कळिऱ् काणवे कळिप्पु नल्हलाऩ्
मङ्गयर्क् किऩियदोर् मरुन्दु मायवळ्, एङ्गणा यहऱ्किऩि यावदाङ् गॉलो 588

मङ्कैयर्क्कु—स्त्रियों के लिए; **अवर् कण्कळिऩ् काणवे**—उनकी आँखों से देखते ही; **कळिप्पु नल्कलाऩ्**—परमानन्द देने से; **वॅम् कळि विऴिक्कु**—प्यारी मत्त आँखों के लिए; **ऑरु विऴवुम् आय्**—एक 'उत्सव' बनकर; **इऩियतु**—मधुर, **ओर् मरुन्तुम्**—अनुपम अमृत भी; **आयवळ्**—जो बनीं वे; **इऩि**—आगे; **ऍङ्कळ् नायकऱ्कु**—हमारे नायक के लिए; **यावतु आमो**—क्या बनेंगी। ५८८

देवी सीता को जब स्त्रियाँ देखती हैं तब वे सहसा मन खो बैठती हैं। उनकी प्यारी आँखों में देवी सीता प्रमोदाधार उत्सव और संजीवनी अमृत लगती हैं। तो हमारे प्रभु श्रीराम को क्या लगनेवाली हैं ? । ५८८

इऴैहळुङ् गुऴैहळु मिऩ्ऩ मुऩ्ऩमे, मऴैपॉरु कण्णिणै मडन्दै मारॉडुम्
पऴहिय वॅऩ्ऩिऩुमिप् पावै तोऩ्ऱलाल्, अऴहॅनु मवैयुमो रऴहु पॅऱ्ऱवे 589

कुऴैकळुम्—कुंडल आदि आभरण; **इऴैकळुम्**—हार आदि आभरण; **इऩ्ऩ मऴै पोरु**—ऐसे मेघ सम (शीतल, मधुर); **कण् इणै**—चक्षुद्वय वाली; **मटन्तै मारॉटुम्**—रमणियों के साथ; **पऴकिय ऍऩ्ऩिऩुम्**—अभ्यस्त हैं तो भी; **इ पावै तोऩ्ऱलाल्**—इस प्रतिमा (सम सुघड़) देवी के प्रकट होने से; **अऴकु ऍऩ्ऩुम् अवैयुम**—अन्धकार कहलानेवाले वे भी; **ओर अऴकु पॅऱ्ऱ**—विलक्षण अलंकार (सुन्दरता) पा गये। ५८९

सीताजी की देह पर रहनेवाले कुंडल, हार, आदि आभरणों ने अभूतपूर्व सुन्दरता प्राप्त की है। ये आभरण पहले भी अभ्रशीतल (तापहारिणी) आँखों की स्त्रियों से सम्पर्क पा चुके हैं। तब वे उनका अलंकार बनते थे। सीताजी के जन्म के बाद सीताजी इनकी अलंकार बन गयी हैं। इसलिए उनके सौंदर्य को सुन्दरता मिल गयी। ५८९

❀ ऍण्णरु नलत्तिऩा ऴिऩैय निऩ्ऱुऴि
कण्णॉडु कण्णिणै कदुवि यॉऩ्ऱैयॉऩ्
ऱुण्णवु निलैपॅऱा दुणर्वु मॉऩ्ऱिड
अण्णलु नोक्किऩा ऩवळु नोक्किऩाळ् 590

ऍण् अरु नलत्तिऩाळ्–अकल्पनीय (रूप गुण-) सौष्ठव वाली; इऩैयळ् निऩ्ऱुऴि–इस प्रकार खड़ी रहीं, उस समय; कण्णॉटु कण् इणै–चक्षुद्वय के साथ चक्षुद्वय; ऑऩ्ऱै ऑऩ्ऱु कतुवि–एक दूसरे का स्पर्श कर; उण्ण–अंगीभूत करने (पीने) लगे, तो; उणर्वुम्–मन की सुधें भी; निलै पॅऱातु–(अपने-अपने स्थान पर) रह न पाकर; ऑऩ्ऱिटि–मिल गये उस स्थिति में; अण्णलुम्–प्रभु ने भी; नोक्किताऩ्–दृष्टि डाली; अवळुम् नोक्किऩाळ्–उन्होंने (सीताजी ने) भी देखा । ५९०

अचिंत्य रूप-गुण-समृद्ध सीतादेवी खड़ी थीं। तब श्रीराम ने उन पर दृष्टि गड़ायी। सीताजी ने भी उनको देखा, तब आँखों के दो जोड़े एक दूसरे को पकड़ कर निगलने (अंगीभूत करने) लगे और (श्रीराम और सीता) दोनों की भावनाएँ (सुधियाँ) आपस में मिलकर एक हो गयीं। उनमें दृष्टि-स्पर्श और मन-संगम दोनों एक साथ हो गये। ५९०

नोक्किय नोक्कॅऩु नुदिकॉळ् वेलिणै, आक्किय मदुहयाऩ् ऱोळि लाऴ्ऩ्दऩ
वीक्किय कऩैकऴल् वीरऩ् शॅङ्गणुऩ्, दाक्कणङ् गऩैयवळ् तऩत्तिऱ् ऱैत्तवे 591

नोक्किय नोक्कु ऍऩुम्–देखनेवाली आँखें रूपी; नुति कॉळ्–नुकीले; वेल् इणै–भाले का जोड़ा; आक्किय मतुकैयाऩ्–अति बलशाली (श्रीराम) के; तोऴिल्–भजाओं में; आऴ्ऩ्तत–गहरे पैठे; वीक्किय–बद्ध; कऩै कऴल् वीरऩ्–स्वरित पायल-धारी वीर की; चॅम् कण्णुम्–लाल (-कमल सी) आँखें भी; ताक्कु अणङ्कु अऩैयवळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी (सम) सीताजी के; तऩत्तिल्–उरोजों में; तैत्त–जा लगीं । ५९१

सीताजी ने दृष्टि श्रीराम की आँखों से हटाकर उनकी बलशाली भुजाओं पर बर्छियों के समान गाड़ी। श्रीरामजी की दृष्टि सीतादेवी के उरोजों पर पड़ी। कवि सीताजी की दोनों आँखों को दो बर्छियाँ कहते हैं, क्योंकि श्रीराम की भुजाएँ सुदृढ़ थीं। सीताजी के, जो श्रीलक्ष्मी की अवतार थीं, उरोज मृदुल थे इसलिए श्रीराम की आँखें कमल-दल के समान थीं। और भी, श्रीराम की भुजाओं पर सीताजी की दृष्टि चुभी या गड़ी। इधर श्रीराम की आँखैं सीताजी के उरोजों पर लगीं। कितना सरस वर्णन है ! और कैसा अर्थपूर्ण ! । ५९१

❀ परुहिय नोक्कॅऩुम् बाशत् ताऱ्पिणित्
तॉरुवरै यॉरुवर्त मुळ्ळ मीर्त्तलाल्
वरिशिलै यण्णलुम् वाट्क णङ्गैयुम्
इरुवरु माऱिप्पुक् किदय मॅय्दिनार् 592

परुकिय नोक्कु–(रूप-सुधा को) पीनेवाली दृष्टि; ऍऩ्ऩुम् पाचत्ताल्–रूपी पाश से; पिणित्तु–बाँधकर; ऑरुवर् तम् उळ्ळम्–एक का मन; ऑरुवरै–दूसरे को; ईर्त्तलाल्–खींचने से; वरि चिलै अण्णलुम्–बन्धनयुक्त धनुष के धारक प्रभु; वाळ् कण् नङ्कैयुम्—तलवार-सम आँखोंवाली देवी; इरुवरुम्–दोनों; इतयम् माऱिपुक्कु–मन बदलकर प्रवेश कर; ऍय्तिऩार–बस गये। ५९२

आपस का देखना क्या था मानों उनकी दृष्टियाँ पाश के समान थीं। श्रीराम की दृष्टि ने सीता को बाँधकर खींचा और सीताजी की दृष्टि ने श्रीराम को। वे अब एक दूसरे के हृदय में स्थान बदलकर बस गये। यानी श्रीराम के हृदय में तलवार सम आँखोंवाली सीताजी का रूप आ गया और सीताजी के हृदय में श्रीराम का धनुर्धारी रूप। ५९२

❀ मरुङ्गिला नङ्गयुम् वशैयि लैयऩुम्
ऑरुङ्गिय विरण्डुडऱ् कुयिरॊऩ् ऱायिऩार्
करुङ्गडर् पळ्ळियिऱ् कलवि नीङ्गिप्पोय्प्
पिरिन्दवर् कूडिऩाऱ् पेशल् वेण्डुमो 593

मरुङ्कु इला नङ्कैयुम्—कटि-हीन (क्षीण-कटि) देवी; वचै इल् ऐयऩ्–अनिन्द्य प्रभु; इरण्टु उटऱ्कु–दो शरीरों के लिए; ऑरुङ्किय–सम्मिलित; उयिर् ऑऩ्ऱु–एक प्राण; आयिऩार्–बन गये; करु कटल् पळ्ळियिल्–विशाल क्षीरसागर-शय्या से; कलवि–संग; नीङ्कि पोय्–अलग हो, जाकर; पिरिन्तवर्–जो अलग हुए; कूटिऩाल्–(वे) मिलें तो; पेचल् वेण्टुमो–वर्णन करना भी चाहिए क्या। ५९३

अब दोनों एक-प्राण हो गये। दोनों एक-एक अभाव के कारण मनोरम बने हैं। श्रीराम में अपयश का अभाव था, तो सीता में कटि की क्षीणता थी। ये दोनों अनपायी (नित्य) दम्पति हैं जो क्षीरसागर में एक साथ हैं, वे ही अलग-अलग जाकर जन्मे थे। अब वे फिर मिल रहे हैं। तब कहने को क्या है? (इस पद्य में क्षीरसागर का ‘करु’ विशेषण दिया गया है। तमिऴ में करु का अर्थ विशाल भी है, काला या नीला भी। क्षीरसागर मेघ-श्याम विष्णु के रंग के प्रतिफल में नीला दिखता है।) ५९३

❀ अन्दमि ऩोक्किमै यणैहि लामैयाल्, पैन्दॊडि यॊवियप् पावै पोऩ्ऱऩळ्
शिन्दैयु निऱैयुमॆय्न् नलऩुम् पिऩ्शॆल, मैन्दऩु मुऩियॊडु मऱैयप् पोयिऩाऩ् 594

पैन्तॊटि–चोखे स्वर्ण के आभरण धारण करनेवाली; अन्तम् इल् नोक्कु–अनन्त लौट न आनेवाली दृष्टि के कारण; इमै अणैकिलामैयाल्–पलकें नहीं झपकीं, इसलिए; ओवियम् पावै पोऩ्ऱऩळ्—चित्र-लिखित सुन्दरी के समान हो गयीं; चिन्तैयुम्–मन; निऱैयुम्–और संयम; मॆय् नलऩुम्–शरीर की दृढ़ता; पिऩ् चॆल—साथ-साथ पीछे आने देते हुए; मैन्तनुम्–कुमार भी; मुऩियॊटु–मुनि (विश्वामित्र) के साथ; मऱैय–अदृश्य; पोयिऩाऩ्–चले गये। ५९४

सीताजी की कामना भी अपूर्ण रह गयी। वे आँखें फाड़े, बिना

पलक गिराये देखती रहीं। तब वे चित्र में लिखित बाला के समान लगीं। श्रीराम विश्वामित्र के साथ चले गये और अदृश्य भी हो गये। उनके पीछे-पीछे सीताजी का मन और संयम भी चले गये। श्रीराम इनको भी लेकर अदृश्य हो गये —यह कहना भी ठीक है। ५९४

❀ पिऱैयॅऩ्ऩु नुदलवळ् पॅण्मै यॅऩ्पडुम्, नऱैकम ऴलङ्गला ऩयऩ कोशरम्
मऱैदुलु मऩमॅऩ्ऩु मत्त याऩैयिऩ्, निऱैयॅऩ्ऩु मङ्गुश निमिर्न्दु पोयदे 595

नऱै कमऴ् अलङ्कलाऩ्–सुवासपूर्ण मालाधारी; नयऩ कोचरम् मऱैतलुम्—नयन-गोचर दूर से बाहर जाने पर; मऩम् ऍऩ्ऩुम् मत्त याऩैयिऩ्–मनरूपी मत्त हाथी का; निऱै ऍऩ्ऩुम् अङ्कुचम्–संयम रूपी अंकुश; निमिर्न्तु पोयतु–सीधा हो गया; पिऱै ऍऩ्ऩुम् नुतलवळ्–चन्द्रकला-सम ललाटवाली के; पॅण्मै–स्त्रीत्व (क्रीड़ा आदि गुण); ऍऩ् पटुम्–क्या (किस काम का) होगा। ५९५

संयम का धैर्य ही चला गया तो स्त्री-सुलभ लज्जा आदि गुण किस काम का? ज्योंही स्वरित पायलधारी श्रीराम नयन-पथ से अदृश्य हो गये त्योंही सीता के मनरूपी मत्तगज का संयमरूपी अंकुश सीधा होकर बेकार हो गया। वे बेहद विह्वल हो गयीं। ५९५

मालुऱ वरुदलु मऩमु मॅय्युन्दऩ्, नूलुऱु मरुङ्गुल्पो नुडङ्गु वाणॅडुङ्
गालुऱु कण्वऴिप् पुहुन्त कामनोय्, पालुऱु पिऱैयॅऩप् परन्द दॅङ्गुमे 596

माल् उऱ वरुतलुम्—काम-मोह के बढ़ते ही; मऩमुम्–मन और; मॅय्युम्–शरीर; तऩ् नूल् उऱु मरुङ्कुल् पोल्–अपनी सूत्र-क्षीण कटि के समान; नुटङ्कुवाळ्–मुरझानेवाली (सीताजी) की; काल् उऱु नॅटु कण् वऴि–मार्ग बनी दीर्घ आँखों से होकर; काम नोय्—इच्छा-रोग; पाल् उऱु पिऱै ऍऩ–दूध में पड़े मोर की बूँद (जामन) के समान; ऍङ्कुम् परन्ततु–(शरीर में) सर्वत्र फैल गया। ५९६

काम-मोह बढ़ता गया। इसलिए सीताजी का शरीर और मन उनकी कटि के समान बलहीन हो गये। उनकी आँखों के द्वारा अन्दर आया काम-रोग, दही में पड़े (जामन) खटाई के दही की बूंद का सा काम कर गया। सारे शरीर में वह रोग व्याप्त हो गया। ५९६

नोमुऱु नोय्निलै नुवल हिऱ्ऱिलळ्, ऊमरिऩ् मऩत्तिडै युऩ्ऩि विम्मुवाळ्
कामऩु मॉरुशरङ् गरुत्ति ऩॅय्दऩऩ्, वेमॅरि यदऩिडै विऱहिट् टेऩ्ऩवे 597

नोम्–पीड़ित हैं; उऱु नोय् निलै–पीड़क रोग की स्थिति; नुवलकिऱ्ऱिलळ्–नहीं कहतीं; ऊमरिऩ्–गूँगों के समान; मऩत्तु इटै–मन में ही; उऩ्ऩि–सोचकर; विम्मुवाळ्–तरसतीं; कामऩुम्–मन्मथ भी; वेम् ऍरि अतऩ् इटै–जलनेवाली अग्नि में; विऱकु इट्टतु ऍऩ्ऩ–ईंधन दिया, ऐसा; ऑरु चरम्–एक (कमल-) शर को; करुत्तिऩ्–उनके अन्तःकरण में; ऍय्तऩऩ्–चलाया। ५९७

सीताजी काम-वेदना से पीड़ित रहीं, पर उन्होंने किसी से उसकी चर्चा नहीं की। गूँगों के समान मन में ही महसूस करती घुलने लगीं। तब

कामदेव ने भी, जलती आग में ईंधन डालने के समान उनके स्तनों पर एक शर छोड़ा। (यह शर कमल-पुष्प शर था जो कामोत्तेजक बताया जाता है।) ५९७

निऴलिडु कुण्डल मदऩि ऩॅय्दिडा
अऴलिडा मिळिर्न्दिडु मयिल्हॉळ् कण्णिऩाळ्
शुऴलिडु कून्दलुन् दुहिलुञ् जोर्दरत्
तऴलिडु वल्लिये पोलच् चाम्बिऩाळ् 598

निऴल् इटु–कांति विकीर्ण करनेवाले; कुण्टलम् अतऩिऩ् ऍय्तिटा–कुंडलों तक जाकर; अऴल् इटातु मिळिर्न्तिटुम्–बिना आग में डाले ही चमकनेवाले; अयिल् कॉळ्–भाले के समान; कण्णिऩाळ्–आँखों वाली; चुऴल् इटु कून्तलुम्–सिरे पर घुँघराले बने केश और; तुकिलुम्–वस्त्र; चोर्तर–खिसक पड़े; तऴल् इटु–आग में पड़ी; वल्लिये पोल–पुष्पलता के समान; चाम्पिऩाळ्–मुरझायीं। ५९८

उनकी आँखें कानों और कानों के उज्ज्वल कुंडलों तक गयी थीं; बर्छी-सदृश तीक्ष्ण थीं। उनके घुँघराले केश खुलकर बिखर गये और वस्त्र खिसकने लगे। वे भी अग्नि में डाली गयी पुष्पवल्ली के समान मुरझा गयीं। ५९८

तऴङ्गिय कलैहळु निऱैयुञ् जङ्गमुम्, मऴुङ्गिय वुळ्ळमु मऱिवु मामैयुम्
इऴन्दव ळिमैयवर् कडैय यावैयुम्, वऴङ्गिय कडलॆऩ वऱिय ळायिऩाळ् 599

तऴङ्किय कलैकळुम्–मधुर ध्वनि उठानेवाले मेखला आदि आभरण; चङ्कमुम्–शंख-कंकण; निऱैयुम्–संयम का धैर्य; मऴुङ्किय उळ्ळमुम्–निस्तेज मन; अऱिवुम्–बुद्धि; मामैयुम्–और शरीर की छवि; इऴन्तवळ्–खोयी हुयी; इमैयवर् कटैय–देवों के मथने से; यावैयुम् वऴङ्किय–(अपने पास के) सबको दे चुका, उस; कटल् ऍऩ–(क्षीर-) सागर के समान; वऱियळ् आयिऩाळ्–निर्धन(निस्सार)बन गयीं। ५९९

अब उनसे मेखला आदि आभरणों, शंख-कंकण आदि के साथ संयम की दृढ़ता, पहले ही कुंठित पड़ा हुआ मन, बुद्धि, शरीर की कांति सब छूट गये। और वे उस क्षीरसागर के समान निर्धन (निस्सार) हो गयीं, जिसको मथकर देवों ने सारी वस्तुएँ निकाल ली थीं। ५९९

कलङ्गुऴैन् दुहऩॅडु नाणुङ् गण्णऱ
नलङ्गुऴै तरनहिऩ् मुहत्ति लेवुण्डु
मलङ्गुऴै यॆऩवुयिर् वरुन्दिच् चोर्दरुम्
पॉलङ्गुऴै मयिलैक्कॉण् डरिदिऱ् पोयिऩार् 600

कलम् कुऴैन्तु उक–आभरण खिसककर गिरते हैं; ऩॅटु नाणुम्–गरिमा देनेवाली लज्जा भी; कण् अऱ–हटती जाती है; नलम् कुऴै तर–देह की कांति छूटती जाती है; नकिल् मुकत्तिल्–उरोज-मुखों पर; ए उण्टु–मन्मथशर खाकर; मलङ्कु

उळै अॅऩ वरुन्दि–आहत हरिणी के समान वेदना पाकर; उयिर् चोर् तरुम्–प्राण-विकलित हुई; पॉलम् कुऴैमयिलै–स्वर्ण कुंडल-धारिणी, मयूर-सम छवि वाली को; अरितिऩ् कॉण्टु पोयिऩार्–सायास अन्दर ले गयीं। ६००

सखियों ने देखा कि सीताजी बेहाल हो रही हैं। आभरण खिसककर गिर चुके। लाज छूटती जा रही थी। शरीर की कांति मन्द पड़ गयी थी। वे शराहत हरिणी के समान स्तनों पर मन्मथ के कमल-शर की चोट खाकर प्रांणविह्वल हो रही हैं। तब वे स्वर्णकुंडल-धारिणी और मोर सी छटावाली, उनको सायास अन्दर ले गयीं। (कुंडल नहीं गिरे थे, क्योंकि वे कानों में गुँथे हुए थे)। ६००

कादॉडुङ् गुऴैपॉरु कडैक्क णङ्गैतऩ्
पादमुङ् गरङ्गळु मऩैय पल्लवम्
तादॉडुङ् गुऴैयॉडु मडुत्त तण्पऩिच्
चीदनुण् डुळिमल रमळिच् चेर्त्तिऩार् 601

कुऴै–कुंडलों को; कातॉटुम् पॉरु–कानों से टकरानेवाली; कटै कण्–आँखों की कोर से देखनेवाली; नङ्कै तऩ्–देवी के; पातमुम् करङ्कळुम् अऩैय–चरण और हाथ की समानता करनेवाले; पल्लवम्–पल्लवों को; तातॉटुम् कुऴैयॉटुम् अटुत्त–परागों और पुष्प-दलों के सहित; तण्चीतम्–अधिक शीतल; नुण् पऩि तुळि–सूक्ष्म ओस की सी सीकरों से सिंचित; मलर् अमळि–पुष्प-शय्या पर; चेर्त्तिऩार्–लिटाया। ६०१

वे कर्णों और कर्ण-कुंडलों तक जानेवाली अपनी आँखों की कोरों से देख रही थीं। उनको सखियों ने पल्लव-शय्या पर लिटा दिया। वह देवी के हाथ और पैरों के ही समान, पल्लव-पुष्प आदि की बनी और अति शीतल हिम-सीकरों से सिंचित शय्या थी। ६०१

नाळऱा नऱुमल रमळि नण्णिऩाळ्, पूळैवी पुरैपऩिप् पुयऱ्कुत् तेम्बिय
ताळता मरैमलर् तदैन्द पॉय्हैयुम्, वाळरा नुङ्गिय मदियुम् पोलवे 602

नाळ् अऱा–नवीन; नऱु मलर् अमळि–सुगन्धित पुष्प-शय्या (को); पूळै वी पुरै–सेमर के फूलों के सदृश; पऩि पुयल् कु तेम्पिय–ओस की वर्षा से मुरझाये; ताळ तामरै मलर् ततैन्त–तालों सहित कमल-पुष्पों से संकुलित; पॉय्कैयुम्–तड़ाग और; वाळ् अरा नुङ्किय–भयंकर सर्प (राहु) निगलित; मतियुम् पोल–चन्द्र के समान बनाते हुए; नण्णिऩाळ्–गयीं (शय्या पर बैठीं)। ६०२

जब सीताजी उस शय्या पर बैठीं तब वह नवीन और सुवासित फूलों वाली शय्या पाले के कारण कमल के फूलों के झड़ने पर केवल नालों से भरे रहनेवाले सरोवर के समान और राहुग्रस्त चन्द्र के समान हो गयी। पुष्प और पल्लव सीताजी के ताप से मुरझाकर काले हो गये। कुहरा जो फैलता आया वह उड़नेवाले सेमर के फूलों के घने विस्तार के समान था। ६०२

मलैमुहट् टिडत्तुहु मऴैक्क णालिपोल्
मुलैमुहट् टुदिर्न्दऩ नॅडुङ्गण् मुत्तिऩम्
शिलैनुदऱ् कडैयुऱच् चॅऱिन्द वेर्वुतऩ्
उलैमुहप् पुहैनिह रुयिर्प्पिऩ् माय्न्ददे 603

मलै मुकटु इटत्तु उकु–पर्वत-शिखर पर गिरनेवाले; मऴै कण् आलि पोल्–मेघों की बूँदों के समान; मुलै मुकटु—उरोज-सिरों पर; नॅटु कण् मुत्तु इऩम्–आयत आँखों के मोती-समान अश्रुकण; उतिर्न्तऩ–गिरे; चिलै नुतल् कटै–धनुष समान ललाट पर; उऱ चॅऱिन्त वेर्व–उठे संकुलित स्वेदकण; उलै मुकम् पुकै निकर्–(लुहार की) भट्ठी से निकलनेवाले धुएँ के समान; तऩ् उयिर्प्पिऩ्–उनके दीर्घ निश्वास से; माय्न्ततु–सूख गये । ६०३

वे आँखों से मोती के समान आँसू गिरा रही थीं । वे आँसू की बूँदें स्तनों के अग्रभागों पर गिरीं, जैसे मेघों से जल-कण पर्वत-शिखरों पर गिरते हैं । चाप के समान ललाट पर स्वेदकण प्रकट होते थे पर उनके तप्त निश्वास में वे सूख भी जाते थे । ६०३

कम्बमिल् कॉडुमऩक् काऩ वेडऩ्कै
अम्बॉडु शोर्वदोर् मयिलु मऩ्ऩवळ्
वॅम्बुऱु मऩत्तऩल् वॅदुप्प मॅऩ्मलर्क्
कॉम्बॅऩ वमळियिऱ् कुऴैन्दु शाय्न्दऩळ् 604

कम्पमिल्–अकंपित (दयाहीन); कॉटुमऩम्—क्रूर-मन के; काऩम् वेटऩ् कै अम्पॉटु–जंगली व्याध के हाथ के शर से; चोर्वतु ओर् मयिलुम् अऩ्ऩवळ्–लटनेवाले मोर के भी समान (विकल) हुई वे; वॅम्पु उऱु मऩत्तु–झुलसनेवाले मन की; अऩल् वॅतुप्प–आग के जलाने से; मॅल् मलर् कॉम्पु ऍऩ–कोमल पुष्पलता के समान; कुऴैन्तु–मुरझाकर; अमळियिल्–शय्या पर; चाय्न्तऩळ्–गिरीं । ६०४

वे उस मोर के समान वेदना का अनुभव कर रही थीं, जिस पर निर्दयी क्रूर मनवाले वन्य व्याध का घातक शर लगा । अन्तर की कामाग्नि से झुलस कर वे अग्नितप्त पुष्पलता के समान शय्या पर लेटीं । ६०४

शॉरिन्दऩ नऱुमलर् शुऱुक्कॉण् डेऱिऩ
पॉरिन्दऩ कलवैहळ् पॉरियिऱ् चिन्दिऩ
ऍरिन्दवॅङ् गऩल्शुड विऴैयिऱ् कोत्तनूल्
परिन्दऩ करिन्दऩ पल्ल वङ्गळे 605

ऍरिन्त वॅम् कऩल् चुट–जलानेवाली भयंकर कामाग्नि के ताप से; चॉरिन्तऩ नऱु मलर्–फैले रहे पुष्प; चुऱु कॉण्टु एऱिऩ–काँटे बनकर चुभे; पल्लवङ्कळ्–पल्लव; करिन्तऩ–(सूखकर) काले हो गये; कलवैकळ्–(चन्दनादि के) लेप; पॉरिन्तऩ–भनकर; पॉरियिऩ्–लाजे के समान; चिन्तिऩ–झड़ गये; इऴैयिल् कोत्त नूल्–हारों में लगे सूत्र; परिन्तऩ–टूट गये । ६०५

शय्या के फूल तप्त होकर काँटे बने और उनके अंगों में चुभे। पल्लव झुलसकर काले पड़ गये। चन्दन-लेप भुन गया और उनके कण लाजों के समान चू गये। आभरणों को पोहनेवाला सूत्र भी जलकर टूट गया। ६०५

तादियर् शॅविलियर् तायर् तव्वयर्, मादुय रुऴन्दुऴन् दऴुङ्गि माऴ्हिऩार्
यादुकॉ लिदुवॆऩ वॆण्ण ऱॆऱ्ऱलर्, पोदिऩो डयिऩिनीर् शुऴऱ्ऱिप् पोक्किऩार् 606

तातियर्–चेटियाँ; चॅविलियर्–दाइयाँ; तायर्–माताएँ; तव्वैयर्–बड़ी बहनों के स्थान में रहनेवालियाँ; मातुयर् उऴन्तु उऴन्तु–बड़ी ही वेदना में कुढ़-कुढ़कर; अऴुङ्कि–डर कर; माऴ्किऩार्–व्याकुल होती हुई; इतु यातु कॉल्–यह भी क्या है; ॲऩ–यह; ॲण्णल् तेऱ्ऱलर्–समझ नहीं पायीं; पोतिऩॊट–पुष्पों के साथ; अयिऩि नीर्–नीराजन; चुऴऱ्ऱि–घुमाकर; पोक्किऩार्–नज़र उतारी। ६०६

देवी की यह दशा देखकर, चेरियाँ, दाइयाँ, माताएँ और बड़ी दीदियाँ सब डर गयीं। वे दुखी हो संकट उठाने लगीं। कारण न जान पाकर उन्होंने नीराजन घमाकर दृष्टि-दोष उतारा। (लड़के लड़कियों की पाँच तरह की, जैसे स्नान कराना, खिलाना, सुलाना, बोली सिखाना, रक्षा करना आदि की, परिचर्या करनेवालियों को दाइयाँ कहा जाता है। उनकी पुत्रियों को जो उम्र में बड़ी हैं, तव्वयर्—दीदियाँ कहा जाता है।) ६०६

अरुहुनिऩ् ऱशैक्किऩ्ऱ वाल वट्टक्काल्
ॲरियिऩै मिहुत्तिड विऴैयु मालैयुम्
करिहुव तीहुव कऩल्व काट्टलाल्
उरुहुपॊऩ् पावैयु मॊत्तुत् तोऩ्ऱिऩाऴ् 607

अरुकु निऩ्ऱु–पास खड़ी होकर; अचैक्किऩ्ऱ–(सखियों द्वारा) डुलाये जानेवाले; आलवट्टम् काल्–पंखों की हवा; ॲरियिऩै मिकुत्तिट–जलन को बढ़ाती गयी, तब; इऴैयुम्–आभरण; मालैयुम्–हार; करिकुव–झलसते हैं; तीकुव–तपते हैं; कऩल्व–अधिक तपते हैं; काट्टलाल्–इस प्रकार दिखाई देते हैं, अतः; उरुक–पिघलनेवाली; पॊऩ् पावै ऑत्तुम्—स्वर्ण-प्रतिमा के समान भी; तोऩ्ऱिऩाऴ्–दिखाई दीं। ६०७

पास खड़ी होकर चेरियाँ पंखे झलती हैं। उससे जो हवा आती है वह देह-ताप को अधिक करा देती है। तब देवी के शरीर के आभरण तपते, लाल बनते और जलते से दीखते हैं। उस स्थिति में स्वयं देवी स्वर्ण-प्रतिमा के समान लगती हैं, जिसे आग में डालकर पिघलाया जाता हो। ६०७

अल्लिऩै वहुत्तदो रलङ्गऱ् काडॆऩुम्
वल्लॆऴु वल्लवेऩ् सरह दप्पॆरुङ्
कल्लॆनु मिरुपुयङ् कमलङ् गण्णॆऩुम्
विल्लॊडु मिऴिन्ददोर् मेह मॆऩ्ऩुमाल् 608

अल्लित्तै वकुत्तु–अन्धकार से निर्मित; अलङ्कल्–मालाधारी; ओर् काटु अॅन्ऩुम्–एक बन, कहती; इरु पुयम्–दो कन्धे; वल् अॅऴु–सुदृढ़ लौह-स्तम्भ; अल्लवेल्–नहीं तो; मरकतम् पॅरु कल्–मरकत का पर्वत; अॅन्ऩुम्–कहतीं; कण्–आँखें; कमलम्–कमल; अॅन्ऩुम्–कहतीं; विल्लॊटुम् इऴिन्ततु ओर् मेकम्–(इन्द्र-) धनुष के साथ उतर आया एक मेघ; अॅन्ऩुम्–कहतीं। ६०८

सीताजी आप ही आप बोल रही हैं। कहती हैं कि (श्रीराम का केश) अंधकार-निर्मित और मालालंकृत वन है; कंधे लौहस्तंभ हैं या मरकत-गिरियाँ; आँखें कमल हैं। उनका रूप इन्द्रधनुष के साथ उतरकर आया हुआ मेघ है। ६०८

नॅरुक्कियुट् पुहुन्दरु निऱैयुम् पॅण्मयुम्
उरुक्कियॅऩ् ऩुयिरॊडु मुण्डु पोयिऩाऩ्
पॊरुप्पुऱऴ् तोऴ्पुणर् पुण्णि यत्तदु
करुप्पुविल् लऩ्ऱवऩ् काम ऩल्लऩे 609

उळ् नॅरुक्कि पुकुन्तु–मेरे अन्दर बलात् प्रविष्ट होकर; अरु निऱैयुम्–स्थिर संयम-धैर्य को; पॅण्मैयुम्–और स्त्रीत्व को; उरुक्कि–द्रवीभूत कर; अॅऩ् उयिरॊटुम्–मेरे प्राणों के साथ; उण्टु पोयिऩाऩ्–जो खा (हर ले) गये (उनके); पॊरुप्पु उऱऴ् तोऴ्–पर्वत से टकरानेवाले कन्धों से; पुणर् पुण्णियत्ततु–संश्लेष रखने का सुकृतवाला; करुप्पु विल् अऩ्ऱु–ईख का चाप नहीं; अवऩ् कामऩ् अल्लऩ्–वह कामदेव नहीं है। ६०९

वे आगे कहती हैं। उनके, जो मेरे अंदर वलात् घुसकर, मेरा संयम, स्त्री-गुण आदि को गलाकर मेरे प्राणों के साथ पीकर (हर कर) चले गये, कंधों पर लगा रहने का सुकृत वाला धनुष ईख का नहीं लगा। इसलिए वे कामदेव नहीं थे। ६०९

उरैशॆयिऱ् ऱेवर्त मुलहु ळाऩलऩ्, विरैशॆऱि तामरै यिमैक्कुम् मॆय्म्मयाल्
वरिशिलैत् तडक्कयऩ् मार्बि ऩूलिऩऩ्, अरशिळङ् गुमरऩे यादल् वॆण्डुमाल् 610

उरै चॆयिल्–कहूँ तो; विरै चॆऱि तामरै–सुवास-पूर्ण कमल (-सदृश आँखें); इमैक्कुम् तऩ्मैयाल्–पलकें मारने के व्यवहार से; तेवर् तम् उलकु उळाऩ्–देवलोक में रहनेवाले; अलऩ्–नहीं; वरि चिलै तट कैयऩ्–बन्धन-युक्त धनुर्धर विशाल-हस्त; मारपिल् नलिऩऩ्–वक्ष में यज्ञोपवीत धारण करनेवाले (इसलिए); अरच इळङ्कुमरऩे आतल् वेण्टुम्–तरुण राजकुमार ही हैं। ६१०

फिर कौन हैं? सोचती हूँ तो उनकी सुवासित कमल-सम आँखों की पलकें गिरती-उठती थीं। इसलिए वे देवलोकवासी नहीं हैं। वे अपने विशाल हाथ में धनुष रखते थे और वक्ष पर यज्ञोपवीत धारण किए हुए थे। इसलिए वे तरुण राजकुमार ही हैं। ६१०

पंण्वऴि नलत्तॊडुम् पिऱन्द नाणॊडुम्
अॅण्वऴि युणर्वुना लॅङ्गुङ् गाण्गिलेऩ्
मण्वऴि नडन्दडि वरुन्दप् पोऩवऩ्
कण्वऴि नुऴैयुमोर् कळ्वऩे कॊलाम् 611

पॅण् वऴि नलत्तॊटुम्–स्त्रियोचित गरिमा के साथ; पिऱन्त नाणॊटुम्–सहज लज्जा के भी साथ; अॅण् वऴि उणर्वुम्–विचारक विवेक; अॅङ्कुम् नाऩ् काणकिलेऩ्–कहीं नहीं देखती; अटि वरुन्त–चरणों को दुख देते हुए; मण् वऴि–धरती पर; नटन्तु पोऩवऩ्–चलते जो गये वे; कण् वऴि नुऴैयुम्–आँखों के मार्ग से घुसनेवाले; ओर् कळ्वऩ् आम् कॊल्–एक चोर हैं क्या ? । ६११

और भी; मेरी सहज सुन्दरता, लज्जा, विवेक सब मुझे छोड़कर चले गये । कहीं ढूँढे नहीं मिलते । इसलिए चरणों को दुख देते हुए भूमि पर जो पैदल चलते गए वे अवश्य कोई विचित्र चोर होंगे जो देखनेवालों की आँखों के मार्ग से उनके हृदय में प्रवेश कर जाते हैं । (इधर तुलसीदास की सीता ने अपने "लोचन मगु रामहिं उर आनी । दीन्हे पलक कपाट सयानी" । अब कहिये दो में से कौन चोर है ?) । ६११

❀ इन्दिर नीलमॊत् तिरुण्ड कुञ्जियुम्, चन्दिर वदऩमुन् दाऴ्न्द कैहळुम्
सुन्दर मणिवरैत् तोळु मेयल, मुन्दियॅऩ् ऩुयिरैयम् मुऱुव लुण्डदे 612

इन्तिर नीलम् ऑत्तु–इन्द्रनील के समान; इरुण्ट कुञ्चियुम्--काले केश और; चन्तिर वतऩमुम्—चन्द्र-वदन; ताऴ्न्त कैकळुम्–(आजानु) लंबित हाथ; चुन्तर–सुन्दर; मणि वरै—नील-मणि पर्वत सम; तोळमे अल्ल–कन्धे, ये ही नहीं; अॅऩ् उयिरै–मेरे प्राणों को; मुन्ति–सबसे पहले; अ मुऱुवल्–उस मन्दहास ने; उण्टतु–पी लिया । ६१२

उनके अंगों का स्मरण करती हुई वे आगे कहती हैं कि इन्द्र-नील (के समान) केश, चंद्र-वदन, सुन्दर नील-मणि पर्वत-सम कंधे—केवल इन्हींने नहीं, इनके पहले उनके मंद-हास ने मेरी सुध हर ली । ६१२

❀ पडर्न्दॊळि परन्दुयिर् परुहु माहमुम्, तडन्दरु तामरैत् ताळु मेयल
कटन्दरु मामदक् कळिनल् याऩैपोल्, नडन्ददु किडन्ददॆऩ् ऩुळ्ळ नण्णिये 613

पटर्न्त–विस्तृत हो; ऑळि परन्तु–तेजोमय; उयिर् परुकुम्–प्राण पीनेवाला; आकमुम्–वक्षस्थल; तटम् तरु–भव्य; तामरै ताळुमे—कमल-चरण ही; अल–नहीं (बल्कि); कटम् तरु मा मतम्–गण्ड से बहनेवाला मदजल; कळि–मत्तता (इनसे युक्त); नल् याऩै पोल्–अच्छे हाथी के समान; नटन्ततु–चलने का दृश्य; अॅऩ् उळ्ळम् नण्णि–मेरे मन में पैठकर; किटन्ततु–पड़ा रहता है । ६१३

मेरे मन में उनका विशाल तेजोमय और चित्तहारी वक्षस्थल, और गरिमामय चरण-कमल, इनकी स्मृति बनी तो रहती है । पर मदनीर

बहाने वाले मत्त गज की सी जो उनकी चाल रही वह अधिक गहरे रूप से अमिट बनी रहती है। ६१३

पिऱन्दुडै नलनिऱै पिणित्त वॆन्दिरम्
करङ्गुपु तिरियुमॆऩ् कऩ्ऩि मामदिल्
ऎऱिन्दवक् कुमरऩै यिऩ्ऩुङ् गण्णिऱ्कण्
डऱिन्दुयि रिऴक्कवु माहु मेकॊलाम् 614

पिऱन्तु उटै–मेरे सहजात; नलम् पिणित्त(स्त्रियोचित) गुणों की रखवाली करनेवाला; निऱै ऎन्तिरम्—संयम-धैर्यरूपी यन्त्र; करङ्कुपु तिरि–(जिसमें) घूमता रहता है; ऎऩ् कऩ्ऩि मा मतिल्–उस मेरे, कन्यात्वरूपी प्राचीर को; ऎऱिन्त–तोड़नेवाले; अ कुमरऩै–उन तरुण कुमार को; इऩ्ऩुम्–और एक बार; कण्णिऩ् कण्टु–आँखों से देखकर; अऱिन्तु–परिचय पाकर; उयिर इऴक्क–(बाद) प्राण खोना; आकुमे–प्राप्त होगा क्या। ६१४

मेरा कन्यात्व प्राचीर था, जिसमें मेरा सहज संयमरूपी यंत्र (चक्रायुध) प्रबल रूप से घूमता था। पर इस अभेद्य प्राचीर को भी उन कुमार ने भेद दिया। कितना चाहती हूँ कि उनको फिर एक बार देख लूँ और उनकी सुन्दरता का मैं अधिक परिचय प्राप्त करूँ। मरना निश्चित सा लगता है। उनको देखने के बाद मर जाऊँ—ऐसा भाग्य होगा क्या ?। ६१४

ऎऩ्ऱिवै यऩैयऩ वियम्बुम् वन्दॆदिर्, निऩ्ऱऩ ऩिवणॆऩ्ऩुम् नीङ्गि ऩाऩॆऩ्ऩुम्
कऩ्ऱिय मऩत्तुऱु काम वॆट्कयाल्, ऒऩ्ऱल पलनिऩैन् दुणङ्गु कालये 615

ऎऩ्ऱ–ऐसे; इवै अऩैयऩ–और इनके समान; इयम्पुम्–(आगे भी) कहती हैं; इवण् वन्तु ऎतिर निऩ्ऱऩऩ्–यहाँ आकर सामने खड़े रहते हैं; ऎऩ्ऩुम्–कहतीं; नीङ्किऩाऩ्–हट गये; ऎऩ्ऩुम्–कहतीं; कऩ्ऱिय मऩत्तु–उत्तप्त मन में; उऱु कामम् वॆट्कैयाल्–बढनेवाली कामेच्छा से; ऒऩ्ऱु अल–एक नहीं; पल निऩैन्तु–अनेक (तरह के विचार) सोचकर; उणङ्कु कालै–धुलते समय। ६१५

इनके अतिरिक्त भी कहने लगीं— इधर देखो वे मेरे सामने आकर खड़े हैं। बाद कहा कि ये तो हट गये। इस तरह मिलन की विफल-लालसा से उत्तप्त मन में कामेच्छा के बढ़ने के कारण वे विविध बातें सोचती और कहती हुई मुरझाने लगीं। तब,। ६१५

अऩ्ऩमॆऩ् नडैयवट् कमैन्द कामत्ती
तऩ्ऩैयुञ् जुडुवदु तरिक्कि लाऩॆऩ
नऩ्ऩॆडुङ् गरङ्गलै नडुक्कि योडिप्पोय्
मुऩ्ऩैवॆङ् गदिरवऩ् कडलिऩ् मूऴ्हिऩाऩ् 616

मुऩ्ऩै वॆम् कतिरवऩ्–प्राचीन और गरम किरणमाली; अऩ्ऩम् मॆल् नटैयवट्कु–हंस-मृदु-गमनी को; अमैन्तु–हुई; कामम् ती–कामाग्नि (का); तऩ्ऩैयुम्–अपने को भी;

चुट्टवतु–दाहना; तरिककिलाऩ् ॲऩ–सह नहीं पाते, ऐसा; नल् नॅट्टु करङ्कळै–उत्तम लम्बे कर रूपी किरणों को; नटुक्कि–(भय के कारण) कँपाते (से) हुए; ओटि पोय–भागते जाकर; कटलिल् मूऴ्किऩाऩ्–समुद्र में डूब यये। ६१६

सूर्य डूब गये। वे शायद इस डर से डूब गये कि हंस-गमनी सीता देवी की कामाग्नि हमको भी जला देगी ! वे स्वयं गरम किरणों वाले थे। तो भी डर से काँप गये। समुद्र में डूबते समय उनकी किरणें लहरों के कारण काँपती सी लगती थीं। ६१६

विरिमलर्त् तॅऩ्ऱलाम् वीशु पाशमुम्
ॲरिनिऱच् चॅक्करु मिरुळुङ् गाट्टलाल्
अरियवट् कऩ्ऱरु मन्दि मालयाम्
करुनिऱच् चॅम्मयिर् कालऩ् ऱोऩ्ऱिऩाऩ् 617

विरि मलर् तॅऩ्ऱल् आम्—सुविकसित-फूलों की सुगन्ध से भरा मलयपवन-रूपी; वीचु पाचमुम्–(किसी पर) फेंककर बद्ध करनेवाला पाश; अरि निऱम्–आग के रंग का; चॅक्करुम्–केश; इरुळुम्–अन्धकार (शरीर); काट्टलाल्–(इनको) दिखाने के साथ; अरियवट्कु–अनुपम देवी को; अऩल् तरुम्—काम-ताप देनेवाले; अन्ति मालै आम्—सायं-संध्या-रूपी; करु निऱम्–काले रंग का; चॅम्मयिर्–लाल बालों का; कालऩ् तोऩ्ऱिऩाऩ्–यम प्रकट हुआ। ६१७

संध्या आ गई। सायं-संध्या का समय सीता को यम के समान लगता है। फूलों की सुगंधि से भरा मलयपवन उस यम का पाश बना; लाल संध्या-गगन उसका लाल केश बना; अंधकार उसका काला रूप बना। वह यम उत्तम सीता देवी का ताप बढ़ाता हुआ आया। ६१७

मीदऱै पऱवयाम् परैयुङ् गीऴ्विळि, ऒदमॅऩ् शिलम्बॊडु मुदिरच् चॅक्करुम्
पादह विरुळ्शॅय्कञ् जुहमुम् पऱ्ऱलाऱ्, चादह मॅऩ्ऩवुऩ् दहैत्तम् मालये 618

मीतु अऱै–ऊपर (आकाश में) बोलनेवाले; पऱवै आम् पऱैयुम्—पक्षी-रूपी ढोल; कीऴ् विळि–नीचे (भूमि पर) शब्द करनेवाले; ओतम् ॲऩ् चिलम्पॊटुम्—समुद्र-रूपी नूपुर के साथ; उतिरम् चॅक्करुम्–रक्तारुण संध्या (रूपी केश); पातकम्–पीड़क; इरुळ् चॅय् कञ्चुकमुम्–अन्धकार कृत कंचुक; पऱ्ऱलाल्–धारण करने से; अ मालै–वह संध्या-समय; चातकम् ॲऩ्ऩवुम् तकैत्तु–भूत के समान ही रहा। ६१८

वह समय भूत के समान भी था। आकाश में (उसके ऊपर) पक्षियों का बोलना ढोल का काम दे रहा था। भूमि पर समुद्र-गर्जन नूपुर का काम दे रहा था। लाल साँझ-गगन उसका केश बना। वेदना को उत्तेजित करनेवाला अंधकार काला कंचुक था। ६१८

कयङ्ग ळॅऩ्ऩुङ् गऩ्ऱोय्न्दु कडिनाण् मलरिऩ् विडम्बूशि
इयङ्गु तॅऩ्ऱऩ् मन्मदवे ळॅय्द पुण्णि ऩिडैनुऴैय

उयङ्गु मुणर्वु नऩ्ऩलमु मुरुहिच् चोर्वा ळुयिरुण्ण
मयङ्गु मालै वरऩोक्कि यिदुवो कूऱ्ऱिऩ् वडिवॅऩ्ऱाळ् 619

कयङ्कळ् ऍऩ्ऩुम् कऩल् तोय्न्तु—तालाब-रूपी आग में तपकर; नाळ् मलरिऩ्—नव-विकसित फूलों की; कटि विटम् पूचि—सुगन्धि-रूपी विष मलकर; इयङ्कु तॅऩ्ऱल्—संचार करनेवाला मलयपवन; मऩ्मतवेळ् ऍय्त—मन्मथ-शर-चालन से बने; पुण्णिऩ् इटै—व्रण में; नुऴैय–(बर्छी के समान) घुसा, तो; उयङ्कुम् उणर्वुम्—मन्द पड़ती सुधि; नल् नलमुम्—और अच्छे स्वस्थ गुण; उरुकि—गलते हैं और; चोर्वाळ्—मुरझानेवाली देवी; उयिर् उण्ण—प्राण खाने के लिए; मयङ्कुम् मालै–(दिन और रात के) संक्रमण की संध्या वेला का; वरल् नोक्कि—आना देखकर; कूऱ्ऱिऩ् वटिवु—मृत्यु का रूप; इतुवो—क्या यही है; ऍऩ्ऱाळ्—कहा। ६१८

मलय पवन का शरीर पर लगना उन्हें काम-शर-विद्ध व्रण में बर्छी के घुसने के समान था। वह बर्छी भी तालाबरूपी अग्नि-पुंजों में तप कर, नव विकसित कुसुमों की सुगंधिरूपी विष से लिप्त होकर आई थी। तब सुध-बुध खोती रही देवी ने प्राण खाता सा आनेवाला संध्या-समय देखकर डर से पूछने लगीं कि क्या यही मौत का रूप है ? । ६१९

कडलो मऴैयो मुऴुनीलक् कल्लो काया नऱुम्बोदो
पडर्पूङ् गुवळै नाण्मलरो नीलोऱ् पलमो पाऩलो
इडर्शेर् मडवा रुयिरुण्ब देदो वॅऩ्ऱु तळर्वाण्मुऩ्
मडलशेर् तारा ऩिऱम्बोलु मन्दि मालै वन्ददुवे 620

इटर् चेर मटवार्—दुख-पीड़ित स्त्रियों के; उयिर् उण्पतु—प्राण खाना; कटलो—समुद्र है क्या; मऴैयो—मेघ; मुऴु नीलम् कल्लो—पूर्ण नीला पत्थर; नऱु काया पोतो—सुवासपूर्ण 'काया' (अतसी ?) पुष्प; पटर् पू—विशाल (और) सुन्दर; कुवळै नाळ् मलरो—कुवलय का नवीन पुष्प; नीलोऱ्पलमो—नीलोत्पल; पाऩलो—नीला कुमुद; एतो—कौनसी; ऍऩ्ऱु—तर्क कर; तळर्वाळ् मुऩ्—शिथिल पड़नेवाली के सामने; मटल् चेर् ताराऩ्—पुष्प-संकुल मालाधारी के; निऱम् पोलुम्—रंग के समान; अन्ति मालै—सायं-संध्या (का समय); वन्ततु—आया। ६२०

अब वे सायं-संध्या के आगमन से अवगत होती हैं। उसका अंधकार देखकर वे श्रीराम का और उनके साथ उनके वर्ग की अन्य वस्तुओं का स्मरण करके व्याकुल होती हैं। बिरह-पीड़ित स्त्रियों का प्राण हरने जो आता है वह क्या है ? काला मेघ है ? नीला समुद्र है ? नीलमणि पर्वत ? सुगंधित अतसी पुष्प ? कुवलय पुष्प ? नीलोत्पल ? नीला कुमुद ? ऐसे-ऐसे तर्क करती हुई लटनेवाली उनके सामने पुष्प-माला-अलंकृत श्रीराम के वर्ण की संध्या आई। ६२०

मैवा ऩिऱत्तु मीऩॅयिऱ्ऱु वाडै युयिर्प्पिऩ् वळर्शॅक्कर्प्
पैवा यन्दिप् पडवरवे यॅऩ्ऩै वळैत्तुप् पहैत्तियाल्

ॲय्वा नॊरुवन् कैयोया नुयिरु मॊन्ऱे यिन्ऱियिल्लै
उय्वाऴ् वऴियिऱ् पऴिपूण वॆन्नो डुनक्कुप् पहयुण्डो 621

वान् मै निऱत्तु–आकाश का काला रंग; मीन् ॲयिऱु—नक्षत्र-रूपी दाँत; वाटै उयिर्प्पिन्–उदीची (जाड़े की) हवा श्वास है; वळर् चॆक्कर्–अत्यधिक लालिमा; पै वाय्—विष-भरा मुख, (इनके साथ); अन्ति–सायंकाल रूपी; पटम् अरवे–फणी सर्प; ॲय्वान् ऑरुवन्–(शर) चलानेवाला एक (मन्मथ); कै ओयान्–नहीं रुकता; उयिरुम् ऑन्ऱे–प्राण एक ही; इन्ऱि इल्लै–अब (वह भी) नहीं (रहेगा); ॲन्नै वळैत्तु–आ घेरकर हो; पकैत्ति--शत्रुता दिखाते हो; उय्वाऴ् वऴियिल्–बचना चाहनेवाली, मेरे मार्ग पर; पऴि पूण–बुरा नाम कमाने के लिए; ॲन्नोटु–मेरे साथ; उनक्कु पकै उण्टो–तुम्हारा विरोध है क्या। ६२१

वह उसको संबोधित करती हैं। हे संध्या! तू सर्प है। आकाश का रंग तेरा काला रंग है। नक्षत्र तेरे दाँत हैं। उदीची हवा तेरी साँस है। लाल संध्या गगन तेरा विष-भरा मुख है। फन फैलाकर आनेवाले भयंकर सर्प! पहले ही मन्मथ मुझ पर शर मार रहा है। वह रुकता नहीं दिखता। मुझे मार कर ही छोड़ेगा। मेरे दो प्राण भी नहीं। एक ही है; वह मन्मथ के शरों से निकल जायगा। इस स्थिति में तू मुझे घेरकर क्यों आता है? क्यों वैर दिखाता है? मैं मन्मथ से बचने के प्रयास में लगी हूँ। ऐसी-मेरे मार्ग में आड़े आकर बुरा नाम कमाता क्यों है? क्या मेरे साथ कोई पूर्व विरोध है? । ६२१

आल मुलहिऱ् परन्तदुवो आऴि किळर्न्द दोववर्तम्
नील निऱत्तै यॆल्लारुम् निन्नैक्क वदुवाय् निरम्बियदो
काल निऱत्तै यञ्जनत्तिऱ् कलन्दु कुऴैत्ता कायत्तिन्
मेलु निलत्तु मॆऴुहियदो वॆय्य विरुळाय् विळैन्ददुवे 622

वॆय्य इरुळाय् विळैन्ततु–भयंकर अन्धकार बना यह; आलम् उलकिल् परन्ततुवो–हलाहल संसार में व्याप्त हुआ; आऴि किळर्न्ततो–समुद्र उमड़ा; अवर् तम् नील निऱत्तै–उनके (श्रीराम के) नीले रंग को; ॲल्लोरुम् निन्नैक्क–सब के स्मरण करने; अतु आय्–वही (विस्तृत) बनकर; निरम्पियतो–भर गया; कालन् निऱत्तै–यम के रंग को; अञ्चनत्तिल् कलन्तु कुऴैत्तु–अंजन से मिलाकर खूब घोलकर; आकायत्तिन् मेलुम्–आकाश पर; निलत्तुम्–और भूमि पर; मॆऴुकियतो–लीपा गया। ६२२

यह अंधकार जो भयंकररूप से फैलता आ रहा है वह क्या है? हलाहल है जो व्याप रहा है? समुद्र उमड़ता आया? या सब के मन में श्रीराम का स्मरण स्थिर करने के लिए उनका रंग इस तरह छाता आया? कालदेव का रंग और अंजन को मिलाकर उस मिश्रण से आकाश और भूमि पर लीपा गया है? । ६२२

वॆळिनिऩ् ऱवरो पॊय्मरैन्दार् विलक्क वॊरुवर् तमैक्काणेऩ्
ऎळियळ् पॆण्णॆऩ् ऱिरङ्गादे यॆल्लि यामत् तिरुळ्डे
ऒळियम् बॆय्यु मऩ्मदऩा रुऩक्किम् माय मुरैत्तारो
अळियॆऩ् शॆय्द तीविऩैये यऩ्ऱि लाहि वन्दायो 623

वॆळि निऩ्ऱवरो–मेरी दृष्टि के सामने खड़े रहे वे तो; पोय् मऱैन्तार–जा छिप गये; विलक्क–रोकने (वाले); ऒरुवर् तमै काणेऩ्–किसी को नहीं देखा; ऎळियळ्–दीन; पॆण्–स्त्री; ऎऩ्ऱु–समझकर; इरङ्काते–बिना दया किये; ऎल्लि यामत्तु इरुळ् ऊटे–रात के घने अन्धकार में; ऒळि अम्पु ऎय्युम्--छिपे-छिपे बाण छोड़नेवाले; मऩ्मतऩार्–कामदेव ने; उऩक्कु–तुम्हें; इ मायम्–यह छल-माया; उरैत्तारो–सिखायी क्या; अळियॆऩ्–दयनीय मेरा; चॆय्त तीविऩैये–(पूर्व जन्म-) कृत पाप ही; अऩ्ऱिल् आकि वन्तायो–क्रौंच पक्षी बनकर आये क्या ? । ६२३

क्रौंच पक्षी को संबोधित करके वे कहती हैं। मेरी दृष्टि के सामने उनका रूप आया। पर वे अब चले गये। उनको रोककर मेरी सहायता करनेवाला कोई नहीं रहा। मैं दीन हूँ, स्त्री हूँ। इसका भी लिहाज़ न करके मन्मथ रात के वक्त, छिपे-छिपे मेरे ऊपर अपने बाण छोड़ रहा है। क्या उसी ने यह वंचना-पूर्ण काम तुझे भी सिखा दिया है ? हे क्रौंच खग ! क्या मेरे पूर्व-कृत कर्म का तू रूप है जो अब सताने आया है ? । ६२३

आण्डङ् गऩैया ळिऩैयनिऩैन् दळुङ्गुम् वेलै यहल्वाऩैत्
तीण्ड निमिर्न्द पॆरुङ्गोयिऱ् चीद मणियिऩ् वेदिहैवाय्
नीण्ड शोदि नॆय्विळक्कम् वॆय्य वॆऩ्ऱङ् गवैनीक्कित्
तूण्डल् शॆय्या मणिविळक्किऩ् चुडरा लिरवैप् पहल्शॆय्दार् 624

आण्टु अङ्कऩैयाळ्–वहाँ अंगना (सीताजी); इऩैय निऩैन्तु--ऐसा-ऐसा सोचकर; अळुङ्कुम् वेलै--दुख-मग्न रहते समय; अकल्–दूर के; वाऩै तीण्ट निमिर्न्त–आकाश को स्पर्श करते हुए उन्नत बने; पॆरु कोयिल्–बड़े कन्या-सौध में; चीतम्–मणियिऩ् वेतिकै वाय्–शीतल (चन्द्रकान्त) मणि की वेदिका पर; नीण्ट चोति नॆय् विळक्कम्–अति प्रकाशमय, घृत के दीप; वॆय्य ऎऩ्ऱु–गरम समझकर; अवै नीक्कि–उनको हटाकर; तूण्टल् चॆय्या–अनुद्दीप्य; मणि विळक्किऩ् चुटराल्–रत्नरूपी दीपों के प्रकाश से; इरवै–रात को; पकल् चॆय्तार्–दिन बनाया (चेटियों ने) । ६२४

वे इस तरह छटपटा रही थीं। उस गगनस्पर्शी सौध में चेरियों को दीप जलाने की बेला आ गई। घृत के दीये गर्मी को और उत्तेजित करेंगे—यह सोचकर उन्होंने उज्ज्वल रत्नों को चन्द्रकांत मणि की वेदिका पर रखा। जिनको उकसाने की आवश्यकता नहीं थी, उन मणियों के प्रकाश से रात, दिन के समान प्रकाश-पूर्ण हो गई। ६२४

पॆरुन्दि णॆडुमाल् वरैनिऱुविप् पिणित्त पाम्बिऩ् मणित्ताम्बाल्
विरिन्द तिवलै पोदिन्दमणि विशुम्बिऩ् मीऩिऩ् मेल्विळङ्ग

अरुन्द वमरर् कलक्कियना ळमुद निऱैन्द पॊऱ्कलशम्
इरुन्द दिडैवन् दॆऴुन्ददॆन वॆऴुन्द ताऴि वॆण्डिङ्गळ् 625

पॆरु तिण नॆट्टुमाल्–आदरणीय और बलवान श्रीत्रिविक्रम; वरै निऱुवि–(मन्दर-) पर्वत गाड़कर; पिणित्त–उस पर लपेटे; पाम्पिन् मणि ताम्पाल्–(वासुकी नाम के) सर्प-रूपी रस्से से; विरिन्त तिवलै–बिखरी बूँदें; पॊतिन्त मणि–भरे रहे रत्न; विचुम्पिल् मीतिन्–आकाश में नक्षत्रों के समान; मेल् विळङ्क–ऊपर शोभायमान रहे, ऐसा; अमरर् अरुन्त–देवों के अशन के लिए; कलक्किय नाळ्–मन्थन (जिस दिन) किया उस दिन; इटै इरुन्ततु–सागर में रहा; अमुतम् निऱैन्त पॊन् कलचम्–अमृत-भरा स्वर्णकलश; ऍऴुन्तु वन्ततु ऍन्न–ऊपर उठ आया, ऐसा; आऴि वॆण् तिङ्कळ्–गोल श्वेत चन्द्र; ऍऴुन्ततु–उठ आया। ६२५

तब चन्द्र उग आया। वह वर्तुल चन्द्र उस अमृतकलश के समान लगा जो क्षीर-सागर-मध्य से तब उठ आया था जब श्रीत्रिविक्रम (विष्णु) ने मंदरपर्वत को मथानी के रूप में गड़वाकर, वासुकी को लपेटवाकर सागर को मथवाया था। और तारे तब उठकर बिखरे जल-बिंदुओं और उनके अंदर रही मणियों के समान थे। (श्री विष्णु की बात उठाये बिना ही तमिऴ के मूल पद्य का अर्थ किया जा सकता है। तब पर्वत के विशेषण बढ़ेंगे।)। ६२५

वण्डा ययनान् मऱैपाड मलर्न्द शॆन्दा मरैप्पोदु
पण्डा लिलैयिन् मिशैक्किडन्दु पारु नीरुम् पशित्तान्पोल्
उण्डा नुन्दिक् कडल्पूत्त दोदक् कडलुन् दान्वेऱोर्
वॆण्डा मरैयिन् मलर्पूत्त दॊत्त दाऴि वॆण्डिङ्गळ् 626

पण्टु–पहले; आल् इलैयिन् मिचै किटन्तु–वट-पत्र-शायी होकर; पचित्तान् पोल्–भूखे के समान; पारुम् नीरुम् उण्टान्–पृथ्वी और समुद्र को जिन्होंने खाया उन श्रीविष्णु के; उन्ति कटल्–नाभी समुद्र (ने); वण्टु आय्–भ्रमर बनकर; अयन् नाल् मऱै पाट–अज (ब्रह्मा) के चतुर्वेद पढ़ते; मलर्न्त–विकसित हुए; चॆन्तामरै पोतु–लाल कमल को; पूत्ततु–(पैदा कर) विकसित कराया; ओतम् कटलुम्–तरंगायित समुद्र (ने) भी; तान्–स्वयं; वेऱु–पृथक; ओर् वॆण् तामरैयिन् मलर्–एक श्वेत कमल का पुष्प; पूत्ततु ऒत्ततु–खिलाया, ऐसा लगा; आऴि वॆण् तिङ्कळ्–गोल श्वेत चाँद। ६२६

वह चन्द्र एक श्वेत कमल के समान लगा जिसको लवण-सागर ने पद्मनाभ श्रीविष्णुदेव की नाभीरूपी सागर की स्पर्द्धा में पैदा किया। सृष्टि के आरंभ में वट-पत्र में योग-निद्रा में लीन रहे श्रीविष्णु की, जिन्होंने मानों भूखे हों ऐसा भूतल और सागर को खा-पी लिया था (उदरस्थ कर लिया था), नाभी से एक लाल कमल उत्पन्न हुआ। तब ब्रह्माजी भ्रमर के रूप में चतुर्वेद गान कर रहे थे। इसको देखकर लवण-समुद्र ने अपनी ओर से श्वेत-कमल यानी चन्द्र को उत्पन्न किया। (कवि की इस उत्प्रेक्षा और

उपमा-मिश्रित कविता में अनुपम रस घुला है। नाभी को समुद्र का रूपक देना कमल की उत्पत्ति के लिए आवश्यक था। भूतल और समुद्र को उन्होंने उदरस्थ किया, भूख के कारण नहीं पर अपनी लीला के सिलसिले में, इसलिए कहा गया "मानों भूखे" थे। भोजन के लिए ठोस पदार्थ और जल दोनों की आवश्यकता है। अतः भूतल और समुद्र दोनों के भक्षण की बात कही गई। स्पर्द्धा में काम करनेवाला कुछ अंतर भी दिखाना चाहता है। इसलिए नाभी-सागर के लाल कमल के स्थान में लवण-सागर ने श्वेत कमल उत्पन्न किया। ब्रह्मा उधर भ्रमर रहे तो कलंक को इधर भ्रमर माना जा सकता है)। ६२६

पुळ्ळिक् कुऱियिट् टॅऩप्पऩ्मीऩ् पूत्त वाऩम् पॉतिकङ्गुल्
नळ्ळिऱ् चॅऱिन्द विरुट्पिळम्बै नक्कि निमिरु निलाक्कऱ्ऱै
किळ्ळैक् किळविक् कॅऩ्ऩाङ्गॉल् कीऴ्पाऱ् ऱिशयिऩ् मेलवैत्त
वॅळ्ळिक् कुम्बत् तिळङ्गमुहिऩ् पाळै पोऩ्ऱु विरिन्दुळदाल् 627

पुळ्ळि कुऱि इट्टतु ऍऩ्ऩ–बिन्दियों से चित्रित; पल मीऩ् पूत्त–अनेक नक्षत्र-भरे; वाऩम् पॉति–आकाश को ढँकनेवाली; कङ्कुल नळ्ळिल्––रात्रि-मध्य; इरुळ् पिळम्पै–अन्धकार-पुंज को; नक्कि निमिरुम्–चाटकर उठनेवाली; निला कऱ्ऱै–चाँदनी का समुच्चय; कीऴ् पाल् तिचैयिऩ्–पूर्वदिशा में; मेल् वैत्त–ऊपर रखे हुए; वॅळ्ळि कुम्पत्तिऩ्–चाँदी के कुंभ में; कमुकिऩ् इळम् पाळै पोऩ्ऱु–पूग के नवीन डण्ठल (बाल) के समान; विरिन्तु उळतु–खुला हुआ है; किळ्ळै किळविक्कु––शुक-बयनी को; ऍऩ् आम् कॉल्–क्या होगा (उनका क्या अहित करेगा)? । ६२७

कवि उस चन्द्र को पूर्ण कलश (मंगल घट) के रूप में देखते हैं जो मंगल-कार्यों के अवसर पर वरुण-पूजा के लिए स्थापित किया जाता है। अर्ध-रात्रि का समय आ गया। अनेक नक्षत्र चित्र-बिंदियों के समान आकाश का शृंगार कर रहे थे। तब अंधकार उसको छिपा रहा था। उस अंधकार को (चाटते हुए) दूर करते हुए चन्द्र गगन में पूर्व दिशा में ऊपर उठता आ रहा था। उसकी चांदनी मंगल-घट पर रखे हुए क्रमुक-डंठल के समान थी जिसकी बालियाँ बिखरी थीं (कवि पूछते हैं कि यह मंगल-घट शुक-वयनी सीता का क्या करेगा? मतलब है कि उन्हें दुख देगा)। ६२७

❁ वण्ण मालैक् कैपरप्पि युलहै वळैत्त विरुळॅल्लाम्
उण्ण वॅण्णित् तण्मदियत् तुदयत् तॅऴुन्द निलाक्कऱ्ऱै
विण्णु मण्णुन् दिशैयऩैत्तुम् विऴुङ्गिक् कॊण्ड विरिनऩ्ऩोऱ्प्
पण्णै वॅण्णॆय्च् चडैयऩ्ऱऩ् पुहऴ्पो लॅङ्गुम् बरन्दुळदाल् 628

वण्णम्–रंगीन; मालै कै परप्पि–संध्यारूपी बल को फैलाकर; उलकै वळैत्त–विश्व को आवृत्त करनेवाले; इरुळ् ऍल्लाम्–सब अन्धकार को; उण्ण ऍण्णि–लीलने के लिए; तण् मतियत्तु–शीतल चन्द्र का; उतयत्तु ऍऴुन्त–उदय से

विकीर्ण; निला कऱ्ऱै–प्रकाश; विरि नल् नीर् पण्णै–समृद्ध, उत्तम जल प्लावित खेतों वाले; वॆण्णॆय्–वॆण्णॆय् नल्लूर के; चटैयऩ् तऩ्–शडैयप्पन् की; विण्णुम्–स्वर्ग और; मण्णुम्–भूलोक को; तिच अत्तैत्तुम्–सारी दिशाओं को; विऴुङ्कि कॊण्ट–अन्तर्निहित करनेवाली; पुकऴ् पोल्–सुकीर्ति के समान; ऎङ्कुम् परन्तु उळतु–सर्वत्र फैला रहता है। ६२८

चन्द्र की चांदनी सब जगह फैली। वह वॆण्णॆय् नल्लूर के (कवि के अभिभावक) दानी शडैयप्पन की सुकीर्ति के समान फैली। अंधेरा अपनी संध्या वेला का हाथ फैलाकर समस्त विश्व को आच्छादित कर रहा था। उसको निगलने के लिए चन्द्र उदित हुआ। उस शीतल चन्द्र से छिटकनेवाली चांदनी आकाश, भूमि, सभी क्षेत्रों में फैल गई। शडैयप्पन का यश स्वर्ग लोक तक फैला हुआ था, भूलोक की बात कौन कहे! (कवि के कृतज्ञता-प्रदर्शन का यह और एक स्थल है।)। ६२८

नीत्त मदत्तिऩ् मुळैत्तॆऴुन्द नॆडुवॆण् डिङ्ग ळॆनुन्दच्चऩ्
मीत्तऩ् करङ्ग ळवैपरप्पि विरिन्द निलविऩ् वॆण्शुदैयाल्
कात्त कण्णऩ् मणियुन्दिक् कमल नाळत् तिडैप्पण्डु
पूत्त वण्डम् पऴैयदॆऩप् पुदुक्कु वाऩुम् पोऩ्ऱुळदाल् 629

नीत्तम् अतत्तिल्–(समुद्र-) जल राशि से; मुळैत्तु ऎऴुन्त–उग आया; वॆण् तिङ्कळ्–श्वेत चन्द्र; नॆटु तच्चऩ्–कुशल शिल्पी; कात्त कण्णऩ्–(विश्व-) गोप्ता श्रीविष्णु के; मणि उन्ति कमलम् नाळत्तु इटै–सुन्दर नाभी में उगे कमल के नाल पर; पण्टु पूत्त अण्टम्–प्राचीनकाल में उत्पन्न यह अण्ड; पऴैय ऎऩ–पुराना (मन्द-प्रभ) हो गया, यह समझकर; तन् करङ्कळ् अवै मी परप्पि–अपने हाथों को उस पर फैलाकर; निलविऩ् वॆण् चुतैयाल्–चन्द्रिकारूपी श्वेत सुधा (चूने) से; पुतुक्कुवाऩ् पोऩ्ऱुम्–नया सा; उळ्ळतु–लगता है। ६२९

(उस चन्द्र और चांदनी को देखकर कवि निम्नोक्त कल्पना करते हैं—) चन्द्र समुद्र से उठ आया शिल्पी या कारीगर है। विष्णुदेव की सुन्दर नाभी से निकले कमल के नाल में से संलग्न यह विश्व पुराना पड़ गया था। अब यह कारीगर उसको नयी रौनक देने के लिए, अपने हाथों में चन्द्रिका-रूपी सुधा (चूना) लेकर उस पर पुताई कर रहा है। वही चूना चन्द्रिका है। ६२९

विरैशॆय् कमलप् पॆरुम्बोदु विरुम्बिप् पुहुन्द तिरुविऩॊडुम्
कुरैशॆय् वण्डिऩ् कुऴामिरियक् कूम्बिच् चाम्बिक् कुविन्दुळदाल्
उरैशॆय् तिहिरि तऩैयुरुट्टि यॊरुहो लोच्चि युलहाण्ड
अरैश ऩॊदुङ्गत् तलयॆडुत्त कुऱुम्बर् पोऩ्ऱ वरक्काम्बल् 630

विरै चॆय्–सुगन्धपूर्ण; कमलम् पॆरु पोतु–कमल के उत्तम पुष्प; विरुम्पि पुकुन्त–चाहकर अपने में आयी हुई; तिरुविऩॊटुम्–लक्ष्मी (श्री) के साथ; कुरै

चॅय् वण्टिऩ् कुऴाम्–गुंजार करनेवाले भ्रमर कुल; इरिय–छोड़कर चले जायँ, यह स्थिति पैदा करते हुए; कूम्पि–-दल-जुटे होकर; चाम्पि–निष्प्रभ होकर; कुविन्तु उळतु–बन्द हुए हैं; अरक्कु आम्पल्–लाल कुमुद; उरै चॅय्–प्रकीर्तित; तिकिरि ततै--आज्ञा-चक्र; उरुट्टि–चलाते हुए; ऑरु कोल् ओच्चि–एक (राज-) दण्ड (शासन) धारण करते हुए; उलकु आण्ट अरैचऩ्–भूतल पालनेवाले राजा के; ऑतुङ्क–अलग हो जाने से; तलै ऍटुत्त–सिर उठानेवाले; कुऱुम्पर् पोऩ्ऱ–अधीन छोटे राजाओं के समान बने । ६३०

अब कमल बंद हो गये । उन पर रहनेवाली श्री भी अदृश्य हो गई। भ्रमर हट गये । तब कुमुद विकसित हुए । कुमुदों का वैभव के साथ विकास देखकर उन अधीन राजाओं का सिर उठाना याद आता है जो एक छत्र, प्रबल आज्ञाचक्र और शासनदण्ड रखनेवाला चक्रवर्ती (के प्रताप) के हट जाने पर होता है । ६३०

नीङ्गा मायै यवर्तमक्कु निऱमे तोऱ्ऱुप् पुऱम्ेपोय्
एङ्गा निन्ऱ वॅऱिकडऱ्कु मॅऩक्कु मिहला यॅय्दिऩयो
ऑङ्गा निऩ्ऱ विरुळाय्वन् दुलहै विऴुङ्गि मेऩमेलुम्
वीङ्गा निऩ्ऱ करुनॅरुप्पि ऩिडैये यॅऴुन्द वॅण्णॅरुप्पे 631

ओङ्का निऩ्ऱ–बहुत घना; इरुळ् आय् वन्तु–अन्धकार बन आकर; उलकै विऴुङ्कि–विश्व को लील कर; मेऩ्मेलुम् वीङ्का निऩ्ऱ–उत्तरोत्तर बढ़नेवाली; करु नॅरुप्पिऩ्–काली (अन्धकार-रूपी) आग के; इटैये ऍऴुन्त–बीच में से उठी; वॅळ् नॅरुप्पे–सफ़ेद आग; नीङ्का मायै–अनिवार्य माया (में कुशल); अवर तमक्कु–उनके सामने; निऱमे तोऱ्ऱु–वर्ण के कारण हारकर; पुऱमे पोय्–बाहर जाकर; एङ्का निऩ्ऱ–तरसनेवाले; ऍऱि कटऱ्कुम्--तरंग-संकुल (या गरजनेवाले) समुद्र का; ऍऩक्कुम्–और मेरा; इकल् आय्–शत्रु होकर; ऍय्तिऩैयो–आये क्या ? । ६३१

देवी चांद को संबोधित करती हैं । अंधकार आया, विश्व को लील कर घना होता गया । वह काली आग थी । उसमें से तुम निकले हो—श्वेत अग्नि के समान ! और समुद्र निरंतर माया-कार्य करनेवाले श्रीराम से रूप-रंग में हारकर बाहर जा पड़ा है और तरंग-रूपी हाथों से (छाती) पीटकर दहाड़ मार रहा है । उसके और मेरे दोनों के शत्रु बनकर तुम आये हो ! (चन्द्र को समुद्र का दुश्मन इसलिए कहा गया कि पूर्णिमा के दिन समुद्र उमंग पर आता है और अधिक गर्जन करने लगता है ।) । ६३१

कॉडियै यल्लैनी यारैयुङ् गॉल्हिलाय्, वडुवि लिऩ्ऩमु दत्तॉडुम् वन्दऩै
पिडियिन् मॅऩ्ऩडैप् पॅण्णॊडॅऩ् ऱालॅऩैच्, चुडुदि योकडऱ् रोऩ्ऱिय तिङ्कळे 632

कटल् तॊऩ्ऱिय–सागरोत्थित; तिङ्कळे–चन्द्र; नी कॉटियै अल्लै–तुम अत्याचारी नहीं हो; यारैयुम् कॉल्किलाय्–किसी को नहीं मारोगे; वटुइल् इऩ् अमुतत्तॊटुम्–अवगुणहीन मधुर अमृत के साथ; पिटियिऩ् मॅल् नटै–हथिनी के समान मृदु-चाल वाली;

पॅण्णॉटुम्–देवी लक्ष्मी के साथ; **वन्तऩै**–पैदा हुए; **ॲऩ्ऱाल्**–तब; **ॲऩै**–(दीना) मुझे; **चुटुतियो**–ताप दोगे (क्यों) ? । ६३२

वह आगे चन्द्र से थोड़ी नरमी से बात करती हैं। सागर से (पहले क्षीरसागर से, अब समुद्र पर से) उदित चांद ! तुम तो क्रूर नहीं हो। किसी को मार नहीं सकते क्योंकि तुम अवगुण-रहित अमृत और हथिनी के समान चालवाली लक्ष्मीदेवी के भाई हो। फिर मुझे सताना तुमको शोभा देता है क्या ? । ६३२

मीदु मॉय्त्तॅऴु वॅण्णिल विऩ्कदिर्, मोदु मत्तिहै मॅऩ्मुलै मेऱ्पड
ओदि मप्पॅडै वॅङ्गऩ लुऱ्ऱॅऩप्, पोदु मॉय्त्तम ळिप्पुरण् डाळरो 633

मीतु–ऊपर; **मॉय्त्तॅऴु**–गाढ़े रूप से उठी; **वॅळ् निलविऩ् कतिर्**–श्वेत चन्द्र की किरणें (रूपी); **मोतु मत्तिकै**–पीटनेवाला हथौड़ा; **मॅल् मुलै मेल् पट**–कोमल उरोजों पर जब लगा; **ओतिमम् पॅटै**–हंसिनी; **वॅम् कऩल् उऱ्ऱतु ॲऩ**–जलानेवाली आग में गिर गयी जैसी; **पॉतु मॉय्त्त अमळि**–कमल-पुष्प-संकुल शय्या पर; **पुरण्टाळ्**–तड़फड़ाने लगीं। ६३३

उनके मृदुल स्तनों पर चांदनी क्या पड़ी, वह पीटनेवाले हथौड़े की सी चोट करती रही। उससे वे बेचारी जलानेवाली आग में पड़ी हंसिनी के समान तड़फड़ाने लगीं। ६३३

❀ **नीक्क मिऩ्ऱि निरन्द निलाक्कदिर्, ताक्क वॅन्दु तळर्न्दु शरिन्दऩळ्**
शेक्कै याहि मलर्न्दशॅन् दामरैप्, पूक्कळ् पट्टऩ पूवयुम् पट्टऩळ् 634

नीक्कम् इऩ्ऱि–अविच्छिन्न रूप से; **निरन्त**–विकीर्ण; **निला कतिर्**–चन्द्र-किरणें; **ताक्क**–(निरन्तर) आघात (करतीं) करने से; **वॅन्तु**–मुरझाकर; **तळर्न्तु**–शिथिल होकर; **चरिन्तऩळ्**–नीचे गिरीं; **चेक्कै आकि**–वासस्थान-भूत; **मलर्न्त**–विकसित; **चॅन्तामरै पूक्कळ्**–लाल कमल के फूल; **पट्टऩ**–जिस स्थिति को प्राप्त हुए; **पूवैयुम् पट्टऩळ्**–सारिका-सम कोमलांगी (देवी) भी उस स्थिति को प्राप्त हुईं। ६३४

वह चांदनी बराबर फैलती हुई उनको ताप देती रही। इसलिए वह शिथिल होकर नीचे गिर गयीं। सारिका-सम कोमलांगी, उनकी स्थिति कमल के समान बनी जो पहले उनका आवास बनकर चन्द्र के उदय पर मुरझा गया और अब उनकी शय्या पर रहकर चन्द्रिका द्वारा उत्तेजित विरह-ताप तप्त हुआ। ६३४

❀ **वाश मॅऩ्कल वैक्कळि वारिमेल्, पूशप् पूशप् पुलर्न्दु पुळुङ्गिऩाळ्**
वीश वीश वॅदुम्बिऩ मॅऩ्मुलै, आशै नोय्क्कु मरुन्दुमुण् डाङ्गॊलो 635

वाचम् मॅऩ् कलवै कळि–सुवासित मृदु चन्दन के लेप को; **वारि मेल् पूच पूच**–लेकर उन पर लगाते-लगाते; **पुलर्न्तु**–सूखकर; **पुळुङ्किऩाळ्**–मुरझाईं; **वीच**

वीच–ज्यों-ज्यों (पंखा) झलती हैं; मॅल् मुलै वॆतुम्पिऩ–कोमल उरोज झुलसे; आचै नोय्क्कु–प्रेम के रोग की; मरुन्तुम् उण्टो–दवा भी है। ६३५

चेरियों ने उन पर सुवासित द्रव्य मिला चंदन का लेप लगाया। पर वह भुन गया और देवी पीड़ित हुई। इधर चेरियाँ पंखा झलतीं, उधर उनके स्तन मुरझाते। काम-रोग के लिए दवा कहाँ बनी थी ? । ६३५

ताय रिऱ्परि शेडियर् लादुहु, वीय रित्तळिर् मॅल्लणै मेऩियिल्
कायॅ रिक्करि यक्करि यक्कॊणर्न्, दायि रत्ति ऩिरट्टिय डुक्किऩार् 636

तातु उकु वी–पराग चूने वाले फूलों की; अरि तळिर्–कोमल पल्लवों की बनी; मॅल् अणै–मृदुल शय्या; मेऩियिल् काय् ऍरि–(सीताजी के) शरीर पर की जलानेवाली (विरह की) आग से; करिय करिय––ज्यों-ज्यों झुलसी, (त्यों-त्यों); तायरिऩ्–परि चेटियर्–माता से भी प्यारी चेटियाँ; आयिरत्तिऩ् इरट्टि–सहस्रों के दुगुने (अत्यधिक); कॊणर्न्तु–लाकर; अटुक्किऩार्–डालकर नयी (शय्या) बनायी। ६३६

शय्यार्पित पल्लव ज्यों-ज्यों झुलसे त्यों-त्यों माता से भी प्यारी चेरियों ने पुराने पल्लव हटाकर नये-नये पल्लव और फूल डालकर नयी-नयी शय्या बनाई। ६३६

कऩ्ऩि ऩऩ्मऩै यिऱ्कमऴ् शेक्कयुळ्, अऩ्ऩ मिऩ्ऩण मायिऩ ळऩ्ऩवळ्
मिऩ्ऩिऩ् मिऩ्ऩिय मेऩिकण् डाऩॆऩच्, चॊऩ्ऩ वण्णलुक् कुऱ्ऱदु शॊल्लुवाम् 637

नल्ल कऩ्ऩि मऩैयिल्–अच्छे कन्या-महल में; कमऴ् चेक्कैयुळ्–सुवासित पुष्प-शय्या पर; अऩ्ऩम्–हंसिनी (समान वे); इऩ्ऩणम् आयिऩळ्–इस तरह (विरह तप्त) हुईं; अऩ्ऩवळ्–उनकी; मिऩ्ऩिऩ्–विद्युत समान; मिऩ्ऩिय मेऩि–चमकने-वाली देह-कांति को; कण्टाऩ् ऍऩ चॊऩ्ऩ–देखा था, जिनके सम्बन्ध में हमने ऐसा कहा था, उन; अण्णलुक्कु उऱ्ऱतु–प्रभु पर क्या बीता; चॊल्लुवाम्–कहेंगे। ६३७

इधर कन्या-महल में, सुगंधित फूल-पल्लवों की शय्या में पड़ी देवी की यह स्थिति रही। उधर उन प्रभु का जिनके संबंध में, हमने सीताजी की "विद्युत-सम देह की कांति देखी"—यह कहा था, हाल कहेंगे। ६३७

एहि मऩ्ऩऩैक् कण्डॆदिर् कॊण्डवऩ्, ओहै योडु मिऩिदुकॊण् डुय्त्तिडप्
पोह बूमियिऱ् पॊऩ्ऩह रऩ्ऩदोर्, माह माडत् तऩैयवर् वैहिऩार् 638

अऩैयवर्–(विश्वामित्र, श्रीराम-लक्ष्मण) वे; एकि–जाकर; मऩ्ऩऩै कण्टु–(जनक) महाराज से मिले; अवऩ् ओकैयोटुम्–वे उत्साह के साथ स्वागत कर; पोक पूमियिल्––भोग-लोक में; पॊऩ् नकर् अऩ्ऩतु–स्वर्णमय प्रासाद के समान; ओर् माकम् माटत्तु–एक आकाश-स्पर्शी सौध में; इऩितु कॊण्टु उय्त्तिट–प्रसन्नता के साथ ले पहुँचाते समय; वैकिऩार्–ठहरे। ६३८

वे तीनों, महर्षि विश्वामित्र, श्रीराम और लक्ष्मण, गये और राजा जनक से मिले। राजा जनक ने बड़ी प्रसन्नता के साथ उनका स्वागत

किया। उनको सुख से ले जाकर एक गगनस्पर्शी महल में, जो भोग-भूमि, स्वर्ग के एक स्वर्गमहल के समान था, ठहराया। वे वहीं रहे। ६३८

वैहु मव्वऴि मादवम् यावुमोर्, शॅय्है कॉण्डु नडन्दॅऩत् तीदऱु
मॉय्कॉळ् वीरऩ् मुळरियऩ् दाळिनाल्, मॅय्कॉण् मङ्गै यरुण्मुऩि मेविऩाऩ् 639

वैकुम अ वऴि–(जहाँ वे) ठहरे थे वहाँ; मा तवम् यावुम्–श्रेष्ठ तप सब; ओर् चॅय्कै कॉण्टु नटन्ततु–एक रूप धरकर चला आया; ॲऩ–ऐसा; तीतु अऱु–निर्दोष; मॉय् कॉळ् वीरन्–बलशाली वीर (श्रीराम) की; मुळरि अम् ताळिऩाल्–सुन्दर कमल-चरण (की धूली) से; मॅय् कॉळ्–(जिन्होंने अपना निजी) रूप प्राप्त किया; अरुळ्–उनके पुत्र; मुऩि–मुनि शतानन्द; मेविऩाऩ्–पधारे। ६३९

जब वे वहाँ रहे तब महान् तपोमूर्ति शतानंदजी आये। वे उन अहल्या देवी के पुत्र थे जो निर्दोष वीर श्रीराम की चरण-धूली के प्रताप से अपने निजी रूप में आकर शापमुक्त हुई थीं। शतानंदजी को देखने पर ऐसा लगता था मानों सभी तपों ने मिलकर उनका रूप ले लिया हो। ६३९

वन्दॅ दिर्न्द मुऩिवऩै मैन्दरुम्, शिन्दै यार वणङ्गळुम् जॅऩ्ऱॅदिर्
अन्द मिल्कुणत् तारॅडुत् ताशिहळ्, तऩ्दु कोशिहऩ् ऱऩ्मरुङ् गेय्दिऩाऩ् 640

वन्तु ॲतिर्न्त मुऩिवऩै–आकर दर्शन देनेवाले मुनि को; मैन्तरुम्–कुमार दोनों ने; ॲतिर् चॅऩ्ऱु–सामने जाकर; चिन्तै आर वणङ्कलुम्–हार्दिक आदर के साथ नमस्कार करने पर; अन्तम् इल् कुणत्ताऩ्–अननुमित सद्गुणों से पूर्ण; ॲटुत्तु उठाकर; आचिकळ् तन्तु–आशीर्वाद देकर; कोचिकऩ् तऩ् मरुङ्कु ॲय्तिताऩ्–कौशिक जी के पास गये। ६४०

श्रीराम और लक्ष्मण ने आदर और श्रद्धा सहित आगत मुनि को नमस्कार किया। अनंत सद्गुणी महर्षि ने उनको उठाया और आशीर्वाद दिया। फिर वे विश्वामित्रजी के पास आये। ६४०

कोद मऩ्ऱु कोमुऩि कोशिह, माद वऩ्ऱऩै वाण्मुह नोक्कियिप्
पोदु नीयिवण् पोदविप् पूदलम्, एदु शॅय्द तवमॅऩ् ऱियम्बिऩाऩ् 641

कोतमऩ् तरु कोमुऩि–गौतम के दिलाये (सुपुत्र) मुनिराज (शतानन्द) ने; कोचिक मातवऩ् तऩै–महर्षि कौशिक को; वाळ् मुकम् नोक्कि–तेजोमय मुख निहारते हुए; इ पोतु–अब; नी इवण् पोत–आप यहाँ पधारे, इसका हेतु; इ पूतलम् चॅय्त–इस भूतल की, की हुई; तवम् एतु–तपस्या क्या है; ॲऩ्ऱु इयम्पिऩाऩ्–यह कहा। ६४१

गौतम-पुत्र ने तपोधन विश्वामित्र से शिष्टाचार-पूर्ण वचन कहे। तेजोमय उनका मुख निहार कर शतानंदजी ने कहा— इस भूमि ने क्या तपस्या की है कि आपके पधारने का भाग्य हमें मिला ?। ६४१

पून्दण् शेक्कैप् पुऩिदऩै येपॅरु, एय्न्द केण्मैच् चदाऩन्द नॅऩ्ऱुरै
वाय्न्द मादवऩ् मामुह नोक्किनूल्, तोय्न्द शिन्दक् कवुशिहऩ् शॊल्लुवाऩ् 642

पू तण् चेक्कै–कमल का शीतल (सुखद) आसन पर रहनेवाले; पुन्नितन्नैये पोरु–पवित्र ब्रह्मा जी के ही सदृश; एय्न्त केण्मै–(जीव मात्र से) स्नेह रखनेवाले; चतानन्तन् ॲन्ऱु–शतानन्द नामी; उरै वाय्न्त–प्रकीर्तित; मा तवन्–महान तपस्वी के; मा मुकम् नोक्कि–श्रीयुत मुख देखकर; नूल् तोय्न्त चिन्तै--शास्त्र-ज्ञान-मग्न मन के; कौचिकन्–कौशिक जी; चॉल्लुवान्–बोले। ६४२

शतानंद कमलासन ब्रह्माजी के ही सदृश पवित्र थे और भूत-दया-संपन्न थे। वे प्रथित तपस्वी थे। उनसे, शास्त्र-पारंगत कौशिक ने कहा। ६४२

वडित्त मादव केट्टियिव् वळ्ळऱान्
इडित्त वॆङ्गुरऱ् ऱाडहै याक्कयुम्
अडुत्त वेळ्वियु निन्नन्नै शाबमुम्
मुडित्तॆ नॆञ्जत् तिडर्मुडित् तान्नॆन्ऱान् 643

वटित्त मातव–उत्कृष्ट महान तपस्वी; केट्टि–सुनिये; इ वळ्ळल तान्–इन उदार प्रभु ने ही; इटित्त वम् कुरल्—वज्रघोष-कण्ठ; ताटकै योक्कैयुम्–ताड़का का शरीर (जीवन); अटुत्त वेळ्वियुम्–मेरा आरम्भित यज्ञ और; निन् अन्नै चापमुम्–आपकी माता का शाप; मुटित्तु–समाप्त कर; ॲन् नॆञ्चत्तु इटर् मुटित्तान्–मेरे मन की चिन्ता दूर की। ६४३

उत्कृष्ट तपस्वी ! सुनिये। इन्हीं प्रभु ने वज्र-नर्दन-कारिणी ताड़का को मारा; मेरा आरंभित यज्ञ पूरा कराया और आपकी माता को शाप-मुक्ति दिलायी, और इस प्रकार मेरे मन की चिंताओं को दूर कर दिया। ६४३

ॲन्ऱु कोशिहन् कूऱिड वीऱिला, वन्ऱ पोदनन् मादव निन्नरुळ्
इन्ऱु नन्गुळ देलरि दियादिन्द, वॆन्ऱि वीरर्क् कॆन्नवुम् विळम्बिमेल् 644

ॲन्ऱु–यह; कोचिकन् कूऱिट–कौशिक जी के कहने पर; ईऱु इला वल् तपोतनन्–अनन्त व कठोर तपस्वी; मातव–महर्षि; निन् अरुळ् नन्कु उळतेल्–आपकी कृपा खब रही तो; इन्त वॆन्ऱि वीरर्क्कु–इन विजयी वीरों के लिए; इन्ऱु अरितु यातु–अब दुस्तर क्या है ? ; ॲन्नवुम् विळम्पि–यह कहकर और; मेल्–आगे भी। ६४४

अति दीर्घ कठिन तपस्या में तप्त तपोधन, शतानंद ने कहा— महर्षि, आपकी कृपा इन पर परिपूर्ण रही तो इनके लिए दुस्तर कार्य क्या है ? फिर (अतिरिक्त पद—अतसी पुष्प, इन्द्रनीलमणि समुद्र, मेघ-जाल, नीलोत्पल-सदृश श्रीराम का चन्द्रमुख देखकर) वे बोले। ६४४

नऱुम लर्त्तॊडै नायह नानुन्नक्, कऱिवु ऱुत्तुवॆन् केळिव् वरुन्दवन्
इऱैयॆ नप्पुविक् कीऱिल्पल् याण्डॆलाम्, मुऱैयि निऱ्पुरन् दॆयरुण् मुऱ्ऱिनान् 645

नऱु मलर् तॊटै–सुगन्धित पुष्पमाला-धारी; नायक–जगन्नायक; नान् उनक्कु

अऱिवरुत्तुवॅऩ्–मैं आपको बताऊँगा; केळ्–सुनिये; इ अरु तवऩ्–ये श्रेष्ठ तपस्वी; पुविक्कु इऱै अॅऩ–भूमि के पालक के रूप में; ईऱु इल् पल् याण्टु–गणनाहीन अनेक वर्ष भर; मुऱैयिऩिल् पुरन्तु—धर्म-सम्मत रीति से पालन कर; एय् अरुळ्–(जीवों पर) उद्बुद्ध दया में; मुऱ्ऱिऩाऩ्–बढ़े रहे। ६४५

सुगंधित-पुष्पमाला-धारी जगन्नाथ ! मैं आपको एक वृत्तांत सुनाऊँगा। सुनिये। ये पहले भूपति थे और अनेक वर्ष राज करते रहे। ये अत्यंत दयावान थे। ६४५

अरशिऩ् वैहि यऱऩि ऩमैन्दुळि, विरशु काऩिडैच् चॅऩ्ऱऩऩ् वेट्टैमेल्
उरैशॅय् मादवत् तोङ्गु वशिट्टऩाम्, परशु वाऩवऩ् पालणैन् दाऩरो 646

अरचिऩ् वैकि–राज कार्य में रत; अऱऩिऩ् अमैन्त उळि–धर्मचारी रहते समय; वेट्टै मेल्–आखेट पर; विरचु काऩ् इटै–घने अरण्य में; चॅऩ्ऱऩऩ्–गये; उरै चॅय् मा तवत्तु ओङ्कु–प्रकीर्तित तपोराशि; वचिट्टऩ् आम्–वसिष्ठ संज्ञित; परचुवाऩ् अवऩ् पाल्–सम्मान्य (उन) के पास; अणैन्ताऩ्–गये। ६४६

वे राज-काज धर्म-संवर्धक रीति से करते रहे। एक समय वे आखेट के लिए घने वन में गये। वहाँ तपोराशि श्रीमहर्षि वसिष्ठ के पास पहुँचे। ६४६

अरुन्ददि कणवऩ् वेन्दऱ् करुङ्गडऩ् मुऱैयि नाऱ्ऱि
इरुन्दरु डरुदि यॅऩ्ऩ विरुन्दुळि यिऩिदु निऱ्कु
विरुन्दिऩि यमैप्पॅ ऩॅऩ्ऩाच् चुरबियै विळित्तु नीये
शुरन्दरु ळमिर्द मॅऩ्ऩ वरुण्मुऱै शुरन्द दऩ्ऱे 647

अरुन्तति कण्वऩ्--अरुन्धती-पति ने; वेन्तऱ्कु–राजा के; अरुकटऩ्–श्रेष्ठ (आतिथ्य-) कर्तव्य; मुऱैयिऩ् आऱ्ऱि–यथाक्रम सम्पन्न करके; इरुन्तु अरुळ् तरुति–विराजिए, कृपा कीजिए; ॲऩ्ऩ–यह कहा, तब; इरुन्तुळि–(विश्वामित्र) आसीन हुए तब; इऩि–अब; निऱ्कु–आपको; इऩितु विरुन्तु अमैप्पऩ्–उत्तम भोज का प्रबन्ध करूँगा; ॲऩ्ऩा–कहकर; चुरपियै विळित्तु–कामधेनु को बुलाकर; नीये अमिर्तम् चुरन्तु अरुळ्–तुम ही अमृत (सम भोज्य पदार्थ) निकालकर दे दो; ॲऩ्ऩ–आज्ञा देने पर; अरुळ् मुऱै–आज्ञा के अनुसार; अऩ्ऱे चुरन्ततु–तभी निकाल दिये। ६४७

अरुन्धती के पति वसिष्ठजी ने उनका स्वागत किया; यथाविधि सत्कार करके आसनस्थ कराया। आपको भोज दूँगा, स्वीकार कीजिए—कहकर वसिष्ठजी ने कामधेनु (शवला) को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम्हीं इनको और इनके साथ आई सेना को भोजन देने का प्रबंध करो। सुरभी ने भी उनकी आज्ञा के अनुसार अमृत-सम भोज्य-पदार्थों को अपने ही शरीर से सृष्ट किया। ६४७

अरुशुवैत् ताय वुण्डि यरशऩिऩ् ऩऩिहत् तोडुम्
पॅरुहॅऩ वळिप्प वेन्दो डियावरुन् दुयत्त पिऩ्ऱै

नऱुमलर्त् तारुम् वाशक् कलवयु नल्ह लोडुम्
उऱुतुयर् तणिन्दु मऩ्ऩ ऩुय्त्तुणर्न् दुरैक्क लुऱ्ऱाऩ् 648

अरच–राजन; निऩ् अऩिकत्तोटुम्–अपने अनीक के साथ; अऱु चुवैत्तु आय–षड्रस-पूर्ण; उण्टि पॅरुक–भोजन कर लीजिये; ॲऩ–कहकर; अळिप्प–खिलाने पर; वेन्तोटु यावरुम्–राजा के साथ सब के; तुय्त्त पिऩ्ऱै–भोजन करने के बाद; नऱु मलर् तारुम्–सुवासपूर्ण पुष्प-मालाएँ और; वाचम् कलवैयुम्–सुगन्धि मिलित चन्दन; नल्कलोटुम्–देने पर; मऩ्ऩऩ्–राजा; उऱु तुयर् तणिन्तु–विश्रांत होकर; उय्त्तु उणर्न्तु–(कामधेनु की विशेषता) अनुभव द्वारा जानकर; उरैक्कल् उऱ्ऱाऩ्–बोलने लगे। ६४८

वसिष्ठजी ने राजा कौशिक से कहा— षड्रसपूर्ण भोजन प्रस्तुत है। आप अपनी सेना सहित भोजन कीजिए। उनकी बात मानकर राजा के साथ सब वीरों ने भोजन किया। भोजन के उपरांत उन्हें पुष्पमाला और चंदन भी दिया गया। राजा विश्रांत होकर इस आश्चर्य के बारे में सोचने लगे। कामधेनु के विशिष्ट कौशल को देखकर वे मन में कुछ विचार करके महर्षि से बोले। ६४८

मादव वॅळुन्दि लाय्नी वन्दवॅम् बडैहट् कॅल्लाम्
कोदऱ वमुद मिक्को वुदविय कॊळ्है तऩ्ऩाल्
तीदऱु कुणत्ताऩ् मिक्क शॅळुमऱै तॅरिन्द नूलोर्
मेदहु पॊरुळ्हळ् यावुम् वेन्दरुक् कॅऩ्गै तऩ्ऩाल् 649

मा तव–महातपस्वी; नी ॲळुन्तिलाय्–आप (अपनी जगह पर से) नहीं उठे; वन्त ॲम् पटैकट्कु ॲलाम्–मेरे साथ आयी सेना-सकल को; इ को–यह सुरभी; कोतु अऱ–बिना त्रुटि के; अमुतम् उतविय कॊळ्कै तऩ्ऩाल्–स्वादिष्ट भोजन दे सकी, इस विशिष्ट गुण के कारण; तीतु अऱु–निर्दोष; कुणत्ताल् मिक्क–विशिष्ट गुणों से सुसम्पन्न; चॅळु मऱै--अर्थ-पुष्ट वेदों; नूल्–और शास्त्रों को; तॅरिन्तोर्–जाननेवाले; मेतक पॊरुळ्कळ् यावुम्–सभी उत्तम वस्तुएँ; वेन्तरुक्कु–राजा की; ॲऩ्कै तऩ्ऩाल्–यह कहते हैं, इससे। ६४९

तपोधन ! आप तो अपने स्थान से उठे ही नहीं। पर इस सुरभी ने हमको, हमारी सेना को, बिना किसी त्रुटि के भोजन करा दिया। इससे साबित है कि यह विलक्षण और उत्तम गाय है। फिर सद्गुणोत्कृष्ट वेद-शास्त्रज्ञों का कहना है कि सभी श्रेष्ठ वस्तुएँ राजा की हैं। इन दो कारणों से,। ६४९

निऱ्किदु तहुव दऩ्ऱा नीडरुज् जुरबि तऩ्ऩै
ॲऱ्करु ळॅऩ्ऱ लोडु मियम्बलऩ् यादुम् पिऩ्ऩर्
वऱ्कलै युडैयॅऩ् याऩो वळङ्गलॅऩ् वरुव दाहिल्
कॊऱ्कॊळ्वे लुळव नीये कॊण्डहल् हॅऩ्ऱु कऱ 650

निऱ्कु इतु तकुवतु अऩ्ऱु–आपके लिए यह युक्त नहीं है; नीट्टु अरु चुरपि तऩ्ऩै–बहुत विलक्षण इस सुरभी को; ॲऱ्कु अरुळ्–मुझे सौंप देने की कृपा करें; ॲऩ्ऱलोटुम्–कहने पर; यातुम् इयम्पलऩ्–(सहसा) कुछ नहीं कहा; यातो वऱ्कलै उटैयॅऩ्–हम तो वल्कलधारी हैं; वऴङ्कलॅऩ्–दान दे नहीं सकता; कॉल् कॉळ् वेल् उऴव–संहारक भाले के प्रयोगी; वरुवतु आकिल्–वह आयँगी तो; नीये कॉण्टु अकल्क–आप ही ले जाइये; ॲऩ्ऱु कूऱ–यह कहा, तब । ६५०

यह गाय आपके पास रहने योग्य नहीं; आप तापस हैं। इसलिए आप उसे हमें सौंप दीजिये। यह सुनकर वसिष्ठजी कुछ देर सन्न रह गये। बाद, बोले कि हे संहारक भाला-कृषक ! हम वल्कलधारी हैं। हम दान देने के अर्ह नहीं हैं। इसलिए आपही अगर वह गाय आपके साथ जायगी तो ले जाइये। (तमिऴ में एक विशेष प्रयोग है, भाला-कृषक ! उसका विस्तार यों होगा—भाला-रूपी हल चलाकर शत्रु-रूपी खेत में हलचल मचानेवाला। वैसे ही लेखनी-कृषक का भी प्रयोग है) । ६५०

पणित्तदु पुरिवॅ ऩॅऩ्ऩाप् पाऱ्त्तिब ऩॅऴुन्दु पॉङ्गिप्
पिणित्तऩऩ् शुरबि तऩ्ऩैप् पॅयर्वुऴिप् पिणियै वीट्टि
मणित्तडन् दोळि ऩाऱ्कुक् कॉडुत्तियो मऱैहळ् यावुङ्
गणित्तवॅम् बॅरुम वॅऩ्ऩक् कलैमऱै मुऩिवऩ् शॊल्वाऩ् 651

पाऱ्त्तिपऩ्–पृथ्वीपति ने; पणित्ततु पुरिवॅऩ्–आज्ञानुसार करूँगा; ॲऩ्ऩा–कहकर; पॉङ्कि ॲऴुन्तु–उमंग के साथ उठकर; चुरपि तऩ्ऩै–धेनु को; पिणित्तऩऩ्–बाँधा; पॅयर्वुऴि–जाते समय; पिणियै वीट्टि–बन्धन छुड़ाकर; मऱैकळ् यावुम् कणित्त–वेद सब जाननेवाले; ॲम् पॅरुम–मेरे नायक; मणि तटम् तोळिऩाऱ्कु–सुन्दर विशाल भुजावाले (इन) को; कॉटुत्तियो–मुझे दे दिया क्या; ॲऩ्ऩ–पूछने पर; कलै मऱै मुऩिवऩ्–शास्त्रों और वेदों के ज्ञाता; चॊल्वाऩ्–बोले । ६५१

राजा कौशिक यह सुनकर आनंद-विभोर हुए। उत्साह के साथ आपके कहे अनुसार करूँगा—यह कहते हुए वे उठे। उन्होंने जाकर कामधेनु को पकड़ा। वे उसको खींचते ले जाने लगे। सुरभी (शवला) ने अपने को बंधन से छुड़ा लिया और वसिष्ठजी के पास जाकर पूछा कि क्या आपने मुझे दीर्घ-बाहु राजा के हाथ में सौंप दिया है ? । ६५१

कॊडुत्तिलॅऩ् याऩे मऱ्ऱक् कुरैकऴल् वेन्दऩ् ताऩे
पिडित्तहल् वुऱ्रा ऩॅऩ्ऩप् पॅरुञ्जिऩङ् गडुवु नॅञ्जो
डिडित्तॅऴु मुरश वॅन्दऩ् शेऩैयै याऩे यिऩ्ऱु
मुडिक्कुवॅऩ् काण्डि यॅऩ्ऩा मॊय्म्मयिर् शिलिर्त्त दऩ्ऱे 652

याऩे कोटुत्तिलॅऩ्–मैंने स्वयं नहीं दिया; अ कुरै कऴल् वेन्तऩ्–वह क्वणनशील पायलधारी; ताऩे पिटित्तु–खुद पकड़कर; अकल्वुऱ्ऱाऩ्–जाने लगे; ॲऩ्ऩ–कहने पर; पॅरु चिऩम् कतुवुम् नॅञ्चोटु–बड़े क्रोधाक्रांत मन से; इटित्तु ॲऴुम्–गरज उठनेवाले; मुरचम् वेन्तऩ्–ढोलवाले राजा की; चेऩैयै–सेना को; याऩे

इऩ्ऱु मुटिक्कुवॅऩ्–आज ही समाप्त करूँगी; काण्टि–देखिए; ॲऩ्ऩा–कहके; मॊय् मयिर्–घने बालों को; चिलिर्त्ततु–पुलकित कराया; अऩ्ऱे–तभी। ६५२

मैंने तो दिया नहीं। वे शब्दायमान पायलालंकृत राजा बलात् ले जा रहे हैं। यह सुनकर कामधेनु को बड़ा क्रोध हुआ। उसने आक्रोश के साथ कहा कि मैं स्वयं इन नगाड़ेवाले राजा की सेना का संहार कर दूँगी। आप देखिये। यह कहकर उसने अपने रोंगटे पुलकित किये। तभी; । ६५२

पप्परर् यवऩर् शीऩर् शोऩकर् मुदल पल्लोर्
कैप्पडै यदनि ऩोडुङ् गबिलैमाट् टुदित्तु वेन्दऩ्
तुप्पुडैच् चेऩै यावुन् दुणित्तऩर् तुणित्त लोडुम्
वॅप्पुडैक् कॊडिय मऩ्ऩऩ् ऱऩैयर्हळ् वॅहुण्डु मिक्कार् 653

पप्परर्–पप्लव; यवऩर्–यवन; चीऩर्–चीनी; चोऩकर्–शोनक; मुतल–आदि; पल्लोर्–अनेक; कै पटै अतऩिऩोटुम्–हाथों में हथियारों के साथ; कपिलै माट्टु उतित्तु–श्वेत धेनु द्वारा सृष्ट होकर; वेन्तऩ्–राजा की; तुप्पु उटैय–शक्तिमान; चेऩै यावुम्–सब सेना को; तुणित्तऩर्–काट गिराया; तुणित्तलोटुम्–संहार करते ही; मऩ्ऩऩ्–राजा के; वॅप्पु उटैय कॊटिय तऩैयर्कळ्–क्रोधी, क्रूर पुत्र; वॅकुण्टु–कोप करके; मिक्कार्–बढ़े। ६५३

पप्लव, यवन और चीन, शोनक आदि म्लेच्छ वीर हाथों में हथियारों के साथ उस गाय से बाहर आये। उन वीरों ने राजा की सबल सेना का संहार कर दिया। इसको जानकर राजा के क्रोधी और क्रूर पुत्र फड़क उठे और वसिष्ठ की तरफ बढ़ आये। ६५३

शुरबियिऩ् वलियि दऩ्ऱाऱ् चुरुदि नूलुणर वल्ल
वरमुऩि वञ्ज मॅऩ्ऩा मऱ्ऱिवऩ् शिरत्तै यिऩ्ऩे
अरिहुदु मॅऩ्ऩप् पॊङ्गि यडर्न्दऩ रडर वऩ्ऩाऩ्
ॲरियॅऴ विऴित्त लोडु मॅरिन्दऩर् कुमर रॅल्लाम् 654

कुमरर् ॲल्लाम्–सब कुमारों ने; इतु चुरपियिऩ् वलि अऩ्ऱु–यह गाय का सामर्थ्य नहीं; चुरुतिनूल् उणर वल्ल–वेद और शास्त्र के ज्ञानी; वरऩ् मुऩि वञ्चम्–मुनिवर की वंचना है; ॲऩ्ऩा–सोचकर; इऩ्ऩे–अभी; इवऩ् चिरत्तै–इसका सिर; अरिकुतुम्–काट लेंगे; ॲऩ्ऩ–कहकर; पॊङ्कि–जोश के साथ उठकर; अटर्न्तऩर्–घेरकर आये; अऩ्ऩाऩ्–उनके; ॲरि ॲऴ–आग उगलते; विऴित्तलोटुम्–तरेरते ही; ॲरिन्तऩर्–जलकर भस्म हो गये। ६५४

उन कुमारों ने सोचा कि यह इस मामूली गाय का शौर्य नहीं है। यह, वेद और शास्त्रों के ज्ञानी, मुनि वसिष्ठजी की माया है। अब उनका सिर काटकर वध करेंगे। वे आवेश के साथ उनको घेरते आये। महर्षि ने उन पर आग्नेय-दृष्टिपात किया। वे वहीं जलकर भस्म हो गये। ६५४

ऐयिरु पदिऩ्मर् मैन्द रविन्दमै यरशऩ् काणा
नॆय्शॊरि कऩलिऱ् कान्दि नॆडुङ्गॊडित् तेर्ह डाविक्
कैतॊडर् कणैयि ऩोडुङ् गार्मुहम् वळैय वाङ्गि
ऍय्दऩऩ् मुऩियुन् दऩ्कैत् तण्डिऩै यॆदिर्ह वॆऩ्ऱाऩ् 655

मऩ्ऩऩ्–राजा; मैन्तर्–पुत्र; ऐ इरु पतिऩ्मर्–पाँच के दो के दस (एक सौ) का; अविन्तमै काणा–जलना देखकर; नॆय् चॊरि कऩलिऩ् कान्ति--घृत-प्राप्त आग के समान जलकर; कॊटि नॆटु तेर्–ध्वजा सहित बड़े रथ को; कटावि–चलाते हुए आकर; कै तॊटर् कणैयिऩोटुम्–हाथ में लिये हुए शर का उतना लम्बा; कार् मुकम् वळैय वाङ्कि–धनुष को झुकाते हुए डोरा खींचकर; ऍय्तऩऩ्–(शर) चलाये; मुऩियुम्–मुनिवर ने भी; तऩ् कै तण्टिऩै–अपने हाथ के योगदण्ड को; ऍतिर्क–सामना करो, यह; ऍऩ्ऱाऩ्–आज्ञा दी। ६५५

कौशिक ने जाना कि मेरे एक सौ-पुत्र एक साथ जल गये। घी के अर्पण से आग जिस तरह भभक कर उठती है वैसे ही वे क्रोधोन्मत्त हो उठे। ध्वजा से अलंकृत अपने बड़े रथ पर बैठकर वे वसिष्ठजी के सामने आये। धनुष पर शर चढ़ाकर, डोरा खूब खींचा और तड़ातड़ छोड़ने लगे। महर्षि वसिष्ठ ने अपने योगदण्ड को आज्ञा दी कि तुम उनका सामना करो। ६५५

कडवुळर् पडैह ळीऱाक् कऱ्ऱऩ पडैहळ् यावुम्
विडविड मुऩिवऩ् ऱण्डम् विऴुङ्गिमेल् विळङ्गल् काणा
वडवरै विल्लि तऩ्ऩै वणङ्गिये वऴुत्त वीशऩ्
अडलुऱु पडैयॊऩ् ऱीय वऩ्ऩव नाऱ्ऱ लोडुम् 656

कटवुळर् पटैकळ् ईऱाक–दैवी अस्त्रांत; कऱ्ऱऩ पटैकळ् यावुम्–अभ्यस्त सभी आयुधों को; विट विट--ज्यों-ज्यों चलाया; मुऩिवऩ् तण्टम्–मुनि का दण्ड; विऴुङ्कि–कवलित कर; मेल् विळङ्कल् काणा–(उसका) अधिक तेजोमय दिखना, देख; वटवरै विल्लि तऩ्ऩै--मेरु-धन्वा की (शिवजी की); वणङ्कि वऴुत्त–विनय कर स्तुति करने पर; ईचऩ्--ईश्वर (के); अटल् उऱु पटै ऒऩ्ऱु ईय–सशक्त एक अस्त्र देने पर; अऩ्ऩवऩ् आऱ्ऱलोटुम्–उन (रुद्र) के (मन्त्र-) बल के साथ। ६५६

ज्यों-ज्यों कौशिक साधारण अस्त्रों से लेकर देवों के अस्त्रों तक अपने अभ्यस्त अस्त्रों को छोड़ते गये, त्यों-त्यों महर्षि के ब्रह्मदण्ड ने उनको निगल कर शांत कर दिया और वह उत्तरोत्तर तेजोमय दिखने लगा। तब कौशिक ने मेरुधन्वा, शिवजी की प्रार्थना की। उन्होंने राजा को एक बलवान अस्त्र दिया। शिवजी संबंधी मंत्र के बल का अवलंबन कर; । ६५६

विट्टऩऩ् पडैयै वेन्दऩ् विण्णुळो रुलहै यॆल्लाम्
शुट्टऩ नॆऩ्ऩ वञ्जित् तुळङ्गिऩर् मुऩियुन् दॊऩ्ऱिक्
किट्टिय पडैयै युण्डु विळङ्गिऩऩ् किळरु मेऩि
मुट्टिवॆम् पॊऱिहळ् शिन्दप् पॊरुपडै मुरणुन् दीर 457

वेऩ्तऩ् पटैयै विट्टऩऩ्–राजा (कौशिक) ने अस्त्र को प्रेरित किया; विण् उळोर्–देवता लोग; उलकै ॲल्लाम् चुट्टऩऩ् ॲऩ्ऩ–सभी लोकों को जला देगा, यह समझकर; अञ्चि तुळङ्किऩर्–भय से काँप उठे; मुऩियुम्–महर्षि (ने); तोऩ्ऱि–सामने आकर; किट्टिय पटैयै उण्टु–समीप आये अस्त्र को निगल लिया; किळरुम् मेऩि–तेजोमय शरीर के अन्दर; पॉरु पटै मुट्टि–-युद्ध-प्रवण अस्त्र के टकराने से; वॅम् पॉऱिकळ् चिन्त–गरम अंगारे निकले, ऐसा; मुरणुम् तीर–(और) शक्ति नष्ट करके; विळङ्किऩऩ्–शोभित रहे। ६५७

राजा ने उस रुद्रास्त्र को प्रेरित किया। देवता लोगों ने समझ लिया कि अब यह सारे लोकों को जला डालेगा। वे भय से काँप उठे। पर वसिष्ठ ने आगे आकर स्वयं उसको निगल लिया। युद्ध-प्रवृत्त अस्त्र था, उनके अंदर जाकर टकराया तो उनके शरीर से तेज फूटने लगा। वह शांत हो गया। वसिष्ठ दीप्तिमंत दिखाई दिये। (वाल्मीकी में रुद्र की पूजा के स्थान पर लंबे अरसे की तपस्या कही गई है। और उन्होंने रुद्र से देवास्त्र पाये। उनको लेकर वे आये और पुनः अस्त्र चलाना आरम्भ हुआ। सब अस्त्र व्यर्थ गये तो ब्रह्मास्त्र की बारी आई। उसको मुनि ने शांत कर दिया।) । ६५७

कण्डऩ ऩरशऩ् कण्णाऱ् कलैमऱै यवऱ्हट् कल्लाल्
तिण्डिऱल् वलियुन् देशु मुळवॅऩल् शीरि दऩ्ऱाल्
मण्डल मुऴ्दुङ् गाक्कुम् मॉय्म्बॉरु वलऩन् ऱॅऩ्ऩा
ऑण्डवम् बुरिय वुऩ्ऩि युम्बरकोऩ् ऱिशैयै युऱ्ऱाऩ् 658

अरचऩ् कण्णाल् कण्टऩऩ्–राजा ने प्रत्यक्ष देखा; कलै मऱैयवर्कट्कु अल्लाल्–वेद-विप्रों के सिवा; तिण् तिऱल् वलियुम्–अति धैर्य का बल; तेचुम् उळ ॲऩल्–तेज है (अन्यों के पास), यह कहना; चीरितु अऩ्ऱु–मान्य नहीं है; मण्टलम् मुऴुतुम् काक्कुम् मॉय्म्पु–भूमण्डल सारा पालन करने की शक्ति; ओरु वलऩ् अऩ्ऱु–एक (प्रशंसनीय) बल नहीं है; ॲऩ्ऩा–समझकर; ऑण् तवम् पुरिय उऩ्ऩि–प्रबल तपस्या करना चाहकर; उम्पर् कोऩ्–देवेन्द्र की; तिचैयै–(पूर्व) दिशा को; उऱ्ऱाऩ्–जा पहुँचे। ६५८

राजा ने प्रत्यक्ष देख लिया कि समस्त विश्व का शासन करते हुए भी क्षत्रिय-बल कोई बल नहीं है। ब्रह्मतेजोबल के सिवा किसी और के शारीरिक, अस्त्र या मनोबल को बल मानना ही श्लाघ्य नहीं है। इसलिए वे तपस्या करने का संकल्प लेकर देवेन्द्र की पूर्वी दिशा में गये। ६५८

माण्डमा दवत्तोऩ् शॅय्द वलऩैये मऩत्ति तुऩ्ऩिप्
पूण्डमा दवत्त ऩाहि यरशरकोऩ् पॉलियु नीर्मै
काण्डलु ममरर् वेन्दऩ् ऱुणुक्कुऱु करुत्ति ऩोडुम्
तूण्डिऩ नरम्बै मारुट् टिलोत्तमै यॅऩुञ्जॉऩ् माऩै 659

माण्ट मातवत्तोऩ्–महिमामय तपश्रेष्ठ (वसिष्ठ) का; चॅय्त वलत्तैये–कृत बल-प्रदर्शन ही; मत्तत्तिऩ् उऩ्ऩि–मन में सोचकर; पूण्ट मातवत्तऩ् आकि–सन्नद्ध तपस्वी होकर; अरचर् कोऩ्–राजाधिराज के; पॉलियुम् नीर्मै–शोभित रहने के प्रकार को; अमरर् वेन्तऩ् काण्टलुम्–देवेन्द्र (ने देखा उस) के देखते ही; तुणुक्कु उऱु करुत्तिऩोटुम्–भयभीत मन से; अरम्पै मारुळ्–रम्भा आदि अपसराओं में; तिलोत्तमै ऍऩुम्–तिलोत्तमा नाम की; चॉल् मात्तै–प्रथित मृग-नयनी को; तूण्टिऩऩ्–प्रेषित किया। ६५६

वे तपोराशि महान् वसिष्ठ के प्रताप को भूल नहीं सके। उसी का स्मरण करते हुए वे तपस्या करने लगे। (यह ईर्ष्या का भाव था और वह उत्तम तपोबल में बाधा डालने वाली है।) राजा कठोर तपस्या कर रहे हैं, यह देवेन्द्र ने जाना; (उनको डर हुआ कि कठोर तप के कारण तपस्वी के सिर से कपालाग्नि उठकर देवलोक को भी जला देगी।) भय खाकर उन्होंने रंभा आदि अप्सराओं में सुन्दरी, मृग-नयनी तिलोत्तमा को कौशिक की तपस्या में विघ्न डालने के हेतु प्रेरित किया। ६५९

अऩ्ऩवण् मेऩि काणा अऩङ्गवेळ् शरङ्गळ् पायत्
तऩ्ऩुणर् वऴिन्दु कादर् चलदियि ऩऴुन्दि वेन्दऩ्
पऩ्ऩरुम् बहऱीर् वुऱ्ऱुप् परुणिदर् तॅरिन्द नूलिऩ्
नऩ्ऩय मुणर्न्दो नाहि नञ्जॅऩक् कऩ्ऩऱु नक्काऩ् 660

अऩ्ऩवळ् मेऩि काणा–उसका रूप-लावण्य देख; अनङ्कवेळ् चरङ्कळ् पाय–अनंग के शरों के लगने से; तऩ् उणर्वु अऴिन्तु–अपनी (संयम-) बुद्धि खोकर; कातल् चलतियिल् अऴुन्ति--प्रेम-समुद्र में डूबकर; पऩ् अरुम् पकल्–अकूत (अनेक) दिनों तक; तीर्वुऱ्ऱु–व्यतीत करने के बाद; परुणितर्–परिणत (शिष्ट) लोगों के; तॅरिन्त–गम्भीर अध्ययन के बाद कृत; नूलिऩ् नल् नयम्–शास्त्रों की श्रेष्ठ शिक्षाप्रद बातें; तॅरिन्तोऩ् आकि–जाननेवाले बनकर; नञ्चु ऍऩ–(कामेच्छा को) विष समझकर; कऩ्ऩऱु–घृणा करके; नक्काऩ्–(अपनी भूल पर) हँसे। ६६०

कौशिक ने उसको देखा। तभी मन्मथ-शर उन पर लगे। वे अपना धैर्य खो गये। फिर उनके अनेक दिन उसके साथ प्रेम-सागर में मग्न रहने में बीत गये। तब जाकर उनको चेतना हुई। परिणत शिष्ट लोगों के अनुभव-भूत शास्त्रों के उपदेश मन में जागे। उनको अपना काम निन्द्य लगा। उसे विष-समान त्यागकर अपनी ही भूल पर स्वयं हँसे। ६६०

विण्मुऴु दाळि शॅय्द वित्तैयॅऩ वॅहुण्डु नीपोय्
मण्मह ळादि यॅऩ्ऱु मडवर ऱऩ्ऩैच् चीऱिक्
कण्मलर् शेप्प वुळ्ळङ् गऱुप्पुऱक् कडिदि ऩेहि
ऑण्मरिऩ् वलिय ऩाय यमऩ्ऱिशै यदऩै युऱ्ऱाऩ् 661

विण् मुऴुतुम् आळि चॅय्त–सब देवलोकों का शासन करनेवाले इन्द्र की, की हुई; वित्तै ॲन्न–वंचना (का कार्य) यह जानकर; वॅकुण्टु–कुपित होकर; मटवरल् तन्नै–दयिता (तिलोत्तमा) को; नी पोय् मण् मकळ् आ (कु)–तुम जाकर मानव-स्त्री बन जाओ; ॲन्ऱु चीऱि–यह शाप देकर; कण् मलर् चेप्प–आँखें लाल करते हुए; उळ्ळम् करुप्पु उऱ–मन को काला बनाते हुए (गुस्से के साथ); कटितिन् एकि–सत्वर जाकर; ॲण्मरिन्–आठ (दिग्पालकों) में; वलियन् आय–अधिक बलशाली; यमन् तिचै अतनै–यम की (दक्षिण) दिशा को; उऱ्ऱान्–गये । ६६१

विश्वामित्र समझ गये कि यह देवलोकों के अधिपति इन्द्र का यह वंचक काम था। उन्होंने कोप करके तिलोत्तमा को शाप दिया कि तू मानवी स्त्री हो जा। क्रोध से लाल हुई आँखों और "काला हुआ मन" (=कोप कलुषित मन) के साथ जल्दी वहाँ से चले और प्रबल यम की दक्षिणी दिशा में पहुँचे । ६६१

तॅन्ऱिशै यिरुन्दु मन्नन् शॅय्दवञ् जॅय्यु नाळिल्
वन्ऱिऱ लयोत्ति वाऴु मन्ऱिरि शङ्गु वॅन्बान्
तन्ऱुणैक् कुरुवै नण्णित् तनुवॊडु तुऱक्क मॅय्द
इन्ऱॅनक् करुळु ऍन्न यानरिन् दिलॅन दॅन्ऱान् 662

मन्नन्–राजा (कौशिक); तॅन् तिचै इरुन्तु–दक्षिण दिशा में रहकर; चॅय् तवम् चॅय्युम् नाळिल्–कर्तव्य (प्रकार से) तपस्या करते रहते समय; अयोत्ति वाऴुम्–अयोध्यावासी; वन् तिऱल् मन्–अधिक प्रतापी राजा; तिरिचङ्कु ॲन्पान्–त्रिशंकु नामी; तन् तुणै कुरुवै नण्णि–अपने सहायक और गुरु के पास जाकर; तनुवॊटु तुऱक्कम् ॲय्त–तन के साथ स्वर्ग जाने के निमित्त; इन्ऱु ॲनक्कु अरुळुक–मुझ पर कृपा कीजिए; ॲन्न–प्रार्थना करने पर; अतु–वह; यान् अरिन्तिलॅन्–मैं नहीं जानता; ॲन्ऱान्–कहा । ६६२

जब वे राजा दक्षिण दिशा में रहकर तपस्या करते थे तब अयोध्या में त्रिशंकु नाम के बहुत प्रतापी राजा राज करते थे। वे अपने गुरु हित-साधक वसिष्ठ के पास जाकर बोले कि मैं सशरीर स्वर्ग जाना चाहता हूँ। कृपा करके उसका उपाय कीजिए। वसिष्ठजी ने उत्तर दिया कि मैं उसका उपाय नहीं जानता । ६६२

निन्नक्कॊला दाहि नैय नीणिलत् तियाव रेनुम्
मन्नक्किनि यारै नाडि वहुप्पल्यान् वेळ्वि यॅन्नच्
चिन्नक्कॊडुन् दिऱलोय् मुन्नैत् तेशिहऱ् पिऴैत्तु वेऱोर्
निन्नक्किद नाडि निन्ऱाय् नीशनाय् विडुदि यॅन्ऱान् 663

ऐय–महर्षे; निन्नक्कु ऑल्लातु आकिन्–आप से सम्भव नहीं तो; नीळ् निलत्तु–विशाश विश्व में; यावरेनुम् मन्नक्कु इनियारै नाटि–मनोनुकूल किसी को खोजकर; यान् वेळ्वि वकुप्पल् ॲन्न–मैं यज्ञ करूँगा, कहने पर; चिन्नम् कॊटु तिऱलोय्–क्रोधी और क्रूर बल युक्त; मुन्नै तेचिकन् पिऴैत्तु–प्राचीन अपने गुरु का अपराध करके;

वेऱु ओर् नितक्कु इतऩ्–दूसरे किसी हितकारी को; नाटि निऩ्ऱाय्–खोजते खड़े हो; नीचऩ् आय् विटुति–नीच (चण्डाल) बन जाओ; ॲऩ्ऱाऩ्–यह (शाप) कहा। ६६३

तब राजा ने कहा कि आप असमर्थ हैं तो मैं जाऊँगा और अपने मनोनुकूल किसी को खोज पाकर उसकी सहायता के साथ अपना मनोभीष्ट साधन के उपाय-रूपी यज्ञ को पूरा करूँगा। यह सुनकर वसिष्ठजी को क्रोध आ गया। उन्होंने उसको शाप दिया कि अपने प्राचीन गुरु के प्रति अपराध करते हो क्योंकि दूसरे हितकारी गुरु की खोज करना चाहते हो। इसलिए तुम नीच (चंडाल) बन जाओ। ६६३

मलरुळोऩ् मैन्दऩ् शीऱि वऴङ्गिय शाबम् दऩ्ऩाल्
अलरियोऩ् ऱानु नाणु मॊळियिऴन् दरशर् कोमाऩ्
पुलरियङ् गमलम् पोलु मुहत्तिनिऱ् पॊलिवु नीङ्गिप्
पलरुमाङ् गिहऴ्दऱ् कॊत्त पडिवम्वन् दुऱ्ऱ दऩ्ऱे 664

मलरुळोऩ् मैन्तऩ्—कमल-निवास (ब्रह्मा) के पुत्र (वसिष्ठ) के; चीऱि–कोप करके; वऴङ्किय चापम् तऩ्ऩाल्–दिये शाप से; अरचर् कोमाऩ्–राजाधिराज ने; अलरियोऩ् ताऩुम् नाणुम्–सूर्य भी देखकर (जिस प्रभा के सामने) लजाते थे; ऑळि इऴन्तु–-देह-कांति खोकर; पुलरि अम् कमलम् पोलुम्–सूर्योदय में विकसनेवाले कमल का सा; मुकत्तिऩिल् पॊलिवुम् नीङ्कि—मुख-कांति भी खोकर; पलरुम् इकऴ्तऱ्कु ऒत्त पटिवम्–बहु-निन्द्य रूप; अऩ्ऱे वन्तु उऱ्ऱतु–तभी आ मिल गया। ६६४

कमलासन ब्रह्मा के पुत्र वसिष्ठजी ने शाप दिया तो उसके प्रभाव से राजा का रूप-रंग बदल गया। देह की सूर्य-निंदक कांति और मुख की नव-विकसित कमल की सुन्दरता नष्ट हो गयी। सबसे निन्दनीय चंडाल का रूप मिल गया। ६६४

काशॊडु मुडियुम् पूणुङ् गरियदाङ् गऩहम् बॊऩ्ऱु
तूशॊडु मुऩ्नूऩ् मालै तोऱरुन् दोऱ्ऱ माह
माशॊडु करुहि मेऩि वऩ्ऩप्पऴिन् दिडवूर् वन्दाऩ्
शीशियॆन् ऱारु मॆळ्ळत् तिहैप्पॊडु पऴुवञ् जेर्न्दाऩ् 665

काचॊटु–रत्नहारों के साथ; मुटियुम्–मुकुट और; पूणुम्–और आभरण; करियतु आम् कऩकम् पॊऩ्ऱु–काले स्वर्ण (लोहे) के से हुए; तूचॊटु–वस्त्रों के साथ; मुऩ्नूल्–तीन तागों का यज्ञोपवीत; मालै–पुष्पमाला; तोल् तरुम् तोऱ्ऱम् आक–चमड़े के से दिखते; मेऩि–शरीर; माचॊटु करुकि–गन्दा और काला बना; वऩ्ऩप्पु अऴिन्तिट–सुन्दरता खो गया; ऊर् वन्ताऩ्–(इस स्थिति में) पुरी में आये; आरुम्–सभी (किसी ने); ची ची ॲऩ्ऱु–छिः छिः कहकर; ॲळ्ळ–निन्दा की, तो; तिकैप्पॊटु–घबराकर; पऴुवम्–वन में; चेर्न्ताऩ्–पहुँच गये। ६६५

उनके रत्नहार, किरीट और अन्य आभरण लोहे के हो गये। वस्त्र, यज्ञोपवीत, पुष्पमालाएँ आदि चमड़े की हो गयीं। शरीर गंदा और काला

पड़ गया । इस स्थिति में वे अपने पुर में आये । सभी ने छिः छिः ! कहकर निन्दा की । वे भौचक हो गये और वन में चले गये । ६६५

काऩिडैच् चिऱिदु वैहल् कऴित्तोर्नाट् कौशि हप्पेर्क्
कोऩिरुन् दवञ्जॅय् शोलै कुऱुहिऩऩ् कुऱुह वऩ्ऩाऩ्
ईऩ्ऩी याव ऩॅऩ्ऩै नेर्न्ददिव् विडैयि ऩॅऩ्ऩ
मेऩिहऴ् पॉरुळ्हळ् यावुम् विळम्बिऩऩ् वणङ्गि वेन्दऩ् 666

काऩ् इटै–वन में; चिऱितु वैकल् कऴित्तु–कुछ समय व्यतीत करके; ओर् नाळ्–एक दिन; कौचिकऩ् पेर् कोऩ्–कौशिक संज्ञित राजा (के); इरु तवम् चॅय् चोलै–कठोर तपस्या करनेवाले आश्रम में; कुऱुकिऩऩ्–पहुँचकर; कुऱुक–उनके पास गये, तब; अऩ्ऩाऩ्–उन्होंने; ईऩऩ् नी–चण्डाल तुम; यावऩ्–कौन हो; इ इटैयिल्–इस स्थान में; नेर्न्ततु ऍऩ्ऩै–(तुम्हारा) आना क्योंकर; ऍऩ्ऩ–पूछने पर; वेन्तऩ्–राजा त्रिशंकु ने; वणङ्कि–नमन कर; मेल् निकऴ् पॊरुळ्कळ् यावुम्–पहले बीती सब बातें; विळम्पिऩऩ्–बताईं । ६६६

अटवी में कुछ समय बिताने के बाद, एक दिन वे कौशिकजी जहाँ तपस्या कर रहे थे उनके आश्रम में आये और उनके सम्मुख गये । कौशिक ने उनको देखकर विस्मय से पूछा कि तुम कौन हो नीच ! यहाँ आये क्यों ? राजा त्रिशंकु ने आप-बीती सारी बातें कह सुनायीं । (त्रिशंकु जान बूझकर कौशिक के पास गये क्योंकि वे वसिष्ठजी के शत्रु थे और त्रिशंकु को वसिष्ठजी से मनमुटाव था ।) । ६६६

इऱ्ऱिदो वॅऩ्ऩ नक्किङ् गियाऩिरु वॅळ्वि मुऱ्ऱित्
तुऱ्ऱिय तऩुवि ऩोडु मेऱ्ऱुवॅऩ् सुवर्क्क मॅऩ्ऩा
मऱ्ऱुमा दवरैक् कूव वन्दऩर् वशिट्टऩ् मैन्दर्
कऱ्ऱिल मरशऩ् वॅळ्वि कऩऱ्ऱुऱै पुलैयऱ् कीवाऩ् 667

इऱ्ऱितो–इतना ही; ऍऩ्ऩ–कहकर; नक्कु–हँसकर; इङ्कु–अब; याऩ्–मैं; इरु वेळ्वि मुऱ्ऱि–बड़ा यज्ञ करके; तुऱ्ऱिय तऩुवित्तॉटुम्–प्राप्त इस तन के साथ ही; चुवर्क्कम् एऱ्ऱुवॅऩ्–स्वर्गारोहण करा दूँगा; ऍऩ्ऩा–कहकर; मऱ्ऱुम् मातवरै कूव–और महा तपस्वियों को आमन्त्रित करने पर; वन्तऩर्–(अनेक) आये; वचिट्टऩ् मैन्तर्–वसिष्ठ के पुत्र; अरचऩ्–राजा (क्षत्रिय); कऩल् तुऱै वेळ्वि–अग्नि-मुख यज्ञ (फल) को; पुलैयऱ्कु ईवाऩ्–चण्डाल को देगा; कऱ्ऱिलम्–(यह यज्ञ-कार्य हम ने) नहीं सीखा है । ६६७

उनकी बातें सुनकर कौशिक 'इतनी सी बात' कहकर हँसे । फिर धीरज दिया कि मैं एक प्रबल यज्ञ करूँगा और तुम्हें सशरीर स्वर्ग पर चढ़ा दूंगा । उन्होंने तपस्वियों को बुला भेजा । अनेक आये भी । पर वसिष्ठजी के पुत्रों ने निन्दा की कि वाह ! एक क्षत्रिय राजा यज्ञ करता है और उसका फल चंडाल को मिलेगा ! ऐसा यज्ञ-कार्य हमने नहीं सीखा है । ६६७

ऍऩ्ऱुरैत् तियाङ्ग ळॊल्लो मॆऩ्ऱऩ रॆऩ्ऩप् पॊङ्गिप्
पुऩ्ऱॊऴिऱ् किराद राहिप् पोहॆऩप् पुहल लोडुम्
अऩ्ऱव रॆयिऩ राहि यडविह डोऱुञ् जॆऩ्ऱार्
निऩ्ऱुवेळ् वियैयु मुऱ्ऱि निराशऩर् वरुह वॆऩ्ऱाऩ् 668

ऍऩ्ऱु उरैत्तु–यह कहकर; याङ्कळ् ऑल्लोम्–हम सहमत नहीं होंगे; ऍऩ्ऱऩर्–यह कहा; ऍऩ्ऩ–कहने पर; पॊङ्कि–क्रोधोत्तप्त होकर; पुऩ् तॊऴिल् किरातर् आकि–नीचकर्मी किरात बनकर; पोक–चलो; ऍऩ पुकललोटुम्–यह कहने पर; अऩ्ऱु–तभी; अवर–वे वसिष्ठ-पुत्र; ऍयिऩर् आकि–किरात बनकर; अटविकळ् तोऱुम् चॆऩ्ऱार्—अटवी-अटवी में घूमने लगे; निऩ्ऱु–(कौशिक) स्थिर रहकर; वेळ्वियैयुम् मुऱ्ऱि–यज्ञ को पूरा करके; निराचऩर्–निरशन देवता; वरुक–आइये; ऍऩ्ऱाऩ्–कहकर निमन्त्रित किया। ६६८

उन्होंने यह कहकर कि हम सहमत नहीं हैं साफ़ इनकार कर दिया। विश्वामित्र को उनकी बातें जानकर बड़ा क्रोध आ गया। तुरंत शाप दिया कि तुम सब नीच कर्म करनेवाले किरात बन जाओ। वे भी विराध बनकर अटवी-अटवी घूमने लग गये। फिर कौशिक जी ने अपने वचन पर अटल रहकर यज्ञ संपन्न किया और देवताओं को 'आओ' कहकर निमंत्रित किया। ६६८

अरशऩिप् पुलैयऱ् कॆऩ्ऩे यऩऱ्ऱुऱै मुऱ्ऱि यॆम्मै
विरशुह वल्लै यॆऩ्ऱल् विऴुमिदॆऩ् ऱिहऴ्न्दु नक्कार्
पुरशमा कळिऱ्ऱिऩ् वेन्दैप् पोहनी तुऱक्कम् याऩे
उरैशॆय्देऩ् ऱवत्ति ऩॆऩ्ऩ वोङ्गिऩऩ् विमाऩत् तुम्बर् 669

ऍऩ्ऩे–यह क्या (अन्याय है); अरचऩ्–राजा; इ पुलैयऱ्कु–इस चण्डाल के लिए; अऩल् तुऱै मुऱ्ऱि–-अग्नि-कर्म (यज्ञ) सम्पन्न कर; ऍम्मै–हमें; वल्लै–शीघ्र; विरचुक–आना; ऍऩ्ऱल्–कहना; विऴुमितु–श्रेष्ठ है; ऍऩ्ऱु–कहकर; इकऴ्न्तु–निन्दा करके; नक्कार्–हँस उठे; पुरचै मा कळिऱ्ऱिऩ्–-रस्सी-बँधे गलों के बड़े हाथियों वाले; वेन्तै–राजा को; नी तुऱक्कम् पोक–तुम स्वर्ग जाओ; तवत्तिऩ्–तपोबल से; याऩे उरै चॆय्तेऩ्–मैंने कहा; ऍऩ–यह आज्ञा देने पर; विमाऩत्तु–विमान पर; उम्पर् ओङ्किऩाऩ्–आकाश में उड़े। ६६९

देवता लोग कौशिक की निन्दा करके हँसने लगे। यह क्या विपरीत बात चलती है! अग्निकर्म प्रधान यज्ञ एक राजा करे, वह भी एक चंडाल के हित में; तिस पर हमको भी 'हविर्भाग लेने के लिए तुरत आना' यह आज्ञा दी जाय! वे नहीं आये। कौशिक ने हाथियोंवाले राजा से कहा कि अब अपने तपोबल के आधार पर कहता हूँ। तुम जाओ स्वर्ग में। तब एक विमान आया। वह त्रिशंकु को लेकर ऊपर स्वर्ग की ओर उड़ा। ६६९

आङ्गवऩ् ऱुऱक्क सॆय्द वमरर्हळ् वॆहुण्डु नीशऩ्
ईङ्गुवऩ् दडैब दॆऩ्ऩै यिरुनिलत् तिऴिह वॆऩ्ऩत्

ताङ्गुद लिऩ्ऱि वीऴ्वाऩ् ऱापद शरण मॆऩ्ऩ
ओङ्गिनी निल्लु निल्लॆऩ् ऱुरैत्तुरु मॊक्क नक्काऩ् 670

आङ्कु–तब; अवऩ् तुऱक्कम् ऎय्त–उनके स्वर्ग जाने पर; अमरर्कळ्–अमर लोगों के; वॆकुण्टु–कोप करके; नीचऩ्–चण्डाल; ईङ्कु वऩ्तु–यहाँ आकर; अटैवतु–पहुँचोगे; ऎऩ्ऩै–यह क्या है; इरु निलत्तु इऴिक–विशाल भूमि पर गिर जाओ; ऎऩ्ऩ–कहने पर; ताङ्कुतल् इऩ्ऱि–निराधार होकर; वीऴ्वाऩ्–(औंधे) गिरनेवाले; तापत चरणम्–तापस, शरण; ऎऩ्ऩ–चिल्लाने पर; ओङ्कि–हाथ ऊँचे उठाकर; नी निल् निल् ऎऩ्ऱु–तुम रुको, रुको कहकर; उरुम् ऒक्क–वज्र के समान; उरैत्तु–(उच्च स्वर में) कहकर; नक्काऩ्–हँसे । ६७०

जब त्रिशंकु स्वर्ग में पहुँचे तब देवों ने क्रोध के साथ कहा— नीच, तुम इधर आओगे कैसे ? यह नहीं होने का । चलो; गिरो भूमि पर । इस पर त्रिशंकु निराधार होकर औंधे नीचे गिरने लगे । तब वे घबड़ाकर चिल्लाये कि हे तापस ! मैं गिर रहा हूँ । कोई रक्षक नहीं । आप ही मेरे शरण्य हैं । तब कौशिक ने हाथ ऊपर उठाकर वज्रघोष-सम उच्च स्वर में आज्ञा दी कि रुको, रुको वहीं, और वे ठठाकर हँसे । यह क्रोध की हँसी थी । ६७०

पेणल रिहऴ्न्द विण्णोर् पॆरुम्बद मुदला मऱ्ऱैच्
चेण्मुऴु दमैप्प लॆऩ्ऩाच् चॆऴुङ्गदिर् कोणा डिङ्गळ्
माणॊऴि कॆडादु तॆऱ्कु वडक्कदाय् वरुह मऱ्ऱैत्
ताणुवॊ डूर्व यावुञ् जमैक्कुवॆ ऩॆऩ्ऩुम् वेलै 671

पेणलर्–न माना; इकऴ्न्त–निन्दा करनेवाले; विण्णोर्–देवों के; पॆरुपतम् मुतलाक–उन्नत पद आदि; मऱ्ऱै चेण् मुऴुतुम्–अन्य सब देवलोक; अमैप्पल्–सृष्ट करूँगा; ऎऩ्ऩा–कहकर; चॆऴु कतिर्–संकुल किरणोंवाले सूर्य; तिङ्कळ्–चन्द्र; कोळ्–ग्रह; नाळ्–तारे; माण् ऒऴि कॆटातु–महाप्रकाश बिना खोये; तॆऱ्कु वटक्कु अतु आय्–दक्षिण से उत्तर की ओर; वरुक–संचार करेंगे; मऱ्ऱै–इनके अलावा; ताणुवॊटु–स्थावरों के साथ; ऊर्व–जंगम भी; यावुम्–सभी को; चमैक्कुवॆऩ्–सिरजूँगा; ऎऩ्ऩुम् वेलै–कहकर (आरम्भ करते) समय । ६७१

कौशिक ने प्रतिज्ञा की । देवों ने मेरा अनादर किया; त्रिशंकु को निंदा करके गिरा दिया । अब नये देवता और नये देव-लोकों की सृष्टि कर दूँगा । सूर्य, चन्द्र अन्य ग्रह, नक्षत्र आदि सभी नये बनेंगे । सूर्य और चन्द्र दक्षिण से उत्तर जायँगे । नये सूर्य और चन्द्र आदि प्रकाश में कम नहीं रहेंगे । उन्होंने सृष्टि आरम्भ भी कर दी । तब; । ६७१

नऱैत्तरु वुडैय कोऩु नाऩ्मुहक् कडवु डाऩुम्
कऱैत्तरु कळऩु मऱ्ऱैक् कडवुळर् यारुऩ् दीक्कुप्
पॊरुत्तरुण् मुऩिव निऩ्ऩैप् पुहल्पुहुन् दवऩैक् कात्तल्
अऱत्तिऱ ऩॆऩ्ऱुऩ् दारा कणत्तव ऩमर वॆऩ्ऱार् 672

नऱै तरु उटैय कोऩुम्–सुगन्धपूर्ण कल्पादि तरुओं के स्वामी, देवेन्द्र; नाल् मुकम् कटवुळ् ताऩुम्–चतुर्मुख देव; कऱै तरु कळऩुम्–और नीलकण्ठ (शिवजी); मऱ्ऱै कटवुळर्–अन्य देवता; यारुम्–सभी; तॊक्कु–जमा होकर; तॊक्कु–एकत्र होकर; मुऩिव–मुनिवर; पॊऱुत्तरुळ्–क्षमा कीजिये; निऩ्ऩै पुकल् पुकुन्तवऩै–आपकी शरण में आगत को; कात्तल्–रक्षित करना; अऱम् तिऱऩ्–-धर्म-कर्म है; अवऩ् ऎऩ्ऱुम्–वे हमेशा; ताराकणत्तु अमर–तारागणों में मिलित रहें; ऎऩ्ऱार्–कहा । ६७२

नंदनवन के स्वामी इन्द्र, चतुर्मुख ब्रह्मा, नीलकंठ शिवजी और अन्य देवता मिले। मुनिवर के सामने आकर प्रार्थना की। मुने ! क्षमा करें। हम मानते हैं कि शरणागत की रक्षा करना धर्म-कार्य है। अतः त्रिशंकु का नक्षत्रगण में स्थान हो। ६७२

अरशमा दवऩी यादि यैन्दुना डऩ्पाल् वन्दुऩ्
पुरैविळक् किडुह वॆऩ्ऩाक् कडवुळर् पोय पिऩ्ऩर्
निरैदवऩ् विरैवि ऩेहि नॆडुङ्गडऱ् करशऩ् वैहुम्
उरविड मदऩै नण्णि युऱुदव मुयऱ्ऱुङ् गालै 673

कटवुळर्–देवों ने; नी अरच मातवऩ् आति–आप राजर्षि हो जायँ; ऐन्तु नाळ्–पाँच तारे; तॆऩ् पाल् वन्तु–दक्षिण में आकर; उऩ् पुरै विळक्किटुक–आपकी महिमा प्रकट करते रहें; ऎऩ्ऩा–कहकर; पोय पिऩ्ऩर्–जाने के बाद; निरै तवऩ्–-बारी-बारी से (दिशाओं में) तपस्या करते आनेवाले; विरैविऩ् एकि–शीघ्र जाकर; नॆटु कटल् कु अरचऩ् वैकुम्–विशाल सागर के अधिदेव बसित; उरम् इटम् अतऩै–सबल स्थान (पश्चिम दिशा) में; नण्णि–पहुँचकर; उऱु तवम् उयऱ्ऱुम् कालै–(अपेक्षाकृत) अधिक कठिन तपस्या करते समय । ६७३

उन्होंने आगे कहा— राजन् ! आप भी राजर्षि कहलायेंगे। आपने पाँच नक्षत्र जो सिरजे हैं वे दक्षिण में रहकर आपकी कीर्ति प्रकट करते रहें। यह वर देकर वे चले गये। अब कौशिक को यथार्थ वस्तु-स्थिति याद आयी। उनका तप पूर्ण नहीं हुआ। वे दो दिशाओं में तप कर चुके थे। अब समुद्र के अधिष्ठाता देवता, वरुण की प्रसिद्ध पश्चिम दिशा में गये और कठोर तपस्या में लग गये। उस समय; । ६७३

कुदैवरि शिलैवाट् टाऩैक् कोमह ऩम्ब रीडऩ्
शुदैतरु मॊऴियाऩ् वैयत् तुयिर्क्कुयि राय तोऩ्ऱल्
वदैपुरि पुरुड मेदम् वहुप्पवोर् मैन्दऱ् कॊळ्वाऩ्
शिदैविल कऩहऩ् देर्कॊण् डडविह डुरुविच् चॆऩ्ऱाऩ् 674

कुतै वरि चिलै—दाँता-बन्धन सहित धनुष; वाळ्–तलवारें; ताऩै–सेना, इनके पति; चुतैतरु मॊऴियाऩ्—सुधा-सम वचनवाले; वैयत्तु उयिर्क्कु उयिर् आय–जग के जीवों के प्राण-सम; तोऩ्ऱल्–श्रेष्ठ; कोमकऩ् अम्परीटऩ्–राजा अम्बरीष; पुरुट वतै पुरिमेतम् वकुप्प–नरमेध यज्ञ करने के निमित्त; ओर् मैन्तऩ् कॊळ्वाऩ्–एक

युवा को खरीदने के विचार से; तेर्–रथ पर; कऩकम्–स्वर्ण; चितैवु इल कॊण्टु–अक्षय राशि लेकर; अटविकळ्–अनेक वनों में; तुरुवि चॆऩ्ऱाऩ्–खोजते हुए चले । ६७४

राजा अंबरीष अयोध्या में राज कर रहे थे। वे श्रेष्ठ धनुर्धर, तलवार के धनी और श्रेष्ठ सेना के स्वामी थे। मधुर-भाषी भी थे। पृथ्वी के सारे जीवों को प्राण-सम प्रिय थे। (उन्होंने कोई यज्ञ किया। यज्ञ-पशु को इन्द्र ने चुराकर छिपा दिया। पुरोहितों ने कहा कि किसी कुमार की ही बलि देकर यज्ञ को पूरा कीजिए, नहीं तो बड़ा अनर्थ हो जायगा—वालमीकी) वे नर-मेध-यज्ञ करने के विचार से एक कुमार की खोज में, अपने रथ पर अपार धनराशि लेकर, वनों में घूमने लगे। (इस पद में 'कुतै', एक शब्द आया है। उसके दो अर्थ पाये जाते हैं। एक धनुष के अंत में डोरा बांधने का दाँता; दो : डोरे में तीर टिकाने के लिए बनी गाँठ; शायद गुत्थी का तमिऴ रूप है ?) । ६७४

नऱ्ऱव रिशिकऩ् वैकुम् नऩैवरुम् पऴुव नण्णिक्
कॊऱ्ऱवऩ् विऩव लोडु मिशैन्दऩर् कुमरर् तम्मुळ्
पॆऱ्ऱव ळिळव लॆऱ्के यॆऩ्ऱऩळ् पिदामु ऩॆऩ्ऱाऩ्
मऱ्ऱैय मैन्द ऩक्कु मऩ्ऩवऩ् ऱऩ्ऩै नोक्कि 675

कॊऱ्ऱवऩ्–राजा; नल् तवम् रिचिकऩ् वैकुम्–श्रेष्ठ तपस्वी, ऋचीक जहाँ रहते थे उस; नऩ्ऩै वरुम् पऴुवम्–पुष्प वृक्षाकीर्ण आश्रम में; नण्णि–पहुँचकर; विऩवलोटुम्–पूछने पर; कुमरर् तम्मुळ् इचैन्तऩर्--ऋषि-पुत्र आपस में सहमत हो गये; पॆऱ्ऱवळ्–माता (कौशिकी) ने; इळवल्–कनिष्ठ; ऍऱ्के–मेरा ही (नहीं दूँगी); ऍऩ्ऱऩळ्–कहा, पिता-पिता ने; मुऩ् ऍऩ्ऱाऩ्–ज्येष्ठ (मेरा), कहा; मऱ्ऱैय मैन्तऩ्–बाकी रहा पुत्र, (शुनःशेप); नक्कु–हँसते हुए; मऩ्ऩवऩ् तऩ्ऩै–राजा को; नोक्कि–देखकर । ६७५

वे ऋचीक मुनि के आश्रम में आये। राजा ने उनसे पूछा। वे मधुर-भाषी तो थे ही। ऋचीक के तीनों पुत्र उद्यत हो गये। पर उनकी माता ने कहा कि मैं कनिष्ठ पुत्र को नहीं दूँगी, वह मुझे अत्यंत प्यारा है। पिता ऋचीक ने ज्येष्ठ पुत्र को रख लिया। तब जो बचा था वह (शुनःशेप) हँसा। उसने राजा से कहा। ६७५

कॊडुत्तरुळ् वॆरुक्कै वेण्डिऱ् ऱोऱ्कमाम् विऴुमङ् गुऩ्ऱ
ऍडुत्तॆऩ्ऩै वळर्त्त तादैक् कॆऩ्ऱवर् ऱॊऴुदु वेन्दऩ्
तडुप्परुऩ् देरि लेऱित् तडैयिलर् पडर्द लोडुम्
शुडर्क्कदिर्क् कडवुळ् वाऩत् तुच्चियज् जूऴल् पुक्काऩ् 676

ऍऩ्ऩै ऍटुत्तु वळर्त्त–मुझे जन्म देकर जिन्होंने पाला; तातैक्कु–उन पिता को; ओऱ्कम् आम् विऴुमम् कुऩ्ऱ–दरिद्रतारूपी दुख दूर करते हुए; वेण्टिऱ्ऱु वॆरुक्कै कॊटुत्तु अरुळ्–यथेष्ट धन देने की कृपा करें; ऍऩ्ऱु–कहकर; अवऩ् तॊऴुतु–उन

(पिता) का नमस्कार करके (उनसे विदा लेकर); वेऩ्तऩ्–राजा के; तट्टुप्पु अरुम् तेरिल् एऱि–दुर्दम रथ पर चढ़कर; तटै इलर्–अबाध हो; पटर्तलोट्टुम्–जाते रहे, तब; चुटर् कतिर् कट्वुळ्–उज्ज्वल अंशुमाली; वाऩत्तु–आकाश के; उच्चि चूळल् पुक्काऩ्–मध्यप्रदेश में आये। ६७६

राजन् ! मैं माता-पिता, दोनों से त्यक्त हो गया हूँ। उनकी इच्छा मुझे याग-पशु के रूप में देने की है। इसलिए मैं आपके साथ आऊँगा। आप मेरे पिता की दरिद्रता को दूर कर सकने वाली धनराशि दे दीजिये। फिर उसने अपने पिता को नमस्कार करके विदा ली। राजा और वह, राजा के शीघ्रगामी रथ पर सवार हो गये। रथ बिना किसी बाधा के चलने लगा। रास्ते में मध्याह्न हो गया। ६७६

अव्वयि ऩिळिऩ्दु वेऩ्द ऩरुङ्गडऩ् मुऱैयि ऩाऱ्ऱच्
चॅव्विय कुरिशि ऱाऩुम् जॅऩ्ऱऩ ऩियमम् जॅय्वाऩ्
अव्विय मवित्त शिऩ्दै मुऩिवऩै याण्डुक् काणाक्
कव्वयि ऩोडुम् बाद कमलम दुच्चि शेर्त्ताऩ् 677

अ वयिऩ्–उस (मध्याह्न-) समय; वेऩ्तऩ्–राजा (अम्बरीष); इळिऩ्तु–(रथ से) उतरकर; अरुकटऩ्–अतिशय (प्रभावक) आह्निक कर्म; मुऱैयिऩ् आऱ्ऱ–सही प्रकार से करने गये, तब; चॅव्विय कुरिच्चिल् ताऩुम्–सीधा-सादा और श्रेष्ठ कुमार भी; नियमम् चॅय्वाऩ्–नित्यनियम करने के लिए; चॅऩ्ऱऩऩ्–गया; आण्टु–वहाँ; अव्वियम् अवित्त चिऩ्तै–ईर्ष्या (आदि दुर्गुणों) का अभाव जिसमें हो गया हो, ऐसे मनवाले; काणा–देखकर; कव्वैयिऩोटुम्–आकुलता के साथ; पात कमलम् अतु–उनके चरणकमल; उच्चि चेर्त्ताऩ्–अपने सिर पर लगा लिये। ६७७

तब राजा अंबरीष रथ से उतरकर नित्य-कर्म करने में लगे। सदाचारी ऋषिपुत्र भी नियत कर्म करने गया। वहाँ उसने अपने मामा, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों के विजयी कौशिक को देखा। उनको देखते ही वह अपना दुख छिपा नहीं सका और रोते हुए उनके पैरों पर सिर रखकर दंडवत् किया। ६७७

विऱ्प्पॉडु वणक्कम् जॅय्द विडलैयै यिऩिदु नोक्किच्
चिऱ्प्पुडै मुऩिव ऩॆऩ्ऩै तॅरुमरल् शॅप्पु हॆऩ्ऩ
अऱ्प्पॊरु ळुणर्ऩ्द मेलो यऩ्ऩयु मत्तऩ् ऱाऩुम्
उऱ्प्पॊरुळ् कॊण्डु वेऩ्दऱ् कुदविऩ रॆऩ्ऩै यॆऩ्ऱाऩ् 678

विऱ्प्पॊट्टु–(मृत्यु-) भय के साथ; वणक्कम् चॅय्त–विनत; विटलैयै–छोटे लड़के को; चिऱ्प्पु उटै(य) मुऩिवऩ्–तपोविशिष्ट मुनि ने; इऩितु नोक्कि–स्नेह के साथ देखकर; तॅरुमरल् ऎऩ्ऩै–संकट क्या; चॅप्पुक–बताओ; ऎऩ्ऩ–कहा, तब; अऱम् पॊरुळ् उणर्ऩ्त–धर्मार्थ जाननेवाले; मेलोय्–उत्तम; अऩ्ऩैयुम् अत्तऩ् ताऩुम्–मेरी माता और पिता स्वयं; उऱ पॊरुळ् कॊण्टु–खूब धन लेकर; वेऩ्तऱ्कु–

(अम्बरीष) राजा को; ॲऩ्ऩै उतविऩर्–मुझे दे दिया; ॲऩ्ऱाऩ्–(शुनःशेप ने) कहा। ६७८

भयभीत हो अपने चरणों पर पड़े लड़के को देखकर कौशिक ने आर्द्र-दृष्टि के साथ पूछा कि लड़के ! क्या बात है ? यह घबड़ाहट क्यों ? बोलो। तब शुनःशेप ने कहा— धर्म की गति-विधि जाननेवाले महात्मा ! मेरी माता और मेरे पिता ने यथेष्ट धन लेकर मुझे राजा अंबरीष के हाथ में बेच दिया है। ६७८

मैत्तुऩ्‌ ऩोडु मुऩ्ऩोळ् वळङ्गिय माऱ्ऱङ् गेळात्
तत्तुऱ् ऱॊऴिनी याऩे तडुप्पॆऩिऩ् ऩुयिरै यॆऩ्ऩाप्
पुत्तिरर् तम्मै नोक्किप् पोहवेन् दोडु मॆऩ्ऩ
अत्तहु मुऩिवऩ् कूऱ ववर्मऱुत् तहऱल् काणा 679

अ तकु मुऩिवऩ्–उन श्रेष्ठ मुनि ने; मुऩ्ऩोळ्–बड़ी भगिनी; मैत्तुऩ्ऩॊटु–और उसके पति के; वळङ्किय–दे देने का; माऱ्ऱम्–समाचार; केळा–सुनकर; नी तत्तुउऱल् ऒऴि–तुम घबड़ाना छोड़ दो; याऩे–मैं स्वयं; निऩ् उयिरै–तुम्हारे प्राणों को; तटुप्पॆऩ्–रोकूँगा; ॲऩ्ऩा–कहकर; पुत्तिरर् तम्मै–पुत्रों को; नोक्कि–देखकर; वेन्तॊटुम् पोक–राजा के साथ जाओ; ॲऩ्ऩ कूऱ–यह कहने पर; अवर्–उनका; मऱुत्तु–नकार कर; अकऱल्–हटना; काणा–देखकर। ६७९

इन श्रेष्ठ राजर्षि ने अपनी बहन और अपने बहनोई के पुत्र-विक्रय की बात सुनकर उसको आश्वासन दिया कि तुम चिंता करना छोड़ दो। मैं तुम्हारे प्राण अवश्यमेव बचा लूँगा। फिर उन्होंने अपने पुत्रों से कहा कि तुममें कोई इसके स्थान में जाओ। लेकिन पुत्रों में कोई भी सहमत नहीं हुआ। वे इनकार करके हट गये। ६७९

ॲऴुङ्गदि रवऩु नाणच् चिवन्दऩ ऩिरुह ऩॆञ्जम्
पुऴुङ्गिऩऩ् वडवै तीय मयिर्प्पुऱम् पॊऱियिऩ् ऱुळ्ळ
अऴुङ्गलिल् शिन्दै याऩी रडविह डोऱुञ् चॆन्ऱे
ऒऴुङ्गऱु पुळिऩ राहि युऱुतुय रुऱुह वॆऩ्ऱाऩ् 680

ॲऴुम् कतिरवऩुम् नाण–उदय सूर्य को भी लज्जित करते हुए; इरु कण् चिवन्तऩऩ्–दोनों आँखों को लाल किया; नॆञ्चम् पुऴुङ्किऩऩ्–खिन्नमन हुए; वटवै तीय–बड़वा को भी झुलसाते हुए; मयिर् पुऱम् पॊऱियिऩ् तुळ्ळ–रोंगटे अंगारों से भरे; अऴुङ्कल् इल् चिन्तैयाल्—सहानुभूति-रहित चित्त के कारण; नीर्–तुम; ऒऴुङ्कु अऱु–व्यवस्थाहीन; पुळिऩर् आकि–व्याध बनकर; अटविकळ् तोऱुम् चॆऩ्ऱु—जंगल-जंगल घूमकर; उऱु तुयर् उऱुक–अधिक कष्ट उठाओ; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ६८०

उनका काम देखकर राजर्षि को इतना क्रोध आया कि आँखें उदय-सूर्य से भी अधिक लाल हो गयीं। मन उत्तप्त हो गया। बड़वाग्नि को भी जला दे, ऐसी आग के अंगारे रोम-कूपों में भर गये। अपने पुत्रों को

शाप देते हुए ऋषि ने कहा— निष्ठुर चित्तवाले हो, तुम लोग। व्यवस्था-हीन (दुराचारी)व्याध बन जाओ और वन-वन में भटक कर संकट भोगो। ६८०

मामुऩि वॅहुळि तऩ्ऩाऩ् मडिहला मैऩ्दर् नाल्वर्
तामुऱु शवर राहच् चवित्तॅदिर् चलित्त शिऩ्दै
एमुऱ लॊळिह विऩ्ऩे पॅऱुहॅऩ विरण्डु विञ्जै
कोमरु हऩुक्कु नल्हिप् पिऩ्ऩरुङ् गुऱिक्क लुऱ्ऱाऩ् 681

मामुऩि वॅकुळि तऩ्ताल्–महर्षि (वसिष्ठ जी) के कोप से; मटिकला–जो तब बिना मरे (बचे); नाल्वर् मैन्तर्–(उन) चारों पुत्रों को; ताम् उऱु चवरर् आक चपित्तु–नीच शवर बनने का शाप देकर; ऍतिर्–सामने रहे; चलित्त चिन्तै–अधीरमन; को मरुकऩुक्कु–उत्तम गुणी भांजे से; एम् उऱल् ऑळिक–दुख करना छोड़ दो; इरण्टु विञ्चै इऩ्ऱे पॅऱुक–दो विद्याएँ आज ही प्राप्त कर लो; ऍऩ्ऱ–कहकर; नल्कि–देकर; पिऩ्ऩरुम् कुऱिक्कल् उऱ्ऱाऩ्–आगे भी बोलने लगे। ६८१

विश्वामित्र जी के अन्य एक सौ पुत्र पहले ही वसिष्ठजी की आँखों की अग्नि से जल गये थे। चार ही बचे थे। वे चारों पुत्र नीच शवर बन गये। उनको ऐसा शाप देकर चिंताकुल भांजे से ऋषि ने कहा। चिंता छोड़ दो। मैं तुमको दो विद्याओं का उपदेश दूँगा। उन्होंने उसे दो विद्यायें (मंत्र) सिखायीं और आगे कहा। ६८१

अरशऩो डेहि यूपत् तणैयुङ्गाऩ् मऱैयै योदिऩ्
विरशुवर् विण्णु ळोरुम् विरिञ्जऩ्माल् विडैव लाऩुम्
उरैशॅऱि वेळ्वि मुऱ्ऱु मुऩ्दुयिर्क् कीऱुण् डाहा
पिरशमॅऩ् ऱारा यॅऩ्ऩप् पळिच्चॊडुम् बॅयर्न्दु पोऩाऩ् 682

पिरचम् मॅऩ् ताराय्–मधुस्रावी कोमल पुष्पमाला-धारी; अरचऩोटु एकि–राजा के साथ जाकर; यूपत्तु अणैयुम् काल्–यूपस्तम्भ से बाँधते समय; मऱैयै ओतिऩ्–ये मन्त्र जपो तो; विरिञ्चऩ्–विरंचि; माल्–विष्णु; विटै वलाऩुम्–और ऋषभ-वाहन; विण्णुळोरुम्–स्वर्गवासी देवता; विरचुवर्–आ जायँगे; उरै चॅरि वॆळ्वि–प्रकीर्तित वह यज्ञ भी; मुऱ्ऱुम्–सम्पूर्ण होगा; उऩ्तु उयिर्क्कु–तुम्हारे प्राणों की; ईऱु उण्टाकातु–हानि नहीं होगी; ऍऩ्ऩ–कहने पर; पळिच्चॊटुम्–स्तुति करके; पॅयर्न्तु पोऩाऩ्–उठ चला। ६८२

शहद चूनेवाले कोमल पुष्पों की माला पहने हुए वत्स ! तुम राजा के साथ जाओ। (माला पहने हुए) तुमको यूपस्तंभ में बाँधा जायगा। तब तुम यह मंत्र जपो। ब्रह्मा, महाविष्णु, ऋषभवाहन शिवजी और अन्य देवता यज्ञशाला में आयेंगे। उनकी कृपा से राजा का बहुप्रशंसित यज्ञ भी पूरा होगा और तुम्हारे प्राण भी बच जायेंगे। यह सुनकर शुनःशेप कौशिक की, कृतज्ञता के साथ, स्तुति करके चला गया। (इस पद्य में पुष्पमाला-धारी का संबोधन आया है। वह शुनःशेप का हो सकता है जो विश्वामित्र ने किया, या श्रीराम का हो सकता है, शतानंद द्वारा किया हुआ।)। ६८२

मऱैमुऩि युरैत्त वण्ण महत्तुऱै मैन्द ऩायच्
चिऱैयुरु कलुऴ ऩऩ्ऩज् जॅमुदऱ् पिऱवु मूरुम्
इऱैवर्तॊक् कमरर् चूऴ विळवऱऩ् ऩुयिरुम् वेन्दऩ्
मुऱैतरु महमुङ् गात्तार् वडदिशै मुऩियुञ् जॅऩ्ऱाऩ् 683

मैन्तऩ्–कुमार (शुनःशेप); मकम् तुऱै–यागशाला में; मुऩि उरैत्त वण्णम्–महर्षि के कहे अनुसार; मऱै आय–वेदमन्त्र जपा, तब; चिऱै उरु कलुऴऩ्–उत्तम पक्षीराज गरुड़; अऩ्ऩम्–हंस; चे–और ऋषभ; मुतल्–आदि; पिऱवुम्–अन्य वाहनों पर; ऊरुम्–आरूढ़; इऱैवर–देवताओं ने; अमरर् चूऴ–अन्य देवताओं के घेरकर आते; तॊक्कु–एकत्र होकर; इळवल् तऩ् उयिरुम्–बालक की जान; वेन्तऩ्–राजा अम्बरीष के; मुऱै तरु—विधि-विहित; मकमुम्–मख को भी; कात्तार–रक्षित किया; मुऩियुम्–ऋषि भी; वट तिचै–उत्तर की दिशा में; चॆऩ्ऱाऩ्–गये। ६८३

वेदज्ञ विश्वामित्र की सीख के अनुसार शुनःशेप ने यागवेदी पर मंत्र-जप किया तो पक्षीराज गरुड़ारूढ़ महाविष्णु, हंसारूढ़ ब्रह्मा, ऋषभारूढ़ शिवजी और अपने-अपने वाहनों पर अन्य प्रधान देवता अन्य देवताओं के साथ आये। शुनःशेप के प्राण और राजा के यज्ञ की रक्षा हो गई। इसके बाद राजर्षि कौशिक उत्तर दिशा में तप करने पहुँच गये। ६८३

वडादिशै मुऩियु नण्णि मलर्क्कर नाशि वैत्ताङ्
गिडावुपिङ् गलैता नैय विदयत्तु डॅऴुत्तॊन् ऱॆण्णि
विडादुपल् परुव निऱ्प मूलमा मुहडु विण्डु
तडादिरुट् पडल मूडच् चलित्तदॅत् तलमुन् दावि 684

मुऩियुम्–मुनि भी; वट तिचै नण्णि–उत्तर दिशा में जाकर; आङ्कु–वहाँ; मलर् करम् नाचि वैत्तु–कमलहस्त (की उँगलियाँ) नासिका पर रखकर; इटावु पिङ्कलै ताम् नैय–(श्वास को) ईडा, पिंगला (द्वारा जाना) रोककर; इतयत्तु ऊटु–मन में; ऍऴुत्तु ऑऩ्ऱु–एक अक्षर (ओं) का; ऍण्णि–ध्यान कर; विटातु पल् परुवम् निऱ्प–निरन्तर अनेक काल खड़े रहे, तब; मूलम्–मूलाग्नि से; मा मुकटु विण्टु–श्रेष्ठ कपाल फटा तब; इरुळ् पटलम्–अन्धकार के समान धुआँ का पुंज; तटातु तावि मूट–अबाधगति से सर्वत्र छाकर ढाँप गया तो; ऍ तलमुम् चलित्ततु–सब लोक विचलित हुए। ६८४

वहाँ उन्होंने नासिका पर उंगली रखकर प्राणायाम करके इड़ा, पिंगला में जानेवाले श्वास को रोका और उन नाड़ियों को क्रिया-हीन बनाया। ओंकार के ध्यान में निरंतर अनेक वर्ष एक ही प्रकार खड़े रहे। फलस्वरूप मूलाग्नि ऊपर को उठी और सिर को भेद गई। तब जो धुआँ उठा वह विश्व भर में व्याप गया। सभी लोक विचलित हुए। ६८४

ऍयिलॅ रित्तवऩ् याऩयु रित्तुमॅय्, पयिलु ऱत्तऩि पोर्त्तऩऩ् पण्बॅऩप्
पुयल्वि रित्तॅऴुन् दालॅऩप् पूदलम्, कुयिलु ऱत्तिक् कॊऴुम्बुहै विम्मवे 685

ॲयिल् ॲरित्तवऩ्–त्रिपुर जलानेवाले (शिवजी) ने; यात्तै उरित्तु–गज-चर्म उधेड़कर; मॅय् पयिलुऱ–शरीर से लगाकर; तत्ति–विशिष्ट रीति से; पोर्त्त–ढँक लिया, उस; नल् पण्पु ॲत्त–भले प्रकार से; पुयल्–मेघ; विरित्तु ॲऴुन्ताल् ॲऩ्ऩ–छा उठे, ऐसे; कॉऴु पुकै–पुंजीभूत धुआँ; पूतलम्–भूतल को; कुयिल् उरुत्ति–अपने अन्दर समा लेकर; विम्म–विस्तृत हुआ। ६८५

वह अंधकार ऐसा छाया जैसे शिव के शरीर पर उनका उधेड़ा गज-चर्म वेष्टित हुआ। और मेघों के फैलने के समान भी फैला। उस धुएँ में सारा विश्व छिप गया। ६८५

तमन्दि रण्डुल हियावैयुन् दावुऱ, निमिर्न्द वॅङ्गदिर्क् कऱ्ऱैयु नीङ्गुऱक्
कमन्द मादिरक् कावलर् कण्णॉडुम्, शुमन्द नाहमुङ् गण्शुम् बुलित्तवे 686

तमम् तिरण्टु–तम मिलकर; उलकु यावैयुम् तावुऱ–लोक भर में फैला, तब; निमिर्न्त–घनीभूत; वॅम् कतिर् कऱ्ऱैयुम्–गरम किरणों की राशि भी; नीङ्कुऱ–छिप गयी, तो; कमन्त–दायित्वपूर्ण; मातिरम् कावलर्–दिग्पालकों की; कण्णॉटुम्–आँखों के साथ; चुमन्त–(भूमि का भार) वहन करनेवाले; नाकम् कण्णुम्–हाथियों की आँखें भी; चुम्पुळित्त–बन्द हुईं। ६८६

तम के सर्वत्र छाने से सूर्य की रश्मि का जाल भी लुप्त हो गया। दायित्वपूर्ण रीति से दिशाओं की रक्षा करनेवाले दिग्पालों और भूमि के भार को उठानेवाले दिग्गजों की भी आँखें झप गयीं। ६८६

तिरिव निऱ्प शॅहदलत् तियावैयुम्, वॅरुव लुऱ्ऱन वॅङ्गदिर् मीण्डन
करुवि युऱ्ऱ कहऩम्ॅ लाम्बुहै, उरुवि युऱ्ऱिड बुम्बर्तु ळङ्गिऩार् 687

करुवि उऱ्ऱ–मेघाच्छादित; ककऩम् ॲलाम्–गगन सब; पुकै उरुवि उऱ्ऱिट–धुआँ व्याप्त होकर फैल गया; चॅकतलत्तु–जगतीतल पर; तिरिव निऱ्प–चर-अचर; यावैयुम्–सभी; वॅरुवल् उऱ्ऱन–डर गये; वॅम् कतिर्–गरम किरणें; मीण्टऩ–(भेद न सकने के कारण) लौट गयीं; उम्पर् तुळङ्किऩार्–आकाशलोक-वासी भयभीत हुए। ६८७

प्राणदायी मेघों के भरे आकाश में सर्वत्र धूम व्याप गया। इसलिए भूतल के सभी चर-अचर भयभीत हो गये। सूर्य-किरणें भी उस धुएँ के पटल को भेद नहीं पायीं। देवता लोग भी भयाक्रांत हो गये। ६८७

पुण्ड रीहत्तुम् पुट्टरु पाहत्तुम्, कुण्डै यूर्दि कुलिशियु मऱ्ऱुळ
अण्डर् तामुम्वन् दव्वयि ऩॅय्दिवे, रॅण्ड पोदऩऩ् ऱऩ्ऩै यॅदिर्न्दऩर् 688

पुण्टरीकत्तुम्–कमलासन और; पुळ् तरु पाकत्तुम्–गरुड़वाहन (विष्णु) और; कुण्टै ऊर्ति–ऋषभ-वाहन (शिवजी); कुलिचियुम्–कुलिशपाणी इन्द्र; मऱ्ऱु उळ–अन्य; अण्टर् तामुम्–देव सब (ने); अ वयिऩ् वन्तु ॲय्ति–वहाँ आ पहुँचकर; वॅऱु ॲण्–विशेष रूप से मान्य; तपोतऩऩ् तऩ्ऩै–तपोधन से; ॲतिर्न्तऩर्–भेंट की। ६८८

तब पुण्डरीक-रूप ब्रह्मा, खगराज गरुड़स्थ विष्णु, ऋषभारूढ़ शिव, कुलिशभृत इन्द्र और अन्य देवता वहाँ आ पहुँचे, और मुनियों में विलक्षण-भूत कौशिक के सामने प्रकट हुए। ६८८

पादि मामदि शूडियुम् पैन्दुऴाय्च्, चोदि यानुमत् तूय्मल राळियुम्
वेद पारहर् वेऱिलर् निन्ऩलाल्, माद पोदन वॅऩ्ऩ वळङ्गिऩार् 689

मा–महामान्य; पाति मति चूटियुम्–अर्धचन्द्र-धारी और; पचुमै तुऴाय् चोतियानुम्–हरे तुलसीपत्र-मालाधारी और; अ तूय् मलर् आळियुम्–उन पवित्र कमल पर उद्भूत (ब्रह्मा); मा तपोतन–महान तपोधन; वेत पारकर्–वेद पारंगत; नित् अल्लाल्–आपको छोड़कर; वेऱु इलर्–कोई नहीं; ऍऩ्ऩ–ऐसा; वऴङ्किऩार–(अभिनन्दन वचन) बोले। ६८९

पूज्य अर्धचन्द्रधारी शिवजी, हरी तुलसी-माला से अलंकृत ज्योतिर्मय विष्णुदेव, पवित्र कमल पर आसीन ब्रह्मा—इन्होंने कौशिकजी से उनके सम्मान में कहा—महिमामय तपोधन! आपको छोड़कर और कोई वेद-पारंगत नहीं है। (वाल्मीकी में, तपस्या के वृत्तांत में थोड़ा अंतर है। इस स्थल में भी यह वृत्तांत है—ब्रह्माजी ने उनको ब्रह्मर्षि मान लिया, पर विश्वामित्र ने चाहा कि 'ओंकार, वषटकार और वेद मुझे वरण करें और ब्रह्मऋषि वसिष्ठ अपनी ओर से मान लें। वही हुआ और विश्वामित्र तृप्त हुए। इस पद में जो 'वेदपारंगत' शब्द आया है उसके विस्तार में यह वृत्तांत भी अंतर्गत माना जा सकता है।)। ६८९

अऩ्ऩ वाशकङ् केट्टुण रन्दणऩ्, शॅऩ्ऩि ताऴ्त्तिरु शॅङ्गर मुङ्गुवित्
तुऩ्ऩु नल्विऩै युऱ्ऱदॆऩ् ऱोङ्गिऩाऩ्, तुऩ्ऩु तेवर्दम् जूऴलिऱ् पोयिऩार् 690

अऩ्ऩ वाचकम् केट्टु–वे वचन सुनकर; उणर्–ज्ञानी; अन्तणऩ्–ब्राह्मणत्व प्राप्त (कौशिक जी); चॅऩ्ऩि ताऴ्त्तु–सिर नवाकर; इरुचॅम् करमुम् कुवित्तु–दोनों सुन्दर हाथ जोड़कर; उऩ्ऩुम् नल् विऩै–इच्छित सुकृत; उऱ्ऱतु–मिल गया; ऍऩ्ऱु–कहकर; ओङ्किऩाऩ्–आनन्द में बढ़े; तुऩ्ऩु तेवर्–एकत्र देव; तम् चूऴलिल् पोयिऩार्–अपने-अपने स्थान गये। ६९०

उनके वचन सुनकर ब्रह्मर्षि ने अपना सिर झुकाया और तृप्ति के साथ हाथ जोड़कर कहा कि मेरा मनोरथ सफलीभूत हुआ और मैं सौभाग्य-वान हुआ। उनका आनंद उमड़ आया। फिर देवता लोग चले गये। ६९०

ईदु मुऩ्ऩ निहऴ्न्द दिवऩ्रुणै, माद वत्तुयर् माण्बुडै यारिलै
नीदि वित्तहऩ् ऱऩ्ऩरु णेर्न्दऩिर्, यादु मक्करि दॆऩ्ऱऩ नीऱिलाऩ् 691

मुऩ्ऩम् निकऴ्न्ततु ईतु–पहले घटित हुआ यही; इवऩ् तुणै–इनके समान; मातवत्तु उयर्–महा तपस्या में उत्कृष्ट; माण्पु उटैयार्–गौरवशाली; इलै–(कोई दूसरे) नहीं; नीति वित्तकऩ्–अनुष्ठान और ज्ञान के; अरुऴ् नेर्न्तऩिर्–(इनकी)

कृपा के आप पात्र बने हैं; उमक्कु अरितु यातु–आपके लिए दुर्लभ क्या है; ऍऩ्ऱऩऩ्–कह चुके; ईऱु इलाऩ्–(तप आदि में) अपार ऋषि। ६९१

यह सब विस्तार से वर्णन करके तपोराशि और गुणपूर्ण शतानंद ने श्रीराम और लक्ष्मण से कहा— यही बीता वृत्तांत है। महान् तप में उन्नत इनके समान और कोई नहीं मिलेंगे। आप इनकी कृपा के पात्र बने हैं। अब आपके लिए अप्राप्य कुछ भी नहीं है। ६९१

ऍऩ्ऱु कोतमऩ् कादलऩ् कूऱिड, वॅऩ्ऱि वीरर् वियप्पॉ डुवन्दॅऴा
ऒऩ्ऱु मादवऩ् ऱाडॊऴु दोङ्गिय, पिऩ्ऱै येत्तिप् पॅयर्न्दऩऩ् ऱऩ्ऩिडम् 692

ऍऩ्ऱु–यह; कोतमऩ् कातलऩ्–गौतम के प्रिय (पुत्र) के; कऱिट–कहने पर; वॅऩ्ऱि वीरर्–विजयी वीर; वियप्पॊटु उवन्तु–विस्मय के साथ आनन्दानुभव करके; ऍऴा–आसन से उठकर; ऒऩ्ऱुम् मातवऩ्–(तपस्या के फल से) युक्त महातपस्वी (शतानन्द के); ताळ्–पैरों में; तॊऴुतु–नमस्कार कर; ओङ्किय पिऩ्ऱै–उठने के बाद; एत्ति–आशीर्वाद देकर; तऩ् इटम्–(शतानन्द) अपने स्थान; पॅयर्न्तऩऩ्–चले। ६९२

शतानंद के मुख से विश्वामित्र की महिमामय कहानी सुनकर श्रीराम और लक्ष्मण विस्मय और आनंद से फूल उठे। वे शतानंद जी के चरणों में नमस्कार कर उठे। शतानंद उनको आशीर्वाद देकर चले गये। ६९२

❀ मुऩियुन् दम्बियुम् बोय्मुऱै याऱ्ऱमक्, किऩिय पळ्ळिह ळॅय्दिय पिऩ्ऩिरुट्
कऩियुम् बोल्बवऩ् कङ्गुलुन् दिङ्गळुम्, तऩियुन् दानुमत् तैयलु मायिऩाऩ् 693

मुऩियुम् तम्पियुम् पोय्–मुनि (कौशिक) और छोटे भ्राता, जाकर; मुऱैयाल्–क्रम से; तमक्कु इऩिय पळ्ळिकळ्—अपनी-अपनी सुखद शय्या पर; ऍय्तिय पिऩ्–लेटने के बाद; इरुळ् कऩि पोल्पवऩ्–अन्धकार घन-सम (श्रीरामचन्द्र); कङ्कुलुम्–रात और; तिङ्कळुम्–चन्द्र और; तऩियुम्–विविक्तता; तानुम्–और स्वयं; अ तैयलुम्–वे देवी (सीता); आयिऩाऩ्–बने। ६९३

महर्षि विश्वामित्र और श्रीराम के भाई लक्ष्मण यथाक्रम अपनी-अपनी शय्या पर लेट गये। (यह क्रम तुलसीदास द्वारा स्पष्ट रूप से वर्णित है। श्रीराम ने विश्वामित्र के चरण चांपे। उनसे आज्ञा लेकर वे अपनी शय्या पर गये। उनके भाई लक्ष्मण उनके पाँव पलोटने लगे। पर श्रीराम को नींद नहीं आयी। उन्होंने श्रीलक्ष्मण को निद्रा करने भेज दिया।) श्रीराम सोये नहीं और सीताजी की याद में समय काटने लगे। (कवि इस बात को चातुरी से कहते हैं कि) घनीभूत अंधेरा-सम रंगवाले श्रीराम, रात, चन्द्र, एकांतता और स्वयं और सीताजी (की स्मृति या मिथ्या-दृश्य) इनके साथ रह गये। उन दोनों के लिए शय्या सुखद थी। पर इनके लिए नहीं थी। ६९३

❀ **विण्णि ऩीङ्गिय मिऩ्ऩुरु विम्मुऱै, पॅण्णि ऩऩ्ऩलम् पॅऱ्ऱदुण् डेहॊलाम्**
ऍण्णि ऩीदल दॅण्णऱि येऩिरु, कण्णि ऩुळ्ळुङ् गरुत्तिऩुङ् गाण्बॅऩाल् 694

विण्णिऩ् नीङ्किय–आकाश से निकली; मिऩ्–बिजली; इ मुऱै–इस प्रकार; इऩ् नल् नलम् पॅण् उरु–मनोरम श्रेष्ठ सुन्दर स्त्री का रूप; पॅऱ्ऱतु उण्टे आम्–प्राप्त कर आयी, वही है; ऍण्णिऩ्–सोचना है; ईतु अलतु–तो इसके सिवा; ऍण्ण अऱियेऩ्–सोचना नहीं जानता; इरु कण्णिऩ् उळ्ळुम्–दोनों आँखों के अन्दर; करुत्तिऩुम्–और मन में; काण्पॅऩ्–देखता हूँ। ६६४

श्रीराम विचार करते हैं कि वह अवश्य एक विद्युल्लता है जो मेघ से छूटकर सुन्दर, सुखद और शालिनी रमणी का श्रेष्ठ रूप लेकर आयी थीं। कितना ही सोचता हूँ, पर वही भावना उठती है। वही रूप मेरी आँखों में और मन में अंकित रहता है। ६९४

वळ्ळऱ् चॅक्कैक् करियवऩ् वैहुमव्
वॅळ्ळप् पाऱ्कडल् पोऩ्मिळिर् कण्णिऩाळ्
अळ्ळऱ् पूमह ळाहुङ्गॊ लोवॅऩ
वुळ्ळत् तामरै युळ्ळुऱै निऩ्ऱदाल् 695

वळ्ळल् चेक्कै–उदार (शेष-) शायी; करियवऩ्–श्यामल प्रभु; वैकुम्–जहाँ रहते हैं उस; अ वॅळ्ळम् पाल् कटल् पोल्–जल-विस्तार क्षीरसागर के समान; मिळिर्–भासमान; कण्णिऩाळ्–आँखोंवाली; ऍऩतु उळ्ळम्–मेरे हृदयरूपी; तामरै उळ्–कमल में; उऱैकिऩ्ऱताल्–ठहरती हैं, इसलिए; अळ्ळल् पू मकळ्–पंकज-सुमन की देवी; आकुम् कॊल्ओ–हैं क्या। ६६५

उनकी आँखें शेषशायी, कृष्णवर्ण श्रीविष्णु का वासस्थल, क्षीरसागर के समान प्रकाशमान थीं। (क्षीरसागर आँखों के श्वेत भागों की उपमा है; शेषशय्या काले भाग की। शेष, भगवान के रंग से प्रभावित होकर काला दिखता है। श्रीविष्णु ही आँख की पुतली हैं। सागर की तरंगें सीताजी के मन के भावों की प्रतिछाया हैं। क्षीरसागर से मारक विष और संजीवनी अमृत, दोनों निकले, पर अलग-अलग प्रकट हुए। पर देवी की आँखें श्रीराम के लिए स्वयं विष भी हैं और अमृत भी।) वे मेरे हृदय कमल पर आकर विराजमान हैं। तब क्या वे पंकज, कमल-निवासिनी श्री (लक्ष्मी) देवी हैं? । ६९५

अरुळि लाळॅऩि ऩुम्मऩत् ताशैयाल्
वॅरुळु नोय्विडक् कण्णिऩ् विळुङ्गलाल्
तॅरुळि लावुल हिऱ्चॅऩ्ऱु निऩ्रुवाऴ्
पॊरुळॆ लाम्अवळ् पॊऩ्ऩुरु वायवे 696

अरुळ् इलाळ्–अकरुण है; ऍऩिऩुम्–तो भी; मऩत्तु आचैयाल्–मन में उत्पन्न प्रेम का; वॅरुळुम् नोय्विट–भयोत्पादक रोग दूर हो; कण्णिऩ् विळुङ्कलाल्–इस

हेतु अपनी आँखों से (उसके रूप को) निगलने से; तॆरुळ् इला उलकिल्–अस्पष्ट (दिखनेवाले) इस संसार में; चॆऩ्ऱु निऩ्ऱु वाऴ् पॊरुळ् ॲलाम्–चर, अचर सभी पदार्थ; अवळ् पॊऩ् उरु–उनके स्वर्ण-रंग के रूप के समान; आय–बन गये। ६९६

वे मेरे प्रति करुणा-हीन हैं। (क्योंकि वे मेरा प्रेम और उससे उत्पन्न वेदना का ख्याल करके, मेरे पास आकर, मेरा ताप नहीं हरतीं।) तो भी ताप-रोग को दूर करने के हेतु मैंने उनको अपनी आँखों से दवा के रूप में निगल लिया। (मन में उनका रूप बिठाया है।) इसलिए अस्पष्ट इस संसार के चर, अचर सब पदार्थ उन्हीं के से स्वर्ण रंग के दिखाई देते हैं। (यानी अंदर, बाहर, सर्वत्न, सदा उन्हीं का रूप दिखाई देता है। संसार को अस्पष्ट कहते हैं, क्योंकि उनका मन भावाकुल है और चिंतन-शक्ति स्पष्ट नहीं है।)। ६९६

पूणु लाविय पॊऱ्कल शङ्गळॆऩ्ऩ्, एणि लाहत् तॆऴुदल वॆऩ्ऩिऩुम्
वाणि लामुरु वऱ्कऩि वाय्मदि, काण लावदॊर् कालमुण् डाङ्गॊलो 697

पूण् उलाविय–जिन पर आभरण डोलते हैं उन; पॊऩ् कलचङ्कळ्–स्वर्णकलश (स्तन); ॲऩ्–मेरे; एण् इल् आकत्तु–अभागे वक्ष पर; ॲऴुतल ॲऩ्ऩिऩुम्–(गाढ़े रूप से) नहीं लगे तो भी; वाळ् निलाम् मुऱुवल्–दीप्तियुत मन्दहास के; कऩि वाय्—(बिम्ब-) फल सदृश मुख से शोभायमान; मति–मुख (-चन्द्र) को; काणल् आवतु ऒरु कालम्–देखने का एक अवसर; उण्टु आम् कॊल् ओ–मिल सकेगा क्या। ६९७

श्रीराम अपने सामने रिक्त आकाश में सीताजी का मिथ्या रूप देखते; उसका आलिंगन करने के लिए बढ़ते तो वह अदृश्य हो जाता। (तब वे कहते—) उनका आलिंगन, जिससे, उनके स्वर्णाभरणों को अपने स्पंदन से हिलानेवाले, स्वर्ण-घट सदृश उरोज मेरे भाग्यहीन वक्ष को मर्दित कर दें, प्राप्य न हो सका। तो भी क्या कम से कम उनके, मनोरम, हास और बिंबारुण अधरों से युक्त मुख को देखने का सौभाग्य नहीं मिलेगा। ६९७

❀ वण्ण मेहलैत् तेरॊऩ्ऱु वाणॆडुङ्, गण्णि रण्डु कदिमुलै तामिरण्
डुण्ण वन्द नहैयुमॆऩ् ऱॊऩ्ऱुण्डाल्, ॲण्णुङ् गूऱ्ऱिऩुक् कित्तऩै वेण्डुमो 698

ॲण्णुम्–(मेरे प्राण हरना) सोचनेवाले; कूऱ्ऱिऩुक्कु–यम के लिए; वण्णम् मेकलै–सुभग मेखला से अलंकृत; तेर् ऒऩ्ऱु–(नितम्बरूपी) रथ एक; वाळ् नॆटु कण् इरण्टु–तलवार सी आयत आँखें, दो; कति मुलै इरण्टु–पीन उरोज दो; उण्ण वन्त–(और) प्राण खाने आयी; नकै ॲऩ्ऱ ऒऩ्ऱु उम्–मन्द हँसी नाम का एक; उण्टु–है; इत्तऩै वेण्टुमो–इतने चाहिए क्या ?। ६९८

(श्रीराम सीताजी के रूप को यमराज कहते हैं।) मेरे प्राण हरने की चाह के साथ आनेवाला रूप स्वयं वह काम करने के लिए पर्याप्त समर्थ है। तो भी उसके साथ रथ के स्थान में मेखला-वलयित जघन प्रदेश है;

तलवारों के समान दो आँखें हैं; और पीन दो उरोज हैं। इनके अलावा, प्राणघाती हँसी भी है। इतने साधनों की भी आवश्यकता है क्या ? वे भी एक साथ क्यों ? । ६९८

कऩ्ऩल् वार्शिलै काल्वळैत् तेमदऩ्, पॉऩ्ऩै मुऩ्ऩिय पूङ्गणै मारियाल्
ॲऩ्ऩै यॅय्दु तॉलैक्कुमॅऩ् ऱालिऩि, वऩ्मै यॅऩ्ऩुमि दारिडै वैहुमो 699

मतऩ्–मदन; कऩ्ऩल् वार् चिलै–(इक्षु के) लम्बे धनुष को; काल् वळैत्तु–पैरों से दबाकर, उसे झुकाकर; पॉऩ्ऩै मुऩ्ऩिय–स्वर्ण-सी उस देवी को पुरस्सर करके; पू कणै मारियाल्—पुष्पशर-वर्षा से; ॲऩ्ऩै ॲय्तु तॉलैक्कुम्–मुझे आहत कर देता है; ॲऩ्ऱाल्–तो; इऩि–अब; वऩ्मै ॲऩ्ऩुम् इतु–पौरुष नामक वह; आर् इटै वकुमो–किसके पास रहेगा। ६९९

मदन अपने इक्षु-धनुष के सिरे को पैर के नीचे दबाकर, धनुष को झुकाकर, उन स्वर्ण-प्रभ सुन्दरी को मेरे ध्यान का विषय बनाकर, मुझ पर लगातार पुष्प-शर चला रहा है, और मुझे धैर्य-हीन बनाने में सफल हो गया है। तो पुरुषोचित (मनो) बल किसके पास पाया जायगा ? । ६९९

❀ कॉळ्ळै कॉळ्ळक् कॉदित्तॆळु पाऱ्कडल्, पळ्ळ वॆळ्ळ मॆऩप्पड रुन्निला
उळ्ळ मुळ्ळुऱ् ऱुयिरैत् तुरुवुमाल्, वॆळ्ळै वण्ण विडमुमुण् डाङ्गॉलो 700

कॉळ्ळै कॉळ्ळ–(मेरा प्राण) लूट मारने के हेतु; कॉतित्तु ॲऴु–क्रोधी हो उठनेवाले; पाल् कटल् पळ्ळम् वॆळ्ळम्—क्षीरसागर-जलप्रवाह; ॲऩ पटरुम्–समान फैलनेवाली; निला–चाँदनी; उळ्ळम् उळ्ळुऱ्ऱु–मेरे मन के अन्दर घुसकर; उयिरै तुरुवुम्–प्राणों को धीरे-धीरे मार देता है; वॆळ्ळै वण्णम् विटमुम्–श्वेतवर्ण विष भी; उण्टु कॉल ओ–रहता है क्या। ७००

मेरे प्राणों को हरने के लिए, रुष्ट हो उठनेवाले, गहरे क्षीर-सागर के अत्यधिक पय के समान यह चन्द्रिका मेरे मन में घुसकर तिल-तिल कर काट रही है। क्या यह विष है ? विष तो काला होता है ! तो क्या सफ़ेद रंग का विष भी होता है ? । ७००

आहु नल्वऴि यल्वऴि यॅऩ्मऩम्, एहु मोविदु वॆय्दिय कारणम्
पाहु शेर्मॉऴिप् पैन्दॉडि कऩ्ऩियॆ, आहुम् वेऱिदऱ् कैयुऱ विल्लयॆ 701

आकुम् नल् वऴि–अभ्युदय के सन्मार्ग से; अल् वऴि–इतर मार्ग में; ॲऩ् मऩम्–मेरा मन; एकुमो–जायगा क्या (नहीं); इतु ॲय्तिय कारणम्–(प्रेम) इसके होने का कारण; पाकु चेर् मॉऴि–चाशनी सी बोलीवाली; पचुमै तॉटि–चोखे स्वर्ण के आभूषण-भूषित वे; कऩ्ऩिये आकुम्–(राज) कुमारी, कन्या ही होगी; इतऱ्कु–इसमें; वॆऱु–दूसरा; ऐयुरवु–संशय; इल्लै–नहीं। ७०१

(अब श्रीराम जी के थोड़ा स्वस्थ हुए मन में एक खटका उठा।) मैं उनसे प्रेम करने चला। क्या वह मेरे योग्य कन्या होगी ? मेरा शिष्ट मन, भला मार्ग छोड़, अन्यत्र जानेवाला नहीं। स्वर्णकंकण-धारिणी, और

मधुर-भाषिणी वे अवश्य राज-कन्या ही होंगी। तभी मेरा मन उनके प्रेम में फँसा है। ७०१

कऴिन्द कङ्गु लरशन् कदिर्क्कुडै, विऴुन्द दॆन्नवु मेऱ्ऱिशै याऴ्शुडर्क्
कॊऴुन्दु शेर्नुदर् कोदरु शुट्टिपोय्, अऴिन्द दॆन्नवु माऴ्न्ददु तिङ्गळे 702

कऴिन्त–गत; कङ्कुल्–रात के; अरचन्–राजा के; कतिर् कुटै–उज्ज्वल छत्र; विऴुन्ततु–गिरा (राज दूर हो गया); ऎन्नवुम्–वैसा और; मेल् तिचैयाऴ्–पश्चिमी दिशा (रूपी) स्त्री का; चुटर् कॊऴुन्तु चेर्–सुन्दर आभा-युक्त; कोतु अऱ्ऱु नुतल् चुट्टि–अकलंक भाल का जेवर; पोय् अऴिन्ततु–जाकर नष्ट हुआ; ऎन्नवुम्–वैसा; तिङ्कळ्–चन्द्र; आऴ्न्ततु–(समुद्र में) मग्न हुआ। ७०२

चन्द्रास्त हो गया। चन्द्र रातरूपी राजा का छत्र था; और पश्चिमी दिशारूपी रानी का झूमर अब वह लुप्त हो गया। राजा दिवंगत हो गया। इसलिए छत्र भी लुप्त हो गया और रानी का अलंकार भी हटा दिया गया। ७०२

वीशु हिन्ऱ निलाच्चुडर् वीऴ्न्ददाल्, ईश नामदि येहलुम् जोहत्ताल्
पूशु मॆन्कल वैप्पुनै शान्दिनै, आशै माद रऴित्तन रॆन्नवे 703

ईचन् आम् मति एकलुम्–पति यानी चन्द्र के जाने पर; आचै मातर्–उसकी प्रिय दिशारूपी नायिकाओं ने; चोकत्ताल्–शोक से; पुनै पूचुम्–अलंकार के हेतु जो लगाया गया था; मॆन् कलवै चान्तिनै–मनोज्ञ सुगन्धयुक्त चन्दन को; अऴित्तनर् ऎन्न–पोंछ दिया, ऐसा; वीचुकिन्ऱ–फैली रही; निला चुटर्–चाँदनी का प्रकाश; वीऴ्न्ततु–दूर हो गया; (आल्–पूरक ध्वनि)। ७०३

दिशाएँ रातराज की प्यारी रानियाँ हैं। राजा चला गया। इसलिए रानियों ने अपने शरीरों पर लगे हुए सुगंधित चंदन-लेप को पोंछ दिया। चंदनलेप चंद्रिका है। अब दिशाएँ चाँदनी-हीन हो गयीं। (तमिऴ में आशै का अर्थ प्यारा भी है और दिशा भी। उस विशेषण के कारण 'प्यारी दिशाएँ रूपी रानियाँ' अर्थ हो जाता है।)। ७०३

तदैयुमलर्त् तारण्ण लिव्वण्ण मयलुऴन्दु तळरुम् वेलै
शिदैयुमनत् तिडरुडैयच् चॆङ्गमल मुहमलरच् चॆय्य वॆय्योन्
पुदैयिरुळि नॆदिर्हिन्ऱ पुहर्मुहया नयिनुरिवैप पोर्वै पोर्त्त
उदयगिरि यॆनुङ्गडवु णुदल्किऴित्त विऴिपोल वुदयञ् जॆय्दान् 704

ततैयुम् मलर्–घने रूप से पुष्प-गुँथी; तार् अण्णल्–माला के धारण करनेवाले प्रभु; इ वण्णम्–इस प्रकार; मयल् उऴन्तु–उत्कट प्रेमवेदना से पीड़ित होकर; तळरुम् वेलै–श्रांत हो रहे थे, उस समय; चॆय्य वॆय्योन्–लाल किरणमाली; चितैयुम् मनत्तु इटर् उटैय–शिथिल मन के (श्रीराम के) दुख को दूर करते हुए; चॆम् कमलम् मुकम् मलर–अरुण कमल-मुख को प्रफुल्ल करते हुए; पुतै इरुळिन् एतिर्किन्ऱ–गाढ़े

अन्धकार के रूप में आक्रमण करने आये हुए; पुकर् मुकम् यानैयिऩ्–(लाल) बिन्दियों से युक्त मुख के गज (हाथी) के; उरिवै पोऱ्वै–चर्मरूपी ओढ़ना; पोऱ्त्त–ओढ़े हुए; उतय किरि ॲन्तुम् कटवुळ्—उदयाचल-रूपी शिवदेव के; नुतल् किऴित्त–भाल चीरते हुए; विऴिपोल–नेत्र के समान; उतयम् चॅय्ताऩ्–उदित हुआ। ७०४

ऊपर लिखे प्रकार से घनी पुष्पमाला से शोभित श्रीराम प्रेमातुरता से व्याकुल रहकर थोड़ी देर किसी तरह सो पाये। तभी सूर्य उदित हुए, मानों वे शोकतप्त श्रीराम के मन की व्यथा को दूर कर, उनके मुख-कमल को खिलाना चाहते थे। वे सूर्य उदयाचल पर श्रीशिव जी के भाल पर प्रकट अग्नि-नेत्र के समान लगे। काला अंधकार रुद्र-मूर्ति का ओढ़ा हुआ गजचर्म-सा था। गजचर्म पर लाल बिंदियाँ श्रेष्ठ लक्षण समझी जाती हैं। सूर्योदय के समय उदयाचल पर काले आकाश में डूबनेवाले नक्षत्र आदि दिखाई दिये। उदयाचल-शिव, अंधकार-गजचर्म, नक्षत्र-बिंदियाँ और सूर्य-नेत्र और लाल-किरणें, नेत्राग्नि की यह रूपकमाला काव्यरस-पूर्ण है। ७०४

**विशैयाडऱ् पशुम्पुरविक् कुरमिदिप्प वुदयगिरि विरिन्द तूऴि
पशैयाह मऱैयवर्कैम् मलर्नऱैयु निऱैपुऩलुम् परन्दु पाय
अशैयाद नॅडुवरैयिऩ् मुहडुतॉऱु मिळङ्गदिर्शॅऩ् ऱणैन्दु वॅय्योऩ्
तिशैयाळु मदहरियैच् चिन्दूर मप्पियपोऱ् ऱिहऴु मादो 705**

विचै आटल्–वेग और विजयशील; पचुमै पुरवि–हरे रंग के अश्व; कुरम् मितिप्प–खुर रखते हैं इसलिए; उतयकिरि विरिन्त तूऴि–उदयाचल पर उठकर फैली हुई धूलि; पचै आक–गीली करते हुए; मऱैयवर्–ब्राह्मणों का; कैमलर् नऱैयुम्–हाथों में लिये गये फूलों का शहद; निऱै पुऩलुम्–(हाथों में) पूर कर लिया (अर्घ्य-जल); परन्तु पाय–विस्तृत रूप से बह गया, तब; अचैयात नॅटु वरैयिऩ्–अचल, ऊँचे पर्वत के; मुकटु तॉऱुम्—शिखर-शिखर पर; इळ कतिर् चॅऩ्ऱु अणैन्त—बाल-किरणों के जाकर लगने से; वॅय्योऩ्–सूर्य; तिचै आळुम् मतम् करियै–पूरब की दिशा की रक्षा करनेवाले गज पर; चिन्तूरम् अप्पियतु पोल्–सिंदूर का लेप लगाया हो, ऐसा; तिकऴुम्–विद्यमान है; (मातु ओ–पूरक ध्वनियाँ)। ७०५

सूर्य-रथ के हरे रंग के अश्व बड़े वेगवान और विजयी हैं। उनके खुरों से उदयगिरि पर धूलि उठती है। ब्राह्मण लोग सूर्य को संध्या-पूजामध्य अर्घ्य देते हैं। अर्घ्यजल में फूल हैं। उन फूलों से बहनेवाला शहद और यह जल दोनों मिलकर उस धूलिपटल को गीला कर लेप बना देता है। उस लेप को सूर्य अपनी किरणरूपी हाथों से लेकर पूर्व दिशारूपी मस्त हाथी के मस्तक पर लगा देते हैं। (सूर्योदय पर पूरब का दृश्य और ब्राह्मणों का मन्देह-असुरों को सूर्य के मार्ग से हटाने के लिए दिया जानेवाला अर्घ्यदान, दिशा की लाली आदि का सम्मिलित वर्णन रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों के सहारे से बड़ा ही मनोहारी हुआ है)। ७०५

पण्डुवरुङ् गुऱिपहर्न्दु पाशऱैयिऱ् पॊरुळ्वयिऩिऱ् पिरिन्दु पोऩ
वण्डुतॊडर् नऱुन्दॆरिय लुयिरऩैय कॊऴुनर्वर मणित्ते रोडुङ्
गण्डुमनङ् गळिशिऱप्प वॊळिशिऱन्दु मॆलिवहलुङ् गऱ्पि ऩार्पोल्
पुण्डरिह मुहमलर वहमलर्न्दु पॊलिन्दऩपूम् बॊय्है यॆल्लाम् 706

पण्टु–पहले ही; वरुम् कुऱि पकर्न्तु–लौट आने का समय बताकर; पाचऱैयिन्–खेमों की ओर (युद्ध पर); पॊरुळ् वयित्तिऩ्–(या) धनार्जन के हेतु; पिरिन्तु पोऩ–जो बिछुड़ गया; वण्टु तॊटर्–भ्रमर-मण्डरित; नऱु तॆरियल्–सुवासपूर्ण माला धारण करनेवाले; उयिर् अऩैय कॊऴुनर्–प्राणप्यारे पतियों के; मणि तेरोटुम् वर–घण्टियों-सहित सुन्दर रथों पर आने पर; कण्टु–देखकर; मऩम् कळि चिऱप्प–मन में मोद के उमड़ते; ऒळि चिऱन्तु–रौनक बढ़कर; मॆलिवु अकलुम्–मलिनता-विमुक्त; कऱ्पिऩार् पोल्–पत्नियों के समान; पू पॊय्कै ऎल्लाम्–फूलों से भरे तालाब सब; पुण्टरिकम् मुकम्–कमलरूपी मुखों के; मलर–विकसित होते; अकम् मलर्न्तु–अन्दर भी कांति पाकर; पॊलिन्तऩ–शोभायमान रहे। ७०६

सूर्य के उदय पर कितने जादू होते हैं। तड़ागों में कमल-पुष्प विकसित होते हैं। यह कैसा है? तमिऴ साहित्य में पुरुष स्त्री से तीन कारणों से अलग जा सकते हैं। युद्ध के लिए, धनार्जन के लिए, या वेश्या के पास। यहाँ तीसरा कारण छोड़ दिया गया है। धनार्जन या युद्ध के लिए प्यारा, भ्रमराकीर्ण, मालाधारी बाहर गये हुए थे। जाते समय वे लौटने का समय भी निश्चित कर गये थे। उसी वचन के अनुसार वे अपने सुन्दर रथों पर बैठकर आ गये। उनको देख सती नायिकाएँ मन और तन में प्रफुल्लित हो जाती हैं। उनकी क्षीणता दूर हो जाती है। वैसे ही तड़ागों के कमल सूर्य को देख प्रफुल्लित हो खिले। ७०६

❀ ऎण्णरिय मऱैयिऩॊडु किऩ्ऩरर्ह ळिशैपाड वुलह मेत्त
विण्णवरु मुऩिवररुम् वेदियरुङ् गरङ्गुपिप्प वॆलै यॆऩ्ऩुम्
मण्णुमणि मूऴ्वदिर वाऩरङ्गि ऩडम्बुरिवा ळिरवि यॆऩ्ऩुम्
कण्णुदल्वा ऩवऩ्कऩहच् चडैविरिन्दा लॆऩ्ऩविरिन्द कदिर्ह ळॆल्लाम् 707

ऎण् अरिय मऱैयिऩॊटु–अनन्त (या अतुलनीय) वेदों के साथ; किऩ्ऩरर्कळ्–किन्नर नाम की देवजाति के लोग; इचै पाट–(वेद) गान करते हैं, तब; उलकम् एत्त–लोक स्तुति करते हैं; विण्णवरुम्–देवता लोग; मुऩिवररुम्–मुनिगण; वेतियरुम्–वेदज्ञ ब्राह्मण; करम् कुविप्प–हाथ जोड़ते हैं, तब; वेलै ऎऩ्ऩुम्–समुद्ररूपी; मण्णुम् अणि मुऴवु–मट्टी का काला लेप जिस पर लगा है उस मर्दल के; अतिर–बजते; वाऩ् अरङ्किल् नटम् पुरि–आकाश के रंगमंच पर नर्तन करनेवाले; वाळ् इरवि आऩ–उज्ज्वल रवि रूपी; कण्णुतल् वाऩवऩ्–भालनेत्र (शिवजी) देवता की; कऩकम् चटै विरिन्ताल् ऎऩ्ऩ–कनकवर्ण जटा-जूट बिखरीं, ऐसा; कतिर्कळ् ऎल्लाम्–सभी किरणें; विरिन्त–बिखरीं। ७०७

सूर्य जब उदित हुए, तब किन्नर वेद-गान करने लगे; लोक में श्रेष्ठ लोगों ने सूर्य-वंदना की। देवता लोग, मुनिवर और ब्राह्मण लोग, अंजलि-बद्ध

हुए। सागर कोलाहल करने लगा। किरणें सब ओर व्यापने लगीं। इस तरह सूर्य आकाश पर दिखाई देते हैं। उनको देखकर नटराज भालनेत्र शिवजी का नर्तन याद आता है। जब वे नाचने लगे तो किन्नर, देव, आदि सब स्तुति करते थे। मर्दल जो बजता था वह सागर-गर्जन है। आकाश रंगमंच है। किरणें उनकी कनक-वर्ण जटाएँ हैं। ७०७

❀ कॉल्लाऴि नीत्तङ्गोर् कुनिवयिरच् चिलैतडक्कैक् कॉण्ड कॉण्डल्
ॲल्लाऴित् तेरिरवि यिळङ्गरत्ता लडिवरुडि यऩन्द ऱीर्प्प
अल्लाऴिक् करैकण्डा ऩायिरमा मणिविळ्क्क मऴलुम् जेक्कैत्
तॉल्लाऴित् तुयिलादे तुयराऴि नॅडुङ्कडलुट् टुयिल्हिऩ् ऱाऩे 708

तट कै–आजानु-लम्बित हाथ से; कॉल् आऴि नीत्तु–संहारक चक्रायुध दूर करके; अङ्कु–उसमें; ओर् कुन्ति वयिरम् चिलै–एक झुका हुआ और कठोर धनु (कोदण्ड) को; कॉण्ट–धारण करनेवाले; कॉण्टल्–मेघवर्ण; आयिरम् आम्–सहस्र गणित; मणि विळक्कम्–रत्नदीप; अऴलुम्–प्रकाश जहाँ देते हैं; चेक्कै–उस (शेष) शय्यावाले; तॉल् आऴि–प्राचीन (क्षीर-) सागर में; तुयिलाते–बिना निद्रा किये; तुयर् आऴि–दुखपूर्ण; नॅटुकटलुळ्–विशाल सागर में; तुयिल्कित्ऱान्–जो मग्न हैं वे श्रीराम; ॲल् आऴि तेर इरवि–प्रकाशमान एक-चक्र रथ के पति रवि के; इळम् करत्ताल्–अपने बाल-करों (किरणों) से; अटि वरुटि–पाँव दाबकर; अऩन्तल् तीर्प्प–मोह (तंद्रा) दूर करते; अल् आऴि–रातरूपी सागर का; करै कण्टाऩ्–तीर पाया (पार किया)। ७०८

श्रीराम श्रीविष्णु हैं। उनके हाथ में (दुष्ट-) संहारक चक्रायुध था। उसको छोड़कर अब कोदण्ड ले लिया है। पहले क्षीरसागर पर शयन करते थे। जहाँ अनंतनाग अपने सहस्र फणों के रत्नों द्वारा प्रकाश कर रहा था। अब दुःख-सागर में सो (मग्न हो) रहे हैं। सूर्य अपने मंद, सुखद किरणों से उनका पैर सहला रहे हैं। तब बेसुध पड़े श्रीराम जागे और रात्रिरूपी सागर के पार गये। सूर्य ने अपने वंशज को दिन-चर्या के लिए जगाया। ७०८

ऊऴिपॅयरन् दॅऩक्कङ्गु लॉरुवण्णम् बुडैपॅयर वुऱक्क नीत्त
शूऴिया ऩयिऩॅळुन्दु तॉऩ्ऩियमत् तुऱैमुडित्तुच् चुरुदि यऩ्ऩ
वाऴिमा दवऩ्पणिन्दु मऩक्किऩिय तम्बियॉडुम् वम्बिऩ् मालै
ताऴुमा मणिमौलित् तार्च्चऩकऩ् पॅरुवेळ्विच् चालै शार्न्दाऩ् 709

ऊऴि पॅयर्न्ततु ॲऩ–एक युग ही बीत गया, ऐसा; कङ्कुल्–रात; ऑरु वण्णम्–एक तरह से; पुटै पॅयर–अलग हटी, तब; उऱक्कम् नीत्त–निद्रा से जागे हुए; चूऴि यात्तैयिऩ्–मुखपट्ट से अलंकृत गज के समान; ॲऴुन्तु–(श्रीराम) उठकर; तॉल् नियमम् तुऱै मुटित्तु–परम्परागत नियमानुष्ठान पूरा करके; चुरुति अऩ्ऩ–वेदमूर्ति; मा तवऩ्–महातपस्वी (कौशिक जी) के सामने; पणिन्तु–नमस्कार करके; मऩक्कु इऩिय–हृदयप्रिय; तम्पियोटुम्–भाई के साथ और (ऋषि के साथ);

वम्पु इऩ् मालै–सुवासित मनोरम सुमनमाला; ताऴुम्–जिस पर से लटकती है; मामणि मौलि–उस श्रेष्ठ रत्नकिरीट के; तार्–वक्ष पर हार धारण करनेवाले; चऩकऩ्–जनक महाराज के; पॅरु वेळ्वि चालै–बड़ी यज्ञशाला में; चार्न्दाऩ्–पधारे। ७०९

एक युग-सी थी रात। वह लम्बी रात किसी प्रकार बीत गयी। श्रीराम मुखपट्ट पहने हाथी के समान (चुस्त हो) जाग उठे। नित्य-कर्म का अनुष्ठान पूरा किया। फिर साक्षात् वेदाकार विश्वामित्र को नमस्कार किया। फिर वे उनके और अपने प्यारे भाई के साथ उन जनक की यज्ञशाला में गये, जिनका रत्न-जटित किरीट सुगंधित, मनोरम और लटकनेवाली पुष्पमालाओं से युक्त था; और जिनके वक्ष पर पुष्पमालाएँ शोभायमान थीं। ७०९

11. कुलमुरै किळत्तु पडलम् (वंशक्रम-परिचय पटल)

**मडिच्चऩहर् पॅरुमाऩु मुऱैयाले पॅरुवेळ्वि मुऱ्ऱिच् चुऱ्ऱुम्
इडिक्कुरलिऩ् मुरशियम्ब विऩ्दिरऩिऱ् चन्दिरऩ्ऱोय् कोयि लॅय्दि
ॲडुत्तमणि मण्डबत्तु ऑण्डवत्तोऩ् मुऩिवरॊडु मिरुन्दाऩ् पैन्दार्
वडित्तकुऩि वरिशिलैक्कै मैन्दऩुन्दम् बियुमरुङ्गि ऩिरुप्प मादो 710**

मुटि चऩकर् पॅरुमाऩुम्–किरीटी जनक के कुल के श्रेष्ठ (महाराज) जनक भी; मुऱैयाले–विधि के अनुसार; पॅरु वेळ्वि मुऱ्ऱि–बड़ा यज्ञ सम्पन्न करके; चुऱ्ऱुम्–चारों ओर; इटि कुरलिऩ्–वज्रघोष के साथ; मुरचु इयम्प–ढोल के नर्दन (बड़ा शोर) करते; इन्तिरऩिऩ्–देवेन्द्र के समान; चन्तिरऩ् तोय् कोयिल् ऍय्ति–चन्द्रसंचरित (ऊँचे) मन्दिर में आकर; ऍटुत्त–शान से बने; मणि मण्टपत्तुळ्–मणियों से सज्जित मण्डप में; ऑण् तवत्तोऩ्–सम्मान्य तपोधन; पचमै तार्–नवीन फलों की माला धारण करनेवाले; वटित्त–सुगठित; कुऩि वरि चिलै कै–झुका, बन्धनयुक्त धनुष वाले हाथ के; मैन्तऩुम्–कुँअर; तम्पियुम्–और उनके लघु भ्राता; मरुङ्किऩ् इरुप्प–पार्श्व में विराजे, ऐसा; मुऩिवरॊटुम्–अन्य मुनियों के साथ; इरुन्ताऩ्–आसीन रहे। ७१०

किरीटी जनक वंश के नायक राजा जनक उत्तम यज्ञ को वेद विहित रीति से सुसंपन्न करके महल में आये। तब चारों ओर ढोल वज्रघोष के समान नर्दन कर उठे। महल इतना ऊँचा था कि चन्द्र उसमें आकर संचार कर सकते। उस महल में एक शानदार, रत्नसज्जित मंडप था जहाँ उनकी सभा होती थी। वे वहाँ आये और सिंहासन पर आसीन हुए। उनके पार्श्व में सम्मानित तपस्वी कौशिकजी और कोदण्डपाणी श्रीराम और उनके लघुभ्राता लक्ष्मण विराजे। अन्य मुनि भी सभा में आसीन रहे। ७१०

❀ इरुन्दकुलक् कुमरर्तमै यिरुकण्णाल् मुहन्दळहु परुह नोक्कि
अरुन्दवनै यडिवणङ्गि यारिवरै युरैत्तिडुमि न्डिह ॲन्न
विरुन्दिनर्ह णिन्नुडैय वेळ्विका णियवन्दार् विल्लुङ् गाण्बार्
पॅरुन्दहैमैत् तयरदन्ऱन् पुदल्वरॅन्न ववर्तहैमै पेश लुऱ्ऱान् 711

इरुन्त–(जनक) पास रहे; कुलम् कुमरर् तमै–कुलीन कुँअरों को; इरु कण्णाल्–(दोनों) आँखों से; अळकु मुकन्तु–सौन्दर्य को उठाकर; परुक नोक्कि–पीते से देखकर; अरु तवनै अटि वणङ्कि–श्रेष्ठ तपस्वी (कौशिक) के चरणों की पूजा करके; अटिकळ्–नमनीय चरण; इवर् यार्–ये कौन हैं; उरैत्तिटुमिन्–बतलाइये; ॲन्न–यह पूछने पर; विरुन्तिनर्कळ्–अतिथि; पॅरु तकैमै तयरतन् तन्–उत्तम महिमामय दशरथ के; पुतल्वर्–तनय हैं; निन्नुटैय–आपका; वेळ्वि–यज्ञ; काणिय–देखने के लिए; वन्तार्–आये हैं; विल्लुम्–धनु को भी; काण्पार्–देखेंगे (आज़माएँगे); ॲन्न–कहकर; अवर् तकैमै–उनकी महिमाएँ; पेचल् उऱ्ऱान्–बखानने लगे। ७११

राजा जनक ने उन दोनों उच्चकुलोन कुंअरों को अपनी आँखों से ऐसा देखा मानों वे अपनी आँखों से उनकी सुन्दरता को उठाकर पान कर रहे हों। फिर उन्होंने विश्वामित्र के चरणों पर विनत होकर विनय की—हे पूजार्हचरण ! ये कौन हैं ? बताने की कृपा करें। महर्षि ने कहा कि ये अतिथि (अतिथि का अर्थ जिनकी तिथि नहीं यानी जो अप्रत्याशित रूप से आ जायँ—नवागंतुक) बड़े ही महिमावान दशरथ के सुपुत्र हैं। वे आपका यज्ञ देखने आये। अब आपका वह धनुष भी देखेंगे जिसको सीताविवाहेच्छुक के लिए परीक्ष्य विषय बना रखा है। ७११

आदित्तन् कुलमुदल्वन् मनुविनैया रऱियादार्
बेदित्त वुयिरनैत्तुम् पॅरुम्बशियाल् वरुन्दामल्
शोदित्तन् वरिशिलैया निलमडन्दै मुलैशुरप्पच्
चादित्त पॅरुन्दहैयु मिवर्कुलत्तोर् तरापदिकाण् 712

आतित्तन् कुलम् मुतल्वन्–आदित्यवंशी प्रथम पुत्र; मनुविनै अऱियातार् यार्–मनु को न जाननेवाले कौन हैं; पेतित्त–परस्पर विभिन्न; उयिर् अनैत्तुम्–जीवराशि, सबको; पॅरु पचियाल् वरुन्तामल्–बड़ी भूख से बिना पीड़ित हुए; तन् चोति वरि चिलैयाल्–अपनी ज्योतिर्मय बन्धनयुक्त धनु द्वारा; निलम् मटन्तै–भूमि की देवी को; मुलै चुरप्प–स्तनों से (औषधियाँ आदि) निकालने को विवश करके; चातित्त–जिन्होंने साध लिया था; पॅरु तकैयुम्–बड़े महिमावान (पृथु) भी; इवर् कुलत्तु ओर् तरापति–इनके वंश के एक धराधिप हैं; काण्–जानिये। ७१२

(अब विश्वामित्र सूर्यवंश के राजाओं की महिमा का वर्णन करते हैं। वाल्मीकी में धनुर्भंग के बाद यह चर्चा आती है।) आदित्यवंश के प्रथम पुत्र (वैवस्वत) मनु को न जाननेवाले कौन हैं ? उनके वंश में एक राजा हुए जिन्होंने भूदेवी को, जो गाय के रूप में अपने अंदर ओषधियाँ सब

छिपा लेकर भागने लगी थी, अपने थन द्वारा सबको निकालने को विवश किया। (यह राजा पृथु हैं।) उससे विविध जीवराशियों की भुभुक्षा मिटी। उनके बंधनयुक्त धनु के प्रताप से भूमि वश में आयी। (पृथु के पहले 'वेन' नामक राजा था, जो अत्याचारी था। भूदेवी ने उसके अत्याचारों से तैश में आकर सभी वृक्ष, लता आदि औषधियों को अपने अंदर छिपा लिया। महर्षियों ने मिलकर वेन को मरवाकर पृथु को राजा बनाया। राजा पृथु ने भूमि पर धावा बोल दिया तो वह गाय का रूप लेकर भागी। फिर राजा पृथु के धनु के प्रताप के सामने हार मान गयी।)। ७१२

❀ पिणियरङ्ग विऩैयहलप् पॅरुङ्गालऩ् दवम्पेणि
मणियरङ्ग नॅडुमुडियाय् मलरयऩै वऴिपट्टुप्
पणियरङ्गप् पॅरुम्बायऱ् परञ्जुडरै याङ्गाण
अणियरङ्गऩ् दऩ्दानै यऱियादा रऱियादार् 713

मणि अरङ्कु—मणिमण्डित; अम् नॅटु मुटियाय्-सुन्दर उन्नत किरीट के धारण करनेवाले; पिणि अरङ्क—रोग दूर करने; विऩै अकल-(रोगों का कारण) प्रारब्ध कर्म दूर करने; मलर् अयऩै—कमलभव अज की; वऴि पट्टु—पूजा करके; पॅरु कालम् तवम् पेणि—लम्बे काल तक तप करके; पणि अरङ्कम् पॅरु पायल्—आदिशेष रूपी विशाल शय्या (शायी); परम् चुटरै—परमज्योति को; याम् काण—हमारे दर्शनार्थ; अणि अरङ्कम् तऩ्तानै—सुन्दर रंग-विमान के साथ इस दुनिया में लानेवाले (इक्ष्वाकु) को; अऱियातार्—जो नहीं जानते; अऱियातार्—(वे लोग) अज्ञ हैं ही। ७१३

नवरत्न जड़ित उन्नत किरीटवाले जनक! इनके वंश के एक राजा (इक्ष्वाकु) ने ब्रह्माजी की लंबी तपस्या की। उन्हें कष्ट और भव-बाधा हरण के लिए ब्रह्मा ने शेषशायी श्रीविष्णुदेव का विग्रह रंगविमान के साथ प्रदान किया। उन्हीं इक्ष्वाकु की तपस्या और करुणा से भूलोकवासियों को वह देव सुलभ हुए। उन इक्ष्वाकु को कौन नहीं जानता? (यहाँ विश्वास किया जाता है कि वही रंगविमान सहित श्रीमन्नारायण इक्ष्वाकु कुल में कुल-देवता के रूप में पूजे जाते थे। श्रीराम ने उन्हें विभीषण को दिया था। विभीषण उन्हें लेकर लंका जा रहे थे। लेकिन बीच में ही देव ने श्रीरंगम क्षेत्र को (जो तमिऴनाडु में तिरुच्चिनापल्ली के पास कावेरी और कॉळ्ळिडम् नदियों के बीच में है) अपना वासस्थान बना लिया। विभीषण के तृप्त्यर्थ उन्होंने वादा किया कि मैं दक्षिण की तरफ मुख करके शयन करता रहूँगा और मेरी कृपादृष्टि श्रीलंका पर रहेगी। इस रंगविमान के पीछे ही वह श्रीरंगम नाम पड़ा और यह क्षेत्र वैष्णवों के लिए परमपद से भी श्रेष्ठ है।)। ७१३

तान्ऱनक्कु वॅलऱ्करिय तानवरैत् तलैतुमित्तॅन्
वान्ऱरुहिऱ् ऱिहॊलॅनक् कुऱैयिरप्प वरङ्गॊडुत्ताङ्
गेन्ऱॅडुत्त शिलैयिनना यिहल्पुरिन्द विवरकुलत्तोर्
तोन्ऱलैप्पण् डिन्दिरने कॊल्लेऱाच् चुमन्दान्काण् 714

तान्–(इन्द्र) आप; तनक्कु वॅलऱ्कु अरिय–खुद हराने में अशक्य; तानवरै–दानवों को; तलै तुमित्तु–सिर काटकर; ऍन् वान्–मेरे स्वर्ग को; तरुकिऱ्ऱि कॊल्–लौटा दे सकेंगे क्या; ऍन–यह; कुऱै इरप्प–अपनी प्रार्थना निवेदन करने पर; वरम् कॊटुत्तु–वर देकर; आङ्कु एन्ऱु–वहीं सन्नद्ध होकर; ऍटत्त चिलैयिनताय्–धनुर्हस्त होकर; इकल् पुरिन्त–युद्ध (जिन्होंने) किया; इवर् कुलत्तु ओर् तोन्ऱलै–(उन) इनके वंशज एक राजा को; पण्टु–पूर्वकाल में; इन्तिरने–स्वयं इन्द्र ही; कॊल् एऱु आकि–बलवान बैल बनकर; चुमन्तान्–ढोये (काण्)। ७१४

इसके बाद एक राजा आये। (उनका नाम ककुत्स्थ था।) एक बार इन्द्र ने आकर उनसे कहा कि असुरों के सिर काट कर मेरा स्वर्ग लौटा दे सकते हैं क्या ? यह प्रार्थना सुनते ही राजा ने वर दिया और युद्धतत्पर हुए। उन्होंने जीत भी पायी। जब वे लड़ाई पर गये तब इन्द्र ने बैल बनकर अपने ककुद पर उन्हें धारण किया था। (ककुद = बैल का कुब्बड़) वैसे पराक्रमी थे वे राजा; वे इन्हीं के पूर्वज थे। ७१४

अरशववन् पिन्नोरै यॅन्नालु मळप्परिदाल्
उरैकुऱुह निमिर्कीर्त्ति यिवर्कुलत्तो नॊरुवन्काण्
नरैतिरैमूप् पिवैयॅय्दि यिन्दिरनु नन्दामल्
कुरैहडलै नॅडुवरैयाऱ् कडैन्दमुदङ् गॊडुत्तानुम् 715

अरच–राजन्; अवन् पिन्तोरै–उनके बाद आये हुए अनेक की महिमाएँ; ऍन्तालुम् अळप्पु अरितु–मुझसे भी अवर्ण्य हैं; इन्तिरनुम्–देवेन्द्र (और अन्य देव भी); नरै–बाल का पकना; तिरै–चमड़े का संकोच; मूप्पु–जरा; इवै ऍय्ति–इन्हें प्राप्त करके; नन्तामल्–मरे बिना रहने के लिए; कुरै कटलै–सघोष (क्षीर-) सागर को; नॅटु वरैयाल्–ऊँचे पर्वत से; कटैन्तु–मथकर; अमुतम् कॊटुत्तानुम्–अमृत दिलानेवाले भी; उरै कुऱुक निमिर् कीर्त्ति–अभिव्यंजना को असमर्थ बनाती हुई बढ़नेवाली कीर्ति के; इवर–इन कुंअरों के; कुलत्तोन् ऑरुवन् काण्–वंशज एक (राजा) थे, जानें। ७१५

महाराज ! उनके बाद जो इनके कुल में उत्पन्न हुये, उनकी महिमा मेरे लिए भी अवर्णनीय है। एक आये जिन्होंने गरजनेवाले दुग्धसागर को मेरु पर्वत से मथकर देवों को जरा आदि से विमुक्त अमर बनाने के लिए अमृत निकाल कर दिया था। वे भी इन्हीं अकथनीय यशस्वी श्रीराम और लक्ष्मण के पूर्वज थे। (इनका नाम वाल्मीकी में नहीं पाया जाता, अन्यत्र भी नहीं मिलता। इसमें 'उरै कुरुक निमिर्' कीर्ति का जो विशेषण

आया है वह सुन्दर शब्द-योजना है। भाषा-शक्ति को असमर्थ बनाकर बढ़ा हुआ यश— इसका अर्थ है।)। ७१५

करुदरिय पॅरुङ्गुणत्तो रिवर्पिऩ्बु कण्क्किऱन्दोर्
तिरिबुवऩ मुळुदाण्डु शुडर्नेमि शॅलनिऩ्ऱार्
पॊरुदुऱैशेर् वेलिऩाय् पुलिप्पोत्तुम् पुल्वायुम्
ऒरुतुऱैयि ऩीरुण्ण वुलहाण्डो ऩॊरुवऩुळऩ् 716

पॊरुतु उऱै चेर् वेलिऩाय्–युद्ध करके कोश में गये हुए भाला वाले; करुत अरिय–अशोच्य; पॅरु कुणत्तोर्–श्रेष्ठ गुणोंवाले; इवर् पिऩ्पु–इनके बाद; तिरिपुवऩम् मळुतुम्–सारा त्रिलोक; आण्टु–शासन करके; चुटर् नेमि–प्रतापी (आज्ञा) चक्र; चॅल निऩ्ऱार्–चलाते जा रहे; कण्क्कु इऱन्तोर्–वे असंख्यक हैं; पुलि पोत्तुम्–(मर्द) व्याघ्र; पुल् वायुम्–तृणमुख हरिण; ऒरु तुऱैयिल् नीर् उण्ण–एक ही घाट पर जलपान करें, ऐसा; उलकु आण्टोऩ् ऒरुवऩ्–लोकशासक एक; उळऩ्–हैं। ७१६

शत्रु संहार करके कोश में रखा गया भालावाले ! उन राजा के बाद असंख्य राजा आये जो अकल्पित उत्तम गुणों के थे; जो त्रिभुवन पर एकछत्र राज करके अपना आज्ञाचक्र चलाते थे; उनमें एक थे जिनके राज में व्याघ्र और हरिण एक ही घाट पर जल पीते थे। (ये माँधाता थे, ये बड़े ही नीतिमान थे और उनके राज्य में बली दुर्बल को सता नहीं पाते थे।)। ७१६

मऱैमऩ्नु मणिमुडियु मारमुम्वा ळॊडुमिऩ्ऩप्
पॊऱैमऩ्नु वाऩवरुन् दानवरुम् पॊरुमॊरुनाळ्
विऱऩ्मऩ्ऩर् तॊळुकऴला यिवर्कुलत्तोऩ् विऱ्पिडित्त
अऱमॅऩ्ऩ वॊरुतऩिये यमैन्दमरर् पतिकात्ताऩ् 717

मऱै मऩ्नुम्–शास्त्र के अनुसार निर्मित; मणि मुटियुम्–रत्नकिरीट; आरमुम्–और हार; वाळॊटु मिऩ्ऩ–कांतिसहित चमकते हैं, और; पॊऱै मऩ्नु वाऩवरुम्–क्षमाशील देव भी; ताऩवरुम्–दानव भी; पॊरुम् ऒरु नाळ्–जब लड़े तब एक दिन; विऱल् मऩ्ऩर् तॊळु कऴलाय्–प्रतापी राजाओं से पूजित चरणवाले; इवर् कुलत्तोऩ्–इनके वंश के एक ने; विल् पिटित्त अऱम् अॅऩ्ऩ–धनुर्हस्त धर्मदेवता के समान; ऒरु तऩिये अमैन्तु–एकाकी (सहायक) रहकर; अमरर् पति कात्ताऩ्–अमरावती की रक्षा की। ७१७

प्रबल राजाओं से पूजित चरणों के जनक ! एकबार आभरण-निर्माण विद्या के अनुसार रचित किरीट, हार आदि से अलंकृत और क्षमाशील देवों और असूया करनेवाले दानवों में युद्ध छिड़ा। तब इनके एक पूर्वज (मुचुकुंद) ने अकेले ही, धनुर्हस्त धर्मदेवता के समान देवताओं की सहायता करके दानवों को हराया और अमरावती (इन्द्र के नगर) को बचाया। ७१७

इऩ्ऩुयिर्क्कु मिऩ्ऩुयिरा यिरुनिलमुऩ् काल्तळित्त
पॊऩ्ऩुयिर्क्कुङ् गऴलवरै यास्बोलुम् पुहऴ्हिऱ्पाम्
मिऩ्ऩुयिर्क्कु नॆडुवेला यिवर्कुलत्तोऩ् मॆऩ्बुऱविऩ्
मऩ्ऩुयिर्क्कुत् तऩ्ऩुयिरै माऱाह वऴङ्गिऩऩाल् 718

मिऩ् उयिर्क्कुम्–बिजली के समान कांति बिखेरनेवाली; नॆटु वेलाय्–लंबी शक्तिधारी; इऩ् उयिर्क्कुम् इऩ् उयिराय्–प्रिय प्राणियों के प्रिय प्राण रहकर; इरु निलम्–इस विशाल भूमि को; मुऩ् काल्तु अळित्त–पूर्वकाल में जिन्होंने पाला; पॊऩ् उयिर्क्कुम् कऴल् अवरै–उन स्वर्ण वर्ण (स्वर्ण-निर्मित) पायलधारी राजाओं की; याम् पुकऴ्किऱ्पाम् पोलुम्–हम प्रशंसा करने में समर्थ होंगे (क्या); इवर् कुलत्तोऩ्–इनके वंशज; मॆऩ् पुऱविऩ्–कोमल कपोत के; मऩ् उयिर्क्कु–स्थायी प्राण के; माऱाक–बदले में; तऩ् उयिरै वऴङ्किऩऩ्–अपने प्राण दे गये। ७१८

बिजली के समान चमकनेवाला भालावाले ! इनके वंश के राजाओं की, जिन पायलधारी शासकों को सभी प्राणों के प्यारे जीव प्राणसम प्यारे थे, कैसी प्रशंसा करूँ ? उनकी संख्या और हर एक की महिमा इतनी बड़ी है कि वह काम दुस्साध्य है। उस कुल के एक राजा कपोत की जान बचाने के हेतु, अपनी ही जान देने के लिए, तुला पर चढ़े थे। (वे राजा शिवि हैं।)। ७१८

इडऱोट्ट विऩ्नॆडिय वरैयुरुट्टि यिव्वुलहम्
तिडऱोट्ट मॆऩ्क्किडन्द वहैतिऱम्पत् तॆव्वेन्दर्
उडऱोट्ट नॆडुवेला यिवर्कुलत्तो रुवरिनीर्क्
कडऱोट्टा रॆऩ्ऩिऩ्वेऱोर् कट्टुरैयुम् वेण्डुमो 719

तॆव् वेन्तर्–शत्रु राजाओं के; उटल् तोट्ट–शरीरों को भेदनेवाले; नॆटु वेलाय्–लम्बे भालेवाले; इवर् कुलत्तोर–इनके वंश के राजा लोगों ने; इटऱु ओट्ट–(राजा सगर के यज्ञ में हुई) बाधा को दूर करने के लिए; इ उलकम्–यह भूतल; तिटल् तोट्टम् ॲऩ्–ऊबड़-खाबड़ जो रहा; किटन्त वकै तिऱम्प–उस स्थिति को बदलकर; इऩम् नॆटिय वरै उरुट्टि–विशाल पर्वतराशियों को तोड़-फोड़कर; उवरि नीर् कटल् तोट्टार्–लवणजल समुद्र खोदा; ॲऩ्ऩिऩ्–तो; वेऱु ओर् कट्टुरैयुम्–दूसरा कोई प्रमाण-वचन; वेण्टुमो–चाहिए क्या ? । ७१९

शत्रु-शरीरों को भेदनेवाला भालावाले जनक ! इनके वंश के पूर्वजों में एक दल ने (सगर-पुत्रों ने) अपने पिता के यज्ञ में हुई बाधा के निवारणार्थ इस ऊबड़-खाबड़ भूमि की प्रकृति को बदल कर नमकीन जलवाला समुद्र बना दिया। उस प्रयत्न में उन्होंने बड़े-बड़े पहाड़ों को भी चूर-चूर कर दिया। फिर और भी विस्तार की आवश्यकता है क्या ? । ७१९

तूनिऩ्ऱ शुडर्वेला यऩ्दऩुक्कुञ् जॊलर्करिदॆल्
यानिऩ्ऱु पुहऴ्न्दुरैत्तर् कॊळिदोवे डविऴ्कॊऩ्ऱैप्

पूनिऩ्ऱ मवुलियैयुम् पुक्कळैन्द पुऩल्कङ्गै
वाऩिऩ्ऱु कॊणर्न्दाऩु मिवर्कुलत्तोर् मऩ्ऩवऩ्गाण् 720

तू निऩ्ऱ–सुदृढ़; चुटर् वेलाय्–दीप्त भालावाले; अऩन्तऩुक्कुम्–अनन्तनाग के लिए भी; चॊलऱ्कु अरितेल्–(इनकी कुल महिमा) वर्णन कठिन है तो; याऩ्–मेरे; इऩ्ऱु–आज (एक दिन में); पुकऴ्न्तु उरैत्तऱ्कु–प्रशंसा कहने के लिए; ऎळिता–सुलभ है क्या; एटु अविऴ्–दल-प्रफुल्ल; कॊऩ्ऱै पू निऩ्ऱ–अमलतास के फूलों से भरी; मवुलियैयुम्—जटा-जूट में; पुक्कु अळैन्त पुऩल्–प्रवेश कर जो (गंगा-) जल घूमता रहा; कङ्कै–उस जल की गंगा को; वाऩ् निऩ्ऱु–आकाश से; कॊणर्न्ताऩुम्–(भूमि पर) लानेवाले भी; इवर् कुलत्तु ओर् मऩ्ऩवऩ्–इनके वंश के ही एक राजा हैं। ७२०

मांसलिप्त दीप्तिमान भालावाले! इनकी कुलमहिमा आदिशेष अनन्तनाग के लिए भी (जिनके सहस्र जिह्वाएँ हैं) बखानना कठिन है। तो (एक ही जीभवाला) मैं एक दिन में कथन करके पार पाऊँ, क्या यह संभव है? अमलतास के दलसंकुल पुष्पों से भूषित शिवजी की जटा-जूट में जिन गंगाजी का जल घुसकर घूमता था, उस पवित्र जलवाली गंगाजी को इस धरती पर लानेवाले भी इन्हीं के पूर्वज (भगीरथ) थे। ७२०

कयऱ्कडलसूऴ् ऴुलहॆल्लाङ् गैनॆल्लिक् कऩियाक्कि
इयऱ्कैनॆऱि मुऱैयाले यिन्दिरऱ्कु मिडरियऱ्ऱ
मुयऱ्कऱैयिऩ् मदिक्कुडैया यिवर्कुलत्तोऩ् मुऩ्ऩॊरुवऩ्
शॆयऱ्करिय पॆरुवेळ्वि यॊरुनूऱुञ् शॆय्दमैत्ताऩ् 721

मुयल् कऱै इल् मति कुटैयाय्–शशक के आकार का कलंक जिसमें नहीं हो ऐसे (पूर्ण, अकलंक) चंद्र सदृश छत्रवाले; मुऩ्–प्राचीन दिनों में; इवर् कुलत्तोऩ् ऒरुवऩ्–इनके कुल के एक राजा; कयल् कटल् चूऴ्—मकरालय-मेखला; उलकु ऎल्लाम्–सम्पूर्ण वसुधा को; कै नॆल्लि कऩि आक्कि–करतलामलक के समान अपने वश में करके; इन्तिरऱ्कुम् इटर् इयऱ्ऱ–इन्द्र को भी भय देते हुए; चॆयऱ्कु अरिय पॆरु वेळ्वि–दुष्कर बड़े यज्ञ; ऒरु नूऱुम्–एक सौ पूरा; इयऱ्कै नॆऱि मुऱैयाले–प्रकृत वेद-विधि-विहित प्रकार से; चॆयतु अमैत्ताऩ्–सम्पन्न किये। ७२१

शशकरूप के कलंक से रहित (कलंकहीन) चन्द्र सदृश श्वेत-छत्र के अधिपति जनक महाराज! इनके पूर्वज एक राजा थे, जिन्होंने सागर-मेखला पृथ्वी को करतलामलक के समान अपने वश में करके विधिवत एक सहस्र दुष्कर अश्वमेध यज्ञ सुसंपन्न किये; जिससे देवेन्द्र भी भयभीत हो उठे थे। (ये कौन हैं, विदित नहीं होता। सूर्यकुल में एक नहुष हो गये थे और शायद उनकी इसमें चर्चा है। वाल्मीकी में नहुष, अंबरीष के पुत्र कहे गये हैं)। ७२१

चन्दिरऩै वॆऩ्ऱाऩु मुरुत्तिरऩैच् चाय्त्ताऩुम्
तुन्दुवॆनुन् दाऩवऩैच् चुडुशरत्ताऱ् ऱुणित्ताऩुम्
वन्दकुलत् तिडैवन्द रगुवॆऩ्बाऩ् वरिशिलैयाल्
इन्दिरऩै वॆऩ्ऱुदिशै यिरुनाऩ्गुञ् जॆरुवॆऩ्ऱाऩ् 722

चन्तिरऩै वॆऩ्ऱाऩुम्–चन्द्र को युद्ध में जीतनेवाले एक राजा; उरुत्तिरऩै–रुद्र को; चाय्त्ताऩुम्–हरानेवाले एक; तुन्तु ऎऩ्ऩुम् ताऩवऩै–"धुन्धु" नामक दानव को; चटचरत्ताल् तुणित्ताऩुम्–आग्नेय अस्त्रों से खण्डित कर मिटानेवाले; वन्त कुलत्तिडै–ये जिस कुल में आये, उस कुल में; वन्त–जो जनमे; रकु ऎऩ्पाऩ्–रघु संज्ञित राजा; वरि चिलैयाल्—बन्धन-युक्त अपने धनुष से; इन्तिरऩै वॆऩ्ऱु–इन्द्र को हराकर; तिचै इरु नाऩ्कुम्–दिशायें, दो के चार, (आठों) में; चॆरु वॆऩ्ऱाऩ्–युद्ध में विजय पायी। ७२२

इनके पूर्वज चन्द्रजित दिलीप थे; रुद्रविजयी भगीरथ थे। धुंधु नामक राक्षसहन्ता धुंधुमार और अष्ट-दिग्विजयी और इन्द्र को हरानेवाले रघु भी इन्हीं के वंश में जनमे थे। (चन्द्र ने देवगुरु बृहस्पति की पत्नी के साथ दुर्व्यवहार किया। असुर चन्द्र के साथी बने। देवों ने उनके साथ युद्ध किया तो उनको हारकर भागना पड़ा। तब दिलीप ने देवों के पक्ष में मिलकर असुरों को हराया। चन्द्र को जीतकर चन्द्रजित बने। स्कन्द-पुराण की सनत्कुमार-संहिता में उक्त वृत्तांत के अनुसार रुद्र-विजयी राजा भगीरथ थे। भगीरथ ने अश्वमेध यज्ञ के सिलसिले में अश्व को भ्रमण के लिए भेजा। षण्मुख ने उसे हर लिया और उनके पिता रुद्र उनके साथ मिल आये। भगीरथ ने उनको हरा दिया। धुंधु एक राक्षस था जो महर्षि उत्तंग को कष्ट देता रहा। कुवलयाश्व नामक राजा ने 'धुंधु' को मारा और धुंधुमार की संज्ञा के अधिकारी बने। रघु ने आठों दिशाओं में जाकर विजय पायी थी। उसी क्रम में रघु ने पूरबी दिशा के पालक इन्द्र को भी हराया। ७२२

❀ विल्लॆऩ्ऩु नॆडुवरैयाल् वेन्दॆऩ्ऩुङ् गडल्कलक्कि
ऎल्लॆऩ्ऩु मणिमुऱुव लिन्दुमदि यॆऩ्ऩुन्दिरुवै
अल्लॆऩ्ऩु मणिनिऱत्त वरियॆऩ्ऩ वयऩॆऩ्बाऩ्
मल्लॆऩ्ऩुन् दिरळ्पुयत्तुक् कणियॆऩ्ऩ वैत्ताऩे 723

अयऩ् ऎऩ्पाऩ्–अज नामधारी राजा के; विल् ऎऩ्ऩुम् नॆटु वरैयाल्–धनुषरूपी वड़े (मन्दर) पर्वत से; वेन्तु ऎऩ्ऩुम् कटल् कलक्कि--राजाओं के समूहरूपी (क्षीर-) सागर को मथकर; ऎल् ऎऩ्ऩुम् मणि मुऱुवल्--उज्ज्वल मुक्ता सदृश दाँतोंवाली; इन्तुमति ऎऩ्ऩुम् तिरुवै–इन्दुमति नामक श्री (सदृश) देवी को; अल् ऎऩ्ऩुम् अणि निऱत्त—अन्धकार-सम सुन्दरवर्ण; अरि ऎऩ्ऩ–हरि के समान; मल् ऎऩ्ऩुम् तिरळ् पुयत्तुक्कु–मल्लयुद्धाकांक्षी अपनी भुजाओं के लिए; अणि ऎऩ्ऩ–शृंगार के रूप में; वैत्ताऩ्–(रानी बनाकर) रख लिया। ७२३

फिर अज नाम के राजा भी इनके ही कुल के थे। उन्हें स्वयंवर में इन्दुमती ने वरा। पर राजा लोग लड़ने आये। अज ने उनको हरा दिया। राजा ने क्षीरसागर के समान राजाओं के समूह को मथकर (तितर-बितर कर) जैसे विष्णु ने सागरोद्भवा लक्ष्मी को अपनाया, वैसे ही इन्दुमती को अंगीकृत कर लिया। (अज ब्रह्मा का भी नाम है; विष्णु का भी)। ७२३

अयन्पुदल्वन् ऱयरदनै यऱियादा रिल्लयवन्
पयन्दकुलक् कुमररिवर् तमैयुळ्ळ परिशॆल्लाम्
नयन्दुरैत्तुक् करैयेऱ नान्मुहऱ्कु मरिदाम्बल्
इयन्तुवैत्त कडैत्तलैया यान्ऱिन्द पडिकेळाय् 724

पल् इयम् तुवैत्त–विविध वाद्य जहाँ बज रहे हैं; कटै तलैयाय्–वैसे राजद्वार वाले; अयन् पुतल्वन्–अज के पुत्र; तयरतनै–दशरथ को; अऱियातार्–न जानने-वाले; इल्लै–नहीं हैं; अवन् पयन्त–उनके जनाये; कुलम् कुमरर् इवर् तमै–कुलदीपक इनके सम्बन्ध में; उळ्ळ परिचु ऍलाम्–विद्यमान सब विशिष्टताएँ; नयन्तु उरैत्तु–चाव के साथ वर्णन कर; करै एऱल्–पार पाना; नान् मुकऱ्कुम् अरितु आम्–चतुर्मुख के लिए भी कठिन है; यान् अऱिन्तपटि–(जिस प्रकार) मैं जानता हूँ उस प्रकार (कहता हूँ); केळाय्–सुनिये। ७२४

हे जनक, जिनके राजद्वार पर विविध वाद्य बजते हैं! राजा अज के पुत्र दशरथ हैं; उनके सम्बन्ध में अज्ञ कोई नहीं है। उनके श्रेष्ठ पुत्र, इनकी महानताएँ, पूर्णरूप से, ध्यान के साथ वर्णन करना हो तो, उस कार्य में पार पाना चतुर्मुख के लिये भी दुस्साध्य है। जैसे मैं जानता हूँ, वैसे कहता हूँ, सुनिये। ७२४

❀ तुन्नियिन्ऱि युयिर्कळिप्पच् चुटुराऴिप् पडैवॆय्योन्
पनिवॆन्ऱ पडियॆन्नप् पहैवॆन्ऱु पडिहाप्पोन्
तनुवन्ऱित् तुणैयिल्लान् ऱरुमत्तिन् कवचत्तान्
मनुवॆन्ऱ नीदियान् महविन्ऱि वरुन्दुवान् 725

तरुमत्तिन् कवचत्तान्–धर्म ही जिनका कवच था या (जो धर्म के कवच थे); मनु वॆन्ऱ नीतियान्–मनु से भी श्रेष्ठ नीतिमान; तनु अन्ऱि तुणै इल्लान्–धनु के अलावा कोई और सहायता (जिनको) नहीं (आवश्यक) थी; चुटर् आऴि पटै वॆय्योन्–किरणरूपी चक्रायुध वाले; पनि वॆन्ऱ पटि ऍन्न–(जिस तरह) हिम को हराते हैं उसी प्रकार; पकै वॆन्ऱु–शत्रुओं को हराकर; उयिर् तुन्नि इन्ऱि कळिप्प–जीवों को (प्रजाजनों को) बिना दुख के सुख-भोगी रहने देकर; पटि काप्पोन्–पृथ्वी का पालन करनेवाले; मक इन्ऱि वरुन्तुवान्–बिना पुत्र के दुखी थे। ७२५

ये दशरथ धर्म-रक्षक और धर्म-रक्षित (धर्म-कवच) हैं। मनु से भी बढ़कर (या मनु ही कहलाने योग्य) नीतिमान हैं। अप्रतिम धनुर्धर हैं।

किरणमाली के उठते ही जैसे कुहरा लुप्त हो जाता है वैसे ही इनके युद्ध के लिए उठते ही शत्रुगण भाग जाते हैं। उनके पालन में राज्य के सभी जीव विना किसी दुख के, सुख से रहते हैं। लेकिन वे पुत्र-भाग्य के विना दुखी थे। ७२५

शिलैक्कोट्टु नुदड्कुदलैच् चॅङ्गनिवाय्क् करुनॅडुङ्गण्
विलैक्कॉट्टुम् पेरल्हुन् मिन्नुडङ्गु मिडैयारै
मुलैक्कोट्टु विलङ्गॅन्रु तॊडर्न्दणुहि मुन्वन्द
कलैक्कोट्टुप् पॅयर्मुनियाऱ् ऱुयर्नीङ्गक् करुदिनान् 726

चिलै कोटु नुतल्--धनु के समान (वक्र) आकारवाला ललाट; **चॅम् कनि वाय्**--लाल (बिंब) फल सदृश मुख (अधर); **करु नॅटु कण्**--काली, लम्बी आँखें; **विलैक्कु ओट्टुम् पेर् अलकुल**--दाम पर दिया जानेवाला विशाल भग; **मिन्नुटङ्कुम् इटैयारै**--बिजली के समान लचकनेवाली कटि, इनसे युक्त (वेश्या) स्त्रियों को; **मुलै कोटु विलङ्कु ऍन्ऱु**--स्तनरूपी सींगों के जानवर, समझकर; **तॊटर्न्तु अणुकि**--पीछा करते हुए पास आकर; **मुन् वन्त**--(राजा रोमपाद) के सामने आये हुए; **कलै कोटु पॅयर् मुनियाल्**--हरिण-श्रृंग के कारण प्रसिद्ध महर्षि (ऋश्यश्रृंग) द्वारा; **तुयर् नीङ्क करुतिनान्**--चिन्ताविमुक्त होना चाहा। ७२६

तब उन्होंने सोचा--धनुसमललाट, बिंबाधर, और काली आयत आँखें इनसे युक्त सर्वांगसुन्दरी और विक्रेय जघनवाली वेश्याओं को सींगों वाले जानवर समझकर, उनके साथ जो रोमपाद के राज्य में आये थे उन ऋष्यश्रृंग ऋषि द्वारा पुत्रकामेष्टि कराऊँ। ७२६

तार्हात्त नऱुङ्गुऴ्जित् तनयर्हळॅन् ऱवमिन्मै
वार्हात्त वऩमुलैयार् मणिवयिऱु वाय्त्तिलराल्
नीर्हात्त कडल्पुडैशूऴ् निलङ्गात्ते नॅन्निऱ्पिन्
पारहात्तऱ् कुरियारैप् पणिनीयॅन् ऱडिपणिन्दान् 727

तार् कात्त नऱु कुऴ्चि--(पुष्प-)माला से अलंकृत सुगन्धित केशवाले; **तऩयर्कळ्**--पुत्र (प्राप्त करना); **ऍन् तवम् इन्मै**--मेरे (तप-प्राप्त) भाग्य में नहीं है; **वार् कात्त वऩम् मुलैयार्**--कंचुकी-बद्ध उरोजोंवाली मेरी पत्नियाँ; **मणि वयिऱु वाय्त्तिलर्**--(गर्भ-धारणकर) सुन्दर पेटवाली नहीं बनीं; **नीर् कात्त**--नीर-रक्षित; **कटल् पुटै चूऴ्**--समुद्र से घिरी हुई इस भूमि की; **कात्तेन्**--रक्षा करता रहा; **ऍन्निऩ् पिन्**--मेरे बाद; **पार् कात्तऱ्कु उरियारै**--पृथ्वी का पालन करनेवाले पुत्रों को; **नी पणि ऍन्ऱु**--आप प्राप्त करायें, ऐसा; **अटि पणिन्तान्**--चरणों पर विनत हुए। ७२७

राजा दशरथ ने उनसे प्रार्थना की, मैंने योग्य तप नहीं किया है। अतः पुत्रवान होने का मेरा भाग्य नहीं रहा। उसी कारण मेरी कंचुकीबद्ध उरोजोंवाली पत्नियाँ गर्भ धारण नहीं करतीं। मैं बहुत दिनों से इस समुद्र-मेखला पृथ्वी का परिपालन करता आया हूँ। मेरे

बाद इसका पालन करने के लिए योग्य पुत्र पैदा हों—इसकी कृपा कीजिये। यह कहकर राजा ने उनके चरणों पर नमस्कार किया। ७२७

अव्वुरैकेट् टम्मुऩियु मरुळ्शुरन्द वुवहैयऩाय्
इव्वुलह मऩ्ऱिमऱ् ऱॅव्वुलह मिऩिदळिक्कुम्
शॅव्वियिळञ् जिऱुवर्हळैत् तरुहिऩ्ऱे ऩिऩित्तेवर्
वव्विनुहर् पॅरुवेळ्विक् कुरियवॅलाम् वरुहॅऩ्ऱाऩ् 728

अ उरै केट्टु–वह कथन सुनकर; अ मुऩियुम्–वह मुनि भी; अरुळ् चुरन्त–कृपापूर्ण; उवकैयऩ् आय्–आनन्दयुक्त होकर; इ उलकम् अऩ्ऱि–इस लोक के अलावा; मऱ्ऱु ऍ उलकुम्–अन्य सभी लोकों को; इऩितु अळिक्कुम्–सुखपूर्वक परिपालित करनेवाले; चॅव्वि इळम् चिऱुवर्कळै–योग्य बालकों को; तरुकिऩ्ऱेऩ्–दिला दूंगा; तेवर् वव्वि नुकर्–देव (जिसमें) हविर्भाग लेकर अशन करें उस; पॅरु वेळ्विक्कु–बड़े यज्ञ (को करने) के लिए; उरिय अलाम्–आवश्यक सभी (सामग्रियाँ); इऩि वरुक–अभी आ जायँ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ७२८

ऋषि ने राजा की प्रार्थना सुनी तो उन्हें आनन्द हुआ। करुणा उपजी। 'यह एक लोक क्या? सभी लोकों के रक्षण में समर्थ और योग्य पुत्र पैदा होंगे। इसका मैं उपाय करूँगा। अब एक बड़े यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्रियाँ अभी मँगाइये। उस यज्ञ में हम देवों को हवि देंगे जिसको वे स्वीकार करेंगे'। ७२८

कादलरैत् तरुवेळ्विक् कुरियवॅलाम् कडिदमैप्प
मादवरिऱ् पॅरियोऩु मऱ्ऱदऩै मुऱ्ऱुवित्ताऩ्
शोदिमणिप् पोऱ्कलत्तिऱ् चुदैयऩैय वॅण्शोऱोर्
बूदगणत् तरशेन्दि यऩलिऩ्ऱुम् बोन्ददाल् 729

कातलरै तरु वेळ्विक्कु उरिय ऍलाम्–पुत्र दिलानेवाले यज्ञ के लिए आवश्यक सब; कटितु अमैप्प–शीघ्र व्यवस्था करके; मऱ्ऱु–उसके बाद; मा तवरिल् पॅरियोऩुम्–महान तपस्वियों में श्रेष्ठ, (ऋष्यशृंग) ने भी; अतऩै मुऱ्ऱुवित्ताऩ्–उसको सुसम्पन्न कराया; ओर् पूत कणत्तु अरचु–एक भूत-गण-राज; चोति मणि पॊऩ् कलत्तिल्–उज्ज्वल मणिमय स्वर्ण-पात्र में; चुतै अऩैय–सुधा सदृश; वॆण् चोऱु–श्वेत अन्न को; एन्ति–लेकर; अऩल् निऩ्ऱुम्–यज्ञाग्नि से; पोन्ततु–बाहर आया। ७२९

पुत्रेष्टि के लिए सभी (स्थान, वस्तुएँ आदि का) प्रबंध शीघ्र किया गया। ऋष्यशृंग ने यज्ञ संपन्न कराया। तब यज्ञाग्नि से एक भूत-राज अपने हाथ में एक स्वर्ण-मणि-पात्र लेकर प्रकट हुआ। उस पात्र में अमृत के समान श्वेत अन्न था। ७२९

पॊऩ्ऩिऩ्मणिप् परिहलत्तिऱ् पॊलिहिऩ्ऱ विऩ्ऩमुदैप्
पऩ्ऩुमऱैप् पॊरुडेरन्द पॅरियोऩ्ऱऩ् पणियिऩाल्

तऩ्ऩऩैय निऱैकुणत्तुत् तयरदऩु मुऱैयाले
नऩ्ऩुदलार् मूवरुक्कु नालुकू ऱिट्टळित्ताऩ् 730

तऩ् अऩैय–अपने समान जो स्वयं ही थे; निऱै कुणत्तु–सम्पूर्ण सद्गुणी; तयरतऩुम्–दशरथ भी; पऩ्ऩुम्—पाठ-योग्य; मऱै पॉरुळ् तेर्ऩ्त–वेदों के अर्थ को खूब जाननेवाले; पॅरियोऩ् तऩ् पणियिऩाल्–महात्मा की आज्ञा के अनुसार; पॉऩ् इऩ् मणि परिकलत्तिल्–स्वर्णरचित मनोरम मणि-जड़ित पात्र में; पॉलिकिऩ्ऱ–रहनेवाले; इऩ् अमुतै–मधुर उस अन्न को; मुऱैयाले–यथाक्रम; नल् नुतलार् मूवरुक्कुम्–मनोहर ललाटवाली तीनों रानियों को; नालु कूऱु इट्टु–चार भाग बनाकर; अळित्ताऩ्–दिया । ७३०

वेदज्ञ ऋषि ने सर्व-गुण-संपन्न महाराजा दशरथ से, जिनके समान जो स्वयं हैं, बताया कि इसे अपनी पत्नियों को दीजिये। महाराज ने भी उसको चार भागों में बाँटकर सुन्दर ललाटवाली अपनी पत्नियों को उनके पद के अनुसार यथाक्रम प्राशन करा दिया । ७३०

※ **विरिन्दिडुती विऩैशॅय्द वॅव्वियती विऩैयालुम्**
अरुङ्गडयिऩ् मऱैयऱैन्द वऱञ्जॅय्द वऱत्तालुम्
इरुङ्गडहक् करतलत्तिव् वॅऴुदरिय तिरुमेऩिक्
करुङ्गडलैच् चॅङ्गऩिवाय्क् कवुशलैयॅऩ् पाऴ्पयन्दाळ् 731

विरिन्तिट्टु–व्याप्त; तीविऩै–बुरे पाप के; चॅय्त–कृत; वॅव्विय तीविऩैयालुम्–भयंकर बुरे कर्म (पाप) के कारण; अरु–श्रेष्ठ; कटै इल्–अनन्त; मऱै अऱैन्त–वेदों में कथित; अऱम् चॅय्त अऱत्तालुम्–पुण्य के किये पुण्य-प्रताप से; इरु कटकम् कर तलत्तु–श्रेष्ठ बाहुवलयधारी; ॲऴुत अरिय तिरुमेऩि–जिनका चित्र बनाना दुर्लभ है, ऐसे श्रीशरीर वाले; इ करु कटलै–इन नीलेसागर (सागरोपम) को; चॅम् कऩि वाय्–लाल बिम्बफल-सम मुखवाली; कवुचलै ॲऩ्पाळ्–कौसिल्या नाम की देवी ने; पयन्ताळ्–जनाया । ७३१

इसके फलस्वरूप अरुणविंबाधरा कौसिल्या देवी ने सुन्दर और श्रेष्ठ वाहुवलयधारी, चित्रणदुर्लभ सुन्दर रूपधर, और नीलसागरोपम श्रीरामचंद्र को जन्म दिया। श्रीराम का जन्म, पाप को दूर करने और धर्म के संस्थापनार्थ हुआ है। अब संसार में व्याप्त रहे पापों को अपने पाप का फल भुगतना पड़ेगा और अनंतवेदोक्त धर्मों को अपने सुकृत पुण्य का फल भोगने का समय आ गया था । ७३१

※ **तळ्ळरिय पॅरुनीदित् तऩियाऱु पुहमण्डुम्**
पळ्ळमॅऩुन् दहैयाऩैप् परदऩॅऩुम् पॅयराऩै
ॲळ्ळरिय गुणत्तालु मॅळ्ळिलालु मिव्विरुन्द
वळ्ळलैयै यऩैयाळैक् केहयऱ्होऩ् महळ् पयन्दाळ् 732

तळ्ळ अरिय–दुर्निवार; पॅरु नीति–श्रेष्ठ नीतिरूपी; तऩि आऱु–अनुपम नदियों

के; पुक–गिरने से; मण्टुम्–भरे रहे; पळ्ळम् ऍऩुम् तकैयाऩै–महासागर कहलाने योग्य; ऍळ्ळ अरिय–अनिन्द्य; कुणत्तालुम्–श्रेष्ठ गुणों में; ऍऴिलालुम्–(और) सुन्दरता में; इव् इरुन्त–यहाँ विराजमान; वळ्ळलैये अऩैयाऩै–उदार प्रभु (श्रीराम) के ही सदृश; परतन् ऍऩुम् पॅयराऩै–भरत नामधारी को; केकयर् कोऩ् मकळ् पयन्ताळ्–केकयतनया ने जनाया। ७३२

भरत नाम के पुत्र को केकयपुत्री ने जन्म दिया। वे भरत ऐसे सागर (के समान) कहे जा सकते हैं जिनमें जाकर समस्त अटल नीति-नदियाँ मिल जाती हैं। (प्रकीर्तित नीतिमान थे भरत।) वे अपने अनिन्द्य सद्गुणों और सुन्दरता में इन उदार प्रभु श्रीरामचन्द्र के ही समान हैं। ७३२

अरुवलिय तिऱलिऩरा यऱङ्गॅडुक्कु मडलरक्कर्
वॅरुवरुतिण् डिऱलारै विल्लेन्दि वरुमेरुप्
परुवरैयु नॅडुवॅळ्ळिप् परुप्पदमुम् बोल्वार्हळ्
इरुवरैयु मिव्विरुवर्क् किळैयाळु मीऩ्ऱॅडुत्ताळ् 733

अरु–दुर्द्धर्ष; वलिय तिऱलिऩराय्–अति बलिष्ठ; अऱम् कॅटुक्कुम्–धर्मनाशक; अटल् अरक्कर्–विरोधी राक्षस; वॅरुवरु–जिनसे भयभीत हैं; तिण् तिऱलारै–उन सुदृढ़ बलवानों को; विल् एन्ति वरुम्–धनुष लेकर आनेवाले; मेरु परु वरैयुम्–मेरु के बड़े पर्वत की; नॅटु वॅळ्ळि परुप्पतमुम्–(और) बड़े चाँदी के पर्वत की; पोल्वार्कळ्–समानता करनेवालों को; इरुवरैयुम्–दोनों को; इ इरुवर्क्कु इळैयाळुम्–(कौसिल्या, कैकेयी) दोनों की छोटी (सुमित्रा) ने; ईऩ्ऱु ऍटुत्ताळ्–जन्म दिया। ७३३

कौशल्या और कैकेयी दोनों से छोटी रानी सुमित्रा ने अजेय और बलिष्ठ शत्रु राक्षसों के मन में भय उत्पन्न कर सकनेवाले, धनुर्धर मेरु पर्वत और कैलाश पर्वत के समान दिखनेवाले लक्ष्मण और शत्रुघ्न दोनों को जन्म दिया। (धनुर्धर पर्वत-अप्राप्य, कल्पित उपमा है। इससे लगता है कि लक्ष्मण स्वर्ण वर्ण थे और शत्रुघ्न श्वेत रंग के।)। ७३३

कलैयायुम् पेरुणर्विऱ् कलैमहट्कुन् दलैवराय्च्
चिलैयायुन् दनुवेदन् दॅव्वरैप्पोऱ् पणिशॅय्यक्
कलैयाऴिक् कदिर्त्तिङ्ग ळुदयत्तिऱ् कलित्तोङ्गुम्
अलैयाऴि यॅऩवळर्न्दार् मऱैनाऩ्गु मऩैयार्हळ् 734

मऱै नाऩ्कुम् अऩैयार्कळ्–वेद चतुष्टय सदृश वे; कलै आयुम् पेर् उणर्विल्–शास्त्रान्वेषण के श्रेष्ठ विवेक में; कलैमकट्कुम्–सरस्वतीदेवी के भी; तलैवर् आय्–गुरु होकर; चिलै आयुम् तऩुवेतम्–धनुर्विद्या का प्रतिपादक धनुर्वेद (के); तॅव्वरै पोल्–विजित शत्रु के समान; पणि चॅय्य–सेवा-टहल करते; कलै आऴि–कलायुक्त वर्तुल; कतिर् तिङ्कळ्–उज्ज्वल चन्द्र के; उतयत्तिऩ्–उदय पर; कलित्तु ओङ्कुम्–गर्जन के साथ उठनेवाली; अलै आऴि ऍऩ–लहरोंवाले सागर के समान; वळर्न्तार्–बढ़े (चन्द्रोदय-गुरु की कृपा, उससे वे शास्त्रविद्या और धनुर्विद्या के ज्ञान में बढ़े।) ७३४

वे चारों पुत्र चारों वेदों के समान पले। शास्त्रानुशीलन में वे सरस्वती देवी के भी नायक (गुरु) हैं। धनुर्विद्या के विषय में स्वयं धनुर्वेद ही विजित शत्रु के समान उनकी सेवा करता है। ऐसे वे, पूर्ण कलाओं के साथ वर्तुल और प्रकाशमय चन्द्र के उदय होने पर जैसे समुद्र गरजते हुये बढ़ता है वैसे (गुण, सुन्दरता, आकार, कुशलता आदि में) वर्धित हुए। (ध्वनि से चंद्र गुरु की कृपा और गुरु का सान्निध्य है।)। ७३४

तिऱैयोडु   मरशिऱैञ्जुञ्   जऱिहळऱ्काऱ्   ऱयरदऩाम्
पॊऱैयोडुन्   दॊडर्मऩत्ताऩ्   पुदल्वरॆऩुम्   पॆयरेकाण्
उऱैयोडु   नॆडुवेला   युबनयऩ   विदिमुडित्तु
मऱैयोडु   वित्तिवरै   वळर्त्ताऩुम्   वशिट्टऩ्गाण् 735

उऱै ओटम्–म्यान में रहनेवाले; नॆटु वेलाय्–लम्बे भालेवाले; अरचु–अनेक राजा; तिऱैयोटुम्–राजस्व-सह; इरैञ्चुम्–जिन (चरणों) की वन्दना करते हैं; चॆऱि कऴल् काल्–उन वीरता-प्रदर्शक पायलवाले चरणों के; तचरतऩ् आम्–दशरथ नामधारी; पॊऱैयोटुम् तॊटर् मऩत्ताऩ्–क्षमाशील मन के राजा के; पुतल्वर् ऍऩुम् पॆयरे–पुत्र, नाममात्र के लिए; उपनयऩम् विति मुटित्तु–उपनयन संस्कार कराकर; मऱै ओटुवित्तु–वेदाध्ययन कराकर; इवरै वळर्त्ताऩुम्–इनके पालन-पोषण करनेवाले; वचिट्टऩ्–वसिष्ठ जी (ही थे)। ७३५

कोश-निहित भालाधारी जनक! (शत्रु नहीं रहे, इसलिए भाला कोश के अन्दर ही रहता है।) ये पुत्र, दशरथ के, जिनके पायलधारी चरणों में अनेक राजा आकर दण्डवत करते हैं और जो क्षमाशील हैं, पुत्र तो हैं पर वह दायित्व नाम मात्र का रह गया। क्योंकि विधिवत उपनयन आदि संस्कार पूरा करके वेदाध्ययन आदि कराकर इनको पालनेवाले तो वसिष्ठ जी ही हैं। ७३५

ईङ्गिवरा   लॆन्वेळ्विक्   किडैयूऱु   कडिदियऱ्ऱुम्
तीङ्गुडय   कॊडियोरैक्   कॊल्विक्कुञ्   जिन्दयऩाय्प्
पूङ्गऴला   वुडऩ्कॊण्डु   वनम्बुक्केऩ्   पुहामुऩ्ऩम्
ताङ्गरिय   पेराऱ्ऱऱ्   ऱाडहैये   तलैप्पट्टाळ् 736

पू कऴलाय्–सुन्दर पायलधारी; ऍऩ् वेळ्विक्कु–मेरे यज्ञ के लिए; इटैयूऱु कटितु इयऱ्ऱुम्–बाधाएँ, सहसा डालनेवाले; तीङ्कु उटैय–दुष्टतापूर्ण; कॊटियोरै अत्याचारी (राक्षसों) को; ईङ्कु–यहाँ के; इवराल्–इनके द्वारा; कॊल्विक्कुम् चिन्तैयऩ् आय–मरवाने का विचार रखनेवाला बनकर; उटऩ् कॊण्टु–साथ लेकर; वऩम् पुक्केऩ्–वन में आया; पुका मुऩ्ऩम्–प्रवेश करने के पहले ही (करते-करते); ताङ्क अरिय–दुर्वह; पेराऱ्ऱल्–बड़ी बलशालिनी; ताटकैये–ताड़का ही; तलै पट्टाळ्–पहली विरोधिनी बनी सामने आयी। ७३६

सुन्दर पायलधारी जनक! अपने यज्ञ को अनेक तरह की बाधाएँ

पहुँचानेवाले दुष्कर्मी क्रूर राक्षसों को इनके द्वारा मरवाने का विचार करके मैं दशरथ के पास गया। उनकी अनुमति से इन्हें लेकर वन में आया। ज्योंही मैंने वन में प्रवेश किया त्योंही सबसे पहले दुर्द्धर्ष बलशालिनी ताड़का ही सामने आयी। ७३६

❀ अलैयुरुवक् कडलुरुवत् ताण्डहैतऩ् नीण्डुयर्न्द
निलैयुरुवप् पुयवलियै नीयुरुव नोक्कैया
उलैयुरुवक् कऩलुमिळ्हट् टाडहैतऩ् ऩुरमुरुवि
मलैयुरुवि मरमुरुवि मण्णुरुविऱ् ऱॉरुवाळि 737

ऐया–राजन्; अलै उरुवु–लहर-व्याप्त; अ कटल् उरुवत्तु–उस सागर-सम रूपवान; आण् तकै तऩ्–पुरुषश्रेष्ठ के; नीण्टु उयर्न्त–लम्बी और उन्नत; निलै उरुवम्–अचल सुन्दर; पुयम् वलियै–भुजाओं के प्रताप को; नी उरुव नोक्कु–आप खूब ध्यान देकर देखिये; ऑरु वाळि–एक बाण; उलै उरुवम्–भट्ठी की सी दीप्त; कऩल् उमिळ्–आग उगलनेवाली; कण्–आँखों की; ताटकै तऩ् उरम् उरुवि–ताड़का का वक्ष भेदकर; मलै उरुवि–पर्वत भेदकर; मरम् उरुवि–वृक्ष भेदकर; मण् उरुविऱ्ऱु–पृथ्वी में घुसा। ७३७

महाराज ! तरंगों से व्याप्त सागर के रंगवाले इन पुरुषश्रेष्ठ की लम्बी उन्नत, मनोरम और सुगठित भुजाओं के बल की महिमा देखिये। इनका एक ही शर, भट्ठी की जलती आग के समान आँखोंवाली ताड़का के वक्ष में घुसा; उसको भेदकर बाहर निकला, फिर वह सामने के पर्वत को और वृक्ष को भेदकर बाहर आया और धरती में घुस गया। ७३७

शॅक्कर्निऱत् तॅरिहुञ्जिच् चिरक्कुवैहळ् पॉरुप्पॅऩ्ऩ
उक्कऩवो मुडिविल्लै योरम्बि ऩॉडुमरक्कि
मक्कळिलङ् गॉरुवऩ्बोय् वाऩ्पुक्काऩ् मऱ्ऱॉरुवऩ्
पुक्कविड मऱिन्दिलेऩ् पोऩ्दऩॅऩ् विऩैमुडित्ते 738

चॅक्कर् निऱत्तु–लाल रंग के; ऍरि कुञ्चि–जलती आग के समान केशवाले; चिरम् कुवैकळ्–शिरों की राशियाँ; पॉरुप्पु ऍऩ्ऩ–पर्वतों के समान; उक्कऩवो–जो कटकर गिरे; मुटिवु इल्लै–(उनका) अन्त तो नहीं; अङ्कु–वहाँ; अरक्कि मक्कळिल्–राक्षसी के पुत्रों में; ऑरुवऩ्–(सुबाहु) एक; ओर् अम्पिऩॉटुम्–एक शर से; पोय्–मरकर; वाऩ् पुक्काऩ्–परलोक पहुँच गया; मऱ्ऱैयवऩ्–दूसरा (मारीच); पुक्क इटम् अऱिन्तिलेऩ्–प्रवेश-स्थान मैंने नहीं जाना; ऍऩ् विऩै मुटित्तु–अपना (यज्ञ-)कार्य पूरा कर; पोन्तऩॅऩ्–इधर आया (मै, इनके साथ)। ७३८

राजकुमार राम के शरों से जो अग्नि-सम लाल शिखावाले राक्षसों के सिर कट कर गिरे, और जिन सिरों की पर्वत-सम राशियों के ढेर हुए, उनका अन्त ही नहीं था। उनके एक शर से ताड़का का एक पुत्र सुबाहु मरकर आकाशलोक चला गया। दूसरा कहाँ गया ! मैं नहीं जानता। मेरा यज्ञ पूरा हुआ और मैं इनके साथ यहाँ आया। ७३८

आय्न्दोर्क्कु मुणर्वरिय वयऱ्केयु मऱिवरिय
काय्न्देवि ऩुलहऩैत्तुङ् गडलोडु मलैयोडुम्
तीय्न्देऱ्च् चुडुहिऱ्कुम् पडैक्कलङ्गळ् शॅय्दवत्ताल्
ईन्देऩुम् मऩमुट्क विवऱ्केवल् शॅय्हुऩवाल् 739

आय्न्तोर्क्कुम्–(युद्ध-विद्या-) विशारदों के लिए भी; उणर्वु अरिय–जो ज्ञान-गम्य नहीं; अयर्क्कुम्–ब्रह्मा के लिए भी; अऱिवु अरिय–समझने में दुर्लभ; काय्न्तु एविऩ्–कोप करके चलाने पर; उलकु अऩैत्तुम्–सारे लोकों को; कटलोटुम् मलैयोटुम्–समुद्रों और पर्वतों के साथ; तीय्न्तु एऱ–पूर्णरूप से भस्म करते हुए; चुटुकिऱ्कुम्–जला सकनेवाले; पटैक्कलङ्कळ्—अस्त्र-शस्त्र (जो मैंने तप करके प्राप्त किये थे); चॅय् तवत्ताल्–अपने कृत तप के कारण; ईन्तेऩुम्–प्रदान करनेवाला मैं भी; मऩम् उट्क–लज्जित होऊँ ऐसा; इवर्कु–इनकी; एवल् चॅय्कुऩ–सेवा करते हैं। ७३८

इनको मैंने अपने सारे अस्त्र दे दिये। वे अस्त्र मुझे अपनी तपस्या के प्रभाव से ही मिले थे। मैंने उनको दिया—वह भी अपने तप की महिमा के कारण ही। वे अस्त्र-शस्त्र धनुर्विद्या-विशारदों के लिए भी अगम हैं। ब्रह्मा के लिए भी दुर्गम हैं। वैर के साथ चलाने पर वे सारे संसार को मय समुद्र व पर्वत के जला सकनेवाले हैं। वे उनकी जैसी सेवा करते हैं उसको देखकर स्वयं मुझे लज्जा होती है। मैं उनका इतना अच्छा प्रयोग नहीं जानता था। (जनक के मन में जो सुकुमार राजकुमार के धनुर्बल में शंका हो सकती थी उसके निवारणार्थ महर्षि ने यह बात कही।)। ७३९

❀ कोदमऩ्ऱऩ् पऩ्ऩिक्कु मुऩ्ऩैयुरुक् कॉडुत्तदिवऩ्
पोदुवॅऩ्ऱ ॲऩप्पॉलिन्द पॉलङ्गऴऱ्काऱ् पॉडिहण्डाय्
कादलॅऩ्ऱ ऩुयिर्मेलु मिक्करियोऩ् पालुण्डाल्
ईदिवऩ्ऱऩ् वरलाऱुम् पुयवलियु मॅऩवुरैत्ताऩ् 740

कोतमऩ् तऩ् पऩ्ऩिक्कु–गौतम की पत्नी को; मुऩ्ऩै उरु कॉटुत्ततु–पूर्वरूप दिया; इवऩ्–इनके; पोतुवॅऩ्ऱतु ॲऩ–कमल को हराया, ऐसा; पॉलिन्त–शोभित; पॉलम् कऴल्—स्वर्ण-पायल-धारी; काल्–चरणों की; पॉटि–धलि; कण्टाय्–जान लीजिये; ॲऩ् तऩ् उयिर् मेलुम्–अपने प्राणों से बढ़कर; इ करियोऩ् पाल्–इन नील-वर्ण प्रभ पर; कातल् उण्टु–प्रेम (भक्ति) है; इवऩ् तऩ् वरलाऱुम्–इनका चरित्र; पुयम् वलियुम्—भुज-बल भी; ईतु–उपरोक्त यह है; ॲऩ उरैत्ताऩ्–यह कहा। ७४०

जनक ! गौतम की पत्नी देवी अहिल्या का प्रस्तर-रूप दूरकर पूर्व निजी रूप दिया, इन्हीं के सुन्दर कंकणधारी चरणों की धूलि ने ही, वह भी ध्यान कर लीजिये। इन पर मुझे अपने प्राणों से अधिक प्यार है, मेरी इन पर भक्ति है। इनका वृत्तांत, और भुजबल मैंने आपको

बता दिया। विश्वामित्र ने अपनी बात समाप्त की। (महर्षि ने क्रम से श्रीराम की महत्ता बताकर अन्त में उनके अवतार-रहस्य की ओर भी संकेत कर दिया।)। ७४०

12. कार्मुहप्पडलम् (कार्मुक पटल)

❀माऱ्ऱम्या दुरैप्पदु माय विऱ्कुनाऩ्, तोऱ्ऱवा वॅऩमऩऩ् दुळङ्गु हिऩ्ऱदाल्
नोऱ्ऱऩ णङ्गयु नॉय्दि ऩैयऩ्विल्, एऱ्ऱुमे लिडऱ्क्कड लेऱ्ऱु मॅऩ्ऱऩऩ् 741

माऱ्ऱम् यातु उरैप्पतु–उत्तर क्या देना है; मायम् विल्कु–मायापूर्ण इस धनु से; नाऩ् तोऱ्ऱवाऱु–मैं हार गया; ॲऩ–यह सोच; मऩम् तुळङ्कुकिऩ्ऱतु–मेरा मन अधीर है; ऐयऩ्–ये प्रभु; विल् नॉय्तिऩ् एऱ्ऱुमेल्–धनुष को अनायास चढ़ा देंगे; इटर् कटल् एऱ्ऱुम्–(तो मुझे) संकट-सागर के तीर पर चढ़ा देंगे; नङ्कैयुम् नोऱ्ऱऩळ्–कुमारी भी सफलव्रता होगी; ॲऩ्ऱऩऩ्–कहा। ७४१

जनक ने अपनी चिन्ता कही। महर्षे! मैं क्या उत्तर दूँ? मैं इसी धनुष के कारण विफल-संकल्प हो गया। यह धनुष मायावी लगता है (क्योंकि कोई अब तक यह धनुष उठाकर झुका नहीं पाया है) यह सोचकर मेरा मन अधीर है। हाँ, आपके श्रीराम इसको अनायास चढ़ा देंगे तो (आपके कथनों से ऐसा लगता है) मैं भी चिन्ता-सागर पार कर जाऊँगा और मेरी पुत्री सीता भी सफलव्रत हो जायगी। ७४१

❀ॲऩ्ऱऩ ऩॆऩ्ऱुदऩ् ऩॅदिर्निऩ् ऱारैयक्, कुऩ्ऱुऱऴ् वरिशिलै कॉणर्मि ऩीण्डॆऩ
नऩ्ऱॆऩ वणङ्गिऩर् नाल्व रोडिऩर्, पॉऩ्ऱिणि कारमुहच् चालै पुक्कऩर् 742

ॲऩ्ऱऩऩ्–यह कहकर; एऩ्ऱु–संकल्प करके; तऩ् ॲतिर् निऩ्ऱारै–अपने सामने खड़े रहे लोगों को; अ–उस; कुऩ्ऱु उऱऴ्–पर्वततुल्य; वरि चिलै–बन्धनयुक्त धनु को; ईण्टु कॉणर्मिऩ्–यहाँ ले आओ; ॲऩ–आज्ञा देने पर; नाल्वर्–चार सेवक; नऩ्ऱु ॲऩ–अच्छा कहकर; वणङ्किऩर्–नमस्कार करके (जय जीव कहकर); ओटिऩर्–भागे; पॉऩ् तिणि–स्वर्णमय; कार्मुकम् चालै–कार्मुकागार में; पुक्कऩर्–पहुँचे। ७४२

जनक ने यह कहकर, धनु को मँगाने के इरादे से, सामने स्थित सेवकों से कहा कि पर्वततुल्य उस कार्मुक को इधर ले आओ। चार आज्ञाकारी सेवकों ने जो वहाँ खड़े थे, जय जीव कहकर नमस्कार किया और वे दौड़े और स्वर्णमय धनु के आगार में पहुँचे। ७४२

पुक्कऩ रवर्हळैप् पॉरुन्द नोक्कियिम्
मुक्कणऩ् विल्लिऩै मॉय्म्बि ऩाऱ्ऱलो
डिक्कणत् तळित्तिरॅऩ् ऱॅम्मै याळुडै
मिक्कुरु शऩहनुम् विळम्बि ऩाऩॆऩ्ऱार् 743

पुक्कतर्–पहुँचे वे; अवर्कळै–उनको (जो वहाँ रहे); पॊरुन्त नोक्कि–अर्थ के साथ देखकर; ऍम्मै आळ् उटै(य)–हमारे स्वामी; मिक्कु उऱु चत्तकऩ्–सम्मान्य जनक ने; इ मुक्कणऩ् विल्लिऩै–इस त्रिनेत्र (शिवजी) के धनु को; मॊय्म्पिऩ् आऱ्ऱलोटु–बल लगाकर कुशलता के साथ; इ कणत्तु–इसी क्षण; अळित्तिर्–ले आओ; ऍऩ्ऱु–यह; विळम्पिऩाऩ्–(आज्ञा) कही; ऍऩ्ऱार्–बोले । ७४३

वहाँ पहुँचकर उन्होंने वहाँ रहे वीरों को राजा की आज्ञा सुनायी। “हमारे स्वामी, सम्मान्य राजाधिराज, जनकजी ने, इस त्रिनेत्र परमेश्वर के धनुष को बल लगाकर कौशल के साथ अभी वहाँ ले आने की आज्ञा दी है” । ७४३

❀ उऱुवलि याऩैयै यॊत्त मेऩियर्, शॆऱिमयिर्क् कल्लॆऩत् तिरण्ड तोळिऩर्
अऱुपदि ऩायिर रळवि लाऱ्ऱलर्, तऱिमडुत् तिडैयिडै तण्डिऱ् ऱाङ्गिऩर् 744

उऱु वलि–अति बलिष्ठ; याऩैयै ऑत्त मेऩियर्–गज-सम शरीरवाले; चॆऱि मयिर्–घने रोंगटोंवाले; कल् ऍऩ तिरण्ट–प्रस्तर के समान (कठोर) पुष्ट; तोळिऩर्–हाथवाले; अळवु इल् आऱ्ऱलर्–अपार शक्तिवाले; अऱुपतिऩायिरर्–साठ सहस्त्र; इटै इटै तऱि मटुत्तु—बीच-बीच में बल्ले देकर; तण्टिऩ्–उन डाँडों के सहारे; ताङ्किऩर्–ढो लाये । ७४४

उनकी बात सुनकर साठ सहस्र वीर उद्यत हो गये। वे अति बली गज के समान शरीरवाले थे और रोंगटे भरे और प्रस्तर-सम कठोर हाथोंवाले थे। अपार शक्तिशाली वे, धनुष के नीचे यत्र-तत्र बड़े डाँड लगाकर उनके सहारे धनु को ढोकर ले गये। (वाल्मीकी में पाँचसहस्र वीरों की बात ही है और वे ‘अष्टचक्रा मंजूषा’ में धनुष को लाये। तमिऴ में अऱु पतिनायिरम् का— “आधा दस हज़ार” अर्थ भी लगाया जा सकता है। तब पाँच सहस्र ठीक हुआ। लेकिन साठ सहस्र वाले अर्थ को ही अधिक मान्यता दी जाती है।) । ७४४

❀ नॆडुनिल महण्मुदु हाऱ्ऱ निऩ्ऱुयर्, तडनिमिर् वडवरै ताऩु नाणुऱ
इडमिलै युलहॆऩ वन्द वॆङ्गणुम्, कडल्पुरै तिरुनह रिरैत्तुक् काणवे 745

नॆटु निलम् मकळ्–विशाल भूमि की देवी (के); मुतुकु आऱ्ऱ–पीठ का दर्द दूर करते; निऩ्ऱु उयर्–स्थिर और उन्नत; तटम् निमिर्–गरिमापूर्ण; वट वरै ताऩुम्–मेरुपर्वत भी; नाण् उऱ–लजाता; कटल् पुरै तिरुनकर्—सागर-सम (विशाल और समृद्ध) श्रीनगर; ऍङ्कणुम्–सब जगह; इरैत्तु–गर्जन करते हुए; काण–देखते; उलकु इटम् इलै ऍऩ–संसार में स्थान नहीं हो ऐसा; वन्ततु–(वह धनुष) आया । ७४५

धनुष वहाँ से हटा तो भूदेवी को पीठ की पीड़ा से निवारण मिला। उस धनु को देखकर स्वयं मेरु पर्वत भी (जिसका ही बना यह शिवधनुष है) लाज का अनुभव करने लगा। विशालता और समृद्धता में सागर के समान रहनेवाली उस मिथिला-नगरी में सभी लोग कोलाहल मचाते हुए

आकर देखने लगे। संसार में स्थान कहाँ है ? ऐसा संदेह उत्पन्न करते हुए वह धनुष आया। ७४५

शङ्गॊडु शक्करन् दरित्त शॆङ्गयच्, चिङ्गवे ऱल्लऩे लिदऩैत् तीण्डुवान्
ऎङ्गुळ ऩॊरुवऩिऩ् ऱेऱ्ऱि ऩिच्चिलै, मङ्गैतऩ् ऱिरुमणम् वाऴु मालॆऩ्बार् 746

चङ्कॊटु चक्करम् तरित्त–शंख के साथ चक्र धारण करनेवाले; **चॆम् कै**–सुन्दर बाहु; **अ**–वे; **चिङ्कम् एऱु अल्लऩेल्**–पुरुषसिंह (श्रीविष्णु) नहीं तो; **इतऩै तीण्टुवाऩ्**–इसका स्पर्श करनेवाले; **ऎङ्कु उळऩ्**–कहाँ हैं; **ऒरुवऩ् निऩ्ऱु**–वही एक खड़े होकर; **इ चिलै एऱ्ऱिऩ्**–यह धनुष (पर डोरी) चढ़ायेंगे तो; **मङ्कै तऩ् तिरुमणम्**–कुमारी जी का विवाह; **वाऴुम्**–सम्पन्न होगा; **ऎऩ्पार्**–(कुछ लोग) कहते। ७४६

लोग आपस में बोलने लगे। कुछ लोगों ने कहा कि पाञ्चजन्य शंख और सुदर्शन चक्र के धारण करनेवाले नरकेसरी श्रीविष्णु के सिवा, इस धनु को झुकानेवाले कौन हैं, कहाँ हैं ? वे स्वयं आकर धनुष पर डोरी चढ़ा लेंगे, तभी कुमारी सीताजी का विवाह सम्पन्न होगा। (साफ़ है कि लोगों के मन में दिव्यदंपती का भान हो गया है। तो भी मानवीय अज्ञता स्वाभाविक है और वह आशंका और संशय की जननी है।)। ७४६

कैदवन् दऩुवॆऩ्ऩल् कऩहक् कुऩ्ऱॆऩ्बार्
शॆय्ददत् तिशैमुहऩ् ऱीण्डि यऩ्ऱुतऩ्
मॊय्दवप् पॆरुमयिऩ् मुयऱ्चि यालॆऩ्बार्
ऎय्दवऩ् यावऩो वेऱ्ऱिप् पण्डॆऩ्बार् 747

तऩु ऎऩ्ऩल्–(इसको) धनु कहना; **कैतवम्**–कैतव है; **कऩकम् कुऩ्ऱु**–कनक (मेरु) पर्वत है; **ऎऩ्पार्**–कहते; **अ तिचै मुकऩ्**–वह दिशामुख (ब्रह्मा); **चॆय्ततु**–निर्मित है; **तीण्टि अऩ्ऱु**–हाथ लगाकर नहीं; **तऩ्**–अपने; **मॊय्तवम्**–पूर्ण तपस्या; **पॆरुमैयिऩ् मुयऱ्चियाल्**–और बहुत प्रयत्न से; **ऎऩ्पार्**–कहते; **पण्टु**–प्राचीन समय में; **एऱ्ऱि**–इस पर प्रत्यंचा चढ़ाकर; **ऎय्तवऩ् यावऩो**–चलानेवाला कौन था; **ऎऩ्पार्**–कहते। ७४७

कुछ लोग कहते कि इसको धनुष कहना धोखा है। 'यह स्वर्णमेरु है'। "ब्रह्मा का, विना हाथ से स्पर्श किये, निर्मित है; उनकी पूर्ण तपस्या और गुरु प्रयत्न के प्रभाव से रचा है।" "पहले इसको लेकर प्रत्यंचा चढ़ायी किसने थी ?"। ७४७

❀ तिण्णॊडु मेरुवैत् तिरट्टिऱ् ऱोवॆऩ्बार्
अण्णल्वा ळरविऩुक् करश नोवॆऩ्बार्
वण्णवाऩ् कडल्पण्डु कडैन्द मत्तॆऩ्बार्
विण्णिड नॆडियविल् वीऴ्न्द दोवॆऩ्बार् 748

तिण् नॅटु मेरुवै–सुदृढ़ और बड़े मेरुपर्वत को; तिरट्टिऱ्ऱो–उठाकर धनु बनाया गया क्या; अण्णल् वाळ अर विऩुक्कु–गौरव और शोभायुक्त सर्पों का; अरचऩो–राजा है क्या; ॲऩ्पार्–कहते; पण्टु–पहले; वण्णम् वाऩ् कटल्–(श्वेत-) रंग के विशाल सागर को; कटैन्त मत्तु–जिससे मथा गया वह मथानी; ॲऩ्पार्–कहते; विण् इटु–आकाश में बननेवाला; नॅटिय विल्–लम्बा (इन्द्र-) धनुष; वीऴ्न्तततो–(भू पर) गिर पड़ा क्या; ॲऩ्पार्–कहते। ७४८

"क्या यह सुदृढ़ और बड़े मेरु पर्वत का धनुष-रूप है ?" "श्रेष्ठ और भासमान उरगों का राजा है ?" "क्या यह वह मथानी है जिसके सहारे क्षीरसागर मथा गया था ?" "क्या आकाश से दीर्घ इन्द्रधनुष नीचे गिरा पड़ा है ?"। ७४८

⁂ ॲऩ्ऩिदु कॉणर्हवॅऩ् ऱियम्बि ऩाॅऩ्बार्
मऩ्ऩव रुळर्कॉलो मदिकॅट् टारॅऩ्बार्
मुऩ्ऩैयूऴ् विऩैयिऩाऩ् मुडिक्क लामॅऩ्बार्
कऩ्ऩियु मिच्चिलै काणु मोवॅऩ्बार् 749

इतु कॉणर्क–यह लाओ; ॲऩ्ऱु इयम्पिऩाऩ्–यह राजा ने कहा; ॲऩ्–क्यों; ॲऩ्पार्–कहते; मति कॅट्टार्–बुद्धिहीन; मऩ्ऩवर् उळरो–(दूसरे) राजा हैं क्या; ॲऩ्पार्–कहते; मुऩ्ऩै ऊऴ् विऩैयिऩाल्–पूर्वपुण्य से; मुटिक्कलाम्–यह सम्पन्न किया जा सकता है; ॲऩ्पार्–कहते; इ चिलै–यह धनुष; कऩ्ऩियुम् काणुमो–कन्या (सीता) देख चुकी होगी क्या; ॲऩ्पार्–कहते। ७४९

"राजा ने इसे लाने की आज्ञा अब क्यों दी है ?" "हमारे राजा के समान जड़मति कोई है ?" "क्या यह कभी झुकाया जा सकता है ?" "हाँ, विधि प्रबल रही तो कोई उठा सके !" "क्या इसको सीताजी ने देखा होगा" ? ('जड़मति' उनके उद्देश्य में भी कहा जा सकता है जो धनुष उठाकर वीर्यशुल्का सीताजी को प्राप्त करने की इच्छा से आ गये हों। क्या सीताजी ने देखा होगा ? —इसका मतलब है सीता इस धनु की दुर्द्धर्षता देखकर क्या-क्या समझती होंगी ? या क्या सीताजी इस धनुष को उठते देखेंगी भी ?)। ७४९

इच्चिलै युदैत्तकोऱ् किलक्कम् यादॅऩ्बार्
नच्चिलै नङ्गैमे ऩाट्टुम् वेऩ्दॅऩ्बार्
निच्चय मॅडुक्कुङ्गॉ ऩेमि याऩॅऩ्बार्
शिऱ्चिलर् विदिशॅय्द तीमै यामॅऩ्बार् 750

इ चिलै–इस धनु के; उतैत्त कोल् कु–प्रेषित शर के लिए; इलक्कम् यातु–निशान क्या है; ॲऩ्पार्–कहते; वेन्तु–हमारे राजा (ने); न चिलै–गुरु धनुष को; नङ्कै मेल् नाट्टुम्–राजकुमारी के दाँव के रूप में रखा है; ॲऩ्पार्–कहते; नेमियाऩ्–चक्रधारी; निच्चयम् ॲटुक्कुम् कॉल्–अवश्य आरोपण कर लेंगे क्या;

ऍऩ्पार्–कहते; चिऱ्चिलर्–अन्य कुछ; विति चॅय्त तीमै आम्–विधि की बुराई है; ऍऩ्पार्–कहते । ७५०

"इस धनुष से निकले बाण का लक्ष्य क्या हो सकता है ?" "राजा ने इस गुरु-धनु को सीताजी के लिए दाँव रखा कैसे ?" "क्या चक्रपाणी भी इसको झुका सकेंगे, निश्चित रूप से ?" इस तरह कई एक कई प्रकार से बोल रहे थे। और कुछ लोगों ने कहा कि "यह विधि की करतूत है।" । ७५०

❀ मॉय्त्तऩ रिऩ्ऩण मॉऴिय मऩ्ऩऩ्मुऩ्
उय्त्तऩर् निलमुदु हुळुक्किक् कीऴुऱ
वैत्तऩर् वाङ्गुऩर् याव रोवॅऩ्ाक्
कैत्तलम् विदिर्त्तऩर् कण्ड वेन्दरे 751

मॉय्त्तऩर्–जुटे आये; इऩ्ऩणम् मॉऴिय–(लोग) ऐसा कहते, तब; मऩ्ऩऩ् मुऩ्–राजा के सामने; उय्त्तऩर्–लाकर; निलम् मुतुकु–भूमि की पीठ; उळुक्कि–धँसकर; कीऴ् उऱ–नीची हो जाय, ऐसा; वैत्तऩर्–(वीरों ने) रखा; कण्ट वेन्तर्–देखनेवाले राजाओं ने; वाङ्कुनर् यावरो–आरोपण करनेवाले कौन हैं; ऍऩा–यह सोचकर; कैतलम् वितिर्त्तऩर्–करतल पटके । ७५१

इस तरह कहते हुए लोग एकत्र हो आये। तब वीरों ने उस धनुष को ले जाकर राजा के सामने रखा। भूतल भी उसके भार से धँस गया। इस धनुष को देख राजा लोगों ने 'इसको कौन उठा सकेगा ?' यह कहा और नैराश्य प्रकट करते हुए अपने हाथ पटके । ७५१

❀ पोतह मऩैयवऩ् पॉलिवु नोक्कियव्, वेदऩै तरुहिऩ्ऱ विल्लै नोक्कित्तऩ्
मादिऩै नोक्कुवाऩ् मऩत्तै नोक्किय, कोदमऩ् कादलऩ् कूऱऩ् मेयिऩाऩ् 752

पोतकम् अऩैयवऩ्–कलभसदृश (श्रीराम) की; पॉलिवु नोक्कि–शालीनता देखकर; वेतऩै तरुकिऩ्ऱ–वेदना देनेवाले; अ विल्लै–उस धनुष को; नोक्कि–देखकर; तऩ् मातिऩै–अपनी पुत्री (की स्थिति); नोक्कुवाऩ्–सोचनेवाले को; मऩत्तै नोक्किय–मन को देखनेवाले; कोतमऩ् कातलऩ्–गौतम के प्रिय (पुत्र) ने; कूऱल् मेयिऩाऩ्–कहना प्रारम्भ किया । ७५२

तब राजा जनक ने कलभसम श्रीराम की उत्फुल्ल शोभा देखी; सबमें खटका उत्पन्न करते रहे धनुष को देखा और अपने मन में सीता के भाग्य के सम्बन्ध में सोचा। तब उनकी दृष्टि और चिन्ता का तात्पर्य समझकर गौतम के पुत्र शतानन्दजी बोले । ७५२

इमैयविल् वाङ्गिय वीशऩ् पङ्गुऱै, उमैयिऩै यिहऴ्न्दऩ तॅऩ्ऩ वोङ्गिय
कमैयऱु शिऩत्तऩिक् कार्मु हङ्गॉळाच्, चमैयुऱु तक्कऩार् वेळ्वि शारवे 753

इमैयम् विल् वाङ्किय–हिमालय को धनु बनाकर लेनेवाले; ईचऩ्–शिव;

पङ्कु उऱै–अपने एक पार्श्व में रही; उमैयिऩै–उमादेवी को; इकऴ्न्तऩऩ्–अपमानित किया (दक्ष ने); ऍऩ्ऱ–यह सोचकर; ओङ्किय–उठे हुए; कमै अऱ चिऩत्तऩ्–अक्षम क्रोधी बनकर; इ तऩि कार्मुकम् कॊळा–इस अद्वितीय कार्मुक को लेकर; चमै उऱु–कलुषमन; तक्कऩार्–दक्ष प्रजापति की; वेळ्वि–यागशाला में; चार–पहुंचे, तब । ७५३

"हिमालय (मेरु) पर्वत का ही धनु बनाया गया था। 'मेरे ही शरीर के एक भाग, देवी उमा को दक्ष ने अपमानित किया था' यह सुनकर परमेश्वर इस अद्वितीय धनुष को लेकर उनकी यज्ञशाला में गये। दक्ष प्रजापति के मन में शिवजी के प्रति कलुष था। ७५३

उक्कऩ पल्लॊडु करङ्ग ळोडिऩर्, पुक्कऩर् वाऩवर् पुहाद शूऴल्हळ्
तक्कऩल् वेळ्वियिऱ् ऱऴलु माऱिऩ, मुक्कणॆण् डोळवऩ् मुऩिवु माऱिऩाऩ् 754

तक्कऩ् नल् वेळ्वियिल्–दक्ष के उत्कृष्ट यज्ञ में; वाऩवर्–देवों के; पल्लॊटु–दाँतों के साथ; करङ्कळ् उक्कऩ–हाथ टूटकर गिरे; ओटिऩर्–भागे; पुकात चूऴल्कळ्–अप्रविष्ट स्थानों में; पुक्कऩर्–जाकर घुसे; तऴलुम् माऱिऩ–अग्नियाँ नष्ट हुयीं; मुक्कण्–तीन नेत्र; ऍण् तोळ्–आठ हस्तवाले; अवऩ्–वे देव; मुऩिवु माऱिऩाऩ्—क्रोध-विमुक्त हुए। ७५४

शम्भु ने देवों पर प्रहार किया। अनेक के हाथ और दाँत टूटकर गिर गये। वे भागे और जहाँ साधारण रूप से वे प्रवेश नहीं कर सकते थे उन स्थानों में जाकर छिप गये। अग्नि भी नष्ट हो गयी। पश्चात् त्रिनेत्री और अष्टहस्त शिवजी का क्रोध शान्त हुआ। ७५४

ताळुडै वरिशिलै शम्बु वुम्बर्तम्, नाळुडै मैयिऩवर् नडुक्क नोक्कियिक्
कोळुडै विडैयऩाऩ् कुलत्तुट् टोऩ्ऱिय, वाळुडै युऴवऩोर् मऩ्ऩऩ् पाल्वैत्ताऩ् 755

उम्पर्–देवता लोग; तम् नाळ् उटैमैयिऩ्–अपने जीवन के दिन शेष रहने के कारण; अवर् नटुक्कम् नोक्कि–उनका विकम्पन देखकर; चम्पु–शिवजी ने; ताळ् उटै–श्रेष्ठ डाँड़ के; वरि चिलै–और बन्धनयुक्त धनुष को; इ–इन; कोळ् उटै विटै–बलयुक्त ऋषभ के; अऩ्ऩाऩ् कुलत्तुळ्–समान (जनक) के कुल में; तोऩ्ऱिय–जनमे; वाळ् उटै उऴवऩ्–तलवार के कृषक; ओर् मऩ्ऩऩ् पाल्–एक राजा के पास; वैत्ताऩ्–सौंप दिया। ७५५

तब शम्भु ने देवों को इस धनुष से डरते हुए देखकर उसको पुरुष-ऋषभ इन महाराजा जनक के पूर्वज, एक राजा के पास सौंप दिया। देवों की आयु शेष थी। अतः शिवजी का क्रोध थमा! (वाळ् उटै उऴवऩ्-तलवार का कृषक—यह प्रयोग तमिऴ में प्रचलित है। वैसे ही शब्द-कृषक भी कहते हैं। अर्थ क्रमशः तलवार का धनी और कवि है। वाल्मीकी में कार्मुक-वृत्तान्त को जनकजी कहते हैं। यह भी बताया गया है कि शिवजी ने उस धनुष को जनक के पूर्वज देवरात के हाथ में दिया। उस

कार्मुक के सम्बन्ध में ऐसा भी वृत्तान्त है—विश्वकर्मा ने दो धनुष गुरु-प्रयत्न के द्वारा बनाये। एक शिवजी के हाथ लगा और दूसरा विष्णु के पास पहुँचा। शिव ने उसी के सहारे त्रिपुर को जलाया था। फिर बल-परीक्षा में शिव और विष्णु प्रवृत्त हुए। विष्णु के एक हुँकार से शिव के धनुष में हल्का दर्रा पड़ गया। वही देवरात के पास आया।) । ७५५

कार्मुह वलियैयाऩ् कऴ्ऱल् वेण्डुमो, वार्शडै यरऩिहर् वरद नीयलाल्
यारुळ रऱिबव रिवऱ्कुत् तोऩ्ऱिय, तेर्मुह वल्हुलाळ् शॅव्वि केळॅऩा 756

कार्मुकम् वलियै–कार्मुक की शक्ति को; याऩ् कऴ्ऱल् वेण्टुमो--मुझे कहना चाहिए क्या; वार् चटै–लम्बी जटावाले; अरऩ् निकर् वरत—हर-सदृश वरद; नी अलाल्–आपको छोड़कर; अऱिपवर् यार् उळर्–जान सकनेवाले (दूसरे) कौन हैं; इवऩ् कु--इनकी; तोऩ्ऱिय--(पुत्री के रूप में) प्रकट हुई; तेर् मुकम् अल्कुलाळ्–रथ-मध्य सम नितंबों वाली; चॅव्वि--(सीताजी का) सुवृत्तांत; केळ्–सुनिये; ऍऩा–कहकर । ७५६

शम्भु के इस धनुष की शक्ति के बारे में मैं क्या कहूँ? लम्बी जटावाले शिवजी सदृश वरद मुनिवर! आपको छोड़ इसका महत्व कौन जान सकता है? रहा वह; अब जनक की पुत्री के रूप में जो प्रकट हुई, इन सुन्दर नितंबिनी सीताजी का वृत्तान्त सुनिये। ७५६

इरुम्बऩैय करुनॅडुङ्गोट् टिणैयेऱ्ऱिऩ् पणैयेऱ्ऱ
पॅरुम्बियलिऱ् पळिक्कुनुहम् पिणैत्तदऩो डिणैत्तीर्क्कुम्
वरम्बिऩ्मणिप् पॊऱ्कलप्पै वयिरत्तिऩ् कॊऴुमडुत्तिट्
टुरम्बॊरुवि ऩिलम्वॅळ्विक् कलहिल्पल शालुऴुदेम् 757

वेळ्विक्कु–यज्ञ के लिए; इरुम्पु अऩैय—लौहसम; करु नॅटु कोट–बलिष्ठ और दीर्घ सींगों के; इणै एऱ्ऱिऩ्–(जोड़े के) दो बैलों के; पणै एऱ्ऱ–पीन; पॅरु पियलिल्–बड़े कन्धों पर; पळिङ्कु नुकम्–स्फटिक जुआ; पिणैत्तु–जोतकर; अतऩोटु इणैत्तु ईर्क्कुम्--उसके साथ मिलकर खिचनेवाले; वरम्पु इल्--असंख्यक; मणि पॊऩ् कलप्पै–रत्नजड़ित स्वर्ण हल में; वयिरत्तिऩ् कॊऴु--हीरे की फाल; मट्टुत्तिट्टु–लगाकर; उरम् पॊरु इल् निलम्--कठिनता में बेजोड़ भूमि को; अलकु इल्–संख्याहीन; पल चाल्--अनेक बार; उऴुतेम्–जोतीं । ७५७

हमने यज्ञ करना चाहा। उसके लिए, लौहसम सुदृढ़ सींगोंवाले ऋषभद्वय के पीन कंधों पर स्फटिक का जुआ रखकर, उस जुए से अपार मणिमंडित स्वर्ण-हल बाँधा। उस हल के नोक में हीरे की फाल लगी थी। भूमि बड़ी कठोर थी। अतः हमने कई बार जोता। ७५७

❀ उऴहिऩ्ऱ कॊऴुमुहत्ति नुदिक्किऩ्ऱ कदिरिऩॊळि
पॊऴिहिऩ्ऱ पुविमडन्दै युरुवॅळिप्पट् टॆऩप्पुणरि

ऎऴुहिऩ्ऱ दॆळ्ळमुदो डॆऴुन्दवळु मिऴिन्दॊदुङ्गित्
तॊऴुहिऩ्ऱ नऩ्ऩलत्तुप् पॆण्णरशि तोऩ्ऱिऩाळ् 758

उऴुकिऩ्ऱ कॊऴु मुकत्तिऩ्–जोतती फाल के समक्ष; उतिक्किऩ्ऱ कतिरिऩ्–उदीयमान सूर्य की सी; ऒळि पॊऴिकिऩ्ऱ–कांति बिखेरनेवाली; पुवि मटन्तै उरु–भूदेवी का रूप; वॆळिप्पट्टतु ऎऩ–प्रकट हुआ, ऐसा; पुणरि ऎऴुकिऩ्ऱ–(क्षीर-) सागर से निकलनेवाली; तॆळ् अमुतोटु ऎऴुन्तवळुम्–स्वच्छ अमृत के साथ उत्पन्न (श्रीलक्ष्मी) भी; इऴिन्तु–घटकर; ऒतुङ्कि–हटकर; तॊऴुकिऩ्ऱ्–नमस्कार जिनका करें; नल् नलत्तु–श्रेष्ठ सुन्दरता की; पॆण् अरचि–वे स्त्रियों में रानी (हमारी सीता); तोऩ्ऱिऩाळ्–अवतरित हुयीं । ७५८

हल की फाल के सामने से सीताजी प्रकट हुयीं। उनका मानों उदीयमान-सूर्य की कांति के साथ प्रकट होनेवाली भूदेवी का सा रूप था। उस दिन क्षीरसागर से जो लक्ष्मी देवी उदित हुयी थीं, वे भी इनके सामने अपनी कांति में घटी सी लगतीं; हटकर दूर से इनकी विनय करतीं— ऐसी सुन्दरी और गुणपूर्णा हैं ये। ७५८

गुणङ्गळैयॆऩ् कूऱुवदु कॊम्बिऩैच्चेर्न् दवैयुय्यप्
पिणङ्गुवऩ वऴहिवळैत् तवञ्जॆय्दु पॆऱ्ऱदुकाण्
कणङ्गुऴैया ळॆऴुन्ददऱ्पिऩ् कदिर्वाऩिऱ् कङ्गैयॆऩुम्
अणङ्गिऴियप् पॊलिविऴिन्द वाऱॊत्तार् वेऱुऱ्ऱार् 759

कुणङ्कळै–गुणों का; ऎऩ् कऱुवतु–क्या कहना; अवै–वे; कॊम्पिऩै चेर्न्तु–तरुशाखा (सीता) से मिलकर; उय्य–तरने के लिए; पिणङ्कुवऩ–आपस में स्पर्धा करते हैं; अऴकु–सुन्दरता; तवम् चॆय्तु–तपस्या करके; इवळै पॆऱ्ऱतु–इन्हें (आश्रय के रूप में) पायी; कणम् कुऴैयाळ्–पृथुल कुण्डल-धारिणी; ऎऴुन्ततऩ् पिऩ्–प्रकट हुइं, उसके बाद; वेऱु उऱ्ऱार्–अन्य जो हैं (स्त्रियाँ); कतिर् वाऩिल्–सूर्य-संचार के आकाश में से; कङ्कै ऎऩुम् अणङ्कु इऴिय–गंगा नाम की देवी के उतर जाने पर; पॊलिवु इऴन्त–शोभाविमुक्त; आऱु ऒत्तार्–नदियों के समान हो गयीं । ७५९

उनके गुणों का भी कैसा वर्णन किया जाय? सारे अच्छे गुण, उनसे संपर्क पाकर उन्नत होने की उत्कट चाह से आपस में स्पर्द्धा कर रहे हैं। सुन्दरता ने बहुत तपस्या की तभी जाकर उसे इनका आश्रय मिला है। भारी कुण्डलधारिणी इन सीता देवी के अवतार के बाद पृथ्वी की सारी स्त्रियाँ आकाशगंगा के अवतार के बाद भूलोक की अन्य नदियों के समान प्रभाविहीन पड़ गयीं। ७५९

शित्तिरमिङ् गिदुवॊप्प दॆङ्गुण्डु शॆय्विऩैयाल्
वित्तहमुम् विदिवशमुम् वॆव्वेऱे पुऱङ्गिडप्प
अत्तिरुवै यमरर्कुल मादरित्त दॆऩवऱिञ
इत्तिरुवै निलवेन्द रॆल्लारु मादरित्तार् 760

अऱिज–सर्वज्ञ; चॅय् विऩैयाल्–अपने करतूत से; वित्तकमुम्—विद्या-कौशल (प्रदर्शन); विति वचमुम्–विधि की अधीनता, दोनों; वेऱु वेऱे—अलग-अलग; पुऱम् किटप्प–दूर रहते हैं, तब; निलम् वेऩ्तर् ॲल्लारुम्–भूमिपति सब; अमरर् कुलम् अ तिरुवै आतरित्ततु–देवगणों ने उन श्रीलक्ष्मी को चाहा; ॲऩ्ऩ–ऐसा; इ तिरुवै आतरित्तार्–इन (सीताजी) श्री को चाहते थे; इतु ऑप्पतु चित्तिरम्–इसके समान विचित्र बात; इङ्कु ॲङ्कु उण्टु–यहाँ कहाँ होगी। ७६०

सर्वज्ञ ! सभी राजाओं ने इनको प्राप्त करना चाहा। धनु लेकर कौशल दिखाना एक बात है; भाग्यवान होना दूसरी बात है। ये दोनों एक दूसरे से बिलकुल दूर हैं। यह राजा लोग नहीं मानते थे। जैसे उस दिन देवों ने श्रीलक्ष्मी देवी को प्राप्त करना चाहा वैसे ही ये राजा इनको प्राप्त करने की कामना करने लगे। यह भी कितनी विचित्र बात है ? इसके समान और कोई विचित्रता होगी क्या ? । ७६०

कलित्ताऩैक् कडलोडुङ् गैत्ताऩक् कळिऱ्ऱरशर्
ऑलित्ताळि यॅऩ्ऩवन्तु मणमॊऴिऩ्दार्क् कॅदिरुरुत्त
पुलित्ताऩैक् कळिऱ्ऱुरिवैप् पोर्वैयाऩ् पोर्विल्लै
वलित्ताऩे मङ्गैतिरु मणत्ताऩॆऩ् ऱियाम्वलित्तेम् 761

कै ताऩम् कळिऱु अरचर्–सूँड़ व मदजल से युक्त हाथियों के पति, राजा लोग; कलि ताऩै कटलोटुम्–शोरयुक्त सेना-सागर के साथ; ऑलित्तु–कोलाहल मचाते हुए; आळि ॲऩ्ऩ वन्तु–सिंहों के समान आकर; मणम् मॊऴिन्तार्क्कु–विवाह की बात करने लगे, उन्हें; ॲतिर्–उत्तर में; उरुत्त पुलि ताऩै–क्रुद्ध बाघ के चर्म को; कळिऱु उरिवै पोर्वैयाऩ्–गजचर्म को ओढ़े हुए (शिवजी) के; पोर् विल्लै–युद्धधनु को; वलित्ताऩे–झुकानेवाले ही; मङ्कै–सीता से; तिरुमणत्ताऩ्–विवाहनेवाले; ॲऩ्ऱु–यह; याम् वलित्तेम्–हमने निर्धारित कर दिया। ७६१

अनेक राजा लोग जिनके पास मत्तगज अधिक थे, अपनी सागर-सम और शोरभरी सेनाओं के साथ सिंहों के समान आये। हमने कटि में बाघ के चर्म को और उत्तरीय के रूप में गज-चर्म को धारण करनेवाले श्री शिवजी के इस धनुष को सामने रखा और निश्चित रूप से कह दिया कि इस युद्ध-चाप को जो झुकायेंगे वे ही हमारी सीता के पति बन सकेंगे। ७६१

वल्विल्लुक् काऱ्ऱार्कण् मारवेळ् वळैकरुम्बिऩ्
मॅल्विल्लुक् काऱ्ऱारायत् तामॅम्मै विळिहुऱ्ऱार्
कल्विल्लो डुलहळित्त कऩ्ऩङ्गुळैयैक् कादलित्तुच्
चॊल्विल्ला लुलहळिप्पाय् पोर्शॅय्यत् तॊडङ्गिऩार् 762

चॊल् विल्लाल् उलकु अळिप्पाय्–वचनधनु से लोक-रक्षा करने में समर्थ; वल् विल्लुक्कु–कठोर धनु के सामने; आऱ्ऱार्कळ्–असमर्थ रहे; कल् विल्लोटु–इस

पर्वत-सम धनु के साथ; उलकु अऴित्त–भूमि पर घोषित; कऩम् कुऴैयै–भारी कुण्डलधारिणी को; कातलित्तु–चाहने से; मार वेळ् वळै–कामदेव के झुकाये; मॅल् करुम्पिऩ् विल्लुक्कुम्–कोमल इक्षु-धनु के सामने भी; आऱ्ऱार् आय्–हारकर; ताम् अॅम्मै विळिकुऱ्ऱार्–खुद हमें (युद्ध के लिए) आह्वान किया; पोर् चॅय्य तॉटङ्किऩार्–युद्ध करने लगे । ७६२

अपने वचन के प्रभाव से अनुग्रह (या निग्रह) कर सकनेवाले महर्षि! वे राजा इस शिव-धनुष को हिला नहीं सके । उसके सामने वे हार गये । इसके साथ, धनुरारोहण के शुल्क के रूप में जो सीता ठहरायी गयी थीं उनके प्रति प्रेम वे भूल नहीं सके । कामदेव के शर के आघात से वे तिलमिला उठे और उन्होंने हमको (हमारे महाराजा को) युद्ध के लिए ललकारा । ७६२

इम्मन्ऩन् पॅरुञ्जेऩै यीवदऩै मेऱ्कॉण्ड
शॅम्मन्ऩर् पुहऴ्वेट्ट पॊरुळेपोऱ् ऱेय्न्ददाल्
पॉम्मॅन्ऩ वण्डलम्बुम् पुरिहुऴलैक् कादलित्त
अम्मन्ऩर् शेऩैतम दाशैपो लायिऩवाल् 763

इ मऩ्ऩऩ् पॅरु चेऩै–इन (जनक) महाराज की विशाल सेना; ईवतऩै मेऱ्कॉण्ट–दानव्रती; पुकऴ् वेट्ट–(और उससे) कीर्ति चाहनेवाले; चॅम्मै मऩ्ऩर्–अच्छे राजा के; पॊरुळे पोल्–धन के समान; तेय्न्ततु–क्षीण हो गयी; वण्टु–भ्रमर; 'पॉम्' अॅऩ्ऩ–"भन, भन" की गुंजार के साथ; अलम्पुम्–जिसपर गुंजार करते हैं; पुरि कुऴलै–बटे केशवाली (सीता) पर; कातलित्त अ मऩ्ऩर्–आसक्त उन राजा लोगों की; चेऩै–सेना; तमतु आचै पोल् आयिऩ–अपनी (उनकी) कामना के समान (वर्धित) बनी । ७६३

उस युद्ध में महाराज की विशाल सेना यशार्थी दाता राजा के अर्थ के समान क्षीण हो गयी । उन राजाओं की, जो भ्रमरावृत्त केशवाली सीता के प्रेम में मत्त थे, सेना उनकी ही कामना के समान अधिक बढ़ने लगी । (इस पद की उपमाओं से यह संकेत मिलता है कि जनक धर्म पर दृढ़ थे और सीताजी को चाहनेवाले राजाओं की संख्या अनगिनत थी ।) । ७६३

मऱ्काक्कु मणिप्पुयत्तु मन्ऩऩिवऩ् मऴविडैयोऩ्
विऱ्काक्कुम् वाळमरिऩ् मॅलिहिऩ्ऱा ऩॅऩविरङ्गि
अॅऱ्काक्कु मुडिविण्णोर् पडैयीन्दा रॅऩवेन्दर्
अऱ्काक्कै कूहैयॅक्कण् डञ्जिऩवा मॅऩवहऩ्ऱार् 764

मल् काक्कुम्–बलसंरक्षित; मणि पुयत्तु मऩ्ऩऩ् इवऩ्–सुन्दर भुजावाले ये महाराज (जनक); मऴविटैयोऩ्–ऋषभवाहन शिव के; विल् काक्कुम्–धनु के संरक्षण के हेतु; वाळ् अमरिऩ्–भयंकर युद्ध में; मॅलिकिऩ्ऱाऩ्–दुर्बल होते हैं; अॅऩ्ऩ–यह

समझ; इरङ्कि–सहानुभूति करके; ऍल् काक्कुम् मुटि विण्णोर्–प्रकाशमान किरीटधारी देवों ने; पटै ईऩ्तार् ऍऩ्ऩ–सेना दिलाई तो; वेऩ्तर्–राजा लोग; काक्कै–कागदल; अल् कूकैयै कण्टु–रात में उल्लू दल को देखकर; अञ्चिऩ आम् ऍऩ्ऩ–डर गये जैसे; अकऩ्ऱार्–छोड़कर भागे। ७६४

सबल भुजाओंवाले राजा जनक ऋषभवाहन शिवजी के धनुष के गौरव के संरक्षण के हेतु युद्ध करते हैं और उसमें वे निस्सहाय हो गये हैं— यह देखकर उज्ज्वल किरीटधारी देवों ने सहायतार्थ सेना भेजी। नयी देव-सेनाओं को देखकर वे राजा, रात में उल्लू को देखकर कौओं के दल जैसे भाग जाते हैं, वैसे मैदान छोड़कर भाग गये। ७६४

अऩ्ऱुमुद लिऩ्ऱळवु मारुमिऩ्दच् चिलैमरुङ्गुच्
चॅऩ्ऱुमिलर् पोयॉळित्त तेरवेन्दर् तिरिन्दुमिलर्
ऍऩ्ऱुमिऩि मणमिल्लै यॅऩ्ऱिरुन्दे मिवऩेऱ्ऱिऩ्
नऩ्ऱुमलर्क् कुऴऱ्चीदै नलम्बऴुदा हादॅऩ्ऱाऩ् 765

अऩ्ऱु मुतल् इऩ्ऱु अळवुम्–उस दिन से आज तक; आरुम्–कोई भी; इऩ्त चिलै मरुङ्कुम् चॅऩ्ऱिलर्–इस धनु के पास तक नहीं भटका; पोय् ऑळित्त–जाकर छिपे; तेर् वेऩ्तर्–रथपति राजा भी; तिरिन्तुम् इलर्–लौट भी नहीं आये; इऩि मणम् ऍऩ्ऱुम् इल्लै–अब विवाह कभी नहीं होगा; ऍऩ्ऱु–यह समझकर; इरुन्तेम्–(चिन्तामग्न बैठे) रहे; इवऩ् एऱ्ऱिऩ्–ये आरोपण कर देंगे तो; नऩ्ऱु–मंगल होगा; मलर् कुऴल्–पुष्पकेशवाली; चीतै–सीता का; नलम्–यौवन (भाग्य); पऴुतु आकातु–व्यर्थ नहीं होगा; ऍऩ्ऱाऩ्–(शतानन्द ने) कहा। ७६५

तव से आज तक कोई भी धनुष के पास नहीं गये। (भुक्तभोगी भी और समाचार श्रोता लोग भी भूल कर भी नहीं आये।) वे भी जो भागकर छिप गये लौटकर नहीं आये। हम चिन्तित थे कि शायद सीताजी का विवाह होगा ही नहीं। अब ये श्रीराम पधारे हैं। ये अगर धनु पर प्रत्यञ्चा चढ़ा देंगे तो सब मंगल हो जायगा। सीताजी भी विवाहिता हो जायेंगी और उनका यौवन निरर्थक नहीं होगा। ७६५

निऩैन्दुमुऩि पहर्न्दवॅल्ला नॅऱियुऩ्ऩि यऱिवऩुन्दऩ्
पुऩैन्दशडै मुडितुळक्किप पोरेऱ्ऱिऩ् मुहम्बार्त्ताऩ्
वऩैन्दऩैय तिरुमेऩि वळ्ळलुमम् मादवत्तोऩ्
निऩैन्ददऩै निऩैन्दऩ्द नॅडुञ्जिलैयै नोक्किऩाऩ् 766

मुऩि निऩैन्तु पकर्न्त ऍल्लाम्–(शतानन्द) मुनि ने जो सोच-समझकर कहा वह सब; अऱिवऩुम्–बहुज्ञ (विश्वामित्र) ने भी; नॅऱि उऩ्ऩि–यथोचित ध्यान देकर; तऩ् पुऩैन्त–अपनी शोभनेवाली; चटै मुटि तुळक्कि–जटा से अलंकृत सिर को हिलाकर; पोर् एऱ्ऱिऩ्–युद्ध-चतुर ऋषभ (सदृश श्रीराम) का; मुकम् पार्त्ताऩ्–मुख निहारा; वऩैन्त अऩैय–चित्रलिखित से; तिरुमेऩि–श्रीशरीर वाले; वळ्ळलुम्–प्रभु ने भी;

मा तवत्तोऩ्–महान तपस्वी के; निऩैन्ततऩै–विचार को; निऩैन्तु–समझकर; अन्त नॅट्टु चिलैयै–उस दीर्घ धनुष को; नोक्किऩाऩ्–देखा । ७६६

शतानन्द ने यह सारी अर्थगर्भित बातें खूब सोच समझकर कहीं। ज्ञानी विश्वामित्र जी ने भी पर्याप्त ध्यान देकर क्रमवार ये बातें सुनीं। उनका संकेत भी समझा। सुन्दर जटा से आवृत्त अपना सिर हिलाते हुए उन्होंने योद्धाऋषभ के समान विराजमान श्रीरामचंद्र के मुख पर भावपूर्ण दृष्टि दौड़ायी। चित्रलिखित के समान सुन्दररूप प्रभु श्रीराम ने भी उन महान तपस्वी के मन की बात ताड़ ली। तब उन्होंने उस दीर्घ धनुष को निहारा। ७६६

❀पॊऴिन्दनॅय् याहुदि वाय्वऴि पॊङ्गि, ऍऴुन्द कॊऴुङ्गन लॆऩ्ऩ वॆऴुन्दाऩ्
अऴिन्ददु विल्लॆऩ विण्णव रार्त्तार्, मॊऴिन्दऩ राशिहळ् मुप्पहै वॆऩ्ऱार् 767

आकुति नॅय–आहुति का घी; पॊऴिन्त वाय् वऴि–जहाँ गिरा उस स्थान से; पॊङ्कि ऍऴुन्त–प्रज्वलित उठी; कॊऴु कऩल् ऍऩ्ऩ–घनी आग के समान; ऍऴुन्ताऩ्–उठे; विण्णवर्–देवता लोग; विल् अऴिन्ततु ऍऩ–धनुष गया, कहकर; आर्त्तार्–कोलाहल कर उठे; मुप्पकै वऩ्ऱार्–त्रिशत्रुजयी मुनियों ने; आचिकळ् मॊऴिन्तऩर्–आशीर्वचन कहे। ७६७

श्रीराम झट उठे। उनका उठना आहुति का घी पाकर अग्नि का वहीं उठना सा था। तब देवों ने, ‘अब धनुष न रहेगा’ यह कहकर आनन्द भरे शोर मचाये। काम क्रोध मोह-रूपी तीन शत्रुओं के विजयी मुनियों ने आशीर्वचन कहे। ७६७

❀ तूय तवङ्ग डॊडङ्गिय तॊल्लोऩ्, एयवऩ् वल्वि लिऱुप्पदऩ् मुऩ्ऩम्
शेयिऴै मङ्गयर् शिन्दैतॊ ऱॆय्या, आयिरम् वल्वि लऩङ्ग निऱुत्ताऩ् 768

तूय तवङ्कळ् तॊटङ्किय–पवित्र तपों को जिन्होंने अनेक बार आरम्भ किया था; तॊल्लोऩ्–उन प्राचीन (तपोवृद्ध) ऋषि से; एयवऩ्–प्रेरित श्रीराम; वल् विल्–सुदृढ़ धनुष को; इऱुप्पतऩ् मुऩ्ऩम्–तोड़ने के पूर्व; अनङ्कऩ्–मन्मथ ने; चॆम्मै इऴै–श्रेष्ठ आभरणवाली; मङ्कैयर् चिन्तै तॊऱुम्–स्त्रियों के हृदय-हृदय में; ऍय्या–(पुष्प शर) फेंकते-फेंकते; अयिरम् वल् विल्–सहस्रों प्रबल (इक्षु-) धनुओं को; इऱुत्ताऩ्–तोड़ा। ७६८

विश्वामित्र, बड़े ही उद्यमी ऋषि थे। कितनी ही बार उन्हें तप नये सिरे से आरम्भ करना पड़ा था। तपोवृद्ध उन्होंने श्रीराम को प्रेरित किया और वे धनु को भंग करने गये। उनके उसको भंग करने से पहले कामदेव को वहाँ उपस्थित सुन्दर और श्रेष्ठ आभरणालंकृता स्त्रियों पर पुष्पबाण चलाते-चलाते अनेक इक्षु-धनु तोड़ने पड़ गये। (यानी वहाँ रही रमणियाँ प्रेम विह्वल हो गयीं।)। ७६८

❀ काणु नॅडुञ्जिलै काल्वलि दॅऩ्बार्, नाणुडै नङ्गै नलङ्गिळर् शॅङ्गेळ्प्
पाणि यिवन्पडर् शॅङ्गै पडादेल्, वाणुदल् मङ्गैयुम् वाळ्विल ळॅऩ्बार् 769

काणुम् नॅटु चिलै–हमारा देखा यह बड़ा धनु; काल् वलितु–कठोर बाजुओं का है; ऍऩ्पार्–कहते; नाण् उटै नङ्कै—लज्जा-शृंगारिता सीताजी के; नलम् किळर्–मनोरम; चॅम् कॆळ् पाणि–लाली लिए हुए हाथ; इवऩ्–इनके; पटर् चॅम् कै–विशाल सुन्दर हाथ; पटातेल्–स्पर्श नहीं करेंगे तो; वाळ् नुतल् मङ्कैयुम्–उज्ज्वल ललाटवाली सीताजी भी; वाळ्वु इलळ्–मंगलमय जीवन नहीं पायँगी; ऍऩ्पार्–कहतीं। ७६६

वे भावना प्रभावित स्त्रियाँ कई प्रकार के भाव प्रकट करने लगीं। 'देखो, इस धनुष के बाजू कितने लम्बे हैं ?' ''लज्जाशील सीताजी के सुन्दर कोमल पाणि का, इनके विशाल हाथ ग्रहण नहीं करेंगे (यानी इन दोनों का विवाह नहीं होगा) तो सीताजी का जीवन निरर्थक हो जायगा''। ७६९

करङ्गळ् कुवित्तिरु कण्गळ् पनिप्प, इरुङ्गळि ऱिच्चिलै येऱ्ऱिल ऩायिऩ्
नरन्द नरैक्कुळ् नङ्गैयु नामुम्, मुरुङ्गॆरि युट्पुह मुळ्हुदु मॆऩ्बार् 770

इरु कण्कळ् पऩिप्प–दोनों आँखों में आँसू ढलकाते हुए; करङ्कळ् कुवित्तु–हाथ (अपने इष्टदेव के सामने) जोड़कर; इरु कळिऱु–श्रेष्ठ गज (सदृश ये); इ चिलै–यह धनु; एऱ्ऱिलऩ् आयिऩ्–नहीं चढ़ायँगे तो; नरन्तम् नरै कुळल्—कस्तूरी-गन्ध भरे केश की; नङ्कैयुम् नामुम्–देवी सीता और हम; मुरुङ्कु ऍरि उळ् पुक—सर्व-भस्मकारी अग्नि में घुसकर; मूळ्कुतुम्–मग्न हो जायँगी; ऍऩ्पार्–कहतीं। ७७०

सीताजी की बहुत निकट की सखियाँ आँखों में आँसू ढलकाती हुयी हाथ जोड़कर कहतीं— ये गज-सदृश श्रीराम इस धनुष पर प्रत्यंचा न चढ़ायेंगे तो कस्तूरी लगे केशवाली सीताजी के साथ हम भी अग्नि-प्रवेश कर जायँगी। ७७०

❀ बळ्ळन् मणत्तै महिळ्न्दऩ ऩॆऩ्ऱाल्, कॊळ्ळॆन मुऩ्बु कॊडुप्पदै यल्लाल्
वॆळ्ळ मणैत्तवऩ् विल्लै यॆडुत्तिप्, पिळ्ळैमु ऩिट्टदु पेदमै यॆऩ्बार् 771

वळ्ळल्–वदान्य ने; मणत्तै–विवाह को; मकिळ्न्तऩऩ्–पसन्द किया; ऍऩ्ऱाल्–तो; कॊळ् ऍऩ–लो, कहकर; मुऩ्पु–पहले ही; कॊटुप्पतै अल्लाल्–देना छोड़कर; वॆळ्ळम् अणैत्तवऩ्–(गंगा की) बाढ़ को रोकनेवाले (शिवजी) का; विल्लै ऍटुत्तु–धनु लेकर; इ पिळ्ळै मुऩ् इट्टतु–इस बालक के सामने (झुकाने के हेतु) डालना; पेतैमै–जड़ता; ऍऩ्पार्–कहते। ७७१

कुछ (प्रौढ़ा) स्त्रियाँ कहतीं, दानी जनक ने सीताजी का विवाह सचमुच संपन्न करना चाहा तो करना यही चाहिए था कि उनके माँगने के पूर्व ही ''ग्रहण कर लीजिये'', कहकर उन्हें कन्यादान कर देते। इसके विपरीत गंगा की बाढ़ रोकनेवाले शिवजी के धनुष को विवाह की शर्त

के रूप में, बालक के सामने डालना कहाँ की बुद्धिमानी है ? यह तो निरी जड़ता है।" ('वदान्य' श्रीराम के पक्ष में भी लिया जा सकता है। 'श्रीराम यह विवाह चाहते हैं—यह जानकर कन्यादान कर देना ही बुद्धिमत्ता है।' "वॆळ्ळमणैत्तवन" का पाठांतर वॆळ्ळैमनत्तवऩ् है। उसका अर्थ अबोध होगा। वह जनक पर लागू है।)। ७७१

ञाऩ मुऩिक्कॊरु नाणिलै यॆऩ्बार्, कोऩिव ऩिऱ्कॊडि योरिलै यॆऩ्बार्
माऩव ऩिच्चिलै काल्बळै याऩेल्, पीऩ तऩत्तवळ् पेऱिल ळॆऩ्बार् 772

ञाऩम् (ज्ञाऩम्) मुऩिक्कु–ज्ञानी मुनि की; ऒरु नाण् इलै–शरम कुछ नहीं है; ऎऩ्पार्–कहते; कोऩ् इवऩिऩ्–राजा (जनक) इनसे बढ़कर; कॊडियोर् इलै–क्रूर नहीं; ऎऩ्पार्–कहते; माऩवऩ्–सम्मान्य ये; इ चिलै काल् वळैयाऩेल्–इस धनुष के बाज़ू को नहीं झुकायँगे तो; पीऩम् तऩत्तवळ्–पीनस्तनी (सीता); पेऱु इलळ्–भाग्यहीना हैं; ऎऩ्पार्–कहते। ७७२

कुछ स्त्रियाँ विश्वामित्र की निन्दा करतीं— 'ये ज्ञानी हैं पर इनमें लज्जा नहीं है'। (इतने छोटे बालक को इतने बड़े धनुष को तोड़ने के कार्य में प्रवृत्त कराते हैं।) कुछ जनकजी के प्रति रुष्ट हैं। "इनसे बढ़कर क्रूर कोई नहीं होगा।" और कुछ पछताती— हाय ! सम्मान्य ये श्रीराम इस धनुष को नहीं झुका पायँगे तो पीनस्तनी सीताजी सौभाग्य से वंचित हो जायँगी ! । ७७२

❀ तोहय रिऩ्ऩऩ शॊल्लिड नल्लोर्, ओहै विळम्बिड वुम्ब रुवप्प
माह मडङ्गलु माल्विडै युम्बॊऩ्, नाहमु नाहमु नाण नडन्दाऩ् 773

तोकैयर् इऩ्ऩऩ चॊल्लिट—मयूर-छटा स्त्रियाँ इस तरह कह रही थीं, तब; नल्लोर्–साधु लोगों ने; ओकै विळम्पिट—सन्तोष-वचन कहा, तब; उम्पर् उवप्प-देवगण मुदित हुए, तब; माकम् मटङ्कलुम्–शानदार सिंह; माल् विटैयुम्–श्रेष्ठ ऋषभ; पॊऩ् नाकमुम्–स्वर्णपर्वत (मेरु) और; नाकमुम्–गज; नाण–लजा जायँ, ऐसा; नटन्ताऩ्–डग भरे। ७७३

स्त्रियाँ ऐसी ऐसी कह रही थीं। साधु लोग संतोष के साथ उत्साहवर्धक आशीर्वाद दे रहे थे। देवता लोग आनन्द का अनुभव कर रहे थे। तब श्रीराम शानदार केसरी, भव्यऋषभ, स्वर्णमेरु और गज को लजाते हुए आगे बढ़े। (सिंह और मेरु रूप सौष्ठव के लिए उपमायें हैं और ऋषभ गज चाल के लिए)। ७७३

❀ आडह माल्वरै यऩ्ऩदु तऩ्ऩैत्, तेडरु मामणि शीदैयॆ नुम्बॊऱ्
चूडह वाल्वळै शूट्टिड नीट्टुम्, ऎडविऴ् मालयि दॆऩ्ऩवॆ डुत्ताऩ् 774

माल् आटकम् वरै अऩ्ऩतु तऩ्ऩै–भव्य स्वर्ण (मेरु) पर्वत सदृश उस (धनु) को; पॊऩ् चूटकम्–स्वर्ण की चूड़ियाँ; वाल् वळै–और उज्ज्वल (शंख के) कंकण पहनी हुई; चीतै ऎऩ्ऩुम्–सीता नाम की; तेट अरु मामणि–ढूँढकर प्राप्त न होने योग्य श्रेष्ठ

(कन्या-) रत्न को; चूट्टिट–पहनाने के लिए; नीट्टुम्–बढ़ाई हुई; एट्टु अविऴ् मालै इतु–विकसित दलवाली (पुष्पों की) माला है यह; ऍऩ्ऩ–मानों यह कहते हुए; ऍटुत्ताऩ्–उठाया । ७७४

वे धनुष के पास पहुँच चुके । वह धनुष स्वर्णपर्वत मेरु के समान (ललकारता हुआ) पड़ा था । लेकिन श्रीराम ने उसे इस तरह अनायास उठा लिया मानों वे स्वर्ण की चूड़ियों और शंख-कंकणों से अलंकृत दुर्लभ कन्यारत्न सीता देवी के गले पर डालने के लिए विकसित दलवाले पुष्पों की गुंथी माला को उठाकर बढ़ा रहे हों । ७७४

❀ तडुत्तिमै याम लिरुन्दवर् ताळिऩ्, मडुत्तदु नाणुदि वैत्तदु नोक्कार्
कडुप्पिऩिल् यारु मऱिन्दिलर् कैयाल्, ऍडुत्तदु कण्डऩ रिऱ्ऱदु केट्टार् 775

कैयाल् ऍटुत्ततु कण्टऩर्–हाथ से लेना देखा (जिन्होंने वे); तटुत्तु–रोककर; इमैयामल् इरुन्तवर्–पलक नहीं मारे रहे, उनमें; ताळिऩ् मटुत्ततुम्–पैरों के नीचे (एक सिरे का) रखना; नाण् नुति वैत्ततुम्–डोरे को दूसरे सिरे से बाँधना; कटुप्पिऩिल्–(कार्य के) वेग के कारण; यारुम् नोक्कार्–कोई नहीं देखते; अऱिन्तिलर्–न समझते थे; इऱ्ऱतु केट्टार्–टूटना सुना । ७७५

श्रीराम को धनुष को उठाते हुए लोगों ने देखा । वे निर्निमेष देखते ही रहे क्योंकि यह बड़ा ही विस्मयकारी कार्य हो गया था । तो भी वे, उनका उसके एक सिरे को अपने पैर के नीचे दबाना, दूसरे सिरे पर प्रत्यंचा लगाना इत्यादि काम नहीं देख पाये । क्योंकि वह सब बहुत वेग के साथ हो गया था । (वे कल्पना भी नहीं कर सके; समझ भी नहीं सके कि क्या हो रहा था ।) उन्होंने उसका टूटना ही सुना । ७७५

आरिडैप् पुहुदु नामॅऩ् ऱमरर्हळ् कमलत् तोऩ्ऱऩ्
पेरुडै यण्ड कोळम् पिळन्ददॅऩ् ऱेङ्गि नैन्दार्
पारिडै युऱ्ऱ तऩ्मै पहर्वदॅऩ् बारैत् ताङ्गि
वेरॅऩक् किडन्द नाह मिडियॅऩ वॅरुविऱ् ऱऩ्ऱे 776

अमरर्कळ्–देवता लोग; कमलत्तोऩ् तऩ् पेर् उटै(य)–कमलनिवास (ब्रह्मा) के नाम पर प्रचलित; अण्ट कोळम् पिळन्ततु–अण्ड गोल फट गया; नाम् आर् इटै पुकुतुम्–हम किनके पास शरण पायँगे; ऍऩ्ऱु–सोचकर; एङ्कि–चिन्तित होकर; नैन्तार्–दुखी हुए; पारै ताङ्कि–भूमि का भार वहन कर; वेर् ऍऩ किटन्त–जड़ के समान पड़ा रहा; नाकम्–शेषनाग भी; इटि ऍऩ–वज्रपात समझकर; वॅरुविऱ्ऱु–डर गया; पार् इटै उऱ्ऱ तऩ्मै–भूमि पर जो हुआ उसकी स्थिति; पकर्वतु ऍऩ–कहना क्या । ७७६

घोर धनुर्भंगनाद सुनकर देव डर गये । उनको ऐसा लगा कि ब्रह्मांड ही फूट गया है । उनको इस बात की चिन्ता हो गयी कि हम किनके पास जाकर त्राण पायँगे ? उधर पाताल में रहकर भूमि को जो ढो

रहा था वह शेषनाग भी वज्रपात समझकर भयाहत हो गया। (आकाश और पाताल की यह हालत रही तो) भूलोक की बात क्या कही जाय ? (तीनों लोक डर गये)। ७७६

पूमऴै शॉरिन्दार् विण्णोर् पॉऩ्मऴै पॉऴिन्द मेहम्
पाम्मा कडल्ह ऍल्लाम् पऩ्मणि तूवि यार्त्त
कोमुऩिक् कणङ्ग ऍल्लाङ् गूऱिऩ वाशि कॉऱ्ऱ
नामवेऱ् चऩह निऩ्ऱॆ ऩल्विऩै पयन्द दऩ्ऱाऩ् 777

विण्णोर्–आकाशवासियों ने; पू मऴै चॉरिन्तार्–पुष्पवर्षा कराई; मेकम् पॉऩ् मऴै पॉऴिन्त–मेघों ने स्वर्णवर्षा कराई; पामम् मा कटल्कळ् ऍल्लाम्–विशाल और श्रेष्ठ सभी सागरों ने; पल मणि तूवि–अनेक रत्न-राशियाँ बिखेरकर; आर्त्त–उच्चनाद कराया; को मुऩि कणङ्कळ् ऍल्लाम्–अग्रगण्य सभी मुनिवरों ने; आचि कूऱित–आशीर्वाद (के वचन) कहे; कॉऱ्ऱम्–विजयी और; नामम्–आतंकदायक; वेल्–भाले के; चऩकऩ्–जनक ने; इऩ्ऱु–आज; ऍऩ् नल् विऩै–मेरे सुकृत्य ने; पयन्ततु–फल दिया; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ७७७

देवों ने पुष्प वर्षा की; मेघों ने स्वर्ण बरसाये और विशाल समुद्र रत्न बिखेर कर गरज उठे। अग्रगण्य मुनि लोगों ने आशीर्वाद दिया। विजयशील और शत्रुभयकारी भालाधारी जनक ने राहत की सांस ली कि आज मेरे सुकृत सफलीभूत हुए। ७७७

मालैयु मिऴैयुञ् जान्दुञ् जुण्णमुम् वास नॅय्युम्
वेलैवॅण् मुत्तुम् पॉऩ्ऩुङ् गाशुनुण् डुहिलुम् वीशप्
पाल्वळै वयिर्ह ळार्प्पप् पल्लियन् दुवैप्प मुऩ्ऩीर्
ओल्हिळऱ्न् दुवावुऱ् ऱॆऩ्ऩ वॊण्णहर् किळऱ्न्द दऩ्ऱे 778

ऑळ्नकर्–प्रकाशमय नगर (भर) में; पाल् वळै–श्वेत शंख; वयिर्कळ्–शृंग; आर्प्प–निनादित किए गए; पल् इयम्–विविध वाद्य; तुवैप्प–बज उठे; मालैयुम्–पुष्पमालाएँ; इऴैयुम्–और आभरण; चान्तुम्–चन्दन; चुण्णमुम्–सुगन्धचूर्ण; वाचम् नॅय्युम्–फुलेल; वेलै वॅण् मुत्तुम्–समुद्र से प्राप्त श्वेत मोती; पॉऩ्ऩुम्–स्वर्ण; काचुम्–रत्न; नुण् तुकिलुम्–महीन वस्त्र; वीच–अधिकता से देते-लेते हुए; उवा उऱ्ऱु–पूर्णचन्द्र के उगने पर; मुऩ्ऩीर्–त्रिजली समुद्र; ओल् किळऱ्न्ततु ऍऩ्ऩ–सघोष उठा सा; किळऱ्न्ततु–(संतोषनाद) खिल उठा। ७७८

नगर में भी आनन्द की लहर बढ़ चली। नगर प्रकाशमान हो गया। शंख और शृंगवाद्य स्वरित हुए। अनेक बाजे बज उठे। लोगों ने मालाएँ, आभरण, चन्दन, गुलाल, फुलेल, मोती, स्वर्ण, रत्न, महीन वस्त्र, इत्यादि वस्तुएँ वितरित कीं। पूर्ण चन्द्र के उगने पर सागर जैसे गर्जन कर उमड़ता है वैसे उस नगर भर में आनन्दरव भर उठा। ७७८

नल्लियन् महर वीणै तेनुह नहैयुन् दोडुम्
विल्लिड वाळुम् वीश वेल्हिडन् दनैय नाट्टत्
तॅल्लियन् मदिय मन्न मुहत्तिय रॅळिलि तोन्ऱच्
चॉल्लिय परुव नोक्कुन् दोहैयि नाडि नारे 779

वेल् किटन्त अनैय–वेल् (भाला) पड़ा रहा, ऐसा दिखनेवाली; नाट्टत्तु–आँखें; ऍल् इयल् मतियम् अन्न–उज्ज्वल पूर्णचन्द्र-सम; मुकत्तियर्–आननवालियाँ; नल् इयल्–सुरचित; मकर वीणै–मकराकार की वीणा के; तेन् उक–मधुर शहद (नाद) देते; नकैयुम् तोटुम्–दन्तावली और कर्णाभरणों के; विल् इट–कान्ति बिखेरते; वाळुम् वीच–तलवारों के चमकते; चॉल्लिय परुवम्–(वर्षा के लिए) कथित मौसम में; ऍळिलि तोन्ऱ–मेघों के प्रकट होने पर; नोक्कुम् तोकैयिन्–उनको देखनेवाले मोरों के समान; आटिनार्–नाचे। ७७६

स्त्रियाँ, जिनकी आँखें "वेल्" (शक्ति) के समान थीं और आनन पूर्णचन्द्र के समान थे, सुरचित वीणाएँ बजाती हुयी मेघाविर्भाव पर नाचने वाले मयूरों के समान नाच उठीं। तब उनके दांत और कर्णाभरण चमक रहे थे। उनकी आँखें भी तलवारों के समान दमक रही थीं। ७७९

उण्णऱ वरुन्दि नारिऱ् चिवन्दॉळिर् करुङ्गण् मादर्
पुण्णुऱु पुलवि नीक्किक् कॉळुनरैप् पुल्लिक् कॉण्डार्
वॅण्णिऱ मेह मेन्मेल् विरिहडल् परुहु मापोल्
मण्णुऱु वेन्दन् शॅल्वम् वऱियवर् मुहन्दु कॉण्डार् 780

उण् नऱवु–अशनयोग्य सुरा; अरुन्तिनारिन्–जो पी चुके हों उनके समान; चिवन्तु ऑळिर्–लाल होकर चमकनेवाली; करुमै कण् मातर्–काली आँखोंवाली स्त्रियाँ; पुण् उऱु पुलवि–वेदनादायक रूठन; नीक्कि–छोड़कर; कॉळुनरै–अपने पतियों को; पुल्लिक् कॉण्टार्–आलिंगनबद्ध कर लिया; वॅण् निऱम् मेकम्–श्वेत रंग के (जल-हीन) मेघ; विरि कटल्–विस्तृत सागरजल; मेल् मेल् परुकुम् आ(ऱु) पोल्–उत्तरोत्तर पीते से; वऱियवर्–अभावग्रस्त लोगों ने; मण्–इस भूमि में; उऱु–ग्राह्य; वेन्तन् चॅल्वम्–राजा के धन को; मुकन्तु कॉण्टार्–बटोर लिया। ७८०

स्त्रियों की काली आँखें, सुरापीत कामातुरा होने के कारण या सुरापीत कामातुरा स्त्रियों की आँखों के समान लाली मिश्रित हो गयी थीं। उन्होंने अपने प्रेमी पतियों को पीड़ा देनेवाली अपनी रूठन को त्याग दिया और प्रेमियों को अपने आलिंगन में ले लिया। याचक लोगों ने राजा के धन-द्रव्यों को अपनी इच्छा के अनुसार, सागरजल पीनेवाले जलहीन मेघों के समान उठा लिया। ७८०

वयिरियर् मदुर गीदम् मङ्गय रमुद गीदम्
शॅयिरियर् महर याळिन् तेम्बिळि दॅय्व गीदम्

पयिर्हिळै वेयिऩ् गीद मॆऩ्ऱिवै परुहि विण्णोर्
उयिरुडै युडम्बु मॆल्ला मोविय मॊप्प निऩ्ऱार् 781

वयिरियर्–गवैयों के; मतुरम् कीतम्–मधुर गीत; मङ्कैयर्–(गायिका) स्त्रियों के; अमुतम् कीतम्–सुधा-सम गीत; चॆयिरियर्–वीणावादकों के; मकर याऴ्–मकराकार की वीणा के; इऩ् तेम् पिऴि–मधुर शहद निकला सा; तॆय्वम् कीतम्–दिव्य संगीत; पयिर् किळै–नाद-जाल निकालनेवाली; वेय् इऩ् कीतम्–बांसुरी का मधुर संगीत; अॆऩ्ऱ इवै–ऐसे ये; विण्णोर् परुकि–देवगण (पीकर) सुनकर; उयिर् उटै (य) उटम्पुम्–जीवंत शरीरी होकर भी; अॆल् आम् ओवियम् ऑप्प निऩ्ऱार्–दीप्तिमान चित्र के समान, खड़े रहे । ७८१

गवैयों का मधुर संगीत, गायिकाओं का सुधा सम संगीत, वीणावादकों का मधुर मधु सम दिव्य संगीत, विविधराग अलापनेवाली बांसुरी का रम्य-संगीत-इन सबको ऊपर से देवों ने सुना तो निस्पंद खड़े हो गये । जीवंतशरीरी होने पर भी वे चित्रलिखित काँतियुत प्रतिमाओं के समान अचल खड़े रहे । ७८१

ऐयऩ्विल् लिऱुत्त वाऱ्ऱल् काणिय वमरर् नाट्टुत्
तैयला रिऴिन्दु पारिऩ् महळिरैत् तऴुविक् कॊण्डार्
शॆय्हैयिऩ् वडिवि नाडल् पाडलिऱ् ऱॆळिद ऱेऱ्ऱार्
मैयरि मलर्क्क णोक्कि यिमैत्तलु मयङ्गि निऩ्ऱार् 782

अमरर् नाटु तैयलार्–देवलोक की अप्सराएँ; ऐयऩ्–प्रभु के; विल् इऱुत्त आऱ्ऱल्–धनु तोड़ने का कौशल; काणिय–देखने के लिए; इऴिन्तु–उतरकर; पारिल् मकळिरै–भूलोक की स्त्रियों को; चॆय्कैयिऩ्–कृत्यों में; वटिविऩ्–रूपों में; आटल् पाटलिऩ्—नाच-गान में; तॆळितल् तेऱ्ऱार्–(पृथक) पहचान नहीं सकीं; तऴुविऴ कॊण्टार्–(उनको देवांगनाएँ समझ) गले लगा लिया; मै अरि मलर् कण्–(उनकी) काजल लगी लाल डोरे युक्त आँखें; नोक्कि–देखकर; इमैत्तलुम्–पलकों के गिरते ही; मयङ्कि निऩ्ऱार्–चकित खड़ी रहीं । ७८२

देवांगनाएँ धनुर्भंग देखने की इच्छा से ऊपर से उतर कर मिथिला में आयी थीं । उन्होंने भूलोक की रमणियों को देखा । उनके काम में, रूप में, नाच-गाने में किसी में भी अपने से कोई पृथकत्व नहीं देख सकीं । इसलिए भ्रम में पड़कर देवांगनाएँ उनको आलिंगन कर गयीं । तब उन्होंने उनकी आँखों पर दृष्टि डाली तो पलकें गिरती उठती थीं । उसको देखकर अपनी भूल समझ गयीं और ठिठककर खड़ी रह गयां । ७८२

तयरदऩ् पुदल्व नॆऩ्बार् तामरैक् कण्ण ऩॆऩ्बार्
पुयलवऩ् मेऩि यॆऩ्बार् पूवैयुम् पॊरुवु मॆऩ्बार्
मयलुडैत् तलह मॆऩ्बार् मातुड ऩल्ल ऩॆऩ्बार्
कयल्पॊरु कडलुळ् वैहुङ् गडवुळे काणु मॆऩ्बार् 783

तयरतन् पुतल्वन् ऍन्पार्--दशरथ के पुत्र, कहते; तामरै कण्णन्-पुण्डरीकाक्ष; ऍऩ्पार्-कहते; अवन् मेत्ति पुयल्, ऍऩ्पार्-उनका शरीर मेघ है कहते; पूवैयुम् पॉरुवुम्, ऍऩ्पार्--अतसी पुष्प भी योग्य है (उपमा के लिए) कहते; मातुटन् अल्लन्-मानव नहीं; ऍऩ्पार्--कहते; कयल् पॊरु कटलुळ् वैकुम्-मछलियों से भरे (क्षीर) सागर में रहनेवाले; कटवुळे-देवता (श्रीमन्नारायण) हैं; ऍऩ्पार्-कहते; उलकम् मयल् उटैत्तु-संसार भ्रम में पड़ा है; ऍऩ्पार्-कहते। ७८३

लोग आपस में बातें करने लगे। 'दशरथ के पुत्र हैं' 'पुण्डरीकाक्ष हैं' 'मेघ श्याम हैं', 'अतसीसम हैं' "इनको संसार मनुष्य समझता है तो वह भ्रम में है", 'ये मानव नहीं हैं', "क्षीरसागर-शायी महाविष्णु ही हैं।" ऐसे अनेक विचार व्यक्त कर रहे थे। ७८३

नम्बियैक् काण नङ्गैक् कायिर नयनम् वॆण्डुम्
कॊम्बिनैक् काणुन् दोरुङ् गुरिशिर्कु मन्न देयाल्
तम्बियैक् काण्मि नॆन्बार् तवमुडैत् तुलह मॆन्बार्
इम्बरिन् नहरिऱ् ऱन्द मुनिवनै यिऱैञ्जु मॆन्बार् 784

नम्पियै काण-पुरुषश्रेष्ठ को देखने के हेतु; नङ्कैक्कु-हमारी नायिका के लिए; आयिरम् नयनम् वेण्टुम्-सहस्र नेत्र चाहिए; कॊम्पिनै-सुमन शाखा सी सीताजी को; काणुम् तोऱुम्-हर देखती बार; कुरिचिऱ्कुम्-राजकुमार के लिए भी; अन्तते-वही स्थिति; तम्पियै काण्मिन्-छोटे भ्राता को देखो; ऍऩ्पार्-कहते; उलकम् तवम् उटैत्तु-संसार ने खूब तपस्या की है; ऍऩ्पार्-कहते; इम्पर्-इस लोक में; इ नकरिल् तन्त-इस पुरी में जो (इनको) लाए; मुनिवनै-महर्षि को; इऱैञ्चुम्-नमस्कार करो; ऍऩ्पार्-कहते। ७८४

कुछ लोग कहते-पुरुषोत्तम को तृप्ति भर देखना चाहेंगी तो सीताजी को सहस्रनयना होना होगा! क्या जानकी भी कम हैं? "पुष्पलता (सी) जानकी को देखने के लिए प्रभु श्रीराम को एक सहस्र नहीं, जितनी बार देखते हैं उतने सहस्र नेत्र चाहिए।" "छोड़ो वह बात! उनके छोटे भाई को भी देखो।" "संसार ने खूब तपस्या की है। तभी ये इस लोक में जन्म ले आये हैं।" कुछ लोग कहते—यह सब सही है। पर उन महर्षि को नमस्कार कहो जो इनको इधर लिवा लाये!। ७८४

इऱ्ऱिव णिन्न दाह मदियॊडु मॆल्लि नीङ्गप्
पॆऱ्ऱुयिर् पिन्नुङ् गाणु माशैयिऱ् चिऱिदु पॆऱ्ऱ
शिऱ्ऱिडैप् पॆरिय कॊङ्गैच् चेयरिक् करिय वाट्कट्
पॊऱ्ऱॊडि मडन्दैक् कप्पा लुऱ्ऱदु पुहल लुऱ्ऱाम् 785

इवण्-यहाँ; इऱु इन्नतु आक-यह बात ऐसी रही तब; ऍल्लि-रात; मतियॊटुम्-चन्द्र के साथ; नीङ्कप्पॆऱ्ऱु-बीत गई, पाकर; पिन्नुम् काणुम् आचैयिन्-(श्रीराम को) फिर एक बार देख लेने की अभिलाषा से; उयिर् चिऱितु पॆऱ्ऱ-प्राणों को थोड़ा पुनः पाकर; चिऱु इटै-पतली कमर; पॆरिय कॊङ्कै-पृथुल उरोज; चेय्

अरि–लाल डोरों के साथ; करिय वाळ् कण्–काली तलवार सी आँखें; पोन् तॊटि–स्वर्णकंकण, इनसे युक्त; मटन्तैक्कु–देवी का; अप्पाल् उऱ्ऱतु–तदनन्तर हुआ हाल; पुकलल् उऱ्ऱाम्–कहने लगे । ७८५

यहाँ ऐसी बातें हो रही थीं। अब सीताजी की बात देखें। रात बीत गयी। चन्द्र भी अस्त हो गया। श्रीरामदर्शनाभिलाषा ने सीताजी को थोड़ा प्राणदान दिया। उन, लघुकमर, पीनस्तनी, अरुण रेखांकित असितेक्षणा सीताजी पर क्या बीता— वह हाल अब कहेंगे। ७८५

ऊशला डुयिरि ऩोडु मुरुहुपूम् बळ्ळि नीङ्गिप्
पाशिऴै महळिर् शूऴप् पोयोरु पळिक्कु माडत्
तेशिऱा मरैयिन् पॊय्हैच् चन्दिर कान्द मीऩ्ऱ
तेशुनी रळिक्कु मॆन्बूज् जेक्कयै यरिदिऱ् चेर्न्दाळ् 786

ऊचल् आटु–झूलनेवाले; उयिरिऩोटुम्–प्राण के साथ; उरुकु–पिघलानेवाली (तपानेवाली); पू पळ्ळि नीङ्कि–पुष्पशय्या छोड़कर; पचुमै इऴै–चोखे स्वर्ण के बने आभरणोंवाली; मकळिर् चूऴ पोय्–सखियों से घिरी हुई जाकर; ऑरु पळिङ्कु माटत्तु–एक स्फटिक-प्रासाद में; एचु इल् तामरै–अमल कमल से भरे; इन् पॊय्कै–सुखद तड़ाग के पास; चन्तिर कान्तम् ईऩ्ऱ–चन्द्रकान्त निसृत; तेचु नीर्–स्वच्छ जल से; अळिक्कुम्–सिंचित रहनेवाली; मॆन् पू चेक्कैयै–कोमल सुमनशय्या में; अरितिन् चेर्न्ताळ्–स-आयास पहुँची । ७८६

देवी के प्राण संकट में (दोलायमान) थे। पुष्पशय्या उनको बहुत ताप दे रही थी। वे उस पर से उठीं। उनकी सखियाँ (दासियाँ) उनको घेर कर आयीं। वे धीरे-धीरे चलीं और एक स्फटिक-प्रासाद में, अमल कमलों के तड़ाग के पास बनी पुष्पशय्या पर जा लेटीं। उस शय्या को चन्द्रकांतमणि—निसृत स्वच्छ जल शीतल कर रहा था। ७८६

पॆण्णिव णुऱ्ऱ वाऱु पेणिये करुमै याऩ
वण्णमु मिलैहळाले काट्टलाल् वाट्टन् दीर्न्देन्
तण्णऱुङ् गमलङ्गाळॆन् ऱळिरनिऱ मुण्ड कण्णिन्
ऑण्णिऱङ् काट्टि ऩीरॆन् ऩुयिर्तर वुलोवि ऩीरे 787

तण् नऱु कमलङ्काळ्–शीतल सुगन्धित कमल; पॆण्–स्त्री मैं; इवण् उऱ्ऱवाऱु पेणि–(जिस हाल को) अब पहुँच गई वह हाल देखकर; करुमैयाऩ वण्णम्–(उनका) श्यामल रंग; उम् इलैकळाले काट्टलाल्–अपने पत्रों द्वारा दिखाते हो, इसलिए; वाट्टम् तीर्न्तेन्–(थोड़ी) व्यथा छोड़ी; ऎन् तळिर् निऱम् उण्ट–मेरी आम्रपल्लव सदृश छटा पी ले, जो गई; कण्णिन् ऑळ् निऱम्–(उनकी उन) आँखों का सुन्दर रंग; काट्टिऩीर्–(अपने पुष्पों में) दिखाते हो; ऎन् उयिर् तर–मेरे प्राणों (सम उन) को देने में; उलोविऩीरे–कृपणता (क्यों) दिखाते हो । ७८७

तब सीता देवी यों कहने लगीं। शीतल और सुगन्धित कमल

लताओ ! तुमने मेरी स्थिति पर, मुझे स्त्री समझकर, रहम खायी है ! अपने पत्तों में मेरे प्रिय के रंग की छटा दिखाती हो । मैं थोड़ा स्वस्थ हुई । अपने फूलों में उनकी आँखों की शोभा दिखाती हो, जो मेरे आम्र-पल्लव के से रंग को हर ले गयीं । (उनको देखने के बाद, असफल हुयी प्रेम-मिलन की इच्छा की व्यथा से, मेरा शरीर अपना रंग खो गया ।) इससे भी मेरा मन कुछ धीरज पा सका । इतना जो किया, तुम उनको लाकर, मेरे प्राणों को पूरा लौटाने में कंजूसी और आनाकानी क्यों करती हो ? । ७८७

नाणुलावु मेरुवोडु नाणुलावु पाणियुम्
तूणुलावु तोळुम्वाळि यूडुलावु तूणियुम्
वाणिलावि ऩूलुलावु मालैमार्बु मीळवुम्
काणलाहु माहिऩावि काणलाहु मेकॊलाम् 788

नाण् उलावुम् मेरुवोटु–(कन्धों की सुन्दरता के सामने) लजानेवाले मेरुपर्वत के (समान धनुष के) साथ; नाण्–(और) प्रत्यंचा के साथ; उलावु–व्यवहार करनेवाले; पाणियुम्–श्रीहस्त; तूण् उलावु तोळुम्—स्तम्भ-सम कन्धे; वाळि ऊटु उलावु तूणियुम्–बाण जिसके अन्दर हैं, वह तूणीर; वाळ् निलाविऩ्–श्वेतचन्द्र-सम; नूल् उलावुम्–यज्ञोपवीत जिसपर डोलते हैं वह; मालै मारपुम्–मालाशोभित वक्षस्थल; मीळवुम् काणल् आकुम्–पुनः देखना हो सके; आकिऩ्–तो; आवि–मेरा प्राण; काणल् आकुमे–देखा जा सकता है । ७८८

वे हाथ, जो उनके कंधों से लजानेवाले मेरु के समान रहनेवाले धनुष और उसकी प्रत्यंचा के साथ व्यवहार करते हैं, वे स्तंभसदृश कंधे; वह बाण भरा तरकस, वह मालायुक्त वक्षस्थल जिस पर उपवीत हिल रहा है इनको फिर देख सकूँ तो मैं जीवित रह सकती हूँ । वे ही मेरे प्राण हैं, उनको पाऊँ तभी मेरा प्राण भी पुनः मुझे मिलेगा । (सीताजी के ध्यान में श्रीराम के पृष्ठभाग की सुन्दरता अंकित है । अतः तरकस की बात कहती हैं ।) । ७८८

❀ विण्डलङ्ग लन्दिलङ्गु तिङ्गळोडु मीदुशूळ्
वण्डलम्ब लङ्गरङ्गु पङ्गियोडुम् वार्शिलैक्
कॊण्डलऩ्ऱि रण्डुकण्णिऩ् मॊण्डुकॊण्डॆ ऩावियै
उण्डदुण्डॆ ऩॆञ्जिनिऩ्ऱु मुण्डदॆऩ्ऱु मुण्डरो 789

विण् तलम्–आकाश तल में; कलन्तु इलङ्कु–मिलकर रहनेवाले; तिङ्कळोटु–चन्द्र के साथ; मीतु चूळ्–ऊपर मँडरानेवाले; वण्टु अलम्पु–भ्रमर जिसपर गुंजार करते हैं उस; अलङ्कल तङ्कु–माला का आश्रय; पङ्कियोटुम्–केश के साथ; वार् चिलै–लम्बे धनुष के रखनेवाले; कॊण्टल्–मेघ (सदृश) वे; अऩ्ऱु–उस दिन; इरण्टु कण्णिऩ्–अपनी दोनों आँखों से; ऎऩ् आवियै–मेरे प्राणों को; मॊण्टु

कॉण्टु उण्टतु उण्टु–उठाकर पी लिया, यह सत्य है; अतु–वह; ऍऩ् नॅञ्चिऩ्–मेरे चित्त में; इऩ्ऱुम् उण्टु–अब भी (याद) है; ऍऩ्ऱुम् उण्टु–सदा (याद) रहेगा। ७८६

यह सत्य है कि उन्होंने मेरे प्राण ही पी लिये। आकाशवासी चन्द्र-समान आनन, भ्रमर जिस पर मँडराते गुंजन करते हैं, उस पुष्पमाला से अलंकृत केश, दीर्घ धनुष इनसे सुशोभित हो, श्याममेघ समान उन्होंने जिस दिन मुझे अपनी आँखों से देखा उसी घड़ी यह मेरे प्राणों का पान करने का काम हुआ। वह मुझे खूब याद है। वह हमेशा याद रहेगा भी। (मेघ हैं; प्राण-जल को पी गये —यह रूपक की सार्थकता है।)। ७८९

पञ्जरङ्गु तीयिऩावि पऱ्ऱनीडु कॉऱ्ऱविल्
वॅञ्जरङ्ग णॅञ्जरङ्ग वॅय्यकाम ऩॅय्यवे
शञ्जलङ्ग लन्दपोदु तैयलारै युय्यवन्
दञ्जलञ्ज लॅऩ्गिलाद वाण्मयॅऩ्ऩ वाण्मैयै 790

वॅय्य कामऩ्–क्रूर मन्मथ; नीटु कॉऱ्ऱम् विल्–बड़े, विजयी धनुष द्वारा; पञ्चु अरङ्कु तीयिऩ्–रुई को जलानेवाली आग के समान; आवि पऱ्ऱ–प्राण पर लग गया; नॅञ्चु अरङ्क–मन को आहत करके; वॅम् चरङ्कळ्–भयंकर शरों को; ऍय्यवे–चलाता है, अतः; चञ्चलम् कलन्त पोतु–चित्त आकुल होता है, तब; तैयलारै–स्त्रियों को; उय्य वन्तु–बचाने के लिए आकर; अञ्चल् अञ्चल् ऍऩ्किलात–डरो मत, डरो मत यह न कहनेवाला; ऍऩ्ऩ आण्मै–पौरुष क्या है। ७६०

(सीताजी श्रीराम के पुरुषत्व की निन्दा करती हैं) क्रूर मन्मथ अपना दीर्घ और विजयशील धनुष पर शर रखकर मुझ पर चलाता है। वह शर रुई पर लगी आग के समान मेरे प्राणों में लग जाता है। मेरा मन चोट खाकर छटपटाता है। बिल्कुल अधीर हो गयी हूँ। ऐसी हालत में पड़ी स्त्रियों को ढाढस बँधाना ही पुरुषोचित काम है! उनका पौरुष भी कैसा जो ऐसी अबला को बचाने के लिए पास आकर "डरो मत, मत डरो" कहकर धीरज नहीं बँधाता ?। ७९०

इळैक्कलाद कॉङ्गैहाळॅ ऴुन्दुविम्मि यॅऩ्शॅय्दीर्
मुळैक्कलाम दिक्कॉऴुन्दु पोलुम्वाण्मु हत्तिऩाऩ्
वळैक्कलाद विऱ्कैयाळि वळ्ळऩ्मार्बि नुळ्ळुऱत्
तिळैक्कलाहु माहिलाऩ शॅय्दवङ्गळ् शॅय्मिऩे 791

इळैक्क अल्लात कॉङ्कैकाळ्–क्षीण न होनेवाले उरोज; विम्मि ऍऴुन्तु–उभर उठकर; ऍऩ् चॅय्तीर्–(तुमने) क्या किया (पाया); मुळैक्क अल्ला–आकाश में जो उदित नहीं होता; मति कॉऴुन्तु पोलुम्–उस बाल चन्द्रसम; वाळ् मुकत्तिऩाऩ्–तेजोमय आननवाले; वळैक्क अल्लात–(आसानी से) न झुकनेवाले; विल् कै आळि–

धनुर्हस्त; वळ्ळल्–दानी स्वभाव के (उनके); मार्पिऩ् उळ् उऱ–वक्ष के अन्दर घुस जाओ, ऐसा; तिळैक्कल् आकुम्–अतिशय सुख भोग करना हो; आकिल्–तो; आन–आवश्यक; चॅय्तवङ्कळ्–कर्तव्य तप; चॅय्म्मिऩ्–करो । ७९१

(सीताजी अपने उरोजों को उलाहना देती हैं।) "हे मूर्ख उरोज ! कृश न होकर उभरकर सिर उठाये खड़े हो ! इसका क्या लाभ है ? अस्त होकर उदय न होनेवाले (हमेशा प्रकाशमान रहनेवाले) बालचन्द्र के समान जिनका तेजोमय वदन है, और जिनके हाथ में ऐसा कठोर धनु है जिसको कोई दूसरा झुका नहीं सकता, और जो दानी स्वभाव के हैं उनके वक्ष में धँसकर सुखानुभव प्राप्त करते रहना चाहते हो न ! तब यह अकड़ किसी काम की नहीं होगी। झुको, क्षीण हो जाओ और आवश्यक तपस्या करो।" (भगवान के वक्षस्थल पर न लग जाने की हालत में उरोज की रम्यता का क्या मूल्य ?)। ७९१

ऍङ्गुनिऩ्ऱॅ ऴुन्ददिन्द विन्दुवन्दॅ ऩॅञ्जुलाय्
अङ्गियऩ्ऱ ऩङ्गऩॅय्द वम्बिऩ्वन्द शिन्दॅनोय्
पॊङ्गुहिऩ्ऱ कॊङ्गैमेल्वि डम्बॊऴिन्द ऍन्ऩिऩुम्
कङ्गुल्वन्द तिङ्गळन्ऱ हङ्गळङ्ग मिल्लये 792

अनङ्कऩ्–कामदेव; ऍन् नॅञ्चु उलाय्–मेरे मन में व्याप्त हो; अङ्कु इयऩ्ऱु–वहाँ स्थित रहकर; ऍय्त–जो चलाता है उन; अम्पिऩ् वन्त–शर द्वारा प्राप्त; चिन्तै नोय्–मन की व्याधि; पॊङ्कुकिऩ्ऱ कॊङ्कै मेल्–उभरने के स्थान, उरोजों पर; इन्त इन्तु–यह चन्द्र (सूर्य या श्रीराम का मुख); वन्तु–आकर; विटम् पॊऴिन्ततु–विष बरसाया; ऍन्ऩिऩुम्–तो भी; कङ्कुल् वन्त तिङ्कळ् अऩ्ऱु–कल रात (जो) आया (वह) चन्द्र नहीं; अकम् कळङ्कम् इल्लै–अन्दर कलंक नहीं है; ऍङ्कु निऩ्ऱु–कहाँ से; ऍऴुन्ततु–(यह) उग आया। ७९२

सीताजी को श्रीरामचन्द्र का वदनचन्द्र दिखाई देता है। (उसको देखकर कहती हैं।) मन्मथ मेरे मन में अड्डा जमाकर शर चलाता है। उससे पीड़ा का रोग जो हुआ वह मेरे स्तनों पर अत्यधिक प्रभाव दिखाता है। उन स्तनों पर यह नया चन्द्र, जो दिन में उग आया है, आकर विष ढाल रहा है। तो भी यह चन्द्र कल रात का चन्द्र नहीं दिखता। क्योंकि उसमें कलंक था। इसमें कलंक नहीं है। (सूर्य को देवी ने चन्द्र मान लिया। —यह भाव भी लिया जा सकता है)। ७९२

अडर्न्दुवन्द ऩङ्गऩॅञ्ज ऴन्ऱुशिन्दु मम्बॅऩुम्
विडङ्गुडैन्द मॅय्युणिन्ऱु वॅन्दिडादॅ ऴुन्दुवॅम्
कडन्दुदैन्द कारियाऩै यन्ऩकाळै कालडैन्
दुडन्ऱॊडर्न्दु पोऩवावि वन्दवावॅ ऩुळ्ळमे 793

ऍन् उळ्ळमे–मेरे मन; अऩङ्कऩ्–मन्मथ; अटर्न्तु वन्तु–अति समीप आकर;

नॆञ्चु अऴऩ्ऱु चिन्तुम्–मन को तप्त करते हुए जो शर बरसाये उन; अम्पु ऍऩ्ऩुम् विटम्–शररूपी विष से; कुटैन्त–विद्ध; मॆय् उळ् निऩ्ऱु–शरीर के अन्दर रहकर; वॆन्तिटातु–बिना जले; ऍऴुन्तु–निकलकर; वॆम् कटम् तुतैन्त–गरम मद जल प्लावित; कार् याऩै अऩ्ऩ–काले गज के समान; काळै–उन तरुण ऋषभ की; काल् अटैन्तु–शरण में जाकर; उटऩ् तॊटर्न्तु पोऩ आवि–उनके पीछे जो गया वह मेरा प्राण; वन्तवाऱु–लौट आया कैसा । ७६३

मेरे मन ! यह क्या आश्चर्य है ! मनोज ने पास आकर मुझ पर शर मारा। उससे मेरा मन मुरझाने लगा। वह शररूपी विष मेरे शरीर को भेदकर अन्दर गया और उसको जलाने लगा। तब ये प्राण अन्दर रहकर नहीं जले पर काले मत्त गज के समान जो जा रहे थे उन पुरुषऋषभ की शरण में गये। फिर वे कब लौट आये ? कैसे आ गये ? (स्वयं उनको आश्चर्य है कि वे जीवित हैं। व्यथा इतनी भारी है।) । ७९३

विण्णुळॆऴॅ ऴुन्दमेह मार्बिऩ्लिऩ् मिऩ्ऩॊडिम्
मण्णुळॆयि ऴिन्ददॆऩ्ऩ वन्दुपोऩ मैन्दऩार्
ऑण्णुळॆयि रुन्दपोदुम् यावरॆन्ऱु तेर्हिलेऩ्
कण्णुळॆयि रुन्दपोदु मॆऩ्गोल्काण्कि लादवे 794

विण् उळ्ळे ऍऴुन्त मेकम्–गगन में उठा मेघ; मार्पिल् नूलिऩ् मिऩ्ऩॊटु–वक्ष में उपवीत रूपी बिजली के साथ; इ मण् उळ्ळे इऴिन्ततु–इस पृथ्वी में उतर आया हो; ऍऩ्ऩ–ऐसा; वन्तु पोऩ–आकर जो गये; मैन्तऩार्–राजकुमार; ऍण् उळ्ळे इरुन्त पोतुम्–विचार में रहने पर भी; यावर् ऍऩ्ऱु तेर्किलेऩ्–कौन हैं, यह नहीं जानती; कण् उळ्ळे इरुन्त पोतुम्–आँखों के अन्दर रहने पर भी; काण् किलातवे–वे उन्हें नहीं देखतीं; ऍऩ् कॊल्–यह क्या है । ७६४

आकाश का श्यामल मेघ बिजली के साथ भूमि पर उतर आया ऐसा वे मेघश्याम वक्ष पर उपवीत के साथ मेरे सामने आये पर झट अदृश्य हो गये। तो भी वे हमेशा मेरे ध्यान में ही रहते हैं। पर वे वीर राजकुमार कौन हैं यह मैं जान नहीं पाती। आँखों के अन्दर ही हैं पर आँखें देख नहीं पातीं। कितनी विचित्र और वेदना देनेवाली दशा है ! । ७९४

❀ पॆय्कडऱ्पि ऱन्दयऱ्पॆ ऱऱ्कॊणाम रुन्दुपॆऱ्
ऱैयपॊऱ्क लत्तॊडङ्गै विरुट्टिरुन्द वादर्पोल्
मॊय्किडक्कु मण्णऱॊण्मु यङ्गिडादु मुऩ्ऩमे
कैकडक्क विट्टिरुन्दु कट्टुरैप्प दॆऩ्कॊलो 795

पॆय् कटल् पिऱन्तु–(सब समृद्धि-द्रव्य) देनेवाले सागर में जन्म ले; अयल् पॆऱ्ऱकु–अन्यत्र प्राप्ति में; ऒण्णा–अगम; मरुन्तु पॆऱ्ऱु–देवामृत को पाकर भी; ऐय पॊऩ्

कलत्तॊट्टु–सुन्दर स्वर्णघट के साथ; अम् कै विट्टु इरुन्त–हाथ से छोड़कर जो रहे; आतर् पोल्–उन मूर्खों के समान; मुन्नमे–पहले तभी; अण्णल्–पुरुषोत्तम के; मॊय् किटक्कुम् तोळ्–बल का आश्रय, भुजाओं से; मुयङ्किटातु–न लिपटकर; कै कटक्क विट्टु–हाथ से (मौका) जाने देकर; इरुन्तु–चुप रहकर; कट्टुरैप्पतु ऎन्–अब बातें बनाने से क्या (लाभ) है। ७६५

मेरी स्थिति उस मूर्ख के समान है जिसके हाथ में सभी द्रव्य देने में समर्थ क्षीरसागर से निकला, और अन्यत्र दुर्लभ, अमृत लगा था, पर जिसने उसको स्वर्णघट के साथ खो दिया है! जब वे दृष्टिगोचर हुए तभी उनके बलिष्ठ भुजाओं से लिपट जाना था। तब मूर्ख मैंने मौका हाथ से निकलने दिया। बैठी रह गयी। अब बातें बना रही हूँ। क्या लाभ है ?। ७९५

ऎन्ऱुकॊण्डु णैन्दुनैन्दि ’रङ्गिविम्मि विम्मिये
पॊन्ऱिणिन्द कॊङ्गैमङ्गै यिडरिन्मूऴ्हु पोऴ्दिन्वायक्
कुन्ऱमन्न चिलैमुऱिन्त कॊऴ्हैकॊण्डु कुऴिर्मनत्
तॊन्ऱुमुण्कण् मदिमुहत्तॊ रुत्तिशॆय्द दुरैशॆय्वाम् 796

ऎन्ऱु–कहती हुई; कॊण्टु–(श्रीराम का) चिन्तन करके; उळ् नैन्तु नैन्तु–चित्त गल गल कर; इरङ्कि–रोकर; विम्मि विम्मि–सिसक-सिसककर; पॊन् तिणिन्त कॊङ्कै–स्वर्णरंग व्याप्त स्तनोंवाली; मङ्कै–देवी; इटरिल् मूऴ्कु पोऴ्तिन् वाय–दुख में मग्न रहते समय; कुन्ऱम् अन्न चिलै–पर्वताकार धनुष के; मुऱिन्त कॊऴ्कै कॊण्टु–टूटने का समाचार लेकर; कुऴिर् मनत्तु ऒन्ऱुम्–(सीताजी के प्रति) आर्द्र मनवाली; उण् कण्–काजल-युक्त आँखोंवाली; मति मुकत्तु–चन्द्र-सम वदनवाली; ऒरुत्ति–एक सखी (का); चॆय्ततु–कृत्य; उरै चॆय्वाम्–कहेंगे। ७६६

इस तरह विक्षिप्त सी बातें करती हुयी सीता देवी कुढ़ रही थीं, घुल रही थीं। रोती सिसकती रहीं। उनके वक्षस्थल में और स्तनों पर स्वर्ण-रंग फैला हुआ था। (तमिऴ साहित्य में इस रंग को 'तेमल्' कहते हैं जो सुन्दरियों के शरीरों के कुछ अंगों पर विशेषकर वक्ष पर यौवन की अवस्था में फैलता है और सौन्दर्य में चार चाँद लगा देता है।) वे जब इस तरह दुखसागर में डूब रही थीं तब काजलयुक्त आँखोंवाली और चन्द्रसम वदनवाली (उनकी) एक प्रिय सखी धनुर्भंग का समाचार ले आयी। उसकी बात अब करेंगे। ७९६

❀ वडङ्गळुङ् गुऴैहळुम् वान्न विल्लिडत्
तॊडर्न्दुपूङ् गुऴल्हळुन् दुहिलुञ् जोरतर
नुडङ्गिय मिन्नॆन्न नॊय्दि नॆय्दिन्नाळ्
नॆडुन्दडङ् गिडन्दकण् णील मालये 797

तटम् किटन्त–विस्तारयुक्त; नॆट्टु कण्–आयत आँखोंवाली; नीलमालै–

नीलमाला नाम की; वटङ्कळुम्–रत्नहार व; कुळैकळुम्–कुण्डलों के; तॉटर्न्तु–लगातार; वान विल् इट–इन्द्रधनु के समान रंगीन प्रकाश बिखेरते; पू कुऴल्कळम्–पुष्पालंकृत केशजाल के; तुकिलुम्–और वस्त्र के; चोर् तर–खुलकर खिसकते; नुटङ्किय मिऩ् ॲऩ्ऩ–लचकनेवाली बिजली के समान; नॉय्तिऩ्–सत्वर; ॲयतिऩ्ऩाळ–आ पहुँची । ७६७

वह विशाल और आयत आँखोंवाली, नीलमाला नाम की सखी इस तरह दौड़ी आयी कि उसके रत्नहार, कुण्डल आदि आभरण हिलते थे और उनके रंगीन प्रकाश भूमि पर छिटककर इन्द्रधनुष सा बना रहे थे। उसका पुष्पालंकृत केश खुलकर बिखर गया। वस्त्र खिसकने लगा। वह ससंभ्रम आ पहुँची । ७९७

※ वन्दडि वणङ्गिलळ् वऴङ्गु मोदयळ्
अन्दमि लुवहय ळाडिप् पाडिऩ्ऩळ्
शिन्ऩ्ऩदयुण् महिऴ्च्चियुस् पुहुन्द शॆय्दियुम्
सुन्दरि शॊल्लॆऩ्ऩत् तॊऴुदु शॊल्लुवाळ् 798

वन्तु–आकर; अटि वणङ्किलळ्–चरणों पर नहीं झुकी; वऴङ्कुम् ओतैयळ्–शोर मचानेवाली; अन्तम् इल् उवकैयळ्–असीम आनन्दवाली; आटि पाटिऩ्ऩळ्–नाची, गाई; चुन्तरि–सुन्दरी; चिन्तै उळ् मकिऴ्च्चियुम्–मन का आनन्द; पुकुन्त चॆय्तियुम्–वह देनेवाली बात; चॊल् ॲऩ्ऩ–कहो, पूछने पर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; चॊल्लुवाळ्–बोलने लगी । ७६८

आकर उसने नियमानुसार नमस्कार नहीं किया। हल्ला मचाती है; असीम आनन्द के साथ गाती नाचती है। यह देख सीताजी ने उसको रोका और पूछा कि सुन्दरी ! तुम्हारे मन का आनन्द और उस आनन्द का कारण क्या है ? बताओ। तब वह देवी को नमस्कार करके कहने लगी । ७९८

※ कयरद तुरहमाक् कडलन् कल्वियन्
तयरद नॆन्नुम्बॆयर्त् तनिच्चॆ ऩेमियान्
पुयल्पॊऴि तडक्कयान् पुदल्वन् पूङ्गणै
मयऱ्रु मदनऱ्कुम् वडिवु मेन्मयान् 799

कयम् रतम् तुरकम्–गज, रथ, तुरग; मा कटलन्–बड़ा (सेना-) सागरवाले; कल्वियन्–विद्यापूर्ण; पुयल् पॊऴि तट कैयान्–मेघ के समान दान देनेवाले विशाल हाथों के; तयरतन् ॲन्नुम् पॆयर्–दशरथ नामधारी; तनि चॆल् नेमियान्–अकेला आज्ञाचक्र चलानेवाले; पुतल्वन्–(राजा के) पु ; पू कणै–पुष्पशरों से; मयल् तरु–काम, मोह दिलानेवाले; मतनन् कु उम्–मदन से भी बढ़कर; वटिवु मेन्मैयान्–रूपसौंदर्य में अधिक हैं । ७६६

(उत्सुकता को बढ़ाती रीति से उसने कहानी कहना आरम्भ किया)

गज, रथ, तुरंगादि बड़ी सेना के सागर के पति, विद्या सम्पन्न, और विश्रुत मेघ सम दानी, दशरथ नाम के जो एकछत्र चक्रवर्ती हैं, उनके पुत्र, पुष्पशरों द्वारा लोगों को काममोहित करनेवाले मन्मथ से भी बढ़कर रूप में, सुन्दर; । ७९९

❀ मरामर मिवैयॆऩ्ऩ वळर्न्द तोळिऩ्ऩाऩ्
अरावणै यमलऩ्ऩॆऩ् ऱयिर्क्कु माऱ्ऱलाऩ्
इरामऩ्ऩॆऩ् बदुपॆय रिळैय कोवॊडुम्
परावरु मुऩियॊडुम् पदिवऩ् दॆय्दिऩाऩ् 800

मरामरम् इवै–ये सालवृक्ष हैं; ऎऩ्ऩ–ऐसा कहने योग्य; वळर्न्त–वर्धित; तोळिऩ्ऩाऩ्–भुजावाले; अरा अणै अमलऩ् ऎऩ्ऱु–शेषशायी विमल देव, समझ; अयिर्क्कुम्–संशय करने योग्य; आऱ्ऱलाऩ्–शक्ति सम्पन्न; इळैय कोवॊटुम्–अपने लघु भाई युवराज के साथ; परावु वरुम् मुऩियॊटुम्–और बहु प्रशंसित मुनि के साथ; पति वन्तु ऎय्तिऩाऩ्–हमारे नगर में आ पहुँचे हैं; इरामऩ् ऎऩ्पतु पॆयर्–'श्रीराम' नाम है । ८००

सालवृक्ष के समान दीर्घ और बलिष्ठ भुजाओंवाले, शेषशायी भगवान विष्णु के समान शक्ति सम्पन्न, एक राजकुमार अपने छोटे भ्राता युवराज और बहुविश्रुत आदरणीय विश्वामित्र के साथ हमारे नगर में आये हैं। (सुना ?) उनका नाम श्रीराम है । ८००

❀ पूणियऩ् मॊय्म्बिऩऩ् पुऩिद ऩॆय्दविल्, काणिय वन्दऩ ऩॆऩ्ऩक् कावलऩ्
आणयि ऩडैन्दविल् लदऩै याण्डहै, नाणिऩि देऱ्ऱिऩ नडुङ्गिऱ् ऱुम्बरे 801

पूण् इयल् मॊय्म्पिऩऩ्–बाहुवलय सहित भुजावाले वे; पुऩितऩ् ऎय्त विल्–पुनीत रुद्रदेव से व्यवहृत उस धनुष को; काणिय वन्तऩऩ्–देखने आये; ऎऩ्ऩ–यह (विश्वामित्र के) कहने पर; कावलऩ् आणैयिऩ्–हमारे महाराज की आज्ञा से; अटैन्त विल् अतऩै–सभा में आये धनु, (उस) पर; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ ने; इऩितु–सुखपूर्वक; नाण् एऱ्ऱिऩऩ्–प्रत्यंचा चढ़ायी; उम्परे–देवलोक भी; नटुङ्किऱ्ऱु–काँपने लगा । ८०१

विश्वामित्र मुनि भी उनके साथ आये हैं। उन्होंने कहा— बाहुवलयधारी ये पुनीत ईश्वर रुद्र के उपयोग में रहे इस धनुष को आजमाने आये हैं। यह सुनकर हमारे महाराज जनक ने उस धनुष को सभा में ले आने की आज्ञा दी। धनुष आया। तब हमारे राजकुमार ने बड़े ही सुख से धनु की डोरी चढ़ा दिया। तब देखो! सारा देवलोक ही थर्रा गया । ८०१

❀ मात्तिरै यळविऱ्ऱाण् मडुत्तु मुऩ्बयिल्
शूत्तिर मिदुवॆऩ्ऩत् तोळिऩ् वाङ्गिऩाऩ्

एत्तिऩ रिमैयव रिऴिऩ्द पूमऴै
वेत्तवै नडुक्कुऱ मुऱिऩ्दु वीऴ्ऩ्ददे 802

मात्तिरै अळविल्–एक मात्रा के समय भर में; ताळ् मट्टुत्तु–पैर के नीचे (एक सिरा) दबाकर; मुऩ् पयिल्–पूर्व अभ्यस्त; चूत्तिरम् इतु अंत–साधन यह है, यह समझने देते हुए; तोळिऩ् वाङ्किऩाऩ्–(उन्होंने) भुज-बल से झुकाया; वेऩ्तु अवै–राजा सभा; नटुक्कु उऱ–काँप उठे, ऐसा; मुऱिऩ्तु वीऴ्ऩ्ततु–टूटकर गिरा; इमैयवर् एत्तिऩर्–देवों ने स्तुति की; पू मऴै इऴिऩ्त–पुष्पवर्षा गिरी। ८०२

एक ही मात्रा (क्षण) के समय में उन्होंने धनु के एक सिरे को पैर के नीचे दबा लिया और उस धनुष को इस प्रकार झुकाया कि देखनेवाले यही समझें कि यह धनु तो इन्हीं के उपयोग में पहले से रहा मालूम पड़ता है। तभी वह सभा में रहे राजाओं को कंपाते हुए टूटकर गिर गया। देवता लोग उनकी स्तुति करते हुए फूल बरसाये। ८०२

❀ कोमुऩि युडऩ्वरु कॉण्ड लॅऩ्ऱपिऩ्, तामरैक् कण्णिऩा ऩॅऩ्ऱ तऩ्मयाल्
आमव ऩेकॉलॅऩ् ऱैय नीङ्गिऩाळ्, वाममे कलैयिऱ वळर्ऩ्द दल्हुले 803

को मुऩियुटऩ् वरु–ऋषिराज के साथ आये; कॉण्टल ॲऩ्ऱ पिऩ्–मेघश्याम, यह कहने के बाद; तामरै कण्णिऩाऩ्–पुण्डरीकाक्ष; ॲऩ्ऱ तऩ्मैयाल्–यह भी कहने के कारण से; अवऩे आम् ॲऩ्ऱु–हाँ वही हैं, समझ; एयम् नीङ्किऩाळ्–संशय छोड़ दिया (सीताजी ने निश्चय कर लिया); अल्कुल–कटि प्रदेश; वामम् मेकलै इऱ–सुन्दर मेखला को तोड़ते हुए; वळर्ऩ्ततु–बढ़ गया। ८०३

(सीताजी ने सखी की बात सुनी।) 'ऋषिराज के संग आये; मेघ के समान श्यामल थे; और नीरजाक्ष थे', इस विवरण से वे समझ गयीं कि वे ही होंगे जिन्होंने मेरे मन में इतनी बड़ी आँधी मचा दी है। उनको अब कोई संशय नहीं रह गया। तब आनन्द से उनका शरीर बढ़ गया। कटि भाग सहसा इतना बढ़ा कि मेखला ही टूट गयी। ८०३

इल्लये ऩुशुप्पॅऩ्बा रुण्डुण् डॅऩ्ऩवुम्
मॅल्लियऩ् मुलैहळुम् विम्म विम्मुवाळ्
शॉल्लिय कुऱियिऩत् तोऩ्ऱ लेयवऩ्
अल्लऩे लिऱप्पऩॅऩ् ऱहत्तु ळुऩ्ऩिऩाळ् 804

नुचुप्पु–कमर; इल्लैये ॲऩ्पार्–है ही नहीं, कहते थे (जो) वे; उण्टु उण्टु–है, है; ॲऩ्ऩवुम्–कहने लगें, ऐसा (कमर बढ़ी); मॅल् इयल् मुलैकळुम्–मृदु प्रकृति के स्तन भी; विम्म–फूल उठे; विम्मुवाळ्–इस तरह आनन्द-भरित होकर; चॉल्लिय कुऱियिऩ्–इसके कहे लक्षणों से; अ तोऩ्ऱले–वे ही राजकुमार हैं; अवऩ् अल्लऩेल्–वे नहीं (साबित) हुये तो; इऱप्पॅऩ् ॲऩ्ऱु–मर जाऊँगी, यह; अकत्तुळ् उऩ्ऩिऩाळ्–मन में (सीताजी ने) सोचा। ८०४

सीताजी की कमर भी बढ़ गयी। पहले जो स्त्रियाँ संदेह करती

थीं कि इनके कटि नहीं है अब कहने लगीं कि इनके कटि है। वैसे ही सीताजी के मृदु प्रकृति के स्तन भी फूल उठे। देवी भी आनन्द से भर गयीं। तब उन्होंने सोचा कि इसके बताये लक्षणों से यही लगता है कि धनुर्भंग करनेवाले वे ही राजकुमार हैं जिनसे विवाह की कामना कर रही हूँ। अगर पीछे ऐसा कुछ मालूम हो गया कि वे नहीं हैं, तो मैं मर जाऊँगी। ८०४

❀ आशया लयर्बव ळऩ्ऩ ळायिऩळ्
पाशडैक् कमलत्तोऩ् पटैत्त विल्लिऱुम्
ओशयिऱ् पॅरियदो रुवहै यॅय्दियक्
कोशिहऱ् कॊरुमॊऴि शऩकऩ् कूऱुवाऩ् 805

आचैयाल् अयर्पवळ्–कामना से व्यथित वह; अऩ्ऩळ् आयिऩळ्–वैसी बनीं; चऩकऩ्–जनक ने; पचुमै अटै कमलत्तोऩ्–हरे पत्तोंवाले कमल के फूल पर आसीन (ब्रह्मा) से; पटैत्त–रचित; विल् इऱुम् ओचैयिऩ्–धनु के भंग से उठी ध्वनि से भी; पॅरियतु ओर् उवकै–बड़ा एक सन्तोष; ॲय्ति–प्राप्त कर; अ कोचिकऱ्कु–उन कौशिक से; ऑरु मॊऴि–एक वार्ता; कूऱुवाऩ्–कही। ८०५

इधर प्रेम-प्राप्ति की आतुरता से सीताजी इस तरह व्यथित हो रही थीं। तब उधर जनक ने, जिनका आनन्द हरे पत्तोंवाले कमल के फूल पर आसीन ब्रह्मा से रचित रुद्र के धनु के टूटते वक्त उठे शब्द से भी बड़ा था, महर्षि कौशिक से एक वार्ता कही। ८०५

❀ उरैशॅयॅम् बॅरुमवुऩ् पुदल्वन् वेळ्विताऩ्
विरैविऩिऩ् रीरुपहऩ् मुडित्तल् वेट्कयो
मुरशॅऱिन् ददिर्कऴल् मुऴङ्गु ताऩैयव्
वरशयु मिव्वऴि यऴैत्तल् वेट्कयो 806

ॲम् पॅरुम–मेरे वन्द्य; उऩ् पुतल्वऩ्–आपके (ज्ञान-) पुत्र यानी शिष्य के; वेळ्वि–विवाह को; विरैविऩ्–सत्वर; इऩ्ऱु ऑरु पकल्–इसी दिन में; मुटित्तल्–सम्पन्न करना; वेट्कैयो–इच्छित है; मुरचु ॲऱिन्तु–ढोल पीटकर घोषणा करके; अतिर्कऴल्–बजनेवाले पायल; मुऴङ्कु ताऩै–गरजती सेना (के सागर) के; अ अरचैयुम्–पति उन चक्रवर्ती को भी; इ वऴि अऴैत्तल्–इस स्थान को आमंत्रित करना; वेट्कैयो–इच्छित है; उरै चॅय्–कृपा कर बतलाइये। ८०६

मेरे वन्दनीय महाराज ! आपके (शिष्य) पुत्र का विवाह आज ही हो ? या विस्तृत रीति से ढिंढोरा पिटवाकर, वीरपायलधारी, सघोष सेना के पति चक्रवर्ती दशरथ को भी आमंत्रित करूँ, तब विवाह हो ? आप क्या चाहते हैं ? कृपाकर बताइये। (गुरु-शिष्य के नाते शिष्य को पुत्र, ज्ञान-पुत्र और गुरु को ज्ञान-पिता कहने की प्रथा है। इसलिए जनकजी विश्वामित्र से श्रीराम के सम्बन्ध में, 'आपके पुत्र……' कहते हैं।) । ८०६

❀ मल्वला ऩव्वुरै पहर मादवऩ्, ऑल्लयि लवनुम्वऩ् दुऱुद ऩऩ्ऱॆऩ
ॲल्लयि लुवहैयि ऩिशैन्द वाऱलाम्, शॊल्लुहॆऩ्ऱ रोलयुन् दूदुम् पोक्किऩाऩ् 807

मल् वल्लाऩ्–मल्लयुद्ध-चतुर जनक (के); अ उरै पकर–वह वचन कहने पर; म्मा तवऩ्–महा तपस्वी; ऑल्लैयिल्–अतिशीघ्र; अवऩुम्–उनका भी; वऩ्तु उऱुतल्–आ पहुँचना; नऩ्ऱु–अच्छा होगा; ॲऩ्–बोले, तब; ॲल्लै इल् उवकैयिऩ्–अपार मोद के साथ; इचैन्त आऱु ॲल्लाम्–यहाँ घटी हुई सभी बातें; चॊल्लुक–जाकर निवेदन करो; ॲऩ्ऱु–कहकर; तूतुम्–दूतों को भी; ओलैयुम्–विवाह-निमन्त्रणपत्र भी; पोक्कित्ताऩ्–प्रेषित किया। ८०७

मल्लवीर जनक ने यह प्रश्न किया तो महातपस्वी ने उत्तर दिया कि दशरथ भी शीघ्र आ जायँ, यही श्रेष्ठ है। महाराज जनक को भी वह बात अपार आनन्दवर्धक रही। उन्होंने दूतों को बुलाकर विवाह-निमंत्रणपत्र और 'वहाँ जाकर यहाँ का सारा हाल कहो'— यह संदेशा दिया और उनको अयोध्या भेजा। ८०७

13. ॲऴुच्चिप् पडलम् (प्रस्थान पटल)

❀ कडुहिय तूदरुङ् गालिऱ् कालिऱ्चॆऩ्
रिडिकुरऩ् मुरशदि रयोत्ति यॆय्दिऩाऱ्
अडियिणै तॊऴविड मिऩ्ऱि मऩ्ऩवर्
मुडियॊडु मुडिपॊरु वायिऩ् मुऩ्ऩिऩाऱ् 808

कटुकिय तूतरुम्–शीघ्रगामी दूत भी; कालिऩ्–वाहन पर; कालिऩ् चॆऩ्ऱु–वायुवेग से जाकर; इटि कुरल् मुरचु–वज्र के समान नाद करनेवाले ढोल; अतिर्–जहाँ बजते हैं; अयोत्ति ॲय्तिऩाऱ्–अयोध्या आये; मऩ्ऩवर्–अनेक राजा; अटियिणै तॊऴ–(दशरथ के) चरण-द्वय की वन्दना करने के लिए; इटम् इऩ्ऱि–स्थान न होने के कारण; मुटियॊटु मुटि पॊरु–जहाँ मुकुट से मुकुट टकराते थे उस; वायिल्–द्वार पर; मुऩ्ऩिऩाऱ्–पहुँचे। ८०८

त्वरितगामी दूत पैदल या उचित वाहन पर वायु-वेग के साथ अयोध्या में आये। वहाँ नगाड़े वज्र के से नाद के साथ बज रहे थे। दूत राजद्वार पर आये। वहाँ चक्रवर्ती से भेंट करने और उन्हें नमस्कार करने के लिए आगत राजाओं की इतनी भीड़ थी कि उनके मुकुट आपस में टकराते थे। ८०८

❀ मुहन्दऩर् तिरुवरुण् मुऱैयि ऩॆय्दिऩाऱ्
तिहऴ्न्दॊऴिऱ् कऴलिणै तॊऴुदु शॆल्वऩैप्
पुहऴ्न्दऩ ररशनिऩ् पुदल्वर् पोयपिऩ्
निहऴ्न्ददै यिदुवॆऩ नॆडिदु कूऱिऩाऱ् 809

तिरु अरुळ् मुकन्ततर्–चक्रवर्ती की कृपा के पात्र (उठानेवाले) बनकर; मुऱैयिन् अॅय्तिनार्–उचित प्रकार से (चक्रवर्ती के सामने) गये; तिकळ्न्तु ऑळिर्–बहुत शोभायमान; कळल् इणै तॉळुतु–पायलों से अलंकृत चरणद्वय पर नमस्कार करके; चॅल्वनै–ऐश्वर्यवान की; पुकळ्न्ततर्–स्तुति की; अरच–चक्रवर्ती; निन् पुतल्वर्–आपके पुत्रों के; पोयपिन्–यहाँ से जाने के बाद; निकळ्न्ततु इतु–जो हुआ वह यह है; अॅन्न–कहकर; नॅटितु कूऱिनार्–विस्तार से बयान किया। ८०९

(समाचार अन्दर गया और उन्हें अन्दर आने की अनुमति मिल गयी। उन्हें चक्रवर्ती की विशेष कृपा प्राप्त हो गयी थी।) चक्रवर्ती की कृपा के पात्र हुए वे राजसभा में बरतने योग्य शिष्टाचार के साथ राजा के सामने गये। उनके शोभायमान पायल पहने पैरों पर नमस्कार किया। उचित रीति से उनकी संस्तुति की। उन्होंने राजा के पुत्र श्रीरामचन्द्र जी संबंधी वृत्तान्त, उनके अयोध्या छोड़ने से लेकर मिथिला में आने तक का, कह सुनाया। ८०९

❀ कूऱिय तूदरुङ् कॉणर्न्द वोलैयै, ईऱिल्वण् पुहऴिऩ्ऩा यिदुव दॅऩ्ऱऩर्
वेऱॊरु पुलमहऩ् विरुम्बि वाङ्गिऩाऩ्, माऱदिर् कऴलिऩाऩ् वाशि यॅऩ्ऱऩऩ् 810

कूऱिय तूतरुम्–कहकर दूतों ने भी; कॉणर्न्त ओलैये–(अपने साथ) लाये विवाहपत्र को; ईऱु इल्–असीम; वण् पुकऴिऩाय्–समृद्ध यशस्वी; इतु अतु–यही वह (विवाह-निमन्त्रणपत्र) है; अॅऩ्ऱऩर्–कहा; वेऱु ऑरु पुलम् मकऩ्–(उसके लिए अलग) नियत दूसरे पण्डित ने; विरुम्पि–चाह के साथ; वाङ्किऩाऩ्–ले लिया; माऱु अतिर् कऴलिऩाऩ्—बारी-बारी से मुखरित होनेवाले पायलों को पहने हुए चक्रवर्ती ने; वाचि–पढ़ो; अॅऩ्ऱऩऩ्–कहा। ८१०

वह सारा वृत्तान्त विस्तार से सुनाकर दूतों ने विवाह-निमन्त्रणपत्र बढ़ाया और निवेदन किया कि यही वह पत्र है जिसे हमारे महाराजा ने सेवा में भेजा है। उस पत्र को पत्र-वाचन के लिए नियत पंडित ने अपने हाथ में लिया। बारी-बारी से मुखरित होनेवाली पायलों से अलंकृत चरणों के दशरथ ने आज्ञा दी कि 'पढ़ो'। (बारी-बारी से पायलों का क्वणित होना— राजसभा के शिष्टाचारबद्ध महाराज की उतावली का संकेत देता है जिसके कारण वे पैरों की स्थिति को बदल देते थे। पहले पद्य (८०९) में केवल पायलों की शोभा बतायी गयी है; यहाँ उसका स्वर। —यह देखने योग्य है।)। ८१०

❀ इलैमुहप् पडत्तव ऩॆऴुदिक् काट्टिय
तलैमहऩ् शिलैत्तॊऴिल् शॆवियिऱ् चार्दलुम्
निलैमुह वलयङ्ग णिमिर्न्तु नीङ्गिड
मलैयॆऩ वळर्न्दऩ वयिरत् तोळ्हळे 811

इलै मुकम् पटत्तु–ताल-पत्र-पट पर; अवऩ्–उन जनक से; अॅऴुति काट्टिय–चित्रण कर दिखाया गया; तलै मकऩ्–ज्येष्ठ पुत्र के; चिलै तॊऴिल्–धनु सम्बन्धी

कृत्य; चॆविियिल् चार्तलुम्–कानों में पड़े, त्योंही; वयिरम् तोळ्कळ्–वज्रसम कन्धे; निलै मुकम् वलयङ्कळ्–पहने हुए वलयों को; निमिर्न्तु नीङ्किट–सन्धिस्थान पर तोड़कर दूर करते हुए; मलै अॅन्न वळर्न्तनन्–पर्वत के समान वर्धित हुए। ८११

जनक ने तालपत्र को पट बनाकर महाराज दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम के धनुर्विद्या-कौशल का बड़ा ही प्रभावपूर्ण (शब्द-) चित्रण लिखा था। उसको पढ़कर (पढ़ते सुनकर) महाराज को इतना आनन्द हुआ कि उनके कंधे पर्वतों के समान फूल उठे और बाहुवलय टूट कर अलग हो गये। ८११

❀ वॆंर्रिवेन् मन्नवन् ऱक्कन् वॆळ्वियिल्
कर्ऱैवार् चडैमुडिक् कणिच्चि वानवन्
मुर्ऱवे ऴुलहयुम् वॆन्ऱ मूरिविल्
इर्ऱपे रॊलिकॊलन् ऱिडित्त दीङ्गॆन्ऱान् 812

वॆंर्रि वेल् मन्नवन्–विजयी शक्ति के चक्रवर्ती; अन्ऱु ईङ्कु इटित्ततु–उस दिन यहाँ वज्रघोष सा सुनाई दिया; तक्कन् वेळ्वियिल्–दक्ष यज्ञ में; कर्ऱै वार् चटै मुटि–पुष्ट और लम्बी जटाजूट; कणिच्चि–तप्त लौहायुधवाले (या परशुधर); वानवन्–रुद्रदेव (के); एऴ् उलकैयुम् मुर्ऱ वॆन्ऱ–(जिससे) सातों लोकों पर पूर्णरूप से विजय पाई उस; मूरि विल्–सुदृढ़ धनुष के; इर्ऱ पेर् ऑलि कॊल्–टूटने का बड़ा नाद था क्या; अॅन्ऱान्–कहा। ८१२

विजयी शक्ति (बर्छी) के धारण करनेवाले दशरथ ने आनन्दातिरेक से उद्गार निकाली— ओफ़! उस दिन जो एक अत्युच्च ध्वनि सुनाई दी क्या वह इसी धनु के भंजन की ध्वनि थी? वह धनुष साधारण धनुष नहीं था। इसी से तो तप्तलौहायुध (या परशु) के धारण करनेवाले जटाधर, रुद्रमूर्ति ने दक्ष-यज्ञ के अवसर पर सातों लोकों पर विजय पायी थी। वह तो बड़ा ही बलवान धनुष था! । ८१२

❀ अॅन्ऱुरैत् तॆदिरॆदि रिडैवि डादुनेर्, तुन्ऱिय कनैकऴऱ् ऱूदर् कॊळ्हॆनाप्
पॊन्ऱिणि कलन्गळुन् दूशुम् पोक्किनान्, कुन्ऱॆन वुयरिय कुववुत् तोळिनान् 813

कुन्ऱु अॅन्न उयरिय—पर्वत-समान उन्नत; कुववु तोळिनान्–पुष्ट कन्धोंवाले (दशरथ) ने; अॅन्ऱु उरैत्तु–ऐसा कहकर; पॊन् तिणि कलन्कळुम्–स्वर्णरचित आभरण; तूचम्–और (जरीदार) वस्त्र; अॅतिर् अॅतिर्–एक के पहले एक; इटै विटातु–निरन्तर; नेर् तुन्ऱिय–अपने सामने आ जुटे; कऩै कऴल् तूतर्–क्वणनशील पायलधारी दूत; कॊळ्क–ले लें; अॅना–कहकर; पोक्किनान्–दिलाया। ८१३

दशरथ के कंधे जो पहले बढ़े थे अब और भी बढ़े। उन्होंने आज्ञा दी कि इन्हें देने के लिए पुरस्कार लाओ। स्वर्ण-रचित आभरण और जरीदार वस्त्र एक के बाद एक नहीं, एक के पहले एक (यानी इतनी तेजी से) आकर एकत्र हुए। राजा ने कहा कि दूत आकर इन्हें ले लें।

दूत बारी-बारी से आये तब उनकी पायलें बज उठती थीं। उन्होंने वह सब ग्रहण किया। ८१३

❀ वाऩवऩ् कुलत्तॅमर् वरत्ति ऩाल्वरुम्
वेऩिल्वे ळिरुन्दवम् मिदिलै नोक्किनम्
शेऩयु मरशरुञ् जॅल्ह मुऩ्दॅऩा
आऩमे लणिमुर शऱैहॅऩ् ऱेविऩाऩ् 814

वाऩवऩ् कुलत्तु–सूर्यकुल के; ऍमर् वरत्तिऩाल्–मेरे पूर्वजों के पुण्य से; वरुम्–उत्पन्न; वेऩिल् वेळ्–बसन्तपति (मन्मथ) सम श्रीराम; इरुन्त–जहाँ रहते हैं; अ मितिलै नोक्कि–उस मिथिला को उद्देश्य करके; नम् चेऩैयुम्–हमारी सेना और; अरचरुम्–राजा लोग; मुऩ्तु चॅल्क ऍऩा–आगे जायँ, यह; आऩैमेल्–हाथी पर; अणि मुरचु–आलंकारिक ढोल; अऱैक–पिटवाओ; ऍऩ्ऱु–यह; एविऩाऩ्–प्रेरित किया (आज्ञा दी)। ८१४

तब राजा ने यह आज्ञा दी कि श्रीराम जहाँ हैं, उस मिथिला में हमारी सेना, सामंत, राजा आदि जायँ। श्रीराम हमारे सूर्यकुल के पूर्व पुरुषों के पुण्य के बल से मेरे पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए हैं। कूच की मुनादी पिटवा दो। ढिंढोरा बहुत सुन्दर और सजा हुआ हो और वह हाथी पर रखकर पीटा जाय। ८१४

वाम्बरि वरूदिऩिक् कडलिऩ् वळ्ळुवऩ्
तेम्बॉऴि तुऴाय्मुडिच् चॅङ्गण् मालवऩ्
आम्बरि शुलहॅला मळन्दु कॉण्डनाळ्
शाम्बुवऩ् ऱिरिन्दॅनत् तिरिन्दु शाऱ्ऱिऩाऩ् 815

तेम् पॉऴि तुऴाय् मुटि–शहद स्रवित करनेवाली तुलसीजी की माला से अलंकृत मुकुटवाले; चॅम् कण् माल् अवऩ्–अरुणाक्ष श्रीविष्णु भगवान ने; आम् परिचु–योग्य प्रकार से; उलकु ऍलाम् अळन्तु कॉण्ट नाळ्–(जिस दिन) सारे लोकों को अपने चरणों से नापा था, उस दिन; चाम्पुवऩ् तिरिन्ततु ऍऩ्ऩ–जाम्बवान (जिस प्रकार) घूमा उस प्रकार; वळ्ळुवऩ्–ढिंढोरा पीटनेवाला; वाम्परि वरूतिऩि कटलिऩ्–दुलकी वाले (त्वरितगामी) अश्वों की सेना के सागर में; तिरिन्तु–घूम-घूमकर; चाऱ्ऱिऩाऩ्–घोषणा कराई। ८१५

वळ्ळुवन ने (ढिंढोरा पीटनेवाली जाति का आदमी) जिस सेना में अतिवेगगामी अश्व थे उस सागर सम विपुल सेना के बीच चारों ओर घूमकर राजाज्ञा का ढिंढोरा पिटवाया। उसको देखकर जाम्बवान की याद आती थी जिन्होंने उस अवसर पर घूम-घूम कर ढिंढोरा पिटवाया था जब तुलसीदलों की माला से अलंकृत श्रीविष्णु ने त्रिविक्रमावतार लेकर सारे लोकों को अपने पैरों से नाप लिया था। ८१५

❀ शाऱ्ऱिय मुरशॉलि शॅवियिऱ् चारुमुऩ्
कोऱ्ऱॉडि महळिरुङ् गोल मैन्दरुम्
वेऱ्ऱरु कुमररुम् वॅऩ्ऱि वेन्दरुम्
काऱ्ऱॅरि कडलॅऩक् कळिप्पि ऩॊङ्गिऩार् 816

चाऱ्ऱिय मुरचु ऑलि–पिटे ढिढोरे की ध्वनि; चॅवियिल् चारुम् मुऩ्–कानों में पड़ने के पूर्व ही; कोल् तॊटि मकळिरुम्–स्थूल कंकणधारिणी स्त्रियाँ और; कोलम् मैन्तरुम्–सुन्दर पुरुष; वेल् तरु कुमररुम्–भाला चलाने में चतुर जवान; वॅऩ्ऱि वेन्तरुम्–विजयी राजा (सामन्त) लोग; काऱ्ऱु ऍरि कटल् ऍऩ–पवनोद्वेलित सागर के समान; कळिप्पिऩ् ओङ्किऩार्–सन्तोष में बढ़े। ८१६

ज्योंही घोषणा सुनाई दी त्योंही मोटी-मोटी चूड़ियाँ पहने हुई स्त्रियाँ, सुन्दर पुरुष, भाला चलाने में चतुर पट्ठे, विजयी सामंत, राजा, सब आनन्द में पवनोद्वेलित सागर के समान उमगे। ८१६

विडैपॊरु नडैयिऩाऩ् शेऩै वॅळ्ळमोऱ्, इडैयिलै युलहिऩि लॅऩ्ऩ वीण्डियक्
कडैयुह मुडिविऩि लॅवैयुङ् काऱ्पडप्, पुडैपॅयर् कडलॅऩ वॅळुन्दु पोयदे 817

विटै पॊरु नटैयिऩाऩ्–ऋषभ समान चालवाले (दशरथ) की; चेऩै वॅळ्ळम्–सेना का सागर; उलकिऩिल् ओर् इटै–संसार में कोई स्थान; इलै ऍऩ्ऩ–नहीं है, यह स्थिति बनाते हुए; ईण्टि–एकत्र होकर; कटै युकम् अ मुटिविऩिल्–कल्पांत के उस अन्तिम समय में; ऍवैयुम्–(चराचर) सभी को; काल् पट–अपने (पैर के) नीचे दबाते हुए; पुटै पॅयर् कटल् ऍऩ–उमड़कर आनेवाले बहिस्सागर के समान; ऍळुन्तु पोयतु–उठकर चला। ८१७

ऋषभ समान चालवाले दशरथ की विश्वव्यापी सेना उठ चली। सेना क्या थी वह उस युगांतकालीन बाह्य-सागर के समान थी जो अपने अन्दर चर-अचर सभी को समा लेते हुए प्रचंडरूप से उमड़ आता है। ८१७

शिल्लिड मुलहॅऩच् चॅऱिन्द तेर्हडाम्
पुल्लिडु शुडरॅऩप् पॊलिन्द वेन्दराल्
ऍल्लिडु कदिर्मणि यॅऱिक्कु मोडयाल्
विल्लिडु मुहिलॅऩप् पॊळिन्द वेळमे 818

उलकु चिल् इटम्–संसार छोटा स्थान है; ऍऩ–यह स्थिति बनाते हुए; चॅऱिन्त तेर्कळ् ताम्–जुटे हुए रथ; वेन्तराल्–राजाओं के कारण; पुल्लिटु चुटर् ऍऩ–सूर्य सहित रहने से; पॊलिन्त–भासमान रहे; वेळम्–हाथी; ऍल् इटु कतिर् मणि–ज्वलन्त सूर्य-सम रत्नों के; ऍऱिक्कुम् ओटैयाल्–प्रकाशित मुख-पट्टों के कारण; विल् टुम् मुकिल् ऍऩ पॊलिन्त–इन्द्रधनुष सहित मेघ के समान शोभित रहे। ८१८

रथ इतने अधिक जुट आये कि संसार में स्थान का अभाव सा लगता था। उन पर विराजमान राजे इतने दीप्तिमान थे कि वे सूर्य के समान लगे और उनके रथ सूर्य सहित सूर्य के रथों के समान लगे। हाथियों के

मुखपट्टों में विविध उज्ज्वल रत्न थे। वे इन्द्रधनुष के समान लगे और ये गज इन्द्रधनुष सहित मेघों के समान। ८१८

काल्विरिऩ् दॉळिऱ्हुडै कण्क्कि लोदिमम्
पाल्शिऱै विरित्तुविण् पऱप्प पोऩ्ऱऩ
मेल्विरिऩ् दॅऴुहॉडिप् पडलम् विण्णॅलाम्
तोलुरिन् दुहुवन पोऩ्ऱु तोऩ्ऱुमे 819

काल् विरिऩ्तु ऑळिर् कुटै–डण्डे के ऊपर फैलकर प्रभा देते रहनेवाले छत्र; कणक्कु इल् ओतिमम्–असंख्य हंस; पाल् चिऱै विरित्तु—दुग्ध-सम पक्ष खोलकर; विण् पऱप्प पोऩ्ऱऩ–आकाश में उड़ते से हैं; मेल् विरिऩ्तु ऍऴु–ऊपर फैलकर उठी; कॉटि पटलम्–पताकाओं का समूह; विण् ऍलाम्–सारा आकाश; तोल् उरिऩ्तु–चमड़ा उधेड़कर; उकुवऩ पोऩ्ऱु–गिरा रहा हो ऐसा; तोऩ्ऱुम्–दिखता है। ८१९

अनेक श्वेतछत्र खुले थे। वे ऐसे लगते थे मानों अनेक हंस अपने पंख फैलाते हुए आकाश में उड़ रहे हों। आकाश में अनेक पताकाएँ झलमलाती फहर रही थीं। उनको देखकर ऐसा भास हो रहा था कि सर्प-सम (नीला) आकाश श्वेत उज्ज्वल केंचुलियाँ उतारकर गिरा रहा हो। ८१९

नुडङ्गिय तुहिऱ्कॉडि नूऴैक् कैम्मलैक्, कड्गलुऴ् शेऩ्ऩयैक् कडलि दामॆऩ
इडम्बड वॆङ्गणु मॆऴुन्द वॆण्मुहिल्, तडम्बुऩल् परुहिडत् ताऴ्व पोऩ्ऱवे 820

नुटङ्किय–(हाथियों पर) फहरनेवाली; तुकिल् कॉटि–वस्त्र की बनी ध्वजाएँ; इटम् पट–विस्तृत प्रदेश में; ऍङ्कणुम् ऍऴुन्त–सर्वत्र व्याप्त हो उठे; वॆळ् मुकिल्–श्वेत मेघ; कटम् कलुऴ्–मदजल बहानेवाले; नूऴै कै मलै चेऩैयै–नासिकाछिद्र सहित रहनेवाली सूँडों के, पर्वत-सम गजों की सेना का; इतु कटल् आम् ऍऩ–यह समुद्र है, समझकर; तट पुऩल् परुकिट–अधिक जल पीने के लिए; ताऴ्व पोऩ्ऱ–नीचे उतर आते से हैं। ८२०

हाथियों पर झंडे फहर रहे थे। वे चीर के झंडे थे। उनको देखकर ऐसा भ्रम होता था कि सर्वत्र फैले श्वेत मेघ जल पीने के लिए, गजसेना को समुद्र समझकर उस पर उतर आये हों। ८२०

इऴैयिडै यिळवॆयि लॆऱिक्कु मव्वॆयिल्, तऴैयिडै निऴल्कॆडत् तवऴु मत्तऴै
मऴैयिडै यॆऴिल्कॆड मलरु मम्मऴै, कुऴैवुऱ मुऴङ्गिडुङ् गुऴाङ्गॊळ् बेरिये 821

इऴै इटै–(लोगों के) आभरणों के मध्य; इळवॆयिल् ऍऱिक्कुम्–सवेरे की धूप के समान प्रकाश छिटकता है; अ वॆयिल्–वह बालधूप; तऴै इटै निऴल् कॆट–मोर-छत्रों की छटा को कम करते हुए; तवऴुम्–धीरे-धीरे फैलती है; अ तऴै–वे मोरछत्र; मऴै इटै ऍऴिल् कॆट–मेघों की छटा को कम करती हुई; मलरुम्–फैले रहते हैं; कुऴाम् कॊळ् पेरि–समूहों में (अधिक संख्या में) रहनेवाली भेरियाँ; अ मऴै कुऴैवु उऱ–उन मेघों को अवनत करते हुए; मुऴङ्किटुम्–बज उठती हैं। ८२१

सेना में जानेवालों के आभूषण प्रातः सूर्य की मन्दधूप की तरह सुखद प्रकाश बिखेरते हैं। वह प्रकाश मोरपंखों के बने छत्रों की छटा को मन्द कर देता है। वे छत्र इन्द्रधनुष के साथ भासमान मेघों की आभा को कम करते हुए फैले रहते हैं और भेरियों का समूह उन मेघों के गर्जन को फीका करते हुये नर्दन करता है। (इसमें एकावली अलंकार है।)। ८२१

मऩ्मणिप् पुरविहण् मह्ळि रूर्वऩ, अऩ्ऩमुऩ् दियदिरै याऱु पोऩ्ऱऩ
पॊऩ्ऩणि पुणर्मुलैप् पुरिमॆऩ् कूऩ्दलार, मिऩ्ऩॆऩ मडप्पिडि मेहम् पोऩ्ऱवे 822

मकळिर् ऊर्वऩ–स्त्रियों की सवारियाँ; मऩ् मणि पुरविकळ्–घुंघरू पहने हुए अश्व; अऩ्ऩम् उऩ्तिय तिरै–हंसों को ढोती हुई हिलनेवाली तरंगों की; आऱु पोऩ्ऱऩ–नदियों के समान हैं; पॊऩ् अणि—स्वर्णाभरण-भूषित; पुणर् मुलै–सटे हुए स्तन; पुरि मॆल् कूऩ्तलार्–(और) गुँथी हुई वेणीवाली स्त्रियाँ (जो हाथियों पर सवार थीं); मिऩ् ऍऩ–बिजली के समान लगीं; मट पिटि, मेकम् पोऩ्ऱ–छोटी आयु की हथिनियाँ, मेघों के समान थीं। ८२२

अनेक स्त्रियाँ अश्वों पर आरोहण करके जा रही हैं। उनको देखकर ऐसा लगता है मानों सेनारूपी नदी की अश्वरूपी लहरों के ऊपर स्त्रीरूपी हंस थिरक रहे हों। अश्वों के पैरों में घुँघरू बँधे हैं। (वे झंकृत होकर हंसों का-सा नाद पैदा करते हैं।) और अनेक स्त्रियाँ, जो बिजलियों के समान हैं, हथिनियों पर बैठी जा रही हैं। वे हथिनियाँ विद्युतवाही मेघों के समान हैं। वे स्त्रियाँ स्वर्णालंकृता और मेढीभूषिता हैं। (स्वर्ण आभरण का भी द्योतक है; और फलनेवाले स्वर्ण-वर्ण के चर्म-रंग का भी। इसको तमिऴ में 'तेमल्' कहते हैं। यह यौवन के आकर्षण में चार चाँद लगा देता है। यह युवतियों के शरीर में, विशेषकर वक्ष-प्रदेश में फैलता है।)। ८२२

इणैयडुत् तिडैयिडै नॆरुक्क वॆऴ्ळयर्
तुणैमुलैक् कुङ्कुमच् चुवडु माडवर्
मणिवरैप् पुयङ्गळिऱ् चाऩ्दु माहिमॆल्
अणैयॆऩप् पॊलिऩ्ददक् कडलॆ्शॆ लाऱरो 823

अ कटल् चॆल् आऱु–उस सेनासागर के चलने के मार्ग में; इटै इटै–यत्रतत्र; इणै अटुत्तु—पास-पास होकर; नॆरुङ्कि–सटे हुए जाने से; एऴैयर्–कोमलांगियों के; तुणै मुलै–जोड़े के स्तनों पर लिप्त; कुङ्कुमम् चुवटुम्–कुंकुम के सूखकर गिरने का चिह्न; आटवर्–पुरुषों के; मणि वरै पुयङ्कळिल् चाऩ्तुम् आकि–सुन्दर गिरिसम भुजाओं के चन्दन के लेप के गिरने का चिह्न मिलकर; अणै ऍऩ–तोशक के समान; पॊलिऩ्ततु–दिखे। ८२३

उस सेना में स्त्रियों और पुरुषों की संख्या अत्यधिक है। वे परस्पर सटे हुये जाते हैं। तब स्त्रियों के स्तनद्वयों पर लगा हुआ कुंकुम का सूखा

लेप और पुरुषों की पर्वतोन्नत भुजाओं पर लगा चन्दन का लेप चूर्ण होकर गिर जाते हैं। उस चूर्ण का इतना भारी परिमाण है कि भूमि पर तोशक बिछे से जान पड़ते हैं। ८२३

मुत्तिऩाऩ् मुऴुनिला वॅऱिक्कु मॊय्म्मणिप्
पत्तिया लिळवॅयिल् परप्पुम् बाहिऩुम्
तित्तिया निऩ्ऱशॊऱ् चिवन्द वाय्च्चियर्
उत्तरा शङ्गमिट् टॊळिक्कुङ् गूऱ्ऱमे 824

पाकिऩुम्–चाशनी से बढ़कर; तित्तिया निऩ्ऱ चॊल्–मधुर बोलीवाली; चिवन्त वाय्च्चियर्–(बिंब-सम) लाल मुखवाली स्त्रियों के; उत्तराचङ्कम् इट्टु–ओढ़नी लगाकर; ऑळिक्कुम्–छिपाये गये; कूऱ्ऱम्–मृत्यु (-रूपी स्तन); मुत्तिऩाल्–मुक्तामालाओं द्वारा; मुऴु निला ऍऱिक्कुम्–सम्पूर्ण चाँदनी-सा प्रकाश बिखेरते हैं; मॊय्मणि पत्तियाल्–संकुल रत्नराशियों द्वारा; इळवॅयिल् परप्पुम्–बालधूप फैलाते हैं। ८२४

चाशनी समान मधुर बोली बोलनेवाली, लाल अधरों की स्त्रियों ने अपनी ओढ़नी से ढँके हुए, यमसम उरोजों पर मुक्ताहार और रत्नहार पहन रखे हैं। मुक्ताहारों से चाँदनी सी द्युति और रत्नहारों से धूप की सी काँति छूटती है। (स्तन को यम कहना साहित्यिक परिपाटी है क्योंकि वे पुरुषों के मनों को अत्यधिक अधीर कर देते हैं।)। ८२४

विल्लिऩर् वाळिऩर् वॅऱित्त कुऩ्जियर्
कल्लिऩैप् पऴित्तुयर् कऩहत् तोळिऩर्
वल्लियिऩ् मरुङ्गुलार् मरुङ्गु माप्पिडि
पुल्लिय कळिऱॅऩ मैन्दर् पोयिऩार् 825

वॅऱित्त कुऩ्चियर्–सुवासपूर्ण केशवाले; कल्लिऩै पऴित्तु–पर्वत का उपहास करके; उयर्–उन्नत हुए; कऩकम् तोळिऩर्–स्वर्ण-सम कन्धोंवाले; मैन्तर्–पराक्रमी तरुण लोग; विल्लिऩर्–धनुर्हस्त; वाळिऩर्–और तलवारहस्त बनकर; मा पिटि पुल्लिय कळिऱु ऍऩ–श्रेष्ठ हथिनियों को पास लेते हुए जानेवाले हाथियों के समान; वल्लियिऩ् मरुङ्कुलार् मरुङ्कु–लता-सी कमरवालियों के पास-पास; पोयिऩार्–चले। ८२५

पुष्प-वासित केशवाले, और पर्वतनिंदक कंधोंवाले जवान वीर धनुष और तलवार से लैस होकर, हथिनियों को अपने संरक्षण में लेते चलनेवाले बड़े-बड़े हाथियों के समान, लता-सी महीन कमरवाली स्त्रियों के साथ लगे-लगे जाते हैं। ८२५

मऩ्ऱलम् पुदुमलर् मऴैयिऱ् चूऴ्न्दॅनत्
तुऩ्ऱिरुङ् कून्दलार् मुहङ्ग डोऩ्ऱलाल्

ऑऩ्ड़ल पलमदि यूरु माऩम्बोल्
शॅऩ्ड़ऩ तरळवाऩ् शिविहै योट्टमे 826

तरळम् वाऩ् चिविकै ईट्टम्–श्रेष्ठ मुक्ता शिविकाओं का जमघट; मऩ्ड़ल् अम् पुतु मलर्–सुवासित सुन्दर नवीन पुष्प; मऴैयिल् चूऴ्न्तु अॅऩ–मेघों पर छा गये, ऐसा; तुऩ्ऱु–पुष्पबहुल; इरु कून्तलार्–काले केशवाली स्त्रियों के; मुकङ्कळ् तोऩ्ड़लाल्–मुखों के दिखाई देने से; ऑऩ्ऱु अल–एक नहीं; पल मति ऊरुम्–अनेक चन्द्रारोहित; मानम् पोल्–देवयानों के समान; चॅऩ्ड़ऩ–चले । ८२६

(संभ्रांत कुल की या राजकुल की स्त्रियाँ शिविकाओं पर जा रही हैं। शिविकाओं पर परदे लगे हैं। वे कभी-कभी परदा हटाकर बाहर झाँकती हैं तब उनके मुखचन्द्र बाहर दिखाई देते हैं।) पुष्पावृत्त मेघों के समान काले केशवाली स्त्रियों के कारण शिविकायें अनेक विमानों के समान लगती हैं जिनमें पूर्णचन्द्र सवार हों। ८२६

मॉय्दिरैक् कडलॅऩ मुऴङ्गि मूक्कुडैक्
कैहळिड़ ड़िशैनिलैक् कळिड़्रै याय्वऩ
मैयलुड़् ड़िऴिमद मऴैय ड़ामयाल्
तॉय्यलैक् कडन्दिल शूऴि याऩये 827

इऴि मतम् मऴै–ढलनेवाला मदजल प्रवाह; इटै अऱामैयाल्–निरन्तर बहने से; तोय्यलै कटन्तिल–बने पंक को पार करने में अशक्य; चूऴि याऩै–मुखपट्ट से अलंकृत हाथी; मैयल् उऱ्ऱु–मदमत्त होकर; मॉय् तिरै कटल् अॅऩ–संकुलित तरंगोंवाले समुद्र के समान; मुऴङ्कि–चिंघाड़ते हुए; मूक्कु उटैय कैकळिऩ्–नाक का भी काम देनेवाली सूँडों से; तिचै निलै कळिऱ्ऱै–दिशाओं में स्थित हाथियों को (दिग्गजों को); आय्वऩ–टटोलते हैं। ८२७

गजों का मदनीर इतना बहता है कि पंक बन जाता है। मुख-पट्ट पहने हाथी उनमें फँस जाते हैं। तब वे मदमत्त होकर चिंघाड़ते हैं और अपनी सूँड़ों को बढ़ाकर दिग्गजों को ढूँढ़ते हैं। (हाथी की सूँड़ ही उसकी नाक का भी काम देती है। इसलिये कवि उसको नासिकायुक्त सूँड़वाले गज कहते हैं)। ८२७

शूरुडै निलैयॅऩत् तोय्न्तुन् दोय्हिला, वारुडै वऩमुलै महळिर् शिन्दैपोल्
तारोडुञ् जदियॊडुन् दावु मायिऩुम्, पारिडै मिदित्तिल परियिऩ् पन्दिये 828

परियिऩ् पन्ति–अश्वों की पंक्तियाँ; तारोटुम्–घंटिका भरे दामों के साथ; चतियोटुम्–और टाप के साथ; तोय्न्तुम् तोय्किला–(शरीर से) बँधकर भी (मन से) न बँधकर; वार् उटै–कंचुकी बद्ध; वऩम् मुलै मकळिर्–मनोरम उरोजोंवाली वेश्याओं के; चिन्तै पोल्–(चंचल) मन के समान; तावुम् आयिऩुम्–फाँदकर चलते हैं तो भी; चूर् उटै निलै अॅऩ–भूतों (या देवों) के समान; पार् इटै मितित्तिल–भूमि पर पैर रखनेवाले नहीं हैं। ८२८

अश्व अपनी किंकिणी-ध्वनि के साथ बहुत तेज दौड़ते हैं। उनकी गति में एक समरसता है। अश्वों का लपकना वेश्याओं के मन के समान अस्थिर है। (वेश्या शरीर से मिलकर भी मन से दूर है। वह अपना लगाव बदलती ही रहती है।) अश्वों के पैर भूमि पर लगते नहीं दीखते। इसलिए वे भूत या देव के समान लगते हैं जिनके पैर भूमि पर नहीं पड़ते। ८२८

ऊडिय मऩत्तिऩ रुऱाद नोक्किऩर्, नीडिय वुयिर्प्पिऩर् नॅरिन्द नॅऱ्ऱियर्
तोडविऴ् कोदैयुम् दुऱन्द कून्दलर्, आडव रुयिरॅऩ वरुहु पोयिऩार् 829

ऊटिय मऩत्तिऩर्–रुष्टमना कुछ स्त्रियाँ; उऱात नोक्किऩर्–सीधे पति को नहीं देखती हुई; नीटिय उयिर्प्पिऩर्–दीर्घ निःश्वास छोड़ती हुई; नॅरिन्त नॅऱ्ऱियर्–संकुचित ललाटवाली; तोटु अविऴ् कोतैयुम्–विकसित दलवाले पुष्पों की बनी मालाओं से भी; तुऱन्त कून्तलर्–विमुक्त केशवाली; आटवर् उयिर् ऍऩ–पुरुषों के प्राणों के समान; अरुकु पोयिऩार्–(उनके पास-पास) जा रही थीं। ८२९

(कुछ स्त्रियाँ अपने पतियों से मान करके रुष्ट थीं। उसी स्थिति में उनको राजाज्ञा से जानेवाले पतियों के साथ जाना पड़ा। वे कैसे जाती हैं? —इसका स्वाभाविक वर्णन है।) रुष्ट वे रमणियाँ अपने पति की ओर दृष्टि ही नहीं फिरातीं; दीर्घ निश्वास छोड़तीं; भौंहों के तनने से ललाट संकुचित हो गया था। केश पर पुष्प भी नहीं था क्योंकि वह रुष्ट होने के कारण उतार कर फेंक दिया गया था। वे पुरुषों के प्राणों के समान उनके साथ-साथ चल रही थीं। (जो हो वे पतिप्राणा थीं। इसलिए जा रही थीं।)। ८२९

माऱॅऩत् तडङ्गळैप् पॉरुदु मामरम्, ऊऱुपट् टिडविडै यॉडित्तुच् चाय्त्तुराय्
आऱॅऩ्च् चॅऩ्ऱऩ वरुवि पाय्हवुळ्, ताऱॅऩक् कऩलुहु तऱुहण् याऩये 830

अरुवि पाय् कवुळ्–नदी के समान जिनपर मदजल बहता है उन गालों के; ताऱु ऍऩ–अंकुश का नाम लेते ही; कऩल् उकु–कोपाग्नि उगलनेवाले; तऱुकण्–निर्भय; याऩै–हाथी; माऱु ऍऩ–बाधा समझकर; तटङ्कळै–टीलों को; पॉरुतु–टकराकर, ढहकर; मा मरम्–बड़े-बड़े वृक्षों को; ऊऱु पट्टिट–नाश करते हुए; इटै ऑटित्तु–बीच से तोड़कर; चाय्त्तु–समूल उखाड़कर; उराय्–उनसे रगड़कर; आऱु ऍऩ–नदी के समान; चॅऩ्ऱऩ–चले। ८३०

हाथी जा रहे हैं। उनके गण्डस्थलों पर मदजल नदी के समान बह रहा था। वे ऐसे निडर थे कि अंकुश का नाम सुनते ही आँखों से कोप के अंगारे निकालते। वे मार्ग में बाधा देनेवाले टीलों को दूर करते हुए, बड़े-बड़े वृक्षों को तोड़कर, या उखाड़कर उनसे रगड़ते हुये जा रहे थे। किनारों को ढहाता हुआ, और वृक्षों को तोड़ गिराता हुआ जाना हाथियों और प्रवाह के मध्य साधर्म्य है। अतः वे नदी के समान जाते थे। ८३०

उऴुन्दिड विडमिलै युलह मॅङ्गणुम्
अऴुन्दलि लुयिर्क्कॅलाङ् गॊऴुहॊम् बाऩवऩ्
ॲऴुन्दिल नॅऴुन्दिडैप् पडरुञ् जेऩयिऩ्
कॊऴुन्दुपोय्क् कॊडिमदिऩ् मिदिलै कूडिऱ्ऱे 831

उलकम् ॲङ्कणुम्–(अपने राज्य के) सारे प्रदेश में; उयिर्क्कु ॲलाम्–सभी जीवों के लिए; अऴुन्तल् इल्–निराधारता नाशक; कॊऴुकॊम्पु–अवलम्बतरु (आधार); आऩवऩ्–जो थे; ॲऴुन्तिलऩ्–(वे चक्रवर्ती दशरथ) अभी नहीं निकले; ॲऴुन्तु–(उनकी आज्ञा से) निकलकर; इटै पटरुम् चेऩैयिऩ्–मार्ग पर चलती रही सेना का; कॊऴुन्तु–अग्रभाग; पोय्–जाकर; कॊटि मतिल्–ध्वजाओं सहित प्राचीरों के; मितिलै कूटिऱ्ऱु–मिथिला नगर पहुँचा; उऴुन्तु इट–उड़द रखने को; इटम् इलै–स्थान नहीं। ८३१

अपने देश के सभी जीवों के लिए सहारा देनेवाले (लताओं के) अवलंबतरु के समान रहनेवाले दशरथ अभी नहीं निकले थे। क्योंकि सेना, जो उनसे पहले निकली थी, इतनी विशाल और लम्बी है कि उसका अग्रभाग मिथिला में है। और बीच में उड़द डालने की उतनी जगह भी नहीं थी। (तिल रखने को जगह नहीं– यही मसल तमिऴ में भी प्रचलित है पर तिल पितृकार्य में काम आनेवाला है। कवि विवाह के अवसर पर उसका नाम नहीं लेना चाहते। इसलिए उड़द की चर्चा की है। कवि ने अग्रभाग को "पल्लव (सेना पल्लव)" कहा है। यह प्रचलित प्रयोग है। उससे बड़ा ही गम्भीर भाव घोषित होता है।)। ८३१

कण्डवर् मऩङ्गळ्कै कोप्पक् कादलिऩ्, वण्डिमिर् कोदयर् वदऩ राशियाल्
पण्डिहळ् पण्डिहळ् परिशिऩ् चॅल्वऩ, पुण्डरी हत्तडम् पोव पोऩ्ऱवे 832

कण्टवर् मऩङ्कळ्–दर्शकों के मनों को; कातलिऩ् कैकोप्प–अनुरक्त कर अपनी ओर खींचनेवाली; वण्टु इमिर् कोतैयर्–(गाड़ियों पर बैठी) भ्रमरगुँजित केशवाली स्त्रियों की; वतऩ राचियाल्–वदनराशि के कारण; परिचिऩ् चॅल्वऩ–विशिष्टता लिए चलनेवाले; पण् तिकळ् पण्टिकळ्–आकर्षक कलाकारिता से युक्त गाड़ियाँ; पुण्टरीकम् तटम्–कमलपुष्प भरे तड़ाग; पोव पोऩ्ऱ–चलते जैसे दिखीं। ८३२

कलाकारियों सहित गाड़ियों में स्त्रियाँ जा रही थीं। उनके अत्याकर्षक वदन कमल के समान थे। उनके केशों पर भ्रमर मँडरा रहे थे। इसलिए गाड़ियों को देखने से ऐसा लगता था मानो कमलिनियाँ (कमल भरे तालाब) ही चल रही हों। ८३२

पाण्डिलिन् वैयत्तोर् पावै तऩ्ऩॊडुम्, ईण्डिय वऩ्बिऩ नेहु वाऩिडै
काण्डलु नोक्किय कडैक्क णञ्जऩम्, आण्डहैक् किऩियदो रमुद मायदे 833

पाण्टिल् इऩ् वैयत्तु—बैल-जुती एक गाड़ी में; ओर् पावै तऩ्ऩॊटुम्–चित्रप्रतिमा सी एक रमणी के साथ; ईण्टिय अऩ्पिऩऩ्–गम्भीर प्रेम लेकर; एकुवाऩ्–जो जाता

रहा उस एक तरुण ने; इटै काण्टलुम्–बीच में उस पर दृष्टि गड़ायी, तब; नोक्किय–(तरुण को) जवाब में देखनेवाली उसकी; कटै कण् अञ्चऩम्–आँखों के कोर से गलकर रसनेवाला काला अंजन; आण् तकैक्कु–पट्ठे को; इऩियतु ओर् अमुतम्–मीठा, अनुपम अमृत; आयतु–बना । ८३३

एक गाड़ी में एक सुन्दरी जा रही है। वह चित्रप्रतिमा के समान मनमोहक है। उसके साथ-साथ उसका प्रेमी भी जा रहा है। वह उसको देखता है और वह प्रेयसी भी उसकी ओर देखती है। तब उसकी आँखों के कोरों से गलकर रसनेवाला काला अंजन भी अमृत-सम लगता है। (प्रेम के जादू से विष भी अमृत हो जाता है; असुन्दर भी सुन्दर दीखता है।) । ८३३

पिळ्ळैमा नोक्कियैप् पिरिन्दु पोहिऩ्ऱाऩ्
अळ्ळऩीर् मरुदवैप् पदऩि ऩऩ्ऩमाम्
पुळ्ळुमॆऩ् ऱामरैप् पूवु नोक्किऩाऩ्
उळ्ळमुन् दाऩुऩिऩ् ऱूश लाडिऩाऩ् 834

पिळ्ळै माऩ् नोक्कियै–बालहरिण की सी दृष्टिवाली (प्रिया) को; पिरिन्तु पोकिऩ्ऱाऩ्–छोड़कर जानेवाला एक; अळ्ळल् नीर्–पंक और जल से भरी; मरुतम् वैप्पु अतऩिल्–खेतों की भूमि में; अऩ्ऩम् आम् पुळ्ळुम्–हंस पक्षियों को; मॆल् तामरै पूवुम्–कोमल कमल-पुष्पों को; नोक्किऩाऩ्–देखता है, तब; उळ्ळमुम् ताऩुम् निऩ्ऱु–अपना मन और आप रुककर; ऊचल् आटिऩाऩ्–अधीर बना । ८३४

एक प्रेमी को अपनी बालमृगनयनी प्रेमिका को छोड़कर जाना पड़ गया। मार्ग में जब वह खेतों के प्रदेश में हंस पक्षी, कोमल कमल-सुमन आदि को देखता तो (अपनी प्रेयसी के कमल-चरण और हंसगति की याद में) तड़पकर निष्क्रिय खड़ा रह जाता था। ८३४

अङ्गण् ञालत् तरशर् मिडैन्दवर्, पॊङ्गु वॆण्कुडै शामरै पोर्त्तलाल्
गङ्गै याऱु कडुत्तदु कारॆऩच्, चङ्गु पेरि मुळङ्गिय ताऩये 835

चङ्कु–शंख; पेरि–भेरियाँ; कार् ऎऩ्ऩ मुऴङ्किय–जिसमें मेघों के समान नर्दन करती थीं उस; ताऩै–(विशाल) सेना में; अम् कण्–सुन्दर, विशाल; ञालत्तु–भूमि के; अरचर् मिटैन्तु–राजा लोग आकर एकत्र हुए, इसलिए; अवर्–उनके; पॊङ्कु वॆण् कुटै–(आकर्षण में) बढ़े श्वेत छत्र; चामरै–चामर; पोर्त्तलाल्–आच्छादन करते रहे, इस कारण; कङ्कै आऱु कटुत्ततु–(वह सेना) गंगा नदी से तुलती थी । ८३५

उस सेना में शंख और भेरियाँ बज रही थीं। अनेक देशों के राजे जो आये थे उनके श्वेतछत्र और चामर ऊपर फैलते हुये सेना को ढक रहे थे। इसलिए वह सेना (लहरों और ध्वनियों के साथ) गंगा नदी के समान लगती थी। ८३५

अमर रञ्जॊ लणङ्गऩै यारुयिर्, कवरुङ् कूर्नुदिक कण्णॆनुङ् कालवेल्
कुमरर् नॆञ्जु कुऴिप्प वऴङ्गलाल्, शमर बूमियु मॊत्तदु ताऩये 836

अम् चॊल्–मनोरम वचनवाली; अमरर् अणङ्कु अऩैयार्–देवांगनाएँ-सम स्त्रियाँ; उयिर् कवरुम्–प्राणहारी; कण् ऍऩुम्–नयनरूपी; कूर् नुति कालऩ् वेल्–नुकीले, यम के से, भालों को; कुमरर् नॆञ्चु कुऴिप्प–तरुणों के वक्षों में धँसाते हुए; वऴङ्कलाल्–चलाने से; ताऩै–वह सेना; चमरम् पूमियुम् ऑत्ततु–समरभूमि से भी तुलती थी। ८३६

उसमें जानेवाली, मधुर-भाषिणी, देवांगनासम स्त्रियाँ, प्राणघातिनी (मनमोहनकारी) आँखोंरूपी अतितीक्ष्ण, यम के से भालों को पट्ठों के हृदयों पर गाड़ देती थीं। अतः वह समरभूमि से भी तुलती थी। (समरभूमि भी कहना इसलिए आवश्यक हुआ कि पहले पद में उसे गंगाजी से तोला गया है।)। ८३६

तोण्मि डैन्दऩ तूण मिडैन्दॆऩ, वाण्मि डैन्दऩ वाऩ्मिऩ् मिडैन्दॆऩत्
ताण्मि डैन्दऩ तम्मिऩ् मिडैन्दॆऩ, आण्मि डैन्दऩ वाळि मिडैन्दॆऩ 837

आळि मिटैन्त ऍऩ–सिंह एकत्र हुए से; आळ् मिटैन्तऩ–पदाति वीर एकत्र हुए; तम्मिल् मिटैन्तॆऩ–आपस में जुटकर जाने से; ताळ् मिटैन्तऩ–उनके पैर परस्पर उलझे; तूणम् मिटैन्त ऍऩ–स्तम्भ सटे से; तोळ् मिटैन्तऩ–भुजाएँ सटीं; वाऩ् मिऩ् मिटैन्त ऍऩ–मेघों में बिजलियाँ संकुलित हुईं जैसे; वाळ् मिटैन्तऩ–तलवारें सटीं। ८३७

(सेना में रहे लोगों की संख्या अति अपार है।) पदाति वीर इतने जुटे थे कि उनको सटकर जाना पड़ता था। पैरों से पैर, स्तंभसम भुजाओं से भुजाएँ; मेघ में बिजलियों के समान तलवारों से तलवारें; सट गयीं। ८३७

वाऱ्हु लामुलै वैत्तकण् वाङ्गिडप्, पेऱ्हि लादु पिऱङ्गु मुहत्तिऩाऩ्
तेऱ्हि लाऩॆऱि यन्दरिऱ् चॆऩ्ऱॊरु, मुरि मामद याऩयै मुट्टिऩाऩ् 838

वार् कुला(वु)म् मुलै–(एक स्त्री के) कंचुकी-बद्ध स्तनों पर; वैत्त कण्–रखी दृष्टि को; वाङ्किट पेऱ्किलातु–हटाने में असमर्थ; पिऱङ्कुम्–प्रफुल्ल; मुकत्तिऩाऩ्–आननवाला (एक तरुण); नॆऱि तेऱ्किलाऩ्–मार्ग न जानता हुआ; अन्तरिऩ् चॆऩ्ऱु–अन्धा-सा जाकर; ऑरु मूरि मा मतम् याऩैयै–एक बलिष्ठ, बड़े, मत्त, गज से; मुट्टिऩाऩ्–टकराया। ८३८

एक वीर ने अपनी प्रेयसी के कंचुकीबद्ध स्तनों पर दृष्टि डाली तो वह अपनी दृष्टि को वहाँ से नहीं हटा सका। मुख कांतियुक्त हुआ पर मन धूमिल पड़ गया। अन्धा सा, मार्ग भूल गया और एक बलिष्ठ बड़े मत्तगज से जाकर टकराया। ८३८

शुऴिहॉळ् पाय्परि तुळ्ळवोर् तोहयाळ्
वऴुवि वीऴ्दलुऱ् ऱाळयोर् वळ्ळऱाऩ्
ऍऴुवि नीळ्पुयत् तालॅडुत् तेऩ्दिये
तऴुवि निऩ्ऱदल् लाऱ्ऱरै मेल्वयाऩ् 839

चुऴि कॉळ्–भली भौरियों वाले; **पाय् परि**–दुलकीवाले एक अश्व के; **तुळ्ळ**–भड़कने से; **ओर् तोकैयाळ्**–एक मयूरछटा स्त्री; **वऴुवि वीऴ्तल् उऱ्ऱाळै**–फिसलकर गिरी, उसको; **ओर् वळ्ळल्**–एक उपकारी; **ताऩ्**–स्वयं ही; **ऍऴुविऩ् नीळ् पुयत्ताल्**–लौहस्तम्भ-सम अपनी दीर्घ भुजाओं से; **एन्ति ऍटुत्तु**–उठा लेकर; **तऴुवि निऩ्ऱतु अल्लाल्**–अंक में भरकर खड़ा रहा, वह छोड़कर; **तरै मेल् वैयाऩ्**–(उसे) भूमि पर नहीं उतारता। ८३९

भली भौंरियों के एक श्रेष्ठ अश्व से, जो फांदकर चलता था, एक सुन्दरी खिसक कर गिर गयी। उस मयूराभा सुन्दरी को एक उदार वीर ने अपनी लौहस्तंभसम बलिष्ठ भुजाओं पर उठा लिया। पर उसको अंक में भरकर वैसे ही खड़ा रहा; उसे नीचे भूमि पर उतार नहीं दिया। (उसकी बलिष्ठ भुजाएँ हैं— वह कैसे उतरतीं? शरीर और मन दोनों जो फँसे हुये हैं! न ही वह उतारता क्योंकि वह उदार मनुष्य है!)। ८३९

तुणैत्त तामरै नोवत् तॉडर्न्दिडै, कणैक्क रुङ्गणि ऩाळैयोर् काळैताऩ्
पणैत्त वॅम्मुलैप् पाय्मद यानैयै, अणैक्क नङ्गैक् कहलिड मिल्लॅऩ्ऱाऩ् 840

तुणैत्त तामरै नोव–जोड़े के कमल (चरण) दुखाते हुए; **तॉटर्न्तु इटै**–अपना अनुगमन करके श्रमित होती; **कणै करु कण्णिऩाळै**–शर-सम (और) काली आँखोंवाली (एक) दयिता को (उद्देश्य करके); **ओर् काळै**–एक पट्ठे ने; **नङ्कैक्कु**–इस तरुणी के; **पणैत्त वॅम् मुलै**–पीन और आकर्षक स्तनरूपी; **पाय् मतम् यानैयै**–(पुरुषों के मनों पर) आक्रमण करनेवाले गजों को; **अणैक्क**–रोकने का; **अकल् इटम् इल्**–विशाल स्थल (वक्ष में) नहीं है; **ऍऩ्ऱाऩ्**–कहा। ८४०

कुछ पुरुष छेड़-छाड़ का मनोरंजन करते हुए जा रहे थे। अपने सुन्दर जोड़े के कमल से चरणों को दुख देते हुए एक सुन्दरी एक पुरुष के पीछे-पीछे बहुत श्रम के साथ जा रही थी। उसको देखकर वह सुन्दर युवक कहता है कि इनके स्तन मत्तगज के समान बड़े और प्यारे हैं। वे मानों पुरुषों (के मनों पर) आक्रमण करते से लगते हैं। इनको बाँध रखने के लिए इनका वक्ष-प्रदेश पर्याप्त नहीं है। ८४०

शुऴियुङ् गुञ्जि मिशैच्चुरुम् बार्त्तिडप्
पॉऴियु मामद यानैयिऱ् पोहिऩ्ऱाऩ्
कऴिय कूरिय वॅऩ्ऱॊरु कारिहै
विऴियै नोक्कित्तऩ् वेलैयु नोक्किऩाऩ् 841

चुऴियुम् कुञ्चि मिचै–घुंघराले बालों पर; **चुरुम्पु आर्त्तिट**–भ्रमर भनभनाते

हैं; मा मतम् पॉऴियुम्—अधिक मदजल बहानेवाले; याऩैयिऩ्—गज के समान; पोकिऩ्ऱाऩ्—जाते रहे (एक युवक) ने; ऑरु कारिकै विऴियै नोक्कि—एक सुन्दरी की आँखों को देखकर; कऴिय कूरिय—अत्यधिक तीक्ष्ण हैं; अऩ्ऱु—कहकर; तऩ् वेलैयुम् नोक्किऩाऩ्—अपनी बर्छी को भी देखा। ८४१

एक युवा वीर जा रहा है। उसके केश के ऊपर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। इस कारण वह मत्तगज के समान है (जिसके मदनीर पर भौंरे मँडराते हैं)। वह एक स्त्री की आँखों को देखता है। उसके मन में प्रश्न उठता है कि हमारी बर्छी अधिक तीक्ष्ण है या इसकी आँखें। इसलिए वह अपनी बर्छी को देखता है मानों तुलना कर रहा हो। ८४१

तरङ्ग वार्कुऴऱ् ऱामरैच् चीऱडिक्, करुङ्गण् वाळुडै याळैयोर् काळैताऩ्
नॅरुङ्गु पूण्मुलै नीळ्वळैत् तोळिऩीर्, मरुङ्गु लॅङ्गु मऱन्दुवन् दीरॅऩ्ऱाऩ् 842

तरङ्कम् वार् कुऴल्—लघु लहरों के समान छल्लेदार और लम्बे केश; तामरै चिऱ अटि—कमल-सम, छोटे चरण; वाळ् करु कण्—तलवार के समान काली आँखें; उटैयाळै—इनकी स्वामिनी एक को देख; ओर् काळै—एक युवक ने; नॅरुङ्कु पूण् मुलै—सटे हुए और आभरणमण्डित स्तन; नीळ वळै तोळिऩ्—लम्बे और कंकण सहित हाथवाली; नीर्—आप; मरुङ्कुल—कमर को; ॲङ्कु—कहाँ; मऱन्तु—भूलकर; वन्तीर्—आईं; ॲऩ्ऱाऩ्—पूछा। ८४२

एक अति सुन्दर स्त्री जा रही है। उसके केश लहरों के समान घुंघराले हैं। पैर छोटे और कमल के समान हैं। आँखें काली और तलवार के समान हैं। उसको देखकर एक पट्ठा पूछता है कि आभरण-भूषित पीन-स्तनी और कंकण-हस्ता! आप अपनी कमर को कहाँ भूल से छोड़कर आयी हैं ?। ८४२

कूऱ्ऱम् बोलुङ् गॉलैक्कण्णि ऩालऩ्ऱि, माऱ्ऱम् पेशुहि लाळैयोर् मैन्दऩ्ऱाऩ्
आऱ्ऱु नीरिडै यङ्गैह ळालॅडुत्, तेऱ्ऱु वारुमै यावर्हॉ लोवॅऩ्ऱाऩ् 843

कूऱ्ऱम् पोलुम्—यम के समान; कॉलै कण्णिऩाल् अऩ्ऱि—घातक आँखों (के संकेत) के सिवा; माऱ्ऱम् पेचुकिलाळै—भाषण न करनेवाली (एक) युवती को (देख); ओर् मैन्तऩ्—एक जवान पुरुष; आऱ्ऱु नीर् इटै—नदी के प्रवाह में; उमै—आपको; अम् कैकळाल्—सुन्दर हाथों से; ॲटुत्तु—उठाकर; एऱ्ऱुवार् यारो—पार लगानेवाले कौन हैं, तो; ॲऩ्ऱाऩ्—यह पूछा। ८४३

एक स्त्री लज्जाशीला है। वह मुख खोलकर बात करने से भी लजाती है। अपनी आँखों के, जो मृत्युदेव के समान प्राणघातिनी हैं, इशारे से ही जवाब देती है। उससे एक पुरुष पूछता है कि नदी पार करने का मौका आयगा तब आपको अपने भाग्यवान सुन्दर हाथों में लेकर कौन उस पार उतार देगा ? (तब बोलना ही पड़ेगा न ? और बोलने से

शरमानेवाली कैसे छूने देंगी ? नहीं छूने देंगी तो नदी पार करना कैसा ?) । ८४३

तळ्ळरुम् परन् दाङ्गिय वॊट्टहम्, तॆळ्ळु तेङ्गुऴै यावैयुन् दिन्गिल
उळ्ळ मॆऩ्ऩत्तम् वायु मुलर्न्दऩ, कळ्ळुण् मान्दरिऱ् कैप्पऩ तेडिये 844

तळ्ळ अरुम्–उतारने में अशक्य; परम् ताङ्किय–बड़ा भार ढोनेवाले; ऒट्टकम्–उष्ट्र (ऊँट); तॆळ्ळु तेम् कुऴै यावैयुम् तिऩ्किल–अच्छे मीठे पत्ते कुछ नहीं खाकर; वाय् कैप्पऩ तेटि–मुख को कड़ुए लगनेवाले पत्ते खोजकर (खाकर); कळ् उण् मान्तरिऩ्–ताड़ी के पियक्कड़ों के समान; तम् उळ्ळम् ऍऩ्ऩ–अपने ही मन के समान; वायुम् उलन्तऩ–मुख के भी शुष्क बने । ८४४

उस भीड़ में ऊँट भी जा रहे हैं। उनका स्वभाव विचित्र है। बहुत भारी सामान का बोझा उठाते चलनेवाले वे मीठे पत्ते नहीं खाते। कड़ुए, नीम के पत्ते जैसे, पत्तों को ही ढूँढ़कर खाते हैं। उनका यह पियक्कड़ों का सा स्वभाव है जो दूध आदि अच्छे पदार्थ नहीं पीते पर ताड़ी पीते हैं जिसके फलस्वरूप मुख सूखा सा रहता है और मन भी कालांतर में शुष्क यानी गुणहीन हो जाता है । ८४४

अरत्त नोक्किऩ रऱ्ऱिरण् मेऩियर्, परित्त काविऩर् पप्पर रेहिऩार्
तिरुत्तु कूडत्तैत् तिण्कणै यत्तॊडुम्, ऍरुत्तिऩ् माल्हळि ऱेन्दिय दॆऩ्ऩवे 845

अरत्तम् नोक्किऩर्–रक्तवर्ण नयन; अल् तिरळ् मेऩियर्–अन्धकार जमा हो ऐसा शरीरवाले; पप्परर्–पप्पर (पल्पव ?) जाति के लोग; माल् कळिऱु–मत्तगज; तिरुत्तु कूटत्तै–जहाँ बाँध रखकर अभ्यास दिया जाता है उस गजशाला को ही; तिण् कणैयत्तॊटुम्–सुदृढ़ आलान के साथ; ऍरुत्तिऩ् एन्तियतु–गर्दन पर ढो लिया; ऍऩ्ऩ–ऐसे; परित्त काविऩर्–काँवर उठाते हुए; एकिऩर्–चले । ८४५

पप्परर् जाति के लोग उनके साथ जाते थे। (वाल्मीकी रामायण में 'पप्लव' नाम आया है। वह उस संदर्भ में आया है जब वसिष्ठजी की सुरभी ने वीरों को उत्पन्न किया। शायद वही पप्लव ये पप्पर हों। उन लोगों को राजा लोग कुलियों के रूप में नियत करते थे।) उनकी आँखें रक्तसम लाल थीं; शरीर घना अन्धेरा सा काला था। काँवर ढोते जाते हुये उनको देखते समय वे उन गजों के समान लगते थे जो आलान के साथ गजशाला को ही उखाड़कर उठा लिये जा रहे हों। ८४५

पित्त याऩै पिणङ्गिप् पिडियिऱ्कै, वैत्त मेलिरुन् दञ्जिय मङ्गयर्
ऍय्त्ति डुक्कणुऱ् ऱार्पुदैत् तार्क्किरु, कैत्त लङ्ळिऱ् कण्णडङ् गामये 846

पित्त याऩै–मद-मस्त एक हाथी ने; पिणङ्कि–(महावत की आज्ञा) नहीं मानकर (बिगड़कर); पिटियिल् कै वैत्ततु–हथिनी पर अपनी सूँड़ रखी; मेल् इरुन्तु–उस पर बैठी रही; अञ्चिय मङ्कैयर–डरनेवाली स्त्रियाँ; कण् पुतैत्तार्क्कु–आँखों को (अपने हाथों से) मूँदने जो लगीं; इरु कैत्तलङ्कळिल्–दोनों हथेलियों के

अन्दर; अटङ्कामै–नहीं समायीं, इसलिए; ऍय्त्तु–मन घबड़ाकर; इटुक्कण् उऱ्ऱार्–संकट में पड़ (भयातुर हो) गईं । ८४६

एक मदमस्त हाथी ने पीलवान से बिगड़कर एक हथिनी की ओर अपनी सूँड़ बढ़ायी । तब उसके ऊपर बैठी हुई कुछ प्रमदाओं ने अपनी आँखें अपनी हथेलियों से मूँद लीं । पर उनकी आँखें इतनी बड़ी थीं कि वे हथेलियों के अन्दर समा नहीं पायीं । उनका डर दूर नहीं हुआ और उनको डर से बड़ा संकट हुआ । (इसमें स्त्रियों के स्वभाव का वर्णन है और उनकी आँखों की विशालता बतायी गयी है ।) । ८४६

वाम मेहलै यारिडै वालदि, पूमि तोय्पिडिच् चिन्दरुम् बोयिऩार्
कामर् तामरै नाण्मलर्क् काऩत्तुळ्, आमै मेल्वरुन् देरयि ऩाङ्गरो 847

वामम् मेकलैयार् इटै–सुन्दर मेखला-धारिणी स्त्रियों के बीच में; वालति पूमि तोय्–(जिनकी) पूँछें भूमि को स्पर्श करती थीं; पिटि–उन नाटी हथिनियों पर; कामर् तामरै नाळ् मलर् काऩत्तु उळ्–मनोरम कमल के नवीन पुष्पों के मध्य; आमै मेल्–कछुओं पर; वरुम् तेरैयिऩ्–बैठकर आनेवाले दादुरों के समान; चिऩ्तरुम् पोयिऩार्–नाटी स्त्रियाँ भी गईं । ८४७

चित्ताकर्षक मेखलाधारिणी स्त्रियों के बीच में छोटे कद की औरतें उनके अनुकूल छोटे कद की हथिनियों पर बैठी जा रही हैं । उन हथिनियों की पूँछें लम्बी हैं और भूमि को स्पर्श करती हैं । (छोटे कद की औरतों को 'चिऩ्तर्' व "कुऱळर्" कहते हैं । "कुऱळर्" दो फुट की लम्बी और "चिऩ्तर्" तीन फुट की लम्बी होती हैं । उनको महलों में सेवा टहल के लिए नियुक्त किया जाता था ।) उनको देखने पर ऐसा लगता है कि कमल वन के बीच कछुओं पर बैठकर दादुर जा रहे हों । (अन्य स्त्रियाँ नवविकसित कमल हैं । छोटे कद की हथिनियाँ कछुए हैं और बौनियाँ दादुर हैं ।) । ८४७

इम्बर् नाट्टिऩ् ऱरमल्ल ळीङ्गिवळ्, उम्बर् कोमहऱ् कॅऩ्गिऩ्ऱ दॊक्कुमाल्
कम्ब मावरक् काल्हळ् वळैत्तॊरु, कॊम्ब ऩाळैक्कोण् डोडुङ् गुदिरये 848

ऒरु कॊम्बु अऩ्ऩाळै कॊण्टु–एक पुष्पलता सदृश सुन्दरी को ढोकर; काल्कळ् वळैत्तु–पैरों को झुकाकर; कम्पम् मा वर–हाथी (पीछे आए, उस) के आगे; ओटुम् कुतिरै–दौड़नेवाला एक अश्व; ईङ्कु इवळ्–यहाँ की (मेरे ऊपर बैठी) यह; इम्पर् नाट्टिऩ्–इह लोक के लिए; तरम् अल्लळ्–योग्य नहीं है, (यानी यह धरती इसके योग्य नहीं है); उम्पर् कोमकऱ्कु–देवेन्द्र के लिए; ऍऩ्किऩ्ऱतु–मानो कह रहा हो; ऒक्कुम्–ऐसा लगता है । ८४८

एक अश्व एक पुष्पलता सदृश सुन्दरी स्त्री को अपनी पीठ पर लिये पैरों को झुका-झुकाकर अतिवेग से दौड़ रहा है । उसके पीछे एक हाथी आ रहा है । (उस अश्व को देखकर कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि) 'यह

सुन्दरी इस धरती पर रहने के लिए अर्ह नहीं है— देवेन्द्र के लिए ही अर्ह है' ऐसा अश्व कह रहा यानी ऐसा समझकर उसको लिये जा रहा है। ८४८

❀शन्द वार्हुळल् शोर्न्दवै ताङ्गलार्, शिन्दु मेहलै शिन्दयुञ् जॅय्हिलार्
ॲन्दै विल्लिऱुत् तान॓नु मिन्शॊलै, मैन्दर् पेश मनङ्गळित् तोडुवार् 849

ॲन्तै–मेरे पिता (भगवान); विल् इऱुत्तान्–धनु तोड़ चुके; ॲन्नुम्–यह; इन् चॊल्लै–मधुर समाचार को; मैन्तर् पेच–पुरुषों के कहने पर; मनम् कळित्तु–मन में आनन्दित होकर; चोर्न्तवै–खुलकर लटकनेवाले; चन्तम् वार् कुळ्ल्–मनोरम लम्बे केशजाल को; ताङ्कलार्–उठाकर नहीं बाँधतीं; चिन्तुम् मेकलै–टूटकर गिरनेवाली मेखला की लड़ियों की; चिन्तैयुम् चॅय्किलार्–परवाह नहीं करतीं; ओटुवार्–भागतीं। ८४९

पुरुष आपस में कह रहे थे कि हमारे तात श्रीराम ने धनु तोड़ लिया। यह सुनकर स्त्रियों में आनन्द और उत्साह भर गया। वे तेजी से चलने लगीं। उनके सुगन्धपूर्ण बाल खुलकर बिखरे; उनको नहीं संभाला। मेखला की लड़ियाँ टूटीं और गुरियाँ गिरने लगीं। उसकी भी उन्होंने परवाह नहीं की। ८४९

कुडैयर् कुण्डिहै तूक्किनर् कुन्दिय, नडैयर् नाशि पुदैत्तकै नाऱ्ऱलर्
कडह ळिऱ्ऱैयुङ् कारिहै यारैयुम्, अडैय वञ्जिय वन्दणर् मुन्दिनार् 850

कटम् कळिऱ्ऱैयुम्–मत्तगजों को; कारिकैयारैयुम्–स्त्रियों को; अटैय अञ्चिय–नियराने से डरनेवाले (संकोच करनेवाले); अन्तणर्–ब्राह्मण लोग; कुटैयर्–छत्र रखनेवाले; कुण्टिकै तूक्कित्तर्–कमण्डलधारी; कुन्तिय नटैयर्–उचकती चालवाले; नाचि पुतैत्त कै–नासिका पर (श्वास रोकने के हेतु) रखे हाथ को; नाऱ्ऱलर्–नीचे नहीं लटकाते; मुन्तिनार्–आगे चले। ८५०

उस बारात के साथ ब्राह्मण भी गये। उनका वर्णन देखिये। वे हाथियों (से डरकर) और प्रमदाओं से (शंकित हो उनसे) दूर जाते थे। उनके एक हाथ में छाता था और कमंडल भी। दायाँ हाथ जो प्राणायाम करने के लिए नासिका पर रखने के व्यवहार में आता था, वे नीचे नहीं लटका रहे थे। (बार-बार प्राणायाम या धूल से बचने के लिए नासिका पर रखना पड़ता था; या पूर्णरूप से लटकाना पुनीतता में बाधा डाल सकता था।) वे उचक-उचक कर चल रहे थे। ८५०

नाऱु पूङ्गुळ् नङ्गयर् कण्णिनीर्, ऊऱ नेर्वन् दुरुवु वॆळिप्पड
माऱु कॊण्डनै वन्दनै याहिल्वन्, देऱु तेरॆन्नक् कैह ळिऱैञ्जुवार् 851

नाऱु पू कुळ्ल्–सुवासित पुष्पालंकृत केशवाली; नङ्कैयर–कुछ तन्वियाँ; कण् इन् नीर् ऊऱ–अपनी आँखों से सुख का अश्रु निकालता हुआ; उरुवु–(श्रीराम का) रूप; नेर् वन्तु वॆळिप्पट–प्रत्यक्ष दिखाई दिया, तब; माऱु कॊण्टनै–सामने मिलने;

वन्तनै आकिल्–आये हैं तो; वन्तु तेर् एऱु–आकर रथ पर चढ़ जाइए; अॅन्न–कहकर; कैंकळ् इऱैञ्चुवार्–हाथ जोड़कर विनती की। ८५१

सुवासित पुष्पों से अलंकृत केशवाली कुछ स्त्रियाँ, जो रथों पर जा रही हैं, अपनी आँखों के सामने श्रीरामचन्द्र के रूप को देखती हैं। (यह मायारूप है।) तब उनकी आँखों से आनन्दाश्रु बहने लगता है। वे श्रीराम (के रूप) से हाथ जोड़कर विनय करती हैं कि आप सचमुच हमारे समक्ष आ गये हैं तो आप हमारे साथ रथ पर चढ़कर विराजिये। (पाठांतर से यह भी अर्थ किया जाता है कि कुछ स्त्रियाँ, जिनके पुरुष उनसे रुष्ट होकर दूर चले गये हैं, अपने प्रेमियों के रूप को सामने भ्रांति में देखकर उनको बुला रही हैं।)। ८५१

कुरैत्त तेरुङ् कळिऱुङ् गुदिरैयुम्, निरैत्त वार्मुर शुन्निऱैन्न् दॅङ्गणुम्
इरैत्त पेरौलि यालिडै यावरुम्, उरैत्तु णर्न्दिल रुमरि न्नेहिन्नार् 852

कुरैत्त तेरुम्–गड़गड़ानेवाले रथ; कळिऱुम्–हाथी; कुतिरैयुम्–अश्व; निरैत्त वार् मुरचुम्–पंक्तियों में रहे, डोरे-कसे ढोल, (सब ने); अॅङ्कणुम् निऱैन्तु–सर्वत्र भरकर; इरैत्त पेर् ऑलियाल्–जो उठाया उस बड़े शोर से; इटै–वहाँ; यावरुम्–सभी; उरैत्त उणर्न्तिलर्–बात (करते) नहीं (सुन) समझ सके; ऊमरिन् एकिन्नार्–गूँगे के समान चलते रहे। ८५२

लोग आपस में नहीं बोलते और गूँगों के समान चुपचाप चल रहे हैं। क्योंकि रथ, गज, तुरंग, भेरियाँ— आदि सभी सर्वत्र अपार नाद कर रहे हैं और उस शोर में कोई किसी का सुन नहीं पाता, समझ नहीं पाता। ८५२

नुट्चि लम्बि वलन्दन्न नण्डुहिल्, कट्चि लम्बु करुङ्गुऴ लार्हुऴु
उट्चि लम्बु शिलम्बवौ दुङ्गलाल्, पुट्चि लम्बिडु पॉय्हयुम् पोन्ऱदे 853

नुण् चिलम्पि–छोटे मकड़े के; वलन्त अन्न–बुने जाल के समान; नुण् तुकिल्–महीन वस्त्र; कळ् चिलम्पु—भ्रमर-गुंजित; करु कुऴलार्–काले बालवाली स्त्रियों का; कुऴु–समूह; चिलम्पु उळ्–नूपुरों के अन्दर के कंकड़ों को; चिलम्प–झनकाते हुए; ऑतुङ्कलाल्–चलती हैं, इसलिए; पुळ् चिलम्पिटु—पक्षी-रव-भरित; पॉय्कै पोन्ऱतु–तालाब के समान था। ८५३

स्त्रियों का समूह तालाब का दृश्य उपस्थित करता है जिसमें हंस पक्षी कलरव करते हुए पाये जाते हैं। उनका मकड़ी के जाले का सा महीन वस्त्र जल विस्तार है; उनके केशों पर पुष्प और उन पर भ्रमर जो पाये जाते हैं वे तालाब के फूल और भ्रमरों का दृश्य उपस्थित करते हैं। उनके नूपुरों के अन्दर के कंकण बज उठें, ऐसा वे चलती हैं। वह हंसों का बोलना सा है। कुल मिलाकर वैसे तालाब का दृश्य बन जाता है। ८५३

तॅण्डि रैप्पर वैत्तिरु वऩ्ऩवर्, नुण्डि रैप्पुरै नोक्किय नोक्किऩैक्
कण्डि रैप्पऩ वाडवर् कण्कळि, वण्डि रैप्पऩ वाऩै मदङ्गळे 854

तॅण् तिरै–साफ़ लहरोंवाले; परवै–(क्षीर) सागर (में उत्पन्न); तिरु अऩ्ऩवर्–लक्ष्मी सदृश स्त्रियाँ; नुण् तिरै पुरै–झीने परदे के छेदों द्वारा; नोक्किय नोक्कित्तै–जो दृष्टि डालती रही उसको; आटवर् कण्–पुरुषों की आँखें; कण्टु–देखकर; इरैप्पत्त–मोहवश हुईं; आऩै मतङ्कळ्–(मत्त) गजों के मदजल (प्रवाह) पर; कळि वण्टु इरैप्पत्त–मस्त भ्रमर गुंजार करते हैं। ८५४

पुरुष की आँखें स्वच्छ-तरंग सागरोत्पन्न लक्ष्मीदेवी सदृश स्त्रियों की आँखों को जो झीने पर्दों के अन्दर से उनको देखती हैं, देखकर विह्वल हो जाती हैं। मत्त भ्रमर गजमद जल को पीकर विह्वल हो जाते हैं और गुंजार करते हैं। (इस पद में 'इरैप्पत्त' शब्द के दो अर्थ— मोह-गद्गद होना और गुंजार करना लेकर भ्रमर और पुरुष की आँखों में श्लेष स्थापित किया गया है।)। ८५४

उऴैक लित्तऩ वॅऩ्ऩ वुयिर्त्तुणै, नुऴैक लिक्करुङ् कण्णियर् नूपुरम्
इऴैक लित्तऩ विऩ्ऩिय मावॅऴु, मऴैक लित्तॅऩ वाशिक लित्तवे 855

उऴै कलित्तत्त ऍऩ्ऩ–मृग मस्ती के साथ उठे से; उयिर् तुणै–मर्म तक; नुऴै–घुसनेवाली; कलि करु कण्णियर्–प्रभावक काली आँखों की स्त्रियों के; नपुरम् इऴै–नूपुर (रूपी) आभरण; इऩ् इयम् आ (क) कलित्तऩ–(श्रुति) मधुर वाद्य के रूप में बजे; वाचि–अश्व; ऍऴु मऴै कलित्त ऍऩ–सातों मेघ गरज उठे से; कलित्त–हिनहिनाये। ८५५

इधर स्त्रियों की नूपुरध्वनि मधुर वाद्य-नाद के समान उठी और वाजियों का हिनहिनाना सातों मेघों के गर्जन के समान नाद करता था। स्त्रियाँ भी कैसी ? मृग के से मस्त काले और रोबीले नयनों की; जो नयन पुरुषों के मर्मस्थान तक दृष्टि गाड़ सकते हैं। (सात-मेघ संवर्त, आवर्त, पुष्कलावर्त, गंगारित, द्रोण, काळमुखी और नीलवर्णी)। ८५५

मण्क ळिप्प नडप्पवर् वाण्मुह, उण्क ळिक्कम लङ्गळि ऩुळ्ळुरै
तिण्क ळिच्चिरु तुम्बियॅ ऩच्चिलर्, कण्क ळिप्पऩ कामऩ् कळिक्कवे 856

मण् कळिप्प नटप्पवर्–धरती को आनन्द देते हुए चलनेवाली (कुछ स्त्रियों के); वाळ् मुकम्–उज्ज्वल मुखरूपी; उण् कळि कमलङ्कळिऩ् उळ्–(सुरा-) पान की मत्तता दिखानेवाले कमलों में; उऱै–(वास करने) रहनेवाले; तिण् कळि चिऱु तुम्पि–बहुत मोदपूर्ण छोटे भ्रमररूपी आँखें; ऍऩ–(पुरुषों को देखकर नन्दित होतीं) उसी तरह; चिलर् कण्–कुछ पुरुषों की आँखें; कामऩ् कळिक्क–मदन को आनन्द करने का मौका देते हुए; कळिप्पत्त–(स्त्रियों के मुखों को देखकर) उल्लसित हैं। ८५६

पुरुष और स्त्रियों की परस्पर आँखें लड़ रही हैं। स्त्रियाँ ऐसी चलनेवाली हैं जिसके मृदु-पद पात से धरती दुखती नहीं वरन सुख का

अनुभव करती है। उनके सुन्दर मुख सुरापान के आनन्द की छटा दिखाते हैं और कमल के समान हैं। उन कमलरूपी मुखों में अतिमुग्ध, मस्ती से भरी, भ्रमरों सदृश आँखें पुरुषों को देखकर मुदित होती हैं। वैसे ही पुरुषों की आँखें भी इन आँखों को देखकर मोदमग्न हो जाती हैं। यह देखकर मन्मथ को भी संतोष होता है कि हमारा अब मौका मिल गया। (यानी परस्पर देखते वक्त दोनों के मन में एक दूसरे पर प्रेम पैदा हो जाता है।)। ८५६

ऍण्णु मात्तिर मुम्मरि दाम्मिडै, वण्ण मार्त्त तुवर्क्कऩि वाय्च्चियर्
तिण्ण मार्त्तॊळिर् शॆव्विळ नीरिऴि, शुण्ण मार्त्तऩ तूळियु मार्त्तवे 857

ऍण्णुम् मात्तिरमुम्–भावना के लिए भी; अरितुआम्–अशक्य; इटै–कमर; वण्णम् आर्त्त–सुन्दरतापूर्ण; तुवर् कऩि–बिम्बफलारुण; वाय्च्चियर्–मुख (अधर) वाली तरुणियों के; तिण्णम् आर्त्तु–खूब कसकर बद्ध होकर; ऒळिर्–मनोरम लगनेवाले; चॆव्विळनीर्–कच्चे नारियल के फलों (सम उरोजों) से; इऴि–गिरनेवाले; चुण्णम्–चूर्ण; आर्त्तऩ–सर्वत्र भरे; तूळियुम् आर्त्त–धूलियाँ भी भरीं। ८५७

भावना के लिए भी अशक्य महीन कटि, सुन्दर बिम्बफल सम लाल मुख (अधरों) से युक्त स्त्रियों के कंचुकी के अन्दर खूब कसकर बँधे हुये, नारियल सदृश स्तनों पर लिप्त चन्दन सूख गया और चूर्ण बनकर गिरने लगा। वे चूर्ण सर्वत्र भर गये। धूल भी भर गयी। ८५७

शित्ति रत्तडन् देर्मैन्दर् मङ्गयर्, उय्त्तु रैप्प निऩैप्प उलप्पिलर्
इत्ति ऱत्तिऩ रॆत्तऩै योपलर्, मॊय्त्ति रैत्तु वऴिक्कॊण्डु मुऩ्ऩिऩार् 858

चित्तिरम् तट तेर्–सुडौल, विशाल रथों में जानेवाले; मैन्तर् मङ्कैयर्–पुरुष और स्त्रियाँ; उय्त्तु उरैप्प–अनुमान लगाकर कहने में; निऩैप्प–सोचने में; उलप्पु इलर्–असंख्यक हैं; इ तिऱत्तिऩर्–इस हैसियतवाले; ऍत्तऩैयो पलर्–अन्य कितने ही अनेक; मॊय्त्तु–जुटकर; इरैत्तु–शोर मचाते हुए; वऴि कॊण्टु–मार्ग पकड़कर; मुऩ्ऩिऩार्–(मिथिलानगर की ओर) बढ़े। ८५८

विशाल रथों पर चलनेवाले पुरुष और स्त्रियों की संख्या का अनुमान करना या कहना असंभव था। इन (रथों के सवारों) के अलावा अन्य अनेक लोग मिलकर जा रहे थे। वे आपस में खूब हल्ला मचाते हुये मिथिला के मार्ग में आगे बढ़े। (हैसियत का विचार छोड़कर सब मिलकर उत्साह के साथ जा रहे थे।)। ८५८

कुशैयुऱु परियुन् देरुम् वीररुङ् गुऴुमि यॆङ्गुम्
विशैयॊडु कडुहप् पॊङ्गि वीङ्गिय तूळि विम्मिप्
पशैयुऱु तुळियिऩ् ऱारैप् पशुन्दॊळै यडैत्द मेहम्
तिशैतॊऱु निऩ्ऱ याऩै मदत्तॊळै शॆम्मिऱ् ऱऩ्ऱे 859

कुचै उरु परियुम्–लगाम लगे घोड़े; तेरुम्–रथ; वीररुम्–और पदाति; ऍङ्कुम् कुळुमि–सर्वत्र दल बाँधकर; विचैयॉटु कटुक–वेग के साथ जाने से; पॉङ्कि वीङ्किय तूळि–उठकर फैली धूलिराशि ने; विम्मि–भरकर; मेकम्–मेघों के; पचै उरु–गीली; तुळियिऩ् तारै–जलधारा के; पचुमै तॉळै–सिक्त रंध्र; अटैत्त–बन्द करा दिये; तिचै तॉऱुम् निऩ्ऱ यात्तै–दिशा-दिशा में खड़े गजों के; मतम् तॉळै–मद-नीर रंध्रों में भी; चॅम्मिऱ्ऱु–(धूलि) भर गई। ८५९

लगाम लगे अश्व, रथ, पदाति, आदि इतनी बड़ी संख्या में चले कि धूलि की विपुल राशि उठकर फैली। वह मेघों की धारा के रंध्रों में भी भर गयी और हर दिशा के दिग्गज के मदजल के रंध्रों को भी अवरुद्ध कर गयी। ८५९

केडहत् तडक्कै याले किळरॉळि वाळुम् बऱ्ऱिच्
चूडहत् तळिर्क्कै मऱ्ऱैच् चुडर्मणित् तडक्कै पऱ्ऱि
आडहत् तोडै यात्तै यऴिमदत् तिऴुक्क लाऱ्ऱिल्
पाडहक् कालि ऩारैप् पयप्पयक् कॉण्डु पोऩार् 860

केटकम् तट कैयाले—ढाल-धरे विशाल (बायें) हाथ में ही; किळर् ऑळि–छिटकती कान्तिवाली; वाळुम् पऱ्ऱि–तलवार भी लेकर; चुटर् मणि–दीप्त कंकण पहने हुए; मऱ्ऱै तट कै–दूसरे (दायें) विशाल हाथ से; चूटकम् तळिर् कै पऱ्ऱि–(पत्नियों के) चूड़ियोंवाले पल्लवमृदु हाथ पकड़कर; आटकत्तु ओटै–स्वर्णनिर्मित मुखपट्टधारी; यात्तै–गजों से; अऴि मतत्तु–झरनेवाले मदजल के कारण; इऴुक्कल् आऱ्ऱिल्—फिसलन-युक्त मार्ग में; पाटकम् कालिऩारै–'पाटकम्' नाम के नूपुर-विशेष से शोभित पैरवालियों को; पय पय–धीरे-धीरे; कॉण्टु पोऩार्–ले चले। ८६०

अनेक वीर एक ही हाथ में (बायें हाथ में) ढाल और तलवार लेकर दूसरे कंकण-भूषित हाथ से अपनी पत्नियों को सहारा देकर धीरे-धीरे ले जा रहे थे क्योंकि स्वर्ण-मुखपट्ट से अलंकृत गजों के मदजल प्रवाह के कारण मार्ग में फिसलन पड़ गयी थी। ८६०

शॅय्हळिन् मडुवि ऩऩ्ऩीर्च् चिऱैहळि निऱैयप् पूत्त
नॅय्दलुङ् गुमुदप् पूवु नॅहिऴ्न्दशॅङ् गमलप् पोदुम्
कैहळु मुहमुम् वायुङ् कण्गळुङ् काट्टक् कण्डु
कॉय्दिवै तरुह वॅऩ्ऱु कॉऴुऩरैत् तॉऴुहिऩ् ऱाराल् 861

चॅय्कळिल्–खेतों में; मटुविल्–छोटे सरोवरों में; नल् नीर् चिऱैकळिल्–अच्छे जल के जलाशयों में; निऱैय पूत्त–अधिकता से फूलित; नॅय्तलुम्–नीलोत्पल; कुमुतम् पूवुम्–कुमुद पुष्प; नॅकिऴ्न्त चॅम् कमलम् पोतुम्–खिली लाल कमल की कलियाँ; कैकळुम्–हाथ; मुकमुम्–और मुख; कण्कळुम्–आँखें; काट्ट–दिखातीं, तो; कण्टु–देखकर; इवै कॉय्तु तरुक–इनको तोड़कर ला दो; ऍऩ्ऱु–कहकर; कॉऴुऩरै–पतियों से; तॉऴुकिऩ्ऱार्–विनय करती हैं। ८६१

मार्ग में स्त्रियों ने खेतों, तालाबों और अन्य जलाशयों में नीलोत्पल,

कुमुद और कमल आदि फूल देखे। उनको वे अपने ही अवयवों के समान लगे। (वे उन्हें हाथ में लेकर मनोरंजन कर लेना चाहती थीं इसलिए—) वे अपने पतियों से नमस्कार करके विनय करने लगीं कि उनको तोड़कर ला दो। ८६१

पन्दियम् पुरवि निऩ्ऱुम् पारिडै यिऴिन्दोर् वाशक्
कुन्दळ पारञ् जोरक् कुलमणिक् कलऩ्गळ् शिन्तच्
चन्दनुण् डुहिलुञ् जोरत् तळिर्क्कैया लणैत्तुच् चार
वन्दटु वॆऴ मॆऩ्ऩ मयिलॆऩ्ऩ विरियल् पोवार् 862

पन्ति अम् पुरवि निऩ्ऱुम्–श्रेणियों में जानेवाले अश्वों पर से; पार् इटै इऴिन्तोर्–भूमि पर उतरी हुई कुछ स्त्रियाँ; वेऴम् चार वन्ततु ऎऩ्ऩ–हाथी हमारी ओर आ रहे हैं, यह जानकर; वाचम् कुन्तळ पारम् चोर–सुवासित केशभार के खुलकर लटकते; कुलम् मणि कलङ्कळ् चिन्त–श्रेष्ठ रत्नाभरण के गिरते; चन्तम् नुण् तुकिलुम् चोर–सुन्दर महीन (अधो) वस्त्र के खिसकते; तळिर् कैयाल् अणैत्तु–पल्लव-सम हाथों से पकड़कर; मयिल् ऎऩ्ऩ–मोरों के समान; इरियल् पोवार–अस्तव्यस्त हो अलग भागतीं। ८६२

पंक्तियों में अश्व जा रहे थे। उन पर स्त्रियाँ बैठी जा रही थीं। आराम के लिए वे नीचे उतरीं। तब किसी ने कह दिया कि हाथी आ रहे हैं और पास आ गये हैं। यह समाचार सुनते ही वे मोरों के समान छटा दिखाते हुये ससंभ्रम भागने लगीं। तब उनके सुवासपूर्ण केशजाल खुलकर बिखर गये। रत्नाभरण खुलकर गिर गये। महीन अधोवस्त्र भी खिसक गये। वे उन वस्त्रों को हाथ से सम्हालकर पकड़ती हुयी भागीं। ८६२

कुडैयॊडु पिच्चन् दॊङ्गड़् कुऴाङ्गळुङ् कॊडियिऩ् काडुम्
इडैयिडै मयङ्गि यॆङ्गुम् वॆळिहरन् दिरुळैच् चॆय्यप्
पडैहळु मुडियुम् पूणुम् पडर्वॆयिल् परप्पिच् चॆल्ल
इडैयॊरु कण्त्ति ऩुळ्ळे यिरवुण्डु पहलु मुण्डे 863

कुटैयॊटु–छत्रों के साथ; पिच्चम्–मोरछत्र; तॊङ्कल् कुऴाङ्कळुम्–मोरछल का समूह; कॊटियिऩ् काटुम्–ध्वजाओं का वन; इटै इटै मयङ्कि–आपस में मिश्रित होकर; ऎङ्कुम् वॆळि करन्तु–सर्वत्र आकाश को छिपाकर; इरुळै चय्य–अँधेरा कर देते हैं, तब; पटैकळुम्–(तलवार, भाले) आदि हथियार; मुटियुम्–रत्नकिरीट; पूणुम्–अन्य आभरण; पटर् वॆयिल् परप्पि चॆल्ल–फैलती धूप (प्रकाश) करते जाते हैं; इटै–(सेना के मार्ग के) स्थानों में; ऒरु कणत्तिऩ् उळ्ळे–एक ही क्षण में (एक साथ); इरवु उण्टु–रात भी है; पकलुम् उण्टु–दिन भी है। ८६३

छत्र, मोरपंखछत्र, मोरछल, ध्वजाओं के समूह, ये सब आपस में मिश्रित होकर, आकाश को ढँककर सर्वत्र अंधेरा बना रहे थे। उसी

समय तलवार आदि अस्त्र, रत्नकिरीट आदि प्रकाश भी फैलाये जा रहे थे। इस तरह वह सेना जहाँ भी जा रही थी वहाँ एक ही समय में रात (का अंधेरा) भी होता था; दिन (की धूप) भी होता था। ८६३

मुरुक्किदऴ् मुत्त मूरऩ् मुऱुवलार् मुहङ्ग ळॅऩ्ऩुम्
तिरुक्किळर् कमलप् पोदिऱ् ऱीट्टिऩ किडन्द कूर्वाळ्
नॅरुक्किडै यऱुक्कु नीविर् नीङ्गुमि ऩीङ्गु मॅऩ्ऱॅऩ्
ऱुरुक्कऩि लॉळिरु मेऩि याडव रहलप् पोवार् 864

अरुक्कऩिल् ऑळिरुम् मेऩि–सूर्य के समान कान्तियुत शरीरोंवाले; आटवर्–पुरुष; मुरुक्कु इतऴ्–(काँटेदार तनों और डालों के) 'मुरुङ्ग' वृक्ष के फूलों के रंग के (अति लाल) अधर; मुत्तम् मूरल्—मुक्ता-सम दन्तपंक्ति; मुऱुवलार्–मन्दहास (इनके साथ शोभायमान) स्त्रियों के; मुकङ्कळ् ऍऩ्ऩुम्–मुखरूपी; तिरु किळर् कमलम् पोतिल्–शोभायुक्त कमल के फूलों पर; तीट्टिय किटन्त–(रहनेवाली) पैनाई गई; कूर्वाळ्–तीक्ष्ण तलवारें; नॅरुक्कु इटै अऱुक्कुम्–(हमारी) भीड़ को बीच से काट लेंगी; नीविर् नीङ्कुमिऩ्–तुम लोग हटो; नीङ्कुम्–हटो; ऍऩ्ऱु ऍऩ्ऱु–ऐसा कहते हुए; अकल पोवार्–दूर हट जाते। ८६४

(पुरुषों का एक दल खड़ा है। स्त्रियाँ आती हैं। तब पुरुष शिष्टाचारवश मार्ग छोड़कर अलग हट जाते हैं। कवि की उत्प्रेक्षा देखिये।) सूर्य के समान तेजोमय रूपवाले पुरुष, "काँटेदार" मुरुङ्गै वृक्ष के फूलों के समान लाल अधर, मुक्ता के समान दंतपंक्ति और मन्दहास— इनके साथ मनोरम लगनेवाली स्त्रियों के सुन्दर कमल-पुष्पों के समान मुखों में जो तीक्ष्ण तलवारें (यानी आँखें) हैं, वे हमारी भीड़ को बीच से चीरते हुए चली जायँगी; इसलिए हट जाओ; हट जाओ, रास्ता दे दो! यह कहते हुये हट जाते हैं। ८६४

नीन्दरु नॅऱियि ऩुऱ्ऱ नॅरुक्किऩाऱ् चुरुक्कुण् डऱ्ऱुक्
कान्दिऩ मणियु मुत्तुम् जिन्दिऩ कलाबम् जूऴ्न्द
पान्दऴि ऩल्हु लार्दम् परिपुरम् बुलम्बु पादप्
पून्दऴि रुऱैप्प माऴ्हिप् पोक्करि दॅऩ्ऩ ऩिऱ्पर् 865

नॅऱियिऩ् उऱ्ऱ–मार्ग में बनी; नीन्त अरु–दुर्गम; नॅरुक्किऩाल्–भीड़ से; चुरुक्कुण्टु–उलझकर; अऱ्ऱु–कटने से; काऩ्तु इऩम–दीप्त और समूह के; मणियुम् मुत्तुम्–रत्न और मोती; चिन्तिऩ–जो गिरकर छितरे पड़े थे वे; कलापम् चूऴ्न्त–कलाप वलयित; पान्तळिऩ् अल्कुलार् तम्—सर्प-फन समान वरांगवाली स्त्रियों के; परिपुरम् पुलम्पु—नूपुर-झंकृत; पातम् पू तळिर्—चरण-पल्लवों में; उऱैप्प–चुभते हैं, इसलिए; माऴ्कि–लड़खड़ाकर; पोक्कु अरितु ऍऩ्ऩ–जाना असम्भव है, कहकर; निऱ्पार्–खड़ी हो जाती हैं। ८६५

मार्ग में इतनी भीड़ है कि आपस में टकराते वक्त रत्नहार, मोती की मालाएँ आदि आपस में उलझकर कट जाती हैं और कांतियुक्त रत्न

और मोती छितरे पड़े हैं। स्त्रियाँ, जिनकी कमर को कलाप (सोलह लड़ियोंवाली करधनी) घेरकर, उनके सर्पफन के समान जघन को अलंकृत कर रहे हैं और जिनके पैरों पर नूपुर झंकृत हो रहे हैं, जब मार्ग में जाती हैं तो वे रत्न और मोती उनके पैरों में चुभते हैं और अपने पैरों को बचाते-बचाते लड़खड़ा जाती हैं। आगे जाना कठिन है, यह कहती हुयी वे खड़ी हो जाती हैं। ८६५

कॊऱ्ऱनल् लियङ्ग ळॆङ्गुङ् कॊण्डलिऱ् ऱुवैप्पप् पण्डिप्
पॆऱ्ऱवे ऱन्ऩप् पुळ्ळिऱ् पेदयर् वॆरुवि नीङ्ग
मुऱ्ऱुऱु परङ्ग ळॆल्ला मुऱैमुऱै पाशत् तोडुम्
पऱ्ऱऱ वीशि येहि योहियिऱ् परिवु तीऱ्न्द 866

कॊऱ्ऱम् नल् इयङ्कळ्–श्रेष्ठ विजय वाद्य; ऍङ्कुम्–चारों ओर; कॊण्टलिऩ् तुवैप्प–मेघों के समान बजते हैं, तब; पण्टि पॆऱ्ऱ एऱु–छकड़ों में जुते बैल; मुऱ्ऱु उऱु–पूर्णरूप से चढ़ाये गए; परङ्कळ् ऍल्लाम्–बोझ (पदार्थ) सब; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; पाचत्तोटुम्–रस्सी के साथ; पऱ्ऱु अऱ वीचि–बन्धन तोड़ फेंककर; पेतैयऱ–स्त्रियाँ; वॆरुवि–डरकर; अऩ्ऩम् पुळ्ळिऩ्–हंस पक्षियों के समान; नीङ्क–अलग हो जायँ, ऐसा; एकि–दौड़कर; योकियिऩ्–योगियों की तरह; परिवु तीऱ्न्त–संकटमुक्त हुए। ८६६

अनेक श्रेष्ठ और प्रतापी वाद्य, मेघों के समान गर्जन के साथ बज उठते थे। इसलिए छकड़ों में जुते बैलों ने अपना बंधन तोड़कर सारे बोझों को छितरा दिया। अब वे बंधनमुक्त योगियों के समान, स्त्रियों को भयातुर कर भगाते हुए भागे और स्वच्छन्द तथा भारनिवृत्त हो गये। (योगी का उपमान चिन्तन योग्य है। योगी सांसारिक भार उतारकर फेंक देते हैं। विशेषकर स्त्रियों का सम्पर्क छोड़ देते हैं। फिर वे सभी तरह के भवबंधन से छूटकर मुक्तजीवन बिताते हैं।)। ८६६

काऱ्चॆऱि वॆहप् पाहर् कार्मुह वुण्डै पारा
वाऱ्च्चॆऱि कॊङ्गै यन्ऩ कुम्बमु मरुप्पुङ् गाणप्
पाऱ्चॆऱि कडलुट् टोऩ्ऱुम् पणैक्कैमाल् याऩै यॆन्ऩ
नीऱ्च्चिऱै पऱ्ऱि यॆऱा निन्ऱकुन् ऱऩैय वेऴम् 867

कुऩ्ऱु अऩैय वेऴम्—पर्वत-सम (कुछ) गज; नीर् चिऱै पऱ्ऱि–जलाशय में पैठकर; पाकर्–पीलवानों के; काल् चॆऱि वेकम्—वायु-वेग से; कार्मुकम् उण्टै–कमान से प्रेषित मट्टी के गोलों (गुलेलों) की; पारा–परवाह न करते; वार् चॆऱि कॊङ्कै अऩ्ऩ–चोली के अन्दर कसे कुचों के समान; कुम्पमुम्–कुम्भों और; मरुप्पुम्–दाँतों को; काण–बाहर प्रकट करते हुए; पाल् चॆऱि कटलुळ् तोऩ्ऱुम्–क्षीरसागर से निकल आनेवाले; पणै कै माल् याऩै ऍऩ्ऩ–मोटी सूँड़वाले, उत्तम (ऐरावत) गज के समान; एऱा–बिना तीर पर चढ़े; निऩ्ऱ–(जल में ही) खड़े रहे। ८६७

(बैलों का हाल देखा; उधर गजों का हाल देखिये।) गिरि के

समान वे हाथी जलाशय देखकर उसमें जाकर पैठ जाते हैं। महावत वेग के साथ कमानों से मिट्टी के गोलों (गुलेलों) से मारते हैं। वे हाथी उनकी परवाह नहीं करते। उन्नत कुचों के समान अपने कुंभों और दाँतों (भर) को जल के बाहर प्रकट होने देते हुए सुख से पैठे रहते हैं। किनारे आने का नाम ही नहीं लेते। जलमग्न वे हाथी तब क्षीरसागर से निकले ऐरावत गज के समान दीखते हैं। ८६७

अऱलियऱ् कूऩ्दल् वाट्क णमुदुहु कुदलैच् चॅव्वाय्
विऱलिय रोडु नल्याऴ्च् चॅयिरियर् पुरवि मेलार्
नऱैशॅविप् पॅय्वा रॅऩ्ऩ नैवळ मुऴुदुम् पाडि
मुऱैमुऱै नणुहप् पोऩार् किऩ्ऩर मिदुन मॉप्पार् 868

किऩ्तरम् मितुऩम् ऑप्पार्–किन्नर मिथुन-सम; अऱल् इयल् कूऩ्तल्–काले बालू के समान केश; वाळ् कण्—तलवार-सी आँखें; अमुतु उकु–अमृत बरसानेवाले; कुतलै–मधुर भाषण करनेवाला; चॅव् वाय्–लाल मुख, इनसे युक्त; विऱलियरोटु–गायिकाओं सह; नल् याऴ् चॅयिरियर्–श्रेष्ठ वीणावादक गवैये; पुरवि मेलार्–अश्वों पर सवार होकर; नऱै चॅवि पॅय्वार् ऍऩ्ऩ–श्रवणों में मधु ढालते; नै वळम् मुऴुतुम्–"पालै" राग सभी (मार्गगमन सम्बन्धी राग); मुऱै मुऱै पाटि–यथाक्रम गाते हुए; नणुक पोऩार्—पास-पास गये। ८६८

वीणावादक गवैये और गायिकाएँ किन्नर मिथुनों के समान गाकर मनोरंजन करते हुये गये। उन "विऱलि" (वंदिनी गायिका) स्त्रियों के बाल काले बालू के समान थे। आँखें तलवारों के समान तीक्ष्ण थीं। वे सुधा सम मधुर-भाषिणीं थीं। ये और बाणजाति के वे वीणावादक गवैये अश्वों पर सवार होकर 'पालै' के विविध रागों के गाने गाते जा रहे थे। (बालों को बालू से उपमित करने की प्रथा है। नदी के तल में जब जल नहीं है और तल गीला है तब देख सकते हैं कि बालू का रंग और लहरों का-सा उनका तल वेणी के समान लगता है। "विऱलियर्" और "चॅयिरियर" विशेष जातियों का स्त्री और पुरुष नाम है। 'पालै' (यानी 'रेगिस्तान') तमिऴ साहित्यिक काव्य शास्त्र में मार्ग गमन का द्योतक है। प्रस्थान और प्रवास सम्बन्धी गानों के लिए जो तानें निर्धारित हैं वे 'पालै पण्' कहलाती हैं।) किन्नर देवजातियों में एक है। (कभी-कभी वह विशेष पक्षी जाति भी बताया जाता है।)। ८६८

अरुविपॅय् वरैयिऱ् पॉङ्गि यङ्गुश निमिर वॅङ्गुम्
इरियलिऱ् चऩ्ऩङ्गळ् चिन्द विळङ्गळिच् चिऱुकण् याऩै
वरिशिऱैत् तुम्बि योट्टम् वारमदन् दोय्न्दु मादर्
शुरिकुऴऱ् पडिय वेऱुम् पिडिययुन् दॉडर्न्दु शॅल्व 869

इळम् कळि–तरुण और मस्त; चिऱु कण् याऩै–छोटी आँखोंवाले कलभ;

अङ्कुचम् निमिर–अंकुश को सीधा करके (बेकार कर); अरुवि पॅय् वरैयिऩ्–झरनों को बहानेवाले गिरियों के समान; पॉङ्कि–बिफरकर; चऩङ्कळ्–जन; इरियलिऩ् ऍङ्कुम् चिन्त–भागकर तितर-बितर हो जायँ; वरि चिऱै–धारीदार पंखों के; तुम्पि ईट्टम्–भ्रमरों के समूह; वार् मतम् तोय्न्तु–ढलनेवाले मदजल में पैठकर; मातर् चुरि कुऴल् पटिय–(फिर) स्त्रियों के घुँघराले बालों पर जा ठहर जायँ, ऐसा; एऱुम् पिटियै–(स्त्रियों से) आरोहित हथिनियों को; तॉटर्न्तुम् चॅल्व–अनुसरण करते गये। ८६९

(एक मत्त हाथी की करतूत देखिये।) मत्त गज के बलात खींचते हुए जाने से अंकुश अपनी वक्रता खोकर सीधा हो गया और बेकार भी। हाथी के मस्तक से मदजल नदियों के समान बह रहा था। तब वह झरनों सहित पर्वत के समान लगता था। उसको देखकर सभी लोग डरकर तितर-बितर हो गये। भ्रमर उस मदजल पर बैठकर उठे और स्त्रियों के घुँघराले केशों पर बैठे क्योंकि वह उसी हथिनी का पीछा करने लगा जिस पर स्त्रियाँ सवार होकर जा रही थीं। ८६९

निऱैमदित् तोऱ्ऱङ् गण्ड नीनॅडुङ् गडलि दॅऩ्ऩ
अऱैपऱै तुवैप्पत् तेरु माऩैयु माडऩ् मावुम्
कऱैहॅऴु वेऱक णारु मैन्दरुङ् कविऩि यॉल्लै
नॅऱियिडैप् पडर वेन्द ऩेयमङ् गैयरॅ ऴुन्तार् 870

निऱै मति–पूर्णचन्द्र के; तोऱ्ऱम् कण्ट–उदयदर्शी; नील् नॅटु कटल्–नीला विशाल समुद्र; इतु ऍऩ्ऩ–यह है ऐसा; अऱै पऱै तुवैप्प–पिटकर बजनेवाले (चमड़े-मढ़े) वाद्य बज उठे; तेरुम् आऩैयुम्–रथ और गज; आटल् मावुम्–विजयी अश्व; कऱै कॅऴु–(रक्त) चिह्न लगे; वेल् कण्णारुम्–भाले के समान आँखोंवाला स्त्रियाँ; मैन्तरुम्–पुरुष लोग, सब; कविऩि–मनोहर ढंग से मिलकर; नॅऱि इटै–मार्ग पर; ऑल्लै–शीघ्र; पटर–जाते हैं, तब; वेन्तऩ् नेयम् मङ्कैयर्–चक्रवर्ती की प्रिय महिषियाँ; ऍऴुन्तार्–निकलीं (रवाना हुईं)। ८७०

(अब महिषियों की बारी है।) पूर्णचन्द्र के उदय पर जैसे नीला समुद्र गरज उठता है वैसे भेरियाँ आदि वाद्य पिटकर बज उठे। रथ, गज, तुरग, रक्त के धब्बे सहित वेल् (शक्ति) के समान तीक्ष्ण आँखोंवाली स्त्रियाँ और पुरुष ये सब बड़े सुन्दर ढंग से मिलकर मार्ग पर आगे गये। तभी चक्रवर्ती की प्रिय महिषियाँ रवाना हुयीं। ८७०

पॉय्हयङ् गमलक् काऩिऱ् पॉलिवदो रऩ्ऩ मॅऩ्ऩक्
कैहयर् वेन्दऩ् पावै कणिहैय रणियि नीट्टम्
ऐयिरु नूऱु चूऴ वाय्मणिच् चिविकै तऩ्मेल्
दॅय्वमङ् गैयरु नाणत् तेऩिशै मुरलप् पोऩाळ् 871

कैकयर् वेन्तऩ् पावै–केकय राजा की तनया; कणिकैयर् अणियिऩ्–दासियों की श्रेणियों का; ईट्टम्–समूह; ऐ इरु नूऱु चूऴ–पाँच के दो सौ (हज़ार) साथ आये;

आय् मणि–चुने हुए रत्न जड़े; चिविकै तऩ् मेल्–शिविका पर; पॉय्कै–तडाग में विकसित; अम् कमलम्–सुन्दर कमलों के; काऩिल्–वन में; पॉलिवतु–शोभायमान; ओर् अऩ्ऩम् ऍऩ्ऩ–एक हंस के समान; तॅय्व मङ्कैयरुम् नाण–देवांगनाओं को भी लजाते हुए; तेऩ् इचै मुरल–मधुभ्रमरों के श्रुति मधुर राग गाते; पोऩाळ्–गई। ८७१

(पहले केकय राजकुमारी की चर्चा है।) एक सहस्र दासियाँ गयीं। उनके बीच में केकयराजतनया चुने हुये रत्नों से सज्जित एक शिविका पर बैठकर गयीं। कमलवन के मध्य एक हंस के समान, देवांगनाओं को भी शान व मान में हराती हुयी रानी कैकेयी जा रही थीं। ८७१

विरिमणित् तार्हळ् पूण्ड वेशरि वॅरिनिऱ् ऱोऩ्ऱुम्
अरिमलर्त् तडङ्ग णल्ला रायिरत् तिरट्टि चूऴ्क्
कुरुमणिच् चिविहै तऩ्मेऱ् कॉण्डलिऩ् मिऩ्ऩि ऍऩ्ऩ
इरुवरैप् पयन्द नङ्गै याऴिशै मुरलप् पोऩाळ् 872

विरि–विस्तृत; मणि तार्कळ्–रत्न दाम; पूण्ट–पहने हुए; वेचरि वॅरित्तिल्–खच्चरों पर; तोऩ्ऱुम्–बैठी दिखाई देनेवाली; अरि–लाल डोरों सहित; मलर्–कुमुद-सम; तट कण्–विशाल आँखों की; आयिरत्तु इरट्टि नल्लार्–हज़ार के दो (दो सहस्र) स्त्रियों के; चूऴ–घेरते आते; कुरु–रंगीन; मणि–रत्नमय; चिविकै मेल्–शिविका पर; कॉण्टलिऩ् मिऩ्–मेघ में बिजली; इतु ऍऩ्ऩ–(यह है, ऐसा) के समान; याऴ् इचै मुरल–वीणावादन के होते; इरुवरै पयन्त नङ्कै–दो पुत्रों की प्रसविनी (सुमित्रा) पॉऩाळ्–गईं। ८७२

मणियों की लड़ियों की बनी मालाओं से अलंकृत खच्चरों पर दो सहस्र दासियाँ, जिनकी आँखें लाल डोरों के साथ कुमुद के समान शोभायमान थीं, जा रही थीं। उनके बीच रत्नमय शिविका में मेघ मध्य बिजली के समान लक्ष्मण और शत्रुघ्न दो पुत्रों की प्रसविनी देवी सुमित्रा गयीं। वीणा वादन हो रहा था और वे उसका आस्वादन करती हुई जा रही थीं। ८७२

वॅळ्ळॅयिऱ् ऱिलवच् चॅव्वाय् मुहत्तैवॅण् मदिय मॅऩ्ऱु
कॉळ्ळयिऱ् ऱिरळ्वाऩ् मीऩ्गळ् कुऴुमिय वऩैय वूर्दित्
तॅळ्ळरिप् पाणडिऱ् पाणिच् चॅयिरिय रिशैत्तेऩ् शिन्द
वळ्ळलैप् पयन्द नङ्गै वाऩवर् वणङ्गप् पोऩाळ् 873

वॅळ् ऍयिऱु–सफ़ेद दाँत; इलवम् चॅव्वाय्–सेमर के समान मुख (अधर) शोभित; मुकत्तै–मुख को; मतियम् ऍऩ्ऱु–पूर्णचन्द्र समझ; कॉळ्ळैयिल् तिरळ्–अधिकता से जमा हुए; वाऩ् मीऩ्कळ्–आकाश के तारे; कुऴुमिय–एकत्र हुए से; अऩैय–दिखनेवाले; उर्ति–यान पर; वळ्ळलै पयन्त–प्रभु को प्रसव करनेवाली; नङ्कै–देवी कौसिल्या; तॅळ्–स्वच्छ; अरि–कोमल; पाण्टिल् पाणि—ताल-लय के साथ गाने में चतुर; चॅयिरियर्–गवैयों के; इचै तेऩ चिन्त–संगीतरूपी शहद बहाते; वाऩवर् वणङ्क–देवों के स्तुति करते; पोऩाळ्–गईं। ८७३

श्वेत दंतपंक्ति और सेमर के लालफूल की-सी अरुण अधरोंवाली कौसल्या देवी एक सुन्दर यान पर बैठी जा रही थीं। उनका यान चन्द्र के समान था और उसमें जड़ित मणियाँ नक्षत्रों के समान थीं। वह ऐसा लगता था मानों नक्षत्र चन्द्र समझकर इनको घेर आये हों। प्रभु श्रीराम की माता के साथ श्रेष्ठ गवैये, जो ताल लय शुद्ध रीति से संगीत सुनाने में कुशल थे; गाते हुए गये। देवगण माता कौसल्या की स्तुति कर रहे थे। ८७३

शॅङ्गयिऩ् मञ्ञै यऩ्ऩञ् जिऱुकिळि पूवै पावै
शङ्गुऱै कऴित्त वऩ्ऩ चामरै मुदल ताङ्गि
इङ्गल दॅण्णुङ् गाऩ्मऱ् ऱॅऴुदिरै वळाहत् तङ्गुम्
मङ्गय रिल्लै यॅऩ्ऩ मडऩ्दयर् मरुङ्गु पोऩार् 874

ऍण्णुम् काल्–समीक्षण करने पर; ऍऴु तिरै वळाकत्तु–सात समुद्रों से घिरे इस भूमण्डल में; इङ्कु अलतु–यहाँ (अयोध्या) के सिवा; मऱ्ऱु ऍङ्कुम्–अन्यत्र कहीं; मङ्कैयर् इल्लै–स्त्रियाँ (हैं ही) नहीं; ऍऩ्ऩ–इस कथन को साबित करते हुए; मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; चम्कैयिल्–लाल (कोमल) हाथों में; मञ्ञै–मोर; अऩ्ऩम्–हंस; चिऱु किळि–छोटे शुक; पूवै–सारिकाएँ; पावै–प्रतिमाएँ; चङ्कु उऱै कऴित्त अऩ्ऩ–शंखों के समान जो अभी-अभी आवरण से बाहर निकाले गये हों; चामरै मुतल–चामर आदि; ताङ्कि–धारण करके; मरुङ्कु पोऩार्–रानियों के पार्श्व में गईं। ८७४

अनेक स्त्रियाँ उनके पार्श्व में जा रही थीं। उनकी संख्या गिन कर देखें तो ऐसा कहा जा सकता है कि सप्तसमुद्रवलयित भूमंडल में अन्यत्र कहीं स्त्रियाँ हैं ही नहीं। वे अपने हाथों में मोर, हंस, छोटे शुक, सारिकाएँ, प्रतिमाएँ, नवीन शंख के समान श्वेत चामर आदि पदार्थ लेती गयीं। ८७४

कारण मिऩ्ऱि यॅयुङ् कऩलॅऴ विऴिक्कुङ् गण्णार्
वीरवेत् तिरत्तार् ताऴ्न्तु विरिन्तकञ् जुकत्तु मॅय्यार्
तारणि पुरवि मेलार् तलत्तुळार् कदित्त शॊल्लार्
आरणङ् गऩैय माद रडिमुऱै कात्तुप् पोऩार् 875

कारणम् इऩ्ऱि येयुम्–अकारण ही; कऩल् ऍऴ विऴिक्कुम्–अंगारे उगलते हुए तरेरनेवाली; कणणार्–आँखों के; वीरम् वेत्तिरत्तार्–वीर वेत्रधर; ताऴ्न्तु विरिन्त–आपादलम्बित और ढीले; कञ्चकत्तु मॅय्यार्–अँगरखा पहने शरीरोंवाले; कतित्त चॊल्लार्–डाँटते हुए बोलनेवाले, (कंचुकी, अनेक); तार् अणि पुरवि मेलार्–हारों से अलंकृत अश्वों पर सवार; तलत्तु उळ्ळार्–और भूमि पर (पैदल) चलनेवाले; मुऱै–क्रम से; आर् अणङ्कु अऩैय–सुन्दर देवांगनाओं के सदृश; मातर् अटि–रानियों के चरणतल में; कात्तु पोऩार्–संरक्षण करते हुए गये। ८७५

उनकी रक्षा में कंचुकी भी जा रहे थे। उनकी आँखें अकारण क्रोध

के अंगारे उगलनेवाली थीं। उनके हाथ में वीरवेत्र थे। वे आपादलंबित और ढीले अंगरखे पहने हुये थे। डांट डपट से ही बात करते थे। उनमें अश्वों पर सवार भी थे, पैदल चलनेवाले भी। वे देवांगनाओं के समान उन रानियों की चरण-सेवा में उनकी रक्षा करते हुये जा रहे थे। ८७५

कूऩॊडु कुऱळुम् जिऩ्दुम् जिलदियर् कुऴामुङ् गॊण्ड
पाऩिऱप् पुरवि यऩ्ऩप् पुळ्ळॆऩप् पारिऱ् चॆल्लत्
तेऩॊडु ञिमिऱुम् वण्डुन् दुम्बियुम् बन्दर् चॆय्यप्
पूनिऱै कून्दऩ् मादर् पुडैमडप् पिडियिऱ् पोऩार् 876

कूऩॊटु कुऱळुम् चिऩ्तुम्–कुबड़े, "कुरळ्" और "चिन्त" ठिगने और बौने; चिलतियर् कुऴामुम्–दासियों के समूह; कॊण्ट–ढोनेवाले; पाल् निऱम् पुरवि–दुग्धवर्ण अश्व; अऩ्ऩप्पुळ् ऒऩ्ऩ–हंस पक्षी के समान; पारिल् चॆल्ल–भूमि पर आये; तेऩॊटु–मधु-भ्रमर; ञिमिऱुम्–अलि; वण्टुम्–अन्य भौंरे; तुम्पियुम्–और काले भ्रमर; पन्तर् चय्य–ऊपर वितान सा बनाते हुए; पू निऱै कून्तल् मातर्–पुष्पालंकृत कुंतलवाली स्त्रियाँ; पुटै–पार्श्व में; मट पिटियिल्–छोटी आयु की हथिनियों पर; पोनार–गईं। ८७६

कुबड़े, बौने, ठिंगने, दासियाँ, आदि सभी दुग्धवर्ण अश्वों पर, जो हंसों के समान भूमि पर चल रहे थे, बैठकर गये। उनके पार्श्व में अनेक स्त्रियाँ छोटी आयु की हथिनियों पर सवार हो, जा रही थीं। उनके केशों पर फूल सजे थे और उन फूलों के ऊपर मधुभ्रमर, अलिभ्रमर और काले भौंरे वितान सा बनाते हुये मँडरा रहे थे। ८७६

तुप्पिऩिऩ् मणियिऱ् पॊऩ्ऩिऱ् चुडर्मर हदत्तिऩ् मुत्तिऩ्
ऒप्पऱ वमैत्त वैय मोवियम् पोल वेऱि
मुप्पदिऱ् ऱिरट्टि कॊण्ट वायिर मुहिऴ् मॆऩ् कॊङ्गैच्
चॆप्परुन् दिरुवि ऩल्लार् तॆरिवयर् शूऴप् पोऩार् 877

मुकिऴ् मॆऩ् कॊङ्कै–(कमल) कली से कोमल स्तनोंवाली; चॆप्प अरु–अवर्ण्य; तिरुविऩ् नल्लार्–लक्ष्मी से भी अधिक श्रेष्ठ; मुप्पतिऱ्ऱु इरट्टि कॊण्ट–तीस के दुगुने; आयिरम्–(साठ) सहस्र; तॆरिवैयर्–कोमलांगियाँ; तुप्पितिऩ्–प्रवाल से; मणियिऩ्–माणिक से; पॊऩ्ऩिऩ्–स्वर्ण से; चुटर् मरकतत्तिऩ्–कान्तिमान मरकत से; मुत्तिऩ्–मोतियों से; ऒप्पु अऱ–अनुपम रीति से; अमैत्त वैयम्–बनी बन्द गाड़ियों में; ओवियम् पोल एऱि–चित्र के समान चढ़कर; चूऴ–(रानियों को) घेरती हुई; पोऩार्–चलीं। ८७७

इनके अलावा साठ सहस्र स्त्रियाँ प्रतिमाओं की तरह बन्द गाड़ियों पर सवार होकर जा रही थीं। वे कमलकलियों के समान स्तनोंवाली थीं और देवी लक्ष्मी से भी अधिक सुष्ठ थीं। उनकी गाड़ियाँ, प्रवाल, मणि-माणिक, स्वर्ण, कांतिमान मरकत, मोती आदि से सज्जित थीं और अनुपम

रीति से अति सुन्दर रची गयी थीं। (ये शायद चक्रवर्ती की अन्य पत्नियाँ थीं।)। ८७७

शॅविवयि ऩमुदक् केळ्वि तॆविट्टिऩार् तेवर् नाविऩ्
अविहयि ऩळिक्कु नीरा रायिरत् तिरट्टि शूऴ्क्
कविहयि ऩीऴऱ् कऱ्पि ऩरुन्ददि कणवऩ् वॆळ्ळैच्
चिविहयि ऩऩ्ऩ मूरुऩ् दिशैमुह ऩॆऩ्ऩच् चॆऩ्ऱाऩ् 878

चॆवि वयिऩ्–श्रवणों से; अमुतम् केळ्वि–अमृत-सम श्रुति को; तॆविट्टिऩार्–सुन-सुनकर जो तृप्त हो चुके हैं; तेवर् नाविऩ् अवि–देवों के जिह्वा से आस्वाद्य हवि को; कैयिऩ्–अपने हाथ से; अळिक्कुम् नीरार्–(यज्ञाग्नि द्वारा) दिलाने की योग्यता रखनेवाले; आयिरत्तु इरट्टि–सहस्र के दुगुने; चूऴ–घेरते आये; कऱ्पिऩ् अरुन्तति–सती अरुन्धती के; कणवऩ्–पतिदेव; अऩ्ऩम् ऊरुम्–हंसवाहन; तिचै मुकऩ्–दिशामुख (ब्रह्मा); ऎऩ्ऩ–के समान; वॆळ्ळै चिविकैयिऩ्–श्वेत शिविका पर; कविकैयिऩ्–नीऴल्–छत्र की छाया में; चॆऩ्ऱाऩ्–गये। ८७८

सती अरुन्धती के पति वसिष्ठजी रवाना हुये। उनके साथ दो सहस्र ब्राह्मण गये जिनके कान श्रुतियाँ सुनते-सुनते तृप्त हो चुके थे; और जो देवताओं को अपने हाथ से अग्निमुखेण हवि देनेवाले यज्ञ करने में दक्ष थे। वसिष्ठजी एक मोती की श्वेतवर्ण शिविका में हंसवाहन ब्रह्मा के समान लगते थे। ८७८

पॊरुहळि ऱिवुळि पॊऱ्ऱेर् पॊलङ्गऴऱ् कुमरर् मुऩ्ऩीर्
अरुवरै शूऴ्न्द दॆऩ्ऩ वरुहुमुऩ् पिऩ्ऩुऱ् जॆल्लत्
तिरुवळर् मार्बर् दॆय्वच् चिलैयिऩर् तेरर् वीरर्
इरुवरु मुऩिपिऩ् पोऩ विरुवरु मॆऩ्ऩप् पोऩार् 879

पॊरु कळिऱु–युद्धगज; इवुळि–अश्व; पॊऩ् तेर्–स्वर्णरथ; पॊलम् कऴल् कुमरर्–स्वर्ण-पायलधारी पदाति वीर; मुऩ्ऩीर्–समुद्र; अरु वरै–दुर्गम पर्वत को; चूऴ्न्ततु ऎऩ्ऩ–घेर गया हो ऐसा; अरुकु–पार्श्व में; मुऩ् पिऩ्ऩुम्–आगे और पीछे; चॆल्ल–जाते हैं; तिरुवळर् मार्पर–श्रीशोभित वक्षवाले; तॆय्वम् चिलैयिऩर्–दिव्य धनुर्धर; वीरर्–प्रतापी; इरु वरुम्–(भरत और शत्रुघ्न) दोनों कुमार; मुऩि पिऩ् पोऩ–(जो विश्वामित्र) महर्षि के पीछे गये; इरुवरुम् ऎऩ्ऩ–उन दोनों (श्रीराम और लक्ष्मण) के समान; तेरर् पोऩार्–रथ पर सवार होकर गये। ८७९

(भरत और शत्रुघ्न की चर्चा है) युद्ध गज, अश्व, स्वर्णरथ और स्वर्णपायलधारी पदाति वीर—ये चार सेनाएँ उनको घेरकर जा रही थीं। भरत और शत्रुघ्न श्रीशोभित विशाल वक्षवाले थे। उनके धनु दिव्य धनु थे। उनके रथ दुर्गम पर्वत के समान थे और सेनाएँ उनको घेरे रहनेवाले समुद्र के समान थीं। वे वीर कुमार बिलकुल उन श्रीराम और लक्ष्मण के समान थे, जो विश्वामित्र के पीछे गये थे। ८७९

नित्तिय नियम मुऱ्ऱि नेमियाऩ् पादञ् जॆऩ्ऩि
वैत्तपिऩ् मऱैवल् लोर्क्कु वरम्बरु मणियुम् पॊऩ्ऩुम्
पत्तिया ऩिरैयुम् पारुम् परिवॊडु नल्हिप् पोऩाऩ्
मुत्तणि वयिरप् पूणाऩ् मङ्गल मुहिऴ्त्त नऩ्ऩाऴ् 880

मुत्तु–मोती; अणि वयिरम्–सुन्दर हीरे; पूणाऩ्–इनके बने आभरणोंवाले (चक्रवर्ती); मङ्कलम् मुकिऴ्त्तम् नल् नाऴ्–मंगल मुहूर्त के दिन में; नित्तिय नियमम् मुऱ्ऱि–नित्यानुष्ठान पूरा करके; नेमियाऩ् पातम्–चक्रपाणि (अपने कुल देवता) के पैरों को; चॆऩ्ऩि वैत्त पिऩ्–अपने सिर पर धारण करने के अनन्तर; मऱै वल्लोर्क्कु—वेद-विद्वानों (ब्राह्मणों) को; वरम्पु अऱु मणियुम्–अपार रत्न; पॊऩ्ऩुम्–स्वर्ण; पत्ति आऩ् निरैयुम्–पंक्तियों में गायों के समूह; पारुम्–और भूमि; परिवॊटुम् नल्कि–प्रेम के साथ दान करके; पोऩाऩ्–चले । ८८०

(अब चक्रवर्ती ने भी प्रस्थान किया) उस दिन, जिसमें प्रस्थान का मंगल मुहूर्त पड़ता था चक्रवर्ती ने अपना नित्यकर्मानुष्ठान क्रम से पूरा किया। चक्रपाणि श्रीरंगनाथ उनके कुलदेवता थे। (ब्रह्मा से इक्ष्वाकु महाराज को वह विग्रह मिला और तब से वह अयोध्या में पूजित होता आता था) महाराज ने उनके पैरों को अपने सिर पर धारण किया (यानी दण्डवत की)। फिर वेदज्ञ विप्रों को अपार रत्न, मणि, माणिक्य, स्वर्ण, पंक्तियों में गायों के समूह, और भूमि—यह सब श्रद्धा के साथ दान दिया। खुद मोतियों और रत्नों के आभूषणों से अलंकृत होकर चल पड़े। (दान देना मंगलदायक रस्म है। मोती और हीरे शुभालंकार हैं।)। ८८०

इरुपिऱप् पाऴ रॆण्णा यिरर्मणिक् कलश मेन्दि
अरुमऱै वरुक्क मोदि यऱुहुनीर् तॆऴित्तु वाऴ्त्त
वरऩ्मुऱै वन्दार् कोडि मङ्गयर् मऴलैच् चॆव्वाय्प्
परुमणिक् कलाबत् तार्पल् लाण्डिशै परविप् पोऩार् 881

ऎॆण्णायिरर्–आठ सहस्र; इरु पिऱप्पाऴर्–द्विज; मणिकलचम् एन्ति–सुन्दर पूर्णकुम्भ लेकर; अरु मऱै वरुक्कम् ओति–श्रेष्ठ वेदमन्त्र स्तवन गान करते हुए; अऱुकु नीर् तॆऴित्तु–दुर्वादल से, मन्त्रित जल लेकर चक्रवर्ती पर प्रोक्षण कर; वाऴ्त्त–आशीर्वाद देते; वरल् मुऱै वन्तार्–वन्दी परम्परा में आये; मऴलै चॆव्वाय्–मधुर तुतली बोली बोलनेवाले लाल अधरों की; परुमणि कलापत्तार्–स्थूल मणियों के कलाप से अलंकृत; कोटि मङ्कैयर्–करोड़ स्त्रियाँ; पल्लाण्टु इचै–जयजीव के गीत; परवि पोऩार्–गाती हुई चलीं। ८८१

आठ सहस्र द्विजों ने पवित्र जल भरे रत्नकलश हाथों में लेकर वेदमंत्र पढ़े। उस तरह मंत्रित जल को पवित्र दूर्वादल द्वारा लेकर उन्होंने चक्रवर्ती पर प्रोक्षण किया। फिर वन्दिनी के कुल में आयी करोड़ सुन्दरी स्त्रियों ने, जो मधुरभाषी लाल मुखोंवाली और कलापालंकृत थीं।

"जयजीव" के गीत गाये और राजा की स्तुति की। (मेखला शायद वस्त्र के अंदर और कलाप आदि वस्त्रों के ऊपर पहने जाते हैं)। ८८१

कण्डिल ऩॅऩ्ऩै यॅऩ्बार् कण्डऩ ऩॅऩ्ऩै यॅऩ्बार्
कुण्डलम् वीऴ्न्द दॅन्बार् कुरुहरि दिऩिच्चॅऩ् ऱॅऩ्बार्
उण्डुहॊ लॅऴुच्चि यॅऩ्बा रॉलित्तदु शङ्ग मॅऩ्बार्
मण्डल वेन्दर् वन्दु नॅरुङ्गिऩर् मरुङ्गु मादो 882

मण्टल वेन्तर्–अनेक मण्डलाधिप; **मरुङ्कु वन्तु**–पास आकर; **नॅरुङ्किऩर्**–जमा हो गये; **चङ्कम् ऑलित्ततु अॅऩ्पार्**–शंख बजा, कहते; **अॅऴुच्चि उण्टु कॉल्**–कहीं प्रस्थान है क्या; **अॅऩ्पार्**–कहते; **अॅऩ्ऩैक् कण्टिलऩ्**–मुझे नहीं देखा; **अॅऩ्पार्**–कहते; **अॅऩ्ऩै कण्टऩऩ्**–मुझको देखा; **अॅऩ्पार्**–कहते; **कुण्टलम् वीऴ्न्ततु**–कर्णकुण्डल गिर गये; **अॅऩ्पार्**–कहते; **इऩि कुरुकु**–अब पास जाना; **अरितु**–कठिन है; **अॅऩ्पार्**–कहते। ८८२

अनेक मंडलाधिपति चक्रवर्ती से भेंट करने आये थे। (उनको शायद विदित नहीं था कि चक्रवर्ती मिथिला जा रहे हैं) कुछ ने कहा—'शंख बजता है' तब क्या चक्रवर्ती कहीं प्रस्थान करनेवाले हैं?—कुछ ने पूछा, कुछ आगे गये पर लौट आये और बोले कि मुझपर उनकी दृष्टि पड़ी ही नहीं। कुछ राजा लोगों ने कहा कि उन्होंने मुझे निहारा। भीड़-भब्भड़ में कुछ राजाओं के कर्णकुण्डल खुलकर गिर गये। उन्होंने शिकायत की कि कुण्डल कहीं गिर गये। कुछ राजाओं ने कहा कि अब चक्रवर्ती के पास पहुँचना असाध्य है। ८८२

पॉऱ्ऱॉडि महळि रूरुम् पॉलङ्गॉडारप् पुरवि वॅळ्ळम्
शुऱ्ऱुबु कमलम् पूत्त तॉडुकडऱ् ऱिरैयिऩ् चॅल्लक्
कॉऱ्ऱवेऩ् मऩ्ऩर् शॅङ्गैप् पङ्गयक् कुळाङ्गळ् कूम्ब
मऱ्ऱॊरु कदिरो ऩॅऩ्ऩ मणिनॅडुन् देरिऱ् पोऩाऩ् 883

पॉऩ् तॉटि मकळिर्—स्वर्ण-कंकणधारिणी स्त्रियों की; **ऊरुम्**–सवारी के; **पॉलम् कॉल् तार्**–स्वर्ण के बने, हारोंवाले; **पुरवि वॅळ्ळम्**–अश्व का बड़ा दल; **चुऱ्ऱुपु**–चारों ओर घेरकर; **कमलम् पूत्त**–कमल पुष्पित; **तॉटु कटल् तिरैयिऩ् चॅल्ल**–(सगरपुत्र खनित) सागर की तरंगों के समान चलते; **कॉऱ्ऱम् वेल् मऩ्ऩर्**–विजयी भालेवाले राजाओं के; **चॅम् कै**–लाल हाथरूपी; **पङ्कयम् कुळाङ्कळ्**–कमल-समूह; **कूम्प**–बन्द होते; **मऱ्ऱु ऑरु कतिरोऩ् अॅऩ्ऩ**–अन्य एक अंशुमाली के समान; **मणि नॅटु तेरिल्**–रत्नखचित, उन्नत रथ पर; **पोऩाऩ्**–गये। ८८३

राजा दशरथ एक दूसरे विचित्र सूर्य के समान हैं। स्वर्ण कंकण-धारिणी स्त्रियाँ जिन पर बैठी हुयी जाती हैं वे स्वर्ण दामों से भूषित अश्व, सागर की तरंगों के समान चलते हैं। उन तरंगों पर स्त्रियाँ विकसित कमलों के समान हैं। दूसरी ओर विजयिनी शक्तियाँ धारण करनेवाले

राजाओं के लाल हाथरूपी कमल बंद हो जाते हैं। (यानी वे हाथ जोड़े हुये हैं, विनय प्रदर्शन के हेतु) (एक ही समय पर कुछ कमल विकसित होते हैं और कुछ अन्य कमल उन्मीलित। यही विचित्रता है) ऐसा वे एक रत्नखचित रथ पर सवार हो जा रहे थे। ८८३

आऱ्‌त्तदु विशुम्बै मुट्टि मीण्डहऩ्‌ ऱिशैह ळॆङ्गुम्
पोऱ्‌त्तदङ्‌ गॊरुवर्‌ तम्मै यॊरुवर्‌हट्‌ पुलङ्गॊ ळामैत्‌
तीऱ्‌त्तदु शॆऱिन्‌द दोडित्‌ तिरैनॆडुङ्‌ गडलै यॆल्लाम्‌
तूऱ्‌त्तदु सगर रोडुम् पहैत्तॆऩ्‌त्‌ तूळि वॆळ्ळम्‌ 884

तूळि वॆळ्ळम्–धूलि की विपुल राशि; आऱ्‌तूततु–उठ, फैलकर; विचुम्पै मुट्टि–आकाश से टकराकर; मीण्टु–लौटी; अकल्‌ तिचैकळ्‌ ऍङ्कुम्–लम्बी, दिशाओं भर में; पोऱ्‌तूततु–ढाँप गई; अङ्कु–वहाँ; ऒरुवर्‌ तम्मै ओरुवर्–एक को दूसरे की; कण्‌ पुलम्‌ कॊळ्ळामै–आँख नहीं देख सके, ऐसा; तीऱ्‌तूततु–कर दिया; चॆऱिन्‌ततु ओटि–घने रूप से जाकर; चकररोटुम् पकैत्‌ततु ऍऩ्ऩ–सगरपुत्रों से शत्रुता करती सी; तिरै नॆटु कटलै ऍल्लाम्—तरंग-संकुल विशाल सागर, सब को; तूऱ्‌तूततु–पार दिया। ८८४

धूलि की विपुल राशि उठी और उसने गजब कर दिया। वह आकाश से टकराकर लौटी; सारी दिशाओं में भरी उसने एक दूसरे को आँखों से देखना असाध्य कर दिया। फिर वह गयी, और मानो सगर-पुत्रों से वैर निबाह रही हो, उसने तरंगसंकुल विशाल समुद्र को पाट दिया। ८८४

शङ्गमुम्‌ पणैयुङ्‌ गॊम्बुन्‌ दाळमुङ्‌ गाळत्‌ तोडु
मङ्गल बेरि शॆय्‌द पेरॊलि मऴैयै योट्टत्‌
तॊङ्गलुङ्‌ गुडैयुन्‌ दोहैप्‌ पिच्चमुञ्‌ जुडरै योट्टत्‌
तिङ्गळ्‌वॆण्‌ कुडैकण्‌ डोडत्‌ तेवरु मरुळच्‌ चॆऩ्ऱाऩ्‌ 885

चङ्कमुम्–शंख; पणैयुम्–बाँसुरियाँ; कॊम्पुम्–श्रृंग; काळत्‌तोटु–काहल; ताळमुम्–ताल और; मङ्कल पेरि–मंगल भेरियाँ; चॆय्‌त पेर्‌ ऒलि–इनसे उत्पन्न बड़ा शोर; मऴैयै ओट्ट—मेघ-गर्जन को भगाता है; तॊङ्कलुम्–(मोरपंख के बने) झालर; कुटैयुम्–रेशम के आतपत्र; तोकै पिच्चमुम्–मोरपंख के छाते; चुटरै ओट्ट–धूप को भगाते; वॆण्‌कुटै कण्टु–श्वेत छत्र देखकर; तिङ्कळ्–चन्द्र; ओट–हारकर भाग गया; तेवरुम्‌ मरुळ–देव चकित हुए; चॆऩ्ऱाऩ्–(राजा इस ठाट के साथ) गये। ८८५

शंख, बाँसुरियाँ, श्रृंगियाँ, ताल, मंगलभेरियाँ, इसके नाद के सामने मेघ गर्जन डरकर भाग गया (कुछ नहीं था)। मोरपंख के झालर, रेशमी आतपत्र, मोरपंख के छाते; ये धूप को भगा देते थे (छिपा देते थे)। श्वेत छत्र के सामने चंद्र भाग गया। देव चक्रवर्ती के इतने वैभव

को देखकर चकित हो गये। इस ठाट के साथ चक्रवर्ती गये। (राजा का कूच है; इनकी विजय और शत्रुओं की हार शोभा देती है। अतः हारी हुई वस्तुओं की चर्चा है।)। ८८५

मन्दिर गीद वोदै वलम्बुरि मुळ्ङ्गु मोदै
अन्दण राशि योदै यार्त्तॅळु मुरशि ऩोदै
कन्दडु कळिऱ्ऱि ऩोदै कडिहयर् कवियि ऩोदै
इन्दिर तिरुवऩ् शॅल्ल वॅळुन्दऩ तिशैह ळॅल्लाम् 886

इन्तिर तिरुवऩ्—इन्द्र-सम श्रीमान; चॅल्ल–जाते रहे, तब; मन्तिरम् कीतम् ओतै–वेदमन्त्र के गायन का स्वर; वलम्पुरि मुळङ्कुम् ओतै–दक्षिणावर्त शंख के बजने का नाद; अन्तणर् आचि ओतै–ब्राह्मणों के मंगलाशासन की ध्वनि; आर्त्तु अॅळुम्–थर्राकर उठनेवाला; मुरचिऩ् ओतै–ढोल का नर्दन; कन्तु अटु–आलान तोड़नेवाले; कळिऱ्ऱिऩ् आतै–गजों का शब्द; कटिकैयर्–"घटिकों" का (समय का ज्ञान देनेवाले लोगों का); कवियिऩ् ओतै–कविता में वाचन का स्वर; तिचैकळ् अॅल्लाम्–सभी दिशाओं में; अॅळुन्तऩ–प्रतिध्वनित होते हुए उठे। ८८६

कितनी ही तरह के नाद सुनाई देते हैं। चक्रवर्ती इंद्र समान श्रीमंत थे। जब वे जाते रहे तब वेदमंत्र गायन का नाद, दक्षिणावर्त शंख का नाद, विप्रों का मंगलाशासन नाद, ढोलों का तुमुल नाद, गजों के खूंटे तोड़ने का और चिंघाड़ने का नाद, समय का ज्ञान दिलानेवाले घटिक जो कविता सुनाते हैं उसका नाद ये सब सारी दिशाओं में गूंजते हुए उठे। ८८६

नोक्किय दिशैह डोऱुन् दऩ्ऩये नोक्किच् चॅल्लुम्
वीक्किय कळ्ऱ्काऩ् मऩ्ऩर् विरिन्दकैम् मलर्हळ् कूप्पत्
ताक्किय कळिऱुन् देरुम् पुरवियुम् पडैञर् ताळुम्
आक्किय तूळि विण्णु मण्णुल हाक्कप् पोऩाऩ् 887

नोक्किय तिचैकळ तोऱुम्—जिस-जिस दिशा में वे देखते हैं उस-उस में; तऩ्ऩैये नोक्कि–उनको देखते हुए; चॅल्लुम्–जानेवाले; वीक्किय कळ्ल् काल् मऩ्ऩर्–कसकर बँधे पायलोंवाले राजा लोग; विरिन्त कै मलर्कळ कूप्प–खुले हस्तकमलों को उन्मीलित कर (हाथ जोड़कर); ताक्किय–परस्पर टकरानेवाले; कळिऱुम्–गज; तेरुम्–और रथ; पुरवियुम्–अश्व; पटैञर् ताळुम्–पदाति वीरों के पैर; आक्किय तूळि–(उनसे) उठी धूलि; विण्णुम्–आकाश को भी; मण्णुलकु आक्क–भूलोक बनाती रही, ऐसा; पोऩाऩ्–गये। ८८७

महाराज के साथ अन्य राजा भी जाने लगे। जहाँ कहीं चक्रवर्ती दृष्टि दौड़ाते वहाँ पायलधारी राजा लोग हाथ जोड़े दिखाई देते थे। रथ, गज, तुरग और पदाति वीरों के चलने के कारण जो धूलि उठी उसने आकाश को भी भूलोक (की तरह धूलि भरा) बना दिया। ८८७

वीररुङ् कळिऱुन् देरुम् पुरवियु मिडैन्द शेऩै
पेर्विड मिल्लै मऱ्ऱो रुलहिल्लै पॅयर्व दाह
नीरुडै याडै याळु नॅळित्तऩण् मुदुहै यॅऩ्ऱाल्
पार्पॊऱै नीक्कि ऩाऩॅऩ् ऱुरैत्तदॅप् परिशु मऩ्ऩो 888

वीररुम्–पदाति के वीर; कळिऱुम्–गज; तेरुम्–और रथ; पुरवियुम्–अश्व; मिटैन्त चेऩै–मिलित सेना; पेर्वु इटम् इल्लै–हटने के लिए स्थान नहीं है; पॅयर्वतु आक–जहाँ हटकर जाये ऐसा; मऱ्ऱु ओर् उलकु इल्लै–अन्य लोक नहीं है; नीर् उटै आटैयाळुम्–समुद्र-वसना ने भी; मुतुकै नॅळित्तऩळ्–पीठ को बल देती है; ॲऩ्ऱाल्–तो; पार् पॊऱै नीक्किऩाऩ्–भूभार निवारण किया (चक्रवर्ती ने); ॲऩ्ऱु उरैत्ततु–यह प्रशंसा-कथन; ॲ परिचु–कैसा (ठीक है)। ८८८

पदाति, गज, रथ, और तुरग की चतुरंगिनी सेना के लिए इस लोक में स्थान नहीं रहा। दूसरे लोक में जाना चाहे तो ऐसा कोई दूसरा लोक नहीं है। समुद्र-वसना पृथ्वी की पीठ पर इस सेना के भार के कारण बल पड़ गया। इस स्थिति में राजा चक्रवर्ती का "भूभार निवारक" का यशस्वी नाम कैसे उचित माना जाय? (इन्हीं की सेना का भार तो भूमि के लिए भारी हो रहा!)। ८८८

इऩ्ऩण मेहि मऩ्ऩऩ् योशऩै यिरण्डु शॅऩ्ऱाऩ्
पॊऩ्मलै पोलु मिन्दु शयिलत्तिऩ् शारल् पुक्काऩ्
मऩ्मदक् कळिऱु मादर् कॊङ्गयु मार ऩम्बुम्
तॅऩ्वरैच् चान्दु नाऱच् चेऩयु मिऱुत्त दऩ्ऱे 889

मऩ्ऩऩ्–राजा (दशरथ); इऩ्ऩणम् एकि–इस तरह जाकर; योचऩै इरण्टु चॅऩ्ऱाऩ्–दो योजन दूर गये; पॊऩ् मलै पोलुम्–स्वर्णमय (मेरु) पर्वत सदृश; इन्तु चयिलत्तिऩ् चारल् पुक्काऩ्–इन्दुशैल पर्वत की तलहटी में जा पहुँचे; मऩ्मतऩ् कळिऱुम्–मन्मथ का गज; नाऱ–फैल आया, तब; मातर् कॊङ्कैयुम्–स्त्रियों के स्तन; मारऩ् अम्पुम्–मदन के शर (फूल); तॅऩ् वरै चान्तुम्–और दक्षिणी (मलय) पर्वत के चन्दन; नाऱ–गन्ध फैलाते हैं; चेऩैयुम् इऱुत्ततु–सेना भी वहीं पड़ाव डाल गई। ८८९

चक्रवर्ती इस ठाट के साथ जाकर चंद्रशैल (एक कल्पित) पर्वत की तराइयों में पहुँचे। तब "मन्मथ का गज" कहलानेवाला अंधकार फैला। स्त्रियों के स्तन, मार के शररूपी फूल (स्त्रियों के सिरों पर के और वहाँ रहे उपवनों उद्यानों के) और मलय पर्वत के चंदन आदि के गंध भी फैले। सेना ने वहीं पड़ाव डाला। (मन्मथ का गज स्त्रियों का केश भी कहा जाता है। तब केश से फूलों का और स्तनों से चंदन का गंध फैला—यह अर्थ किया जा सकता है। ८८९

14. वरैक् काट्चिप् पडलम् (शैल दर्शन पटल)

[चंद्रशैल नाम के पर्वत का कहीं कोई अस्तित्व असल में नहीं है न मूल (वाल्मीकीय) रामायण में इसका नाम है। यह पूर्णरूपेण कम्बन् की कपोल कल्पना है। इस पटल और आगे के तीन पटलों में उस पर्वत पर लोगों ने अपना मन कैसे बहलाया, इसका सरस वर्णन है। काव्य में सभी मानवीय व्यापारों का वर्णन अपेक्षित है, और सफल कवि के लिए किसी भी वस्तु और किसी भी घटना में कविता मिल जाती है। इन चारों अध्यायों में श्रृंगार रस की बातें खूब आती हैं। पाठक देख सकते हैं कि श्रृंगार में काव्य है और कम्बन् के श्रृंगार में काव्य अपने सबसे मनोरम रूप में है।]

अलहि लामद याऩयु मवऱ्ऱौडु मिडैन्द
तिलह वाणुदऱ् पिडिहळुङ् गुरुळयुञ् जॅऱिन्द
उलवै नीळ्वऩत् तूदमे यॊत्तऩ यूदत्
तलैव ऩेयॅऩ्प् पॊलिन्ददु चन्दिर शयिलम् 890

अलकु इला–असंख्यक; मतम् याऩैयुम्–मत्तगज; अवऱ्ऱॊटु मिटैन्त–उनके साथ मिली; तिलकम् वाळ् नुतल्–तिलक सहित शोभित भालवाली; पिटिकळुम्–हथिनियाँ; कुरुळैयुम्–कलभ (गजशावक); चॅरिन्त–मिले हुए झुण्ड; उलवै नीळ् वऩत्तु–तरुसंकुलित विशाल वन के; ऊतम् ऒत्तऩ–जंगली गजसमूह के समान लगे; चन्तिर चयिलम्–चन्द्रशैल गिरि; यूतत् तलैवऩ् अॅऩ पॊलिन्ततु–यूथपति के समान लगा। ८९०

चंद्रशैल पर्वत पर हाथियों का बड़ा जमघट हो गया। उसमें बड़े-बड़े हाथी थे, तिलक सहित सुन्दर हथिनियाँ थीं और छोटे-छोटे हाथी के बच्चे थे। ये राजा के हाथी थे। उधर शैल पर भी जंगली हाथी पहले से थे। चंद्रशैल पर्वत उन गजयूथों के पति के समान लगता था। ८९०

कोवै यार्वड कॊळुङ्गुव डॊडिदर निवन्द
आवि वेट्टऩ वरिशिलै यऩङ्गऩ्मेऱ् कॊण्ड
पूवै वाय्च्चियर् मुलैशिलर् पुयत्तोडुम् पूट्टत्
तेव दारत्तुञ् जन्दिऩुम् पूट्टिऩ शिऩमा 891

पूवै वाय्च्चियर्–सारिकाओं की सी बोलीवाली; कोवै आर्–हारों से अलंकृत (गगनस्पर्शी); वट कॊळु कुवटु–उत्तर के उर्वर पर्वत को (वट वृक्ष की उर्वर डालों को); ऒटितर–लजाते हुए (तोड़ते हुए); निवन्त–उन्नत; आवि वेट्टऩ–प्रेमियों के प्राणग्राहक (जलाशय चाहनेवाले); वरिचिलै अऩङ्कऩ्–बन्धनयुक्त धनुर्धर अनंग; मेल् कॊण्ट–जिनको साधन बनाता है (पुरुषों की कामोत्तेजना को तीव्र करने के लिये); मुलै–(वे) स्तन; चिलर् पुयत्तॊटुम् पूट्ट–कुछ पुरुषों की भुजाओं से गुंथ गये; चिऩम् मा–क्रोधी गज; तेवतारत्तुम्–देवदारों से; चन्तिऩुम्–और चन्दन (तरुओं) से; पूट्टिऩ–बाँधे गये (स्तन में और गज में श्लेष है। अतः गज सम्बन्धी अर्थ कोष्टक के अन्दर दिये गये हैं)। ८९१

पुरुषों ने स्त्रियों को हाथियों की पीठ पर से नीचे उतारा। तब उनके स्तन पुरुषों की भुजाओं से चिपटे। (उन स्तनों और हाथियों में श्लेष है) उन मधुर बयनियों के स्तनों पर हार थे; हाथी आकाश छूते हुए ऊँचे थे। स्तन उत्तर के मेरुपर्वत को तोड़ते हुये (झुकाते हुये)—यानी मेरुपर्वत से भी उन्नत थे; हाथी बट वृक्षों की डालों को तुड़ा दें इतने ऊँचे थे। स्तन पुरुषों के प्राणहरण के इच्छुक थे (यानी स्तनों को देखकर पुरुष सुध-बुध खोकर अधीर हो जाते हैं); हाथी प्यास से जलाशय के इच्छुक थे। स्तन वे साधन (वाहन) हैं जिनको मन्मथ पुरुषों के मन को कामोत्तेजित बनाने के लिये अपना लेता है। हाथी मन्मथ-सदृश पुरुषों के वाहन हैं। वे पुरुष अपनी प्रेयसियों को इस तरह उतारकर जिससे उनके स्तन इनकी भुजाओं से चिपट जायें, बाद में हाथियों को देवदारु और चंदन-तरुओं से बाँध देते हैं। (तब वे हाथी क्रुद्ध हो जाते हैं।)। ८९१

नेरॊ डुङ्गलिल् पहैयिऩै नीदियाल् वॆल्लुम्
शोर्वि डम्बॆऱा वुणर्विऩऩ् शूऴ्च्चिये पोलक्
कारॊ डुऩ्दॊडर् कवट्टॆऴिऩ् मराम्मरक् कुवट्टै
वेरॊ डुङ्गॊडु गिरियॆऩ नडऩ्ददोर् वेऴम् 892

ओर् वेऴन्–एक हाथी; नेर् ऑटुङ्कल् इल्–सीधे अदम्य; पकैयित्तै–शत्रु को; नीतियाल् वॆल्लुम्–(सामदानादि) उपायों द्वारा हराने की; चोर्वु इटम् पॆऱा–अप्रमत्त; उणर्वित्तऩ्–बुद्धिशाली (के); चऴ्च्चिये पोल–उपाय के समान; कारॊटुम् तॊटर्–मेघमण्डल स्पर्शी; कवटु–डालों सहित; ऍऴिल्–सुन्दर; मरामरम् कुवट्टै–साल वृक्ष के तने को; वेरॊटुम् कॊटु–जड़ के साथ उखाड़ लेकर; किरि ॲन्त नटन्ततु–पर्वत के समान चला। ८९२

एक हाथी मेघमंडलस्पर्शी डालों के एक साल वृक्ष से बँधा हुआ था। उसने मुक्त होने की इच्छा में एक उपाय किया। वह उस पेड़ को ही समूल उखाड़ लेकर पर्वत के समान चला गया। तब वह उस राजा के समान था जिसकी बुद्धि इतनी सूक्ष्म और तीव्र है कि वह सीधे रास्ते से काबू में न आनेवाले शत्रु को दूसरा उपाय करके हरा देता है और अपनी इष्ट सिद्धि करा लेता है। ८९२

तिरण्ड ताणॅडुञ् जॅऱिपणै मरुदिडै यॊडियप्
पुरण्डु पिऩ्वरु मुरलॊडु पोहुमाल् पोल
उरुण्डु काऱॊडर् पिऱहिडु तऱियॊडु मॊरुङ्गे
इरण्डु मामर मिडैयिऱ नडऩ्ददोर् याऩै 893

तिरण्ट ताळ्–पुष्ट तने; नॅटु चेऱि पणै–लम्बे और घने डालोंवाले; मरुतु इटै–अर्जन तरुओं के मध्य से; ऑटिय–उनको तुड़ाते हुए; पिऩ् पुरण्टु वरुम् उरलॊट–पीछे लुढ़कती आती ओखली के साथ; पोकुम् माल् पोल–जो गये उन विष्णु (श्रीकृष्ण)

के समान; ओर् यात्तै–एक हाथी; उरुण्ट काल्तॉटर् पिऱ्ऱकिटु–लुढ़कते हुए, पैरों से लगे, पीछे आनेवाले; तऱियॉटुम्–खूँटे के साथ; इरण्टु मा मरम् ऑरुङ्के इऱ–दो बड़े पेड़ों को एक साथ तुड़ाते हुए; इटै नटन्ततु–उन पेड़ों के बीच से चला। ८६३

एक हाथी ने अपना खूँटा तुड़ाया और वह उसको पीछे घसीटते हुए दो बड़े वृक्षों के बीच से गया। तब वे दोनों वृक्ष उखड़कर गिर गये। वह आगे भी जाता रहा और खूँटा उसके पैरों के पीछे लुढ़कता जाता था। उस दृश्य को देखकर श्रीकृष्ण की याद आती है। कृष्णचंद्र ओखली से बँधे थे। वे उसको खींचते हुए दो अर्जुनवृक्षों के बीच से गये। तब वे दोनों वृक्ष उखड़कर गिर गये। ८९३

कदङ्गॉळ् शीऱ्ऱत्तै याऱ्ऱुवा ऩ्ऩियऩ कळ्ऱिप्
पदङ्गॉळ् पाहऩ्ऩु मऩ्दिरि यॉत्तऩऩ् पऩ्ऩूल्
विदङ्ग ळावऩ यावयु मॅल्लॅऩ विळम्बुम्
इदङ्गळ् कॉळ्हिला विऱैवऩै यॉत्तदॉर् याऩै 894

ओर् यात्तै–एक गज; पल वितङ्कळ् आवऩ–विविध प्रकार के; नूल् यावैयुम्–सभी नीतिशास्त्र (के आधार पर); मॅल्लॅऩ विळम्पुम्–(मन्त्री जो) धीरे-धीरे मधुर ढंग से कहता है; इतङ्कळ्–उन हितू वचनों को; कॉळ्किला–न माननेवाले; इऱैवऩै ऑत्ततु–राजा के समान था; कतम् कॉळ् चीऱ्ऱत्तै–भागने की प्रेरणा देनेवाले क्रोध को; आऱ्ऱुवाऩ्–शान्त करने के लिए; इऩियऩ–मधुर बातें; कळ्ऱि–कहकर; पतम् कॉळ्–वश में लाने के लिए; पाकऩुम्–महावत भी; मऩ्तिरि ऑत्ताऩ्–मन्त्री सम हुआ। ८६४

एक हाथी उस राजा के समान उदण्ड था जो अपने मंत्री के हित-वचन नहीं सुनता था, यद्यपि मंत्री नीतिशास्त्रों के आधार पर धीरे-धीरे मधुर ढंग से राजा के ही हित के लिए कहता था। हाथी का महावत उस मंत्री के समान रहा। यानी हाथी पीलवान की बात नहीं माना और खूँटा तोड़कर भागा। ८९४

माऱु काण्किल दाय्ऩिऩ्ऱु मळैयॅऩ मुळ्ङ्गुम्
ताऱु पाय्हरि वऩकरि दण्डत्तैत् तडविप्
पाऱु पिऩ्शॅलक् कालॅऩच चॅल्वदु पण्डोर्
आऱु पोहिय वाऱुपो माऱुपोऩ् ऱदुवे 895

माऱु काण्किलताय्–शत्रु न पाकर; निऩ्ऱु–अतृप्त होकर; मळै ॲऩ मुळ्ङ्कुम्–मेघ के समान गरजनेवाला; ताऱु पाय् करि–अंकुश चभा एक हाथी; वऩम् करि–जंगली हाथी के; तण्टत्तै तटवि–रास्ते को (गन्ध से) जानकर; पाऱु पिऩ् चॅल–बाजों को पीछे-पीछे आकृष्ट करता हुआ; काल् ॲऩ चॅल्वतु–वायु के समान (वेग से) जाता है, वह; पण्टु ओर् आऱु पोकिय–पहले एक नदी के गमन के; आऱु–मार्ग में; पोम्–जानेवाली; आऱु पोऩ्ऱतु–नदी के समान था। ८६५

एक हाथी था, जो युद्ध में जाने का अभ्यासी था। यहाँ किसी शत्रु

के न होने से वह अतृप्त और झुंझलाहट-भरा था। उसको वश में लाने के लिए महावत ने अंकुश का प्रयोग किया। वह और भी भड़क उठा। तब किसी जंगली हाथी के आगे जाने का भान उसे मिल गया। वह उसी के रास्ते पर, अपने मद जल से और रास्ते में जीवों को हत करके जाने से, बाजों और चीलों को आकृष्ट करता हुआ चला। तब ऐसा लगा कि एक नदी के रास्ते पर दूसरी नदी की धारा बहती जा रही हो। ८९५

पात्त यानॅयिऩ् पदङ्गळिऱ् पडुमद नाऱक्
कात्त वङ्गुश निमिर्न्दिडक् काल्पिडित् तोडिप्
पूत्त वेळ्ळिलैप् पालैयैप् पॉडिप्पॉडि याहक्
कात्ति रङ्गळाऱ् ऱलत्तॉडुन् दॅय्त्ततोर् कळिऱु 896

पात्त–पंक्तिबद्ध; यानैयिऩ्–गजों के; पतङ्कळिल् पटुम्–बीच से उत्पन्न होनेवाली; मतम् नाऱ–मदजल गन्ध के आने पर; ओर् कळिऱु–एक गज; कात्त अङ्कुचम् निमिर्न्तिट–वशीकारक अंकुश को सीधा करते हुए (बेकार बनाकर); काल् पिटित्तु ओटि–(गन्ध की दिशा को) हवा के सहारे जानते हुए भागकर; पूत्त एळ्ळिलै पालैयै–पुष्पित सप्तपर्णी वृक्ष को; पॉटि पॉटि आक–बुकनी करते हुए; कात्तिरङ्कळाल्–अपने अगले पैरों से; तलत्तॉटुम् तेय्त्त–भूमि पर रौंद दिया। ८९६

सप्रपर्णी वृक्ष पुष्पित थे। (उनसे गजमद का-सा गंध आता था) एक मत्त गज ने उसको सूंघकर समझा कि पंक्तियों में गज बंधे हैं। वह भागने लगा। महावत ने अंकुश लगाया तो अंकुश का वक्रभाग सीधा हो गया। वह बेकार हो गया। पर हाथी भागा और पेड़ों के पास आ गया। उसने गुस्से में उन पेड़ों को तहस-नहस कर दिया। ८९६

तरुण्ड मेलवर् शिऱियवर्च् चेरिनु मवर्तम्
मरुण्ड पुऩ्मयै माऱ्ऱुव रॅनुमिदु वळक्के
उरुण्ड वाय्तॉऱुम् पॉऩ्नुरु ळुरैत्तुरैत् तोडि
इरुण्ड कल्लयुन् दन्निऱ माक्किय विरदम् 897

तॅरुण्ट–सुलझी हुई बुद्धिवाले; मेलवर्–बड़े लोग; चिऱियवर् चेरित्तुम्–छोटों के साथ मिलें तो भी; अवर् तम् मरुण्ट पुऩ्मैयै–उनकी भ्रमित नीचता को; माऱ्ऱुवर्–बदल देंगे; ॲऩुम् इतु–बात यह; वळक्के–मसल है; इरतम्–(रथ) ने; पॉऩ् उरुळ्–स्वर्णचक्र; उरुण्ट वाय् तॉऱुम्–जहाँ-जहाँ घूमे वहाँ; उरैत्तु उरैत्तु ओटि–सोना घिस जाये ऐसा घूमकर; इरुण्ट कल्लैयुम्–काले पत्थर को भी; तम् निऱम् आक्किय–अपने रंग का बना दिया। ८९७

यह मसल मशहूर है कि सुलझे हुये विवेकशील महानपुरुष अपने संपर्क में आनेवाले नीचों की नीचता को बदल देते हैं। उसी प्रकार रथ अपने पहियों के स्वर्ण द्वारा, जहाँ-जहाँ वह जाता था, वहाँ रहनेवाले पत्थरों पर घिस-घिसकर उस पत्थर को स्वर्ण-वर्ण बना देता था। ८९७

कॊव्वै नोक्किय वाय्हळै यिन्दिर कोपम्
कव्वि नोक्किन वॆऩ्ऱुहॊल् काट्टिऩ मयिल्हळ्
नव्वि नोक्कियर् नलङ्गॊण्मे कलैपॊलऩ् जायड़्
चॆव्वि नोक्किय वरुवऩ पोल्वऩ तिरिन्द 898

काट्टु इऩम् मयिल्कळ्–जंगल में रहनेवाले झुण्डों के मोर; नव्वि नोक्कियर्–मृगनयनी स्त्रियों के; कॊव्वै नोक्किय वाय्कळै–बिम्बफल-समान मुखों को (देख); इन्तिर कोपम् कव्वि नोक्कित्त–बीरबहूटियाँ पकड़कर आश्रय देख रही हैं; ऍन्ऱु कॊल्–यह समझकर, शायद; नलम् कॊळ् मेकलै–सुचारु मेखलाओं और; पॊलम् चायल् चॆव्वि–स्वर्णकान्ति की सुन्दरता को; नोक्किय वरुवत्त पोल्वत्त–देखने के लिए आते-जाते से; तिरिन्त–घूमे। ८६८

जंगली मोर मानो मृगनयनी स्त्रियों के सौंदर्य की छबि को देखने की इच्छा से आते जाते हैं, उनके सामने घमे। (किन्तु असली कारण दूसरा था) उन स्त्रियों के बिंबफल के समान अरुण अधर और ओष्ठ मोरों को बीरबहूटियों (लाल बरसाती कीड़े जिन्हें इंद्रगोप भी कहते हैं) के समान दिखे और उन्होंने सोचा कि वे स्त्रियों के मुखों में आश्रय ढूंढ रहे हैं। (बीरबहूटियाँ स्त्रियों के अधरों की सुन्दरता को देखती सी वहाँ आश्रय ढूँढ रही थीं— ऐसा समझकर मोर उनकी छटा को देखते से उनके सामने घूम रहे थे। दूसरों को बहानेबाज़ समझने वाले खुद बहानेबाज़ी करते हैं।)। ८९८

उय्क्कुम् वाशिह ळिळिन्दिळ वऩ्ऩत्ति ऩॊदुङ्गि
मॆय्क्क लाबमुङ् गुळैहळु मिळैहळुम् विळङ्गत्
तॊक्क मॆऩ्मर निऴल्पडत् तुवऩ्ऱिय शूऴल्
पुक्क मङ्गयर् पूत्तकॊम् बामॆऩप् पॊलिऩ्दार् 899

उय्क्कुम वाचिकळ्–अपनी सवारी के अश्वों पर से; इळिन्तु–उतरकर; इळ अऩ्ऩत्तिऩ् ऒतुङ्कि–बाल हंसों के समान पग रखकर; मॆय्–शरीर के; कलापमुम्–कलाप और; कुऴैकळुम्–कुण्डल और; इऴैकळुम्–अन्य आभरण; विळङ्क–भासमान हैं, तब; तॊक्क मॆल् मरम्–झुण्ड के कोमल तरु; निऴल् पट–जो छाया देते हैं; तुवऩ्ऱिय चूऴल्–उनसे भरे स्थान में; पुक्क–प्रविष्ट; मङ्कैयर्–स्त्रियाँ; पूत्त कॊम्पु आम् ऍऩ–पुष्पित डालों के समान; पॊलिन्तार्–भासमान रहीं। ८६६

स्त्रियाँ अश्वों पर से उतरीं, बालहंस के समान पग धरती हुयी घनी छाया फैलाने वाले तरुओं के झुंड में गयीं। तब उनके शरीर पर कलाप, हार, कुंडल और अन्य आभरण प्रकाशमान थे; इस कारण वे पुष्पभरी डालों या लताओं के समान लगीं। ८९९

तळङ्गॊ डामरै यॆऩ्ऩत्तळि रडियिऩु मुहत्तुम्
वळङ्गॊण् मालैवण् डलमर वऴिवरुन् दिऩ्ऩराय्

विळङ्गु तम्मुरुप् पळिङ्गिडै वळिप्पड वेऱोर्
तुळङ्गु पाऱैयिऱ् ऱोऴिय रयिर्त्तिडत् तुयिन्ऱार् 900

वऴि वरुन्तित्तराय्–पथश्रान्त; तळिर् अटियित्तुम्–पल्लव चरणों और; मुकत्तुम्–मुखों को; तळम् कोळ् तामरै अँत्त–दलयुक्त कमल समझकर; वळम् कोळ्–हृष्ट-पुष्ट; मालै वण्टु–और श्रेणीबद्ध भ्रमर; अलमर–मँडराते हैं, ऐसे; विळङ्कु तम् उरु–शोभायमान उनके रूप; पळिङ्कु इटै–स्फटिक मध्य प्रतिबिम्बित हों; वेऱु ओर्–अन्य; तुळङ्कु पाऱैयिल्–जिसमें उनका प्रतिबिम्बित है उस शिला पर; तोऴियर् अयिर्त्तिट–सखियाँ भ्रमित हो जायँ, ऐसा; तुयिन्ऱार्–सोईं । ९००

लंबी यात्रा के कारण स्त्रियाँ श्राँत हो गयीं थीं। जाकर स्फटिक शिला पर लेट गयीं। तब उनके चरणों और मुखों पर भ्रमर उनको कमल समझकर झुंडों में मँडराने लगे। उनका रूप उन शिलाओं पर प्रतिबिंबित होता था जिन पर वे लेटीं थीं; और पास रही स्फटिक शिलाओं पर भी। उन प्रतिबिंबों को देखकर उनकी सखियाँ भ्रम में पड़ गयीं कि यह हमारी नायिका इधर कहाँ आ लेटी है। ९००

पिडिपुक् कायिडै मिन्नॊडुम् पिऱङ्गिय मेहम्
पडिपुक् कालॆन्नप् पडितरप् परिपुरम् पुलम्बत्
तुडिपुक् कायिडैत् तिरुमह डामरै तुऱन्दु
कुडिपुक् काळॆन्नक् कुडिल्पुक्कार् कॊडियिडै मडवार् 901

मिन्नॊटुम् पिऱङ्किय मेकम्–बिजली से प्रकाशित मेघ; पटि पुक्काल् अँत्त–पृथ्वी पर आ गये हों, ऐसे; पिटि–हथिनियाँ (जिनपर बिजली-सम स्त्रियाँ बैठी आई थीं); आयिटै पुक्कु–उस तलहटी में आकर; पटि तर–(उनको उतरने देने के लिए) भूमि पर बैठती हैं तब; कॊटि इटै मटवार्—लता-सी लचकती कमरवाली स्त्रियाँ; परिपुरम् पुलम्प–नूपुरों को झंकृत करते हुए; तुटि पुक्कु–डमरू आकर; आय् इटै–तुले ऐसी कमर की; तिरु मकळ्–श्री लक्ष्मीदेवी; तामरै तुऱन्तु–(अपना निवास-स्थान) कमल त्यागकर; कुटि पुक्काळ् अँत्त–आकर वास करने लगीं, ऐसा; कुटिल् पुक्कार–अपने झोपड़ों में प्रविष्ट हुईं । ९०१

हथिनियाँ अपने ऊपर सवार रही स्त्रियों के साथ मेघों के सदृश दिखती थीं। वे, उस तराई में आकाश के मेघ जैसे भूमि पर आ गये हों, ऐसे आयीं। वहाँ आने पर वे स्त्रियों को उतरने देने के लिए भूमि पर बैठ गयीं। तब लता सी लचकनेवाली कमरवाली स्त्रियाँ उतरीं। फिर चलने लगीं तो नूपुर नाद कर रहे थे और कटि डमरू के समान लगी। डमरू के समान कटिवाली श्रीलक्ष्मीदेवी मानो अपना वासस्थान कमल छोड़कर इन खेमों में जाकर ठहर गयी हों, ऐसी एक-एक स्त्री चलकर अपने-अपने खेमे में घुस गयी। ९०१

उण्णमु दरुत्तियिळै योर्नहर् कॊणर्न्द
तुण्णॆन्नु मुळ्क्किन्न तुरुक्कर्तर वन्द

मण्महडऩ् मार्बिऩ्ऩणि वऩ्ऩशर मॅऩ्ऩप्
पण्णुरु वयप्पुरवि पऩ्दियि ऩ्ऩिरैत्तार् 902

तुरुक्कर् तर वन्त–तुरुष्कों द्वारा लाये गये; इळैयोर्–दासों के द्वारा; उण् अमुतु अरुत्ति–सुखाद्य चारा खिलाकर; नकर् कॉणर्न्त–नगर से इधर लाये गये; तुण् अॅतुम् मुळक्किऩ्–दिल दहलाते हुए हिनहिनानेवाले; पण् उरु–(और) खूब सजे; वयम् पुरवि–विजयशील अश्वों को; मण् मकळ् तऩ्–भूमि की देवी के; मार्पिऩ् अणि–वक्ष पर पहनाये गये; वऩ्ऩम् चरम् अॅऩ्ऩ–रंग-बिरंगे रत्नहारों के समान; पन्तियिऩ्–पंक्तियों की; निरैत्तार्–श्रेणियों में बाँधा। ९०२

(अब घोड़ों की पंक्तियों की चर्चा है) वे घोड़े, जो अयोध्या से आये थे, तुरुष्कों द्वारा अयोध्या में लाये गये थे। उनकी देखभाल उनके लिए नियत दासों द्वारा होती थी; वे सुखाद्य चारा खिलाकर पाले गये थे। वे जब हिनहिनाते तब दिल दहल जाता था। वे कोतल घोड़े अनेक रंगों के थे। उनको श्रेणीबद्ध पंक्तियों में जब बाँधा गया तब देखने पर ऐसा लगता था मानो भू देवी के वक्ष पर हार पहनाये गये हों। (तुरुष्कों को ही शायद पहले ‘शोनक’ कहा गया है—६५३वाँ पद।)। ९०२

नीरतिरै निरैत्तदॅऩ्ऩ नीडिरै निरैत्तार्
आर्हलि निरैत्तवॅऩ्ऩ वावण निरैत्तार्
कार्निरै यॅऩ्ऩक्करिहळ् काविडै निरैत्तार्
मारुद निरैत्तदॅऩ्ऩ वाशिह णिरैत्तार् 903

नीर तिरै निरैत्ततु अॅऩ्ऩ–जल की लहरों को पंक्तियों में रखा हो ऐसा; नीळ् तिरै निरैत्तार्–लम्बे चीर (के पर्दे) बाँधे; आर्किल निरैत्त अॅऩ्ऩ–गर्जनयुक्त समुद्रों को पंक्तियों में सजाया हो ऐसा; आवणम् निरैत्तार्–हाटों की वीथियाँ बनायीं; कार निरै अॅऩ्ऩ–मेघमालाओं के समान; करिकळ्–गजों को; का इटै निरैत्तार्–उपवनों में श्रेणीबद्ध बाँधा; मारुतम् निरैत्ततु अॅऩ्ऩ–पवन को पंक्तियों में बाँध दिया गया हो ऐसा; वाचिकळ् निरैत्तार्–अश्व बाँध रखे। ९०३

पड़ाव डाला गया। स्त्रियों के डेरों के चारों ओर सफ़ेद पर्दे बाँधे गये। वे वीचियों की पंक्तियों के समान लग रहे थे। हाटों की पंक्तियाँ समुद्र की पंक्तियों के समान लगीं। उनमें सभी पदार्थ मिलते थे। उपवनों में हाथी पंक्ति में बाँधे गये थे; वे मेघमालाओं के समान दिखाई दिये। मानो पवन को ही पंक्तियों में बाँध दिया गया हो वैसे ही अश्व भी बाँधे गये थे। अश्व वायुसम वेगवान थे; अब बद्ध और अधीर थे। ९०३

नडिक्कुमयि लॅऩ्ऩवरु नव्विविळि यारुम्
वडिक्कुमयिल् वीररु मयङ्गिऩर् तिरिन्दार्

इडिक्कुमुर शक्कुरलि ऩॆङ्गुमुरल् शङ्गिऩ्
कॊडिक्कऴि ऩुणर्न्दरशर् कोनह रडैन्दार् 904

नटिक्कुम् मयिल् ऎऩ्ऩ–नर्तनशील मोरों के समान; वरुम्–आनेवाली; नव्वि विऴियारुम्–मृगनयनी स्त्रियाँ और; वटिककुम् अयिल् वीररुम्–पैनाये गये तीक्ष्ण भालोंवाले वीर; मयङ्कित्तर्–आपस में मिश्रित होकर; तिरिन्तार्–घूमे; अरचर्–(चक्रवर्ती के दर्शनार्थी) राजा; ऎङ्कुम् इटिक्कुम्–सर्वत्र ध्वनित होनेवाले; मुरचम् कुरलिऩ्–मंगल ढोल के नाद से; मुरल् चङ्किऩ्–होनेवाली शंखध्वनि से; कॊटिक्कऴिऩ्–ध्वजाओं से; को नकर् उणर्न्तु–चक्रवर्ती का मुकाम जानकर; अटैन्तार्–पहुँचे। ९०४

स्त्री और पुरुष मिलकर घूम रहे थे। स्त्रियों का रूप नर्तनशील मयूरों का-सा था और आँखें हरिण की-सी थीं। पुरुष तीक्ष्णशूल-धारी थे। अनेक राजा चक्रवर्ती के मुकाम को ढोल का नाद, शंख की ध्वनि और ध्वजाओं के अस्तित्व से समझकर वहाँ पहुँचे। नहीं तो सब खेमे एक समान सुन्दर थे। ९०४

मिदिक्कनिमिर् तूळियिन् विळक्कमऱु मॆय्यैच्
चुदैक्कणुरै यैप्पॊरुवु तूशुकॊडु तूय्दा
उदिर्त्तलि ऩिळङ्गुमर रोवियरि ऩोवम्
पुदुक्किऩ रॆनत्तरुण मङ्गयर् पॊलिन्दार् 905

इळङ्कुमरर्–नौजवान लोग; मितिक्क निमिर्–(हाथी आदि के) पदछाप से उठी; तूऴियिऩ्–धूल की वजह से; विळक्कम् अऱु–प्रभाहीन; मॆय्यै–(अपनी प्रेयसियों की) देहों को; चुतै कण् नुरैयै पॊरुवु–दूध की साड़ी (या झाग) सम; तूच कॊट्टु–महीन वस्त्र से; तूय्तु आक–स्वच्छ बनाते हुए; उतिर्त्तलिऩ्–पोंछने से; तरुणम् मङ्कैयर्–वे तरुण स्त्रियाँ; ओवियर् इऩ्ऩ ओवम् पुतुक्कित्तर्–चित्रकारों ने सुन्दर चित्र को नवीन किया हो; ऎऩ्ऩ–ऐसा; पॊलिन्तार्–शोभीं। ९०५

हाथी, अश्व आदि के चलने के कारण उठी हुई धूलि तरुण स्त्रियों पर लगी थी; अतः उनके शरीर की काँति मंद पड़ गयी थी। उनके प्रेमियों ने दूध की साड़ी (या झाग) के समान महीन वस्त्रों से उस धूल को पोंछ लिया। तब वे ऐसी चमक उठीं मानो पुराने, मंदप्रभ चित्रों में कुशल चितेरे ने नया रंग लगाकर रौनक भर दी हो। ९०५

ताळुयर् तडक्किरि यिऴिन्दुतरै शारुम्
कोळरि यॆऩक्करिहळ् कॊऱ्ऱव रिऴिन्दार्
पाळैविरि यॊत्तुलवु शामरै पडप्पोय्
वाळॆऴ निरैत्तपड माडमवै पुक्कार् 906

कॊऱ्ऱवर्–राजा लोग; ताळ् उयर्–ऊँची तलहटीवाले; तट–बड़े; किरि इऴिन्तु–पर्वत से उतरकर; तरै चारुम् कोळरि ऎऩ्ऩ–मैदान पर आनेवाले सिंहों के समान; करिकळ् इऴिन्तार्–हाथी से उतरे; पाळै विरि ऒत्तु–बाल बिखरे डण्ठलों

के समान; उलवु–डुलनेवाले; चामरै पट–चामरों का उपचार पाते हुए; पोय्–जाकर; वाळ् अॅ़ळ निरैत्तूत—चमक-दमक के साथ पंक्तियों में निर्मित; पटम् माटम् अवै–पटमण्डपों में; पुक्कार्–प्रवेश कर ठहरे । ९०६

राजा लोग हाथियों पर बैठे आये थे। वे हाथी पर्वत के समान थे। जब वे उनसे उतरे तो वे पर्वत से नीचे समतल में उतर आनेवाले सिंह के समान थे। उनके दोनों तरफ़ बिखरे नारियल के डंठलों के समान चँवर डुलाये जा रहे थे। वे शान के साथ अपने-अपने उज्ज्वल खेमों में जाकर घुस गये। वे खेमे पंक्ति में निर्मित थे। (खेमे सिंहों की माँदों के समान थे —यह भाव भी प्राप्त किया जा सकता है।)। ९०६

तूशिऩॅडु वॅण्पड मुडैक्कुडिल्ह डोऱुम्
वाशमलर् मङ्गयर् मुहङ्गण्मऴै वाऩिऩ्
माशिऩ्मदि यिऩ्कदिर् वऴङ्गु निऴलॅङ्गुम्
वीशुदिरै वॅण्बुऩल् विऴुङ्गियदु पोलुम् 907

नॅटु वॅळ् तूचिऩ्–लम्बे श्वेत चीर के; पटम् उटैय–ध्वजासहित; कुटिल्कळ् तोऱुम्—खेमे-खेमे में; वाचम् मलर् मङ्कैयर् मुकङ्कळ्–सुवासित पुष्प पहनी हुई स्त्रियों के मुख; मऴै वाऩिऩ्–मेघमण्डित आकाश में; माचु इल्–अकलंक; मतियिऩ्–चन्द्र के; कतिर् वळङ्कुम् निऴल्–प्रकाशमान प्रतिबिम्बों को; अॅङ्कुम्–वहाँ सर्वत्र; तिरै वीचु वॅण् पुऩल्–तरंगायित श्वेत (समुद्र-) जल ने; विऴुङ्कियतु पोलुम्–मानों अन्तस्थ कर लिया । ९०७

सुन्दरी स्त्रियों के पटमंडप सफ़ेद वस्त्र के बने हुये थे। उनके ऊपर विरुदपट बाँधे गये थे। उनके अंदर रहनेवाली स्त्रियों के मुख चंद्रबिंबों के समान थे। अतः सारा दृश्य ऐसा लगता था, मानों समुद्रजल की तरंगों के अंदर चंद्र के असंख्यक बिंब दिखाई दे रहे हों। ९०७

मण्णुऱ विऴुन्दुनॅडु वाऩुऱ वॅऴुन्दु
कण्णुदल् पॉरुन्दवरु कण्णऩिऩ् वरुङ्गार्
उण्णिऱ नऱुम्पॉडियै वीशियॉरु पाहम्
वॅण्णिऱ नऱुम्पॉडिपु ऩैन्दमद वेऴम् 908

मण् उऱ विऴुन्तु–धरती पर लोटकर; नॅटु वाऩ् उऱ–ऊँचे आकाश को छूते हुए; अॅऴुन्तु–उठकर; कार् उण्–काले रंग को ढँकनेवाली; निऱम् नऱु पॉटियै–(श्वेत) रंग की सुगन्धित धूलि को; (ऑरु पाकम्) वीचि–एक भाग पर से हटाकर; ऑरु पाकम्–दूसरे भाग पर; वॅळ् निऱम्–सफ़ेद रंग की; नऱु पॉटि–सुगन्धित धूलि; पुऩैन्त–लगाये; मतम् वेऴम्–(रहनेवाला) एक मत्तगज; कण्णुतल् पॉरुन्त वरु–भालनेत्र शिवजी को अर्धांग बनाकर आनेवाले; कण्णऩिऩ् वरुम्–श्रीविष्णु के समान आता है । ९०८

एक हाथी शरीर का दर्द दूर करने के लिए धूल पर लोटकर उठा।

सफ़ेद रंग की धूलि उस पर लग गयी थी। हाथी ने एक ओर की धूलि झाड़ दी। पर दूसरे भाग में धूलि लगी थी। वह धूलि सुगंधित थी। अब वह ऐसा लगता है, मानों श्रीकृष्ण (विष्णु) शिवजी को अपना अर्धांगी बना लेकर आ रहे हों। (श्रीकृष्ण काले हैं और शिवजी भभूत मले सफ़ेद हैं।)। ९०८

तीयवरॊ डॊन्ऱिय तिऱत्तरु नलत्तोर्
आयवरै यन्निलै यऱिन्दनर् तुऱन्दाङ्
गेयवरु नुण्पॊडि पडिन्दुड नॆऴुन्दे
पाय्परि विरैन्दुदऱि निन्ऱन परन्दे 909

तीयवरॊटु ऒन्ऱिय–बुरे व्यक्तियों के साथ मिले हुए; अरु तिऱत्तु नलत्तोर्–श्रेष्ठ चतुर सज्जन; आयवरै–उन बुरों को; अ निलै–उस अल्पकाल में ही; अऱिन्तनर्–पहचानकर; तुऱन्त आङ्कु–(उनका साथ) छोड़ देंगे, उसी तरह; पाय् परि–फाँदकर चलनेवाले अश्व; एय वरु नुण् पॊटि–शरीर पर जमा होनेवाली महीन धूलि में; पटिन्तु–लोटकर; उटन् ऎऴुन्तु–झट उठकर; विरैन्तु उतऱि–तुरन्त झटकारकर; परन्तु निन्ऱन–अलग-अलग खड़े रहे। ९०९

घोड़े भी धूल पर लोटकर अपना दर्द निवारण करते हैं। वे भूमि पर पड़े, लोटे, और उठे; उन्होंने अपने शरीर पर लगी धूल को झाड़ दिया। फिर वे हटकर अलग हो गये। वह ऐसा है मानो श्रेष्ठ गुणवाले साधु पुरुष ने किसी कारणवश बुरे आदमी से मैत्री कर ली हो। कुछ ही समय के अन्दर साधु पुरुष उसका असली गुण पहचान लेते हैं और उसी क्षण उसका साथ छोड़कर अलग हट जाते हैं। ऐसे ही अश्व ने धूल को झटकार दिया। ९०९

मुम्मपुरि वन्कयिऱु कॊय्युनॆऱि मुन्नित्
तम्मयुमु णर्न्दुतरै कण्डुविरै हिन्ऱ
अम्मयिन्नॊ डिम्मैयै यऱिन्दुनॆऱि शॆल्लुम्
शॆम्मयव रॆन्ननन्ति शॆन्ऱन तुरङ्गम् 910

अम्मैयित्तॊटु इम्मैयै–पर के साथ इह को भी; अऱिन्तु–जानकर; नॆऱि चल्लुम्–(श्रेष्ठ परगति दिलानेवाले) सन्मार्ग पर जानेवाले; चॆम्मैयवर् ऎन्न–साधु ज्ञानियों के समान; तुरङ्कम्–कुछ तुरग; तरै कण्टु–मैदान देखकर; विरैकिन्ऱ–वहाँ जाने की त्वरा दिखलाते हुए; तम्मैयुम् उणर्न्तु–अपनी (बन्धन की) स्थिति विचारकर; मुम्मै पुरि वन् कयिऱु–तीन तागों में पूरी गई तगड़ी रस्सी को; कॊय्युम् नॆऱि मुन्नि–तोड़ने का उपाय सोचकर; नन्ति चॆन्ऱन–(तोड़कर) यथेच्छ चले। ९१०

कुछ घोड़े थे जो अपनी तीनगुणों की बटी हुई रस्सी तुड़ाकर मैदान में यथेच्छ भाग गये। उन घोड़ों की उन ज्ञानियों से तुलना की जाती है जो इह-पर की स्थिति जानकर उत्तम गति दिलानेवाले मार्ग को अपनाते हैं

और तदर्थ ईषणात्रयरूपी बन्धन तुड़ा देते हैं। (तीन गुणोंवाली रस्सी भूमि, स्त्री और स्वर्ण की ईषणाओं का मोह है। साधु लोग सोचते हैं और अपनी स्थिति, बन्धन की शक्ति आदि खूब तोलकर बन्धन तोड़ने का उपाय अपनाते हैं। वैसे ही अश्व ने किया। यह कवि का कथन है।) । ९१०

विळुन्दपऩि यऩ्ऩतिरै वीशुपुरै तोऱुम्
कळङ्गुपयिऩ् मङ्गयर्ह रुङ्गण्मिळिर् हिऩ्ऱ
तळङ्गुवळै शिन्दुदर ळम्बयि ऱरङ्गत्
तॅळुन्दिडै पिऱळ्न्तॊळिर्कॊ ळुङ्गयल्ह ळॅऩ्ऩ 911

विळुन्त–गिरकर फैलनेवाले; पऩि अऩ्ऩ–कुहरे के समान; तिरै–पर्दे; वीचु–जिनमें हिलते हैं उन; पुरै तोऱुम्–सभी खेमों में; कळङ्कु पयिल् मङ्कैयर्–"कळङ्कु" के बीजों को गोटी के रूप में लेकर खेलनेवाली स्त्रियों की; करु कण्–काली आँखें; तळङ्कु वळै–शब्द करनेवाले शंखों से; चिन्तु–निकले; तरळम् पयिल्–मोती जिनके मध्य फेंके जाते हैं; तरङ्कत्तु इटै–उन तरंगों के मध्य; ॲळुन्तु पिऱळ्न्तु ऑळिर्–उछलकर, तड़पकर चमकनेवाले; कॊळु कयल्कळ् ॲऩ्ऩ–हृष्ट-पुष्ट मछलियों के समान; मिळिर्किऩ्ऱ–भासमान हैं। ९११

स्त्रियाँ डेरों के अन्दर बैठी 'कळङ्कु' के बीजों को गोटियाँ बनाकर खेल रहीं हैं। (ये कळङ्कु नाम की लता के बीज होते हैं। वे आकार-प्रकार में बहुत बड़े मोती के समान लगते हैं।) कुहरे के समान झीने परदे हिल रहे हैं। तब उन स्त्रियों की आँखें उन मछलियों के समान दिखाई देती हैं जो शंख-जनित मोती बिखेरनेवाली तरंगों के बीच तड़पती, छटपटाती और चमकती हैं। (परदों का हिलना लहरों का भ्रम पैदा करता है। गोटियाँ मोतियों के स्थान में और आँखें मछलियों के स्थान में ली जायँ।) । ९११

वॅळ्ळनॅडु वारियऱ वीशियुळ वेत्तुम्
किळ्ळवॅळु हिऩ्ऱपुऩल् केळिरिऩ् विरुम्बित्
तॅळ्ळुपुऩ लाऱुशिऱि देयुदवु हिऩ्ऱ
उळ्ळदु मऱादुदवु वळ्ळलैयु मॊत्त 912

तॅळ्ळु पुऩल् आऱु–स्वच्छ जलवाली नदियाँ; वॅळ्ळम् नॅटु वारि–प्रवाहित अधिक जल को; अऱ–कुछ न रखते हुए; वीचि उळवेत्तुम्–दे चुकीं, तो भी; किळ्ळ ॲळुकिऩ्ऱ पुऩल्–अब खोदने पर निकल आनेवाला जल; केळिरिऩ्–सगे-सम्बन्धियों के समान; विरुम्पि–स्नेह के साथ; चिऱिते उतवुकिऩ्ऱ–थोड़ा ही सही, देते हैं; उळ्ळतु मऱातु उतवु–(वे नदियाँ) अपने पास जो भी है उसको 'नाहीं' न कहकर दान करनेवाले; वळ्ळलै ऑत्त–उदार दानी के समान थीं। ९१२

चन्द्रशैल की नदियाँ उदार दानियों के समान हैं जो अपने पास कुछ

भी नहीं रखते। और सब दान में दे देते हैं। इन नदियों ने अपना सारा जल पहले ही बहा दिया है; अब वे सूखी पड़ी हैं। उस स्थिति में भी उसे खोदें तो जल स्रव कर आयेगा और वे नदियाँ उसको सगे सम्बन्धियों के समान प्यार के साथ दान कर देंगी। ९१२

तुऩ्ऱिनॅऱि पड्गिहडु ळड्गवऴ लोडुम्
मिऩ्ऱिरिव वॅऩ्ऩमणि यारमिळिर् मार्बर्
मऩ्ऱऩ्मण नाऱुपड माडनुऴै हिऩ्ऱार्
कुऩ्ऱिऩ्मुऴै तोऱुनुऴै कोळरियै यॊत्तार् 913

तुऩ्ऱि नॅऱि पड्किकळ्–घने घुँघराले केश को; तुळड्क–(हवा में) हिलने देते हुए; अऴलोटुम्–आग के साथ; मिऩ् तिरिव ऍऩ्ऩ–बिजलियाँ घूमती हों, ऐसा; मणि आरम्–रत्नहार; मिळिर्–(जिनपर) दमकते हैं; मार्पर्–उन वक्षवाले; मऩ्ऱल् मणम् नाऱु–नवीन गन्ध से युक्त; पटम् माटम्–पटमण्डपों में; नुऴैकिऩ्ऱार्–प्रवेश करनेवाले वीर; कुऩ्ऱिऩ्–पर्वतों की; मुऴै तोऱुम्—गुफ़ा-गुफ़ा में; नुऴै–घुसनेवाले; कोळ् अरियै–संहारक सिंहों के; ऑत्तार्–समान थे। ९१३

वीर सुवासपूर्ण वस्त्र-भवनों में प्रवेश करते हैं। उनके सिर के घने बाल हवा में हिलते हैं। वक्षों पर बिजली चमकती हो और आग दमकती हो, ऐसे रत्नहार शोभित हैं। तब वे गुफाओं में घुसनेवाले खूनी सिंहों के समान लगते हैं। (वीरों के बाल की सिंहों के अयाल से उपमा है।)। ९१३

नॅरुड्गयि लॅयिऱ्ऱिणैय शॅम्मयिरि ऩॆऱ्ऱिप्
पॊरुड्गुलिह मप्पियऩ पोर्मणिह ळार्प्प
पॅरुड्गळि ऱलैप्पुऩल् कलक्कुवऩ पॅट्टुक्
करुड्गडल् कलक्कुमदु कैडवरै यॊत्त 914

नॅरुड्कु—पास-पास रहे; अयिल्–तीक्ष्ण; ऍयिऱु इणैय–दन्तद्वय वाले; चॅम्मयिरिऩ् नॅऱ्ऱि–लाल बालों के माथों पर; पॊरुम् कुलिकम् अप्पियऩ–सुरुचियुक्त रीति से इंगुलिक से लिप्त; पोर् मणिकळ् आर्प्प—बारी-बारी से बजनेवाली घंटियोंवाले; पॅरु कळिऱु—बड़े-बड़े गज; अलै पुऩल् कलक्कुवऩ—तरंग-समुद्र को आकुलित करनेवाले; करु कटल्–(प्रलयकाल के) नीले सागर को; पॅट्टु–चाहकर; कलक्कुम्–आलोड़ित करनेवाले; मतु कैटवरै ऑत्त–मधुकैटभ के समान थे। ९१४

हाथी जलाशयों में पैठे हैं। उनके दो तीक्ष्ण भाले के समान दाँत हैं। लाल रोम से भरे माथों पर इंगुलिक लगी है। दोनों ओर घंटियाँ लटकती हैं जो बारी-बारी से मानो प्रतिस्पर्द्धा में बजती हैं। वे जलाशयों में उतरकर जल को आलोडित करते हैं। वे मधुकैटभ के समान लगते हैं। (मधु और कैटभ दो असुर थे जो ब्रह्मा से वेदों को चुरा ले जाकर समुद्र के नीचे पाताल में रहे। ब्रह्माजी की प्रार्थना से श्रीविष्णु ने अपने वेद-गान से उन्हें बहकाकर अलग किया और वेद को ले आकर ब्रह्माजी

के पास दे दिया। असुर वेदों को न पाकर समुद्र को उद्वेलित करते हुए श्रीविष्णु के पास आये। श्रीविष्णु ने उनसे उन्हींको मारने का वर लेकर उनको मारा।)। ९१४

ऑक्कमिशै युय्प्पव रुरैत्तकुऱि कॉळ्ळा
पक्कमिऩ्ऩ मोत्तय ललैक्कनऩि पारा
मैक्कळि मदत्तवरै मादर्कलै यल्हुल्
पुक्कवरै यॉत्तऩ्ऩ पुनऱ्चिऱैह ळेऱा 915

कळि मतत्त–मदमत्त; मै वरै–काले पर्वत (के समान गज); ऑक्क–उचित रीति से; मिचै उय्प्पवर्–ऊपर बैठकर चलानेवाले; उरैत्त कुऱि–(जो संकेत वचन) कहते हैं उन आज्ञाओं को; कॉळ्ळा–न मानकर; पक्कम्–दोनों ओर; इऩ्ऩम्–उन्हीं की जाति के हाथी; ऑत्तु–(उन पीलवानों से) समरस होकर; अयल् अलैक्क–बाहर आने पर मजबूर करें; नऩि पारा–तो भी उसकी परवाह न करके; मातर्–स्त्रियों के; कलै अल्कुल् पुक्कवरै–मेखला-भूषित भग (के मोह) में मग्न (कामुकों); ऑत्तऩ–के समान बनकर; पुऩल् चिऱैकळ् एऱा–जलाशयों से बाहर तीर पर नहीं आते। ९१५

और कुछ मदमत्त हाथी हैं जो स्त्री (के मेखला-भूषित जघन-प्रदेश) के मोह में मग्न कामुकों के समान जलाशय में पैठे हैं और तीर पर आने का नाम नहीं लेते। पीलवान की आज्ञा नहीं मानते, पार्श्व में रहे हाथियों के उसे बाहर निकालने के प्रयास को व्यर्थ बनाते और जलाशय में ही पैठे रहते। (कामुक, गुरु या बड़ों का उपदेश नहीं सुनते; न सगे सम्बन्धियों या मित्रों की निन्दा की परवाह करते हैं।)। ९१५

तुहिलिडै मडन्दयरॉ डाडवर् तुवऩ्ऱिप्
पहलिडैय वट्टिलिऩ् मडुत्तॉरि परप्पुम्
अहिलिड्डु कॉळुम्बुहै यळुङ्गलिऩ् मुळङ्गा
मुहिल्पडु नॅडुङ्गडलै यॉत्तुळदम् मूदूर् 916

तुकिल् इटै मटन्तयरॉटु–(महीन और श्रेष्ठ) वस्त्र से अलंकृत कटिवाली स्त्रियों के साथ; आटवर्–पुरुष भी; तुवऩ्ऱि–साथ मिलकर; पकल् इटैय–दिन को सारहीन (मन्द) करते हुए; अट्टिलिल्–पाकशालाओं में; मट्टुत्तु–ले आकर; ऍरि परप्पुम्–जलाई जानेवाली; अकिल् इटु–अगरु की लकड़ियों का; कॉळु पुकै–घना धुआँ; अळुङ्कलिऩ्–भर जाने से; अ मूतूर–वह 'प्राचीन' नगर; मुळङ्का मुकिल् पटु–जो नहीं गरजे ऐसे मेघों से आवृत्त; नॅटु कटलै ऑत्तु उळतु–विशाल समुद्र की तरह है। ९१६

सुन्दर वस्त्रधारिणी कमरवाली स्त्रियाँ और पुरुष मिलकर पाकशालाओं में अगरु की लकड़ियाँ जला रहे हैं। उनसे इतना प्रकाश होता है जिससे दिन भी मन्द दीखता है। उनसे घना धुआँ उठता है। यह

सारा दृश्य ऐसा लगता है मानो विशाल समुद्र ऐसे मेघों से आच्छादित हो जो नहीं गरजते। (पड़ाव को कवि 'मूदूर' प्राचीन नगर कहते हैं क्योंकि वह प्राचीन नगर के समान सब तरह से सम्पन्न है। वह समुद्र के समान है। समुद्र सब निधियों का आकर है। "धुआँ" न गरजनेवाला या मौन मेघ है। यह सुन्दर शब्दयोजना है।)। ९१६

कमरुऱ पॉरुप्पिऩ् वाऴुम् विञ्जयर् काण वन्दार्
तमरयु मऱियार् निऩ्ऱु तिहैप्पुऱ तहैमै शाऩ्ऱ
कुमररु मङ्गै मारुङ् गुऴुमलाल् वऴुवि विण्णिऩ्
ऱमरर्ना डिऴिन्द दॅऩ्ऩप् पॉलिन्ददव् वऩीह वॅळ्ळम् 917

कमर् उऱु–घाटियों सहित; पॉरुप्पिऩ्–पर्वतों में; वाऴुम्–रहनेवाले; विञ्चैयर्–विद्याधर; काण वन्तार्–जो देखने आये; तमरैयुम् अऱियार्–अपनों को भी नहीं पहचानते; निऩ्ऱु–खड़े होकर; तिकैप्पु उऱु–भ्रमित हो जावें; तकैमै चाऩ्ऱ–ऐसा रहनेवाले; कुमररुम्–नौजवान पुरुष; मङ्कैमारुम्–और स्त्रियाँ; कुऴुमलाल्–वहाँ जुटे रहे, इसलिए; अव् अनीक वॅळ्ळम्–वह सेना सागर; अमरर् नाटु–देवलोक; विण् निऩ्ऱु–आकाश से; वऴुवि–खिसककर; इऴिन्ततु अॅऩ्ऩ–गिर गया हो, ऐसा; पॉलिन्ततु–प्रकाशमय रहा। ९१७

(पड़ाव के पुरुष और स्त्री बने-ठने और बड़े ही सुन्दर और उत्साहशील थे।) दर्रों सहित उस पर्वत में रहनेवाले विद्याधर उस स्थान को देखने आये। वे यह नहीं पहचान सके कि (अपने) विद्याधर कौन हैं और अन्य कौन हैं? वे चकित रह गये। इस प्रकार सुन्दर वीर पुरुषों और स्त्रियों की वह सेना सागर आकाश से खिसककर नीचे गिरे हुए स्वर्गलोक के समान रहा। ९१७

वॅयिऩिऱङ् गुऱैयच्चोदि मिऩ्ऩिऴल् परप्प मुऩ्ऩाळ्
तुयिलऱ शॅव्वि योरुन् दुऩियुऱ मुऩिवि ऩोरुम्
कुयिलॊडु मिऩिदु पेशिच् चिलम्बोडु मिऩिदु कूवि
मयिलिऩऩ् दिरिव वॅऩ्ऩत् तिरिन्दऩर् महळि रॅल्लाम् 918

मुऩ् नाळ्–पिछले दिन (रात); तुयिल् अऱ–निद्राहीन रही; चॅव्वियोरुम्–सुन्दरियाँ; तुऩि उऱ मुऩिविऩोरुम्–रूठने से उत्पन्न रोषवालियाँ; मकळिर् अॅल्लाम्–ऐसी सभी स्त्रियाँ; वॅयिल् निऱम् कुऱैय–धूप की कान्ति को मन्द करते हुए; चोति–अपनी देह कान्ति (आभूषण की चमक) द्वारा; मिऩ् निऴल् परप्प–बिजली के समान प्रकाश छिटकाती हुई; कुयिलॊटुम् इऩितु पेचि–कोयलों के साथ मधुर रीति से बोलती हुई; चिलम्पॊटुम्–पर्वतों से (प्रतिध्वनि बनाते हुए); इऩितु कूवि–चाह के साथ पुकार मचाती हुई; मयिल् इऩम् तिरिव अॅऩ्ऩ–मयूरदल घूमता हो, ऐसा; तिरिन्तऩर्–घूमीं। ९१८

(रात बीत गयी। सवेरा हो गया।) पिछली रात कुछ स्त्रियों की

नींद हराम हो गयी थी। कुछ स्त्रियों की रूठन क्रोध में बदल गयी थी। ऐसी स्त्रियाँ अब अधिक सुन्दर लग रही थीं। पर्वत के दृश्यों से आकृष्ट होने से उनमें नया उत्साह भर गया। अतः वे सजधज कर बाहर आयीं। उनकी देहों की और उनके आभरणों की कांति इतनी चमकती थी कि धूप भी निष्प्रभ हो जाती थी। वे कोयलों के समान कूकती हुयी और पर्वत से प्रतिध्वनि पैदा करके उसका आनन्द उठाती हुयी मयूरों के दल के समान घूमीं। ९१८

ताळिडैक् कऴल्ह ळार्प्पत् तारिडै यळिह ळार्प्प
वाळ्पुडै यिलङ्गच् चॅङ्गेऴ् मणियणि वलयमिऩ्ऩत्
तोळॅऩ्ऩ वुयर्न्द कुऩ्ऱिऩ् शूऴल्ह ळिऩिदु नोक्कि
वाळरि तिरिव वॅऩ्ऩत् तिरिन्दऩर् मैन्द रॅल्लाम् 919

मैन्तर् ॲल्लाम्–वीर कुमार सब; ताळ् इटै–पैरों में; कऴल्कळ् आर्प्प–पायलों को क्वणित करते हुए; तार् इटै–मालाओं में; अळिकळ् आर्प्प–अलियों को गुंजारने देते हुए; वाळ् पुटै इलङ्क–तलवारों को पार्श्व में झलकाते हुए; चॅम् केऴ् मणि अणि–सुरुचिपूर्ण रंग के रत्नों के बने; वलयम् मिऩ्ऩ–बिजायटों को चमकाते हुए; तोळ् ॲन्न उयर्न्त–अपने कन्धों के समान उन्नत; कुऩ्ऱिऩ् चूऴल्कळ्–पर्वत के स्थानों में; इऩितु नोक्कि–सुख से संदर्शन करते हुए; वाळ् अरि–उज्ज्वल सिंह; तिरिव ॲऩ्ऩ–घूमते हैं ऐसे; तिरिन्तऩर्–घूमे। ९१९

पुरुष भी सैर कर दृश्य देखने निकले। उनके पैरों पर पायलें नाद कर रही थीं। उनकी मालाओं पर भ्रमर गुंजार कर रहे थे। पार्श्वों में तलवारें शोभा दे रही थीं। बिजायटों की रंगीन मणियाँ चमक रही थीं। उनके ही कंधों के समान पर्वत के शिखर ऊँचे थे। ऐसे पर्वत के स्थानों पर वे प्रभापूर्ण सिंहों के समान घूमे। ९१९

शुऱ्ऱिय कडल्ह ळॅल्लाञ् जुडर्मणिक् कऩहक् कुऩ्ऱैप्
पऱ्ऱिय वळैन्द वॅऩ्ऩप् परन्दुवन् दिऱुत्त शेऩैक्
कॊऱ्ऱवर् देवि मार्हण् मैन्दर्हळ् कॊम्ब ऩार्वन्
दुऱ्ऱवर् काण लुऱ्ऱ वरैनिलै युरैत्तु मऩ्ऩो 920

चुऱ्ऱिय–(भूलोक) घेरते रहे; कटल्कळ् ॲल्लाम्–सभी सागरों ने; चुटर् मणि–दीप्त रत्नोंवाले; कऩकम् कुऩ्ऱै–कनकमय पर्वत को; पऱ्ऱिय–ग्रसने के लिए; वळैन्त ॲऩ्ऩ–घेर लिया हो, ऐसा; परन्तु वन्तु–विस्तार से आकर; इऱुत्त चेऩै–जुटी सेना के; कॊऱ्ऱवर्–राजा लोग; तेविमार्कळ्–उनकी रानियाँ; मैन्तर् कळ्–सैनिक वीर पुरुष; कॊम्पु अऩ्ऩार्–पुष्पशाखा सदृश स्त्रियाँ; वन्तु उऱ्ऱवर्–जो आये; काणल् उऱ्ऱ–उनके द्वारा दृष्टव्य; वरै निलै–चन्द्रशैल पर्वत की स्थिति आदि; मऩ् उरैत्तुम्–विस्तार से कहेंगे। ९२०

भूमि को घेरे रहनेवाले सभी समुद्रों ने आकर मेरु को घेर लिया हो,

ऐसे सेना-सागर ने आकर चन्द्रशैल (गिरि) को घेर लिया। उसके राजा लोग, उनकी रानियाँ, वीर सैनिक और पुष्पलता-सी सुन्दरी स्त्रियाँ उस पर्वत के दृश्यों का आनन्द उठाने के लिए निकलीं। उस पर्वत और उन दृश्यों का अब हम (कवि) विस्तार के साथ वर्णन करेंगे। ९२०

पम्बुतेऩ् मिऴिरु तुम्बि परन्दिशै पाडि याड
उम्बर्वा ऩहत्तु निऩ्ऱ वॊळितरु तरुवि ऩोङ्गुम्
कॊम्बुहळ् पनैक्कै नीट्टिक् कुऴैयॊडु मॊडित्तुक् कोट्टुत्
तुम्बिह ळुयिरे यऩ्ऩ तुणैमडप् पिडिक्कु नल्हुम् 921

कोट्टु तुम्पिकळ्–दाँतोंवाले (पुरुष) हाथी; पम्पु–अधिकता से; तेऩ्–मधुमक्खियाँ; मिऴिरु–अलि; तुम्पि–काले भ्रमर; परन्तु–फैलकर; इचै पाटि–गीत गाते हुए; आट–मँडराते हैं, तब; उम्पर् वाऩ् अकत्तु–ऊपर के आकाशलोक तक जाकर; निऩ्ऱ–स्थित; ऒळि तरु तरुविऩ्–शोभा देनेवाले वृक्षों की; ओङ्कुम् कॊम्पुकळ्–ऊँची डालों को; पऩै कै नीट्टि–तालवृक्षों के समान सूँड़ों को बढ़ाकर; कुऴैयॊटुम् ऒटित्तु–पत्तों के साथ तुड़वाकर; उयिरे अऩ्ऩ–प्राणों के ही समान; तुणै–संगिनी; मटम् पिटिक्कु–छोटी आयु की हथिनियों को; नल्कुम्–देते हैं। ९२१

उस पर्वत में स्वर्गोन्नत आकाशव्यापी वृक्ष हैं। उन पर मधुमक्खियाँ आदि विविध भौंरे गुंजार करते हुए मँडरा रहे हैं। वहाँ दाँतवाले हाथी उन वृक्षों की डालों को पत्तों सहित तोड़कर अपनी संगिनी हथिनियों को खिलाते हैं! ९२१

पण्मलर् पवळच् चॆव्वाय्प् पऩिमलर्क् कुवळै यऩ्ऩ
कण्मलर् कॊडिच्चि मार्क्कुक् कणित्तॊऴिल् पुरियुम् वेङ्गै
उण्मलर् वॆऱुत्त तुम्बि पुदियते ऩुदवु नाहत्
तण्मल रॆऩ्ऱु वाऩत् तारहैत् तावु मऩ्ऱे 922

पण् मलर्–संगीत के समान (मधुर शब्द) प्रकट करनेवाले; पवळम् चॆव् वाय्–प्रवाल-सम अरुण मुख; पऩि कुवळै मलर् अऩ्ऩ–शीतल कुवलय पुष्प के समान; कण् मलर्–प्रफुल्लित आँखोंवाली; कॊटिच्चि मार्क्कु–"कॊटिच्चि" (पार्वत्य प्रदेश की जाति की) स्त्रियों के लिये; कणि तॊऴिल् पुरियुम्–ज्योतिषी का काम करनेवाले; वेङ्कै–"वेङ्कै" तरुओं के; उण् मलर् वॆऱुत्त–शहद पीकर पुष्प को जो त्याग चुके वे; तुम्पि–काले भ्रमर; वाऩम् तारकै–आकाश के नक्षत्रों को; पुतिय तेऩ् उतवुम्–नया शहद देनेवाले; नाकम् तण् मलर् ऎऩ्ऱु–पुन्नाग के शीतल फूल समझकर; तावुम्–उनकी ओर उछलते हैं; (अऩ्ऱु–ए)। ९२२

पर्वत प्रदेश की स्त्रियाँ "कॊटिच्चि" कही जाती हैं। मधुर-भाषिणी उनके अधर प्रवालसम लाल हैं। आँखें कुवलय पुष्प सदृश हैं। वेंगै वृक्ष उनके लिए ज्योतिषी का काम देते हैं। (जब वे फूलते हैं तब पर्वत प्रदेश के लोग खेती आरम्भ करते हैं। उनके विवाह आदि मंगल-कार्य

किये जाते हैं। वे वेंगै वृक्ष को देखकर ऋतु, सुमुहूर्त आदि का निर्धारण कर लेते हैं।) "वेंगै" वृक्ष के फूलों से भ्रमर शहद चूस चुके। फिर वे ऊपर देखते हैं तो नक्षत्र दिखाई देते हैं। वे भ्रमर उनको पुन्नाग वृक्ष के फूल समझकर नया शहद पाने की आशा से उन पर लपकते हैं। ९२२

मीऩ्ऩुम् पिडिह ळोडुम् विळङ्गुवॅण् मदिनल् वेऴम्
कूऩ्लवाऩ् कोडु नीट्टिक् कुत्तिडक् कुमुऱिप् पायुम्
तेऩ्ुहु मडैयै माऱ्ऱिच् चॅऩ्दिऩ्क् कुऱवर् मुऩ्दि
वाऩ्नी राऱु पाय्च्चि यैवऩ्म् वळर्प्पर् मादो 923

मीऩ् ॲऩ्ुम् पिटिकळोटुम्–नक्षत्ररूपी हथिनियों के साथ; विळङ्कु–शोभनेवाले; वॅळ् मति नल् वेऴम्–श्वेत चन्द्ररूपी श्रेष्ठ हाथी; कूऩ्ल् वाऩ् कोटु–वक्र, उज्ज्वल दाँतों को; नीट्टि–बढ़ाकर; कुत्तिट–(छत्तों में) खोंसने से; कुमुऱि पायुम्–शब्द के साथ बहनेवाले; तेऩ् उकु मटैयै–शहद के नाले को; चॅम् तिऩ् कुऱवर्–सुनिर्मित कोदों की खेतीवाले "कुऱव" (पार्वत्य) लोग; माऱ्ऱि–मार्ग बदलकर; मुऩ्ति–पहले; वाऩ् आऱु नीर् पाय्च्चि–आकाशगंगा का जल सींचकर; ॲवऩ्म् वळर्प्पर्–जंगली धान पालते हैं। ९२३

पर्वत प्रदेश के "कुऱ" लोग कोदों की खेती करनेवाले हैं। उसके लिए अधिक जल की आवश्यकता नहीं है। पर जंगली धान के लिए आवश्यक है। चन्द्ररूपी हाथी, जो नक्षत्ररूपी हथिनियों के साथ आकाश में घूमता है अपने दाँतोंरूपी नोकों से शहद के छत्तों को छेद कर उकसा देता है। उससे शहद की धार बहने लगती है। ("कुऱवों" की कोदों की खेती पहले ही हो चुकी) अब वे इस शहद की धारा को मार्ग बदलकर आकाशगंगा के जलमार्ग द्वारा जंगली धान के खेतों को ले जाकर सींचते हैं और धान पालते हैं। ९२३

कुप्पुऱऱ् करुमै यालक् कुलवरैच् चारल् वैहि
ऑप्पुऱत् तुलङ्गु हिऩ्ऱ वुडुपति याडि यिऩ्कण्
इप्पुऱत् तेयुङ् गाण्बार् कुऱत्तिय रियैऩ्द कोलम्
अप्पुऱत् तेयुङ् गाण्बा ररम्बय रऴ्हु मादो 924

कुप्पुऱऱ्कु अरुमैयाल्–पार कर जाना कठिन है, इसलिए; अ कुलम् वरै–उस श्रेष्ठ पर्वत के; चारल् वैकि–पार्श्व में ही ठहरकर; ऑप्पु उऱ–(दोनों ओर) समरूप; तुलङ्कुकिऩ्ऱ–रहनेवाले; उटुपति–उडुपति; आटियिऩ् कण्–(रूपी) आइने के; इ पुऱत्तेयुम्–इस तरफ़; कुऱत्तियर्–पार्वत्य स्त्रियाँ; इयैऩ्त कोलम् काण्पार्–अपना सजा हुआ का रूप देखती हैं; अ पुऱत्तेयुम्–उस तरफ़; अरम्पैयर्–अप्सराएँ; अऴ्कु काण्पार्–अपना रूप निहार लेती हैं। ९२४

चन्द्र उस पर्वत को पार कर नहीं जा सका और उसी पर ठहर गया। चन्द्र दोनों ओर समतल है और आइने के समान है। आइने के

इस तरफ़ में "कुऱ" स्त्रियाँ अपना रूप-प्रतिबिम्ब देख लेती हैं और उस तरफ से अप्सराएँ अपना रूप-प्रतिबिम्ब। ९२४

उदियुऱु तुरुत्ति यूदु मुलैयुऱु तीयुम् वायिऩ्
अदिविड नीरु नॆय्यु मुण्गिला दावि युण्णुम्
कॊदिनुऩै वेऱ्कण् मादर् कुऱत्तियर् नुदलि ऩोडु
मदियिऩै वाङ्गि यॊप्पुक् काण्गुवर् कुऱवर् मादो 925

उति उऱु–(भाथी से) निकलनेवाली; तुरुत्ति ऊतुम्–भाथी की निकाली गयी; उलै उऱु तीयुम्–भट्ठी की अग्नि और; वायिऩ्–(मुख) नोक पर; अति विटम् नीरुम्–अति विषैला जल; नॆय्युम्–और घी; उण्किलातु–न खाकर (लगाया जाकर); आवि उण्णुम्–प्राण हर सकनेवाले; कौति नुऩै वेल् कण्–संतापी सिरे के भाले के समान आँखोंवाली; कुऱत्तियर् मातर्–'कुऱ' स्त्रियों के; नुतलिऩोटु–भाले के साथ; मतियिऩै वाङ्कि–चन्द्र को रखकर; कुऱवर्–'कुऱ' पुरुष; ऒप्पु काण्कुवर्–तुलनाकर देखते; (मातु–ओ)। ९२५

भाला साधारणतः भट्ठी पर भाथी द्वारा निसृत हवा के सहारे जलनेवाले अंगारों पर तपाकर तेज किया जाता है। फिर उसके अग्रभाग (मुख) पर विष लगा दिया जाता है; उसे अचूक घातक बनाने के हेतु। जंग न लगे, इस निमित्त घी लगाया जाता है। पर किसी ऐसे प्रयत्न के विना ही 'कुऱ' स्त्रियों की आँखें पुरुषों के प्राण को हर सकनेवाली (मन को मोह लेनेवाली) हैं। ऐसी स्त्रियों के भालों को चन्द्र के पास रखकर पुरुष लोग उपमा की परीक्षा करते हैं। (चन्द्र इतने पास है क्योंकि वह पर्वत बहुत ऊँचा है)। ९२५

पेणुदऱ् करिय शीयक् कुरुळयुम् पिडिह ळीऩ्ऱ
काणुदऱ् किऩिय वेऴक् कऩ्ऱॊडु कळिक्कु मुऩ्ऱिल्
कोणुदऱ् कुरिय तिङ्गट् कुऴवियुङ् गुऱवर् तङ्गळ्
वाणुदऱ् कॊडिच्चि मार्द महवॊडु तवऴु मऩ्ऱे 926

कुऱवर् तङ्कळ् मुऩ्ऱिल्–'कुऱ' लोगों के (झोपड़ों के) आँगन में; पेणुतऱ्कु अरिय–पालने के लिए श्लाध्य; चीयम् कुरुळैयुम्–सिंह के शावक; पिटिकळ् ईऩ्ऱ–हथिनियों के जाये; काणुतऱ्कु इऩिय–दर्शनीय; वॆऴम् कऩ्ऱॊटु–हाथी के बच्चों के साथ; कळिक्कुम्–केलि करते; वाळ् नुतल् कॊटिच्चिमार्–उज्ज्वल ललाटवाली 'कॊटिच्चि' यों के; तम् मकवॊटु–बच्चों के साथ; कोण् नुतऱ्कु उरिय–अराल भाल से उपमेय; तिङ्कळ् कुऴवियुम्–बालचन्द्र भी; तवऴुम्–घुटनों के बल रेंगकर खेलता है। ९२६

(पार्वत्य) "कुऱ" जाति के लोगों के आँगनों में वे सिंहशावक, जिन्हें वे चाव से पालते हैं, और हथिनियों के सुन्दर कलभ साथ-साथ खेलते हैं। उज्ज्वल ललाटवाली 'कुऱ' स्त्रियों के बच्चों के साथ उन्हीं के भाल से उपमेय चन्द्र घुटनों चलकर मन बहलाता है। ९२६

अऩ्जऩक् किरियि ऩऩ्ऩ वऴिहवुळ् याऩै कॊऩ्ऱ
वॆऩ्जिऩत् तरियिऩ् रिण्काऱ् चुवट्टॊडु विऩ्जै वेन्दर्
कुऩ्जियन् दलत्तु नीलक् कुलमणित् तलत्तु मादर्
पऩ्जियङ् कमलम् बूत्त पशुञ्जुव डुडैत्तु मऩ्ऩो 927

कुलम् नील मणि तलत्तुम्–श्रेष्ठ नीली मणियों से भरे तल में; विऩ्चै वेन्तर्–विद्याधर राजाओं के; अम् कुऩ्चि तलत्तुम्–सुन्दर केश जाल में; अऩ्चऩम् किरि अऩ्ऩ–अंजन पर्वत-सम; अऴि कवुळ्–मदजल प्रवाही गालों के; याऩै कॊऩ्ऱ–हाथियों के मारक; वॆम् चिऩत्तु–कठोर वैर वाले; अरियिऩ्–सिंह के; तिण् काल् चुवट्टॊटु–गम्भीर चरण-चिह्नों के साथ; मातर्–विद्याधर स्त्रियों के; पऩ्चि अम् कमलम् पूत्त–महावर लगे चरणकमलों के लगने से बने; पचुमै चुवटु–गीले चिह्न; उटैत्तु–(उनसे पर्वत) अंकित था। ९२७

उस पर्वत की श्रेष्ठ नीली मणियों से आकीर्ण भूमि पर, और विद्याधरों के सुन्दर केशों पर क्रमश: मदनीर बहानेवाले गण्डस्थल के और अंजनगिरि सम काले हाथियों को मारकर जो चला उस भयंकर क्रोधी सिंह के पैरों के (रक्त के) लाल चिह्न और विद्याधरियों के लाक्षारस चर्चित चरणों के गीले चिह्न पाये जाते हैं। (इस पद में क्रमश: का प्रयोग कर स्थलों और चिह्नों को क्रमवार कहा गया है। यह 'यथा-संख्य' अलंकार है। स्त्रियों की रूठन शांत करने के लिए पुरुषों का सिर नवाना और स्त्रियों का लात मारना श्रृंगार-वर्णन का अंग समझा जाता है।)। ९२७

शॆङ्गय लऩयनाट्टञ जॆविपुहा मुऱुव ऱॊऩ्ऱा
पॊङ्गिरुङ् गूऩ्दल् शोरा पुरुवङ्ग णॆरिया पूविऩ्
अङ्गयु मिडऱुङ् गूट्टि नरम्बुळऱ्ऩ् दमुद मूऱुम्
मङ्गयर् पाडल् केट्टुक् किऩ्ऩर मयङ्गु मादो 928

चॆम् कयल् अऩैय नाट्टम्–सुन्दर 'कयल्' मछली-सी दृष्टि; चॆवि पुका–आँख तक नहीं जाती (चंचल नहीं बनती); मुऱुवल् तोऩ्ऱा–दाँत प्रकट नहीं होते; पॊङ्कु इरुकूऩ्तल्–बहुत रहनेवाला काला केश; चोरा–नहीं खलता; पुरुवङ्कळ्–भौंहें; नॆरिया–कुंचित नहीं होतीं; पूविऩ् अम् कैयुम्—कमल-सम हाथों की मुद्राएँ और; मिटऱुम्–कण्ठस्वर भी; कूट्टि–मेल बिठाकर; नरम्पु उळऱ्ऩुतु–तन्त्री झंकृत कर; अमुतम् ऊऱुम्–अमृत ढालनेवाला; मङ्कैयर् पाटल्–स्त्रियों का संगीत; केट्टु–सुनकर; किऩ्ऩरम्–किन्नर भी (देवजाति के गवैये या गायक पक्षी); मयङ्कुम्–मुग्ध रहते हैं। ९२८

'कुरु' स्त्रियों का गाना इतना मोहक है कि किन्नर भी मुग्ध हो जाते हैं। जब वे गाती हैं तो भद्दी अंग चेष्टाएँ नहीं करतीं; मछली सम आँखें चंचल नहीं बनतीं; दांत प्रकट नहीं होते; केशजाल खुलकर नहीं बिखरता; और भौंहें ऊपर नहीं चढ़तीं। हस्तमुद्राएँ और कंठस्वर में मेल

रहता है। तंत्रियों को झंकृत कर वे देवामृत ढलता हो, ऐसा संगीत गाती हैं। ९२८

कळ्ळविऴ् कोदै मादर् कादोॅडु मुऱवु शॅय्युम्
कॉळ्ळैवाट् कण्णि ऩार्दङ् गुङ्गुमक् कुऴम्बु तङ्गुम्
तॅळ्ळिय पळिक्कुप्पाऱैत् तॅळिशुऩै मणियिऱ् चॅय्द
वळ्ळमु नऱवु मॅऩ्ऩ वरम्बिल पॉलिव मऩ्ऩो 929

कातोॅटुम् उऱवु चॅय्युम्–श्रवणों तक आयत; कॉळ्ळै–(पुरुषों के प्राण-) हारी; वाळ् कण्णिऩार्–तलवार-सी आँखोंवाली; कळ् अविऴ् कोतै मातर् तम्–शहद बहानेवाले केशवाली स्त्रियों के; कुङ्कुमम् कुऴम्पु–कुंकुम के लेप; तङ्कुम्–जिसमें जम गये हैं उस; तॅळ्ळिय पळिङ्कु पाऱै–स्वच्छ स्फटिकशिला पर; तॅळि चुऩै–स्वच्छ सरोवर; वरम्पु इल–असंख्यक हैं; वळ्ळमुम्–मधुचषक और; नऱवुम् ॲऩ्ऩ–मधु के समान; पॉलिव–शोभित हैं। ९२९

स्फटिक शिलाओं पर जल के सरोवर हैं। उनमें स्त्रियाँ स्नान करती हैं तब कर्णों तक आयत तलवार सम आँखोंवाली, और मधु-मिश्रित कुंतलवाली उन स्त्रियों के कुंकुम का लेप उस जल में गलकर जल को गाढ़ा लाल बना देता है। तब वे सरोवर मधुचषक के समान और जल मधु के समान लगता है। ऐसे सरोवर असंख्यक हैं। ९२९

आडव रावि शोर वञ्जऩ वारि शोर
ऊडलिऱ् चिवन्द नाट्टत् तुम्बर्द मरम्बै मादर्
तोडलर् कोदै निऩ्ऱुन् दुऱन्दमन् दार मालै
वाडल नऱव ऱाद वयिऩ्वयिऩ् मयङ्गु मादो 930

उम्पर् तम्–देवों के योग्य; अरम्पै मातर्–अप्सराएँ; आटवर् आवि चोर–(अपने) पुरुषों के प्राणों को अधीर करते हुए; ऊटलिऩ्–रूठती हैं, इसलिए; चिवन्त नाट्टत्तु–लाल बनी आँखों से; अञ्चऩम् वारि–अंजनमिश्रित अश्रु; चोर–ढलकता है; कोतै निऩ्ऱु तुऱन्त–केश से उठाकर फेंकी गई; तोटु अविऴ् मन्तार मालै–दलविकसित मन्दार मालाएँ; वाटल–नहीं सूखीं; नऱव अऱात–शहद से हीन नहीं हुई; वयिऩ् वयिऩ्–(ऐसी मालाएँ) यत्र-तत्र; वयङ्कुम्–शोभा के साथ पड़ी थीं। ९३०

अप्सराएँ रूठ गयीं। उससे देवगण बहुत अधीर हो रहे। अप्सराओं की आँखें लाल हो गयीं। काजल को पिघलाते हुये अश्रु बहे। उन्होंने अपने केशों से विकसित दलवाले मंदार पुष्पों की बनी मालाओं को निकाल कर फेंक दिया। वे मालाएँ यत्र-तत्र शोभा देती हुई पड़ी हैं क्योंकि देवलोक के पुष्प सदा नवीन रहते हैं और शहद भरे रहते हैं। ९३०

माऩ्दळि रऩैय मेऩिक् कुऱत्तियर् मालै शूट्टिक्
कूऩ्दलङ् गमुहिऩ् पाळै कुऴलिऩो डॉप्पुक् काण्बार्

ऍन्दिळै यरम्बै माद रॆंळिन्मणिक् कडहम् वाङ्गिक्
कान्दळम् बोदिऱ् पॆय्दु कैहळो डोप्पुक् काण्बार् 931

मा तळिर् अन्नैय मेऩि–आम्र-पल्लव सदृश देहवाली; कुऱत्तियर्–'कुऱ' स्त्रियाँ; कून्तल् कमुकिऩ्–'कुंतलकमुक' नाम की विशेष जाति के क्रमुक पेड़ों के; पाळै–बालों सहित डण्ठलों पर; मालै चूट्टि–मालाएँ डालकर; कुळलित्तोट्टु ऒप्पु काण्पार्–अपने कुंतलों से तुलना कर देखतीं; एन्तु इळै अरम्पै मातर्–श्रेष्ठ आभरण-भूषित अप्सराएँ; ऒळिल् मणि कटकम् वाङ्कि–सुन्दर रत्नकंकण उतारकर; कान्तळ् अम् पोतिल् पॆय्तु–"कान्तळ्" के फूलों पर (जो स्त्रियों की अँगुलियों के समान पाँचदलीय हैं) पहनाकर; कैकळोट्टु ऒप्पु काण्पार्–अपने हाथों की समानता देखते। ९३१

वहाँ की "कुऱ" स्त्रियाँ जो आम्रपल्लव सम देहकांतिवाली हैं, 'कुंतल-क्रमुक' तरुओं के बालों सहित डंठलों पर मालाएँ पहनाती हैं और यह देखती हैं कि हमारे केश में और उनमें कैसी समता है। श्रेष्ठ आभरण-धारिणी अप्सराएँ "कांतळ्" पुष्पों को अपने रत्न कंकण पहनाकर अपने हाथों की समता परखती हैं। (कुंतल-क्रमुक क्रमुक जाति का एक विशेष तरु है जिसके बालों सहित डंठल स्त्रियों के केशों से उपमित किये जाते हैं। कांतळ् के पुष्प पाँच दल के होते हैं और वे स्त्रियों के हाथों से या सर्प के फन से उपमित होते हैं।)। ९३१

शरम्बयिल् शाप मन्न पुरुवङ्ग डम्मि लाड
नरम्बिन्नो डिन्निदु पाडि नाडह मयिलो डाडुम्
अरम्बयर् वॆरुत्तु नीत्त वविर्मणिक् कोवै यारम्
मरम्बयिल् कडुवन् पूण मन्दिकण् डुवक्कु मादो 932

नरम्पिन्नोट्टु इनितु पाटि–वीणा की तन्त्रियों के स्वर के साथ मेल बिठाकर गाकर; मयिलोट्टु नाटकम् आटुम्–मोरों के साथ नाचनेवाली; अरम्पैयर्–देवांगनाएँ; चरम् पयिल् चापम् अन्न–शरसंनद्ध चाप के समान; पुरुवङ्कळ्–भौंहें; तम्मिल् आट–परस्पर (अनुरूप) फड़कने देती हुई; वॆरुत्तु नीत्त–झुँझलाकर जिनको उतार फेंका है; अविर् मणि कोवै–उन कान्ति छिटकनेवाले रत्नहारों को; आरम्–और मुक्ता-मालाओं को; मरम् पयिल् कटुवन्–तरुओं पर घूमनेवाले बन्दर; पूण–लेकर (बँदरियों को) पहनाते हैं, तब; मन्ति–बँदरियाँ; कण्टु–देखकर; उवक्कुम्–मुदित होती हैं; (मातु, ओ)। ९३२

अप्सराएँ वीणा के साथ गातीं और मोर के साथ नाचतीं। उनको अपने प्रेमियों से मान हो गया। उनकी भौंहें फड़क उठीं और रुष्ट होकर उन्होंने रत्नहार, मुक्ता-मालाएँ आदि आभरण उतार कर फेंक दिये। तब पेड़ों पर विचरनेवाले वानरों ने उनको उठाया और अपनी वानरियों को पहना दिया। वानरियाँ उनको देखती मनोरंजन करने लगीं। ९३२

शान्दुयर् तडङ्ग डोरुन् दादुरा हत्तुच् चार्न्द
कून्दलम् बिडिह ळॆल्लाङ् गुङ्गुम मणिन्द पोलुम्

कान्दिऩ मणियिऩ् शोदिक् कदिरॊडुङ् गलन्दु मूशच्
चेन्दुवा ऩहमॆप् पोदुञ् जॆक्करै यॊक्कु मऩ्ऱे 933

चान्तु उयर्–चन्दन के तरु जहाँ उन्नत उगे हैं; तटङ्कळ् तोऱुम्–उन स्थल-स्थल पर; तातुराकत्तु चार्न्त–धातुराग (गैरिक) के रंग के लगने से; कून्तल् अम् पिटिकळ् ऎल्लाम्–सारी लोम-भरी सुन्दर हथिनियाँ; कुङ्कुमम् अणिन्त पोलुम्–कुंकुममण्डित-सी लगती हैं; कान्तु इऩम् मणियिऩ्–चमकदार श्रेष्ठ पद्मराग के पत्थरों की; चोति कतिरॊटुम् कलन्तु–अधिक लाल रंग से मिलकर; मूच–फैलती है, इसलिए; वाऩ् अकम् चेन्तु–आकाश लाल हो जाता है, और; ऎप्पोतुम् चॆक्करै ऒक्कुम्–सदा लाल-संध्यागगन के समान रहता है। ९३३

चन्दन तरुओं से लसित उस पर्वत प्रदेश में धातुराग (गैरिक) पाया जाता है। उसके कारण रोम-भरे शरीरवाली हथिनियों के ऊपर वह रंग लग जाता है। ऐसा लगता है कि उनके ऊपर कुंकुम का लेप लगाया गया है। पद्मराग के नग बिखरे पड़े हैं। उनकी ज्योति गैरिक की लाल बुकनियों के साथ मिलती है और आकाश में भर जाती है। इसलिए आकाश हमेशा संध्यागगन के समान लाल बना रहता है। ९३३

निलमहट् कणिह ळॆऩ्ऩ निऱैहदिर् मुत्तञ् जिन्दि
मलैमहळ् कॊऴुनऩ् चॆऩ्ऩि वन्दुवीऴ् गङ्गै पोऩ्ऱ
अलहिल्पॊन् ऩलम्बि यारञ् जार्न्दुवी ऴरुवि मालै
उलहळन् दवऩ्ऱऩ् मार्बि ऩुत्तरी यत्तै यॊत्त 934

अलकु इल् पॊऩ् अलम्पि–अपरिमेय स्वर्ण छितराती हुई; आरम् चार्न्तु–मुक्तामिलित; वीऴ् अरुवि मालै–गिरनेवाली सरिताओं की पंक्तियाँ; निलम् मकटकु–भूमिदेवी के; अणिकळ् ऎऩ्ऩ–आभरण होंगे, यह मानकर; निऱै कतिर् मुत्तम् चिन्ति–उज्ज्वल मोतियों को बहाती हुई; मलैमकळ् कॊऴुनऩ्–पर्वतराजकुमारी (पार्वतीदेवी) के पति (शिवजी) की; चॆऩ्ऩि वन्तु वीऴ्–जटा पर से नीचे सरकनेवाली; कङ्कै पोऩ्ऱ–शाखाओं सहित गंगा नदी के समान रहीं; उलकु अळन्तवऩ् तऩ् मार्पिऩ्–त्रिलोक नापनेवाले त्रिविक्रम देव के वक्ष के; उत्तरीयत्तै ऒत्त–उत्तरीय के समान भी थीं। ९३४

उस पर्वत पर सरिताएँ अत्यधिक मात्रा में स्वर्ण और मोती बहाती हुयी बहती थीं। जब वे झरनों के रूप में गिरती थीं तब वे पार्वतीपति श्रीशिव जी की जटाजूट से गिरनेवाली अनेक धाराओं की गंगाजी के समान थीं; पर्वत के निचले भाग में सरिताओं के रूप में बहती थीं तब त्रिलोकमापक त्रिविक्रमदेव के उत्तरीय के समान लगती थीं। ९३४

कोडुला नाहप् पूवो डिलवङ्ग मलरुङ् गूट्टिच्
चुडुवार् कळिवण् डोच्चित् तूनऱुन् देऱल् कॊळ्वार्
केडिला महर याऴिऱ् किऩ्ऩर मिदुऩम् पाडुम्
पाडला लूड ऩीङ्गुम् परिमुह मादर्क् कण्डार् 935

कोटु उलाम्–डालों पर पुष्पित; नाकम् पूवॊटु–पुन्नाग पुष्पों के साथ; इलवङ्कम् मलरुम्–लवंगपुष्पों को; कूट्टि–गूँथकर; चूटुवार–पहननेवाली; कऴि वण्टु ओच्चि–मत्त भ्रमरों को भगाकर; तू नऱु तेऱल् कॊऴ्वार्–स्वच्छ सुवासपूर्ण शहद लेनेवाली स्त्रियाँ; केटु इला–निर्दोष; मकर याऴिऩ्–मकराकार वीणा के स्वर के सदृश; किऩ्ऩर मितुऩम्–किन्नर जोड़ियों के; पाटुम् पाटलाल्–गाये गये गानों से; ऊटल् नीङ्कुम्–रूठन छोड़ती हैं जो; परि मुकम् मातर्–अश्वमुखी देवियों को; कण्टार्–देखा। ९३५

वहाँ अश्वमुखी किन्नर (देवता) लोग रहते थे। राजा दशरथ की सेना में रहनेवाली स्त्रियाँ, ऊँची डालों से पुन्नाग पुष्प और लवंग पुष्प चयन कर उनकी माला बनातीं; मधुमक्खियों को उड़ाकर शुद्ध, सुगंधित शहद को पी लेतीं। ऐसा करती हुयी घूमनेवाली उन्होंने किन्नर जाति की स्त्रियों को देखा, जो किन्नर-मिथुन के गाने सुनकर रूठन छोड़ देती थीं। ९३५

पॆरुङ्गऴि ऱेयु मैन्दर् पेरॆऴि लाहत् तोडुम्
पॊरुन्दुणैक् कॊङ्गै यऩ्ऩ पॊरुविल्कोङ् गरुम्बिऩ् माडे
मरुङ्गॊऩ्ऩक् कुऴैयुङ् गॊम्बिऩ् मडप्पॆडै वण्डुन् दङ्गळ्
करुङ्गुऴऱ् कऴिक्कुम् वण्डुम् कडिमणम् पुणर्दल् कण्डार् 936

पॆरु कऴिऱु एयुम् मैन्तर्–बड़े गजों के सदृश रहनेवाले वीर तरुणों के; पेर् अऴिल् आकत्तोटुम्–बहुत ही सुन्दर वक्षस्थलों से; पॊरुम्–मुकाबला कर सकनेवाले; तुणै कॊङ्कै अऩ्ऩ–जोड़े के स्तनों के समान; पॊरु इल्–अनुपमेय; कोङ्कु अरुम्पिऩ् माटु–सेमर की कलियों पर; मरुङ्कु ऒऩ्ऩ कुऴैयुम्–अपनी कमर के समान लचकनेवाली; कॊम्पिऩ्–पुष्पशाखाओं पर की; मट पॆटै वण्टुम्–बाला भौंरियाँ; तङ्कळ् करु कुऴल्–अपने काले केशों पर; कऴिक्कुम् वण्टुम्–भनभनाती हुई मोद करनेवाले भौंरे (दोनों को); कटि मणम् पुणर्तल्–सुखमय प्रेम-व्यवहार करते; कण्टार्–(कुछ ने) देखा। ९३६

कुछ स्त्रियों ने एक सरस दृश्य देखा। 'कोंगु' (सेमर की जाति का एक तरु विशेष) की कलियों के पास भौंरियाँ और भौंरे सुखमय संभोग में लगे थे। वे कलियाँ स्त्रियों के सुदृढ़ स्तन-द्वय के, जो बड़े-बड़े हाथियों के समान बलवान वीर पुरुषों के वक्ष-स्थल के साथ टकरा सकते थे, समान थीं और उन कलियों की अन्य कोई उपमा नहीं हो सकती है। वे भौंरियाँ उन पुष्पलताओं पर, जो स्त्रियों की कमर के समान लचीली हैं, ठहरने के स्वभाववाली थीं और भौंरे स्त्रियों के केशों पर आनन्द के साथ मँडराने के आदी थे। ९३६

पडिहत्तिऩ् ऱलमॊन् ऱॆण्णिप् पडर्शुऩै मुडुहिप् पुक्क
शुडिहैप्पूङ् गमल मऩ्ऩ शुडर्मणि मुहत्ति ऩार्तम्
वडहत्तो डुडुत्त तूशु माशिऩीर् नऩैप्प नोक्किक्
कडहक्कै यॆऱिन्दु तम्मिऱ् करुङ्गऴल् वीरर् नक्कार् 937

पटर् चुऩै–विशाल सरोवर को; पटिकत्तिऩ् तलम् ऍऩ्ऱु–स्फटिक तल यह; ऍण्णि–मानकर; मुट्टुकि पुक्क–सवेग जो उतरीं; चुटिकै–झूमर पहनी हुई; पू कमलम् अऩ्ऩ–नवीन कमलपुष्प सदृश; चुटर् मणि मुकत्तिऩार् तम्–उज्ज्वल मुखोंवाली स्त्रियों के; वटकत्तोट्टु–ओढ़नी के साथ; उटुत्त तूचुम्–अधोवस्त्र को; माचु इल् नीर् नऩैप्प–निर्मल जल ने गीला कर दिया, तब; नोक्कि–उसको देखकर; करु कऴल् वीरर्–सुडौल पायलधारी वीर; कटकम् कै ऍऱिन्तु–कटक शोभित (हाथ पीटकर) ताली बजाकर; तम्मिल् नक्कार–अपने में हँसे । ९३७

स्वच्छ जल का छोटा तालाब पड़ा था। स्त्रियों ने उसको भ्रम से स्फटिक-तल मान लिया। वे तुरन्त उसमें घुस पड़ीं। झूमर-भूषित, उत्साह से उत्फुल्ल मुखवाली, उनके उत्तरीय और अधोवस्त्र दोनों निर्मल जल से गीले हो गये। उसको देखकर वीरपायलधारी तरुण अपने में मिलकर कंकणशोभित अपने हाथों से ताली बजाकर हँसे। ९३७

पूवणै पलवुङ् गण्डार् पॊऩ्ऩरि मालै कण्डार्
मेवरुङ् गोब मऩ्ऩ वॆऴ्ळिलैत् तम्बल् कण्डार्
आवियि ऩिऩिय कॊण्गर्प् पिरिन्दऱ़ि वऴिन्द विज्जैप्
पावयर् वैहत् तीय्न्द पल्लव शयऩङ् गण्डार् 938

पू अणै–पुष्पशय्याएँ; पलवुम्–अनेक; कण्टार्–देखीं; पॊऩ्ऩरि मालै कण्टार्–कण्ठियाँ देखीं; मेवरुम् कोपम् अऩ्ऩ–आकर्षक वीरबहूटियों की तरह दिखनेवाली; वॆऴ् इलै तम्पल–तांबूल की पीक; कण्टार्–देखी; आवियिऩ् इऩिय–प्राणों से भी प्यारे; कॊण्कर् पिरिन्तु–पतियों के वियोग से; अऱिवु अऴिन्त–मूर्छित; विज्चै पावैयर् वैक–विद्याधर महिलाओं के शयन करने से; तीय्न्त–झुलसे हुए; पल्लव चयऩम् कण्टार्–पल्लवों की शय्या देखी। ९३८

(शैल पर सैर करनेवालों ने कैसे-कैसे दृश्य देखे!) उन्होंने यत्र-तत्र फूल की सेजें देखीं। उन पर "पॊऩ्ऩरि" नाम की हँसुलियाँ या कंठियाँ देखीं। उनको उन शय्याओं पर जो रात को लेटी रहीं उन्हीं ने उतार रख छोड़ा था। सेजों के पास इन्द्रगोप नामक लाल कीड़ों की तरह थूकी गयी पान की पीकें देखीं। कुछ पल्लवों की बनी शय्यायें भी देखीं जिनके पल्लव झुलसे नज़र आये। अपने प्राण-प्यारे प्रेमियों के वियोग-जनित ताप के कारण विद्याधरियों के शरीर गरम हो गये थे और उनके लेटे रहने से वे पल्लव सूख गये थे। ९३८

पाऩलङ् कण्ग ळाडप् पवळवाय् मुऱुव लाडप्
पीऩवॆम् मुलैयि ऩिट्ट पॆरुविलै यार माडत्
तेऩ्मुरऩ् ऱ़ळहत् ताडत् तिरुमणिक् कुऴैह ळाड
वाऩवर् महळि राडुम् वाशना रूशल् कण्डार् 939

पाऩल् अम् कण्कळ् आट–नीलोत्पल सी आँखें चंचल हैं; पवळम् वाय्–प्रवालसम अधरों पर; मुऱुवल् आट–हँसी खिलती हैं; पीऩम्–पीन; वॆम् मुलैयिऩ् इट्ट–

आकर्षक उरोजों पर पहने हुए; पॅरु विलै आरम् आट–अत्यधिक मूल्य के हार हिलते हैं; अळकत्तु–केश पर; तेऩ् मुरऩ्रु आट–मधुमक्खियाँ भनभनाती मँडराती हैं; तिरु मणि कुळैकळ् आट–उत्तम मणिमय कुण्डल झूमते हैं; वाऩवर मकळिर आटुम्–(इस साज के साथ) अप्सराएँ जिनपर झूलती हैं उन; वाचम् नाऱु–सुगन्धपूर्ण; ऊचल् कण्टार्–झूलों को देखा । ९३९

कुछ देवांगनाएँ झूलों पर झूलती थीं। तब उनकी कुवलयसम आँखें चलित होती थीं। प्रवालसम अधरों पर हँसी खेलती थी। पीन और मनोरम उरोजों पर मूल्यवान हार झूम रहे थे। उनके केशों पर भ्रमर भनभनाते मँडराते थे। श्रेष्ठ मणिमय कुंडल कानों पर झूम रहे थे। उनके झूले सुगन्धपूर्ण थे। ('आड' शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त है।) ९३९

सुऩ्दर वदऩ मादर् तुवरिदळ्प् पवळ वायुम्
अऩ्दमिल् शुरुम्बुऩ् देऩु मिञिरुमुण् डल्हुल् विऱ्कुम्
पैऩ्दॊडि महळिर् कैत्तोर् पशैयिल्लै यॆऩ्ऩ विट्ट
मैऩ्दरि ऩीत्त तीऩ्देऩ् वळ्ळङ्गळ् पलवुङ् गण्डार् 940

अल्कुल् विऱ्कुम्–भोग्य अंग को बेचनेवाली; पचुमै तॊटि मकळिर्–चोखे स्वर्ण के कंकण पहनी हुई (वार-) नारियाँ; ओर् पचै इल्लै–(अब इसके पास) कोई 'लसी' (आकर्षक धन) नहीं है; ऎऩ्ऩ–यह जानकर; कैत्तु विट्ट–जिनको त्याग चुकीं उन; मैन्तरिऩ्–तरुण पुरुषों के समान; चुऩ्तर वतऩम् मातर्–सुन्दरवदना स्त्रियों के; तुवर् इतळ् पवळम् वायुम्–लाल अधरोंवाले प्रवाल-सम मुखों से; अऩ्तम् इल्–अनन्त; चुरुम्पुम् तेऩुम् मिञिरुम्–मधुमक्खियों, भ्रमरों और काले भ्रमरों से; उण्टु नीत्त–पान कर त्यक्त; तीम् तेऩ् वळ्ळङ्कळ्–मधुर मधुपात्र; पलवुम्–अनेक; कण्टार्–देखे । ९४०

यत्र-तत्र रिक्त मधुपात्र अनेक देखे जाते हैं। उनको सुन्दरवदना स्त्रियों ने मधु पीकर, रिक्त करके फेंक दिया था। फिर उन पर भ्रमर बैठे और रहा सहा चूसकर उनको बिल्कुल नमीहीन कर दिया। उनको देखने पर उन नौजवानों की याद आती है जिनको, दाम लेकर सुख देनेवाली वारवनिताओं ने, इनके पास कोई "लसी" (चिपकानेवाली धनरूपी आकर्षक वस्तु) नहीं है— यह जानकर (बिल्कुल कंगाल बनाकर) घृणा के साथ त्याग दिया है ! (इसमें भ्रमर के तीन नाम आये हैं। वे भ्रमर की ही विभिन्न जातियों के नाम हैं)। ९४०

अऱ्पह लाक्कुञ् जोदिप् पळिक्कऱै यमळिप् पाङ्गर्
मऱ्पह मलर्ऩ्द तिण्डोळ् वाऩवर् मणऩ्द कोल
विऱ्पहै नुदलि ऩार्तङ् गलवियिऩ् वॆऱुत्तु नीत्त
कऱ्पह मीऩ्ऱ मालै कलऩॊडुङ् गिडप्पक् कण्डार् 941

अल् पकल् आक्कुम् चोति–रात को दिन में बदलनेवाली ज्योतिवाले; पळिङ्कु

अऱै–स्फटिक के कमरे के अन्दर; अमळि पाङ्कर्–शय्या के पास; मल् पक–मल्लों को भी डरा भगानेवाली; मलर्न्त तिण् तोळ्–विशाल भुजाओं के; वात्तवर् मणन्त–देवपुरुषों से जिन्होंने प्रणय किया था, उन; विल् पकै नुतलित्तार्–धनु से लड़नेवाले (समानता रखनेवाले) ललाट सहित देवांगनाओं से; तम् कलवियिन्–अपनी रतिवेला में; वॅरुत्तु नीत्त–(बाधा समझकर) झुँझलाते हुए त्यक्त; कऱ्पकम् ईन्ऱ मालै–कल्पक तरुओं से दी हुई मालायें; कलत्तॊटुम्–आभरणों के साथ; किटप्प–पड़ी हुई; कण्टार्–देखीं। ९४१

कहीं-कहीं स्फटिक-शिला के कमरे मिले। उनके अन्दर ऐसा प्रकाश पाया गया जिसने रात को दिन में बदल दिया था। उसमें शय्या बिछी थी। उसके पास कल्पकमालाएँ और हार आदि आभरण बिखरे पड़े थे। उनको, उन सुन्दर धनुसम ललाटवाली देवांगनाओं ने, जो मल्ल-विजयी भुजाओंवाले दैवपुरुषों के साथ रमी थीं, संभोग के अवसर पर बाधा समझकर झुंझलाहट के साथ निकालकर फेंक दिया था। ९४१

कैयॆन मलर वेण्डि यरुम्बिय कान्द णोक्किप्
पैयर विडुवॆन् ऱञ्जिप् पडैक्कण्गळ् पुदैक्किन् ऱारुम्
नॆय्तिरळ् वयिरप् पाऱै निळ्लिडैत् तोन्ऱुम् बोदैक्
कॊय्दिवै तरुदि रॆन्ऱु कॊळ्नरैत् तॊळुहिन् ऱारुम् 942

कै ऍन्त मलर वेण्टि–(स्त्रियों के) हाथ के समान विकसित होना चाहकर; अरुम्पिय कान्तळ्–लगा 'कान्तळ्' पुष्प देखकर; इतु पै अरवु ऍन्ऱु अञ्चि–'यह फन फैला साँप है' समझकर, डरकर; पटै कण्कळ्–भालारूपी हथियार-सम आँखों को; पुतैक्किन्ऱारुम्–बन्द कर लेने वालियाँ, और; नॆय् तिरळ्–मक्खन के समान राशिकृत; वयिरम् पाऱै निळल् इटै–हीरे की चट्टानों के प्रकाश में; तोन्ऱुम् पोतै–दिखनेवाले; पुष्पों को; इवै कॊय्तु तरुतिर् ऍन्ऱु–'इनको तोड़कर दीजिए', कहकर; कॊळ्नरै–पतियों को; तॊळुकिन्ऱारुम्–प्रार्थना करनेवालियाँ। ९४२

(कुछ स्त्रियों की चेष्टाएँ बतायी जाती हैं।) "कांतळ्" के फूल स्त्रियों की हथेलियों से उपमित किये जाते हैं। वे फन फैलाये रहनेवाले सर्प के समान भी दीखते हैं। वे "कांतळ्" पुष्प स्त्रियों के हाथों की समानता करने की इच्छा लेकर ही जन्म ले चुके हैं। उनको देखकर स्त्रियाँ सर्प समझकर डर जाती हैं और उनकी प्रकृति के अनुसार (जो भय उत्पन्न होने पर आँखों को हाथ से मूँदने की है) शूल सदृश आँखों को अपने हाथों से मूँद लेती हैं। कहीं स्फटिक शिला के अन्दर फूलों का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। उनको देखकर कुछ स्त्रियाँ भ्रमवश उनको असली पुष्प समझ लेती हैं और अपने पतियों से प्रार्थना करती हैं कि इनको तोड़कर ला दो। ९४२

पिन्नङ्ग ळुहिरिऱ् चॆय्दु पिण्डियन् दळिर्हैक् कॊण्ड
चिन्नङ्गण् मुलैयि न्ऱप्पित् तेमलर् कॊय्हिन् ऱारुम्

वऩ्ऩङ्गळ् पलवुऩ् दोऩ्ऱ मणियॊळिर् मयिलि ऩल्लार्
अऩ्ऩङ्गळ् पुहुन्द वॆऩ्ऩ वहऩ्शुऩै कुडैहिऩ् ड्ऱारुम् 943

वऩ्ऩङ्कळ् पलवुम् तोऩ्ऱ–कई रंगों को प्रकट करते हुए; मणि ऑळिर्–आभरणों की मणियाँ कान्ति बिखेरती हैं, उन आभरणों से शोभित; मयिलिऩ् नल्लार्–मयूर से भी अधिक छविवाली स्त्रियाँ; पिण्टि अम् तळिर्–अशोक के कोमल पल्लवों को; उकिरिऩ् पिऩ्ऩङ्कळ् चॅय्तु–नखों से नोचकर खण्ड-खण्ड बनाकर; कै कॊण्ट–अंजलि में भरकर; चिऩ्ऩङ्कळ्–उन टुकड़ों को; मुलैयिऩ् अप्पि–स्तनों पर लगाकर; तेम् मलर् कॊय्किऩ्ऱारुम्–शहद भरे फूल तोड़नेवालियाँ, और; अऩ्ऩङ्कळ् पुकुन्त ॲऩ्ऩ–हंस वहाँ आ गये हों, ऐसा; अकऩ् चुऩै–विशाल तालों में; कुटैकिऩ्ऱारुम्–स्नान करनेवालियाँ। ९४३

मयूरों की-सी छटावाली स्त्रियाँ सर्वालंकारभूषित थीं। उनके रत्न आदि नगों से रंग-बिरंगा प्रकाश छूट रहा था। वे अशोक के पल्लवों को नाखूनों से नोचकर खण्ड-खण्ड करके उन टुकड़ों को अपने स्तनों पर चिपकाये हुए थीं। वे शहद भरे नवीन फूल चुन रही थीं। ऐसी कुछ स्त्रियाँ पायी गयीं। और कुछ स्त्रियाँ नवागत हंसपक्षियों के समान पहाड़ी तालाबों में घुसकर गोते लगा रही थीं। ९४३

ईऩु माळै यिळन्दळि रेयॊळि, ईऩु माळै यिळन्दळि रेयिडै
माऩुम् वॆळमु नाहमु मादरतोळ्, माऩुम् वेळमु नाहमु माडॆलाम् 944

माटु ॲलाम्–(पर्वत-) तटों में; माळै इळम् तळिरे–कोमल आम्रपल्लव ही; ऑळि ईऩुम्–प्रकाश छिटकाते हैं; माऩुम्–हरिण; वेळमुम्–हाथी; नाकमुम्–वानर; मातर् तोळ् माऩुम्–स्त्रियों के कन्धों की समानता करनेवाले; वेळमुम्–बाँस; नागमुम्–सुरपुन्नाग सब कहीं पाये जाते हैं; इटै–मध्य भागों में; ईऩुम्–उस पर्वत से उत्पन्न; माळै इळम् तळिरे–कोमल स्वर्ण-पत्र ही। ९४४

(इसको मिलाकर आगे नौ पद हैं जो यमकालंकार के सुन्दर नमूने हैं। पर भाव में कोई विशेषता नहीं पायी जायगी। तो भी अर्थ भरे पद बने हैं।) उस पर्वत के सभी भागों में आम के कोमल पल्लव सुन्दर शोभा देते हैं। हरिण, हाथी, वानर, स्त्रियों के कंधों से तुलनेवाले बांस, 'सुरपुन्नाग'—सब (दिखाई देते) हैं। मध्य-मध्य में उस पर्वत पर मिलता है स्वर्ण का पतला पत्र। ९४४

पुहलुम् वाळरिक् कण्णियर् पॊऱ्पुयम्, पुहलुम् वाळरिक् कण्णियर् पूण्मुलै
अहिलु मारमु मारवङ् गोङ्गुमे, अहिलु मारमु मारवङ् गोङ्गुमे 945

पुकलुम्–प्रकीर्तित; वाळ् अरिक्कु अण्णियर्–भयंकर सिंहों के सदृश वीरों के; पॊऩ् पुयम्–सुशोभित कन्धे; वाळ् अरि कण्णियर्–तलवार-सम और डोरों से युक्त आँखोंवालियों के; पूण् मुलै–आभरणभूषित स्तनों को; पुकलुम्–(चाव के साथ) आलिंगन करते हैं; अकिलुम्–अगरु लेप; आरमुम्–चन्दन का लेप; अङ्कु आर–उनपर जम जाता है; ओङ्कुम्–और सुगन्ध में बढ़ जाता है; अकिलुम् आरमुम्–अगरु

के तरु और चन्दन वृक्ष; मारवम्–कुंकुमवृक्ष; कोङ्कुम्–सेमर के पेड़; मे–विशिष्ट रूप से शोभित थे। ६४५

प्रथित, सिंहसम वीरों की स्वर्णप्रभ भुजाएँ, तलवार-सी और लाल रेखाओं से युक्त आँखों वाली स्त्रियों के आभरणालंकृत स्तनों का आलिंगन करती हैं। उससे अगरु और चन्दन का लेप उन भुजाओं पर लग जाता है और वे भुजाएँ सुगन्धमय हो जाती हैं। उस पर्वत पर अगरु, चन्दन, "कुंकुम" (केसर) और सेमर आदि के पेड़ विशिष्ट स्थान पाते हैं (यानी अत्यधिक पाये जाते हैं)। ९४५

तुऩ्ऩ रम्बै नॅरुङ्गिय तॉल्वरै, तुऩ्ऩ रम्बय रूरुविऱ् ऱोऩ्ऱुमाल्
किऩ्ऩ रम्बयिल् कीदङ्ग ळॅऩ्ऩवाङ्, गिऩ्ऩ रम्बयिल् हिऩ्ऱऩ रेऴैमार् 946

तॉल् वरै–प्राचीन उस पर्वत पर; नॅरुङ्किय–घने रूप से उगे; तुऩ् अरम्पै–पत्तों से भरे केले के पेड़; तुऩ्–वहाँ आनेवाली; अरम्पैयर् ऊरुविल् तोऩ्ऱुम्–अप्सराओं के ऊरुओं के समान दिखाई देते हैं; एऴै मार्–स्त्रियाँ; आङ्कु–वहाँ; किऩ्ऩरम् पयिल् कीतङ्कळ् ऍऩ्ऩ–किन्नरों के गाये गीतों के समान; इऩ् नरम्पु अयिल्किऩ्ऱऩर्–मधुर वीणास्वर सुनती हैं। ६४६

प्राचीन उस पर्वत पर घने रूप से पाये जानेवाले केले के पेड़ वहाँ आनेवाली अप्सराओं की जंघाओं के समान सुन्दर हैं। स्त्रियाँ वहाँ वीणा का वादन कर रही हैं और वह संगीत किन्नरमिथुनों के संगीत के समान मनोरम है। ९४६

तिमिर मावुडऱ् कुङ्गुमच् चेदहम्, तिमिर मावॊडुञ् जन्दॊडुन् देय्क्कुमाल्
अमर मादरै यॊत्तॊऴि रञ्जॊलार्, अमर मादरै योत्तदव् वाऩमे 947

तिमिरम् मा उटल्—अन्धकार-सम काले जंगली सुअरों के शरीरों पर; कुङ्कुमम् चेतकम् तिमिर–कुंकुम का जो लेप मला है, उसको; मावॊटुम्–आम के पेड़ों; चऩ्तॊटुम् तेय्क्कुम्–और चन्दन के वृक्षों से मल देते हैं; अमर मातरै ऒत्तु ऒऴिर्–देवस्त्रियों के समान शोभायमान; अम् चॊल्लार्–सुन्दरभाषिणी स्त्रियाँ; अमर–वहाँ विराजमान हैं, इसलिए; मा तरै–श्रेष्ठ वह स्थल; अ वाऩमे ऒत्ततु–उस देवलोक के समान ही था। ६४७

स्त्रियाँ अपने शरीर से कुंकुम का लेप निकालकर फेंक देती हैं और वह अंधेरे के समान काले शरीरवाले जंगली सुअरों पर जम जाता है। वे आम और चन्दन के पेड़ों से अपने शरीरों को रगड़ते हैं। वहाँ देवाँगनाओं के समान स्त्रियाँ बैठी रहती हैं; इसलिए वह श्रेष्ठ पर्वत प्रदेश देवलोक की समानता करता है। ९४७

पेर वावॊडु माशुणम् बेरवेय्, पेर वावॊड् माशुणम् बॅरुमाल्
आर वारत्ति ऩोडु मरुवियॆ, आर वारत्ति ऩोडु मरुवियॆ 948

पेर् अवावोॅट्टु–बहुत चाह के साथ; माचुणम्–बड़े अजगर; पेर–रेंगते हैं, इसलिए; वेय् पेर्–बाँस गिर जाते हैं; आवोॅट्टु–जंगली गाय के साथ; मा चुणम् पेरुम्–बड़ी धूल उड़ती है; अरुवि–सरिताएँ; आर–बहुत; आरत्तित्तोॅट्टु–मोतियों के साथ; मरुवि–मिलकर; आरवारत्तिऩ् ओट्टुम्–बड़े शोर के साथ; ओट्टुम्–बहती हैं। ९४८

(चारे की खोज में) बड़ी चाव के साथ अजगर रेंगने लगता है तब बाँस के वृक्ष उखड़कर गिर जाते हैं। उससे डरकर जंगली गाय भागने लगती हैं और बड़ी धूल भी उठती है। सरिताएँ खूब मोती बहाती हुयी बड़े शोर के साथ बह रही हैं। ९४८

ऊऱु माहड मावुऱ् वूङ्गॅलाम्, ऊऱु माहड मामद मोङ्गुमे
आऱु शेर्वऩ मावरै याडुमे, आऱु शेर्वऩ मावरै याडुमे 949

ऊङ्कु ऍलाम्–उस पर्वत प्रदेश में; मा कट मा ऊऱु उऱ्–बड़ी जंगली गायों को बाधा देते हुए; मा कटम् मा–बड़े हाथियों का; ऊऱुम् मतम्–स्रवनेवाला मद जल; ओङ्कुम्–बढ़कर बहता है; आऱु चेर्वऩ–मार्ग में पड़े; मा–आम्रवृक्ष और; वरै–बाँस; आट्टुम्–चलित हो जाते हैं; मा–(कुछ) जानवर; वरै आट्टुम्–पर्वतीय बकरियाँ; आऱु चेर्वऩ–उन नदियों पर आ जाते हैं। ९४९

वहाँ सर्वत्र बड़ी-बड़ी जंगली गायों के भी मार्गगमन में बाधा देता हुआ बड़े हाथियों का मदजल बहा करता है। उस प्रवाह के मार्ग में रहनेवाले आम के और बाँस के पेड़ चलित हो जाते हैं। कुछ पहाड़ी जानवर और पहाड़ी बकरे उधर (प्रवाह में जल पीने के लिए) आ जाते हैं। ९४९

कल्लि यङ्गु करुङ्गुऱ् मङ्गयर्, कल्लि यङ्गहऴ् कामर् किऴङ्गॅडा
वल्लि यङ्ग ऍरुङ्गु मरुङ्गॅलाम्, वल्लि यङ्ग ऍरुङ्गि मयङ्गुमे 950

कल् इयङ्कु–पर्वत में रहनेवाले; करु कुऱ मङ्कैयर्–काली 'कुऱ' स्त्रियाँ; अङ्कु–वहाँ; कल्लि अकऴ्–खोदकर लिया जानेवाला; कामर् किऴङ्कु–श्रेष्ठ कंदों को; ऍटा–लेने के लिए; वल्लियङ्कऴ् नॅरुङ्कुम्–बाघ जहाँ अधिक संचार करते हैं उन; मरुङ्कु ऍलाम्–सभी स्थानों में; वल् इयङ्कऴ्–उच्च शोर मचानेवाले चमड़े के वाद्य; नॅरुङ्कि मयङ्कुम्–खूब मिश्रित होकर नाद करते हैं। ९५०

उस पर्वत पर रहनेवाली काले रंग की "कुऱ" स्त्रियाँ भूमि खोद कर कन्द निकालने जाती हैं। पर वहाँ बाघ आते-जाते हैं। ये स्त्रियाँ बिना भय के खोदें— इस वास्ते चमड़े के वाद्य बजाये जाते हैं। ९५०

कोऴि पङ्गय मूऴ्हक् कुऴिर्हयम्, कोऴि पङ्गय मूऴ्हक् कुलैन्दवाल्
आऴि पॉङ्गु मरम्बय रोदिये, आऴि पॉङ्गु मरम्बय रोदिये 951

कुऴिर् कयम्–शीतल जलाशयों में; कोऴ् इपम्–बलिष्ठ गज; कयम्–कलभ; मूऴ्क–गोते लगाते हैं, इसलिए; कोऴि–वट वृक्ष; पङ्कयम्–कमल; ऊऴ्क

कुलैन्त–डील खोकर विध्वस्त हुए; आऴि पॊङ्कुम्–शेर जहाँ गरजकर उठते हैं; मरम् पैयर् ओति–उन तरुसंकुल प्रदेश के उस पर्वत में; अरम्पैयर् ओति–अप्सराओं के केश पर; आऴि पॊङ्कुम्–अलि उमंग के साथ मँडराते हैं। ९५१

शीतल जलाशय में बलिष्ठ हाथी और कलभ आकर गोते लगाते हैं। इसलिए तट पर रहनेवाले वट वृक्ष और जलस्थ कमल नष्ट हो जाते थे। शेर जिस प्रदेश में दहाड़ते हुए झपटते हैं उस प्रदेश में रहनेवाली अप्सराओं के केश पर अलि मुदित होकर मँडराते हैं। ९५१

आह मालय माहवु ळाळ्पॊलि, वाह मालय निऩ्ऱॆऩ लाहुमाल्
मेह मालै मिडैन्दऩ मेलॆलाम्, मेह मालै मिडैन्दऩ कीऴॆलाम् 952

मेल् ऎलाम्–ऊपर के तलों में; मेकम् मालै–मेघमालायें; मिटैन्तऩ–खूब भरी हुई थीं; कीऴ् ऎलाम्–निचले तलों में; मे कम् मालै–उत्तम आकाशलोक की मालाएँ; मिटैन्तऩ–भरी पड़ी हैं; आकम् आलयमाक उळाळ्–वक्षनिवासिनी (श्रीलक्ष्मी) के; पॊलिवु आक–शोभित रहने के लिए; माल् अयल् निऩ्ऱतु–श्रीविष्णु के पास खड़ी हैं; ऎत्तल् आम्–ऐसा कल्पना करने योग्य था। ९५२

ऊपरी भाग पर मेघ-मालाएँ पायी जाती हैं। नीचे उत्तम देवलोक में मिलनेवाले पुष्पों की मालाएँ तितर-बितर पड़ी हैं। यह दृश्य ऐसा लगता है मानो मेघवर्ण श्रीविष्णु के पास लक्ष्मीदेवी खड़ी हों। (यहाँ तक के नौ पदों में भावछटा से अधिक यमक की सज्जा है।)। ९५२

पॊङ्गु तेऩुहर् पूमिञि ऱामॆऩ, ऎङ्गु मादरु मैन्दरु मीण्डियत्
तुङ्ग माल्वरैच् चूऴल्हळ् यावयुम्, तङ्गि नीङ्गलर् तामिऩि दाडिऩार् 953

पू पॊङ्कु तेऩ् नुकर्–फूलों से ढलकनेवाले शहद के पान में लीन; मिञिऱु आम् ऎऩ–भ्रमरों के समान; मातरुम् मैन्तरुम्–स्त्रियाँ और पुरुष; ऎङ्कुम् ईण्टि–सर्वत्र मिलकर घूमकर; अ तुङ्कम् माल् वरै–उस उत्तुंग और गुरु पर्वत के; चऴल्कळ् यावैयुम्–सभी स्थानों में; तङ्कि–ठहरकर; नीङ्कलर्–नहीं हटते; इऩितु आटिऩार्–सुख से क्रीडा करते रहे। ९५३

शहद झरनेवाले फूलों पर जैसे भ्रमर, वैसे ही स्त्रियाँ और पुरुष उस उन्नत पर्वत पर सर्वत्र इकट्ठा होकर, मनोरम हरे-भरे स्थानों में बैठकर, अलग होने का नाम न लेते हुए खूब क्रीडामग्न रहे। ९५३

इऱक्क मॆऩ्बदै यॆण्णल रऩ्ऩदु, पिऱक्क लऩ्ऩदॊर् पीऴय दाहलिऩ्
तुऱक्क मॆय्दिय तूयव रॆऩ्ऩ, मऱक्क हिऱ्ऱिल रऩ्ऩदऩ् माण्बॆलाम् 954

तुऱक्कम् ऎय्तिय तूयवरे ऎऩ–स्वर्गप्राप्त पवित्र जीवों की ही तरह; अऩ्ऩतऩ् माण्पु ऎलाम्–उसकी सारी विशेषताओं को; मऱक्ककिऱ्ऱिलर्–भूल नहीं सके; इऱक्कम् ऎऩ्पतै–उतरने का नाम; ऎण्णलर्–नहीं सोचते; अऩ्ऩतु–उतरना; पिऱक्कल् अऩ्ऩतु–जन्म लेने की सी; ओर् पीऴैयतु आतलिऩ्–पीड़ा देनेवाली बात है। ९५४

उस पर वे सब स्वर्ग में पहुँचे हुए पवित्र जीवों के समान रहे। वे उस पर्वत पर की सुखद मनोरंजन देनेवाली विशेषताएँ नहीं भूल सके (छोड़ जाना नहीं चाहते थे)। नीचे उतरने का नाम लेना भी उन्हें असह्य लगा क्योंकि वह स्वर्गवासी के लिए जन्म लेने की पीड़ा के समान लगता था। ९५४

मञ्जार्मलै वारण मॊत्तदु वाऩि लोडुम्
वॅञ्जायै युडैक्कदि रङ्गदऩ् मीदु पायुम्
पञ्जाऩऩ मॊत्तदु मऱ्ऱदु पाय वेऱुम्
शॆञ्जोरि यॆऩप्पॊलि वुऱ्ऱदु शॆक्कर् वाऩम् 955

मञ्चु आर् मलै–सुन्दरतापूर्ण अस्ताचल; वारणम् ऑत्ततु–हाथी के समान था; वाऩिल् ओट्टुम्–आकाश में सवेग जानेवाले; वॅम् चायै उटै (य) कतिर्–गरम किरणोंवाले सूर्य; अङ्कु–वहाँ; अतऩ् मीतु पायुम्–उस (पर्वत पर) झपटनेवाले; पञ्चाततम् ऑत्ततु–पंचानन के समान हैं; अतु पाय–उसके झपटने से; एऱुम्–निकलकर फैलनेवाले; चॅम् चोरि ऎऩ–लाल रक्त के समान; चॅक्कर् वाऩम्–सांध्यगगन; पॉलिवुऱ्ऱतु–रागरंजित रहा। ९५५

तब सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था। वह अस्ताचल हाथी के समान था। उस ओर जानेवाला गरम अंशुमाली उस पर झपटने वाले पंचानन (सिंह) के समान था। उसके झपटने पर हाथी का सिर फटा और चारों ओर रक्त फैला-सा संध्या-गगन का रंग दिखाई दिया। ९५५

तिणियार्शिऩै मामरम् यावयुञ् जॅक्कर् पायत्
तणियाद नऱुन्दळि रीऩ्ऱऩ पोऩ्ऱु ताऴ
अणियारॊळि वन्दु निरम्बलि ऩङ्ग मॆङ्गुम्
मणिया लियऩ्ऱ मलैयॊत्तदम् मैयिल् कुऩ्ऱम् 956

तिणि आर् चिऩै–घनी डालोंवाले; मा मरम्–बड़े पेड़ों; यावैयुम्–सभी पर; चॅक्कर् पाय–सायं संध्या का लाल रंग छा गया, तब; तणियात–अक्षय; नऱु तळिर्–सुवासपूर्ण पल्लवों को; ईऩ्ऱत्त पोऩ्ऱु–अभी उत्पन्न किया हो, ऐसा; ताऴ–झुके हुए थे; अणि आर् ऑळि–मनोरम वह लालिमा; अङ्कम् ऍङ्कुम्–सभी अंगों में; वन्तु निरम्पलिऩ्–आकर फैल गई, इसलिए; अ–वह; मै इल् कुऩ्ऱम्–निर्दोष (चन्द्रशैल) पर्वत; मणियाल् इयऩ्ऱ्–मणिक नगों के बने; मलै ऑत्ततु–पर्वत के समान लगा। ९५६

घनी डालों से युक्त सभी आम के पेड़ों पर वह लालिमा छायी थी। इसलिए सभी पत्ते नये पल्लवों के समान लगे। उनका प्रकाश पर्वत के सभी भागों में बिखरा था। इसलिए वह पर्वत माणिक्य के पत्थरों का बना हुआ-सा दिखाई दिया। ९५६

कण्णुक्किऩि दाहि विळङ्गिय काट्चि यालुम्
ऑण्णऱ्करि दाहि यिलङ्गुशि रङ्ग ळालुम्
वण्णक् कॉऴुञ्जन् दऩच्चेदह मार्प णिन्द
अण्णऱ् करियाऩ् ऱऩैयॉत्तदव् वाशिल् कुऩ्ऱम् 957

अव् आचु इल् कुऩ्ऱम्–वह निर्दोष पर्वत; कण्णुक्कु इऩितु आकि विळङ्किय–आँखों को सुखद रखनेवाले; काट्चियालुम्–रूप सौष्ठव से और; ऑण्णऱ्कु अरितु आकि–अशोच्य बनकर; इलङ्कु–प्रकाशमय रहनेवाले; चिरङ्कळालुम्–शिखरों के कारण; वण्णम्–सुचारु रंग के; कॉऴु चन्तऩम् चेतकम्–गाढ़े चन्दन के लेप से; मार्पु अणिन्त–चर्चित वक्षवाले; अण्णल् करियाऩ् तऩै–पूज्य श्यामल (श्री विष्णुदेव) के समान था। ९५७

उस पर्वत पर आँखों को सुख देनेवाले अनेक दृश्य थे। उसका स्वरूप भी स्वतः रम्य था। अगणित और शोभायमान शिखर थे। इनके कारण वह नीलमेघश्याम श्रीविष्णु के समान लगता था, जिनका वक्ष चंदन के गाढ़े लेप से चर्चित हो। (इधर श्रीविष्णु का "सहस्रशीर्ष, सहस्राक्ष, सहस्रपात" —रूप इंगित है।)। ९५७

ऊऩुम्मुयि रुम्मऩै यारॉरु वर्क्कॉरुवर्
तेऩुम्मिञि ऱुञ्जिऱु तुम्बियुम् बम्बि यार्प्प
याऩै यिऩमुम् पिडियुम्मिह लाऴि येऱुम्
माऩुङ् गलैयु मॅऩमाल्वरै वन्दि ऴिन्दार् 958

ऑरुवर्क्कु ऑरुवर्–परस्पर; ऊऩुम् उयिरुम् अऩैयार्–शरीर और प्राण-सम (प्यारे) रहनेवाले; तेऩुम् मिञिऱुम् चिऱु तुम्पियुम् पम्पि आर्प्प–मधुमक्खियाँ, काले भ्रमर और छोटे अलियों के आकार गुँजार करते; याऩै इऩमुम् पिटियुम्–हाथी के समूह और हथिनियाँ; इकल् आऴि–बलिष्ठ शेरनियाँ और; एऱुम्–शेर; माऩुम् कलैयुम्–हरिणियाँ और हरिण; ऍऩ–जैसे; माल् वरै इऴिन्तु–श्रेष्ठ पर्वत से उतरकर; वन्तार्–आये। ९५८

(ऊपर घूमने जो गये थे वे स्त्री-पुरुष नीचे उतर आये।) परस्पर प्राणसम प्यार करनेवाले स्त्री और पुरुष उस श्रेष्ठ पर्वत से नीचे उतर आये। तब उनके केशों पर भ्रमर आकर गुंजार के साथ मँडराने लगे। वे हथिनी और हाथी के समान, शेरनी और शेर के समान तथा हरिणी और हरिण के समान दिखाई दिये। (रूप, बल, छटा आदि के साधर्म्य के कारण उन जानवरों में और इन स्त्री-पुरुषों में तुलना की गयी है।)। ९५८

काल्वाऩहत् तेरुडै वॅय्यवऩ् काय्ह डुङ्गण्
कोलमाय्क्कदिरप् पुल्लुळैक् कॉलशिऩक् कोळ रिम्मा

मेल्पाऩ्   मलैयिऱ्   पडवीङ्गिरुळ्   वेऱि   रुन्द
माल्याऩै   यीट्ट   मॅऩ्वन्दु   परन्द   दऩ्ऱे 959

काल्–(एक) चक्रवाले; वाऩकम् तेर् उटै–आकाशचारी रथ के स्वामी; वॆय्यवऩ्–सूर्यरूपी; काय् कट्टु कण्–जलानेवाली भयंकर आँख; कोल्माय्–शरों को छिपा सकनेवाला; कतिर् पुल् उळै–किरणोंरूपी अयालवाला; कॊल् चिऩम्–संहारक क्रोधी; कोळ् अरि मा–शानदार सिंह; मेल् पाल् मलैयिल् पट–पश्चिमी पर्वत के पीछे छिप जाने से; वेरु इरुन्त–अलग छिपे रहे; वीङ्कु इरुळ्–घना विशाल अन्धकार; माल् यातै ईट्टम् ॲऩ–बड़े गजदलों के समान; वन्तु परन्ततु–आकर छा गया (इसमें श्लेष भी है। सिंह सम्बन्धी अर्थ करते वक्त यों विग्रह करना पड़ेगा— काल् वाल् नकत्तु एर् उटै–पैरों में सफ़ेद नाखूनों की शोभा जिसकी हो; वॆय्य वऩ् काय् कट्टु कण्–भयंकर, और अचल सुदृढ़ दृष्टि और; कोल् माय् कतिर् पुल् उळै–शर छिपा सकनेवाले उज्ज्वल अयालवाला; कॊल चिऩम् कोळरि मा–घातक क्रोध का शानदार सिंह।)। ९५९

एकचक्ररथी सूर्य सिंह था जो अस्ताचल के पीछे छिप गया। तब अंधकाररूपी गज जो अब तक कहीं छिपे रहे प्रकट हो आये और सर्वत्र फैल गये। (संधिविग्रह के चातुर्य से सूर्य और सिंह दोनों के लिए प्रयुक्त होनेवाली शब्दयोजना है। सूर्य के पक्ष में— एकचक्र, आकाशचारी रथ के स्वामी किरणमालीरूपी, जला सकनेवाली भयंकर आँखें; शरों को छिपा दें ऐसी किरणोंरूपी अयाल; संहारक क्रोध इनसे युक्त शानदार सूर्यरूपी सिंह। शेर के पक्ष में— पैरों में नाखूनों की शोभा से युक्त; क्रूरता और भयंकर आँखों का; और शर प्रेषित हों तो वे जाकर छिप जायँ ऐसे अयालों का; घातक क्रोधी सिंह।)। ९५९

मन्दार   मुन्दु   महरन्द   मणङ्गु   लावुम्
अन्दा   ररशर्क्   करशऩ्ऱ   ऩीक   वॆळ्ळम्
नन्दा   दॊलिक्कु   नरलैप्पॆरु   वेलै   यॆल्लाम्
शॆन्दा   मरैपूत्   तॆऩ्त्तीब   मॆडुत्त   वऩ्ऱे 960

मन्तारम् उन्तु–मन्दार सुमनों के बने; मकरन्तम् मणम् कुलावुम्—मकरन्दगन्ध-मिश्रित; अम् तार्–सुन्दर मालाधारी; अरचर्क्कु अरचऩ् तऩ्–राजाधिराज (दशरथ) की; अऩीकम्–सेना; वॆळ्ळम्–का समूह; नन्तातु ऑलिक्कुम्–अक्षय रूप से गरजनेवाले; नरलै पॆरु वेलै ॲल्लाम्–बड़े शोर-युक्त सागर भर में; चॆन्तामरै पूत्त–लालकमल विकसित हुए; ॲऩ–ऐसा; तीपम् ॲटुत्त–दीप (जल उठे) जलाये गये। ९६०

(रात हो गयी और दीप जलाये गये— वह दृश्य कैसा था ?) मंदारमकरंद से वासित मालाधारी चक्रवर्ती दशरथ की सेना विशाल सागर है जो अक्षय रूप से गरजती (शोर मचाती) रहती है। उस पर अनेक कमल खिले हों, ऐसे अनेक दीप जलाये गये। (मंदार—देवलोक तरु का पुष्प।)। ९६०

कण्णुक्किऩि दाहि विळङ्गिय काट्चि यालुम्
ऑण्णऱ्करि दाहि यिलङ्गुशि रङ्ग ळालुम्
वण्णक् कौऴुञ्जन् दऩच्चेदह माऱ्प णिन्द
अण्णऱ् करियाऩ् ऱऩैयौत्तदव् वाशिल् कुऩ्ऱम् 957

अव् आचु इल् कुऩ्ऱम्–वह निर्दोष पर्वत; कण्णुक्कु इऩितु आकि विळङ्किय–आँखों को सुखद रखनेवाले; काट्चियालुम्–रूप सौष्ठव से और; ऑण्णऱ्कु अरितु आकि–अशोच्य बनकर; इलङ्कु–प्रकाशमय रहनेवाले; चिरङ्कळालुम्–शिखरों के कारण; वण्णम्–सुचारु रंग के; कौऴु चन्तऩम् चेतकम्–गाढ़े चन्दन के लेप से; माऱ्पु अणिन्त–चर्चित वक्षवाले; अण्णल् करियाऩ् तऩै–पूज्य श्यामल (श्री विष्णुदेव) के समान था। ९५७

उस पर्वत पर आँखों को सुख देनेवाले अनेक दृश्य थे। उसका स्वरूप भी स्वतः रम्य था। अगणित और शोभायमान शिखर थे। इनके कारण वह नीलमेघश्याम श्रीविष्णु के समान लगता था, जिनका वक्ष चंदन के गाढ़े लेप से चर्चित हो। (इधर श्रीविष्णु का "सहस्रशीर्ष, सहस्राक्ष, सहस्रपात" —रूप इंगित है।)। ९५७

ऊऩुम्मुयि रुम्मऩै यारौरु वर्क्कौरुवर्
तेऩुम्मिञि ऱुञ्जिऱु तुम्बियुम् बम्बि याऱ्प्प
याऩै यिऩमुम् पिडियुम्मिह लाऴि येऱुम्
माऩुङ् गलैयु मॅऩमाल्वरै वन्दि ऴिन्दार् 958

ऑरुवर्क्कु ऑरुवर्–परस्पर; ऊऩुम् उयिरुम् अऩैयार्–शरीर और प्राण-सम (प्यारे) रहनेवाले; तेऩुम् मिञिऱुम् चिऱु तुम्पियुम् पम्पि आर्प्प–मधुमक्खियाँ, काले भ्रमर और छोटे अलियों के आकार गुँजार करते; याऩै इऩमुम् पिटियुम्–हाथी के समूह और हथिनियाँ; इकल् आळि–बलिष्ठ शेरनियाँ और; एऱुम्–शेर; माऩुम् कलैयुम्–हरिणियाँ और हरिण; अॅऩ–जैसे; माल् वरै इऴिन्तु–श्रेष्ठ पर्वत से उतरकर; वन्तार्–आये। ९५८

(ऊपर घूमने जो गये थे वे स्त्री-पुरुष नीचे उतर आये।) परस्पर प्राणसम प्यार करनेवाले स्त्री और पुरुष उस श्रेष्ठ पर्वत से नीचे उतर आये। तब उनके केशों पर भ्रमर आकर गुंजार के साथ मँडराने लगे। वे हथिनी और हाथी के समान, शेरनी और शेर के समान तथा हरिणी और हरिण के समान दिखाई दिये। (रूप, बल, छटा आदि के साधर्म्य के कारण उन जानवरों में और इन स्त्री-पुरुषों में तुलना की गयी है।)। ९५८

काल्वाऩहत् तेरुडै वॅय्यवऩ् कायह डुङ्गण्
कोलमाय्कदिरप् पुल्लुळैक् कौलशिऩक् कोळ रिम्मा

मेल्पाऩ् मलैयिऱ् पडवीङ्गिरुळ् वेऱि रुऩ्द
माल्याऩै यीट्ट मॆऩ्वऩ्दु परऩ्द दऩ्ऱे 959

काल्–(एक) चक्रवाले; वाऩकम् तेर् उटै–आकाशचारी रथ के स्वामी; वॆय्यवऩ्–सूर्यरूपी; काय् कटु कण्–जलानेवाली भयंकर आँख; कोल्माय्–शरों को छिपा सकनेवाला; कतिर् पुल् उळै–किरणोंरूपी अयालवाला; कॊल् चिऩम्–संहारक क्रोधी; कोळ् अरि मा–शानदार सिंह; मेल् पाल् मलैयिल् पट–पश्चिमी पर्वत के पीछे छिप जाने से; वेरु इरुन्त–अलग छिपे रहे; वीङ्कु इरुळ्–घना विशाल अन्धकार; माल् याऩै ईट्टम् ऎऩ–बड़े गजदलों के समान; वन्तु परन्ततु–आकर छा गया (इसमें श्लेष भी है। सिंह सम्बन्धी अर्थ करते वक्त यों विग्रह करना पड़ेगा– काल् वाल् नकत्तु एर् उटै–पैरों में सफ़ेद नाखूनों की शोभा जिसकी हो; वॆय्य वऩ् काय् कटु कण्–भयंकर, और अचल सुदृढ़ दृष्टि और; कोल् माय् कतिर् पुल् उळै–शर छिपा सकनेवाले उज्ज्वल अयालवाला; कॊल चिऩम् कोळरि मा–घातक क्रोध का शानदार सिंह।)। ९५९

एकचक्ररथी सूर्य सिंह था जो अस्ताचल के पीछे छिप गया। तब अंधकाररूपी गज जो अब तक कहीं छिपे रहे प्रकट हो आये और सर्वत्र फैल गये। (संधिविग्रह के चातुर्य से सूर्य और सिंह दोनों के लिए प्रयुक्त होनेवाली शब्दयोजना है। सूर्य के पक्ष में— एकचक्र, आकाशचारी रथ के स्वामी किरणमालीरूपी, जला सकनेवाली भयंकर आँखें; शरों को छिपा दें ऐसी किरणोंरूपी अयाल; संहारक क्रोध इनसे युक्त शानदार सूर्यरूपी सिंह। शेर के पक्ष में— पैरों में नाखूनों की शोभा से युक्त; क्रूरता और भयंकर आँखों का; और शर प्रेषित हों तो वे जाकर छिप जायँ ऐसे अयालों का; घातक क्रोधी सिंह।)। ९५९

मऩ्दार मुऩ्दु महरऩ्द मणङ्गु लावुम्
अऩ्दा ररशर्क् करशऩ्ऱ ऩ़ीक वॆळ्ळम्
नऩ्दा वॊलिक्कु नरलैप्पॆरु वेलै यॆल्लाम्
शॆऩ्दा मरैपूत् तॆऩत्तीब मॆडुत्त वऩ्ऱे 960

मऩ्तारम् उऩ्तु–मन्दार सुमनों के बने; मकरऩ्तम् मणम् कुलावुम्—मकरन्दगन्धमिश्रित; अम् तार्–सुन्दर मालाधारी; अरचर्क्कु अरचऩ् तऩ्–राजाधिराज (दशरथ) की; अऩीकम्–सेना; वॆळ्ळम्–का समूह; नऩ्तातु ऒलिक्कुम्–अक्षय रूप से गरजनेवाले; नरलै पॆरु वेलै ऎल्लाम्–वड़े शोर-युक्त सागर भर में; चॆऩ्तामरै पूत्त–लालकमल विकसित हुए; ऎऩ–ऐसा; तीपम् ऎटुत्त–दीप (जल उठे) जलाये गये। ९६०

(रात हो गयी और दीप जलाये गये— वह दृश्य कैसा था ?) मंदारमकरंद से वासित मालाधारी चक्रवर्ती दशरथ की सेना विशाल सागर है जो अक्षय रूप से गरजती (शोर मचाती) रहती है। उस पर अनेक कमल खिले हों, ऐसे अनेक दीप जलाये गये। (मंदार—देवलोक तरु का पुष्प।)। ९६०

तण्णक् कडलिऱ् ऱळिशिन्दु तरङ्ग नीङ्गि
विण्णिऱ् चुडर्वॆण् मदिवन्ददु मीऩ्गळ् चूऴ
वण्णक् कदिर्वॆण् णिलविऩ्ऱिरळ् वालु हत्तो
डॊण्णित् तिलमीऩ् ऱॊळिर्वाल्वळै यूर्वदॊत्ते 961

वॆळ् मति–श्वेत चन्द्र; तण्णम् कटलिल्–शीतल समुद्र में; तळि चिन्तु तरङ्कम् नीङ्कि–सीकरें बिखेरनेवाली तरंगों से छूटकर; वण्णम् कतिर्–सुभग, श्वेत; वॆळ् निलवु ईऩ्–चाँदनी के समान प्रकाश देनेवाले; तिरळ् वालुकत्तोटु–राशिकृत बालुकाओं के साथ; ऑळिर् वाल् वळै–दीप्तिमान शंख; ऑळ् नित्तिलम् ईऩ्ऱु–उज्ज्वल मोतियों को जनाते हुए; ऊर्वतु ऑत्तु–रेंगता है, जैसे; विण्णिल्–आकाश में; चुटर् मीऩ्कळ् चूऴ–उज्ज्वल नक्षत्रों से घिरा हुआ; वन्ततु–उदित हो आया। ९६१

चंद्र उदित होकर आकाश पर धीरे-धीरे चलने लगा। वह जैसे जलबिंदुएँ बिखेरनेवाली तरंगों से छूटकर आया हो ऐसा लगा। मनोरम-गति से चलनेवाला वह उस श्वेतवर्ण शोभायुक्त शंख के समान रहता है जो बालुका में दीप्तियुत मुक्ताओं को उत्पन्न करता हुआ संचार कर रहा हो। चंद्र के चारों ओर जो नक्षत्र थे वे ही मोतीरूप थे। ९६१

मीऩाऱु वेलै यॊरुवॆण्मदि यीऩुम् वेलै
नोऩा ददऩै नुवलऱ्करुङ् गोडि वॆळ्ळम्
वाऩा डियरिऱ् पॊलिमादर् मुहङ्ग ळॆऩ्ऩुम्
आऩा मदियङ् गण्मलर्न्द दऩीह वेलै 962

मीऩ् नाऱु वेलै–मछलियों की गन्ध जिसमें महकती है उस समुद्र ने; ऒरु वॆळ् मति ईऩ्ऱुम् वेलै–एक श्वेत चन्द्र उत्पन्न किया, तब; अतऩै नोऩातु–उसका सहन न करके; अऩीकम् वेलै–(चक्रवर्ती की) सेना के सागर ने; वाऩ् नाटियरिल् पॊलि–देवांगनाओं के समान आभायुक्त; नुवलऱ्कु अरु–अगण्य; कोटि वॆळ्ळम् मातर्–करोड़ों सागर (एक वृहत् संख्या) स्त्रियों के; मुकङ्कळ् ऎऩ्ऩुम्–मुखरूपी; आऩा मतियङ्कळ्–पूर्ण कलावाले (निष्कलंक) चन्द्रों को; मलर्न्ततु–पैदा कर विकसित कराया। ९६२

मछलियों की गंध से युक्त सागर से वह चंद्र ऊपर आया। यह चंद्र सागर ने उत्पन्न किया हो ऐसा लगता था। चक्रवर्ती की सेना के सागर को यह असह्य हो गया। उसने अनेक अनोखे चंद्र पैदा कर दिये। (वे कौन चंद्र थे) वे देवाँगनाओं के समान लगनेवाली कोटि-कोटि स्त्रियों के मुखचंद्र हैं, जिनमें कलंक नहीं है। ९६२

मण्णुम् मुऴविऩ् ऩॊलिमङ्गयर् पाड लोदै
पण्णुन् नरम्बिऱ् पयिलवारिशै पाणि योदै
कण्णुम् मुडैवे यिशैकण्णुळ राड ऱोऱुम्
विण्णुम् मरुळुम् बडिविम्मि यॆऴुन्द वऩ्ऱे 963

कण्णुळर् आटल् तोरुम्–नर्तकों का नाच जहाँ-जहाँ होता था वहाँ; **मण् मुळवु इऩ् ऑलि**–मृतिकाचेप लगे हुए मर्दल की सुमधुर ध्वनि; **मङ्कैयर् पाटल् ओतै**–स्त्रियों की संगीत ध्वनि; **पण्णुम् नरम्पिल् पयिल्वार्**–योग्य रीति से बनी तन्त्रियों को झंकृत कर (वीणा का) स्वर उठानेवालियों का; **इचै**–संगीत; **पाणि ओतै**–करताल का स्वर; **कण् उटै वेय् इचै**–रन्ध्रसहित बाँसुरियों की ध्वनि; **विण्णुम् मरुळुम् पटि**–देवों को भी मोहित करते हुए; **विम्मि ऍळुन्त**–भर उठे। ९६३

सेना के पड़ाव में कई तरह के संगीत के स्वर उठे। नाच जहाँ हो रहे थे वहाँ मर्दलों का मधुर नाद उठ रहा था। स्त्रियाँ गा रही थीं। वीणा आदि तंत्रीवाद्यों का वादन हो रहा था। करताल की ध्वनि भी सुनाई देती थी। बाँसुरियाँ भी बज रही थीं। यह सब नाद मिलकर देवों को भी मोहित कर रहे थे। ९६३

मणियिऩ्ऩणि नीक्कि वयङ्गॊळि मुत्तम् वाङ्गि
अणियुम्मुलै यारहि लावि पुलर्त्तु नल्लार्
तणियु मदुमल् लिहैत्तामम् वॆरुत्तु वाशन्
दिणियु मिदळ्प्पित् तिहैक्कत्तिहै शेर्त्तु वारुम् 964

मणियिऩ् अणि नीक्कि–रत्नाभरणों को हटाकर; **वयङ्कु ऑळि**–दीप्त प्रकाशवाले; **मुत्तम् वाङ्कि**–मोतियों (की मालाओं) को भी दूर करके; **अणियुम् मुलै**–चित्रकारी से सुन्दर बने स्तनों को; **आर् अकिल् आवि**–श्रेष्ठ अगरु के धुएँ से; **पुलर्त्तुम्**–सुखानेवाले; **नल्लार्**–योषिताएँ; **तणियुम् मतु**–शहदहीन (पुरानी); **मल्लिकै तामम् वॆरुत्तु**–मल्लिका की मालाएँ हटाकर; **वाचम् तिणियुम् इतळ्**–सुगन्धपूर्ण दलों के; **पित्तिकै कत्तिकै**–"करुमुहै" नामक (या चमेली ?) पेड़ के फूलों के गजरे; **चेर्त्तु वारुम**–जिन्होंने पहन लिए वे। ९६४

(स्त्रियाँ रात के जीवन के लिए तैयारी कर रही हैं।) रत्नाभरण मुक्ताहार आदि उन्होंने निकाल दिया। स्तनों पर चित्रकारी की सजावट हुई। उसको सुखाने के लिए अगरु का धुआँ किया गया। फिर जिनमें शहद का स्रवना कम हो गया हो (यानी जो पुरानी पड़ गयी हो) उन मल्लिका पुष्पों की मालाओं को उतारकर चमेली ("करुमुकै" नाम के पेड़ के) फूलों के गजरे पहन लिये। ९६४

पुदुक्कॊण्ड वॆळम् पिणिप्पोर्पुऩै पाड लोदै
मदुक्कॊण्ड मान्दर् मडवारिऩ् मिळऱ्ऱु मोदै
पॊदुप्पॆण्डि रलहुऱ् पुऩैमेहलैप् पूश लोदै
कदक्कॊण्ड याऩै कळियाऱ्कळिक् किऩ्ऱ वोदै 965

पुतु कॊण्ट वेळम्–अभी नये पकड़कर लाये गये हाथी को; **पिणिप्पोर्**–बन्धन में लानेवाले लोगों के; **पुऩै**–रचकर; **पाटल् ओतै**–गाये जानेवाले गीतों का स्वर; **मतु कॊण्ट मान्तर्**–सुरा पिये हुए पुरुषों के; **मटवारिऩ्**–स्त्रियों के पास; **मिळऱ्ऱुम् ओतै**–(काम-) प्रलाप करने का स्वर; **पॊतु पॆण्टिर्**–वेश्याओं के; **अल्कुल् पुऩै**–

जघन भाग पर पहने हुए; मेकलै–मेखला आदि आभरणों के; पूचल् ओतै–झंकृत होने का नाद; कतम् कॉण्ट यानै–मदमत्त गजों का; कळियाल्–मत्तता के कारण; कळिक्किऩ्ऱ ओतै–चिंघाड़ने का स्वर। ९६५

(वहाँ अनेक तरह के नाद सुनाई दे रहे थे।) हाथी जो नया पकड़ा गया था उसको बन्धन में लाने के प्रयास में लोग नये सिरे से रचकर गाना गा रहे थे। खूब ताड़ी पीकर कुछ लोग स्त्रियों के साथ कामवासना के उकसे प्रलाप कर रहे थे। कहीं वेश्याओं की मेखलाएँ क्वणित होती थीं। मत्तगज मस्ती के साथ चिंघाड़ रहे थे। (इस पद में "स्वर" संज्ञा है पर कोई क्रिया पद नहीं है। संकेत है कि अन्य प्रकार के नाद भी उठते थे।)। ९६५

उण्णावमु दऩ्ऩ कलैप्पॉरु ऴुळ्ळ दुण्डुम्
पॅण्णारमु दम्मऩै यार्मऩत् तूडल् पेर्त्तुम्
पण्णाऩ पाडल् शॅविमाऩ्दिप् पयऩ्कॉ ळाडल्
कण्णा ऩऩितुयक् कवुङ्गङ्गुल् कऴिन्द दऩ्ऱे 966

उण्णा अमुतु अऩ्ऩ–जो खाया नहीं जाता (वरन भोगा जाता है) उस अमृत के समान; कलै पॉरुळ् उळ्ळतु—काम-कला का विषय जो है उस रति-भोग को; उण्टुम्–भुगतकर; पॅण् आर् अमुतम् अऩैयार्–स्त्रियों में अमृत समान जिनको मानते हैं उन (अपनी) प्रियाओं के; मऩत्तु ऊटल् पेर्त्तुम्–मन का मान दूर करके; पण् आऩ पाटल्–रागयुक्त गीतों को; चॅवि माऩ्ति–श्रवण से सुनकर; पयऩ् कॉळ् आटल्–अर्थयुक्त नाच को; कण्णाल् ऩऩि तुय्क्कवुम्–आँखों से खूब देखने का आनन्द उठाकर; अऩ्ऱु कङ्कुल्–उस दिन की रात; कऴिन्ततु–बीत गई थी। ९६६

(लोगों ने वह रात कैसे बितायी? उनके कार्यों का वर्णन है।) रति भोग ऐसा अमृत है जो मुख से नहीं खाया जाता। कोकशास्त्र के उस विषय को कार्यान्वित कर लोग आनन्द उठा रहे थे; या रूठी हुई अपनी प्रेयसियों के मान को दूर करने में व्यस्त थे। उन्हें उनकी प्रेयसियाँ स्त्रियों में अमृत के समान थीं यानी वे संजीवनी शक्ति रखती थीं। लोग राग के साथ गाये गये गीत सुनते थे या अर्थयुक्त नाच देखते थे। ऐसे कामों में लोगों का उस रात का समय बीता। ९६६

15. पूक्कॉय् पडलम् (सुमन-संग्रह पटल)

मीऩुडै यॅयिऱ्ऱुक् कङ्गुऱ् कऩहऩै वॅहुण्डु वॅय्य
काऩुडैक् कदिर्ह ळॅऩ्ऩु मायिरङ् करङ्ग ळोच्चित्
ताऩुडै युदय मॅऩ्ऩुऩ् दमऩियत् तऱियि ऩिऩ्ऱु
माऩुड मडङ्ग लॅऩ्ऩत् तोऩ्ऱिऩऩ् वयङ्गु वॅय्योऩ् 967

वयङ्कु वॆय्योन्–(प्रकाशपूर्ण) विद्यमान सूरज; मीन् ऍयिरु उटैय–नक्षत्ररूपी दाँतों के साथ; कङ्कुल कत्तकत्तै–रात्रिरूपी कनक कशिपु पर क्रोध करके; कान् उटै (य)–घनी; वॆय्य–गरम; कतिर्कळ् ऍन्नुम्–किरणें रूपी; आयिरम् करङ्कळ् ओच्चि–सहस्र हाथ बढ़ाते हुए; तान् उटै (य)–अपने; उतयम्–ऍन्नुम्–उदयाचल रूपी; तमत्तियम् तरियिन् निन्रु–स्वर्णस्तंभ से; मानुट मटङ्कल् ऍन्न–नरसिंहमूर्ति के समान; तोन्रित्तन्–प्रकट हुआ। ९६७

सूर्य उदित हुये। वह नृसिंहमूर्ति के समान जो स्वर्ण के खम्भे के अन्दर से उसको चीर कर निकले थे, उदयाचल को भेदकर बाहर निकले। उनके दाँत नक्षत्र थे। हिरण्यकश्यप के स्थान में अंधेरा था। सूर्य की तापक किरणें उनके सहस्र कर थीं। (हिरण्यकश्यप यद्यपि कनकवर्ण था तो भी साधारणरूप से राक्षस काले ही समझे जाते हैं। उस न्याय के अनुसार कनककश्यप को कवि ने अंधेरे का रंग दिया। इस पद्य में उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार हैं।)। ९६७

मुरैयॆला मुडित्त पिन्नर् मन्ननु मूरित् तेर्मेल्
इरैयॆलाम् वणङ्गप् पोना नॆळुन्दुडन् शेनै वॆळ्ळम्
कुरैयॆलाञ् जोलै याहिक् कुळियॆलाङ् गळुनी राहित्
तुरैयॆलाङ् कमल मान शोणया रडैन्द दन्रे 968

मुरै ऍलाम् मुटित्त पिन्नर्–नित्य कर्मों का अनुष्ठान पूरा करने के बाद; मन्नतुम्–चक्रवर्ती भी; मूरि तेर् मेल्–बड़े रथ पर चढ़कर; इरै ऍलाम् वणङ्क–सभी राजाओं को नमस्कार करने देते हुए; पोनान्–गये; चेनै वॆळ्ळम्–सेना सागर भी; उटन् ऍळुन्तु–साथ निकलकर; कुरै ऍलाम्–(जिसके) सब कछारों या पुलिनों या तटों पर; चोलै आकि–वन बने थे; कुळि ऍलाम्–गहरे भागों में; कळुनीर आकि–लाल कुमुद उगे थे; तुरै ऍलाम् कमलम् आन–घाटों में कमल थे; चोणै आरु–(उस) शोण नदी पर; अटैन्ततु–पहुँचा। ९६८

प्रातःकाल के कर्मानुष्ठान यथाविधि पूरा करके चक्रवर्ती दशरथ प्रस्थानोन्मुख हुए। तब राजा लोगों ने उनकी अभ्यर्थना की। वे सुदृढ़ रथ पर आरूढ़ हो चलने लगे। सेना का सागर भी आगे बढ़ने लगा। वे शोण नदी के तट पर आ पहुँचे। शोण के तटों पर घने उपवन थे; घाटों में (जल में) कमल का वन था। कुछ गहरे जल में लाल कुमुद उगे थे। (नदी सागर को जाती है; यह प्राकृतिक है। यहाँ सागर नदी पर जाता है। यह विशेषता है!)। ९६८

अडैन्दव णिरुत्त पिन्न ररुक्कनु मुम्बर् शार
मडन्दयर् कुळाङ्ग ळोडु मन्नरु मैन्दर् तामुम्
कुडैन्दुवण् डुरैयु मॆन्बूक् कॊय्दुनी राड मैतीर्
तडङ्गळु मडुवुञ् जूळ्न्द तण्णरुञ् जोलै शार्न्दार् 969

अटैन्तु–पहुँचकर; अवण् इरुत्त पिन्तर्–वहाँ ठहरे, बाद; अरुक्कतुम्–सूर्य भी; उम्पर् चार–आकाशमध्य पहुँचा; मन्तरुम्–राजा लोग और; मैन्तरुम्–वीर लोग; मटन्तैयर् कुळाङ्कळोटु–स्त्रियों के दलों के साथ; वण्टु कुटैन्तु उरैयुम्–जिनपर भ्रमर कुरेदते हुए ठहरे थे; मॆन् पू कॊय्तु–(उन) कोमल सुमनों को चुनने; नीर् आट–व स्नान करने के लिए; मै तीर्–निर्मल; तटङ्कळुम्–बड़े तालाबों और; मटुवुम्–छोटे तालाबों से; चूऴ्न्त–घिरे हुए; तण् नरु चोलै–शीतल व सुगन्धित उपवनों में; चार्न्तार्–पहुँचे । ९६९

वहाँ पहुँच कर सेना ने पड़ाव डाला । तब तक सूर्य आकाश-मध्य पहुँच गये । (मध्याह्न हो गया) राजा लोग और सेना-वीर अपनी-अपनी स्त्री के साथ पुष्प चयन करने और स्नान आदि करने को उद्यत हो उठे । वे उन उद्यानों की तरफ़ गये जिनके फूलों पर भ्रमर बैठकर कुरेद रहे थे और जिनके चारों ओर निर्मल छोटे-बड़े सरोवर थे । ९६९

तिण्शिलै पुरुव माहच् चेयरिक् करुङ्ग णम्बाल्
पुण्शिल शॆय्व रॆन्ऱु पोवन पोन्ऱ मञ्ञै
पण्शिलम् बणिवा यार्प्प नाणिनाऱ् पऱन्द किळ्ळै
ऒण्शिलम् बरऱ्ऱ माद रॊदुङ्गुदो ऱॊदुङ्गु मन्नम् 970

मञ्ञै–मोर; पुरुवम्–भौंहों को; तिण् चिलै आक–सुदृढ़ धनुष बनाकर; चेय् अरि करु कण्–लाल डोरोंवाली काली आँखों के; अम्पाल्–शरों द्वारा; पुण् चिल चॆय्वर् ऎन्ऱु–हमें आहत करेंगे, समझकर; पोवन पोन्ऱ–हट जाते से लगे; पण् चिलम्पु–संगीत के समान स्वर देनेवाले; अणिवाय्–सुन्दर मुखों से; आर्प्प–(जब स्त्रियाँ) बोलीं, तब; किळ्ळै–शुक; नाणिताल्–लाज से; पऱन्त–उड़ गये; मातर्–स्त्रियाँ; ऒण् चिलम्पु अरऱ्ऱ–उज्ज्वल नूपुर को झंकृत करते हुए; ऒतुङ्कु तोऱुम्–(जब) चलती थीं, तब; अन्नम्–हंसपक्षी; ऒतुङ्कुम्–(खुद वैसे ही) चलते हैं (या उनसे हट जाते) । ९७०

जब स्त्रियाँ उन उद्यानों में पहुँचीं तब मोर यह समझकर कि इन स्त्रियों की भौंहोंरूपी धनुष से लाल रेखायुक्त काली आयत आँखों की दृष्टिरूपी शर निकल कर हमें आहत करेंगे, हट गये । जब वे संगीत के समान मधुर भाषण करने लगीं तब शुक लजाकर उड़ गये । जब वे नूपुरों की झंकार के साथ पग रखकर चलने लगीं तो हंस-कुल उनकी देखा-देखी चलने लगे (या एकदम वहाँ से भाग गये) । (स्त्रियों की आभा, बोली और चाल क्रमशः मोर की छटा, शुक की बोली और हंस की चाल से उपमित की जाती हैं । इसका कवि अनोखे रूप से चित्रण करते हैं ।) । ९७०

शॆम्बॊन्शॆय् शुरुळुन् दॆय्वक् कुऴैहळुञ् जेर्न्दु मिन्नप्
पम्बुते नलम्ब वॊल्हिप् पण्णयि नाड नोक्किक्

कॊम्बॊडुङ् गॊडिय ऩारैक् कुऱिप्पऱिन् दुणर्द ऱेऱ्ऱार्
वम्बवि ऴलङ्गऩ् मार्बिऩ् मैन्दरु मयङ्गि निऩ्ऱार् 971

चॅम् पॉऩ् चॅय्–चोखे स्वर्ण से रचित; चुरुळुम्–'तालपत्र' नाम के कर्णाभरण और; तॅय्वम् कुऴैकळुम्–दिव्य कुण्डल; चेर्न्तु मिऩ्ऩ–मिलकर चमकते हैं ऐसा; पम्पु तेऩ् अलम्प–भीड़ लगाकर बैठे भ्रमर गुंजार करते हैं; ऑल्कि–लचक-लचककर; पण्णॅयिऩ्–दल बाँधकर; आटल् नोक्कि–क्रीड़ा (रत हैं यह) देखकर; वम्पु अविऴ्–सुगन्धि देनेवाली; अलङ्कल् मार्पिऩ्–(पुष्प-)माला से अलंकृत वक्षवाले; मैन्तरुम्–तरुण लोग; कॉम्पॉटुम्–पुष्पलताओं और; कॉटि अऩ्ऩारै–पुष्पलता सदृश स्त्रियों में; कुऱिप्पु अऱिन्तु–भेद जानकर; उणर्तल् तेऱ्ऱार्–पहचान नहीं पाकर; मयङ्कि निऩ्ऱार्–चकित खड़े हैं । ९७१

(पुरुष स्त्रियों को देखते हैं लेकिन उनको पुष्प-लताओं से अलग करना नहीं जानते ।) स्त्रियों के कानों में "तालपत्र" और कुंडल के स्वर्णनिर्मित आभरण हैं । वे चमकते हैं । उनके चारों ओर भ्रमर गुंजार करते हुए मँडराते हैं । जब वे चलती हैं तब उनके शरीर लचकते हैं । वे इस ठाट के साथ क्रीडा करती रहती हैं । तब सुवासित मालाधारी पुरुष उनको देखते हैं तथा पुष्पलताओं के समान रहनेवाली उनको अलग पहचान नहीं पाते और ठगे से खड़े रह जाते हैं । (इसका यह अर्थ भी किया जा सकता है कि स्त्रियों की भीड़ में पुरुष अपनी-अपनी प्रियाओं को अलग पहचान नहीं पाते हैं ।) । ९७१

पाशिऴैप् परवै यल्हुऱ् पण्डरुङ् गिळवित् तण्डेऩ्
मूशिय कून्दऩ् मादर् मॉय्त्तपे रमलै केट्टुक्
कूशिऩ वल्ल पेश नाणिऩ कुयिल्ह ळॆल्लाम्
वाशहम् वल्लार् मुऩ्ऩिऩ् ऱियावर्वाय् तिऱक्क वल्लार् 972

पचुमै इऴै–चोखे स्वर्ण के बने आभरण सज्जित; परवै अलकुल्–विशाल नितंब; पण् तरुम् किळवि—संगीत-सम बोली; तण् तेऩ्–शीतल शहद से; मूचिय कऩ्तल्–(पहने हुए पुष्पों से) स्रवित करनेवाले केश; मातर्–(इनसे युक्त) स्त्रियाँ; मॉय्त्त–वहाँ आकर जमा हुईं, इसलिए; पेर् अमलै–निकला बड़ा शोर; केट्टु–सुनकर; कुयिल्कळ्–कोयलें; ऍल्लाम्–सभी; कूचिऩ अल्ल–डरीं नहीं; पेच नाणिऩ–बोलने में लजाईं; वाचकम् वल्लार् मुऩ् निऩ्ऱु–बोलने में समर्थ के सामने खड़े होकर; वाय् तिऱक्क वल्लार्–मुख खोल सकनेवाले (बोलने की हिम्मत करनेवाले); यावर्–कौन हैं ? । ९७२

उन स्त्रियों के रूप-लक्षण बड़े आकर्षक थे । वे चोखे स्वर्ण से रचित आभरण पहने हुए थीं । नितम्ब, विशाल और मनोरम थे । उनकी बोली बड़ी मधुर थी । उनके केश पर पुष्प थे जिन पर भ्रमर मँडराते और गुंजार करते थे । उन स्त्रियों की उधर भीड़ लगी और शोरगुल मचा तो वहाँ की कोयलें चुप रह गयीं । डर से नहीं, वरन

उनकी बोली सुनकर अपने स्वर की हीनता समझकर वे चुप्पी साध गयीं। हाँ, वाक्समर्थ के समक्ष कौन अपना मुख खोलने (बोलने) की हिम्मत करेगा ? (इसमें अर्थान्तिरन्यास है।) । ९७२

नञ्जिऩुङ् गॉडिय नाट्ट ममुदॅऩ्ऩ नयऩ्दु नोक्किच्
चॅञ्जॅवे कमलक् कैयाऱ् ऱीण्डलु नीण्ड कॉम्बुम्
तञ्जिलम् बडियिऩ् मॅऩ्पूच् चोरिऩ्दिडै ताऴ्ऩ्द वॅऩ्ऱाल्
बञ्जिपोऩ् मरुङ्गु लार्माट् टियावरे वळैहि लादार् 973

नञ्चिऩुम्–विष से भी; कॉटिय नाट्टम्–क्रूर (हानिकारक) दृष्टि से; अमुतु अॅऩ्ऩ–(यह) अमृत (है) कहलाने योग्य रीति से; नयऩ्तु नोक्कि–चाह के साथ देखकर; कमलम् कैयाल्–अपने कमलकरों से; चॅञ्चॅवे तीण्टलुम्–यों ही पकड़ते ही; नीण्ट कॉम्पुम्–लम्बी शाखायें भी; तम् चिलम्पु अटियिल्–(उनके) नूपुर शोभित चरणों पर; मॅऩ् पू चॉरिऩ्तु–मृदु सुमनों को गिराकर; इटै ताऴ्ऩ्त–उनके चरणों पर नत हुईं; अॅऩ्ऱाल्–तो; वञ्चि पोल्–लता सदृश; मरुङ्कुलार् माट्टु–कमरवालियों (स्त्रियों) के प्रति; वळैकिलातार्–न झुकनेवाले; यावर्–कौन हैं ? । ९७३

स्त्रियाँ पुष्पित शाखाएँ झुकाती हैं। वे झुक ही नहीं जातीं बल्कि फूल भी गिरा देती हैं। क्योंकि वे स्त्रियाँ अपनी आँखों में जो पुरुषों के लिए विष से भी घातक लगतीं, चाह भर लेती हैं; अतः उनकी दृष्टि अमृत-सम मोहक हो जाती है। उनके स्पर्श मात्र से ही वे डालें झुक गयीं। अपने फूल उनके नूपुरार्पित चरणों पर अर्पित करके (मानो पूजा में) उन चरणों पर लग भी गयीं। हाँ, लता-सी कमरवालियों के सामने कौन नहीं झुकेगा ? डालें भी झुक जाती हैं तो मनुष्यों के झुकने में क्या आश्चर्य है ? । ९७३

अम्बुयत् तणङ्गि ऩऩ्ऩा रम्मलर्क् कैह डीण्ड
वम्बवि ऴलङ्गऱ् पङ्गि वाळरि मरुळुङ् गोळार्
तम्बुय वरैहळ् वऩ्दु ताऴ्वऩ्ऩ दळिर्त्त मॅऩ्पूङ्
गॉम्बुह डाऴु मॅऩ्ऱल् कूऱलाऩ् तहैमैत् तॉऩ्ऱो 974

अम् पुयत्तु अणङ्कु अऩ्ऩार्–कमला श्रीलक्ष्मीदेवी के सदृश (जो) रहीं (उन) स्त्रियों के; अम्मलर् कैकळ् तीण्ट–सुन्दर पुष्पकरों के स्पर्श से; वम्पु अविऴ्–सुगन्ध बिखेरनेवाली; अलङ्कल् पङ्कि–पुष्पमाला से अलंकृत केश; वाळ् अरि मरुळुम्–(जिनका देखकर) भयंकर सिह भी डरते हैं उन; कोळार्–बलिष्ठ पुरुषों की; पुयम् वरैकळ्–भुजाएँरूपी पर्वत ही; वऩ्तु ताऴ्वऩ्ऩ–आकर झुक जाते हैं, (तो); तळिर्त्त–नवीन; मॅऩ् पू कॉम्पुकळ्–मृदु पुष्पलताएँ; ताऴुम् अॅऩ्ऱल्–झुकेंगी, कहना; कूऱल् आम् तकैमैत्तु ऑऩ्ऱो–कहने योग्य कोई बात है क्या ? । ९७४

(कवि इस पद में उसी बात को लेकर और एक कल्पना करते हैं।) कमलोद्भवा श्रीलक्ष्मीदेवी के समान हैं— वे स्त्रियाँ। उनके कर-स्पर्श से

सुगन्धित पुष्पमालाओं से अलंकृत केशवाले, सिंहभयदायी पुरुषों के भुजा पर्वत ही झुक जाते हैं तो कोमल पुष्पलताएँ झुक जाती हैं यह बात उल्लेख योग्य भी है क्या ? (इसमें आश्चर्य क्या है ?) । ९७४

नदियिऩ्ऩुङ् गुळत्तुम् पूवा नळिऩङ्गळ् कुवळै योडु
मदिनुदल् वल्लि पूप्प नोक्किय मळ्ळैत् तुम्बि
अदिशय मॅय्दिप् पुक्कु वीऴ्न्दऩ वलैक्कप् पोहा
पुदियऩ कण्ड पोदु विडुवरो पुदुमै पार्प्पार् 975

मति नुतल् वल्लि–चन्द्र सदृश ललाटवाली लताएँ (लता सदृश स्त्रियाँ); नतियिऩ्ऩुम्–नदियों और; कुळत्तुम्–तालाबों में; पूवा–जो नहीं खिले थे; नळिनङ्कळ्–उन कमलपुष्पों को; कुवळैयोटु पूप्प–कुवलयों के साथ विकसित; नोक्किय–देखनेवाले; मळ्लै तुम्पि–मधुरालापी भ्रमर; अतिचयम् ऍय्ति–विस्मित होकर; पुक्कु वीऴ्न्तऩ–जाकर पिल पड़े; अलैक्क–(उनको हटाने के लिए) हाथ हिलाने पर भी; पोका–नहीं गये; पुतुमै पार्प्पार्–नवीन वस्तुओं को देखने को उत्सुक लोग; पुतियऩ कण्ट पोतु–नवीन वस्तुओं को देखने पर; विटुवरो–उनको छोड़ेंगे क्या ? । ९७५

मधुरालापी भ्रमर स्त्रियों के मुखों के पास भीड़ लगाकर मँडराते हैं। स्त्रियाँ उनके निवारणार्थ हाथ हिलाती हैं पर वे अलग नहीं हटते। इसका एक कारण है। चन्द्रसदृश ललाटों की लतासमान स्त्रियों के मुख कमलों के समान हैं और आँखें कुवलय के समान हैं। तथा ये नदियों और तालाबों (आदि जलाशयों) में उत्पन्न पुष्प नहीं हैं। यह भ्रमर के लिए नयी बात है। भ्रमर नवीनता के प्रेमी हैं। इस नवीन, अन्यत्र अप्राप्य वस्तु को पाने के बाद वे क्यों कर हटेंगे ? । ९७५

उलन्दरु वयिरत् तिण्डो ळोऴुहिवा रॊळिकॊण् मेऩि
मलर्न्दपून् दॊडैयऩ् मालै मैन्दरपाऩ् मयिलि ऩऩ्ऩार्
कलन्दवर् पोल वॊल्हि यॊशिन्दऩ शिलहै वाराप्
पुलन्दवर् पोल निऩ्ऱु वळैहिल पूत्त कॊम्बर् 976

उलम् तरु–चट्टान के समान; वयिरम् तिण् तोळ्–और हीरे के सदृश कठोर कन्धे; ऑऴुकि–सीधे बढ़कर; वार् ऑळि कॊळ्–अतिशय उज्ज्वल; मेऩि–शरीर; मलर्न्त पू तॊटैयल् मालै–(और) विकसित पुष्पों की गुंथी मालाओं के; मैन्तर् पाल्–नौजवानों के पास; कलन्तवर्–मिली हुई; मयिल् अऩ्ऩार् पोल–मोर की-सी छटावाली स्त्रियों के समान; पूत्त कॊम्पर् चिल–पुष्पडालों में कुछ; ऑल्कि ऑचिन्तऩ–लचककर झुक गईं; चिल–कुछ; कैवारा–वश में न आकर; पुलन्तवर् पोल–(मान न छोड़कर) रुष्ट हो रही स्त्रियों के समान; निऩ्ऱु–तनकर; वळैकिल–नत नहीं हुईं । ९७६

(स्त्रियों की उपमा लताओं या पुष्पशाखाओं के साथ दी जाती है। अब पुष्पशाखाएँ स्त्रियों के साथ विशेषधर्म के आधार पर उपमित की

जाती हैं।) कुछ पुष्पशाखाएँ झुक गयीं और शिथिल लगीं। कुछ तनकर खड़ी रहीं। जो स्त्रियाँ चट्टान के समान कठोर और हीरे के समान दृढ़ भुजाओं, सीधे और शोभाशाली शरीरों और पुष्पितमालाओं वाले अपने प्रेमियों के साथ रतिक्रीडा में मग्न रहने के बाद थककर म्लान हो जाती हैं, उनके समान कुछ लताएँ रहीं। कुछ स्त्रियाँ अपना मान किसी भी तरह नहीं छोड़तीं, पतियों की मिन्नत नहीं मानतीं और उनके वश में नहीं आतीं। वैसे ही कुछ लताएँ जो स्त्रियों की पकड़ में नहीं आयीं, तनकर सीधी और ऊँची खड़ी रहीं। ९७६

पूवॆलाङ् गॊय्दु कॊळ्ळप् पॊलिविल तुवळ नोक्कि
यावदाङ् गणवर् कण्णुक् कऴिहल विवैयॆऩ् ऱॆण्णिक्
कोवयुम् वडमु नाणुङ् गुऴैहळुङ् गुऴैयप् पूट्टिप्
पावयर् पणिमॆऩ् कॊम्बै नोक्किऩर् परिऩ्दु निऩ्ऱार् 977

पू ऎलाम् कॊय्तु कॊळ्ळ–सारे पुष्प तोड़ लेने से; पॊलिवु इल–(पुष्प-शाखाएँ) शोभाहीन होकर; तुवळ–शिथिल हुईं; नोक्कि–देखकर; पावैयर्–प्रतिमा-सी तन्वियाँ; अऴकु इल इवै–असुन्दर ये; कण्वर् कण्णुक्कु–हमारे पतियों की आँखों में; यावतु आम्–कैसे लगेंगी; ऎऩ्ऱु ऎण्णि–यह सोचकर; कोवैयुम्–अपनी मणिमालाओं और; वटमुम्–मुक्ताहारों को; नाणुम्–स्वर्ण की लड़ को; कुऴै कळुम्–कर्णकुण्डलों को; कुऴैय पूट्टि–भारावनत करके पहनाकर; पणि मॆऩ् कॊम्पै–झुकी पुष्पशाखा को; परिऩ्तु नोक्किऩर्–चाव के साथ देखती हुईं; निऩ्ऱार्–खड़ी रहीं। ९७७

कुछ पुष्पलताओं के सारे पुष्प चुन लिये गये। वे लताएँ शोभा खोकर म्लान रहीं। उनको देखकर कुछ स्त्रियों ने सहानुभूति के साथ सोचा कि हमारे पति देखेंगे तो क्या सोचेंगे? इसलिए उन्होंने अपने कुण्डल, मणि-मालाएँ, मुक्ताहार, सोने की करधनी आदि उतारकर उनको पहना दिया। फिर वे भारावनत उन लताओं को चाव के साथ देखती खड़ी रहीं। ९७७

तुऱुम्बो दिऩिऱ्ऱेऩ् ऱुवैत्तुण्डुऴ ऱुम्बि यीट्टम्
नऱुङ्गोदै योडु नळिर्शिऩ्ऩमु नीत्त नल्लार्
वॆऱुङ्गून्दऩ् मॊय्क्किऩ् ऱऩवेण्डल वेण्डु पोदुम्
उऱुम्बोह मॆल्ला नलऩुळवऴि युण्ब रऩ्ऱे 978

तुऱुम् पोतिऩिल्–घनी, बड़ी कलियों में; तेऩ्–शहद को; तुवैत्तु उण्टु–रौंदकर, खोलकर पीकर; उऴल्–फिरनेवाले; तुम्पि ईट्टम्–भ्रमरों का झुण्ड; नल्लार्–स्त्रियों के; नऱु कोतैयोटु–सुगन्धित पुष्पहारों से; नळिर् चिऩ्ऩमुम्–और छुट्टे फूलों से; नीत्त–विमुक्त; वॆऱुम् कऩ्तल्–रिक्त केशों पर; मॊय्क्किऩ्ऱ–मँडराते, बनकर; वेण्टु पोतुम्–अपने प्रिय पुष्पों को भी; वेण्टल–पसन्द नहीं करते;

नलन् उळ् वऴि—अच्छा-भला जहाँ मिलता है वहाँ; उरुम् पोकम् ऍल्लाम्—भोग्य भोग सब; उण्पर् अऩ्ऱे—(बुद्धिमान लोग) भोगते हैं न। ९७८

भ्रमर खूब समृद्ध कलियों पर बैठे, उन्हें रौंदकर खोला और शहद पी लिया। फिर स्त्रियों के केश पर जाकर बैठे। केश पर न मालाएँ थीं न छुट्टे फूल ही। केश की सुगन्ध स्वाभाविक सुगन्ध थी। वह उन्हें नयी लगी। उसी पर आसक्त होकर वे स्त्रियों के सिर पर टिक गये। उन्हें अन्य फूलों से प्रेम नहीं रहा। हाँ, बुद्धिमान लोग, जहाँ भोग के साथ हित भी मिलता है वहीं रहकर भोग्य सभी भोगों को भुगतते हैं। वैसे ही ये भ्रमर केश पर ही मँडराते रहे। (अर्थान्तरन्यास है।)। ९७८

मॅय्प्पोदि ऩङ्गैक् कणियऩ्ऩवळ् वॅण्ब ळिङ्गिल्
पॉय्प्पोदु ताङ्गिप् पॉलिहिऩ्ऱतऩ् मेऩि नोक्कि
इप्पावै यॅङ्गोऩ् कुयिरऩ्ऩव ळॆऩ्ऩ वुऩ्ऩिक्
कैप्पोदि ऩोडु नॅडुङ्गण्पऩि शोर निऩ्ऱाळ् 979

मॅय्—रूप में; पोतिल् नङ्कैक्कु—कमला श्रीलक्ष्मीदेवी के लिए भी; अणि अऩ्ऩवळ्—श्रृंगार बन सकनेवाली एक; वॅण् पळिङ्किल्—श्वेत स्फटिक शिला पर; पोतु ताङ्कि पॉलिकिऩ्ऱ—पुष्पालंकृत होकर शोभा देनेवाले; तऩ् पॉय् मेऩि—अपना छाया-रूप; नोक्कि—देखकर; इ पावै—यह प्रतिमा (-सी स्त्री); ॲम् कोऩ्कु—मेरे राजा (सजन) की; उयिर् अऩ्ऩवळ्—प्राण-सम प्यारी; ऍऩ्ऩ उऩ्ऩि—यह सोचकर; कै पोतिऩोटु—हाथ में रक्षित पुष्पों के साथ; नॅटु कण् पऩि चोर—अपनी विशाल आँखों से अश्रु बहाती हुई; निऩ्ऱाळ्—खड़ी रही। ९७९

एक तरुणी ने, जो रूप में श्रीलक्ष्मी के समान थी, स्फटिक शिला में अपना प्रतिबिम्ब देखा। वह फूलों से अलंकृत थी। उसने भ्रम में सोच लिया कि यह (प्रतिमा-सी) सुन्दरी मेरे पति की प्यारी हो जायगी! वह अपने हाथ में फूल ले आयी थी। उनको वैसे ही लेकर वह आँखों से आँसू बहाती हुयी खड़ी रही। ९७९

कोळुण्ड तिङ्गण् मुहत्ताळॊरु कॊम्बर् मऩ्ऩऩ्
तोळुण्ड मालै यॊरुतोहैयैच् चूट्ट नोक्कित्
ताळुण्ड कच्चिऩ् ऱहैयुण्डऩ तऩङ्गण् मीदु
वाळुण्ड कण्णीर् मऴैयुण्डॆऩ वार निऩ्ऱाळ् 980

कोळ् उण्ट—मेघावृत्त; तिङ्कळ् मुकत्ताळ्—चन्द्रवदना; ऑरु कॉम्पर्—पुष्पलता सदृश एक स्त्री; मऩ्ऩऩ् तोळ् उण्ट मालै—अपने प्रिय के कन्धों को अलंकृत जो करती रही उस माला को; ऑरु तोकैयै चट्ट—मयूर की छटावाली एक को पहनाने पर; नोक्कि—देखकर; ताळ् उण्ट कच्चिऩ्—गाँठ सहित रहनेवाली अंगिया से; तकैयुण्टऩ—बद्ध; तऩङ्कळ् मीतु—उरोजों पर; वाळ् उण्ट कण्—तलवार-सी आँखों से; कण् नीर् मळै उण्टु ॲऩ्ऩ वार—अश्रु को धारा के समान बहने देती हुई; निऩ्ऱाळ्—खड़ी रही। ९८०

एक पुरुष के दो स्त्रियाँ थीं। उसने एक स्त्री को अपने वक्ष पर से एक माला निकालकर पहना दिया। इसको दूसरी पत्नी देख रही थी। उसका केश मेघ के समान था और मुख चन्द्र के समान। उसके मन में अपार ईर्ष्या और ग्लानि पैदा हो गयी। उसकी तलवार सदृश आँखों से अश्रुधारा बही और स्तनों के अग्रभाग पर गिरी। वे स्तन खूब कसकर अँगिया के अन्दर बाँधे गये थे। ९८०

मयिल्पोल् वरुवाण् मनङ्गाणिय कादऩ् मऩ्ऩऩ्
शॆयिर्तीर् मलर्क्काविऩ़ॊर् मादविच् चूऴल् शेरप्
पयिल्वा ऴिऱैपण्डु पिरिन्दऱि याऴ्प दैत्ताऴ्
उयिर्नाडि यॊऴ्हुम् मुडल्पोलल मन्दु ऴऩ्ऱाऴ् 981

मयिल् पोल् वरुवाऴ्–मोर के समान आनेवाली (अपनी प्रेमिका) का; **मऩम् काणिय**–मनोभाव परखने के लिए; **कातल् मऩ्ऩऩ्**–उसका प्रिय प्रेमी; **चॆयिर् तीर् मलर् काविऩ्**–निर्मल पुष्पोद्यान के; **ओर् मातवि चूऴल् चेर**–एक माधवी लताकुंज में छिप गया; **पयिल्वाऴ्**–संगिनी; **पण्टु**–इसके पहले कभी; **इऱै पिरिन्तु अऱियाऴ्**–कुछ देर के लिए भी जो अलग नहीं हुई थीं; **पतैत्ताऴ**–(उसकी प्रेमिका) तड़प गई; **उयिर् नाटि**–प्राण की खोज में; **ऑल्कुम् उटल्पोल्**–व्याकुलित शरीर के समान; **अलमन्तु उऴऩ्राऴ्**–भ्रमित होकर भटकने लगी। ९८१

एक स्त्री जो मोर के समान सुन्दरी थी, अपने पति की खोज में गयी। उसका पति उसका मन परखने के लिए उस निर्मल उद्यान के माधवी-कुंज में छिप गया। वह स्त्री अपने पति से कभी अलग नहीं हुई थी। अब अपने पति को न पाकर तड़प गयी और अत्यन्त दुखी होकर भटकने लगी। वह ऐसा था जैसे शरीर प्राण को न पाकर छटपटा रहा हो। (यह एक अनोखा कल्पित उदाहरण है)। ९८१

शॆम्मान्द दॆङ्गि ऩ़िळनीरैयॊर् शॆम्म ऩ़ोक्कि
अम्माविवै मङ्गयर् कॊङ्गैह ळाहु मॆऩ़्ऩ
ऍम्मादर् कॊङ्गैक् किवैयॊप्पऩ़ वॆऩ़्ऱी रेऴै
विम्मा वॆदुम्बा वॆयरामुहम् वॆय्दु यिर्त्ताऴ् 982

ओर् चॆम्मल्–एक नायक (के); **चॆम्मान्त तॆङ्किऩ्**–ऊँचे बढ़े नारियल के; **इळनीरै नोक्कि**–कच्चे फलों को देखकर; **इवै मङ्कैयर् कॊङ्कैकळ् आकुम्**–स्त्रियों के स्तन के समान हैं; **ऍऩ्ऩ**–कहने पर; **ओर् एऴै**–एक स्त्री; **ऍ मातर् कॊङ्कैक्कु–किस** (पर-) स्त्री के स्तनों के; **इवै ऑप्पऩ**–ये समान हैं; **ऍऩ्ऱु**–कहकर; **वॆतुम्पा**–दुखी होकर; **विम्मा**–सिसककर; **मुकम् वॆयरा**–स्वेद भरे मुख की होकर; **वॆय्तु उयिर्त्ताऴ्**–गरम निश्वास छोड़ने लगी। ९८२

एक नायक ने ऊँचे एक नारियल के पेड़ पर पुष्ट डाभों को (कच्चे नारियल-फलों को) देखकर अकस्मात कहा कि ये नारी-स्तन के समान हैं।

पास खड़ी रही उसकी नायिका को संशय हो गया कि ये किस नारी के उरोजों की याद कर रहे हैं ? उसका मन ईर्ष्या और दुख से आक्रांत हो गया। सिसकियाँ भरने लगी; उसका मुख पसीने से तर हो गया; और वह गरम निश्वास भरने लगी। ९८२

मैताऴ् करुङ्गण्गळ् शिवप्पुऱ वन्दोर् मादु
नॅय्तावु वॅला ऩॉडुनॅञ्जु पुलन्दु निऩ्ऱाळ्
ऍय्दादु निऩ्ऱ मलर्नोक्कि यॅऩक्कि दीण्डुक्
कॉय्दीदि यॅऩ्ऱोर् कुयिलैक्करङ् गूप्पु हिऩ्ऱाळ् 983

नॅय् तावु वेलानॉट्टु—घी लगा भालावाले (सजन) के साथ; नॅञ्चु पुलन्तु निऩ्ऱाळ्—मन रुष्ट करके जो रही; ओर् मातु—एक स्त्री; मै ताऴ करु कण्कळ्—अंजन लगी अपनी काली आँखों के; चिवप्पु उऱ—लाल बनते; वन्तु—सामने आकर; ऍय्तातु निऩ्ऱ मलर् नोक्कि—पहुँच के बाहर रहनेवाले एक फूल को देखकर; ओर् कुयिलै—एक कोयल से; ऍऩक्कु इतु ईण्टु कॉय्तु—मुझे यह अब तोड़कर; ईति—दिला दो; ऍऩ्ऱु करम् कूप्पुकिऩ्ऱाळ्—कहकर हाथ जोड़ती है (विनय करती है)। ९८३

एक रूठी हुई नायिका की विशिष्ट दशा और व्यवहार देखिये। वह अपने घृतलिप्त भालाधारी वीर नायक से रूठी हुयी थी। उसी मान की स्थिति में वह अपने पति के सामने आकर खड़ी हुयी। उसके अंजनांकित काले नेत्र लाल हो गये थे। उसने एक फूल को देखा जो उसकी पहुँच के ऊपर था और वहाँ रही एक कोयल के सामने हाथ जोड़कर उस कोयल से विनती की कि अभी यह फूल तोड़कर मुझे दो। ९८३

पोरॅऩ्ऩ वीङ्गुम् पॉरुप्पऩ्ऩ पॉलङ्गॉ डिण्डोळ्
मारऩ् ऩऩैयाऩ् मलर्कॉय्दिरुन् दाऩै वन्दोर्
कारऩ्ऩ कून्दऱ् कुयिलऩ्ऩवळ् कण्पु दैप्प
आरॅऩ्ऩ लोडु मऩलॅऩ्ऩ वयिर्त्तु यिर्त्ताळ् 984

ओर् कार् अऩ्ऩ कून्तल्—एक, मेघ समान कुंतल व; कुयिल् अऩ्ऩवळ्—पिक-सम (वयन वाली स्त्री) ने; वन्तु—आकर; पोर् ऍऩ्ऩ—युद्ध का नाम सुनते ही; वीङ्कुम्—फूल उठनेवाले; पॉरुप्पु अऩ्ऩ—पर्वत-सम; पॉलम् कॉऴ् तिण् तोळ्—शोभायुक्त सुदृढ़ कन्धोंवाले; मारऩ् अऩैयाऩ्—कामदेव सदृश (अपने पति की जो); मलर् कॉय्तिरुन्ताऩै—फूल तोड़ रहा था; कण् पुतैप्प—आँखों को बन्द किया; आर् ऍऩ्ऩलोटुम्—(तब) उसके 'कौन' पूछते ही; अयिर्त्तु—ठिठककर; अऩल् ऍऩ्ऩ—आग के समान; उयिर्त्ताळ्—लम्बा निश्वास छोड़ा। ९८४

एक नायिका ने, जिसका केश मेघ के समान काला और घना था और बोली कोयल की-सी मधुर थी, आकर अपने नायक की, जिसके कंधे युद्ध का नाम सुनते ही फूल उठनेवाले और पर्वतसम सुदृढ़ थे और जो कामदेव के समान सुन्दर था, (यानी जो साहसी, वीर, सुगठित शरीरवाला

और आकर्षक रूपवान था) आँखें बंद कर दीं। तब वह फूल तोड़ रहा था। उसने पूछा कि कौन है? इससे नायिका के मन में संशय पैदा हो गया इसलिए गुस्से के साथ वह गरम निश्वास छोड़ने लगी। ९८४

ऊऱ्ऱार् नऱैनाण् मलर्माद रॉरुङ्गु वाशच्
चेऱ्ऱाल् विळैयाद शॅन्दामरैक् कैह णीट्टि
ऍऱ्ऱार्क् कुदवा ऩिडैयेन्दिऩ ऩिऩ्ऱॉ ळिन्दाऩ्
माऱ्ऱा ऩुदवा नॅडुवच्चयऩ् पोलॉर् मऩ्ऩऩ् 985

ओर् मऩ्ऩऩ्–एक राजा (नायक); ऊऱ्ऱु आर्–स्रोत-सम बहनेवाले; नऱै नाळ् मलर्–शहद से पूर्ण नवीन फूलों को; मातर्–अपनी दो नायिकाओं; ऑरुङ्कु–एक साथ; वाचम्–सुगन्धित; चेऱ्ऱाल् विळैयात–पंक में जो नहीं उपजे थे उन; चॅन्तामरै कैकळ् नीट्टि–लालकमल से अपने हाथों को बढ़ाकर; एऱ्ऱार्क्कु–माँगनेवाले को; उतवाऩ्–न देकर; माऱ्ऱाऩ्–(जो याचक को) नहीं नकारता; उतवाऩ्–न ही देता; नॅटु वच्चैयऩ् पोल्–उस बड़े कृपण के समान; इटै–बीच में; एन्तिऩ्–धारण करके; निऩ्ऱॉळिन्ताऩ्–खड़ा ही रह गया। ९८५

एक नायक शहद-भरे नवीन पुष्प लेकर अपनी पत्नियों के पास गया। उसकी दोनों पत्नियाँ एक साथ थीं। दोनों ने अपने सुन्दर हाथ, जो वे कमल थे, जो पंक से उत्पन्न नहीं हुए थे (यानी कमल के समान थे पर पंक से उत्पन्न नहीं हुए थे) बढ़ाकर फूल माँगा। नायक असमंजस में पड़ गया और विना किसी को दिये खड़ा ही रह गया। तब वह उस कृपण प्रभु के समान था जो याचक को न 'नाहिं' कहता, न कुछ देता है। ९८५

तैक्किऩ्ऱ वेऩोक् किऩडऩ्ऩुयि रऩ्ऩ मऩ्ऩऩ्
मैक्कॉण्ड कण्णा ळॅदिर्माऱ्ऱवळ् पेर्वि ळम्ब
मॅय्क्कॉण्ड माऩऩ् दलैक्कॉण्डिड वॅदुम्बि मॅऩ्बूक्
कैक्कॉण्डु मोन्दा ळुयिर्प्पुण्डु करिन्द दऩ्ऱे 986

तैक्किऩ्ऱ वेल्–चुभनेवाले भाले के समान; नोक्किऩळ्–आँखोंवाली एक; तऩ् उयिर् अऩ्ऩ–अपने प्राण-सम (प्यारे); मऩ्ऩऩ्–राजा (नायक) को; ऍतिर्–अपने सामने; माऱ्ऱवळ् पेर् विळम्प–अपनी सौत का नाम कहते सुनकर; मै कॉण्ट कण्णाळ्–अंजनयुक्त आँखवाली; मॅय् कॉण्ट–सच्चा; माऩम् तलै कॉण्टिट–मान सिर पर चढ़ जाने से; वॅतुम्पि–दुखी होकर; मॅऩ् पू कै कॉण्टु–मृदु सुमन को हाथ में लेकर; मोन्ताळ्–सूँघा; उयिर्प्पु उण्टु–श्वास की हवा लगकर; करिन्ततु–झुलस गया। (अऩ्ऱे)। ९८६

(इस पद में भी एक नायक की चर्चा है जिसके दो नायिकाएँ हैं।) चुभनेवाले भाले के समान तीक्ष्ण आँखोंवाली एक नायिका के पति ने उसके सामने ही दूसरी नायिका का नाम ले लिया। वह अंजन-लगी आँखोंवाली

रुष्ट हो गयी। मान सिर पर चढ़ गया। उसने एक मृदु सुमन को हाथ में लेकर सूँघा। बस, वह फूल झुलस गया। (इसमें स्त्रीस्वभाव का बहुत ही स्वाभाविक और सरस वर्णन है।)। ९८६

तिण्डो ळरशन् नॊरुवन्कुलत् तेवि मार्दम्
ऑण्डा मरैवाण् मुहत्तुण्मिळि रॊण्ग णॆल्लाम्
कण्डा दरिक्कत् तिरिवान्मदङ् कव्वि युण्ण
वण्डा दरिक्कत् तिरिमामद यानै यॊत्तान् 987

कुलम् तेवि मार्तम्–उच्च कुल की अपनी देवियों के; ऒळ् तामरै–सुन्दर कमल-सम; वाळ् मुकत्तुळ्–मनोरम वदनों में; मिळिर्–विद्यमान; ऑण् कण् ऍल्लाम्–उज्ज्वल आँखें, सभी; कण्टु आतरिक्क–उनको चाव से देखती रहें, ऐसा; तिरिवान्–घूमनेवाला; तिण् तोळ् अरचन् ऑरुवन्–बलिष्ठ भुजावाला एक राजा (नायक); मतम् कव्वि उण्ण–मदनीर पीने के लिए; वण्टु आतरिक्क–भ्रमरों को चाव के साथ मँडराने देते हुए; तिरि–घूमनेवाले; मा मत यानै ऑत्तान्–बड़े मत्तगज के समान रहा। ९८७

एक नायक के कई स्त्रियाँ थीं। वह सब उच्चकुल संभूताएँ थीं। उस पर उन सबको गर्व था। जब वह चलता था तब कमलसम उनके आननों में विद्यमान उनकी भ्रमर-सी आँखें उसको चाव के साथ देखती रहतीं। वह सबल कंधोंवाला नायक उस मत्तगज के समान फिरता था जिसका मदजल पीने की इच्छा से भ्रमर उस पर मँडराते फिरते थे। (नायिकाओं की आँखें भ्रमर हैं और नायक का रूप मदजल है।)। ९८७

सन्दिक् कलावॆण् मदिवाणुद लाड नक्कुम्
वन्दिक्क लाहु मडवाट्कुम् वहुत्तु नल्हि
निन्दिक्क लाहा वुरुवत्तिन निरक मॆन्बूच
चिन्दिक् कलाब मयिलिर्कण् शिवन्दु पोनार् 988

चन्ति–संध्या के; कला वॆण् मति–कलायुक्त श्वेत चन्द्र-सम; वाळ् नुतलाळ्–उज्ज्वल ललाटवाली; तत्तक्कुम्–एक नायिका को; वन्तिक्कल् आकुम्–(उसके चरित्र के कारण) वन्द्य; मटवाट्कुम्–(दूसरी) नायिका को; निन्तिक्कल् आका उरुवत्तितन्–अनिन्द्य रूपवान नायक; मॆन् पू–(अपने हाथ में रहे) कोमल सुमनों को; वकुत्तु नल्कि–बाँटकर देकर; निरक–तृप्त खड़ा रहा; कण् चिवन्तु–(दोनों) आँखें लाल करके; चिन्ति–फूलों को नीचे डालकर; कलापम् मयिलिन्–कलापी मोर के समान; पोनार्–झट हटकर चली गईं। ९८८

एक नायक के दो स्त्रियाँ थीं। एक का ललाट संध्याकाल के कलाचंद्र के समान उज्ज्वल तथा मनोरम था। (वह रूपवती थी।) दूसरी अपने पातिव्रत के लिए वन्द्य थी। (यह गुणवती थी।) वह नायक भी लक्षणयुक्त अनिन्द्य रूपवान था। वह अपने हाथ में कोमल फूल ले

आया। उसने उन्हें बराबर-बराबर बाँटकर दोनों के हाथों में दे दिया। (वह सोचता रहा कि हमारे कार्य से दोनों खुश होंगी।) पर दोनों को गुस्सा हो आया क्योंकि हर एक सोचती थी कि नायक हमसे दूसरी से अधिक प्यार करता है। दोनों की आँखें लाल हो गयीं। दोनों झट वहाँ से हट गयीं। (९८५वें पद में 'नायक फूल को अपने हाथ में धरे ही कृपण के समान खड़ा रहा' कहा गया है। यह पद उसकी टीका-सा है।)। ९८८

वन्दॅङ् गुन्दम् मऩ्ऩुयि रेयो पिऱिदॊऩ्ऱो
कन्दन् दङ्गुञ् जोर्हुऴल् काणार् कलैपेणार्
अन्दन् दोऱुम् मऱ्ऱुहु मुत्तम् मवैपारार्
शिन्दुञ् जन्दत् तेमलर् नाडित् तिरिहिऩ्ऱार् 989

कन्तम् तङ्कुम्–सुगन्ध का आवास; चोर् कुऴल्–बिखरते केश के; काणार्–नहीं देखतीं (सम्हालतीं); कलै पेणार्–(खिसकते) वस्त्र नहीं बचातीं; अन्तम् तोऱुम्–सन्धियों में; अऱ्ऱु उकुम्–टूटकर गिरनेवाले; मुत्तम् अवै पारार्–मुक्ताहारों की परवाह नहीं करतीं; तेम् चिन्तुम् चन्तम् मलर्–शहद की बूँदे टपकानेवाले सुन्दर फूल; नाटि–खोजते हुए; ॲङ्कुम् वन्तु–सर्वत्र आकर; तिरिकिऩ्ऱार्–(नायिकायें) घूमती-फिरती हैं; तम् मऩ् उयिरेयो–(फूल) अपने स्थायी प्राण हैं; पिऱितु ऑऩ्ऱो–दूसरी वस्तु है। ९८९

पुष्पचयन में उन स्त्रियों का प्रेम कितना रहा। स्वाभाविक सुगंधि से युक्त लट खुलकर बिखर रहा था; उन्होंने उसको फिर से बाँधने की कोशिश नहीं की। वस्त्र खिसक रहे थे, उसको नहीं सम्हाला। मुक्ताहार की लड़ियाँ, संधि-स्थल पर टूटकर गिरने लगीं, उनकी परवाह नहीं की। सुन्दर सुगंधित फूलों को खोजते हुए वे इधर-उधर भटक रही थीं। क्या फूल उनके प्यारे प्राण थे? या अन्य कोई वस्तु जो उनको उतनी ही प्यारी थी? ९८९

याऴॊक् कुञ्जॊर् पॊऩ्ऩऩै याळो रिहऌमऩ्ऩऩ्
ताऴत् ताऴा डाऴ्न्द मऩत्ता डळर्हिऩ्ऱाळ्
आऴत् तुळ्ळुङ् गळ्ळ निऩैप्पा ळवऩिऩ्ऱ
शूऴर् केदऩ् किळ्ळैयै येवित् तॊडर्वाळुम् 990

याऴ् ऑक्कुम् चॊल्—वीणानाद-सी बोलीवाली; पॊऩ् अऩैयाळ्—लक्ष्मी-समान एक नायिका; ओर इकल् मऩ्ऩऩ्–अनुपम वीर नायक के; ताऴ–(माननिवारणार्थ) विनय करने पर भी; ताऴाळ्–मानविमुक्त नहीं हुई; ताऴ्न्त मऩत्ताळ्–(उसके चले जाने पर) झुका मनवाली होकर; तळर्किऩ्ऱाळ्–पछताने लगी; आऴ्त्तु उळ्ळुम्–मन की गहराई में; कळ्ळम् निऩैप्पाळ्–कपट सोचती हुई; अवऩ् निऩ्ऱ–जहाँ वह रहा (उस); चूऴल्कु–स्थान को; तऩ् किळ्ळैयै एवि–अपने शुक को भेजकर; तॊटर्वाळुम्–उसके पीछे-पीछे गई, वह और। ९९०

एक मानिनी ने, जो लक्ष्मी के समान रूपवती थी और जिसकी बोली वीणा के स्वर के समान थी, जब उसके पति ने मिन्नत की तब भी मान नहीं छोड़ा। वह बेचारा चला गया। फिर वह चुप नहीं रही। उसके मन की गहराई में कपट था, संदेह था। इसलिए उसने शुक को उसके पीछे भेजा और वह भी उसके पीछे चली गयी। (यहाँ से अलग-अलग स्त्री-पुरुषों का विवरण है। इसलिए पूर्ण विराम का क्रिया पद नहीं देकर-जानेवाली और-कहा गया है।)। ९९०

अन्दा राहत् तैङ्गणै नूऱा यिरमाहच्
चिन्दा निन्ऱ शिन्दयि ऩान्शॅय् हुवदोरान्
मन्दा रङ्गॉण् डीहुदि योमा दवियॅन्ऱोर्
शन्दार् कॉङ्गैत् ताऴ्हुऴ लाऴ्पाऱ् ऱळर्वानुम् 991

अम्तार् आकत्तु–सुन्दर मालाभूषित वक्ष पर; ऐङ्कणै–(मन्मथ के) पंच बाण; नऱु आयिरम् आक–बहुत अनेक; चिन्ता निन्ऱ–आकर लगे, उससे; चिन्तैयित्तान्–(कामविचलित) मनवाला; चॅय्कुवतु ओरान्–क्या करना है, यह नहीं जानता; मातवि–माधवी लता; मन्तारम् कॉण्टु ईकुतियो–मन्दार ला दोगी क्या; ॲन्ऱु–कहता हुआ; ओर् चन्तु आर्–अनुपम चन्दनर्चाचित; कॉङ्कै–स्तनोंवाली; ताऴ् कुऴलाऴ्–लम्बी लटकनेवाली केशलता की; पाल्–(स्त्री) पर; तळर्वानुम्–(प्रेम के कारण) म्लान होनेवाला, और। ९९१

एक मनोरम मालाधारी नायक के वक्ष पर मन्मथ के पंचशर (पंचशर–आम्र-मोहन की दशा देनेवाला; अशोक-उन्माद की; कमल-तपन की; नीलोत्पल-शोषण की; और नवमल्लिका-द्रवण की दशा देनेवाला) शतसहस्र (असंख्यक) रूप में लग गये। उसका मन कामविचलित हुआ। "अब क्या किया जाय,?" यह निश्चय नहीं कर पाया। एक माधवी लता से पूछने लगा कि हे माधवी लता ! क्या तुम मंदार पुष्प लाकर दे सकोगी ? उसके मन में चंदनचर्चित स्तनों और लंबी लटकती वेणीवाली का स्मरण रहा और वह स्मरण उसे सता रहा था। ऐसा वह और। ९९१

नाडिक् कॉण्डाऴ् कुऱ्ऱ नयन्दाण् मुनिवाऱाऴ्
ऊडिक् काट्टक् काणु नलत्ता ळुडनिल्लान्
तेडित् तेडिच् चेर्त्त शॅऴुम्बू नऱुमालै
शूडिच् चूडिक् कण्णडि नोक्कित् तुवळ्वाळुम् 992

ऊटि–रूठकर; काट्ट–(पति का) मनाना; काणुम्–देखना; नलत्ताळ–चाहनेवाली एक ने; कुऱ्ऱम्–(अपने पति का) कोई दोष; नयन्ताऴ् नाटि कॉण्टाऴ्–जान-बूझकर कल्पित कर लिया; मुनिवु आऱाऴ्–कोप नहीं छोड़ा; उटन् निल्लान्–उससे वह संग छोड़ चला गया; तेटि तेटि चेर्त्त–(तब) उसके स्थान-स्थान पर

ढूँढकर लाये; चॅऴुम् पू–पुष्ट फूलों की; नऱु मालै–सुवासित माला को; चूटि चूटि–विविध प्रकार से पहन-पहनकर; कण्णटि नोक्कि–आइना देखती और; तुवऴ्वाऴुम्–मलिन होती जो —वह और । ९९२

एक नायिका की यह इच्छा हुयी कि मैं मान करूँ और वे, मेरे स्वामी, मनायें और उसका मजा लूटूँ। उसने कोई अपराध कल्पित कर उसपर लगाया और वह रूठने लगी। नायक ने मनाया पर वह रूठन को लंबा करती गयी। उसने रोष नहीं छोड़ा तो वह नायक चला गया। तब उसे बहुत पछतावा हुआ और जो मालाएँ उसने बड़े परिश्रम से अनेक स्थानों पर जाकर फूल चुन लाकर, बनायीं और अपनी प्रेयसी को पहनायी थीं उसको वह उठाती, पहनती फिर निकालती फिर दूसरे ढंग से पहनती और आइने में देखती— ऐसा करती हुई म्लान हो रही। वह स्त्री और । ९९२

मऱलिक् कूणा डुङ्गदिर् वेला ऩिडैयेवन्
दुऱविक् कोलम् पॅऱ्ऱिल दॅऩ्ऱा लुडल्वाऴ्विप्
पिऱविक् केला दॅऩ्शॅय्व दिप्पे रणियॅऩ्ऩा
विऱलिक् कीवा ऴोत्तिऴै यॅल्लाम् विडुवाळुम् 993

इ कोलम्–यह साज-शृंगार; मऱलिक्कु–यम के लिए; ऊण् नाटुम्–आहार खोजकर देनेवाले; कतिर् वेलाऩ्–चमकदार भाले के स्वामी (मेरे नायक); इटैये वन्तु–अभी आकर; उऱ पॅऱ्ऱिलतु–मुझसे मिलें, यह सौभाग्य नहीं दिला सका तो; इ पिऱविक्कु–इस जन्म में; उटल् वाऴ्वु–इस शरीर के साथ जीना; एलातु–ठीक नहीं होगा; इ पेर् अणि–यह असाधारण अलंकार; चॅय्वतु ॲऩ्–करेगा क्या; ॲऩ्ऩा–कहकर; विऱलिक्कु ईवाऴ् ऑत्तु–गानेवाली वन्दिनी को दे देगी, ऐसा; इऴै ॲल्लाम्–आभरण, सभी को; विटुवाळुम्–निकालनेवाली और । ९९३

एक नायिका ने खूब अपने को अलंकृत कर लिया। सोचने लगी कि यम की, माँस को खोज करके दिलाकर सहायता करनेवाला भाला रखनेवाले मेरे स्वामी अब आकर मुझसे नहीं मिलेंगे तो इस साज-शृंगार का लाभ क्या रहा? यह सौभाग्य नहीं प्राप्त होगा तो इस शरीर में जीना निरर्थक है! यह सोचकर वह अपने आभरण सब निकालने लगी मानो उसने उन सबको वंदिनी गायिका ("विऱलि") को दे देने का निश्चय कर लिया हो। ९९३

तऩ्ऩैक् कण्डाण् मॅऩ्ऩडै कण्डा डमर्पोलत्
तुऩ्ऩक् कण्डा डोऴमै यॅऩ्ऱा डुणैयॅऩ्ऱाळ्
उऩ्ऩैक् कण्डा रॅळ्ळुवर् पौल्ला दुडुनोयॅऩ्
ऱऩ्ऩक् कऩ्ऩिक् काडै यळिप्पा ऩमैवाळुम् 994

तऩ्ऩै कण्टाळ्–हंस को उसने देखा; मॆल् नटै कण्टाळ्–उसकी मन्द चाल देखी; तमर् पोल–अपनों के समान; तुऩ्ऩ–पास आते; कण्टाळ्–देखा; तोऴमै ॲऩ्ऱाळ्–'अपनी सखी' समझा; तुणै ॲऩ्ऱाळ्–तुम मेरी साथिन हो, कहा; उऩ्ऩै कण्टार् ॲळ्ळुवर्–तुमको देखनेवाले हँसी करेंगे; पॊल्लातु–(यह, नंगा रहना) बुरा है; नी उटु ॲऩ्ऱु–तुम पहन लो कहकर; अऩ्ऩम् कऩ्ऩिक्कु–उस हंस-कन्या को; आटै अळिप्पाऩ्–वस्त्र देने; अमैवाळुम्–जो उद्यत हुई, वह और। ९९४

एक नायिका ने एक मराली को देखा, उसकी चाल देखी और अपने पास उसको आते देखकर समझा कि वह मेरी मित्रता चाहती है। उसने उसको अपनी सखी मान लिया। फिर कहने लगी कि तुम नंगी हो, लोग देखेंगे तो हँसी उड़ायेंगे। नंगा रहना भी मेरे ऊपर अपराध है! इसलिए यह वस्त्र पहन लो। यह कहकर वह उस मराली को वस्त्र देने को उद्यत हो गयी। ऐसी एक नायिका, और। ९९४

पाहॊक् कुञ्जॊल् नुण्गलै याडन् पडरल्हुल्
आहक् कण्डो राडर वासॆन् ऱयनणुम्
तोहैक् कञ्जिक् कॊम्बि ऩॊदुङ्गिल् तुणरीऩ्ऱ
शाहैत् तङ्गैक् कण्गळ् पुदैत्ते तळर्वाळुम् 995

पाकु ऒक्कुम् चॊल्–चाशनी-समान मधुर बोलीवाली; नुण् कलैयाळ् तऩ्–महीन वस्त्रधारिणी एक के; पटर् अल्कुल–विस्तृत जघन प्रदेश को; आक कण्टु–सीधे देखकर; ओर् आटु अरवु आम्–एक फन फैलाया सर्प है; ॲऩ्ऱु–कहकर; अयल् नण्णुम्–पास आनेवाले; तोकैक्कु अञ्चि–मोर से डरकर; कॊम्पिऩ् ऒतुङ्कि–पुष्पलता के पास छिपी; तुणर् ईऩ्ऱ चाकैत्तु–फूलों का गुच्छा फैला जैसा जो रहीं; अङ्कै–उन हथेलियों से; कण्कळ् पुतैत्तु–आँखें मूँदकर; तळर्वाळुम्–म्लान होनेवाली और। ९९५

चाशनी समान मधुर बोलीवाली एक नायिका महीन वस्त्र पहने हुए थी। उसका विशाल वराँग दिखाई दे रहा था। एक मोर ने उसे देखकर समझ लिया कि एक सर्प फन फैलाये हुए नाच रहा है। वह उसे पकड़ने उसके पास जाने लगा तो वह नायिका डरकर एक पुष्पलता के पीछे छिप गयी। उसने डालों सहित पुष्पलता समान अपनी हथेलियों से आँखें मूँद ली। घबड़ानेवाली वह, और। ९९५

वम्बिऱ् पॊङ्गुङ् कॊङ्गै शुमक्कुम् वलियिऩ्ऱिक्
कम्बिक् किन्ऱ नुण्णिडै नोवक् कशिवाळुम्
पैम्बॊऱ् किण्णम् मॆल्विर ऱाङ्गिप् पयिल्हिऩ्ऱ
कॊम्बिऱ् किळ्ळैप् पिळ्ळै यॊळिक्कक् कुऴैवाळुम् 996

वम्पिल् पॊङ्कुम्–अंगिया के अन्दर से (न समाकर) उभरनेवाले; कॊङ्कै–उरोजों का भार; चुमक्कुम् वलि इऩ्ऱि–ढोने की शक्ति न रखकर; कम्पिक्किऩ्ऱ–

कम्पनशील; नुण् इटै नोव–क्षीण कटि के दुखने से; कचिवाळुम्–स्वयं दुख उठानेवाली, और; किळ्ळै पिळ्ळै–शुक शावक के; पयिल्किन्ऱ कॊम्पिल्–सटी रही शाखाओं में; ऑळिक्क–छिपने से; पचुमै पॊन् किण्णम्–चोखे स्वर्ण के कटोरे को; मॆल् विरल् ताङ्कि–कोमल हाथ में ढोती हुई; कुऴैवाळुम्–लोचभरी वाणी में पुकारनेवाली, और। ९९६

एक स्त्री है जिसके उरोज अंगिया के अन्दर नहीं समाते। उनका भार वहन करने में असमर्थ उसकी कमर दुखती है। और एक स्त्री है जो हाथ में स्वर्ण के कटोरे में शुक का आहार लिए हुए उसको आतुरता से बुला रही है और वह शुक घनी पुष्पशाखाओं में छिपा हुआ है। ९९६

पॊन्ऩे तेऩे पूमह ळेका णॆऩ्ऩैयॆऩ्ऩात्
तन्ऩे रिल्ला ऩङ्गॊरु कॊय्पून् दळैमूऴ्ह
इन्ऩे यॆऩ्ऩैक् काणुदि नीयॆऩ् ऱिहलित्तन्
नन्ऩी लक्कण् कैयिन् मऱैत्ते नहुवाळुम् 997

तन् नेर् इल्लान्–अपनी सानी न रखनेवाला एक नायक; पॊऩ्ऩे–स्वर्ण (समाना!); तेऩे–शहद; पू मकळे–कमलभवा लक्ष्मी; ऍऩ्ऩै काण् ऍऩ्ऩा–मुझे देखो कहकर; अङ्कु–वहाँ; ऑरु कॊय् पू तऴै–चयनयोग्य कोमल पल्लवों से भरे एक स्थान में; मूऴ्क–छिप गया, तब; इकलि–रुष्ट होकर; इन्ऩे–अभी; नी ऍऩ्ऩै काणुति–तुम मुझे ढूँढ पकड़ो; ऍऩ्ऱु–कहकर; तन् नल् नीलम् कण्–अपनी सुन्दर नीलोत्पल-सी आँखों को; कैयिन् मऱैत्तु–हाथों से मूँदकर; नकुवाळुम्–हँसनेवाली, और। ९९७

आत्मोपम एक वीर ने अपनी प्रेयसी को स्वर्ण, शहद आदि कहकर संबोधित किया और 'मुझे ढूँढ लो' कहकर घने झुरमुट में जाकर छिप गया। उसकी प्रेयसी उससे सहमत नहीं हुयी। उसने कहा कि तुम मुझे ढूँढकर पहचानो! यह कहकर उसने अपनी नीलोत्पलसम आँखें अपने हाथ से मूँद ली। फिर वह हँसी। ऐसी एक और। (आँखें मूँद लेने से अदृश्य हो रहेगी— यह सोचना उसकी नादानी है और वह नादानी रसीली है!)। ९९७

विल्लिऱ् कोदै नाणुऱ मिक्को ऩिहलङ्गम्
पुल्लिक् कॊण्ड तामरै मॆन्बू मलर्ताङ्गि
अल्लिऱ् कोदै मादर् मुहमा मरविन्दच्
चॆल्वक् काऩिऱ् चॆङ्गदि रॆन्ऩत् तिरिवाऩुम् 998

मिक्कोन्–अतिश्रेष्ठ नायक; विल्लिल् नाण् कोतै उऱ–धनुष की डोरी (बायें हाथ के) हस्तत्राण पर लेकर; इकल् अङ्कम्–बलिष्ठ दाहिने हाथ पर; पुल्लिक् कॊण्ट–शोभित; तामरै मॆन् पू मलर् ताङ्कि–कमल का कोमल फूल लेकर; अल्लिन् कोतै–अन्धकार-सम (काले) केशवाली; मातर्–स्त्रियों के; मुकम् आम्–मुखरूपी;

चॅल्वम् अरविन्तम् कान्तिल्–पुष्ट कमलों के वन में; चॅम् कतिर् अन्न्–सुन्दर किरणमाली के समान; तिरिवान्ुम्–फिरता है, वह, और । ९९८

एक नायक ने डोरी-चढ़ा धनुष बायें हाथ में लिया। बायें हाथ में चमड़े का दस्ताना था। दायें हाथ में एक सुन्दर कमल का फूल ले लिया। वह छैला स्त्रियों के मध्य सूर्य के समान घूम रहा था जिसको देखकर स्त्रियों के कमलमुख खिल उठे। उन स्त्रियों का केश अंधेरे के समान काला था। ९९८

शोलैत् तुम्बि मॅन्गुऴ लूदत् तॉडैमेवुम्
कोलैक् कॉण्ड मन्मद वायन् कुऱियुय्प्प
नीलत् तुण्गण् मङ्गयर् शूऴ निरैयाविन्
मालैप् पोदिन् माल्विडै यॅन्न वरुवारुम् 999

मालै पोतिल्–सायंकाल में; चोलै तुम्पि–उपवन के भ्रमर; मॅन् कुऴल् ऊत–हल्की बाँसुरी सी ध्वनि करते हैं; तॉटै मेवुम्–चढ़ाने योग्य; कोलै कॉण्ट–तीरों को हाथ में लिए हुए; मन्मतन् आयन्—मन्मथ-ग्वाला; कुऱि उय्प्प–संकेत स्थलों को भिजवाता है; नीलम् उण् कण् मङ्कैयर्–नीलोत्पल सी आँखवाली नायिकाएँ; निरै आविन् चूऴ–समूहबद्ध गायों से घिरकर; माल् विटै ऍन्न–शानदार ऋषभों के समान; वरुवारुम्–आनेवाले (नायक), और । ९९९

(ग्वाले लोग शाम को बांसुरी बजाकर गायों और बछड़ों को इकट्ठा करते हैं। पुष्पालंकृत बेंत का प्रयोग करके उन्हें उनके स्थानों को भेज देते हैं। इस पद में मन्मथ को ग्वाला, स्त्रियों को गायें, पुरुषों को बैल और भ्रमरों को बांसुरी बनाकर कवितापूर्ण प्रकार से बताया गया है कि—) शाम का समय आया। उद्यान में भ्रमरों ने बांसुरी का-सा नाद किया। मन्मथरूपी ग्वाले ने, जिसके हाथ में शर सन्नद्ध थे; स्त्रियों और पुरुषों को उनके स्थानों को जाने के लिये प्रेरित किया। तब नायक उत्तम ऋषभों के समान जाने लगे और उनको घेरकर नीलोत्पल सदृश आँखोंवाली स्त्रियाँरूपी गायें चलीं। (लोगों के मनों में कामेच्छा पैदा हुई और वे उचित स्थानों को जाने लगे।) ऐसे पुरुष और। ९९९

शॅय्यिऱ् कॉळ्ळुन् दॅळ्ळमु दच्चॅञ् जिलैयॊन्ऱुम्
कैयिऱ् पॅय्यिऱ् कामनु नाणुङ् गविन्ऱ्तम्
मैयऱ् पेदै मादर् मिऴऱ्ऱुम् मऴलैच्चॊल्
दॅय्वप् पाडऱ् चॊऱ्कलै वेण्डित् तिरिवारुम् 1000

चॅय्यिल् कॉळ्ळुम्–खेतों से ग्रहीत; तॅळ् अमुतम्–स्वच्छ अमृत के समान; चॅम् चिलै ऑन्ऱुम्–रस भरे सुन्दर (इक्षु के) धनुष को ही (केवल); कैयिल् पॅय्यिन्–हाथ में दे दिया तो; कामतुम् नाणुम्–कामदेव को भी लजानेवाली; कविन्ऱार्–सुन्दरता रखनेवाले; तम् मैयल् पेतै मातर्–अपनी प्यारी अबोध स्त्रियों की; मिऴऱ्ऱुम्–

तुतलाती; मऴलै चॉल्–मधुर बोली रूपी; चॉल्–प्रथित; तॅय्वम् पाटल् कलै–वेदवचन को; वेण्टि–सुनने की चाह लेकर; तिरिवारुम्–भटकते हैं, वे और। १०००

(इस पद में कुछ अन्य पुरुषों का चित्रण है।) कुछ पुरुष बड़े ही सुन्दर हैं। वे स्त्रियों की मधुर तुतली बोली सुनने की चाह लेकर जा रहे हैं। उनमें और मन्मथ में इतना ही भेद है कि मन्मथ के हाथ में ईख का, जो खेतों में पैदा होता है और जिसमें अमृत-सा रस है, धनु है और इनके हाथ में वह नहीं है। बल्कि इनके हाथ में भी धनु दिया जाय तो वे मन्मथ से भी बढ़कर सुन्दर लगेंगे। मन्मथ वेदगान सुनना चाहता है; पर इनके लिए अपनी अबोध स्त्रियों की मधुर अस्पष्ट बोली ही वेदगान है! वे उसी को सुनने की चाह लेकर चल रहे हैं। ऐसे, और। १०००

ऊक्क मुळ्ळत् तुडैय मुऩिवराल्, काक्क लावदु कामऩ्गै विल्लॅऩ्ऩुम्
वाक्कु मात्तिर मल्लदु वल्लियिऩ्, पूक्कॉय् वाळ्पुरु वक्कडै पोदुमे 1001

उळ्ळत्तु–मन में; ऊक्कम् उटैय मुऩिवराल्–(तपस्या में) साहस रखनेवाले मुनियों से; कामऩ् कै विल्–कामदेव के हाथ के धनुष के कार्य से; काक्कल् आवतु ऍऩ्ऩुम्–अपने को बचाने का; वाक्कु मात्तिरम् अल्लतु–केवल वचन छोड़कर (काम में नहीं है); वल्लियिऩ्–लता के समान; पू कॉय्वाळ्–(एक) पुष्पचयन करनेवाली की; पुरुवम् कटै (ए)–भौंहों का कोना ही; पोतुम्–(मुनि के धैर्य को तोड़ने के लिए) पर्याप्त है। १००१

कहा जाता है कि तपोत्साही मुनि मन्मथ के धनु के आघात से बच सकते हैं, पर यह कथनमात्र ही है। मन्मथ के धनु की बात क्या, पुष्पचयन करनेवाली एक सुन्दरी की भौंह का कोना ही पर्याप्त है, उनके मन को अधीर करने के लिए। (मुनियों की बात ऐसी है तो साधारण गृहस्थ का मन स्त्री-प्रेम में चंचल हो— यह स्वाभाविक ही है। इसको अपराध या हेय मानना ठीक नहीं है। यह कवि की अपनी सफ़ाई है।)। १००१

नाऱु पूङ्गुऴ नऩ्ऩुदल् पुऩ्ऩैमेल्, एऱि ऩाऩ्मऩत् तुम्बर्शॅऩ् ऱेऱिऩाळ्
ऊऱु ञाऩत् तुयर्न्दव रायिऩुम्, वीऱु शेर्मुलै मादरै वॅल्वरो 1002

नाऱु पू कुऴल् नल् नुतल्–सुवासित पुष्प से अलंकृत केश और सुन्दर ललाटवाली एक; पुऩ्ऩै मेल् एऱिऩाऩ्–"पुन्नै" के वृक्ष पर जो चढ़ा; मऩत्तु उम्पर चॅऩ्ऱु–उसके मन के ऊपर जाकर; एऱिऩाळ्–चढ़ बैठी; ऊऱुम् ञाऩत्तु–उत्तरोत्तर विकासशील ज्ञान के; उयर्न्तवर् आयिऩुम्–उत्कृष्ट भी हों; वीऱु चेर् मुलै–गर्वोन्नत उरोजों की; मातरै–स्त्रियों पर; वॅल्वरो–विजय पावेंगे क्या। १००२

एक प्रेमी कदंब (पुन्नै) के पेड़ पर चढ़ा। सुवासपूर्ण केश और सुन्दर ललाटवाली उसकी प्रेयसी उसके मन पर चढ़कर बैठ गयी। (यानी उसके मन में प्रेयसी का स्मरण रहा और वह उसे प्रेरित कर रहा था।)

इसमें क्या आश्चर्य है ? उत्तरोत्तर बढ़नेवाले ज्ञान के साधू भी तो गर्वोन्नत स्तनों के आकर्षण को जीत नहीं पाते ! । १००२

शित्तैयिऩ् मेलिरुन् दाऩुरुत् तेवराल्, वत्तैय वुम्मरि याळ्वत्तप् पिऩ्ऱलै
नित्तैवु नोक्कमु नीक्कलऩ् कैहळाल्, नत्तैयु नाण्मुऱि युङ्गॊय्दु नल्हिऩाऩ् 1003

चित्तैयिऩ् मेल् इरुन्ताऩ्–डाली पर बैठा था जो वह; उरु–(जिसका) रूप; तेवराल् वत्तैय अरियाळ्–देव भी खींच नहीं सकते, ऐसी सुन्दरी के; वत्तप्पिऩ् तलै–लावण्य के; नित्तैवुम्–स्मरण और; नोक्कमुम्–(उसपर गई) दृष्टि को; नीक्कलऩ्–नहीं हटा सका; कैकळाल्–अपने हाथों से; नत्तैयुम्–कलियों और; नाळ् मुऱियुम्–नवीन पल्लवों को; कॊय्तु नल्कित्ताऩ्–तोड़कर देता रहा। १००३

एक नायक पुष्प-चयन के लिए डाल पर चढ़ा। वहाँ भी, देवों से भी चित्रित करने के लिए जो कठिन हो, ऐसे मनोरम रूपवाली उसकी प्रिया का रूप न उसके स्मरण से हटा, न आँखों के सामने से। इसलिए वह फूल छोड़कर कलियों और नवीन पल्लवों को तोड़कर देता रहा। १००३

वण्डु वाऴ्कुऴ लाण्मुह नोक्कियोर्, तण्डु शेरपुयत् ताऩ्ऱडु माऱित्ताऩ्
उण्डु कोबमॆऩ् ऱुळ्ळत् तुणर्न्दवळ्, तॊण्डै वायिऱ् ऱुडिप्पॊऩ्ऱु शॊल्लवे 1004

ओर् तण्टु चेर् पुयत्ताऩ्–दण्ड (आयुध) के समान भुजावाला एक; वण्टु वाऴ्–जिसपर भ्रमर मँडरा रहे थे उस; कुऴलाळ् मुकम्–केशवाली का मुख; नोक्कि–देखकर; उळ्ळत्तु–उसके मन में; कोपम् उण्टु–कोई गुस्सा है; ऎऩ्ऱु–यह; अवळ् तॊण्टै वायिल्–उसके बिंबाधर के; तुटिप्पु ऒऩ्ऱु चॊल्ल–फड़कने के संकेत से; उणर्न्तु–जानकर; तटुमाऱित्ताऩ्–गड़बड़ाने लगा। १००४

दंडायुध समान भुजावाला एक नायक, अपनी प्रिया का, जिसके केश पर भ्रमर मँडरा रहे थे, मुख देखकर, उसके अधरों के फड़कने की रीति से यह जानकर कि वह किसी कारण रुष्ट है, घबड़ाने लगा। (वह शायद पुष्प आदि उपहार किसी दूसरी को देकर रिक्तहस्त इसके सामने प्रेम की याचना ले आया था !) । १००४

एयुन् दऩ्मय रिव्वहै यारॆलाम्, तूय वॊण्मलर्च् चोलैत् तुऱुमलर्
वेयुञ् जॆय्है वॆऱुत्तऩर् वॆण्डिरै, पायुन् दीम्बुऩर् पण्णैशॆऩ् ऱॆय्दिऩार् 1005

एयुम् तऩ्मैयर्–(ऐसे मनोरंजनों में) लगे रहे; इ वकैयार् ऎल्लाम्–ऐसे स्त्री, पुरुष सब; तूय ऒळ्–पवित्र और प्रकाशमान (मन को आनन्द देनेवाले); मलर् चोलै–पुष्पोद्यान में; तुऱुम् मलर–घनी पुष्प मंजरियों को; वेयुम् चॆय्कै–(चयन कर) पहनने के काम से; वॆऱुत्तऩर्–ऊबकर; वॆण् तिरै पायुम्–श्वेत लहरें जिसमें लहर रही थीं उस; तीम् पुऩल् पण्णै–सुखमय जल में क्रीडा चाहकर; चॆऩ्ऱु ऎय्तिऩार्–(जलाशयों में) जा पहुँचे। १००५

इस तरह पुष्प-चयन के मनोरंजन में पुरुष और स्त्रियाँ लगी रहीं। उस पवित्र और मन को आनन्द का प्रकाश देनेवाले उद्यान में पर्याप्त समय व्यतीत करने के पश्चात उनका मन पुष्प-चयन-धारण के काम से उचट गया। तब वे जलाशयों में जाकर जल-क्रीडा करने की इच्छा से वहाँ से हटे और तीरों पर लहरें मारते रहनेवाले सरोवरों में गये। १००५

16. नीर् विळैयाट्टुप् पडलम् (जल-क्रीडा पटल)

पुऩैमलर्त् तडङ्गणोक्किप् पूशल्वण् डार्त्तुप् पौङ्ग
विऩैयऱु तुऱक्क नाट्टु विण्णवर् कणमु नाण
अऩहरु मणङ्ग ऩारु मम्मलर्च् चोलै निऩ्ऱुम्
वऩहरि पिडिह ळोडुम् वरुवऩ पोल वन्दार् 1006

विऩै अऱु तुऱक्कम् नाटु—कर्म-मुक्ति के स्वर्गलोक के; विण्णवर् कणमुम्–देवगण भी; नाण–लज्जित हों, ऐसा; अनकरुम्–अनघ (सुयोग्य) पुरुष; अणङ्कु अऩ्ऩारुम्–देवांगनाओं के समान स्त्रियाँ; अ मलर् चोलै निऩ्ऱुम्–उस पुष्पोद्यान से; वऩम् करि–जंगल के हाथी; पिटिकळोटुम्–हथिनियों के साथ; वरुवऩ पोल–जो आते हैं उनके समान; पूचल् वण्टु–गुँजार करने के स्वभाववाले भ्रमरों के; आर्त्तु पौङ्क–गुँजार करते हुए उठते; पुऩै मलर् तटङ्कळ्–अलंकृत करनेवाले फूलों से भरे तडागों को; नोक्कि–उद्देश्य करके; वन्तार्–आये। १००६

(पिछले अध्याय के अन्त में कही हुयी बात इस पद में अनुवाद और विस्तार से कही गयी है।) अनघ (पुण्यात्मा) पुरुष लोग और सुरबाला-सम स्त्रियाँ, सब पुष्पोद्यान से, जहाँ फूल तोड़ने आदि मनोरंजन के काम में लगे रहे, वहाँ से निकलकर सरों पर आये, जिनको सुन्दर सुमन समूह और सुन्दर बना रहे थे। उन लोगों को देखकर पाप-विमुक्त-देवलोक के वासी भी लज्जित होते थे। (पुण्यात्मा की बात इसलिए की गयी कि देवलोक के वासी पाप-विमुक्त हैं। उनसे बढ़कर श्रेष्ठ कहलानेवाले लोगों को ‘अनघ’ रहना आवश्यक था।) वे जंगली हथिनियों और उनके साथ आने वाले हाथियों के समान लगते थे और उनके आने पर मधुकर गुंजार करते हुए उठे। १००६

अङ्गवर् पण्णैनऩ्ऩी राडुवा ऩमैन्द तोऱ्ऱम्
गङ्गैवार् शडैयो ऩऩ्ऩ मामुऩि कऩल मेऩाळ्
मङ्गैमार् कूट्टत्तोडुम् वाऩवर्क् किऱैवऩ् शॆल्वम्
पौङ्गुपाऱ् कडलुट्पोहुन् दोऱ्ऱमे पोऩऱ दऩ्ऱे 1007

अङ्कु अवर्–वहाँ (आकर) वे; पण्णै नल् नीर् आटवाऩ् अमैन्त तोऱ्ऱम्–क्रीडा के साथ निर्मल जल में स्नान करने को उद्यत हुए, वह दृश्य; मेल् नाळ्–प्राचीन-काल में; कङ्कै वार् चटैयोऩ् अऩ्ऩ—गंगा-सहित लम्बी जटावाले (रुद्र) सदृश;

मा मुत्ति–बड़े मुनि (दुर्वासा) के; कत्तल–कोप करने से; वात़वर्क्कु इऱैवऩ्–देवेन्द्र की; चॅल्वम्–निधियाँ; मङ्कैमार् कूट्टत्तोटुम्–अप्सराओं और अन्य देवांगनाओं के समूहों के साथ; पॉङ्कु पाल् कटलुळ्–सब निधियों से भरे क्षीरसागर में; पोकुम् तोऱ्ऱमे–जो गईं उस दृश्य ही के; पोऩ्ऱतु–समान था; (अऩ्ऱे) । १००७

उनके उधर आकर जलक्रीडा करने के लिए उद्यत होने का वह दृश्य देवेन्द्र की निधियों और देवांगनाओं के, गंगाधर शिवजी सदृश ऋषि दुर्वासा के शाप के कारण सर्वसमृद्ध क्षीरसागर में प्रवेश करने के समय के दृश्य के ही समान था। (यह घटना तब घटी थी जब दुर्वासा ने इन्द्र को शाप दिया था। दुर्वासा ने लक्ष्मीदेवी की प्रसादरूप प्राप्त माला को देवेन्द्र को भेंट की और उसने उसे अपने हाथी पर डाला। हाथी ने उसे अपने पैरों के नीचे डालकर कुचल दिया। दुर्वासा को देवेन्द्र का यह धनमदमत्त अभद्र व्यवहार बुरा लगा।)। १००७

मैयवाङ् गुवळै यॅल्ला मादरकण् मलर्हळ् पूत्त
कैयवा मुरुवत् तार्दङ् गण्मलर् कुवळै पूत्त
शॅय्यता मरैहळॅल्लान् दॅरिवयर् मुहङ्गळ् पूत्त
तैयलार् मुहङ्ग ळॅल्लान् दामरै पूत्त वऩ्ऱे 1008

मैय आम् कुवळै ॲल्लाम्–काले रंग के कुवलय सब; मातर् कण् मलर्कळ् पूत्त–स्त्रियों के अक्षसुमनों के समान फूले; कै अवाम्–(सामुद्रिका-) लक्षण के अनुसार सृष्ट; उरुवत्तार् तम्–रूपवाली उन स्त्रियों के; कण् मलर्–अक्षसुमन; कुवळै पूत्त–उन कुवलयों के समान शोभे; चॅय्य तामरैकळ् ॲल्लाम्–लाल कमल सब; तॅरिवैयर् मुकङ्कळ् पूत्त–उन स्त्रियों के मुखों के समान फूले; तैयलार् मुकङ्कळ् ॲल्लाम्–दयिताओं के मुख, सब; तामरै पूत्त–लालकमल के समान शोभे; (अऩ्ऱे) । १००८

नीले रंग के कुवलय पुष्प स्त्रियों की आँखरूपी पुष्पों के समान खिले थे; और सुलक्षणा स्त्रियों के नेत्र इन कुवलय पुष्पों के समान शोभायमान थे। सरोवर के लाल कमल के फूल उन दयिताओं के मुखों के समान खिले थे और उन स्त्रियों के मुख उन लाल कमलों के समान प्रफुल्ल थे। (सब फूल ही फूल हो गये।)। १००८

वण्डुणक् कमळुञ् जुण्णम् वाशनॅय् नाऩत् तोडुम्
कॉण्डॅदिर् वीशु वारुङ् गोदैहॊण् डोच्चु वारुम्
तॊण्डैवाय्प् पॅय्द तूनीर् कॉळ्ुऩर्मेऱ् ऱूहिऩ् ऱारुम्
पुण्डरी हक्कै कूट्टिप् पुऩऩ्मुहन् दिऱैक्किऩ् ऱारुम् 1009

वण्टु उण–भ्रमर आकर चूस लें; कमळुम्–ऐसा, सुवासित; चुण्णम्–सुगन्धचर्ण; वाचम् नॅय्–सुगन्धित तेल; नाऩत्तोटुम्–कस्तूरी के साथ; कॉण्टु–लेकर; ॲतिर् वीचुवारुम्–आमने-सामने छिटकानेवाले; कोतै कॉण्टु–पुष्पमालाएँ लेकर;

ओच्चुवारुम्–फेंकनेवाले; तॊण्टै वाय् पॆय्त–बिंबसमान मुख में भरे; तू नीर्–निर्मल जल को; कॊऴुऩर् मेल्–पतियों पर; तूकिऩ्ऱारुम्–उलीचनेवाले; पुण्टरीकम् कै कूट्टि–कमल सदृश हाथ जोड़कर; पुऩल् मुकन्तु–पानी भर लेकर; इऱैक्किऩ्ऱारुम्–उछालनेवाले । १००९

स्त्री और पुरुष अपने आनन्दातिरेक में एक दूसरे पर सुगन्धित चूर्ण, तेल, कस्तूरी आदि लेकर फेंकने लगे। कुछ लोगों ने एक दूसरे पर पुष्पमालाएँ फेंकीं। कुछ स्त्रियों ने अपने बिंबारुण मुखों में शुद्ध जल भर कर अपने पतियों पर फेंका। और कुछ लोगों ने अपनी अँजुलियों में जल लेकर उलीचा। १००९

ताळैयेय् कमलत् ताळिऩ् मार्बुऱल् तऴुवु वारुम्
तोळैये पऱ्ऱि वॆऱ्ऱित् तिरुवॆऩ्ऩत् तोऩ्ऱु वारुम्
पाळैवी विरिन्द दॆऩ्ऩप् परन्दनी रुन्दुवारुम्
वाळैमी ऩुहळ वञ्जि मैन्दरैत् तऴुवु वारुम् 1010

ताळै एय् कमलत्ताळिऩ्–नालयुक्त कमल की निवासिनी कमला सी; मार्पु उऱ तऴुवुवारुम्–(अपने प्रेमी के) वक्ष को अपने गले से कसकर लगानेवालियाँ और; तोळैये पऱ्ऱि–भुजाओं को ही पकड़े; वॆऱ्ऱि तिरु ऒत्त–विजयश्री के समान; तोऩ्ऱु वारुम्–दिखाई देनेवालियाँ; पाळै वी विरिन्ततु ऒऩ्ऩ–डण्ठल की बालों से फूल बिखेरकर गिरते हों ऐसा; परन्त नीर्–विस्तृत जल को; उन्तुवारुम्–उछालनेवालियाँ; वाळै मीऩ् उकळ–'वाळै' मछलियों के फड़फड़ाने पर; अञ्चि–भयभीत होकर; मैन्तरै–पतियों से; तऴुवुवारुम्–बाँध लेनेवालियाँ। १०१०

कुछ रमणियाँ नालयुक्त कमल की देवी कमला के समान (जो अपने पति श्रीविष्णु के वक्ष से लगी हुयी हैं) अपने पतियों के वक्ष से चिपकी-सी लगी हुयी दिखाई देती हैं। कुछ सुन्दरी बालाएँ अपने पतियों के कंधों से चिपटी हुयी हैं और वे विजयलक्ष्मी (जो वीरों के भुजबल की प्रतीक हैं) के समान दिखाई दे रही हैं। कुछ स्त्रियाँ अपने हाथों से अधिक जल लेकर उछाल रही हैं और वह जल नारियल के डंठलों के बालों के समान छिटक रहा है। कुछ भीरु स्त्रियाँ हैं जो मछलियों को उछलते लोटते देखकर डर जाती हैं और अपने पतियों का आलिंगन कर लेती हैं। १०१०

मिऩ्ऩॊत्त विडैयि ऩारुम् विडमॊत्त विऴियि ऩारुम्
शिऩ्ऩत्ति ऩळह पन्दि तिरुमुहम् मऱैप्प नीक्कि
अऩ्ऩत्तै वरुह वॆऩ्ऩो डाडवॆऩ् ऱऴैक्किऩ् ऱारुम्
पॊऩ्ऩॊत्त मुलैयिऩ् वन्दु पूवॊत्त वुळैहिऩ् ऱारुम् 1011

मिऩ् ऒत्त इटैयिऩारुम्–बिजली के समान कमर और; विटम् ऒत्त विऴियिऩारुम्–विष सरीखे नेत्रोंवालियाँ (जो); चिऩ्ऩत्तिऩ् अळकम् पन्ति–छुट्टे फूलों से अलंकृत केशजाल को; तिरु मुकम् मऱैप्प–जो उनके सुन्दर मुखों को छिपाता है;

ऩीक्कि–उसको हटाकर; अऩ्ऩत्तै–हंसों को; ऎऩ्ऩोटु आट वरुक–मेरे साथ खेलने आओ; ऎऩ्ऱु–इति; अऴैक्किऩ्ऱारुम्–बुलाती हैं; पॊऩ् ऒत्त मुलैयिऩ्–(यौवनावस्था के कारण चर्म पर फैले पीले वर्ण के कारण) स्वर्णसम लगनेवाले स्तनों पर; पू वन्तु ऒत्त–फूल के स्पर्शमात्र करने पर; उळैकिऩ्ऱारुम्–तड़पनेवालियाँ। १०११

उनमें कुछ स्त्रियाँ हैं जिनकी कटि बिजली के समान है, कुछ हैं जिनके नेत्र विष के समान (पुरुषों के लिए मर्मपीडक) हैं। और कुछ स्त्रियाँ हैं जो अपने मुख पर बिखरते हुए केशजाल को हटाकर हंसों को अपने पास बुला रही हैं। कुछ कोमलांगी स्त्रियाँ हैं जिनके स्वर्णसम (फैलते पांडु रंग के कारण) लगनेवाले स्तन पर फूल स्पर्श करता है तो (उस मृदुस्पर्श मात्र से) एकदम असह्य पीड़ा का अनुभव करती हैं। १०११

पण्णुळ पवळन् दॊण्डै पङ्गयम् बूत्त दऩ्ऩ
वण्णवाय्क् कुवळै युण्गण् मरुङ्गिलाक् करुम्बि ऩ्ऩार्
उण्णिऱै कयलै नोक्कि योडुनीर्त् तडङ्गट् कॆल्लाम्
कण्णुळ वाङ्गॊ लॆऩ्ऱु कणवरै विऩवु वारुम् 1012

पण् उळ–संगीत मधुर और; पवळम् तॊण्टै पूत्ततु पङ्कयम् अऩ्ऩ–प्रवाल बिंबफल और खिला कमल —इनसे तुल्य; वण्णम् वाय्–लाल अधर (मुख); कुवळै उण् कण्–कुवलय सदृश और अंजनयुक्त नेत्र; मरुङ्कु इला–क्षीण कटि; करुम्पिऩ् अऩ्ऩार्–(इनसे युक्त और अपने पतियों के लिए) इक्षु सदृश स्त्रियाँ; उळ् निऱै कयलै नोक्कि–सरोवर में भरी मछलियों को देखकर; ओटुम् नीर् तटङ्कट्कु ऎल्लाम्–बहते जलवाले सारे तडागों के; कण् उळ आम् कॊल्–आँखें भी होती हैं क्या; ऎऩ्ऱु–यह; कणवरै–पतियों को; विऩवुवारुम्–पूछनेवालियाँ, और। १०१२

कुछ अबोध स्त्रियाँ भी हैं, जिनके मुख प्रवाल और बिम्बफल तथा विकसित कमल के समान लाल हैं, और संगीतसम (या और) मधुर वचन के प्रकटन के स्थान हैं; जिनकी कुवलय के सदृश आँखों में अंजन लगाया गया है, जिनकी कमर नहीं के बराबर है और जो अपने पतियों के लिए ईख के समान प्यारी हैं। वे सरोवरों के जल में कयल जाति की मछलियों को देखकर अपने पतियों से पूछ बैठती हैं कि क्या जल से लबालब भरे तालाबों के भी आँखें होती हैं? । १०१२

तेऩहु नऱव मालैच् चॆऱिहुऴऱ् ऱॆय्व मऩ्ऩाळ्
ताऩुडैक् कोल मेऩि तडत्तिडैत् तोऩ्ऱ नोक्कि
नाऩह नहुहिऩ् ऱाळिऩ् नऩ्ऩुदल् तोऴि यार्मॆऩ्
ऱूऩमिल् मुलैयि ऩार मुळङ्गुळिऱ्ऩ् दुदवु वाळुम् 1013

तेऩ् नकु–शहद सहित; नऱवम् मालै–सुगन्धित माला से अलंकृत; चॆऱि कुऴल्–घने केशवाली; तॆय्वम् अऩ्ऩाळ्–देवनायिका तुल्य एक स्त्री, (जो); ताऩ् उटै (य) कोलम् मेऩि–अपना सुन्दर रूप; तटत्तु इटै तोऩ्ऱ–तालाब के जल में दिखाई देने पर;

नोक्कि–देखकर; **इ नल् नुतल्**–यह सुन्दर भालवाली; **नाऩ् नक नकुकिऩ्ऱाळ्**–मेरे हँसने पर हँसती है; **तोऴि आम्**–मेरी सखी है; **ॲऩ्ऱु**–यह कहकर; **ऊऩम् इल् मुलैयिऩ् आरम्**–निर्दोष, अपने स्तन पर के (वक्ष के) हार को; **उळम् कुऴिऩ्ऱु**–स्नेहार्द्र मन के साथ; **उतवुवाळुम्**–दे देती है, वह और। १०१३

एक बाल-स्वभाव की स्त्री है। उसका केश घना है और शहद सहित पुष्पों की माला से अलंकृत है। देव-कन्या-सी वह अपने प्रतिबिम्ब को जल में देखती है। "यह सुन्दर ललाटवाली रमणी, जब मैं हँसती हूँ तब हँसती है। इसलिए यह मेरी सखी है।" यह कहकर वह अपने स्तनों पर से एक अनिन्द्य हार उतारकर रीझ कर दे देती है। १०१३

कुण्डलन् दिरुविल् वीशक् कुलमणि यारमिऩ्ऩ
विण्डॊडु वरैयिऩ् वैहु मॆऩ्मयिऱ् कणङ्गळ् पोलुम्
वण्डुळर् कोदै मादर् मैन्दर्तम् वयिरत् तिण्डोळ्
तण्डुहळ् तऴुवु माशै यार्करै शार्हिऩ् ऱारुम् 1014

वण्टु उळर् कोतैमातर्–जिस पर भ्रमर मँडराते हैं, ऐसे केशवाली (कुछ) रमणियाँ; **मैन्तर् तम्**–अपने पतियों को (जो तीर पर हैं); **वयिरम् तिण् तोळ् तण्टुकळ्**–वज्र-सम कठोर भुजदण्डों को; **तऴुवुम् आचैयाल्**–आलिंगन करने की इच्छा से; **विण् तॊटु वरैयिऩ् वैकुम्**–गगनस्पर्शी पर्वत पर रहनेवाले; **मॆल् मयिल् कणङ्कळ् पोलुम्**–कोमल मोरों के समान; **कुण्टलम् तिरुविल् वीच**–कुण्डलों को अधिक प्रकाश बिखेरने देते हुए; **कुलम् मणि आरम् मिऩ्ऩ**–श्रेष्ठ रत्नहारों को चमकने देते हुए; **करै चार्किऩ्ऱारुम्**–तीर पर जा रही हैं, वे और। १०१४

कुछ स्त्रियाँ स्नान कर रही थीं। उनके केश पर भ्रमर मँडरा रहे थे। अकस्मात उनकी इच्छा हुयी कि तीर पर रहे अपने पतियों के वज्र-सम भुजदण्डों से लिपट जायँ। वे ऐसे चली आयीं जैसे गगनस्पर्शी पर्वत पर रहनेवाले मोर चले आते हों। तब उनके कर्णकुंडलों से प्रकाश फल रहा था और उनके श्रेष्ठ रत्नहार झिलमिला रहे थे। १०१४

अङ्गिडै युऱ्ऱ कुऱ्ऱम् यावदॆऩ् ऱऱिद ऱॆऱ्ऱाम्
शॆङ्गय लऩैय नाट्टञ् जिवप्पुऱच् चीऱिप् पोऩ
मङ्गयोर् कमलच् चूऴऩ् मऱैन्दऩण् मऱैय मैन्दऩ्
पङ्गय मुहमॆऩ् ऱोरा दैयुऱ्ऱुप् पार्क्किऩ् ऱाऩुम् 1015

अङ्कु–वहाँ; **इटै**–क्रीडा के मध्य; **उऱ्ऱ कुऱ्ऱम्**–हुआ अपराध; **यावतु ॲऩ्ऱु**–कौन सा था, यह; **अऱितल् तेऱ्ऱाम्**–जान नहीं सके; **चॆम् कयल्**–सुघड़ 'कयल' मछलीतुल्य; **नाट्टम्**–आँखें; **चिवप्पु उऱ**–लाल करते हुए; **चीऱि पोऩ**–(अपने पति से) गुस्सा करके जानेवाली; **मङ्कै**–एक बाला; **कमलम् चूऴल्**–कमलों से भरे एक स्थान में; **मऱैन्तऩळ्**–छिप गई; **मऱैय**–छिपने पर; **मैन्तऩ्**–उसका पति; **पङ्कयम् मुकम् ॲऩ्ऱु**–यह पंकज, यह मुख ऐसा; **ओरातु**–न परख

पाकर; ऐयुर्ऱु–संशयोद्विग्नता के साथ; पार्क्किन्ऱानुम्–ढूंढता (जो) है, वह, और। १०१५

वहाँ अकस्मात क्या अपराध हो गया? नहीं जानते। पर एक तरुणी की "कयल" (मछली) -सी सुन्दर आँखें (गुस्से से) लाल हो गयीं और वह कुपित हो वहाँ से चली और कमलों के बीच में जा छिप गयी। छिपने पर उसका नायक कमल-फूलों और उसके मुख में भेद न जान सकने के कारण संशय से उद्वेलित होकर ढूँढता रहा। वह—और। १०१५

पॉऱ्ऱॉडि तळिर्क्कैच् चङ्गम् वण्डॊडु पुलम्बि यार्प्प
ऍऱ्ऱिनीर् कुडैयुन् दोऱु मेन्दुपे रलुहु निन्ऱुम्
कऱ्ऱैमे कलैह णीङ्गिच् चीऱडि कौवक् कालिऱ्
चुऱ्ऱिय नाह मॅन्ऱु तुणुक्कत्ताऱ् ऱुवळ्हिन्ऱारुम् 1016

तळिर् कै–(कुछ रमणियाँ) अपने पल्लवकरों में; चङ्कम्–शंखकंगन; पॊन् तॊटि–स्वर्ण की चूड़ियाँ; वण्टॊटु–अन्य वलय; पुलम्पि आर्प्प–स्वरित-क्वणित करने देते हुए; नीर् ऍऱ्ऱि–जल उछालते हुए; कुटैयुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों स्नान करतीं; एन्तु पेर् अल्कुल् निन्ऱुम्–उन्नत विशाल नितम्बों से; कऱ्ऱै मेकलैकळ् नीङ्कि–कई लड़ियों की मेखलाएँ अलग हो जातीं; चिऱु अटि कौव–और उनके छोटे पैरों में उलझ जाती हैं, तब; कालिल् चुऱ्ऱिय नाकम् ऍन्ऱु–पैरों को वलयित करता हुआ सर्प, समझ; तुणुक्कत्ताल्–डर से; तुवळ्किन्ऱारुम्–कांपनेवाली, और। १०१६

कुछ स्त्रियाँ खूब गोते लगाकर तैरकर जल में क्रीडा करती हुयी स्नान कर रही थीं। तब उनके हाथों के शंख-कंकण, स्वर्णकंकण और अन्य चूड़ियाँ स्वरित हो रही थीं। तब उनके उन्नत नितम्बों पर से कई लड़ियों-वाली मेखलाएँ अलग हुयीं और खिसककर उनके पैरों से लिपट गयीं। उन्होंने समझा कि साँप आकर हमारे पैरों से उलझ गये हैं। तब वे डरीं और काँपने लगीं। वे, और। १०१६

कुडैन्दुनी राडु मादर् कुळाम्बुडै शूळ वाळित्
तडम्बुयम् पॉलिय वाण्डोर् तार्हॅळु वेन्द लिन्ऱान्
कडैन्दना ळमुदि ऩोडुङ् गडलिडै वन्दु तोन्ऱुम्
मडन्दयर् शूळ निन्ऱ मन्दर मलैयै यॉत्तान् 1017

नीर् कुटैन्तु आटुम्–जल में तैरते हुए क्रीडा करनेवाली; मातर् कुळाम्–स्त्रियों का समूह; पुटै चूळ–(उनको) घेरे रहा; आळि तट पुयम्–बाहुवलय से अलंकृत विशाल भुजाओं को; पॊलिय–शोभने देते हुए; आण्टु निन्ऱान्–(जो) वहाँ खड़ा रहा; तार् कॅळु ओर् वेन्तन्–(वह) मालाधारी एक राजा; कटल् इटै–क्षीरसागर मध्य; कटैन्त नाळ्–जिस दिन मथन हुआ उस दिन; अमुतिनोटुम् वन्तु तोन्ऱुम्–अमृत के साथ जो ऊपर आये; मटन्तैयर् चूळ–उन सुरबालाओं के बीच; निन्ऱ–जो खड़ा रहा उस; मन्तर मलैयै–मन्दरपर्वत के; ऑत्तान्–सदृश रहा। १०१७

विजायट पहने हुए एक सुन्दर राजा खड़ा है। उसके चारों ओर सुन्दर स्त्रियाँ हैं। उस दृश्य को देखकर ऐसा लगता है कि वह मंदर पर्वत है, जलाशय क्षीरसागर है और वे स्त्रियाँ अमृत-मंथन के दिन जो अमृत के साथ आकर प्रकट हुयीं उन सुरस्त्रियों के समान हैं। (पहले १००७वें पद में कहा गया कि इन लोगों के जल-क्रीडा के लिए उन्मुख होने का दृश्य उस दिन देवलोक की निधियों और स्त्रियों के क्षीरसागर में जाने के दृश्य के समान रहा।)। १०१७

तॊडियुलाङ् गमलच् चॆङ्गैत् तूनहैत् तुवर्त्त शॆव्वायक्
कॊडियुला मरुङ्गु ऩल्लार् कुऴात्तॊरु कुरिशि निऩ्ऱाऩ्
कडियुलाङ् गमल वेलिक् कण्णहऩ् गाऩ याऱ्ऱुप्
पिडियॆलाञ् जूऴ निऩ्ऱ पॆय्मद याऩै यॊत्ताऩ् 1018

तॊटि उलाम्–कंकण शोभित; कमलम् चॆम् कै—पंकज-सम सुन्दर हाथों; तू नकै–पवित्र मुस्कराहट सहित; तुवर्त्त चॆव्वाय्–प्रवाल-सम लाल अधरों; कॊटि उलाम्–लता समान; मरुङ्कुल–कमरोंवाली; नल्लार् कुऴात्तु–स्त्रियों के समूह में; निऩ्ऱाऩ् ऒरु कुरिचिल्–खड़ा था एक नायक; कटि उलाम् कमलम् वेलि–सुगन्धियुक्त कमलों के घेरे के अन्दर; कण् अकल्–विस्तृत तल की; काऩ याऱु–जंगली नदी में; पिटि ऎलाम् चूऴ–हथिनियों से घिरा हुआ; निऩ्ऱ–शान के साथ जो खड़ा रहा उस; पॆय् मतम् याऩै ऒत्ताऩ्–मदस्रावी गज के समान रहा। १०१८

इसमें एक नायक श्रेष्ठ का वर्णन है। वह सुन्दर स्त्रियों के मध्य खड़ा था। उन स्त्रियों के लाल कमल सरीखे हाथों में उत्तम कंकण आदि थे। उनके मुख पवित्र मुस्कुराहट के साथ प्रवाल सदृश लाल थे। उनकी कटि लताओं के समान लचीली थी। वह उस हाथी के समान लगा जिसके कपोल से मदजल बह रहा था और जो उस जंगली सरिता में, जिसके किनारों के पास कमल थे, अनेक हथिनियों के मध्य खड़ा हो। १०१८

काऩमा मयिल्ह ळॆल्लाङ् गळिहॆडक् कळिक्कुञ् जायल्
शोऩैवार् कुऴलि ऩार्तङ् गुऴात्तॊरु तोऩ्ऱ निऩ्ऱाऩ्
वाऩया ऱदऩै नण्णि वयिऩ् वयिऩ् वयङ्गित् तोऩ्ऱुम्
मीऩॆलाञ् जूऴ निऩ्ऱ विरिहदिर्त् तिङ्ग ळॊत्ताऩ् 1019

काऩम् मा मयिल्कळ् ऎल्लाम्–जंगल में रहनेवाले सभी उत्तम मोर; कळि कॆट–अपनी अकड़ भूल जायँ ऐसी; कळिक्कुम्–मदवाली; चायल्–छटा; चोऩै वार्–लगातार बरसनेवाले मेघ सम व लम्बे; कुऴलिऩार्–केशवाली स्त्रियों के; कुऴात्तु–समूह मध्य; निऩ्ऱाऩ् ऒरु तोऩ्ऱल्–खड़ा (जो) रहा एक नायक (वह); वयिऩ् वयिऩ्—यत्र-तत्र; वयङ्कि तोऩ्ऱुम्–शोभायमान रहनेवाले; मीऩ् ऎलाम् चूऴ–सभी नक्षत्रों के घेरे में; वाऩम् याऱु अततै नण्णि निऩ्ऱ–आकाशगंगा में जाकर जो स्थित

रहा उस; विरि कतिर् तिङ्कळ्–विस्तृत किरणोंवाले चन्द्र के; ऑत्ताऩ्–समान रहा। १०१९

और एक नायक का चित्रण : वह उन सुन्दर स्त्रियों के मध्य था जिनकी आभा जंगली मोरों की छटा के गर्व को तोड़ सकती थी और जिनके केश लगातार बरसनेवाले मेघ के समान काले और लम्बे थे। वह मानो चन्द्र के समान लगा जो खूब चाँदनी छिटकाते हुए, आकाशगंगा में जाकर सभी नक्षत्रों के मध्य खड़ा हो। १०१९

मेवलान् दहैमैत् तल्लाल् वेळ्विऱ् ऱडक्कै वीरऱ्
केॅवॅलाङ् गाट्टु हिऩ्ऱ विणैनॅडुङ् गण्णॊ रेळै
पावैमार् परन्द कोलप् पण्णयिऱ् पॉलिवाळ् वण्णप्
पूवॅला मलर्न्द पॉय्हैत् तामरै पॉलिव दॊत्ताळ् 1020

मेवल् आम् तकैमैत्तु अल्लाल्–आकर्षकता के अलावा; वेळम् विल्–ईख के धनुर्धर; तटक्कै वीरऱ्कु–विशालहस्त मन्मथ के; ए ऍल्लाम्–कार्य सब; काट्टुकिऩ्ऱ–कर दिखानेवाले; इणै नॅटु कण्–जोड़े के विशाल नेत्रोंवाली; ओर् एळै–एक स्त्रीरत्न; पावै मार् परन्त–जहाँ अनेक स्त्रियाँ खड़ी रहीं वहाँ; कोलम् पण्णैयिल्–उस सुन्दर भीड़ में; पॉलिवाळ्–शोभायमान; वण्णम् पू ऍल्लाम्–रंग-बिरंगे अनेक जलपुष्प; मलर्न्त पॉय्कै–जिसमें खिले थे उस तालाब में; तामरै पॉलिवतु ऑत्ताळ्–कमल शोभायमान रहता जैसे, (शोभित) थी। १०२०

इसमें एक नायिकारत्न का चित्रण है। मन्मथ के पाँच शर— आम्र, अशोक, कमल, नीलोत्पल और नवमल्लिका हैं और वे क्रमशः मोहन, उन्मादन, तापन, शोषण और द्रवण के काम करनेवाले हैं। इस नायिका के मनोरम नेत्र उन पाँचों शरों के पाँचों कृत्य एक साथ करनेवाले हैं। स्त्रियों के मध्य वह रंग-विरंगे फूलों से भरे तड़ाग में उनके बीच रहनेवाले कमलपुष्प के समान लगी। १०२०

मिडलुडैक् कॉडिय वेले यॅऩ्ऩवाण् मिळिर्व वॅऩ्ऩच्
चुडर्मुहत् तुलवु कण्णा डोहैयर् शूळ् निऩ्ऱाळ्
मडलुडैप् पोदु काट्टुम् वळर्कॉडि पलवुञ् जूळक्
कडलिडैत् तोऩ्ऱु मॅऩ्बूङ् गऱ्पह वल्लि यॊत्ताळ् 1021

मिटल् उटैय–बलयुक्त; कॉटिय वेले ऍऩ्ऩ–भयंकर भाले के ही समान; मिळिर्व वाळ् ऍऩ्ऩ–चमचमानेवाली तलवारों के सदृश; चुटर् मुकत्तु उलवु कण्णाळ्–प्रभापूर्ण मुख में शोभित आँखोंवाली एक नायिका; तोकैयर् चूळ निऩ्ऱाळ्–स्त्रियों के बीच में खड़ी रही; मटल् उटै–पुष्ट पंखड़ियों सहित; पोतु काट्टुम्–पुष्पों को उत्पन्न करनेवाली; वळर् कॉटि पलवुम् चूळ–अनेक उर्वर लताओं के मध्य; कटल् इटै तोऩ्ऱुम्–(क्षीर-) सागर में उत्पन्न; मॅऩ् पू–कोमल फूलों की; कऱ्पक वल्लि ऑत्ताळ्–कल्पलता के सदृश दिखाई दी। १०२१

(और एक नायिका का चित्रण है इस पद में।) एक नायिका मयूराभा स्त्रियों के मध्य थी। उसकी आँखें शक्तियुक्त शक्ति के समान हैं और चमचमानेवाली तलवार के समान चमकीली। वह क्षीरसागरोत्पन्न कल्पलता के समान लगती है जिसमें अनेक पुष्प लगे हों और जो अनेक पुष्पोत्पादक और पलनेवाली लताओं के मध्य रहती हो। १०२१

तेरिडैक् कॊण्ड वल्हु ऎङ्गिडैक् कॊण्ड कॊङ्गै
आरिडैच् चॆऩ्ऱुङ् गॊळ्ळ वॊण्गिला वऴ्हु कॊण्डाळ्
वारिडैत् तऩ्मी दाड मूऴ्हिऩ्ऩाळ् वदऩ्ऩ मैदीर्
नीरिडैत् तोऩ्ऱुन् दिङ्ग णिऴलॆऩ्ऩप् पॊलिन्द दऩ्ऱे 1022

तेर इटै कॊण्ट अल्कुल–मानो रथ से (रूप लावण्य) लिया गया है, ऐसा कटिप्रदेश; तॆङ्कु इटै कॊण्ट कॊङ्कै–मानो नारियल के फलों से रूप प्राप्त कर लिया गया हो, ऐसे स्तन; आर् इटै चॆऩ्ऱुम्–किसी के पास जाने पर भी; कॊळ्ळ ऒण्किला–प्राप्त न हो सकनेवाले; अऴकु कॊण्टाळ्–रूप-लावण्यवाली; वार् इटै तऩम्–कंचुकी के अन्दर के उरोजों को; मीताट–बाहर दिखने देते हुए; मूऴ्किऩाळ्–जो स्नान कर रही थी उसका; वतऩम्–वदन; नीर् इटै तोऩ्ऱुम्–जलमध्य दिखनेवाले; मै तीर् तिङ्कळ् निऴल् ऎऩ्ऩ–अकलंक चन्द्र के प्रतिबिंब के समान; पॊलिऩ्ततु–शोभा; (अऩ्ऱु, ए)। १०२२

एक नायिका का कटिप्रदेश ऐसा था मानो उसने वह रूप रथ से पा लिया हो। उसके उरोज नारियल के फलों का रूप रखते थे। पर उसका रूप-लावण्य ऐसा था जो कहीं भी, किसी से भी प्राप्त नहीं हो सकता था। वह स्नान करने जल में पैठी तो उसके स्तन गीले अंगिया के अन्दर से साफ़ दिखाई दिये। जल के मध्य उसका मनोरम मुख अकलंक चंद्र के प्रतिबिम्ब-सा शोभित था। १०२२

मलैह डन्द पुयङ्गण् मडन्दैमार्, कलैह डन्दह लल्हुल् कडम्बडु
मुलैह डन्दमिऩ् मुन्दि नॆरुङ्गलाल्, निलै कटन्दु परन्ददु नीत्तमे 1023

मलै कटन्त पुयङ्कळ्–पुरुषों की (कठिनता और आकार में) पर्वत विजयी भुजाएँ; मटन्तैयर्–रमणियों; कलै कटन्तु अकल्–वस्त्रों का उल्लंघन करके बढ़े हुए; अल्कुल्–नितम्ब; कटम् पटु मुलैकळ्–घट समान उरोज; तम् तम्मिल्–आपस में; मुऩ्ति–स्पर्द्धा करके; नॆरुङ्कलाल्–भर गये, इसलिए; नीत्तम्–सरोवरों का जल; निलै कटन्तु–तीर का उल्लंघन करके; परन्ततु–फैल गया। १०२३

जल में पुरुष और स्त्रियाँ अधिक संख्या में स्नान कर रहे थे। पुरुषों के पर्वतसम कंधे, स्त्रियों के वस्त्रविस्फारक नितम्ब; और घटसम स्तन एक से एक बढ़कर जल में भर गये तो जल सरोवर का तीर पारकर सब ओर फैलने लग गया। १०२३

शॆय्य वाय्वॆळुप् पक्कण् शिवप्पुऱ, मॆय्य राह मळियत् तुहिन्नॆहत्
तॊय्यिन् मामुलै मङ्गैयर् तोय्दलाल्, पॊय्है कादऱ् कॊळुनरैप् पोन्ऱदे 1024

तॊय्यिल् मा मुलै–चित्रकारी से सज्जित बड़े स्तनों की; मङ्कैयर्–स्त्रियाँ; चॆय्य वाय् वॆळुप्प–लाल अधर श्वेत हो जाय; कण् चिवप्पु उऱ–आँखें लाल करके; मॆय् अराकम्–शरीर का अंगराग; अळिय–मिट जाय, ऐसा; तुकिल् नॆक–वस्त्र ढीला हो जाय, ऐसा; तोय्तलाल्–नहाती हैं, (मिलती हैं) इसलिए; पॊय्कै–वह तालाब; कातल् कॊळुनरै पोन्ऱतु–प्रेमी पतियों के समान है। १०२४

वे सरोवर प्रेमी पतियों से तुलनीय हो गये। पतियों से मिलते समय स्त्रियों के लाल अधर श्वेत हो जाते हैं; अंगराग मिट जाता है। वस्त्र हट जाते हैं। वही हाल स्नान करते समय भी चित्रकारी से अंकित स्तनवाली नारियों का हो जाता है। (इसलिए सरोवर और पति में साम्य बताया गया है।) तोय्तल के दो अर्थ हैं— एक स्नान करना; दूसरा मिलना (संभोग करना)। १०२४

आन् तूयव रोडुड नाडिन्नार्, ञान नीरव राहुवर् नन्ऱरो
तेन् नावियुन् देक्कहि लावियुम्, मीनु नाऱिन वेऱिनि वॆण्डुमो 1025

आन् तूयवरोटु–पवित्र ज्ञानियों के साथ; उटन् आटिन्नार्–सहचर रहनेवाले; नन्ऱु ञान नीरवर् आकुवर्–बहुत ज्ञानी-स्वभाव हो जाते हैं; मीनुम्–मछलियाँ भी; तेनुम्–शहद का; नावियुम्–कस्तूरी का; तेक्कु अकिल् आवियुम्–अधिक अगरु के धुएँ का; नाऱिन–सुगन्ध देने लगीं; इनि–इसके अलावा; वेऱु वेण्टुमो–दूसरा उदाहरण चाहिए क्या? । १०२५

ज्ञानियों के साथ मिलने पर अज्ञानी भी ज्ञानी हो जाते हैं। उसी न्याय के अनुसार सरोवरों में रहनेवाली मछलियों की दुर्गंध छिप गयी और उनसे शहद, कस्तूरी, अगरु का धुआँ आदि की सुगन्धि आने लगी थी। इससे बढ़कर दूसरा उदाहरण उस न्याय के स्पष्टीकरण के लिए क्या चाहिये? । १०२५

मिक्क वेन्दर्तम् मॆय्यळि शान्दॊडुम्
पुक्क मङ्गैयर् कुङ्गुमम् पोर्त्तलाल्
ऑक्क नील मुहिऱ्ऱलै योडिय
शॆक्कर् वानह मॊत्तदत् तीम्बुनल् 1026

मिक्क वेन्तर् तम्–गौरव में बढ़े राजाओं के; मॆय् अळि चान्तॊटुम्–शरीरों से गलकर जल में मिले चन्दन लेप के साथ; पुक्क मङ्कैयर् कुङ्कुमम्–एकत्रित स्त्रियों के कुंकुम का लेप; ऑक्क पोर्त्तलाल्–एक साथ भर जाने से; अ तीम् पुनल्–वह मधुर जल; नीलम् मुकिल् तलै ओटिय–नीले मेघों पर व्याप्त; चॆक्कर् वानकम् ऒत्ततु–लाल संध्यागगन सा लगा। १०२६

जल पर राजाओं (नायकों) के शरीर का चन्दन धुल गया। स्त्रियों

के कुंकुम का लेप भी धुल गया। तब वह ऐसा दिखने लगा मानो नीले मेघों पर सांध्य-गगन की लाली पुत गयी हो। १०२६

काह तुण्ड नऱुङ्गल वैक्कळि, आह मुण्ड दडङ्गलु नीङ्गलाल्
पाह डऱ्ऩ्द पऩिमॊऴि वाय्च्चियर्, वेह डञ्जॆय् मणियॆऩ्ऩ मिऩ्ऩिऩार् 1027

आकम् उण्टतु–शरीर पर लिप्त; काकतुण्टम्–अगरु लेप मिश्रित; नऱु कलवै कळि–सुगन्धियुक्त चन्दन का लेप; अटङ्कलुम् नीङ्कलाल्–पूरा-पूरा धुल गया, इसलिए; पाकु अटऱ्ऩ्त–चाशनी की सी मधुरता भरी; पऩिमॊऴि वाय्च्चियर्–शीतल बोली बोलनेवाले मुखों की स्त्रियाँ; वेकटम् चॆय् मणि अॆऩ्ऩ–तराशी हुई मणि के समान; मिऩ्ऩिऩार्–चमकीं। १०२७

स्त्रियों के स्नान करने से अगरु, चन्दन आदि लकड़ियों का घिसा लेप सारा का सारा धुल गया। अब वह चाशनी-सी मधुर बोली के मुखवालियाँ नयी तराशी हुयी मणियों के समान (अपनी प्राकृतिक सुन्दरता में) शोभीं। १०२७

पाय रित्तिऱ लाऩ्पशुञ् जाऩ्दिऩाल्, तूय पॊऱ्पुयत् तुप्पॊदि तूक्कुऱि
मीय रित्तु विळक्कवोर् मॆल्लियल्, शेय रिक्करुङ् गण्गळ् शिवऩ्दवे 1028

पाय् अरि तिऱलाऩ्–झपटनेवाले सिंह सदृश बली (अपने नायक) के; तूय पॊऩ् पुयत्तु–पवित्र स्वर्णस्कन्धों पर; पचुमै चाऩ्तिऩाल्–गीले चन्दन-चेप से; पॊति तू कुऱि–लिखित उत्तम चित्रकारी; मी अरित्तु विळक्क–जल गलाकर पोंछ देता है, इससे; ओर् मॆल् इयल्–एक कोमलांगी के; चेय् अरि करु कण्कळ्–लाल डोरेयुत काले नेत्र; चिवऩ्त–लाल हुए। १०२८

एक रमणी ने अपने झपटनेवाले सिंह तुल्य पति के स्वच्छ स्वर्ण-स्कंधों पर गीले चन्दन के चेप से रेखाओं के चित्र बनाये थे। अब वह स्नान करने से धुल गये थे। इसको देखकर उस रमणी को क्रोध आ गया और उसके लाल डोरों से युक्त सुन्दर नेत्र लाल हो गये थे। १०२८

कदम्ब नाळ्विरै कळ्ळविऴ् तादॊडुम्
तदुम्बु पूऩ्दिरैत् तण्बुऩल् शुट्टदाल्
निदम्ब बारत्तोर् नेरिऴै कामत्ताल्
वॆदुम्बु वाळुडल् वॆप्पम् वॆदुप्पवे 1029

कामत्ताल्–काम की गर्मी से; वॆतुम्पुवाळ्–तपनेवाली; नितम्प पारत्तु–नितंब भाराक्रांत; ओर् नेर् इऴै–एक सुन्दर आभरणभूषिता स्त्री के; उटल् वॆप्पम् वॆतुप्प–शरीर की गर्मी के तपाने से; कतम्पम्–सुगन्धचूर्ण; नाळ्विरै–ताज़ा चन्दन लेप; कळ्–फूल का शहद; अविऴ् तातॊटुम्–चूने वाले मकरन्द के साथ; ततुम्पु–भरा हुआ; पू तिरै–मनोरम तरंगों का; तण् पुऩल्–शीतल जल; चुट्टतु–खौल गया। १०२९

एक कामातुरा कामवेदना से तप्त थी। नितम्बभाराक्रांता उसके शरीर की गर्मी से, सुगन्धचूर्ण, नवीन चन्दनलेप, शहद, मकरन्द आदि से मिश्रित और मनोरम लहरों से भरा उस जलाशय का शीतल जल भी खौल उठा। १०२९

तैय लाळैयोर् तारणि तोळिऩाऩ्, नॅय्हॊ ळोदियि ऩीर्मुहन् दॆऱ्ऱिऩाऩ्
शॆय्य तामरैच् चॆल्वियैत् तीम्बुऩल्, कैयि ऩाट्टुङ् गळिऱ्ऱर शॊऩ्ऩवे 1030

चॆय्य तामरै चॆव्वियै–लाल कमल की देवी (श्रीलक्ष्मी) को; **कैयिऩ्**–अपनी सूंड़ों से; **तीम् पुऩल् आट्टुम्**–मधुर जल से स्नान करानेवाले; **कळिऱु अरचु ऍऩ्ऩ**–गजराज के समान; **ओर् तार् अणि तोळिऩाऩ्**–एक मालाधारी स्कन्धोंवाले ने; **तैयलाळै**–अपनी प्रेमिका के; **नॅय् कॊळ् ओतियिऩ्**–घी (कस्तूरी)-लगे केश पर; **नीर् मुकन्तु ऍऱ्ऱिऩाऩ्**–जल उलीचकर उछाला। १०३०

एक मालाधारी नायक ने अपनी प्रेमिका के कस्तूरी लगे केश पर अपने हाथ से जल उछाला। वह दृश्य गजराज के श्रीलक्ष्मी का अभिषेक कराने के दृश्य के समान रहा। १०३०

शुळियु मऩ्ऩडै तोऱ्क नडन्दवर्, ऑळिहॊळ् शीऱडि यॊत्तऩ वामॆऩ
विळिवु तोऩ्ऱ मिदिप्पऩ पोऩ्ऱऩ, नळिऩ मेऱिय नाहिळ वऩ्ऩमे 1031

नळिऩम् एऱिय–कमल पर बैठे हुए; **नाकु इळ अऩ्ऩम्**–बहुत छोटे हंस; **चुळियुम्**–भिन्न; **मॆल् नटै तोऱ्क**–(हमारी) मृदु चाल को हराते हुए; **नटन्तवर्**–सुन्दर चाल चलनेवाली स्त्रियों के; **ऑळि कॊळ् चिऱु अटि**–उज्ज्वल छोटे चरणों; **ऒत्तऩ**–के समान; **आम् ऍऩ**–हैं, यह समझकर; **विळिवु तोऩ्ऱ**–कोप प्रकट करके; **मितिप्पऩ पोऩ्ऱऩ**–रौंदते से हैं। १०३१

हंस (के पोटे) कमलों पर खड़े होकर उनको रौंदने लगे। शायद इस कोप के कारण कि स्त्रियों की चाल के सामने उनकी चाल हार गयी। उनको इस बात का विश्वास था कि ये कमल उन स्त्रियों के छोटे मनोहर चरणों के समान हैं और हम इन पर अपना गुस्सा उतारेंगे। १०३१

ऍरिन्द शिन्दय रॆत्तऩै यॆऩ्ऩॆऩो, अरिन्द कूरुहि रालऴि शान्दुपोय्त्
तॆरिन्द कॊङ्गहळ् शॆव्विय नूल्पुडै, वरिन्द पॊऱ्कल शङ्गळै माऩवे 1032

कॊङ्कैकळ्–स्तन; **अऴि चान्तु पोय्**–गलकर सारा चन्दन लेप धुल गया इसलिए; **अरिन्त कूर् उकिराल्**–कटे नाखूनों से बने (नख-) क्षतों के साथ; **चॆव्विय नूल् पुटै वरिन्त**–श्रेष्ठ सूत्र-लपेटे; **पॊऩ् कलचङ्कळै माऩ तॆरिन्त**–स्वर्णकलशों के समान दिखे; **ऍरिन्त चिन्तैयर्**–(उनको देखकर) कामतप्त मनवाले; **ऍत्तऩै ऍऩ्कॆऩ्**–कितने कहूँ। १०३२

कुछ स्त्रियों के स्तनों पर के चन्दन लेप के धुल जाने से उनपर उनके प्रेमियों के नखदाँत भी दिखाई देने लगे। स्तनों पर का वस्त्र भी इधर-उधर हो गया था। इसलिये वे सूत्र-लपेटे स्वर्णकलश के समान लगे।

उनको देखकर कितनों के मन में विवाह, प्रेम आदि का स्मरण हो आया, वासना जगी और पीड़ा का उबाल हुआ और मन जलने लगे। १०३२

ताऴ निऩ्ऱ तहैमलर्क् कैयिऩाल्
आऴि मऩ्ऩॊरु वऩ्ऩुरैत् ताऩदु
वीऴि यिऩ्कऩि वायॊरु मॆल्लियल्
तोऴि कण्णिऱ् कडैक्कणिऱ् चॊल्लिऩाळ् 1033

आऴि मऩ् ऒरुवऩ्–आज्ञाचक्रधारी राजा एक; **ताऴुनिऩ्ऱ**–लम्बे अपने; **तकै मलर् कैयिऩाल्**–श्रेष्ठ अपने कमलहस्त (के संकेत) से; **उरैत्ताऩ्**–(प्रेम) जताया; **अतु**–उस (के उत्तर) को; **वीऴि इऩ् कऩि वाय्**–"विऴुति" के सुरम्य फल के समान लाल मुखवाली; **ऒरु मॆल्लियल्**–एक कोमलांगी; **तोऴि कण्णिल्**–अपनी सखी की आँखों में; **कटै कण्णिल् चॊल्लिऩाळ्**–अपने 'कटाक्ष' से बताया। १०३३

आज्ञाचक्र चलानेवाले एक राजा ने अपनी आजानु लम्बी कर कमल के संकेत द्वारा अपने मन की कामना जतायी। उसके उत्तर में "विऴुति" के लाल फल के सदृश मुखवाली ने अपनी आँखों के कोर से अपनी सखी की आँखों में अपनी सम्मति जतायी। (पाठांतर एक है जिसके अनुसार राजा ने अपने सखा के द्वारा अपनी कामना प्रकट करायी।)। १०३३

तळ्ळि योडि यलैतडु माऱलाल्, तॆळ्ळु नीरिडै मूऴ्हुशॆऩ् दामरै
पुळ्ळि माऩऩै यार्मुहम् बोल्हिला, दुळ्ळ नाणि यॊळिप्पऩ पोऩ्ऱवे 1034

अलै तळ्ळि ओटि–लहरों से बहाया जाकर; **तटुमाऱलाल्**–लड़खड़ाने से; **तॆळ्ळुम् नीर् इटै**–स्वच्छ जलमध्य; **मूऴ्कु**–मग्न होनेवाले; **चॆन्तामरै**–लाल कमल; **पुळ्ळिमाऩ् अऩैयार्**–चितकबरे हरिणों के समान स्त्रियों के; **मुकम् पोल्किलातु**–मुख की तुलना न कर सकने से; **उळ्ळम् नाणि**–मन में लज्जा का अनुभव करके; **ऒळिप्पऩ पोऩ्ऱऩ**–छिपते से हैं। १०३४

लहरें कमलों को अस्त-व्यस्त कर रही थीं। कमल लड़खड़ाते और लहरों में छिप जाते थे। उसको देखकर लगता है कि कमल यह सोचता है कि हम उन चितकबरे हरिणों के समान रहनेवाली स्त्रियों के मुखों की तुलना नहीं कर सकते। उन्हें लज्जा का अनुभव हुआ और वे लहरों में छिप रहे थे। १०३४

इऩैय वॆय्द विरुम्बुऩ लाडिय, वऩैह रुङ्गऴऩ् मैन्दरु मादरुम्
अऩैय नीर्वऱि दाहवन् देऱिये, पुऩैन ऱुन्दुहिल् पूणॊडुन् दाङ्गिऩार् 1035

इऩैय ऎय्त–इन सब के होते; **इरु पुऩल् आटिय**–बड़े जलाशयों में जिन्होंने स्नान किया; **वऩै करु कऴल् मैन्तरुम्**–सुसज्जित श्रेष्ठ पायलधारी वीर पुरुष; **मातरुम्**–और स्त्रियाँ; **अऩैय नीर् वऱितु आक**–उन जलाशयों को शोभारिक्त करते हुए; **वन्तु एऱि**–तीर पर चढ़कर; **पुऩै नऱु तुकिल्**–पहनने योग्य सुन्दर वस्त्रों को; **पूणॊटुम्**–आभरणों के साथ; **ताङ्किऩार्**–पहन लिया। १०३५

उपर्युक्त प्रकार से जो वीर वलयधारी पुरुष और सुन्दर स्त्रियाँ जलक्रीडा कर रही थीं, वे तीर पर चढ़ आये। तब जलाशय शोभाहीन हो गये। उन्होंने मनमोहक वस्त्र और आभरण पहन लिये। १०३५

मेवि ऩार्पिरिन् दारन्द वीङ्गुनीर्, तावु तण्मदि तऩ्ऩॊडुन् दारहै
ओवु वाऩमु मुण्णिऱै तामरैप्, पूवॆ लाङ्गुडि पोऩदुम् बोऩ्ऱदे 1036

मेविऩार् पिरिन्तार्–(जो वहाँ) आये थे (वे सब) चले गये; अन्त वीङ्कुनीर्–वे जलाशय; तावु तण् मति–मन्द-मन्द चलायमान शीतल चन्द्र और; तारकै–तारकों से; ओवु–रिक्त हुए; वाऩमुम्–आकाश व; उळ् निरै–अपने अन्दर भरे रहे; तामरैप्पू ऍल्लाम्–कमलपुष्प सब; कुटि पोऩतुम्–(जिससे) अलग हो गये उसके; पोऩ्ऱतु–समान रहा। १०३६

उनके चले जाने के बाद वे जलाशय धीरे-धीरे चलनेवाले चन्द्र से और तारकों से हीन आकाश के समान हो गये। वही नहीं; उनमें जो रहे उन कमलों से भी रिक्त हो गये हों, ऐसे लगे। १०३६

माऩि ऩॊक्कियर् मैन्दरॊ डाडिय, आऩ नीर्विळै याड़लै नोक्किऩाऩ्
ताऩु मऩ्ऩदु कादलित् ताऩॆऩ, मीऩ वेलैयै वॆय्यव ऩॆय्दिऩाऩ् 1037

माऩिऩ् नोक्कियर्–मृगलोचनियाँ; मैन्तरॊटु आटिय–वीर पुरुषों के साथ जो नहाती थीं उस; आऩ नीर् विळैयाटलै–उत्तम जल क्रीडा को; नोक्किऩाऩ् वॆय्यवऩ्–(जिसने) देखा वह सूर्य; ताऩुम् अऩ्ऩतु कातलित्ताऩ्–खुद वही (स्नान करना) चाहता था जैसे; मीऩम् वेलैयै–मकरालय को (पश्चिमी सागर); ऍय्तिऩाऩ्–पहुँचा। १०३७

सूर्य उन मृगलोचनियों और सुन्दर पुरुषों की जलक्रीडा देख रहा था तो उसे भी मानो नहाने की इच्छा हो गयी। इसलिए वह भी पश्चिमी सागर में जिसमें मकर भरे थे डूब गया। १०३७

आऱ्ऱ लिऩ्मैयि ऩालळिऩ् देयुमव्, वेऱ्ऱु मऩ्ऩवर् मेल्वरुम् वेन्दर्पोल्
एऱ्ऱु मादर् मुहङ्गळॊ डॆङ्गणुन्, दोऱ्ऱ शन्दिरऩ् मीळवुन् दोऱ्ऱिऩाऩ् 1038

आऱ्ऱल् इऩ्मैयिऩाल्–शक्ति न रहने से; अळिन्तेयुम्–हार गये तो भी; अ वेऱ्ऱु मऩ्ऩर् मेल्–उन शत्रु राजाओं पर; वरुम्–पुनः धावा बोलनेवाले; वेन्तर् पोल्–राजाओं के समान; ऍङ्कणुम्–सर्वत्र; मातर् मुकङ्कळॊटु एऱ्ऱु–स्त्रियों के मुखों से टकराकर; तोऱ्ऱ चन्तिरऩ्–(जिसने) हार मान लिया वह शशांक; मीळवुम् तोऱ्ऱिऩाऩ्–फिर से प्रकट हो आया। १०३८

अब चन्द्र उग आया। कुछ राजा लोग शक्तिहीनता के कारण शत्रु राजाओं के सामने हार जाते हैं। फिर भी वे पुनः उन शत्रु राजाओं पर चढ़ आते हैं। उन राजाओं के समान यह चन्द्र भी जो स्त्रियों के मुखों के सामने टिक न सका और हार गया था, फिर प्रकट हुआ। १०३८

17. उण्डाट्टुप् पडलम् (पान-क्रीडा पटल)

वॆण्णिऱ नऱवुपाय् वॆळ्ळ मॆऩ्ऩवुम्
पण्णिऱञ् जॆऱिन्दिडै परन्द दॆऩ्ऩवुम्
उण्णिऱै काममिक् कॊऴुहिऱ् ऱॆऩ्ऩवुम्
तण्णिऱै नॆडुनिलात् तऴैत्त दॆङ्गुमे 1039

तण् निऱै–शीतलता भरी; नॆट्टु निला–विस्तृत चाँदनी; वॆळ् निऱम्–श्वेतवर्ण; नऱवु पाय् वॆळ्ळम्–सुरा की प्रवाहित धारा; ऎऩ्ऩवुम्–है, ऐसा और; पण्–संगीत; निऱम् चॆऱिन्तु–(रूप-) रंग लेकर; इटै परन्तु ऎऩ्ऩवुम–सर्वत्र फैला हो, ऐसा; उळ् निऱै कामम्–मानव मन के अन्दर व्याप्त कामवासना; मिक्कु ऒऴुकिऱ्ऱु–बढ़कर फैली हो; ऎऩ्ऩवुम्–ऐसा; ऎङ्कुम् तऴैत्ततु–सर्वत्र फैल गयी । १०३९

(इस अध्याय में मद्यपान और प्रेम-लीलाओं का सरस वर्णन है।) शीतल चाँदनी सब जगह खूब फैली। वह श्वेतवर्ण सुरा की प्रवाहशील धारा के समान और रूप-रंग से युक्त होकर फैलनेवाले संगीत के समान और सभी जीवों की आंतरिक कामेच्छा मानो रूप-रंग धारणकर छलक रही हो ऐसा लगी। १०३९

कलन्दवर्क् किऩियदोर् कळ्ळु माय्प्पिरिन्
दुलन्दवर्क् कुयिर्शुडु विडमु मायुडऩ्
पुलन्दवर्क् कुदविशॆय् पुदिय तूदुमाय्
मलर्न्ददु नॆडुनिला मदऩऩ् वेण्डवे 1040

नॆट्टु निला–विस्तृत चाँदनी; कलन्तवर्क्कु–संयोग में रहनेवालों को; इऩियतु ओर् कळ्ळुम् आय्–मीठा सुरा भी बनकर; पिरिन्तु उलन्तवर्क्कु–वियोग के दुखियों को; उयिर् चुट्टु विटमुम् आय्–प्राणतापी विष भी बनके; उटऩ् पुलन्तवर्क्कु–साथ रहकर भी रूठन में रहनेवालों के लिए; उतवि चॆय्–सहायता देनेवाले; पुतिय तूतुम् आय्–नवीन दूत भी बनकर; मतऩऩ् वॆण्ट–मदन की प्रार्थना पर; मलर्न्ततु–फैलती हुई आई । १०४०

वह चाँदनी संयोग में रही प्रेमिका व प्रेमी के लिए मधुर सुरा के समान रही। वियोग में संतप्त रहनेवालों के लिए प्राणतापक विष के समान रही। रूठनेवालों के लिए सहायता करनेवाला नया दूत बनी। वह मानो मन्मथ की प्रार्थना मानकर फैली। (चाँदनी मन्मथ का छत्र मानी जाती है और उसकी विजय की सहायिका है।)। १०४०

आऱॆलाङ् गङ्गये याय वाऴिदाम्, कूऱुपाऱ् कडलये यॊत्त कुऩ्ऱॆलाम्
ईऱिलाऩ् कयिलये येय्न्द वॆऩ्ऩिऩि, वेऱियाम् बुहल्वदु निलविऩ् वीक्कमे 1041

आऱु ऎलाम्–सभी नदियाँ; कङ्कैये आय–गंगा (श्वेतवर्ण) बन गईं; आऴि ताम्–(नीले) सागर; कूऱु–प्रथित; पाल् कटलैये ऒत्त–क्षीरसागर के समान बने;

कुन्ऱु अॅलाम्–पर्वत सब; ईऱु इलान्–अनन्त ईश्वर के; कयिलैये एय्न्त–कैलास सदृश बने; निलविन् वीक्कम्–चाँदनी का विस्तार; याम् इत्ति वेऱु–हम अब और; पुकल्वतु–कहें; ॲन्–क्या । १०४१

चाँदनी के प्रसार से सभी नदियाँ (यमुना जैसी काले रंग के जलवाली नदियाँ भी) गंगाजी के समान (श्वेतवर्ण) हो गयीं। सभी नीले सागर क्षीरसागर सदृश दिखे। सभी पर्वत अनंत ईश्वर शिवजी के कैलासपर्वत से बन गये। फिर चाँदनी की विपुलता के सम्बन्ध में कहने को क्या है? । १०४१

ॲळ्ळरुन् दिशैहळुम् यारुम् यावयुम्
कॉळ्ळैवॅण् णिलविऩाऱ् कोलङ् गोडलाल्
वळ्ळुऱै वयिरवाण् महर केदऩऩ्
वॅळ्ळणि यॊत्तदु वेलै ञालमे 1042

ॲळ् अरु तिचैक्कळुम्–अनिन्द्य दिशाएँ; यारुम्–सभी मनुष्य; यावैयुम्–सभी जीव; कॉळ्ळै वॅण् निलविऩाल्–अत्यधिक चाँदनी के कारण; कोलम् कोटलाल्–अनोखा रूप धर गये, इसलिए; वेलै ञालम्–समुद्र वलयित भूतल; वळ् उऱै–तीक्ष्ण; वयिरम् वाळ्–वज्र-(कठिन) तलवार (के धारक); मकरम् केतऩऩ्–मकरकेतु की; वॅळ् अणि ऑत्ततु–श्वेतवर्दी पहने वीरों की सेना के समान लगते थे। १०४२

अनिन्द्य सारी दिशाएँ, सब मानव, सब मानवेतर जीव और वस्तुएँ इस अत्यधिक चाँदनी के कारण नये सुन्दर (श्वेतवर्ण) रूप धर गयीं। इसलिए समुद्रमेखला भूमि पर के सारे पदार्थ, तीक्ष्ण तलवारधारी मकर-केतन (मन्मथ) की श्वेतवर्ण वर्दी से लैस सेना के व्यूहों के समान लगे। १०४२

तयङ्गुदा रहैपुरै तरळ नीऴ्लुम्
इयङ्गुहार् मिडैन्दका वॅऴिऩिच् चूऴ्लुम्
कयङ्गळ्पोऩ् ऱॊळिर्पळिङ् गडुत्त काऩमुम्
वयङ्गुपूम् पन्दरु महळि रॅय्दिऩार् 1043

मकळिर्–स्त्रियाँ; तयङ्कु तारकै पुरै–भासमान ताराओं से तुल्य; तरळम् नीऴ्लुम्–मोतियों से सज्जित वितानों में; इयङ्कु कार्–संचरणशील मेघ; मिटैन्त का–जहाँ आ जुटे उन उद्यानों में; ॲऴित्ति चूऴ्लुम्–पर्दों से आवृत्त जैसे रहनेवाले स्थानों में; कयङ्कळ् पोऩ्ऱु–जलाशयों के समान; ऑळिर्–लगनेवाले; पळिङ्कु अटुत्त–स्फटिक की चट्टानों के पास के; काऩमुम्–उद्यानों में; वयङ्कु पू पन्तरुम्–सुशोभित पुष्पलताकुंजों में; ॲय्तिऩार्–जा पहुँचे। १०४३

स्त्रियाँ मोतियों से सज्जित कृत्रिम मंडपों, संचरणशील मेघों से भरे उपवनों में मानो पर्दों से आवृत्त गुप्त स्थानों, जलाशय समान दिखनेवाले

स्फटिक-चट्टानों के पास रहनेवाले पुष्पोद्यानों, और पुष्पलता भवनों में जा पहुँचीं। १०४३

पूक्कम ऴोदियर् पोतु पोक्किय
शेक्कयिऩ् विळैशॅरुच् चॅरुक्कुञ् जिऩ्दयर्
आक्किय वमुदॅऩ्ऩ वम्बॊऩ् वळ्ळत्तु
वाक्किय पशुनऱा माऩ्दऩ् मेयिऩार् 1044

पू कमऴ् ओतियर्–पुष्पवासित केशवाली स्त्रियाँ; पोतु पोक्किय चेक्कैयिऩ्–पुष्पबहुल शय्या पर; विळै–होनेवाले; चॅरु–(रति के) उलझन में; चॅरुक्कुम् चिऩ्तैयर्–आनन्द लूटने का मन करके; आक्किय अमुतु अॅऩ्ऩ–नवनिर्मित अमृततुल्य; अम्पॊऩ् वळ्ळत्तु–सुन्दर स्वर्णचषकों में; वाक्किय–ढला हुआ; पचु नऱा–गाढ़ा सुरा; माऩ्तऩ् मेयिऩार्–पीने लगीं। १०४४

पुष्पों की सुगन्धि से सुवासित केशवाली स्त्रियों ने पुष्प-बहुल शय्याओं पर अपने प्रेमियों के साथ रति में उलझकर आनन्द लूटना चाहा। इसलिए उन्होंने स्वर्णचषकों (सुरा पात्रों) में नवीन अमृत के समान ढली हुयी गाढ़ी सुरा पी ली। १०४४

मीऩुडै विशुम्बिऩार् विञ्जै नाट्टवर्, ऊऩुडै युडम्बिऩा रुरुव मॊप्पिलार्
माऩुडै नोक्किऩार् वायिऩ् माऩ्दिऩार्, तेऩुडै मलरिडैत् तेऩ्बॆय् दॆऩ्ऩवे 1045

मीऩ् उटै विचुम्पिऩार्–नक्षत्र भरा आकाशवाले (देवगण); विञ्चै नाट्टवर्–विद्याधर लोकवासी; उरुवम् ऒप्पु इलार्–जिनकी, रूपसौंदर्य में समानता नहीं कर सकते वे; माऩ् उटै नोक्किऩार्–मृग की-सी दृष्टिवाली; ऊऩ् उटै उटम्पिऩार्–मांसल शरीरवाली उन स्त्रियों ने; तेऩ् उटै मलर् इटै–शहद सहित पुष्पों में; तेऩ् पॆय्तत्तु अॆऩ्ऩ–और मधु डाला जाय ऐसा; वायिऩ् माऩ्तिऩार–मुख में (सुरा) ढालकर पी। १०४५

ये स्त्रियाँ अवश्य मानव थीं और मांसपिण्ड थीं। तो भी नक्षत्र भरे आकाशलोक की वासिनियाँ ही क्यों, विधाधर लोक की वासिनियाँ भी इनकी समानता नहीं कर सकती थीं; ये मृगलोचनियाँ इतनी रूपवती थीं। इन्होंने अपने मुख में सुरा ढालकर पी। वह ऐसा लगता था मानो मधु भरे पुष्प पर और भी मधु ढाला जाता था। (स्त्रियों के मुख पुष्प हैं और उनके मुख से जो जल (लार) स्रवता है उसका श्रृंगारशास्त्र में मधु-सा महत्व है। अतः शहद भरे पुष्प के साथ मुख की तुलना की गयी है।)। १०४५

उक्कपाल् पुरैनऱा वुण्ड वुळ्ळमुम्
कैक्कवि ऩॊळिपडच् चिवन्दु काट्टत्तऩ्
मैक्कणुञ् जिवन्दवोर् मडन्दै वाय्वऴिप्
पुक्कदे ऩमुदमाय्प् पुहुन्द पोदिऩ्ऩे 1046

ओर् मटन्तै–एक दयिता के; कै कविऩ् ऑळि पट–हाथ के सुन्दर प्रकाश के पड़ने से; उक्क पाल् पुरै नऱा–(स्फटिक प्याली में) ढली दूध सम सुरा; उण्ट वळ्ळमुम्–उसको धरनेवाली प्याली भी; चिवन्तु काट्ट–लाल बनी दिखीं; वाय् वऴि पुक्क तेऩ्–उसके मुख के अन्दर (जो) सुरा गयी वह; अमुतम् आय्–अमृत बनकर; पुकुन्त पोतिऩ्–(पेट में) गयी तब; तऩ् मै कण्णुम्–उसके अंजनयुक्त नेत्र भी; चिवन्त–लाल बने। १०४६

एक सुन्दरी के हाथ में स्फटिकप्याली थी। उसमें दूध सदृश मद्य भरा था। उस पर उस सुन्दरी के हाथ की छाया पड़ी तो प्याली और मदिरा दोनों लाल बन गयी। इसलिए उसके पेट में जो मद्य अमृत-सा बनकर गया उससे अंजन लगे नेत्र भी लाल हो गये। १०४६

तामसु नाऩमुन् ददैन्द तण्णहिल्, तूममुण् कुऴलिय रुण्ड तूनऱै
ओमवॅङ् गुऴियुहु नॅय्यि नुळ्ळुऱै, कामवॅङ् गऩलिऩैक् कऩऱ्ऱिक् काट्टिऱ्ऱे 1047

तामसुम्–पुष्पहार; नाऩमुम्–(बिलाव-) कस्तूरी; ततैन्त–खूब मिश्रित; तण्–शीतल; अकिल् तूमम् उण्–अगरु के धुएँ से रमाये हुए; कुऴलियर्–केशवालियों से; उण्ट–पीत; तू नऱै–अच्छी सुरा ने; वॅम् ओमम् कुऴि–गरम होमकुण्ड में; उकुम् नॅय्यिऩ्–डाले गये घृत के समान; उळ् उऱै–अन्दर रहे; कामम् वॅय् कऩलित्तै–कामरूपी गरम आग को; कऩऱ्ऱि काट्टिऱ्ऱु–उभाड़कर दिखाया। १०४७

स्त्रियाँ स्वतः रूपवतियाँ थीं। उस पर अलंकार भी खूब किया गया था। उनके केश पर पुष्पहार लगे थे। मुश्कबिलाव से प्राप्त कस्तूरी लगी थी। अगरु का धुआँ भी लगा था। उन्होंने जो ताड़ी पी उसने जैसे होमकुंड में डाला गया घी अग्नि को उभाड़ देता है वैसे ही उनकी आंतरिक कामाग्नि को उभाड़ दिया। १०४७

विडऩ्ऩौक्कु नॅडिय नोक्कि ऩमुदौक्कु मिऩ्शौ लार्दम्
मडऩ्ऩौक्कु मडनु मुण्डो वाणुद लॊरुत्ति काणाच्
चडऩ्ऩौक्कु निऴलैप् पॊऩ्शेय् तण्णऱुन् देऱल् वळ्ळत्
तुडऩ्ऩौक्क वुवन्दु नीयु मुण्णुदि तोऴि यॆऩ्ऱाळ् 1048

वाळ् नुतल् ऑरुत्ति–प्रकाशमय ललाटवाली एक ने; पॊऩ् चॅय्–स्वर्णरचित; तण् नऱु तेऱल् वळ्ळत्तु–शीतल, सुगन्धित मधु के प्याले में; चटऩ् ऑक्कुम् निऴलै काणा–अपने आकार के बराबर एक (प्रतिबिंब-) रूप को देखकर; तोऴि–सखि; नीयुम्–तुम भी; उटऩ् ऑक्क—साथ-साथ; उवन्तु उण्णति–प्रसन्नता के साथ पिओ; ऍऩ्ऱाळ्–कहा; विटऩ् ऑक्कुम्–विष सम; नॅटिय नोक्किऩ्–आयत आँखें; अमुतु ऑक्कुम्–अमृत सम; इऩ् चॉल्लार् तम्–मधुरभाषिणी स्त्रियों की; मटऩ् ऑक्कुम्–नादानी से तुल्य; मटऩुम्–नादानी; उण्टो–है क्या? । १०४८

एक सुन्दर ललाटवाली ने शीतल, सुगन्धित ताड़ी से भरी प्याली में अपना-सा एक रूप देखा। समझी कि वह उसकी सखी है। उसने उसे अपने साथ आकर मद्य पीने का निमन्त्रण दिया। यह भी क्या नादानी

है ? विष तुल्य आयत आँखों, और सुधासम बोलीवाली स्त्रियों की अज्ञता के समान कोई नादानी भी कहीं होती है ? यह विचित्र नादानी है। १०४८

अच्चनुण् मरुङ्गु लाळो रणङ्गन्ना ळळह पन्दि
नच्चुवेऱ् करुङ्गट् चॅव्वाय् नहैमुह नऱवुट् टोन्ऱप्
पिच्चिनी यॅन्शॅय् दायिप् पॅरुनऱ विरुक्क वाळा
ऍच्चिलै नुहर्दि योवॅन् ऱॅयिऱ्ऱरुम् बिलङ्ग नक्काळ् 1049

अच्चम् नुण् मरुङ्कुलाळ्–(टूट जाने का) भय दिखानेवाली पतली कमर की; ओर् अणङ्कु अन्नाळ्–एक देवबाला सदृश स्त्री के; अळकम् पन्ति–केशजाल; नच्चु वेल्–विष लगे भाले के समान; करु कण्–और काले नेत्र; चॅव्वाय्–लाल मुख इनसे युक्त; नकै मुकम्–उज्ज्वल आनन; नऱवु उळ् तोन्ऱ्–सुरा के अन्दर दिखा, तो; पिच्चि–री पगली; नी ॲन् चॅय्ताय्–यह तुमने क्या किया; इ पॅरु नऱवु इरुक्क–इधर (इस सुराही में) इतनी अधिक सुरा के होते; वाळा–व्यर्थ; ऍच्चिल नुकर्तियो–उच्छिष्ठ पिओगी; ॲन्ऱु–कहकर; ॲयिऱु अरुम्पु–दन्तकलियों को; इलङ्क–प्रकट करते हुए; नक्काळ्–हँसी। १०४९

एक अप्सरातुल्य स्त्री थी, जिसकी कमर इतनी पतली थी कि हमेशा उसकी स्थिति में डर बना रहता था। उसने प्याली में देखा तो घना केश, विषसिक्त भाले-सी काली आँखें, लाल अधर— इनके साथ शोभायमान एक मुख दिख रहा है। वह उसके ही मुख का प्रतिबिम्ब था। समझी कि वह मेरी सखी है। उसने कहा— री पगली ! सुरापात्र में बहुत सुरा है ! तो भी तुमने यह क्या किया ? व्यर्थ ही उच्छिष्ठ का पान करने चली ? यह कहकर वह अपनी कलियों सदृश दंतपंक्ति प्रकट करते हुए हँसी। १०४९

पुऱमॅला नहैशॅय् देशप् पौरुवरु मेन्ति वेऱोर्
मऱमुलाङ् गौलैवेऱ् कण्णाण् मणियिन्वळ् ळत्तु वॅळ्ळै
निऱनिलाक् कदिर्हळ् पाय निऱैन्ददु पोन्ऱु तोन्ऱ
नऱविला ददन्नै वायिन् वैत्तन्न णाणुट् कौण्डाळ् 1050

पौरु अरु मेन्ति–अनुपम रूप; वेऱु ओर् मऱम् उलाम्–कुछ अन्य तरह की क्रूरतावाले; कौलै वेल् कण्णाळ्–घातक भाले-सी आँखोंवाली (एक ने); मणियिन् वळ्ळत्तु–स्फटिक प्याली में; वॅळ्ळै निऱ–श्वेत रंग की; निला कतिर्कळ् पाय–चन्द्र की किरणों के लगने से; निऱैन्ततु पोन्ऱु–भर गई सी; तोन्ऱ–दिखी, तो; पुऱम् ॲलाम् नकै चॅय्तु एच–पास वाले सब हँसकर हँसी उड़ाएँ, ऐसा; नऱवु इलाततै–सुरा से खाली, उसको; वायिन् वैत्तनळ्–मुख पर रख लिया; नाण् उळ् कौण्टाळ्–लाज से भर गई। १०५०

एक अनुपम सुन्दरी की बात देखिये। उसकी आँखें भाले के समान घातक तो थीं पर अनोखे ढंग से ये आँखें अपने स्थान पर रहकर भी पुरुषों

के मर्म पर आघात कर सकती थीं। उसके हाथ में स्फटिक की खाली प्याली थी। उस पर श्वेत रंग की चाँदनी पड़ी तो लगा कि प्याली भर गयी। उसने पीने के विचार से उस प्याली को अपने ओठों पर लगाया। यह देखकर पास रहनेवालों को हँसी आ गयी। तब तक उसे भी मालूम हो गया कि वह प्याली खाली है। वह लाज से भर गयी। १०५०

याऴ्क्कुमिऩ् कुऴऱ्कु मिऩ्ब मळित्तऩ विवैया मॅऩ्ऩक्
केट्कुमॅऩ् मऴलैच् चॉल्लोर् किञ्जुहङ् गिडऩ्द वायाळ्
ताट्करुङ् गुवळै तोय्न्द तण्णऱैच् चाडि युट्टऩ्
वाट्कणि ऩिऴलैक् कण्डाळ् वण्डॅऩ वोच्चु हिऩ्ऱाळ् 1051

याऴ्क्कुम्–याऴ् (वीणा का पुराना रूप) को; इऩ् कुऴऱ्कुम्–मधुर बाँसुरी को; इऩ्पम् अळित्तत्त–मिठास देनेवाले; इवै आम् ॲऩ्ऩ–ये ही हैं, ऐसा कहने योग्य; केट्कुम्–स्वरित होनेवाले; मॅल् मऴलै चॉल्–कोमल तोतले वचनवाली; ओर् किञ्चुकम् किटन्त वायाळ्–किंशुक सम लाल मुख की एक ने; ताळ् करु कुवळै तोय्न्त–जिसमें नाल के साथ नीलोत्पल डाले गये थे उस; तण् नऱै चाटियुळ्–शीतल सुगन्धयुक्त सुराही में; तऩ् वाळ् कण्णिऩ्–अपनी तलवार-सी आँखों का; निऴलै कण्टाळ्–प्रतिबिंब देखा; वण्टु ॲऩ्ऩ–भौंरे समझकर; ओच्चुकिऩ्ऱाळ्–उड़ाती है। १०५१

एक स्त्री ने ताड़ी की सुराही के अन्दर देखा। वह बड़ी ही मीठी और तुतलाती हुयी बोलनेवाली थी। उसका स्वर इतना मधुर था कि वीणा और बाँसुरी की मधुरता इसी की देन समझी जा सकती थी। उसका मुख किंशुकपुष्प के समान लाल था। ताड़ी की सुराही में नीलोत्पल नालों के साथ डाल रखे गये थे। जब उसने उस सुराही के अन्दर देखा तो उसकी आँखों का प्रतिबिम्ब दिखाई दिया। उसने समझ लिया कि वे भ्रमर हैं। उनको उड़ाने लगी। १०५१

कळित्तहण् मदर्प्प वाङ्गोर् कऩङ्गुऴै कळ्ळि ऩुळ्ळे
वॅळिप्पडु हिऩ्ऱ काट्चि वॅण्मदि निऴलै नोक्कि
अळित्तऩॅ ऩबयम् वाऩत् तरविऩै यञ्जि नीवन्
दॉळित्तऩै नडुङ्ग लॅऩ्ऱाङ् गिऩियऩ वुणर्त्तु हिऩ्ऱाळ् 1052

आङ्कु–वहाँ; ओर् कऩम् कुऴै–स्वर्णकुण्डलधारिणी एक; कळित्त कण्–मोदपूर्ण आँखों को; मतर्प्प–मस्ती दिलाते हुए; कळ्ळिऩ् उळ्ळे–सुरा के अन्दर; वॅळिप्पटुकिऩ्ऱ काट्चि–दृश्यमान; वॅण् मति निऴलै–श्वेतचन्द्र के प्रतिबिंब को; नोक्कि–देखकर; नी वाऩत्तु अरविऩै अञ्चि–तुम आकाश के सर्प (राहु) से डरकर; वन्तु ऑळित्तऩै–इधर आकर छिपे हुए हो; अपयम् अळित्तऩॅऩ्–अभय दिलाया; नटुङ्कल्–मत काँपो; ॲऩ्ऱु आङ्कु–ऐसे और अन्य; इऩियऩ–मधुर (धीरज के) वचनों से; उणर्त्तुकिऩ्ऱाळ्–समझाती है। १०५२

एक स्वर्णकुण्डलधारिणी ने ताड़ी के पात्र के अन्दर झाँका। उसकी मत्त आँखें और भी मस्त हुयीं। क्योंकि उसके अन्दर चन्द्र (का प्रतिबिम्ब) दिखाई दिया। वह उससे कहने लगी कि तुम शायद स्वर्ग के राहु (सर्प) से डरकर इधर आकर छिपे बैठे हो! मैंने तुमको अभयदान किया। मत डरो। (यद्यपि तुमसे स्त्रियों को, विशेषकर विरहिणियों को दुख होता है, तो भी शरण में आये हो, तुम्हारी हानि नहीं कराऊँगी।) ऐसी बातें कहकर उसने उसे ढाढस बँधाया। १०५२

कण्मणि वळ्ळत् तुळ्ळे कळिक्कुन्दऩ् मुहत्तै नोक्कि
विण्मदि मदुवि ऩाशै वीऴ्न्ददॅऩ् ऱॉरुत्ति युऩ्ऩि
उण्महिऴ् तुणैव ऩोडु मूडुनाळ् वॅम्मै नीङ्गित्
तण्मदि यादि याहिऱ् ऱरुवॅऩिऩ् नऱवै यॅऩ्ऱाळ् 1053

ऑरुत्ति–एक बाला ने; कळ् मणि वळ्ळत्तु उळ्ळे–सुरा के स्फटिक प्याले के अन्दर; कळिक्कुम्–मोदभरे; तऩ् मुकत्तै नोक्कि–अपने मुख को देखकर; विण् मति–आकाश का चन्द्र; मतुविऩ् आचै–सुरा की कामना से; वीऴ्न्ततु–गिर गया; ॲऩ्ऱु उऩ्ऩि–यह समझकर; उळ् मकिऴ् तुणैवऩोटुम्–मेरे मन के प्यारे प्रेमी के साथ; ऊटुम् नाळ्–रूठने के दिन में; वॅम्मै नीङ्कि–अपनी गर्मी त्यागकर; तण् मति आदि आकिल–शीतल हिमाँशु बनोगे तो; इ नऱवै तरुवॅऩ्–यह सुरा दूँगी; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। १०५३

एक बाला ने सुरा के स्फटिकप्याले में अपना मस्त मुख देखा। समझा कि आकाश का चन्द्र इसमें गिर गया है। शायद वह सुरापान के मोह से इस तरह गिरा है। तब वह शर्त लगाकर कहती है कि अगर तुम, जब मैं अपने प्यारे पति से रूठूँगी, तब गरम होकर ताप देना छोड़कर सचमुच हिमांशु रहने का वादा करोगे तो मैं तुमको पान करने दूँगी। १०५३

ॲळ्ळॉत्त कॉल मूक्कि ऩॅन्दिऴै यॉरुत्ति पूङ्गै
तळ्ळत्तण् णऱवै यॅल्लान् दविशिडै युहत्तुन् देऱाळ्
उळ्ळत्तिऩ् मयक्कन् दऩ्ऩा लुप्पुऱत् तुण्डॅऩ् ऱुऩ्ऩि
वळ्ळत्तै मऱित्तु वाङ्गि मणिनिऱ विदऴिऩ् वैत्ताळ् 1054

ॲळ् ऑत्त–तिल के फूल सदृश; कोलम् मूक्किऩ्–सुन्दर नासिकावाली; एऩ्तु इऴै–धृत आभरणोंवाली; ऑरुत्ति–एक नारी ने; पू कै तळ्ळ–फूल से हाथ के कम्पन से; तण् नऱवै ॲल्लाम्–शीतल सुरा को; तविचु इटै उकुत्तुम्–आसन पर गिरा दिया, तब; उळ्ळत्तिल्–मन में; मयक्कम् तऩ्ऩाल्–भ्रांति से; तेऱाळ्–न जानकर; उ पुऱत्तु उण्टु–(प्याले के) उस तरफ़ होगा; ॲऩ्ऱु उऩ्ऩि–यह समझकर; वळ्ळत्तै–प्याले को; मऱित्तु वाङ्कि–उलट लेकर; मणि निऱम् इतऴिऩ्–(लाल) मणि सदृश लबों पर; वैत्ताळ्–लगाया। १०५४

तिल के फूल के समान सुन्दर नासिकावाली, आभरणभूषिता एक

स्त्री के हाथ नशे के कारण उत्पन्न कंपन से प्याले की सारी सुरा आसन पर ढलक गयी। नशे के आलम में उसने सोच लिया कि उसने गलत तरीके से प्याला पकड़ा है। इसलिए उसने प्याले को उलटाकर अपने ओठों पर रख लिया। १०५४

वाऩ्ऱऩैप् पिरिद लाऱ्ऱा वण्डिऩम् वच्चै माक्कळ्
एऩ्ऱमा निदियम् वेट्ट विरवल रॅऩ्ऩ वाऱ्प्पत्
तेऩ्ऱरु कमलच् चॅव्वाय् तिऱन्दुते ऩुहर नाणि
ऊऩ्ऱिय कळुनीर् नाळत् ताळिऩा लॉरुत्ति युण्डाळ् 1055

वाऩ् तऩै–आकाश में मँडराना; पिरितल् आऱ्ऱा–त्याग न सकने वाले; वण्टु इऩम्–भ्रमरकुल; वच्चै माक्कळ् एऩ्ऱ–कृपण लोगों से रक्षित; मा नितियम् वेट्ट–बड़े धन को पाना चाहनेवाले; इरवलर् अॅऩ्ऩ–याचकों के समान; आऱ्प्प–शब्द कर रहे थे, तब; ऑरुत्ति–एक; तेऩ् तरु कमलम्–शहद सहित कमल के सदृश; चॅव्वाय्–लाल मुख; तिऱन्तु–खोलकर; तेऩ् नुकर नाणि–सुरा पीने से संकोच करके; ऊऩ्ऱिय–(पात्र में) डाले गये; कळुनीर् नाळम् ताळिऩाल्–कुवलय के नाल की नली से; उण्टाळ्–चूसा। १०५५

सुरा के पात्र के ऊपर भ्रमर मँडरा रहे थे और वहाँ से हटते ही नहीं थे मानो वे मँडराना नहीं छोड़ सकते हों। वह याचकों का कृपण लोगों से धन पाने की इच्छा में उनके पास घूमते रहने के समान था। एक स्त्री को इन भ्रमरों को न हटते देखकर पात्र से प्याले में ढालने से संकोच हो गया। यह डर रहा कि भ्रमर प्याले में गिरकर मुख के अन्दर भी चले जायँगे। इसलिए उसने कुवलय के नाल की नली द्वारा सीधे सुरापात्र से ही चूसकर पी ली। १०५५

पुळ्ळुऱै कमल वाविप् पॉरुहयल् वॅरुवि योड
वळ्ळुऱै कऴित्त वाळ्बोल् वशियुऱ वयङ्गु कण्णाळ्
कळ्ळुऱै मलर्मॅऩ् कून्दऱ् कळियिळ मञ्ञै यऩ्ऩाळ्
उळ्ळुऱै यऩ्ब ऩुणणा ऴॅऩ्ऩऱ वुण्ण लॅण्णाळ् 1056

पुळ् उऱै–पक्षियों से भरे; कमलम् वावि–कमलवापी की; पॉरु कयल्–संघर्षशील मछलियाँ; वॅरुवि ओट–डरकर भाग जायँ, ऐसी; वळ् उऱै कऴित्त–दृढ़ म्यान से निकाली गई; वाळ् पोल्–तलवार के समान; वचि उऱ वयङ्कु–तीक्ष्ण रहनेवाली; कण्णाळ्–आँखों की; कळ् उऱै मलर् मॅऩ् कून्तल्–मधुयुक्त पुष्पालंकृत केशवाली; कळि इळ मञ्ञै अऩ्ऩाळ्–मत्त बालमयूर-सी छटावाली; उळ् उऱै अऩ्पऩ्–मन में रहनेवाले प्रेमी पति; उण्णाऩ् अॅऩ्ऩ–सुरापान नहीं करता, इससे; नऱवु उण्णल् अॅण्णाळ्–सुरा पान करने का मन नहीं करती। १०५६

एक स्त्री थी, जिसकी आभा मोर की छटा के समान थी। उसकी आँखें, कमलसर की संघर्षशील मछलियों से भी अधिक सुन्दर और चंचल

थीं। मछलियाँ लाज से डरकर भाग जायँ इतनी सुन्दर थीं। साथ-साथ वे म्यान से बाहर निकली तलवार के समान तीक्ष्ण थीं। उसके केश पर पुष्प सज्जित थे और उन पुष्पों पर भ्रमर मँडरा रहे थे। वह स्त्री अपने प्यारे पति की सहधर्मचारिणी थी। उसने सुरापान नहीं किया क्योंकि उसने सोचा कि मेरे पति नहीं पीते, इसलिए मैं भी नहीं पिऊँगी। पति तो उसके मन में बैठा हुआ था। १०५६

अऴिहिऩ्ऱ वऱिवि ऩालो पेदैमै यालो वाऱ्ऱुच्
चुऴियॊऩ्ऱि निऩ्ऱ दॆऩ्ऩु मुन्दिया ळॊरुत्ति शॆन्देऩ्
पॊऴिहिऩ्ऱ पूविऩ् वेय्न्द पन्दरैप् पुरैत्तुक् कीऴ्वन्
दिऴिहिऩ्ऱ कॊऴुनि लावै नऱवॆऩ्ऩ वळ्ळत् तेऱ्ऱाळ् 1057

आऱु चुऴि–नदी की भँवर; ऑऩ्ऱि निऩ्ऱतु–(इसके साथ) लगी रहती है; ऍऩ्ऩुम्–ऐसी; उऩ्तियाळ् ऑरुत्ति–नाभीवाली एक ने; अऴिकिऩ्ऱ् अऱिवित्तालो–नष्ट चेतना के कारण; पेतैमैयालो–(या) अज्ञता के कारण; चॅन्तेऩ् पॊऴिकिऩ्ऱ–अच्छा शहद ढलकनेवाले; पूविऩ् वेय्न्त–पुष्पों से भरे; पन्तरै–लतावितान को; पुरैत्तु–चीरते हुए; कीऴ् वन्तु इऴिकिऩ्ऱ–नीचे आ पड़नेवाली; कॊऴु निलावै–घनी चाँदनी को; नऱवु ऍऩ्ऩ–सुरा समझकर; वळ्ळत्तु एऱ्ऱाळ्–प्याले में भरा। १०५७

एक स्त्री ने, जिसकी नाभि नदी की भँवर आकर लगी हो ऐसी थी, एक विचित्र काम किया। उसने नशे के आलम में किया या मूर्खतावश पता नहीं। लता कुंज में, जहाँ मधुस्रावी पुष्प सर्वत्र भरे थे, जाकर उसने अपने प्याले में, वितान के छिद्रों से आनेवाली चाँदनी को सुरा मानकर ग्रहण किया। (पकड़ने का प्रयास किया)। १०५७

मिऩ्ऩॆऩ्ऩ नुडङ्गु हिऩ्ऱ मरुङ्गुला ळॊरुत्ति वॆळ्ळै
इऩ्ऩमु दऩैय तीञ्जॊ लिडैतडु माऱि येय्न्द
वऩ्ऩमे कलैयै नीक्कि मलर्त्तॊडै यल्हुल् शूऴ्न्दाळ्
पॊऩ्ऩरि मालै कॊण्डु पुरिहुऴल् पुऩैय लुऱ्ऱाळ् 1058

मिऩ् ऍऩ्ऩ–बिजली सी; नुटङ्कुकिऩ्ऱ–लचकनेवाली; मरुङ्कुलाळ् ऑरुत्ति–कमरवाली एक; वॆळ्ळै–श्वेतवर्ण; इऩ् अमुतु अऩैय–मधुर सुधा सम; तीम् चॊल्–मधुर वचन; इटै तटुमाऱि–बोलने में लड़खड़ाती थी; अल्कुल् एय्न्त वऩ्ऩम्–नितम्बभूषी अनेक रंगों की; मेकलैयै नीक्कि–मेखला को दूरकर; मलर् तॊटै–पुष्पमाला; चूऴ्न्ताळ्–लपेट ली; पॊऩ्ऩरि मालै–स्वर्ण (रचित) पुष्पों की (कण्ठ की) माला को; कॊण्टु–लेकर; पुरि कुऴल्–जूड़े को; पुऩैयल् उऱ्ऱाळ्–अलंकृत किया। १०५८

एक बिजली-सी क्षीण-कटि वाली नशे की स्थिति में क्या-क्या करती है। उसके दुराव-रहित और अमृत-सम मधुर वचन अस्पष्ट और खण्डित शब्दों का जल्प हो गये। नितम्बों पर से उसने अपनी मेखला हटा ली और

पुष्पों की माला लपेट ली। गले के, स्वर्णपुष्पों के हार को उतारकर उससे जूड़ा अलंकृत किया। १०५८

कूऱ्ऱुऱऴ्   नयऩङ्गळ्   शिवप्पक्   कूऩुदल्
ऐऱ्ऱिवा   ळॅयिऱुह   ळदुक्कि   यिऩ्ऱळिर्
माऱ्ऱरुङ्   गरदल   मऱिक्कु   मादॊरु
शीऱ्ऱमा   मविनयऩ्   तॆरिक्किऩ्   ऱारिऩ्ऩे 1059

ऒरु मातु–एक स्त्री; चीऱ्ऱम् आम्–क्रोध का; अविनयम् तॆरिक्किऩ्ऱारिऩ्–अभिनय करनेवालों के समान; कूऱ्ऱु उऱऴ्–मृत्यु सरीखी; नयऩङ्कळ् चिवप्प–आँखों को लाल करके; कूऩ् नुतल एऱ्ऱि–वक्र भौंहों को भाल पर चढ़ाकर; वाळ् ऍयिऱुकळ् अतुक्कि–उज्ज्वल दाँत पीसकर; इऩ् तळिर् माऱ्ऱु–मनोहर पल्लव विजयी; अरु करतलम्–श्रेष्ठ हथेलियों से; मऱिक्कुम्–निवारण (का अभिनय) करती है। १०५९

एक स्त्री नशे में अकारण क्रोध से भर गयी। उसकी मृत्यु-सी आँखें लाल हो गयीं। टेढ़ी भौंहें भाल पर चढ़ गयीं। उसने सुन्दर दाँत पीसे। अपने पल्लव विजयी हाथों को किसी अप्रकट वस्तु के निवारण की मुद्रा में हिलाया। १०५९

तुडित्तवाऩ्   ऱुवरिदऴ्त्   तॊण्डै   तूनिलाक्
कडित्तवा   लॅयिऱुह   ळदुक्किक्   कण्गळाम्
वडित्तवॆङ्   गुरुदिवेल्   विऴिक्कु   मादर्मॆय्
पॊडित्तवेर्   पुऱत्तुहु   नऱवम्   बोऩ्ऱदे 1060

तुटित्त–फटक रहे; वाऩ् तुवर् इतऴ्–अधिक लाल अधररूपी; तॊण्टै–बिंबफल को; तू निला कटित्त–शुद्ध (सफेद) चाँदनी को हरानेवाले; वाल् ऍयिऱुकळ्–उज्ज्वल दाँतों से; अतुक्कि–काटते हुए; कण्कळ् आम्–आँखें रूपी; वटित्त वॆम् कुरुति वेल्–पैनाये गये रक्तसिक्त भाले से; विऴिक्कुम् मातर्–दृष्टि चलानेवाली एक की; मॆय् पॊटित्त वेर्–देह पर निकले स्वेदकण; पुऱत्तु उकु नऱवम् पोऩ्ऱतु–बाहर टपकनेवाले मद्य के समान थे। १०६०

और एक ने फड़कते लाल अधररूपी बिम्बफल को उज्ज्वल चाँदनी-विजयी दाँतों से दबाया। दृष्टिरूपी तीक्ष्ण और क्रूर भाला फेंकती-सी भयंकर रूप से घूरने लगी। उसके शरीर पर स्वेदकण जो प्रकट हुये वे मानो बाहर ढलकनेवाली सुरा की बूँदों के समान थे। १०६०

कऩित्तिर   ळिदऴ्पॊदि   शॆम्मै   कण्बुह
निऩैप्पदॊऩ्   ऱुरैप्पदॊऩ्   ऱामॊर्   नेरिऴै
तऩित्तड   मरैमलर्   मुहत्तुच   चाबमुम्
कुऩित्ददु   पऩित्तदु   कुऴवित्   तिङ्गळे 1061

ओर् नेर् इऴै–उत्तम आभरणधारिणी एक; कऩि तिरळ्-इतऴ्–बिंबफल सम व पुष्ट अरधों की; पॊति चॆम्मै–भरी लालिमा के; कण् पुक–आँखों में प्रवेश कर जाने

से; तत्ति तटम् मरै मलर् मुकत्तु–अनुपम, विशाल कमल-मुख का; चापमुम् कुत्तित्ततु–धनुष भी झुका; कुळवि तिङ्कळ् पत्तित्ततु–बालचन्द्र (भाल) पसीने से भरा; नित्तैप्पतु ऑन्ऱु–सोचती एक; उरैप्पतु ऑन्ऱु आम्–बोलती (दूसरा) एक। १०६१

एक उत्तम आभरणों की धारिणी की, बिम्बफलाधरों की घनी लालिमा उसकी आँखों में पहुँच गयी। उसके अप्रतिम और बड़े कमल के समान जो था उस मुख का चाप भी झुका। यानी भौंहें टेढ़ी हो गयीं। बालचन्द्र भी जलसीकरयुक्त हो गया; यानी उसके भाल पर स्वेद झलक आया। वह सोचती एक और कहती एक—बकने लगी। १०६१

इलविदऴ् तुवर्विड वॅयिऱु तेऩुह
मुलैमिशैक् कच्चॊड्डु कलैयु मूट्टऱ
अलैहुऴल् शरिदर वशदि याडलाल्
कलविशॅय् कॊऴुनरुङ् कळ्ळु मॊत्तवे 1062

इलवु इतऴ्–सेमर के फूलों के समान अधर; तुवर् विट–लाल रंग छोड़ गये; ऍयिऱु तेऩ् उक–दाँतों ने मधु स्रवा; मुलै मिचै कच्चॊट्टु–स्तनों पर बँधे हुए अँगिये के साथ; कलैयुम्–वस्त्र भी; मूट्टु अऱ—बन्धन-मुक्त हुए; अलै कुऴल्–बिखरा केश; कुलैय—अस्त-व्यस्त हुआ; अचति आटलाल्–थकावट हुई, इसलिए; कलवि चॅय् कॊऴुनरुम्–सम्भोग करनेवाला पति और; कळ्ळुम्–सुरा; ऑत्त–एकसम हुए। १०६२

शराबी स्त्रियों के लिए सम्भोग करनेवाले पति और मद्य दोनों समान रूप हो जाते हैं, क्योंकि पतिप्रसंग पर सेमर से लाल अधर लालिमा छोड़ जाते हैं; दाँतों से लार (रूपी) शहद रसता है; स्तनों पर से अँगिया और शरीर पर से वस्त्र बन्धन खोलकर हटा दिये जाते हैं। शरीर थक जाता है। वे ही कार्य मद्यपान से भी सम्पादित हो जाते हैं। १०६२

कऩैहऴऱ् कामऩाऱ् कलक्क मुऱ्ऱदै
अऩहऩुक् कऱिवियॅऩ् ऱऱियप् पोक्कुमोर्
इऩमणिक् कलैयिऩा डोऴि नीयुमॆऩ्
मऩमॆऩत् ताऴ्दियो वरुदि योवॆऩ्ऱाळ् 1063

कऩै कऴल्–बजनेवाली पायलधारी; कामऩाल्–कामदेव से; कलक्कम् उऱ्ऱतै–अशान्त रहना; अऩकऩुक्कु–अनघ (मेरे पति) को; अऱिवि–समझाओ; ऍऩ्ऱु–कहकर; अऱिय–समझाने के लिए; पोक्कुम्–दूती को भेजनेवाली; ओर् इऩम् मणि कलैयिऩाळ्–श्रेष्ठ विभिन्न रत्नों की मेखलाधारिणी एक ने; तोऴि–सखि; नीयुम्–तुम भी; ऍऩ् मऩम् ऍऩ–मेरे मन के जैसे; ताऴ्तियो–ठहर जाओगी; वरुतियो–(या) आ जाओगी; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। १०६३

नादयुक्त पायलधारी कामदेव के कारण एक (कामातुरा) स्त्री को बहुत बेचैनी हुई थी। श्रेष्ठ रत्नों की बनी मेखलाधारिणी उसने वह बात

अपने प्रेमी से कहने के लिए एक दूती को भेजा। भेजते समय उसने सखी से संशय भरा प्रश्न किया कि सखि! तुम वहाँ मेरे मन के समान, जो उनके पास ही ठहर गया है, ठहर जाओगी या जल्दी आ जाओगी ?। १०६३

माऩमर्   नोक्कियॉर्   मङ्गै   वेऩ्दऩ्बाल्
आऩतऩ्   पाङ्गिय   रायि   ऩारॅलाम्
पोऩवर्   पोऩवर्   तॉडरप्   पोक्किऩाळ्
ताऩुमङ्   गवर्पिऩ्ऩे   तमिय   ळेहिऩाळ् 1064

माऩ् अमर् नोक्कि ओर् मङ्कै–हरिणी की-सी आँखवाली एक स्त्री ने; वेऩ्तऩ् पाल्–नायक के पास; आऩ–अनुकूल; तऩ् पाङ्कियर् आयिऩार् ऍल्लाम्–अपनी सभी सखियों को; पोऩवर् पोऩवर् तॉटर–एक के पीछे एक जाये, ऐसा; पोक्किऩाळ्–भेजा; अङ्कु अवर् पिऩ्ऩे–उनके पीछे; ताऩुम् तमियळ् एकिऩाळ्–वह अकेली चली। १०६४

मृगनैनी एक की बेचैनी की स्थिति देखिये। उसने अपने नायक के पास एक-एक करके सभी सखियों को भेजा। फिर वह खुद उठकर उसके पास अकेली चली गई। १०६४

मऩ्ऱऩा   ऱॉरुशिऱै   यिरुन्दोर्   वाणुदल्
तऩ्ऱुणैक्   किळ्ळैयैत्   तऴीयियॅऩ्   ऩावियै
इऩ्ऱुपोय्क्   कॉणर्हिलै   यॅऩ्शॅय्   वायॅऩक्
कऩ्ऱिलो   डॉत्तियॅऩ्   ऱऴुदु   शीऱिऩाळ् 1065

ओर् वाळ् नुतल्–एक उज्ज्वल ललाटवाली; मऩ्ऱल् नाऱु–जहाँ सुगन्ध फूट रही थी; ऑरु चिऱै इरुन्तु–एक ऐसे स्थान में रहकर; तऩ् तुणै किळ्ळैयै–अपने साथी शुक को; तऴीइ–गले से लगाकर; इऩ्ऱु पोय्–आज जाकर; ऍऩ् आवियै–मेरे प्राण (-सम पति) को; कॉणर्किलै–नहीं लाये; ऍऩ् चॅय्वाय्–फिर क्या करोगे; ऍऩक्कु–मेरे लिए; अऩ्ऱिलोट्टु ऑत्ति–क्रौंच पक्षी के बराबर हो गये; ऍऩ्ऱु–कहकर; अऴुतु–रोती हुई; चीऱिऩाळ्–गुस्सा किया। १०६५

उज्ज्वल ललाटवाली एक प्रेमिका ने जो पी चुकी थी, सुगन्धपूर्ण एक स्थान पर रहकर अपने साथी शुक को गले लगाती हुई उलाहना दी कि तुम जाकर मेरे प्राणों को (प्यारे को) नहीं बुला लाये। फिर तुम मेरे लिए क्या करनेवाले हो। अब तुम शुक नहीं रहे— क्रौंच पक्षी बन गये हो। क्रौंच पक्षी ही अपने स्वर से वियोगिनियों के दिल को दुखाता है। तुम अब उनकी अनुपस्थिति में उनका नाम ले लेकर, मुझे पीड़ा पहुँचा रहे हो! (साधारण रूप से शुक का नायक नाम सम्बोधन नायिकाओं को आनन्द देता है। कभी-कभी वह दुखदायी भी होता है, जैसे इस नायिका को होता है।)। १०६५

विरैशॆय्पूञ् जेक्कयान् दप्प मीमिशैक्
करैशॆया वाशयङ् गडलु ळाळोरु
पिरैशमॆन् कुदलैयाळ् कॊऴुनन् पेरॆलाम्
उरैशॆयुङ् गिळ्ळैयै युवन्दु पुल्लिऩाळ् 1066

करै चॆया आचै–अपार प्रेम के; कटल्–सागर में; विरै चॆय्–सुगन्धि देनेवाली; चेक्कै आम् तॆप्पम् मी मिचै–शय्या रूपी बेड़े पर; उळाळ्–रहनेवाली; ओरु पिरैचम् मॆन् कुतलैयाळ्–शहद सम मीठी तोतली वाली एक ने; कॊऴुनन् पेर् ॲलाम्–पति के नाम सब; उरै चॆयुम् किळ्ळैये–कहनेवाले शुक को; उवन्तु पुल्लिऩाळ्–अनुराग के साथ गले लगा लिया। १०६६

अपार कामना के सागर में सुवासित पुष्पशय्या को बेड़ा बनाकर एक मधु-सम मधुरबयनी तैर रही थी। उसके शुक ने उसके नायक के सारे नाम दुहराकर सम्बोधन किया तो उसे बड़ा आनन्द हुआ और उसने चाव के साथ उस शुक को गले लगाया। (पिछले पद में कभी-कभी होनेवाली शुक-सम्बन्धी बात कही गई थी। इसमें सामान्य बात कही गई है।)। १०६६

वळैपयिन् मुन्गयोर् मयिल ऩाट्कुत्तन्
इळैयवळ् पॆयरिऩैक् कॊऴुन ऩीदलुम्
मुळैयॆयि ऱिलङ्गिड मुऱुवल् वन्ददु
कळकळ वुदिर्न्दऩ कयऱ्क णालिये 1067

वळै पयिल् मुन् कै–कंकणों से अलंकृत कलाईवाली; ओर् मयिल् अऩ्ऩाट्कु–एक मयूराभा को; कॊऴुनन्–पति के; तन् इळैयवळ्–अपनी छोटी सौत के; पयरिऩै नाम को; ईतलुम्–लेने पर; मुळै ॲयिऱु इलङ्किट–अंकुर सदृश दाँतों को प्रकट करते हुए; मुऱुवल् वन्ततु–(क्रोध की) हँसी आई; कयल् कण्–मछली-सी आँखों से; आलि–अश्रु; कळ कळ—टप-टप; उतिर्न्तऩ–गिरे। १०६७

कंकणभूषित हाथोंवाली एक मयूराभा नायिका के पति ने उसकी छोटी सौत का नाम ले लिया तो बीजांकुर के समान दाँत प्रकट करते हुए हँसी और उसकी मछली-सी आँखों से अश्रु टप-टप गिरने लगे। (हँसी क्रोध की हँसी थी। उसे एक साथ क्रोध भी आया और दुख भी हुआ।)। १०६७

शॆऱ्ऱमुऱ् ऱेहवोर् शॆम्मल् वॆम्मयाल्
पऱ्ऱलु मल्हुलिऱ् परन्द मेहलै
अऱ्ऱुहु मुत्तिऩ्मुऩ् बवऩि शेर्न्दऩ
पॊऱ्ऱॊडि यॊरुत्तिकण् पॊऴिन्द मुत्तमे 1068

पॊन् तॊटि ऒरुत्ति–स्वर्णकंकणधारिणी एक; चॆऱ्ऱम् उऱ्ऱु एक–रूठकर जाने लगी तब; ओर् चॆम्मल्–श्रेष्ठ (उसके) नायक के; वॆम्मैयाल्–(मनाने की) इच्छा

से; अल्कुलिल् परन्त–नितम्बों पर ढीली पड़ी रही; मेकलै पऱ्ऱलुम्–मेखला को पकड़ने पर; अऱ्ऱु उकु–टूटकर गिरनेवाले; मुत्तिऩ् मुऩ्पु–मोतियों के पहले; कण् पोऴिन्त मुत्तम्–आँखों से गिरे (अश्रु-) मोती; अवऩि चेर्न्तत–भूमि पर जा पड़े। १०६८

स्वर्णकंकणालंकृत एक नायिका रूठकर अपने पति से अलग जाने लगी। नायक ने उसे मनाने की इच्छा से उसकी, नितम्बों पर की मेखला को पकड़ लिया तो वह कट गई और उसके मोती गिरने लगे। वे मोती भूमि पर जा लगें, इसके पहले ही उसकी आँखों से निकले मोती (अश्रुकण) भूमि पर गिर गये। (गुस्सा भी नहीं गया और दुख भी हो गया)। १०६८

तोडविऴ् कून्दला ळोरुत्ति तोऩ्ऱलो, डूडुहें ऩोवुयि रुरुहु नोय्हेंडक्
कूडुहें ऩोववऩ् गुणङ्गळ् वीणयिल्, पाडुहें ऩोवॆंऩप् पलवुम् बऩ्ऩिऩाळ् 1069

तोटु अविऴ् कून्तलाळ्–विकसित दलवाले पुष्पों से अलंकृत केशवाली; ओरुत्ति–एक स्त्री; तोऩ्ऱलोटु–अपने नायक (राजा) के साथ; उटुकॆंऩ् ओ–रूठूँगी; उयिर् उरुकुम् नोय् कट–प्राणद्रावक रोग दूर करते हुए; कूटकॆंऩ् ओ–मिलूँगी; अवऩ् कुणङ्कळ्–उनके गुणों को; वीणैयिल् पाटुकॆंऩ् ओ–वीणा पर गाऊँगी; ॲऩ–ऐसा; पलवुम्–अनेक प्रकार से; पऩ्ऩिऩाळ्–सोचा। १०६९

एक स्त्री, जिसके केश के फूल पूर्णरूप से विकसित थे, मन में तर्क-वितर्क करने लगी। मेरे पति आ जायँगे तो उनसे रूठी बैठी रहूँ? या अपने प्राणों को पिघलानेवाला जो वियोग-रोग है उसको दूर करते हुए उनसे मिल जाऊँ? या वीणा लेकर उनके श्रेष्ठ गुणों के वर्णन करनेवाले गाने गाऊँ? वह इस तरह अनेक प्रकार से सोच रही थी। १०६९

माडहम् बऱ्ऱिय महर वीणैतऩ्
तोडविऴ् मलर्क्करज् जिवप्पत् तॊट्टऩळ्
पाडिऩ ळोरुत्तितऩ् पाङ्गु ळार्हळो
डूडिऩ दुरैशॆया ळुळ्ळत् तुळ्ळदे 1070

ओरुत्ति–एक बाला ने; ऊटित्तु–अपना रूठना; तऩ् पाङ्कु उळार्कळोटु–अपनी अनुकूल सखियों से; उरै चॆयाळ्–नहीं बताया; माटकम् पऱ्ऱिय–(तन्त्री की लम्बाई को कम या अधिक करने के लिए लगाई गई) पेचवाली; मकर वीणै–मकराकार की वीणा को; तऩ्–अपने; तोटु अविऴ् मलर् करम्–दल खुले कमलतुल्य करों को लाल करते हुए; तॊट्टऩळ्–हाथ में लेकर; उळ्ळत्तु उळ्ळतु–मन में जो रहा वह भाव; पाटित्ताळ्–गाने के द्वारा प्रकट किया। १०७०

एक स्त्री ने अपनी अनुकूल सखियों से अपने रूठने की बात साफ़-साफ़ तो नहीं कही। पर उसने वीणा ली। पेच को, अपने हाथ को

दुखाकर लाल करते हुए घुमाया और तन्त्री को उचित तनाव दिया। फिर वह गाने लगी तो उसके आन्तरिक भाव प्रकट हो गये । १०७०

कुऴैत्तमॆऩ् कॊम्बऩा ळॊरुत्ति कूडलै
इऴैत्तऩ ळदुवव ळिऴैत्त पोदॆलाम्
पिऴैत्तलु मऩङ्गवेळ् पिऴैप्पि लम्बीडुम्
उऴैत्तऩ ळुयिर्त्तऩ ळुयिरुण् डॆऩ्ऩवे 1071

कुऴैत्त–पल्लवित; मॆऩ् कॊम्पु अऩ्ऩाळ्–कोमल पुष्पलता सदृश; ऒरुत्ति–एक ने; कूटलै इऴैत्तऩळ्–"शकुनवृत्त" बनाये; अतु–वह; अवळ् इऴैत्त पोतॆल्लाम्–उसके बनाने के हर अवसर पर; पिळैत्तलुम्–(सिरे न मिलकर पूर्ण न बना) गलत निकला; अनङ्कवेळ्–(तब) अनंग देव के; पिऴैप्पु इल् अम्पॊटुम्–अचूक शर के कारण; उऴैत्तऩळ्–पीड़ित होकर; उयिर् उण्टु ऎऩ्ऩ–जीवित तो है यह कहा जाय ऐसा; उयिर्त्तऩळ्–साँस लेती रही । १०७१

एक पल्लव व फूलों से भरी पुष्पलतातुल्य दयिता ने शकुन देखना चाहा कि पति आयेगा कि नहीं। वह वृत्त बनाने लगी। (यानी बालू फैलाकर आँखें मूँदकर अपनी उँगली से वृत्त या गोल खींचा। अगर दोनों सिरे मिल गये और वृत्त पूर्ण हुआ तो निश्चित है कि वह आयेगा।) पर हर बार वृत्त नहीं बना, सिरे नहीं मिले। इसलिए उसका मन कामवेदना से भर गया। ज्यों-ज्यों वृत्त गलत हुआ, त्यों-त्यों काम का अचूक शर उसको उत्तरोत्तर अधिक वेदना देने लगा। वह सिर्फ़ साँस लेती रही इसलिए लोगों ने जाना कि वह जीवित है। अन्यथा उसके शरीर में कोई स्पंदन या जीवन के चिह्न नहीं दिखाई दिये। १०७१

पन्दणि विरलिऩा ळॊरुत्ति पैयुळाल्
सुन्दर ऩॊरुवऩ्पाऱ् ऱूदु पोक्किऩाळ्
वन्दऩ ऩॆऩ्ऩक्कडै यडैत्तु माऱ्ऱिऩाळ्
शिन्दऩै तॆरिन्दिलऩ् जिवन्द नाट्टमे 1072

पन्तणि विरलिऩाळ्–कंदुक शोभावर्द्धिनी उँगलियोंवाली; ऒरुत्ति–एक स्त्री ने; पैयुळाल्–(वियोग-) दुख से; चुन्तरऩ् ऒरुवऩ् पाल्–सुषमायुक्त अपने अद्वितीय नायक के पास; तूतु पोक्किऩाळ्–दूत भेजा; वन्तऩऩ् ऎऩ्ऩ–आया तो; कटै अटैत्तु–द्वार बन्द करके; माऱ्ऱिऩाळ्–रास्ता रोका; नाट्टम् चिवन्त–आँखें लाल हुईं; चिन्तऩै तॆरिन्तिलम्–अभिप्राय नहीं जानते । १०७२

कंदुक की शोभा को अपनी उँगलियों से बढ़ानेवाली एक स्त्री ने, वियोग-दुख सहन न करके अपने परम सुन्दर नायक के पास सन्देश भेजा। वह भी आ गया। पर इसका मन बदल गया। (उसको अपने झुकने के कारण झुँझलाहट और पति के सन्देशा पाते तक रह जाने से गुस्सा हुआ।) इसलिए उसकी आँखें लाल हुईं और उसने द्वार बन्द कर उसको

अन्दर आने से रोक लिया। हम यह नहीं बता सकते कि अब उसका अभिप्राय क्या है ? । १०७२

उय्त्तपूम् बळ्ळियि ऩूड ऩीङ्गुवाऩ्
शित्तमुण् डॊरुत्तित ऩऩ्बऩ् ऱेर्हिलाऩ्
पॊय्त्तदोर् मूरिया ऩिमिर्न्दु पोक्कुवाळ्
ऍत्तऩै यिऱन्दऩ कडिहै योण्डॆऩ्ऱाळ् 1073

उय्त्त पू पळ्ळियिऩ्–(सखियों द्वारा) बिछाई गई पुष्पशय्या पर; ऊटल् नीङ्कुवाऩ्–रूठना छोड़ने का (प्रिय से मिलने का); चित्तम् उण्ट–विचार रखनेवाली; ऑरुत्ति तऩ् अऩ्पऩ्–एक का पति; तेर्किलाऩ्–उसका मन नहीं समझा; पोक्कुवाळ्–समझाने के लिए; पॊय्त्ततु–झूठी; ओर् मूरियाल्–एक अँगड़ाई लेकर; निमिर्न्तु–सीधी होकर; ईण्टु–अब; ऍत्तऩै कटिकै–कितनी घड़ियाँ; इऱन्तत–बीतीं; ऍऩ्ऱाळ्–पूछा। १०७३

एक स्त्री अपनी सखियों से निर्मित पुष्पशय्या पर लेटी थी। उसकी रूठन दूर हो गई और पतिसंयोग की इच्छा हुई। पति वह बात नहीं समझ सका। वह उसे जताना चाहती थी पर खोलकर तो नहीं कह सकी। इसलिए उसने एक झूठी अँगड़ाई ली; फिर शरीर को सीधा किया। बाद में पूछा कि अब कितनी घड़ियाँ बीत गईं ? (मानो वह सो गई थी और अभी-अभी जागी हो।) । १०७३

विदैत्तमॆऩ् कादलिऩ् वित्तु मॆय्न्निऱै
मुदैप्पुऩ ननैत्तिड मुळैत्त वेयॆऩप्
पदैत्तऩ ळॊरुवऩ्मे लॊरुत्ति पञ्जडि
उदैत्तलुम् पॊडित्तऩ वुरोम राशिये 1074

ऑरुत्ति–एक; पतैत्तऩळ्–आकुलित हुई; ऑरुवऩ् मेल्–एक (अपने नायक) पर; पञ्चु अटि उतैत्तलुम्–महावर लगे पैरों से लात मारी, तब; मॆय्–उसका शरीर; निऱै मुतै पुऩम्–(रूपी) उर्वर खेत को; ननैत्तिट–सिंचित करने से; वितैत्त–बोये गये; मॆऩ् कातलिऩ् वित्तु–कोमल प्रेम के बीज; मुळैत्त ऍऩ–उग आये ऐसा; उरोमराचि–रोम समूह; पॊटित्तऩ–पुलकित हुए। १०७४

एक स्त्री ने व्याकुल अवस्था में अपने प्रेमी पर लात मारी। उसके रोंगटे खड़े हो गये। कवि की कल्पना है कि प्रेमी का शरीर एक उर्वर खेत था; लाक्षारससिक्त पैरों की लात सिंचन थी और रोमहर्षण प्रेम के बीजों के अंकुर हैं। १०७४

एय्न्दपे रॆंळ्ळिलिऩा ऩॊरुव ऩॆय्दिऩाऩ्
वेय्न्दपो लॆङ्गणु मऩङ्गऩ् वॆङ्गणै
पाय्न्दपूम् बळ्ळियिऱ् पडुत्त पल्लवम्
तोय्न्दवा नोक्किऩाऩ् ऱळिर्क्कुञ् जिन्दयाऩ् 1075

एय्न्त पेर् ऍऴिलिऩाऩ् ऒरुवऩ्–संभूत बड़ी सुषमाशाली एक; ऍय्तिऩाऩ्–(अपनी प्रेयसी के पास) पहुँचकर; ऍङ्कणुम्–सर्वत्र; अनङ्कऩ् वॆम् कणै–अनंग के प्यारे शर-पुष्प; वेय्न्त पोल्–बिछाये गये ऐसा; पाय्न्त–विस्तृत; पू पळ्ळियिल्–पुष्पशय्या पर; पटुत्त–बिछाये गये; पल्लवम्–पल्लव; तीय्न्तवाऱु–झुलसे रहे, यह प्रकार; नोक्किऩाऩ्–देखा; तळिर्क्कुम् चिन्तैयाऩ्—उत्फुल्ल-चित्त हुआ। १०७५

संभूत परम सौंदर्य का स्वामी एक था। वह अपनी प्रेयसी के पास आया। वह एक पुष्पों की, जो अनंग के प्यारे शर हैं, बनी शय्या पर लेटी थी। प्रेमी ने देखा कि उस शय्या के फूल और पत्ते कैसे झुलसे हैं। (समझ गया कि नायिका वियोगतप्त है और यह मिलन के लिए युक्त अवसर है।) उसका मन प्रफुल्लित हुआ। १०७५

पॊलिन्दवाण् मुहत्तिऩाऩ् पॊङ्गित् तऩ्ऩैयुम्
मलिन्दपे रुवहयऩ् माऱ्ऱु वेन्दरै
नलिन्दवा ळुऴवऩोर् नङ्गै कॊङ्गैपोय्
मॆलिन्दवा नोक्कित्तऩ् पुयङ्गळ् वीङ्गिऩाऩ् 1076

माऱ्ऱु वेन्तरै नलिन्त–शत्रु राजाओं के त्रासक; वाळ् उऴवऩ्–तलवार कृषक (वीर); ओर् नङ्कै कॊङ्कै–एक (अपनी नायिका) के स्तनों के; पोय् मॆलिन्त आऱु नोक्कि–क्षीण हुए रहने की स्थिति देखकर; पॊङ्कि–उमंगित होकर; तऩ्ऩैयुम् मलिन्त पेर् उवकैयऩ्–अपने से भी अधिक प्रसन्नचित्त और; पॊलिन्त वाळ् मुकत्तिऩाऩ्–दृश्यमान उज्ज्वल मुखवाला होकर; तऩ् पुयङ्कळ्–अपनी भुजाओं को; वीङ्किऩाऩ्–फुलाया। १०७६

एक राजा ने, जो तलवार का कृषक था, यानी तलवार का धनी था, अपनी प्रेयसी के स्तनों को देखा कि वे किस प्रकार क्षीण हुए हैं। (समझ गया कि ऐन मौका है। अतः) आनन्द से आपे से बाहर हो गया। उसका मुख खिल गया। उसकी भुजाएँ फूल उठीं। १०७६

ऊट्टिय शान्दुवॆन् दुलरुम् वॆम्मयाऩ्
नाट्टिऩै यळित्तिनी यॆऩ्ऱु नल्लवर्
आट्टुनीर्क् कलशमे यॆऩ्ऩ लायवोर्
वाट्टॊऴिऩ् मैन्दर्कोर् मङ्गै कॊङ्गये 1077

ऊट्टिय चान्तु–(शरीर पर) चर्चित चन्दन; वॆन्तु उलरुम् वॆम्मैयाऩ्–गरमी पाकर सूख जाय, इतना गरम शरीर के; ओर् वाळ् तॊऴिल् मैन्तर्कु–एक तलवार-कार्य-कुशल नायक को; ओर् मङ्कै कॊङ्कै–एक नायिका (उसकी प्रिया) के स्तन; नाट्टिऩै अळित्ति नी–देश का अच्छा परिपालन करो, तुम; ऍऩ्ऱु–यह कहकर; नल्लवर्–उत्तम लोगों द्वारा; आट्टुम्–अभिषेक कराने के निमित्त; नीर् कलचम् ऍऩ्ऩल् आय–(अभिमंत्रित) जल के स्वर्ण कलश कहलाने योग्य बने। १०७७

एक तलवार के धनी वीर की कामवासना इतनी तीव्र थी कि उसका शरीर इतना गरम हो गया कि चर्चित चन्दन भी सूख गया। उसके लिए उसकी नायिका के स्तन उन स्वर्णकलशों के समान थे जिनमें उत्तम शास्त्रज्ञों द्वारा अभिमंत्रित जल भरा हो और जो 'तुम इस देश की खूब रक्षा करो' इस आशीर्वाद के साथ अभिषेक करने के लिए प्रस्तुत कर रखे गये हों। (अब प्रेम का राज्य उसके अधीन हो गया —यह सूचना दी गयी।)। १०७७

पयिरुऱु किण्किणि परन्द मेकलै, वयिरवाऩ् पूणवै वाङ्गि नीक्किऩाळ्
उयिरुऱु तलैवऩ्बाऱ् पोह वुऩ्ऩिऩाळ्, शॅयिरुऱु तिङ्गळैत् तीय नोक्किऩाळ् 1078

उयिर् उऱु तलैवऩ् पाल्–प्राण सम नायक के पास; पोक उऩ्ऩिऩाळ्–जाने का विचार करके एक ने; पयिर् उऱु–झनझनानेवाले; किण्किणि–"किण्किणि" नामक पैर के आभरण; परन्त मेकलै–(कमर पर की) ढीली मेखला और; वयिरम् वाऩ् पूण् अवै–हीरे के उज्ज्वल अन्य आभरणों को; वाङ्कि नीक्किऩाळ्–उतारकर हटाया; चॅयिर् उऱु तिङ्कळै–अपराधी चन्द्र को; तीय नोक्किऩाळ्–(मानो) जला देगी ऐसा देखा। १०७८

एक नायिका ने नायक के पास (अभिसारिका हो) जाना चाहा। इसलिए उसने पैर की पैंजनी (तमिळ में 'किणकिणी' कहा जाता है) कमर की मेखला और अन्य हीरे के उज्ज्वल आभरण उतारकर दूर किये। (ये उसके रहस्य को खोल सकते थे।) तब उसने देखा चाँद अपराधी है। चाँदनी में वह गुप्तरूप से कैसे जा सकेगी? इसलिए उसने चाँद के प्रति आग्नेय दृष्टि फेरी। १०७८

एलुमिव् वऩ्मयै यॆऩ्ऩॆऩ् ऱुऩ्ऩुदुम्
आलैमॆऩ् करुम्बऩा ऩॊरुवऱ् काङ्गॊरु
शोलमॆऩ् कुयिलऩाळ् शुऱ्ऱि वीक्किय
मालयै निमिर्न्दिल वयिरत् तोळ्हळे 1079

आलै मॆऩ् करुम्पु अऩ्ऩाऩ्–(ईख के) कोल्हू में पिसनेवाले कोमल ईख के सदृश रहे; ऑरुवऱ्कु–एक नायक के; वयिरम् तोळ्कळ्–वज्र कठोर कंधे; आङ्कु–वहाँ; ऑरु चोलै मॆऩ् कुयिल् अऩ्ऩाळ्–एक उपवन की कोमल कोयल तुल्य एक (नायिका) द्वारा; चुऱ्ऱि वीक्किय–लपेटकर बाँधी गई; मालैयै–माला को; निमिर्न्तिल–तोड़ नहीं सके; एलुम् इ वऩ्मैयै–(माला को) प्राप्त इस शक्ति का; ऎऩ् ऎऩ्ऱु उऩ्ऩुतुम्–क्या कहकर माना जाय। १०७९

एक नायक था, बेचारा! वह कोल्हू में पिसनेवाले ईख के समान हो गया था। उसकी वज्र कठोर भुजाओं को एक उद्यानवासिनी कोमल कोकिलातुल्य स्त्री (नायिका) ने पुष्पमाला से बाँध दिया। वह उस बन्धन से अपनी भुजाओं को मुक्त नहीं करा सका। उस माला के बल का क्या सोचा जाय? (प्रेम की विचित्र दशा का विदग्ध चित्रण है।)। १०७९

शोऱ्हुऴ लॊरुत्तिदऩ् वरुत्तञ् जॊल्लुवाऩ्
मारऩै नोक्कियोर् मादै नोक्किऩाळ्
कारिहै यवळिवळ् करुत्तै नोक्कियोर्
वेरियऩ् दॆरियलाऩ् वीडु नोक्किऩाळ् 1080

चोर् कुऴल् ऒरुत्ति–बिखरे केशवाली एक ने; तऩ् वरुत्तम्–अपने वियोग-दुख को; चॊल्लुवाऩ्–जताने के लिए; मारऩै नोक्कि–(चित्रार्पित) मार को देखकर; ओर् मातै नोक्किऩाळ्–एक (सखी) स्त्री को देखा; कारिकै अवळ्–सखी, उसने; इवळ् करुत्तै नोक्कि–इसका आशय समझकर; ओर् वेरि अम् तॆरियलाऩ्–सुवासपूर्ण सुन्दर मालाधारी एक अप्रतिम (नायक) के; वीटु नोक्किऩाळ्–घर की तरफ़ गई। १०८०

एक वियोग-दुखिनी नायिका ने, जिसका कुंतल खुलकर बिखर रहा था, अपनी सखी को अपनी स्थिति जताना चाहा। सीधे शब्दों में कह नहीं सकी। इसलिए उसने मारदेव के चित्र को देखा, फिर अपनी सखी पर दृष्टि डाली। सखी समझ गई और नायक के घर की तरफ़ उसने प्रस्थान किया। (नोक्कु–'देख' शब्द, देख, संकेत बता, संकेत समझ, की तरफ़ जा —इन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।)। १०८०

शिऩङ्गॊऴु वेऱ्कयोर् शॆम्मल् पालॊरु
कऩङ्गुऴै मयिलऩाळ् कडिदु पोयिऩाळ्
मऩङ्गुऴै नऱवमो मालै ताऩ्गॊलो
अऩङ्गऩो यार्हॊलो वऴैत्त तूदरो 1081

चिऩम् कॊऴु वेल् कै–कोपिष्ट, भालाधारी हस्त के; ओर् चॆम्मल्–एक नायक; पाल्–के पास; ऒरु कऩम् कुऴै–एक स्वर्णकुण्डलधारिणी; मयिल् अऩ्ऩाळ्–मोर सी छटावाली; कटितु पोयिऩाळ्—जल्दी-जल्दी जाने लगी; अऴैत्त तूतु–(उसको उस तरह) बुलानेवाला दूत; मऩम् कुऴै नऱवमो–मन को द्रवित करनेवाली सुरा; मालै ताऩ् कॊल्लो–संध्या का समय ही; अनङ्कऩो–(या) अनंग ही; यार् कॊलो–कौन है तो (हम नहीं जानते)। १०८१

एक स्वर्णकुंडलधारिणी नायिका अपने क्रोधी भालाधारी नायक के पास स्वयं त्वरित गति से जाने लगी। यह क्यों? उसको किस बात ने 'दूत' सदृश प्रेरित किया, जाने को मजबूर किया? उसने जो सुरा पी थी जिसके कारण उसका मन लालायित हो गया, वह? सन्ध्या समय जो कामोत्तेजक ही नहीं, स्थल को गुप्त भी रखता है? या स्वयं कामदेव? कौन जाने? । १०८१

तॊहुतरु कादऱ्कुत् तोऱ्ऱ शीऱ्ऱत्तोर्
वहिरमदि नॆऱ्ऱियण् मऴैक्क णालिवऩ्

दुहुदलु मुऱ्ऱदॆऩ् ऩॆऩ्ऱु कॊऱ्ऱवऩ्
नहुदलु नक्कऩ णाणु नीक्किऩाऴ् 1082

तॊकुतरु कातल्कु तोऱ्ऱ–गम्भीर प्रेम के सामने हारने के कारण; चीऱ्ऱत्तु–उत्पन्न क्रोध की; ओर् वकिर्मति नॆऱ्ऱियऴ्–एक कलाचन्द्र सदृश ललाटवाली की; मऴै कण्–शीतल आँखों से; आलि वन्तु उकुतलुम्–अश्रु के गिरते; कॊऱ्ऱवऩ्–विजयी (उसका नायक); उऱ्ऱतु ऎऩ्–हुआ क्या; ऎऩ्ऱु–कहकर; नकुतलुम्–हँसा तो; नक्कऩऴ्–हँस दी; नाणुम् नीक्किऩाऴ्–लाज (संकोच) छोड़ दी। १०८२

उस नायिका का प्रेम बड़ा गहन था। इसलिए पति के पास आते ही उसके प्रेम से हारकर अपना गुस्सा भूल गई। चन्द्रकला (अर्धचन्द्र) समान ललाटवाली उसकी आँखों से आँसू आये। अब क्या हो गया ? —यह प्रश्न करके पति हँसा तो वह भी हँस दी। साथ-साथ लाज भी छूट गयी। (इस पद में नायक को 'विजयी' कहा गया है क्योंकि आसानी से उसे नायिका के प्रेम में जीत मिल गई।)। १०८२

पॊय्त्तलै मरुङ्गुला ऴॊरुत्ति पुल्लिय
कैत्तल नीक्किऩऴ् करुत्तै नोक्किऩाऴ्
शित्तिरम् बोऩ्ऱवच् चॆयलोर् तोऩ्ऱऱ्कुच्
चत्तिर मार्बिडैत् तैत्त दॊत्तदे 1083

पॊय्त्तु अलै–नहीं रहकर, संकट उठानेवाली; मरुङ्कुलाऴ्–कमर की; ऒरुत्ति–एक; पुल्लिय–आलिंगन करनेवाले; कै तलम् नीक्किऩऴ्–(पति के) करतल को हटाया; करुत्तै नोक्किऩाऴ्–और उसके मन को देखा (परखा); चित्तिरम् पोऩ्ऱ अ चॆयल्–विचित्र वह काम; ओर् तोऩ्ऱल् कु–एक राजा के लिए; मार्पु इटै–वक्षमध्य; चत्तिरम् तैत्ततु–शस्त्र का गड़ना; ऒत्ततु–सा लगा। १०८३

एक स्त्री ने, जिसकी कमर के होने में सन्देह थी, तो भी जो ग्रस्त होकर संकट पा रही थी, अपने पति के आलिंगनरत हाथ को हटा दिया। वह यह देखना चाहती थी कि उसके मन की दशा क्या होगी ? पर इस विचित्र कार्य पर उसे ऐसा लगा मानो शस्त्र आकर लग गया हो। १०८३

मॆल्लिय लॊरुत्तिदाऩ् विरुम्बुञ् जेटियैप्
पुल्लिय कैयिऩऴ् पोदि तूदॆऩच्
चॊल्लुदऱ् किशैन्दुपिऩ् ऩाणिच् चॊल्ललऴ्
ऎल्लयिल् पॊऴुदॆला मिरुन्दु विम्मिऩाऴ् 1084

मॆल् इयल् ऒरुत्ति–मृदुस्वभाव की एक; ताऩ् विरुम्पुम् चेटियै–अपनी प्यारी दासी को; पुल्लिय कैयिऩऴ्–उसका हाथ पकड़कर; तूतु पोति–दूती बनकर जा; ऎऩ चॊल्लुतऱ्कु इचैन्तु–यह कहने को जाकर; पिऩ् नाणि–फिर लजाकर; चॊल्ललऴ्–नहीं कहा; ऎल्लै इल् पॊऴुतु ऎल्लाम्–अन्त न होनेवाली रात भर रहकर; विम्मिताऴ्–दुख में बढ़ती रही। १०८४

मृदु स्वभाववाली एक योषिता ने अपनी प्यारी चेरी के हाथ को अपने हाथ में लिया। वह उसे दूती बनाकर भेजना चाहती थी। पर लाज के मारे उसने कुछ नहीं कहा। फिर वह रात भर, जो अन्त होने को नहीं आती-सी लगती थी, दुख में रही। १०८४

ऊऱुपे रऩ्बिऩा ळॊरुत्ति तऩ्ऩुयिर्, माऱिलाक् कादलऩ् शॆय्है मऱ्ऱॊरु
नाऱुपूङ्गोदैपा ऩविल नाणुवाऴ्, वेऱुवे ऱुऱच्चिल मॊऴिवि ळम्बिऩाऴ् 1085

ऊऱु–उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; पेर् अऩ्पिऩाऴ्–बड़े प्रेमवाली; ऒरुत्ति–एक; तऩ् उयिर्–अपने प्राण (सम); माऱु इला–अविरोधी; कातलऩ् चॆय्कै–प्रेमी के (दूर रहने के) कृत्य को; मऱ्ऱु ऒरु–दूसरी एक; नाऱु पू कोतै–सुगन्धित पुष्पों से अलंकृत केशवाली को; नविल नाणुवाऴ्–कहने से लजाती है; वेऱु वेऱु उऱ–परस्पर विपरीत रहनेवाली; चिल मॊऴि–कुछ बातें; विळम्पिऩाऴ्–कहीं। १०८५

एक नायिका का अपने पति से प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ता था। वह उसे प्राण मानती थी और पति ने भी कोई अप्रिय या विरोध नहीं किया था। पर अब उसके हाथ नायिका के प्रति अपराध हो गया। (वह अब दूर रह गया था।) उसने उसके सम्बन्ध में अपनी सखी से, जिसके केश पर सुवासित पुष्प थे, कहना तो चाहा, पर लाज ने आकर रोक दिया। इसलिए उसने उससे परस्पर विपरीत कुछ बातें कहीं। १०८५

उरुत्तॆरि तऩ्मैय दुयिरु मॊऩ्ऱुतम्, अरुत्तियु मत्तुणै याय नीरिऩार्
ऒरुत्तियु मॊरुवऩु मुडलु मॊऩ्ऱॆऩप्, पॊरुत्तिऩ रिवरॆऩप् पुल्लि ऩाररो 1086

उरु तॆरि तऩ्मैयतु–(दो) रूप दिखनेवाली; उयिरुम्–(दोनों की) जान; ऒऩ्ऱु–एक है; तम् अरुत्तियुम्–(दोनों की) इच्छा भी; अ तुणै आय–उसी प्रकार की; नीरिऩार्–ऐसे थे जो; ऒरुत्तियुम् ऒरुवऩुम्–एक (नायिका) और एक (नायक); इवर् उटलुम् ऒऩ्ऱु ऎऩ–दोनों के शरीर भी एक हों, इसीलिए; पॊरुत्तिऩर्–सटा लिया; ऎऩ–ऐसा सब कहें, इस तरह; पुल्लिऩर्–आलिंगनबद्ध हो गये। १०८६

प्रेमी-प्रेमिका का एक जोड़ा था। दोनों की जानें एक थीं, दोनों की इच्छा भी एक थी। अब दोनों ने अपने शरीरों को भी एक बनाया हो, ऐसा वे गाढ़े रूप से आलिंगनबद्ध हो गये। १०८६

वॆदिर्पॊरु तोळिऩा ळॊरुत्ति वेन्दऩ्वन्
दॆदिर्दलुऩ् दऩ्मऩ मॆऴुन्दु मुऩ्शॆलक्
कदुमॆऩक् कैयुऱ वणङ्गि ऩाळदु
पुदुमया दलिऩवऱ् कच्चम् बूत्तदे 1087

वॆतिर् पॊरु तोळिऩाळ् ऒरुत्ति–बाँस के समान भुजावाली एक ने; वेन्तऩ् वऩ्तु ऎतिर्तलुम्–राजा के आकर प्रकट होते ही; तऩ् मऩम्–उसका मन; मुऩ्

ॲ़ऴुन्तु चॆल्ल–पहले निकलकर चला और; कतुम् ॲऩ–झट; कै उऱ वणङ्किऩाळ्–हाथ जोड़कर नमस्कार किया; अतु पुतुमै आतलिऩ्–वह अनोखा था, इसलिए; अवऱ्कु–उसे; अच्चम् पूत्ततु–भय हुआ । १०८७

बाँस सदृश भुजावाली एक स्त्री ने (जो नशे में थी) पति के आते ही झट हाथ जोड़कर नमस्कार किया। उसका मन तो पहले ही उसके पास पहुँच गया। पर पति क्या जाने ? यह काम विचित्र और अभूतपूर्व था। अतः उसे संशय हुआ और उससे एक तरह का भय भी हुआ। (पूत्ततु का अर्थ 'विकसित हुआ' है। वह शब्द विशेष अर्थगर्भित हुआ है।)। १०८७

तुऩिवरु नलत्तॊडुञ् जॊऱ्हिऩ् ऱाळॊरु
कुऩिवरु नुदलिक्कुक् कॊऴुन ऩिऩ्ऱियॆ
तऩिवरुन् दोऴियुन् दायु मॊत्तऩ
इऩियपून् दॆऩ्ऱलु मिरवु मॆऩ्बवे 1088

कॊऴुनऩ् इऩ्ऱि–पति के (पास) न रहने से; तुऩि वरुम्–मान के कारण उत्पन्न; नलत्तॊटुम्–सुन्दरता के साथ; चोर्किऩ्ऱाळ्–जो म्लान है उस; ऒरु कुऩि वरु नुतलिक्कु–एक कुटिल ललाटवाली को; इऩिय पू तॆऩ्ऱलुम्–सुखद पुष्पगन्ध भरा मन्द मलयपवन और; इरवुम्–रात; ऍऩ्प–जो कहे जाते हैं वे; तऩि वरु तोऴियुम्–क्रमशः (असफल हो) अकेली आनेवाली सखी और; तायुम्–माता के; ऒत्तऩ–समान थे । १०८८

एक वियोगिनी है। रूठन का सौंदर्य उसमें मिल गया है। उस कुटिल (बंकिम) ललाटवाली के लिए सुखद पुष्पगन्ध भरा मन्द पवन दूत-कार्य पर जाकर असफलता के साथ अकेली आनेवाली सखी-सा बन जाता है और रात माता के समान। (दोनों अब व्यर्थ हैं।)। १०८८

आक्किय कादला ऴॊरुत्ति यन्दियिल्
ताक्किय दॆय्वमुण् डॆऩ्ऩुन् दऩ्मैयळ्
नोक्किऩ णिऩ्ऱऩ णुवल लोर्हिलळ्
पोक्किऩ तूदिऩो डुणर्वुम् बोक्किऩाळ् 1089

आक्किय कातलाळ् ऒरुत्ति–वर्धित प्रेम की एक ने; पोक्किऩ–जिसको भेजा; तूतिऩॊटु–उस दूत के साथ; उणर्वुम्–अपनी सुध भी; पोक्किऩाळ्–भेज दी; अन्तियिल्–संध्या वेला में; ताक्किय तॆय्वम् उण्टु–दुर्दैव-(भूत-) ग्रस्त है; ऍऩ्ऩुम् तऩ्मैयळ्–ऐसी स्थिति की हो गई; नोककिऩळ्–देखती हुई; निऩ्ऱऩळ्–खड़ी रही; नुवलल् ओर्किलळ्–बोलने की सुध नहीं रखती थी । १०८९

एक सुन्दरी, अपने पति पर अपार प्रेम रखती थी। अब उसने उसको बहुत बढ़ा दिया। इच्छा दुर्वह हो गई। उसने दूत भेजा। सुधि भी खो दी, मानो वह दूत के साथ भी चली गई। अब वह ऐसा व्यवहार करने लगी, मानो सन्ध्याकाल में भूतग्रस्त हो गई हो। घूरती खड़ी रही और कुछ बोली नहीं जैसे बोलना नहीं जानती थी। १०८९

मऱ्पिलळ् कॊऴुनऩै वरवु नोक्कुवाळ्
पिऱ्पिऩॊ डिऱ्पॆऩ्प् पॆयरुञ् जिन्दैयाळ्
तुऱ्परु मुहिलिडैत् तोऩ्ऱु मिऩ्ऩॆऩप्
पुऱ्पडुम् बुहुमॊरु पूत्त कॊम्बऩाळ् 1090

ऒरु पूत्त कॊम्पु अऩ्ऩाळ्–एक पुष्प-भरी शाखा सी (स्त्री); कॊऴुनऩै मऱप्पु इलळ्–पति को न भूल पाकर; वरवु नोक्कुवाळ्–आने की राह देख रही थी; पिऱप्पिऩोटु इऱप्पु ऎऩ—जन्म-मरण के समान; पॆयरुम् चिन्तैयाळ्–चक्रवत आनेवाले विचारों की होकर; तुऱप्पु अरु–अनिवार्य; मुकिल् इटै तोऩ्ऱुम्–मेघमध्य चमकनेवाली; मिऩ् ऎऩ–बिजली के समान; पुऱप्पटुम्–(पटगृह से) बाहर निकलती और; पुकुम्–घुस जाती । १०९०

बहुपुष्पित लता के समान एक स्त्री की बात देखिए। वह अपने पति को भूल न सककर उसके आने की प्रतीक्षा कर रही थी। वह बिजली के समान जो मेघों से अलग नहीं हो सकती है, पटगृह के बाहर निकलती, फिर अन्दर घुस जाती —इस तरह करती रही। उसके विचार जन्म-मरण के चक्र के समान बारी-बारी से बदलते रहे। १०९०

ऎऴुदरुङ् गॊङ्गैमे लऩङ्ग ऩॆय्दवम्
बुऴुदवॆम् बुण्गळिल् वळैक्कै यॊऱ्ऱिऩाळ्
अऴुदऩळ् शिरित्तऩ ळऱ्ऱञ् जॊल्ललळ्
तॊऴुदऩ ळॊरुत्तियैत् तूदु वेण्डिये 1091

(एक) ऎऴुत अरु कॊङ्कै मेल्–जिनके चित्र बनाना कठिन है उन स्तनों पर; अऩङ्कऩ् ऎय्त अम्पु–अनंगप्रेषित शर के; उऴुत वॆम् पुण्कळिल्–बनाये गये पीडक व्रणों में; वळै कै ऒऱ्ऱिऩाळ्–कंकणभूषित हाथ धीरे रखे; अऴुतऩळ्–रोयी; चिरित्तऩळ्–हँसी; अऱ्ऱम्–शिकायत; चॊल्ललळ्–नहीं कहती; ऒरुत्तियै–एक सखी के सामने; तूतु वेण्टि–दौत्य की प्रार्थना में; तॊऴुतऩळ्–हाथ जोड़े । १०९१

एक ने अपने बहुत ही सुन्दर, इतने सुन्दर कि उनका चित्रण ही नहीं हो सकता था, स्तनों पर अपने कंकणभूषित हाथ रखे, मानो वह अनंगशर के बने व्रणों को सेंक रही हो। फिर वह हँसी, फिर रोई और विना उलाहना कहे ही उसने अपनी सखी के सामने इस अर्थ में हाथ जोड़े कि दूत बनकर जाओ। १०९१

आर्त्तियु मुऱ्ऱदु मऱिञर्क् कऱ्ऱन्दऩ्
वार्त्तयि ऩुणर्त्तुदल् वऱिदऩ् ऱॆऩ
वेर्त्तऩळ् वॆदुम्बिऩण् मॆलिन्दु शाय्न्दऩळ्
पार्त्तऩ ळॊरुत्तिदऩ् पाङ्गि ऩाळैये 1092

ऒरुत्ति–एक; उऱ्ऱतुम्–आपबीती बात; आरत्तियुम्–और व्यथा को; अऱिञर्क्कु–जाननेवालों से; अऱ्ऱम्–शिकायत को; तऩ् वार्त्तैयिऩ्–अपने मुख से

(शब्दों द्वारा); उणर्त्तुतल्–समझाना; वऱितु अऩ्ऱो–व्यर्थ तो नहीं; ऍन्ऩ–समझकर; वॅतुम्पिऩळ्–व्याकुल हुई; वेर्त्तऩळ्–स्वेदयुक्त हो गई; मॅलिन्तु चाय्न्तऩळ्–थककर लेट गई; तऩ् पाङ्किऩाळै–अपनी सखी को; पार्त्तऩळ्–अर्थ भरी दृष्टि से देखा। १०६२

एक वियोगिनी ने सोचा कि जो मेरी या मुझपर बीती बात और मुझे होनेवाली व्यथा जानते हैं, उन जानकार से उतने शब्दों में अपनी शिकायत को प्रकट करना व्यर्थ है। इसलिए वह मन ही मन कुढ़ी; उसके शरीर से पसीने निकल आये। वह थककर शय्या पर लेट गई। तब उसने अपनी सखी की आँखों में आँखें डालीं। (उसका अर्थ है कि तुम जाकर उन्हें जल्दी बुला लाओ।)। १०९२

तऩङ्गळि ऩिळैयवर् . तम्मिऩ् मुम्मडि
कऩङ्गळि यिडैयिडै कळिक्कुङ् गळ्वऩाय्
मऩङ्गळि ऩुळैन्दवर् मान्दु तेऱलै
अऩङ्गऩु मरुन्दिऩा ऩादल् वेण्डुमाल् 1093

अऩङ्कऩुम्–मन्मथ भी; तऩङ्कळिऩ् इळैयवर् तम्मिऩ्–(मनोरम) उरोजों की तरुणियों से; मुम्मटि कऩम् कळि–तिगुना बड़ा आनन्द; इटै इटै कळिक्कुम्–(उन स्थानों में) अनुभव करता है; कळ्वऩ् आय्–चोर बनकर; मऩङ्कळिल्–मनों के अन्दर; नुऴैन्तु–घुसकर; अवर् मान्तु तेऱलै–उनसे पीत सुरा को; अरुन्तिऩाऩ् आतल् वेण्टुम्–पिया हुआ होना चाहिए। १०६३

जहाँ-जहाँ सुरापायी तरुणियाँ, जिनकी उदासीनता के कारण उनके मनोरम उरोज अपनी सम्पूर्ण मनोहारिता को ले प्रकट दिखाई देते हैं, सुख-भोग कर रही थीं, वहाँ मन्मथ भी तिगुना आनन्द भोग रहा था। क्या यह इसलिए कि उसने चोर बनकर उनके मन में बैठकर उनसे पीत सुरा को स्वयं भी पिया? वही होना चाहिए। (मद्यपान का नशा और कामकेलि दोनों का निकट सम्बन्ध है।)। १०९३

नऱैकम ऴलङ्गऩ् मालै नळिनऱुङ् गुञ्जि मैन्दर्
तुऱैयऱि कलविच् चॅव्वित् तोहैयर् तूशु वीशि
निऱैयह लल्हुल् पुल्हुङ् गलऩ्कऴित् तहल नीत्तार्
अऱैपऱै यऩैय नीरा ररुमऱैक् काव रोताऩ् 1094

नऱै कमऴ्–सुगन्ध छिटकानेवाली; अलङ्कल् मालै–हिलनेवाली मालाधारी; नळि नऱु कुञ्चि–(और) घना अच्छा केशवाले; मैन्तर्–वीर तरुण; तुऱै अऱि–(काम-) शास्त्र शिक्षित; कलवि चॅव्वि–सम्भोग योग्य; तोकैयर्–तरुणियों के; तूचु वीचि–वस्त्र हटाकर; निऱै अकल्–(सौंदर्य-) भरा विशाल; अल्कुल् पुल्कुम्–जघन को अलंकृत करनेवाले; कलऩ्–आभरण को; कऴित्तु–निकालकर; अकल नीत्तार्–दूर फेंक दिया; अऱै पऱै अऩैय नीरार्–पिटकर बजनेवाले ढोल के स्वभाव-वाले; अरु मऱैक्कु आवरो–मुख्य रहस्यों में साथ रखने योग्य हैं क्या। १०६४

सुवासित मालाधारी तरुण जब कोकशास्त्र के अनुसार उसके लिए योग्य तरुणियों से प्रसंग करते हैं, तब पहले वे उनके वस्त्र हटा देते हैं। बाद में सुन्दर विशाल नितम्बों को लपेटे रहनेवाले आभरणों को भी उतारकर दूर रख देते हैं। वे आभरण शब्द करने लगेंगे तो रहस्य, रहस्य नहीं रह जायगा। ढोल के समान मुखर लोग रहस्य के लिए योग्य नहीं हैं। (यह अर्थान्तरन्यास है।)। १०९४

पॊऩ्ऩरुङ् गलऩुऩ् दूशुम् पुऱत्तुळ दुऱत्तल् पोह
नऩ्ऩुद लॊरुत्ति तऩ्बा लहत्तुळ नाणु नीत्ताळ्
उऩ्ऩरुन् दुऱवु पूण्ड वुरऩुडै यॊरुव ऩ्ऩॊपोल्
तऩ्ऩयुन् दुऱक्कुन् दऩ्मै कामत्ते तङ्गिऱ् ऱऩ्ऱे 1095

नल् नुतल् ऒरुत्ति–सुन्दर ललाटवाली एक; पॊऩ् अरु कलऩुम्–स्वर्ण के अच्छे आभरण; तूचुम्–(और) वस्त्र; पुऱत्तु उळ–बाहर के; तुऱत्तल्–दूर करना; पोक–एक ओर रहे; तऩ् पाल्–अपने पास; अकत्तु उळ–अन्तस्थ; नाणुम् नीत्ताळ्–लाज भी छोड़ दी; उऩ् अरु तुऱवु पूण्ट–जो सोचना भी कठिन है वह संन्यास जिसने लिया है; उरऩ् उटै ऒरुवऩ् पोल्–उस साहसी एक पुरुष के समान; तऩ्ऩैयुम् तुऱक्कुम् तऩ्मै–अपने (अहंकार) को भी त्यागने का गुण; कामत्तु तङ्किऱ्ऱु अऩ्ऱे–काम में भी होता है न। १०९५

सुन्दर ललाटवाली एक स्त्री ने प्रसंग के अवसर पर स्वर्णाभरण और वस्त्र दूर किये। यह तो बाह्य वस्तुएँ हैं। उसने अपने अन्तर की बात, लाज को भी त्याग दिया। संन्यासी ही आपा त्याग देते हैं। काम में भी यह आपा छोड़ देने की प्रवृत्ति है, यह बड़ा आश्चर्य है। १०९५

पॊरुवरु मदऩऩ् पोल्वा ऩॊरुवऩुम् पूविऩ् मेलत्
तिरुविऩुक् कुवमै शाल्वा ळॊरुत्तियुज् जेक्कैप् पोरिल्
ऒरुवरुक् कॊरुवर् तोला रॊत्तऩ रुयिरु मॊऩ्ऱे
इरुवर्द मुणर्वु मॊऩ्ऱे यॆऩ्ऱपो दियावर् वॆल्वार् 1096

पॊरुवु अरु–उपमाहीन; मतऩऩ् पोल्वाऩ्–मदन सम एक; पूविऩ् मेल्–(कमल-) पुष्प पर विराजनेवाली; अ तिरुविऩक्कु–उस श्रीदेवी की; उवमै–उपमा; चाल्वाळ् ऒरुत्तियुम्–बन सकनेवाली एक स्त्री; चेक्कै पोरिल्–रतिसमर में; ऒरुवरुक्कु ऒरुवर् तोलार–परस्पर नहीं हारे; ऒत्तऩर्–समान रहे; इरुवर् तम् उयिरुम् ऒऩ्ऱे–दोनों की जानें एक हैं; उणर्वुम् ऒऩ्ऱे–मनोभाव एक हैं; ऎऩ्ऱ पोतु–ऐसी स्थिति में; वॆल्वार् यावर्–जीतेंगे कौन। १०९६

स्वोपम सुन्दर और मन्मथ तुल्य एक पुरुष और कमला तुल्य एक स्त्री रतिसमर में लगे। दोनों में एक भी नहीं हारा; दोनों समान रहे। हाँ, दोनों की जानें एक हैं; मनोभाव एक हैं। फिर जीतेगा कौन ?। १०९६

कॉळ्ळैप्पोर् वाट्क णाळङ् गॉरुत्तियोर् कुमर ऩऩ्ऩाऩ्
वळ्ळत्ता रहलन् दऩ्ऩै मलर्क्कैयाऩ् मऱैप्प नोक्कि
उळ्ळत्ता रुयिर ऩाण्मे लुदैपडु मॅऩ्ऱु नीर्नुङ्
गळ्ळत्ताऱ् पुदैत्ती रॅऩ्ऩा मुऩ्ऩैयिऱ् कऩऩ्ऱु मिक्काळ् 1097

अङ्कु–वहाँ; कॉळ्ळै पोर्–जानें लूटनेवाले युद्ध में प्रयुक्त; वाळ् कण्णाळ्–तलवार सदृश आँखोंवाली; ओर् कुमरऩ् अऩ्ऩाऩ्–एक कार्तिकेय सम (उसके नायक) के; वळ्ळम्–पुष्ट; तार् अकलम् तऩ्ऩै–(अपने) मालाधारी वक्षस्थल को; मलर् कैयाल् मऱैप्प–पुष्प-सम हाथों से ढँक लेने पर; नोक्कि–देखकर; उळ्ळत्तु–दिल में; आर–रहनेवाली; उयिर् अऩ्ऩाळ् मेल्–प्राण सम (अन्य नायिका) पर; उतै पटुम् ऍऩ्ऱु–लात पड़ेगी, समझकर; नुम् कळ्ळत्ताल्–अपनी प्रवंचना से; नीर् पुतैत्तीर्–तुमने छिपाया; ऍऩ्ऩा–कहकर; मुऩ्ऩैयिऩ्–पहले से भी अधिक; कऩऩ्ऱु मिक्काळ्–क्रोधशील हुई। १०९७

उधर युद्ध में वीरों को बड़ी संख्या में मारनेवाली तलवार के समान आँखों की एक नायिका ने रूठकर अपने प्रेमी के विशाल सुन्दर वक्षस्थल पर लात मारी। उसने अपने कमल-करों से वक्ष को छिपा लिया। यह देखकर नायिका को पहले से अधिक रोष आ गया। उसने उलाहना किया कि तुम्हारे हृदय में चोर नायिका है। उस पर लात पड़ेगी, उसे रोकना चाहिए, इसीसे तुमने अपने वक्ष को ढँक लिया। १०९७

पालुळ पवळच् चॅव्वाय्प् पणैमुलै निहर्त्त मॅऩ्ऱोळ्
वेलुळ नोक्कि ऩाळोर् मॅल्लियल् वेलैयऩ्ऩ
मालुळ शिन्दै याऩोर् मऴैयुळ तडक्कै याऱ्कु
मेलुळ वरम्बै माद रॅऩ्बदोर् विरुप्पै यीन्दाळ् 1098

पाल् उळ—दुग्धरुचियुक्त; पवळम् चॅम्मै वाय्–प्रवाल सम लाल मुख; पणै मुलै–पीन स्तन; निकर्त्त–परस्पर सम; मॅल् तोळ्–(स्पर्श-) मृदु स्कन्ध; वेल् उळ–भाले का सा कृत्य करनेवाली; नोक्किऩाळ्–आँखों की; ओर् मॅल् इयल्–एक मृदु स्वभाववाली ने; वेलै अऩ्ऩ–सागर के समान; माल् उळ–(बड़े) प्रेम के; चिन्तैयाऩ्–मन के; ओर् मऴै उळ–एक मेघ समान; तट कैयाऩ्कु–(दानशील) विशाल हाथवाले को; मेल् उळ–स्वर्गवासिनी; अरम्पैमातर् ऍऩ्पतु ओर् विरुप्पै–अप्सरा ही माननेयोग्य विशिष्ट प्रेम-सुख; ईन्ताळ्–दिया। १०९८

एक नायिका अति सुन्दर थी। उसके लाल अधरों में दूध का-सा स्वाद था; स्तन पीन थे। कंधे परस्पर सम थे और स्पर्श करने में मृदु और सुखद थे। उसकी आँखें भाले का-सा काम करनेवाली थीं। वह रति-कला चतुर भी थी। उसका प्रेमी सागर-सम अत्यधिक राग रखता था। वह मेघ-सम दानशील हाथ वाला था। उस नायिका ने उसे इतनी और ऐसी तृप्ति दी कि वह समझने लगा कि यह अप्सरा है!

(नायक की दानशीलता और अप्सरा की बात से अनुमान किया जा सकता है कि वह वार वनिता है) । १०९८

पुऩत्तुऱै मयिलऩाळ् कॉऴ़ुनऩ् पॉय्युरै, निऩैत्तऩळ् शीऱुवा ळॉरुत्ति नीडिय
शिऩत्तिऩैक् कादलऩ् शेक्कैप् पोरिडै, मऩत्तुऱै कादले वाहै कॉण्डदे 1099

कॉऴ़ुनऩ्–पति के; पॉय् उरै निऩैत्त्तऩळ्–असत्य भाषण सोचकर; चीऱुवाळ्–गुस्सा करनेवाली; पुऩत्तु उऱै–पर्वत के क्षेत्रों के वासी; मयिल् अऩ्ऩाळ्–मोर के समान रहनेवाली; ऑरुत्ति–एक के; नीटिय चिऩत्तिऩै–दीर्घ क्रोध को; कातलऩ् चेक्कै पोर् इटै–प्रेमी पति के साथ प्रसंग-कार्य के अवसर पर; मऩत्तु उऱै कातले–मन के प्रेम ने ही; वाकै कॉण्टतु–जीत लिया । १०९९

पर्वत के प्रदेशों में रहनेवाले मोर की-सी छटावाली एक नायिका को अपने प्रेमी के झूठ बोलने से गुस्सा हुआ । लेकिन उसके मन में प्रेमी के प्रति और उससे मिलने में बड़ा अनुराग था । उसी ने उसके दीर्घ क्रोध को जीत लिया । मिलनेच्छा क्रोध पर हावी हो गयी । १०९९

कॉलैयुरु वमैन्दॆऩ्ऩक् कॉडिय नाट्टत्तोर्
कलैयुरु वल्हुलाळ् कणवऩ् पुल्हुवाळ्
शिलैयुरु वऴ़ितरच् चिऱन्द मार्बिऱ्ऱऩ्
मुलैयुरु विऩ्ऩॆऩ्ऩ मुदुहै नोक्किऩाळ् 1100

कॉलै–वधकर्म ने; उरु अमैन्ततु ऍऩ्ऩ–रूप धर लिया हो ऐसा; कॉटिय नाट्टत्तु–भयंकर नेत्रों के साथ; ओर् कलै उरुवु अल्कुलाळ्–वस्त्र के बाहर दिखनेवाले जघन की एक ने; कणवऩ् पुल्कुवाळ्–पति का आलिंगन करके; चिलै उरु–पर्वत की सौम्यता; अऴ़ि तर–हराते हुए; चिऱन्त मार्पिल्–उत्कृष्ट हुए (उसके) वक्ष में; तऩ् मुलै–अपने स्तन; उरुविऩ ऍऩ्ऩ–घुस आये, यह जानने के लिए; मुतुकै नोक्किऩाळ्–पीठ को देखा । ११००

एक नायिका के अंग बड़े ही सुगठित और सुघड़ थे । आँखें थीं जो मृत्यु का ही दूसरा रूप था । वह महीन वस्त्र पहने थी जिसके द्वारा जघनप्रदेश बाहर दिखाई देता था । (वह अपने अंगों के विशेष आकर्षण से अभिज्ञ भी थी । उसे उन पर गर्व था ।) उसने अपने पति का सामने से आलिंगन किया । उसके स्तन उसके प्रेमी के पर्वत विजयी, सुगठित वक्ष में घुसे से लगे । उसने प्रेमी की पीठ पर यह जानने को देखा कि क्या वे बाहर दिखाई देते हैं । ११००

कुङ्गुम मुदिऱ्न्दऩ कोदै शोऱ्न्दऩ, शङ्गिऩ मुरऩ्ऱऩ कलैयुञ् जाऱिऩ
पॉङ्गिऩ शिलम्बुहळ् पूश लिट्टऩ, मङ्गैय रिळनल मैन्द रुण्णवे 1101

मङ्कैयर्–बालाओं के; इळनलम्–यौवनरस को; मैन्तर् उणण–जब पट्ठों ने

स्वादन किया; कुङ्कुमम्–तब कुंकुम; उतिर्न्तत–चू गये; कोतै चोर्न्तन–केश बिखरे; चङ्कु इत्तन् मुरन्ऱ्त–शंखकंकण क्वणित हुये; कलैयुम् चाऱ्त्त–वस्त्र खिसक गये; चिलम्पुकळ्–नूपुरों ने; पॉङ्कित्त पूचल् इट्टत्त–अत्यधिक शब्द किया। ११०१

जब हृष्ट-पुष्ट तरुण लोग तरुणियों के यौवन-सुख का भोग करते हैं तब क्या-क्या होते हैं, इनका सम्मिलित स्वाभाविक चित्रण है। कुंकुम की चित्रकारी मिट जाती है और कुंकुम झर जाता है; केश बिखर जाते हैं। शंख-कंकण, चूड़ियाँ आदि शब्द करते हैं। वस्त्र हट जाते हैं। नूपुर अत्यधिक स्वर उठाते हैं। ११०१

तुन्ऩियुरु   पुलवियैक्   कादऱ्   चूळ्शुडर्
पऩ्ऩियॅन्नत्   तुडैत्तलुम्   बदैक्कुञ्   शिन्दैयाल्
पुन्नैयिळै   यॊरुमयिल्   पॊय्यु   ऱङ्गुवाळ्
कन्नवॆन्नु   नलत्तिन्नाऱ्   कणवऩ्   पुल्लिन्नाळ् 1102

पुत्तै इळै ऑरु मयिल्–शोभा देनेवाले आभरणों से भूषित एक मयूराभा के; तुत्ति उरु पुलवियै–(पति के लिए) त्रासक रूठन को; कातल्–कामेच्छा रूपी; चूळ् चुटर्–किरणमाली; पत्ति अन्न–ओस को जैसे (अदृश्य कर देता है); तुटैत्तलुम्–पोंछ लेने पर (दूर करने पर); पतैक्कुम् चिन्तैयाल्–उतावली से भरे मन से; पॊय् उऱङ्कुवाळ्–झूठी निद्रा वाली; कन्नवु अॆन्नुम् नलत्तिन्नाल्–स्वप्न के अच्छे बहाने से; कणवन् पुल्लिन्नाळ्–पति का आलिंगन कर लिया। ११०२

शोभा देनेवाले आभरण-धारिणी और मयूर छटावाली एक स्त्री की, पति को त्रास देनेवाली रूठन रूपी ओस को प्रसंगलालसा रूपी किरणमाली ने दूर कर दिया। यानी उसके मन में रति की तीव्र इच्छा जाग उठी। वह झूठी नींद सो रही थी, सोने का बहाना कर रही थी। अब उचित स्वप्न का अच्छा बहाना किया और अपने पति को हाथों के पाश में ले लिया। ११०२

वट्टवाण्   मुहत्तॊरु   मयिलु   मन्ऩत्तुम्
किट्टिय   पोदुडल्   किडैक्कप्   पुल्लिन्ऩार्
विट्टिलर्   कङ्गुलिन्   विडिवु   कण्डिलर्
ऑट्टिय   वुडल्पिरिप्   पुणर्हि   लामैयाल् 1103

वट्टम्–गोल; वाळ् मुकत्तु–उज्ज्वल मुखी; ऑरु मयिलुम्–एक मयूराभा स्त्री और; मन्ऩत्तुम्–एक राजा (नायक); किट्टिय पोतु–जब (प्रसंग में) मिले; उटल् किटैकक–शरीर को मिलाते हुए; पुल्लिन्ऩार्–परस्पर बाहुपाश में बाँध लिया; ऑट्टिय उटल्–जुड़े हुए शरीरों को; पिरिप्पु–अलग करना; उणर्किलामैयाल्–(जानने) चाहने के कारण; विट्टिलर्–(परिरम्भण को) नहीं छोड़ा; कङ्कुलिन् विटिवु–रात का अन्त होना भी; कण्टिलर्–न जाना। ११०३

गोल आकार का और उज्ज्वल मुख और मयूर की आभा वाली एक

नायिका और राजा नायक मिले। दोनो ने अपने दो शरीरों को परिरंभण में (मानो) एक बना लिया। जुड़े उनको अलग करने की सुधि ही नहीं हुयी। उसी स्थिति में रात बीत गयी। वह भी वे जान नहीं पाये। ११०३

अरुङ्गळि माल्हळि ऱऩैय वीरर्क्कुम्
करुङ्गुऴऩ् महळिर्क्कुङ् गलविप् पूशलाल्
नॅरुङ्गिय वऩमुलै शुमक्क नेर्हला
मरुङ्गॅऩत् तेय्न्ददम् मालैक् कङ्गुले 1104

अरु कळि–उन्मत्त; माल् कळिऱु अऩैय–मस्ती भरे हाथी के समान; वीरर्क्कुम्–वीरों में; करु कुऴल् मकळिर्क्कुम्–और काले केशवाली स्त्रियों में; कलवि पूचलाल–(हुए) प्रणय कलह में ही; अ मालै कङ्कुल्–वह उपयुक्त रात; नॅरुङ्किय वऩम् मुलै–सटे हुए सुन्दर उरोजों को; चुमक्क नेर्कला–वहन न कर सकनेवाली; मरुङ्कु अॅऩ–कमर के समान; तेय्ऩ्ततु—क्षीण-हीन हुई। ११०४

मुदित, मद-मत्त गज तुल्य वीरों और काले केशवाली उनकी प्रेयसियों के लिए प्रसंग के युद्ध (उलझन) में ही रात ऐसे क्षीण और हीन हो गयी जैसे स्त्रियों की कमर सटे हुए सुन्दर उरोजों का भार वहन कर न सकने से छीज जाती है। ११०४

कडैयुऱ नऩ्ऩॅऱि काण्गि लादवर्क्
किडैयुऱु तिरुवॅऩ विन्दु नन्दिऩाऩ्
पडर्दिरैक् करुङ्गडऱ् परमऩ् मार्बिडैच्
चुडर्मणिक् करशॅऩ विरवि तोऩ्ऱिऩाऩ् 1105

नल् नॅऱि–पुण्य कार्य; कटै उऱ–अन्त तक; काण्किलातवर्क्कु–न करनेवालों की; इटै उऱु–मध्य में मिली; तिरु अॅऩ–सम्पत्ति की तरह; इन्तु नन्तिऩाऩ्–चन्द्र अदृश्य हुआ; परमऩ् मार्पु इटै–परमेश्वर श्रीविष्णु के वक्ष-मध्य; चुटर्–भासमान; मणिक्कु अरचु अॅऩ–मणिराज (कौस्तुभ) के समान; इरवि–रवि; पटर् तिरै–फैलनेवाली तरंगों के; करु कटल्–नीले सागर में; तोऩ्ऱिऩाऩ्–उदय हुआ। ११०५

आखिर तक जो पुण्य-कार्य नहीं करते उनकी, मध्य में प्राप्त संपत्ति जैसे मिटकर लुप्त हो जाती है वैसे ही इन्दु भी अस्त हो गया। परब्रह्म श्रीविष्णु के वक्ष में भासमान रहनेवाले मणियों में श्रेष्ठ कौस्तुभमणि के समान सूर्य विस्तृत तरंगोंवाले नीले सागर में से उग आये। (चन्द्र घटता और बढ़ता है और उसका प्रकाश प्रतिफलित प्रकाश है। इस तरह अधूरे पुण्यकृतों की संपत्ति अपूर्ण है।)। ११०५

18. ऍदिर्कोळ् पडलम् (अगवानी पटल)

अडानॆऱि यडैदल् शॆल्ला वरुमऱै यऱैन्द नीदि
विडानॆऱिप् पुलमैच् चॆङ्गोल् वॆण्कुडै वेन्दर् वेन्दन्
पडामुह मलैयिऱ् ऱोन्ऱिप् परुवमुऱ् ऱरुवि नल्हुम्
कडानिऱै याऱु पायुङ् कडलॊडुङ् गङ्गै शेर्न्दान् 1106

अटा नॆऱि अटैतल् चॆल्ला—धर्म-विरुद्ध मार्ग पर न चलनेवाले; अरु मऱै अऱैन्त—असाधारण (श्रेष्ठ) वेदों में उक्त; नीति विटानॆऱि—नीतिसम्मत साधु व्यवहार; पुलमै—विद्वत्ता; चॆङ्कोल्—निर्दोष राज्यशासन; वॆण् कुटै—श्वेतछत्र; वेन्तर् वेन्तन्—(इनके) राजाधिराज; पटाम् मुकम्—मुखपट्टधारी (हाथियों के); मलैयिल् तोन्ऱि—पर्वतों पर उत्पन्न होकर; परुवम् उऱ्ऱ—प्रवाहस्थिति को प्राप्त; अरुवि नल्कुम्—नदियाँ बनकर आनेवाली; कटाम् निऱै—मदनीर भरी; आऱु पायुम्—नदियाँ जिसमें आकर मिलती हैं उस; कटलॊटुम्—(सेना-)सागर के साथ; कङ्कै चेर्न्तान्—गंगातट पर पहुँचे। ११०६

राजाधिराज दशरथ की सेना गंगा नदी के तट पर आ पहुँची। दशरथ धर्मविरुद्ध मार्ग पर न चलनेवाले, वेदोक्त नीति-परायण, शास्त्र ज्ञानी, सुशासक और श्वेतछत्रधारी थे। उनकी सेना सागर-सम थी तो मुखपट्ट पहने हुए हाथीरूपी पर्वतों से निकलकर मदजल की धाराएँ जो मिलकर नदियों में बढ़ गयीं वे नदियाँ थीं जो इस सेना-सागर में आकर संगमित हुयीं। (इसमें दो ध्यान योग्य बातें हैं— सेना को सागर कहने पर नदियों की योजना और सागर का नदी से जाकर मिलना।)। ११०६

कप्पुडै नावि नाह रुलहमुङ् गण्णिऱ् ऱोन्ऱत्
तुप्पुडै मणलिऱ् ऱाहिक् कङ्गैनीर् शुरुङ्गिक् काट्ट
अप्पुडै अन्िक वेलै यकन्पुनन् मुहन्दु मान्द
उप्पुडैक् कडलुन् दॆण्णी रुण्णशै युऱ्ऱ दन्ऱे 1107

कङ्कै—गंगानदी; कप्पु उटैय—दो नोक वाली; नाविन्—जीभ के; नाकर् उलकमुम्—नागों का लोक भी; कण्णिल् तोन्ऱ—आँखों में दिखे, ऐसा; नीर् चुरुङ्कि—जल रिक्त होकर; तुप्पु उटै(य)—शुद्ध; मणलिऱ्ऱु आकि—बालू वाली होकर; काट्ट—दिखे, ऐसा; अ पुटै अन्िकम् वेलै—वहाँ जो आया वह सेना-सागर; अकन् पुनल्—विपुल जल को; मुकन्तु मान्त—उठाकर पी गया इससे; उप्पु उटै(य) कटलुम्—नमकीन सागर भी; अन्ऱु—उस दिन; तॆळ् नीर् उण्—शुद्ध जल पीने को; नचै उऱ्ऱतु—इच्छा करने लगा। ११०७

सेना के वीरों ने गंगा के जल को लेकर पान कर लिया तो नदी ही सूख गयी। द्विरसना सर्पों का पाताललोक नज़र आने लगा। तल के शुद्ध बालू भी दिखाई देने लगे। नमकीन समुद्र भी शुद्ध जल पीने को तरसने लग गया। ११०७

आण्डुनिऩ् ऎऴुन्दु पोहि यहऩ्पणै मिदिलै यॆऩ्ऩुम्
ईण्डुनीर् नहरिऩ् पाङ्ग रिरुनिलक् किऴव ऩॆय्दत्
ताण्डुमाप् पुरवित् ताऩैत् तण्णळिच् चऩह ऩॆऩ्ऩुम्
तूण्डरु वयिरत् तोळाऩ् शॆय्दद्दु शॊल्ल लुऱ्ऱाम् 1108

इरु निलम् किऴवऩ्–विशाल भूमि के स्वामी; आण्टु निऩ्ऱु ऎऴुन्तु–वहां से निकलकर; पोकि–जाकर; अकऩ् पणै–विस्तृत खेतों और बागों से आवृत; मितिलै ऎऩ्ऩुम्–मिथिला नाम की; ईण्टु नीर्–जल समृद्ध; नकरिऩ् पाङ्कर्–नगर के निकट; ऎय्त–पहुँचे, तब; ताण्टु मा पुरवि–सरपट दौड़नेवाले बड़े-बड़े अश्वों की सेना; तण् अळि–और शीतल करुणा के स्वामी; चऩकऩ् ऎऩ्ऩुम्–जनक नाम के; तूण् तरु वयिरम् तोळाऩ्–(लौह-) स्तंभ सदृश कठोर कंधोंवाले का; चॆय्ततु–कृत्य; चॊल्लल् उऱ्ऱाम्–कहेंगे । ११०८

विशाल भूमि के पति चक्रवर्ती दशरथ वहाँ से निकलकर अपनी विपुल सेना के साथ मिथिला नगर के पास पहुँचे। वह नगर जल-समृद्ध था और उसके चारों ओर खेतों और बागों की उर्वर भूमि थी। तब सरपट दौड़नेवाले अश्वों की सेना के स्वामी, शीतल करुणानिधान, लौहस्तम्भ समान बाहुवाले जनक नामक महाराज ने क्या किया उसका वर्णन करेंगे। ११०८

वन्दऩ ऩरश ऩॆऩ्ऩ मऩत्तॆऴु मुवहै पॊङ्गक्
कन्दडु कळिऱुन् देरुङ् गलिऩमाक् कडलुञ् चूऴच्
चन्दिर ऩिरवि तऩ्ऩैच् चार्वदोर् तऩ्मै तोऩ्ऱ
इन्दिर तिरुवऩ् ऱऩ्ऩै ऎदिर्हॊळ्वा ऩॆऴुन्दु वन्दाऩ् 1109

अरचऩ् वन्तऩऩ् ऎऩ्ऩ–राजा आये, यह (चरों ने) कहा, तब; मऩत्तु ऎऴुम्–मन में उठा; उवकै–आनन्द; पॊङ्क–उमड़ आया; कन्तु अटि–खूँटा तोड़नेवाले; कळिऱुम्–गजों और; तेरुम्–रथों और; कलिऩम् मा कटलुम्–बागडोर वाले अश्वों की सेना के सागर के; चूऴ–घेरते आते; चन्तिरऩ्–चन्द्र; इरवि तऩ्ऩै–सूर्य के पास; चार्वतु ओर् तऩ्मै–गया, यह विचित्र हालत; तोऩ्ऱ–(हो गई हो ऐसा) दृश्य पैदा करते हुए; इन्तिर तिरुवऩ् तऩ्ऩै–इन्द्रतुल्य लक्ष्मीवान (दशरथ) को; ऎतिर् कॊळ्वाऩ्–सामने मिलकर ले आने के लिए; ऎऴुन्तु वन्ताऩ्–निकलकर आये । ११०९

'राजाधिराज दशरथ आ गये,' यह समाचार चरों ने राजा जनक को दिया। राजा के मन में अपार आनन्द उमड़ आया। इन्द्र समान श्रीमंत चक्रवर्ती के स्वागत के लिए रवाना हो गये। तब उनके साथ खूँटे तोड़नेवाले गज, रथ और बागडोर सहित अश्वों की सेना के सागर चले। उनका जाना ऐसा एक अनोखा और अप्राप्य दृश्य उपस्थित करता था जिसमें चन्द्र सूर्य से मिलने चले। (दशरथ सूर्यकुल के थे और जनक चन्द्रकुल के।)। ११०९

गङ्गनीर् नाडऩ् शेऩै मऱ्ऱुळ कडल्ह ळॅल्लाम्
शङ्गिऩ मार्प्प वन्दु शार्वऩ पोलच् चारप्
पङ्गयत् तिरुवैत् तन्द पाऱ्कड लॅदिर्व देपोल्
मङ्गैयैप् पयन्द मऩ्ऩऩ् शेऩैवन् दॅदिर्न्द दऩ्ऱे 1110

कङ्कै नीर् नाटऩ्–गंगाजल सिंचित देश के पति की; चेऩै–सेनाएँ; मऱ्ऱु उळ कटल्कळ् ॲल्लाम–(क्षीरसागर से) इतर सागर सब; चङ्कु इऩम् आर्प्प–शंखगणों के नाद करते; वन्तु चार्वऩ पोल्–आ मिले, ऐसा; चार–आ रही थीं, तब; पङ्कयम् तिरुवै–कमला श्रीलक्ष्मी का; तन्त पाल्कटल्–जनक क्षीरसागर; ॲतिर्वतु पोल्–सामने आ मिले, जैसा; मङ्कैयै पयन्त–(सीता) देवी के जनक; मऩ्ऩऩ् चेऩै–महाराज की सेना; वन्तु ॲतिर्न्ततु–आ मिली । १११०

उनकी सेनाओं का आना कैसा था। दशरथ की विपुल सेनाएँ लवण, इक्षु, सुरा, घृत, दधि और जल के छः सागर शंखध्वनि के साथ आ रहे हों, ऐसी आ रही थीं। देवी सीता के जनक, जनक महाराज की सेना, श्रीलक्ष्मी देवी के जनक, क्षीरसागर के समान आकर उनसे मिली। १११०

इलैकुला वयिलिऩा ऩऩिकमे ऴॅऩवुलाय्
निलैकुला महरनीर् नॅडियमा कडलॅलाम्
अलहिऩ्मा कळिऱुतेर् पुरविया ळॅऩविराय्
उलहॅला निमिर्वदे पॉरुवुमो रुवमये 1111

इलै कुलावु–पत्र के आकार का; अयिलिऩाऩ्–भालाधारी की; अऩिकम्–सेना; ॲऴु ॲऩ–सातवें (क्षीर-) सागर के समान; उलाय्–आयी, तो; निलै कुलाम्–स्थायी रूप से रहनेवाले; मकरम्–मकरों से भरे; नीर् नॅटिय–विपुल जलराशि के; मा कटल् ॲल्लाम्–बड़े समुद्र, सभी (सातों समुद्र); अलकु इल्–अकूत; मा कळिऱु ॲऩ–बड़े गजों; तेर् ॲऩ–रथों; पुरवि–अश्वों; आळ् ॲऩ–और पदातियों का रूप लेकर; विराय्–मिलकर; उलकु ॲलाम् निमिर्वते–संसार भर में आ व्याप्त हो गये, यही; पॉरुवुम् ओर् उवमै–योग्य एक उपमा है। ११११

पत्र के आकार के नोक वाले भाले के धारक जनक की सेना सातवें सागर के समान आकर मिल गयी तो सारी सेना सम्मिलित सभी (सातों) सागरों के समान लगी, जो असंख्यक गजों, रथों, अश्वों और पदातियों का रूप धारणकर संसार भर में व्याप्त हो गई। यही उपमा उपयुक्त हो सकती है। ११११

तॉङ्गल्वॅण् कुडैतॊहैप् पिच्चमुट् पडविराय्
ॲङ्गुम्विण् पुदैदरप् पहऩ्मऱैन् दिरुळॅऴप्
पङ्गयज् जॅय्यवुम् वॅळियवुम् पलपडत्
तङ्गुदा मरैयुडैक् काऩमे शालुमे 1112

तॉङ्कल्–मालायुक्त; वॅण् कुटै–श्वेतछत्र; तॉकै पिच्चम् उट्पट–झण्डों के मोरपंख छत्र, पंखे, चामर मिलाकर; विराय्–सबने मिलकर; ॲङ्कुम् विण् पुतै तर–सर्वत्र आकाश को छिपा दिया, तब; पकल् मऱैन्तु–सूर्य की धूप छिप गई; इरुळ् ॲळ–अन्धकार छाया; चॅय्यवुम् वॅळियवम्–लाल और श्वेत; पङ्कयम्–कमलों के; पल पट तङ्कु–अत्यधिक भरे; तामरै उटै कानम्—कमल-कानन; चालुम–के समान था। ११११२

मालाओं से अलंकृत श्वेतछत्र, मोरपंखछत्र, पंखे, चामर आदि जो उस सेना में अत्यधिक संख्या में थे, सर्वत्र आकाश को ढँकते रहे। तब धूप छिप गयी और अन्धेरा फैल गया। जहाँ सेना रही वह स्थान लाल और श्वेत कमलों से भरे कमल-कानन के समान लगा। १११२

कॉडियुळा ळोतनिक् कुडैयुळा ळोकुलप्
पडियुळा ळोकडऱ् पडैयुळा ळोपहर्
मडियिला वरशिऩाऩ् माऱ्बुळा ळोवळर्
मुडियुळा ळॊॅतॅरिन् दुणर्हिला मुळरियाळ् 1113

तॅरिन्तु उणर्किला–सोचकर न समझी जा सकी जो; मुळरियाळ्–वह जयश्री; पकर् मटि इला–(बुरी बात) कहलानेवाला आलस्य जिनमें नहीं था; अरचिऩाऩ्–उन शासक के; मार्पु उळाळो–वक्ष पर रहती हैं; वळर् मुटि उळाळो–उन्नत किरीट में हैं; कॉटि उळाळो–विजय पताका पर हैं; तनि कुटै उळाळो—एक-छत्र पर हैं; कटल् पटै उळाळो–सागर-सम सेना में हैं; कुलम् पटि उळाळो–कुल परम्परा में हैं। १११३

दशरथ की विजयश्री किस पर अवलंबित है, यह जानकर बताना कठिन है। क्या वह बड़ों से त्याज्य गुण जो कहा गया है उस आलस्य से दूर रहनेवाले दशरथ के वक्ष पर है; गौरवयुक्त किरीट पर; विजयध्वजा पर; अप्रतिम श्वेतछत्र पर; सागर-सम सेना पर; या उनकी कुल परम्परा पर? (विजय के सारे प्रतीक उनके पास हैं। वे सब प्रकारों से विजयी हैं।)। १११३

वार्मुहङ् गेळ्वुकॉङ् गयर्करुङ् गुळलिऩ्वण्
डेर्मुळङ् गरवमे ळिशैमुळङ् गरवमे
तेर्मुळङ् गरवम्वॅण् डिरैमुळङ् गरवमे
कार्मुळङ् गरवम्वॅङ् गरिमुळङ् गरवमे 1114

वार् मुकम्–अँगिया में; कॅळुवु–भरपूर; कॉङ्कैयर्–स्तनोंवाली (स्त्रियों) के; करु कुळलिन्–काले केशों पर (मँडरानेवाले); वण्टु–भ्रमर; एर् मुळङ्कु अरवम्–जो करते हैं वह मधुर रव; एळ् इचै मुळङ्कु अरवमे–सप्तस्वर वाले संगीत का ही नाद है; तेर् मुळङ्कु अरवम्–रथों का बड़ा शोर; वॅण् तिरै मुळङ्कु अरवमे–श्वेत तरंगोंवाले समुद्र का बड़ा गर्जन ही है; वॅम् करि मुळङ्कु अरवम्–भयंकर गजों की चिंघाड़ का शब्द; कार् मुळङ्कु अरवमे–मेघगर्जन का शोर है। १११४

अँगियों के अन्दर मचलनेवाले स्तनों की स्त्रियों के केशों पर भ्रमर जो नाद कर रहे थे वह सप्तस्वरों पर आधारित संगीत के रव से बढ़कर था। रथों के शोर (झाग के कारण) श्वेत (दिखनेवाली) तरंगों के सागर के गर्जन ही थे। भयंकर गजों की चिंघाड़ मेघ-गर्जन ही थी। (दशरथ की सेना में ये शोर उठे।)। १११४

शूऴ्मा कडल्हळुन् दिडर्पडत् तुहडवऴ्न्
देऴुपा रहमुमुऱ् ऱुळदॆऩ्ऩऱ् कॆळिदरो
आऴिया नुलहळन् दऩ्ऱुताळ् शॆऩ्ऱवप्
पूऴैयू डेपॊडित् तप्पुऱम् पोर्त्तते 1115

तुकळ्–धूल; चऴुम्–(भूलोक को) घेरते रहे; मा कटल्कळुम–बड़े सागरों को भी; तिटर पट–मैदान बनाकर; तवऴ्न्तु–फैली, इसलिए; एऴु पार् अकमुम्–सप्तदीप यह भूलोक; उऱ्ऱु उळतु–बराबर हो गया; ॲन्तल् कु–यह कहने को; ॲळितु–आसान है; आऴियाऩ्–चक्रधर श्रीविष्णु ने; उलकु अळन्त अऩ्ऱु–(जब) लोकों को नापा उस दिन; ताऴ् चॆऩ्ऱ–चरण (जिससे) गया; पूऴै ऊटे–उस छेद के द्वारा; पॊटित्तु–ऊपर जाकर; अ पुऱम् पोर्त्ततु–अण्डों के उस ओर भी व्याप गयी थी। १११५

उनकी सेना के कारण जो धूल उठी उसने समुद्रों को मैदान बना दिया। इसलिए सातों द्वीप मिल गये। भूतल बराबर स्थल बन गया। यह कोई असम्भव या कठिन बात नहीं है। उस दिन, जब चक्रधर श्रीविष्णु ने त्रिविक्रमदेव बनकर लोकों को नापा था, उनका पैर अंड को भेदकर ऊपर गया। तब जो छेद बना उससे होकर धूल ऊपर गयी और अण्ड के बाहर के सब स्थलों में व्याप गयी। धूल, जिसने उस दिन उतना किया आज इतना नहीं कर सकेगी ? । १११५

मऩ्ऩॆडुङ् कुडैमिडैन् दडैयवाऩ् मऱैदरत्
तुऩ्ऩिडुन् निऴल्वऴङ् गिरुडुरप् परिदरो
पोऩ्ऩॆडुम् पूणिडुम् पुऩैमणिक् कुलमॆलाम्
मिऩ्ऩिडुम् विल्लिडुम् वॆयिलिडुन् निलवॊडे 1116

पॊऩ् नॆटु पूण्—स्वर्ण-निर्मित श्रेष्ठ आभरण; इटुम्–(सेना में रहनेवालों के) पहने हुए; पुऩै मणि कुलम्–शोभित करनेवाले रत्नसमूह; ॲलाम्–सब एक साथ; मिऩ् इटुम्–बिजली के समान चमकते हैं; विल् इटुम्–इन्द्रधनुष के समान कांति देते हैं; निलवॊटु वॆयिल् इटुम्–चाँदनी और धूप (सा प्रकाश) बिखेरते हैं; मऩ् नॆटु कुटै मिटैन्तु–अधिक (संख्या में) बड़े-बड़े छत्र मिलकर; वाऩ् अटैय मऱै तर–आकाश भर को छिपा देते हैं, इसलिए; तुऩ्ऩिटुम्–घने रूप से फैली हुई; निऴल् वऴङ्कुम्–छाया से उत्पन्न; इरुळ्–अन्धकार को; तुरप्पु अरितु–दूर करना कठिन है। १११६

उस सेना के लोगों के स्वर्णाभरण और रत्नहारों ने बिजली के समान

और इन्द्रधनुष के समान कांति बिखेरी। वे चाँदनी के समान भी प्रकाश देते थे, धूप के समान भी। इतना होते हुए भी, बड़े-बड़े छत्रों की विपुल राशि अपनी छाया के कारण जो अन्धेरा उत्पन्न कर रही थी वह अन्धेरा दूर करना कठिन रहा। १११६

ताविऩ्मऩ् ऩवर्पिराऩ् वरमुरट् चऩहऩाम्
एवरुञ् जिलैयिऩा ऩॅदिर्वरु नॅऱियॅलाम्
तूवुतण् शुण्णमुङ् गऩहनुण् डूळियुम्
पूविऩ्मॅऩ् ऱादुहुम् पॉडियुमे पॉडियॅलाम् 1117

ता इल्–अकलंक; मऩ्ऩवर् पिराऩ्–राजाधिराज; वर–आये, तब; मुरण्–बलवान; चऩकऩ् आम्–जनक जो; ए वरुम चिलैयिऩाऩ्–शरप्रेरक धनुर्धर हैं, उनके; ऍतिर् वरुम् नॅऱि ऍलाम्–सामने से स्वागतार्थ आने के मार्ग पर; पॉटि ऍल्लाम्–धूलि सब; तूवु तण् चुण्णमुम्–छिड़के हुए शीतल चूर्ण; कऩकम् नुण् तूळियुम्–स्वर्ण के छोटे कण; पूविऩ् मॅऩ् तातु–फूलों के कोमल मकरंदों की; उकुम् पॉटियुमे–चूनेवाली धूल ही (भरी थी)। १११७

अकलंक दशरथ की सेना इस तरह आती रही। उससे धूल उठती थी न? स्वागतार्थ आनेवाले, शरप्रेषक धनुर्धर जनक जो थे उनकी सेना की क्या हाल थी? उनके मार्ग पर सुगन्धित चूर्ण, स्वर्ण चूर्ण और मकरंद चूर्ण ही थे जो लोगों ने छिटके थे। (यह मंगल सूचक है।)। १११७

नऱुविरैत् तेऩुना वियुनऱुङ् गुङ्गुमत्
तॅऱियहिऱ् ऱेय्वैयुम् माऩ्मदत् तॅक्करुम्
वॅऱियुडैक् कलवैयुम् विरवु शॅञ्जाऩ्दमुम्
शॅऱिमदक् कलुऴिपाय् शेऱुमे शेऱॅलाम् 1118

चेऱु ऍलाम्–कीच जो बनी वह सब; नऱु विरै तेऩुम्–अच्छा सुगन्धयुक्त शहद; नावियुम्–बिलावकस्तूरी; नऱु कुङ्कुमत्तु–सुगंधित कुंकुम के साथ मिला हुआ; ऍऱि अकिल् तेय्वैयुम्–कटे अगरु के टुकड़ों का घिसा लेप; माऩ् मतत्तु–मृगकस्तूरी का चेप; विरवु वॅऱि उटै–(विविध वस्तुओं का) मिला हुआ, सुगंधित; कलवैयुम्–मिश्रित चेप; चॅम् चाऩ्तमुम्–लाल चन्दन का लेप; चॅऱि मतम् कलुऴि–अधिक मदजल के; पाय् चेऱुमे–बहने से उत्पन्न कीच ही। १११८

वह मार्ग कीचड़ भरा हो गया। कौन-सा कीच? सुगंधपूर्ण शहद, बिलाव-कस्तूरी, कुंकुम, अगरु का पिसा लेप आदि का मिश्रण, मृगमद, अनेक सुगंध-पदार्थों का मिश्रित लेप, लाल चन्दन और अधिक (गजों के) मदजल के प्रवाह से बना कीचड़ —ये ही उस मार्ग के कीचड़ बने। १११८

मऩ्ऱलङ् गोदयार् मणियिऩुम् पॉऩ्ऩिऩुम्
शॅऩ्ऱुवऩ् दुलवुमच् चिदैविला निऴ्लुनेर्

वॅऩ्ऱतिण् कॉडियॉडुम् नॅडुविता ऩमुम्विराय्
निऩ्ऱवॅण् कुडैहळिऩ् निऴलुमे निऴलॅलाम् 1119

मऩ्ऱल् अम् कोतैयार्–सुवासपूर्ण सुन्दर केशवाली राजकुमारियों के; मणियिऩुम्–रत्नाभरणों; पॉऩ्ऩिऩुम्–और स्वर्णाभरणों से; चॅऩ्ऱु वन्तु उलवुम्–रह-रहकर आनेवाली; अ चितैवु इला–वह निरंतर; निऴलुम्–झाँईं और; नेर्–उनसे मिल; वॅऩ्ऱ् तिण् कॉटियॉटुम्–सुदृढ़ विजयपताकाओं के साथ; नॅटु वितानमुम्–और ऊँचे वितानों के साथ; विराय्–मिलकर; निऩ्ऱ–खुले रहे; वॅण् कुटैकळिऩ् निऴलुमे–श्वेतछत्रों की छाया ही; निऴल् ॲलाम्–छाया सब थी। ११९९

वहाँ छाया किसकी होती थी? सुवासित केशवाली राजकुल की स्त्रियों के स्वर्णाभरणों और रत्नहारों से रह-रहकर छिटकनेवाली उस निरन्तर आभा की छाया, उससे युक्त विजयपताकाओं, उन्नत वितानों और श्वेत छत्रों की छाया ही वहाँ की छाया थी। (ये छायाएँ अन्धेरी छायाएँ नहीं, वरन मनोरम शीतल प्रकाश हैं।)। ११९९

माऱिला मदुहयाऩ् वरुपॅरुन् दाऩमेल्, ऊऱुपे रुवहया ऩऩिहम्वन् दुऱ्ऱपो
दीऱिलो दयिनुला मॅऱिदिरैप् परववाय्, आऱुपाय् हिऩ्ऱदो रमलपो लाऩदे 1120

माऱु इला–अनुपम; मतुकैयाऩ्–वीर (दशरथ) की; वरु पॅरु तानै मेल्–उत्तरोत्तर बढ़ आनेवाली बड़ी सेना के सामने; ऊऱु पेर् उवकैयाऩ्–उमँगनेवाले बड़े आनन्द से पूरित (जनक) की; अनिकम्–सेना; वन्तु उऱ्ऱ पोतु–जब आ पहुँची, तब; ईऱु इल् ओतैयिऩ्–निस्सीम शोर के साथ; उलाम्–उठनेवाली; ऍऱि तिरै–तीर से टकराती हुई लहरों के; परवै वाय्–समुद्र में; आऱु पाय्किऩ्ऱतु ओर् अमलै पोल्–नदी आकर जो गिरती है उस शोर के समान; आनतु–हुआ। ११२०

अप्रतिम वीर दशरथ की विपुल सेना के साथ, वर्धनशील उमंगवाले जनक की सेना जब आ मिली तब जो कोलाहल मचा वह उस समय के शोर के समान था जब एक नदी निस्सीम गरज के साथ, तीर से टकराती रहनेवाली लहरोंवाले समुद्र से मिलती है। ११२०

कन्दये पॉरुहरिच् चऩहत्तुङ् गादले
उन्दवो दरियदोर् पॅरुमयो डुलहुळोर्
तन्दये यऩैयवत् तहविऩाऩ् मुऩ्बुतऩ्
शिन्दये पॉरुनॅडुन् दॆरिऩ्वन् दॆय्दिऩाऩ् 1121

कन्तैये पॉरु करि–खूँटे को ही तोड़नेवाले हाथी सेना के; चऩकऩुम्–जनक भी; कातल् उन्त–(दर्शन-) लालसा की प्रेरणा से; ओत अरियतु–अकथनीय; ओर् पॅरुमैयोटु–एक गौरव के साथ; उलकु उळोर्–लोकवासियों के; तन्तैये अऩैय–पितृतुल्य; अ तकविऩाऩ् मुऩ्पु–उन सर्वगुणपूर्ण के सामने; तऩ् चिन्तैये पॉरु–अपने ही मन से तुल्य; नॅटु तेरिऩ्–(वेगवान) बड़े रथ पर; वन्तु ऍय्तिऩाऩ्–आ पहुँचे। ११२१

आलान को भी तोड़नेवाले गजों की सेना के पति जनक, दशरथ के दर्शन की उतावली के कारण, एक अकथनीय शान के साथ जो सर्वलोक पिता तुल्य थे उन श्रेष्ठतायुक्त दशरथ के सामने अपने ही मन की गति से उपमेय वेग के साथ बड़े रथ पर सवार हो आये । ११२१

ॲय्दलुन् दिरुनॆडुन् देरिऴिन् दिऩियतन्
मॊय्क्कॊडिण् शेऩैपिन् ऩिऱ्कमुन् शॆऱलुम्
कैयिऩ्वन् देऱॆऩक् कडिदिऩ्वन् देऱिऩाऩ्
ऐयऩुम् मुहमलर्न् दहमुऱत् तऴुविऩाऩ् 1122

ॲय्तलुम्–पहुँचने पर; तिरु नॆट्टु तेर् इऴिन्तु–सुन्दर बड़े रथ से उतरकर; तन्–अपनी (उनकी); इऩिय–प्यारी; मॊय्कॊळ्–बलवती; तिण् चेऩै–विशाल सेना; पिऩ् निऱ्क–पीछे खड़ी हो गई, तब; मुऩ् चॆऱलुम्–आगे गये, और; ऐयऩुम्–प्रभु, चक्रवर्ती दशरथ भी; मुकम् मलर्न्तु—प्रसन्न-मुख होकर; कैयिऩ्–अपने हाथ से; वन्तु एऱु–आकर आरोहण कीजिए; ॲऩ–कहने पर; कटितिऩ् वन्तु एऱिऩाऩ्–जनक भी आकर सवार हुए; अकम् उऱ तऴुविऩाऩ्–(दशरथ ने) गले से लगा लिया । ११२२

जब रथ दशरथ के समक्ष आया तब जनक उस सुन्दर बड़े रथ पर से उतरे । उनकी बलवती बड़ी सेना पीछे खड़ी रह गयी । वे आगे पैदल चले । चक्रवर्ती ने उन्हें देखा तो उन्हें बड़ा आनन्द हुआ । उन्होंने जनक को अपने रथ पर आरोहण करने का हाथ से संकेत करके निमंत्रण दिया । जनक भी उस पर चढ़े । चक्रवर्ती ने खूब उन्हें गले से लगा लिया । ११२२

तऴुविनिऩ् ऱवऩिरुङ् गिळैयैयुन् दमरयुम्
वऴुविल्शिन् दऩैयिऩाऩ् वरिशयिन् ऩळवळाय्
ॲऴुहमुन् दुऱवॆऩा विऩिदुहन् दॆय्दिऩाऩ्
उऴुवैमुन् दरियऩा ऩॆवरिऩुम् मुयरिऩाऩ् 1123

उऴुवै मुन्तु–बाघों के सामने; अरि अऩ्ऩाऩ्–सिंह सम; ॲवरिऩुम्–हर किसी से; उयरिऩाऩ्–बढ़कर श्रेष्ठ; तऴुवि निऩ्ऱवऩ्–अपने आलिंगित जनक के; इरु किळैयैयुम्–विस्तृत परिवारों का; तमरैयैम्–मित्रों का; वरिचैयिऩ्–यथाक्रम; वऴु इल् चिन्तऩैयिऩाऩ्—कपट-रहित मन से; अळवळाय्–कुशलक्षेम पूछकर; मुन्तु उऱ ॲऴुक–आगे बढ़ चलें; ॲऩा–कहकर; इऩितु उकन्तु–तृप्त सुख के साथ; ॲय्तिऩाऩ्–गये । ११२३

बाघों के सामने सिंह सदृश, सर्वश्रेष्ठ राजा दशरथ ने अपने आलिंगित राजा जनक से निष्कलंक मन के साथ उनके विशाल परिवार के बन्धु-बान्धवों और मित्रों का यथाक्रम कुशल-समाचार पूछा । फिर, 'हम बढ़ें' यह कहकर उत्साह के साथ नगर में गये । ११२३

इऩ्ऩवा ऱिरुवरुम् मिऩियवा ऱेहवत्
तुऩ्ऩुमा नहरिऩिऩ् ऱॆंदिर्वरत् तुऩ्ऩिऩाऩ्
तऩ्ऩये यऩयवऩ् ऱळ्लये यऩयवऩ्
पॊऩ्ऩिऩ्वार् शिलैयिऱप् पुयनिमिर्त् तरुळिऩाऩ् 1124

इऩ्ऩवाऱु–इस प्रकार से; **इरुवरुम्**–दोनों; **इऩियवाऱु एक**–सुख से जब जाते रहे, तब; **तऩ्ऩैये अऩैयवऩ्**–स्वोपम (आप ही अपने से उपमेय); **तऴलैये अऩैयवऩ्**–अग्नि के ही समान; **पॊऩ्ऩिऩ् वार् चिलै**–(शिवजी के) स्वर्णरचित लम्बे धनुष के; **इऱ**–भंजक; **पुयम् निमिर्त्तरुळि ऩाऩ्**–हाथ जिन्होंने बढ़ाने की कृपा की वे (श्रीराम); **तुऩ्ऩुम्**–सर्वसमृद्ध; **मा नकरिऩ् निऩ्ऱु**–बड़े नगर (मिथिला) से; **ऎतिर् वर**–स्वागत करने के लिए; **तुऩ्ऩिऩाऩ्**–आये। ११२४

जब ये सुखपूर्वक इस प्रकार जाते रहे तब आप ही अपना उपमेय रहनेवाले श्रीराम जिन्होंने अपने हाथ से अग्नि-वर्ण तेजस्वी रुद्रदेव के स्वर्ण के लम्बे धनुष का भंजन किया था, उस सर्वसमृद्ध मिथिला नगर से अपने पिता के स्वागतार्थ निकलकर आये। ११२४

तम्बियुन् दाऩुमत् ताऩैमऩ् ऩवऩहर्प्
पम्बुतिण् पुरवियुम् बडैञरुम् पुडैवरच्
चॆम्बॊऩ्ऩिऩ् पशुमणित् तेरिऩ्वऩ् दॆय्दिऩाऩ्
उम्बरुम् मिम्बरुम् मुरहरुऩ् दॊऴ्वुळाऩ् 1125

उम्परुम्–स्वर्गलोकवासी और; **इम्परुम्**–इहलोकवासी; **उरकरुम्**–नागलोकवासी; **तॊऴ उळाऩ्**–(तीनों के) वन्द्य; **तम्पियुम् ताऩुम्**–आप और उनके लघु भ्राता; **अ ताऩै मऩ्ऩवऩ् नकर्**–उन सेना विशिष्ट राजा के नगर से; **पम्पु तिण् पुरवियुम्**–अधिक संख्या के ताकतवर अश्व; **पटैञरुम्**–पैदल वीर; **पुटै वर**–इनके (उन्हें) घेरे आते; **चॆम् पॊऩ्ऩिऩ्**–श्रेष्ठ स्वर्ण के; **पचुमणि**–उत्तम मणिमंडित; **तेरिऩ् वऩ्तु**–रथ पर सवार होकर; **ऎय्तिऩाऩ्**–आ पहुँचे। ११२५

देवलोक, भूलोक और (नागों का) पाताललोक— इन तीनों लोकों के वासियों के वन्द्य (श्रीविष्णु के अवतार) श्रीराम, अपने प्रिय लघु भ्राता श्रीलक्ष्मण के साथ, एक स्वर्णनिर्मित श्रेष्ठ मणिमंडित रथ पर आये। उनके साथ, सेना के कारण कीर्तिप्राप्त जनक के नगर से अधिक संख्या में बलवान अश्वों की सेना और पैदल सेना आई। ११२५

याऩयो पिडिहळो विरदमो विवुळियो, आऩपे रुऱैयिला निऱैवया रऱिहुवार्
ताऩयेर् चऩहऩे वलिऩॊट्टुन् दादैमुऩ्, पोऩपे रिरुवर्तम् पुडैवरुम् पटैयिऩे 1126

नॊट्टु तातै मुऩ् पोऩ–गौरवोन्नत पिता के स्वागतार्थ जो गये; **पेर् इरुवर् तम् पुटै**–उन उत्तम दोनो (श्रीराम और लक्ष्मण) को घेरकर; **तातै एर् चऩकऩ्**–श्रेष्ठ सेना के स्वामी जनक की; **एवलिऩ् वरुम्**–आज्ञा से जानेवाली; **पटैयिऩ्**–सेना-समूह में; **याऩैयो**–हाथी; **पिटिकळो**–हथिनियाँ; **इरतमो**–रथ; **इवुळियो**–अश्व, इनकी;

आत्त–प्राप्य; पेर् उऱै इला–बड़े से बड़े अदद से भी न गणनीय; निऱैवै–अधिकता को; यार् अऱिकुवार्–कौन जान सकता है । ११२६

अपने गौरवोन्नत पिता के समक्ष जो गये उन दोनों के साथ जो सेना गयी वह जनक की आज्ञा से ही गयी। उसके हाथियों, हथिनियों या अश्वों की संख्या गिनने के लिए कोई अदद ही नहीं था। फिर उसकी सही संख्या कौन जाने ? । ११२६

कावियुङ् गुवळयुङ् कडिहॊळ्हा यावुमॊत्
तोवियज् जुवैहॅडप् पॊलिवदो रुरुवॊडे
तेवरुन् दॊऴुहऴड् चिऱुवन्मुन् पिरिवदोर्
आविवन् दॆन्ऩवन् दरशन्मा डणुहिन्ऩान् 1127

काबियुम्–नीलोत्पल; कुवळैयुम्–और कुवलय (नीलकमल); कटि कॊळ्–(वर्ण-) विलक्षण; कायावुम्–अतसी; ऑत्तु–तुल्य रहकर; ओवियम्–चित्र को भी; चुवै कॅट–(अपने सामने) रूपहीन बनाकर; पॊलिवतु–जो शोभायमान था उस; ओर् उरुवॊटे–अप्रतिम रूपसौंदर्य के साथ; तेवरुम् तॊऴु कऴल्–देवपूज्यचरण; चिऱुवन्–चक्रवर्तीकुमार; मुन् पिरिवतु–पहले जो अलग हुआ; ओर् आवि–वह कोई प्राण; वन्ततु ऍन्ऩ–फिर आ गया हो; वन्तु–ऐसा आकर; अरचन् माटु–राजा के पास; अणुकिन्ऩान्–आये । ११२७

श्रीराम, जिनका वर्ण नीलोत्पल, नीलकुमुद (कुवलय) और सुन्दर रंग वाले अतसी का-सा था, जिनका रूप सौन्दर्य किसी भी कल्पित चित्र को मूल्यहीन बना सकता था और जो सर्वदेववन्द्यचरण थे, तथा जो चक्रवर्ती तनुज थे, अपने पिता के पास ऐसे गये मानो चक्रवर्ती का प्राण जो पहले उनके शरीर को छोड़ गया था अब लौट आकर मिल रहा हो। ११२७

अन्ऩिहम्वन् दडितॊऴक् कडिदुशॆन्ऩ् ऱरशर्होन्ऩ्
इन्ऩियपैङ् कऴल्पणिन् दॆऴुदलुन् दऴुविन्ऩान्
मन्ऩुवॆन्ऩुन् दहैयन्मार् बिडैमऱैन् दन्ऩमलैत्
तन्ऩिनॆडुञ् जिलैयिऱत् तवऴ्दडङ् गिरिहळे 1128

अन्तिकम् वन्तु अटि तॊऴ–(चक्रवर्ती की) सेना ने आकर उनके चरणों में नमस्कार किया; कटितु चॆन्ऱु–(वे) जल्दी जाकर; अरचर्कोन्–राजाओं के राजा के; इन्तिय पचुमै कऴल्–प्यारे, श्रेष्ठ स्वर्ण के (बने) पायलधारी चरणों पर; पणिन्तु ऍऴुतलुम्–नमस्कार कर (उठे), उठने पर; तऴुविन्ऩान्–बाहुपाश में लिया; मन्तु ऍन्नुम् तकैयन्–मनु मान्य उनके; मार्प् इटै–वक्षस्थल में; मलै तन्नि नॆटु चिलै–पर्वतसम अप्रतिम दीर्घ धनुष को; इऱ–तोड़ते हुए; तवऴ्–उसके साथ जिन्होंने लीला की; तट किरिकळ–वे विशालगिरियाँ (बाहुएँ); मऱैन्तत्त–अन्तर्निहित हो गये । ११२८

जब वे जा रहे थे तब उनकी सेना ने उनके चरणों पर नमन किया।

वे स्वीकार करते हुये शीघ्र गये और अपने पितृदेव के श्रेष्ठ स्वर्ण के बने पायलधारी चरणों पर नमस्कार करके उठे। तब चक्रवर्ती ने उनको गले लगा लिया। उस समय श्रीराम के विशाल हाथ भी, जिन्होंने पर्वत-सम, अप्रमेय और बड़े धनुष को तोड़ने का दुस्तर काम किया था, चक्रवर्ती के विशाल वक्षस्थल में समा गये थे। ११२८

इळैयपैङ् गुरिशिल्वन् दडिपणिन् दॅ़ळुदलुम्
तळैवरुन् दॉडयन्मार् बुऱमिहत् तळुवित्तान्
कळैवरुन् दुयरऱक् कगत्तमॅण् डिशैयॅलाम्
विळैतरुम् बुहऴित्ता न्ॅवरित्तुम् मिहुदियान् 1129

कळैवु अरुम्–दुर्निवार; तुयर्–(शंबरासुर से मिले) संकट; अऱ–दूर करके; ककत्तम्–आकाशलोक में; ऍण् तिचै ऍल्लाम्–आठों दिशाओं भर में; विळैतरुम्–होकर बढ़नेवाली; पुकऴित्तान्–कीर्तिवाले; ऍवरित्तुम् मिकुतियान्–सब (किसी) से बढ़कर श्रेष्ठ; इळैय पैङ्कुरिचिल् वन्तु–छोटे, स्वर्णवर्ण के राजकुमार (लक्ष्मण) के आकर; अटि पणिन्तु–चरणों पर नमन करके; ऍऴुतलुम्–उठने पर; तळै वरुम् तॉटैयल्–गुँथी हुई मालाधारी; मार्पु उऱ–वक्ष से लगाकर; मिक तऴुवित्तान्–खूब आलिंगन कर लिया। ११२६

शंबरासुर का वध करके, उसका त्रास दूर करने के कारण दशरथ की महिमा स्वर्गलोक में फैली थी। उनकी कीर्ति दिशा-दिशा में व्याप्त थी। वे सब (किसी) से श्रेष्ठ थे। उनके चरणों पर लघुराज श्रीलक्ष्मण ने भी आकर नमस्कार किया। नमस्कार कर उठते ही दशरथ ने उनको अपने माला से अलंकृत सुन्दर वक्ष से खूब कसकर लगा लिया। ११२९

कऱ्ऱैवार् शडैयित्तान् कैक्कॉळुन् दनुविऱक्
कॉऱ्ऱनीळ् पुयनिमिर्त् तरुळुमक् कुरिशिऱान्
पॅऱ्ऱदा यरैयुमप् पॅऱ्ऱियिऱ् ऱॉऴुदॅऴुन्
दुऱ्ऱपो दवर्मनत् तुवहया रुरैशॅय्वार् 1130

कऱ्ऱै वार्–घनी मिली हुई और लम्बी; चटैयित्तान्–जटाधारी; कै कॉळ्ळुम् तनु–अपने हाथ में जिसको रखते थे वह धनु; इऱ–टूट जाय, ऐसा; कॉऱ्ऱम् नीळ् पुयम्–विजयिनी और लम्बी भुजाएँ; निमिर्त्तरुळम्–जिन्होंने बढ़ाने की कृपा की; अ कुरिचिल्–वे प्रभु श्रीराम; पॅऱ्ऱ तायरैयुम्–जननियों को; अ पॅऱ्ऱियिन्–उसी प्रकार से; तॉऴुतु–नमस्कार करके; ऍऴुन्तु–उठकर; उऱ्ऱपोतु–उनके समीप गये, तब; अवर् मनत्तु उवकै–उनके मन का आनन्द; उरै चॅयवार् यार्–वर्णन कर सकेंगे कौन। ११३०

जटाजूटधारी श्री शिवजी के धनु को तोड़ने के लिए जिन्होंने अपने विजयशील दीर्घ हाथ बढ़ाये थे उन (धनुभंजक) श्रीराम ने अपनी तीनों माताओं के चरणों पर नमस्कार किया। जब वे उनके पास गये तब

उनके (माताओं के) मन में जो आनन्द हुआ उसका वर्णन कौन कर सकेगा ? । ११३०

उऩ्ऩुपे ऱऩ्बुमिक् कॊऴुहियॊत् तॊण्गणीर्
पऩ्ऩुता रैहडरत् तॊऴुदॆऴुम् बरदऩैप्
पॊऩ्ऱिऩ्मार् बुऱवणैत् तुयिरुऱप् पुल्लिऩाऩ्
तऩ्ऩैयत् तादैमुऩ् ऱऴुविऩा लॆऩ्ऩवे 1131

उऩ्ऩु पेर् अऩ्पु–सदा स्मरण करनेवाला उत्कट प्रेम; मिक्कु ऒऴुकि (यतु) ऒत्तु–बढ़कर, छलककर बाहर आया, ऐसा; ऒण् कण्–उज्ज्वल आँखों ने; नीर् पऩ्ऩु–अश्रुजल भरी; तारैकळ् तर–धाराएँ बहाईं; तॊऴुतु ऎऴुम्–नमस्कार करके जो उठे; परतऩै–उन भरत को; पॊऩ्ऱिऩ् मार्पु उऱ–स्वर्णसम अपने वक्ष से कसकर; अणैत्तु–लगाकर; अ तातै–उन पिता ने; तऩ्ऩै–अपने को; मुऩ् तऴुविऩाल् ऎऩ्ऩवे–पहले जैसे आलिंगन किया, उसी प्रकार; उयिर् उऱ–प्राणों से लगाकर; पुल्लिऩाऩ्–बाहुपाशबद्ध किया —(श्रीराम ने) । ११३१

फिर भरत श्रीराम के चरणों में पड़े । उनकी आँखों से प्रेमाश्रु बह रहा था, मानो सदा स्मरण के साथ बढ़नेवाला वह प्रेम दिल के अन्दर समा नहीं सका और छलककर बाहर निकल आया हो । श्रीराम ने उनका ऐसा गाढ़ा आलिंगन किया जैसे उनके पिता ने उनका किया था । ११३१

करियवऩ् पिऩ्बुशॆऩ् ऱवऩरुङ् गादलिऩ्
पॆरियवऩ् ऱम्बियॆऩ् ऱेवरुन् दुदिशॆय्दार्प्
पॊरुवरुङ् कुमरर्तम् पुऩैनऱुङ् गुञ्जियाल्
इरुवर्पैङ् गऴलुम्वन् दिरुवरुम् वरुडिऩार् 1132

करियवऩ् पिऩ्पु चॆऩ्ऱवऩ्–नीलवर्ण (श्रीराम) के अनुगामी; अरुम् कातलिऩ्–गम्भीर प्रेम में; पॆरियवऩ् तम्पि–बढ़े हुए (भरत) का छोटा भ्राता; ऎऩ्ऱु–कहकर; एवरुम् तुति चॆय्–सबसे प्रकीर्तित; तार्–पुष्पमालाधारी; पॊरु अरु कुमरर् इरुवरुम्–अनुपम दोनो कुमारों (लक्ष्मण और शत्रुघ्न) ने; वऩ्तु–आकर; इरुवर् पैङ्कऴलुम्–(भरत और श्रीराम) दोनो के श्रीचरणों को; तम् पुऩै नऱु कुञ्चियाल्–अपने अलंकृत और सुगन्धपूर्ण केशवाले सिरों से; वरुटिऩार्–सहलाया (चरणों पर सिर लगाये) । ११३२

"लक्ष्मण नीलवर्ण श्रीराम के अनुगामी हैं; और शत्रुघ्न श्रीरामभक्ति में उत्कृष्ट भरत के ही अनुज हैं ।" ऐसे दोनों प्रकीर्तित थे । श्रीलक्ष्मण ने आकर भरत की दण्डवत की और शत्रुघ्न ने श्रीराम के चरणों पर नमस्कार किया । (लक्ष्मण भगवत-सेवा में और शत्रुघ्न भागवत-सेवा में लीन परम भक्त थे ।) । ११३२

कोलवरुञ् जॆम्मयुङ् कुडैवरुन् दण्मयुम्
शालवरुञ् शॆल्वमॆऩ् ऱुणर्बॆरुन्ल् दादैपो

मेलवरुन् दहैमयान् मिह्विळङ् गिऩ्ऱ्हडाम्
नाल्वरुम् बॊरुविऩ्ऩाऩ् मऱैयॆऩ्ऩुन् नडैयिऩ्ऩाऱ् 1133

ताम् नाल्वरुम्–वे चारों; पॊरु इल् नाल् मऱै–अप्रमेय चारों वेद हैं; ऎऩ्ऩुम् नटैयित्तार्–ऐसा कहने योग्य आचरणवाले; कोल् वरुम् चॆम्मैयुम्–ऋजु दण्ड (नेक शासन) के लिए आवश्यक नीति; कुटै वरुम् तण्मैयुम्–छत्र (पालक धर्म) के लिए आवश्यक करुणा ही; चाल् वरुम् चॆल्वम्–श्रेष्ठ धन हैं; ऎऩ्ऱु उणर्––ऐसा माननेवाले; पॆरु तातै पोल्–गौरवयुक्त पिता के समान; मेल् वरुम् तकैमैयाल्–माननीय सुयोग्यता के साथ; मिक विळङ्किऩ्ऱ्कळ्–बहुत शोभायमान रहे। ११३३

वे चारों पुत्र चारों वेदस्वरूप मान्य उत्तम आचरणवाले थे। वे अपने ही पिता के समान जो नेकशासन के लिए आवश्यक नीतिपरायणता और प्रजापालन के लिए आवश्यक करुणा —इनको ही श्रेष्ठ निधियाँ मानते थे, सुयोग्य रूप से शोभायमान थे। ११३३

शाऩ्ऱॆऩ्ऩ्त् तहैयशॆङ् गोलिऩ्ऩा ऩुयिर्हडाम्
ईऩ्ऱनर् ऱायॆऩ्ऩक् करुदुपे ररुळिऩ्ऩाऩ्
आऩ्ऱविच् चॆल्वमत् तऩ्ऩैयुमॊय्त् तरुहुऱत्
तोऩ्ऱलैक् कॊण्डुमुऱ् चॆल्हॆऩ्ऩच् चॊल्लिऩ्ऩाऩ् 1134

चाऩ्ऱु ऎऩ्ऩ तकैय–उदाहरण के रूप में मान्य; चॆङ्कोलित्ताऩ्–ऋजु राजदण्ड वाले (नेक शासक); उयिर्कळ् ताम्–प्रजाजन; ईऩ्ऱ नल् ताय् ऎऩ करुतु–जननी, अच्छी माता, ऐसा माने; पेर् अरुळित्ताऩ्–इतने बड़े करुणामय; आऩ्ऱ इच् चॆल्वम् अत्तऩ्ऩैयुम्–श्रेष्ठ ये धन (सेना, छत्र, ध्वजाएँ) सब; मॊय्त्तु–घने रूप में एकत्र होकर; अरुकु उऱ–पास आये, तब; तोऩ्ऱलै कॊण्टु–राजकुमार को (अगुआ) बनाकर; मुऩ् चॆल्क–आगे बढ़ो; ऎऩ्ऩ चॊल्लित्ताऩ्–यह आज्ञा दी। ११३४

दशरथ ऐसे थे जो नेकशासन के लिए उदाहरण-स्वरूप थे। प्रजा सारी, उन्हें अपनी जननी माँ मानती थी, वे इतने करुणामय थे। उन्होंने, अपने पास आये राजवैभव, यानी सेना के वीर, छत्र, पताका आदि को आज्ञा दी कि श्रीराम को पुरस्सर करके आगे बढ़ो। ११३४

कादलो वऱिहिलङ् गरिहळैप् पॊरुविऩ्ऩार्
तीदिला वुवहयुञ् जिऱिदरो पॆरिदरो
कोदैशूळ् कुञ्जियक् कुमरऩ्वन् दॆय्दलुम्
तादयो डॊत्तदत् ताऩ्ऩयिऩ् ऱऩ्मये 1135

करिकळै पॊरुविनार्–गजोपम; कातलो अऱिकिलम्–(वीरों के श्रीराम पर) प्रेम (की मात्रा); अऱिकिलम्–नहीं जान सकते; तीतु इला उवकैयुम्–निर्दोष उत्साह; चिऱितो–छोटा (नहीं) है; पॆरितु–बड़ा है; कोतै चूळ् कुञ्चि–पुष्पमाला से अलंकृत केशवाले; अ कुमरऩ्–वे राजकुमार; वन्तु ऎय्तलुम्–आ (पहुँचे), पहुँचते ही; अ तातैयिन् तऩ्मै–उस सेना की (मानसिक) स्थिति; तातैयोटु ऒत्ततु–उनके पिता की-सी हो गई। ११३५

सेना के वीर श्रीराम पर कितना प्रेम रखते थे इसकी मात्रा हम जान नहीं सकते। वे इतना गहरा और अधिक प्रेम करते थे। उनका निर्दोष उत्साह भी कम नहीं था; बहुत बड़ा था। जब पुष्पमाला से अलंकृत केशवाले श्रीराम उनके पास आये तब उनकी स्थिति श्रीराम के पिता दशरथ की सी हो गयी। उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। ११३५

तॊऴुदिरण् डरुहुमऩ् पुडैयतम् बियर्तॊडर्ऩ्
दऴिविल्शिन् दयिऩ्ऱॊडु माडऩ्मा मिशैवरत्
तऴुवुशङ् गुडऩ्ऱॆडुम् पणैतऴङ् गिडवॆऴुन्
दॆऴुदरुन् दहैयदोर् तेरिऩ्मे लेहिऩाऩ् 1136

इरण्टु अरुकुम्–दोनो पार्श्वों में; अऩ्पु उटैय तम्पियर्–प्यारे छोटे भाई; अऴिवु इल् चिन्तैयिऩ्ऱॊटुम्–सतर्क मन होकर; आटल् मा मिचै–विजयी अश्वों पर; तॊऴुतु तॊटर्न्तु वर–विनय के साथ पीछे आये; तऴुवु चङ्कुटऩ्–मंगलसूचक शंखनाद के साथ; नॆटु पणै तऴङ्किट–बड़े ढोलों के नाद के साथ; ऎऴुन्तु–इस प्रकार उठकर; ऎऴुत ऒरु तकैयतु–चित्र जिसका बनाना कठिन है, ऐसे; ओर् तेरिऩ् मेल्–एक रथ पर; एकिऩाऩ्–(श्रीराम) चले। ११३६

श्रीराम एक बहुत ही सुन्दर रथ पर, जो, उसका सफल चित्रकार भी चित्र न बना सके, उतना सुन्दर था, आरूढ़ होकर चले। तब उनके पार्श्व में, पर उनके पीछे ही उनके प्यारे अनुज सतर्कता के साथ विजयी अश्वों पर सवार होकर गये। मंगलसूचक शंख ढोल आदि बजे। ११३६

पञ्जिशूऴ् मेल्लडिप् पावैमार् पण्णयिऩ्
मञ्जुशूऴ् नॆडियमा ळिहैयिनिऩ् ऱिडैविराय्
नञ्जुशूऴ् विऴिहळ्पू मऴैयिऩ्मेल् विऴनडन्
दिञ्जिशूऴ् मिदिलैमा वीदिशॆऩ् ऱॆय्दिऩाऩ् 1137

पञ्चि चूऴ् मॆल् अटि–महावर लगे कोमल चरणों वाली; पावै मार पण्णै–स्त्रियों के दल; इऩ् मञ्चु चूऴ्–सुहावने मेघों से आवृत; नॆटिय माळिकैयिऩ् निऩ्ऱु–उन्नत सौधों में से; इटै विराय्–(उनके) द्वारों पर आ लगें (खड़े रहें); नञ्चु चूऴ् विऴिकळ्–(उनकी) विषसिक्त आँखें; पू मऴैयिऩ्–पुष्पवर्षा के साथ; मेल् विऴ–अपने (श्रीराम के) ऊपर आ गिरें, ऐसा; नटन्तु–चलकर; इञ्चि चूऴ् मितिलै–प्राचीर वलयित मिथिला नगर की; मा वीति–राजवीथी में; चॆऩ्ऱु ऎय्तिऩाऩ्–जा पहुँचे। ११३७

जब श्रीराम रथ पर आरूढ़ हो जा रहे थे तब मेघों से आवृत (उतने ऊँचे) सौधों से महावर लगे कोमल चरणोंवाली स्त्रियों के दल द्वार पर आकर खड़ी हो गयीं। उन्होंने आँख भर उनको देखा और उन पर पुष्प वर्षा की। विष लगी सी दृष्टियाँ और कोमल फूल दोनों उन पर एक

साथ गिरे। उनका निशान बने हुए श्रीराम प्राचीर-वलयित मिथिला नगरी की राजवीथी में पहुँचे। ११३७

शूडहन् दुयल्वरक् कोदैशोर् दरमलर्प्
पाडहम् बरदनूल् पहरवॅङ् कडहरिक्
कोडरङ् गिडवॅ़ळुङ् गुवितडङ् गौङ्गयार्
आडरङ् गल्लवे यणियरङ् गयलॅलाम् 1138

अणि अरङ्कु अयल् ॲलाम्–सुन्दर सौधों के सामने के सब आँगनों में एकत्रित; वॅम् कटम् करि कोट्टु–भयंकर मत्तगजों के दाँतों के गर्व को; अरङ्किट–चूर करते हुए; ॲ़ळुम्–उगे हुए; कुवि–पुष्ट; तट कॊङ्कैयार्–विशाल स्तनवालियों के; चूटकम् तुयल् वर–(हाथ के) कंकण हिले और स्वरित हुए; कोतै चोर् तर–केश की माला खुलकर बिखरे; मलर् पाटकम्–(चरण) कमलों के "पाटकम" नाम के (घुंघुरू) आभरणों ने; परतनूल् पकर–भरतशास्त्र (भरतनाट्यम्) के अनुसार नृत्यमुद्राओं का स्वर उठाया; आटु अरङ्कु अल्लवे–नाट्यमंच तो नहीं। ११३८

सौधों के सामने के आँगनों में स्त्रियाँ आकर जुट गयीं। उनके उन्नत पुष्ट और विशाल स्तन भयंकर मत्त गजों के दाँतों के गर्व को भी चूर कर सकते थे। वे कंकणों को खनकाते हुये, केश की माला को खुलकर गिरने देते हुये, और पैरों के घुँघुरुओं को भरतशास्त्र (भरतनाट्यम) के अनुसार झनझनाते हुए (स्वतः उनकी चाल नृत्यगति के समान थी।) आकर एकत्र हुयीं। कवि विस्मय करते हैं कि वे नाट्यमंच तो नहीं थे ! । ११३८

पेदमार् मुदल्कडैप् पेरिळम् पॅण्गडाम्
एदियार् मारवे ळॅय्यवन् दॅय्दिऩार्
आदिवा ऩवर्पिरा ऩणुहला लणिकौळ्हार्
ओदियार् वीदिवा युऱ्ऱवा ऱुरैशॅय्वाम् 1139

आति वाऩवर् पिराऩ्–आदि देवदेव (परब्रह्म श्रीराम); अणुकलाल्–पास आते हैं, इसलिए; एति आर् मारवेळ–अस्त्रयुक्त मन्मथ के; ॲय्य–शर चलाने से; पेतै मार् मुतल्–बालाओं से लेकर; पेरिळम् पॅण्कळ् कटै–वृद्धाएँ तक; वन्तु ॲय्तिऩार्–आ जुटीं; अणि कौळ्–सुन्दर; कार् ओतियार्–काले केशवाली वे; वीतिवाय्–वीथी में; उऱ्ऱ आऱु–(जिस स्थिति को) पहुँचीं वह स्थिति; उरै चॅय्वाम्–कहेंगे। ११३९

आदिदेव, परब्रह्म श्रीराम जब वीथी में आये तब मन्मथ के शर चलाने से आहत होकर, यानी कामासक्त होकर बालाओं से लेकर वृद्धाएँ तक आकर वीथी के किनारे जुट गयीं। काले (या मेघों सदृश) केशवाली स्त्रियों का वीथी में क्या हाल हुआ, उसका वर्णन अब हम करेंगे। ११३९

19. उलावियऱ् पडलम् (वीथि-भ्रमण पटल)

❀ मानिऩम् वरुव पोऩ्ऱु मयिलिऩन् दिरिव पोऩ्ऱुम्
मीनिऩ मिळिर्व पोऩ्ऱुम् मिऩ्ऩिऩ मिडैव पोऩ्ऱुम्
तेऩिऩज् जिलम्बि यार्प्पच् चिलम्बिऩम् पुलम्ब वॅङ्गुम्
पूनऩै कोदै मादर् पॉम्मॅऩप् पुहुन्दु मॉय्त्तार् 1140

पू नऩै कोदै मातर्–पुष्पों के कारण ठण्डे बने केशवाली स्त्रियाँ; तेऩ् इऩम्–भ्रमर दल; चिलम्पि आर्प्प–गुंजार करें, ऐसा; चिलम्पु इऩम् पुलम्प–नपुरों की राशि के झनझन शब्द करते; माऩ् इऩम् वरुव–हरिणदल आते हों; पोऩ्ऱुम्–जैसे; मयिलिऩम्–मोर के समूह; तिरिव पोऩ्ऱुम्–फिरते हों जैसे; मीऩ् इऩम् मिळिर्व पोऩ्ऱुम्–तारों के समूह चमकते हों जैसे; मिऩ् इऩम् मिटैव पोऩ्ऱुम्–बिजलियों के समूह जमा होते हों जैसे; पॉम् ऍऩ पुकुन्तु–शीघ्र आकर; ऍङ्कुम् मॉय्त्तार्–सर्वत्र भर गईं। ११४०

[तमिऴ में स्त्रियों को वय के अनुसार सात वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है— पेतै-सात साल की; पॅदुम्बै-ग्यारह साल की; मङ्गै-१३ साल की; मडन्दै-१९ साल की; अरिवै-२५ साल की; तॅरिवै-२६-३० साल की; और पेरिळ मङ्गै—चालीस साल और उससे ऊपर की वृद्धाएँ। इनमें हर नाम स्त्री साधारण के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है। वृद्धा के लिए जो पेरिळमङ्गै का नाम दिया गया है वह कवितापूर्ण है। उसका अर्थ है "बड़ी बाला" श्रीराम के प्रति प्रेम को भक्ति के रूप में लेना चाहिये।]

स्त्रियाँ झट आकर जुट गयीं। उनके केश पुष्प-मधु से गीले थे। उनके सिरों पर भ्रमर गुँजार कर रहे थे, और पैरों पर नूपुर झनझना रहे थे। वे मानो हरिण-दल आ रहे हों, मोर के समूह विचरण कर रहे हों, नक्षत्र चमक रहे हों या बिजलियाँ एकत्र हो आ रही हों, ऐसे आकर सर्वत्र भर गयीं। ११४०

विरिन्दुवीऴ् कून्दल् पारार मेकलै यऱ्ऱ नोक्कार्
शरिन्दपून् दुहिल्ह डाङ्गा रिडैतडु माऱत् ताऴार्
नॅरुङ्गिऩर् नॅरुङ्गिप् पुक्कु नीङ्गुमि ऩीङ्गु मॅऩ्ऱॅऩ्
ऱरुङ्गल मऩैय मादर् तेऩुह रळियिऩ् मॉय्त्तार् 1141

अरु कलम् अऩैय मातर्–(उस नगर के) श्रेष्ठ शृंगार-मान्य स्त्रियाँ; विरिन्तु वीऴ्–खुलकर लटकनेवाले; कून्तल् पारार्–केश नहीं देखतीं; मेकलै अऱ्ऱ नोक्कार्–मेखला टूटीं, उसको नहीं देखतीं (उस पर ध्यान नहीं देतीं); चरिन्त–खिसके हुए; पू तुकिल्कळ्–झीने (रेशमी) वस्त्रों को; ताङ्कार्–नहीं सँभालतीं; इटै तटुमाऱ–कमर झुक-झुककर दुख देती थी; ताऴार्–(विश्रांति के लिए नहीं रुकीं; नॅरुङ्किऩर्–पास आईं; नीङ्कुमिऩ्–हटो जी; नीङ्कुम्–हटो; ऍऩ्ऱु ऍऩ्ऱु–यह दुहराती हुईं; नॅरुङ्कि पुक्कु–अतिनिकट पहुँचकर; तेऩ् नुकर् अळियिऩ्–शहद पीने के लिए जुटनेवाले भ्रमरों के समान; मॉय्त्तार्–पिल पड़ीं। ११४१

वे स्त्रियाँ मानो मिथिला का शृंगार थीं। अपनी उतावली में उन्होंने खुले-बिखरते केश का ख्याल नहीं किया; मेखला टूट गयी; उसकी परवाह नहीं की। महीन और रेशमी वस्त्र खिसक रहे थे उनको नहीं संभाला। कमर झुक-झुककर दुख देती थी लेकिन विश्रांति के लिए नहीं रुकीं। चलो, हटो, कहती हुयी वे शहद पीने आनेवाले भ्रमरों के समान पिल पड़ीं। ११४१

❀ पळ्ळत्तुप् पायु नऩ्ऩी रऩैयवर् पाऩल् पूत्त
वॅळ्ळत्तुप् पॅरिय कण्णार् मॅऩ्शिलम् बलम्ब मॅऩ्बूत्
तळ्ळत्तम् मिडैह णोवत् तमैवलित् तवऩ्बाऱ् चॅल्लुम्
उळ्ळत्तैप् पिडित्तु नामॅऩ् ऱॉडुहिऩ् ऱारु मॉत्तार् 1142

मॅऩ् चिलम्पु अलम्प–सुहावने नूपुर झनझना उठे; **मॅऩ् पू तळ्ळ**–कोमल पुष्प (चरण) लड़खड़ाये; **तम् इटैकळ् नोव**–उनकी कमरें दुखीं, ऐसे; **पळ्ळत्तु पायुम्**–गड्ढे की ओर बहनेवाले; **नल् नीर् अऩैयवर्**–शुद्ध जल के समान (जो दौड़ीं) वे; **पाऩल् पूत्त**–कुवलयों के समान प्रफुल्लित; **वॅळ्ळत्तु पॅरिय**–(और) सागर-सम विशाल; **कण्णार्**–आँखोंवाली वे; **तमै वलित्तु**–अपने को खींचते हुए; **अवऩ् पाल् चॅल्लुम्**–उनके (श्रीराम के) पास जानेवाले; **उळ्ळत्तै**–मन को; **पिटित्तुम् नाम् ॲऩ्ऱु**–पकड़ेंगे हम, ऐसा कहकर; **ओटुकिऩ्ऱारुम्**–मानो दौड़ते हों; **ऑत्तार्**–ऐसी लगीं। ११४२

वे नीची भूमि (गड्ढे) की ओर बहनेवाले शुद्ध जल के समान मानो खिचकर आयीं। उनके पैरों के नूपुर शब्द कर रहे थे, चरण लड़खड़ा रहे थे, कमर दुखती थी। इस प्रकार, कुवलय के समान उत्फुल्ल और सागर-समान विशाल आँखोंवाली वे उन स्त्रियों की तरह दौड़ीं जो अपने को खींचते हुए श्रीराम के पास जानेवाले मन को 'पकड़ लेंगीं' कहते हुए दौड़ रही हों। ११४२

कण्णिऩाऱ् काद लॅऩ्ऩुम् पॉरुळैये काण्गिऩ् ऱोमिप्
पॅण्णिऩीर् मैयिऩा लॅय्दुम् पयऩिऩ्ऱु पॅऱुदु मॅऩ्बार्
मण्णिऩी रुलर्न्दु वाऩ मळैयऱ वऱन्द कालत्
तुण्णुनीर् कण्डु वीळु मुळैक्कुलम् बलवु मॊत्तार् 1143

कण्णिऩाल्–अपनी आँखों से; **कातल् ॲऩ्ऩुम् पॉरुळैये**–प्रेमरूप वस्तु को ही; **काण्किऩ्ऱोम्**–देखते हैं; **इ पॅण्णिऩ् नीर्मैयिऩाल्**–इस स्त्री जन्म के भाव से; **ॲय्तुम् पयऩ्**–प्राप्य फल को; **इऩ्ऱु पॅऱुतुम्**–आज पा जायँगे; **ॲऩ्पार्**–यह कहती हुई; **मण्णिल् नीर् उलर्न्तु**–भूतल में जल सूखकर; **वाऩम् मळै अऱ**–आकाश से वारिश भी न रहने पर; **वऱन्त कालत्तु**–सर्वत्र सूखा पड़ गया, तब; **उण्णुम् नीर् कण्टु**–पेय जल (का स्थान) देखकर; **वीळुम्**–उधर पिल पड़नेवाले; **उळै कुलम् पलवुम्**–हरिण-कुल अनेक के; **ऑत्तार्**–समान बनीं। ११४३

"हम अपनी आँखों से प्रेम का मूर्तरूप ही देखती हैं। स्त्री-जन्म को

आज सफल बनायेंगीं" यह कहते हुए वे उन हरिण-दलों के समान टूट पड़ीं जो, शुष्क भूमि और मेघहीन आकाशवाले अकाल में कहीं पेय जल का भास पाकर टूट पड़ते हों। ११४३

अरत्तमुण् डऩैय मेऩि यहलिहैक् कळित्त ताळुम्
विरैक्करुङ् गुऴलिक् काह विल्लिऱ निमिर्न्दु वीङ्गुम्
वरैत्तडन् दोळुङ् गाण मऱुहिऩिल् वीऴु मादर्
इरैत्तुवन् दमिऴ्दिऩ् मॉय्क्कु मीयिऩ मॅऩ्ऩ लाऩार् 1144

अरत्तम् उण्ट अऩैय मेऩि–लाल रंग भर दिया गया हो, ऐसे शरीरवाली (गोरे शरीरवाली); अकलिकैक्कु–अहल्या पर कृपा जिन्होंने की थी; ताळुम्–उन श्रीचरणों को, और; विरै करु कुऴलिक्कु आक–सुगन्धित काले केशवाली (सीता) के (विवाह) के लिए; विल् इऱ–शिवधनु को तोड़ते हुए; निमिर्न्तु वीङ्कुम्–दीर्घ और पुष्ट जो रहे उन; वरै तट तोळुम्–पर्वतोपम बड़े हाथों को; काण–देखने के लिए; मऱुकिऩिल् वीऴुम् मातर्–वीथी में बराबर आनेवाली स्त्रियाँ; इरैत्तु वन्तु–शोर मचाते आईं और; अमिऴ्तिल् मॉय्क्कुम्–अमृत पर जमा हुए; ई इऩम् ऍऩ्ऩल् आऩार्–मक्खियों के वृन्द कहलाने योग्य बनीं। ११४४

श्रीराम के चरण और हाथ दोनो विशेष महत्व के थे। चरणों ने लाल (गोरा) रंगवाली अहल्या पर कृपा की। हाथ जो थे, वे काले केशवाली सीता पर कृपा करने के लिए शिवधनु तोड़नेवाले दीर्घ और पुष्ट पर्वतसम थे। उनके दर्शन के लिए स्त्रियाँ, अमृत पर मक्खियों के समान कोलाहल के साथ आ जुटीं। ११४४

वीदिवाय्च् चॅल्हिऩ् ऱाऩ्बोल् विऴित्तिमै यादु निऩ्ऱ
मादरार् कण्ग ळूडे वावुमाऩ् ऱेरिऱ् पोऩाऩ्
यादिऩु मुयर्न्दोर् तऩ्ऩै यावर्क्कुङ् गण्ण ऩॆऩ्ऱे
ओदिय पॅयर्क्कुत् ताऩे युरुपॉरु ळुणर्त्ति विट्टाऩ् 1145

वीतिवाय् चॅल्किऩ्ऱाऩ् पोल्–वीथी में जाते हुए से; विऴित्तु इमैयातु निऩ्ऱ–आँखें फाड़कर देखती हुई जो खड़ी रहीं उन; मातरार् कण्कळ् ऊटे–स्त्रियों की आँखों में से होकर; वावुम् माऩ् तेरिल्–सरपट दौड़नेवाले अश्वों के जुते रथ में; पोऩाऩ्–जो गये; यातिऩुम् उयर्न्तोर्–सर्वश्रेष्ठ महात्मा लोग; यावर्क्कुम् कण्णऩ्–सबके नेत्र (में रहनेवाले) या सब जिनके नेत्रों में हैं); ऍऩ्ऱु–जो कहते हैं उस; तऩ्ऩै ओतिय पॅयर्क्कु–अपने लिए दिये गये नाम के; उरु पॉरुळ्–सही अर्थ; ताऩे उणर्त्तिविट्टाऩ्–स्वयं साबित कर दिया। ११४५

श्रीराम वीथी में सरपट दौड़नेवाले अश्वों के जुते रथ पर आरूढ़ होकर जो गये तो उन स्त्रियों की निर्निमेष आँखें इतनी तन्मयता के साथ देख रही थीं कि वह उनके दृष्टि-पथ में गये —ऐसा कहा जा सकता था। इसके आधार पर जो सर्व प्रकार से श्रेष्ठ महात्मा लोगों ने उन्हें "कण्णऩ्"

(नेत्री) नाम दिया उसको उन्होंने स्वयं सार्थक साबित कर दिया। कण्णन् का अर्थ है— वह जो सबकी आँखें हैं, या जिनकी आँखों में सब हैं, या जो सबकी आँखों में हैं। ११४५

ऎण्कडन् दलहि लादिऩ् ऱेहुऱु मिवऩ्ऱे रॆऩ्ऱु
पॆण्गडन् दम्मि ऩॊन्दु पेदुऱु हिऩ्ऱ वेलै
मण्गडन् दमरर् वैहुम् वाऩ्गडन् दाऩैत् ताऩ्ऱऩ्
कण्गड वामऱ् कात्त कारिहै पॆरिय ळेकाण् 1146

इऩ्ऱु–आज; इवऩ् तेर्–इन (श्रीराम का) रथ; ऎण् कटन्तु–मनोगति को पारकर; अलकु इलातु–अपार (वेग के साथ); एकुऱुम् ऎऩ्ऱु–भागता है, यह; पॆण्कळ्–बालाएँ; तम् तम्मिल्–आप अपने साथ; नॊन्तु–दुखी होकर; पेतु उऱुकिऩ्ऱ वेलै–(जब) व्यथित हो रही थीं, उस समय; मण् कटन्तु–(त्रिविक्रम के अवतार में) भूमि नापकर; अमरर् वैकुम् वाऩ् कटन्ताऩै–देवों के (वासस्थान) स्वर्ग को भी जिन्होंने पार किया था, उनको; ताऩ्–अकेली उन्होंने (सीताजी ने); तऩ् कण् कटवामल्–अपनी दृष्टि से बाहर जाने न देकर; कात्त–रोक रखा; कारिकै–वे ललित सीताजी; पॆरियळे–अवश्य बड़ी (सामर्थ्यशीला) हैं। ११४६

(कवि का कथन है—) आज स्त्रियों की शिकायत है कि श्रीराम का रथ मनोगति से भी बढ़कर अपार तीव्रगति से भागता है। उनको दुख है कि वे उनको अपनी दृष्टि में रोक (ध्यान में ले) नहीं पातीं। वे क्षुब्ध थीं। लेकिन उस दिन इह-परलोकों को अपने चरणों से नापने वाले त्रिविक्रम देव के इन अवतार श्रीराम को एक ही क्षण के लिए सीताजी ने देखा। तो भी उन्होंने, "आँखों से होकर घुसनेवाले चोर को", "पलक-कपाट देकर" सुरक्षित कर लिया था। अवश्य वे सबसे अधिक चतुर हैं। ११४६

पयिरॊऩ्ऱु कलैयुञ् जङ्गुम् पळिप्परु नलत्तुम् पण्बुम्
शॆयिरिऩ्ऱि यलर्न्द पॊऱ्पुञ् जिन्दयु मुणर्वुन् देशुम्
वयिरञ्जॆय् पूणु नाणु मडत्तुन्द ऩिऱैयु मऱ्ऱुम्
उयिरॊऩ्ऱु सॊळ्िय वॆल्ला मुहुत्तॊरु तॆरिवै निऩ्ऱाळ् 1147

ऒरु तॆरिवै–एक तरुणी; तऩ् उयिर् ऒऩ्ऱुम् ऒऴिय–अपना प्राण, एक, छोड़कर; निऱैयुम्–संयम; मटत्तुम्–संकोच (अबोधता); नाणुम्–और लाज; पयिर् ऒऩ्ऱु कलैयुम्–(नया होने के कारण) फरफर शब्दयुक्त वस्त्र; चङ्कुम्–शंखकंकण; पळिप्पु अरु नलत्तुम्–अनिन्दनीय श्रेष्ठ कार्य; पण्पुम्–श्रेष्ठगुण और; चॆयिर् इऩ्ऱि अलर्न्त पॊऱ्पुम्–निर्दोष शोभा की सुन्दरता; चिन्तैयुम्–मन (विवेक) और; उणर्वुम्–प्रज्ञा; तेचुम्–तेज; वयिरम् चॆय् पूणुम्–हीरे के आभरण; मऱ्ऱुम् ऎल्लाम्–अन्य (स्त्रियोचित) सभी; उकुत्तु–गिराकर (छोड़कर); निऩ्ऱाळ्–(निष्क्रिय) खड़ी रही। ११४७

एक युवती स्त्री श्रीराम को देखने आयी। श्रीराम का रथ चला गया। वह उसको पीछे से देखती हुयी निष्क्रिय खड़ी रह गयी। अब उसके पास सिर्फ़ प्राण थे। बाकी सब स्त्रियोचित गुण और अलंकार हट गये। संयम, संकोच या अबोधता नहीं रही। वस्त्र खिसक गये। शंखकंकण गिर गये। हीरे के आभरण गिर गये। वह उचित कार्य भूल गयी। उसके श्रेष्ठ गुण हट गये। उसकी अनिन्द्य सुन्दरता, विवेक, प्रज्ञा, तेज सब नहीं रह गये। ११४७

कुऴैयुऱा मिळिरुङ् गॆण्डै कॊण्डलि ऩालि शिन्दत्
तऴैयुऱाक् करुम्बिऩ् शाबत् तऩङ्गवेळ् शरङ्गळ् पाय्न्द
इऴैयुऱाप् पुण्ण ऱाद विळमुलै यॊरुत्ति शोर्न्दु
मऴैयुऱा मिऩ्ऩि ऩऩ्ऩ मरुङ्गुल्पो ऩुडङ्गि निऩ्ऱाळ् 1148

तऴै उऱा–पत्तों से हीन; करुम्प चापत्तु–ईख के धनुर्धर; अनङ्कवेळ्–अनंगदेव के; चरङ्कळ् पाय्न्त–शरकृत; पुण् अऱात–व्रण सहित; इऴै उऱा–सूत्रांतर भी न रखनेवाले (सटे हुए); इळ मुलै ऑरुत्ति–तरुणस्तनी एक; कुऴै उऱा मिळिरुम्–कुण्डलों तक पहुँचनेवाली; कॆण्टै–"कॆण्डै" नाम की मछलियों (सी आँखों) से; कॊण्टलिऩ्–मेघों के समान; आलि चिन्त–अश्रुधारा बहाते हुए; चोर्न्तु–बहुत श्रांत होकर; मऴै उऱा मिऩ् अऩ्ऩ–मेघेतर (स्थान की) बिजली के समान; मरुङ्कुल् पोल्–कमर के समान; नुटङ्कि निऩ्ऱाळ्–लचक खाती खड़ी रही। ११४८

एक ललितांगी जिसके स्तनों के बीच सूत्र भी नहीं जा सकता था, और जो कामशर से आहत थे, अपनी कर्णकुंडल तक गयी हुयी आयत मछली-सी आँखों से मेघ के समान अश्रुकण बरसाती हुयी उसी की उस कमर के समान, जो मेघों में न पायी जानेवाली (विलक्षण) बिजली सदृश थी, बल खाती रही। ११४८

पञ्जिवर् विरलि ऩार्तम् पडैनॆडुङ् गण्ग ळॆल्लाम्
शॆञ्जॆवे यैयऩ् मॆय्यिऱ् करुमैयैच् चेर्न्त वोदाम्
मञ्जऩ मेऩि याऩ्ऱऩ् मणिनिऱ माद रार्तम्
अञ्जऩ नोक्कम् पोर्क्क विरुण्डदो वऱिहि लेमाल् 1149

पञ्चु इवर्–महावर से अलंकृत; विरलिऩार् तम्–आँखोंवालियों की; पटै नॆट्टु–(तलवार या भाले के) अस्त्रसम और दीर्घ; कण्कळ् ऎल्लाम्–आँखें सब; चॆञ्चॆवे–खूब; ऐयऩ् मॆय्यिल् करुमैयै–प्रभ के शरीर की नीलिमा को; चेर्न्तवो–प्राप्त कर गईं; मञ्चु अऩ्ऩ मेऩियाऩ् तऩ्–या मेघसम शरीरवाले का; मणि निऱम्–वह सुन्दर रंग; मातरार् तम्–स्त्रियों के; अञ्चऩ नोक्कम्–अंजनयुक्त नेत्र; पोर्क्क–लगे, इसलिए; इरुण्टतो–नीला हो गया; अऱिकिलेम्–नहीं जानते। ११४९

स्त्रियों की आँखें काली हैं और श्रीराम का शरीर भी काला या नीला है। अब लाक्षारसलिप्त उँगलियोंवाली उन स्त्रियों की, तलवार

या भाले जैसे हथियार-सदृश आँखों में श्रीराम के शरीर का नीला रंग आकर लग गया ? या श्रीराम के शरीर पर उन अंजनलिप्त आँखें जाकर लगीं; इस कारण उनका शरीर काला हो गया ? कौन जाने ? । ११४९

मान्दळिर् मेऩि याळोर् वाणुदऩ् मदऩ ऩॅङ्गुम्
पून्दुणर् वाळि मारि पॉऴिहिऩ्ऱ पूश ऩोक्कि
वेन्दर्को ऩाणै नोक्कान् वीरऩ्वि लाण्मै पाराऩ्
एन्दिऴैयारै यॅय्वान् यावऩो वॊरुव ऩॆऩ्ऱाळ् 1150

मा तळिर् मेऩियाळ्–आम्रपल्लव सदृश शरीरवाली; ओर् वाळ् नुतल्–एक उज्ज्वल ललाट की स्त्री; मतऩऩ्–मदन के; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; पू तुणर् वाळि मारि–पुष्पशर वर्षा; पॉऴिकिऩ्ऱ–करने का; पूचल्–टंटा; नोक्कि–देखकर; वेन्तर्कोऩ् आणै नोक्कान्–राजाधिराज की आज्ञा नहीं देखता; वीरऩ्–(श्रीराम) वीर का; विल् आण्मै पाराऩ्–धनुकर्म पौरुष नहीं देखता; एन्तु इऴैयारै–आभरणभूषित स्त्रियों पर; ऍय्वाऩ् ऑरुवऩ्–अस्त्र चलाता है एक; यावऩो–कैसा है वह; ऍऩ्ऱाळ्–कहा । ११५०

आम्रपल्लव-सी सुन्दरांगी एक ने देखा कि मन्मथ सब पर अपना पुष्पशर बरसा रहा है। (सभी स्त्रियाँ कामप्रेरित हो अकुलाहट दिखा रही थीं।) यह टंटा देखकर वह पूछने लगी कि यह कौन है जो राजाधिराज (जनक या दशरथ) की आज्ञा को अनसुनी करके और वीर कुमार श्रीरामचन्द्र के धनु-पराक्रम का ख्याल किये विना इस तरह आभरणधारिणी स्त्रियों पर अपने शर फेंक रहा है ? वह कैसा शख्स है ? । ११५०

विऱ्ऱङ्गु पुरुव नॆऱ्ऱि वॆयर्वरप् पशलै विम्मिच्
चुऱ्ऱॅङ्गु मॆऱिप्प वुळ्ळञ् जोरवोर् तोहै निऩ्ऱाळ्
कॊऱ्ऱञ्जॆय् कॊलैवे लॆऩ्ऩक् कूऱ्ऱॆऩक् कॊडिय कण्णाळ्
मऱ्ऱॊऩ्ऱुङ् गाण्गि लादाळ् तमियऩो वळ्ळ लॆऩ्ऱाळ् 1151

कॊऱ्ऱम् चॆय्–विजयदायक; कॊलै वेल् ऍऩ्ऩ–संहारक भाले के सदृश; कूऱ्ऱु ऍऩ–और यम सदृश; कॊटिय कण्णाळ्–निर्मम आँखोंवाली; ओर–एक; तोकै–मयूराभा स्त्री; विल् तङ्कु पुरुवम् नॆऱ्ऱि–धनुसम भौंहों से युक्त ललाट में; वॆयर् वर–पसीना होने से; पचलै विम्मि–विवर्णता फैली; चुऱ्ऱु ऍङ्कुम् ऍऱिप्प–और चारों ओर अपनी सुन्दरता बिखेरती; उळ्ळम् चोर–मन मारकर; निऩ्ऱाळ–खड़ी रही; मऱ्ऱु ऑऩ्ऱुम्–और किसी को; काण् किलाताळ्–नहीं देखती; वळ्ळल् तमियऩो–क्या उदार प्रभु अकेले हैं; ऍऩ्ऱाळ्–कहा । ११५१

एक स्त्री के जिसकी आँखें विजयी और संहारक भाले के समान और यम जैसी थीं और रूप मोर की-सी आभा लिये हुये था, धनु-सम भौंहों के ललाट में स्वेदकण निकल आया। उसके शरीर भर में (विरहताप से फैलनेवाली) अनोखी, सुन्दर विवर्णता फैल गयी। उसका मन दुखाक्रान्त

था। वह अपने चारों ओर श्रीराम के सिवा और किसी को नहीं देखती थी। इसलिए उसने पूछा कि उदार प्रभु (मुझ पर कृपा करने के लिए) आये हैं ? वह भी अकेले ? । ११५१

तॊऩ्ऩयन् दॊडर्न्द कामच् चुवैययो रुरुव माक्कि
इऩ्ऩयन् दॆरिय वल्ला ऩॆऴुदिय दॆऩ्ऩ निऩ्ऱाळ्
पॊऩ्ऩयम् बॊरुवु नीराळ् पुऩैन्दऩ वॆल्लाम् बोहत्
तऩ्ऩयुन् दाङ्ग लादा डुहिलॊऩ्ऱुन् दाङ्गिक् कॊण्डाळ् 1152

इऩ् नयम् तॆरिय वल्लाऩ्–मनोहरता की श्रेष्ठता को पहचानने में कुशल चितेरे ने; तॊल्नयम् तॊटर्न्त–प्राचीन (आरम्भ) काल से ही विशिष्टता प्राप्त; कामम् चुवैयै–शृंगार रस को; ओर् उरुवम् आक्कि–एक (स्त्री का) रूप देकर; ऍऴुतियतु ऍऩ्ऩ–बनाया है, ऐसी; निऩ्ऱाळ्–खड़ी थी (जो); पॊऩ्नयम् पॊरुवुम् नीराळ्–स्वर्ण की श्रेष्ठता की समानता करनेवाली, विलक्षणतावाली एक; पुऩैन्तऩ ऍल्लाम् पोक–अलंकार की सभी चीज़ें छूटने देकर; तऩ्ऩैयुम् ताङ्कलाताळ्–अपने को भी सँभाल न पाकर; तुकिल् ऑऩ्ऱुम्–वस्त्र एक (केवल); ताङ्किक् कॊण्टाळ्–सँभाल लिया। ११५२

एक स्वर्ण-सम श्रेष्ठ सुन्दरी, जो उस चित्र के समान थी जिसको रम्यता का लक्षण परखनेवाले चतुर चित्रकार ने पुरातन काल से श्रेष्ठ माने जानेवाले शृंगार-रस का मानवीय रूप देकर रचा था, वहाँ खड़ी थी। उस पर शृंगार का कोई साधन नहीं रह गया था। वह अपने को भी सम्हाल नहीं पाती थी। मुश्किल से केवल वस्त्र को गिरने से रोक रख सकी थी। ११५२

मैक्करुङ् गून्दर् चॆव्वाय् वाणुद लॊरुत्ति युळ्ळम्
नॆक्कऩ ऴुरुहु हिऩ्ऱा ऩॆञ्जिडै वञ्जऩ् वन्दु
पुक्कऩऩ् पोहा वण्णङ् कण्णॆऩुम् पुलङ्गॊळ् वायिल्
शिक्कॆऩ वडैत्तेऩ् ऱोऴि शेरुदु ममळि यॆऩ्ऱाळ् 1153

मै करु कून्तल्–अंजन-सम काला केश; चॆव्वाय्–लाल मुख; वाळ् नुतल्–उज्ज्वल ललाट; ऑरुत्ति–(इनकी) एक; उळ्ळम् नॆक्कऩ्ऩ्–मन अनुरक्त होकर; उरुकुकिऩ्ऱाळ्–पिघलती है; तोऴि–सखि; वञ्चऩ्–वंचक; वन्तु–(आँखों द्वारा) आकर; नॆञ्चु इटै पुक्कऩऩ्–मन में घुस गये; पोका वण्णम्–जाने न पावे इस प्रकार; कण् ऍऩुम्–आँख रूपी; पुलम् कॊळ् वायिल्—आनेजाने का मार्ग देनेवाले द्वार को; चिक्कॆऩ अटैत्तेऩ्–दृढ़रूप से बन्द कर दिया; अमळि चेरुतुम्–शय्या को जायेंगे; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ११५३

एक सुन्दरी थी जिसका केश काला, मुख लाल, और ललाट उज्ज्वल था। उसका मन श्रीराम के प्रेम में द्रवीभूत हो गया। उसने अपनी सखी से कहा— सखि ! मायावी (श्रीराम) ने आँखों के मार्ग से मेरे मन

के अन्दर प्रवेश किया। मैंने उस मार्ग को रोक दिया है। अब वह बाहर जा नहीं सकेंगे। चलो हम अब अपनी शय्या की ओर चलें। ११५३

ताक्कणङ् गऩैय मेऩि तैत्तवेळ् शरङ्गळ् पाराळ्
वीक्किय कलैयुन् दूशुम् वेऱुवे ऱाऩ दोराळ्
आक्किय पावै यऩ्ऩा ळॊरुत्तिबाण् डमलऩ् मेऩि
नोक्कुहिऩ् ऱारै यॅल्ला मॅरियॆऴ नोक्कि निऩ्ऱाळ् 1154

आण्टु–वहाँ; आक्किय पावै अऩ्ऩाळ् ऑरुत्ति–(चतुर शिल्पी द्वारा खूब सोचकर) निर्मित एक प्रतिमा-सी एक; ताक्कु अणङ्कु अऩैय–मन को पीड़ा देनेवाली मोहनी देवता के से; मेऩि तैत्त–(उसके) शरीर पर चुभे; वेळ् चरङ्कळ्–काम के शरों का; पाराळ्–विचार नहीं करती; वीक्किय–कमर पर बँधे; तूचुम्–वस्त्र और; कलैयुम्–मेखला; वेऱु वेऱु आऩतु—अलग-अलग हो गई; ओराळ्–इसकी सुध नहीं ली; अमलऩ् मेऩि नोक्कुकिऩ्ऱारै–निर्मल श्रीराम के रूप के दर्शकों को; ऍरि ऍऴ–अंगारे उगलते हुए; नोक्कि निऩ्ऱाळ्–(क्रोध से) देखती खड़ी रहती है। ११५४

एक स्त्री थी जिसकी बनावट उस शिल्प के समान थी जिसको बहुत ही कुशल शिल्पी ने बहुत यत्न से बनाया था। उसका मोहनी देवी का सा रूप था जो किसी को भी प्रेमदग्ध कर सकता था। वह अपनी कामशरतप्त हालत की भी परवाह नहीं करती; वस्त्र और मेखला अलग-अलग हो गयी; उसका भी विचार नहीं करती। पर अति ईर्ष्यालू और ऐकांतिक प्रेमवाली वह श्रीराम को जो भी देख रही थी उसको क्रोध के साथ घूरती थी, वह समझती थी कि उन पर अकेले मेरा अधिकार है और उन पर अन्यों के देखने से बुरी नज़र पड़ जायगी। ११५४

कळिप्पऩ मदर्प्प नीण्डु कदुप्पिऩै यळप्प कळ्ळम्
ऑळिप्पऩ वॅळिप्पट् टोडप् पार्प्पऩ शिवप्पु ळूऱ
वॅळुप्पऩ करुप्प वाऩ वेऱ्कणा ळॊरुत्ति युळ्ळम्
कुळिर्प्पॊडु काणवन्दाळ् कॊदिप्पॊडु कोयिल् पुक्काळ् 1155

कळिप्पऩ–मोद भरी; मतर्प्प–मस्ती भरी; नीण्टु–लम्बी बनकर; कतुप्पिऩै अळप्प–केश को नापनेवाली; कळ्ळम् ऑळिप्पऩ–वंचना को छिपाये रखनेवाली; वॅळिप्पट्टु–कभी (मन की बात को) प्रकट करके; ओट पार्प्पऩ–दृष्टि चलाकर देखनेवाली; चिवप्पु उळ् ऊऱ–लालिमा को अन्दर रखकर; वॅळुप्पऩ–सफेद रहनेवाली; करुप्प आऩ–कहीं काली रहनेवाली; वेल् कण्णाळ्—भाला-सी आँखोंवाली; ऑरुत्ति–एक; उळ्ळम् कुळिर्प्पॊटु–मन में उमंग के साथ; काण वन्ताळ्–दर्शन करने आई; कॊतिप्पॊटु–ताप के साथ; कोयिल् पुक्काळ्–अपने भवन में चली। ११५५

एक सुन्दरी थी जिसकी आँखें विलक्षण थीं। वे मोदभरी थीं और मस्ती लिये थीं। वे इतनी लम्बी थीं कि लगता था कि वे केश को नापती थीं। उनके अन्दर मोहकता छिपी थी इसलिए उनमें वंचना भरी थी।

कभी-कभी वह मोहकता प्रकट भी हो जाती और वे लोगों पर दौड़तीं। लाल डोरों के साथ सफ़ेदी और काले रंग से युक्त थीं। आकार और कृत्य में भाला-सी थीं। ऐसी आँखोंवाली बड़ा उत्साह लेकर श्रीराम के दर्शन करने के लिए आई। पर दर्शन मिल नहीं सका तो क्रोध और काम के कारण ताप लेकर लौटी। ११५५

करुङ्गुऴऱ् पारम् वाऱ्हॉळ् कऩ्मुलै कलैशू ऴल्हुल्
नॅरुङ्गिऩ मऱैप्प वाण्डोर् नीक्किडम् बॅऱादु विम्मुम्
पॅरुन्दडङ् गण्णि काणुम् पेरॅऴि लाशै तूण्ड
मरुङ्गुलिऩ् वॅळिह ळूडे वळ्ळल नोक्कु हिऩ्ऱाळ् 1156

करु कुऴल् पारम्–काले केशजाल; वार् कॉळ्–अँगिया-बद्ध; कऩम् मुलै–पीन स्तन; कलै चूऴ्–वस्त्रवेष्टित; अल्कुल्–नितम्ब; नॅरुङ्किऩ–भीड़ लगाकर; मऱैप्प–रास्ता रोकते हैं, इसलिए; आण्टु–वहाँ; ओर् नोक्कु इटम् पॅऱातु–कहीं दृष्टि-मार्ग न पाकर; विम्मुम्–दुखपूरित; पॅरु तट कण्णि–विशाल और आयत आँखोंवाली एक; पेर् ऍऴिल् काणुम्–अत्यधिक सुन्दरता को देखने की; आचै तूण्ट–इच्छा से प्रेरित होकर; वळ्ळलै–प्रभु को; मरुङ्कुलिऩ् वॅळियिऩ् ऊटे–(उन स्त्रियों की) कटि के बीच के स्थान से; नोक्कुकिऩ्ऱाळ्–देखती है। ११५६

एक स्त्री ने पीछे रहकर श्रीराम को देखना चाहा पर काले केश, कंचुकीबद्ध पीनस्तन, वस्त्रावृत नितम्ब, ये सब घने रूप से सटे रहकर दृष्टिमार्ग को रोक रहे थे। पर दर्शन की लालसा अदम्य थी। प्रभु श्रीराम को वह स्त्रियों की क्षीण कटियों के मध्य जो स्थान पाया गया उसके मार्ग से देखने लगी। ११५६

वरिन्दवा ळऩङ्गऩ् वाळि मऩङ्गऴऩ् ऱऩवु मादर्
ऍरिन्दपू णिऩमुङ् गॉङ्गै वॅयर्त्तपो दिऴिन्द शान्दुम्
शरिन्दमे हलैयु मुत्तुञ् शङ्गमुन् दाऴ्न्द कून्दल्
विरिन्दपून् दॉडैयु मऩ्ऱि वॅळ्ळिडै यरिदव् वीदि 1157

अव्वीति–मिथिला की वीथियों में; वरिन्त वाळ्–तलवार बाँधे; अनङ्कऩ् वाळि–अनंग के शर; मऩम् कऴऩ्ऱऩवुम्–जो (स्त्रियों के मनों को निफरकर निकले और भूमि पर गिरे थे; मातर्–उन स्त्रियों के; ऍरिन्त–(आग के समान) प्रदीप्त; पूण् इऩमुम्–आभरणसमूह; कॉङ्कै वॅयर्त्त पोतु–जब स्तनों पर पसीना हुआ; इऴिन्त चान्तुम्–तब गिरा चन्दन (लेप); चरिन्त मेकलैयुम्–खिसककर गिरी मेखलाएँ; मुत्तुम्–मुक्ताहार; चङ्कमुम्–शंखकंकण; ताऴ्न्त कून्तल्–लटकनेवाले केश की; विरिन्त–विस्तृत रूप से जो पहनी गई थीं; पू तॉटैयुम् अऩ्ऱि–उन पुष्पमालाओं के अलावा; वॅळ् इटै अरितु–रिक्त स्थान नहीं था। ११५७

मिथिला की उन वीथियों में, जहाँ श्रीराम का रथ जा रहा था, तलवारवाले अनंग के शर जो स्त्रियों के मनों को निफरकर निकले और

भूमि पर गिर गये थे, उन स्त्रियों के दीप्त आभरण, स्तनों के स्वेद से नीचे गिरा हुआ चंदन, कटिप्रदेश से गिरी हुयी मेखलाएँ, और शंखकंकण तथा केशों से गिरी मालाएँ— ये ही भरी थीं। कोई रिक्त स्थान नहीं था। ११५७

❀ तोळ्कण्डार् तोळेकण्डार् तॊडुकऴऱ् कमलमऩ्ऩ
ताळ्कण्डार् ताळेकण्डार् तडक्कैकण् डारुम.·.दे
वाळ्कॊण्ड कण्णार्यारे वडिविऩै मुडियक्कण्डार्
ऊऴ्कॊण्ड शमयत्तऩ्ऩा ऩुरुवुकण्डारै यॊत्तार् 1158

वाळ् कॊण्ट कण्णार्—तलवार-सी आँखोंवाली उन स्त्रियों में; तोळ् कण्टार्–जिन्होंने (श्रीराम की) भुजाएँ देखीं; तोळे कण्टार्–उन्होंने भुजाएँ ही देखीं; तॊटु कऴल्–कसे हुए पायल के; कमलम् अऩ्ऩ–कमल के समान; ताळ् कण्टार्–श्रीचरण जिन्होंने देखे; ताळे कण्टार्–उन्होंने श्रीचरण ही देखे; तट कै कण्टारुम्–विशाल हस्तदर्शक की भी; अ.·.ते–वही स्थिति थी; वटिविऩै–उनके सौम्य रूप को; मुटिय कण्टार् यार्–पूर्णरूप से देखा किसने था; ऊऴ् कॊण्ट समयत्तु–प्रौढ़ता प्राप्त मतों में; अऩ्ऩाऩ् उरुवु–उन परब्रह्म का रूप; कण्टारै–जिन्होंने जाना था; ऒत्तार्-उनके समान थीं (ये स्त्रियाँ)। ११५८

(यह पद बहुप्रशंसित पद है—) संसार में जो अनेक प्रौढ़ताप्राप्त धर्म या संप्रदाय हैं उनमें हर एक की परब्रह्म संबंधी कल्पना भिन्न-भिन्न है। हर मतावलम्बी उस मत के द्वारा निर्दिष्ट रूप को ही देखता है और उसी में रम जाता है। इसी प्रकार उस दिन जिन स्त्रियों ने श्रीराम के दर्शन किये उनमें जिन्होंने उनकी भुजाएँ देखीं वे उसी में रम गयीं। जिनको वीर कंकणधारी के श्रीचरणों के दर्शन मिले वे उन्हीं पर ध्यान दिये रह गयीं। विशाल हाथों का दर्शन जिन्हें प्राप्त हुआ उनकी भी वही दशा हुयी; अर्थात वे उन्हीं में दृष्टि दिये रह गयीं। उनमें कौन ऐसी थी जिसने उनका संपूर्ण रूप देखा ? कोई नहीं। वे मतावलम्बियों के समान रहीं जो परब्रह्म के अपने-अपने मत के द्वारा निर्दिष्ट रूप को ही देखते हैं, समूचा रूप नहीं देख पाते। (श्रीराम का हर अंग बड़ा सुन्दर था।)। ११५८

तैयल् शिऱ्ऱिडै याळॊरु ताऴ्कुऴल्, उय्य मऱ्ऱव ळुळ्ळत् तॊडुङ्गिऩाऩ्
वैय मुऱ्ऱुम् वयिऱ्ऱि ऩडक्किय, ऐय ऩिऱ्पॆरि यारिऩि यावरे 1159

ताऴ् कुऴल्–लम्बा केश; चिऱु इटैयाळ्–क्षीण कटिवाली; ऒरु तैयल–एक नारी; उय्य–जी जाय, इसलिए; अवळ् उळ्ळत्तु–उसके मन में; ऒटुङ्किऩाऩ्–बस गये; वैयम् मुऱ्ऱुम्–सारी सृष्टि को; वयिऱ्ऱिऩ् अटक्किय–अपने पेट में समा लेनेवाले; ऐयऩिऩ्–प्रभु से बढ़कर; पॆरियार्–महिमावान; इऩि यावर्–अब कौन हैं ? ११५९

एक लम्बा केश और छोटी कमरवाली स्त्री आयी। उसका जीवन बचाने के लिए श्रीराम उसके मन में समाहित हो गये। (उस स्त्री ने बाहर न देखकर अन्तस्तल में ही श्रीराम के रूप की कल्पना कर ली।) सारे लोकों को उन्होंने अपने पेट के अन्दर समाहित कर लिया था। उनसे बड़े कौन हो सकते ? वे भी आज एक छोटी स्त्री के छोटे मन में समा गये। ११५९

अलम्बु पारक् कुऴलियॉ रायिऴै
शिलम्बु मेहलै युञ्जिलम् बत्तऩि
नलम्बॅय् कॉम्बि ऩडन्दुवन् दॅय्दिऩाळ्
पुलम्बु शेडियर् कैम्मिशैप् पोयिऩाळ् 1160

अलम्पु–हिलनेवाले; पारम्–भारी; कुऴलि–केशवाली; ओर् आय् इऴै–चुने हुए आभरणों से भूषित एक स्त्री; चिलम्पुम्–नूपुर और; मेकलैयुम्–मेखला को; चिलम्प–बजने देते हुए; तऩि–अकेली (स्वयं); नलम् पॅय् कॉम्पिऩ्–सुष्ठ पुष्पशाखा के समान; नटन्तु वन्तु ऍय्तिऩाळ्–चलती हुई आई; पुलम्पु–प्रलाप करनेवाली; चेटियर् कै मिचै–चेरियों के हाथों पर; पोयिऩाळ्–गई। ११६०

हिलते केशभाराक्रान्ता और उत्तम आभरणभूषिता एक स्त्री मेखला और नूपुर के नाद के साथ स्वतः विना किसी को साथ लिए पुष्पशाखा के समान 'अपने चरणों पर' (पैदल चलती) आयी। पर (श्रीराम को न पाकर) वह चेरियों के 'हाथों पर' (सहारे) लौटी। (उसकी स्थिति ऐसी हो गई कि चेरियों को सहारा देकर उसको उसके भवन में ले जाना पड़ा।)। ११६०

अरुप्पु मॅऩ्मुलै याळङ्गॉ रायिऴै
इरुप्पु नॅञ्जिऩै यॅऩुमो रेऴैक्काप्
पॉरुप्पु विल्लैप् पॉडिशॅय्द पुण्णिया
करुप्पु विल्लिऱुत् ताट्कॉण्डु कावॆऩ्ऱाळ् 1161

अङ्कु–वहाँ; अरुम्पु मॅऩ् मुलैयाळ्–कोंगु (सेमर) की कली के समान स्तनवाली; ओर् आय् इऴै–चुने हुए आभरणों से अलंकृत एक स्त्री; ओर् एऴैक्काक–एक अबला के लिए; पॉरुप्पु विल्लै–एक पर्वत-सम धनु को; पॉटि चॅय्त–चूर करनेवाले; पुण्णिया–पुण्यकर्मी; इरुम्पु नॅञ्चिऩै येऩुम्–लोहे का मन वाले हो तो भी; करुम्पु विल् इऱुत्तु–ईख का धनु तोड़कर; आळ् कॉण्टु–मुझे दासी बना लेकर; का–मेरी रक्षा करो; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ११६१

सेमरकली-सम स्तन और चुने हुए आभरणवाली एक स्त्री ने श्रीराम से मन ही मन पूछा— कि आपने एक स्त्री के लिए पर्वतसम धनु को चूर किया। ऐसे पुण्यमूर्ति आप अब, हमारी ओर से विमुख,

लौह-दिलवाले हों तो भी मन्मथ का ईख का धनु तोड़कर हमें दासी बनाइये और हमारी जान बचाइए। ११६१

मैद वळ्न्द करुङ्गणोर् वाणुदल्, शॅय्द वन्ऱनित् तेर्मिशैच् चेऱल्विट्
टॅय्द वन्दॅदिर् निन्ऱमै तानिदु, कैद वङ्गॊल् कनवुहॊ लोवॅन्ऱाळ् 1162

मै तवळ्न्त–अंजन से युक्त; करु कण्–काली आँखों की; ओर् वाळ् नुतल्–(और) उज्ज्वल ललाटवाली एक स्त्री; चॅय् तवन्–सफल तपस्वी श्रीराम; तनि तेर् मिचै–अनुपम रथ पर; चेऱल् विट्टु–जाना छोड़कर; ऍय्त वन्तु–मेरे पास पहुँचकर; ऍतिर् निन्ऱमै इतु–सामने खड़े रहे, यह बात; कैतवम् कॊल्–माया है क्या; कनवु ओ–या स्वप्न है; ऍन्ऱाळ्–कहा। ११६२

अंजनलगी आँखों और उज्ज्वल ललाटवाली को भ्रम हो गया कि श्रीराम उसके सामने आ उपस्थित हैं। उसे संदेह भी हो रहा था। उसने कहा कि श्रीराम ने पूर्वजन्म में बड़ी तपस्या की होगी। तभी सीता का और मेरा मन उनके मोह में पड़ गये हैं। अब वे रथ पर जाना छोड़कर मेरे सामने आकर खड़े हैं। यह माया है या मेरा स्वप्न ही है ?। ११६२

मादॊरुत्ति मनत्तिनै यल्लदोर्, तूदु पॅऱ्ऱिल ळिन्नुयिर् शोर्हिन्ऱाळ्
पोद रिक्कट् पॊलङ्गुळैप् पूण्मुलैच्, चीदै यॆत्तवञ् जॅय्दन ळॊवॅन्ऱाळ् 1163

मातु ऒरुत्ति–एक दयिता; मनत्तिनै अल्लतु–मन के सिवा; ओर् तूतु पॅऱ्ऱिलळ्–एक दूत नहीं पा सकी; इन् उयिर् चोर्किन्ऱाळ्–प्यारे प्राण लट जाते हैं; पोतु अरि कण्–पुष्पतुल्य डोरेयुक्त आँखें; पॊलम् कुळै–स्वर्णकुण्डल; पूण् मुलै–आभरण-शोभित स्तन; चीतै–सीतादेवी ने; ऍ तवम् चॅय्तनळो–कैसी तपस्या की है (कि इन्हें पति के रूप में पा सकीं); ऍन्ऱाळ्–कहा। ११६३

एक स्त्री थी जिसके पास अपने मन के सिवा कोई दूत नहीं था। बेचारी वह आप ही आप अपनी व्यथा कहकर घुल रही थी। उसने कहा कि पुष्पसदृश डोरे युक्त आँखों, स्वर्णकुण्डलों और आभरणमंडित स्तनोंवाली सीता ने कैसी तपस्या की है ? (कि उन्हें श्रीराम जैसे पति मिल गये। उसके अंग कृतकृत्य हो गये कि श्रीराम उनको भोगेंगे।)। ११६३

पऴुदि लाददोर् पावयन् नाळ्पदैत्
तऴुदु वॅय्दुयिर्त् तन्बुडैत् तोऴियैत्
तॊऴुदु शोर्न्दयर् वाळिन्दत् तोन्ऱलै
ऍऴुद लाहुङ्गॊन् मन्मद नालॅन्ऱाळ् 1164

पऴुतु इलाततु–दोष-रहित; ओर पावै अन्नाळ्–चित्र प्रतिमा-सम एक; पतैत्तु–अकुलाकर; अऴुतु–रोकर; वॅय्तु उयिर्त्तु–गरम निश्वास छोड़कर; चोर्न्तु–लटकर; अयर्वाळ्–दुखती जो थी; अन्पु उटै(य) तोऴियै–प्यारी सखी को; तॊऴुतु–नमस्कार कर; इन्त तोन्ऱलै–इन पुरुषोत्तम को; मन्मतनाल्–मन्मथ से भी; ऍऴुतल् आकुम् कॊल्–चित्रार्पित कर सकता है क्या। ११६४

दोषहीन चित्र के समान सुन्दर एक तरुणी अत्यधिक प्रेम से व्याकुल हुयी। रोने और लम्बी साँसें भरने लगी। शिथिल और श्रांत होकर उसने अपनी सखी से नमस्कार करके कहा कि इन पुरुषोत्तम (श्रीराम) का मन्मथ भी चित्र बना सकता है क्या? । ११६४

वण्ण वायॆरु वाणुदल् मातिडर्क्, कॆण्णुङ् गालिव् विलक्कण मॆय्दिड
ऑण्णु मोवॊऩ् ऱुणर्त्तुहिन् ऱेऩिवऩ्, कण्ण ऩेयिदु कण्डिडुम् बिऩ्ऩॆऩ्ऱाळ् 1165

वण्णम् वाय्–सुन्दर मुख; ओर् वाळ् नुतल्–एक उज्ज्वल ललाटवाली ने; ऍण्णुङ्काल्–सोचने पर; मातिटर्क्कु–मनुष्यों में (किसी को भी); इव् इलक्कणम्–ये लक्षण; ऍय्तिट ऑण्णुमो–प्राप्त हो सकते हैं क्या; ऑऩ्ऱु उणर्त्तुकिऩ्ऱेऩ्–एक बात समझाऊँगी; इवऩ् कण्णऩे–ये कण्णन् ही (श्रीनारायण ही) हैं; इतु पिऩ् कण्टिटुम्–यह पीछे जान लोगी; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ११६५

मनोहर मुख और मनोरम ललाटवाली एक ने अपने पास रहनेवालियों से यों कहा। "सोचकर देखो, मनुष्यों में किसी के पास ये दैवी लक्षण प्राप्त हो सकते हैं क्या? नहीं। इसलिए कहती हूँ, एक बात, यह कि ये वे ही कण्णन् (श्रीमन्नारायण) हैं। पीछे तुम भी यह समझ लोगी।" । ११६५

कऩह नूपुरङ् गैवळै योडुह, मऩॊ हुम्बडि वाडियॊर् वाणुदल्
अऩह ऩिऩ्नह रॆय्दिय दादियिऱ्, चऩहऩ् शॆय्द तवप्पय ऩामॆऩ्ऱाळ् 1166

ओर् वाळ् नुतल्–मनोरम भालवाली एक ने; कऩकम् नूपुरम्–स्वर्णनूपुर को; कै वळैयॊटु–हाथ के कंकणों के साथ; उक–खिसककर गिरने देते हुए; मऩम् नॆकुम्पटि वाटि–(देखनेवाले का) मन द्रवित हो, ऐसा मुरझाकर; अऩकऩ्–अनघ का; इ नकर्–ऍय्तियतु–इस नगर में पधारना; चऩकऩ् आतियिल् चॆय्त–जनक महाराज ने जो पहले किया है; तवम् पयऩ् आम्–उस तपस्या का फल है; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ११६६

मनोरम ललाटवाली, बेचारी एक कनक नूपुर और हाथों के कंकणों को खिसककर गिरने देकर ऐसी खड़ी रही कि देखनेवाले का मन द्रवित हो जाय। उसने कहा— ये निर्मलदेव इस नगर में आये, सो महाराजा जनक की पूर्वकृत तपस्या का फल होना चाहिए। ११६६

नऩिव रुन्दि नलङ्गुडि पोयिडप्, पऩिव रुङ्गणॊर् पाशिऴै यल्हुलाळ्
मुऩिव रुङ्गुल मऩ्ऩरु मॊय्प्पऱत्, तऩिव रुङ्गॊल् कऩविऩ् ऱलयॆऩ्ऱाळ् 1167

नलम् कुटि पोयिट–शोभा अलग हो जाय, ऐसा; नऩि वरुन्ति–बहुत दुख कर; पऩि वरुम् कण्–आँसू बहानेवाली आँखों; पचुमै इऴै–और स्वर्णाभरणों से भूषित; ओर् अल्कुलाळ्–एक जघनवाली ने; मुऩिवरुम्–(अनेक) मुनियों; कुलम् मऩ्ऩरुम्–और भीड़ के राजाओं के; मॊय्प्पु अऱ–घेरने से छूटकर; तऩि–एकाकी हो; कऩविल् तलै–स्वप्न में ही सही; वरुम् कॊल्–आयँगे क्या; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ११६७

वियोग के कारण शोभाहीन बनी हुयी एक आँखों से आँसू बहाती हुयी खड़ी रही। स्वर्णाभरणभूषित कटिवाली उसने पूछा कि क्या ये श्रीराम, इन मुनियों और राजाओं की भीड़ को छोड़कर अकेले, स्वप्न में ही सही, मेरे पास आयेंगे ? । ११६७

पुनङ्गॊऴ् कार्मयिल् पोलुमॊर् पॊऱ्ऱॊडि
मऩङ्गॊऴ् कादऩ् मऱैत्तलै यॆण्णिऩाऴ्
अऩङ्ग ऩऩ्ऩ दऱिन्दऩ ऩऱ्ऱन्दात्
मनङ्गऴ् पोल मुहमु मऱैक्कुमो 1168

पुनम् कॊऴ्–पर्वत के बागों के वासी; कार् मयिल् पोलुम्–मेघ से मुदित मोर के समान; ओर् पॊऩ् तॊटि–एक स्वर्णकंकणधारिणी; मऩम् कॊऴ् कातल्–मन में (श्रीराम के प्रति उत्पन्न) प्रेम को; मऱैत्तलै–छिपाना; ऍण्णिऩाऴ्–चाहती थी; अऩङ्कऩ् अऩ्ऩतु अऱिन्तऩऩ्–अनंग ने वह जान लिया; अऱ्ऱम्–रहस्य को; मऩङ्कऴ् पोल–मन के समान; मुकमुम् मऱैक्कुमो–वदन भी छिपा सकते हैं क्या। ११६८

पर्वतवनवासी, मेघ से मुदित एक मोर तुल्य, और स्वर्णकंकण-धारिणी एक स्त्री ने अपने श्रीराम-प्रेम को मन में ही छिपाना चाहा। पर उसे अनंग ने समझ लिया। वह उसे सताने लगा तो मुख पर उसका प्रेम प्रकट हो ही गया। मन छिपा सकता है पर क्या मुख वह काम कर सकता है ? । ११६८

इणैनॆ डुङ्गणॊ रेन्दिऴै येन्दुपू, अणैय णैन्दिडि युण्डव रावॆऩप्
पुणर्न लङ्गिऴर् कॊङ्गै पुऴुङ्गिड, उणर्व ऴुङ्ग वुयिर्त्तऩ ळाविये 1169

इणै नॆटु कण्–परस्पर सम लम्बी आँखों वाली; ओर एन्तु इऴै–एक आभरण-शोभिता; एन्तु पू अणै अणैन्तु–पुष्प भरी शय्या में लेटकर; पुणर्–परस्पर सटे हुए; नलम् किऴर्–ललामी लिए रहे; कॊङ्कै पुऴुङ्किट–स्तनों पर पसीना प्रकट करते हुए; उणर्वु अऴुङ्क–सुधि को क्षीण होने देते हुए; इटि उण्ट अरा ॲऩ–वज्राहत साँप के समान; आवि उयिर्त्तऩळ्–लम्बी साँसें छोड़ीं। ११६९

परस्पर सम और लम्बी आँखोंवाली आभरणालंकृत एक युवती पुष्पशय्या पर जा लेटी। श्रीराम-प्रेम उसको चैन नहीं दे रहा था। उसके परस्पर सटे हुए सुन्दर स्तनों पर पसीना बहने लगा। सुधि मन्द होती रही। वज्राहत नाग के समान वह लम्बी साँसें भरने लगी। ११६९

आम्ब लॊत्तमु दूऱुशॆव् वाय्च्चियर्, ताम्ब दैत्तुयि रुट्टडु माऱुवार्
तेम्बु शिऱ्ऱिडैच् चीदैयैप् पोर्चिऱि, तेम्ब लुऱ्ऱिल रॆङङऩ मुय्वरो 1170

आम्पल् ऒत्तु–लाल कुमुद से तुलकर; अमुतु ऊऱु–(और) अधरामृत स्रवनेवाले; चॆव्वाय्च्चियर्–लाल अधरोंवाली स्त्रियाँ; पतैत्तु–तड़पकर; उऴ् उयिर् तट्टुमाऱु वार्–अन्तस्थ प्राणों के छूटते, वापस आते, दोलायमान थीं; तेम्पु–(शरीर के भार से)

दबनेवाली; चिऱु इटै–क्षीण कटिवाली; चीतैयै पोल्–सीता की तरह; चिऱ्ऱितु ऐम्पल् उऱ्ऱिलर्–कुछ भी सन्तोष नहीं पा सकीं; ऍङ्ङनम् उय्वरो–कैसे जीवित रहेंगी ? । ११७०

लाल कुमुदसम और अमृतस्रावी अधरोंवाली स्त्रियाँ तड़प रही थीं। उनके प्राण दोलायमान हुये। सीताजी को जिनकी पतली कमर शरीर के भार से संकट उठा रही थी, आनन्द मिल गया। इनको तो कुछ भी आश्वासन नहीं मिल रहा था। बेचारियों की जानें कैसे बचेंगी ? । ११७०

वेर्त्तु मेऩि तळर्न्दुयिर् विम्मलो
डार्त्ति युऱ्ऱ मडन्दय राऱयुम्
तीर्त्त नित्तऩै शिन्दयिर् चॅङ्गणिऱ्
पार्त्ति लाऩुट् परिविलऩो वॅऩ्ऱाळ् 1171

मेऩि वेर्त्तु–शरीर पसीने से भर गया; उयिर् तळर्न्तु–प्राण शिथिल हो गया; विम्मलोटु–तरस के साथ; आर्त्ति उऱ्ऱ–दुखी जो हुई; मटन्तैयर्–उन स्त्रियों में; आरैयुम्–किसी को भी; तीर्त्तन्–तीर्थ श्रीराम ने; चॅम् कण्णिल्–अपनी मनोरम आँखों से; चिन्तैयिऩ्–(और) मन से; इत्तऩै–इतना भी (बहुत कम भी); पार्त्तिलाऩ्–नहीं देखा; उळ्–मन में; परिवु इलऩो–करुणाहीन है क्या; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ११७१

एक स्त्री यों कह रही है। इधर इतनी स्त्रियाँ पसीने बहाती हुयी, प्राण संकट में रहने देकर, तरस के साथ दुख उठा रही हैं। उनमें एक पर भी श्रीराम ने अपनी आँखें नहीं डालीं; न मन ही लगाया। क्या उनके मन में करुणा नामक गुण है ही नहीं ? । ११७१

वैयम् बऱ्ऱिय मङ्गय रॅण्णिलार्, ऐयऩ् पॊऱ्पुक् कळविलै यादलाल्
ऍय्युम् बॊऱ्चिलै मारनु मॅऩ्शॅय्वाऩ्, कैयम् बऱ्ऱुडै वाळिऩुङ् गैवैत्ताऩ् 1172

वैयम् पऱ्ऱिय मङ्कैयर्–(श्रीराम के) रथ को लक्ष्य बनाकर जो आईं वे स्त्रियाँ; ऍण् इलार्–असंख्यक हैं; ऐयऩ्–प्रभु श्रीराम की; पॊऱ्पुक्कुम्–सुन्दरता की भी; अळवु इल्लै–सीमा नहीं है; आतलाल्–इसलिए; ऍय्युम्–शर चलानेवाले; पॊऩ् चिलै–सुन्दर धनुर्धर; मारऩुम्–कामदेव भी; ऍऩ् चॅय्वाऩ्–क्या करेगा; कै अम्पु अऱ्ऱु–हाथ शरों से रिक्त हो गये, तब; उटै वाळिऩुम्–करवाल पर (केवड़े के फूल पर) भी; कै वैत्ताऩ्–प्रयोग के लिए हाथ रखा। ११७२

श्रीराम के रथ को लक्ष्य बनाकर जो आयी हैं उनकी संख्या अपार है। श्रीराम का सौन्दर्य भी अपार है। इसलिए पुष्पशर चलानेवाले सुन्दर धनुर्धर का काम भी अपार रूप से बढ़ गया। उसके सारे शर खर्च हो गये। अब उसको लाचार होकर अपने करवाल (केवड़े के फूल) को प्रयोग करना पड़ा। (अर्थात स्त्रियों की दशा बिलकुल शोचनीय हो रही थी।) । ११७२

नान वार्हुळ् नारिय रोडलाल्, वेनल् वेळ्ौंडु मेलुऱै वार्हळो
डान पूश लरिन्दिल मम्बुपोय्, वान नाडियर् मार्बिनुन् दैत्तवे 1173

नानम् वार् कुळल्—कस्तूरी-लिप्त लम्बे केशवाली; नारियरोटु अल्लाल्–(भूलोक की) स्त्रियों के अलावा; वेनल् वेळ्ौंटु–बसन्तकाल के राजा मन्मथ के साथ; मेल् उऱैवार्कळोटु—स्वर्ग-वासिनियों का; आन पूचल्–(जो) हुआ (वह) झगड़ा; अऱिन्तिलम्–नहीं जानते; अम्पु पोय्–उसके शर जाकर; वानम् नाटियर् मार्पिनुम्–देवलोक वासिनियों के वक्षों में भी; तैत्त–चुभे । ११७३

कस्तूरी-लगे केशवाली, भूलोकवासिनी स्त्रियों की हालत तो हम देखते रहते हैं। देवलोक की नारियों के साथ वसंतकाल के राजा मन्मथ के टंटे का क्या हाल रहा ? हम नहीं जानते। अवश्य मन्मथ के शर उनके हृदय पर भी जा लगे। (समर या झगड़ा इसलिए कहते हैं कि प्रेम और लोकलाज में संघर्ष होता है। शायद देवलोक की नारियाँ सुगम रूप से मन्मथ के शिकार हो गयीं !)। ११७३

मरुण्म यङ्गु मडन्दयर् माट्टॉरु, पॉरुण यन्दिलन् पोहिन्ऱ देयिवन्
करुणै यॅन्बदु कण्डरि यान्बॅरुम्, बरुणि दन्कॉल् पडुकॉलै यानॅन्ऱाळ् 1174

इवन्–ये राम; मरुळ् मयङ्कुम्–अपने प्रति मोहमुग्ध; मटन्तैयर् माट्टु–स्त्रियों से; ऑरु पॉरुळ् नयन्तिलन्–एक भी वस्तु न चाहते हुए; पोकिन्ऱते–(उदासीन हो) जाते हैं (क्या उचित है); करुणै ऍन्पतु–करुणा नाम की वस्तु; कण्टु अऱियान्–कहीं देखी-जानी नहीं है; परुणितन् कॉल्–"परिणत" (ज्ञानवृद्ध वैरागी) हैं क्या; पटु कॉलैयान्–निपट हत्यारे हैं; ऍन्ऱाळ्–कहा एक (अबला ने)। ११७४

एक स्त्री निष्ठुरता से शिकायत करने लगी। मोह मुग्ध इतनी नारियाँ इधर हैं। श्रीराम इनसे किसी भी वस्तु की अपेक्षा नहीं करते हुये अपने रास्ते जा रहे हैं। क्या यह उचित है ? क्या वे करुणा नामक वस्तु क्या है यह नहीं जानते ? या कहीं देखी भी नहीं है ? क्या वे ज्ञान-वृद्ध वैरागी हो गये हैं ? न ! वे निपट हत्यारे हैं !। ११७४

तॊय्यिल् वॆय्य मुलैत्तुणै यालुऱ, नैयु नॊय्य मरुङ्गुलॊर् नङ्गैतन्
कैयु मॆय्यु मुणर्न्दिलळ् कण्डवर्, उय्यु मुय्यु मॆनत्तळर्न् दोय्वुऱ्ऱाळ् 1175

तॊय्यिल्–चित्रकारी से युक्त; वॆय्य–तप्त; मुलै तुणैयाल्–स्तनद्वय से; उऱ नैयुम्–बहुत त्रस्त; नॊय्य मरुङ्कुल–क्षीण कटिवाली; ओर् नङ्कै–एक युवती; तन् कैयुम्–अपने (कंकण-हीन) हाथों को; मॆय्युम्–(शिथिल) शरीर को; उणर्न्तिलळ्–भूलकर; कण्टवर्–देखनेवाले; उय्युम् उय्युम्–जी जायगी, जी जायगी; ऍन–कहें, ऐसा; तळर्न्तु–श्रांत होकर; ओय्वु उऱ्ऱाळ्–निस्पन्द हुई। ११७५

क्षीणकटि एक स्त्री ने, जिसकी कमर चित्रकारीयुक्त और तप्त स्तन-द्वय के भार से आक्राँत थी, अपने कंकणहीन हाथों और शिथिल शरीर की

सुध नहीं ली। वह इतनी श्रांँत और क्लाँत हो रही कि देखनेवालों को उसके जीने में संदेह हुआ और कुछ 'जी जायगी' यह कहकर ढाढस दे रही थीं। ११७५

पूक वूशल् पुरिबवर् पोलॊरु, पाहु पोऩ्मॊऴि याण्मलर्प् पादङ्गळ्
शेहु शेर्दरच् चेवहऩ् ऱेरिऩ्बिऩ्, एहु मीळुमि दॆऩ्शॆय्द वाऱरो 1176

ऑरु पाकु पोल् मॊऴियाळ्–एक चासनी-सी बोलीवाली; पूकम् ऊचल् पुरिपवर् पोल्–पूगतरु से बँधे झूले में झूलनेवाली के समान; मलर् पातङ्कळ्–कमलचरणों पर; चेकु चेर् तर–(घर्षण चिह्न) घट्ठा लग जायँ, ऐसा; चेवकऩ् तेरिऩ् पिऩ्–वीर श्रीराम के रथ के पीछे; एकुम–जाती; मीळुम्–लौट आती (ऐसा बार-बार करती थी); इतु चॆय्त आऱु–यह करने का प्रकार; ऍऩ्–क्या है। ११७६

चाशनी-सी बोलीवाली एक, पूगतरु से बँधे झूले में झूलनेवाली के समान (ऊपर-नीचे) आगे-पीछे जाती रहती है, श्रीरघुनाथ के रथ के पीछे जाती, फिर वापस आती। वह ऐसा बार-बार क्यों करती थी जिसके फलस्वरूप उसके पैरों में घट्ठा पड़ गया था ? । ११७६

पॆरुत्त कादलिऱ् पेदुरु मादरिल्, ऑरुत्ति मऱ्ऱङ् गॊरुत्तियै नोक्कियॆऩ्
करुत्तु मव्वऴिक् कण्डदुण् डोवॆऩ्ऱाळ्, अरुत्ति युऱ्ऱपि ऩाणमुण् डाहुमो 1177

पॆरुत्त कातलिऩ्–अत्यधिक (श्रीराम-) प्रेम के कारण; पेतुऱुम् मातरिल् ऑरुत्ति–चक्रित स्त्रियों में एक; अङ्कु–वहाँ; मऱ्ऱॊरुत्तियै–दूसरी को; नोक्कि–देखकर; ऍऩ् करुत्तुम्–मेरे मन को; अव् वऴि–उस स्थान में; कण्टतु उण्टो–देखा था क्या; ऍऩ्ऱाळ्–पूछा; अरुत्ति उऱ्ऱपिऩ्–अनुराग होने के बाद; नाणम् उण्टु आकुमो–लाज रहती होती क्या। ११७७

श्रीराम पर अपार प्रेम के कारण जो चक्रित हो गयी थीं उनमें एक ने श्रीराम के रथ की ओर से लौट आनेवाली एक स्त्री से पूछा कि क्या वहाँ तुमने मेरे मन को देखा ! अनुरागी बनने के बाद लाज कहाँ रहेगी ? । ११७७

नङ्गै यङ्गॊरु पॊऩ्ऩयन् दारुयत्, तङ्ग ळिऩ्ऩुयि रुङ्गॊडुत् तार्दमर्
ऍङ्ग ळिऩ्ऩुयि रॆङ्गळुक् कीहिला, वॆङ्ग णॆङ्ङऩ् विळैन्द दिवर्क्कॆऩ्ऱाळ् 1178

अङ्कु ऑरु पॊऩ् नङ्कै–वहाँ, श्रीलक्ष्मी तुल्य स्त्री; तमर्–इनके लोगों ने (पूर्वजों ने); नयन्तार् उय्य–अपने पास प्रेम के साथ आये हुओं का जीवन बचाने के लिए; तङ्कळ् इऩ् उयिरुम् कॊटुत्तार्–अपने प्यारे प्राण दे दिए; ऍङ्कळ् इऩ् उयिर्–हम स्त्रियों के प्यारे प्राणों को ही; ऍङ्कळुक्कु ईकिला(त)–हमें न देनेवाले; वॆम् कण्–कठोर स्वभाव को; इवर्कु–इनके पास; ऍङ्ङऩ् विळैन्ततु–कैसे उत्पन्न हुआ। ११७८

श्रीलक्ष्मी तुल्य एक स्त्री पूछती है— इनके पूर्वजों ने अपने पास प्रेम के

साथ आनेवालों की जान बचाने के लिए अपने प्राण तक दे दिये थे। अब ये तो हमारे ही प्राणों को (मन को) हमारे पास नहीं देते। इतनी निर्ममता इनके पास कहाँ से आयी ? (यह उनको विरासत में तो नहीं मिल सकती थी।)। ११७८

नामत् तालऴि वाळॊरु नन्नुदल्, शेमत् तार्विल् लिऱुत्तदु तेरुङ्गाल्
तूमत् तार्हुऴर् ड्रमॊऴित् तोहैबाल्, कामत् तालन्ऱु कल्वियि नालॆन्ऱाळ् 1179

नामत्ताल् अऴिवाळ्–नामस्मरण के साथ अकुलानेवाली एक ने; ऒरु नल् नुतल्–एक सुन्दर ललाटवाली; चेमत्तु आर् विल्–(हमारे महाराज को) सुरक्षा में जो रहा उस धनुष को; इऱुत्ततु–तोड़ने का काम; तेरुम् काल्–सोचने पर; तूमत्तु आर् कुऴल्–(अगरु का) धुआँ जिसमें रमाया गया, उस केश की; तू मॊऴि–और पवित्र बोलीवाली; तोकै पाल्–मयूराभा सीता के प्रति; कामत्ताल् अन्ऱु–प्रेम के कारण नहीं (किया श्रीराम ने); कल्वियित्ताल्–धनुर्विद्या (के प्रेम) से ही; ऎन्ऱाळ्–कहा। ११७९

श्रीराम का नाम बराबर लेते हुये एक स्त्री अकुला रही थी। सुन्दर ललाटवाली उसे सन्देह हो गया कि श्रीराम सीता पर भी आसक्ति नहीं रखेंगे ! वह कहती है कि श्रीराम ने महाराजा जनक की सुरक्षा में रहे धनुष को सीताजी के निमित्त तोड़ा नहीं है; वह तो अपनी धनुर्विद्या (में दक्षता) के प्रदर्शन के लिए ही किया होगा। ११७९

आर मुन्दुहि लुङ्गल नियावयुम्, शोर विन्नुयिर् शोरवॊर् शोरहुऴल्
कोर विल्लिमुन् नॆयॆन्नैक् कॊल्हिन्ऱाऩ्, मार वेळिन् वलियवर् यारॆन्ऱाळ् 1180

ओर् चोर् कुऴल्–खुलकर बिखरे केश की एक; आरमुम्–हार; तुकिलुम्–वस्त्र; कलऩ् यावैयुम्–आभरण सब; चोर–गिरने देते हुए; इन् उयिर् चोर–प्यारे प्राणों को भी छूटने देते हुए; कोर विल्लि मुन्ने–घोर धनुर्धर (श्रीराम) के सामने ही रहकर; ऎन्नै कॊल्किन्ऱान्–मुझे मार रहा है जो; मार वेळिन्–उस कामदेव से बढ़कर; वलियवर् यार्–बलवान कौन है। ११८०

एक स्त्री के केश खुलकर लटक रहे थे। हार, वस्त्र और आभरण सब तो खिसके हुए थे, प्राण भी छूटते से लगते थे। वह मन्मथ की वीरता की सराहना करने लगी। श्रीराम बड़े ही घोर धनुर्धर हैं। उनके ही सामने यह मन्मथ मुझ पर अपना शर चलाकर सता रहा है। इससे बढ़कर साहसी कौन हो सकता है ?। ११८०

❀माद रिन्नण मॆय्त्तिड वळ्ळल्पोय्क्, कोदिल् शिन्दै वशिट्टनुङ् गोशिह
वेद पारनु मेविय मण्डबम्, एदिन् मन्नर् कुऴात्तॊड् मॆय्दिनान् 1181

मातर् इन्नणम् ऎय्त्तिट–जब नारियाँ इस तरह संकट उठा रही थीं, तब; वळ्ळल्–उदार प्रभु; एतिल् मन्नर् कुऴात्तॊटुम्–पराये (राज्यों के) राजाओं के

समूह के साथ; पोय्–(रथ पर) जाकर; कोतु इल् चिऩ्तै–अकलंक (पवित्र) मन; वचिट्टऩुम्–महर्षि वसिष्ठ और; कोचिकऩ्–कौशिक; वेत पारऩुम्–(जो) वेदपारंगत (थे वे भी); मेविय–जहाँ आसीन थे; मण्टपम्–विवाह-मण्डप; ऍय्तिऩाऩ्–पहुँचे । ११८१

स्त्रियाँ जब इस तरह व्याकुल हो रही थीं तब उदार प्रभु श्रीराम उस मंडप में जा पहुँचे जहाँ अकलंक पवित्र मन वाले वसिष्ठजी और वेद-पारंगत कौशिकजी विराजमान थे। उनके साथ पराये राज्यों के अनेक राजा भी गये। ११८१

❀ तिरुवि ऩायकऩ् मिऩ्ऱिरिऩ् दालॅऩत्, तुरुविऩ् मामणि यारऩ् दुयल्वरप्
परुव मेहम् पडिवदु पोऱ्पडिऩ्, दिरुवर् ताळु मुऱैयि ऩिऱैञ्जिऩाऩ् 1182

तिरुविऩ् नायकऩ्–श्रीलक्ष्मीपति ने; तुरु इल् मा मणि आरम्—दोष-हीन श्रेष्ठ रत्नहार; मिऩ् तिरिऩ्ताल् ऍऩ्ऩ–बिजली चमकती हो जैसे; तुयल् वर–चमके तब; परुव मेकम्–(वर्षा·) कालीन मेघ; पटिवतु पोल्–विनत हुआ जैसे; पटिऩ्तु–दण्डवत कर; इरुवर् ताळुम्–(वसिष्ठ और कौशिक) दोनों के चरणों पर; मुऱैयिऩ् इऱैञ्चिऩाऩ्–यथाक्रम नमस्कार किया । ११८२

श्रीलक्ष्मीपति (श्री रामजी) ने वसिष्ठजी और कौशिकजी के चरणों पर यथावत दण्डवत की। तब वे भूमि पर पड़नेवाले वर्षाकाल के मेघ के समान लगे। उनके वक्ष पर जो श्रेष्ठ रत्नहार हिलते थे वे चमकने वाली बिजलियों के समान थे। ११८२

❀ इऱैञ्ज वऩ्ऩव रेत्तिऩ रेववोर्
निऱैञ्ज पूऩ्दवि शेऱि निऴल्हऴ्पोल्
पुऱञ्जॅय् तम्बिय रुट्पॉलिऩ् दाऩरो
अऱञ्जॅय् कावऱ् कयोत्तियुट् टोऩ्ऱिऩाऩ् 1183

अऱम् चॅय् कावल् कु–धर्मरक्षण के लिए; अयोत्ति उळ् तोऩ्ऱिऩाऩ्–अयोध्या में जो अवतरित हुए; इऱैञ्च–उन श्रीराम ने उक्त दोनों का नमस्कार किया, करने पर; अऩ्ऩवर्–उन दोनों ने; एत्तिऩर्–आशीर्वाद दिये; एव–(फिर) आज्ञा दी, तब; ओर् निऱैञ्च पू तविचु–एक खूब सजावट भरे, सुन्दर आसन पर आसीन होकर; निऴल्कळ् पोल्–छाया की तरह; पुऱम् चॅय्–(निरन्तर) रक्षण की सेवा करनेवाले; तम्पियर् उळ्–लघु भ्राताओं के मध्य; पॉलिऩ्ताऩ्–शोभे । ११८३

धर्मरक्षणार्थ जो अयोध्या में अवतार ले आये थे उनके नमस्कार करने पर, दोनो, वसिष्ठजी और कौशिकजी ने आशीर्वाद दिये। फिर आज्ञा दी कि आसन पर विराजें। सजावट से भरपूर एक श्रेष्ठ आसन पर श्रीराम विराजे और उनके पार्श्व में निरन्तर उनके रक्षणकार्य में लगे रहनेवाले उनके लघुभ्राता उनको मध्य में रखकर आसनस्थ हुये। ११८३

❀ आऩ मामणि मण्डब मऩ्ऩदु, ताऩै मऩ्ऩऩ् ऱमरॊडुञ् जाऱ्ऩ्दऩऩ्
मीऩ्ऩॆ लान्दऩ पिऩ्वर वॆण्मदि, वाऩि लावुऱ वन्ददु माऩवे 1184

वॆण्मति–श्वेतवर्ण चन्द्र; मीऩ् ऍलाम्–सब नक्षत्र; तऩ पिऩ् वर–अपने पीछे आयें, ऐसे; वाऩ् निला उऱ–आकाश को प्रकाशमान करते हुए; वन्ततु माऩ–आया हो जैसे; ताऩै मऩ्ऩऩ्–बड़ी सेना के स्वामी (दशरथ); तमरॊटुम्–अपनों (समान राजाओं) के साथ; आऩ–उपरोक्त; मा मणि मण्टपम् अऩ्ऩतु–उत्तम रत्नों से शोभायमान मण्डप में; चाऱ्न्तऩऩ्–आ पहुँचे। ११८४

वहाँ उस श्रेष्ठ रत्नमय मंडप में राजा दशरथ भी आ पहुँचे। उनके साथ उनके अपने राजा लोग भी आये। उनका राजाओं के साथ आना चन्द्र के, आकाश को शोभायमान करते हुए, नक्षत्रों के साथ आने के समान था। ११८४

❀ वन्दु मादवर् पादम् वणङ्गिमेल्, शिन्दु तेमलर् मारि शिऱन्दिड
अन्द णाळर्ह ळाशियॊ डाशऩम्, इन्दि रऩमुह नाणुऱ वेऱिऩाऩ् 1185

वन्तु–आकर; मा तवर् पातम् वणङ्कि–महान तपस्वियों के चरणों पर नमस्कार करके; मेल् चिन्तु–(उनके) ऊपर गिरनेवाले; तेम् मलर् मारि–शहद सहित पुष्पों की वर्षा; चिऱन्तिट–सम्मान बढ़ावे, ऐसा; अन्तणाळर्कळ्–ब्राह्मणों के; आचियॊटु–आशीर्वाद के साथ; इन्तिरऩ् मुकम् नाणुऱ–इन्द्र के मुख को लाज-भरा करते हुए; आचऩम् एऱिऩाऩ्–अपने आसन पर विराजे। ११८५

मण्डप में आकर राजा ने महान तपस्वियों, वसिष्ठजी और कौशिकजी, के चरणों पर नमस्कार किया। तब उन पर शहद भरे पुष्पों की वर्षा खूब हुयी। वेद-विप्रों ने आशीर्वाद दिये। उनका वैभव देखकर इन्द्र भी लजा गये थे। वे शान के साथ अपने आसन पर आसीन हुए। ११८५

गङ्गर् कॊङ्गर् कलिङ्गर् तॆलुङ्गर्हळ्, शिङ्ग ळादिबर् शेरलर् तॆऩ्ऩवर्
अङ्ग राशर् कुलिङ्ग रवन्दिकर्, वङ्गर् माळवर् शोळर् मराडरे 1186

कङ्कर्–गंग देश का राजा; कॊङ्कर्–कोङ्ग देश का राजा; कलिङ्कर्–कलिंगपति; तॆलुङ्कर्कळ्–तॆलुगु देश का राजा; चिङ्कळ अतिपर्–सिंहल देश का राजा; चेरलर्–चेर देशाधिपति; तॆऩ्ऩवर्–पांडिय; अङ्क राचर–अंग राज; कुलिङ्कर्–कुलिंग का शासक; अवन्तिकर्–अवन्तिकाधिप; वङ्कर–बंगदेश नरेश; माळवर्–मालवाधिपति; चोळर्–चोळपति; मराटर्–महाराष्ट्र नरेश। ११८६

गंग देशाधिप, कोंग देश के राजा, कलिंग, तेलुगु, सिंहल, चेर, पांडिय, अंग, कुलिंग आदि देश के राजा अवंतिका, बंग, मालव, चोल और महाराष्ट्र देश के राजा लोग; । ११८६

माऩ माहदर् मच्चर् मिलेच्चर्हळ्, एऩै वीर विलाडर् विदर्प्पर्हळ्
शीऩर् शेहुणर् शिन्दियर् शोमहर्, शोऩ केशर् तुरुक्कर् कुरुक्कळे 1187

माऩम् माकतर्—सम्मानित मागधराज; मच्चर्—मच्छदेश नरेश; मिलेच्चर्—म्लेच्छ; एऩै—और अन्य; वीर इलाटर्—वीर लाटदेशवासी; वितर्प्पर्कळ्—विदर्भ लोग; चीऩर्—चीनी; चेकुणर्—चेकुण; चिऩ्तियर्—सिंधी; चोमकर्—सोमक; चोऩक ईचर्—शोनकेश; तुरुक्कर्—तुरुष्क; कुरुक्कळ्—कौरव । ११८७

सम्मान्य मागध, मच्छ, म्लेच्छ और लाट देश के, विदर्भवासी, चीनी, छेगुण (?) सिन्धी, शोमक आदि नरेश; सोनकेश, तुरुष्क और कौरव लोग । ११८७

एदि यादव रेऴ्दिऱऱ् कॉङ्गणर्, शेदि राशर्ह ऴुट्पडच् चेण्विळङ्
गादि वाऩङ् गवित्त ववऩिवाऴ्, शोदि नीण्मुडि मऩ्ऩरुन् दुऩ्ऩिऩार् 1188

एति यातवर्—अस्त्र-शस्त्र चतुर यादव; एऴ् तिऱल् कॉङ्कणर्—सप्त विभाग के कॉङ्कण देश के पराक्रमी; चेतिराचर्कळ् उळ् पट—चेदि राजाओं के साथ; चेण् विळङ्कु—दूर-दूर तक रहनेवाले; अति—आदिभूत; वाऩम् कवित्त—आकाश जिनको ढँके रहता है; अवऩि वाऴ्—इस लोक में रहनेवाले; चोति नीळ् मुटि मऩ्ऩरुम्—ज्योतित और उन्नत किरीटधारी राजा लोग; तुऩ्ऩिऩार्—आ एकत्र हुए । ११८८

अस्त्र-चतुर, यादव सप्त-खण्ड कोंकण और चेदि के राजाओं के साथ, दूर-दूर तक विद्यमान आदिम भूत, आकाश से आच्छादित इस भुवन में रहनेवाले उज्ज्वल उन्नत (या दीर्घकाल से राजा रहनेवाले के वंश के) किरीटधारी राजा आकर एकत्र हुए । ११८८

❀ तीङ्ग रुम्बिऩुन् दित्तिक्कु मिऩ्शॉलार्, ताङ्गु शामरै माडु तयङ्गुव
ओङ्गि योङ्गि वळर्न्दुयर् कीर्त्तियिऩ्, पूङ्गॉ ऴुन्दु पॉलिवऩ पोऩ्ऱवे 1189

तीम् करुम्पिऩुम्—मधुर इक्षुरस से भी; तित्तिक्कुम्—मधुर; इऩ् चॉल्लार्—मोहक बोलीवाली स्त्रियाँ; ताङ्कु—जिनको ले (डुला) रही हैं वे; चामरै—चामर; माट्टु तयङ्कुव—पार्श्व में जो डुलते हैं वे; ओङ्कि ओङ्कि वळर्न्तु—उत्तरोत्तर ऊँचा बढ़कर; उयर्—उन्नत हुई; कीर्त्तियिऩ्—कीर्ति के; पू कॉऴुन्तु—सुन्दर पल्लव जो; पॉलिवऩ—शोभायमान हों, उनके; पोऩ्ऱ—समान थे । ११८९

मधुर ईख से भी बढ़कर मीठी, मनोरम बोली बोलनेवाली स्त्रियाँ जो चामर ले डुलाती थीं, वे दोनो तरफ शोभायमान थे। और वे उत्तरोत्तर बढ़नेवाली, चक्रवर्ती की कीर्ति के पल्लवों के समान शोभायमान थे । ११८९

शुऴलुम् वण्डु मिञिऱुञ् जुरुम्बुञ्जऴऩ्, दुऴलुन् दुम्बियुम् बम्बऱ् लोदियर्
कुऴलि ऩोडुऱक् कूऱुपल् लाण्डॉलि, मऴलै याऴिशै यॉडु मलिन्दवे 1190

चऴलुम्—मँडरानेवाले; वण्टुम् मिञिऱुम् चुरुम्पुम्—(इन) तीनो तरह के भ्रमरों के साथ; चूऴन्तु उऴलुम्—घूम-घूमकर मँडरानेवाले; तुम्पियुम्—काले भौंरे; पम्पु—जिन पर जुटे हैं; अऱल् ओतियर्—उन काले बालू समान केशोंवाली स्त्रियाँ;

कुऴलिऩ्ऩोटु उऱ–बाँस के नाद से मिलकर; कूऱु–(जो गीत) गाती हैं; पल्लाण्टु ऑलि–उन "पल्लाण्डु" (अनेक वर्ष जियो) वाले गीतों के स्वर; मऴलै याऴ् इचैयॊटुम्–श्रुतिमधुर वीणा के स्वर के साथ मिलकर; मलिन्त–(मण्डप में) भरे। ११६०

मँडरानेवाले भौंरे, भौंरियाँ, (चार तरह की) जिनके ऊपर मँडरा रही थीं, वे बालूसम केशवाली स्त्रियाँ बाँसुरी की ध्वनि के साथ, 'जयजीव' (अनेक वर्ष जिओ) भाव देनेवाले गीत गा रही थीं। उनके साथ मधुर वीणा का स्वर भी मिला था और वह सम्मिलित स्वर उस मण्डप में भर गया। ११९०

वॆङ्ग णाऩयऩ् ऩाऩ्ऱऩि वॆण्कुडै, तिङ्ग डङ्गळ् कुलक्कॊडि शीदयाम्
मङ्गै मामणङ् गाणिय वन्दरुळ्, पॊङ्गि यॊङ्गित् तऴैप्पदु पोऩ्ऱदे 1191

वॆम् कण्–(क्रोध के) लाल आँखोंवाले; आऩै अऩ्ऩाऩ्–गज के समान (दशरथ) के; तऩि वॆण् कुटै–अद्वितीय श्वेतछत्र (राजा के रक्षण का प्रतीक); तिङ्कळ्–चन्द्र; तङ्कळ् कुलम् कॊटि–अपने कुल की लता (सन्तान); चीतै आम् मङ्कै–सीतादेवी के; मा मणम्–श्रेष्ठ उद्वाह को; काणिय वन्तु–देखने के लिए आकर; अरुळ् पॊङ्कि ओङ्कि–करुणा अधिक करके; तऴैप्पतु पोऩ्ऱतु–शीतलता फैलाता-सा लगा। ११६१

क्रोध के कारण लाल हुई आँखोंवाले गज सदृश चक्रवर्ती दशरथ का एकश्वेतछत्र ऐसा भासमान था, मानो चन्द्र अपने कुल की फैलनेवाली लता (सन्तान) सीता नाम की पुत्री के श्रेष्ठ उद्वाह को देखने के लिए आकर करुणा और शीतलता फैला रहा हो। ११९१

ऊडु पेर्विड मिऩ्ऱियॊऩ् ऱाम्वहै, नीडु माहडऱ् ऱाऩैनॆ रुङ्गलाल्
आडऩ् माहळि याऩैच् चऩहर्होऩ्, नाडॆ लामॊरु नऩ्ऩह रायदे 1192

ऊटु–मध्य में; पेर्वु इटम् इऩ्ऱि–(जिसमें) पग धरने की जगह न हो ऐसी; नीटु मा कटल् ताऩै–लम्बे, विशाल सागर सदृश (दशरथ की) सेना; ऑऩ्ऱु आम् वकै–सम रूप से; नॆरुङ्कलाल्–भरी रही, इसलिए; आटल् मा–विजयी अश्व सेना; कळि याऩै–मत्तगजों की सेना; चऩकर् कोऩ्–(इनके स्वामी) महाराज जनक का; नाटु ॲलाम्–सारा देश; ऑरु नल् नकर् आयतु–एक बड़ा नगर-सा बन गया। ११६२

चक्रवर्ती दशरथ की सेना बहुत बड़ी थी। उसमें हाथी, वीर आदि खचाखच भरे थे। वह विस्तृत सागर-समान सेना देश भर में फैल गयी थी। इसलिए विजयी अश्वों और मत्तगजों की सेनावाले महाराजा जनक का सारा देश एक नगर के समान बन गया। ११९२

ऑऴिन्द दॆऩ्ऩिऩि यॊण्णुद ऱादैदऩ्
पॊऴिन्द काद ऱॊडरप् पॊरुळॆलाम्
अऴिन्दु वन्दुहॊण् डाडलि ऩऩ्बुदाऩ्
इऴिन्दु ळाऱ्क्कु मिरामऱ्कु मॊत्तदे 1193

ऑळ् नुतल् तातै–उज्ज्वल ललाटवाली सीता के पिता; **तन् पॉऴिन्त कातल्**–अपने बढ़ते प्रेम के; **तॉटर**–उत्तरोत्तर बढ़ते; **पॉरुळ् ॲलाम् अऴिन्तु**–अपना सारा धन व्यय करके; **उवन्तु**–आनन्द करते हुए; **कॉण्टाटलिऩ्**–जो सत्कार करते रहे उस क्रम में; **अऩ्पु**–उनका प्रेम; **इऴिन्तु उळार्क्कुम्**–नीचे पद में रहनेवालों और; **इरामऩ् कु उम्**–श्रीराम के प्रति; **ऑतूततु**–समान रहा; **इऩि**–आगे; **ऑऴिन्ततु ॲऩ्**–(कहने से) छूट गया क्या (वर्णन)। ११९३

उज्ज्वल ललाटवाली सीताजी के पिता महाराजा जनक का प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। इसलिए उन्होंने अपना सारा धन व्यय करके अतिथियों का सत्कार किया। उस सत्कार के क्रम में नीचे पद में रहनेवालों और स्वयं श्रीराम में वे कोई भेद नहीं करते थे। फिर महाराजा जनक के प्रेम के सम्बन्ध में कहने के लिए छूटा क्या है? । ११९३

20. कोलङ्गाण् पडलम् (श्रृंगार-सज्जा पटल)

देवियर् मरुङ्गु शूऴ विन्दिर ऩिरुक्कै शेर्न्द
ओविय मुयिर्पॅऱ् ऱॅऩ्ऩ वुवन्दवै यिरुन्द कालैत्
ताविल्वॅण् कविहैच् चॅङ्गोऱ् चऩहऩै यिऩिदु नोक्कि
माविय ऩोक्कि ऩाळैक् कॉणर्हॅऩ वशिट्टऩ् शॊऩ्ऩाऩ् 1194

इन्तिरऩ् इरुक्कै चेर्न्त–(सुधर्मा नाम की) इन्द्र सभा में बनी रही; **ओवियम्**–चित्र प्रतिमाएँ; **उयिर् पॅऱ्ऱ ॲऩ्ऩ**–मानो जीवित हो गई हों, ऐसे; **उवन्त अवै**–आनन्ददायक सभा में; **तेवियर् मरुङ्कु चूऴ**–देवियों (रानियों) के पार्श्व में घेरे रहते; **इरुन्त कालै**–जब चक्रवर्ती विराजमान रहे, तब; **वचिट्टऩ्**–वसिष्ठजी ने; **ता इल्**–निर्मल; **वॅण् कविकै**–श्वेत छत्र; **चॅङ्कोल्**–राजदण्ड धर; **चऩकऩै**–महाराज जनक को; **इऩितु नोक्कि**–स्नेह से देखकर; **मा इयल नोक्किऩाळै**–श्रीलक्ष्मी सदृश रूप, गुणवाली सीताजी को (मृगनयनी को, आम की फाँक-सी आँखोंवाली, या बड़ी आँखोंवाली); **कॉणर्क ॲऩ**–लाने को कहो, यह; **चॊऩ्ऩाऩ्**–कहा। ११९४

चक्रवर्ती दशरथ राजसभा में देवेन्द्र के समान विराजमान थे। उनकी रानियाँ, इन्द्रसभा की प्रतिमाएँ जीवित हो आयी हों, ऐसे उनको घेरे आसीन थीं। तब वसिष्ठजी ने निर्मल श्वेतछत्रधर (श्रेष्ठपालनकर्ता) और ऋजु राजदण्डधर (उत्तम शासक) जनक को देखकर आज्ञा दी कि श्रीलक्ष्मीदेवी सदृश सीताजी को लिवा लाने का प्रबन्ध करें।

[माइयल् नोक्किनाळ् का अर्थ— मृगनयनी, आम की फाँक-सी आँखोंवाली, या बड़ी आँखोंवाली भी किया जा सकता है।] । ११९४

उरैशॅयत् तॊऴुद कैय ऩुवन्दवुळ् ळत्तऩ् पॅण्णुक्
करैशियैत् तरुदि रीण्डॅऩ् ऱायिऴै यवरै येवक्

करैशॆयऱ् करिय कादल् कडाविडक् कडिदु शॆन्ऱार्
पिरैशमॊत् तिऩिय शॊल्लार् पेदैता दियरिऱ् चॊन्ऩार् 1195

उरैचॆय–(वसिष्ठजी के) कहने पर; तॊऴुत कैयऩ्–अंजलिबद्ध हो; उवन्त उळ्ळत्तऩ्–आनन्दमन (जनक के); आय् इऴैयवरै–सुरुचिपूर्ण आभरणधारिणी (चेरियों को देखकर); पॆण्णुक्कु अरैचियै–स्त्रियों में रानी (सीता) को; ईण्टु तरुतिर्–यहाँ लिवा लाओ; ऎऩ्ऱु एव–यह आज्ञा देने पर; पिरैचम् ऒत्तु–शहद से तुलकर; इऩिय चॊल्लार्–मधुर बोलीवाली वे; करै चॆयऱ्कु अरिय–तट बनाने के लिए कठिन; कातल् कटाविट–प्यार के प्रेरित करते; कटितु चॆऩ्ऱार्–सवेग गईं; पेतै तातियरिल् चॊन्ऩार्–सीताजी की चेटियों से बात कही। ११९५

वसिष्ठजी के वैसी आज्ञा देने पर जनक ने अंजलि करके, अधिक आनन्द के साथ पास खड़ी जो रहीं उन उत्तम आभरणधारिणी चेरियों को आज्ञा दी कि जाकर स्त्रियों में रानी मान्य सीता को लिवा लाओ। शहद-सी मधुर बोलीवाली वे निस्सीम प्रेम के उत्साह के साथ शीघ्र गयीं और उन्होंने सीताजी की चेरियों को जनक की आज्ञा बतायी। ११९५

अमिऴिमैत् तुणैहळ् कण्णुक् कणियॆऩ वमैक्कु मापोल्
उमिऴ्शुडर्क् कलऩ्ग णङ्गै युरुविऩै मऱैप्प दोरार्
अमिऴ्दिऩैच् चुवैशॆय् दॆन्ऩ वऴहिऩुक् कऴहु शॆय्दार्
इमिऴ्दिरैप् परवै ञाल मेऴमै युडैत्तु मादो 1196

अमिऴ्–(आँखों को) छिपानेवाली; तुणै इमैकळ्–दो पलकें; कण्णुक्कु अणि ऎऩ–आँखों का अलंकार मानकर; अमैक्कुम् आ(ऱु) पोल्–प्रकृति ने बनाई हैं, ऐसे; उमिऴ् चुटर् कलऩ्कळ्–कांति छिटकानेवाले आभरण; नङ्कै उरुविऩै–नायिका के रूप (-सौंदर्य) को; मऱैप्पतु–छिपाते हैं, यह; ओरार्–नहीं देखतीं; अमिऴ्तिऩै–अमृत को; चुवै चॆय्तऩ्ऩ–और मधुर बनाया हो ऐसा; अऴकिऩुक्कु अऴकु चॆय्तार्–"सुन्दरता कहँ सुन्दर करई"; इमिऴ् तिरै परवै–गर्जनशील लहरों के सागर वाला; ञालम्–यह लोक; एऴैमै उटैत्तु–अज्ञता-भरा है (मातु ओ)। ११९६

(चेरियों ने सीताजी का शृंगार करना आरम्भ किया।) प्रकृति ने आँखों का अलंकार समझकर पलकें देकर आँखों को छिपा दिया है; सुन्दरता कम कर दी है। वैसे ही ये भी, काँतिपूर्ण आभरण सीताजी के प्राकृतिक रूपसौन्दर्य को छिपा लेते हैं, यह न जान सकीं। अमृत को और मधुर बनाने का प्रयास करनेवालों के समान उन्होंने सुन्दर को और सुन्दर बनाना चाहा। गरजती लहरों के सागर से वलयित भूमि भी कितनी अज्ञता भरी है! । ११९६

कण्णऩ्ऱऩ् निऱन्द नुळ्ळक् करुत्तिऩै निऱैत्तु मीदिट्
टुण्णिऩ्ऱुङ् गॊडिह ळॊडि युलहॆङ्गुम् बरन्ददऩ्ऩ

वण्णञ्जॆय् कून्दऱ् पार वलयत्तु मऴैयिऱ् ऱॊऩ्ऱुम्
विण्णिऩ्ऱ मदियिऩ् मॆऩ्बूञ् जिहऴिहैक् कोदै वेय्न्दार् 1197

कण्णऩ् तऩ् निऱम्–कण्णन (कमलाक्ष) का वर्ण; तऩ् उळ्ळम् करुत्तिऩै–देवी के मन की चिन्ता भर में; निऱैत्तु–भरकर; उळ् निऩ्ऱुम् मीतु इट्टु–अन्दर से बाहर निकलकर; कॊटिकळ् ओटि–लताओं के रूप में चलकर; उलकु ऍङ्कुम् परन्ततु अऩ्ऩ–लोक भर में फैल गया, ऐसा; वण्णम् चॆय्–रंग और रूप में श्रेष्ठ; कून्तल् पारम् वलयत्तु–केश-भार के जूड़ाओं में; मऴैयिल् तोऩ्ऱुम्–मेघ में प्रकट; विळ् निऩ्ऱ मतियिऩ्–(किरणें) बिखेरते रहे चन्द्र के समान; मॆऩ् पू–कोमल फूलों की; चिकऴिकै कोतै–'शिखऴिका' नाम के गजरे को; वेय्नतार्–पहनाया । ११९७

लोकनेत्राधार, कण्णन, कमलाक्ष के (नीलवर्ण) रंग ने मानो सीताजी के मन में भरकर, वहाँ से बाहर छलक निकलकर लताओं के रूप में लोक भर में व्यापकर स्त्रियों के केश का रूप ले लिया —ऐसा दिखनेवाले (यानी केश के रूप में सर्वत्र व्याप्त सीताजी के मन में भरे रहे श्रीराम के रंग से शोभित) रूप और रंग के जूड़े में, मेघों पर दिखनेवाले चन्द्र के समान शिखऴिका नामक फूल का गजरा उन्होंने पहनाया । ११९७

विदियदु वहैयाल् वाऩमीऩिऩम् पिऱैयै वन्दु
कदुवुऱु हिऩ्ऱ दॆऩ्ऩक् कॊऴुन्दॊळि कजलत् तूक्कि
मदियिऩै नक्क मेह मरुङ्गुना वळैप्प दॆऩ्ऩप्
पॊदियिरु ळळह पन्दि पूट्टिय पूट्टि विट्टार् 1198

विति अतु वकैयाल्–विधि के विधान से; वाऩम् मीऩ् इऩम् वन्तु–आकाश के नक्षत्र-समूह आकर; पिऱैयै कतुवुऱुकिऩ्ऱतु–कलाचन्द्र को पकड़ रहे हों, ऐसे; कॊऴुन्तु–झूमर को; ऒळि कजल–कांति बिखेरने देते हुए; तूक्कि–भाल पर लटकाकर; मेकम्–मेघ; मतियिऩै नक्क–चन्द्र को चाटने के लिए; मरुङ्कु–उसके ऊपर; ना वळैप्पतु ऍऩ्ऩ–जिह्वा को निकाल घुमाया हो, ऐसा; इरुळ् पॊति–अन्धकार भरे (काले); अळकम् पन्ति–सामने के बालों की राशि में; पूट्टिय–पहनाने योग्य आभरण; पूट्टि विट्टार्–पहना दिये । ११९८

उन्होंने भाल पर झूमर पहनाया। वह ऐसा लगता था, मानो विधि के विशेष विधान से नक्षत्र आकर चन्द्र को पकड़ रहे हों। और सिर के सामने के भाग पर अन्य आभरण पहनाये जिनको देखने पर यह भ्रम होता था कि मेघ चन्द्र को चाटने के लिए जीभ निकाल रहा हो । ११९८

वॆळ्ळत्तिऩ् शटिलत् ताऩ्ऱऩ् वॆञ्जिलै यिऱुत्त वीरऩ्
तळ्ळत्तऩ् ऩावि शोरत् तऩिप्पॆरुम् बॆण्मै तऩ्ऩै
अळ्ळिक्कॊण् डहऩ्ऱ काळै यल्लऩ्कॊ लाङ्गॊ लॆऩ्बाळ्
उळ्ळत्ति ऩूश लाडुङ् गुऴैनिऴ लुमिऴ विट्टार् 1199

वॅळ्ळत्तिऩ् चटिलत्ताऩ् तऩ्–जल (गंगा)-धर जटाजूट वाले (शिव) के; वॅम् चिलै–भयंकर धनु को; इऱुत्त वीरऩ्–(जिन्होंने) तोड़ा, (वे) वीर; तऩ् आवि तळ्ळ–अपने (सीताजी के) प्राणों को दोलायमान करके; चोर–(उनको) क्लेश देकर; तऩि पॅरु पॅण्मै तऩ्ऩै–उनके श्रेष्ठ स्त्री-सहज संयम को; अळ्ळिक् कॉण्टु अकऩ्ऱ–लूट ले चले जो; काळै अल्लऩ् कॊल्–पुरुष ऋषभ नहीं हैं; आम् कॊल्–वही क्या; ऍऩ्पाळ्–(संशय से) कहनेवाली के; उळ्ळत्तिऩ्–मन के समान; ऊचल् आटुम्–झूलनेवाले; कुऴै–कुण्डलों को; निऴल् उमिऴ–ज्योति बिखेरने देते हुए; इट्टार्–पहनाया। ११९९

अपनी जटाजूट में जो जल (गंगा) को धारण कर रहे हैं उनके धनु के भंजक श्रीराम क्या वही वीर कुमार हैं जो उस दिन मेरे प्राणों को खतरे में डालकर, मुझे अधिक क्लेश देकर मेरे स्त्रीसहज संयम को भी हर ले गये थे ? वही होंगे ? या नहीं ? इस तरह सीताजी का मन परस्पर विरोधी मान्यताओं के बीच झूल रहा था। ऐसे ही झूलनेवाले कुण्डलों को चेरियों ने उनके कानों में पहनाया। ११९९

कोऩ्णि शङ्गम् वऩ्दु कुडियिरुन् दऩैय कण्डत्
तऩ्मिल् कलऩ्ग डम्मि लियैवऩ वणिदल् शॅय्दार्
माऩ्णि नोक्कि ऩार्तम् मङ्गलक् कऴुत्तुक् कॅल्लाम्
ताऩ्णि यॅऩ्ऱ पोदु तऩक्कणि यादु मादो 1200

कोऩ् अणि चङ्कम्–जगन्नायक श्रीविष्णु के हाथ में शोभित (पाञ्चजन्य) शंख; वऩ्तु–आकर; कुटियिरुन्त अऩैय–बसा हो, ऐसा; कण्टत्तु–कण्ठ में; ईऩम् इल् कलऩ्कळ् तम्मिल्–कोई कमीहीन आभरणों में; इयैवऩ–जो फबते हैं उनको; अणितल् चॅय्तार्–पहनाया; माऩ् अणि नोक्किऩार् तम्–मृगलोचनी स्त्रियों के; मङ्कलम् कऴुत्तुक्कु–मंगलसूत्र वाले कण्ठों; ऍल्लाम्–सभी के लिए; ताऩ् अणि ऍऩ्ऱ पोतु–स्वयं जो शृंगार हैं, तो; तऩक्कु अणि यातु–उनके लिए शृंगार क्या हो। १२००

जगन्नाथ श्रीविष्णु के हाथ को भूषित करनेवाले पाँचजन्य नाम के शंख ने आकर इनके कंठ का स्थान ले लिया है, ऐसा मान्य शंखसम कण्ठ-वाली सीताजी थीं। उसमें श्रेष्ठ आभरणों से सर्वश्रेष्ठ और युक्त आभरणों को चुनकर चेरियों ने पहना दिया। श्रीलक्ष्मी देवी स्वयं सौभाग्यवती मृगनयनियों (स्त्रियों) का कंठाभरण मानी जाती हैं। उनके मंगलसूत्र में श्रीलक्ष्मी देवी का रूपांकित स्वर्णपदक बाँधा जाता है। ऐसा उनके कण्ठ का आभरण कौन हो सकता है ?। १२००

कोणिला वाऩ मीऩ्ग ळियैवऩ कोत्त दॅऩ्गो
वाणिला वयङ्गु शॅव्वि वळर्पिऱै वहिर्न्द दॅऩ्गो
नाणिला नहैयि ऩिऩ्ऱोर् नळिर्निलात् तवऴ्न्द दॅऩ्गो
पूणिला मुलैमे लार मुत्तयाऩ् पुहल्व दॅऩ्ऩो 1201

पूण् निलावुम् मुलै मेल्–आभूषणभूषित स्तनों पर के; आरम् मुत्तै–मोतियों के हार को; वातम् मीन्कळ्–आकाश के नक्षत्र; कोण् इला इयैवत्त–भेदरहित (एक सम) जो युक्त हों उनको; कोत्ततु ॲन्को–गूँथा है, कहूँ; वाळ् निला वयङ्कु–बहुत कांति देनेवाले; चॆव्वि–सुन्दर; वळर् पिरै–शुक्लपक्ष के चन्द्र को; वकिर्न्ततु ॲन्को–दो भागों में विभक्त कर रखा है, कहूँ; नाण् निलावु–व्रीडायुक्त; नकैयिन् निऩ्ऱु–(देवी के) मन्दहास से; ओर् नळिर् निला–एक शीतल ज्योति; तवऴ्न्ततु ॲन्को–फैली, कहूँ; यान् ॲन् पुकल्वतु–मैं क्या कहूँ। १२०१

उस मुक्ताहार को जो उनके स्तनों पर शोभायमान था, क्या कहा जाय? उन नक्षत्रों को जो समरूप और समशोभित थे गूँथकर बनाया गया हार कहा जाय? शुक्लपक्ष के चन्द्र को दो भागों में विभक्त कर बनाया गया, कहा जाय? या स्वयं सीताजी के व्रीडा सहित मन्दहास से एक शीतल किरणराशि निकलकर वक्ष पर शोभित रही —यह कहा जाय? कवि कहते हैं— मैं क्या कहूँ? । १२०१

मॉय्हॉळ्शी ऱडियैच् चेर्न्द मुळरिक्कुञ् जॅम्मै यीन्द
तैयला ळमिऴ्द मेनित् तयङ्गॉळि तऴुविक् कॉळ्ळ
वॅय्यपूण् मुलैयिऱ् चेर्न्द वॅण्मुत्तञ् जिवन्द वॆऩ्ऱाल्
शॅय्यवर्च् चेर्न्दु ळारुञ् जॅय्यराय्त् तिहऴ्व रऩ्ऱे 1202

मॉय् कॉळ्–गौरव युक्त; चीऱटियैच् चेर्न्त–लघुचरणों से मिले; मुळरिक्कुम्–कमल को भी; चॆम्मै ईन्त–ललाई जिन्होंने प्रदान की; तैयलाळ्–उन श्रीलक्ष्मी (सीता) देवी के; अमिऴ्तम् मेनि–सुधा-सम शरीर की; तयङ्कु ऑळि–दीप्त शोभा ि; तऴुविक्कॉळ्ळ–लग जाने से; वॆय्य–चाहनीय; पूण्–आभरणभूषित; मुलैयिल् ार्न्त–स्तनों पर पड़े; वॆण् मुत्तम्–श्वेत मोती भी; चिवन्त ॲन्ऱाल्–लाल हो गये ा; चॆय्यवर्–साधु लोगों के साथ; चेर्न्तु उळ्ळारुम्–मिलकर रहनेवाले भी; चॆय्यर् आय्–श्रेष्ठगुणवाले बनकर; तिकऴ्वर्–रहेंगे; अऩ्ऱे–न। १२०२

कमल को श्रीलक्ष्मी ने ही अपने पैर की ललाई प्रदान की क्योंकि कमल उनके चरणों से लग गया था। ऐसी देवी के शरीर की ललाई ने ही उनके आभरणालंकृत स्तनों पर लगे श्वेत मोतियों को भी लाल बना दिया। इससे यह कथन साबित हो जाता है कि जो उत्तम गुणों के साधुओं से मिले रहते हैं वे भी उत्तम गुणोंवाले हो जाते हैं। १२०२

कॉमैयुऱ वीङ्गुहिऩ्ऱ कुलिहच्चॅप् पत्तैय कॉङ्गैच्
चुमैयुऱ नुडङ्गुहिऩ्ऱ नुशुप्पिऩाळ् पूण्पॅय् तोळुक्
किमैयुऱ विमैक्कुञ् जॅङ्गे ऴिऩमणि मुत्ति ऩोडुम्
अमैयिडै यमैव दुण्डा माहिऩॊप् पाहु मऩ्ऱे 1203

कॉमै उऱ–पुष्टियुक्त; वीङ्कुकिन्ऱ–फूल उठे; कुलिकम् चॆप्पु अत्तैय–इंगुरौटी (या इंगुर के बने कलश) सम; कॊङ्कै–स्तनों के; चुमै उऱ–भार के लगने से;

नुटङ्कुकिऩ्ऱ–लचकनेवाली; नुचुप्पिऩाळ्–कमर से शोभित देवी के; पूण् पॅय् तोळुक्कु–आभरणभूषित भुजाओं की; इमै उऱ–आँखें चौंधिया जायँ, ऐसा; इमैक्कुम्–चमकनेवाले; चॅम् केळ् इऩम् मणि–लाल रंग के पद्मराग रत्न; मुत्तिऩोटुम्–मोतियों के साथ; अमै इटै–बाँस पर; अमैवतु उण्टु आम् आकिल्–शोभित मिल सकें तो; ओप्पु आकुम्–उपमा बन सकता है (वह बाँस); (अऩ्ऱु–ए)। १२०३

पुष्ट, प्रवृद्ध और इंगुरौटी-सम सुन्दर स्तनों के बोझ से आक्रांत होकर लचकनेवाली कमर थी, देवी की। उनकी भुजाओं की तुलना किससे की जाय ? अगर ऐसा बाँस मिले जिस पर, आँखें चौंधिया जायँ, ऐसे चमकदार लाल रंग के पद्मराग के साथ मोतियों का अलंकार हुआ है तो उस बाँस के साथ उनकी भुजाओं की तुलना की जा सकेगी। (वह तुलनाहीन है।)। १२०३

तळैयविऴ् कोदैयोदिच् चाऩहि तळिर्क्कै यॅऩ्ऩुम्
मुळरिह ळिरामऩ् चॅङ्गै मुऱैमैयिऱ् ऱीण्ड नोऱ्ऱ
अळियऩ कङ्गुल् पोदुङ् गुवियल वाहु मॅऩ्ऱाङ्
गिळवॅयिल् शुऱ्ऱि यऩ्ऩ वॅरिमणिक् कडह मिट्टार् 1204

तळै अविऴ्–विकासशील; कोतै ओति–पुष्पों की माला से अलंकृत केशवाली; चाऩकि–जानकीजी के; तळिर् कै ऍऩ्ऩुम्–पल्लवहस्तरूपी; मुळरिकळ्–कमलपुष्पों ने; इरामऩ् चॅम् कै–श्रीराम के उत्तम हाथों से; मुऱैमियिऩ्–(वेदोक्त) क्रम से; तीण्ट–गृहीत होने के लिए; नोऱ्ऱ–तपस्या की है; कङ्कुल् पोतुम्–रात को भी; कुवियल आकुम्–उन्मीलित नहीं होनेवाले; अळियऩ–(इसलिए) सुरक्षायोग्य हैं; ऍऩ्ऱु–कहकर; आङ्कु–उन में; इळवॅयिल् चुऱ्ऱियतु अऩ्ऩ–बालधूप घेर गई हो ऐसा; ऍरि मणि कटकम्–दीप्तिमान रत्नकंकण; इट्टार्–पहनाये। १२०४

विकासशील पुष्पों की माला सीताजी के केश को अलंकृत कर रही थी। चेरियों ने उनके पल्लवसम सुन्दर हाथों में कंकण पहनाये। 'इन हस्त-कमलों ने श्रीरामचन्द्र प्रभु के उत्तम हाथों के पाणिग्रहण का भाग्य पाने के योग्य तपस्या की है। ये कमल रात को भी बन्द नहीं होनेवाले हैं। इसलिए इनको खूब सुरक्षित करना आवश्यक है।' ऐसा सोचकर चेरियों ने बालातप के समान मनोरम कांतिवाले कंकण पहनाये। (कंकण अमंगल-परिहार या मंगलसाधन का चिह्न है।)। १२०४

चिल्लिय लोदि कॉङ्गैत् तिरण्मणिक् कऩहच् चॅप्पिल्
वल्लियु मऩङ्गऩ् विल्लु माऩ्मदच् चाऩ्दिऱ् ऱीट्टिप्
पल्लिय नॅऱियिऱ् पार्क्कुम् बरम्बोरु ळॅऩ्ऩ यार्क्कुम्
इल्लैयुण् डॅऩ्ऩ निऩ्ऱ विडैयिऩुक् किडुक्कण् शॅय्दार् 1205

चिल् इयल् ओति–कुछ विभिन्न प्रकार से अलंकार-योग्य केशवाली सीताजी के; कॉङ्कै–स्तनरूपी; मणि–मणि जड़ित; तिरळ्–पुष्ट; कऩकम् चॅप्पिल्–कनक कलश पर; वल्लियुम्–कल्पलता का चित्र; अनङ्कऩ् विल्लुम्–अनंग का

धनुष; मान् मतम् चान्तिल्–मृगमद लेप से मिश्रित चन्दन से; तीट्टि–लिखकर; पल् इयल् नॅऱियिऩ्–बहुप्रकार रहनेवाले मतों द्वारा; पार्क्कुम्–अन्वेषित; परम् पॊरुळ् अॅऩ्ऩ–परब्रह्म के समान; यार्क्कुम्–सब के लिए; इल्लै उण्टु–नहीं, हाँ, कहलाते हुए; निऩ्ऱ–(दृष्टिगोचर नहीं होते हुए) रहनेवाली; इटैयित्तुक्कु–कमर को; इटुक्कण् चॅय्तार्–कष्ट दिलाया। १२०५

देवी विभिन्न प्रकार से (जैसे, गाँठ, चूड़ा, वेणी आदि के रूप में) अलंकृत करने योग्य केशवाली थीं। उनके एक-एक मणि (चूचुक) से अलंकृत कनककलश के समान स्तनों पर चेरियों ने कस्तूरी-मिश्रित चंदन के चेप से कल्पलता, कामधनु (ईख) आदि की चित्रकारी बनायी। इससे उन्होंने उनकी कमर को कष्ट दिलाया। वह कमर सभी धर्मों में अन्वेषण का विषय बनकर अनुमान द्वारा "हैं" प्रत्यक्ष रूप से "नहीं" का संशय उत्पन्न करते हुए अदृश्य रहनेवाले परब्रह्म के समान थी। (केश पाँच तरह से अलंकृत किया जा सकता है। अतः उसे पंचालंकार केश भी कहा जाता है।)। १२०५

निऱञ्जॅय्को शिकनुण् डूशु नीविनी वाद वल्हुऱ्
पुऱञ्जॅय्मे हलयु मारत् तारहैच् चुमैयुम् बूट्टित्
तिऱञ्जॅय्हा शीऩ्ऱ शोदि पेदैशे यॉळियिऱ् ऱीर्न्द
कऱङ्गुपु तिरिय यारुङ् गण्वऴुक् कुऱ्ऱु निऩ्ऱार् 1206

निऱम् चॅय्–(मनोरम) रंगवाले; नुण् कोचिकम् तूचु–महीन कौशेय वस्त्र के; नीवि नीवात–नीवि (कटि वस्त्रबंध) से अलग न होनेवाली; अल्कुल् पुऱम् चॅय्–कटिप्रदेश को अलंकृत करनेवाली; मेकलैयुम्–मेखला को; आरम्–मोती के; तारकै चुमैयुम्–"तारकभार" नामक आभरण को; पूट्टि–पहनाकर; तिऱम् चॅय्–अनेक प्रकार के; काचू ईऩ्ऱ–उनके रत्नों से जनित; चोति–प्रकाश; पेतै चॅय् ऑळियिऩ्–बाला (सीताजी) की ललाई से; तीर्न्त–विपरीत; कऱङ्कुपु तिरिय–पार्श्व में छिटका, इसलिए; यारुम्–सभी; कण् वऴुक्कु उऱ्ऱु–(आँखें) चौंधियाकर; निऩ्ऱार्–खड़ी रही। १२०६

चेरियों ने सुचारु रंग का कौशेय वस्त्र पहनाया। उसकी नीवि से बाँधकर मेखला और मोती के "तारकभार" नामक आभरण से कमर को अलंकृत किया। उन आभरणों के रत्नों से जो कांति छूट रही थी वह सीताजी की देह-कांति से भिन्न थी। सब कांतियाँ इस तरह बिखरीं कि पास खड़ी रहनेवालियों की आँखें चौंधिया गयीं। १२०६

ऐयवा यनिच्चप् पोदि ऩदिहमु नॉय्य वाडल्
पैयर वल्हु लाडऩ् पञ्जिऩ्ऱिप् पऴुत्त पादच्
चॅय्यपूङ् गमल मऩ्ऩच् चेर्त्तिय चिलम्बु शाल
नॉय्यवे नॉय्य वॅऩ्ऱो पलपड नुवल्व दम्मा 1207

आटल्–फन फैलाकर नाचनेवाले; अरवु पै अल्कुलाळ् तऩ्–सर्प के फन सरीखे वरांगवाली के; ऐय आय्–सुन्दर बनकर; अऩिच्चम् पोतिऩ्–'अनिच्च' नामक (लजाल्) पुष्प से बढ़कर; अतिकमुम् नॊय्य–अधिक कोमल; पञ्चु इऩ्ऱि पळुत्त–महावर के बिना ही लाल; पातम्–चरणरूपी; चॆय्य पू कमलम्–लाल कमलपुष्पों पर; मऩ्ऩ चेर्त्तिय–फबनेवाली रीति से पहनाये गये; चिलम्पु–नूपुर; पल पट नुवल्वतु–विविध शब्द जो करते हैं; चाल नॊय्यवे नॊय्यवे–बहुत कोमल हैं कोमल; ऎऩ्ऱो–ऐसा क्या; अम्मा–री माँ। १२०७

सीताजी के चरण-कमलों में चेरियों ने नूपुर पहनाये। सर्प के फैलाये गये फन के समान जिनका वरांग था उन सीता के चरण 'अनिच्च' नाम के फूल से भी, जो सूँघने पर मुरझा जाता है, कोमल थे। और वे महावर लगे बिना ही लाल थे। उन चरणों के नूपुर जब नाद करते थे तब ऐसा लगता था, मानो वे यह कह रहे हों कि ये चरण अवश्य कोमल और छोटे हैं, कोमल और छोटे हैं। १२०७

नञ्जिऩो डमुदङ् गूट्टि नाट्टङ्ग ळाऩ वॆऩ्ऩच्
चॆञ्जॆवे नीण्डु मीण्डु शेयरि शिदऱित् तीय
वञ्जमुङ् गळवु मिऩ्ऱि मळैयॆऩ्ऩ मदर्त्त कण्गळ्
अञ्जऩ निऱमो वण्णल् वण्णमो वऱिद ऱेऱ्ऱाम् 1208

नञ्चिऩोटु अमुतम् कूट्टि–विष के साथ अमृत मिलकर; नाट्टङ्कळ् आऩ–आँखें बनीं; अऩ्ऩ–ऐसी; चॆञ्चॆवे–सीधी; नीण्टु–लम्बी (दूर) जाकर; मीण्टु–लौटकर; चेय् अरि चितऱि–लाल डोरों से युक्त होकर; तीय वञ्चमुम्–बुरा कपट; कळवुम्–और चोरी के; इऩ्ऱि–विना; मळै ऎऩ्ऩ–मेघ-सम (शीतल); मतर्त्त–पुष्ट; कण्कळ्–आँखों का रंग; अञ्चऩम् निऱमो–अंचन का रंग है; अण्णल् वण्णमो–प्रभु श्रीराम का रंग है; अऱितल् तेऱ्ऱाम्–जान नहीं सके। १२०८

सीताजी की आँखें लम्बी थीं और कान तक गयी थीं। वे विष और अमृत दोनो, की बनी-सी लगती थीं। (वे दोनो श्रीलक्ष्मी के साथ सागर से निकले थे। आँख का सफेद अंश अमृत-सा था और काला अंश विष के समान था।) उन आँखों में लाल डोरे पाये जाते थे। उनमें न कपट था न चोरी। वे पुष्ट और मनोरम थीं। उनका काला रंग कहाँ से आया ? अंजन जो लगा हुआ था उससे मिल गया ? या श्रीराम का रूप उनमें भरा था, उनका रंग उन आँखों में दिखता था ? हम जान नहीं पाते। १२०८

मॊय्वळर् कुवळै पूत्त मुळरियिऩ् मुळैत्त मुऩ्नाळ्
मॆय्वळर् मदियि ऩाप्पण् मीऩुण्डे लऩैय देय्प्प
वैयह मडन्दै मार्क्कु नाहरको दयर्क्कुम् वाऩत्
तॆय्वमङ् गयर्क्कु मेलान् दिलकत्तैत् तिलकञ् जेर्त्तार् 1209

मॊय् वळर्–(दल) लसे और विकसित; कुवलै पूत्त–कुवलय जिसपर खिले हों; मुळरियिऩ्–(उस) कमलपुष्प पर; मुळैत्त–उदित; मूऩ्ऱु नाळ् मॆय् वळर्–तीन दिन के बढ़े हुए; मतियिऩ् नाप्पण्–(तीज के) चाँद में; मीऩ्–नक्षत्र; उण्टेल्–हो, तो; अऩैयतु एय्प्प–उसके समान; वैयकम् मटन्तै मार्क्कुम्–भूलोक की स्त्रियों से; नाकर् कोतैयर्क्कुम्—नाग-(पाताल) लोक की नारियों से; वाऩम्–सुरलोक की; तॆय्व मङ्कैयर्क्कुम्–देव स्त्रियों से; मेल् आम्–बढ़कर श्रेष्ठ; तिलकत्तै–तिलक समान देवी को; तिलकम् चेर्त्तार्–तिलक लगाया। १२०९

एक कल्पित चित्र है। दो पुष्ट कुवलय एक कमल में खिले हैं। उस कमल में तीज का चाँद उदित है। उस चाँद में एक तारा है। ऐसा कोई कमल मिले वह सीताजी के श्रीमुखमण्डल की उपमा बन सकता है। (कमल मुख है; कुवलय आँखें; चन्द्र ललाट है और तिलक तारा है।) ऐसे मुखवाली सीताजी के, जो भूलोक, देवलोक और पाताललोक की वासिनियों की तिलक थीं, भाल में तिलक लगाया गया। १२०९

शिऩ्ऩप्पूच् चॆरुहु मॆऩ्बूच् चेहरप् पोदु कोदिल्
कऩ्ऩप्पूक् कञ्ल मीदु कऱ्पहक् कॊ़ळुन्दि यावुम्
मिऩ्ऩप्पूञ् जुरुम्बुम् वण्डु मिञिऱुन्दुम् बिहळुम् बम्बप्
पुऩ्ऩैप्पूऩ् दादु माऩुम् पॊऱ्पॊडि यप्पि विट्टार् 1210

चिऩ्ऩम् पू–छुट्टे फूल; चॆरुकुम् मॆऩ् पू–सिर पर खोंसने के कोमल फूल; चेकरम् पोतु–चोटी पर रखने के फूल; कोतु इल्–निर्मल; कऩ्ऩम् पू–कर्णमूल में रखने के पुष्प; कञल्–शोभित रहे; मीतु–ऊपर; कऱ्पकम् कॊ़ळुन्तु यावुम्—कल्पपल्लव-सम सभी पल्लव; मिऩ्ऩ–भासमान रहे, ऐसा; चुरुम्पुम् वण्टुम् मिञिऱुम् तुम्पिकळुम्–चारों तरह के भौंरे; पम्प–मँडरायँ; पुऩ्ऩै पू तातु माऩुम्–कदम्ब के फूल के मकरन्द के समान; पॊऩ् पॊटि–(अंगराग) स्वर्णचूर्ण; अप्पिविट्टार्–लगा दिया। १२१०

चेरियों ने सीताजी का पुष्पों से श्रृंगार किया। छुट्टे फूल, केशों में खोंसनेवाले फूल, चोटी पर पहनाया जानेवाला फूल, निर्मल कर्णमूल पर रखनेवाले फूल इनसे अलंकृत कर पल्लवों से भी सजाया। उनके ऊपर सब तरह के भौंरे मँडराने लगे। इसके बाद उन्होंने कदम्ब के सुमनों के मकरन्द के समान स्वर्णरंग के अंगराग से उबटन कराया। (ये फूल प्राकृतिक फूल भी हो सकते थे या स्वर्ण के बने फूलों के रूपवाले भी। पल्लवों की भी वही बात है।)। १२१०

नॆय्वळर् विळक्क माट्टि नीरॊडु पूवुन् दूवित्
तॆय्वमुम् परावि वेद पारकर्क् कोन्दु शॆम्बॊऩ्
ऐयवि यरुहु शेर्त्ति याय्निऱ वयिऩि शुऱ्ऱिक्
कैवळर् मयिल ऩाळै वलञ्जॆय्दु काप्पु मिट्टार् 1211

नॆय् वळर् विळक्कम् माट्टि–घी डालकर दीप जलाकर; नीरॊटु पूवुम् तूवि–जल और फूल (बलि के रूप में) छिड़काकर; तॆय्वमुम् परावि–इष्टदेवों की पूजा

करके; वेत पारकर्क्कु–वेद पारंगतों को; चॆम् पॊन् ईन्तु–स्वर्णदान करके; ऐयवि अरुकु चेर्त्ति–पीली सरसों और दूर्वा घास को सिर पर डालकर; आय् निऱम् अयिऩि–सुन्दर लाल रंग के अन्न-मिश्रित जल का नीराजन करके; कै वळर् मयिल् अऩ्ऩाळै–अपने हाथों पालित मोर-सी छटावाली सीता की; वलम् चॆय्तु–परिक्रमा करके; काप्पुम् इट्टार्–(धाइयों ने उनके भाल में) रक्षण का टीका लगाया। १२११

इतना होने के बाद धाइयों ने कुदृष्टि से बचाने के लिए कुछ 'दृष्टि-परिहार' के कार्य किये। घी का दिया जलाया, फूलों के साथ जल छिड़का। इष्टदेवों की पूजा करायी गयी और वेदपारगों को स्वर्ण का दान किया गया। पीली सरसों और दूब की घास को सीताजी के सिर पर डाला। एक थाली में लाल गरं के अन्न के साथ जल लेकर आरती उतारी गयी। फिर अपने हाथों जो मोर के समान पली थीं उन सीता के भाल में धाइयों ने आरती के जल की बिन्दु अमंगल-परिहारार्थ लगायी। १२११

कञ्जत्तुक् कळिक्कु मिऩ्ऱेऩ् कवर्न्दुणुम् वण्डु पोल
अञ्जॊऱ्कळ् किळ्ळैक् कॆल्ला मरुळुवा ळऴहै मान्दित्
तञ्जॊऱ्कळ् कुऴऱित् तत्तन् दहैतडु माऱि निऩ्ऱार्
मञ्जर्क्कु माद रार्क्कु मनमॆऩ्ब दॊऩ्ऱे यऩ्ऱो 1212

किळ्ळैक्कु ऎल्लाम्–सब तोतों को; अम् चॊऱ्कळ् अरुळुवाळ्–मधुर बोली (सिखा) देनेवाली; अऴकै–(देवी की) सुन्दरता को; कञ्चत्तु–कंज में; कळिक्कुम् इऩ् तेऩ्–मस्ती देनेवाले मधुर शहद को; कवर्न्तु उणुम्–लूटकर खानेवाले; वण्टु पोल–भ्रमरों के समान; मान्ति–(आँखों से) मानो पीकर; तम् चॊऱ्कळ्–वचन; कुऴऱि–अस्पष्ट करके; तम् तम् तकै तट्टुमाऱि—अपनी-अपनी स्थिति भुलाकर; निऩ्ऱार्–(स्त्रियाँ) खड़ी रहीं; मञ्चर्क्कुम्–पुरुषों के लिए और; मातरार्क्कुम्–स्त्रियों के लिए; मतम् ऎऩ्पतु–मन का करण; ऒऩ्ऱे अऩ्ऱो–एक ही (सा) है न। १२१२

देवी का शृंगार करके धाइयाँ और चेरियाँ उनके दिव्यसौन्दर्य को देखकर एकदम मुग्ध हो गयीं। शुकों को मधुर बोली सिखानेवाली, यानी शुक से बढ़कर मधुर बोली बोलनेवाली देवी के रूप-सौन्दर्य को वे कमल के शहद को चूसनेवाले भ्रमरों के समान अपनी आँखों से मानो पीने लगीं। तब एक तरह का मोह और मस्ती उत्पन्न हो गयी। इसलिए बोलने में अस्थिरता और अस्पष्टता आ गयी। हम स्त्री हैं, यह भी भूल गयीं। हाँ, पुरुष हों, चाहे स्त्री, दोनो का मन तो एक ही बनावट या प्रकार का है न ? । १२१२

इऴैहुला मुलैयि ऩाळै यिडैयुवा मदियि ऩोक्कि
मऴैहुला मोदि नल्लार् कळिमयक् कुऱ्ऱु निऩ्ऱार्
उऴैहुला नयऩत् तार्माट् टॊऩ्ऱॊऩ्ऱे विरुम्बऱ् कॊत्त
दऴहॆला मॊरुङ्गे कण्डाल् यावरे याऱ्ऱ वल्लार् 1213

मऴै कुलाम् ओति–मेघ-सम केशवाली; नल्लार्–स्त्रियाँ; इऴै कुलाम् मुलैयिऩाळै–आभरण को शोभा देनेवाले उरोजोंवाली को; उवा मतियिऩ् नोक्कि–पूर्णचन्द्र सदृश देखकर; कऴि मयक्कु उऱ्ऱु निऩ्ऱार्–मोदमुग्ध खड़ी रहीं; उऴै कुलाम् नयत्तुतार् माट्टु–मृगनयनी स्त्रियों में; ऑऩ्ऱु ऑऩ्ऱे–एक न एक अंग ही; विरुम्पऱ्कु ऑत्ततु–आकर्षक रहता है; अऴकु ऍलाम्–सारा सौंदर्य; ऑरुङ्के कण्टाळ्–एक ही स्थान में दिखाई दे तो; आऱ्ऱ वल्लार् यावरे–अपने को सम्हाल सकनेवाले कौन हैं । १२१३

मेघसम केशवाली सब उनको, पूर्णचन्द्र के समान, आभरण-शोभित स्तनोंवाली देवी को देखते हुये, मुग्ध और चकित खड़ी रहीं। मृगनयनियों में एक-एक का एक अंग सुन्दर होता है। जिस एक ही स्त्री के सारे अंग सुन्दर हैं, उस सर्वांगसुन्दरी को देखकर किसका मन वश में रहेगा ? । १२१३

शङ्गङ्गै युडैम यालुम् तामरैक् कण्ण दालुम्
ऍङ्गॅङ्गुम् बरन्दु पल्वे ऱुळ्ळत्तु मॅऴुदिऱ् ऱॅऩ्ऩ
अङ्गङ्गे तोऩ्ऱ लालु मरुन्ददि यऩैय कऱ्पिऩ्
नङ्गयु नम्बि यौत्ता णामिऩिप् पुहल्व दॅऩ्ऩो 1214

चङ्कु अम् कै उटैमैयालुम्–शंख (पाञ्चजन्य) हाथ में रखने से; कण् अतु तामरै आलुम्–आँखें कमल (सी) हैं, इसलिए; ऍङ्कु ऍङ्कुम्–सब कहीं; परन्तु–व्यापकर; पल् वेऱु उळ्ळत्तुम्–अत्यधिक लोगों के मनों में; ऍऴुतिऱ्ऱु–(रूप) लिखा गया; ऍऩ्ऩ–सा; अङ्कु अङ्के तोऩ्ऱलालुम्–यत्रतत्र दिखाई देने से; अरुन्तति अऩैय कऱ्पिऩ्–अरुंधती के समान पातिव्रत्यवाली; नङ्कैयुम्–देवी सीताजी; नम्पि–प्रभु (नायक) के; ऑत्ताळ्–समान बनीं; नाम् इऩि पुकल्वतु ऍऩ्ऩो–आगे हमें कहने को क्या है । १२१४

श्रीराम के हाथ में (विष्णुदेव के होने के नाते) पाँचजन्य नामक शंख है; सीताजी के हाथों में शंख (कंकण) हैं; आँखें श्रीराम की कमल के समान हैं। सीताजी (लक्ष्मीदेवी होने के नाते) भी कमल पर रहने वाली हैं। दोनों सर्वत्र व्याप्त हैं। अनेक लोगों के मनों में उनकी कल्पना के अनुसार रूपों में दिखाई देते हैं। इसलिए अरुंधतीतुल्य सीताजी पुरुषों में श्रेष्ठ नायक श्रीराम के समान ही रहीं। इससे बढ़कर सीताजी की महिमा कैसे कही जाय ? । १२१४

परन्दमे हलयुङ् गोत्त पादशा लहमु नाहच्
चिरञ्जॅय्ऩू बुरमुम् वण्डुम् शिलम्बॊडु शिलम्बि याऱ्पप्
पुरन्दरऩ् ऱऩक्कुऱ् ऱाळै यरम्बयर् पुडैशूऴ्न् दॅऩ्ऩ
वरम्बऱु मऴलैत् तीञ्जॊऩ् मडन्दयर् तॊडर्न्दु शूऴ्न्दार् 1215

वरम्पु अऱु–असंख्य; तीम् मऴलै चॊल् मटन्तैयर्–मधुर तुतली बोली बोलनेवाली

स्त्रियां; परन्‌त मेकलैयुम्–(कमर में) ढीली पहनी हुई मेखला; कोत्‌त–(सुन्दर रूप से) गुँथी हुई; पातचालकमुम्–"पाद जाल" नामक पैंजनी; नाकम् चिरम् चॅय् नूपुरमुम्–सर्पसिर-सम सिरेवाला नूपुर; चिलम्पॊट्टु–पायलें; वण्टुम्–और हाथ के कंकण (या भ्रमर); चिलम्पि आर्प्प–अधिक बज उठे; तॊटर्न्‌तु–साथ लगे; पुरन्‌तरन् तन्‌क्कु उऱ्ऱाळै–इन्द्र की प्यारी (शची देवी) को; अरम्पैयर् पुटै चूऴ्न्‌तु अॅऩ्ऩ–अप्सराएँ घेरकर आती हों, ऐसा; चूऴ्न्‌तार्–घेर गईं। १२१५

सभी स्त्रियाँ सीताजी को घेरकर आयीं। वे सब मधुर रूप से तुतलाती बोलनेवालियाँ थीं। उनकी कटि में मेखलाएँ और पैरों में पादजाल, सर्पसिर के समान सिरेवाले नूपुर और पायलें आदि विविध आभरण झनझना रहे थे। वे इन्द्र की देवी शची को अप्सराएँ घेरकर आयी हों, ऐसा सीताजी के चारों ओर आकर खड़ी हुयीं। १२१५

शिऩ्दॊडु कुऱळुङ् गूऩुञ् जिलदियर् कुऴामुऩ् दॆऱ्ऱि
वन्‌दडि वणङ्गिच् चुऱ्ऱ मणियणि विदाऩ नीऴल्
इऩ्दुविऩ् कॊऴुन्‌दु विण्मी ऩिऩत्तॊडुम् वरुवदॆऩ्ऩ
नन्‌दलिल् विळक्क मऩ्ऩ नङ्गयु नडक्क लुऱ्ऱाळ् 1216

चिन्‌तॊट्टु–ठिंगनियाँ; कुऱळुम्–और बौनियाँ; कूऩुम्–कुब्जाएँ; चिलतियर् कुऴामुम्–चेरियों के समूह; तॆऱ्ऱि वन्‌तु–बहुत निकट आकर; अटि वणङ्कि–पैरों पर विनत होकर; चुऱ्ऱ–घेरकर आईं; मणि अणि–रत्नालंकृत; वितानम् नीऴल्–वितान के नीचे; इन्‌तुविऩ् कॊऴुन्‌तु–बालचन्द्र; विण्मीऩ् इऩत्तुटऩ्–आकाश के ताराकुल के साथ; वरुवतु अॅऩ्ऩ–आ रहा हो, ऐसा; नन्‌तल् इल्–निर्मल; विळक्कम् अऩ्ऩ–दीप के समान; नङ्कैयुम्–नायिका भी; नटक्कल् उऱ्ऱाळ्–चलने लगीं। १२१६

उनमें ठिंगनी स्त्रियाँ (तीन फुट की), (दो फुट की) बौनी स्त्रियाँ, और कुब्जाएँ थीं। चेरियों का समूह था। वे सीताजी के पैरों पर नमस्कार करके उनके साथ जाने लगीं। सीताजी के सिर के ऊपर रत्नालंकृत वितान तना हुआ आ रहा था। निर्दोष दीपक के समान भासमान वे नायिका, तारों के बीच जानेवाले चन्द्र के समान चलने लगीं। १२१६

वल्लियै युयिर्त्तनिल मङ्गयिवळ् पादम्
मॆल्लिय वुऱैक्कुमॆऩ वञ्जिवॆळि यॆङ्गुम्
पल्लव मलर्त्तॊहै परप्पिऩ ळॆऩत्तऩ्
नल्लणि मणिच्चुडर् तवऴ्न्दिड नडन्दाळ् 1217

वल्लियै–लता (सी सीता) को; उयिर्त्त–जन्म देनेवाली (प्रकट करानेवाली); निल मङ्कै–भू की देवी; इवळ् पातम्–इनके चरण; मॆल्लिय–कोमल हैं; उऱैक्कुम्–दुखेगी (धरती); ऍऩ्ऱु–ऐसा; अञ्चि–डरकर; वॆळि अङ्कुम्–सभी स्थलों पर;

पल्लवम्–कोमल पत्तों; मलर् तोकै–और पुष्पकुल को; परप्पित्तऴ् ॲत्त–मानो (भूमि ने) बिछाया हो, ऐसा; तऩ् नल् अणि मणि चुटर्–उनके श्रेष्ठ आभरणों की मणियों की ज्योति को; तवऴ्न्तिट–छिटकने देते हुए; नटन्ताऴ्–(देवी) चलीं। १२१७

जब वे चलीं तब उनके आभरणों की मणियों की कांति भूमि पर गिरती फैलती आ रही थी। उसको देखकर ऐसा लगता था, मानो सीताजी को प्रकट करनेवाली भूमिदेवी ने, इस डर से कि देवी के कोमल चरण धरती पर पड़ने से दुखेंगे, सर्वत्र पल्लव और फूल बिछाये हैं। १२१७

तॊऴुन्दहय मॆऩ्ऩडै तॊलैन्दुकऴि यऩ्ऩम्
ॲऴुन्दिडै विऴुन्दयर्व दॆऩ्ऩवय लॆङ्गुम्
कॊऴुन्दुडैय शामरै कुलाववॊर् कलावम्
वऴङ्गुनिऴल् मिऩ्ऩवरु मञ्ञैयॆऩ वन्दाऴ् 1218

कऴि अऩ्ऩम्–मुदित हंस; तॊऴुम् तकैय–सबसे प्रशंसनीय; मॆल् नटै–मन्द (सुन्दर) चाल के सामने; तॊलैन्तु–हारकर; ॲऴुन्तु–उठते; इटै विऴुन्तु–गिरते; अयर्वतु ॲऩ्ऩ–म्लान होते हैं, जैसे; अयल् ॲङ्कुम्–सब ओर; कॊऴुन्तु उटैय–पल्लव मृदुल; चामरै कुलाव–चामर डुलते हैं; कलावम् वऴङ्कुम्–(पंख) कलाप से निकलनेवाली; निऴल्–आभा; मिऩ्ऩ वरुम्–बिजली के समान फैलाते आनेवाले; ओर् मञ्ञै ॲऩ्ऩ–एक मोर के समान; वन्ताऴ्–आईं। १२१८

सीताजी के चारों ओर चामर डुल रहे थे। वे उन हंसों के समान लगते थे जो अपनी प्रशंसित हंसगति के सीताजी की चाल के सामने मूल्य खो देने से दुखी होकर उठते, चलते और लड़खड़ाकर गिर जाते थे। वे अपने कलाप आदि आभरणों के साथ कलाप खोलकर आकर्षक ढंग से छटा बिखेरते आनेवाले मोर के समान चलती गईं। १२१८

❀ मण्मुद लऩैत्तुलहिऩ् मङ्गयर्ह ळॆल्लाम्
कण्मणि यॆऩत्तहय कऩ्ऩियॆऴिल् काण
अण्णऩ्मर बिर्चुड रुत्तियॊडु ताऩव्
विण्णिऴिव दॊप्पदॊर् विदाऩनिऴल् वन्दाऴ् 1219

मण् मुतल्–भूलोकादि; अऩैत्तु उलकिल्–सभी लोकों में रहनेवाली; मङ्कैयर्कऴ् ॲल्लाम्–सभी स्त्रियाँ; कण् मणि ॲऩ तकैय–अपनी आँखों का तारा मानें, इस योग्य; कऩ्ऩि–कन्या; ॲऴिल् काण–(का) सौंदर्य देखने के लिए; अण्णल् मरपिल् चुटर्–(श्रीरामचन्द्र) प्रभु के वंश के आदि पुरुष, सूर्य; अरुत्तियॊटु–चाव के साथ; अव विण् इऴिवतु–उस आकाश से उतरते हों; ऒप्पतु–ऐसा; ओर् विताऩम् निऴल्–एक वितान के नीचे; वन्ताऴ्–आईं। १२१९

सीताजी के ऊपर रत्नमंडित एक वितान ले आया जा रहा था। वह सूर्य के समान लगता था, जो श्रीराम के वंश के आदि पुरुष थे और जो भूलोक आदि सभी लोकों की सुन्दरियों से आँखों के तारे के समान मान्य सीताजी के सौन्दर्य को देखने के लिए उतरकर आ रहे हो। १२१९

कऱ्ऱैविरि पॊऱ्चुडर् पयिऱ्ऱुरु कलाबम्
शुऱ्ऱुमणि पुक्कविऴै मिक्किडै तुवऩ्ऱि
विऱ्ऱवऴ् वाण्मिळिर मॆय्यणिहण् मिऩ्ऩच्
चिऱ्ऱिडै नुडङ्गवॊळिर् शीऱडि पॆयर्त्ताऴ् 1220

कऱ्ऱै विऱि–किरणजाल बिखेरनेवाला; पॊऩ् चुटर् पयिऱ्ऱु उरु–स्वर्ण की कांति से युक्त; कलाप–कलाप नामक कटि का आभरण; चुऱ्ऱुम्–और कमर को वलयित कर पहने जानेवाले; मणि पुक्क इऴै–रत्नखचित आभरण; मिक्कु–अधिक; इटै तुवऩ्ऱि–आपस में मिलकर; विल् तवऴ्–धनु के समान टेढ़ा प्रकाश फैलाते थे; वाळ् मिळिर–तलवार के समान भी फैलाते थे; मॆय्–उनकी देह और; अणिकळ्–आभरण भी; मिऩ्ऩ–बिजली के समान चमकते; चिऱु इटै–छोटी कमर; नुटङ्क–झुक जाती; ऑळिर् चिऱु अटि–उज्ज्वल अपने छोटे (चरण) डग; पॆयर्त्ताऴ्–(देवी ने) (बारी-बारी से) भरे। १२२०

सीता के शरीर पर अनेक आभरण थे। कमर में कलाप, (सोलह लड़ियोंवाली मेखला) और अन्य रत्नमय आभरण थे। उनका प्रकाश धनुष और तलवार के समान भूमि पर पड़ता था। उनकी देह की काँति बिजली के समान चमकती थी। पतली कमर झुक-झुक जा रही थी। वे अपने छोटे सुन्दर चरणों को बारी-बारी से रखते हुये आ रही थीं। १२२०

पॊऩ्ऩिऩ्ऩॊळि पूविऩ्वॆऱि शाऩ्दुपॊदि शीदम्
मिऩ्ऩिऩिऴ लऩ्ऩवडऩ् मेऩ्ऩियदु माऩ
अऩ्ऩमु मरम्बयरु मारमिऴ्दु नाण
मऩ्ऩवै यिरुन्दमणि मण्डब मणैन्दाळ् 1221

पॊऩ्ऩिऩ् ऑळि–सोने की कांति; पूविऩ् वॆऱि–फूलों की सुगन्ध; चाऩ्तु पॊति–चन्दन की; चीतम्–शीतलता; मिऩ्ऩिऩ् निऴल्–बिजली की दमक; अऩ्ऩवळ् तऩ् मेऩ्ऩि–उनके शरीर पर (मिले थे); अतु–उससे; माऩ–तुल्य रीति से; अऩ्ऩमुम्–(चाल से) हंस; अरम्पैयरुम्–(सुन्दरता से) अप्सराएँ; आर् अमिऴ्तुम्–(वचन-मधुरिमा में) श्रेष्ठ अमृत; नाण–लजा जायँ, ऐसा (चलकर); मऩ् अवै इरुन्त–जहाँ राजसभा लगी थी उस; मणि मण्टपम्–रत्नमण्डप में; अणैन्ताळ्–पहुँचीं। १२२१

उनके शरीर में स्वर्ण की आभा, फूल की सुगन्धि, चन्दन की शीतलता और बिजली की दमक —ये सब मिले हुये थे। वे हंसों को (चाल में), अप्सराओं को (रूप में), अमृत को (वचन-मधुरिमा में) हराकर उनको लज्जित करते हुये सभा मंडप में गयीं जिसमें सभी राजा लोग आसीन थे। १२२१

शमैत्तवरै यिऩ्ऩैमऱै ताऩुमॆऩ लामच्
त्चुमैतिरण् मुलैत्तॆरिवै तूय्वडिवु कण्डोर्

अमैत्तिरळ्हों डोळियरु माडवरु मॅल्लाम्
इमैत्तिल रुयिर्त्तिलर्हळ् शित्तिर मॅऩ्ऩत्ताम् 1222

चमैत्तवरै इऩ्मै–सर्जक के न होने के कारण; ताऩुम् मऱै ॲऩ्ऩल् आम्–स्वयं वेद जो माने जा सकते थे; चुमै–(वे) भारी; तिरळ् मुलै–पुष्ट स्तनोंवाली; तॆरिवै–कन्यारत्न का; तूय् वटिवु कण्टार्–पवित्ररूप का दर्शन जिन्होंने किया उन; अमै तिरळ् कॊळ्–बाँस की-सी सुन्दरता से युक्त; तोऴियरुम्–भुजाओंवाली स्त्रियाँ और; आटवरुम्–पुरुष; ॲल्लाम्–सभी ने; चित्तिरम् ॲऩ्ऩ–चित्र के समान; इमैत्तिलर्–पलकें नहीं मारीं; उयिर्त्तु इलर्कळ्–साँस नहीं छोड़ी; (ताम्)। १२२२

सीताजी स्वयंभू थीं। अतः उनका शरीर वेदों के समान, जो अपौरुषेय हैं, पवित्र था। मनोरम पीन उरोजों से शोभित उनको देखकर बाँस-सम भुजावाली स्त्रियाँ और पुरुष सब चित्रों के समान निस्पंद रह गये। उनका विस्मय इतना था कि उनकी आँखें नहीं झपकीं और साँसें भी रुकी रह गईं। १२२२

❀ अऩ्ऩवळै यल्लळॅऩ्ऩ वामॅऩ्ऩ वयिर्प्पाऩ्
कऩ्ऩियमिऴ दत्तयॅदिर् कण्डकडल् वण्णऩ्
उऩ्ऩुयिर् निलैप्पदॊ ररुत्तियॊ डुऴैन्दाण्
डिऩ्ऩमु दॆऴक्कळिहॊ ळिन्दिरऩै यॊत्ताऩ् 1223

कऩ्ऩि अमिऴ्तत्तै–सुधा-सम कन्यारत्न को; ॲतिर् कण्ट–सामने जिन्होंने देखा; कटल् वण्णऩ्–समुद्रवर्ण (नीले) श्रीराम; अऩ्ऩवळै–उनको (उनके सम्बन्ध में); अल्लळ्–वे नहीं; ॲऩ्ऩ–ऐसा; आम् ॲऩ्ऩ–होंगी वही, ऐसा; अयिर्प्पाऩ्–संशयग्रस्त रहे; उऩ्ऩु–(श्रेष्ठ)मान्य; उयिर्–प्राणों को; निलैप्पतु ओर् अरुत्तियॊटु–अमर बनाने की इच्छा से; उऴैत्तु–बहुत परिश्रम करके; आण्टु–वहाँ (क्षीरसागर में); अमुतु ॲऴ–अमृत के प्रकट होने पर; कळि कॊळ्–आनन्दपूरित; इन्तिरऩै–(जो हुए) उन इन्द्र के; ऒत्ताऩ्–समान हुए। १२२३

उनको देखने पर प्रभु श्रीराम की क्या हालत हुयी ? उनको देखने से पहले सागरवर्ण श्रीराम के मन में संशय बना हुआ था। धनुर्भंग के फलस्वरूप जो उनके साथ विवाहनेवाली थीं वे क्या वही हैं जिनको मैंने उस दिन देखा था ? वे कभी सोचते कि हाँ वही होंगी, कभी सोचते कि नहीं हों, शायद। संशयसागर में डूबते उतराते थे। अब उनको देखकर वे इन्द्र के समान जो अमर बनने की इच्छा से बहुत परिश्रम से सागरमंथन कराकर अमृत के प्रकट होने पर बहुत आनन्द मग्न हुये थे, हो गये (बहुत आनन्दित हो गये)। १२२३

नऱत्तुऱै मुदिर्च्चियुऱु नल्लमुदु पिल्हुऱ्
ऱऱत्तिऩ्विळै वीत्तुमुह डुन्दियरु हुय्क्कुम्

निऱत्तुव रिदऴ्क्कुयि ऩिऩैप्पिऩिडै यल्लाल्
पुऱत्तुमुळ ळोवॅऩ्ऩ मऩत्तॊडु पुहऩ्ऱाऩ् 1224

नऱत्तु उऱै–शहद में स्थित; मुतिर्च्चि उऱु–(स्वाद में) वर्धित; नल् अमुतु–अच्छी सुधा को; पिल्कु उऱ्ऱु–बहाते हुए; अऱत्तिऩ् विळैवु–धर्म के फल से; ऑत्तु–तुल्य होकर; मुकडु उन्ति–चोरी से लाकर; अरुकु उय्क्कुम्–पास में प्राप्त की हुई; निऱम्–सुचारु रंगवाली; तुवर् इतऴ्–प्रवाल-सम मुख; कुयिल्–कोयल (-बयनी) ये; निऩैप्पिऩ् इटै अल्लाल्–केवल मेरे मन की (स्मरण की) न होकर; पुऱत्तुम् उळळो–बाहर भी रहती है क्या; ऍऩ्ऩ–ऐसा; मऩत्तॊटु–मन के साथ; पुकऩ्ऱाऩ्–कहा । १२२४

"मधु-मिश्रित अत्यन्त रुचिपूर्ण अच्छे पीयूष को बरसाते हुये, धर्म के फल के समान (मुझे अत्यन्त प्यारी बनकर), उस कन्यासौध के शिखर से इधर निकट आगत, ये प्रवालाधरा और कोकिल वाणी (सीताजी) मेरे मन में (अन्दर) रहने के अलावा बाहर भी हैं क्या ?" श्रीराम ने आप से आप ऐसा आश्चर्य करते हुए कहा । १२२४

❀ ऍङ्गळ्शॅय् तवत्तिऩि लिरामऩॅऩ्ऩ वऩ्दोऩ्
शङ्गिऩॊडु शक्कर मुडैत्तऩि मुदऱ्पेर्
अङ्गणर शादलिऩव् वल्लिमलर् पुल्लुम्
मङ्गैयिव ळामॅऩ्ऩ वशिट्टऩ्महिऴ् वुऱ्ऱाऩ् 1225

वचिट्टऩ्–वसिष्ठजी ने; ऍङ्कळ् चॅय् तवत्तिऩिल्–हमारी पूर्वकृत तपस्या से; इरामऩ् ऍऩ्ऩ वऩ्तोऩ्–श्रीराम के रूप में जो (अवतरित हो) आये; चङ्कित्तॊटु चक्करम् उटैय–शंख चक्रधर; तऩि मुतल्–अद्वैत ब्रह्म; पेर् अम् कण् अरचु–बड़ी आँखोंवाले सुन्दर जगन्नाथ ही हैं; आतलिऩ्–इसलिए; इवळ्–ये; अल्लि मलर् पुल्लुम्–कमलपुष्प पर रहनेवाली; अ मङ्कै आम् ऍऩ्ऩ–वही (कमला) देवी हैं यह समझकर; मकिऴ्वु उऱ्ऱाऩ्–आनन्द अनुभव किया । १२२५

उनको देखकर वसिष्ठजी को अपार आनन्द हुआ । उनको विदित था कि श्रीराम जो हमारी पूर्वकृत तपस्या के कारण अवतार ले आये हैं शंख चक्रधर, अद्वितीय परब्रह्म, विशालाक्ष, जगन्नाथ श्रीमन्नारायण ही हैं । अतः ये सीताजी स्वयं श्रीलक्ष्मी देवी हैं —यह जानकर वे आनन्दमग्न हो गये । १२२५

❀ तुऩ्ऱुपुरि कोदयॅऴिल् कण्डुलहु शूऴ्वऩ्
दॊऩ्ऱुपुरि कोलॊडु तऩित्तिहिरि युय्प्पाऩ्
ऍऩ्ऱुमुल हॅऴुमर शॅय्दियुळ ऩेऩुम्
इऩ्ऱुतिरु वॅय्दिय दॅऩक्कॅऩ निऩैत्ताऩ् 1226

उलकु चूऴ् वन्तु–लोक भर में भ्रमण करके आकर; ऑऩ्ऱु पुरि कोलॊटु–एक-सम शासन करनेवाले राजदण्ड (नीति) के साथ; तऩि तिकिरि उय्प्पाऩ्–एक

(आज्ञा-) चक्र चलानेवाले; तुऩ्ऱु पुरि कोतै–घने घुँघराले बाल वाली (सीताजी) का; ॲऴिल् कण्टु–सौंदर्य देखकर; उलकु एऴुम्–सातों लोकों पर; ॲऩ्ऱुम्–सदा; अरचु ॲय्ति उळत्तेऩुम्–राज्य करता रहा, तो भी; ॲऩक्कु तिरु ॲय्तियतु–मैं श्रीमान हुआ; इऩ्ऱु ॲऩ–आज ही, यह; निऩैत्ताऩ्–सोचा। १२२६

दशरथ का भी मन अत्यन्त मुदित हुआ। चक्रवर्ती ने जो सारे लोक पर एक ही सम (तटस्थ रहकर) राजदण्ड धारणकर अकेला आज्ञाचक्र चलाते रहे, सुलक्षणा, घने केशवाली सीताजी को देखा तो समझ लिया– कि इतने दिन सातों लोकों को शासित कर रहा था तो क्या हुआ ? आज ही मैं सचमुच श्रीमान हुआ कि मेरे राज्य में लक्ष्मीदेवी आईं। १२२६

❀ नैवळ नविऱ्ऱु मॊऴि नण्णवर लोडुम्
वैयनुहर् कॊऱ्ऱवऩु मादवरु मल्लार्
कैहडलै पुक्कऩ करुत्तुळवै यॆल्लाम्
दॆय्वमॆऩ वुऱ्ऱवुडल् शिन्दैवश मऩ्ऱो 1227

नैवळम् नविऱ्ऱुम्–'नैवळम्' नाम के राग के समान मधुर वचनवाली सीताजी; नण्ण वरलोटुम्–पास आईं, त्योंही; वैयम् नुकर् कॊऱ्ऱवऩुम्–लोकरंजक श्रीराम; मातवरुम् अल्लार्–और (वसिष्ठ विश्वामित्र प्रभृति) महान तपस्वियों से इतर सबों के; कैकळ्–हाथ; तलै पुक्कऩ–सिरों के ऊपर अंजलिबद्ध हो गये; करुत्तु उळ् अवै ॲल्लाम्–उनके मन आदि अन्तःकरणों ने; तॆय्वम् ॲऩ उऱ्ऱऩ–(आद्या) देवी को पहचान लिया; उटल् चिन्तै वचम् अऩ्ऱो–शरीर मन का वशवर्ती है न। १२२७

'नैवळम्' (तमिऴ का एक राग है। वह "पालै" प्रदेश, मरुप्रदेश से संबंध रखता है। वह बहुत ही मोहक राग समझा जाता है। इसी काण्ड के ८६८वें पद में भी इसकी चर्चा आयी है।) की सी मधुर-बयनी सीताजी जब पास आ गईं तब लोकरंजक रामचन्द्रजी (या भूपति दशरथ या भूप जनक —या तीनों) को और महान तपस्वियों (वसिष्ठजी विश्वामित्र प्रभृति महर्षियों) को छोड़कर अन्य सबके हाथ आप ही आप अपने-अपने सिरों के ऊपर अंजलिबद्ध हो गये। उनके मन ने उन्हें पहचनवा दिया कि वे आद्यादेवी, भगवती हैं। शरीर तो मन का आज्ञाकारी है ! (इस पद में सिर्फ एक राजा की चर्चा बिना नाम के आयी है। अतः अर्थ करने में कठिनाई महसूस की जाती है।) । १२२७

❀ मादवरै मुऱ्कॊळ वणङ्गिनॆडु मऩ्ऩऩ्
पादमल रैत्तॊऴुदु कण्गळ्पऩि पायुम्
तादैयरु हिट्टतवि शिऱ्ऱऩि यिरुन्दाळ्
पोदिऩै वॆऱुत्तरशर् पॊऩ्मऩै पुहुन्दाळ् 1228

पोतिऩै वॆऱुत्तु–(कमल) पुष्प से घृणा करके (त्याग कर); अरचर् पॊऩ् मऩै–(जनक) महाराज के स्वर्णमहल में; पुकुन्ताळ्–जो (प्रवेश करने) आईं;

मातवरै–(उन सीतादेवी ने) तपोधनों का; मुऩ् कॊळ वणङ्कि–पहले नमस्कार करके; नॆंटु मऩ्ऩवऩ्–चक्रवर्ती के; पातमलरै तॊऴुतु–चरणकमलों की पूजा करके; कण्कळ् पऩि पायुम्–आँखों में (आनन्द के) अश्रु बहाते हुए; तातै अरुकु–(विराजमान) पिता के पास; इट्ट तविचिल्–डले रहे आसन पर; तऩि इरुन्ताळ्–शालीन रूप से आसीन हुईं। १२२८

कमलपुष्प का अपना वासस्थान छोड़कर जो राजा जनक के स्वर्ण-महल में अपनी इच्छा के साथ आयी थीं उन सीतादेवी ने पहले महात्मा तपोधनों को नमस्कार किया। बाद श्रेष्ठ चक्रवर्ती दशरथ को नमस्कार किया। इसको राजा जनक आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुये देख रहे थे। उनके पास ही सीताजी के लिए उत्तम आसन डलवा दिया गया था। सीताजी उस पर आकर आसीन हुईं। १२२८

※ अच्चिलै युणर्न्दमुद लन्दण ऩिऩैन्दाऩ्
पच्चिलैयै यॊत्तपडि वत्तडलि रामऩ्
नच्चिलै ययिऱ्कण्मलर् नङ्गैयिव ळॆऩ्ऱाळ्
इच्चिलै किडक्कमलै येऴैयुमि ऱातो 1229

अ चिलै उणर्न्त–उन दिव्यमूर्ति का पारलौकिक सौंदर्य जो पहले ही पहचान गये, वे; मुतल् अन्तणऩ्–अग्रगण्य महर्षि; नच्च–आकर्षणयुक्त; इलै अयिल् कण्–पत्र के आकार (का सिरवाला) भाला-सी आँखवाली; मलर् नङ्कै–कमलादेवी; इवळ् ॲऩ्ऱाल्–ये हैं तो; पच्चिलैयै ऒत्त पटिवत्तु–तमाल समान रंगवाले; अटल् इरामऩ्–बली श्रीराम; इ चिलै किटक्क–यह शिव-धनुष रहे एक ओर; मलै एऴैयुम्–सातों गिरियों को; इऱातो–नहीं तोड़ेंगे क्या; निऩैन्ताऩ्–ऐसा मन में सोचा। १२२९

विश्वामित्रजी ने अब श्रीलक्ष्मी को साक्षात देखा। उनकी दिव्य मूर्ति के पारलौकिक सौन्दर्य से अवगत उन्होंने मन में सोचा कि भाला-सी आँखवाली ये कमला हैं; तो तमालवर्ण और बली श्रीराम इनको पाने के लिए यह एक धनुष क्या, सातों कुलगिरियों को नहीं तोड़ेंगे क्या ? । १२२९

※ ॲय्यविल् वळैत्तदु मिऱुत्तदु मुरैत्तुम्
मॅय्विळै यिडत्तुमुद लैयम्विड लुऱ्ऱाळ्
ऐयऩै यहत्तुवडि वेयल पुऱत्तुम्
कैवळै तिरुत्तुबु कडैक्कणि ऩुणर्न्दाळ् 1230

ॲय्य–शर चलाने; विल् वळैत्ततुम्–धनुष झुकाना और; इऱुत्ततुम्–उसका भंजन करना; उरैत्तुम्–लोगों ने कह दिया था, तो भी; मुतल् ऐयम्–पहले उठे सन्देह को; मॅय् विळैवु इटत्तु–सत्य जानने पर; विटल् उऱ्ऱाळ्–(अभी) दूर करके; ऐयऩै–सुन्दर प्रभु को; अकत्तु वटिवे अलतु–मन में (ध्यान करने) देखने के साथ-साथ; पुऱत्तुम्–बाहर भी; कै वळै–हाथों के कंकणों को; तिरुत्तुपु–ठीक करने के बहाने; कटै कण्णिऩ्–अपाँग से; उणर्न्ताळ्–देख, पहचान लिया। १२३०

श्री सीताजी को चेरियों ने श्रीराम का शर चलाने के उद्देश्य से धनु लेना, फिर उसका भंग करना आदि समाचार बतलाया था। उनके मन में पूर्णरूप से विश्वास नहीं हुआ था कि ये वही हैं जिनको वे ध्यान में रख रही हैं। अब सामने देख लिया तो सन्देह दूर हो गया। तो भी ध्यान के रूप से सामने के रूप को मिलाते हुए वे अपने कंकणों को ठीक करने के बहाने अपने अपांग से उन्हें खूब देख कर आश्वस्त हो गईं। १२३०

❀ करुङ्गडै नॆडुङ्गणॊळि यारुनिऱै कण्णप्
पॆरुङ्गडलिऩ् मण्डवुयिर् पॆऱ्ऱिऩि दुयिर्क्कुम्
अरुङ्गल ऩणङ्गरशि यारमिऴ् दऩैत्तुम्
ऒरुङ्गुड ऩरुन्दिऩरै यॊत्तुड ऱडित्ताळ् 1231

करु नॆंटु कटै कण् ऒळि–काली दीर्घ अपांग की दृष्टिरूपी; आऱु–नदी के; निऱै–(सुन्दरता से) भरपूर; कण्णऩ् पॆरु कटलिल–सबके नेत्र (श्रीराम) रूपी बड़े सागर में; मण्ट–सवेग जाकर मिलने से; उयिर् पॆऱ्ऱु–प्राण पाकर; इऩितु उयिर्क्कुम्–सन्तोष की साँस लेती (हैं, जो); अरु कलऩ्–श्रेष्ठ गुणों का आगार; अणङ्कु अरचि–स्त्रियों में रानी, सीताजी; आर् अमिऴ्तु अऩैत्तुम्–सारा दुष्प्राप्य अमृत; ऒरुङ्कु उटऩ्–अकेले एक साथ; अरुन्तिऩरै ऒत्तु–(जिसने) पिया (हो उसके) समान; उटल् तटित्ताळ्–मोटे शरीर की हुईं। १२३१

वे आनन्द से फूल उठीं। उनकी काली लम्बी आँख की कनखी-दृष्टि रूपी नदी कण्णन (लोकनेत्र) श्रीराम रूपी सौन्दर्य-सागर की ओर सवेग बही। तब सीताजी के प्राण लहलहा उठे। वे सुख-सन्तोष की साँसें छोड़ने लगीं। श्रेष्ठ गुणों का आगार, स्त्रियों में रानी देवी सीताजी उस मनुष्य के समान फूल उठीं जिसने सारा प्राप्य अमृत अकेला और एक साथ अशन कर लिया हो। १२३१

कणङ्गुऴै करुत्तिलुऱै कळ्वऩॆऩ लाऩाऩ्
वणङ्गुवि लिऱुत्तव ऩॆऩत्तुयर् मऱन्दाळ्
अणङ्गुऱु मविज्जैकॆड विज्जयि ऩहम्बा
डुणर्न्दऱिवु मुऱ्ऱुपय ऩुऱ्ऱवरै यॊत्ताळ् 1232

कणम् कुऴै–स्थूल कर्णकुण्डल धारिणी; करुत्तिल् उऱै कळ्वऩ्–मन में आकर घुसा चोर; ऎऩल् आऩाऩ्–कहाने योग्य जो बने; वणङ्कु विल् इऱुत्तवऩ्–वे ही झुके धनुष को तोड़नेवाले हैं; ऎऩ–यह जानकर; तुयर् मऱन्ताळ्–दुख भूलीं; अणङ्कु उऱुम्–(जन्म लेने का) दुखदायी; अविज्चै कॆट–अविद्या का नाश करके; विज्चैयिऩ्–आत्मविद्या से; अकम् पाटु उणर्न्तु–अन्तरात्मा को जानकर; अऱिवु मुऱ्ऱु पयऩ्–ज्ञान के विकास का परिणाम (मुक्ति); उऱ्ऱवरै–जिन्होंने पाया हो; ऒत्ताळ्–उनके समान हुईं। १२३२

जब बड़े-बड़े कुण्डलों की धारिणी सीता को दृढ़ विश्वास हो गया

कि जो पहले अपने (सीताजी के) मन में प्रविष्ट होकर 'चोर' कहने योग्य थे वे ही अपने सामने जो "झुका" उस धनु के भंजक श्रीराम हैं। अब चोर के समान रहने की आवश्यकता नहीं रही। इसलिए वे चिन्ता से विमुक्त हुईं। अविद्या जन्म का कारण है। आत्मविद्या-प्राप्त मनुष्य का अविद्यानाश हो जाता है और उस विद्या या ज्ञान का परिणाम मुक्ति है। सीताजी उस मुक्तिप्राप्त मनुष्य के समान हुईं। १२३२

कॊल्लुयर् कळिऱ्ऱरशर् कोमहऩ्ऩव् वेलै
कल्विकरै युऱ्ऱमुऩि कौशिकऩ्ऩै मेलोय्
वल्लिपॊरु शिऱ्ऱिडै मडऩ्दैमण नाळाम्
ऍल्लयि ऩलत्तपह लॆऩ्ऩुरैशॊ यॆऩ्ऱाऩ् 1233

अव् वेलै–उस समय; कॊल् उयर् कळिऱु–मारने के काम में अभ्यस्त हाथियों (की सेना) के; अरचर् कोमकऩ्–(पति) राजाधिराज (दशरथ) ने; कल्वि करै उऱ्ऱ–विद्या-पारंगत; मुऩि–मुनि; कौचिकऩै–कौशिक को देखकर; मेलोय्–महात्मा; वल्लि पॊरु–लता-तुल्य; चिऱु इटै–पतली कमरवाली; मटऩ्तै–कन्या, सीताजी का; मणम् नाळ् आम्–विवाह का दिन जो; ऍल्लै इल् नलत्त–अपार मंगलदायक; पकल्–दिन (होगा); ऍऩ्ऱु–कौन-सा दिन है; उरै चॆय्क–बताइये; ऍऩ्ऱाऩ्–पूछा। १२३३

तब घातक हाथियों की सेना के स्वामी दशरथ ने सर्वविद्यापारंगत महर्षि कौशिक से पूछा कि महर्षि! लता-सी पतली कमरवाली सीताजी के विवाह का शुभ दिन, जो सर्वमंगलदायी दिन है, कौन-सा निश्चित है?। १२३३

वाळैयुह ळक्कयल्हळ् वाविपडि मेदि
मूळैमुदु हैक्कदुव मूरिय वराऩ्मीऩ्
पाळैविरि यक्कुदिहॊळ् पण्णैवळ नाडा
नाळैयॆऩ वुऱ्ऱपह ऩऱ्ऱव ऩुरैत्ताऩ् 1234

वावि–वापियों में; वाळै उकळ–वाळै नाम की मछलियाँ उछलती हैं; पटि मेति–जलमग्न भैंसों के; मूळै मुतुकै–मेजा (सिर) और पीठ को; कयल्कळ् कतुव–"कयल" मछलियाँ कुरेदती हैं; मूरिय वराल् मीऩ्–मोटी "वराल्" नामक मछलियाँ; पाळै विरिय–(क्रमुक, नारियल आदि के डण्ठलों के) बालों को खोलते हुए; कुतिकॊळ्–(उतना ऊँचा) उछलती हैं जहाँ; पण्णै वळम्–(उस) खेतों और बागों के उर्वर; नाटा–देशाधिपति; उऱ्ऱ पकल्–(विवाह के) योग्य दिन; नाळै–कल; ऍऩ–यह; नल् तवऩ् उरैत्ताऩ्–महान तपस्वी ने कहा। १२३४

उत्तम तपस्वी विश्वामित्र ने उत्तर दिया कि हे कोशल देश के, राजा दशरथ! उस कोशल देश के जिसकी वापियों में 'वाळै' मछलियाँ उछलती

रहती हैं, जलमग्न भैंसों के सिरों और पीठों को 'कयल' मछलियाँ काटती हैं और वराल नामक मछलियाँ इतना ऊँचा उछलती हैं कि वे तट में रहने वाले नारियल और पूग के पेड़ों पर डंठलों में कूदकर बालों को खोल देती हैं, और जो खेतों और बागों की भूमि है, विवाह का दिन कल होगा। १२३४

❀ शॊऱ्ऱपॊऴु दत्तरशर् कैदॊऴु वॆऴुन्दान्
ऒऱ्ऱवयि रच्चुरिहॊळ् शङ्गिऩ्ऒलि पॊङ्गप
पॊऱ्ऱड मुडिप्पुदु वॆयिऱ्पॊऴि तरप्पोय्
नऱ्ऱवरऩुच् चैयॊडु नऩ्मऩै यडैन्दाऩ् 1235

चॊऱ्ऱ पॊऴुतत्तु–(उनके) कहते समय; ऍऴुन्ताऩ्–(चक्रवर्ती) उठे; अरचर् कै तॊऴ–(अन्य) राजाओं के विनय करते; ऒऱ्ऱै–अनुपम; वयिरम्–हीरे की शामी से युक्त; चुरि कॊळ्–आवर्तनयुक्त; चङ्किऩ् ऒलि–शंख का नाद; पॊङ्क–हुआ, तब; पॊऩ् तट मुटि–स्वर्ण के बड़े किरीट से; पुतु वॆयिल् पॊऴितर–(सूर्य की) मन्द धूप का-सा प्रकाश छिटका, तब; नल् तवर् अऩुच्चैयॊटु–श्रेष्ठ तपस्वियों की आज्ञा लेकर; पोय्–जाकर; नल् मऩै अटैन्ताऩ्–उत्तम भवन में पहुँचे। १२३५

यह सुनकर चक्रवर्ती उठे और राजाओं का नमस्कार स्वीकार करते हुए, और अप्रतिम, शामीदार, आवर्तनयुक्त शंख का नाद सुनते हुये, और स्वर्णनिर्मित ऊँचे किरीट से प्रकाश फैलाते हुये, महर्षियों की आज्ञा लेकर अपने लिए नियत उत्तम महल में पहुँचे। १२३५

अऩ्ऩमरि दिऱ्पिरिय वण्णलु महऩ्ऱोर्
पॊऩ्ऩिऩ्ऩॆडु माडमऩै पुक्कऩऩ् मणिप्पूण्
मऩ्ऩवर् पिरिन्दऩर्हण् मादवर्हळ् पोऩार्
मिऩ्ऩुशुड रादवऩु मेरुविऩ् मऱैन्दाऩ् 1236

अऩ्ऩम्–हंसिनी सदृश सीताजी; अरितिऩ् पिरिय–बिना इच्छा के वहाँ से गईं, तब; अण्णलुम्–प्रभु ने भी; अकऩ्ऱु–वहाँ से हटकर; ओर्–अप्रतिम एक; पॊऩ्ऩिऩ् नॆटु माटम्–स्वर्ण के बड़े माढ़ेवाले; मऩै–भवन में; पुक्कऩऩ्–प्रवेश किया; मणि पूण् मऩ्ऩवर्–रत्नाभरणधारी राजा लोग भी; पिरिन्तऩर्कळ्–वहाँ से हट चले; मातवर्कळ् पोऩार्–बड़े तपस्वी भी गए; मिऩ्ऩु चुटर् आतवऩुम्–दीप्त किरणोंवाले सूर्य भी; मेरुविल् मऱैन्ताऩ्–मेरु के पीछे छिप गये। १२३६

पश्चात सीताजी, जो हंसिनी सदृश थीं, चलीं। उनको जाने की इच्छा ही नहीं होती थी। प्रभु श्रीराम भी वहाँ से हटकर एक माढ़ा वाले बड़े, स्वर्णमय सौध में गये। रत्नाभरणधारी राजा चले। महान तपस्वी लोग भी चले। किरणमाली सूर्य भी मेरु के पीछे छिप चला। १२३६

21. कडिमणप् पडलम् (शुभ-विवाह पटल)

इडम्बडु पुहऴ्च्चऩहर् कोऩिऩ्दु पेणक्
कडम्बडु कळिऱ्ऱरश रादियिडै कण्डोर्
तिडम्बडु तिऱत्तशिऱु कम्मियर्हळ् काऱुम्
उडम्बॊडु तुऱक्कनह रुऱ्ऱवरै यॊत्तार् 1237

इटम् पटु पुकऴ्–विस्तृत यशस्वी; चऩकर् कोऩ्–जनक महाराज के; इऩ्ऱु पेण–खब सत्कार करने से; कटम्पटु कळिऱु–मदजलस्रावी गजों वाले; अरचर् आति–राजा आदि; इटै कण्टोर्–मध्य स्थिति के मन्त्री; तिटम् पटु तिऱत्त–शारीरिक बल और कुशलतायुक्त; चिऱु कम्मियर्कळ् काऱुम्–छोटे कारीगरों तक; उटम्पॊटु तुऱक्क नकर् उऱ्ऱवरै–शरीर के साथ स्वर्ग जो पहुँचे हों; ऒत्तार्–उनके समान बने। १२३७

विस्तृत यशस्वी जनक ने सभी अतिथियों का खूब सत्कार किया। सत्कार में कोई भेद नहीं दिखाया गया। मत्तगजों की सेना वाले उच्च राजा से लेकर, मध्य में रहनेवाले अमात्यों के साथ, श्रमिकों तक, जो शरीर की शक्ति और शारीरिक सामर्थ्य का अवलम्ब ले जीते थे, सभी उनके सत्कार से तृप्त हुए। वे सब ऐसा अनुभव करने लगे मानो सशरीर वे स्वर्ग पहुँच गये हों। (स्वर्ग भोग-भूमि कहा जाता है।)। १२३७

तेडरु नलत्तपुऩ लाशैत्तॆऱ लुऱ्ऱार्, माडॊर्तड मुऱ्ऱदऩै यॆय्दुम्वऴि काणा
दीडऴि वुऱत्तळर्वॊ डेमुऱुव रऩ्ऱे, आडह वळैक्कुयिलु मऩ्निलय ळाऩाळ् 1238

तेटु–अन्वेषित; अरु नलत्त पुऩल् आचै–आवश्यक अच्छे जल की इच्छा से; तॆऱल् उऱ्ऱार्–कष्ट उठानेवाले; माटु–एक ओर; ऒर् तटम् उऱ्ऱु–एक तालाब देखकर भी; अतऩै ऎय्तुम् वऴि काणातु–उसके पास जाने का मार्ग न पाकर; ईटु अऴिवु उऱ–अपना सारा बल खोकर; तळर्वॊटु–शिथिलता के साथ; ऎम् उऱुवर् अऩ्ऱे–क्षुब्ध होंगे न; आटकम् वळै–श्रेष्ठ सोने के कंकणवाली; कुयिलुम्–कोकिला (सी बोलीवाली) भी; अ निलैयळ्–उस स्थिति को पहुँची हुई; आऩाळ्–बनीं। १२३८

(सीताजी की विरह-वेदना फिर जाग्रत हो गई। स्वर्णकंकण-धारिणी और कोकिल-बयनी उनकी स्थिति कैसी थी?) समझिये कि स्वच्छ अच्छे जल के अन्वेषण में कोई संकटग्रस्त है। उसे कहीं एक ओर तालाब दिखाई दे रहा है। पर उसके पास जाने का मार्ग नहीं मिलता। तब वह क्लान्त और श्रान्त होकर विक्षुब्ध हो जायगा न ? देवी उसकी वैसी हालत को पहुँच गईं। १२३८

उरवेदुमि लारुयि रीर्दुमॆऩ्ऩाक्, करवेपुरि वारुळ रोकदिरोऩ्
वरवेयॆऩै याळुडै याऩ्वरुमे, इरवेकॊडि याय्विडि यायॆऩुमाळ् 1239

उरवु एतुम् इलार्–बल कोई जिनमें न हो, उन (अबलाओं) के; उयिर् ईर्तुम् अॅन्ना–प्राण हर लेंगे, कहकर; करवे पुरिवार्–प्रवंचना करनेवाले; उळरो–हैं क्या (नहीं हैं); इरवे–हे निशा; कॉटियाय्–तू क्रूर है; कतिरोऩ् वरवे–(कल) सूर्य के (उदय हो) आते ही; अॅऩ्नै आळ् उटैयाऩ्–मुझे अपनानेवाले स्वामी; वरुमे–आ जायेंगे; विटियाय्–तू चली नहीं जाती; अॅऩुम्–कहतीं। १२३६

(निशा का उपालम्भ) री रजनी ! निर्बल अबलाओं की जान हर लेंगे यह संकल्प लेकर प्रवंचना करनेवाले भी संसार में कहीं हैं ? तुम ही क्रूर हो ! कल सूर्य के उदय के साथ मेरे स्वामी मुझे अपना लेंगे। तुम अन्त नहीं होतीं और प्रभात को आने नहीं देतीं। यह कैसा स्वभाव है —देवी ने रात्रि को यह उपालम्भ दिया। १२३९

करुनायिऱु पोल्बवर् कालॉडुपोय्, वरुनाळय लेवरु वाय्मऩऩे
पॅरुनाळुड ऩेपिरि यादुळ्ल्वाय्, ऑरुनाडरि यादॉऴि वारुळरो 1240

मऩऩे–हे मेरे मन; करु नायिऱु पोल्पवर्–नीलमेघ श्यामल, सूर्य के समान ज्योतिपुंज श्रीराम के; कालॉटु पोय्–श्रीचरणों से लगकर (उनके साथ) जाकर; वरुम् नाळ्–उनके आते दिन; अयले वरुवाय्–उनके साथ आते हो; पॅरु नाळ्–अनेक दिन तक; उटऩे–मेरे साथ; पिरियातु उळ्ल्वाय्–बिना बिछुड़े रहोगे; ऑरुनाळ् तरियातु–एक दिन भी सहन न करके; ऑऴिवार्–छोड़ जानेवाले; उळरो–(तुम्हारे समान) कोई हैं। १२४०

(अपने मन से) रे मेरे मन ! नीले सूर्य सम श्रीराम के चरणों के साथ गया; फिर उनके साथ लौट आया। विवाह के बाद से, जब हम मिल रहेंगे तब तू मेरे साथ रहनेवाला है। फिर इस एक रात का वियोग सह नहीं सकता क्या ? इस तरह एक दिन का भी बिछोह न सह सकनेवाला कोई और है ? । १२४०

कऩैयेऴ्हडल् पोल्करु नाऴिहैताऩ्, विऩैयेऩ्विऩै याल्विडि याविडिऩी
तऩियेपऱ वाय्दह वेदुमिलाय्, पऩैमेलुऱै वाय्पऴि पूणुदियो 1241

पऩै मेल् उऱैवाय्–तालवृक्ष पर रहनेवाले पक्षी; नी तऩिये पऱवाय्–तुम अकेले नहीं उड़ते; कऩै एऴ् कटल् पोल्–गर्जनशील सात समुद्र के समान; करु नाऴिकै–(दीर्घ) रात्रि; विऩैयेऩ् विऩैयाल्–मुझ पापी के पाप से; विटिया विटिऩ्–अन्त न हो जाय तो; तकवु एतुम् इलाय्–नेकी कुछ न रखनेवाले; पऴि पूणुतियो–व्यर्थ निंदा पाओगे क्या। १२४१

(पपीहे से) ताल-तरुवासी पपीहा ! तू कभी (संगिनी को छोड़) अकेले कहीं नहीं उड़ता (जाता)। सातों गरजनेवाले समुद्रों के समान यह रात जो लम्बी होती जा रही है अगर अन्त नहीं होगी तो, तू अपनी बोली से मुझे मरवा देगा। फिर बड़ा अपयश तुझ पर लगेगा। तू यह अपयश क्यों लेना चाहता ?

(पपीहा या चकवा या क्रौंच पक्षी तालतरु में रहनेवाला समझा जाता है और उसका स्वर विरहिणियों को बड़ा दुख पहुँचाता है।) । १२४१

अयिल्वेलऩल् काल्वऩ वानिऴलाय्, वॆयिलेयॆऩ नीविरि वाय्निलवे
शॆयिरेदुमि लारुड ऱेय्वुऱुवार्, उयिर्कोळुरु वारुळ रोवुरैयाय् 1242

अऩल् काल्वऩ आम्–आग उगलनेवाले; अयिल् वेल् निऴलाय्–तीक्ष्ण भाले के समान चाँदनीवाले; निलवे–चन्द्र; नी–तुम; वॆयिले अॅऩ–धूप के समान; विरिवाय्–फैले हो; चॆयिर् एतुम् इलार्–अपराधहीन; उटल् तेय्वु उऱुवार्–उत्तरोत्तर क्षीण-देह होनेवाले की; उयिर्–जान को; कोळ् उऱुवार्–हरने के काम में प्रवृत्त; उळरो–और कोई है क्या; उरैयाय्–तुम बोलो। १२४२

(चाँदनी से) हे चाँद ! आग उगलनेवाले भाले के समान किरणों वाली चाँदनी के चाँद ! तुम धूप के समान फैले हो और मुझे जला रहे हो। बिना किसी अपराध के, और जो पहले ही क्षीण होते रहते हैं उन लोगों के प्राण लेने के लिए तत्पर होनेवाले तुमको छोड़ और कोई हैं क्या ? । १२४२

मऩ्ऱऱ्कुळिर् वाशम्व यङ्गऩल्वाय्, मिऩ्ऱॊत्तु निलानहै वीऴ्मलयक्
कुऩ्ऱिऱ्कुल मामुऴै यिऱ्कुडिवाऴ्, तॆऩ्ऱऱ्पुलि येयिरै तेडुदियो 1243

मऩ्ऱल्–(नायक के साथ) संयोग समय में आनन्ददायक; कुळिर् वाचम्–शीतल सुगन्धरूपी; वयङ्कु अऩल्–दीप्त आग उगलनेवाला; वाय्–मुख, और; मिऩ् तॊत्तु–प्रकाशपुंज; निला नकै–चाँदनीरूपी दाँत; वीऴ्–मनोरम; मलयम् कुलम् कुऩ्ऱिल्–मलय संज्ञित श्रेष्ठ पर्वत की; मा मुऴैयिल्–बड़ी गुफ़ा में; कुटि वाऴ्–बसनेवाले; तॆऩ्ऱल् पुलिये–दक्षिणीपवन-रूपी बाघ; इरै तेटुतियो–आहार की खोज में हो क्या। १२४३

(मलयपवन का उपालम्भ) हे मलयपवन ! तुम बाघ हो। साथ रहनेवाले प्रेमी-प्रेमिका को आनन्द देनेवाला शीतल सुगन्ध जो तुम्हारा है वह अब अग्नि बरसानेवाला तुम्हारा मुख है। प्रकाशपुंज जो चाँदनी है वह तुम्हारे दाँत हैं। और जो मलयपर्वत सबके लिए प्यारा है उसकी एक बड़ी गुफ़ा में तुम्हारा वास है। वहाँ से निकलकर अब तुम (आहार) शिकार की खोज में फिर रहे हो क्या ? । १२४३

तॆरुवेतिरि वारॊरु शेवहऩार्, इरुपोदुम् विडारिदु वॆऩ्ऩैकॊलाम्
करुमामुहिल् पोल्बवर् कऩ्ऩियर्पाल्, वरुवारुळ रोकुल मऩ्ऩवरे 1244

करु मा मुकिल् पोल्पवर्–काले, बड़े सुन्दर मेघ के समान; तॆरुवे तिरिवार्–वीथी में सैर करनेवाले; ऑरु चेवकऩार्–अनुपम वीर नायक; इरु पोतुम् विटार्–(दिन और रात) दोनों जून नहीं छोड़ते; इतु ॲऩ्ऩै आम्–यह क्या (नीति) है; कुल मऩ्ऩवर्–उच्च कुल के राजा; कऩ्ऩियर् पाल् वरुवार्–अविवाहित कन्या के पास आनेवाले; उळरो–कोई हैं क्या ? । १२४४

(सीताजी के सामने श्रीराम का छायारूप उनके भ्रम के कारण दिखाई देता है।) सीताजी कहती हैं कि काले, सुन्दर मेघ सम वे (श्रीराम) वीथियों में सैर करते थे। अप्रमेय वे वीर हमेशा मेरी आँखों के सामने आते रहते हैं। चाहे दिन हो, चाहे रात। यह कैसा न्याय है? वे राजकुमार हैं। उनको राजकुल-मर्यादा मालूम है! 'कन्याभवन' के अन्दर रहनेवाली अविवाहित कन्या के सामने जाना अपराध है। ऐसे कोई राजकुमार कभी कन्या के सामने आयेंगे क्या? । १२४४

तॆरुळावित्तै तीयवर् शेरलर्तोळ्, अरुळानॆऱ्ऱि योडुम वावदुवो
करुळार्कड लोकरै काणरिदाल्, इरुळामिदु तान्ऎत्तै यूऴिकॊलाम् 1245

तॆरुळा–दृढ़ विवेचनहीन; वित्तै तीयवर्–हानिकारक काम करनेवाले (वे नायक); तोळ् चेरलर्–(मेरी) भुजाओं में नहीं लगते; अवा अतुवो–(मेरी) इच्छा तो; अरुळा नॆऱ्ऱि ओटुम्–जो वे कृपा नहीं करते, उसी मार्ग पर चलती है; इरुळ् आम् इतु–रातरूपी यह; करुळ् आर् कटलो—कालिमा-युक्त सागर है क्या; करै काण अरितु–पार पाना दुर्लभ है; ऎत्तै ऊऴि आम् कॊल्–कितने कल्प तक यह स्थिति रहेगी; (आल् तान्–पूरक ध्वनियाँ)। १२४५

(वे रात की निन्दा करती हैं।) वे (श्रीराम), लगता है कि दृढ़ विवेकी नहीं हैं। मुझे संकट देकर निवारण का कोई काम नहीं करते। वे मेरी भुजाओं के आलिंगन में नहीं आते। तो भी मेरी कामना तो उन्हीं के प्रति लगी रहती है। रात कालिमायुक्त सागर है क्या? इसको पार करना दुस्तर लगता है। यह स्थिति कितने कल्पकाल तक बनी रहेगी? । १२४५

पण्णोवॊऴि यापह लोपुहुता, दॆण्णोदवि राविर वोविडिया
तुण्णोवॊऴि यावुयि रोवहला, कण्णोतुयि लाविदु वोकडऩ्ऩे 1246

पण्णो ऑऴिया–संगीत के स्वर तो थमते नहीं; पकलो पुकुतातु–दिन आता नहीं लगता; ऎण्णो तविरा–चिन्ताएँ दूर नहीं होतीं; इरवो विटियातु–रात प्रभात पर नहीं आ रही; उळ् नो ऑऴिया–मानसिक क्लेश नहीं मिटते; उयिरो अकला–प्राण नहीं छोड़ जाते; कण्णो तुयिला–आँखें नहीं सोतीं; कटऩ् इतुओ–कर्तव्य (भाग्य) यही है क्या। १२४६

(सीताजी के विवाह के उपलक्ष्य में नगर में आनन्द कोलाहल मचा है। सब ओर संगीत का प्रबन्ध है। सीताजी की वेदना को वह बढ़ाता है।) वे कहती हैं कि संगीतस्वर बन्द नहीं होता; दिन (प्रभात) आता नहीं दिखता। मेरा मन चिंता करना नहीं छोड़ता। रात पूरी नहीं होती। आन्तरिक वेदना जारी है। प्राण भी नहीं छूटते। कम से कम नींद आवे तो छुटकारा होगा। वह भी नहीं आती, आँखें नहीं झपतीं। फिर क्या यह वेदना सहता रहना ही अब मेरा काम है? । १२४६

इडैयेवळै शॉरवॅ ऴुन्दुविऴुन्, दडलेय्मद ऩऩ्शर मञ्जिऩैयो
उडलोय्वुऱ् नाळुमु ऱङ्गलैयाल्, कडलेयुरै नीयुमॉर् कऩ्ऩिकॉलाम् 1247

कटले–सागर; इटैये–तुम में से; वळै चोर–शंख गिरते हैं, ऐसे; ऍऴुन्तु–उठते; विऴुन्तु–और गिरते; उटल् ओय्वु उऱ–शरीर थकाते हुए; नाळुम्–अहोरात्र; उऱङ्कलै–सोते नहीं हो; नीयुम् ओर् कऩ्ऩि आम् कॉल्–तुम भी एक कन्या हो; अटल् एय्–मारक स्वभाव-युक्त; मतऩऩ् चरम्–मदन के शरों से; अञ्चिऩैयो–डरे हुए हो; उरै–कहो । १२४७

(वे सागर में अपनी-सी स्थिति देखती हैं। वे क्षीण हो गई हैं, अतः हाथ से शंख (कंकण) छूटकर गिर गये हैं। नींद नहीं आती, अतः वे उठती बैठती विलाप रही हैं और बेचैन हैं। सागर की भी वही हालत समझकर वे कह रही हैं कि) सागर! तुमसे शंख छूट रहे हैं। उठते, गिरते थक जाते हो। दिन रात सोते नहीं हो। तब क्या तुम भी एक अविवाहित कन्या हो और तुम पर भी काम के शर लग गये हैं। मनमथ भयंकर मारक हैं। उनके शर से तुम भी डरे हुए हो? कहो तो। १२४७

ऍऩविऩ्ऩऩ पऩ्ऩियि रुन्दुळैवाळ्, तुऩियुऩ्ऩिम ऩत्तॉडु शोर्वुऱुहाल्
मऩैतऩ्ऩिऩ्व यङ्गुऱु वैहिरुळ्वाय्, अऩहऩ्ऩिऩै हिऩ्ऱऩ यामऱैवाम् 1248

ऍऩ–ऐसा; इऩ्ऩऩ पऩ्ऩि–ऐसी बातें कहकर; इरुन्तु–जागती रहकर; उळैवाळ्–क्लांत होनेवाली बनकर; तुऩि उऩ्ऩि–अपने दुख का स्मरण करते हुए; मऩत्तॉटु–मन के साथ; चोर्वु उऱु काल्–जब व्याकुल थीं, तब; मऩै तऩ्ऩिऩ्–अपने भवन में; वयङ्कुऱु वैकु इरुळ् वाय्–स्थिर अँधेरे में; अऩकऩ्–अनघ श्रीराम; निऩैक्किऩ्ऱऩ–जो बातें सोचते थे, उनको; याम् अऱैवाम्–हम कहेंगे । १२४८

कवि कहते हैं कि अब तक हम सीताजी की स्थिति का वर्णन करते रहे। सीताजी ऐसी बातें ऐसा कहते हुए, निद्राहीन रहकर दुख का ही स्मरण करनेवाले मन के साथ वेदना से तड़प रही थीं। तब अनघ श्रीराम उस घने अन्धकार की रात में अपने भवन में रहकर क्या-क्या सोच रहे थे? अब उनका हाल बतायेंगे। १२४८

मुऩ्कण्डु मुडिप्परु वेट्कयिऩाल्, ऍऩ्कण्डुणै कॉण्डिद यत्तॅऴुदिप्
पिऩ्कण्डुमॉर् पॅण्करै कण्डिलॅऩाल्, मिऩ्कण्डव रॅङ्गऱि वार्विऩैये 1249

मुऩ् कण्टु–पहले एक बार देखकर; मुटिप्पु अरु–अन्तहीन; वेट्कैयिऩाल्–अनुराग के साथ; ऍऩ् कण् तुणै कॉण्टु–(अपनी) मेरी आँखों की सहायता लेकर; इतयत्तु ऍऴुति–अपने हृदय में (रूप) अंकित करके; पिऩ् कण्टुम्–फिर से देखने के बाद भी; ओर् पॅण्–अप्रमेय स्त्रीरूपी सागर का; करै कण्टिलॅऩ् नाऩ्–पार कर नहीं पाता मैं; मिऩ् कण्टवर्–बिजली को जो पास से देख चुके हैं वे; विऩै ऍङ्कु अऱिवार्–काम कहाँ जानेंगे । १२४९

(श्रीराम कहते हैं कि उनकी (सीताजी की) ज्योती से मेरी आँखें

चौंधिया गईं। और मैं कोई काम करने योग्य नहीं रह गया।) मैंने उनको उस दिन मिथिला प्रवेश के समय 'कन्याभवन' की छत पर देखा। अगाध प्रेम उत्पन्न हुआ और उसके कारण मैंने अपनी आँखों की कूँची से अपने हृदय पर उनका चित्र बना लिया। फिर आज एक बार देखा। तो भी उनका पूर्णरूप मेरे मन में नहीं समाता। मैं उस रूप को धारण करने में असमर्थ हो रहा हूँ। हाँ! बिजली को जिसने पास से देखा है वह किस काम के लायक होगा? । १२४९

तिरुवेयऩै याण्मुह मेतॅरियिऩ्, करुवेहऩि येविळै कामविदैक्
कॅरुवेमदि येयिदु वॅऩ्शॅय्दवा, ऑरुवेऩॊडु नीयुऱ वाहलयो 1250

मतिये–हे चन्द्र; तॅरियिऩ्—सोच-समझने पर; विळै कामम् वितैक्कु–आनन्द-दायक काम के बीज के लिए; ऍरुवे–खाद; करुवे–अंकुर; कऩिये–और उसका फल हो; तिरुवे अऩैयाळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी ही से तुल्य सीताजी के; मुकमे–मुखमण्डल (सदृश) हो; इतु चॅय्त आऱु–यह करने का धर्म; ऍऩ्–क्या है; ऑरुवेऩॊटु–(उनसे वियुक्त मुझ) एक के; नी उऱवु आकलैयो–तुम बन्धु न बनोगे। १२५०

(वे चन्द्र से अपनी वेदना कहते हैं।) हे चन्द्र! खूब सोच विचार-कर देखें तो तुम आनन्दप्रसू कामेच्छा के बीज की खाद हो, फिर उसका अंकुर भी तुम ही हो और उसका फल भी तुम ही हो! तुम श्रीलक्ष्मी देवी सदृश सीताजी के मुख के ही समान हो। तो भी मुझे अत्यन्त पीड़ा दे रहे हो। यह क्यों? मैं उनके संग के बिना दुखी हूँ। दुख में तुम मेरे सहायक नहीं बनोगे? । १२५०

कऴियावुयिर् वव्विय कारिहैदऩ्, विऴिपोल विळैन्ददु वीहिलदाल्
अऴिपोरिऱै वऩ्बड वञ्जियवऩ्, पऴिपोल वळर्न्ददु पायिरुळे 1251

पाय् इरुळ्–सर्वत्र फैला हुआ यह अन्धकार; कऴिया उयिर्–शरीर से न छुटे हुए मेरे प्राण को; वव्विय–जिसने हर लिया; कारिकै तऩ् विऴि पोल–उस अंगना की आँखों के समान; विळैन्ततु–आया है; वीकिलतु–दूर होता नहीं; अऴि पोर्–संहारक समर में; इऱैवऩ् पट–अपने राजा को छोड़कर; अञ्चियवऩ्–अपने प्राणों के लिए डरकर भागे हुए एक सेनापति के; पऴि पोल–अपयश के समान; वळर्न्ततु–बढ़ा है; (आल्, ए)। १२५१

(श्रीराम रात्रि का उपालम्भ करते हैं।) यह जो अन्धकार फैला है वह उस अंगना, सीता की आँखों के समान, जिन्होंने मेरे, मुझसे न छूटने वाले प्राण को हर लिया है, फैला है। वह मिटता नहीं दीखता। वह उस सेनापति के अटल अपयश के समान बढ़ा हुआ और स्थिर है जो संहारक युद्ध में ऐन अवसर पर अपने स्वामी राजा को मरने देकर अपने प्राण लेकर भागा हो। १२५१

निऩैयायॊरु कालॆंडि दोनॆंड्ऱिदाऩ्, विऩैवादवर् पाल्विडै कॊण्डिलयो
पुऩमाऩऩै यारॊडु पोयिऩवॆऩ्, मऩऩेयॆऩै नीयु मऱन्दऩयो 1252

पुऩम् माऩ् अऩैयारॊटु–वन के हरिण के समान सुन्दर उस बाला के साथ; पोयिऩ–जो गया; ऍऩ् मऩऩे–मेरे मन; ऑरु काल् निऩैयाय्–एक बार भी मेरा स्मरण नहीं करते; नॆऱि ताऩ् नॆंटितो–मार्ग लम्बा है क्या; विऩवातवर् पाल्–तुम से कुछ न पूछनेवाले उससे; विटै कॊण्टिलैयो–उत्तर में कुछ नहीं पाया; ऍऩै नीयुम् मऱन्तऩैयो–क्या मुझे तुम भी भूल गये हो। १२५२

(श्रीराम अपने मन को उपालम्भ देते हैं।) हे मेरे मन, जो वनचारी मृग-समान रहनेवाली उस कन्या के साथ गया है। एक बार भी तू मेरा स्मरण नहीं करता है। क्या मार्ग लम्बा है कि लौट आया नहीं ? या तेरी सुध ही नहीं लेनेवाली से उत्तर पाने की प्रतीक्षा में खड़ा है और अब तक कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ ? या क्या तू भी मुझे भूल गया ?। १२५२

तऩ्ऩोक्कॆरि काऱ्है वाळरविऩ्, पऩ्ऩोक्किय दॆऩ्बदु पण्डुहॊलाम्
ऍऩ्ऩोक्किऩु नॆञ्जिऩु मॆऩ्ऱुमुळार्, मॆऩ्ऩोक्किऩ देहडु वल्विडमे 1253

कटु वल् विटम्–भयंकर और प्रभावक विष; तऩ् नोक्कु ऍरि काल्–अपनी आँखों से आग उगलनेवाले; तकै–स्वभाव के; वाळ् अरविऩ्–क्रूर सर्प के; पल् नोक्कियतु–दाँत में है; ऍऩ्पतु–यह कथन; पण्टु आम्–पहले से प्रचलित (सत्य) है; ऍऩ् नोक्किऩुम्–मेरी आँखों और; नॆञ्चिऩुम्–मन में; ऍऩ्ऱुम् उळार्–जो सर्वदा संस्थित हैं, उस देवी की; मॆल् नोक्किऩते–मृदु कनखी में है। १२५३

(श्रीराम देवी की आँखों के बारे में क्या कहते हैं ? देखिये।) वे कहते हैं कि पहले से यह कथन प्रचलित है और वह सत्य भी है कि आँख से आग निकालनेवाले सर्प के दाँतों में भयंकर, प्रभावक विष रहता है। पर अब मैं देखता हूँ कि विष उस देवी की, जो मेरी दृष्टि के सामने और मेरे मन में सदा संस्थित है, मृदु कनखी में है। १२५३

वल्लार्पुऩै माळिहै वार्पॊऴिलो, ऍल्लामुळ वायिऩु मॆऩ्मऩमो
कल्लोडुऱऴ् नॆञ्जुऱु कऩ्ऩियराम्, मॆल्लोदियर् ताम्विळै याडिडमे 1254

वल्लार् पुऩै–चतुर (शिल्पी) से निर्मित; माळिकै–भवन; वार् पॊऴिलोटु–बड़ी फुलवारियाँ और; ऍल्लाम्–अन्य सभी स्थान; उळ आयिऩुम्–विद्यमान हैं, तो भी; कल्लोटु उऱऴ्–प्रस्तर-सम; नॆञ्चु उऱु–चित्तवाली; कऩ्ऩियर् आम्–कन्या जो; मॆल ऑतियर्–कोमल केशवाली है, उसका; ताम् विळैयाटु इटम्–अपने विहार का स्थल जो बना है; ऍऩ् मऩमो–क्या मेरा मन है। १२५४

(देवी के सम्बन्ध में और शिकायत देखिये।) वे कहते हैं कि उसके विहार के लिए चतुर शिल्पी से रचित बड़े महल हैं; बड़े-बड़े उपवन हैं, फुलवारियाँ हैं। और अन्य स्थान भी हैं। पर प्रस्तर मन उसने, उनको छोड़कर जिसे अपना प्रिय विहारस्थल चुना है वह मेरा मन है क्या ? । १२५४

वाऩवर् पॅरुमाऩुम् मऩऩिऩैवि ऩऩाहत्
तेऩमर् कुऴलाडऩ् ऱिरुमण विऩैनाळै
पूनहु मणिवाशम् पुऩैनह रणिवीरॅऩ्
ऱाऩयिऩ् मिशैयाण रणिमुर शऱैहॅऩ्ऱाऩ् 1255

वाऩवर् पॅरु माऩुम्–देव देव; **मऩऩ् इऩैवु इऩऩ् आक**–मन से इस तरह दुखग्रस्त रहे, तब; **तेऩ् अमर् कुऴलाळ्तऩ्**—भ्रमर-मोहक केशवाली सीताजी का; **तिरुमणम् विऩै नाळै**—विवाह-दिन कल है; **पू**–फूलों से; **नकु मणि**–दीप्त रत्न; **वाचम्**–और वस्त्र से; **पुऩै नकर्**–सुन्दर हमारे नगर को; **अणिवीर्**–सजा दें; **ॲऩ्ऱु**–ऐसा; **याणर् अणि मुरचु**–खूब अलंकृत ढोल को; **याऩैयिऩ् मिचै**–हाथी के ऊपर रखकर; **अऱैक**–पिटवा दो; **ॲऩ्ऱाऩ्**–आज्ञा दी (जनक ने)। १२५५

देवदेव श्रीराम इस तरह व्याकुलता का अनुभव कर रहे थे। उधर महाराजा जनक ने आज्ञा दिला दी कि मुनादी पिटवा दो कि कल मधु-केशिनी के उद्वाह का दिन है। इसलिए फूलों, श्रेष्ठ कांतिमय रत्नों और चीरों से हमारे सुन्दर नगर को सजा दो। ढोल जो उपयोग किया जाता है वह खूब अलंकृत हो और उसे हाथी पर चढ़ाकर पिटवा दिया जाय। १२५५

मुरशऱै दलुमाऩ मुदियरु मिळैयोरुम्
विरैशॅऱि कुऴलारुम् विरविऩर् विरैहिऩ्ऱार्
उरैशॅऱि किळयोडु मुवहयि ऩुयर्हिऩ्ऱार्
करैदॅरि वरिदाहु मिरवॊरु करैहण्डार् 1256

मुरचु अऱैतलुम्–ढिंढोरा पीटने पर; **माऩम् मुतियरुम्**–सम्मान्य वृद्ध लोग और; **इळैयोरुम्**–युवा लोग; **विरै चॅऱि कुऴलारुम्**–सुवासित केशवाली स्त्रियाँ; **विरविऩर्**–आपस में मिलकर; **विरैकिऩ्ऱार्**–(नगर का अलंकार करने के लिए) शीघ्र गये; **उरै चॅऱि किळैयोटुम्**–संभाषणप्रिय बान्धवों के साथ; **उवकैयिऩ् उयर्किऩ्ऱार्**–आनन्द में बढ़े; **करै तॅरिवु अरितु आकुम् इरवु**–जिसका (अन्त) तीर देखना दुर्लभ है उस रात के सागर का; **ऑरु करै कण्टार्**–एक अन्त पाया। १२५६

ढिंढोरा पीटते ही आदर योग्य वृद्ध, तरुण ऋषभ सम युवक लोग, और सुवासित केशवाली स्त्रियाँ, सब आपस में मिलकर नगर सजाने दौड़े। उद्वाह सम्बन्धी संभाषण में लगे उनको अपार आनन्द हुआ। वे इन कार्यों में लगे रहे और रात व्यतीत हो गयी। वे दुस्तर रातरूपी सागर के उस पार पहुँच गये। १२५६

अञ्जऩ वॊळियाऩु मलर्मिशै युऱैवाळुम्
ॲञ्जलिऩ् मणनाळैप् पुणर्हुव रॅऩलोडुम्
शॅञ्जुड रिरुळ्हीऱित् तिऩहर ऩीरुतेर्मेल्
मञ्जऩै यणिहोलङ् काणिय वॅऩवन्दाऩ् 1257

अञ्चऩम् ऑळियाऩुम्–अंजनवर्ण श्रीराम और; **अलर् मिचै उऱैवाळुम्**–कमल

पर रहनेवाली श्रीसीताजी; नाळै–कल; अॅञ्चल् इल्–निर्मल; मणम् पुणर्कुवर्–उद्वाह कर लेंगे; अॅन्नलोटुम्–यह जानते ही; तिन्नकरन्–दिनकर; चॅम् चुटर्–लाल किरणों (हाथों) से; इरुळ् कीऱि–अन्धकार चीरकर; ऑरु तेर् मेल्–एकचक्र अपने अनुपम रथ पर; मञ्चन्नै–(अपने कुल के) कुमार को; अणि कोलम् काणिय अॅन्न–अलंकृत दूल्हावेश में देखने के लिए; वन्तान्–(उदय हो) आये। १२५७

सूर्य उदित हुये। 'कल अंजन वर्ण प्रभु, हमारे कुलदीप, श्रीराम और कमलवासिनी सीताजी का उद्वाह होगा। कुमार को दूल्हे के वेश में देखूँगा।' मानो इस विचार से सूर्य, अपनी किरणरूपी हाथों से अंधकार को चीरते हुए अपने एकचक्र-रथ पर बाहर आये। १२५७

तोरण नडुवारुन् दूणुऱै यिडुवारुम्
पूरण कुडमॅङ्गुम् पुन्नैतुहिल् पुन्नैवारुम्
कारणि नॅडुमाडङ् गदिर्मणि यणिवारुम्
आरण मऱैवाणर्क् कमुदिन्नि दडुवारुम् 1258

तोरणम् नट्टु वारुम्–तोरणस्तम्भ गाड़नेवाले; तूण उऱै इट्टु वारुम्–खम्भों पर खोल चढ़ानेवाले; अॅङ्कुम्–सब स्थानों में; पूरण कुटम्–पूर्ण कुंभों से; पुन्नै तुकिल्–चित्रमय वस्त्रों से; पुन्नै वारुम्–सजानेवाले; कार् अणि नॅट्टु माटम्–मेघस्पृष्ट ऊँचे प्रासादों को; कतिर् मणि अणि वारुम्–श्रेष्ठ रत्नों से अलंकृत करनेवाले; आरणम् मऱै वाणर्क्कु–अनेक शाखाओं वाले वेद के मार्गों पर चलनेवाले विप्रों को; इन्नितु अमुतु अट्टुवारुम्–(भोज कराने के लिए) मधुर अन्न पकानेवाले। १२५८

नगर के लोग किसी न किसी काम में प्रवृत्त दिखाई दिये। तोरण बाँधने के लिए खम्भे गाड़नेवाले; स्तम्भों पर खोल चढ़ानेवाले; सब जगह पूर्णकलशों और चित्रमयी वस्त्रों से सजानेवाले; मेघस्पृष्ट प्रासादों के ऊपरी भागों में कांतिपूर्ण रत्नों को सजानेवाले; वेदमार्गानुयायी ब्राह्मणों को भोज देने के लिए मधुर अन्न पकानेवाले पाये गये। १२५८

अन्नमॅ नडैयारु मळविडै यन्नैयारुम्
कन्निन नहर्वाळै कमुहॉडु नडुवारुम्
पन्नरु निरैमुत्तम् परियन्न तॅरिवारुम्
पॉन्नणि यणिवारुम् मणियणि पुन्नैवारुम् 1259

कन्नि नल् नकर्–नितनवीन उस नगर में; अन्नम् मॅल् नटै यारुम्–हंस की-सी चालवालियाँ और; मळ विटै अन्नैयारुम्–तरुण ऋषभ-सम पुरुष लोग; वाळै–केले के पेड़ों को; कमुकॉटु–पूग तरुओं के साथ; नट्टुवारुम्–गाड़नेवाले; पन्न अरु–(मूल्य) कहने में कठिन; निरै मुत्तम्–मोती की लड़ियों में से; परियन्न तॅरिवारुम्–सबसे स्थूल को खोज लेनेवाले; पॉन् अणि अणिवारुम्–स्वर्णाभरण पहननेवाले; मणि अणि पुन्नैवारुम्–रत्नाभरणों से अपने को सजा लेनेवाले। १२५९

और भी लोग जिनमें हंसगामिनी स्त्रियाँ थीं और तरुण ऋषभ समान युवा थे, केले सुपाड़ी आदि के पेड़ गाड़ने लगे। कुछ लोग स्थूल से स्थूल

मोतियों की माला चुनने में लगे रहे। कुछ श्रेष्ठ स्वर्णाभरण धारण करने में प्रवृत्त हुये। कुछ लोग रत्नाभरण पहनने में लगे। १२५९

शन्दऩ महिऩ्ऩारुञ् जान्दोडु तॅरुवॅङ्गुम्
शिन्दिऩ्ऩर् तिरिवारुञ् जॅऴुमलर् शॊरिवारुम्
इन्दिर तऩुनाणु मॅरिमणि निरैमाडत्
तन्दमिल् विलैयारक् कोवैह ळणिवारुम् 1260

ऩारुम्–सुगन्ध फैलानेवाले; चन्तऩम्–चन्दन को; अकिल् चान्तॊटु–अगरु के चेप के साथ; तॅरु ऍङ्कुम्–सभी वीथियों में; चिन्तिऩर् तिरिवारुम्–छिड़कते हुए घूमनेवाले; चॅऴुमलर्–पुष्ट फूलों को; चॊरिवारुम्–ले आकर जमा करनेवाले; इन्तिर तऩु नाणुम्–इन्द्रधनुष को लजाते हुए; ऍरि मणि–दीप्त (रंग-बिरंगी) मणियों से युक्त; निरै माटत्तु–पंक्तियों में रहनेवाले प्रासादों के ऊपरी भागों में; अन्तम् इल् विलै–अपार मूल्य की; आरम् कोवैकळ्–मोतीमालाओं से; अणिवारुम्–सजानेवाले। १२६०

लोग ये जो चन्दन और अगरु का घिसा चेप वीथियों में छिड़क रहे थे। और उनमें पुष्ट फूलों को लाकर ढेर लगानेवाले, इन्द्रधनुष की आभा को हरानेवाली रीति से ज्यातित रत्नों से भरे प्रासादों के ऊपरी भागों में मोतीमालाएँ लटकानेवाले थे। १२६०

तळङ्गिळर् मणिहालत् तवऴ्शुड रुमिऴ्दीबम्
इळङ्गुळिर् मुळैयार्नऱ् पालिहै यिऩ्ऩॅङ्गुम्
विळिम्बुपॊऩ् ऩॊळिनाऱ् वॅयिलॊडु निलवीऩुम्
पळिङ्गुडै युयर्तिण्णैप् पत्तियिऩ् वैप्पारुम् 1261

ऍङ्कुम्–सब जगह; तळम् किळर्–छतों पर अधिक रहनेवाले; मणि काल–रत्नकांति बिखेरते हैं; विळिम्पु–किनारों पर; पॊऩ् ओळि–(जो बनी है उस) स्वर्ण की (कारीगरी की) ज्योति; नाऱ्–फैलती है; वॅयिलॊटु–धूप के समान प्रकाश के साथ; पळिङ्कु उटै निलवु–फ़र्श के स्फटिक पत्थर की चाँदनी-सा प्रकाश; ईऩुम्–बिखेरनेवाले; उयर् तिण्णै–ऊँची वेदिकाओं पर; तवऴ् चुटर्–विस्तृत प्रकाश; उमिऴ् तीपम्–देनेवाले दीपों; इळम् कुळिर् मुळै आर्–छोटे शीतल अंकुरों से भरे; नल् पालिकै इऩम्–मंगलमय "पालिका" नामक मिट्टी के छोटे बरतनों को; पत्तियिऩ् वैप्पारुम्–पंक्तियों में रखनेवाले। १२६१

सर्वत्र प्रासादों की छतों से रत्न अपनी कांति बिखेर रहे थे। वहाँ वेदिकायें बनी थीं। वेदिकाओं के किनारे स्वर्णनिर्मित थे। उनसे निकलनेवाली कांति धूप समान थी। तल स्फटिक-पत्थरों का था। उनसे चाँदनी का-सा प्रकाश छूट रहा था। लोग उन वेदिकाओं पर विशाल प्रकाश देनेवाले दीपों और छोटे और मनोरम अंकुरों से भरी

पालिकाओं को पंक्तियों में सजा रहे थे। (पालिका मट्टी का छोटा चुक्कड़-सा बरतन है जिसमें बालू या मट्टी भरकर नवधान्य उगाये जाते हैं। ये दीपक और पालिकाएँ मंगलचिह्न माने जाते हैं। पालिकाएँ शुभ कार्य पूरा होने के बाद मंगलवाद्यों के वादन के साथ जुलूस बाँधकर ले जायी जाती हैं और नदियों या तालाबों में छोड़ दी जाती हैं।)। १२६१

मन्दर मणिमाड मुऩ्ड्रिलिऩ् वयिऩॅङ्गुम्
अन्दमि लॉळिमुत्ति ऩहऩिरै यॉळिवीश
अन्दर नॅडुवाऩ मीऩलर् हुवदॅऩ्ऩप्
पन्दरि निळ्ल्वीशिप् पडर्वॅयिल् कडिवारुम् 1262

मन्तरम् मणि माटम्–मन्दरपर्वत-समान (उन्नत) सुन्दर सौधों के; **मुऩ्ऱिलिऩ् वयिऩ्**–आँगनों में; **ऍङ्कुम्**–सर्वत्र; **अन्तरम्**–ऊपर के; **नॅटु वाऩम्**–विशाल आकाश में; **मीऩ् अलर्कुवतु ऍऩ्ऩ**–तारे जैसे छिटके रहते हैं; **अन्तम् इल् ऑळि**–(वैसे) अनन्त प्रकाशमय; **मुत्तिऩ् अकल् निरै**–मोतीमालाओं की विपुल राशियों का; **ऑळि वीच**–प्रकाश फैलानेवाले; **पन्तर् इऩ् निळ्ल् वीचि**–पण्डालों की सुखद छाया बनाकर; **पटर् वॅयिल् कटिवारुम्**–(जो) फैली रही उस धूप की उग्रता को कम करनेवाले। १२६२

कुछ लोग मंदर पर्वत के समान रहनेवाले प्रासादों के सामने आँगनों में पंडाल बना रहे हैं। उन पंडालों में मोती की मालाएँ लटकायी गयी हैं जिनसे मनोरम प्रकाश छूट रहा है, इसलिए पंडाल नक्षत्र-खचित आकाश के समान दिखाई दे रहे हैं। उन पंडालों के कारण धूप की उग्रता से लोग बच पाते हैं। १२६२

वयिरमि ऩॉळियीऩु मरहद मणिवेदिच्
चॅयिरऱ वॉळिर्दीबऩ् जिलदियर् कॉणर्वारुम्
वॅयिल्विर वियपॉऩ्ऩिऩ् मिडैकॉडि मदितोयुम्
ऍयिलिऩि ऩडुवारु मॅरियहि लिडुवारुम् 1263

वयिरम्–हीरे; **मिऩ् ऑळि ईऩुम्**–(जिन पर) बिजली के समान प्रकाश देते हैं; **मरकतम् वणि वेति**–उन मरकतों की सुन्दर वेदी पर; **चिलतियर्**–दासियाँ; **चॅयिर् अऱ ऑळिर्**–निर्मल प्रकाशवाले; **तीपम् कॉणर्वारुम्**–दीप लाकर रखनेवालियाँ; **वॅयिल् विरविय पॉऩ्ऩिऩ्**–कांतिमय स्वर्ण दण्ड की; **मिटै कॉटि**–बहुत पास-पास रहनेवाली पताकाओं को; **मति तोयुम्**–चन्द्र जिन पर आ ठहरता है उन; **ऍयिलिऩिल्**–प्राचीरों पर; **नटुवारुम्**–गाड़नेवाले; **अकिल् ऍरि इटुवारुम्**–अगरु को जलानेवाले। १२६३

विवाहोत्सव मनाने के लिए नगर सजानेवालों में वे दासियाँ हैं जो मरकत की वेदिकाओं पर, जिन पर जड़े हीरों से विद्युत का-सा प्रकाश विकीर्ण होता है, सजाने के लिए निर्मल दीप जलाकर ले आ रही हैं। वे

हैं जो चन्द्रस्पर्शी प्राचीरों पर कांतिमय स्वर्ण के डण्डवाली ध्वजाएँ गाड़ रही हैं। और वे लोग हैं जो अगरु को जलाकर धुआँ उत्पन्न कर रहे हैं। १२६३

पण्डियि निऱैवाशप् पऩिमलर् कॊणर्वारुम्
तण्डलै यिलैयोडुङ् गऩिपल तरुवारुम्
कुण्डल मॊळिवीशक् कुरवैहळ् पुरिवारुम्
उण्डैकॊण् मदवेऴत् तोडैहळ णिवारुम् 1264

पण्टियिल्–गाड़ियों में; निऱैवाचम्–अधिक सुगन्धित; पऩिमलर्–शीतल पुष्प; कॊणर्वारुम्–लानेवाले; तण्टलै–बागों से; इलैयोटुम्–(पान और केले के) पत्तों के साथ; कऩि पल–विविध फल; तरुवारुम्–लानेवाले; कुण्टलम् ऑळि वीच–कुण्डलों का प्रकाश फैलाते हुए; कुरवैकळ् पुरिवारुम्–"कुरवै" नामक (रास) नाच करनेवालियाँ; उण्टै कॊळ्–अन्नपिण्डों को खानेवाले; मतम् वेऴत्तु–मत्तगजों को; ओटैकळ् अणिवारुम्–मुखपट्ट पहनानेवाले। १२६४

गाड़ियों पर सुवासित पुष्प भरकर लानेवाले, बागों से केले, पान आदि के पत्ते लानेवाले और फल लानेवाले पाये जाते हैं। कुछ स्त्रियाँ अपने कर्णकुंडलों से कांति बिखेरते हुए "कुरवै" का (रास-) नृत्य कर रही हैं। कुछ लोग अन्नकवल खानेवाले हाथियों को मुखपट्ट से अलंकृत कर रहे हैं। १२६४

कलवैहळ् पुऩैवारुङ् गलैनल तॆरिवारुम्
मलर्हुऴऩ् मलैवारुम् मदिमुह मणियाडित्
तिलदमु निडुवारुञ् जिहऴिहै यणिवारुम्
इलविदऴ् पॊलिहोल मॆऴिल्पॆऱ विडुवारुम् 1265

कलवैकळ् पुऩैवारुम्–चन्दन लगा लेनेवाले; कलैनल्ल तॆरिवारुम्–वस्त्र खूब चुनकर पहननेवाले; मलर् कुऴल् मलैवारुम्–केश पर फूल का अलंकार कर लेने वालियाँ; अणि आटि मुऩ्–सुन्दर मुकुर के सामने; मति मुकम्–अपने चन्द्रमुखों पर; तिलतम् इटुवारुम्–तिलक लगा लेनेवालियाँ; चिकऴिकै अणिवारुम्–चोटी पर गजरे पहन लेनेवाले (या केश का अलंकार कर लेनेवाले); इलवु इतऴ्–सेमर के फूलों के समान अधरों पर; ऍऴिल् पॆऱ–अधिक सुन्दर करने के लिए; पॊलि कोलम्–सुशोभित रंग का अलंकार; इटुवारुम्–करनेवालियाँ। १२६५

चन्दन लगाने के काम में प्रवृत्त, वस्त्र चुनकर पहनने के काम में प्रवृत्त, केश में फूल लगाने में संलग्न और सुन्दर मुकुर के सामने खड़े होकर तिलक लगा लेने में लगे हुए पुरुष या स्त्रियाँ; केशालंकार, अधर-रंगान आदि श्रृंगार के काम में लगी हुई स्त्रियाँ —ये सब उनमें हैं। १२६५

तप्पिऩ मणिकाशुञ् जङ्गमु मयिलऩ्ऩार्
ऑप्पऩै पुरिपोदु मूडलि ऩुहुबोदुम्

तुप्पुऱळ् निऱैवाशच् चुण्णमु मुदिर्तादुम्
कुप्पैह ळॅन्नवारिक् कॊण्डयल् कळैवारुम् 1266

मयिल् अऩ्ऩार्—मोर-सी छटावाली स्त्रियाँ; ऒप्पऩै पुरि पोतुम्—जब अपना शृंगार करती हैं तब, और; ऊटलिऩ् उकु पोतुम्—रूठकर अलंकार हटाती हैं, तब; तप्पित्त—जो नीचे छितरे; मणि—उन रत्नों और; काचुम्—स्वर्ण के सिक्कों और; चङ्कमुम्—(उतारे गये) शंखकंकणों; तुप्पु उऱळ्—प्रवाल की समानता करनेवाले (लाल); निऱै वाचम् चुण्णमुम्—अधिक सुगन्ध का चूर्ण; उतिर् तातुम्—जो गिरे हैं उन मकरन्दों को; कुप्पैकळ् ॲन्त—कूड़ा जैसे; वारि कॊण्टु—बटोर लेकर; अयल् कळैवारुम्—बाहर (अलग) फेंकनेवालियाँ। १२६६

मयूरनिभ मानिनियाँ जब शृंगार कर लेती हैं तब, या अपने पतियों से रूठकर अलंकार उतारकर दूर कर देती हैं तब भी रत्न, हमेल के स्वर्ण-सिक्के, शंखकंकण, प्रवालसम लाल, सुवासित अंगराग के चूर्ण, पुष्पों का पराग आदि बिखर जाते हैं। उनको कूड़ों के समान बटोर ले जाकर जो बाहर फेंक आती हैं वे दासियाँ, और; । १२६६

मन्ऩवर् वरुवारुम् मऱैयवर् निऱैवारुम्
इऩ्ऩिशै मणियाऴि ऩिशैमदु नुहर्वारुम्
शॅन्ऩियर् तिरिवारुम् विऱलियर् शॅऱिवारुम्
कन्ऩलिऩ् मणवेलैक् कडिहैह डॅरिवारुम् 1267

मऩ्ऩवर्—राजा; वरुवारुम्—जो आते हैं; मऱैयवर्—ब्राह्मण लोग; निऱैवारुम्—जो आकर इकट्ठे होते हैं; इऩ् इचै—मधुर संगीत; मणि याऴिऩ् इचै मतु—और सुन्दर वीणा का संगीतमधु; नुकर्वारुम्—स्वादन करनेवाले; चॅऩ्ऩियर् तिरिवारुम्—बन्दी (बाण कहलानेवाले) गायक जो घूमते हैं; विऱलियर् चॅऱिवारुम्—चारण गायिकाएँ जो एकत्र होती हैं; कऩ्ऩलिऩ्—समयसूचक जल-यंत्र द्वारा; मणम् वेलै कटिकैकळ् तॅरिवारुम्—विवाहमुहूर्त के समय की प्रतीक्षा करनेवाले। १२६७

राजा लोग जो आते हैं, ब्राह्मण जो एकत्र होते हैं, संगीत, वीणा-वादन आदि के सुननेवाले, चारण, चारणियाँ जो घूम-घूमकर गाना सुनाती हैं —ऐसे लोग हैं। १२६७

कणिहैयर् तॊहुवारुङ् गलैपल पयिल्वारुम्
पणिपणि यॅन्ऩलोडुम् पलविरु निलमन्ऩर्
अणिनॆडु मुडियॊन्ऱॊऩ् ऱुऱैदलि ऩुहुमम्बॊऩ्
मणिमलै यॅन्ऩमन्ऩ वायिलिऩ् मिडैवारुम् 1268

कणिकैयर्—गणिकाएँ (नाटक आदि ६४ कलाओं की जानकार); तॊकुवारुम्—जो एकत्र हुईं; कलै पल पयिल्वारुम्—विविध कलाओं का अभ्यास करनेवालियाँ; पल इरु निल मऩ्ऩर्—अनेक विशाल राज्य के राजा (जो); पणि पणि ॲन्तलोटुम्—आज्ञा हो, सेवा करें —कहते हुए; अणि नॆटु मुटि—सुन्दर ऊँचे किरीटों को; ऒन्ऱु

ऑऩ्ऱॊ अऱॆंतलिऩ्–एक से एक टकराने से; उकुम्–छूटकर गिरनेवाले; अम् पॊऩ् मणि–सुन्दर स्वर्ण-मणियों को; मलै ॲऩ्ऩ मऩ्ऩ–पर्वत के समान ढेर कराते हुए; वायिलिल् मिटैवारुम्–राजद्वार में सटे हुए आनेवाले । १२६८

चौंसठ कलाओं में निपुण गणिकाएँ जो एकत्न होती हैं; कलाप्रदर्शन करनेवाली पेशेवर स्त्रियाँ; अनेक विशाल भूखण्डों के राजा लोग जो हमारी योग्य सेवा कहिए, सेवा कहिए कहते हुए राजद्वार में इतनी बड़ी संख्या में आपस में अपने सुन्दर दीर्घ किरीटों को टकराते हुए एकत्न होते हैं कि उनसे गिरनेवाले स्वर्ण और रत्न पर्वत के समान ढेर के ढेर बन जाते हैं । १२६८

केडहम् वॅयिल्वीशक् किळरयि ऩिलवीऩक्
कोडुयर् नॅडुविञ्जैक् कुञ्जर मदुपोल
आडवर् तिरिवारु मरिवयर् कळिहूरुम्
नाडह नविल्वारुम् नहैयुयिर् कवर्वारुम् 1269

आटवर्–पुरुष, जो; केटकम्–ढालों के; वॅयिल् वीच–धूप-सा प्रकाश देते; किळर् अयिल्–(दूसरे हाथ में) रहनेवाली तलवार के; निलवु ईऩ–चांदनी-सा प्रकाश फैलाते; कोटु उयर्–उन्नत दाँतों वाले; नॅटु विञ्चै–खूब युद्धविद्या में अभ्यस्त; कुञ्चरम् अतु पोल–गजों के समान; तिरिवारुम्–घूमनेवाले; अरिवैयर्–(नाटक-) गणिकाएँ; कळि कूरुम्–मनोरंजक; नाटकम् नविल्वारुम्–नाटक प्रदर्शन करनेवालियाँ; नकै–मन्दहास से; उयिर् कवर्वारुम्–(पुरुषों के प्राण) हरनेवालियाँ (चित्त झकझोरनेवालियाँ) । १२६९

कुछ पुरुष पाये जाते हैं जो बायें हाथ में ढाल लिए, जिससे धूप-सा प्रकाश छूटता है और दायें हाथ में तलवार लिए, जिससे चाँदनी-सा प्रकाश छिटकता है बड़े दाँतों वाले गजों के समान जो युद्धविद्या में खूब अभ्यस्त हैं, घूमते हैं । कुछ गणिकाएँ नाटक का प्रदर्शन कर रही हैं जिनसे खूब मनोरंजन होता है । उनका मन्दहास पुरुषों के मनों को एकदम झकझोर देता है । १२६९

कदिर्मणि यॊळिकालक् कवर्पॊरु डॆरियावा
ऱॆदिरॆदिर् शुडर्विम्मुऱ् ऱॆळुदलि ऩिळैयोरुम्
मदुविरि कुळलारु मदिलुडै नॆडुमाडम्
अदुविदु वॆऩवोरा रलमर लुऱुवारुम् 1270

कतिर् मणि ऑळि काल–कांतियुक्त रत्नप्रकाश छिटकाते हैं, इसलिए; कवर् पॊरुळ् तॆरिया आऱु–दृष्टि को आकृष्ट करनेवाली वस्तुएँ साफ दिखाई देने न देते हुए; ऍतिर् ऍतिर्–(वीथियों के दोनों किनारों से) आमने-सामने; चुटर्—चमक-दमक; विम्मुऱु ऍळुतलिऩ्–अत्यधिक उठती है, इसलिए; इळैयोरुम्–तरुण पुरुष; मतु विरि कुळलारुम्–(पुष्पों पर के) शहद से भरे केशवाली (स्त्रियाँ); मतिल् उटै नॅटु माटम्–

चहारदीवारी वाले बड़े सौध (जिनमें उनको प्रवेश करना है); अतु इतु ॲन्न ओरार्–वह था यह —यह नहीं जान पातीं; अलमरल् उरुवारुम्–गड़बड़ानेवालियाँ। १२७०

वीथियों के दोनों किनारों पर आमने-सामने रहनेवाले सौधों से रत्न, स्वर्ण आदि वस्तुएँ इतने प्रकाश उगलती हैं कि आँखें चौंधिया जाती हैं। इसलिए वीथियों में तरुण और पुष्प-शहद-भरे केशवाली तरुणियाँ पायी जाती हैं जो यह निश्चय नहीं कर पातीं कि हमें इस सौध में प्रवेश करना है या उसमें; और गड़बड़ाती हैं। १२७०

तेर्मिशै वरुवारुञ् जिविहयिल् वरुवारुम्
ऊर्दियिल् वरुवारु मौळिमणि निरैयोडैक्
कार्मिशै वरुवारुङ् गरिणियिल् वरुवारुम्
पार्मिशै वरुवारुम् पण्डियिल् वरुवारुम् 1271

तेर्मिचै वरुवारुम्–रथों पर आनेवाले; चिविकैयिल् वरुवारुम्–शिविकाओं पर आनेवाले; ऊर्तियिल् वरुवारुम्–(अश्व, ऊँट आदि) सवारियों पर आनेवाले; ऑळि मणि निरै ओटै–कान्त रत्न-सज्जित मुखपट्टधारी; कार् मिचै वरुवारुम्–मेघों (सदृश गजों) पर आनेवाले; करिणियिल् वरुवारुम्–हथिनियों पर आनेवाले; पार् मिचै वरुवारुम्–(पैदल) भूमि पर आनेवाले; पण्टियिल् वरुवारुम्–गाड़ियों पर आनेवाले। १२७१

लोग कितने ही प्रकार के वाहनों पर आ रहे हैं। रथ, शिविकाएँ, अश्व, ऊँट आदि सवारियाँ, हाथी जिनके कांतियुक्त रत्नों के मुखपट्ट हैं और जो मेघ के समान हैं; हथिनियाँ, गाड़ियाँ —इन सबों पर सवार होकर लोग आ रहे हैं। इनके अलावा पैदल आनेवाले भी हैं। १२७१

मुत्तणि यणिवारुम् मणियणि मुऩिवारुम्
पत्तियि ऩविर्शॆम्बॊऩ् पल्हलऩ् महिऴ्वारुम्
तॊत्तुरु तॊऴिऩ्मालै शुरिहुऴ लणिवारुम्
शित्तिर निरैतोयुञ् जॆन्दुहिल् पुऩैवारुम् 1272

मुत्तु अणि अणिवारुम्–मुक्ताभरण धारण करनेवाले; मणि अणि मुऩिवारुम्–(पहने हुए) रत्नाभरणों से गुस्सा करनेवाले (उनको उतार देनेवाले); पत्तियिऩ्–पंक्ति में; अविर् चॆम् पॊऩ्–उज्ज्वल श्रेष्ठ स्वर्ण के; पल कलऩ्–अनेक आभरण; मकिऴ्वारुम्–आनन्द के साथ पहननेवाले; चुरि कुऴल्–घुंघराले केश में; तॊत्तु उरु तॊऴिल्–गुच्छों वाली और विशिष्टता से गुँथी हुई; मालै अणि वारुम्–मालाएँ पहननेवाले; चित्तिरम् निरै तोयुम्—चित्र-पंक्तियों से सज्जित (कढ़ाई द्वारा); चॆम् तुकिल् पुऩैवारुम्–लाल कौशेय वस्त्र पहननेवाले। १२७२

श्रृंगार में लगे हुए लोगों को देखिये। स्त्रियाँ पायी जाती हैं या पुरुष पाये जाते हैं जो मुक्ताभरण पहन रहे हैं। कुछ रत्नाभरण उतार रहे हैं। कुछ पंक्तियों में, आलोकमय स्वर्णाभरण पहन रहे हैं। कुछ

लोग सुन्दर गुच्छों को कलापूर्ण ढंग से गूँथकर उन मालाओं को अपने केशों में पहन रहे हैं। कुछ वस्त्र पहनने में लगे हुए हैं जिन वस्त्रों पर कई चित्रों की कढ़ाई हुई है। १२७२

विडनिहर्‌ विऴियारु ममुदॅऩु मॉऴियारुम्
किडैपुरै यिदऴारुङ् गिळर्‌नहै यॉळियारुम्
तडमुलै पॅरियारुन् दऩियिडै शिऱियारुम्
पॅडैयॅऩ नडयारुम् पिडियॅऩ वरुवारुम् 1273

विटम् निकर् विऴियारुम्–विषसदृश दृष्टि वालियाँ; अमुतु ॲऩुम्—सुधा-सम; मॉऴियारुम्–बोली वालियाँ; किटै पुरै इतऴारुम्–(खुबरी ?) "किटै" नाम की जललता-सम अधरवालियाँ; किळर् नकै ऑळियारुम्–उज्ज्वल दन्तावली की शोभावालियाँ; तट मुलै पॅरियारुम्–विशाल और पीन स्तनोंवालियाँ; तऩि इटै चिऱियारुम्–अनुपम और छोटी कमरवालियाँ; पॅटै अऩम् नटैयारुम्–स्त्री हंस के समान चालवालियाँ; पिटि ॲऩ वरुवारुम्—हथिनी-सी गति के साथ आनेवालियाँ। १२७३

स्त्रियाँ जिनकी आँखें विष के समान (काली और प्राणहारी) हैं; स्त्रियाँ जो सुधा सम बातें करती हैं, जिनके अधर "किटै" (खुबरी ?) नाम की अत्यन्त लाल जललता के समान हैं; स्त्रियाँ जो आकर्षक मन्दहास-वालियाँ हैं, या उज्ज्वल दन्तावली वालियाँ हैं; स्त्रियाँ जिनके स्तन मूल में विस्तार के साथ पुष्ट भी हैं; स्त्रियाँ जिनकी कमरें छोटी या क्षीण हैं; स्त्रियाँ जो हंसिनियों के समान चलती आती हैं, या स्त्रियाँ जो हथिनी की चाल चलती आती हैं —ये सब हैं। (यहाँ तक के पद्यों में कर्ता ही हैं। क्रिया नहीं है। "एक सूची दी गयी है उसमें लोग किन-किन कामों में लगे हुए थे, यह बताया गया है।" आशय है कि हर कोई किसी न किसी काम में लगा हुआ था।)। १२७३

उण्णिऱैनिमिर् शॅल्वत् तुळवियल् पदैनाडिक्
कण्णुऱ लरिदॅऩ्ऩिऱ् कऴुऱुद लॅळिदामो
ॲण्णुऱु शुडर्वाऩत् तिन्दिरऩ् मुडिशूडुम्
मण्णुऱु तिरुनाळे यॊत्तद मणनाळे 1274

उळ् निऱै निमिर् चॅल्वत्तु–नगर के अन्दर के भरे व उन्नत वैभव का; उळ इयल्पु अतै–सच्ची स्थिति को; नाटि कण्णुऱल् अरितु–अन्वेषण कर देखना ही कठिन है; ॲऩ्ऩिल्–तो; कऴऱुतल् ॲळितु आमो–वर्णन करना सुलभ है क्या; अ मणम् नाळ्–वह विवाह-दिन; ॲण् उऱु–गौरव समेत; चुटर् वाऩत्तु–उज्ज्वल आकाश में; इन्तिरऩ् मुटि चूटुम्–देवेन्द्र के किरीट–धारण के; मण्णुऱु तिरुनाळे–अभिषेक के दिन के ही; ऑत्ततु–समान रहा। १२७४

उस नगर के अन्दर का सारा वैभव देखना ही दुस्तर है। तो विवरण कैसे दिया जायगा ? संक्षेप में कहा जाय तो वह सीता-राम का

उद्वाह-दिन स्वर्गलोक के देवेन्द्र के मुकुटधारण के अंगीभूत अभिषेक के दिन के समान कोलाहलमय था और उमंगभरे उत्साह का प्रदर्शन खूब होता था। १२७४

करैत्तॆरि वरियदु कऩहम् वेय्ऩ्ददु
वरैयॆऩ वुयर्ऩ्ददु मणियिऩ् चॆय्ददु
निरैवळै मणविऩै निरप्पु मण्डबम्
अरैशर्त मरशऩु मणुहऩ् मेयिऩाऩ् 1275

करै तॆरिवु अरियतु–अन्त पाना (जिसका) कठिन है; वरै ऎऩ उयर्ऩ्ततु–पर्वत-समान (जो) ऊँचा था; कऩकम् वेय्ऩ्ततु–चाँदी से (जो) मढ़ा हुआ था; मणियिऩ् चॆय्ततु–रत्नों की कारीगरी से (जो) युक्त था; निरै वळै–श्रेणी में कंकण (जो) पहने हुई थी, उन सीताजी का; मणविऩै–विवाहोत्सव; निरप्पुम् मण्टपम्–(जहाँ) सुसम्पन्न होनेवाला था (उस) भवन में; अरैचर्तम् अरचऩुम्–राजाधिराज भी; अणुकल् मेयिऩाऩ्–आने को हुये। १२७५

विवाहमण्डप इतना विशाल था कि अन्त देखना कठिन था। वह पर्वत के समान ऊँचा था। उस पर सोने की चादर मढ़ी हुई थी और रत्न जड़े हुए थे। उसी में सीताजी का, जो अपने हाथों में पंक्तिबद्ध प्रकार से चूड़ियाँ पहने हुए थीं, विवाहसंस्कार होनेवाला था। दशरथ उस मण्डप में पधारने को उद्यत हो निकले। १२७५

वॆण्गुडै यिळनिला विरिक्क मिऩ्ऩॆऩक्
कण्गुडै मणियिळ वॆयिलुङ् गाऩ्ऱिडप्
पण्गुडै वण्डिऩम् बाड वाडऩ्मा
मण्गुडै तूळिविण् मऱैप्प वेहिऩाऩ् 1276

वॆण् कुटै–श्वेत छत्र; इळ निला विरिक्क–मन्द चाँदनी-सा प्रकाश फैलाता; मिऩ् ऎऩ–बिजली के समान; कण् कुटै–आँखों में कौंधनेवाले, मणि-रत्न आदि; इळ वॆयिलुम् काऩ्ऱिट–बालधूप फैलाते; कुटै वण्टु इऩम्–फलों को कुरेदनेवाले भ्रमर कुल; पण् पाट–संगीत (सा) नाद करते हैं; आटल् मा–विजयी अश्वों की; मण् कुटै–धरती को कुरेदने से उठी; तूळि–धूली; विण् मऱैप्प–आकाश को छिपा देती; एकिऩाऩ्–(इस ठाट के साथ) वे आये। १२७६

तब श्वेतछत्र मन्द चाँदनी (सा प्रकाश) फैला रहे थे। किरीट आदि के रतन बिजली के समान दर्शकों की आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करते हुए धूप-सी कांति बिखेर रहे थे। पुष्पों पर कुरेदते रहनेवाले भ्रमर संगीत की (सी) ध्वनि उत्पन्न कर रहे थे। अश्वों के टाप से धूलि उठी और उसका पटल आकाश को छिपा रहा था। इस ठाट से राजा चले। १२७६

मङ्गल मुरशिऩ मळैयि ऩार्त्तऩ, शङ्गिऩ मुळङ्गिऩ तारै पेरिहै
पॊङ्गिऩ मऱैयवर् पुहलु नाऩ्मऱै, कङ्गुलि ऩॊलिक्कुमा कडलुम् बोऩ्ऱदे 1277

मङ्कलम् मुरचु इऩम्–मंगलसूचक ढोल; मऴैयिऩ् आर्त्तऩ–मेघ के समान नर्दन कर उठे; चङ्कु इऩम् मुऴङ्किऩ–शंख वाद्य-समूह बज उठे; तारै–शृंगियाँ; पेरिकै–नगाड़े; पॊङ्किऩ–बज उठे; मऱैयवर् पुकलुम्–ब्राह्मणों द्वारा पारायण किये जानेवाले; नाल् मऱै–चारों वेदों की ध्वनि; कङ्कुलिऩ् ऑलिक्कुम्–रात में नाद करनेवाले; मा कटल् पोऩ्ऱतु–बड़े समुद्र की-सी थी । १२७७

और मंगलसूचक ढोल मेघों के गर्जन के समान नर्दन कर रहे थे। शंख, तुरहियाँ, भेरियाँ आदि क्वणित हो उठीं। वेदज्ञ ब्राह्मण वेद का पारायण करते हुए जा रहे थे। वह शब्द रात में समुद्र-गर्जन के समान सुनाई दिया। १२७७

परन्दतेर् कळिऱुपाय् पुरवि पण्णयिल्, तरन्दर नडन्दऩ ताऩै वेन्दऩै
निरन्दरन् दॊऴुदॆऴु नेमि मऩ्ऩवर्, पुरन्दरऩ् पुडैवरु ममरर् पोऩ्ऱऩर् 1278

परन्त तेर्–विस्तृत स्थल पर आनेवाले रथ; कळिऱु–गज; पाय् पुरवि–सरपट दौड़नेवाले अश्व; पण्णैयिल्–अनेक दलों में आनेवाले; तरम् तरम् नटन्तऩ–श्रेणी बाँधकर चले; ताऩै वेन्तऩै–सेना के स्वामी दशरथ को; निरन्तरम् तॊऴुतु ऍऴुम्–निरन्तर नमस्कार कर उठनेवाले; नेमि मऩ्ऩवर्–आज्ञाचक्रधारी राजा लोग; पुरन्तरऩ् पुटै वरुम्–पुरन्दर के साथ आनेवाले; अमरर् पोऩ्ऱऩर्–देवतुल्य थे । १२७८

विस्तृत थल में रथ, गज और सरपट दौड़नेवाले अश्व समूहों में और श्रेणीबद्ध हो चले जा रहे थे। सेना के स्वामी चक्रवर्ती की निरन्तर सेवा में लगे रहने के कारण जो उन्नत हो गये थे, वे राजा पुरन्दर के साथ देवों के समान दशरथ को घेरते हुए चले। १२७८

अऩैयवऩ् मण्टब मणुहि यम्बॊऩिऩ्, पुऩैमणि यादऩम् पॊलियत् तोऩ्ऱिऩाऩ्
मुऩैवरु मऩ्ऩरु मुऱैयि ऩेऱिऩार्, शऩहऩुन् दऩ्किळै तऴव वेऱिऩाऩ् 1279

अऩैयवऩ्–वे; मण्टपम् अणुकि–मण्डप में पहुँचकर; अम् पॊऩ्ऩिऩ्–श्रेष्ठ स्वर्ण के; मणि पुऩै–रत्नसहित निर्मित; आतऩम्–आसन पर; पॊलिय–उसको शोभित करते हुए; तोऩ्ऱिऩाऩ्–विराजे; मुऩैवरुम्–मुनिगण; मऩ्ऩरुम्–राजा लोग भी; मुऱैयिऩ् एऱिऩार्–यथाक्रम अपने-अपने आसन पर आसीन हुए; चऩकऩुम्–जनक भी; तऩ्किळै तऴुवु–अपने बन्धु-बान्धवों के मध्य; एऱिऩाऩ्–आसनस्थ हुए । १२७९

वे दशरथ उस मण्डप में आकर स्वर्ण और रत्नों से निर्मित एक शानदार आसन पर विराजमान हुए। मुनिगण और राजा लोग अपने-अपने क्रम में अपने-अपने निर्दिष्ट आसन पर आसीन हुए। राजा जनक भी आसनस्थ हुए और उनको घेरकर उनके बन्धु-बान्धव विराजे। १२७९

मऩ्ऩरु मुऩिवरु मऱ्ऱु ळोर्हळुम्
अऩ्ऩमॆऩ् ऩडैयणङ् गऩैय मादरुम्
तुऩ्ऩिऩर् तुवऩ्ऱलिऱ् चुडर्हळ् शूऴ्वरुम्
पॊऩ्मलै यॊत्तदप् पॊरुविल् कूडमे 1280

मऩ्ऩरुम्–राजा लोग; मुऩिवरुम्–मुनिगण; मऱ्ऱु उळोर्कळुम्–अन्य जो वहाँ रहे, वे पुरुष; अऩ्ऩम् मॅल् नटै–हंस की-सी मृदु चालवाली; अणङ्कु अऩैय–श्रीलक्ष्मीदेवी सदृश; मातरुम्–स्त्रियाँ; तुऩ्ऩिऩर् तुवऩ्ऱलिऩ्–जो खचाखच भरी थीं, उनकी भीड़ से; अ पॉरु इल् कूटम्–वह अनुपम भवन; चुटर्कळ् चूऴ् वरुम्–ग्रह और नक्षत्रों से भरे; पॉऩ् मलै ऑत्ततु–मेरुपर्वत के समान रहा। १२८०

वह मण्डप राजा लोग, मुनिगण, अन्य पुरुष और हंस की-सी चाल वाली स्त्रियाँ —इन सब से खचाखच भर गया। तब वह मेरुपर्वत के समान जिसकी परिक्रमा ग्रह और नक्षत्र करते रहते हैं दिखाई दिया। १२८०

पुयलुळ मिऩ्ऩुळ पॉरुविऩ् मीऩुळ
इयऩ्मणि यिऩमुळ शुडरि रण्डुळ
मयऩ्मुदऱ् ऱिरुत्तिय मणिशॅय् मण्डबम्
अयऩ्मुदऱ् ऱिरुत्तिय वण्ड मॊत्तदे 1281

मयऩ्–मय ने (देवशिल्पी); मुतल् तिरुत्तिय–जिसका पहले निर्माण किया था; मणिचॅय् मण्टपम्–नवरत्न-खचित उस मण्डप में; पुयल् उळ–मेघ हैं; मिऩ् उळ–बिजली है; पॉरुविल् मीऩ् उळ–अनुपम नक्षत्र हैं; इयल् मणि इऩम् उळ–कांतियुक्त मणिकुल (तारागण) हैं; चुटर् इरण्टुम् उळ—(सूर्य-चन्द्र) दोनों प्रकाशपुंज हैं; अयऩ् मुतल् तिरुत्तिय–ब्रह्मा ने जो पहले सृजित किया था उस; अण्टम् ऑत्ततु–अण्डगोल के समान था। १२८१

ब्रह्मा ने जो अण्ड पहले बनाया उसमें मेघ है, बिजली है, ग्रह और नक्षत्र पाये जाते हैं और तारागण हैं। सूर्य और चन्द्र हैं। इस मय-निर्मित मण्डप में भी मेघ, बिजली और तारों के स्थान में स्त्रियों के केश, शरीर और आँखें हैं। ग्रह (अन्य राजा) सूर्य और चन्द्र के स्थान में ज्योतिपुंज के समान दशरथ (सूर्यकुल के राजा) और जनक (चन्द्रकुल के राजा) हैं। अतः यह मण्डप भी ब्रह्म-रचित अण्ड के समान है। १२८१

ऍण्डव मुऩिवरु मिऱैवर् यावरुम्
अण्डरुम् बिऱरुम्बुक् कडङ्गिऱ् ऱादलाल्
मण्डबम् वैयमुम् वाऩुम् वाय्मडुत्
तुण्डवऩ् मणियणि युदरम् बोऩ्ऱदे 1282

ऍण् तवम् मुऩिवरुम्–(श्रेष्ठ) मान्य तपस्वी; इऱैवर् यावरुम्–(दिग्पालक आदि) सभी राजा; अण्टरुम्–देवता लोग; पिऱरुम्–अन्य; पुक्कु अटङ्किऱ्ऱु–प्रवेश कर समाहित हो गये; आतलाल्–इसलिए; मण्टपम्–वह मण्डप; वैयमुम् वाऩम्–भूलोक और स्वर्गलोक को; वाय् मटुत्तु–अपने मुख में डालकर; उण्टवऩ्–जिन्होंने उदरस्थ कर लिया था उन श्रीविष्णु के; मणि अणि उतरम् पोऩ्ऱतु—मणि-सम सुन्दर उदर सदृश था। १२८२

जो तपस्या श्रेष्ठ मानी जाती है उस तपस्या के धनी मुनिगण, लोकपालक (दिग्पालक और राजा लोग), देवता लोग और अन्य, सभी

लोगों को उस मण्डप ने समा लिया। इस कारण वह श्रीमन्नारायण के, जिन्होंने आकाश और भूमि सबको अपने मुख में डालकर निगल लिया था, सुन्दर उदर से तुल्य था। १२८२

तरादल मुदलुल हऩैत्तुऩ् दळ्ऴुऱ
विराविऩ कुविऩ्दऩ विळम्ब वेण्डुमो
अरावणै तुऱऩ्दुपोऩ् दयोत्ति मेविय
इराहवऩ् शॆय्दियै यियम्बु वामरो 1283

तरातलम् मुतल्–धरातल से लेकर; उलकु अऩैत्तुम्–सभी लोकों के वासी; तळ्ऴुऱ–(विवाह देखने की इच्छा से) प्रेरित हो; विराविऩ कुविऩ्तऩ–मिलकर आये और एकत्रित हुए; विळम्प वेण्टुमो–(फिर) भीड़ की हालत कहना चाहिए क्या; अरा अणै तुऱन्तु–शेष शयन त्यागकर; पोऩ्तु–जाकर; अयोत्ति मेविय–अयोध्या में जो (अवतार लेकर) पहुँचे; इराकवऩ् चॆय्तियै–उन श्रीराघव का समाचार; इयम्पुवाम्–कहेंगे। १२८३

धरातल से लेकर सभी लोकों के वासी, श्री सीताराम विवाह के दर्शन करने की अदम्य इच्छा से प्रेरित होकर वहाँ आकर मिल गये। फिर भीड़ की स्थिति या विशालता का क्या कहना? अब हम श्रीरामचन्द्र का जो शेषशय्या त्यागकर अयोध्या में आकर अवतरित हुए थे, वृत्तान्त कहेंगे। १२८३

शङ्गिऩऩ् दवऴ्हड लेऴिऱ् ऱऩ्दवुम्
शिङ्गलि लरुमऱै तरिऩ्द तीर्त्तङ्गळ्
गङ्गये मुदलवुङ् गलऩ्द नीरिऩाल्
मङ्गल मञ्जऩ मरबि ऩाडिये 1284

चिङ्कल् इल्–अक्षय; अरु मऱै तॆरिऩ्त–श्रेष्ठ वेदों में उक्त; तीर्त्तङ्कळ्–पवित्रजल; कङ्कै मुतलवुम्–गंगा आदि का; चङ्कु इऩम् तवऴ्–शंख कुल जहाँ रेंगते रहते हैं उन; कटल् एऴिल् तऩ्तवुम्–सातों समुद्रों से लाया हुआ जल; कलऩ्त नीरिऩाऴ्–(दोनों के) मिश्रित जल से; मङ्कलम् मञ्चऩम्–मंगलकर पवित्र मज्जन (स्नान); मरपिऩ् आटि–यथोक्त रीति से करके। १२८४

अक्षय वेदों में उक्त प्रकार से गंगा आदि पवित्र नदियों का जल लाया गया। फिर उन सातों समुद्रों का, जिनमें पवित्र शंख आदि जलचर रहते हैं, पुनीत जल भी लाया गया। उन दोनों के मिश्रित और सुवासित जल से श्रीराम ने मुकुटधारण उत्सव के अंग के रूप में यथोक्त रीति से अभिषेक किया। १२८४

कोदऱु तवत्तुत्तङ् गुलत्तु ळोर्तॊऴुम्
आदियञ् जोदियै यडिव णङ्गिऩाऩ्

कादियल् कयल्विऴिक् कऩ्ऩि मार्हळै
वेदियर्क् करुमऱ़ै विदियि ऩल्हिये 1285

कातु इयल् कयल् विऴि–कर्ण तक आयत मछली-सी आँखों वाली; **कऩ्ऩिमार्कळै**–कन्याओं को; **वेतियरक्कु**–वेदज्ञ विप्रों को (अविवाहित ब्रह्मचारियों को); **अरु मऱ़ै वितियिऩ् नल्कि**–श्रेष्ठ वेदोक्त रीति से; **नल्कि**–दान करके; **कोतु अऱ़ु तवत्तु**–निर्मल तपस्या के; **तम् कुलत्तु उळोर्**–अपने कुल के पूर्वजों से; **तॊऴुम्**–परम्परा से पूजित; **आति अम् चोतियै**–आदि परमज्योति श्रीरंगनाथ की; **अटि वणङ्किऩाऩ्**–चरण-पूजा की । १२८५

फिर वेदोक्त रीति से वेदपाठी ब्राह्मण ब्रह्मचारियों को कन्यादान किया गया । वे कन्यायें सुन्दर थीं, जिनकी मछली-सी आँखें कर्ण तक लम्बी थीं । फिर उन्होंने आदि परम ज्योति, श्रीरंगनाथदेव की, जिनकी आराधना उनके वंश के राजा परम्परा से करते आ रहे थे, चरण-पूजा की । १२८५

अऴिवरु तवत्तिऩो डऱ़त्तै याक्कुवाऩ्
ऑऴिवरुङ् गरुणयो रुरुवु कॊण्डॆऩ्ऩ
ऍऴुदरु वडिवुहॊण् डिरुण्ड मेहत्तैत्
तऴुविय निलवॆऩक् कलवै शात्तिये 1286

अऴिवरु–'ग्लानिगत'; **तवत्तिऩोटु**–तपस्या के साथ; **अऱ़त्तै**–धर्म को; **आक्कुवाऩ्**–स्थापित करने के लिए; **ऑऴिवु अरु करुणै**–अमर करुणा (निधि) ने; **ओर् उरुवु कॊण्टतु**–एक (मानव-) रूप ले लिया; **ऍऩ्ऩ**–ऐसा; **ऍऴुत अरु वटिवु कॊण्टु**–(चि) लिखने के लिए कठिन सौंदर्य लेकर; **इरुण्ट मेकत्तै तऴुविय**–काले मेघ को अपने आलिंगन में जिसने ले लिया है; **निलवु ऍऩ्ऩ**–उस चाँदनी के समान; **कलवै चात्ति**–चन्दन का लेप लगाकर । १२८६

(इस पद से श्रीराम के शृंगार का वर्णन है । पहले चन्दन लगाने का शृंगार बताया जाता है ।) तप और धर्म क्षीण हो रहे थे उनको फिर से स्थापित करने के लिए मानो अक्षय करुणा ने मानव रूप धर लिया हो ऐसा था श्रीराम का रूप । और उनका सौन्दर्य इतना महान था कि चित्रण कठिन है । उन्होंने अपने शरीर पर चन्दन की चर्चा कर ली थी । तब ऐसा लगा मानो मेघ पर चाँदनी लग गई है । १२८६

मङ्गल मुऴुनिला मलर्न्द तिङ्गळैप्
पॊङ्गिरुङ् गरुङ्गडल् पूत्त दामॆऩ्ऩच्
चॆङ्गिडैच् चिहऴिहैच् चॆम्बॊऩ् मालयुम्
तॊङ्गलुन् दुयल्वरच् चुऴियञ् जूडिये 1287

पॊङ्कु इरु करु कटल्–ज्वार में उठनेवाले विशाल और नीले सागर ने; **मङ्कलम्**–मंगलमय; **मुऴु निला मलर्न्त तिङ्कळै**–सारी कलाओं के साथ उत्फुल्ल चन्द्र

को; पूत्तु आम्–अपने में रख लिया हो ऐसा; चॅम् किटै चिकऴिके–लाल "किडै" (नामक जल-लता खुखरी के तने) से बनी हुई "शिकऴिका" (नाम की माला) पर; चॅम् पॉन् मालैयुम्–लाल स्वर्ण की माला और; तॉङ्कलुम्–पुष्पों की मालाएँ; तुयल् वर–झूलते हुए; चुऴियम् चूटि–"चुऴियम्" (नाम का) शिरोभूषण पहनकर। १२८७

केशालंकार का वर्णन है। उनके केश पर पहले 'चिकऴिक' नाम का वलय पहनाया गया। (वह लाल किटै खुखरी ? नाम की जल-लता के तने का बना हुआ होता है। फूलों का भी बनता है— ११९७वाँ पद देखें।) उनका केश नीला सागर-सा था और यह आभूषण पूर्णचन्द्र के समान था। उसके बाद ऊपर "चुऴियम्" नाम का रत्नों का बना आभरण पहनाया गया। उससे स्वर्ण और पुष्प की मालाएँ लटक रही थीं। १२८७

एदमि लिरुकुऴै यिरवु नन्बहल्
कादल्हण् डुणर्न्दन कदिरुन् दिङ्गळुम्
शीदैतन् करुत्तिनैच् चॅवियि नुळ्ळुऱ्त्
तूदुशॅन् ऱुरैप्पन पोन्ऱु तोन्ऱवे 1288

इरवु नन् पकल्–रात और अच्छे दिन में; चीतै तन् कातल्–सीताजी के प्रेम (की वेदना की स्थिति) को; कण्टु उणर्न्तन–देखकर जिन्होंने समझ लिया है; कतिरुम् तिङ्कळुम्–वे सूर्य और चन्द्र; तूतु चॅन्ऱु–दूत बनकर आये; करुत्तितै–सीताजी के मन की बात को; चॅवियिन् उळ् उऱ–कानों में, अन्दर; उरैप्पन पोन्ऱु–कहते हों, जैसे; एतम् इल् इरु कुऴै–दोषहीन दो कुण्डल; तोन्ऱ–शोभा दे रहे थे। १२८८

उनके उज्ज्वल कर्णकुण्डल सूर्य और चन्द्र के समान थे, जो सीताजी की विरह-कथा देख जानकर, दूतों के रूप में, श्रीराम के कानों में वह समाचार कह रहे हों। १२८८

कार्विडक् कऱैयुडैक् कणिच्चि वानवन्
वार्शडैप् पुडैयिनोर् मदिमि लैच्चत्तान्
शूऱ्शुडर्क् कुलमॅलाञ् जूडि नानॆन
वीरपट् टत्तॊडु तिलह मिन्नवे 1289

कार् विटम् कऱै उटै(य)–काले विष की कालिमा कण्ठ में धारण करनेवाले; कणिच्चि वानवन्–परशुधर देव (शिवजी) ने; वार् चटै पुटैयिन्–लम्बी जटाजूट पर; ओर मति मिलैच्च–चन्द्र की एक कला को धारण किया है, (मानो स्पर्द्धा में); चूऱ् चुटर् कुलम् ॲल्लाम्–दिव्य ज्योतिमण्डलों, सबों, को; तान् चूटिनान्–खुद धारण कर लिया हो; ॲन–ऐसा; वीर पट्टत्तॊटु—वीरता-सूचक पट्टी के साथ; तिलकम्–तिलक के; मिन्न–चमकते। १२८९

श्रीराम ने पट्टी और तिलक धारण कर ली। (यह पट्टी वीरतासूचक आभरण है।) पट्टी इतनी कांतियुत थी मानो सभी दिव्य ज्योतिमण्डल

एक साथ मिल गये हों और उस समूह को श्रीराम ने धारण कर लिया हो। नीलकंठ, परशुधर श्री शिवजी ने एक ही कलावाले चन्द्र को अपनी जटाजूट पर धारण कर लिया था। उसकी तुलना में श्रीराम की पट्टी जो स्वर्ण की बनी थी और जिसमें श्रेष्ठ रत्न आदि जड़ित थे, लाखों, करोड़ोंगुना श्रेष्ठ और शोभायमान रही। तिलक भी मिल गया, फिर क्या पूछना! । १२८९

शक्करत् तयल्वरुञ् जङ्ग मामॆऩ्
मिक्कॊळिर् कऴुत्तणि तरळ वॆण्गोडि
मॊय्क्करुङ् गुऴलिऩाण् मुऱुव लुळ्ळुऱप्
पुक्कऩ निऱैन्दुमेऱ् पॊडिप्प पोऩ्ऱवे 1290

चक्करत्तु अयल् वरुम् चङ्कम् आम् ऎऩ्ऩ–चक्रायुध के पास रहनेवाले शंख के समान; मिक्कु ऑळिर्–अधिक उज्ज्वल; कऴुत्तु अणि–कण्ठ में पहने गये; वॆण् तरळम् कोटि–श्वेत मुक्ताओं के हार; मॊय् करु कुऴलिताळ्–घने काले केशवाली सीताजी की; मुऱुवल्–मुस्कुराहट; उळ् उऱ पुक्कऩ–जो (श्रीराम के) मन में खूब पैठ गई थी वह; निऱैन्तु–वहाँ खूब भरने के बाद; मेल् पॊटिप्प पोऩ्ऱ–ऊपर छलक आयी हो ऐसे लगे। १२९०

श्रीराम का मुख चक्र-समान है तो कण्ठ उस चक्र के पास रहनेवाले शंख के समान। उस कण्ठ को उन्होंने मुक्ताहारों से अलंकृत कर लिया था और वे उनके श्रीवक्ष पर डोल रहे थे। उनको देखकर ऐसा लगता था मानो घने केशवाली सीताजी के हास, जो श्री रामजी के हृदय में (स्मृति के रूप में) थे वे छलककर बाहर आकर दिख रहे हों। १२९०

पन्दिशॆय् वयिरङ्गळ् पॊऱियिऱ् पाड़ुऱ
अन्दमिल् शुडर्मणि यऴलिऱ् ऱोऩ्ऱलाल्
सुन्दरत् तोळणि वलयन् दॊल्लैनाळ्
मन्दरञ् जुऱ्ऱिय वरवै माऩुमे 1291

पन्ति चॆय् वयिरङ्कळ्–पंक्तियों में जड़े हुए हीरे; पॊऱियिऩ् पाटु उऱ–सर्प की बिन्दियों के समान लगते; अन्तम् इल् चुटर् मणि–अपार कांति के माणिक्य; अऴलिऩ् तोऩ्ऱलाल्–अग्नि के समान दिखाई देते, अतः; चुन्तरम् तोळ् अणि वलयम्–सुन्दर भुजाओं के बाहुवलय; तॊल्लै नाळ्–कभी पुराने दिनों में; मन्तरम् चुऱ्ऱिय–(क्षीरसागर मन्थन के अवसर पर) मन्दरपर्वत पर लपेटा हुआ; अरवै माऩुम्–(वासुकी) सर्प-सम थे। १२९१

(अब बाहुवलय की बात आती है।) बाहुवलयों में बहुमूल्य हीरे जड़े हैं। वे सर्प के चमड़े की बिन्दियों के समान लगते हैं। रत्न हैं जो अंगारों के समान ज्वलंत हैं। इसलिए वे सुन्दर बाहुवलय उस वासुकी के समान लगते हैं जिसको अमृतमंथन के दिन मंदरपर्वत पर लपेटा गया था। (श्रीराम की भुजाएँ मेरु के समान थीं।)। १२९१

को; पूत्ततु आम्–अपने में रख लिया हो ऐसा; **चॆम् किटै चिकऴिके**–लाल "किडै" (नामक जल-लता खुखरी के तने) से बनी हुई "शिकऴिका" (नाम की माला) पर; **चॆम् पॊऩ् मालैयुम्**–लाल स्वर्ण की माला और; **तॊङ्कलुम्**–पुष्पों की मालाएँ; **तुयल्वर**–झूलते हुए; **चुऴियम् चूटि**–"चुऴियम्" (नाम का) शिरोभूषण पहनकर। १२८७

केशालंकार का वर्णन है। उनके केश पर पहले 'चिकऴिक' नाम का वलय पहनाया गया। (वह लाल किटै खुखरी ? नाम की जल-लता के तने का बना हुआ होता है। फूलों का भी बनता है— ११९७वाँ पद देखें।) उनका केश नीला सागर-सा था और यह आभूषण पूर्णचन्द्र के समान था। उसके बाद ऊपर "चुऴियम्" नाम का रत्नों का बना आभरण पहनाया गया। उससे स्वर्ण और पुष्प की मालाएँ लटक रही थीं। १२८७

एदमि लिरुकुऴै यिरवु नऩ्बहल्
कादल्हण् डुणर्न्दऩ कदिरुन् दिङ्गळुम्
शीदैतऩ् करुत्तिऩैच् चॆवियि ऩुळ्ळुऱत्
तूदुशॆऩ् ऱुरैप्पऩ पोऩ्ऱु तोऩ्ऱवे 1288

इरवु नऩ् पकल्–रात और अच्छे दिन में; **चीतै तऩ् कातल्**–सीताजी के प्रेम (की वेदना की स्थिति) को; **कण्टु उणर्न्तऩ**–देखकर जिन्होंने समझ लिया है; **कतिरुम् तिङ्कळुम्**–वे सूर्य और चन्द्र; **तूतु चॆऩ्ऱु**–दूत बनकर आये; **करुत्तिऩै**–सीताजी के मन की बात को; **चॆवियिऩ् उळ् उऱ**–कानों में, अन्दर; **उरैप्पऩ पोऩ्ऱु**–कहते हों, जैसे; **एतम् इल् इरु कुऴै**–दोषहीन दो कुण्डल; **तोऩ्ऱ**–शोभा दे रहे थे। १२८८

उनके उज्ज्वल कर्णकुण्डल सूर्य और चन्द्र के समान थे, जो सीताजी की विरह-कथा देख जानकर, दूतों के रूप में, श्रीराम के कानों में वह समाचार कह रहे हों। १२८८

कार्विडक् कऱैयुडैक् कणिच्चि वाऩवऩ्
वार्शडैप् पुडैयिऩोर् मदिमि लैच्चत्ताऩ्
शूऱ्शुडर्क् कुलमॆलाञ् जूडि ऩाऩॆऩ
वीरपट् टत्तॊडु तिलह मिऩ्ऩवे 1289

कार् विटम् कऱै उटै(य)–काले विष की कालिमा कण्ठ में धारण करनेवाले; **कणिच्चि वाऩवऩ्**–परशुधर देव (शिवजी) ने; **वार् चटै पुटैयिऩ्**–लम्बी जटाजूट पर; **ओर मति मिलैच्च**–चन्द्र की एक कला को धारण किया है, (मानो स्पर्द्धा में); **चूऱ् चुटर् कुलम् ॲल्लाम्**–दिव्य ज्योतिमण्डलों, सबों, को; **ताऩ् चूटिऩाऩ्**–खुद धारण कर लिया हो; **ॲऩ**–ऐसा; **वीर पट्टत्तॊटु**—वीरता-सूचक पट्टी के साथ; **तिलकम्**–तिलक के; **मिऩ्ऩ**–चमकते। १२८९

श्रीराम ने पट्टी और तिलक धारण कर ली। (यह पट्टी वीरतासूचक आभरण है।) पट्टी इतनी कांतियुत थी मानो सभी दिव्य ज्योतिमण्डल

एक साथ मिल गये हों और उस समूह को श्रीराम ने धारण कर लिया हो। नीलकंठ, परशुधर श्री शिवजी ने एक ही कलावाले चन्द्र को अपनी जटाजूट पर धारण कर लिया था। उसकी तुलना में श्रीराम की पट्टी जो स्वर्ण की बनी थी और जिसमें श्रेष्ठ रत्न आदि जड़ित थे, लाखों, करोड़ोंगुना श्रेष्ठ और शोभायमान रही। तिलक भी मिल गया, फिर क्या पूछना! । १२८९

शक्करत् तयल्वरुञ् जड्ग मामॅऩ
मिक्कॉळिर् कळुत्तणि तरळ वॅण्गॉडि
मॉय्क्करुङ् गुळलिऩाण् मुऱुव लुळ्ळुऱप्
पुक्कऩ निऱैन्दुमेऱ् पॉडिप्प पोऩ्ऱवे 1290

चक्करत्तु अयल् वरुम् चङ्कम् आम् ॲऩ–चक्रायुध के पास रहनेवाले शंख के समान; मिक्कु ऑळिर्–अधिक उज्ज्वल; कळुत्तु अणि–कण्ठ में पहने गये; वॅण् तरळम् कॉटि–श्वेत मुक्ताओं के हार; मॉय् करु कुळलिऩाळ्–घने काले केशवाली सीताजी की; मुऱुवल्–मुस्कुराहट; उळ् उऱ पुक्कऩ–जो (श्रीराम के) मन में खूब पैठ गई थी वह; निऱैन्तु–वहाँ खूब भरने के बाद; मेल् पॉटिप्प पोऩ्ऱ–ऊपर छलक आयी हो ऐसे लगे। १२९०

श्रीराम का मुख चक्र-समान है तो कण्ठ उस चक्र के पास रहनेवाले शंख के समान। उस कण्ठ को उन्होंने मुक्ताहारों से अलंकृत कर लिया था और वे उनके श्रीवक्ष पर डोल रहे थे। उनको देखकर ऐसा लगता था मानो घने केशवाली सीताजी के हास, जो श्री रामजी के हृदय में (स्मृति के रूप में) थे वे छलककर बाहर आकर दिख रहे हों। १२९०

पन्दिशॅय् वयिरङ्गळ् पॉऱियिऩ् पाडुऱ
अन्दमिल् शुडर्मणि यळलिऩ् ऱोऩ्ऱलाल्
सुन्दरत् तोळणि वलयन् दॊल्लैनाळ्
मन्दरञ् जुऱ्ऱिय वरवै माऩुमे 1291

पन्ति चॅय् वयिरङ्कळ्–पंक्तियों में जड़े हुए हीरे; पॉऱियिऩ् पाटु उऱ–सर्प की बिन्दियों के समान लगते; अन्तम् इल् चुटर् मणि–अपार कांति के माणिक्य; अळलिऩ् तोऩ्ऱलाल्–अग्नि के समान दिखाई देते, अतः; चुन्तरम् तोळ् अणि वलयम्–सुन्दर भुजाओं के बाहुवलय; तॊल्लै नाळ्–कभी पुराने दिनों में; मन्तरम् चुऱ्ऱिय–(क्षीरसागर मन्थन के अवसर पर) मन्दरपर्वत पर लपेटा हुआ; अरवै माऩुम्–(वासुकी) सर्प-सम थे। १२९१

(अब बाहुवलय की बात आती है।) बाहुवलयों में बहुमूल्य हीरे जड़े हैं। वे सर्प के चमड़े की बिन्दियों के समान लगते हैं। रत्न हैं जो अंगारों के समान ज्वलंत हैं। इसलिए वे सुन्दर बाहुवलय उस वासुकी के समान लगते हैं जिसको अमृतमंथन के दिन मंदरपर्वत पर लपेटा गया था। (श्रीराम की भुजाएँ मेरु के समान थीं।)। १२९१

कोवयिऩ् पॅरुवड मुत्तङ् गोत्तत्त, कावलशॅय् तडक्कयि ऩ्ड़ुवट् कान्दुव
मूवहै युलहिऱ्कु मुदल्व ऩामॅऩ्ऩ, एवरुम् पॅरुङ्गुऱि यिट्ट पोऩ्ऱवे 1292

कावल् चॅय्-सर्वलोक पालन करनेवाले; तट कैयिऩ् नट्टुवण्-विशाल हाथों के मध्य; कान्तुव-दीप्ति देनेवाले; मुत्तम् कोत्तत्त-मोतियों को गूँथकर बनायी गई; कोवै इऩ् पॅरु वटम्-सुगठित मनोरम बड़ी-बड़ी लड़ियाँ; मू वकै उलकिऱ्कुम्-तीनों वर्ग के लोकों के; मुतल्वऩ् आम् ॲत्त-आदि नायक हैं, यह; एवरुम्-सब से; पॅरु कुऱि इट्ट पोऩ्ऱ-उत्कृष्ट प्रतीक लगा रखा हो, ऐसी लगीं। १२६२

हाथों में (कुहनियों के ऊपर) मध्य स्थान पर मोती की लड़ियाँ श्रीराम ने पहन ली थीं। वे हाथ लोकरक्षक हाथ हैं और मुक्तालड़ियों का यह आभरण उस बात का सूचक चिह्न है। वह त्रिलोकाधिपतित्व का सर्वसम्मत निशान-सा था। १२९२

माण्डपॉऩ्   मणियणि   वलयम्   वन्दॅदिर्
वेण्डिऩ्ऱक्   कुदवुवाऩ्   वेण्डिक्   कऱ्पहम्
ईण्डुतऩ्   कॉम्बिडै   यीऩ्ऱदा   मॅऩ्ऩक्
काण्डहु   तडक्कयिऱ्   कडक   मिऩ्ऩवे 1293

कऱ्पकम्-कल्पतरु ने; ॲतिर् वन्तु वेण्टित्तर्क्कु-सामने आकर याचना करनेवालों को; उतवुवाऩ् वेण्टि-दान देने के लिए; ईण्टु तऩ् कॉम्पिटै-यहाँ अपनी शाखा पर; माण्ट पॉऩ् मणि अणि वलयम्-चोखे स्वर्ण और रत्नों से निर्मित कंकण; ईऩ्ऱतु आम ॲत्त-पैदा करके रख लिया हो, जैसे; काण् तकु-दर्शनीय; तट कैयिल्-विशाल हाथों में; कटकम् मिऩ्ऩ-कंकण चमकते हैं। १२६३

कलाई के ऊपर स्वर्ण-रत्न-कंकण थे। हाथों में कंकण देखकर ऐसा लगता था मानो कल्पतरु ने अपने सामने आनेवाले याचकों की प्रार्थना पूरी करने के लिए अपनी एक शाखा पर ऐसे कंकणों को उत्पन्न कर रख लिया हो, ऐसा लगता था। १२९३

तेऩुडै मलर्मह डिळैक्कु मार्बिऩिल्, ताऩिडै विळङ्गिय तहैयि ऩारन्दाऩ्
मीऩॊडु शुडर्विड विळङ्गु मेहत्तु, वाऩिडु विल्लॅऩ वयङ्गिक् काट्टवे 1294

तेऩ् उटै मलर् मकळ्-मधुसहित कमलपुष्प की वासिनी श्रीलक्ष्मीदेवी; तिळैक्कुम् मार्पिऩिल्-जहाँ आनन्द करती है उस श्रीवक्ष में; इटै विळङ्किय-(मोतियों के हारों के) मध्य ज्वलन्त; तकै इऩ् आरम्-श्रेष्ठ नवरत्नहार; मीऩ् चुटर् विट-नक्षत्रज्वलित; विळङ्कुम् मेकत्तु-विद्यमान मेघों में; वाऩ् इटु विल् ॲऩ-(उद्भूत) इन्द्र-धनुष के समान; वयङ्कि काट्ट-शोभासहित दिखता। १२६४

श्रीराम के वक्ष पर, जो कमलाजी का आनन्दमय निवासस्थान है, मुक्ताहारों के मध्य एक नवरत्न हार था। वह मनोरम हार उस मेघ के बीच, जिसमें नक्षत्र चमक रहे हों, उत्पन्न इन्द्रधनुष के समान था। १२९४

नणुहवु मरियदा नडक्कु ञानत्तर्
उणर्वॅन्न वॉळिर्तरु मुत्त रीयन्दान्
कणिवरुङ् गरुणयान् कळुत्तिऱ् चात्तिय
मणियुमिळ् कदिरॅन्न मार्बिऱ् ऱोन्ऱ्वे 1295

नणुकवुन् अरियतु आक–दुर्गम; नटक्कुम्–(ज्ञान-मार्ग में) चलनेवाले; ञानत्तर्–ज्ञानी के; उणर्वु ॲन्न–पवित्र ज्ञान के समान; ऑळिर् तरुम्–ज्वलनशील; उत्तरीयम्–उत्तरीय; कणिवु अरु करुणैयान्–अगण्य करुणानिधि श्रीराम के; कळुत्तिल् चात्तिय मणि–गले में पहने हुए मुक्ताहारों से; उमिळ् कतिर् ॲन्न–निःसृत प्रकाश के समान; मार्पिल् तोन्ऱ्–वक्ष पर शोभित हैं। १२६५

उनका उत्तरीय अगम ज्ञानमार्गी ज्ञानी के ज्ञान के समान पवित्र था। वह उन मुक्ताहारों से, जिनको अपार करुणा के स्वामी श्रीराम ने पहन रखे थे, निःसृत ज्योति के समान लगा। १२९५

मेवरुञ् जुडरॉळि विळङ्गु मार्बिन्नूल्
एवरुन् दॅरिन्दिनि दुणर्मि नीण्डॅन्नत्
तेवरु मुनिवरुन् दॅरिक्क लामुदल्
मूवरुन् दानॅन्न मुडित्त दॊत्तते 1296

मेव अरु–पास जाने में अशक्य; चुटर् ऑळि विळङ्कुम्–(सूर्य, चन्द्र, अग्नि—तीन) ज्योति-पुंजों के समान दीप्तियुत; मार्पिन् नूल्–श्रीवक्ष का त्रिसूत्री यज्ञोपवीत; तेवरुम् मुनिवरुम्–देवों और मुनियों से भी; तॅरिक्क अला–जानने के लिए दुर्लभ; मुतल् मूवरुम्–आदिदेव, त्रिमूर्ति; तान् ॲन्न–मैं हूँ, यह; ईण्टु–यहाँ; एवरुम्–सब कोई; तॅरिन्तु इनितु उणर्मिन्–जानकर आनन्द का अनुभव कर लो; ॲन्न–ऐसा कहकर; मुटित्ततु–एक साथ बाँधा गया हो; ऑत्ततु–ऐसा लगा। १२६६

श्रीरामचन्द्र के श्रीवक्ष में त्रिसूत्री यज्ञोपवीत कैसी शोभा दे रहा था? वह सूर्य, चन्द्र और अग्नि तीनों की एकत्रित ज्योति के समान था। "देव और मुनिगण भी जिनको जान नहीं पाये हैं वे तीनों आदि त्रिमूर्ति मैं ही हूँ, सब समझकर उसका लाभ उठाइये।" श्रीराम की ओर से यह सूचित करते हुए तीनों की एक गाँठ बाँधी गई हो ऐसा वह लगता था। १२९६

शुऱ्ऱुनी डमनियच् चोदि पॊङ्गमेल्, ऑऱ्ऱैमा मणियुमि ळुदर बन्दनम्
मऱ्ऱुमो रण्डमु मयनुम् वन्दॅळप्, पॊऱ्ऱडन् दामरै पूत्त दॊत्तदे 1297

चुऱ्ऱुम्–चारों ओर; नीळ् तमनियम् चोति पॊङ्क–श्रेष्ठ स्वर्ण की कांति के उभर आते; मेल् ऑऱ्ऱै मा मणि–सामने मध्य में जड़ित एक बड़े रत्न से; उमिळ्–निकला प्रकाशयुक्त; उतर पन्तनम्–उदर बन्धन; मऱ्ऱुम् ओर् अण्टमुम्–दूसरा एक अण्डगोल और; अयनुम्–उसके सर्जक ब्रह्मा को; वन्तु ॲळ–उत्पन्न करने के लिए; पॊन् तट तामरै–स्वर्ण के बड़े कमल को; पूत्ततु–(श्रीराम की नाभी ने) खिलाया था; ऑत्ततु–जैसा था। १२६७

(उदरबन्धन पेट को लपेटकर पहनाये जानेवाला एक आभरण है। वह स्वर्ण से निर्मित किया जाता है और उसके मध्य सामने एक बड़ा नीला रत्न रखा जाता है।) उदरबंधन के स्वर्ण की कांति खूब छिटकती थी। नीला रत्न ज्वलंत था। वह एक नये कमलपुष्प के समान था जिस पर एक नये ब्रह्मा, जो नया अण्डगोल सृष्ट करेंगे, उदित होंगे। १२९७

मण्णुरु शुटर्मणि वयङ्कित् तोऩ्ऱिय
कण्णुरु करुङ्गड लदऩैक् कैवळर्
तण्णिऱप् पाऱ्कड ऱळीइय दामॅऩ
वॅण्णिऱप् पट्टॊळि विळङ्गच् चात्तिये 1298

मण् उरु–जल धौत; चुटर् मणि–उज्ज्वल रत्नों के साथ; वयङ्कि तोऩ्ऱिय–शोभायमान दिखनेवाले; कण् उरु–दर्शनीय; करु कटल् अतऩै–नीले सागर को; कै वळर्–अधिक लहरों से युक्त; तण्णिऱम्–शीतल (मनोरम) रंगवाले; पाल् कटल् तऴीइयतु–क्षीरसागर ने लपेट लिया; आम् ॲऩ–जैसे; वॅळ् निऱम् पट्टु–श्वेत कौशेय वस्त्र; ऒळि विळङ्क–शोभा बढ़ाते हुए; चात्ति–पहनकर। १२९८

जगन्नाथ ने कौशेय वस्त्र धारण कर लिया। नीले सागर सम उनके शरीर पर यह श्वेत कौशेय वस्त्र मनोरम तरंगों वाले क्षीरसागर के समान लगा जो जलधौत रत्नों के आगार, विशाल नीले सागर को लपेटे रहता है। १२९८

शलम्वरु तरळमुन् दयङ्गु नीलमुम्
अलम्वरु निऴ्लुमि ऴम्बॊऩ् कच्चिऩाल्
कुलम्वरु कऩहवाऩ् कुऩ्ऱै निऩ्ऱुडऩ्
वलम्वरु कदिरॅऩ वाळुम् वीक्किये 1299

तयङ्कुम् नीलमुम्–कांत नीलमणियाँ; चलम वरु तरळमुम्–उसके विपरीत (रंगवाले) मोती; अलम् वरु निऴल् उमिऴ्–जिसमें रहकर परस्पर विपरीत प्रकाश छिटकाते हैं; अम् पॊऩ् कच्चिऩाळ्–उस सुन्दर स्वर्णिम कमरबन्द से; कुलम् वरु–गौरवयुक्त; कऩकम् वाऩ् कुऩ्ऱै–स्वर्णमय, बड़े (मेरु) पर्वत की; वलम् वरु कतिर्–परिक्रमा करनेवाले सूर्य; उटऩ् निऩ्ऱु ॲऩ–उसी के साथ खड़े हो गये हों, ऐसा; वाळुम् वीक्कि–तलवार बाँधकर। १२९९

उदरबंधन के नीचे कमरबंद लगा लिया गया और उसमें तलवार बाँध दी गई। कमरबंद में नीले रत्न और उनके विपरीत प्रकाश को देनेवाले मोती सजाये गये थे। वह कमरबन्द भी सोने का था। उनकी तलवार सूर्य के समान लगी जो स्वर्णमय मेरु की परिक्रमा करना रोककर एक स्थान पर मेरुपर्वत से लगकर रुक गये हों। श्रीराम की देह मेरु से उपमित है। यद्यपि वह स्वतः स्वर्णिम नहीं थी, पर सोने के आभरणों के कारण वह मेरु के समान मानी गई। १२९९

मुहैविरि शुडरॉळि मुत्तिऩ् पत्तियाल्
तॉहैविरि पट्टिहैच् चुडरुज् जुऱ्ऱिडत्
तहैयुडै वाळॅऩ्ऩुऩ् दयङ्गु वॅय्यवऩ्
नहैयिळ वॅयिलॅऩ्ऩत् तॉङ्ग नाऱ्ऱिये 1300

मुकै विरि–(कुंद) कलियों की-सी छटावाले; **चुटर् ऑळि**–कांत; **मुत्तिऩ् पत्तियाल्**–मोती की पंक्तियों से; **तॉकै विरि**–जिसपर प्रकाश अधिक है; **पट्टिकै चुटरुम्**–कमरपट्टिका के प्रकाश से भी; **चुऱ्ऱिट**–आवृत्त; **तयङ्कु**–विद्यमान; **तकै**–सुन्दरतायुक्त; **उटैवाळ् ॲऩ्ऩुम्**–कटाररूपी; **वॅय्यवऩ्**–सूर्य की; **नकै इळ वॅयिल् ॲऩ्ऩ**–भासित बालधूप-सा; **तॉङ्कल् नाऱ्ऱि**–लड़ियाँ लटकाकर। १३००

उसके बाद कमर में कमरपट्टिका पहनी गई उसमें कटार बाँधी गई। उस पट्टिका में कुन्दकलियों की आभावाले मोतियों की लड़ियाँ पाई गईं। कटार सूर्य के समान थी और उसके लाल धूप की झड़ियों के समान माणिक की लड़ियाँ कमरपट्टिका से लटकती रहीं। १३००

काशॉडु कण्णिळल् कऴलक् कैवित्तै
एशलिल् किम्पुरि यॅयिऱु वॅण्णिला
वीशलिऩ् महरवाय् विळङ्गु वाण्मुहम्
आशयै यॉळिहळा लळन्दु काट्टवे 1301

कै वित्तै–हस्तकौशल की; **एचल् इल्**–जिसमें कमी नहीं; **किम्पुरि**–वह "किंपुरी" (ऊरु के आभरण) के; **काचॉटु कण् निळल्**–रत्नजड़ित आँखों की कांति के; **कऴल्**–बिखरते; **ॲयिऱु**–दाँत; **वॅळ् निला वीचलिऩ्**–श्वेत चाँदनी-सा प्रकाश फैलाते हैं, इसलिए; **मकर वाय् विळङ्कुम्**–मकरमुख-सा बना हुआ; **वाळ् मुकम्**–उज्ज्वल अग्रभाग; **ऑळिकळाल्**–अपनी विविध कांति की किरणों से; **आचैयै अळन्तु काट्ट**–दिशाओं को माप लेता है। १३०१

(इसमें किंपुरी नामक ऊरु के आभरण का वर्णन है। उसका मुख या अग्रभाग मकर के मुख के समान बनाया जाता है। मकर का मुख खुला रहता है। उसकी आँखों और दाँतों के स्थान पर रत्न, मोती आदि जड़े जाते हैं।)।

प्रभु श्रीराम ने "किंपुरी" पहनी। उसकी रचना बहुत सूक्ष्म और कुशल और विस्मयकारी कारीगरी के साथ हुई थी। उसकी रत्नजड़ित आँखें कान्ति थीं। दाँत चाँदनी-सा प्रकाश उगल रहे थे। मकर के मुख से जो प्रभा छूट रही थी वह दिशा-दिशा में इतनी दूर गई मानो दिशाओं को ही नाप रही हो। १३०१

इऩ्ऩिप्परऩ् दुलहित्तै यळप्प दॅङ्गॉऩ्ऩत्
तऩ्ऩित्तऩ्ऩि तडुप्पऩ्ऩ पोलुज् जाल्बिऩ्ऩ

नुऩिप्परु नुण्विऩैच् चिलम्बु नोऩ्कऴल्
पऩिप्परुन् दामरैप् पादम् बऱ्ऱवे 1302

परन्तु–विशाल बनकर; उलकिऩै अळप्पतु–लोकों को मापना; इऩि ऍङ्कु–अब कहाँ; ऍऩ–कहकर; तऩि तऩि—अलग-अलग; तटुप्पऩ पोलुम्–रोकते से; चाल्पिऩ–प्रकृतिवाले; नुऩिप्पु अरु–सूक्ष्म रूप से देखने पर भी जानने में कठिन; नुण् विऩै–सूक्ष्म कारीगरी से युक्त; चिलम्पु–नूपुर और; नोऩ् कऴल्–वीरतासूचक पायल; पऩिप्पु अरु–न मुरझानेवाले; तामरै पातम् पऱ्ऱ–कमलचरणों को घेरते हैं। १३०२

नूपुर और पायलों का श्रृंगार देखिये। "अब फिर से दूर-दूर तक फैलकर लोकों को नापना कहाँ?" यह कहते हुए नूपुर उनके पैरों को अलग-अलग रोक रहे हों ऐसा वे उनके पैरों को लपेटे हुए थे। पायलों की भी वही बात थी। वे चरण-कमल कभी मुरझानेवाले नहीं थे। (नूपुर और पायल को अलग-अलग आभरण भी माना जा सकता है या चिलम्पुम् का अर्थ "झनझनानेवाले" लेकर "झनझनानेवाली पायल" भी कहा जा सकता है।)। १३०२

इऩ्ऩऩ पॉलिदर विमैय वर्क्कॅलाम्
तऩ्ऩये यॉप्पदोर् कोलन् दाङ्गिऩाऩ्
पऩ्ऩह मणिविळक् कऴलुम् बायलुळ्
अऩ्ऩवर् तवत्तिऩा लऩन्द ऩीङ्गिऩाऩ् 1303

इमैयवर्क्कु ॲलाम्–सभी देवों के लिए; अऩ्ऩवर् तवत्तिऩाळ्–उनकी तपस्या के फलस्वरूप; मणि विळक्कु अऴलुम्—रत्न-दीपों की ज्योति देनेवाले; पऩ्ऩकम् पायलुळ्–पन्नगशय्या में; अऩन्तल् नीङ्किऩाऩ्–निद्रा जिन्होंने त्याग दी, वे; इऩ्ऩऩम् पॉलितर–इस तरह शोभायमान रहे; तऩ्ऩैये ऑप्पतु–अपने समान आप ही होनेवाले; ओर् कोलम् ताङ्किऩाऩ्–एक अनुपम रूप (बनाव) धर लिया। १३०३

श्रीराम श्रीविष्णु हैं। वे उस पन्नग को, जिसके रत्न दीपक-सा प्रकाश दे रहे थे, अपनी शय्या बनाकर निद्रा करते हैं। वे, वह शय्या छोड़कर देवों के हितार्थ, और उनकी तपस्या के फलस्वरूप अयोध्या में आकर अवतरित हुए थे। वे अब इस नये श्रृंगार में स्वोपम एक रूप में शोभे। १३०३

मुप्परम् बॊरुळुक्कु मुदलै मूलत्तै, इप्परन् दुडैत्तव रॅय्दु मिऩ्बत्तै
अप्पऩै यप्पिऩु ळमुदैत् तऩ्ऩये, यॊप्पऩै यॊप्पऩै युरैक्क वॊण्णुमो 1304

मुप्परम् पॉरुळुक्कु–आदि त्रिमूर्ति के; मुतलै–आदि के; मूलत्तै–सृष्टि के आधार के; इ परम् तुटैत्तवर्–यह भवभार जिन्होंने दूर कर लिया है उन ज्ञानियों के; ऍय्तुम्–प्राप्य; इऩ्पत्तै–सुख रूप के; अप्पऩै–जगत्पिता के; अप्पिऩुळ् अमुतै–पय (क्षीरसागर) से उत्पन्न सुधा समान; तऩ्ऩैये ऑप्पऩै–अपनी समता आप

ही करनेवाले श्रीराम के; ऑप्पनै–अलंकार की महिमा को; उरैक्क ऑण्णुमो–वर्णन कर सकते हैं क्या । १३०४

उनके अलंकार का कैसे वर्णन किया जायगा ? वे तीनों आदि देवों, ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र के भी आदि भगवान, जगत के मूल, भवभार-विमुक्त ज्ञानी के प्राप्य सुखस्वरूप, जगतपिता, क्षीरसागर से उत्पन्न अमृत से तुल्य, अपनी उपमा आप ही करनेवाले भगवान हैं। उन्होंने जो शृंगार कर लिया वह कैसे हम जैसों से वर्णित हो सकता है ? । १३०४

पल्पदि ऩायिरस् पशुवुम् पैम्बॊऩ्ऩुम्
ऍल्लयि ऩिलऩॊडु मणिहळ् यावयुम्
नल्लवर्क् कुदविऩा ऩविलु नाऩ्मऱैच्
चॅल्वर्हळ् वाऴ्त्तुऱत् तेर्वन् देऱिऩाऩ् 1305

पल् पतिऩायिरस्–अनेक दस सहस्र; पचुवुम्–गायों को; पैम् पॊऩ्ऩुम्–उत्तम स्वर्ण को; ऍल्लै इल् निलऩॊटु–असाप भूमि के साथ; मणिकळ् यावैयुम्–नवरत्नों को; नल्लवर्क्कु–योग्य अच्छे व्यक्तियों को; उतविऩाऩ्–दान में देकर; नविलुम्–प्रकीर्तित; नाल् मऱै–चारों वेदों के; चॅल्वर्कळ्–धनी ब्राह्मणों के; वाऴ्त्तुऱ–वेदमन्त्रों के साथ मंगलाशासन प्राप्तकर; वन्तु–आकर; तेर् एऱिऩाऩ्–रथ पर चढ़े । १३०५

अलंकृत होकर वे रथ पर आरूढ़ हुए। रथारोहण के पहले उन्होंने अनेक दस सहस्र गायों, स्वर्ण, नवरत्न और भूमि का योग्य अच्छे व्यक्तियों को दान दिया। प्रकीर्तित चारों वेदों के धनी ब्राह्मणों का आशीर्वाद लेकर वे आकर रथ पर सवार हुए। १३०५

पॊऱ्ऱिर ळच्चदु वॆळ्ळिच् चिल्लिपुक्, कुऱ्ऱदु वयिरत्ति ऩुऱ्ऱ तट्टदु
शुऱ्ऱुऱु नवमणि शुडरुन् दोऱ्ऱत्त, दॊऱ्ऱया ऴिक्कदिर्त् तेरॊ डॊत्तदे 1306

पॊऩ् तिरळ् अच्चतु–स्वर्णनिर्मित और स्थूल धुरवाला; वॆळ्ळि चिल्लि–चाँदी के चक्र; पुक्कु उऱ्ऱतु–सहित जो था; वयिर्त्तिऩ् उऱ्ऱ–हीरों से निर्मित; तट्टतु–पीठ का; चुऱ्ऱु उऱुम्–चारों ओर जड़ित; नममणि चुटरुम्–नवरत्नों की कांति से ज्योतित; तोऱ्ऱत्ततु–रूपवाला; ऑऱ्ऱै आऴि–एक चक्र के; कतिर्–सूर्य के; तेरॊटु–रथ से; ऑत्ततु–तुल्य था । १३०६

उस रथ का धुर स्वर्ण का वना था और सुदृढ़ और स्थूल था। चक्र चाँदी के थे। पीठ पर हीरे जड़े थे। चारों ओर नवरत्न खचित हुए थे। वह सूर्य के एकचक्र-रथ के समान था। १३०६

नूल्वरुन् दहयऩ नुऩिक्कु नोऩ्मय, शाल्पॆरुज् जॆव्विय तरुम मादिय
नालयु मऩयऩ पुरवि नाऩ्गॊरु, पालमै पुणर्न्दऩ पक्कम् बूण्डवे 1307

नूल् वरुम् तकैयत्न–अश्वशास्त्र में उक्त प्रकार के लक्षणोंवाले; नुऩिक्कुम् नोऩ्मैय–सारथी का इंगित समझनेवाले; चाल् पॅरु चॅव्विय–पूर्ण सुन्दर; तरुमम् आतिय नालैयुम् अत्तैय–धर्म आदि चारों पुरुषार्थों के समान रहनेवाले; नाऩ्कु ऑरु पालमै पुणर्न्तत्न–चारों एकसम रहनेवाले; पुरवि–अश्व; पक्कम् पूण्ट–उस रथ में जुते हुए थे। १३०७

उसके अश्व कैसे थे ? वे अश्वशास्त्रों में कथित लक्षणों से युक्त थे। सारथी का इंगित जानने की शक्ति रखते थे। देखने में बड़े ही सुडौल और सुघड़ थे। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के चार पुरुषार्थों के समान लगते थे। चारों एक ही सम दर्शनीय, शक्ति और स्वभाव के थे। ऐसे अश्व उस रथ के साथ जुते हुए थे। १३०७

अऩ्ऩैयदोर् तेरिऩि लरुण ऩिऩ्ऱॅऩ्ऩप्
पऩिवरु मलर्क्कणप् परदऩ् कोल् कॉळक्
कुऩिशिलैत् तम्बिय रिरुव रुङ्गुऴैन्
दिऩियपॉऩ् कवरिहा लियक्क वेहिऩाऩ् 1308

अत्तैयतु ओर् तेरित्तिल्–उस तरह के एक रथ पर; अरुणऩ् निऩ्ऱु ऑत्त–अरुण खड़ा हो, ऐसा; पत्ति वरु मलर् कण्–(आनन्द के) अश्रु सहित विकसित आँखों वाले; अ परतऩ्–उन भरत ने; कॉल् कॉळ–वेत्र लिये (सारथ्य किया); कुत्ति चिलै–झुके धनुष लिये हुए; तम्पियर् इरुवरुम्–दोनों (लक्ष्मण और शत्रुघ्न) भाइयों ने; कुऴैन्तु–विह्वल होकर; इत्तिय पॉऩ् कवरि–सुखद स्वर्ण-चामर लेकर; काल् इयक्क–हवा की, ऐसे; एकित्ताऩ्–(श्रीराम मनोरम रीति से) गये। १३०८

ऐसे रथ पर भरत जी, सूर्य के रथ में अरुण के समान, हाथ में वेत्र लेकर सारथी बने थे। उनकी आँखें अश्रु के साथ आनन्द से उत्फुल्ल थीं। अन्य दोनों भाई, लक्ष्मण और शत्रुघ्न, एक हाथ में झुके हुए धनुष को लिए हुए, दूसरे हाथ से स्वर्णदण्ड वाले चामर से हवा कर रहे थे। १३०८

अमैवरु मेऩिया ऩऴहि ऩायदो, कमैयुरु मऩत्तिऩाऱ् करुद वन्ददो
शमैवुऱ वऱिन्दिलन् दक्क दाहुह, इमैयव रायिऩा रिङ्गु ळारुमे 1309

अमैवु अरु मेऩियाऩ्–अप्राकृत शरीरी श्रीराम के; अऴकिऩ्–रूपलावण्य से; आयतो–(वह स्थिति) बनी; कमै उरु मत्तत्तित्ताल्–धृतिसहित मन से; करुत–ध्यान करने से; वन्ततो–वह बनी; चमैवु उऱ–निश्चित रूप से; अऱिन्तिलम्–नहीं जाना; तक्कतु आकुक–जो सही हो, वही हो; इङ्कु उळारुम्–यहाँ रहनेवाले भी (भूलोकवासी भी); इमैयवर् आयिऩार–देव (पलकहीन) हो गये। १३०९

अप्राकृत शरीरी श्रीराम की अपूर्व सुन्दरता के दर्शन से, या उस सुन्दरता के, क्षान्ति के साथ, ध्यान या चिन्तन में रत रहने से लोग बिना पलकें मारे खड़े रह गये। वे देवों के समान हो गये। पर उन दो में सही कारण कौन-सा था ? हम नहीं जान पाये। जो सही हो वही हो। (देवों की पलकें नहीं गिरतीं।)। १३०९

वरम्बऱु मुलहिऩै वलिऩ्दु माय्विऩ्ऱित्
तिरम्बयि लरक्कर्दम् वरुक्कन् देय्विऩि
निरम्बिय दॆऩक्कॊडु निऱैन्द तेवर्हळ्
अरम्बयर् कुऴात्तॊडु माडऩ् मेयिऩार् 1310

अरम्पैयर् कुऴात्तॊटु–देवांगनाओं के समूहों के साथ; निऱैन्त तेवर्कळ्–भीड़ लगाकर जो आये वे देव; वरम्पु अऱुम्–असीम; उलकिऩै वलिन्तु–लोकों को त्रस्त कर; माय्वु इऩ्ऱि–विना नाश के; तिरम् पयिल्–जो रहते हैं, उन; अरक्कर् तम् वरुक्कम्–राक्षसों के वर्ग का; तेय्वु–नाश; इऩि निरम्पियतु–अब निश्चित हो गया; ऎऩ कॊटु–यह मानकर; आटल् मेयिऩार्–आनन्दनृत्य करने लगे। १३१०

देवता लोग सुरस्त्रियों के साथ आकाश में आकर एकत्र हो गये। उनको विश्वास हो गया था कि अब राक्षसों का, जो विशाल लोकों को हानि पहुँचाते हुए सकुशल रह रहे हैं, उनके वर्गों के साथ नाश निश्चित है। इसलिए वे नाचने लग गये। १३१०

शॊरिन्दऩर् पूमऴै शुण्णन् दूविऩर्
विरिन्दॊळिर् काशुपॊऩ् ऱूशु वीशिऩर्
परिन्दऩ रळहिऩैप् परुहिऩार् कॊलाम्
तॆरिन्दिलन् दिरुनहर् महळिर् चॆय्हये 1311

तिरु नकर् मकळिर्–उस श्रीमिथिला नगरी की अंगनाओं ने; पू मऴै–पुष्पवर्षा; चॊरिन्तऩर्–बरसाई; चुण्णम् तूविऩर्–सुगन्धचूर्ण छिड़का; विरिन्तु ऒळिर्–विकसित दीप्ति के; काचु–रत्नों; पॊऩ्–स्वर्ण; तूचु–और वस्त्रों को; वीचिऩर्–बिखेरा; चॆय्कै तॆरिन्तिलम्–कृत्य (का कारण) नहीं समझते (हम); अऴकिऩै–श्रीराम की सुन्दरता को; परिन्तऩर्–चाव के साथ; परुकिऩार् आम् कॊल्–पी लिया शायद। १३११

श्रीरामचन्द्र को देखकर उस श्रीमंत नगर की स्त्रियों ने पुष्प, सुगंध-चूर्ण, कान्तियुत रत्न, स्वर्ण और वस्त्रों को बरसाया। वे क्यों ऐसा करती हैं? हम प्रेरणा का मूल नहीं जानते। उन्होंने शायद श्रीराम की दिव्य सुन्दरता का आँखों द्वारा पान किया था। १३११

वळ्ळलै नोक्किय महळिर् मेऩियिऩ्
एळ्ळरुम् पूणॆला मिरिय निऱ्किऩ्ऱार्
उळ्ळऩ यावयु मुदविप् पूण्डवुम्
कॊळ्ळयिर् कॊळ्हॆऩक् कॊडुक्किऩ् ऱारिऩे 1312

उळ्ळऩ यावैयुम् उतवि–अपने पास रहे सब को दान में देकर; पूण्टवुम्–जो पहने थे उन आभरणों को भी; कॊळ्ळैयिऩ् कॊळ्क–लुटा लें; ऎऩ–ऐसा कहकर; कॊटुक्किऩ्ऱारिऩ्–देनेवालों के समान; वळ्ळलै नोक्किय मकळिर्–श्रीराम की दर्शक स्त्रियाँ; मेऩियिऩ्–अपने शरीर के; ऎळ्ळ अरु पूण् ऎल्लाम्–अनिंद्य आभरण,

सब को; इरिय–खिसककर गिरने देते हुए; निऱ्किन्ऱार्–(अचल) खड़ी रहती हैं। १३१२

उन स्त्रियों के पास (शरीर के बाहर) जितने थे उन सबको दे दिया। अब वे मानो अपने आभरणों को लुटा लेने दे रही हों ऐसा लगती हैं क्योंकि प्रेमातुरता से शरीर क्षीण हो गये और आभरण स्वत: सरक गये। अब वे उन उदार दानियों के समान थीं जो बाह्य वस्तुओं को दान कर देने के बाद अपने पहने हुए आभरणों को भी "लूट लो" कहकर लुटा रही हों। १३१२

ॲञ्जलि लुलहत् तळ्ळ वॅऱिपडै यरश वॅळ्ळम्
कुञ्जरक् कुळात्तिऱ् चुऱ्ऱक् कॊऱ्ऱव ऩिरुन्द कूडम्
वॅञ्जिऩत् तऩुव लाऩु मेरुमाल् वरैयिऱ् चेरुम्
शॆञ्जुडर्क् कडवु ळॆऩ्ऩत् तेरिऩ्मेऱ् चॆऩ्ऱु शेर्न्दाऩ् 1313

ॲञ्चलिल्–अक्षय; उलकत्तु उळ्ळ--भूलोक में रहनेवाले; ॲऱि पटै–अस्त्र-शस्त्रधारी; अरच वॅळ्ळम्–राजाओं की भीड़ के; कुञ्चरम् कुळात्तिऩ्–कुंजर झुण्ड के समान; चुऱ्ऱ–अपने को घेरे रहते; कॊऱ्ऱवऩ् इरुन्त–(जहाँ) चक्रवर्ती (दशरथ) रहे उस; कूटम्–मण्डप को; वॅम् चिऩम्–भयंकर क्रोध (कर सकनेवाले); तऩु वल्लाऩुम्–धनुर्द्धर श्रीराम भी; मेरु माल् वरैयिल् चेरुम्–मेरु नाम के बड़े पर्वत पर पहुँचनेवाले; चॆम् चुटर् कटवुळ् ॲऩ्ऩ–लाल किरणोंवाले (सूर्य) देव के समान; तेरिऩ् मेल् चॆऩ्ऱु–रथ पर जाकर; चेर्न्ताऩ्–पहुँचे। १३१३

श्रीराम चलते हुए महामेरु पर जानेवाले सूर्य के समान उस विवाह-मंडप में पहुँच गये, जिसमें राजा दशरथ विराजमान थे और उनको घेरकर गजदलों के समान शस्त्रधारी राजा लोग आसीन थे। वे राजा अत्यन्त विशाल भूमि के विभिन्न राज्यों के शासक थे। श्रीराम शत्रुओं पर भयंकर क्रोध कर सकते थे और वे धनुर्विद्या समर्थ थे। यानी वे पराक्रमी और परंतप थे। १३१३

इरदमाण् डिऴिन्द पिऩ्ऩ रिरुमरुङ् गिरण्डु कैयुम्
बरदऩु मिळैय कोवुम् परिन्दऩ रेन्दप् पैन्दार्
वरदऩु मॆय्दि मैतीर् मादवर्त् तॊऴुदु नीदि
विरदमॆय्त् तादै पादम् वणङ्गिमा डिरुन्द वेलै 1314

पैन्तार् वरतऩुम्–नवीन पुष्पमालाधारी वरद (श्रीराम) भी; आण्टु–वहाँ; इरतम् इऴिन्त पिऩ्ऩर्–रथ से उतरने के बाद; इरु मरुङ्कु–दोनों पार्श्व में; इरण्टु कैयुम्–दोनों हाथों को; परतऩुम् इळैय कोवुम्–भरत और लघुराज लक्ष्मण के; परिन्तऩर् एन्त–स्नेह के साथ सहारा देते; ॲय्ति–अन्दर जाकर; मै तीर्–निर्मल; मातवर् तॊऴुतु–महर्षियों (वसिष्ठ, कौशिक, शतानन्द आदि) का नमस्कार करके; नीति विरतम्–नीतिपरायण; मॆय्तातै–सत्यसंध पिता के; पातम् वणङ्कि–चरणों पर नत होकर; माटु इरुन्त वेलै–पास विराजे, तब। १३१४

नूतन पुष्पों की बनी माला के धारक वरद प्रभु श्रीराम मण्डप के सामने रथ से उतरे। दोनो भाई, भरत और लघुराज लक्ष्मण, पार्श्वों में हाथों का सहारा देते आये। श्रीराम ने मंडप के अन्दर आकर, अकलंक महर्षि वसिष्ठ, कौशिक, और शतानन्द को नमस्कार किया। पश्चात नीतिव्रती, सत्यसंध अपने पिता दशरथजी के चरणों की वन्दना करके, श्रीराम उनके पास विराजे। १३१४

शिलैयुडैक् कयल्वाट् टिङ्ग ळेन्दियोर् शेम्बोऱ् कोम्बर्
मुलैयिडै मुहिऴ्प्पत् तेरिऩ् मीमिशै मुळैत्त दऩ्ऩाळ्
अलैहडऱ् पिऱन्दु पिऩ्ऩै यवऩियिऱ् ऱोऩ्ऱि मीळ
मलैयिडै युदिक्किऩ् ऱाळ्पोऩ् मण्डब मदऩिल् वन्दाळ् 1315

ओर् चेम् पोऩ् कोम्पर्–एक लाल, स्वर्णवर्ण पुष्पलता; चिलै उटै(य) कयल्–दो धनुओं को अपने ऊपर लेकर, दो कयल मछलियाँ; वाळ् तिङ्कळ्–उज्ज्वल पूर्ण चन्द्र को; एन्ति–उठाते हुए; मुलै इटै मुकिऴ्प्प–चमेली की कलियों को मध्य में पैदा कर लेकर; तेरिऩ् मी मिचै–रथ पर; मुळैत्ततु–उत्पन्न हो आई; अऩ्ऩाळ्–ऐसा रूप वाली देवी; अलै कटल् पिऱन्तु–तरंगसहित क्षीरसागर में जन्म लेकर; पिऩ्ऩै अवऩियिल् तोऩ्ऱि–बाद धरती पर अवतार लेकर; मीळ–फिर से; मलै इटै–पर्वतमध्य; उतिक्किऩ्ऱाळ्–प्रकट होती हों; पोल–जैसे; मण्टपम् अतऩिल् वन्ताळ्–विवाह-मण्डप में आईं। १३१५

तब सीताजी भी आईं। कवि की कल्पना देखिए। एक पुष्पलता एक उज्ज्वल चन्द्र को, जिसमें दो कयल मछलियाँ और उन पर दो धनुष थे, उठाते हुए रथ पर बैठे आती हो, और उसमें चमेली की कलियाँ लगी हों —ऐसा वे आईं। और भी पहले जो सागरोद्भवा थीं वह अवनिजा हुईं। अब वह फिर से अद्रिजा बन आयी हो, ऐसे आईं। १३१५

नऩ्ऱिवा ऩवरॆला मिरुन्द नम्बियैत्
तुऩ्ऱिरुङ् गरुङ्गड ऱुवैप्पत् तोऩ्ऱिय
मऩ्ऱलङ् गोदयाण् मालै शूट्टिय
अऩ्ऱिनु मिऩ्ऱुडैत् तऴ्हॆऩ् ऱाररो 1316

नऩ्ऱि वाऩवर् ऎल्लाम्–कृतज्ञ देवगण सब; इरुन्त नम्पियै–वहाँ विराज रहे नायक श्रीराम को; तुऩ्ऱु इरु करु कटल्–समृद्ध बड़े क्षीरसागर को; तुवैप्प–मथने से; तोऩ्ऱिय–वहाँ उदित; मऩ्ऱल् अम् कोतैयाळ्–सुगन्धित केश वाली श्रीलक्ष्मीदेवी ने; मालै चूट्टिय अऩ्ऱितुम्–जिस दिन (विवाह की) वरमाला पहनाई उस दिन से; इऩ्ऱु–बढ़कर आज; अऴकु उटैत्तु–अधिक सुन्दरता से युक्त हैं; ऎऩ्ऱार्–बोले। १३१६

कृतज्ञतापूर्ण देवों ने वहाँ विराजमान नायक को देखकर सोचा कि आज का दिन उस दिन से, जिस दिन विशाल क्षीरसागर के मथने से

उत्पन्न, सुवासित केशिनी श्रीलक्ष्मी के गले में उन्होंने विवाह-माला पहनायी थी, आज का दिन अधिक मनोरम है। १३१६

ऑलिहड लुलहिऩि लुम्बर् नाहरिल्
पॉलिवदु मऱ्ऱिवळ् पॊऱ्पॆऩ् ऱालिवळ्
मलिदरु मणम्बडु तिरुवै वायिऩाल्
मॆलिदरु मुणर्विऩे ऩॆऩ्ऩ्वि ळम्बुहेऩ् 1317

ऑलि कटल्–गर्जनशील सागर की; उलकिऩिल्–इस भूमि में; उम्पर्–देवलोक में; नाकरिल्–और नाग (पाताल) लोक में; पॉलिवतु इवळ् पॊऱ्पु–विशिष्ट शोभाशालिनी है इनकी सुन्दरता; ॲऩ्ऱाल्–तो; मणम् पटु–विवाह के समय में प्रफुल्लित; मलि तरु तिरुवै–अत्यधिक रहनेवाली सौंदर्यश्री को; मॆलि तरुम् उणर्वित्तेऩ्–अल्पबुद्धि मैं; वायिऩाल् ॲऩ् विळम्पुकेऩ्–अपने मुख से क्योंकर वर्णित करूँ। १३१७

श्री सीताजी गर्जनशील सागर वलयित इस भूलोक में ही क्या, पाताललोक और देवलोक में भी उनकी ही सुन्दरता (की महिमा) है। और आज तो उनका विवाह-दिन है। कन्याएँ विवाह के अवसर पर कई गुना सौन्दर्यवती हो जाती हैं। सीताजी का सौन्दर्य बहुत बढ़ गया। ऐसी स्थिति में अल्पबुद्धि मैं अपने मुख से उनकी सुन्दरता का कैसे वर्णन करूँगा ? । १३१७

इन्दिरऩ् शशियॊडु मॆय्दि ऩाऩिळम्, चन्दिर मौलितऩ् ऱैय लाळॊडुम्
वन्दऩऩ् मलरयऩ् बाक्कि ऩाळुडऩ्, अन्दरम् पुहुन्दऩ ऩऴहु काणवे 1318

अऴकु काण–(उत्सव-वैभव) ठाट देखने के लिए; अन्तरम्–आकाश में; इन्तिरऩ् चचियॊटुम् ॲय्तिऩाऩ्–इन्द्र शची के साथ पधारे; इळम् चन्तिर मौलि–बालचन्द्रमौलि (शिवजी); तऩ् तैयलाळॊटुम्–अपनी पत्नी (देवी पार्वती) के साथ; वन्तऩऩ्–पधारे; मलर् अयऩ्–कमलज अज; वाक्किऩाळुटऩ्–वाग्देवी के साथ; पुकुन्तऩऩ्–आ पहुँचे। १३१८

इस विवाहोत्सव की छटा, वैभव और सौन्दर्य देखने के लिए आकाश में इन्द्र शची के साथ, चन्द्रमौलि (शिवजी) देवी पार्वती के साथ और कमलज वाग्देवी के साथ पधारे। १३१८

नीन्दरुङ् गडलॆऩ निऱैन्द वेदियर्
तोय्न्दनूल् मार्बिऩर् शुऱ्ऱत् तॊऩ्ऩॆऱि
वाय्न्दनल् वॆळ्विक्कु वशिट्टऩ् मैयऱ
एय्न्दऩ कलप्पयो डिऩिदि ऩॆय्दिऩाऩ् 1319

नीन्त अरु कटल् ॲऩ–तरणदुस्तर सागर-सम; निऱैन्त–एकत्रित; वेतियर्–वेदज्ञ; तोय्न्त नूल् मार्पिऩर्–यज्ञोपवीतधारी वक्षवाले; चुऱ्ऱ–उनके चारों ओर घेरे आए; वचिट्टऩ्–वसिष्ठ; तॊल् ऩॆऱि वाय्न्त–प्राचीन परिपाटी के अनुसार;

नल् वेळ्विक्कु–श्रेष्ठ विवाह-यज्ञ के लिए; मै अऱ–दोषहीन; एय्न्तन–और आवश्यक; कलप्पैयोटु–सामग्रियों के साथ; इऩितिऩ् ॲय्तिऩाऩ्–प्रसन्नता के साथ पधारे। १३१६

वसिष्ठजी पधारे। उनके साथ, तरणदुर्लभ सागर के समान विस्तृत वेदों के ज्ञाता यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण भी अधिक संख्या में आये। इस वेदोक्त, प्राचीन परिपाटी के अनुसार होनेवाले विवाह-यज्ञ के लिए आवश्यक साधन, उपकरण और सामग्रियाँ भी वसिष्ठजी अपने साथ लाये। १३१९

तण्डिलम् विरित्तऩऩ् तरुप्पै शार्त्तिऩऩ्
मण्डलम् विदिमुऱै वहुत्तु वॅण्मलर्
कॉण्डऩल् शॉरिन्दॅरि कुळुम मूट्टिऩऩ्
पण्डुळ मऱैनॆऱि परविच् चॅय्दऩऩ् 1320

तण्टिलम् विरित्तऩऩ्–("स्थण्डिलं स्थापयित्वा") बालू को चौकोर फैलाकर; तरुप्पै चार्त्तिऩऩ्–दर्भ (यथोक्त प्रकार से) रखे; मण्टलम्–(अग्नि स्थापना के) गोल स्थल; विति मुऱै–विधि के अनुसार; वकुत्तु–ठीक करके; वॅळ् मलर् कॉण्टु–श्वेत पुष्प उचित स्थानों पर रखे; अऩल् चॉरिन्तु–अग्नि स्थापित कर; ॲरि कुळुम–जले, ऐसा; मूट्टिऩऩ्–प्रज्वलित किया; पण्टु उळ मऱै नॆऱि परवि–प्राचीन परम्परा के अनुसार मन्त्रों का प्रयोग कर; चॅय्तऩऩ्–होमकर्म किया। १३२०

वसिष्ठजी ने स्थंडिल (बालू का चौकोर विस्तार) फैलाकर उसके ऊपर दर्भ रखे। फिर अग्निस्थापना का स्थल नियत किया। उस पर श्वेत पुष्पों को यथास्थान वितरित किया। उसके बाद अग्नि प्रज्वलित की और वह अग्नि जल उठी। तब वसिष्ठजी ने वेदमन्त्र उच्चरित करके होम कार्य किया। १३२०

❀ मऩ्ऱलिऩ् वन्दु मणत्तवि शेऱि, वॅऩ्ऱि नॆडुन्दहै वीरऩु मार्वत्
तिऩ्ऩुणै यऩ्ऩमु मॅय्दि यिरुन्दार्, ऑऩ्ऱिय बोहमुम् योहमु मॊत्तार् 1321

वॅऩ्ऱि–विजय; नॆटुतकै–व श्रेष्ठ गुण; वीरऩुम्–(इनसे) युक्त वीर श्रीराम और; आर्वत्तु–(उनको) प्यार करनेवाली; इऩ् तुणै–प्रिय संगिनी (बनने को जो थीं वे); अऩ्ऩमुम्–हंसिनी (सीताजी) भी; मऩ्ऱलिऩ् वन्तु–विवाह मण्डप में आकर; मणम् तविचु एऱि–विवाह मंच पर चढ़कर; ॲय्ति इरुन्तार्–पास-पास आसीन हुए; ऑऩ्ऱिय–युक्त; पोकमुम्–भोग (मोक्ष का भोग); योकमुम्–और योग; ऑत्तार्–के समान रहे। १३२१

विजयशील और श्रेष्ठगुणी श्रीराम और उनसे प्यार करनेवाली, उनकी निर्णीत संगिनी सीताजी जो हंसिनी के समान चालवाली थीं, दोनो विवाहमंच पर आकर पास-पास आसीन हुए। तब वे सिद्धिभूत मोक्षभोग और उपायभूत योग के समान लगे। १३२१

❀ कोमहऩ् मुऩ्शऩ हऩ्गुळिर् नऩ्ऩीर्, पूमह ळुम्बॊरु ळुम्मॆऩ नीयॆऩ्
मामह डऩ्ऩॊडु मऩ्ऩुदि यॆऩ्ऩात्, तामरै यऩ्ऩ तडक्कयि ऩीन्दाऩ् 1322

चऩकऩ्–जनक; कोमकऩ्मुऩ्–चक्रवर्ती तनुज के सामने आकर; पू मकळुम् पॊरुळुम् ॲऩ–कमला और परवस्तु (परब्रह्म) श्रीमन्नारायण जैसे; नी ॲऩ् मा मकळ् तऩ्ऩॊटु–आप मेरी उत्तम कन्या के साथ; मऩ्ऩुति–मिलकर रहिए; ॲऩ्ऩा–यह कहकर; तामरै अऩ्ऩ–कमल सदृश; तट कैयिऩ्–विशाल हाथ में; कुळिर् नल् नीर्–शीतल पवित्र जल को; ईन्ताऩ्–ढाला । १३२२

तब महाराज जनक चक्रवर्तीतनुज के सामने आये । कमला और परब्रह्म श्रीनारायण के समान आप मेरी उत्तम कन्या के साथ मिले रहिये । यह कहकर उन्होंने श्रीराम के कमलहस्त में जल ढाला । १३२२

❀ अन्दण राशि यरुङ्गल मिऩ्ऩार्, तन्दप लाण्डिशै तार्मुडि मऩ्ऩर्
वन्दऩै मादवर् वाऴ्त्तॊलि पोल, मुन्दिऩ शङ्ग मुऴङ्गिऩ मादो 1323

अन्तणर् आचि–ब्राह्मणों के आशीर्वचन; अरु कलम् मिऩ्ऩार्–अपूर्व आभरण-धारिणी (मंगलसूत्रधारिणी) सधवा स्त्रियों के; तन्त–गाये हुए; पल्लाण्टु इचै–"अनेक वर्ष मंगल हो" वाले गीत; तार् मुटि मऩ्ऩर्–माला से अलंकृत किरीटधारी राजाओं की; वन्तऩै–वन्दना; मातवर् वाऴ्त्तु ऑलि–बड़े तपस्वियों की बधाई का नाद; पोल–इनके समान; मुन्तिऩ चङ्कम्–मंगल सूचना के लिए श्रेष्ठ मान्य शंख; मुऴङ्किऩ–निनादित हो उठे; (मातो) । १३२३

उस अवसर पर ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिया । मंगलसूत्रधारिणी सधवाएँ "जीव" गीत गाने लगीं । माला से युक्त किरीटधारी राजा लोगों ने वन्दना के वचन कहे । महान तपस्वियों, जैसे वसिष्ठ, कौशिक, शतानन्द आदि ने बधाई दी उन सबका स्वर भर उठा । उसी सम्मिलित स्वर के समान मंगलवाद्य शंख भी बजाये गये और वह नाद भी भर उठा । १३२३

❀ वाऩवर् पूमऴै मऩ्ऩवर् पॊऩ्पू, एऩयर् तूवु मिलङ्गॊळि मुत्तम्
ताऩहु नाण्मल रॆऩ्ऱिवै तम्माल्, मीऩहु वाऩिऩ् विळङ्गिय दिप्पार् 1324

वाऩवर् पू मऴै–सुरों की पुष्पवर्षा; मऩ्ऩवर् पॊऩ् पू–राजाओं की स्वर्णवर्षा; एऩैयर् तूवुम्–अन्यों के द्वारा बरसाये गये; इलङ्कु ऑळि मुत्तम्–भासमान मोती; ताऩ् नकु नाळ् मलर्–स्वविकसित नवीन फूल; ॲऩ्ऱ इवै तम्माल्–ऐसे इनसे; इ पार्–यह भूतल; मीऩ् नकु–नक्षत्रखचित; वाऩिऩ् विळङ्कियतु–आकाश-सम शोभित था । १३२४

देवों के बरसाये कल्पलता के फूल, राजाओं के बरसाये स्वर्ण के फूल, अन्यों के बरसाये मोती, स्वयं विकसित फूल —इन सबसे भरकर भूलोक नक्षत्रसंकुल आकाश के समान शोभायमान हुआ । १३२४

वॆय्य कऩऱ्ऱलै वीरऩु मऩ्ऩाळ्, मैयऱु मऩ्दिर मुऱ्ऱुम् वळङ्गा
नॆय्यमै यावुदि यावयु नेऱ्ऩ्दाऩ्, तैय ऱळिर्क्कै तडक्कै पिडित्ताऩ् 1325

अन् नाळ्–उस दिन (सवेरे); वीरऩुम्–वीर राघव ने; वॆय्य कऩल् तलै–कांक्षनीय अग्नि-मुख में; नॆय् अमै आवुति यावैयुम्–घी के साथ होनेवाले सभी होमकार्य को; मै अऱु–दोषरिक्त; मऩ्तिरम् मुऱ्ऱुम्–मन्त्र सब; वळङ्का–कहकर; नेऱ्ऩ्ताऩ्–करके; तैयल् तळिर् कै–कन्या का पल्लवहस्त; तट कै पिटित्ताऩ्–अपने विशाल हाथ से ग्रहण किया। १३२५

उस दिन सवेरे वीर राघव ने कांक्षणीय अग्निमुख में घी के साथ होनेवाले सभी होम किये; सम्पूर्ण मन्त्र श्रद्धा के साथ पढ़े और सीताजी के पल्लव-सम पाणी को अपने विशाल पाणी से ग्रहण किया। १३२५

इडम्बडु तोळव ऩोडियै वेळ्वि, तॊडङ्गिय वॆङ्गऩल् शूळ्वरु पोदिऩ्
मडम्बडु शिन्दयण् माऱु पिऱप्पिऩ्, उडम्बुयि रैत्तॊडर् हिऩ्ऱदै यॊत्ताळ् 1326

मटम् पटु चिन्तैयळ्–स्त्रियोचित संकोचशील मनवाली; इयै वेळ्वि तॊटङ्कि–युक्त विवाह कार्य प्रारम्भ कर; इटम् पटु तोळवऩोटु–विशाल कन्धे वाले श्रीराम के साथ; अ वॆम् कऩल् चूळ् वरु पोतिऩ्–कमनीय होमाग्नि की परिक्रमा करते समय; माऱु पिऱप्पिऩ् उटम्पु–दूसरे जन्म का शरीर; उयिरै तॊटर्किऩ्ऱतै–प्राणों (आत्मा) को अनुगमन करता; ऒत्ताळ्–जैसा लगी। १३२६

स्त्रीसहज संकोचशील स्वभाव वाली सीताजी ने भी अपना कर्तव्य रस्म अदा किया। विशाल कंधे वाले श्रीराम के साथ जब वे अग्नि की परिक्रमा करने लगीं तब ऐसा लगा मानो बाद के जन्म का शरीर पिछले जन्म के जीव (आत्मा) का अनुगमन करता हो। [यही धारणा सर्वसम्मत है कि जीव (आत्मा) शरीर से आकर लग जाता है। इधर विपरीत बात कही गयी है। तो भी सोचने पर यह भी ठीक लगेगा क्योंकि भगवान को शरीरी, अन्तर्यामी, और जीव को शरीर माना जाता है। यही वैष्णवसिद्धान्त है।]। १३२६

वलङ्गॊडु तीयै वणङ्गिऩर् वन्दु
पॊलम्बॊरि शॆय्वऩ शॆय्पॊरुण् मुऱ्ऱि
इलङ्गॊळि यम्मि मिदित्तॆदिर् निऩ्ऱ
कलङ्गलिल् कऱ्पि ऩरुन्ददि कण्डार् 1327

तीयै वलम् कॊटु–दोनों ने अग्नि की परिक्रमा करके; वन्तु–आकर; वणङ्किऩर्–नमस्कार किया; पॊलम् पॊरि चॆय्वऩ–कमनीय लाजा-होम; चॆय् पॊरुळ्–और कर्तव्य सब; मुऱ्ऱि–पूर्ण करके; इलङ्कु ऒळि–कांति सहित विद्यमान; अम्मि मितित्तु–सिल पर चरण रखने का रस्म (वधू का) अदा किया; ऎतिर् निऩ्ऱ–सामने स्थित; कलङ्कल् इल् कऱ्पिऩ्–अचल पतिव्रता; अरुन्तति कण्टार्–अरुन्धती का दर्शन किया। १३२७

दोनो ने होमाग्नि की परिक्रमा की। फिर लाजाहोम और अन्य कर्तव्य क्रियाएँ कीं। बाद वधु द्वारा सिल पर चरण रखने का कार्य हुआ और सामने दिखाई देनेवाली अरुन्धती को देखने का रस्म भी अदा किया गया। (ये दोनो कार्य दक्षिण में विवाह के मुख्य अंग माने जाते हैं। इनका तात्पर्य है कि पतिव्रता धर्म का पालन न करने से पत्थर —जैसे अहल्या बनी थीं— बनना पड़ेगा और पतिव्रता धर्मपालन के लिए अरुन्धती का उदाहरण सामने रखा जाय। अरुन्धती श्री वसिष्ठजी की पत्नी हैं। दोनो नक्षत्र के रूप में विद्यमान हैं। दिन में अरुन्धती देखना कठिन है। तो भी औपचारिक रीति से उस दिशा में दृष्टि करके तृप्ति कर ली जाती है। सीताजी के विषय में तो देवी अरुन्धती सामने ही थीं।)। १३२७

❀ मऱ्ऱुळ शॅय्वऩ शॅय्दु महिऴ्न्दार्
मुऱ्ऱिय मादवर् ताण्मुऱै शूडिक्
कॉऱ्ऱ वऩैक्कऴल् कुम्बिड लोडुम्
पॉऱ्ऱॉडिक् कैक्कॉडु पॉऩ्मऩै पुक्काऩ् 1328

चॅय्वऩ मऱ्ऱु उळ–करणीय अन्य सब; चॅय्तु–सुसम्पन्न करके; मकिऴ्न्तार्–हर्षित हुए वे; मुऱ्ऱिय मातवर् ताळ्–पूरा किये हुए तप वाले (वसिष्ठ आदि) महर्षियों के चरणों पर; मुऱै चूटि–यथोचित क्रम से सिर नवाकर (दण्डवत करके); कॉऱ्ऱवऩै–चक्रवर्ती को भी; कऴल् कुम्पिटलोटुम्–दण्डवत करने के बाद; पॉऩ् तॉटि कै कॉटु–स्वर्णकंकणधारिणी सीताजी का हाथ पकड़े हुए; पॉऩ् मऩै पुक्काऩ्–कमनीय अपने महल में प्रविष्ट हुए। १३२८

अन्य कर्तव्य कार्य भी पूरा करके मुदितमन श्रीराम ने वसिष्ठ आदि महर्षियों को दण्डवत की; फिर चक्रवर्ती के चरणों पर सिर धरकर नमस्कार किया। फिर श्रीराम स्वर्णकंकणधारिणी देवी सीता के साथ अपने भवन में पधारे। १३२८

आर्त्तऩ पेरिह ळार्त्तऩ शङ्गम्
आर्त्तऩ नाऩ्मऱै यार्त्तऩर् वाऩोर्
आर्त्तऩ पल्हलै यार्त्तऩ पल्लाण्
डार्त्तऩ वण्डिऩ मार्त्तऩ वण्डम् 1329

पेरिकळ् आर्त्तऩ–भेरियाँ बज उठीं; चङ्कम् आर्त्तऩ–शंखध्वनि हुई; नाल् मऱै आर्त्तऩ–चारों वेद उद्घोषित किये गये; वाऩोर् आर्त्तऩर्–आकाशलोकवासियों ने आनन्दरव मचाया; पल् कलै–विविध कलाएँ; आर्त्तऩ–मुखरित हुईं; पल्लाण्टु आर्त्तऩ–'जयजीव' के गीत सुनाई दिये; वण्टु इऩम् आर्त्तऩ–भ्रमर कुल ने गुंजार किया; अण्टम् आर्त्तऩ–सारे अण्डगोल आनन्दनाद कर उठे। १३२९

विवाह के सारे रस्म पूरा होने के बाद भेरियाँ नर्दन कर उठीं। शंख बजाये गये। चारों वेदों का घोष किया गया। सुरों ने आनन्दनाद

किया। विविध कलाएँ (संगीत आदि) या शास्त्र मुदित हुए। 'जयजीव' के गीत सुनाई दिये। भ्रमरकुल ने गुंजार किया। सारे अण्डों ने संतोष का हल्ला मचाया। सब जगह आनन्दनर्दन भरा रहा। १३२९

केहयन् मामहळ् केऴ्हिळर् पादम्, तायिऩु मऩ्बोडु ताऴ्न्दु वणङ्गि
आयद तऩ्ऩै यडित्तुणै शूडित्, तूय शुमित्तिरै ताडोऴ लोडुम् 1330

केकयन् मा मकळ्–केकयराज की मान्य पुत्री के; केऴ् किळर् पातम्–आदरणीय चरणों पर; तायिऩुम् अऩ्पोटु–माता के प्रति होनेवाले प्रेम से अधिक प्रेम के साथ; ताऴ्न्तु वणङ्कि–भूमि पर पड़कर नमस्कार करके; आय–वात्सल्य भरी; तऩ् अऩ्ऩै–अपनी माता के; तुणै अटि चूटि–चरणद्वय सिर पर लगा लेकर (दण्डवत करके); तूय–पवित्रमना; चुमित्तिरै ताळ् तोऴलोटुम्–सुमित्रादेवी के पैर स्पर्श करने पर। १३३०

श्रीराम ने केकयराजकुमारी (कैकेयी) के उज्ज्वल चरणों पर, जननी माता (कौसिल्या) से (जितना, उतने से भी) अधिक मातृ-प्रेम के साथ नमस्कार किया। फिर क्रम से उन्होंने अपनी माता के पैर सिर पर धारण किये। और पवित्र मन वाली सुमित्रा देवी के पैरों पर नमस्कार किया। १३३०

अऩ्ऩमु मऩ्ऩव रम्बोऩ् मलर्त्ताळ्
शॅऩ्ऩि पुऩैन्दऩळ् शिन्दै महिऴ्न्दार्
कऩ्ऩि यरुन्ददि कारिहै काण
नऩ्महऩ् ऩुक्किव णल्लणि यॅऩ्ऱार् 1331

अऩ्ऩमुम्–हंसिनी (सीता) ने भी; अऩ्ऩवर्–उन (तीनो) के; अम् पॊऩ् मलर् ताळ्–सुन्दर श्रेष्ठ कमल चरणों को; चॅऩ्ऩि पुऩैन्तऩळ्–सिर पर लगा लिया; चिन्तै मकिऴ्न्तार्–प्रसन्नचित्त होकर (उन्होंने); कऩ्ऩि अरुन्तति–अचल पातिव्रत्य वाली अरुन्धती (सम) इसकी; कारिकै काण–मनोहारिणी शोभा देखने से; इवळ्–ये; नल् मकऩुक्कु–सर्वगुणपूर्ण हमारे पुत्र की; नल् अणि–उत्तम आभूषण होगी; ॲऩ्ऱार्–कहा। १३३१

तब हंसिनी (सदृश) सीता ने भी उनके सुन्दर उज्ज्वल चरणों को अपने सिर पर धरकर प्रणाम किया। तब माताओं ने सन्तोष के साथ उनकी प्रशंसा की कि अचल पातिव्रत्य की देवी अरुन्धती तुल्य इसको देखने पर (यह विश्वास हो जाता है कि) यह हमारे सुपुत्र के लिए श्रेष्ठ भूषण होगी। १३३१

शङ्गव ळैक्कुयि लैत्तऴि निऩ्ऱार्, अङ्गण ऩुक्कुरि यारुळ रावार्
वॆण्ग ळिऩिप्पिऱ रारुळ रॆऩ्ऱार्, कण्गळ् कळिप्प मऩङ्गळ् कळिप्पार् 1332

चङ्कम् वळै कुयिलै–शंखकंकणहस्ता कोकिलवाणी का; तऴि निऩ्ऱार्–(अलग-अलग) गले लगाकर; अम् कणऩुक्कु–सुन्दर और कृपाल (श्रीराम) के; उरियार्

उळर्–योग्य; आवार् पॅण्कळ्–रहनेवाली कन्यायें; इऩ्ि पिऱर् आर् उळर्–इसके सिवा कौन हो सकती हैं; ॲऩ्ऱार्–कहकर; कण्कळ् कळिप्प–आँखों से आनन्द प्रकट करते हुए; मऩङ्कळ् कळिप्पार्–मन में भी मुदित हुईं। १३३२

उन तीनो सासों ने बारी-बारी से शंखकंकणधारिणी, कोकिलबयनी, उन सीताजी को गले लगाया। और आँखों में तृप्ति प्रतिफलित करते हुए और मन में प्रसन्नता के साथ उन्होंने उद्‌गार निकाली कि हमारे सुन्दराक्ष और कृपालु श्रीराम के योग्य वधू इनसे बढ़कर कौन है ? । १३३२

ॲण्णिल कोडिपॉ ऩॅल्लयिल् कोडि, वण्ण वरुङ्गल मङ्गयर् वॅळ्ळम्
कण्णह ऩाडुयर् काशॊडु तूशुम्, पॅण्णि ऩणङ्गनै याळ्पॅऱु हॅऩ्ऱार् 1333

ॲण् इल कोटि पॊऩ्–असंख्य करोड़ अशर्फियों को; ॲल्लै इल् कोटि–अपार करोड़; वण्णम् अरु कलम्–अनेक वर्णों के अपूर्व आभरणों को; मङ्कैयर् वॅळ्ळम्–(दासी-) स्त्रियों की भीड़ को; कण् अकल् नाटु–विस्तृत भूप्रदेश; उयर् काचॊटु–श्रेष्ठ रत्नों के साथ; तूचुम्–वस्त्रों को; पॅण्णिऩ् अणङ्कु अऩैयाळ्–स्त्रियों में देवी-सी ये; पॅऱुक ॲऩ्ऱार्–प्राप्त करें (भेंट में); ॲऩ्ऱार्–(सासों ने) कहा। १३३३

(नमस्कार करनेवालों को पुरस्कार देना सामान्य प्रथा है। उसके अनुसार—) सासों ने, "असंख्य करोड़ स्वर्ण की अशर्फ़ियाँ, अपार करोड़, विविध प्रकार के गहने, अनेक (दासी-)स्त्रियों का दल, विस्तृत भू-प्रदेश, बहुमूल्य रत्न, और श्रेष्ठ वस्त्र, तुम्हें प्राप्त हों।" —कहा (और दिला दिये।)। १३३३

नूऱ्कड लऩ्ऩवर् शॊऱ्कड ऩोक्कि
माऱ्कडल् पॊङ्गु मऩत्तव ळोडुम्
काऱ्कडल् पोऱ्करु णैक्कडल् पण्डैप्
पाऱ्कड लॊप्पदॊर् पळ्ळि यणैन्दाऩ् 1334

करुणै कटल्–करुणासागर (श्रीराम); नूल् कटल् अऩ्ऩवर् चॊल्–शास्त्रों के सागर-सम बड़ों से विहित; कटऩ् नोक्कि–अनुष्ठान के अनुसार कार्य करके; माल् कटल् पॊङ्कुम् मऩत्तवळॊटुम्–जिनका मन प्रेम से सागर के समान उमंगता था उन सीताजी के साथ; काल् कटल् पोल्–हवा से उद्वेलित समुद्र के समान (आनन्दोमंग के साथ); पण्टै पाल् कटल् ऑप्पतु–प्राचीन क्षीरसागर तुल्य; ओर् पळ्ळि–एक शय्या पर; अणैन्ताऩ्–विराजे। १३३४

करुणा के समुद्र (-स्वरूप) श्रीराम ने, दिन में शास्त्रों के समुद्र (स्वरूप) आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट कार्य पूरा करके, रात को, सीताजी के साथ, जिनके मन में प्रेम का सागर उमड़ रहा था, स्वयं पवनोत्तेजित समुद्रसम उत्साह लेकर शय्या पर गये। वह शय्या प्राचीन क्षीरसागर के समान (स्वच्छ और शुभ्र) थी। १३३४

[इधर विवाह-कार्य चार दिन तक करने की प्रथा है। हर दिन दिन में होम आदि होता है। रात में वर और वधू शयनगृह में साथ रहते हैं। इसको समावेशन कहा जाता है। इस पद में सागर शब्द बार-बार आया है।]

पङ्गुऩि युत्तर माऩ पहऱ्पो
दङ्ग विरुक्किऩि लायिर नामच्
चिङ्ग मणत्तॊऴिल् शॆय्द तिऱत्ताल्
मङ्गल वङ्गि वशिट्टऩ् वहुत्ताऩ् 1335

वचिट्टऩ्–मुनिवर वसिष्ठ ने; **पङ्कुऩि उत्तरम् आऩ**–(मीन) फाल्गुन मास की उत्तराफाल्गुनी के; **पकल् पोतु**–दिन में; **अङ्कम् इरुक्किऩिल्**–अंग-उपांग सहित वेदों में उक्त; **आयिरम् नामम्**–सहस्र नामधारी; **चिङ्कम्**–केसरी श्रीराम का; **मणम् तॊऴिल्**–विवाह कार्य; **चॆय्त तिऱत्ताल्**–जैसे किया उसी क्रम से; **मङ्कलम् अङ्कि**–कल्याणोचित अग्निकार्य; **वकुत्ताऩ्**–(अन्य दिनों में भी) किया। १३३५

वसिष्ठजी ने फालगुन (मीन) मास के उत्तराफालगुनी नक्षत्र के दिन, अंग-उपांग सहित वेदों में प्रशंसित सहस्रनामधारी केसरी सदृश श्रीराम से जो विवाहोचित होम-कार्य आदि कराया, उसी प्रकार (अन्य तीनो दिनों में) कराके (शेष-होम के साथ) विवाह-संस्कार पूरा किया। १३३५

वळ्ळ ऱऩक्किळै योर्ह डमक्कुम्, ऎळ्ळलिल् कॊऱ्ऱवऩ् याऩ्पि ऩळित्त
अळ्ळऩ् मलर्त्तिरु वऩ्ऩवर् तम्मैक्, कॊळ्ळु मॆऩत्तम रोडु कुऱित्ताऩ् 1336

ऎळ्ळल् इल् कॊऱ्ऱवऩ्–अनिन्द्य विजयी जनक ने; **वळ्ळल् तऩक्कु**–प्रभु श्रीराम के छोटे भाइयों के लिए; **याऩ् पिऩ् अळित्त**–मेरे और मेरे अनुज द्वारा जनित; **अळ्ळल् मलर्**–पंक से उत्पन्न (पंकज) की; **तिरु अऩ्ऩवर् तम्मै**–श्रीलक्ष्मी सदृश दुहिताओं को; **कॊळ्ळुम्**–स्वीकार कीजिए; **ऎऩ**–कहकर; **तमरोटु**–अपने समधी लोगों के साथ; **कुऱित्ताऩ्**–(विवाह सम्बन्धी) बात चलाई। १३३६

अनिन्द्यविजयी जनक ने दशरथजी आदि समधियों से अपनी दूसरी दुहिता और अपने अनुज की दो दुहिताओं के विवाह की बात चलायी। उन्होंने कहा कि मेरे दूसरी पुत्री है। और मेरे अनुज के दो पुत्रियाँ हैं। वे तीनों पंकजा श्रीलक्ष्मी देवी के समान (शोभापूर्ण) हैं। उनको प्रभु (श्रीराम) के तीनों अनुजों की वधुओं के रूप में स्वीकार कीजिए। १३३६

कॊय्ऩ्निऱै तारऩ् कुशत्तुव शप्पेर्, नॆय्ऩ्निऱै वेलवऩ् मङ्गयर् नेर्ऩ्दार्
मैऩ्निऱै कण्णिऩर् वाऩुरु नीरार्, मॆय्ऩ्निऱै मूवरै मूवरुम् वेट्टार् 1337

कॊय् निऱै तारऩ्–चुने हुए पुष्पों की माला के धारक (जनक) की; **कुचत्तुवचऩ् पेर्**–कुशध्वज नाम के; **नॆय् निऱै वेलवऩ्**–घृतलगा भालाधारी की; **मङ्कैयर**–दुहिताएँ; **नेर्ऩ्तार्**–बहुएँ मनोनीत गईं; **मै निऱै कण्णिऩर**–अंजन लगी आँखों वालियाँ; **वाऩ्**

उऱु नीरार्–देवलोकवास योग्य; मॅय् निऱ़ै–और उचित वय वालियाँ; मूवरै–उन तीनो को; मूवरुम्–श्रीराम के तीनो भाइयों ने; वेट्टार्–विवाह लिया । १३३७

चुने हुए पुष्पों की माला से भूषित जनक की पुत्री, उर्मिला, और घी-लगा भालाधारी कुशध्वज नामक जनक के भाई की पुत्रियाँ, माण्डवी और श्रुतकीर्ति वधुएँ मनोनीत हुईं । अंजनशोभित आँखों वाली, देवांगना सम गुणवाली और युक्त आयुवाली उन तीनो को (श्रीराम के अनुज) तीनो ने (क्रमशः लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ने) विवाहा । १३३७

वेट्टवर् वेट्टपिऩ् वेन्दऩु मेऩ़ाळ्
कूट्टिय शीर्त्ति कॊडुत्तिल ऩ़ल्लाल्
ईट्टिय मॅय्प्पॊरु ळुळ्ळऩ वॅल्लाम्
वेट्टवर् वेट्कयिऩ् मेऱ़्पड वीन्दाऩ् 1338

अवर्–उन (वरों) के; वेट्टु–परस्पर चाह करके; वेट्टपिऩ्–विवाह कर लेने के पश्चात; वेन्तऩुम्–चक्रवर्ती ने; मेल् नाळ्–अनेक दिनो से; कूट्टिय–अर्जित; चीर्त्ति–यश को; कॊटुत्तिलऩ् अल्लाल्–नहीं दिया, नहीं तो; ईट्टिय–अर्जित; मॅय् पॊरुळ्–सच्चे अर्थ; उळ्ळऩ ॲल्लाम्–जो उनके पास रहे, उन सबको; वेट्टवर्–माँगनेवालों को; वेट्कैयिऩ् मेल्पट–याचित परिमाण से अधिक; ईन्ताऩ्–दिया । १३३८

चारों के चाह के साथ विवाह कर लेने के बाद चक्रवर्ती ने यथारीति दान दिया । उन्होंने बहुत दिनों से अर्जित अपना यश नहीं दिया, बस । अन्य सभी धन जो अपने पास थे उन्होंने याचकों को उनकी प्रतीक्षा से भी अधिक तृप्त करते हुए लुटा दिया । १३३८

ईन्दळ विल्लदॊ रिऩ़्ब नुहर्न्दे, आय्न्दुणर् केळ्वि यरुन्दव रोडुम्
वेन्दॊडु मन्नहर् वैहिऩ़ऩ् मॅळ्ळत्, तेय्न्दऩ नाळ्शिल शॅय्द दुरैप्पाम् 1339

ईन्तु–बड़ा दान देकर; आय्न्तु उणर् केळ्वि–अन्वेषण के साथ श्रौतज्ञान के रखनेवाले; अरु तवरोटुम्–उत्तम तपस्वियों के साथ; वेन्तॊटुम्–जनक के साथ; अळवु इल्लतु–अमाप; ओर–अद्वितीय; इऩ़्पम् नुकर्न्तु–आनन्दानुभव करते हुए; अ नकर् वैकिऩ़ऩ्–उस नगर में (चक्रवर्ती) रहे; नाळ् चिल मॅळ्ळ तेय्न्तऩ–कुछ दिन धीरे-धीरे व्यतीत हुए; चॅय्ततु–बाद जो किया; उरैप्पाम्–वह कहेंगे । १३३९

दान देने के बाद चक्रवर्ती शास्त्र के अध्ययन और अनुशीलन से प्राप्त ज्ञान के धनी, उत्तम तपस्वियों और राजा जनक के साथ वार्तालाप का अपार आनन्द उठाते हुए उस नगर में ठहरे । धीरे-धीरे कुछ दिन बीत गये । उसके वाद क्या हुआ वह वृत्तांत हम अब कहेंगे । १३३९

22. परशुरामप् पडलम् (परशुराम पटल)

❀ ताऩाहिय तहैमैप्पॉरुळ् शऩहऩ्कुयि लुडऩे
नाऩाविद विरुबोहमु नुहर्हिऩ्ऱवन् नाळ्वाय्
आऩामऱै नॅऱिमादव मुऩिकोशिक नरुळिप्
पोऩाऩ्वड दिशैवायुयर् पॉऩ्माल्वरै पुक्काऩ् 1340

ताऩ् आकिय–स्वोपम; तकैमै पॉरुळ्–श्रेष्ठ आदि तत्व, परब्रह्म के अवतार श्रीराम; चऩकऩ् कुयिलुटऩे–जनक की पुत्री, कोकिलवाणी, सीताजी के साथ; नाऩावितम्–नानाविध; इरु पोकमुम्–दोनों तरह के भोग; नुकर्किऩ्ऱ अ नाळ् वाय्–भोगते रहे, तब एक दिन; मातव मुऩि कोचिकऩ्–महान तपस्वी, मुनिवर कौशिक; आऩा मऱै नॅऱि अरुळि–अक्षय वेदों में प्रतिपादित नीतिमार्ग का उपदेश देकर; पोऩाऩ्–वहाँ से निकलकर; वट तिचै वाय्–उत्तर दिशा में स्थित; उयर्–अत्युन्नत; पॉऩ् माल् वरै–स्वर्णमय हिमगिरि पर; पुक्काऩ्–पहुँचे । १३४०

अपनी उपमा स्वयं आप ही जो रहे (स्वोपम या स्वेच्छा से ग्रहीत अवतार वाले) श्रीराम जनक की दुहिता, कोकिलवाणी श्री सीताजी के साथ (अशन और शयन के) दोनो प्रकार के नानाविध भोग उचित रीति से भोगते रहे। उन दिनों महान तपस्वी कौशिक, श्रीराम को अक्षयवेद-विहित नीतियों का उपदेश देकर वहाँ से चले। वे उत्तर दिशा में स्थित उन्नत स्वर्णिम हिमपर्वत पर पहुँचे । १३४०

अप्पोदिऩिऩ् मुडिमऩ्ऩव ऩणिमानहर् शॅलवे
इप्पोदुन मऩिहऩ्दुणै यॅळुहॅऩ्ऱिऩि दिशैयाक्
कैप्पोदह निहर्कावलर् कुळुवन्दडि कदुव
ऑप्पोदरु तेर्मीदिऩि लिऩिदेऱिऩ ऩुरवोऩ् 1341

अप्पोतिऩिल्–तब (एक दिन); उरवोऩ्–पराक्रमी; मुटि मऩ्ऩवऩ्–किरीटधारी चक्रवर्ती; अणि मा नकर् चॅल–कमनीय श्रेष्ठ नगर अयोध्या जाने के लिए; इप्पोतु–अब; नम् अऩिकम्–हमारी सेना; तुणै–और साथ आये सब; ॲळुक–उठें; ॲऩ्ऱु–यह; इऩितु इचैया–मधुर ढंग से कहकर; कै पोतकम् निकर्–सूँडवाले गजों के समान; कावलर् कुळु वन्तु–राजाओं के दल के आकर; अटि कतुव–चरणस्पर्श करते; ऑप्पु ओत–उपमा कहने के लिए; अरु तेर् मीतिऩिल्–दुस्साध्य एक श्रेष्ठ रथ पर; इऩितु एऱिऩऩ्–आरोहित हुए । १३४१

तब एक दिन शक्तिमान और किरीटधारी (श्रीमान) चक्रवर्ती दशरथ, मधुर ढंग से यह आज्ञा देकर कि अब हमारे सुन्दर नगर अयोध्या को, हमारी सेना और हमारे संग आये हुए सभी प्रस्थान करें, स्वयं एक अनुपमेय उत्तम रथ पर आरोहित हुए। तब हाथी-सम राजाओं ने आकर उनका चरण स्पर्श कर नमस्कार किया । १३४१

तऩ्मक्कळु मरुमक्कळु नऩिदऩ्कऴ ऱऴुव
मऩ्मक्कळु मयऩ्मक्कळुम् वयिऩ्मॉय्त्तिड मिदिलैत्
तॉऩ्मक्कड मऩमुक्कुयिर् पिरिवॅऩ्बदोर् तुयरिऩ्
वऩ्मक्कडल् पुहवुय्प्पदोर् वऴिपुक्कऩ ऩुरवोऩ् 1342

उरवोऩ्–(तन और मन के) बली चक्रवर्ती; तऩ् मक्कळुम्–अपने पुत्रों के और; मरुमक्कळम्–बहुओं के; नऩि तऩ् कऴल्–श्रद्धा के साथ अपने (राजा के) चरणों की; तऴुव–वन्दना करके साथ-साथ आते; मऩ् मक्कळुम्–राजकुमारों और; अयल् मक्कळुम्–अन्य लोगों के; वयिऩ् मॉय्त्तिट–पार्श्व में जुटते आते; मितिलै तॉल् मक्कळ्–मिथिला की प्राचीन प्रजा के; तम् मऩम् उक्कु–अपना मन विदीर्ण होने से; उयिर् पिरिवु ॲऩ्पतु ओर्–प्राण छूट जायँगे, ऐसी स्थिति के; तुयरिऩ् वऩ्मम् कटल् पुक–दुख के प्रबल सागर में डूबते; उय्प्पतु ओर् वऴि–अपने नगर को जानेवाले मार्ग में; पुक्कऩऩ्–जाने लगे। १३४२

चक्रवर्ती के सुपुत्र और पुत्रवधुएँ उनको नमस्कार कर, उनके साथ आईं। अन्य राजकुमार और दूसरे लोग भी उनके चारों ओर मिलकर आये। मिथिला नगर के प्राचीन प्रजाजन विदीर्णमन हो गये। "अब उनके प्राण छूट जायँगे क्या ?" यह डर पैदा करनेवाली एक विषम स्थिति में रहे वे दुख के अपार सागर में डूब गये। इस परिस्थिति में राजा दशरथ, अयोध्या (जाने के) मार्ग में जाने लगे। १३४२

मुऩ्ऩॅऩॅडु मुडिमऩ्ऩवऩ् मुऱैयिऱ्चॅल मिदिलै
नऩ्मानह रुऱैवार्मऩ नऩिपिऩ्शॅल नडुवे
तऩ्ऩेर्बुरै तरुतम्बियर् तऴुविच्चॅल मऴैवाय्
मिऩ्ऩेयॅऩ्ऩु मिडैयाळॉडु मिऩिदेहिऩऩ् वीरऩ् 1343

नॅटु मुटि मऩ्ऩवऩ्–बड़े किरीट के चक्रवर्ती; मुऱैयिऩ्–यथा मर्यादा; मुऩ्ऩे चॅल–आगे-आगे गये, तब; मितिलै नल् मानकर् उऱैवार्–मिथिला के श्रेष्ठ नगर वासियों के; मऩम्–मन; नऩि पिऩ् चॅल–उनके खब पीछे चले, तब; वीरऩ्–वीर (श्री रघुराम); नटुवे–मध्य में; तऩ् नेर्–अपनी समानता; पुरै तरु–करनेवाले; तम्पियर् तऴुवि चॅल–छोटे भाइयों के साथ लगे आते; मऴै वाय् मिऩ्ऩे–मेघमध्य विद्युत ही सम; ॲऩ्ऩुम्–मान्य; इटैयाळॉटुम्–कमर वाली (श्री सीताजी) के साथ; इऩितु एकिऩऩ्–सुख से गये। १३४३

सबसे आगे, यथोचित प्रकार से दीर्घ-किरीटधारी दशरथ जाते रहे। पीछे मिथिला के अच्छे नगर के वासियों के मन आ रहे थे ! श्रीराम इन दोनो के मध्य जा रहे थे। मेघ में बिजली के समान कमरवाली सीताजी उनके साथ थीं और आप समान प्यारे भाई उनके पास आ रहे थे। श्रीराम सुख से जा रहे थे। १३४३

एहुम्मळ वयिऩ्वन्दऩ वलमुम्मयि लिडमुम्
काहम्मुद लियमुन्दिय तडैशॆय्वऩ कण्डाऩ्
नाहम्मऩ ऩिडैयिङ्गुळ दिडैयुऱॆऩ नडवाऩ्
माहम्मणि यणितेरॊडु निऩ्ऱाऩॆऱि वन्दाऩ् 1344

एकुम् अळवैयिऩ्–उनके चलते समय; **मयिल् वलमुम् वन्तऩ**–मोर दायें आये; **काकम् मुतलिय**–कौए आदि; **इटमुम् मुन्तिय**–बायें गये (अपशकुन); **तटै चॆय्वऩ**–और अवरोध करनेवाले बने; **कण्टाऩ्**–देखकर; **नाकम् अऩ्ऩतऩ्**–पर्वत-सम (दृढ़-) मन; **नॆऱि वन्ताऩ्**–सन्मार्गानुयायी चक्रवर्ती; **इङ्कु**–अब; **इटै**–मार्ग में; **इटैयूऱु उळतु ऎऩ**–कोई बाधा है, यह सोचकर; **नटवाऩ्**–आगे नहीं गये; **माकम् अणि**–आकाशस्पर्शी; **अणि तेरॊटुम्**–शोभामय रथ के साथ; **निऩ्ऱाऩ्**–रुक गये। १३४४

जब वे जाते रहे तब चक्रवर्ती ने देखा कि मोर (बायें से) दाहिनी ओर गये। यह शुभ शकुन था। और यह भी देखा कि कौए आदि बायें गये और यह अशुभ शकुन था जो मार्ग का अवरोधक था। चक्रवर्ती पर्वतसम दृढ़ मन थे और सन्मार्गगामी थे। वे यह देखकर सोचने लगे कि कोई बाधा होनेवाली है। इसलिए वे अपने रथ को रोककर रुक गये। १३४४

निऩ्ऱॆनॆऱि यऱिवाऩॊरु निऩैवाळऩै यऴैया
नऩ्ऱोपऴु दुळदोनय मुरैनीनडु वॆऩ्ऩक्
कुऩ्ऱेपुरै तोळाऩॆदिर् पुळ्ळिऩ्कुऱि कॊळ्वाऩ्
इऩ्ऱेवरु मिडैयूऱदु नऩ्ऱाय्विडु मॆऩ्ऱाऩ् 1345

निऩ्ऱु–स्थित होकर; **नॆऱि अऱिवाऩ्**–शकुनशास्त्र जाननेवाले; **ऒरु निऩैवाळऩै**–एक शोधक को; **अऴैया**–बुलाकर; **नऩ्ऱो पऴुतु उळतो**–भला है या हानि की सम्भावना है; **नयम्**–फल; **नी नटु उरै ऎऩ्ऩ**–तुम तटस्थ रहकर कहो, कहने पर; **कुऩ्ऱे पुरै**–पर्वत-सम; **तोळाऩ् ऎतिर्**–कन्धों वाले के सामने; **पुळ्ळिऩ् कुऱि कॊळ्वाऩ्**–पक्षी-शकुन समझनेवाले ने; **इऩ्ऱे इटैयूऱु वरुम्**–अभी बाधा आयगी; **अतु नऩ्ऱु आय् विटुम्**–वह भला हो जायगी; **ऎऩ्ऱाऩ्**–कहा। १३४५

रुककर उन्होंने एक शकुन-शास्त्रज्ञ शोधक को बुलाया। उससे पूछा कि क्या भला होनेवाला है या बुरा ? इस शकुन का फल, शोध करके, तटस्थ रहकर बताओ। पक्षी-शास्त्रज्ञ ने पर्वतसम कंधों वाले दशरथ को उत्तर में बताया कि अभी बाधा आयेगी। पर वह भला बन जायगी। १३४५

ऎऩ्ऩुम्मऴ वयिऩवाऩह मिरुणिऩ्ऱदु वॆळियाय्
मिऩ्ऩुम्बडि पुडैवीशिय शडैयाऩ्मऴु वुडैयाऩ्
पॊऩ्ऩिऩ्मलै वरुहिऩ्ऱदु पोल्वाऩऩल् काल्वाऩ्
उऩ्ऩुञ्जुऴल् विऴियाऩुरु मदिर्हिऩ्ऱदॊ रुरैयाऩ् 1346

ऍऩ्ऩुम् अळवैयिऩ्–(उसके) यह कहते ही; वाऩकम् निऩ्ऱु इरुळ्–आकाश में व्याप्त अन्धकार; वॅळि आय्–प्रकाश बना; मिऩ्ऩुम् पटि–और चमका, जैसे; पुटै वीचिय–चारों ओर (प्रकाश) फैलानेवाली; चटैयाऩ्–जटाधारी; मऴु उटैयाऩ्–परशु रखनेवाले; पॉऩ्ऩिऩ् मलै वरुकिऩ्ऱतु पोल्वाऩ्–स्वर्णपर्वत आता जैसा दिखनेवाले; अऩल् काल्वाऩ् उऩ्ऩुम्–आग उगलती हुई; चुऴल् विऴियाऩ्–घूमनेवाली आँखों के; उरुम् अतिर्किऩ्ऱतु–गाज का-सा; ओर् उरैयाऩ्–वचन कहनेवाले । १३४६

शकुन-शास्त्रज्ञ यह कह ही रहा था कि परशुराम आ गये। (परशुराम कैसे थे और कैसे आये इसका विवरण इस पद को मिलाकर नौ पदों में दिया जाता है।) आकाश के अन्धकार को प्रकाश में बदलते हुए (उनके पार्श्व में) हिलती रहनेवाली जटाओं वाले; परशु के धारक; स्वर्णपर्वत के समान आनेवाले; आग उगलने को उद्यत और चंचल आँखों वाले; गाज के समान वचनवाले— । १३४६

कम्बित्तलै यॅऱिनीरुऱु कलमॉत्तुल हुलैयत्
तम्बित्तुयर् दिशैयाऩैह डळरक्कडल् शलिया
वॅम्बित्तिरि तरवाऩवर् वॅरुवुऱ्ऱिरि तरवोर्
शॅम्बॊऱ्चिलै तॅऱियावयिऩ् मुहवाळिह डॅरिवाऩ् 1347

अलै ऍऱि नीर्–तरंग फेंकनेवाले सागर जल में; उऱुम् कलम् ऑत्तु–पड़े पोत के समान; उलकु कम्पित्तु उलैय–लोक को काँपकर थर्राते हुए; उयर् तिचै याऩैकळ्–श्रेष्ठ दिग्गजों को; तम्पित्तु तळर–स्तंभित और भीत कराते हुए; कटल्–सारे समुद्र; चलिया–क्षुब्ध होकर; वॅम्पि–तप्त होकर; तिरितर–चंचल हों, ऐसा करते हुए; वाऩवर्–देवगण; वॅरु उऱ्ऱु इरि तर–डरकर भाग जायँ, ऐसा; ओर् चॅम् पॊऩ् चिलै–विशिष्ट एक स्वच्छस्वर्ण के धनुष (के डोरे) को; तॅऱिया–टंकारते हुए; अयिल् मुकम् वाळिकळ् तॅरिवाऩ्–तीक्ष्णमुखी शर चुननेवाले । १३४७

(उनके आते समय) तरंगाकुल सागर-जल में ग्रस्त पोत के समान लोक कंपित होकर चंचल हुए। बड़े-बड़े दिग्गज स्तंभित और श्रांत हो गये। सारे समुद्र उद्वेलित होकर तप्त और अस्थिर हुए। देवगण भयभीत होकर भागे। (ऐसा आये) अप्रतिम एक स्वर्णधनु की डोरी टंकारकर तीक्ष्ण शर को चुन लेते हुए (परशुरामजी) । १३४७

विण्कीऴुऱ वॅऩ्ऱोपडि मेल्पालुऱ वॅऩ्ऱो
ऍण्कीऱिय वुयिर्यावयुम् यमऩ्वायिड वॅऩ्ऱो
पुण्कीऱिय कुरुदिप्पुऩल् पॉऴिहिऩ्ऱदु पुरैयक्
कण्कीऱिय कऩलाऩ्मुऩि वियादॅऩ्ऱयल् करुद 1348

पुण् कीऱिय–व्रण के मुख से; कुरुति पुऩल्–रक्त द्रव; पॉऴिकिऩ्ऱतु पुरैय–बहता जैसे; कण् कीऱिय–कऩलाऩ्–आँखों से निकलनेवाली आग सहित (इनका); मुऩिवु–कोप; विण् कीऴ् उऱ ऍऩ्ऱो–आकाशलोक को नीचे लाने के लिए; पटि मेल्

पाल् उऱ ॲऩ्ऱो–भूमि को आकाश में पहुँचाने के लिए; ॲण् कीऱिय उयिर् यावैयुम्–संख्या लाँघनेवाले (असंख्यक) सारे जीवों को; यमऩ् वाय् इट ॲऩ्ऱो–यम के मुख में डालने के लिए; यातु–क्या; ॲऩ्ऱु–ऐसा; अयल् करुत–पास में रहनेवाले सोचें, ऐसा। १३४८

खुले व्रण से रक्त बहता-सा आँखों से आग निकल रही थी। इतना इनका कोप आकाश को भूमि पर गिराने के लिए है ? या भूमि को आकाश में पहुँचाने के लिए ? या संख्या की सीमा लाँघकर जो जीव यहाँ हैं उनको यम के मुख का ग्रास बनाने के लिए ? यह कैसा कोप है —ऐसा पास रहने वाले विचार करने लग गये। (इस प्रकार वे आये।)। १३४८

पोरिऩ्मिशै ॲऴुहिऩ्ऱदोर् मऴुविऩ्शिहै पुहैयत्
तेरिऩ्मिशै मलैशूऴ्वरु कदिरुन्दिशै तिरिय
नीरिऩ्मिशै वडवैक्कऩ ॲंडुवाऩुऱ मुडुहिप्
पारिऩ्मिशै वरुहिऩ्ऱदोर् पडिवॅम्जुडर् पडर 1349

पोरिऩ् मिचै ॲऴुकिऩ्ऱतु–युद्ध में उत्तेजित हो जानेवाले; ओर् मऴुविऩ् चिकै–उनके विशिष्ट परशु का सिर; पुकैय–धुआँ देने लगा; तेरिऩ् मिचै–(एक चक्र) रथ पर; मलै चूऴ् वरु–(मेरु) पर्वत को घूमकर आनेवाले; कतिरुम्–सूर्य भी; तिचै तिरिय–दिशा छोड़कर भटकने लगे; नीरिऩ् मिचै–सागर-जल-मध्य; वटवै-कऩल्–बड़वाग्नि; ॲंटु वाऩ् उऱ–ऊँचे आकाश में पहुँचने के लिए; मुटुकि–वेग के साथ; पारिऩ् मिचै वरुकिऩ्ऱतु–भूमि पर आती हो; ओर पटि–इस रीति से; वॅम् चुटर् पटर–(उनके शरीर से) गरम ज्योति फैलाते हुए। १३४९

युद्धोत्साही उनके परशु पर धुआँ उठ रहा था। अपने एक-चक्र रथ पर मेरु पर्वत की परिक्रमा करनेवाले सूर्य भी अपनी गति छोड़कर गड़बड़ाने लगे। परशुरामजी के शरीर से गरम प्रकाश फैल रहा था और ऐसा लगा कि सागर-जल में रहनेवाली बड़वाग्नि ऊँचे आकाश में पहुँचने के इरादे से भूमि पर आ रही हो। १३४९

पाऴिप्पुय मुयर्तिक्किडै यडैयप्पुडै पडरच्
चूऴिच्चडै मुडिविण्डौड वयल्वॅणमदि तौत्त
आऴिप्पुऩ लॅरिकाऩिल माहायमु मऴियुम्
ऊऴिक्कडै मुडिविऱ्ऱिरि युमैकेऴ्वऩै यौप्प 1350

पाऴि पुयम्–कठोर भुजाएँ; उयर् तिक्कु इटै–दीर्घ दिशाओं में; अटैय–व्याप्त होकर; पुटै पटर–पार्श्व में हिलें, ऐसा; चटै मुटि चूऴि–जटा-मुकुट की शिखा; विण् तौट–आकाश स्पर्श करने देते हुए; अयल्–उसके एक पार्श्व में; वॅण् मति तौत्त–श्वेतचन्द्र, पकड़कर लटकता; आऴि पुऩल्–समुद्र (संज्ञित) जल; ॲरि–अनल; काल्–अनिल; निलम्–पृथ्वी; आकाचमुम्–और आकाश, इन पाँचों भूतों को; अऴियुम्–मिटानेवाले; ऊऴि कटै मुटिविल्–कल्पांत में; तिरि–घूमकर

(ताण्डव) करनेवाले; उमै केळ्वऩ् ऒप्प–उमापति नटराज के समान दिखाई देते हुए । १३५०

उनकी बलवान भुजाएँ ऊँची दिशाओं को स्पर्श करते हुए उनके पार्श्व में ऊपर नीचे हिल रही थीं । जटाजूट के ऊपर की चोटी आकाश को छू रही थी । उसके एक ओर चन्द्र उससे लगकर लटक रहा था । वे उमापति के समान जो, (सागर रूपी) जल, थल, अनल, अनिल और आकाश वगैरह पाँचों भूतों के विलयनकारी कल्पांत में घूमकर तांडव करते हैं । (ऐसे परशुराम) । १३५०

अयिर्तुऱ्ऱिय कडऩ्मानिल मडयत्तऩि पडरुम्
शॅयिर्शुऱ्ऱिय पडयाऩडऩ् मऱमऩ्ऩवर् तिलकऩ्
उयिरुऱ्ऱदॊर् मरमामॆऩ वोरायिर मुयर्तोळ्
वयिरप्पणै तुणियत्तॊडु वडिवाय्मऴु वुडयाऩ् 1351

अयिर् तुऱ्ऱिय–बारीक बालुओं से भरे; कटल् मा निलम् अटैय–समुद्र से वलयित इस भूतल भर में; तऩि पटरुम्–अपनी समानता न रखते हुए छानेवाली; चॅयिर् चुऱ्ऱिय–और क्रोधशील; पटैयाऩ्–सेना वाले; अटल् मऱम् मऩ्ऩवर् तिलकऩ्–वीरता और साहस से भरे राजाओं में तिलक (कार्त्तवीर्य-सहस्रार्जुन) को; उयिर् उऱ्ऱतु ओर् मरम् आम् ॲऩ–जीवित वृक्ष के समान बनाते हुए; ओर् आयिरम् उयर् तोळ् वयिरम् पणै–एक सहस्र हस्तरूपी वज्र (सम) शाखाओं को; तुणिय–काटने को; तॊटु–चलाये गये; वटिवाय् मऴु उटैयाऩ्–तीक्ष्ण मुख वाले परशु के रखनेवाले । १३५१

कार्तवीर्य वीरतापूर्ण और साहसी राजाओं में तिलक (सर्वश्रेष्ठ) था । उसकी क्रोधी सेना, बारीक बालुओं से युक्त इस समुद्र से वलयित भूतल पर कहीं भी बेरोकटोक छा जाने की शक्ति रखती थी । इस कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) ने परशुराम के पिता जमदग्नि के पास उनकी कामधेनु चुरा ली । इस अपराध से क्रुद्ध होकर परशुराम ने ऐसे प्रतापी कार्तवीर्य की सेना का नाश किया और उसकी विशाल और उन्नत भुजाओं को शाखाओं की तरह अपने परशु की तीक्ष्ण धार से काट गिराया और उसे शाखाहीन कर जीवित ठूँठ के समान बना दिया । ऐसे धारदार परशु के धारक आये । १३५१

निरुबर्क्कॊरु पऴिपऱ्ऱिड निलमऩ्ऩवर् कुलमुम्
करुवऱ्ऱिड मऴुवाळ्कॊडु कळैकट्टुयर् कवरा
इरुबत्तॊरु पडिहालिमिऴ् कडलॊत्तलै यॆऱियुम्
कुरुदिप्पुऩ लदऩिऱ्पुह मुऴुहित्तऩि कुडैवाऩ् 1352

निरुपर्क्कु–(क्षत्रिय) राजाओं को; ऒरु पऴि पऱ्ऱिट–एक अपयश हो जाय, ऐसा; निलम् मऩ्ऩवर् कुलमुम्–भूपति कुल, सारा; करु अऱ्ऱिट–निर्मूल नष्ट करके; मऴु वाळ् कॊटु–परशु के अस्त्र से; इरुपत्तॊरु काल् पटि–इक्कीस पीढ़ियों तक;

उयिर् कवरा–प्राणहरण कर; कळै कट्टु–(भूपों का) कलंक मिटाकर; इमिळ् कटल् ऑत्तु–गर्जनशील सागर से तुलकर; अलै ॲऱियुम्–तरंग उछालनेवाले; कुरुति पुऩल् अतऩिल्–रक्त के जल में; पुक मुळ्ुकि–खूब पैठकर मग्न होकर; तऩि कुटैवाऩ्–अकेले (अभूतपूर्व रीति से) जिन्होंने स्नान किया वे। १३५२

(परशुराम के काम से कार्तवीर्य के पुत्रों को गुस्सा आया और उन्होंने परशुराम की अनुपस्थिति में जमदग्नि को मार दिया। जमदग्नि की पत्नी रेणुका अत्यन्त दुःखिता होकर इक्कीस बार छाती पीटकर रोयीं। इससे प्रभावित परशुराम ने बदला लेने के लिए, इक्कीस पीढ़ियों तक के भूपालों को मारने का निश्चय किया।) तदनुसार— परशुराम ने भूपति राजाओं को इक्कीस पीढ़ियों तक मारकर, राजाओं को अपयश दिलाते हुए भू पर से राजारूपी कलंक को धुला दिया। फिर उन मृत राजाओं के शरीरों के रक्त से जो तरंगायमान सागर के समान रक्त का विस्तार बना उसमें उतरकर गोते लगाये। यह अभूतपूर्व अनोखा स्नान करनेवाले (आये)। १३५२

कमैयॊप्पदोर् तवमुञ्जुडु कनलॊप्पदोर् शिऩमुम्
शमैयप्पॆरि दुडैयाऩॆऱि तळ्ळुऱ्ऱॆदिर् तळरुम्
अमॆयत्तयर् पऱवैक्किऩि दाऱाम्वहै शीऱाच्
चिमैयक्किरि युरुवत्तऩि वडिवाळिह डॆरिवाऩ् 1353

कमै ऑप्पतु ओर् तवमुम्–मूर्तिमान क्षमा बनने योग्य श्रेष्ठ तपस्या; चुटु कऩल् ऑप्पतु–जलानेवाली आग-सा; ओर् चित्तमुम्–अपार कोप; चमैय–दोनों को एक साथ युक्त; पेरितु उटैयाऩ्–अधिक परिमाण में रखनेवाले; उयर् पऱवैक्कु–श्रेष्ठ (हंस) पक्षियों के; ऍतिर् नॆऱि तळ्ळुऱ्ऱु–सामने के मार्ग के अवरोध से; तळरुम् अमैयत्तु–श्रांत होते समय; आऱु इऩितु आम् वकै–मार्ग सुखावह हो, ऐसा; चीऱा–कुपित हों; चिमैयम् किरि उरुव–ऊँचे शिखर वाले पर्वत (क्रौंच पर्वत) के मध्य से निफरते हुए जानेवाले; तऩि वटि वाळिकळ्–विशिष्ट तीक्ष्ण शरों को; तॆरिवाऩ्–चुनकर जिन्होंने चलाया, वे। १३५३

उनकी तपस्या उनकी धृति और क्षमा का ज्वलन्त उदाहरण थी। वह उनमें खूब थी। साथ-साथ अग्निसम क्रोध भी उनमें था। यह अनोखा सामंजस्य उनमें था। एक बार सामने मार्ग को अवरुद्ध पाकर संकट में पड़े हुए श्रेष्ठ हंसों को मार्ग बनाने के लिए परशुराम ने उन्नत शिखरों वाले क्रौंच पर्वत को बेधनेवाले अनुपम तीक्ष्ण शर छोड़े थे। [सन्दर्भ इस प्रकार है— परशुराम और कार्तिकेय (षणमुख) दोनो ने श्री शिवजी के पास धनुर्विद्या सीखी। क्रौंच पर्वत को बेधने की परीक्षा हुई। षणमुख हारे और परशुराम जीत गये। तब उस पर्वत के दक्षिण में रहने वाले हंसों को अपनी इच्छा के अनुसार उत्तर में स्थित मानसरोवर जाने

को मार्ग मिल गया। इसके बाद झुंझलाकर षणमुख ने अपनी शक्ति (भाले) से उस पर्वत को ही खण्ड-खण्ड तोड़ दिया।] ऐसे शर चलानेवाले परशुधर आये। १३५३

शैयम्बुह निमिरक्कड ऱऴुवुम्बडि शमैवाऩ्
मैयिऩ्ऩुयिर् मलैनूऱिय मऴुवाळवऩ् वऩ्दाऩ्
ऐयऩ्ऱऩै यरिदिऱ्ऱरु मरशऩ्ऩदु कण्डाऩ्
वॆय्यऩ्वर निबमॆऩ्ऩैहॊ लॆऩवॆय्दुऱु मॆल्लै 1354

चैयम् पुक–पर्वतों को अपने अन्दर समा लेते हुए; निमिर् अ कटल्–उछलनेवाले समुद्र से भी; तऴुवुम्पटि चमैवाऩ्–जिन्होंने अपनी आज्ञा मनवाई; मैयिऩ् उयर् मलै–मेघमण्डल तक उन्नत (क्रौंच) पर्वत का; नूऱिय–(गर्व) तोड़नेवाले; मऴुवाळ् अवऩ्–परशुधर (परशुराम); वऩ्ताऩ्–आ रहे थे; ऐयऩ् तऩै–नायक (श्रीराम को); अरितिल् तरुम् अरचु–बहुत असाधारण रूप से (तपस्या करके क्लेश आदि सहकर) जिन्होंने जन्म दिया था उन चक्रवर्ती ने; अऩ्ऩतु कण्टाऩ्–उनका वैसा आना देखा; वॆय्यऩ्–क्रूर, इनके; वर–अब आने का; निपम् ऎऩ्ऩै कॊल् ऎऩ–कारण क्या है, यह सोचकर; वॆय्तुऱुम् ऎल्लै–शोकपूर्ण हुए, तब। १३५४

परशुराम का प्रताप असीम था। उन्होंने पर्वत को अपने अन्दर समा लेनेवाले समुद्र से भी अपनी आज्ञा मनवा ली थी। (सन्दर्भ यों है—परशु उनका विशिष्ट हथियार था जो उन्हें शिवजी से मिला था। राजाओं को मारकर भूमि जो ग्रहण की गयी, उसको परशुराम ने काश्यप ऋषि को दान कर दी। बाद उन्होंने यह सोचा कि उनके राज्य में रहना अनुचित है। इसलिए उन्होंने पर्वत पर चढ़कर अपना परशु समुद्र में फेंका। जहाँ परशु गिरा वहाँ तक भूमि निकल आयी और समुद्र उससे बाहर हट गया। वह परशुरामक्षेत्र कहलाया— जो आज का केरल बताया जाता है।) ऐसे समुद्रशासक और (क्रौंच-) पर्वतगर्वभंजक परशुधर उनके सामने आये। चक्रवर्ती ने उनको आते देखा तो, प्रभु श्रीराम को बहुत कष्ट के बाद पुत्र के रूप में प्राप्त करनेवाले दशरथ दहल उठे। क्रूर, ये परशुराम, अब क्यों इधर आते हैं ? कारण क्या हो सकता है ? वे बहुत चिंतित हुए। १३५४

पॊङ्गुम्बडै यिरियक्किळर् पुरुवङ्गडै नॆरिय
वॆङ्गण्पॊऱि शिदऱक्कडि दुरुमेऱॆऩ विडैयाच्
चिङ्गम्मॆऩ वुयर्देर्वरु कुमरऩ्ऩॆदिर् शॆऩ्ऱाऩ्
अङ्गण्णऴ हऩुमिङ्गिव ऩारोवॆऩु मऴविल् 1355

पॊङ्कुम् पटै–(चक्रवर्ती की) विपुल सेना को; इरिय–(भय से) भगाते हुए; किळर् पुरुवम्–ऊपर उठी भौंहों को; कटै नॆरिय–छोरों पर टेढ़ी करते हुए; वॆम् कण्–कठोर आँखों से; पॊऱि चितऱ–अंगारे बरसाते हुए; उरुम् एऱु ऎऩ–अशनि के

समान; कटितु विटैया–अत्यधिक क्रोध के साथ अकड़कर; उयर् तेर्–उन्नत रथ पर; चिङ्कम् अॅन्न वरु–सिंह सदृश आनेवाले; कुमरन् अॅतिर् चॅन्ऱान्–कुमार (श्रीराम) के सामने गये; अङ्कण्–तब; अऴकनुम्–सुन्दरमूर्ति भी; इङ्कु इवन् आरो–यहाँ आनेवाले ये कौन हैं; अॅन्नुम् अऴवित्–सोचते समय। १३५५

तब उनकी विपुल सेना भयभीत होकर भागने लगी। परशुराम की भौंहें टेढ़ी हो गयीं। आँखों से अंगारे निकल आये। अशनि के समान क्रोध दिखाते हुए वे उन्नत रथ पर आसीन हो सिंह-समान आनेवाले राजकुमार श्रीराम के सामने गये। श्रीराम सोचने लगे कि इधर अब ये कौन आये ? तब। १३५५

अरैशन्नव   निडैवन्दिनि   दारादनै   पुरिवान्
विरैशॅय्मुडि   पडिमेलुऱ   वडिमीदिनिल्   विऴवुम्
करैशॅन्ऱिल   ननैयान्ऩॅडु   मुडिविन्कनल्   काल्वान्
मुरैशिन्कुरल्   पडवीरन्   दॅदिर्निन्ऱिवै   मॊऴिवान् 1356

अरैचु–चक्रवर्ती ने; अन्नवन् इटै वन्तु–उन (परशुराम) के पास आकर; इन्तितु आरातनै पुरिवान्–खूब संस्तुति करते हुए; विरै चॅय् मुटि–सुवासित अपने सिर को; पटि मेल् उऱ–भूमि पर लगाते हुए; अटि मीतिनिल्–उनके चरणों पर; विऴवुम्–गिरकर नमस्कार किया, तब; अन्नैयान्–(परशुराम) वे; करै चॅन्ऱिलन्–कोप पार नहीं गये (गुस्सा नहीं छोड़ा); नॅटु मुटिविन्–कल्पान्त की-सी; कनल् काल्वान्–अग्नि बरसाते हुए; वीरन्तु अॅतिर् निन्ऱु–वीर (राघव) के सामने खड़े होकर; मुरैचिन् कुरल् पट–ढोल के स्वर में; इवै मॊऴिवान्–ये बातें कहने लगे। १३५६

चक्रवर्ती दशरथ परशुराम के पास आये। खूब संस्तुति करके उनके पैरों पर गिरे। तब भी परशुराम का क्रोध शान्त नहीं हुआ। वे कल्पांत की अग्नि के समान आग उगलते हुए, वीर श्रीराम के सामने जा खड़े हुए और ढोल के नाद के समान उच्च स्वर में ये बातें कहीं। १३५६

इऱ्ऱोडिय   शिलैयिन्ऱिऱ   मऱिवेनिनि   यानुन्
पॊऱ्ऱोऴ्वलि   निलैशोदनै   पुरिवानशै   युडैयेन्
शॅऱ्ऱोडिय   तिरडोऴुऱु   तिनवुऩ्जिऱि   दुडैयेन्
मऱ्ऱोर्पॊरु   ऴिलैयिङ्गिदॅन्   वरवॅन्ऱन   नुरवोन् 1357

उरवोन्–बलिष्ठ परशुराम ने; इऱ्ऱु ओटिय चिलैयिन् तिऱम्–टूट गया (जो) उस धनु की प्रकृति; यान् अऱिवॅन्–मैं जानता हूँ; इनि–अब; उन् पॊन् तोऴ्–तुम्हारे शोभायमान हाथों की; वलि निलै–शक्ति की स्थिति; चोतनै पुरिवान्–परीक्षा करने की; नचै उटैयेन्–इच्छा रखता हूँ; चॅऱ्ऱु ओटिय–(राजाओं को) हराकर बढ़े हुए; तिरळ् तोऴ्–पुष्ट मेरे कन्धों की; उऱु तिनवुम्–उठी हुई खुजली भी (युद्ध-लिप्सा); चिऱितु उटैयेन्–थोड़ा रखता हूँ; इङ्कु अॅन् वरवु इतु–यहाँ मेरा आना इसी हेतु है; मऱ्ऱु ओर् पॊरुळ् इलै–दूसरा कोई कारण नहीं; अॅन्ऱनन्–कहा। १३५७

बलिष्ठ परशुराम बोले। "हे राम! जो धनु तुम्हारे हाथ के लगते ही टूटकर गिर गया उसकी सच्ची स्थिति मैं जानता हूँ। (वह पहले ही टूटा हुआ था।) अब मैं तुम्हारी मनोरम भुजाओं के बल की परीक्षा लेने की इच्छा रखता हूँ। साथ-साथ अनेक राजाओं को हराकर बढ़ी हुई मेरी भुजाओं में खुजली (युद्धलिप्सा) थोड़ा पैदा हो गई है। यही मेरे इधर आने का कारण है। दूसरा कोई नहीं।"। १३५७

अवऩ्ऩदु पहरुम्मळ वयिऩ्मऩ्ऩव ऩयर्वाऩ्
पुवऩम्मुऴु वदुम्वॅऩ्ऱॉरु मुऩिवऱ्करुळ् पुरिवाय्
शिवऩुम्मय ऩरियुम्मलर् शिऱुमाऩिडर् पॉरुळो
इवऩुम्मॅऩ दुयिरुम्मुऩ दबयम्मिऩि यऩ्ऱाऩ् 1358

अवऩ्–उन (परशुराम) के; **अऩ्ऩतु पकरुम् अळवैयिऩ्**–वह कहते समय; **मऩ्ऩवऩ्**–चक्रवर्ती ने; **अयर्वाऩ्**–दुखी होकर; **पुवऩम् मुऴुवतुम् वॅऩ्ऱु**–भुवन भर जीतकर; **ऑरु मुऩिवऱ्कु अरुळ् पुरिवाय्**–एक मुनि के पास देने की कृपा करनेवाले कृपालू; **चिवऩुम्**–शिवजी; **अयऩ् अरियुम्**–अज और हरि भी; **अलर्**–(आपके सामने कोई पदार्थ) नहीं होंगे तो; **चिऱु माऩिटर् पॉरुळो**–छोटे मनुष्य कोई पदार्थ होंगे क्या; **इऩि**–अब; **इवऩुम्**–यह (बालक) और; **ऍऩतु उयिरुम्**–मेरे प्राण; **उऩतु अपयम्**–आपके अभयदान के प्रार्थी हैं; **ऍऩ्ऱाऩ्**–कहा। १३५८

जब वे श्रीराम से ऐसा कह रहे थे तब दशरथ को वह सुनकर बहुत भय और दुख हुआ। उन्होंने परशुराम से विनय की। "आपने सारी भूमि जीतकर एक महर्षि को दान में देने की कृपा की थी। ऐसे कृपालू हैं आप! शिवजी, ब्रह्माजी और विष्णुदेव भी आपके सामने कोई वस्तु नहीं तो हम जैसे छोटे मनुष्य क्या हो सकते हैं? अब ये बालक श्रीराम और मेरे प्राण आपके अभयदान के याचक हैं। १३५८

विळिवार्विळि वदुतीविऩै विऴैवारुऴै यऩ्ऱो
कळियालिव ऩयर्हिऩ्ऱवु मुळवोकऩ लुमिऴम्
ऑळिवाय्मऴु वुडैयाय्पॉर वुरियारिडै यल्लाल्
ऍळियारिडै वलियार्वलि यॅऩ्ऩाहुव दॅऩ्ऱाऩ् 1359

कऩल् उमिऴुम्–अग्निवर्षक; **ऑळि वाय् मऴु उटैयाय्**–बहुत उज्ज्वल परशु के धारक; **विळिवार् विळिवतु**–क्रोधशीलों का क्रोध करना; **तीविऩै**–अपराध; **विऴैवार् उऴै अऩ्ऱो**–इच्छा के साथ करनेवालों के प्रति (न) होना चाहिए; **इवऩ्**–इस (राम) के; **कळियाल्**–(विद्या, धन, बल आदि के) मद के कारण; **अयर्किऩ्ऱवुम्**–भूल से किये हुए; **उळवो**–(अपराध) हैं क्या; **वलियार् वलि**–बलवान का बल; **पॉर उरियार् इटै अल्लाल्**–सामना कर सकनेवालों के प्रति नहीं तो; **ऍळियार् इटै**–बलहीनों के प्रति; **ऍऩ् आकुवतु**–किस काम का; **ऍऩ्ऱाऩ्**–कहा। १३५९

"अग्निवर्षक, उज्ज्वल परशुधर! क्रोधशील मनुष्य उन्हीं पर क्रोध

करते हैं जो गम्भीर अपराध जान बूझकर करते हैं। क्या इस बालक के हाथ, (धन, यौवन, बल, विद्या, इनके) मद के कारण अनजाने कोई अपराध हो गया है? बली लोग अपना पराक्रम उन्हीं लोगों पर प्रयोग करते हैं जो उनसे टकराने का सामर्थ्य रखते हैं। निर्बलों पर बल प्रयोग का क्या महत्त्व या मूल्य रह जायगा ? । १३५९

नऩिमादव मुडैयायिदु पिडिनीयॆऩ्ऩ नल्हुम्
तऩिनायह मुलहेऴैयु मुडैयायिदु तविराय्
पऩिवार्कडल् पुडैशूऴ्पडि नरपालरै यरुळा
मुऩिवाऱिऩै मुऩिहिऩ्ऱदु मुऱैयोवॆऩ्ऩ मॊऴिवाऩ् 1360

नऩि मातवम् उटैयाय्–अति महान तपस्वी; **इतु पिटि नी**–आप इसे ग्रहण कर लें; **ऎऩ्ऩ**–कहकर; **उलकु एऴैयुम्**–(काश्यप के पास) सातों लोकों को; **नल्कुम्**–दान करनेवाले; **तऩि नायकम् उटैयाय्**–अद्वितीय नेतृत्व वाले; **इतु तविराय्**–यह (कोप) छोड़ दीजिए; **पऩि वार् कटल्**–शीतल और विशाल समुद्र से; **पुटै चूऴ् पटि**–वलयित इस भूतल पर के; **नरपालरै अरुळा**–नृपों के प्रति दया करके; **मुऩिवु आऱिऩै**–कोप शांत कर लिया; **मुऩिकिऩ्ऱतु**–अब क्रोध करना; **मुऱैयो**–उचित है क्या; **ऎऩ्ऩ**–कहकर; **मॊऴिवाऩ्**–आगे बोले । १३६०

"बहुत बड़े तपस्वी ! आपने काश्यप को, 'यह आप ग्रहण कीजिए', कहकर सातों लोकों को दान में दिया था। ऐसे नेता हैं आप ! आपको यह कोप शोभा नहीं देता। आप यह क्रोध त्याग दें। शीतल समुद्र जिसके चारों ओर घेरे हुए हैं उस भूमि पर के पालकों पर आपने कृपा की थी। आपने अपना क्रोध शान्त कर लिया था। ऐसे आपका अब श्रीराम पर क्रोध करना उचित है क्या ?" राजा ने इतना कहकर आगे भी कहा। १३६०

पुऱऩिऩ्ऱव रिहऴुम्बडि नडुविऩ्ऱलै पुणरात्
तिऱऩिऩ्ऱुयर् वलियॆऩ्ऩदो ऱऱऩिऩ्ऱहु शॆयलो
अऱऩिऩ्ऱद ऩिलैनिऩ्ऱुयर् पुहऴॊऩ्ऱुव दऩ्ऱो
मऱऩॆऩ्बदु मऱवोयिदु पऴियॆऩ्बदु मदियाय् 1361

मऱवोय्–पराक्रमी; **पुऱऩ् निऩ्ऱवर्**–आस-पास रहनेवाले; **इकऴुम् पटि**–निंदा करें, ऐसा; **नटुविऩ् तलै पुणरा तिऱऩ् निऩ्ऱु**–तटस्थता से अयुक्त स्थिति में रहकर; **उयर् वलि ऎऩ्**–उससे बढ़नेवाले बल की क्या महिमा है; **अतु**–वह (बल-प्रदर्शन); **ओर् अऱत्तिऩ् तकु चॆयलो**–धर्मोचित एक काम है क्या; **मऱऩ् ऎऩ्पतु**–वीरता; **अऱऩ् निऩ्ऱ तऩ् निलै निऩ्ऱु**–धर्म सम्मत स्थिति में रहकर; **उयर् पुकऴ् ऒऩ्ऱुवतु अऩ्ऱो**–उत्कृष्ट यश की प्राप्ति नहीं क्या; **इतु**–यह (जो आप करने जाते हैं); **पऴि**–निन्द्य कर्म है; **ऎऩ्पतु**–यह; **मतियाय्**–सोचिए । १३६१

"पराक्रमी ! पास रहनेवालों की निन्दा का विषय बनकर, तटस्थता

के विपरीत गति में जाकर बढ़े हुए बल की क्या महिमा है ? ऐसा करना क्या धर्मोचित काम होगा ? क्या सच्ची वीरता वह नहीं है जो धर्मसम्मत मार्ग पर जाकर उत्कृष्ट कीर्ति प्राप्त करे ? यह, जो आप करने जाते हैं, निन्द्य काम है, समझ लीजिए । १३६१

शलत्तोडियै विलत्तॆऩ्मह ऩत्तैयाऩुयिर् तबुमेल
उलत्तोडॆदिर् तोळायॆऩ दुऱ्वोडुयि रुहुवेऩ्
निलत्तोडुय रहल्वाऩुऱ नॆडियायुऩ दडियेऩ्
कुलत्तोडऱ मुडियेलिदु कुऱैकॊण्डऩॆ ऩॆऩ्ऱाऩ् 1362

उलत्तोटु ऎतिर् तोळाय्–पत्थर के खम्भे की टक्कर के कन्धे वाले; निलत्तोटु–इस भूमि के साथ; उयर् अकल् वाऩ् उऱ–उन्नत, विशाल आकाश तक व्याप्त; नॆटियाय्–दीर्घ यश के स्वामी; ऎऩ् मकऩ्–मेरा पुत्र; चलत्तोटु इयैवु इलऩ्–आपके साथ शत्रुता से सम्बन्ध नहीं रखता; अत्तैयाऩ् उयिर् तपु मेल्–उसकी जान जायगी तो; ऎऩ्तु उऱ्वोटु–अपने (पितृत्व) के नाते; उयिर् उकुवेऩ्–प्राण भी त्याग दूँगा; उऩ्तु अटियेऩ्–आपका दास, मुझे; कुलत्तोटु–कुल के साथ; अऱ मुटियेल्–निर्मूल करते हुए उसको मत मारिए; इतु कुऱै कॊण्टऩऩ्–यह विनय याचना करता हूँ। १३६२

"स्थूल प्रस्तर के खम्भे से टक्कर लेनेवाले कंधों के बलशाली ! भूतल के साथ आकाश में भी व्याप्त कीर्तिमान ! मेरा पुत्र आपसे शत्रुता का कोई सम्बन्ध नहीं रखता । उसकी जान चली जायगी तो उसके पिता के नाते मैं भी अपने प्राण त्याग दूँगा । आप उसको मारकर, आपके दास, मुझे मेरे कुल के साथ मत मिटाइये । यही आपसे मेरी याचना है ।" । १३६२

ऎऩ्ऩावडि विऴुवाऩैयु मिहऴावॆरि विऴियाप्
पॊऩ्ऩार्शिलै युरबोऩॆदिर् पुहुवाऩिलै युणरात्
तऩ्ऩालॊरु शॆयलिऩ्मयै निऩैयावुयिर् तळरा
मिऩ्ऩालयर् वुऱुवाळर वॆऩवॆऩ्दुय रुऱ्ऱाऩ् 1363

ऎऩ्ऩा–यह सब कहके; अटि विऴुवाऩैयुम्–चरणों पर पड़नेवाले का; इकऴा–अनादर करके; ऎरि विऴिया–आग्नेय दृष्टि के साथ तरेरकर; पॊऩ् आर् चिलै–सुन्दर, विशिष्ट धनु के; उरवोऩ् ऎतिर्–शक्तिमंत वीर के सामने; पुकुवाऩ् निलै–जानेवाले की मनोगति को; उणरा–समझकर; तऩ्ताल् ऒरु चॆयल् इऩ्मैयै–अपने से कुछ न होगा, इस लाचारी को; निऩैया–(सोच-) जानकर; उयिर् तळरा–विकल प्राण हो; मिऩ्ऩाल् अयर्वु उऱुम्–वज्रपात से शिथिल होनेवाले; वाळ् अरवु ऎऩ–उज्ज्वल साँप के समान; वॆम् तुयर् उऱ्ऱाऩ्–कठोर दुख से पीड़ित हुए । १३६३

ऐसा कहते हुए दशरथ उनके चरणों पर पड़े । लेकिन परशुराम ने उसकी उपेक्षा कर दी । आग्नेय आँखों से तरेरते हुए परशुराम सुन्दर और श्रेष्ठ धनुष के प्रतापी श्रीराम के सामने जाने लगे । उनकी मनोगति

दशरथ पर प्रकट हो गयी। उनको लगा कि अब हमारे किये कुछ नहीं हो सकता। इसलिए विकल-प्राण होकर दशरथ वज्राहत उज्ज्वल सर्प के समान अत्यन्त भयंकर पीड़ा का अनुभव करने लगे। १३६३

माऩम्मणि मुडिमन्ऩवऩ् मदिशोरवु मदियाऩ्
ताऩन्निलै यऴिवाऩुऱु विऩैयुण्डदु तविराऩ्
आऩम्मुडै युमैयण्णलै यन्नाळुऱु शिलैताऩ्
ऊऩम्मुळ ददऩ्मॆय्न्नॆऱि केळॆऩ्ऱुरै पुरिवाऩ् 1364

माऩम् अणि–गौरव को आभूषण माननेवाले; मुटि मऩ्ऩवऩ्–चक्रवर्ती के; मति चोरवुम्—सुध-बुध खोने की भी; मतियाऩ्–गणना नहीं करते; ताऩ् अ निलै–खुद की उन्नत स्थिति को; अऴिवाऩ् उऱु–मिटाने के लिए प्रबुद्ध; विऩै उण्टतु–प्रारब्ध के ग्रास को; तविराऩ–निवारित कर न सकनेवाले; आऩम् उटै–आनक (डमरू) धारी; उमै अण्णलै–उमापति श्रीशिवजी के पास; अ नाळ् उऱु चिलै–कभी का रहा वह धनुष; ऊऩम् उळतु–भग्न था; अतऩ् मॆय् नॆऱि–उसकी सच्ची गति; केळ्–सुनो; ऎऩ्ऱु–कहकर; उरै पुरिवाऩ्–कहने लगे। १३६४

गौरव को ही आभरण माननेवाले चक्रवर्ती अपनी सुध-बुध खोकर गिर गये। परशुराम ने उसकी बिल्कुल परवाह नहीं की। उनको उनकी सम्मान्य स्थिति से नीचे गिराने का संकल्प लेकर प्रारब्ध क्रियाशील होने लगा था। परशुराम ने उससे बचने का उपाय भी नहीं किया। वे श्रीराम से बोले— "(आनक) डमरूधारी उमानाथ श्री शिवजी के हाथ में जो धनुष उन प्राचीन दिनों में था, वह भग्न हो चुका था। उसका सच्चा वृत्तान्त सुनाता हूँ। सुनो।" १३६४

ऒरुकाल्वरु कदिरामॆऩ वॊळिकाल्वऩ वुलैया
वरुकार्तवऴ् वडमेरुविऩ् वलिशाल्वऩ मऩ्ऩाल्
अरुहाविऩै पुरिवाऩुळ ऩवऩ्ऩालमै वऩवाम्
इरुकार्मुह मुळयावयु मेलादऩ मेऩाळ् 1365

ऒरु काल् वरु कतिर् आम् ऎऩ–एकचक्र रथ पर आनेवाले सूर्य के समान; ऒळि काल्वऩ–कांति बिखेरनेवाले; वरुकार् तवऴ्–अधिक मेघों से व्याप्त; वट मेरुविऩ्–उत्तर के मेरुपर्वत के समान; उलैया वलि चाल्वऩ–अचल कठोरता से युक्त; यावैयुम् एलातऩ–अन्य किसी भी धनुष की समानता को न सह सकनेवाले (अनुपम); मऩ्ऩाल्–मन के संकल्प से ही; अरुका विऩै पुरिवाऩ् उळऩ्–त्रुटिहीन निर्माण कार्य करनेवाले; अवऩ्ऩाल्–उस (विश्वकर्मा) के द्वारा; अमैवऩ आम्–निर्मित; इरु कारमुकम्–दो कार्मुक; मेल् नाळ् उळ–प्राचीनकाल से रहते हैं। १३६५

"प्राचीनकाल में दो कार्मुक थे। दोनो एकचक्ररथ वाले सूर्य के समान कान्तिमय थे। मेघों से आवृत्त मेरु के समान, जो उत्तर में है, अचल दृढ़ता और बल रखनेवाले थे। कोई भी अन्य धनुष इनकी

समानता नहीं कर सकता था। विश्वकर्मा ने, जिनके संकल्प मात्र से निर्माण कार्य हो जाते थे, इनको निर्मित किया था। १३६५

ऑऩ्ऱिऩै युमैयाळ् केळ्व ऩुहन्दऩऩ् मऱ्ऱै यॊऩ्ऱै
निऩ्ऱुल हळन्द नेमि नॆडियव ऩॆऱियिऱ् कॊण्डाऩ्
ॲऩ्ऱिदु वुणर्न्द विण्णो रिरण्डिऩुम् वऩ्मै यॆय्दुम्
वॆऩ्ऱिय दियाव दॆऩ्ऱु विरिज्जऩै विऩव वऩ्नाळ् 1366

ऑऩ्ऱिऩै–(उन में) एक को; उमैयाळ् केळ्वऩ्–उमानाथ ने; उकन्तऩऩ्–पसन्द कर लिया; मऱ्ऱै ऑऩ्ऱै–दूसरे (एक) को; निऩ्ऱु उलकु अळन्त–ऊँचे बनकर जिन्होंने लोकों को नापा; नेमि नॆटियवऩ्–उन चक्रधारी त्रिविक्रम देव ने; नॆऱियिऩ्–क्रम के अनुसार; कॊण्टाऩ्–(अपने लिए) लिया; ॲऩ्ऱ इतु–इससे; उणर्न्त विण्णोर्–अवगत देवों ने; इरण्टिऩुम्–इन दो में; वऩ्मै ॲय्तुम् वॆऩ्ऱियतु–बल से प्राप्य विजयशील; यावतु ॲऩ्ऱु–कौन होगा, यह; विरिञ्चऩै विऩव–ब्रह्मा से पूछा; अऩ्नाळ्–उस समय। १३६६

"उन दो में एक को उमानाथ शिवजी ने पसंद करके ले लिया। जो बचा रहा उस दूसरे धनुष को लोकमापक त्रिविक्रमदेव ने क्रमागत प्रकार से अपने लिए लिया। देवों ने यह वृत्तान्त जाना तो ब्रह्माजी के पास जाकर पूछा कि इन दो में अपने बल-पराक्रम के कारण कौन-सा धनुष विजयशील होगा ? । १३६६

शीरिदु तेवर् तङ्गळ् शिन्दऩै यॆऩ्ब दुऩ्ऩि
वेरियङ् गमलत् तोऩ्ऩु मियैवदोर् विनयन् दऩ्ऩाल्
यारिऩु मुयर्न्द मूलत् तॊरुवरा मिरुवर् तम्मै
मूरिवॆञ् जिलैमे लिट्टु मॊय्यमर् मूट्टि विट्टाऩ् 1367

वेरि अम् कमलत्तोऩुम्–सुवासपूर्ण कमल पर आसीन ब्रह्मा ने भी; तेवर् तङ्कळ्–देवों का; चिन्तऩै चीरितु ॲऩ्पतु उऩ्ऩि–विचार श्रेष्ठ है, यह मानकर; इयैवतु ओर् विऩयम् तऩ्ऩाल्–युक्त एक उपाय द्वारा; यारिऩुम् उयर्न्त–सर्वश्रेष्ठ; मूलत्तु ऑरुवर् आम्–मूल में एक जो; इरुवर् तम्मै–(स्थिति आदि कार्य के कारण) दो रूप हैं उनके बीच; मूरि वॆम् चिलै मेल् इट्टु–सुदृढ़ भयंकर धनुषों के बहाने; मॊय् अमर् मूट्टि विट्टाऩ्–प्रबल युद्ध आयोजित करा दिया। १३६७

"कमलासन ब्रह्मा ने भी सोचा कि देवों का प्रश्न ठीक है। इसलिए उन्होंने एक सफल उपाय किया। उससे उन दो देवों के बीच, जो मूल में (कारण रूप में) एक थे पर कार्य रूप में दो ईश्वर थे उन (सारयुक्त) बलवान और भयंकर धनुषों के व्याज से घमासान युद्ध छिड़ गया। १३६७

इरुवरु मिरण्डु विल्लु मेऱ्ऱिऩ रुलह मेऴुम्
वॆरुवर तिशैहळ् पेर वॆङ्गऩल् पॊङ्ग मेऩ्मेल्

शरुमलै हिऩ्ऱ पोदु तिरिपुर मॅरित्त तेवऩ्
वरिशिलै यिऱ्ऱदाह मऱ्ऱवऩ् मुत्तिऩ्दु मऩ्ऩो 1368

इरुवरुम्–दोनो (शिव और विष्णु) ने; इरण्टु विल्लुम् एऱ्ऱित्तर्–दोनो धनुषों पर प्रत्यंचा चढ़ाई; उलकम् एऴुम् वॆरुवर–सातों लोक भयभीत हुए, ऐसा; तिचैकळ् पेर–दिशाएँ अस्त-व्यस्त हों, ऐसा; वॆम् कत्तल् मेल् मेल् पॊङ्क–भयंकर (कोप) ज्वालाओं के उत्तरोत्तर बढ़ते; चॆरु मलैकिऩ्ऱपोतु–(जब वे दोनों) निरन्तर लड़ते रहे, तब; तिरिपुरम् ऎरित्त तेवऩ्–त्रिपुरदाहक देव (शिवजी) का; वरिचिलै–बन्धनयुक्त धनुष; इऱ्ऱतु आक–भग्न हो गया; मऱ्ऱु–उस पर; अवऩ् मऩ् मुत्तिऩ्तु–रुद्र बहुत गुस्सा करके। १३६८

"दोनो ने अपना-अपना धनुष झुकाकर प्रत्यंचा चढ़ायी। सातों लोक भयभीत हो गये। दिशाएँ चंचल हुईं। उनकी कोपाग्नि उत्तरोत्तर बढ़ती गई। ऐसा भयंकर युद्ध हो रहा था। तब त्रिपुर-दाहक शिवजी का धनुष भग्न हो गया। रुद्र को उस पर अपार कोप हुआ। १३६८

मीट्टुम्बोर् तॊडङ्गुम् वेलै विण्णवर् विलक्क वल्विल्
नीट्टिऩऩ् ऱेवर् कोऩ्गै नॅऱ्ऱियिऱ् कण्णऩ् वीरम्
काट्टिय करिय मालुङ् गार्मुह मदऩैप् पारिल्
ईट्टिय तवत्तिऩ् मिक्क बिरिशिहऱ् कीऩ्दु पोऩाऩ् 1369

मीट्टुम् पोर् तॊटङ्कुम् वेलै–जब फिर से युद्ध प्रारम्भ करने लगे; विण्णवर् विलक्क–देवों ने रुकवा दिया; नॅऱ्ऱियिल् कण्णऩ्–भालनेत्र (शिवजी); वल् विल्–बलयुक्त उस धनुष को; तेवर् कोऩ् कै नीट्टिऩऩ्–देवेन्द्र के हाथ में बढ़ाया (दिया); वीरम् काट्टिय करिय मालुम्–वीरताप्रदर्शक श्यामल विष्णु; कार्मुकम् अतऩै–(अपने) कार्मुक, उसको; पारिल्–भूलोक में; ईट्टिय तवत्तिल् मिक्क–अर्जित तपस्या के धनी; इरिचिकऱ्कु–ऋचीक को; ईऩ्तु पोऩाऩ्–देकर चले। १३६९

"वे आगे फिर से युद्ध करने निकले। तब देवों ने बीच में पड़कर युद्ध रुकवा दिया। तब भालनेत्र रुद्रदेव ने अपना धनुष देवेन्द्र के हाथ में दे दिया। वीरता प्रदर्शित करनेवाले श्यामवर्ण श्री विष्णुदेव ने अपने कामुक को लोक भर में कीर्तिप्राप्त और तपस्या में सर्वश्रेष्ठ ऋचीक के पास देकर विदा ली। १३६९

इरिशिह ऩॅन्दैक् कीय वॆन्दयु मॆऩक्कुत् तन्द
वरिशिलै यिदुनी नॊय्दिऩ् वाङ्गुदि यायिऩ् मऩ्ऩ
कुरिशिल्ह णिऩ्ऩो डॊप्पा रिल्लैयाऩ् कुऱित्त पोरुम्
पुरिहिलॆ निऩ्ऩो डिऩ्ऩम् पुहल्वदु केट्टि यॆऩ्ऱाऩ् 1370

इरिचिकऩ् ऎऩ्तैक्कु ईय–ऋचीक ने मेरे पिता को दिया, तब; ऎऩ्तैयुम्–मेरे पिता ने; ऎऩक्कु तन्त वरिचिलै–मुझे जो दिया वह बन्धनयुक्त धनुष; इतु–यह है; मऩ्ऩ–राजन; नी नॊय्तिऩ् वाङ्कुति आयिऩ्–आप आसानी से (इसको) झुका सकेंगे

तो; निऩ्ऩोटु ऑप्पार्–आप से तुल्य; कुरिचिल्कळ् इल्लै–राजा नहीं हैं; निऩ्ऩोटु याऩ् कुऱित्त पोरुम्–आप से जिसकी मैंने चर्चा की, वह युद्ध भी; पुरिकिलॆऩ्–नहीं करूँगा; इऩ्ऩम् पुकल्वतु केट्टि–आगे का कहना भी सुनिए। १३७०

"ऋचीक ने वह धनुष मेरे पिताजी (जमदग्नि) के पास सौंपा। मेरे पिता ने वह मुझे दिया। अगर आप बन्धनयुक्त इस चाप को आसानी से लेकर झुका सकेंगे तो, राजन्, आपके समान कोई राजा नहीं होंगे। यह मैं मान लूँगा और जिस युद्ध की चर्चा मैंने पहले की थी, उसको भी नहीं करूँगा। यह भी सुनिए। १३७०

ऊऩविल् लिऱुत्त मॊय्म्बै नोक्कुव दूक्क मऩ्ऱाल्
माऩव मऱ्ऱुङ् गेळाय् मऩ्ऩुयिर्क् किदमे शॆय्युम्
ईऩमि लॆन्दै शीऱ्ऱ नीक्किऩा ऩवऩै मुऩ्ऩोर्
ताऩव ऩऩैय मऩ्ऩऩ् कॊल्लयाऩ् शलित्तु मेऩाळ् 1371

ऊऩम् विल् इऱुत्त मॊय्म्पै–भग्न धनु-भंजन की वीरता को; नोक्कुवतु–(गर्व के साथ) देखना; ऊक्कम् अऩ्ऱु–उत्साहवर्धक नहीं होगा; माऩव–हे मनु के वंशज; मऱ्ऱुम् केळाय्–और भी सुनिए; मऩ् उयिर्क्कु–स्थायी जीवों को; इतमे चॆय्युम्–हितकारक; ईऩम् इल्–अपराधहीन; ऍन्तै–मेरे पिताजी; चीऱ्ऱम् नीक्किऩाऩ्–(किसी से) क्रोध करने से दूर रहे (शांत स्वभाव थे); अवऩै–उनको; मुऩ्–पहले कभी; ताऩवऩ् अऩैय ओर् मऩ्ऩऩ्–दानव का-सा व्यवहार करनेवाले एक राजा ने; कॊल्ल–मार दिया, तो; याऩ् चलित्तु–मैं कुपित होकर; मेल् नाळ्–(उस दिन से) बहुत दिनों तक। १३७१

"पहले ही भग्न धनुष को तोड़कर उस बल पर इतराना उत्साहदायी नहीं होगा। हे मनुकुलश्रेष्ठ! सुनिये। मेरे पिताजी सर्वभूतहितरत थे। कोई बुराई न करनेवाले निरपराध थे। कोपविमुक्त शान्तगुण के थे। उनको, पहले कभी, दानव-सा व्यवहार करनेवाले एक राजा ने (कार्तवीर्य ने या उसके एक पुत्र ने) मार दिया। उससे कुपित होकर तब से आगे बहुत काल,। १३७१

मूवॆऴु मुऱैमै पारिऩ् मुडियुडै वेन्दै यॆल्लाम्
वेवॆऴु मऴुविऩ् वायाल् वेरऱक् कळैकट् टऩ्ऩार्
तूवॆऴु कुरुदि वॆळ्ळत् तुऱैयिडै मुऴुहि यॆन्दैक्
कावऩ कडऩ्ग णेर्न्दे ऩरुञ्जिऩ मडक्कि निऩ्ऱेऩ् 1372

मू ऍऴु मुऱैमै–तीन के सात (इक्कीस) पीढ़ियों के; पारिल् मुटि उटैय वेन्तै ऍल्लाम्–भूलोक में किरीटधारी सभी राजाओं को; वेवु ऍऴु मऴुविऩ् वायाल्–जलाकर उठनेवाले परशु की धार से; वेर् अऱ–मूल तक मिटाते हुए; कळै कट्टु–निराने योग्य पौधों के समान उखाड़कर हटाकर; अऩ्ऩार्–उनके; तू ऍऴ–मांस से निसृत; कुरुति वॆळ्ळम् तुऱै इटै मुऴुकि–रक्त नदी के घाट पर स्नान करके; ऍन्तैक्कु आवऩ–

अपने पिता के प्रति कर्तव्य; कटऩ्कळ् नेर्ऩ्तेऩ्–पितृकर्म किये; अऱु चिऩम् अटक्कि निऩ्ऱेऩ्–अदम्य कोप को शान्त करके रहा। १३७२

"मैंने इक्कीस पीढ़ियों तक के किरीटधारी राजाओं को अपने उग्र परशु की धार से मरवा डाला। (कोई भी राजा उनके सामने अपना किरीट उतार देता। १३५६वें पद में कहा गया है कि दशरथ ने भी अपना सुवासित केशवाला सिर नवाया। दशरथ के सम्बन्ध में यह भी बताया जाता है कि परशुराम नवविवाहित राजाओं को मारते नहीं थे—यह जानकर दशरथ हर वर्ष एक विवाह कर लेते थे।) मैंने राजाओं का एकदम ऐसा उन्मूलन कर दिया जैसे खेतों में व्यर्थ के पौधे निराये जाते हैं। बाद उनके रक्त से बनी नदी के घाट पर स्नान करके पितृकर्म किये। तभी जाकर मैंने अपना कोप शान्त कर लिया। १३७२

उलहॆला मुऩिवऱ् कीन्दे ऩुऱुपहै यॊडुक्किप् पोन्देऩ्
अलहिऩ्मा तवङ्गळ् शॆय्दे यरुवरै यिरुन्दे ऩाण्डच्
चिलैयैनी यिऱुत्त वोशै शॆवियुऱच् चीऱि वन्देऩ्
मलैहुवॆऩ् वल्लै याहिल् वाङ्गिडिच् चिलैयै यॆऩ्ऱाऩ् 1373

उलकु ऎलाम्–सारे लोक को; मुऩिवऱ्कु ईन्तेऩ्–(काश्यप) मुनि को दे दिया; उऱुपकै ऒट्टुक्कि–अन्तःशत्रु को जीत कर; अलकु इल् मातवङ्कळ् चॆय्तु–(अत्यधिक) अपार, विविध प्रकार की बड़ी तपस्याएँ करके; अरु वरै इरुन्तेऩ्–उत्तम महेन्द्र पर्वत पर रहा; आण्टु–तब (उधर); अ चिलैयै–उस (शिव-) धनु को; नी इऱुत्त ओचै–आपके तोड़ने का शब्द; चॆवि उऱ–कानों में पड़ा, इसलिए; चीऱि वन्तेऩ्–कोप करके आया; वल्लै आकिल्–समर्थ हो तो; इ चिलैयै वाङ्किटु–इस धनुष को झुका लीजिए; मलैकुवॆऩ्–(नहीं तो) लड़ूँगा; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। १३७३

"फिर मैंने सारी जीती हुई भूमि काश्यप मुनि को दान कर दी। उसके बाद काम क्रोधादि अन्तःशत्रुओं का दमन करके अपार और विविध व्रताधारित तपस्या करते हुए श्रेष्ठ महेन्द्र पर्वत पर रहता था। तब आपके धनुष तोड़ने का शब्द उधर आकर कानों में पड़ा तो पुनः कोप आ गया। अगर सामर्थ्य है तो पकड़िये यह धनुष और झुका लीजिये। तो मैं आपसे लड़ूँगा।" (कम्बन के पहले पद्यों के अनुसार "नहीं तो मैं लड़ूँगा" होना चाहिए क्योंकि परशुराम ने कहा था कि— देखिये पद्य १३७०— आप धनुष चढ़ा देंगे तो चर्चित युद्ध की बात छोड़ दूँगा। पर वाल्मीकी के आधार पर कहा गया है कि आप चढ़ा देंगे तो मैं आपके साथ द्वन्द्वयुद्ध करूँगा।)। १३७३

ऎऩ्ऱऩ ऩॆऩ्ऩ निऩ्ऱ विरामऩु मुऱुव लॆय्दि
नऩ्ऱॊळिर् मुहत्त ऩाहि नारणऩ् वलियि ऩाण्ड

वॆऩ्ऱिविऱ् ऱरुह वॆंऩ्ऩक् कॊडुत्तऩऩ् वीरऩ् कॊण्डाऩ्
तुऩ्ऱिरुञ् जडैयो ऩञ्जत् तोळुऱ वाङ्गिच् चॊल्लुम् 1374

ऍऩ्ऱऩऩ्–परशुराम कह चुके; ऍऩ्ऩ–उनका यों कहने पर; निऩ्ऱ इरामऩुम्–(जो सुनते) खड़े रहे (उन) श्रीराम ने भी; मुऱुवल् ऍय्ति–मन्दहास युक्त होकर; नऩ्ऱु ऑळिर् मुकत्तऩ् आकि–बहुत ही प्रसन्नमुख हो; नारणऩ् वलियिऩ्–श्रीमन्नारायण के, अपनी शक्ति के साथ; आण्ट वॆऩ्ऱि विल्–प्रयुक्त विजयी धनुष; तरुक–दीजिए; ऍऩ्ऩ–कहा, तब; कॊटुत्तऩऩ्–दिया; वीरऩ् कॊण्टाऩ्–वीर ने लिया; तुऩ्ऱु इरु चटैयोऩ्–घनी लम्बी जटाधारी भी; अञ्च–डर जायँ, ऐसा; तोळ् उऱ वाङ्कि–कंधे तक खींचकर; चॊल्लुम्–कहने लगे। १३७४

परशुराम ने ऐसा कहा। श्रीराम उनके सामने, यह सब सुनते हुए खड़े रहे। मन्दहास के साथ, मुख से प्रसन्नता का प्रकाश प्रकट करते हुए उन्होंने परशुराम से वह धनुष माँगा। "उस धनु को दीजिये जिसका श्रीनारायण ने अपने बल का प्रयोग करके उपयोग किया था।" परशुराम ने धनु को बढ़ाया। वीर श्रीराम ने उसे लिया और प्रत्यंचा चढ़ाई। फिर शर संधान कर परशुराम से बोले। स्वयं परशुराम भयभीत हो गए। १३७४

पूदलत् तरशै यॆल्लाम् पॊऩ्ऱुवित् तऩैयॆऩ् ऱालुम्
वेदवित् ताय मेलोऩ् मैन्दऩी विरदम् बूण्डाय्
आदलिऩ् कॊल्ल लाहा दम्बिदु पिऴैप्प दऩ्ऱाल्
यादिदऱ् किलक्क माव दियम्बुदि विरैवि ऩॆऩ्ऱाऩ् 1375

पू तलत्तु अरचै ऍल्लाम्–भूतल के सभी राजाओं को; पॊऩ्ऱु वित्तऩै–मरवा दिया (आपने); ऍऩ्ऱालुम्–तो भी; वेत वित्तु आय मेलोऩ्–वेदवित श्रेष्ठ (जमदग्नि) के; मैन्तऩ्–पुत्र हैं; विरतम् पूण्टाय्–अब (तपो-) व्रती हैं; आतलिऩ्–इसलिए; कॊल्लल् आकातु–मारना उचित नहीं है; अम्पु इतु–शर यह (जो मैंने डोरी पर चढ़ाया है); पिऴैप्पतु अऩ्ऱु–अचूक है; इतऱ्कु इलक्कम् आवतु–इसका लक्ष्य बनेगा; यातु–क्या; विरैविऩ् इयम्पुति–सत्वर बताइये; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। १३७५

"आपने भूतल के सारे राजाओं को मरवाया। (यह बड़ा अपराध है।) तो भी आप वेदवित और श्रेष्ठ जमदग्नि के पुत्र हैं। और आप अब तपोव्रती भी हैं। इसलिए आपका प्राण लेना धर्म नहीं होगा। पर यह शर भी व्यर्थ नहीं जायेगा। इसका लक्ष्य क्या हो—यह बताइये तुरन्त।"। १३७५

नीदियाय् मुऩिन्दिडे ऩीयिङ् गियावर्क्कुम्
आदिया यऱिन्दऩै ऩलङ्ग ऩेमियाय्
वेदिया विऱुवदे यऩ्ऱि वॆण्मदिप्
पादियाऩ् पिडित्तविल् पऱ्ऱप् पोदुमो 1376

नीतियाय्–नीतिमूर्ति; मुऩिऩ्तिटेल्–कोप मत करें; नी इङ्कु यावर्क्कुम्–आप इन लोकों के सभी वासियों के; आतियाय्–आदिपुरुष हैं; अऱिन्तऩॆऩ्–समझ लिया (मैंने अब); अलङ्कल् नेमियाय्–प्रकाशमान चक्रधारी; वेतिया–वेदोक्त ब्रह्म; वॆण्मति पातियाऩ्–श्वेत अर्धचन्द्रधर; पिटित्त विल्–शिवग्रहीत धनुष; इऱुवते अऩ्ऱि–टूटेगा ही, नहीं तो; पऱ्ऱ पोतुमो–(आप उसको) पकड़कर (झुकायें) इसकी शक्ति रखता है क्या। १३७६

(परशुराम समझ गये कि ये स्वयं विष्णु हैं।) वे बोले। "नीति के मनुष्यरूप! आप मुझ पर क्रोध न करें। मैं समझ गया कि आप ही सर्वलोकमहेश्वर, आदि परब्रह्म हैं। दीप्तिमन्त चक्रधारी! वेदों के आधार! अर्धचन्द्रधर शिवजी का धनुष टूटा, यह ठीक ही है। उसको टूटना ही था। उसमें आपके हाथ की शक्ति को सम्हालने की शक्ति कहाँ रही? । १३७६

पॊऩ्ऩुडै वऩैकऴऱ् पॊलङ्गॊ डाळिऩाय्
मिऩ्ऩुडै नेमिया नादऩ् मॆय्म्मयाल्
ऎऩ्ऩुडैत् तुलहिऩि यिडुक्कण् याऩ्ऱऩ्द
उऩ्ऩुडै विल्लुमुऩ् ऩुरत्तुक् कीडऩ्ऱाल् 1377

पॊऩ् उटै–पीताम्बर; वऩै कऴल्–कारीगरीयुक्त पायलधारी; पॊलम् कॊऴ्–सुन्दर; ताळिऩाय्–चरण वाले; मिऩ् उटै(य) नेमियाऩ्–उज्ज्वल चक्रधारी; आतल् मॆय्म्मैयाल्–हैं, यह सत्य है, इसलिए; उलकु इऩि–संसार अब; ऎऩ् इटुक्कण् उटैत्तु–किस संकट का भागी होगा; याऩ् तन्त–मुझ से दिया गया; उऩ्ऩुटैय विल्लुम्–वह आपका धनुष भी; उऩ् उरत्तुक्कु ईटु अऩ्ऱु–आपकी शक्ति के लिए पर्याप्त नहीं है। १३७७

"हे पीताम्बरधारी! सुन्दर कारीगरी से युक्त पायलधारी चरणों वाले! आप चमकदार चक्र के धारक श्रीविष्णु देव हैं। यह अब साबित है। फिर इस लोक की कौन हानि हो सकती है? असल में जो धनुष अब मैंने आपको दिया उसमें भी आपकी शक्ति सहने का पर्याप्त बल नहीं होगा। १३७७

ऎय्दवम् बिडैपऴु दॆय्दि डामलॆऩ्, शॆय्दवम् यावैयुञ् जिदैक्क वेऎऩक्
कैयव ऩॊहिऴ्त्तलुङ् गणयुञ् जॆऩ्ऱवऩ्, मैयऱु तवमॆलाम् वारि मीण्डदे 1378

ऎय्त अम्पु–आपका संधानित शर; इटै पऴुतु ऎय्तिटामल्–बीच में व्यर्थ न हो जाय, इसलिए; ऎऩ् चॆय् तवम् यावैयुम्–मेरी की हुई तपस्या का सारा संग्रह; चितैक्क ऎऩ्ऩ–हर ले; ऎऩ्ऩ–ऐसा कहने पर; अवण्–वहाँ; कै नॆकिऴ्त्तलुम्–हाथ छोड़ने पर; कणैयुम् चॆऩ्ऱु–शर भी चलकर; अवऩ्–उन (परशुराम) के; मै अऱु तवम् ऎलाम्–निर्दोष सारी तपस्या के फल को; वारि–उठा लेकर; मीण्टतु–लौट आया। १३७८

"आपने जो शर चढ़ाया है वह बीच में व्यर्थ न हो, इसलिए मैं अपने सब तपोबल को उसका लक्ष्य समर्पित कर देता हूँ। वह उस सबको हर ले। श्रीराम ने यह सुनकर अपनी पकड़ ढीली की तो वह शर परशुराम की सारी तपस्या का फल ग्रहण कर लेकर लौट आया और तूणीर में प्रविष्ट हो गया।"। १३७८

ऍण्णिय पॉरुळॅला मिऩ्ऩिदु मुऱ्ऱुह, मण्णिय मणिनिऱ वण्ण वण्डुऴाय्क्
कण्णिय यावर्क्कुङ् गळैह णाहिय, पुण्णिय विडैयॅऩत् तॉऴुदु पोयिऩाऩ् 1379

मण्णिय मणि निऱ वण्ण–शुद्धिकृत मणि के वर्ण वाले; वण् तुऴाय् कण्णिय–पुष्ट तुलसी की मालाधारी; यावर्क्कुम् कळै कण् आकिय–सब किसी के लिए आधार; पुण्णिय–पुण्यस्वरूप; ऍण्णिय पॉरुळ् ऍलाम्–जो चाहेंगे, वे सब कार्य; इऩ्ऩितु मुऱ्ऱुक–सुख से पूर्ण हों; विटै–विदा; ऍऩ्ऩ–यह कहकर; तॉऴुतु–नमस्कार करके; पोऩाऩ्–चले गये। १३७९

परशुराम ने श्रीराम की स्तुति की। "शुद्धिकृत नीलमणिवर्ण! पुष्ट तुलसीदलों की बनी मालाधारी! सर्वाधार पुण्यमूर्ति! आपका सब संकल्प सफल हो। अब मैं बिदा लेता हूँ।" यह कहकर वे लौट चले। १३७९

अऴिन्दवऩ् पोयपि ऩमल ऩैयुणर्वु
ऑऴिन्दुतऩ् ऩुयिरुलैन् दुरुहु तन्दयैप्
पॉऴिन्दपे रऩ्बिऩाऱ् ऱॉऴुदु मुऩ्बुपुक्
किऴिन्दवाऩ् ऱुयर्क्कडऱ् करयि ऩेऱ्ऱिऩाऩ् 1380

अवऩ् अऴिन्तु पोय पिऩ्–उनके सर्वस्व खोकर जाने के बाद; अमलऩ्–निर्मल श्रीराम ने; तऩ् ऐ उणर्वु ऑऴिन्तु–अपने पंचेंद्रिय की शक्ति खोकर; उयिर् उलैन्तु–विकल-प्राण होकर; उरुकुम्–घुलनेवाले; तन्तैयै–पिता दशरथजी के; पॉऴिन्त पेर् अऩ्पिऩाल्–उमंगनेवाले बड़े प्रेम के साथ; मुऩ्पु पुक्कु–सामने जाकर; तॉऴुतु–नमस्कार करके; इऴिन्त–(जिसमें वे) मग्न थे; वाऩ् तुयर् कटलिऩ्–उस विशाल दुख के सागर के; करै एऱ्ऱिऩाऩ्–पार लगाया। १३८०

अपना सर्वस्व खोकर परशुराम के चले जाने के बाद श्रीराम अपने पिता के पास आये। चक्रवर्ती दशरथ की पाँचों इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गयी थीं। प्राण विकल हुए थे। वे अन्दर ही अन्दर घुल रहे थे। निर्मल स्वभाव वाले श्रीराम ने उमगनेवाले बड़े प्रेम के साथ पिता के सामने आकर उनको नमस्कार किया। तब जाकर चक्रवर्ती का दुख दूर हुआ। श्रीराम ने अपने पराक्रम से परशुराम को हराकर चक्रवर्ती को दुख-सागर के पार लगा दिया। १३८०

वॆ़ळिप्पडु मुणर्विऩऩ् विळुम नीङ्गिडत्
तळिर्प्पुरु मदहरित् ताऩै यानिडैक्
कुळिप्पुरुन् दुयर्क्कडर् कोडु कण्डवऩ्
कळिप्पॆ़ऩुङ् गरैयिलाक् कडलु ळाळ्न्दऩऩ् 1381

वॆ़ळिप्पटुम् उणर्विऩऩ्–स्वस्थ होनेवाली सुधि के बनकर; **विळुमम्**–दुख के; **नीङ्किट**–दूर होने से; **तळिर्प्पु उऱुम्**–आह्लादयुक्त हो; **मतम् करि ताऩैयाऩ्**–मत्तगजों की सेनावाले; **इटै कुळिप्पु उऱुम्**–बीच में जिसमें मग्न थे; **तुयर् कटल्**–उस दुख समुद्र का; **कोटु कण्टवऩ्**–तीर (अन्त) देखनेवाले; **कळिप्पु ऎ़ऩुम्**–सन्तोष रूपी; **करै इला कटलुळ्**–बेलाहीन (तीर रहित) समुद्र में; **आळ्न्तऩऩ्**–डूब गये। १३८१

(श्रीराम के ढाढस देने पर) दशरथजी की बेहोशी दूर हुई और चेतना वापस आई। दुख से विमुक्त हुए। मन उल्लसित हुआ। मत्तगजों की सेना वाले वे दुख-सागर से ऊपर तीर पर आये; अब बेलाहीन सुख-सागर में डूब गए। १३८१

परिवरु शिन्दयप् परशु रामऩ्कै
वरिशिलै वाङ्गियोर् वशैयै नल्हिय
ऒ़रुवऩैत् तळुविनिऩ् ऱुच्चि मोन्दुतऩ्
अरुवियङ् गण्णॆ़ऩुङ् गलश माट्टिऩाऩ् 1382

परिवु अऱु चिन्तै–अकरुणमन; **अ परचुरामऩ् कै**–उन परशुराम के हाथ के; **वरि चिलै वाङ्कि**–बन्धनसहित धनुष लेकर; **ओर् वचैयै नल्किय**–एक अपयश (उन्हें) दिलानेवाले; **ऒ़रुवऩै**–अनुपम (श्रीराम) को; **तळुवि निऩ्ऱु**–गले लगाकर; **उच्चि मोन्तु**–सिर सूँघकर; **तऩ्**–अपनी; **अरुवि कण् ऎ़ऩुम्**–नदी के समान अश्रु बहानेवाली आँखों रूपी; **कलचम्**–कलशों से; **आट्टिऩाऩ्**–अभिषिक्त करा दिया। १३८२

श्रीराम ने अकरुणमन परशुराम के हाथ से धनुष लिया और उन्हें बदले में अपयश दिया। ऐसे अनुपम वीर का दशरथ ने आलिंगन किया; सिर को सूँघा और अपनी अश्रुनदी बहानेवाली आँखों रूपी कलशों से उन्हें अभिषिक्त करा दिया। (इस पद में धनुष लेकर अपयश देने का भाव "परिवर्तनालंकार" के अन्तर्गत लिया जायगा— मूल टीकाकार।)। १३८२

पॊ़य्म्मैयिल् शिऱुमयिऱ् पुरिन्द वाण्डॊ़ळिल्
मुम्मैयि ऩुलहिऩाऩ् मुडिक्क लावदो
मॆ़य्म्मैयिच् चिऱुवऩे विऩैशॆ़य् दोर्हळुक्
किम्मैयु मऱुमयु मीयु मॆ़ऩ्ऱऩऩ् 1383

पॊ़य्म्मै इल् चिऱुमैयिल्–कपटहीन (नादान) इस छोटी आयु में; **पुरिन्त आण् तॊ़ळिल्**–जो (इसने) किया वह पौरुष का कार्य; **मुम्मैयिऩ् उलकिऩाल्**–तीनों लोकों के वासियों से; **मुटिक्कल् आवतो**–किया जा सकता है क्या; **मॆ़य्म्मै**–सत्य तो;

इ चिऱुवत्ते–यह बालक; विऩै चॅय्तोर्कळुक्कु–सुकृतों को; इम्मैयुम् मऱुमैयुम्–इह पर सुख; ईयुम्–दिला देनेवाला है; ऍऩ्ऱऩऩ्–संस्तुति की । १३८३

दशरथ ने उनकी प्रशंसा की । कपटहीन इस छोटी आयु में श्रीराम ने जो पौरुष का काम किया है वह तीनो लोकों में किसी के हाथ हो सकेगा क्या ? नहीं । सच्ची बात तो यही है कि ये बालक श्रीराम सुकृतों को उनके कर्मानुसार इह-पर सुख देनेवाले 'कर्मफलदाता' भगवान हैं । १३८३

पूमऴै पॊऴिन्दऩर् पुहुन्द तेवर्हळ्, वामवेल् वरुणऩै माऩ वॆञ्जिलै
शेमियॆऩ् ऱळित्तऩऩ् शेऩै यार्त्तॆऴ, नामनी रयोत्तिमा नहर नण्णिऩाऩ् 1384

पुकुन्त तेवर्कळ्–आकाश में एकत्र देवों ने; पू मऴै पॊऴिन्तऩर्–पुष्पवर्षा की; वामम् वेल् वरुणऩै–मनोरम भालाधारी वर्ण को (बुलाकर); माऩम् वॆम् चिलै चेमि–आदरणीय और भयंकर धनुष को सुरक्षित रखो; ऍऩ्ऱु–कहकर; अळित्तऩऩ्–उसके पास दिया और; चेऩै आर्त्तु ऍऴ–सेना के कोलाहल के साथ उठते; नामम् नीर्–भय दिलानेवाले खाई के जल से आवृत्त; अयोत्ति मा नकरम् नण्णिऩाऩ्–अयोध्या के महान नगर पधारे । १३८४

(आकाश में देव जुट गये । उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा ।) देवों ने कल्पक तरुओं के पुष्प की वर्षा की । तब श्रीराम ने सुन्दर सांगधारी वरुण को आमंत्रित किया और उनके हाथ में उस आदरणीय आतंक मचाने वाले धनुष को दिया और कहा कि इसको सुरक्षित रखिये । अपनी उस सेना के साथ जो कोलाहल करते हुए रवाना हुई वे भयावनी खाई के जल से वलयित अयोध्या के महानगर में पधारे । १३८४

नण्णिऩ रिऩ्बत्तु वैहु नाळिडै, मण्णुऱु मुरशिऩम् वयङ्गु ताऩयाऩ्
अण्णलप् परदऩै नोक्कि याण्डहै, ऍण्णरुन् दहयदोर् पॊरुळि यम्बुवाऩ् 1385

नण्णिऩर्–(अयोध्या में) आगत सब; इऩ्पत्तु वैकुम् नाळ् इटै–सुख से रहते थे, तब उस मध्य; आण् तकै–पौरुषयुक्त; मण् उऱु–मृण्लेप वाले; मुरचु इऩम्–ढोल के समूह; वयङ्कुम्–जहाँ बजते थे; ताऩैयाऩ्–उस सेना के स्वामी ने; अण्णल् अ परतऩै नोक्कि–महिमावान भरत को देखकर; ऍण्ण अरु तकैयतु–वह जिसको सोच भी नहीं सकते थे, ऐसा; ओर् पॊरुळ्–एक (आदेश-) समाचार; इयम्पुवाऩ्–कहा । १३८५

अयोध्या में आकर सब सुख से रहने लगे । तब राजा दशरथ ने, जो अपार पौरुष रखनेवाले थे और जिनकी सेना में अनेक ढोल बजते थे (इन ढोलों के चमड़े में मट्टी का बना लेप लगाया जाता है ताकि चमड़ा चोट पाकर खूब थर्रा उठें और जोर का शब्द हो), महिमावान भरत से ऐसी बात कही जिसे स्वयं भरत भी नहीं सोच सकता था (क्योंकि राम से अलग रहना उन्हें सह्य नहीं हो सकता था ।) । १३८५

आणयि निन्दुमू दादै यैयनिऱ्, काणिय विऴैवदोर् करुत्त नादलाल्
केणियिल् वळैमुरल् केह यम्बुहप्, पूणियन् मार्बनी पोदि यॆन्ऱनन् 1386

ऐय–तात; आणैयिन्–शासनकर्त्ता; नित्तु मूतातै–तुम्हारे मातामह; निन्काणिय–तुमको देखने की; विऴैवतु–इच्छा करनेवाले; ओर् करुत्तन्–मन के हैं; आतलाल्–इसलिए; पूण् इयल् मार्प–आभूषणभूषित वक्षवाले; नी–तुम; केणियिल् वळै मुरल्–जहाँ तालाबों में शंख बोलते रहते हैं; केकयम् पुक–(उस) केकय देश जाने के लिए; पोति–रवाना हो जाओ; ऍन्ऱतन्–यह आज्ञा सुनाई। १३८६

दशरथ ने आज्ञा दी कि तात ! तुम्हारे मातुल, जो प्रतापी शासक हैं, तुमको देखने की इच्छा रखते हैं। आभरणभूषित वक्ष वाले भरत ! तुम केकय देश को, जिसके तालाबों में शंख बोलते रहते हैं (जो देश जल-समृद्ध है), जाने के लिए प्रस्तुत हो जाओ। १३८६

एवलु मिऱैञ्जिप्पो यिरामन् शेवडिप्, पूविनैच् चॆन्नियिऱ् पुनैन्दु पोयिनान्
आवियङ् गवनल दिल्लै यादलान्, ओवलि लुयिर्पिरिन् दुडल्शॆन् ऱॆन्नवे 1387

एवलुम्–आज्ञा देते ही; इऱैञ्चि–पिता का नमस्कार करके; पोय्–जाकर; ईरामन् चे अटि पूवितै–श्रीराम के अरुण चरणपद्मों को; चॆन्नियिल् पुतैन्तु–सिर पर धारण करके; आवि–प्राण; अङ्कु–उधर; अवन् अलतु–उनके सिवा; इल्लै–नहीं; आतलान्–इसलिए; ओवल् इल् उयिर् पिरिन्तु–अपृथक्करणीय प्राणों को छोड़कर; उटल् चॆन्ऱतु ऍन्त–शरीर जाता हो जैसे; पोयितान्–चले। १३८७

भरत उन्हीं की आज्ञा के कारण चल पड़े। पहले उन्होंने पिताजी को नमस्कार किया। बाद श्रीराम के चरणों पर अपना सिर रखकर दण्डवत की। उनके प्राण या आत्मा श्रीराम के सिवा दूसरे नहीं थे। वे उन्हें इतना प्यार करते थे। इसलिए जब वह चले तो ऐसा लगा कि शरीर आत्मा को छोड़कर जा रहा हो। १३८७

उळैविरि पुरवित्ते रुदाशित् तॆन्ऱॆणुम्
वळैमुरल् शेनयान् मरुङ्गु पोदप्पोय्
इळैयवन् ऱन्नॊडु मेऴु नाळिडै
नळिर्पुनऱ् केहय नाडु नण्णिनान् 1388

उताचित्तु ऍन्ऱु ऍणुम्–युधाजित नाम से प्रख्यात; वळै मुरल् चेनैयान्–शंखध्वनि वाली सेना के स्वामी के; मरुङ्कु पोत–साथ आते; इळैयवन् तन्तॊटुम्–अनुज (शत्रुघ्न) के साथ; उळै विरि–अयाल मण्डित; पुरवि तेर्–अश्व-जुते रथ पर; एऴु नाळ् इटै–सात दिनों में; नळिर् पुतल् केकय नाटु–शीतल जल से भरे केकय देश में; नण्णितान्–पहुँचे। १३८८

भरत के साथ युधाजित नाम के उनके मातुल अपनी शंखध्वनि सहित

सेना के साथ गये । भरत अनुज शत्रुघ्न के साथ घने और विखरे अयाल वाले अश्वों के जुते रथ पर बैठकर सात दिन में जल-समृद्ध केकय देश पहुँचे । १३८८

आऩ्ऱवऩ् पोऩ्ऱपि ऩ्ऱरशर् कोमहऩ्, ऊऩ्ऱमिल् पेरर शुय्क्कु नाळिडै
वाऩ्ऱवर् शॅय्दमा दवमुण् डाद‌लाऩ्, मेऩ्ऱिहऴ् पॊरुळिऩ्ऱै विळम्बु वामरो 1389

आऩ्ऱवऩ्–वैसे भरत के; पोऩ्ऱपिऩ्–जाने के बाद; अरचर् कोमकऩ्–राजाधिराज; ऊत्तम् इल्–कमीहीन; पेर् अरचु उय्क्कुम नाळ् इटै–विपुल अपना राज्य चलाते रहे, उन दिनों; वाऩ्ऱवर् चॅय्त–देवों के किये हुए; मा तवम् उण्टु–तप हैं; आतलाऩ्–इसलिए; मेल् निकऴ्–(उसके फलस्वरूप) जो आगे हुआ; पॊरुळिऩ्ऱै–वह वृत्तांत; विळम्पुवाम्–वर्णन करेंगे । १३८९

ऐसा भरत के जाने के बाद राजाधिराज चक्रवर्ती बिना किसी दोष या हीनता के बड़े राज्य का शासन करने लगे । तब देवों ने जो बड़ी तपस्या की थी उसके फलस्वरूप जो घटित हुआ उसका वर्णन हम अब करेंगे । १३८९

॥ बालकाण्ड समाप्त ॥

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान
पुस्तकालय
विभाग
शान्तिकुंज, हरिद्वार